शब्द संख्या—१०२५०

वेदीय-कोष

(Ayurvediya-Kosha)

प्रथम खण्ड

(*Volume I*)

'अ, से "अज्ञातयक्ष्मा„ तक

(From-'a' to 'ajnyátayakshmá')

ॐ

आयुर्वेदीयानुसंधान--ग्रन्थमाला का द्वितीय पुष्प

आयुर्वेदीय-कोष

An Encyclopaedical Ayurvedic Dictionary

(with full details of Ayurvedic, Unani and Allopathic terms.)

अर्थात्

आयुर्वेद के प्रत्येक अङ्ग प्रत्यङ्ग सम्बन्धी विषय यथा-निघण्टु, निदान, रोग-विज्ञान,
विकृति-विज्ञान, चिकित्सा-विज्ञान, रसायनविज्ञान, भौतिकविज्ञान, कीटाणुविज्ञान,
इत्यादि प्रायः सभी विषयके शब्दों एवं उनकी अन्य भाषा (देशी, विदेशी,
स्थानीय एवं साधारण बोलचाल) के पर्यायोंका विस्तृत व्याख्या सहित
अपूर्व संग्रह । व्याख्यामें प्राचीन व अर्वाचीन मतोंका चिकित्सा-
प्रणाली-त्रय के अनुसार तुलनात्मक एवं गवेषणापूर्ण
विवेचन किया गया है। इसमें २००० से अधिक
वनस्पतियों, समग्र खनिज एवं चिकित्सा कार्य में
आने वाली प्रायः सभी आवश्यक प्राणिवर्ग की तथा
रासायनिक औषधों के आजतक के शोधों का
सार्वाङ्गीन सुन्दर, सुबोध एवम् प्रामाणिक
वर्णन है। संक्षेप में आयुर्वेद(यूनानी
तथा डॉक्टरी) सम्बन्धी कोई भी
विषय ऐसा नहीं चाहे वह
प्राचीन हो या नवीन जिसका
इसमें समावेश न हुआ हो।

लेखक तथा संकलनकर्त्ता:—
श्री बाबू रामजीत सिंह जी वैद्य
श्री बाबू दलजीत सिंह जी वैद्य
रायपुरी, चुनार (यू० पी०)

प्रकाशक—
श्री पं० विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज
सम्पादक—अनुभूत योगमाला,
बरालोकपुर-इटावा (यू० पी०)

संशोधित तथा परिवर्द्धित

[द्वितीय संस्करण, १००० प्रति]

(सम्वत् १९९० वि० तथा सन् १९३४ ई०)



प्रथम संस्करण (First Edition)..................सन् १९२२ ई०
द्वितीय संस्करण (Second Edition)..................फरवरी सन् १९२४ ई०



श्री पं० विश्वेश्वरदयालुजी के प्रबन्ध से हरिहर प्रेस, बरालोकपुर-इटावा में मुद्रित।

प्रस्तावना

(महामहोपाध्याय कविराज श्रीगणनाथ सेन शर्मा, सरस्वती, विद्यासागर, एम० ए० एल० एम० एस० लिखित)



सार परिवर्तनशील है। आज इसका रूप कुछ है, पहिले कुछ था, कल कुछ हो जायगा, इतिहास ऐसा बतलाता है। कल जो शासक था आज वही शासनाधीन है, जो पद दलित था वह सिर पर उन्नत है। पूज्य आज हेय समझा जाता है और तिरस्कृत आज आदृत हो रहा है। वही सुजला-सुफला-शस्य-श्यामला पुण्यमयी भारतभूमि है, वही भेषज-पीयूष-वर्षिणी वन्यस्थली है, वही अष्टवर्ग-सोमलतादि-प्रसविनी-हिमाद्रिमाला है, किन्तु आज हमारे भाग्यदोष से उसीको लोग नीरसा कहते हैं। प्राचीन इतिहास की ओर जब दृष्टि उठाते हैं तो पता चलता है कि मानव-जाति मात्र के कल्याणार्थ इस भारत ने सम्पूर्ण-जगत् को क्या क्या नहीं प्रदान किया है!

अविद्य को विद्या, असंस्कृत को संस्कृति, अश्रुत को श्रुति, विस्मृत को स्मृति एवं मोहान्ध को दिव्य-ज्ञान दृष्टि इसने अपने उदार करों से निस्संकोच वितरण किया है। इतना ही नहीं वरन् इसने संसार का वह उपकार किया है कि जिसके अभाव होने पर उक्त समस्त साधन काल के गाल में विलीन हो गए होते। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष, सभी का आधार जीवन है; जीवन का अवलम्बन शारीरिक एवं मानसिक स्थैर्य है। अत-एव समस्त इहलौकिक एवं पारलौकिक सुखों के साधनभूत 'आयुर्वेद' का पुण्योपदेश कर इस भारतवर्ष ने मनुष्य-जाति का जो कल्याण किया है वह वर्णनातीत है। हन्त! वही भारत—विश्व-शिरोमणि-भारत— आज परमुखापेक्षी है; भास्कर का प्रखर-प्रकाश खोकर दीपकों की मलिन-ज्योति का अपेक्षित है।

परन्तु नहीं। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होना अवश्यम्भावी है। कालचक्र का परिभ्रमण करता हुआ, सहस्रों वर्ष पश्चात्, महानिशा के अङ्क से निकल कर, 'आयुर्वेद का सूर्य' पुनः प्राची में अपनी संजीवन-किरणें प्रक्षिप्त करते दृष्टिगोचर हो रहा है। उसके स्वागत के लिए कितनी मञ्जरियाँ कलित हो गईं, कितने ही कुसुम विकसित हो गए। इन्हीं में से एक नव-प्रसून "आयुर्वेदीय-कोष" रूप में आज मेरे हाथों में आया है। इसके दलों की मनोहरता, इसके पराग के सौरभ का परिचय आप लोगों की सेवा में उपस्थित करने का भार मुझे सौंपा गया है।

यद्यपि आयुर्वेदीय-कोष लिखने का यह प्रयत्न सर्वथा नवीन नहीं है, तथापि इसमें कुछ विलक्षणता अवश्य है। इसके बहुत पूर्व, आयुर्वेद के द्रव्यगुणांश के अर्थ परिचायक कोष, 'राज-निघण्टु', 'मदनपाल-निघण्टु' आदि प्राचीन एवं 'शालिग्राम-निघण्टु' आदि नवीन ग्रंथ उपस्थित थे, जिनसे आज दिन भी वैद्य-समाज बहुत लाभ उठा रहा है, किन्तु इनका क्षेत्र एक प्रकार से परिमित है और इन्हें हम एक सर्वाङ्गपूर्ण आयुर्वेदीय-कोष के रूप में व्यवहृत नहीं कर सकते। आयुर्वेद का कलेवर आज कितना विशाल है एवं इसके प्रकाश में आज अपना क्षेत्र कितना विस्तृत दिखलाई पड़ रहा है, यह वैद्य-समाज से अज्ञात नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि हमारे सन्देह मात्र को दूर करने के लिए अभी पर्याप्त-सामग्री नहीं प्राप्त हुई है। हमें एक ऐसे आयुर्वेदीय-कोष की आवश्यकता है, जो सर्वथा हमारी शंकाओं का समाधान करे, हमारी जिज्ञासाओं का संतोषजनक उत्तर देने एवं सन्दिग्ध स्थलों पर पथ-प्रदर्शन करने में समर्थ हो। हमारी इसी माँग की पूर्ति करने के लिए 'कविराज श्री उमेशचंद्र विद्यारत्न' महोदय ने सन् १८६४ ई० में, विशाल "वैद्यक-शब्द-सिंधु" को प्रकाशित किया था। इसमें संदेह नहीं कि वैद्य-समुदाय ने उससे बहुत लाभ उठाया है, तथापि जैसा कि हम पहिले कह चुके हैं, हमारी वर्तमान आवश्यकताओं को सम्यक्तया पूरी करने की पूर्ण-क्षमता उसमें भी नहीं है। इसी उद्देश्य को लक्ष्य करके आज एक और नवीन "आयुर्वेदीय-कोष" हमारे सम्मुख उपस्थित हुआ है, हम हृदय से इसका स्वागत करते हैं।

प्रकाशक की विज्ञप्ति



इस कालचक्र का प्रभाव आज तक किसी ने भी नहीं पाया; न कोई यह जान ही सका कि कल क्या होगा। जो आज या इस क्षण में है न मालूम उसका इस क्षण के बाद क्या होगा। समय के अनुसार संसार में अनेकानेक परिवर्तन हो चुके, हो रहे हैं, और आगे भी होंगे। इसी चक्र के अनुसार प्रत्येक वस्तु का नाश और विकाश होता आया है। आज उसी कालचक्र से प्रेरित हुआ मैं आपके समक्ष आ रहा हूँ। कोई कुछ भी नहीं कर सकता। समय ही सब कुछ करा लेता है। इसीलिए कहा भी है—

तुलसी-जस भवितव्यता तैसी मिले सहाय। आप न आवे ताहि पै ताहि तहाँ ले जाय॥

इसी के अनुसार यह कार्य भी हुआ है। जिस कोष के लिए आज कई वर्ष से आयुर्वेदिक-वायु-मंडल अपनी गुञ्जार से समस्त संसार को गुञ्जायमान कर रहा था, उसी वायु-मंडल की प्रेरणा से हमारे मित्रों (बाबू रामजीतसिंह व बाबू दलजीतसिंह) को प्रेरणा हुई और वे उससे प्रेरित होकर इस कमी की पूर्ति के लिए तल्लीन होगए और जनता की इच्छा के अनुसार इस आयुर्वेदीय-कोष को रच डाला; और मेरे समक्ष, जो मैं ही कोष के प्रकाशन के लिए सदैव प्रयत्नशील था, उपस्थित किया। इस कोष को जो देखा तो जनता के अनुरूप ही पाया। फिर क्या था। समय की प्रेरणा से उन्मत्त होकर, अपनी शक्ति का विचार किए बिना मालूम किस आन्तरिक इच्छाशक्ति के वश इस अपार भार को अपने निर्बल कन्धों पर लेकर उद्वहन करने को तैयार होगया। उसी के फल स्वरूप उसका यह पहिला भाग जनता के समक्ष उपस्थित कर रहा हूँ। अब आप देखें कि इस कोषमें सम्पूर्ण ज्ञातव्य विषय हैं या नहीं? जहाँ तक अपना विचार था और समयकी प्रेरणा जैसी थी, कि बिना परिश्रम किए ही थोड़ा पढ़ा लिखा या एक भाषाका विद्वान भी सभी आयुर्वेदीय संसार की बातें जो पृथक् पृथक् पैथियों (यथा-एलोपैथी डॉक्टरी यूनानी, आयुर्वेदीय) में भरी पड़ी हैं, जान जाएँ और जिनमें हमारे वैद्य दूसरी पैथी के मर्मज्ञ के सामने शिर नीचा कर जाते थे; वह दूर हो जाय। वह इस कोष से दूर हो गई या नहीं? विद्वान जन लिखने की दया करें।

इस बृहत्काय कोष के प्रकाशित करने के विषय में हमारे कुछ भ्रातृगणों के प्रश्न होंगे कि आयुर्वेद-शास्त्र के कई निघण्टु इस समय भी वर्तमान थे, फिर इस नवीन बृहत्काय कोष के निर्माण करने की क्या आवश्यकता थी? इसके उत्तर में ही प्रकाशक का निवेदन है कि अवश्य कई निघण्टु हैं; परन्तु आप लोगों ने कभी भी उनकी तुलना नहीं की। यदि आप तुलना कर लेते तो उपर्युक्त बात कदापि न कहते। कुछ समयसे हमारे यहाँ वैद्य-समाज में प्रमाद आगया है और उन्होंने—

"हेतुलिंगौषध ज्ञानं स्वस्थातुर परायणम्।
त्रिसूत्रं शाश्वतं पुण्यमायुर्वेदं मनु शुश्रुमः॥

इस सूत्रों को ही भुला दिया और रोग निश्चय तथा उसमें दोष कल्पना और उस अवस्था के लिए औषध विवेचन करना ही छोड़ दिया। सिर्फ रोग का नाम और उसके लिये उस रोग की चिकित्सा में वर्णित कोई सी भी औषध बना कर दे देना ही वैद्यक व्यवसाय समझ लिया था। यह धारणा बढ़ते २ यहाँ तक बढ़ी कि जिसका अन्त अब तक भी नहीं हुआ। इसी प्रवाहमें लिखे हुए चिकित्सा-ग्रंथ तथा निघण्टु (जो केवल मात्र लिए प्रकाश के लिए ही रचे गए थे) ग्रंथों पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। यह दशा जब इधर भारतवर्ष में हो रही थी तब यूनानी लोग "हेतुलिंगौषधज्ञानम्" इस सूत्र पर विचार करते हुए रोगविज्ञान और औषध-ज्ञान को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करने लग गए। उसका प्रतिफल यह हुआ कि आयुर्वेदीय

समर्पणम्



आयुर्वेदमार्तण्ड श्री १०८ स्वामी लक्ष्मीरामाचार्यजी प्रधानाध्यापक सं० वि ।

अयि गुरुवर्य्य !

आपकी दया से जो कुछ ज्ञान प्राप्त कर आयुर्वेदोद्धार के लिए जा
है उसका श्रेय आपको ही है। अतः यह कोष आपकी इच्छानुरूप ही
हुआ प्रकाशित कर, चरणों में समर्पित करने का साहस किया है, ...

मालिक श्रीहरिहर औषधालय—

चिकित्सक पं० विश्वेश्वरदयालु वैद्यराज

बरालोकपुर इटावा यू० पी०



सादर समर्पणम्

स्नेहमयि जननि

किन शब्दों से तुम्हारी पूजा करें ! किन शब्दों से तुम्हें धन्यवाद दें माता ! तुमने इस अपने अकिंचन पुत्र को किस चाव से इतना अपनाया है कि जो इच्छा स्वप्न में भी रमने की तुमने वही पूर्ति कर इसे सुखी किया । इसी के उपलक्ष में यह तुच्छ भेंट तुम्हारे चरणों में समर्पित है । इसे अपनाने की दया करना और ऐसी ही कृपा करना कि जिससे यह आयुर्वेद का उद्धार करता हुआ अपना नाम अमर करने में समर्थ हो ।

समर्पक —

तुम्हारा स्नेही पुत्र विश्वेश्वर

चिकित्सा को अपने चमत्कारों से बहुत कुछ दबा डाला। इसके बाद एलोपैथी का सितारा चमका। उन्होंने यूनानियों से भी अधिक गवेषणा की और आयुर्वेदीय चिकित्सा को बिलकुल ही दबा डाला। इस समय जब कुछ वैद्यों ने अपनी अवनति पर विचार करना प्रारम्भ किया तो उनको अपने रोगविज्ञान (निदान) पर और निघण्टु (औषधि-विज्ञान) पर नज़र डालनी पड़ी, कारण इनके बिना चिकित्सक एक पग भी आगे नहीं बढ़ा सकता। अतः तुलनात्मक विवेचन करने पर आँखें खुलीं और ज्ञान हुआ कि हम तो प्रथम ही अपना मार्ग रुद्ध कर चुके हैं तब होश आया कि हमें अपनी कमी कैसे पूर्ण करनी चाहिए। क्या २ कमी और क्या २ अनर्थ हमारे निघण्टुओं में है दिग्दर्शनार्थ हम नीचे देते हैं। यथा—

"रास्नास्तु त्रिविधा प्रोक्ता मूलं पत्रं तृणं तथा"

इस प्रकार रास्ना तीन तरह की बता कर ऐसा भ्रम में डाला गया है कि कभी भी यह जटिल समस्या तय न हो। इसी तरह कंकुष्ठ, रसक आदि पर भी विवाद हैं। अब देखिए प्रायः नित्यप्रति काम में आने वाली वस्तुओं के विषय में।

धान्यकं तु वरं स्निग्धमवृष्यं मूत्रलं लघु।
तिक्तं कटूष्ण वीर्यं च दीपनं पाचनं स्मृतम् ॥ भाव० ॥

धनियाँ स्निग्ध, अवृष्य, मूत्रल, हलका, तिक्त, कटु, उष्णवीर्य वाला दीपन और पाचन है। परन्तु,

धान्यकं मधुरं शीतं कषायं पित्त नाशनम्। राजनि०।

राजनिघण्टुकार धनिये को मीठा, शीतल, कसैला पित्तनाशक मानते हैं। भावप्रकाशकार धनियें को पित्तकारक विशेष मानते हैं और राजनिघण्टुकार ठंडा। अब क्या ठीक है? वैद्य किस के मत को स्वीकार कर दे और कैसे सफलता प्राप्त करे? जब तक यह दृढ़ निश्चय हम लोग बैठ कर नहीं कर लेते तब तक हम सफलता से सैकड़ों कोस दूर हैं। एक विद्वान वैद्य भी जिसने बड़ी खोज से रोग निश्चय किया हो उसमें दोष विवेचन करके उसकी अंशांश कल्पना भी कर लेने में वह सफल हो गया हो तो भी वह औषध निश्चय में या तो भ्रम में पड़ जायगा कि किसका मत माने। यदि उसने एक के मत को स्वीकार करके भी औषधि दे दी तो वह असफल हुआ और रोग बढ़ कर प्राण नाशक बन गया। इसमें किसका दोष है? वैद्य का या वैद्यक साहित्य का। अभी तो आप यही कहेंगे कि वैद्यक का तो ऐसी सारभूत साहित्य से ही क्या लाभ? मेरी तो धारणा होगई है कि जल्द से जल्द ऐसे साहित्यको नष्ट भ्रष्ट कर देने में ही भलाई है, वर्ना वैद्यों को बहुत क्षति का सामना करना पड़ेगा। यूनानी वाले धनिये के विषय में लिखते हैं—धनियां फरहत लाती है, दिल व दिमाग़ को कुव्वत देती है, दिमाग़ पर बुख़ारे चढ़ने को रोकती है, ख़फ़क़ान व वसवास (वहम) को मुफ़ीद, मेदे को कुव्वत देती है, दस्तों को बन्द करती है, जरियान मनी को लाभ देती है, नींद लाती है, ताज़ी धनियां रद्दी माद्दे को पकाती है और सफ़रा को तस्कीन करती है। इसकी कुल्ली मुंह के जोश, और गले के दर्द को नफ़ा करती है। अक्सर दिमाग़ी बीमारियों को नफ़ा करती है। मात्रा—६ मा० से १ तोला तक। गैर समी अर्थात् विष नहीं है। कहिए यूनानियों की सम्मतिसे क्या विशेष लाभ आपको नहीं हो सकता। इसी प्रकार एलोपैथी का वर्णन करके फिर अपना मत निश्चय कर दिया जाय तो क्या चिकित्सकों को सुलभता नहीं हो जायगी? इस कोष में जहाँ तक था सभी साहित्यों से लेकर भर दिया और उसका तुलनात्मक विवेचन कर अपना मत प्रकट कर विषय को साफ कर देने में कोई कसर ही नहीं उठा रक्खी और निघण्टु को 'निघंटुना विना वैद्यो वाग्मी व्याकरणं विना' इस कहावत के अनुसार ही इसको ऐसा बनवाया गया कि प्रत्येक वैद्य का कार्य इसके बिना यथेच्छ सिद्ध ही न हो सके। विशेष विशेषताएं इस कोषके लेखक ने स्वयं अपनी भूमिका में लिख दी हैं, जिनका बताना हमारे लिए केवल मात्र पुनरुक्ति करना ही होगा। अतः हम उस पर मौनावलम्बन करके आगे चलते हैं। आपको यदि अभिप्रेत हो तो 'लेखक के दो शब्दों' को पढ़ने की उदारता कीजिए।

यही नहीं कि सिर्फ धनियें पर ही ऐसा लिखा है। जहाँ जहाँ प्रायःसभी वनस्पतियों पर ही यही झगड़ा डाला गया है। इसके दो ही कारण हमारी अल्प मति में आते हैं, १-पद्य रचना है, पद्य रचना करते समय पद्यको पूरा

करने के लिए मनमाने शब्दों को रख देना और ग्रंथ पूरा करके नाम कमाना ही है। क्योंकि "निरंकुशाः कवयः" कवि निरंकुश होते हैं। यह बात अन्य विषय के कवियों के लिए लागू भी हो सकती है, परन्तु आयुर्वेद जैसे गुणदोषी के साहित्य पर यह निरंकुशता आज कितना बुरा प्रभाव डालती हुई हमारे अधःपतनका कारण हुई है यह किसी भी सहृदय से छिपा नहीं है।

प्रत्येक आयुर्वेदीय साहित्य पर विद्वानों की सम्मति का अंकुश होना चाहिए और वह साहित्य तभी प्रकाश पा सकता है। जब उसका निरीक्षण विद्वानों द्वारा होकर आज्ञा प्राप्त करली जाय। मनगढंत आयुर्वेदीय साहित्य से आयुर्वेद का नाश होना संभव है। और भी देखिए—

पलाण्डुः कफकृन्नाति पित्तलः। भाव०। पलाण्डुः कफ पित्त हरो लघुः। राज० नि०।
तगरद्वयमुष्णं स्यात्। भाव०। तगरं शीतलं तिक्तम्॥ रा० नि०॥
त्वक् शुक्रला। भा०। त्वचं शुक्रशमनम्। रा० नि०।

कितना अनर्थकारी विरोध है। यही विरोध देख हमने इस ग्रंथ के प्रकाशनका भार अपने निर्बल कंधों पर लिया है। आशा है हमारे वैद्य बन्धु हमें इसमें मदद देंगे और जहाँ जहाँ हमारा स्खलन हुआ हो अपनी बुद्धि के द्वारा सूचित करें ताकि संशोधित हो सके और भावी संतानों के हित साधन में यह एक हो सके। यदि इस ग्रंथ से कुछ भी लाभ पाठकों को होगा तो हम अपने व्यय को सार्थक समझेंगे। दूसरे औषधि मात्रा, किस वनस्पति का कौन सा भाग प्रयुक्त किया जाना चाहिए, यदि दी हुई औषध अवगुण करती मालूम हो तो उसका दर्पघ्न कौन सी औषध को देकर शीघ्र ही होने वाली हानि से रोगी को बचा लिया जाय।

इसके सिवाय आयुर्वेद में केवल ७०० के करीब और यूनानी ग्रंथों में ६०० के करीब वनस्पतियों का वर्णन मिलता है और एलोपैथी में करीब २००० औषधियों का स्फुट वर्णन मिलता है और करीब २०००० औषधियों के चित्र लिए जा चुके हैं। आपको इस कोष में अब तक की संसार भर की खोजों का संग्रह मिलेगा जिसे देख आप गद् गद् हो जावेंगे।

इस कोष में क्या है? संक्षेपतः इसमें प्रायः सभी विषयों का समावेश किया गया है। इस कोष को पास रखने पर आपको अंग्रेजी (एलोपैथी, यूनानी, आयुर्वेदीय, रोग-निदान, उनकी चिकित्सा, प्रसिद्ध प्रसिद्ध योग, शारीरिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, वानस्पतिक शास्त्र का पूर्ण विवेचन अकारादि क्रम से मिलेगा। अर्थात् जो जो वर्णन आज तक की प्रकाशित पुस्तकों में इतस्ततः था उनका संग्रह एक स्थान पर इस प्रकार से दिया हुआ है कि देखने वाला उस विषय का तत्त्वज्ञ विज्ञ हो जाता है अर्थात् उस विषय का अंत ही निकाल बैठता है। इससे आगे उसके लिए कुछ भी ज्ञातव्य शेष नहीं रहता। तीनों पैथियों के शब्दों को और प्रत्येक प्रांतके शब्दों को जो चिकित्सा शास्त्रसे सम्बन्ध रखते थे अकारादि क्रमसे इस प्रकार संग्रह किया है कि, आपको किसी रोग व वनस्पति, पार्थिव, जान्तव, औषधि का नाम मालूम हो तुरन्त उसका नाम निकाल वर्णन पढ़ तृप्ति प्राप्त कर लेनी पड़ेगी। इतना सब कुछ करने पर भी शाब्दिक महान् सागर को हम पार न कर सके हों यह सम्भव है; इसलिए प्रत्येक प्रांतीय भाषाविज्ञों से प्रार्थना है कि इस कोष में जो भी शब्द आपको न मिले उसकी सूचना हमें अवश्य दें ताकि हम उसे अगले संस्करणों में स्थान दे इस कोष को पूर्ण सफल बनाने में समर्थ हो सकें। जो कुछ भी अयुक्ति, जो कुछ भी कमी, जो कुछ भी सुधार और आपको इसमें कराना या निकालना हो उसकी सूचना से सूचित करना और अपने अपने इष्ट मित्रों को इस कोष के देखने की सलाह देना ताकि इसका प्रचार बढ़े और शीघ्र ही इसके सम्पूर्ण भाग आपको देखने को मिल सकें। यदि आप लोगों ने इसके प्रचार में उत्साह से भाग न लिया तो यह अपनी धीमी धीमी चाल से न जाने कितने वर्षों में सम्पूर्ण निकल सके और आपको जैसा इस कोष से लाभ पहुँचना चाहिए न पहुँचे। कारण बिना कोष के सम्पूर्ण हुए सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण होनी असम्भव ही हैं। आशा है कि सभी वैद्य बन्धु इससे प्रसन्न हो सहाय देंगे।

वैद्यों की उन्नति का इच्छुकः

प्रकाशकः चिकित्सक पं० विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज

लेखक के दो शब्द !



गत में जितना भी कार्य होता है, उसका कोई न कोई कारण अवश्य होता है। बिना कारण के किसी भी कार्य का होना असम्भव है, पुनः वह मानव बुद्धि द्वारा अवगत हो सके अथवा नहीं। यह एक अटल सिद्धान्त है।

जो बात सर्व साधारण के लिए कोई मूल्य नहीं रखती वही बात उस महा पुरुष के लिए जिसके द्वारा कोई महान कार्य सम्पादित होने वाला होता है, अत्यन्त महत्व रखती है। परिपक्व सेव सदैव ही पृथ्वी तल पर टपका करते हैं। परन्तु सामान्य मानव हृदय पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है ? पर वहीं इसी एक बात ने सर आइजक न्यूटन को गम्भीर चिन्ता में डाल दिया और उसके अन्वेषक हृदय तल से गुरुत्व अथवा आकर्षण शक्ति ऐसे महान् उपयोगी सिद्धान्त का आविर्भाव हुआ और आज भी बड़े बड़े वैज्ञानिक उस साधु पुरुष के यश के गीत गाते हैं।

आज से लगभग २० वर्ष की बात है कि हमें एक ऐसा योग बनाना था जिसमें "कालावाला" शब्द प्रयुक्त हुआ था। समझ में नहीं आता "वाला वाला" है क्या बला ? और योग का बनाना जरूरी था। अस्तु हमने उसकी तलाश में संस्कृत तथा हिन्दी आदि कई भाषा के प्रायः सभी कोषों को निचोड़ डाला और काशी के तत्कालीन प्रायः सभी आयुर्वेद शास्त्रियों एवं बड़े बड़े औषध-विक्रेताओं से पूछ ताछ की। पर सफलता न मिली। और सफलता मिले भी तो क्यों ? उक्त शब्द महाराष्ट्री भाषा का था (हिन्दी में सुगन्धवाला एवं उशीर दोनों के लिए प्रयुक्त होता है)।

अन्ततः विवश होकर उस औषध के बिना ही, शेष औषधियों के द्वारा योग प्रस्तुत कर उसका प्रयोग कराया गया और उससे सफलता भी मिली। पर हमें संतोष न हुआ। हमने अपने मन में इस बात को दृढ़ प्रतिज्ञा करली कि हम एक ऐसे आयुर्वेदीय-शब्द कोष का निर्माण करेंगे जिसमें औषधियों के प्रायः सभी भाषा के नाम अकारादि क्रम से दिये गए हों। उसी समय से हमने शब्दों का संकलन प्रारंभ कर दिया। वर्षों विंध्य एवं हिमवर्ती पर्वत शिखरों एवं सघन भयावह वनों की हवा खाई, जंगली मनुष्यों यथा कोल भील आदिकों से मिला, विभिन्न प्रान्त के लोगों से बात चीत की और इस प्रकार क्रियात्मक रूप से औषधियों की खोज एवं शास्त्रीय वर्णनों से तुलना कर निश्चित निर्णय प्रतिपादनार्थ यथेष्ट मसाला एकत्रित करने में संलग्न हो गया। उस समय केवल इतना ही विचार था।

पर उस विचार एवं यत्न का जो विकसित रूप आज आपके सम्मुख है, उस समय इसका स्वप्नाभास भी न था। परंतु जिस प्रकार एक नन्हा सा बीज मिट्टी, जल तथा वायु के संपर्क से अंकुरित होकर इतने विशाल वृक्ष का रूप धारण करता है, उसी प्रकार वह छोटा सा विचार उपयुक्त वायुमंडल एवं सहायता द्वारा परिपोषित होकर ऐसे महान कार्य रूप में परिणत हुआ है। "कालावाला" का न मिलना कोई असाधारण बात न थी; परंतु इसी एक विचार से इस कोषकी रचना का सूत्रपात होता है। तभी से अध्यवसाय एवं कठिन परिश्रम के साथ अपना अध्ययन जारी रहा। बीच बीच में विचार विनिमय एवं प्रत्येक विषय के अनुसंधानपूर्वक अनुशीलन तथा क्रियात्मक प्रयोग अन्य अनुभव द्वारा विचार दृढ़ एवं विकसित होते गए। जिसके परिणाम स्वरूप आज यह दीर्घ काय ग्रन्थरत्न का एक छोटा सा अंश (प्रथम खण्ड) आपके सम्मुख है। इसकी प्रस्तावना उत्कृष्ट विद्वान, वैद्य शिरोमणि, वैद्यों के आचार्य एवं प्रत्यक्ष शारीर जो अनेक आयुर्वेदीय कालेजों एवं विद्यापीठ के पाठ्यक्रममें है और शारीर ग्रंथोंमें संस्कृतमें अपने विषयका एक अनुपम प्रामाणिक ग्रंथ रत्न है, और जिससे शारीर विषयक शब्दों के लिए हमको भी काफी सहायता मिली है के रचयिता महामहोपाध्याय कविराज

श्री गणनाथ सेन शर्म्मा, सरस्वती, विद्यासागर, एम० ए०, एल० एम० एस० ने लिखी है। आपकी प्रस्तावना होते हुए यद्यपि हमको कुछ भी लिखने की आवश्यकता न थी, तो भी पाठकों की विशेष जानकारी के लिए हमें यहाँ कुछ लिखना उचित जान पड़ा। अतः इस कोष में आए हुए विषयों का आंशिक परिचय निम्न पंक्तियों के अवलोकन से हो सकेगा।

१—इस कोष में रसायन, भौतिक-विज्ञान, जन्तु-शास्त्र तथा वनस्पति-शास्त्र, शरीर-शास्त्र, द्रव्यगुणशास्त्र, शवच्छेद, शारीर कार्य-विज्ञान, बाह्येन्द्रिय व्यापार शास्त्र औषध-निर्माण, प्रसूतिशास्त्र, स्त्रीरोग, बालरोग, व्यवहारायुर्वेद एवं अगद-तन्त्र, रोग विज्ञान, चिकित्सा तथा विकृति विज्ञान, जीवाणु शास्त्र, शल्य शास्त्र इत्यादि आयुर्वेद विषयक प्रायः सभी आवश्यक संस्कृत, हिंदी, अरबी, फ़ारसी, उर्दू तथा हिंदी में प्रचलित अँगरेज़ी के शब्द और प्राणिज, वानस्पतिक, रासायनिक तथा खनिज द्रव्यों के देशी विदेशी एवं स्थानिक व प्रांतीय आदि लगभग सवा सौ भाषा के पर्याय व्युत्पत्ति एवं व्याख्या सहित अकारादि क्रम से आए हैं। क्रमागत प्रत्येक शब्द का उच्चारण रोमन में तथा उसका निश्चित अँगरेज़ी या लेटिन पर्याय अँगरेज़ी लिपि में दिया गया है, जिसमें केवल अँगरेज़ी भाषा भाषी पाठक भी इससे लाभ उठा सकें। पुनः उक्त शब्द के जितने भी अर्थ होते हैं, उनको नम्बरवार साफ़ साफ़ लिख दिया गया है। और उस शब्द को जिसके सामने उसकी विस्तृत व्याख्या करनी है, बड़े अक्षरों में रक्खा गया है और व्याख्या की जाने वाले शब्द के भीतर उसके समग्र भाषा के पर्यायों को भी एकत्रित कर दिया गया है।

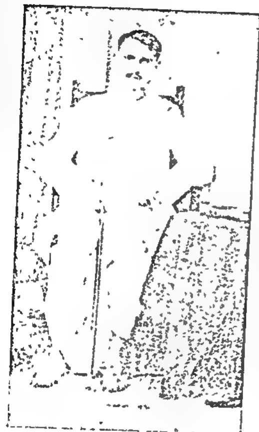
२—औषधों के प्रायः सभी भाषा के पर्याय अकारादि क्रममें सब अपने मुख्य नाम एवं अँगरेज़ी वा लेटिन पर्याय के साथ आए हैं, किन्तु उनका विस्तृत विवेचन मुख्य नाम के सामने हुआ है। मुख्य नाम से हमारा अभिप्राय (१) औषध के उस नाम से है जिससे प्रायः वह सभी स्थानों में विख्यात है अथवा उसका शास्त्रीय नाम, (२) जिससे उसे पर्वतीय वा अरण्यवासी लोग जानते हैं और (३) वह जिससे किसी स्थान विशेष के मनुष्य परिचित हैं। मुख्य संज्ञाओं की चुनाव में उत्तरोत्तर नाम अप्रधान माने गए हैं अर्थात् शास्त्रीय व व्यापक संज्ञाओं से आरण्य वा पर्वतीय पुनः स्थानिक संज्ञाएँ अप्रधान मानी गई हैं।

यह तो हुई भारतीय औषधों की बात। इसके अतिरिक्त वे औषध जो एतद्देशीय लोगों को अज्ञात हैं और उनका ज्ञान एवं प्रचार विदेशियों द्वारा हुआ है, उनका तथा विदेशी औषधों का वर्णन उन्हीं उन्हीं की प्रधान संज्ञाओं के सामने किया गया है।

औषध वर्णन में प्रत्येक मुख्य नाम के सामने सर्व प्रथम उसके प्रायः सभी भाषा के पर्यायों को एकत्रित कर दिया गया है। पर्यायों के देने में उनके ठीक होने का विशेष ध्यान रक्खा गया है। विस्तृत अध्ययन, अनुशीलन एवं अनुसंधान के पश्चात् ही कोई पर्याय निश्चित किया गया है। इस सम्बन्ध में अत्यन्त खोजपूर्ण एवं संदेह परिहारक टिप्पणियाँ भी दी गई हैं। इतने विस्तृत पर्यायों की सूची भी शायद ही किसी ग्रंथ में उपलब्ध हो।

पुनः यदि वह औषध वानस्पतिक वा प्राणिज है तो उसका प्राकृतिक वर्ग दिया गया है। यदि वह औषध ब्रिटिश फार्माकोपीआ वा निघण्टु में ऑफिशल वा नॉट ऑफिशल है तो उसे लिख दिया गया है एवं उसके रासायनिक होने की दशा में उसका रासायनिक सूत्र दिया गया है। इसके पश्चात् प्रत्येक औषध का उत्पत्ति स्थान वा उद्भवस्थान दिया गया है। फिर संज्ञा-निर्णायक-टिप्पणी के अन्तर्गत उसके विभिन्न भाषा के पर्यायों पर आलोचनात्मक विचार प्रगट किए गए एवं संदिग्ध औषधों के निश्चीकरण का काफी प्रयत्न तथा मिथ्या विचारों का खण्डन किया गया है। मुख्य मुख्य संज्ञाओं की व्युत्पत्ति दी गई है और तत्विषयक विलक्षण बातों एवम् उनके भेदों का स्पष्टीकरण किया गया है। पुनः इतिहास शीर्षक के अन्तर्गत यह व्यक्त किया गया है कि उक्त औषध सर्व प्रथम कब और कहाँ प्रयोग में लाई गई। इसके अन्तर्गत गवेषणापूर्ण नोट लिखे गए हैं, जिसके द्वारा प्राचीन अर्वाचीन वैद्यों के पारस्परिक शंकाओं का निवारण होता है।

आयुर्वेदीय-कोषकारद्वय—





बाबू रामजीतसिंहजी वैद्य　　　　बाबू दलजीतसिंहजी वैद्य

(रायपुरी, चुनार, यू० पी०)



डॉक्टर मुहम्मदशफ़ी (चुनार)

बर्गे दरख़्ताँ सब्ज़ दर नज़रे होशियार ।
हर वर्क़े दफ़्तरेस्त मआरिफ़ते किर्दगार ॥

(सादी)

सुख़न के तलबगार हैं अक्सर, सुख़न से है नाम निकोयाँ बलंद ।
सुख़न की करे क़द्र मर्दाने कार, सुख़न नाम उनका रखे बरक़रार ॥

(जॉन शेक्सपीयर)

फिर प्रत्येक औषध का वानस्पतिक व रासायनिक वर्णन दिया गया है जो हिंदी में एक बिलकुल नवीन विषय है। पुनः रासायनिक-संगठन (विश्लेषण), प्रयोगांश, परीक्षा, मिश्रण,विलेयता, संयोग-विरुद्ध, शक्ति, गुरुत्व, प्रकृति,प्रतिनिधि, हानिकारक और दर्पघ्न इत्यादि का आवश्यकतानुसार यथास्थान वर्णन किया गया है।

पुनः विषोपविष एवम् खनिज की आयुर्वेदीय तथा यूनानी मतानुसार शुद्धि एवम् खनिज व धातुओं के भस्मीकरण के परीक्षित एवम् शास्त्रीय नियमों का वर्णन किया गया है। फिर औषध-निर्माण तथा मात्रा दी गई है।

औषध-निर्माण में प्रथम अमिश्रित फिर मिश्रित आयुर्वेदीय, युनानी औषध तथा डाक्टरी के ऑफिशल योग (जिसमें प्रत्येक औषध की निर्माण-विधि है) दिए हैं। तत्पश्चात् नॉट ऑफिशल योग जिसमें उक्त औषध से बनाई हुई यूरोप अमरीका को लाभप्रद प्रायः पेटेण्ट औषध का उनके संक्षिप्त इतिहास लक्षण एवं गुणधर्म तथा प्रयोग का वर्णन है, दिया गया है। तदनन्तर गुणधर्म तथा प्रयोग शीर्षक के अन्तर्गत आयुर्वेदीय मत से धन्वन्तरीय निघण्टु से लेकर आज तक के सभी निघण्टुओं के गुणधर्म इस प्रकार एकत्रित कर दिए गए हैं। जिसमें विषय आवश्यकता से अधिक न होने पाए और साथ ही कोई बात छूटे भी नहीं। फिर चरक से लेकर आज पर्यन्त के आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्रों में जहाँ जहाँ उक्त औषध का प्रयोग हुआ है, उसको यथा क्रम सप्रमाण एकत्र संकलित कर दिया गया है, पुनः उन पर अपना वक्तव्य लिखकर बाद में यूनानी मत से प्रायः उनके सभी प्रामाणिक ग्रंथों से उक्त औषध विषयक गुणधर्म तथा प्रयोग को सरल हिंदी में अनूदित कर प्रमाण सहित संगृहीत कर दिया गया है। किसी किसी औषध के पञ्चांग के प्रयोग का विशद विवेचन किया गया है। और यदि उसके किसी अंग से किसी धातुपधातु वा रत्नोपरत्न की भस्म प्रस्तुत होती है तो उसके भस्मीकरण की विधि, मात्रा, अनुपान, एवं गुणप्र-योग आदि भी दिए गए हैं। फिर डॉक्टरी मतानुसार उक्त औषध का विस्तृत आभ्यन्तरिक वाह्यान्तर प्रभाव तथा प्रयोग अर्थात् उक्त औषध का कितनी मात्रा में किस किस शरीरावयव पर क्या क्या प्रभाव होता है, विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। यदि उसका अन्तःक्षेप होता है तो उसकी मात्रा एवं उपयोग-विधि का भी उल्लेख किया गया है। औषध के गुणधर्म वर्णन के पश्चात् योग-निर्माण-विधि विषयक एवं किसी किसी औषध के सम्बन्ध में आवश्यक आदेश दिए गए हैं। सैन्द्रियक तथा निरेन्द्रियक विषोपविष द्वारा विषाक्तता के लक्षण एवं तच्छामक उपायों तथा अगद का विशद वर्णन किया गया है। अन्त में उक्त औषध के दो चार परीक्षित योग लिख दिए गए हैं।

इस प्रकार इसमें आज कल की ज्ञात अज्ञात एवम् स्वानुसंधानित देशी विदेशी लगभग २५०० वनस्पति प्रायः सभी खनिज एवम् रासायनिक तथा चिकित्सा कार्य में आने वाली प्रायः सभी प्राणिवर्ग की औषधों का विशद वर्णन और लगभग एक सहस्र ओषधियों का संक्षिप्त वर्णन है। इस विचार से यह केवल शब्द-कोष ही नहीं, अपितु एक प्रामाणिक एवं अभूतपूर्व निघण्टु भी है। वर्णन इस प्रकार का है कि इससे आयुर्वेद विद्यार्थी, पंडित, हकीम तथा डॉक्टर एवम् सर्व साधारण जनता भली प्रकार लाभान्वित हो सकती है। संक्षेप में इसको रखते हुए फिर अन्य किसी भी निघण्टु की आवश्यकता ही नहीं रहती।

वनस्पतियों के स्वयं लिए हुए छाया चित्र भी तय्यार किए जा रहे हैं और इसी क्रम से इस ग्रंथ के अंतिम खंड में प्रकाशित किए जाएँगे। जितनी ओषधियों का वर्णन इस ग्रंथ में आया है, प्रायः उन सभी के छाया चित्र उक्त खंड में होंगे।

इसमें प्रायः ओषधि के नामकरण हेतु, उनके पर्यायवाची शब्दों के एकीकरण, उनके ऐतिहासिक अनु-संधान तथा स्वरूप परिचय विषयक मत वैभिन्नताके निराकरण एवम् सन्दिग्ध ओषधोंके निश्चीकरणके सम्बन्धमें जो हमने गवेषणात्मक एवं अनुसंधान पूर्ण नोट लिखे हैं, उनके अवलोकन करने से हमारे विस्तृत अध्ययन एवं कठिनश्रम तथा अध्यवसाय का आंशिक निदर्शन हो सकेगा। (इतना होते हुए भी किसी विषय में यदि

किसी महानुभाव का हमारे साथ मत भेद हो तो वे उसे हमें सूचित करने की अवश्य दया करें जिसमें उस पर हम लोग पुनः विचार कर अपना अन्तिम मत स्थिर कर सकें। इस प्रकार गवेषणा-सिद्ध परामर्श एवम् सहयोगिता द्वारा भेषज निर्णय में एक सर्वमान्य विश्वासनीय निर्णय सम्पादित हो सकेगा जिससे आयुर्वेद के पुनरुद्धार में काफ़ी सहायता मिलेगी और वैद्यों एवम् आयुर्वेदीय शास्त्रों के पारस्परिक विरोध सर्वथा के लिए मिट जाएँगे। प्रत्येक प्रांत के वैद्य बन्धुओं से हमारी कर बद्ध सविनय प्रार्थना है कि वे इस विषय में हमारी निष्कपट एवम् द्वेश शून्य भाव से सहायता करें। इसके लिए हम उनके सदैव आभारी रहेंगे। उन विषयों के नाम से ही इसमें स्थान दिया जाएगा।) इसके अतिरिक्त इसमें समग्र आयुर्वेदीय तथा अत्युपयोगी यूनानी योगों का वर्णन है और ब्रिटिश फार्माकोपिया (अंग्रेज़ी सम्मत-योगशास्त्र), ब्रिटिश फार्माकोपिया के परिशिष्ट भाग तथा एक्स्ट्रा फार्माकोपिया की समस्त मिश्रित अमिश्रित औषधों के विस्तृत वर्णन के सिवा इसमें भारत, यूरुप तथा अमरीका के समस्त प्रशस्त एवम् उपयोगी पेटेण्ट औषधों का भी वर्णन है।

३—आयुर्वेद में आए हुए सभी रोगों का यूनानी तथा एलोपैथिक रोगों से मिलान कर उनके ठीक अरबी फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी प्रभृति के पर्याय दिए गए हैं। पुनः इसमें प्रणाली ग्रंथ के अनुसार निदान, पूर्वरूप, रूप, उनका अन्य व्याधियों से तुलना एवं भेद, साध्यासाध्यता, शास्त्रीय एवं अनुभूत चिकित्सा, मिश्रित व अमिश्रित औषध, पथ्यापथ्य इत्यादि चिकित्सा विषयक सभी ज्ञातव्य आवश्यक बातों का प्रामाणिक विशद वर्णन है।

इसके अतिरिक्त जिन व्याधियों का वर्णन आयुर्वेद में नहीं है अथवा सूत्र रूप में है, उसका भी सविस्तार वर्णन किया गया है अर्थात् आयुर्वेद में न आए हुए और यूनानी तथा डाक्टरी ग्रंथों में वर्णित प्रायः सभी आवश्यक रोगों का वर्णन पाठकों के लाभार्थ कर दिया गया है। अस्तु इसके रहते हुए किसी भी युनानी एवं डॉक्टरी चिकित्सा ग्रंथ की आवश्यकता ही नहीं रह जाती और इस विचार से इसे रोग-विज्ञान एवम् चिकित्सा शास्त्र कहना यथार्थ होगा।

इसमें सहस्रों आयुर्वेदीय युनानी तथा डाक्टरी के हर विषय के पारिभाषिक शब्द और समान व्याधियों के पारस्परिक भेदों (लक्षण भेद, अवस्था भेद, स्थान भेद, नामभेद, दोष भेद एवम् समय भेद आदि) की भी व्याख्या की गई है।

उपर्युक्त व्याधि भेद के अतिरिक्त कतिपय रोग के सम्बन्ध में यदि अमुक विद्वानों में मत भेद है तो उसका भी विवेचन किया है। इसी प्रकार जिस व्याधि या परिभाषा के सम्बन्ध में प्राचीन, अर्वाचीन चिकित्सकों में मत भेद है उसको भी स्पष्ट कर दिया गया है।

अखिल रोगों के आयुर्वेदीय, युनानी तथा डाक्टरी संज्ञाओं एवम् आयुर्वेद विषयक शेष अन्य परिभाषाओं और कतिपय प्रणाली ग्रंथ के सिद्धान्तों का ऐक्य स्थापित करना अत्यावश्यक एवं अत्यंत कठिन कार्य है। जो व्यक्ति चिकित्सा-शास्त्र का अभिज्ञ है, वह इसकी उपयोगिता एवं साथ ही कठिनाइयों का अनुमान करसकता है। हम चिरकाल एवं वर्षोंके कठिन उद्योग एवं अध्यवसाययुक्त अध्ययन व अनुशीलन तथा अनुसंधान के परचात् इस कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करपाए हैं। अस्तु कई सहस्र आयुर्वेदीय, युनानी तथा डॉक्टरी परिभाषाओं का परस्पर यथार्थ ऐक्य स्थापित हो गया है। सर्व प्रथम तो विभिन्न व्याधि विषयक संज्ञाओं का ही ऐक्य स्थापन करना दुःसाध्य है। किन्तु हमने प्रत्येक रोग के विभिन्न भेदोपभेद का भी ऐक्य स्थापित कर दिया है।

४—कतिपय नव्य डॉक्टरी या अमरीकीय औषधि एवं परिभाषा के लिए जो नवीन आयुर्वेदीय, अरबी, फ़ारसी तथा उर्दू संज्ञाएँ स्थिर की गई हैं, वे सब फिलोलॉजी (शब्द रचना) के नियमों पर अवलम्बित हैं। परन्तु प्रत्येक नवीन संज्ञा की रचना करते हुए मूल संज्ञा का विशेष ध्यान रखा गया है जो समग्र साहित्यिक भाषाओं में प्रचलित है।

जिस प्रकार डॉक्टरी में किसी किसी ओषधि-सत्व का नाम उस उस ओषधि के मूल नाम के सम्बन्ध से रक्खा गया है, उसी प्रकार ओषधि-सत्वों के आयुर्वेदीय तथा तिब्बी संज्ञा-निर्माण में भी उसी खूबी को ध्यान में रख कर किया गया है।

५-विरोधी सिद्धान्त—इस ग्रंथ में प्राचीन चिकित्सा-शास्त्र अर्थात् आयुर्वेदीय तथा युनानी और अर्वाचीन चिकित्सा शास्त्र अर्थात् डाक्टरी के लगभग समग्र विरोधी सिद्धान्तों पर तर्कयुक्त वैज्ञानिक एवं न्यायसंगत मत प्रदान किया गया है और उनको अत्यन्त अनुसन्धानपूर्वक एवं विस्तार से लिखा गया है। आशा है इससे वैद्य, हकीम तथा डाक्टरों के पारस्परिक विरोध का बहुतांश में निराकरण होगा और परस्पर एक दूसरे की प्रतिष्ठा और प्रेम भाजन बनेंगे। हमने उन समस्त विरोधी सिद्धान्तों को यथाशक्य अत्यन्त गवेषणा के साथ लिखा है।

६-इतिहास—इसमें ब्रह्मा एवं धन्वन्तरि भगवान् से लेकर आज पर्यन्त प्रायः सभी प्रमुख आयुर्वेदीय, चीनी, बाबिली, मिश्री, युनानी, अरबी और यूरूपीय चिकित्सकों की खोजपूर्ण जीवनी लिखी है।

७-विभिन्न भाषाओं का कैटेलॉग—भिन्न भिन्न भाषा के शब्दों को नागरी लिपि द्वारा शुद्ध रूप में प्रगट करने के लिए एक वृहत् कैटलॉग तैयार किया गया था, किन्तु टाइप के अभाव के कारण उसे यथेष्ट रूप में प्रकाशित न किया जा सका। उसका एक छोटा सा अंश जिसमें तीन भाषा के टाइपों का संक्षिप्त परिचय है, "वर्ण-बोधिनी तालिका" नाम से इस पुस्तक के साथ लगाया गया है।

उपर्युक्त संक्षिप्त परिचय मात्र का अवलोकन कर पाठकों को वर्तमान ग्रंथ की विशालता का अनुभव तो अवश्य हो ही गया होगा। अब प्रश्न होता है कि इतने भावों से परिपूर्ण ऐसे विशद ग्रंथ का "आयुर्वेदीय कोष" जैसा लघु नाम क्यों रक्खा गया?

उत्तर में केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि आयुर्वेद शब्द का जो संकुचित अर्थ आज कल प्रायः लोग लेते हैं, उतने संकुचित अर्थों में उक्त शब्द का प्रयोग किया जाना हमें अभीष्ट नहीं। हम तो इसे उसी व्यापक अर्थ में प्रयुक्त करना उचित समझते हैं, जिसमें हमारे ऋषि पुरुषों एवं आयुर्वेदिक पंडितों ने आज से कई सहस्र वर्ष पूर्व किया है। अस्तु, सुश्रुत महाराज इसकी निरुक्ति इस प्रकार लिखते हैं:—

आयुरस्मिन् विद्यते, अनेन वा आयुर्विन्दतीत्यायुर्वेद इति।

अथवा (सु० सू० १ अ०)

आयुर्हिता हितं व्याधेः निदानं शमनं तथा।
विद्यते यत्र विद्वद्भिः स आयुर्वेद उच्यते॥

अथवा

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानञ्च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते॥ च० सू०॥

अब आप ही बतलाएँ कि आयु संरक्षणार्थ एवं स्वास्थ्य सम्पादनार्थ कौन सा ऐसा विषय है-फिर चाहे वह आयुर्वेदीय, युनानी तथा डाक्टरी ही क्यों न हो-जिसका समावेश आयुर्वेद शब्द के अन्तरगत नहीं होता। आयुः संरक्षण एवं प्रकृत-साम्य-सम्पादन के प्रायः सभी व्यापक प्राकृतिक नियमों का समावेश आयुर्वेद के अन्तर्गत हो सकता है। इसी बात को ध्यान में रख कर इसके अंगरेजी नाम (An Encyclopædical Ayurvedic-dictionary) की कल्पना हुई है।

अब पाठकों को यह भली प्रकार ज्ञात हो गया होगा कि यह कितना भाव गर्भित शब्द है। यही कारण है कि अनेक अन्य बड़े आडम्बरपूर्ण शब्दों के होते हुए भी इसीको क्यों पसन्द किया?

इतनी विशेषताओं के होते हुए भी इसमें प्रकाशन सम्बन्धी एवं अन्य बहुतः त्रुटियां भी रह गई हैं, जो हमको स्वयं असह्य हो रही हैं; परंतु वर्तमान परिस्थिति में उनका निवारण करना हमारी शक्ति से बाहर था।

अस्तु उनके लिए हम सहृदय एवं विज्ञ पाठकों के क्षमा प्रार्थी हैं और आशा है कि वे हमें उनसे सूचित करने की विशेष दया करेंगे, जिससे आगामी संस्करण एवं खंड में उन्हें सुधार दिया जाए।

अंत में हम पं० विश्वेश्वरदयालु जी वैद्यराज सम्पादक अनुभूत योगमाला के सदैव कृतज्ञ हैं और हृदय से धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस महान् कार्य में हमारे हाथ बटाने में अदम्य उत्साह एवं लोक सेवा का परिचय दिया है। यह आप ही ऐसे देश सेवी एवं महत्वाकांक्षी धीर पुरुष का काम है, जिन्होंने लाभालाभ वा सफलता असफलता का अंश मात्र भी विचार न करते हुए निर्भय होकर अपने को कार्यक्षेत्र में डाल दिया। अतः परम पिता परमात्मा से हम आपको दीर्घायु एवं सफलता प्रदान करने के लिए हृदय से प्रार्थना करते हैं।

इसके पश्चात् हम अपने गुरुवर कविकुल भूषण पूज्य पाद श्री पं० महादेव मिश्र (चुनार) को हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिनके अनुग्रह से यह कोष सफलता प्राप्त कर सका।

अपने स्नेही मित्र डाक्टर मुहम्मद शफी से इस कोष के संकलन में हमको काफी सहायता मिली है और समय समय पर उचित परामर्श देकर एवं उत्साह वर्द्धन कर इस महान् कार्य के पूर्ण करने में आपने जो मेरी सहायता की है उसके लिए हम आपके हृदय से कृतज्ञ हैं।

और भी जिन जिन ग्रंथ एवं लेखों से तथा और भी किसी से किसी प्रकार की हमको कुछभी सहायता मिली हो, उसके लिए हम उन उनके लेखक महोदयों के हृदय से कृतज्ञ हैं।

आयुर्वेदीयानुसंधान-भवन रायपुरी, चुनार
माघ शुक्ल वसन्तपञ्चमी सम्वत् १९९० वि०

बाबूरामजीतसिंहजी वैद्य,
बाबूदलजीतसिंहजी वैद्य

आयुर्वेदीय-कोष के सम्बन्ध में कुछ प्रमुख विद्वानों की सम्मतियाँ।

श्रीश्री गौरकृष्ण शरणम्

सन्माध्वसम्प्रदायाचार्य दार्शनिकसार्वभौम साहित्य दर्शनाद्याचार्य तर्करत्न न्यायरत्न गोस्वामि दामोदर शास्त्री,

अष्टाङ्गाम्रेडभाजां सनियमकलितादभ्रवस्तुप्रभाव,
प्रोद्यद्वानेकचेष्टाप्रवणितहृदयाभिख्य शारीरिकाणाम्।
ख्याप्युल्लसच्छुभ्रगगनशरक्ष्मा व्योमभूमानजुष्टै,
रायुर्वेदीयकोषः प्रमदमकृत नोऽकारपूर्वैश्च शब्दैः।

अर्थ—अपने अपने गुणों के साथ बहुत सी औषधियों के प्रभावों को बतलाने में यथोचित यत्न करनेवाले पण्डित और वैद्यकशास्त्र के अष्टाङ्गों का विशेष परिशीलन करनेवाले वैद्यों की योग्यता को प्रकाशित करने वाले दश हजार ढाई सौ अकारादि शब्दों से युक्त आयुर्वेदीय-कोष ने हमको हर्षान्वित किया।

इह किलेटावाप्रान्तस्थबरालोकपुरतः प्रकाशितायुर्वेदीयकोष प्रथमखण्डमकारादिकाशातपद्मान्त सार्द्धशतद्वयाधिक दशसहस्रशब्दाढ्यमवलोक्य जिज्ञास्वामयाविजनतासन्तोषश्च नामतोऽवधाय विनिर्णीय चागदङ्कार वयसध्रीचीनताम परेषामप्यलङ्कर्मीणतां विनिश्चिन्वन् प्रसाद्यमान मानसोऽदसोयपरिपूर्णताममन्तरायां जगदीश्वरमभ्यर्थयमानो विरमति मुधाविस्तरादितिशम्।

चैत्र शुक्ल तृतीयायां, १९९० वैक्रमाब्दे, काश्याम्।

अर्थः—वर्तमान समय में इटावा जिले के प्रसिद्ध बरालोकपुर से प्रकाशित आयुर्वेदीय कोष के अकारादि अशातपद्मान्त दश हजार ढाई सौ शब्दों से सुशोभित प्रथम खण्ड को देखकर और यह समझ कर कि इससे जिज्ञासु रोगियों को संतोष होगा, वैद्य समूह को सहायता मिलेगी, एवं औरों के प्रति इसकी उपयोगिता का निश्चय करता हुआ और प्रसन्न मन से जगदीश्वर के निकट उक्त कोष की निर्विघ्न पूर्णता की प्रार्थना करता हुआ वृथा विस्तार से विरत होता हूँ।

श्री चरकाचार्य काशी हिन्दू विश्वविद्यालयायुर्वेद कालेजाध्यक्ष श्री धर्मदास कविराजः।

नूनमिटावाप्रान्तीय बरालोकपुर पत्तनीय श्री विश्वेश्वर दयालु शर्ममुद्रापितः श्री मङ्गलजीतसिंह रामजीतसिंहाभ्यामभिनिर्मित संस्कृताद्यनेक भाषासमलङ्कृतः कोषश्चिकित्सक जनानाम्परमोपकारकोवरीवर्तिमन्येयंसम्प्रतिनिरुपमस्संवृत्त इति प्रमाणयति।

पौष शुक्ल १, गुरौ सं० १९९०।

—व्याकरण-साहित्यशास्त्री आयुर्वेदाचार्य भिषगाचार्यभिषक्शिरोमणि—विद्यावारिधि श्री सत्यनारायण शास्त्री महोदयस्य सम्मतिः—

कौबेर कोषइव सर्व गिरोद्गृतोयो—
ऽयंत्रसर्जाति भिषजामुपकारकोषै ॥
श्री रामजीत दलजीतपदाभि धाभ्याम् ।
सश्रन्मुदा विरचितो ह्युपमा विहीनः ॥ १ ॥
यश्चामरप्रभृति कोपकृतस्समग्रान् ।
सञ्चायजुष्ट मदनादिकृतीन जस्त्रम् ॥
भालास्वकेन परिभाष्यवचा च कास्ति ।
सोऽयसदा विजयताञ्जवतांसुकोषः ॥ २ ॥
बरालोकपुरस्थेन, विश्वेश्वरदयालुना ।
मुद्रापितोऽन्वयं कोषो, भिषजामुपकारकः ॥ ३ ॥
इति प्रमाणी कुरुते, सत्यनारायणाभिधः ।
वाराणस्यामगस्तस्य, पत्तनोयश्चिकित्सकः ॥ ४ ॥

पौष शु० १२ गुरौ श्री सं० १९९०।

Bhim Chandra Chatterjee,

B. A., B. L., B. Sc., M. I. E. E., M. I. E. (India)

PATIALA PROFESSOR

&

Head of the department of Electrical engineering,

ENGINEERING COLLEGE.

Benares Hindu University.

I have gone through some part of Ayurveda-kosha vol. I. by Babu Ramjit Singh ji Vaidya and Babu Daljit Singh ji Vaidya. It seems to be a very laudable undertaking at this opportune moment. The compilors must have taken great pains for collecting the materials. It will be very useful for the hindi speaking public. I wish the compilors would be more intensive rather than extensive and serve the cause of our country.

Dated Benares, the 14 th Jan. 1934.

Gopinath Kaviraj

principal

GOVERNMENT SANSKRIT COLLEGE,

Benares.

I have glanced through the pages of the so called "Ayurvedic kosha" (Vol. I.). Dictionary of words used in Ayurvedic, Unani and Allopathic systems of medicine, compiled by Vaidyas Ramjita Sinha and Daljita Sinha. From what I have seen of the work it has impressed me as a very valuable and useful production of an encyclopædic character and there is no doubt that the Hindi literature, in fact the general medical literature of India, has been enriched by this publication. The compilors have drawn upon original and standard works,so far as the Ayurvedic section is concerned, and it is hoped that it they keep themselves uptodate in case of the subsequent volumes and have an eye on accuracy and thoroughness they will be rendering a great service to the cause of medical literature and profession in India. The work involves a tremendous amount of labour and is well worthy of generous patronage from the public. 17 / 1 / 1934

वर्ण क्रम

इस कोष में समस्त भाषा के शब्द देवनागरी वर्णमाला के क्रमानुसार रखे गए हैं। अरबी, फ़ारसी आदि अन्य भाषाओं के एक ही वर्ण के समानोच्चारण वाले कई कई वर्ण यथा हिन्दी के केवल एक "ज" के स्थान में फ़ारसी के जीम, ज़ाल, ज़े, ज़े, ज़ाद, और ज़ो प्रभृति अनेक "ज" के लिए क्रम में कोई भेद स्थिर नहीं किया गया है; वरन् "ज" मान कर ही उन्हें हिन्दी वर्णक्रम में स्थान दिया गया है। शेष अन्य समस्त वर्णों के लिए भी इसी भाँति समझ लेना चाहिए। चूँकि देवनागरी वर्णमाला अन्य किसी भी भाषा की वर्णमाला की अपेक्षा अधिक पूर्ण एवं स्वाभाविक है और उसमें इतनी पर्याप्त ध्वनियों का समावेश है, कि अन्य किसी भी भाषा की ध्वनि को हिन्दी वर्णों द्वारा प्रकट करने में कोई अड़चन उपस्थित नहीं होती। अन्य भाषा में जो विशेष ध्वनियाँ आई हैं वे या तो एक ही ध्वनि के भेदोपभेद मात्र हैं अथवा वे इतनी आवश्यक नहीं और उनका समावेश अपनी मूल ध्वनि में हो सकता है। अतः देवनागरी वर्णक्रम में कोई परिवर्तन करना हमें उचित न जान पड़ा। हाँ! जो एक एक वर्ण के स्थान में कई कई वर्ण आए हैं उन्हें अथवा उनके किसी विशेष उच्चारण को स्पष्ट करने के लिए कुछ चिह्न मान लिए गए हैं। जिसके लिए वर्ण (लिपि तथा उच्चारण) निर्णायक सूची का अवलोकन करिए। वर्णक्रम निम्न है —

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ
ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ।
ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न।
प फ ब भ म। य र ल व श
ष स ह क्ष त्र ज्ञ



संकेत सूची

संकेत	पूर्ण रूप
अ०	अध्याय
अ०	अरबी भाषा
अक० आ०	अक्सीर आज़म
अक० कु०	अक्सीरी कुश्ताजात
अगु० तैल	अगुर्व्वादि तैल
अग्निमां०	अग्निमांद्य
अ० च०, अरो०	अरोचक
अ० चौ०	अपची
अज०	अजमेर
अजी०	अजीर्ण
अ० टी० नी०	अमरटीका नीलकंठ
अ० टी० भ०	अमरटीका भरत
अ० टी० भा०	अमरटीका भानुदत्त
अ० टी० म०	अमरटीका मथुरेश
अ० टी० र०	अमरटीका रमानाथ
अ० टी० रा०	अमरटीका रामसुकुल
अ० टी० रामा०	अमरटीका रामाश्रम
अ० टी० सा०	अमरटीका सारसुन्दरी
अ० टी० सुभूति० स्वा०	" सुभूति स्वामी
अ० टी० स्वा० (-मी)	" क्षीर स्वामी
अण्ड०	अण्डमन
अथ०, अथर्व०	अथर्ववेद (अथर्वण)
अ० दर	असृग्दर
अनु०	अनुकरण शब्द
अनु० (-पा०)	अनुपान
अने०	अनेकार्थनाम माला
अने० व०	अनेकार्थ वर्ग
अनं० र०	अनंग रस
अन्द०	अन्दलुसी (Spanish)
अम्लद्र० (व०) मू०	अम्लद्रवमूल
अप०	अपभ्रंश
अप० (-स्मा०)	अपस्मार
अ० पि०	अम्लपित्त
अफ़०	अफ़ग़ानी
अभि० (-न्या०) ज्व०	अभिन्यास ज्वर
अभि० निघ०	अभिनव निघण्टु (भाग १ व २)
अम०	अमरकोष
अमृ० सा०	अमृतसागर
अरुण०, अरु० द०	अरुणदत्त
अर्क०, (रावण)	अर्क प्रकाश (रावणकृत)
अर्क० चि०	अर्क प्रकाश चिकित्सा
अर्कादि०	अर्कादिवर्ग
अर्द्ध मा०	अर्द्धमागधी
अर्द्धा० भे० (अर्द्धा०)	अर्द्धावभेद
अल०	अलसक
अल्पा०	अल्पार्थक प्रयोग
अल्फ़० अ०	अल्फ़ाज़ुल् अद्वियह
अ० वृ०	अन्त्रवृद्धि
अव०	अवध
अव्य०	अव्यय
अ० शा०	अष्टांगशारीरम्
अश्म० (-री)	अश्मरी
अष्टां० सं०	अष्टांग संग्रह
अ० हृ०	अष्टांग हृदय
अ० (-अति,-ती) सा०	अतीसार
अत्रि०	अत्रि संहिता
आ०	आरबीय
आप्टे० सं० इं० डि०	आप्टे संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी
आ० प्र०	आयुर्वेद प्रकाश
आम०,वा०, आ० वा०	आमवात
आमा=तीसा०	आमातीसार
आ० व०, आम्र० व०	आम्रवर्ग
आरो० वि०	आरोग्यविधान
आ० वि०	आयुर्वेदविज्ञान
आसा०	आसामी
आ० सू०	आपस्तम्भ सूत्र
इं० (-न्द्रिय)	इन्द्रिय स्थान
इं०	इंग्लिश (आंग्ल, अंग्रेज़ी)

इ० इ०	इम्पीरियल इण्डिया
इलि० था०	इलियासान थार्डीश
इर०	इरेली (बर्मा) भाषा
इय०	इयरानीभाषा
इला० अ०	इलाजुलगुरबा
इ० हि०	इसरार हिकमत
इं० डु० इं०	इण्डिजनस ड्रग्स ऑफ इण्डिया (आर० एन० चोपरा एम०, ए०; एम० डी० कृत)
इं० फर्मा०	इण्डियन फर्मास्युलर
इं० बाज़ा० (भा० बा०)	इण्डियन बाज़ार (भारतीय बाज़ार)
इं० व्यापा० शा० } इं० व्या० }	इंद्रियव्यापार शास्त्र (मराठी)
इं० मे० प्लां०	इण्डियन मेडिसिनल प्लांट्स (कर्नल बी० डी० बसु कृत)
इं० मे० मे०	इण्डियन मेटीरिया मेडिका (डॉ० के० एम० नदकारणी कृत)
इं० हैं० गा०	इण्डियन हैंडबुक ऑफ गार्डेनिङ्ग
उ०	उत्तरखंड, उत्तरतन्त्रम्, उदरम्
उड़ि०	उड़िया
उणा०	उणादि
उत्०	उत्कल
उ० दं०	उपदंश
उदय०	उदयपुर
उद० चन्द्र०=	उदयचन्द्र दत्त मेटीरिया मेडिका
उदा०, उ० व०	उदावर्त
उदाह०	उदाहरण
उन्मा०	उन्माद
उप०	उपसर्ग
उ० प० भा० (सू०)	उत्तरी पश्चिमी भारत (सूबा) (N. W. P.)
उभ०	उभयलिंग
उ० बर्मा०	उत्तरी बर्मा
उर्० (उ०)	उर्दू
उ० रस० व०	उपरसवर्ग
उ० स्तं०	उरुस्तम्भ
ए० व०	एक वचन
एकार्थ०	एकार्थवर्ग
ए० को०	एकाक्षर कोष
एन्स० (ह्वि०) मे० मे०	एन्सलीज़ (सर ह्विटला) मेटीरिया मेडिका
एलादि०	एलादिवर्ग
ओ० रो०	ओष्ठ रोग
औ० सं०	औषधि-संग्रह (डॉ० वामनगणेश देसाई कृत मराठी ग्रंथ)
औ० वि०	औषधि विज्ञान (डॉ० वर्मा कृत)
अं०	अँगरेज़ी भाषा
क०	कर्णाट, कर्णाटक
कच्छ०	कच्छी
कछु०	कछार
कटिवा०	कटिवात
कण्ठ० मु० रो०	कण्ठगत मुख रोग
कना०	कनाडी
कमा० (कु—)	क(कु)मायूँ
कर०	करनाटकी
क़रा० का०	क़राबादीन कादरी
क़रा० शि०	क़राबादीन शिफ़ाई
क़रा० सि०	क़राबादीन सिकन्दरी
कर्ण० रो०	कर्ण रोग
कल्प०	कल्पस्थान
क० व०	कर्पूर वर्ग
कां०	कांगड़
काङ्कायन० गु०	काङ्कायन गुटी
काठिया०	काठियावाड़
का० पुराण	कालिका पुराण
काम०	कामला
का० र०	काम रत्नम्
काश०	काश्मीरी
काश० रु० की०	काशफुर्रमूज़ कीमिया
का० सू०	कामसूत्र (वात्सायन)
किता० की०	किताबुल् कीमिया
कों०	कोंकड़
क्रि०	क्रिया
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक
क्ली०	क्लीव (नपुंसक) लिङ्ग

संक्षेप	पूर्ण रूप
कु० (कुम्भ०) का०	कुम्भ कामला
कु० टी०, कुसामा०	कुसुमावली टीका
कु० नफ़ी०	कुल्लियात नफ़ीसी
कुमा० तं०	कुमारतन्त्र
कुश्ता० र०	कुश्ताजात रहीमी
कुर्ग० (कु०)	कुर्ग
कुश्ता० फ़ी०	कुश्ताजात फ़ीरोज़ी
कौ० अ०	कौटिल्य अर्थशास्त्र
कौ० भृ०	कौमार भृत्य
कौं०	कोंकण देश की भाषा (कोंकणी)
क्व०	क्वचित् अर्थात् इसका प्रयोग बहुत कम देखने में आता है।
ख०	खसिया
खुला० न०	ख़ुलासतुत्तफ़ाइस
खं०	खंड
ग० गं०	गलगंड
ग०	गण
गढ़०	गढ़वाल
गज़० वै०	गज वैद्यक
ग० नि०	गद निग्रह
ग० मा०	गण्ड माला
गा०	गारो
गि० लु०	गियामुल्लुग़ात (हिन्दुस्तानी फ़ारसी अरबी लोग़ात)
गु०	गुटी (–की)
गुदभ्रं०	गुदभ्रंश
गुर्ज०, गु० (गुज०)	गुर्जरी, गुजराती
गु० व०	गुडूच्यादि वर्ग
गो०	गोआ
गोंड़०	गोंडल, गोंडाली
गंगा० परि०	गंगाधर परिभाषा
ग्र०	ग्रह
ग्रह०	ग्रहणी
ग्रो० (यु०)	ग्रीक (युनानी)
घो० मे० मे०	घोनेज मेटेरिया मेडिका
च०	चनाव
चक्र० (च) द०	चक्रदत्त (चिकित्सा), चक्रपाणि दत्त द्रव्यगुण
च० द० (सं०)	चक्रपाणिदत्त कृत संग्रह
चन्द्० तै०	चन्दनादि तैल
च० वि०	चरक विमान स्थान
च० सं०	चरक संहिता
चातु० ज्व०	चातुर्थक ज्वर
चाँ०	चाँदा
चि०	चिकित्सा स्थान
चि० क०	चिकित्सा कलिका
चि० क्र० क० (–वल्ली)	चिकित्सा क्रम कल्पवल्ली
चिट०	चिटगाँव
चि० सा०	चिकित्सासारः
ची०	चीनी
चू०	चूर्ण
छे० शा०	छेदनशास्त्र
छो०	छोटा
छो० ना०	छोटा नागपुर
ज़ख़ी० ख़ा०	ज़ख़ीरहे ख़्वारिज़्मशाही
जटा०	जटाधर
जन्तु० शा०	जन्तु शास्त्र
जय० द्०	जयदत्त
जर०	जरमनी
जय०	जयपुर
जा०	जावा
जापा०	जापान
जावा०	जावा देश की भाषा
जं०	जंगली
ज्यो०	ज्योतिष
ज्व०	ज्वर
ज्वराति०	ज्वरातिसार
झेल०	झेलम
ड्रां इं०	ड्राम इण्डम
टी०	टीका
ड०	डल्वण
डल्ल०	डल्लन मिश्र
डि० मे०	ए डिक्शनरी ऑफ़ मेडिसिन रिचार्ड क्वैन एम० डी०, एफ़० आर० एस० कृत।
डिं०	डिंगल भाषा
डे०	डेकन
डू०	डॉक्टर डूरी

संक्षेप	पूर्ण रूप
त० न०	तर्जुमा नफीसी फ़ने सानी इल्मुल् अद्वियह्
तश० क०	तशरीह् कबीर
ता० (तामि०)	तामिल
तालु० मु० रो०	तालुगतमुखरोग
ता० श०	तालीफ़ शरीफ़ी
ति० अ०	तिब्बे अक्बरी
ति० की०	तिब्बे कीमियाई
तिब्ब०	तिब्बत
ति० फा०	तिब्बी फार्माकोपिया (१ व २ भा०)
तिर०	तिरहुत
तु०	तुलु
तुर०	तुर्की भाषा
तृ०	तृष्णा
ते०(तेल०)	तैलङ्ग, तेलगु
तै०	तैल
॥० तो०	अर्द्ध तोला
तो०	तोला (तोलक)
तोड़०	तोडरानन्द
तो० मो०	तोह् फ़तुल मोमीन
त्रि०	त्रिलिंग
त्रिका०	त्रिकाण्ड शेष
त्रिश०	त्रिशती
था० डि०	थाना डिस्ट्रिक्ट
द०	दखिनी
द० ब०	दखिनी बम्बई
द० भा०	दखिन भारत
दन्त० रो०	दन्तरोग
द० मु० रो०	दन्तगत मुखरोग
द० व०	दधिवर्ग
दश०	दशक
दा० हि०	दाक्षिणात्य हिन्दी
दु० व०	दुग्धवर्ग
दुर्गा० मे० मे०	दुर्गादासकर बङ्गला मेटीरिया मेडिका
दे०	देखो
देश०	देशज
द्रव्याभि०	द्रव्याभिधान,

संक्षेप	पूर्ण रूप
द्रावि०	द्राविड़ी
द्वि० (-रूप०)	द्विरूपकोष
ध०	धन्वन्तरि
ध० नि०	धन्वन्तरि निघण्टु
धर०	धरणिः
धा० (-न्य) व०	धान्यवर्ग
धा० वि० प्र०	धातुविद्या प्रकाश
ध्व० भं०	ध्वजभंग
न० ज०	नरपतिजयचर्या
नाना०	नानार्थ
ना० व्र०	नाडीव्रण
ना० मु०	नाफ़िउल् मुअालजीन
ना० रो०	नासारोग
ना० वि०	नाड़ी विज्ञान
ना० सं०	नावनीतक संहिता
नि०	निदान स्थान
निदा०	निदान
नि० र०	निघण्टु रत्नाकरः
ने० दृ० रो०	नेत्र दृष्टिगत रोग
ने० रो०	नेत्ररोग
ने० व० रो०	नेत्र वर्त्मगत रोग
ने० शु० रो०	नेत्र शुक्लगत रोग
ने० सन्धि० रो०	नेत्र संधिगत रोग
नैपा०	नैपाल
न्या० वै०	न्याय वैद्यक
पं०	पञ्जाब (बी) भाषा, (गुरमुखी)
प०	पल; परिच्छेद
पट०	पटना
प० नि० ना०	पर्याय-निर्णायक नोट
प० प०	पथ्यापथ्य
प० प्र०	परिभाषा प्रदीप
प० म०	परमद
पर्या०	पर्याय
पहा०	पहाड़ी
पश्तुः, पश्तु	अफ़गानी भाषा
पा०	पाली भाषा
पा० अजी०	पानाजीर्ण
पा० व०	पाकावली

संक्षेप	पूरा नाम
कु० (कुम्भ०) का०	कुम्भ कामला
कु० टी०, कुसामा०	कुसुमावली टीका
कु० नफ़ी०	कुल्लियात नफ़ीसी
कुमा० तं०	कुमारतन्त्र
कुश्ता० र०	कुश्ताजात रहीमी
कुर्गी० (कु०)	कुर्गी
कुश्ता० फ़ी०	कुश्ताजात फ़ीरोज़ी
कौ० अ०	कौटिल्य अर्थशास्त्र
कौ० भृ०	कौमार भृत्य
कों०	कोंकण देश की भाषा (कोंकणी)
क्व०	क्वचित् अर्थात् इसका प्रयोग बहुत कम देखने में आता है।
ख०	खसिया
खुला० त०	ख़ुलासतुत्तजारिब
खं०	खंड
ग० गं०	गलगंड
ग०	गया
गढ़०	गढ़वाल
गज० वै०	गज वैद्यक
ग० नि०	गद निग्रह
ग० मा०	गरुड़ माला
गा०	गारो
गि० लु०	गियासुल्लुग़ात (हिन्दुस्तानी फ़ारसी अरबी लोग़त)
गु०	गुटी (-की)
गुद्भ्रं०	गुदभ्रंश
गुर्ज०, गु० (गुज०)	गुर्जरी, गुजराती
गु० च०	गुडूच्यादि वर्ग
गो०	गोआ
गोंड०	गोंडल, गोंडाली
गंगा० परि०	गंगाधर परिभाषा
ग्र०	ग्रह
ग्रह०	ग्रहणी
ग्री० (यु०)	ग्रीक (युनानी)
घो० मे० मे०	घोपेज मेटेरिया मेडिका
च०	चनाब
चक्र० (च) द०	चक्रदत्त (चिकित्सा), चक्रपाणि दत्त द्रव्यगुण
च० द०,(सं०)	चक्रपाणिदत्त कृत संग्रह
चन्द० तै०	चन्दनादि तैल
च० वि०	चरक विमान स्थान
च० सं०	चरक संहिता
चातु० ज्व०	चातुर्थक ज्वर
चाँ०	चाँदा
चि०	चिकित्सा स्थान
चि० क०	चिकित्सा कलिका
चि० क्र० क० (-वल्ली)	चिकित्सा क्रम कल्पवल्ली
चिट०	चिटगाँव
चि० सा०	चिकित्सासारः
ची०	चीनी
चू०	चूर्ण
छे० शा०	छेदनशास्त्र
छो०	छोटा
छो० ना०	छोटा नागपुर
ज़ख़ी० ख़ा०	ज़ख़ीरहे ख़्वारिज़्मशाही
जटा०	जटाधर
जन्तु० शा०	जन्तु शास्त्र
जय० द०	जयदत्त
जर०	जरमनी
जय०	जयपुर
जा०	जावा
जापा०	जापान
जावा०	जावा देश की भाषा
जं०	जंगली
ज्यो०	ज्योतिष
ज्व०	ज्वर
ज्वराति०	ज्वरातिसार
झेल०	झेलम
ट्रां० ई०	ट्रांस इण्डस
टी०	टीका
ड०	डल्वण
डल्ल०	डल्लन मिश्र
डि० मे०	ए डिक्शनरी ऑफ़ मेडिसिन रिचार्ड क्वेन एम० डी०, एफ़० आर० एस० कृत।
डिं०	डिंगल भाषा
डे०	डेकन
डू०	डॉक्टर डूरी

संक्षेप	पूर्ण रूप
त० न०	तर्जुमा नफ़ीसी
	क़ने स.ानी इल्मुल् अद्वियह्
तश० क०	तशीह् कबीर
ता० (तामि०)	तामिल
तालु० मु० रो०	तालुगतमुखरोग
ता० श०	तालीफ़ शरीफी
ति० अ०	तिब्बे अक्बरी
ति० कीं०	तिब्बे कीमियाई
तिब्ब०	तिब्बत
ति० फा०	तिब्बी फार्माकोपिया (१ व २ भा०)
तिर०	तिरहुत
तु०	तुलु
तुर०	तुरकी भाषा
तृ०	तृष्णा
ते०(तेल०)	तैलङ्ग, तेलगु
तै०	तैल
॥० तो०	अर्द्ध तोला
तो०	तोला (तोलक)
तोड़०	तोडरानन्द
तो० मो०	तोह् फ़तुल मोमीन
त्रि०	त्रिलिंग
त्रिका०	त्रिकाण्ड शेष
त्रिश०	त्रिशती
था० डि०	थाना डिस्ट्रिक्ट
द०	दखिनी
द० ब०	दखिनी बर्मा
द० भा०	दखिन भारत
दन्त० रो०	दन्तरोग
द० मु० रो०	दन्तगत मुखरोग
द० व०	दधिवर्ग
दश०	दशक
दा० हिं०	दाक्षिणात्य हिन्दी
दु० व०	दुग्धवर्ग
दुर्गा० मे० मे०	दुर्गादासकर बङ्गला मेटीरिया मेडिका
दे०	देखो
देश०	देशज
द्रव्याभि०	द्रव्याभिधान
द्रावि०	द्राविणी
द्वि० (-रूप०)	द्विरूपकोष
ध०	धन्वन्तरि
ध० नि०	धन्वन्तरि निघण्टु
धर०	धरणिः
धा० (-न्य) व०	धान्यवर्ग
धा० वि० प्र०	धातुविद्या प्रकाश
ध्व० भं०	ध्वजभंग
न० ज०	नरपतिजयचर्या
नाना०	नानार्थ
ना० प्र०	नाडीप्रश
ना० मु०	नामिह्ल् मुशालजीन
ना० रो०	नासारोग
ना० वि०	नाड़ी विज्ञान
ना० सं०	नावनीतक संहिता
नि०	निदान स्थान
निदा०	निदान
नि० र०	निघण्टु रत्नाकरः
ने० दृ० रो०	नेत्र दृष्टिगत रोग
ने० रो०	नेत्ररोग
ने० व० रो०	नेत्र वर्त्मगत रोग
ने० शु० रो०	नेत्र शुक्लगत रोग
ने० सन्धि० रो०	नेत्र संधिगत रोग
नैपा०	नैपाल
न्या० वै०	न्याय वैद्यक
पं०	पञ्जाब (बी) भाषा, (गुरुमुखी)
प०	पत्र; परिच्छेद
पट०	पटना
प० नि० नो०	पर्याय-निर्णायक नोट
प० प०	पथ्यापथ्य
प० प्र०	परिभाषा प्रदीप
प० म०	परमद
पर्या०	पर्याय
पहा०	पहाड़ी
पश्तुः, पश्तु	अफ़ग़ानी भाषा
पा०	पाली भाषा
पा० अजी०	पानाजीर्ण
पा० व०	पाकावली

पि० ज्व०	पित्तज्वर
पि० व०	पिप्पल्यादिवर्ग
पी० बी० एम०	प्रैक्टिशनर्स वेडमीकम्
पुं०	पुंलिंग
पुर्त०	पुर्तगालीभाषा
पु० व०	पुष्पवर्ग
पु० हिं०	पुरानी हिन्दी
पू०	पूर्व खंड, पूर्व भाग
पू० भा०	पूर्वीय भारत
पू० त०	पूर्वीय तराई
पू० हिं०	पूर्वी हिन्दी
पो० बं०	पोरबन्दर
प्र०	प्रत्येक, प्रयोग, प्रमाराणी
प्रत्य०	प्रत्यय
प्रमे० (ह्र:)	प्रमेह
प्रयोगरत्न०	प्रयोगरत्नाकर
प्रयोगा०	प्रयोगामृत
प्र० शा०	प्रत्यक्ष शारीरम् (म० म० क० गणनाथसेन विरचित)
प्रसू० तं०	प्रसूति तंत्र
प्रसू० शा०	प्रसूति शास्त्र
प्रह०	प्रहर
प्रा०	प्राकृत भाषा
प्ले०	प्लेग
फ० व०	फलवर्ग
फ़ा०	फ़ारसी भाषा
फा० इं०	फार्माकोग्राफिया इंडिका (डॉ० वि० डाइमॉक विरचित) १, २, ३, भा०
फ़ार्बी०	फ़ॉर्बीज़ हिंदी अँगरेजी कोष
फ़िं०	फ़िरंगी
फ्रं० (फ्रां० या फ०)	फ्रेन्च (फ़रासीसी भाषा)
ब० (बहु) व०	बहुवचन
ब०, ब० (बर०)	बरमा (बरमी) भाषा
बम्ब०	बम्बई
बरब०	बरबरी
ब० ज०	बह्‌रूल्‌ जवाहिर (अरबी वैद्यक कोष)
बं० से० सं०	बंगसेन संहिता
बं० क०	बन्ध्या कल्पद्रुम
बं०, बङ्ग०	बंगलाभाषा या बंगाल (–ली)
बुं० खं०	बुंदेलखंड की बोली
बु० मु०	बुस्तानुल् मुफ़र्दात्
बु० फ़ा०	बुर्हाने क़ातीअ
बृ० सं०	बृहत्संहिता (वराह मिहिर संहिता)
बृ० यो० त०	बृहद्योग तरंगिणी
बेरा०, बे०	बेरार, बेलूची
बोम्बा०	बोम्बारा
बुन्देल०	बुंदेलखंड
ब्रिटि० फा० (बी० पी०)	ब्रिटिश फार्माकोपिया
ब्या० क०	ब्याज कबीर (१, २, ३ भाग)
भन०	भन्न्दर
भ० द्विरूप-को०	भरतद्विरूप कोष
भ० रअस०	भरतद्युत रभस
भल्ला० गुड़	भल्लातक गुड़
भा०	भाग, भारत, भावप्रकाश
भा० पू०	भावप्रकाश पूर्व भाग
भा० प्र०	भावप्रकाश
भा० भै० र०	भारत भैषज्य रत्नाकर
भा० म०	भावप्रकाश मध्यभाग
भा० र० शा०	भारतीय रसायन शास्त्र (डॉ० वामन गणेश देशाईकृत मराठी ग्रंथ)
भू० उन्माद०	भूतोन्माद
भूटा०	भूटानी
भूरि० प्र०	भूरिप्रयोग
भे० सं०	भेल संहिता
भैष० (भै० र०)	भैषज्य रत्नावली
भौ० वि०	भौतिक विज्ञान (सम्बन्धी)
म०, मह०	महाराष्ट्र, मोडी, (मराठी)
म० अ०	मख्ज़नुल्अद्‌विय्‌ह् (हकीम मीरमुहम्मद हुसेन विरचित)
म० अक०	मख्ज़नुल् अक्सीर
म० अ० डॉ०	मख्ज़नुल्अद्‌विया डॉक्टरी
म० खं०	मध्य खण्ड
म० ज०	मख्ज़नुल् जवाहर या तिब्बी व डॉक्टरी लुगात
मद०	मद्रास

मदन० निघ०	मदनपाल निघण्टु
मधु०	मधुमती टीका
मधुमे० (म० मे०)	मधुमेह
मनी०	मनीपूर
म० प्र०	मध्यप्रदेश
म० मु०	मख़्ज़नुल् मुफ़र्दात
मय०	मयमूर
मरा०	मराठी
मल०	मलयाली
मला०	(मलायम भाषा) मलायीज़
मसू०	मसूरिका
मद्र०	मदरासी
महा० बा०	महाबालेश्वर
मा०	भाषा
मा० अक्०	मादनुल् अक्सीर
मा० नि०	माधव निदान
मान० श० र०	मानव शरीर रहस्य (१ व २ भाग)
माला०	मालाबार
मि०	मिश्री भाषा
मि० ख़०	मिफ़्ताहुल् ख़ज़ाइन दर बयान अक्सीर व रसायन (हकीम करीमबख़्शकृत)
मिश्र०	मिश्रकाध्याय
मुग०	मुगली
मु०	मुर
मु० अ०	मुहीत अअ़ज़म
मु० रो०	मुखरोग
मुङ्गे०	मुङ्गेर
मुनाफ़ा० क०	मुनाफ़ा कबीर
मुन्त० अ०	मुन्तख़बुल अद्वियह्
मुन्त० लो०	मुन्तख़बुल लोग़ात
मुफ़० नि०	मुफ़र्दात् दर आलम निद्य
मुफ़० मो०	मुफ़र्दात् मोमीन
मुफ़० सिकं०	मुफ़र्दात् सिकन्दरी
मुहा०	मुहाविरे
मू० कृ०	मूत्रकृच्छ्र
मू० घा०	मूत्राघात
मू० र०	मूत्ररक्त
मे०	मेथी
मे० मे०	मेटीरिया मेडिका (डॉ मोहीद्दीन शरीफ़ कृत)
मेदि०	मेदिनी
मेमो०	मेमॉरैण्डम ऑफ़ द प्राडक्ट्स एण्ड अदर पार्टीक्युलर्स ऑफ इण्डियन ऐकोनॉमिक्स।
मेवा०	मेवाड़
यम०	यमनी (पू०)
यु०, यू०	यूनानी भाषा
योग० र०, यो०	योग रत्नाकर
यो० चि०	योगचिन्तामणि
यो० तरं०	योगतरंगिणी
यो० र०	योगरत्नाकर
यौ०	यौगिक तथा दो या अधिक शब्दों के पद
यो० (नि०) व्या० रो०	योनि व्यापत्
र०	रञ्जिका
र० आ०	रसार्णवः
रक्ताति०	रक्तातिसार
र० खं०	रसायन खण्डम्
र० चं०	रस चण्डांशुः
र० चिं०	रसेन्द्र चिन्तामणिः (ढुण्ढुकनाथ विरचितः)
र० त०	रसतरंगिणी
रत्ना०	रत्नावली
र० पि०	रक्तपित्त
र० प्र० सु०	रसप्रकाश सुधाकरः
र० मं०, रस० मं०	रसमञ्जरी
र० मा०	रत्नमाला
र० मा० सं० (-ग्रह)	रत्नमाला संग्रह
र० र०	रसरत्नाकरः
र० (स०) र० स०	रसरत्न समुच्चय
र० (रसा०) शा०	रसायनशास्त्र (Chemistry)
रस० कौ०	रसकौमुदी
रस० प्र०	रसप्रदीप
रस० रत्न०	रसरत्नाकर
रस० चिं०	रसचिन्तामणिः
र० सा०	रसायनसारः
रसायना०	रसायनाधिकार
र० सा० सं०	रसेन्द्रसार संग्रह
र० सु०	रसराजसुन्दरः
रसे० चिन्ता०	रसेन्द्र चिन्तामणि

र० यो० सा०	रसयोगसागर (श्रीहरिप्रपन्नजीकृत)
रसें० चिं०, रसेन्द्र चिं०	रसेन्द्रचिन्तामणि
र० सं०	रसेन्द्रसार संग्रह (गोपालकृष्णविरचितः)
र० सं० क०	रससंकेत कलिका
र० सा०	रससारः
र० हृ०	रसहृदयतन्त्रम्
रा०	राधी
राज०	राजवल्लभ
राजपु०	राजपुताना
राज० य०	राजयक्ष्मा
रा० तरं०	राजतरंगिणी
रा० निघ०	राज निघण्टु
रा० मा०	राजमार्तण्डः (श्रीभोजमहाराज विरचितः)
रिचार्ड०	रिचार्डसन्स फ़ारसी अरबी अंग्रेज़ी कोष
रिसा० र० इ०	रिसाला रफ़ीकुल् इत्तिब्बा
रिसा० हि०	रिसाला हिकमत
रुमू० इ०	रमू ज़ल् इत्तिब्बा
रू०	रूमी
रूसी०	रूसी
रो०	रोग
लिण्ड०	लिण्डलेज़् (डॉ० एफ़) 'वेजिटेबुल किङ्डम्'
लु० कि०	लुग़ात किशोरी (फ़ारसी कोष)
लु० अ०	लुग़ातुल् अद्वियह्
लु० क०,	लुग़ाते कबीर
ले०, लेटि०	लैटिन (Latin) भाषा
लेद०	लेदक
लेप०	लेपचा
व०	वर्ग
वटा० व०	वटादि वर्ग
वन० द०	वनौषधि दर्पण (राजवैद्य श्री विरजाचरण गुप्त काव्यतीर्थ कविभूषण कृत बंगला पुस्तक ।)
बम०, बम्ब०	बम्बई
वर्ना०	वर्नाक्युलर
व० वि०	वनस्पति-विज्ञान (Botany)
वा०	वाग्भट्ट
वाजी० क०	वाजीकरण
वा० ज्व०	वातज्वर
वा० पि० ज्व०	वात पित्त ज्वर
वा० र० (रक्त)	वातास्र
वा० व्या०	वातव्याधि
वि०	विशेष (विशेषण)
वि० वि०	विकृतिविज्ञान (व्याधिमूल-विज्ञान)
वि०, विमा०	विमान स्थान
वि०, विश्व०	विश्व प्रकाश कोष
विज० र०, विर०	विजय रक्षित (व्याख्या मधुकोष)
वि० ज्वर०	विषमज्वर
विदग्धाजी०	विदग्धाजीर्ण
विद्र०	विद्रधि
विल०	विलम्बिका
विल० डा० (डॉ)	विलियम डाइमॉक (डीमक)
विष० तं०	विष तन्त्र
विज्ञा० प्र०	विज्ञान प्रवेशिका
विसू०	विसूचिका
वृ० चि०	वृद्धि चिकित्सा
वृ० मा०	वृन्दमाधवः (वृन्दनिर्मितः)
वृ० र० रा० सु०	वृहत रसराज सुन्दर
वृह० सु०	वृहत्सुश्रुतम्
वृ० नि० र०	वृहन्निघण्टु रत्नाकर '७-८ भाग'
वै० क०	वैद्यकल्पद्रुमः (रघुनाथप्रसाद संगृहीतः)
वै० चन्द्रिका	वैद्यक चन्द्रिका
वै० जी०	वैद्यजीवनम् (लोलिम्बराज संगृहीतम्)
वै० निघ०	वैद्यक निघण्टु
वै० मृ०	वैद्यामृतम् (मोरेश्वर विरचितम्)
वै० र०	वैद्यरहस्यम् (विद्यापति संगृहीतम्)
वै० वि०	वैद्यविनोद
वै० श०	वैद्यक-शब्द सिन्धु
वै० सं०	वैद्यक संग्रह
व्यव० आ०	व्यवहार आयुर्वेद
व्या०	व्याकरण
वं० से०	वंगसेनः (वंगसेन संगृहीतः)
व्य०	अव्यय

व्याक०	व्याकरण
व्र [ण] शो०	व्रण शोधन
श०	शराव
॥० श०	शब्द शराव
श० च०	शब्द चन्द्रिका
श० चि०	शब्द चिन्तामणि
शब्द् कल्प०	शब्द कल्पद्रुम
श० मा०	शब्दमाला
श० र०	शब्द रत्नावली
श० शा०	शल्य शास्त्रीय
श० अ०	शरद् असवाव
श० त० वि०	शरीरतत्व-विज्ञान
शा०	शारीर स्थान
शा० ध० (शार्ङ्ग०)	शार्ङ्गधर
शा० नि० भू०	शालिग्राम निघण्टु भूषण
शा० व०	शाकवर्ग
शा ग्र०	शारीर ग्रंथ
शा० सं०	शार्ङ्गधर संहिता (शार्ङ्गधर विरचिता)
शि० रो०	शिरोरोग
शिरो० वि०	शिरोविरेचनम्
शी० पि०	शीतपित्त
शु०	शुद्ध
शू० दो०	शूकदोष
शे०	शेष
श्ली०	श्लीपद
श्लो०	श्लोक
स०	सकर्मक
सत०	सतलज
स० फा० इ०	सप्लिमेण्ट टु दी फार्माकोपिया थोक इंडिया (डॉ० मोहीद्दीन शरीफ कृत)
स० व०	सद्यो व्रण
सं०	संस्कृत
संग्र०	संग्रह
सं० ग्रहणी	संग्रह ग्रहणी
संता०	संताल
संयो० क्रि० (संयोजक अव्यय,)	संयोज्य क्रिया
स०(सन्निपा०)	सन्निपात
सन्या० ज्व० चि०	सन्यास ज्वर चिकित्सा
सं० प्रां०	संयुक्त प्रांत
सर्व० मु० रो०	सर्वगत मुखरोग
सर्व०	सर्वनाम
सा०	साधारण, सान्निपातिक
सा० कौ०	सारकौमुदी
सा० सु०	सार सुन्दरी
सि०	सिलोन (लंका)
सिक्कि०	सिक्किम
सिउ०	सिउनी
सि० भै० म०	सिद्धभेषज मणिमाला (श्रीकृष्णराम गुम्फिता)
सिम०	सिमला
सिलह०	सिलहट
सि० यो०	सिद्ध योग
सिं०	सिंध
सिंगा०	सिंगाली
सिं० भू०	सिंह भूमि
सिरि०	सिरिया (शामी)
सि० स्था०	सिद्धिस्थान
सु० व०	सुन्दरवन
सु०	सुश्रुत
सु० टी० ड०	सुश्रुत टीका डल्हण
सु० नि०	सुश्रुत निदान स्थान
सु० मि०	सुश्रुत मिश्रकाध्याय
सुर०	सुरयानी (सीरिया या शामी)
सु० सं०	सुश्रुत संहिता (महर्षि सुश्रुत विरचिता)
सू०	सूत्रस्थान
सूति०	सूतिका
सूर्य्यसि०	सूर्य्यसिद्धांत
स्त०	स्तवक
स्त्रि०	स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त
स्त्री०	स्त्री लिंग
स्था०	स्थान
स्पे०	स्पेनी भाषा
स्व० भे० (द)	स्वरभेद
ह०	हजारा
हजा०	हजारी

र० यो० सा०	रसयोगसागर (श्रीहरिप्रपन्नजीकृत)
रसें० चिं०, रसेन्द्र चिं०	रसेन्द्रचिन्तामणि
र० सं०	रसेन्द्रसार संग्रह (गोपालकृष्णविरचितः)
र० सं० क०	रससंकेत कलिका
र० सा०	रससारः
र० हृ०	रसहृदयतन्त्रम्
रा०	राशी
राज०	राजवल्लभ
राजपु०	राजपुताना
राज० य०	राजयक्ष्मा
रा० तरं०	राजतरंगिणी
रा० निघ०	राज निघण्टु
रा० मा०	राजमार्तण्डः (श्रीभोजमहाराज विरचितः)
रिचार्ड०	रिचार्डसन्स फ़ारसी अरबी अंग्रेज़ी कोप
रिसा० र० इ०	रिसाला रफ़ीकुल् इतिब्बा
रिसा० हि०	रिसाला हिकमत
रमू० इ०	रमू जुल् इतिब्बा
रू०	रूमी
रूसी०	रूसी
रो०	रोग
लिएड०	लिएडलेज़ (डॉ० एक्र) 'वेजिटेबल किङ्डम्'
लु० कि०	लुगात किशोरी (फ़ारसी कोप)
लु० अ०	लुगातुल् अद्वियह्
लु० क०,	लुगाते कबीर
ले०, लेटि०	लेटिन (Latin) भाषा
लेद०	लेदक
लेप०	लेपचा
व०	वर्ग
वटा० व०	वटादि वर्ग
वन० द०	वनौषधि दर्पण (राजवैद्य श्री विरजाचरण गुप्त काव्यतीर्थ कविभूषण कृत बंगला पुस्तक ।)
वम०, वम्ब०	वम्बई
वर्ना०	वर्नाक्युलर
व० वि०	वनस्पति-विज्ञान (Botany)
वा०	वाग्भट्ट
वाजी० क०	वाजीकरण
वा० ज्व०	वातज्वर
वा० पि० ज्व०	वात पित्त ज्वर
वा० र० (रक्त)	वातरक्त
वा० व्या०	वातव्याधि
वि०	विशेष (विशेषण)
वि० वि०	विकृतिविज्ञान (व्याधिमूल-विज्ञान)
वि०, विमा०	विमान स्थान
वि०, विश्व०	विश्व प्रकाश कोप
विज० र०, विर०	विजय रक्षित (व्याख्या मधुकोष)
वि० ज्वर०	विषमज्वर
विदग्धाजी०	विदग्धाजीर्ण
विद्र०	विद्रधि
विल०	विलम्बिका
विल० डा० (डॉ)	विलियम डाइमॉक (डीमक)
विष० तं०	विष तन्त्र
विज्ञा० प्र०	विज्ञान प्रवेशिका
विसू०	विसूचिका
वृ० चि०	वृद्धि चिकित्सा
वृ० मा०	वृन्दमाधवः (वृन्दनिर्मितः)
वृ० र० रा० सुं०	वृहत् रसराज सुन्दर
वृह० सु०	वृहत्सुश्रुतम्
वृ० नि० र०	वृहन्निघण्टु रत्नाकर '७–८ भाग'
वै० क०	वैद्यकल्पद्रुमः (रघुनाथप्रसाद संगृहीतः)
वै० चन्द्रिका	वैद्यक चन्द्रिका
वै० जी०	वैद्यजीवनम् (लोलिम्बराज संगृहीतम्)
वै० निघ०	वैद्यक निघण्टु
वै० मृ०	वैद्यामृतम् (मोरेश्वर विरचितम्)
वै० र०	वैद्यरहस्यम् (विद्यापति संगृहीतम्)
वै० वि०	वैद्यविनोद
वै० श०	वैद्यक-शब्द सिन्धु
वै० सं०	वैद्यक संग्रह
व्यव० आ०	व्यवहार आयुर्वेद
व्या०	व्याकरण
वं० से०	वंगसेनः (वंगसेन संगृहीतः)
व्य०	अव्यय

संक्षेप	पूर्ण रूप
व्याक०	व्याकरण
व्र [ण] शो०	व्रण शोधन
शा०	शराव
॥० शा०	अर्द्ध शराव
श० च०	शब्द चन्द्रिका
श० चि०	शब्द चिन्तामणि
शब्द कल्प०	शब्द कल्पद्रुम
श० मा०	शब्दमाला
श० र०	शब्द रत्नावली
श० शा०	शल्य शास्त्रीय
श० अ०	शरद् सम्पात
श० त० वि०	शरीरतत्त्व-विज्ञान
शा०	शारीर स्थान
शा० ध० (शार्ङ्ग०)	शार्ङ्गधर
शा० नि० भू०	शालिग्राम निघण्टु भूषण
शा० व०	शाकवर्ग
शा प्र०	शारीर ग्रंथ
शा० सं०	शार्ङ्गधर संहिता (शार्ङ्गधर विरचिता)
शि० रो०	शिरोरोग
शिरो० वि०	शिरोविरेचनम्
शी० पि०	शीतपित्त
शु०	शुद्ध
शू० दो०	शूकदोष
शे०	शेष
श्ली०	श्लीपद
श्लो०	श्लोक
स०	सकर्मक
सत०	सतलज
स० फा० इं०	सप्लिमेण्ट टु दी फार्माकोपिया ऑफ़ इंडिया (डॉ० मोहीद्दीन शरीफ़ कृत)
स० व्र०	सद्यो व्रण
सं०	संस्कृत
संग्र०	संग्रह
सं० ग्रहणी	संग्रह ग्रहणी
संता०	संताल
संयो० क्रि०	(संयोजक अव्यय,) संयोज्य क्रिया
स०(सन्निपा०)	सन्निपात
सन्या० ज्व० चि०	सन्यास ज्वर चिकित्सा
सं० प्रां०	संयुक्त प्रांत
सर्व० मु० रो०	सर्वगत मुखरोग
सर्व०	सर्वनाम
सा०	साधारण, सार्वजातिक
सा० कौ०	सारकौमुदी
सा० सु०	सार सुन्दरी
सि०	सिलोन (लंका)
सिक्कि०	सिक्किम
सिउ०	सिउनी
सि० भै० म०	सिद्धभेषज मणिमाला (श्रीकृष्णराम गुम्फिता)
सिम०	सिमला
सिलह०	सिलहट
सि० यो०	सिद्ध योग
सि०	सिंध
सिंगा०	सिंगाली
सि० भू०	सिंह भूमि
सिरि०	सिरिया (शामी)
सि० स्था०	सिद्धिस्थान
सुं० व०	सुन्दरबन
सु०	सुश्रुत
सु० टी० ड०	सुश्रुत टीका डल्वण
सु० नि०	सुश्रुत निदान स्थान
सु० मि०	सुश्रुत मिश्रकाध्याय
सुर०	सुरयानी (सीरिया या शामी)
सु० सं०	सुश्रुत संहिता (महर्षि सुश्रुत विरचिता)
सू०	सूत्रस्थान
सूति०	सूतिका
सूर्यसि०	सूर्यसिद्धांत
स्त०	स्तवक
स्त्रि०	स्त्रियों द्वारा प्रयु
स्त्री०	स्त्री लिंग
स्था०	स्थान
स्पे०	स्पेनी भाषा
स्व० भे० (द)	स्वरभे
ह०	हजार
हजा०	हजा

हला०	हलायुध	हिं० श० सा०	हिन्दी-शब्दसागर
हलीं०	हलीमक	हि० श्वा०	हिक्का श्वास
ह० च०	हरीतकी वर्ग	हरीत० निघं०	हरीतक्यादि निघंटु
ह० शु० र०	हमारे शरीर की रचना १, २ भाग (डॉ० त्रिलोकीनाथ वर्मा कृत)	हु० फा०	हुम्मियात क़ानून
		हृद्रो०	हृद्रोग
हा०	हारीत	हे० च०	हेमचन्द्र
हा० अत्रि०	हारीतोत्तरे अत्रि	हेम०	हेमाद्रिः(तत्कृत टीका)
हारा०	हारावलि (-वली)	हि० मे० मे०	सर विलियम् हिट्ला मेटीरिया मेडिका
हा० सं०	हारीत संहिता		
हिमा०	हिमालय		
हिं०	हिन्दी भाषा	वारा०	वारपाणि
हिं० बा०	हिन्दू बाजार	wil.	H. H. Wilson

नोट—ज्ञात हो कि इस कोष के लिखने में जिन ग्रन्थों से सहायता ली गई है उन सब का समावेश उपर्युक्त सूची में नहीं हो पाया है।



Explanation of the Initials and Names Attached to the Botanical names and Synonymes.

ACH. or ACHAR.—E. Acharius, author of Lichenographia Universalis.

ADANS.—M. Adanson, author of Histoire naturella du senegal, etc.

AIT. or AITON.—W., author of Hortus Kewensis, &c.

BALFOUR—Dr. J. H., author of the Class Book of Botany, &c.

BENTH.—M. Bentham, author of Labiatorum genera et species, and Schorophularineæ Indicæ, &c.

BERK.—Berkeley, a Botanist or Naturalist.

BL. or BLUM.—C. L. Blume, author of Flora Javanensis, Etc.

BR. or R. BR.—R. Brown, author of many Botanical works.

BURM.—N. L. Burmann, author of a Flora Indica.

CAV.—A. J. Cavanilles, author of Icones et descriptiones plantarum. Etc.

CHOIS. or CHOISY.—A. D. Choisy, a Swiss Botanist who elaborated several of the Natural Orders for De Candolle's Prodromus.

COLEBR.—H.T. Colebrooke, author of several Memoirs in the Linnean Society's Transactions, Etc.

COLLADON—Author of Histoire des Cassiæ.

CORR.—J. Correa de serra, author of some botanical papers.

DALZ.—N.A. Dalzel, one of the authors of Bombay Flora.

D. C.—A. P. De Candolle, author of numerous botanical works.

DEC.—De Candolle, Fil. (Son of De Candolle).

DELILE.—A. R., author of Floræ de Ægyptiacæ Illustratis, Etc.

DESV.—N. A. Desvaux, author of some botanical papers and editor of the 'Journal de Botanique'

DON.—D., author of the Prodromus Floræ Nepalensis, Etc.

DUCH.—A. P. Duchesne, author of Histoire Naturelle des Fraisiers, Etc.

DUNAL.—M. F., author of Monographie de la famille des anonacees, Etc.

ENDL.—S. Endlicher, author of Genera plantarum secundum ordines naturales dispositæ, Etc.

FABR.—P. C. Fabricus, author of Enumeratio Methodica Plantarum Horti Medici Helmstadiensis, &c.

FALC. or FALCONER.—Dr. H., author of some botanical papers.

FORSK.—P. Forskaol, author of Flora Ægyptico-Arabica, Etc.

FORST.—Forster, author of a Flora, Etc.

GŒRTN.—J. Gœrtner, author of 'De Fructebus et Seminibus.'

G. DON.—Editor of a new Edition of Miller's Gardner's Dictionary.

GREVILLE.—Dr. Greville.

GRIS.—G. Grisley, author of Viridarium lusitanicum, Etc.

HAM.—Dr. F. Hamilton (formerly Buchanan), author of a 'Journey to Mysore, and some botanical papers.

HAW.—A. H. Haworth, author of Synopsis Plantarum Succulentarum.

H. B. et K.—Humboldt, Bonpland, and Kunth, authors of Nova genera et species, Etc.

HERBERT.—H. W. Herbert, author of 'Herbert's Amarillideæ' Etc.

H. et T.—Drs. J.D. Hooker and T. Thompson, author of a Flora Indica, Etc.

HEYN. or HEYNE—B. Heyne, a Botanist or Naturalist.

HOOK. or HOOKER—Dr. W. J. Hooker, author of Botanical Miscellany, and of his (Hooker's) Journal of Botany.

JACK—Dr. W., author of some papers on Penang plants, Etc.

JUSS.—Bernard de Jussieu, author of Genera Plantarum, Etc.

KOEN., KON. or KON.—J.G. Kœnig, a Danish Botanist.

KTH. or KUNTH—A. Prussian Botanist.

LABILL.—J. J. Labillardiere, author of Icones Plantarum Syriæ rariorum decades.

LAM.—J. B. Lamarck, editor of the botanical portion of Encyclopedia Methodic.

LEHM.—J. G. C. Lehman, author of Plantæe familia asperipoliarum nuciferæ, Etc.

LESCH.—Leschenault de la Tour, a Director of the botanical garden at Pondicherry.

LINDL. or LINDLEY—Dr. J., author of the 'Vegetable Kingdom', Etc.

LINK—H. F., author of Philosophiæ botanicæ novæ prodromus, Etc.

LINN.—Carl von Linnæus, the founder of Botanical Science.

MATON.—Dr. W. E. Maton.

MEISN. or MEISSNER—Leun Fred. Meissner, author of some botanical papers.

MIERS—J. Miers, author of a work.

MIQ or MIQUEL.—F. A. W., a Botanist.

MILL.—P. Millers, author of the Gardener's Dictionary.

MOEN.—C. Mœnch, author of a few botanical works.

MULL. or MULL.—Otto Fred. Muller, author of some botanical works.

NEES—G. G. Nees von Esenbeck, author of several botanical works.

OLIVER.—G. A., author of a botanical work.

PAVON—J., author of a botanical work.

PELL.—Pelletier, author of some botanical papers.

PERS.—C. H. Persoon, author of Synopsis plantarum seu enchiridium botanicum, Etc.

PLANCH.—A. Botanist.

POHL—J. J. author of 'Brazilian plants', Etc.

RETZ.—A. J. Retzius, author of Fasciculus Observationum Botanicarum, Etc.

RISSO—A.,author of Histoire naturelle des Oranger.

RŒM. or Rom. et schult.—J. J. Rœmer, and J. A. Schultes, authors of Linnœi systema vegetabilium, Etc.

ROSC. or Roscœ—W.Roscœ, author of 'Monandrian plants of the Order Scitamineæ.'

ROTH—A. W., author of Novæ Plantarum, and several other works.

ROTT.—Dr. Rottler, an Indian Botanist.

ROXB.—Dr. W. Roxburgh, author of Flora Indica, and Plants of the Coromandel Coast, Etc.

ROY. or ROYLE—Dr. J. F. Royle, author of the Illustrations of the Botany of the Himalyan Mountains, and of a work on the fibrous plants of India.

SALISB.—R. A. salisbury, author of the Prodiomus Londinensis, Etc.

SAV. OR SAVI—C., author of several botanical works.

SCHOTT—H., author of a few botanical works.

SCHRAD.—H. A. Schrader, author of many botanical works.

SCH. OR SCHULT.—C. F. Schultz author of Prodromus Floræ Stadgardiensis, Etc.

SEB.—A. Seba, author of a book.

SER.—N. C. Seringe, who has elaborated several difficult Tribes in De Candolle' s Prodromus.

SM. OR SMITH. Sir J. E. Smith, author of several botanical works.

SPR. OR SPRENGEL—K. Sprengel, author of systema Vegetabilium, and many other botanical works.

STOCKS—author of some botanical papers in Hooker's Journal of Botany.

STOK.—J. Stokes, author of Botanical Materia Medica.

SWT.—R. Sweet, a Botanist.

SWZ. OR SWARTZ—O. Swartz, author of Prodromus Descriptionum Vegetabilium Indicæ Orientalis, Etc.

THUNB.—C. P. Thunberg. author of Flora Japonica and many other works.

TOURN.—J. P. Tournefornt, author of Elements de Botanique, Etc.

VAHL.—M., author of Symbolæ botanicæ, Etc.

VENT or VENTN.—E. P. Ventenat, author of Principes de Botanique, Etc.

VILL. or VILLARS—D., author of Histoire des Plantes du Dauphine, Etc.

W. et A.—Dr. R. Wright and Mr. G. A. Walker Arnott, authors of the Prodromus Floræ Peninsulæ Indiæ Orientalis.

WALL.—Dr. N. Wallich, author of plantæ Asiaticæ rariores, and Tentamen Floræ Nepalensis Illustratæ.

WEDD.—Weddell, author of Histoire naturelle des quinquinas.

W. ELLIOT—Sir, author of Flora Andhrica.

WIGHT—Dr. R., author of Icones Plantarum Indiæ Orientalis, Illustrations of Indian Botany, and Contributions to Indian Botany, Etc.

WILLD.—C. L. Wildenow, author of Species Plantarum, and several other works.

वर्ण-विवरण

अर्थात्

वर्णबोधिनी-तालिका

देवनागरी (हिंदी) वर्ण	फ़ारसी, अरबी तथा उर्दू के वर्ण	अँगरेज़ी (रोमन) वर्ण	देवनागरी (हिंदी) वर्ण	फ़ारसी, अरबी तथा उर्दू के वर्ण	अँगरेज़ी (रोमन) वर्ण
अ	ا	a	क	ک	k
आ	آ	á	क़	ق	q
इ	اِ	i	ख	کھ	kh
ई	اِی	í	ख़	خ	kḥ
उ	اُ	u	ग	گ	g
ऊ	اُو	ú	ग़	غ	gḥ
ऋ		ri	घ	گھ	gh
ॠ		rí	ङ		ng, n̤
ऌ		lri	च	چ	ch
ॡ		lrí	छ	چھ	chh
ए	اے	e	ज	ج	j
ऐ	اَے	ai	ज़	ز	z
ओ	اُو	o	ज़	ذ	z̤
औ	اَو	ou	ज़	ژ	zh
अ		aha	ज़	ض	ż
अः		ah	ज़	ظ	z̤
ँ	ں	n	झ	جھ	jh

ञ		ñ*	म	م	m
ट	ٹ	ṭ	य	ی	y
ठ	ٹھ	ṭh	र	ر	r
ड	ڈ	ḍ	ल	ل	l
ड़	ڑ	ṛ*	व	و	v, w
ढ	ڈھ	ḍh	श		ṣh
ढ़	ڑھ	ṛh*	ष	ش	sh
ण		ṇ	स	س	s
त	ت	t	स़	ص	ṣ
त़	ط	ṭ*	स़	ث	ṣ*
थ	تھ	th	ह	ہ	h
द	د	d	ह़	ح	ḥ
ध	دھ	dh	क्ष		ksh
न	ن	n	त्र		tr
प	پ	p	ज्ञ		jnya*
फ	پھ	ph	अ़	أ	ā
फ़	ف	f	इ़	إ	āi
ब	ب	b	उ़	ؤ	āu
भ	بھ	bh	ए़	ئے	āo

"*N. B.*—Unable to receive the marked English letters in th[e] the letters marked with an asterisk (*) in the above catalo[gue] have been used without marks all through the book. Therefore readers are requested to read them according to the correspond[ing] Hindi letters.

श्री धन्वन्तरये नमः

आयुर्वेदीय कोष

अ

अ a—संस्कृत और हिंदी वर्णमाला का पहिला अक्षर। इसका उच्चारण कंठ से होता है इससे यह कंठ्य वर्ण कहलाता है। व्यञ्जनों का उच्चारण इस अक्षर की सहायता के बिना अलग नहीं हो सकता, इसी से वर्णमाला में क, ख, ग आदि वर्ण अकार संयुक्त लिखे और बोले जाते हैं।

अअयून aâayún—अ० मेथी, मेथिका (Trigonella Fœnum=Græcum, *Linn.*)

अअर aâar—रू० मुर, बोल (Myrrh.)

अअल्यूतस aâalyútas—यु० अभ्रक, भोडर (Mica.)

अआकुल aâákul—अ० जवासा, यवास, हिंगुआ (Alhagi Maurorum, *Desc.*)

अआइयोत्ती aádaivotti—ता० चिरकी—हिं०। वन ओकरा—बं०। (Triumfetta Rhomboidea, *Jacq.*) इं० मे० मे० मेमो०।

अआनी aáni—तै०, ता०, मह०, कना० हाथी हस्ति (Elephant.)

अआरगीस aáragís—रूमीत, दारुहल्दी, चित्रा—हिं०। दारुहरिद्रा—सं०। अंबरबारीस—अ०। (Berberis Aristata, *D. C.*)

अआस aâás—अ०
अआसिल बर्री aâásil barri—अ०
(Myrtus Communis, *Linn.*) विलायती मेंहदी—हिं०। फा० इं०।

अअ़क़ब aâqab—अ० गोरख़र (एक जंगली जानवर जो गदहे की तरह होता है।)

अअ़जफ़ aâjaf—अ० दुबला, कृश, क्षीण। एमेसिएटेड (Emaciated)—इं०।

अअ़ज़ाअ् aâzaa—अ० (Organs.) (ब० व०), उ़ज़्व (ए० व०), बदन के टुकड़े या हिस्से, अवयव, इन्द्रियाँ—हिं०। वे गाढ़ी और स्थूल वस्तुएँ जो प्रथम खिल्तों (दोषों) के योग से बनती हैं।

अअ़ज़ाअ् अस्लिय्यह aâzáa aṣliyyah—अ०, अअ़ज़ाअ् मुन्विय्यह, अस्ली अअ़ज़ाअ् अर्थात् शुक्र द्वारा उत्पन्न अवयव, यथा—अस्थि, नाड़ी, रग प्रभृति।

अअ़ज़ाअ् आलयह aâzáa álayah—अ० अअ़ज़ाअ् मुरक्कबह, वे अवयव जो कुछ साधारण अवयवों (धातुओं)के परस्पर योग से बने हों, संयुक्त अवयव।

अअ़ज़ाअ् इस्तहि़याइय्यह aâzáa istaḥiyáiyyah—अ० अस्नाम निहानी, अअ़ज़ाअ् तनासुल ज़ाहिरी (प्रधानतः स्त्री के), स्त्री जननेन्द्रियाँ (बाह्य)—हिं०। (Pudendum.)

अअ़ज़ाअ् कैलूसियह् aâzáa kailúsiyah—अ० आलातकैलूसियह्।

अअ़ज़ाअ् ख़ादिमिह् aâzáa khádimih—अ० सेवा करने वाले अवयव, वे अवयव जो किसी अन्य अवयव की सेवा करें, यथा—आमाशय जो यकृत् की सेवा करता है अर्थात् भोजन से शुद्ध आहार-रस (कैलूस) तैयार करके यकृत् की ओर भेजता है; अथवा शिराएँ जो यकृत् से आहार तथा प्राकृतिक शक्ति को लेजाकर अवयवों में वितरित करती हैं।

अअ़ज़ाअ् ख़ादिमहुर्रईसह् aâzáa khádimahurraisah—अ० उत्तमाङ्गों की सेवा करने वाले अवयव, यथा—धमनी जो यकृत् की

सेविका है, और नाड़ी जो मस्तिष्क की सेवा करती है अर्थात् उक्त अवयव की प्रधान शक्तियों को अन्य की ओर पहुँचाती हैं।

अअ़ज़ाअ् ग़िज़ा aāzáa ghizá–अ० आहारेन्द्रियाँ, आहार सम्बन्धी अवयव, अथवा आहार को ग्रहण करने वाले अवयव, यथा–आमाशय, अंत्र और यकृत आदि।

अअ़ज़ाअ् ग़ैर रईसह aāzáa ghair raísah–अ० वे अवयव जो न स्वयं किसी की सेवा करते हैं और न कोई उनकी सेवा करता है।

नोट—किसी किसी हकीमका यह विचार है कि शरीर में कुछ ऐसे अवयव भी हैं जिनमें जीवन और पोषण की स्वाभाविक शक्ति विद्यमान है और उत्तमाङ्गों से उनमें कोई शक्ति नहीं आती, यथा–अस्थियाँ। किन्तु स्वतन्त्र हकीमों का यह पंथ नहीं और वास्तविक बात भी यही है। शरीर में कोई एक अवयव भी ऐसा नहीं जो अन्योन्याश्रय न हो, अथवा जिसमें स्वामी सेवक भाव विद्यमान न हो।

अअ़ज़ाअ् तनफ़्फ़ुस aāzáa tanaffus–अ० आलात तनफ़्फ़ुस। श्वासोच्छ्वासेन्द्रियाँ–हिं०। (Respiratory Organs.)

अअ़ज़ाअ् तनासुल aāzáa tanásul–अ० आलात तनासुल। जननेन्द्रियाँ–हिं०। (Reproductive Organs.)

अअ़ज़ाअ् तबइ़य्यह् aāzáa tabāiyyah–अ० प्राकृतिक शक्ति सम्बन्धी अवयव, यथा–जननेन्द्रिय वा आहारेन्द्रिय।

अअ़ज़ाअ् तर्फ़ियह् aāzáa tarfiyah–अ० शाखावयव, वे अवयव जो शाखाओं में स्थित हैं, यथा–हस्तपाद आदि।

अअ़ज़ाअ् दमिय्यह् aāzáa damviyyah–अ० रक्त से उत्पन्न होने वाले अवयव, रक्त जन्य अवयव, यथा–मांस वा वसा।

अअ़ज़ाअ् नफ़्ज़ aāzáa nafz–अ० शारीरिक मल को निकालने वाले अवयव, मल प्रसेक अवयव, यथा–अन्त्र, वृक्क, वस्ति, लिंग, गर्भाशय की ग्रीवा और गुदा प्रभृति। एक्सक्रीटरी ऑर्गंस (Excretory Organs.)–इं०।

अअ़ज़ाअ् बसीतह् aāzáa basítah–अ० अअ़ज़ाअ् मुफ़्रिदह्।

अअ़ज़ाअ् बौल aāzáa-boul–अ० आलात बौल, मूत्रेन्द्रियाँ, मूत्रसंस्थान–हिं०। (Urinary system.)

अअ़ज़ाअ् मरऊसह aāzáa-maraúsah–अ० उत्तमांगों से लाभ उठाने वाले अवयव।

अअ़ज़ाअ् मुत्शाबिहतुल् अज्ज़ा (aāzáa-mutshábihtul ajzá-अ० अअ़ज़ाअ् मुफ़्रिदह्

अअ़ज़ाअ् मुन्विय्यह् Aázáa munviyyah)–अ० अअ़ज़ाअ् अस्लियह्।

अअ़ज़ाअ् मुफ़्रिदह् Aázáa-mufridah -अ० मुफ़्रिद अअ़ज़ाअ्, अअ़ज़ाअ् बसीतह्, अअ़ज़ाअ् मुशाबिहतुल् अअ़्ज़ाअ्, वह अवयव जो स्वयं अथवा उसका कोई भाग नाम और वास्तविकता में अभेद हो, अर्थात् यदि उज़्व मुफ़्रिद (मौलिक धातु) का कोई भाग लेकर कहा जाय कि इसका क्या नाम और परिभाषा है तो उत्तर में वही नाम और परिभाषा बतलाई जाय जो वास्तविक अवयव के लिए कही जाती है; उदाहरणतया–अस्थि के एक सूक्ष्म भागको भी अस्थि कहेंगे, एवं मांस के सूक्ष्म भाग को मांस।

मुफ़्रिद अअ़ज़ाअ् (मौलिक धातुओं) की संख्या १० है, यथा–अस्थि, उपास्थि या कुर्री (Cartilage), नाड़ी, मांस–पेशी, धमनी, शिरा, कला, झिल्ली, संधि-बंधन (बंधनी, स्नायु, रज्जु) और कण्डरा। ये वीर्य से उत्पन्न होते हैं, इसलिए इनको अअ़ज़ाअ् मुन्विय्यह् (शौक्रावयव) कहते हैं। इनमें से दसवीं धातु लह्म (मांस, गोश्त) है। शह्म (वसा) तथा समीन (मेद) की गणना भी इसी में होती है। ये तीनों शोणित से बनते हैं। रोम तथा नख की गणना वस्तुतः शारीरिक मलों में होती है। किन्तु किसी किसी ने इनकी गणना भी अअ़ज़ाअ् मुफ़्रिदह्में की है

टिप्पणी–अअ्ज़ाअ् मुफ़्रिदह् की रचना को अरबी में नस्ज (ए० व०) और नसाइज (ब० व०) तथा आयुर्वेद में तन्तु (धातु) और अंगरेज़ी में टिशु (Tissue) कहते हैं। सभी भाँति के तन्तु विशेष प्रकार की सेलों (कोषों, घटकों, कोसों) के परस्पर मिलाप द्वारा बनते हैं। अस्तु–अस्थि, मांस, रग तथा नाड़ियों की रचना मुख्य मुख्य भाँति की सेलों के पारस्परिक मिलाप द्वारा होती है। इसका विस्तृत वर्णन तन्तु (धातु)–शास्त्र (Histology) में होगा।

अअ्ज़ाअ् मुरक्कबह् aăzán-murakkabah–अ० अअ्ज़ाअ् आलयह्, मुरक्कब् अअ्ज़ाअ्। संयुक्तावयव, वे अवयव जो पृथक् मुफ़्रिद् शरीर तन्तु (धातु) के पारस्परिक मेल से बनते हैं। उदाहरणतः–हस्त अस्थियों, रगों, नाड़ियों और मांस पेशियों तथा त्वचा के मिलाप द्वारा बनता है। इस भाँति के अवयव का यदि कोई भाग लिया जाय तो वह अपनी परिभाषा तथा नाम में सम्पूर्ण से भिन्न होगा, यथा हाथ की अस्थि अथवा मांस हस्त नहीं कहलाएगा।

अअ्ज़ाअ् मुहिम्मह् aăzán muhimmah–अ० अअ्ज़ाअ् शरीफ़ह्।

अअ्ज़ाअ् रईसह् aăzán raisah–अ० उत्तमाङ्ग। एक्स्ट्रा Extra–इं०। जीवनाधारभूत अवयव, अर्थात् वे अवयव जिन पर जीवन अवलम्बित हो। वे चार हैं, यथा–(१) हृदय, (२) मस्तिष्क, (३) यकृत् और (४) मुष्क (पुरुषाण्ड), लिंग और शुक्राशय। इनमें से प्रथम तीन मनुष्य जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं, क्योंकि यह क्रमशः प्राणशक्ति (कुव्वते ह्यात, कुव्वते हैवानी), चेतनाशक्ति (कुव्वते नफ़्सानी) और प्राकृतिक शक्ति (कुव्वते-तब्ई) अर्थात् शारीरिक पोषणशक्ति अवयवों को प्रदान करते हैं। इनमें अन्तिम के जननेन्द्रिय सम्बन्धी अवयव स्वजाति रक्षा के लिए परम आवश्यक हैं।

अअ्ज़ाअ् शरीफ़ह् aăzán sharifah–अ० शरीफ़ अअ्ज़ाअ्, अअ्ज़ाअ् मुहिम्मह्, अहम अअ्ज़ाअ्। वे अवयव जो अपने कार्य की महत्ता के अनुसार उत्तमाङ्गों की सामीप्य कक्षा का अधिकार रखते हैं। इनकी गणना उन (उत्तमाङ्गों) के पीछे होती है, यथा–फुफ्फुस, आमाशय और आँत्र इत्यादि।

अअ्ज़ाअ् सद्रिय्यह् ज़ाहिरह् aăzán-sadriyyah-záhirah–अ० वक्षोपाङ्ग। वक्ष के ऊपर के अवयव, यथा–वाक्षीय मांसपेशियाँ और स्तन प्रभृति।

अअ्ज़ाअ् सद्रिय्यह् बातिनह् aăzán-sadriyyah-bátinah–अ० वक्षान्तरस्थ अवयव, वक्ष में भीतर के अवयव, यथा–हृदय और फुफ्फुस आदि। थोरैसिक विसरी (Thoracic Viscera)–इं०।

अअ्ज़ाअ् सौत aăzán-sout–अ० आवाज़ के अअ्ज़ाअ्, शब्देन्द्रियाँ, शब्दोत्पादक यंत्र, यथा—स्वरयन्त्र, टेंटुआ (श्वासपथ) और फुफ्फुस इत्यादि। ऑर्गन्स ऑफ़ वाइस (Organs of Voice)–इं०।

अअ्ज़ाअ् हज़्म aăzán-hazm–अ० पाचक यन्त्र, पाकावयव, यथा–आमाशय, यकृत्, मेसारीक़ह् इत्यादि। डायजेस्टिव ऑर्गन्स (Digestive Organs)–इं०।

अअ्ज़ाअ् हर्कत aăzán harkat–अ० आलात हर्कत।

अअ्ज़ाअ् हिस्स aăzán hiss–अ० आलात हिस्स।

अअ्ज़ाअ् हैवानिय्यह् aăzán haiváni-yyah–अ० जीवन शक्ति सम्बन्धी अवयव, प्राणशक्ति से सम्बन्ध रखने वाले अवयव, यथा हृदय वा धमनी प्रभृति।

अअ्नब aănab–अ० जिसकी नासिका बड़ी और लम्बी हो, दीर्घनासा।

अअ्नश aănash–अ० झोंगा, झींगुर, छः अंगुलियों वाला, छंगा।

अअ़्नाक़ aanáq–अ॰ (ब॰ व॰), उ़ुनुक़ (ए॰ व॰) ग्रीवा, गर्दन–हिं॰। सर्विक्स (Cervix), नेक्स (Necks)–इं॰।

अअ़्फ़ाज aáfaj–अ॰ Corpulent मोटा,मेदुर, मेदस्वी,स्थूल,वह व्यक्ति जिसकी तोंद निकली हो।

अअ़्फ़र aáfar–अ॰ सफ़ेद, मैला सफ़ेद, धूसर श्वेत। (Brownish white)

अअ़्फ़ाज Aáfáj–अ॰ (Intestines, Entrails.) आन्त्र–हिं॰।

अअ़्मश aámash–अ॰ जिसके नेत्र से जलस्राव होता हो।

अअ़्मा aámá–अ॰ (Blind) नाबीना, कोर –फ़ा॰। अंध, अंधा, नेत्रहीन–हिं॰। बहु अअ़्मा (ब॰ व॰) और अमा (स्त्री॰ लिं॰)।

अअ़्माले 'बिल्यद्' aámále-bilyad–अ॰ (Operation) हस्तक्रिया, शल्य–हिं॰। दस्तकारी–फ़ा॰। ऑप्रेशन क्रिया, स्वच्छेद शास्त्र। साहब कामिल के वचनानुसार इसके तीन भेद हैं–(१) रग तथा (२) मांस को काट छांट, जैसे रक्तमोक्षण, नश्तर देना, पृथक् करना (काटना छांटना), दागना और टांके लगाना इत्यादि और (३) अस्थि को यथा स्थान बिठाना, टूटी अस्थि को जोड़ना, और स्थानच्युत अस्थि की संधि को बिठाना; इत्यादि।

अअ़्मिदतुल् 'मिन्ख़रैन aámidatul-mankharain–अ॰ (Nasal Septum) नासामध्य पटल, दोनों नथुनों के मध्य का परदा–हिं॰।

अअ़्याअ़् aáyáa–अ॰ (१) थकना, थकावट। (२) हाथ पैर टूटना, शरीर का थक जाना।

अअ़्यून aáyún–अ॰ प्रसरित चक्षु, वह मनुष्य जिसके नेत्र की पुतलियाँ फैल गई हों।

अअ़्रज aáraj–अ॰ (Lame) लङ्गड़ा, लुञ्ज –हिं॰।

अअ़्राज़ aáráz–अ॰ (ब॰ व॰), (Symptoms) अ़रज़ (ए॰ व॰), रोग के लक्षण।

अअ़्राज़े नफ़्सानिय्यह् aáráze nafsániyyah–अ॰ इन्फ़िआलाते नफ़्सानिय्यह्। अन्तःक्षोभ, मनोविकार, आत्मा में होने वाली दशाएँ–हिं॰। ये छः हैं, यथा–(१) शोक, (२) क्रोध, (३) भय, (४) आनन्द, (५) लज्जा और (६) चिन्ता।

अअ़्शा aashá–अ॰ (Nyctalops) शबकोर–फ़ा॰। नक्तांध, वह मनुष्य जिसको रतौंधी का रोग हो।

अअ़्साब aásáb–अ॰ (Nerves) (ब॰ व॰), अ़सब (ए॰ व॰), नाड़ियाँ, वात या बोधतन्तु (स्नायु–नाड़ी)–हिं॰।

अअ़्साब उज़्ज़िय्यह aásab-aujziyyah–अ॰ (Sacral Nerves)। त्रिक नाड़ी, नितंब (त्रिक) नाड़ी, अअ़्साब अ़ुसीस। ये वात तन्तु सुषुम्नाकाण्ड से निकल कर त्रिकास्थि से बाहर आते हैं। ये संख्या में ५ जोड़े होते हैं। इनकी शाखाएँ उरु,टाँग, व पाँव की मांस पेशियों तथा त्वचा में चेतना व संज्ञा पहुंचाती हैं।

अअ़्साबे उ़ुनुक़िय्यह् aásabe aunuqiyyah –अ॰ (Cervical Nerves) अअ़्साबे गर्दन–फ़ा॰। ग्रैव नाड़ियां–हिं॰।

अअ़्साबे क़त्निय्यह् aásábe-qatniyyah –अ॰ अअ़्साबे कमर–फ़ा॰। कटि नाड़ियाँ –हिं॰। (Lumbar Nerves)

अअ़्साबे ज़ह्रिय्यह् aásábe-zahriyyah –अ॰, (Dorsal Nerves) अअ़्साबे पुश्त –फ़ा॰। पृष्ठ नाड़ियाँ–हिं॰।

अअ़्साबे दिमाग़िय्यह् aásábe-dimágh iyyah – अ॰ मास्तिष्क नाड़ियाँ – हिं॰ (Cranial Nerves)।

अअ़्साबे नुख़ाइय्यह् aásábe-nukháiyah –अ॰ सौषुम्न नाड़ियाँ–हिं॰। (Spinal Nerves.)।

अअ़्साबे मुरक्कबह् aásábe murakkabah –अ॰ मिश्र नाड़ियाँ–हिं॰। मिक्स्ड नर्व्ज़ (Mixed Nerves)–इं॰।

अअ़्साबे शिर्किय्यह् aásábe shirkiyyah –अ॰ अअ़्साबे हमदर्दी। पिंगल नाड़ियाँ–हिं॰। (Sympathetic Nerves.)

अअ्साबे हर्कत् aāsábo-harkat-अ० हर्कतो अअ्साब । चालक नाड़ियाँ, चेष्टावह नाड़ियाँ, गति सम्बन्धी नाड़ियाँ-हिं० । (Motor Nerves)

अअ्साबे हास्सह् aāsábo-hássah-अ० विशेष चेतना सम्बन्धी नाड़ियाँ-हिं० । (Special Senses Nerves)

अअ्साबे हिस्स aāsábo-hiss-अ० हिस्स के पुट्ठे-उ० । संवेदनिक नाड़ियाँ, चेतना सम्बन्धी नाड़ियाँ, बोध अथवा ज्ञान तन्तु-हिं० । (Sensory Nerves)

अइग्रिमोनिं aigrimonie-फ्रां० ग़ाफ़िस्-सुल्-अर्याफ़िस्-अ० । (Agrimonia Eupatorium, *Linn.*) फा० इं० १ भा० ।

अइता aitá-मॉं० आयनैनी, मोड़फली-हिं० । (Helecteres Isora, *Linn.*)

अइदा aidá-अ० । हीराद्खी-हिं० । दमुल्-अख्वैन-अ०, हिं०, बाजा० Draggon's blood (Dracæna cinnabari, *Balf.*) फॉ० इं० ३ भा० ।

अइँधा aindhá-उ० प० मू० हयु-चला । अजहर-आसाम० । (Lagerstrœmia Flos-Reginæ, *Retz.*)

अइन ain-महा०
अइनी aini-कना० } आसनवृक्ष, साज, सद्री -हिं० । पियासाल-सं० (Terminalia Tomentosa *Bedd*) । इं० मे० मे० । मेमो० ।

अइर air-हिं० (Farsetia Ægyptiaca, *Turr.*) फ़रीदबूटी ।

अइरन airan-यम्ब० अरनी, अरनि, चिरम-हिं० (Clerodendron Phlomoides, *Linn.*) इं० मे० मे० ।

अइरन मूल airanmúl-यम्ब० अरनी, अग्निमन्थ ।(Premna Integrifoila, *Linn.*) इं० मे० मे० ।

अइरस्सा airasá-अ० पुष्करमूल, पद्मपुष्कर -सं० । इरसा-हिं० । Orris root (Iris Florentina.)

अइल ail-यम्ब०, हिं० मानला । सीकी (के) काई-द० । कोचे-यं० । Acacia Concinna, *D.C.*) इं० मेoमेo । फाoइं० २ भा०।

अउजा aujá-यम्ब० Custard apple (Anona squamosa, *Linn.*) । शरीफ़ा, सीताफल, आत-हिं० ।

अउनी aunee-ग्रां० रासन, जञ्जबील शामी, जुर्न-शामी । Elecampane (Inula Helenium, *Linn.*) फा० इं० २ भा० ।

अउसरक ausarak-यं० छरीला-हिं० (See-Chharila) । शैलेय, शिलापुष्प- सं० । उश्नह्-अ०

अऊ aú-यम्ब० १-अण्ड(Ovum) । २-गर्भ (Embroyo)

अऊ aú
ऊ ú } -यम्ब० (प० प्र०) कन्द-हिं० । (Bulb or Tuber)स०फा० इं०

अऊमियाआ aúmiyáá
उमियाआ umiyáá } -यम्ब० (प० प्र०) कन्द-हिं० (Bulbs, Tubers) । स० फा० इं० ।

अऋतुमती aritumati-सं० स्त्री० (Unmenstruating woman) अरजस्का, रजोलोपा, अजातरजा, अनृतुमती ।

अएगरवल्ली aegar-valli-ता० धारकरेला -हिं० ।(Momordica Dioica, *Roxb.*) इं० मे० मे० ।

अएडकुल रीतिचेट्टु aedakul-riti-Chettu -तै०छातिम, सप्तपर्ण, छतिवन-हिं०। (Alstonia Scholaris, *R.Br.*)इं०मे०मे० ।

अएडु aedu-ता०, कना० (Sheep) भेंड़, मेष-हिं० । इं० मे० मे० ।

अएण्डु aendu-ता० चक्रमर्द, चकवड़, पमाड़ हिं०। (Cassia Tora, *Linn.*)इं०मे०मे० ।

अएरिलम्पाल aerilampál-मल० सप्तपर्ण (Alstonia Scholaris, *R.Br.*)इं०मे०मे०।

अएलि-लप्पालई Aeli-lœppálai-ता०(Alstonia Scholaris, *R. Br.*) छतिवन, छातिम, सप्तपर्ण ।

अक़अक़ aaqaaq – अ० महता पक्षी, यह एक प्रसिद्ध पक्षी है। समकर, कामतार–फ़ा० ।

अकच्छ akachah–हि० वि० }
अकच (akacha)–हिं० वि० }

केश शून्य, बाल रहित–हिं० । गंजा (Bald) –इं० । आरमाया नेहा–बं० ।

अकच्छ akachha–हिं० वि० [सं० अ = रहित + कच्छ या कछ = धोती, परिधान] (१) नग्न । नंगा । (२) व्यभिचारी । परस्त्रीगामी ।

अकज akaj–शब्द एक और पद्योल अमरूल का नाम ।

अकड़ा akaṛā–हिं० पुं०, कड़ा । ग्रेवल (Gravel)–इं० ।

अकड़ akaṛa–हिं० संज्ञा स्त्री० [आ = अच्छी तरह + कड़ = कड़ा होना] [हिं० अकड़ना] ऐंठ । तनाव । मरोड़ । बल ।

अकड़तकड़ akaṛa takaṛa–हिं० संज्ञा पु० ऐंठन ।

अकड़ना akaṛanā – हिं० क्रि० अ० [आ = अच्छी तरह+कड़ = कड़ापन] [संज्ञा अकड़ अकड़ाव] सूखकर सिकुड़ना और कड़ा होना । खरा होना । ऐंठना । (२) ठिठुरना । स्तब्ध होना । सुन्न होना । (३) तनना ।

अकड़ बाई akarabāi–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० कड़्ड़–कड़ापन + वायु, हिं० बाई=हवा] ऐंठन । कुड़ल । शरीर की नसों का पीड़ा के सहित एक बारगी खिंचना ।

अकड़ा akaṛā–हिं० संज्ञा पु० [सं० कड़्ड़= कड़ापन] चौपायों का एक छूत का रोग । जब चौपाए तराई की धरती में बहुत दिनों तक चर कर सहसा किसी ऊसर धरती को घास पा जाते हैं तब यह बीमारी उन्हें हो जाती है ।

अकड़ाव akarāva–हिं० संज्ञा पु० [हिं० अकड़] ऐंठन । खिंचाव ।

अक़तना अक़तनस aqatanā aqatanas }
अक़तना अक़तस aqatanā afalas }
–यु० ज़ुअ़रूर–इच (Zaārūr) ।

अक़तनार अनीक़ aqatanār-aniqí } –यु०
अक़तना लूक़ी aqatanā-lúqí }

(१) शुकाई (Shakái) । (२) यादावर्द (Volutarella Divaricata, *Benth.*)

अक़तमाय aqatamáā–अ० शराब या अंगूर का पानी ।

अक़तमारून aqatamárún–यु० सुरिंजान Hermodactylus (Hermodactyl)

अक़तालूनी aqatálúni–यु० यादावर्द (Volutarella Divaricata, *Benth.*)

अक़ती aqati–यु० गूमान कर्वार ।

अक़तीसूस aqatisús–यु० जंगली मूली, अरण्य-मूलक (The Wild Radish.)

अक्त akta–सं० मालिश ।

अकती akati–ता०, मल०, अगस्त्य, अगस्तिया–हिं० । (Agati Grandiflora, *Desv.*) इं० मे० मे० ।

अक़तुल मलिक aqatul-malik–यस्य (Trigonella Uncata, *Boiss.* इक्लीलुल् मलिक–अ० । मल, नाखूना–हिं०

अक़दन aqadan–हिं० क्रि० वि० । दे० कदन

अक़दह āaqadah–मिश्र० ज़रिश्क की लकड़ी दारहल्दी–हिं० । दारुहरिद्रा । (Berberi Asiatica, *D.C* 'wood of')

अक़दूनिया āqadúniyá–यु० जौहरी जवाइन किरमानी, अक़्सन्तीनुल् बहर, दरमन (Worm seed.)

अकन akan–हिं० आक, मदार, अकौंद (calotropis Gigantea or Procera, *R. Br.*) स० फॉ० इं० ।

अक़न aqán–अ० गंदह–बाल–फ़ा० । कच-शुद्धि, कचदुर्गन्ध–हिं० । वह व्यक्ति जिसके कच से दुर्गन्ध आती हो ।

अकनक akanak–अ० सुरिंजान, कडुआ (Hermodactylus 'bitter'.)

अकनना Akananá–हिं० क्रि० स० [सं० आ-कर्णन=सुनना] कान लगाकर सुनना । चुपचाप सुनना, आहट लेना, सुनना, कर्णगोचर करना ।

अकनादि akanádi-बं०, पाठा, अम्बष्ठा (Cissampelos Pereira, *Linn.*)

अक़नूस aqanús-यु० नासपाती (Pyrus Communis, *Linn.*)

अकन्दा akandá-हिं० मदार,आक (Calotropis Gigantea *R. Br.*)

अक़फ़् ãaqaf-अ० गिरहुल्जिल्द, मिस्मार, ऐ़नुस्समकह्, कर्न। कदर-सं०। अट्टन, ऽऽ, यह एक प्रकार का चर्म रोग है जिसमें साधारणतः पाँव के अंगूठे की संधि अथवा अँगुली की संधि की त्वचा कठोर और स्थूल हो जाती है और जूता पहन कर चलते समय व्यथा होती है। कोर्न (Corn), क्लेवस (Clavus)-इं०।

अक़ब ãaqab-अ० पै, ताँत, नस जिससे धनुष का चिल्ला बनाते हैं।

अक़बर ãakabar-अ० मोम भेद (A kind of beeswax)

अकबरी akabarí-हिं० संज्ञा० स्त्री० [अ०] (१) एक फलहारी मिठाई, तीखुर और उबाली घुइयाँ को घी के साथ फेंट कर उसकी टिकिया बनाते हैं और घी में तलकर चाशनीमें पागते हैं।

अकबरी अशरफ़ी akabarí asharafí-हिं० संज्ञा० स्त्री० [अ०] सोने का एक पुराना सिक्का जिसका मूल्य पहिले १६) था पर अब २०) हो गया है।

अकबरूस akabarús-यु० रूमी और हिंदी भेद से यह वृक्ष दो प्रकार का होता है। इनमें से रूमी को अकबरूस अर्थात् गोंद कहरुवा का वृक्ष कहते हैं।

अक़म ãaqam-अ० बन्ध्या अर्थात् बाँझ होना। गर्भ स्थिर न होना (Sterile)

अक़्माउर्रुम्मान aqamáãmrummán-अ० अनार की छाल या अनार वृक्ष की कली जिसमें फल लगता है। (Pomegranate bark or bud)

अक़्माउर्रुम्मानुल्हिन्दी aqamáãurrummánul-hindi-अ० नागकेशर-हिं०। (Mesua Ferrea, *Linn.*)

अक़याक़ैलून aqayáqailún-यु० चिरायता (Chirata)

अक़यान ãaqayán-अ० शुद्ध स्वर्ण, प्योर गोल्ड (pure gold)-इं०।

अक़यास aqayás-यु० इन्द्रायन (फल) रूम।

अक़यूस aqayús-यु० (१) अमरूद (Guava)। (२) नासपाती (Pyrus communis, *Linn.*).

अकर akara-हिं० वि० [सं०] बिना हाथ का, हस्त रहित।

अकर ãakar-अ० तिलछट, तेल-ऐ-मिट्ट, रसोब, दुर्द, गाद, गदलापन, तेल आदि की गाद। सेडिमेण्ट (Sediment)-इं०।

अक़रक़रतून aqarqartún यु० गिले अकरीतस्, एक प्रकार की मिट्टी है।

अकरकरभः akarakarabhah-सं० पु०। अकरकरा (See-Akarakará)।

अकरकरादिचूर्ण akarakarabhádichúrna-हिं० संज्ञा पुं० अकरकरा, सोंठ, कंकोल, केशर, पीपर, जायफल, लौंग तथा श्वेत चंदन इन्हें कर्ष कर्ष भरलें, चूर्णकर करडछान करें, पश्चात् अहिफेन शुद्ध १ पल, मिश्री (सिता) सर्व तुल्य मिला चूर्ण कर रक्खें। मात्रा-१ रत्ती शहद के साथ रात्रि को कामी पुरुष खावें तो वीर्य स्तम्भन हो। शा० सं० म० ख० अ० ६ श्लो० ४५।

अक़रक़रहा ãqarqarhá-अ० (Pyrethri Radix) अकरकरा-हिं०।

अकरकरा akarakará-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आकारकरभः] अकलकरा, अकोलकर, अकलकोरा -द०। आकारकरभः, अ (-आ) कल्लकः, अकल्लकरः, अकोलर, तीक्ष्णमूलः और रोशणकीलकः प्रभृति एवं इसके अनेक अन्य कल्पित संस्कृतनाम हैं। अकोरकोरा, आकरकरा, रोशुनिया-बं०। आ (-अ) क़रक़र्हा, ऊदुल्क़र्ह-अ०। अकल्करा, आक़रक़र्हा हस्पानी, आक़रक़रह-फ़ा०। पाइरीथ्राई रैडिक्स (Pyrethri Radix) एनासाइक्लस पाइरीथ्रम (Anacyclus Pyrethrum, *D. C.*)। पाल्टीथ्रम

रेडिक्स (Pyrothrum Radix) –ले०। पेलिटरी आफ स्पेन और पेलिटरी रूट, (Pellitory of Spain or Pellitory root)–इं०। सैलिवरी डी एस्पेग्नी (Saliv-aire d.' Espagne)–फ्रां०। अग्निकारम्–ता०। अग्निकरका, अग्निमाकारम्–मल०। अक्कार-कारम्, आकलकरे, मराठी-नीस,मराठी मोगरा-ते०। अक्कला करे–कना०। अक्कलकरा-मह०। अकर-करा-गु०। कुर्कजया या कुकया–श्रर८०। पोकर-मूल, आककरहा–पं०। अककों–बरब०।

मिश्रवर्ग

(*N. O. Compositæ*)

उत्पत्ति स्थान–भारतीय उद्यान, बङ्गदेश, अरब, उत्तरी अफ्रीका, अल्जीरिया और लीवाण्ट।

नोट—अकरकरा के उपयुक्त समस्त पर्याय अकरकरा वृक्ष(Anacyclus Pyrethrum, *D. C.*) की जड़ के हैं जो वास्तव में बाबूना का एक भेद है, जिसे स्पेनीय बाबूना (Spa-nish Chamomile or Anthemis Pyrothrum) कहते हैं। बाबूना नाम की मिश्रवर्ग (Compositeæ order) की निम्न चार ओषधियाँ जिनका तिब्बी ग्रंथों में वर्णन आया है परस्पर बहुत कुछ समानता रखती हैं, इसी कारण इनके ठीक निश्चीकरण में बहुधा भ्रम हो जाया करता है। वे निम्न हैं, यथा—(१) बाबूनज रूमी या गुफ़ाही (Anthemis Nobilis), (२) बाबूनह् बदबू (Anthomis Cotula), (३) बाबूना गावचश्म या उक़ह्वान (Matric-aria Parthenium) और (४) स्पेनीय बाबूना या आकूरकरहा (Anthemis Pyr-ethrum)। इन सब के लिए एन्थेमिस अथवा कैमोमाइल अर्थात् बाबूना शब्द का ही प्रयोग होता है (देखो—बाबूना अथवा उसके अन्य भेद)। इनके अतिरिक्त अकरकरा नाम की इसी वर्ग की दो और-ओषधियाँ है, अर्थात (१) बोज़ीदान या मधुर अकरकरा और(२) अकल-क़र (Spilanthus Oloraceæ) या पिपुलक–मह०, यमगुगर्मा–कना०। अकरकरा से बहुत कुछ समानता रखती हुई भी ये बिलकुल भिन्न ओषधि हैं। अस्तु, इनका वर्णन यथा-स्थान सविस्तर किया जाएगा। यहाँ पर बाबूना के भेदों में से एक भेद केवल अकरकरा का ही वर्णन होगा।

नाम विवरण—पाइरीथ्रम पाइराम(Pyros) से जिसका अर्थ अग्नि है, व्युत्पन्न यूनानी शब्द है। चूँकि: अकरकरा मदाहकारक होता है। इस कारण इसका उक्त नाम पड़ा। आक़रक़रहा आक़र और तक़रीह (व्रण कारक) से व्युत्पन्न अर्थ शब्द है और चूँकि यह गुण इसमें विद्यमान। अन्तु इसको उक्त नामसे अभिधानित कियागया है इसके ऊदुलक़ह् नाम पड़ने काभी यही उपर्युक्त कारण है। अन्य भाषाओं में भी इसी बात के ध्यान में रख कर नामों की कल्पना हुई है।

इतिहास—अकरकराका वर्णन किसी भी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थ, यथा—चरक, सुश्रुत, वाग्भट, धन्वन्तरीय व राजनिघंटु और राजवल्लभ प्रभृति में नहीं मिलता। हाँ! पश्चात् कालीन लेखकों यथा भावप्रकाश और शार्ङ्गधर प्रभृति ने अपनी पुस्तकों में इसका वर्णन किया है। (देखो शार्ङ्ग० अकारादि चूर्ण ६ अ०; भा०, म०, १ भ० उत्तरनी वटी और वै० निघ०)। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि भारतीयों को इसका ज्ञान इस्लामी हकीमों से हुआ; जिन्होंने स्वयं अपना ज्ञान यूनान वालों से प्राप्त किया। यूनानी हकीम दीसक़ूरीदूस (Dioscorides)ने पायरीथून नाम से, जिससे पाइरीथ्रम शब्द व्युत्पन्न है (और जिसको मुहीत अअ़ज़ममें फ़ रियून लिखा है), उक्त ओषधि का वर्णन किया है। किन्तु, मख़्ज़नुल् अद्वियह् के लेखक हकीम मुहम्मद हुसैन के कथनानुसार इसको अरबी में ऊदुलक़ह् कहते हैं और यह सीरिया में बहुतायत पैदा होता है तथा अकरकरा के बहुशः गुण रखता है। प्रमाणार्थ वे हकीम अन्ताक का वचन उद्धृत कर कहते हैं दो प्रकार का होता है, प्रथम सीरियन (शामी)

जिसका वर्णन डीसकुरीदूस ने किया है, और द्वितीय पाश्चात्य जो अफरीका और पाश्चात्य देशोंमें उत्पन्न होता है। उक्त वनस्पति की आकृति, पत्र, शाखा और पुष्प श्वेतपुष्पीय बाबूना कबीर के समान होते हैं, पर उसके (अकरकरा के) पुष्प पीत वर्ण के होते हैं। इसी की जड़ को अकरकरा और फ़ारसी में पर्यनोय तर्खून कहते हैं। हकीम अस्ताज़ का उक्त वर्णन बिल्कुल सत्य है। क्योंकि परिचमी अकरकरा वास्तव में स्पेनीय बाबूना की जड़ है जिसका वानस्पतिक नाम एन्थेमिस पाइरीथ्रम(Anthemis Pyrethrum)अर्थात् स्पेनीयबाबूना या स्पेनिश केमोमाइल (Spanish Chamomile) अर्थात् स्पेनीय बाबूना है। और इसी की जड़ हमारा उपर्युक्त अकरकरा है जिसका वर्णन हो रहा है। कोई कोई वच को ही अकरकरा कहते हैं। परन्तु अकरकरा और वच वस्तुतः दो भिन्न-भिन्न वस्तुएँ हैं।

वानस्पतिक वर्णन—यह अरब और भारतवर्षकी प्रसिद्ध बूटी है (यह बङ्गाल और मिश्र में भी उत्पन्न होती है)। इसके छोटे छोटे क्षुप चातुर्मास की पहिली वर्षा होते ही पर्वती भूमि में उत्पन्न होते हैं। इसकी शाखाएँ, पत्र और पुष्प सफ़ेद बाबूने के सदृश होते हैं, परन्तु डण्डल पोली होती है। गुजरात और महाराष्ट्र देश में इसकी डण्डी का अचार और साग बनते हैं। इसमें सोया के सदृश बीज आते हैं। डाली रोंगटेदार और पृथ्वी पर फैली हुई होती है तथा एक जड़ में से निकल कर कई होजाती है। उस डाली के ऊपर गोल गुच्छेदार छत्री के आकार का, किन्तु बाबूने से विपरीत पीले रंग का फूल होता है। डाली खड़ी खड़ी और पुष्प-पटल (Petals) सुफ़ेद होते हैं। इसकी जड़ औषध कार्य में आती है। ये सीधे सीधे टुकड़े, जिन पर कोई रेशा नहीं लगा होता, ३-४ इंच अर्थात् एक बालिस्त लम्बे और आधे से पौन इंच मोटे बेलनाकार गोल होते हैं। ऊपर के किनारे पर प्रायः वे रज रोमों की एक चोटी सी होती है। वाह्य भाग धूसर वर्ण का तथा झुर्रीदार होता है। इसको जहाँ से तोड़ें वहीं से टूट जाती है। गंध-विशेष प्रकारकी। स्वाद-इस जड़के खाने से गरमी मालूम होती है, चरपरी लगती और जिह्वा जलने लगती है, यही इसकी मुख्य परीक्षा है। इसको चबाने से मुँह से लालास्राव होने लगता है और सम्पूर्ण मुख एवं कंठ में चुनचुनाहट और कांटे से चुभते मालूम होते हैं। इसकी जड़ भारी (वज़नदार) और तोड़ने पर भीतर से सफ़ेद होती है। इसमें शीघ्र कीड़े लग जाया करते हैं। परीक्षा-अकरकरा अरण्य(जंगली)-कासनी की जड़के सदृश होता है; किन्तु यह (कासनी) तिक्त एवं काले रङ्ग की होती है।

रसायनिक संगठन-इसमें १-एक स्फटिकवत् अल्कलॉइड (क्षारीयसत्त्व) आकरकरीन (Pyrethrine), २-एक रेज़िन (राल) और ३-दो स्थायी (Fixed Oils) तथा उड़नशील तैल होते हैं।

प्रभाव—सशक्त लालानिस्सारक, प्रदाहजनक और कामोद्दीपक।

औषध-निर्माण-यौगिक चूर्ण, वटिकाएँ और कल्क।

(१) अकरकरा ४ भाग, इन्द्रायन २ भाग, नौसादर ३ भाग, कृष्णजीरक २ भाग, कुटकी ४ भाग और कालीमिर्च ४ भाग; इन सबको मिला चूर्ण प्रस्तुत करें। अपस्मार में इसको नस्य रूप से व्यवहार में लाएँ।

(२) अकरकरा ४ भाग, जायफल ३ भाग; लौंग २ भाग; दालचीनी ३ भाग; पिप्पलीमूल; केशर २ भाग; अफीम १ भाग; भंग ४ भाग; मुलेठी ४ भाग; मदार मूल त्वक् ५ भाग; वायविडङ्ग ३ भाग और शहद ५ भाग; सब को चूर्ण कर वटिका प्रस्तुत करें। मात्रा—आधी से २॥ रत्ती।

गुण—बच्चों के चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, संवेदन दंतोद्भेद, अतीसार, उदरशूल तथा वमन के लिए गुणदायक है।

रैडिक्स (Pyrothrum Radix) -ले॰। पेलिटरी आफ स्पेन और पेलिटरी रूट, (Pellitory of Spain or Pellitory root)-अं॰। सैलिवरी डी एस्पेग्नी (Salivaire d.' Espagne)-फ्रां॰। अक्किरकारम्-ता॰। अक्किरक्का, अक्किलाकारम्-मल॰। अक्कार-कारम्, आकलकर्रे, मराठी-नीगे, मराठी मोग्गा-ते॰। अकला करे-कना॰। अक्कलकरा-मह॰। अकर-करा-गु॰। कुकेजबा या कुकया-बर॰। पोकर-मूल, आककरहा-पं॰। अफर्का-बरब॰।

मिश्रवर्ग

(*N. O. Compositæ*)

उत्पत्ति स्थान-भारतीय उद्यान, बङ्गदेश, अरब, उत्तरी अफ्रीका, अल्जीरिया और लीवाण्ट।

नोट—अकरकरा के उपर्युक्त समस्त पर्याय अकरकरा वृक्ष(Anacyclus Pyrethrum, *D. C.*) की जड़ के हैं जो वास्तव में बाबूना का एक भेद है, जिसे स्पेनीय बाबूना (Spanish Chamomile or Anthemis Pyrothrum) कहते हैं। बाबूना नाम की मिश्रवर्ग (Compositæ order) की निम्न चार ओषधियाँ जिनका तिब्बी ग्रंथों में वर्णन आया है परस्पर बहुत कुछ समानता रखती हैं, इसी कारण इनके ठीक निश्चीकरण में बहुधा भ्रम हो जाया करता है। वे निम्न हैं, यथा—(१) बाबूनज रूमी या तुफ़ाही (Anthemis Nobilis), (२) बाबूनह् बद्बू (Anthemis Cotula), (३) बाबूना गावचश्म या उक़्हुवान (Matricaria Parthonium) और (४) स्पेनीय बाबूना या आकरकरहा (Anthemis Pyrothrum)। इन सब के लिए एन्थेमिस अथवा कैमोमाइल अर्थात् बाबूना शब्द का ही प्रयोग होता है (देखो—बाबूना अथवा उसके अन्य भेद)। इनके अतिरिक्त अकरकरा नाम की इसी वर्ग की दो और ओषधियाँ हैं, अर्थात् (१) बोज़ीदान या मधुर अकरकरा और (२) अकल-कर (Spilanthus Oleraceæ) या पिपुलक-मह॰, अनमुगली-कना॰। अकरकरा से बहुत कुछ समानता रखती हुई भी ये बिलकुल भिन्न ओषधि हैं। अस्तु, इनका वर्णन यथा-स्थान सविस्तर किया जाएगा। यहाँ पर बाबूना के भेदों में से एक भेद केवल अकरकरा का ही वर्णन होगा।

नाम विवरण—पाइरीथ्रम पाइराम(Pyros) से जिसका अर्थ अग्नि है, व्युत्पन्न यूनानी शब्द है। चूँकि अकरकरा प्रदाहकारक होता है; इस कारण इसका उक्त नाम पड़ा। आक़रक़रहा अक़र और तफ़रीह (व्रण कारक) से व्युत्पन्न अरबी शब्द है और चूँकि यह गुण इसमें विद्यमान है अस्तु इसको उक्त नामसे अभिधानित कियागया है। इसके ऊ़दुल्क़ह् नाम पड़ने काभी यही उपर्युक्त कारण है। अन्य भाषाओं में भी इसी बात को ध्यान में रख कर नामों की कल्पना हुई है।

इतिहास—अकरकराका वर्णन किसी भी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थ, यथा—चरक, सुश्रुत, वाग्भट, धन्वन्तरीय व राजनिघंटु और राजवल्लभ प्रभृति में नहीं मिलता। हाँ! पश्चात् कालीन लेखकों यथा भावप्रकाश और शार्ङ्गधर प्रभृति ने अपनी पुस्तकों में इसका वर्णन किया है। (देखो शार्ङ्ग॰ अकारादि चूर्ण ६ अ॰; भा॰, म॰, १ भ॰ ज्वरघ्नी वटी और वै॰ निघ॰)। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि भारतीयों को इसका ज्ञान इस्लामी हकीमों से हुआ; जिन्होंने स्वयं अपना ज्ञान यूनान वालों से प्राप्त किया। यूनानी हकीम दीसक़ूरीदूस (Dioscorides)ने पायरीथ्रून नाम से, जिससे पाइरीथ्रम शब्द व्युत्पन्न है (और जिसको मुहीत अअ़्ज़ममें फ़ारियून लिखा है), उक्त ओषधि का वर्णन किया है। किन्तु, मख़्ज़नुल अद्विय़ह् के लेखक हकीम मुहम्मद हुसैन के कथनानुसार इसको अरबी में ऊ़दुल्क़ह् असली कहते हैं और यह सीरिया में बहुतायत से पैदा होता है तथा अकरकरा के बहुशः गुण धर्म रखता है। प्रमाणार्थ वे हकीम अन्ताकी का वचन उद्धृत कर कहते हैं कि—अकरकरा दो प्रकार का होता है, प्रथम सीरियन (शामी)

जिसका वर्णन डीसकूरीदूस ने किया है, और द्वितीय पाश्चात्य जो अकरीका और पाश्चात्य देशोंमें उत्पन्न होता है। उक्त वनस्पति की आकृति, पत्र, शाखा और पुष्प श्वेतपुष्पीय बाबूना कबीर के समान होते हैं, पर उसके (अकरकरा के) पुष्प पीत वर्ण के होते हैं। इसी की जड़ को अकरकरा और फ़ारसी में पर्यैनीय तर्खून कहते हैं। हकीम अन्ताकी का उक्त वर्णन बिल्कुल सत्य है। क्योंकि पश्चिमी अकरकरा वास्तव में स्पेनीय बाबूना की जड़ है जिसका वानस्पतिक नाम एन्थेमिस पाइरीथ्रम(Anthemis Pyrethrum)अर्थात् आग्नेयबाबूना या स्पेनिश केमोमाइल (Spanish Chamomile) अर्थात् स्पेनीय बाबूना है। और इसी की जड़ हमारा उपर्युक्त अकरकरा है जिसका वर्णन हो रहा है। कोई कोई बच को ही अकरकरा कहते हैं। परन्तु अकरकरा और बच वस्तुतः दो भिन्न-भिन्न वस्तुएँ हैं।

वानस्पतिक वर्णन—यह अरब और भारतवर्षकी प्रसिद्ध बूटी है (यह बङ्गाल और मिश्र में भी उत्पन्न होती है)। इसके छोटे छोटे क्षुप चातुर्मास की पहिली वर्षा होते ही पर्वती भूमि में उत्पन्न होते हैं। इसकी शाखाएँ, पत्र और पुष्प सफ़ेद बाबूने के सदृश होते हैं, परन्तु डण्ठल पीली होती हैं। गुजरात और महाराष्ट्र देश में इसको डण्ठी का अचार और साग बनाते हैं। इसमें सोआ के सदृश बीज आते हैं। डाली रोंगटेदार और पृथ्वी पर फैली हुई होती हैं तथा एक जड़ में से निकल कर कई होजाती हैं। उस डाली के ऊपर गोल गुच्छेदार छत्री के आकार का, किन्तु बाबूने से विपरीत पीले रंग का फूल होता है। डाली खड़ी खड़ी और पुष्प-पटल (Petals) सुफ़ेद होते हैं। इसकी जड़ औषध कार्य में आती है। ये सीधे सीधे टुकड़े,जिन पर कोई रेशा नहीं लगा होता, ३--४ इंच अर्थात् एक बालिस्त लम्बे और आधे से पौन इंच मोटे बेलनाकार गोल होते हैं। ऊपर के किनारे पर प्रायः वे रङ्ग रोमों की एक चोटी सी होती है। बाह्य भाग धूसर वर्ण का तथा झुर्रीदार होता है। इसको जहाँ से तोड़ें वहीं से टूट जाती है। गंध-विशेष प्रकारकी। स्वाद-इस जड़के खाने से गरमी मालूम होती है, चरपरी लगती और जिह्वा जलने लगती है, यही इसकी मुख्य परीक्षा है। इसको चबाने से मुँह से लालास्राव होने लगता है और सम्पूर्ण मुख एवं कंठ में चुनचुनाहट और कांटे से चुभते मालूम होते हैं। इसकी जड़ भारी (वज़नदार) और तोड़ने पर भीतर से सफ़ेद होती है। इसमें शीघ्र कीड़े लग जाया करते हैं। परीक्षा—अकरकरा अरण्य(जंगली)-कासनी की जड़के सदृश होता है; किन्तु वह (कासनी) तिक्त एवं काले रङ्ग की होती है।

रसायनिक संगठन—इसमें १-एक स्फटिकवत् अल्कलॉइड (क्षारीयसत्व) पाइरेथीन (Pyrethrine), २-एक रेज़िन (राल) और ३-दो स्थायी (Fixed Oils) तथा उड़नशील तैल होते हैं।

प्रभाव—सशक्त लालानिस्सारक, प्रदाहजनक और कामोद्दीपक।

औषध-निर्माण-यौगिक चूर्ण, वटिकाएँ और कल्क।

(१) अकरकरा ४ भाग, इन्द्रायन २ भाग, नौसादर ३ भाग, कृष्णजीरक २ भाग, कुटकी ४ भाग और कालीमिर्च ४ भाग; इन सबको मिला चूर्ण प्रस्तुत करें। अपस्मार में इसको नस्य रूप से व्यवहार में लाएँ।

(२) अकरकरा ४ भाग, जायफल ३ भाग; लौंग २ भाग; दालचीनी ३ भाग; पिप्पलीमूल; केशर २ भाग; अफीम १ भाग; भंग ४ भाग; मुलेठी ४ भाग; मदार मूल त्वक् २ भाग; वायविडङ्ग ३ भाग और शहद १ भाग; सब को चूर्ण कर वटिका प्रस्तुत करें। मात्रा—आधी से २॥ रत्ती।

गुण—बच्चों के चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, सवेदन दंतोद्भेद, अतीसार, उदरशूल तथा वमन के लिए गुणदायक है।

नष्ट होता है। शहत के साथ अकरकरा चूर्ण को चाटने में मृगी, अंधकार आना और पक्षाघात प्रभृति रोग नष्ट होते हैं।

अकरकरे के कपडछन किए हुए बारीक चूर्ण को सूँघने में नाक रुकना अर्थात् श्वासावरोध दूर होता है। यदि इसको सिरके में भिगो दाँत के नीचे रक्खें तो दन्तशूल नष्ट होता है। चबाने या जिह्वा पर बुरकाने से जीभ की आर्द्रता दूर होकर तुतलाना मिटता है।

इसके क्वाथ को मुख में रखने से हिलते दाँत मजबूत होते हैं। उक्त क्वाथ में सिरका मिला कर गंडूष करने से गले का फोड़ा, काग का लटक- आना तथा जीभ के लटकने (जो कफ के कारण हो) को लाभ पहुँचता है।

पीस कर मर्दन करने से पसीना लाता है। केवल अकरकरा, या अकरकरा और फावानिया दोनों, को गलेमें डोरेसे बाँधकर लटकाएँ तो बच्चे की मृगी दूर होती है। यदि इकरेंगे काले कुत्ते के बाल और अकरकरा दोनों को बालक के बाँध दे तो इन्द्रियों में चैतन्यता हो तथा आमाशय के रोग और ज्वर नष्ट हों।

अकरकरा के लऊक़ (अवलेह) में शहद मिला के पीने से देह की कांति बढ़ती है, तथा छाती का दर्द, कफ को पुरानी खाँसी एवं सरदी के रोग दूर होते हैं। यह आमाशय से आँव को निकालता एवं शीतल प्रकृति वाले की मैथुन शक्ति को बढ़ाता है।

यदि आधा दिरम (३॥ मा०) घोट के पिएँ तो यत्नपूर्वक कफ को जुलाब द्वारा निकालता है। ज्वर आने से प्रथम अकरकरा को जैतून के तेल में पीस सम्पूर्ण शरीर में मालिश करें तो ज्वर, सरदी का लगना दूर होता है और पसीना लाता एवं देह के जोड़ (संधियों) की बीमारी दूर करता है। अकरकरा के तेल को इन्द्रीपर मलने से इन्द्री दृढ़ तथा कामशक्ति प्रबल होती है, और मैथुन में विशेष आनन्द आता है। विधि-पूर्वक शहद में घोल मिला (पतला लेप) करने से स्त्री को बहुत जल्दी स्खलित करता है। यदि बाकला के आटे के साथ घोट पोटली में रख इन्द्री और अण्डकोषों में बांधे तो गुण करता है, अर्थात् जिसके फोतों को बहुत सर्दी लगती हो उसे लाभ पहुँचाता है।

सबसे अद्भुत बात इसमें यह है कि इस को नौसादर के साथ बारीक पीस तालु और मुख में खूब लगाए अर्थात् रगड़े, तो आग से मुँह कदापि नहीं जलता। अकरकरा को सिरके के साथ औटाए तो खमीर के सदृश हो जाएगा। इसे कीड़े खाए हुए दाँतों के ऊपर रखने से सब कीड़े मर के गिर पड़ेंगे।

एक औकिया शुष्क अकरकरा को कूटे और आधसेर जलमें औटाए जब एक औक़िया शेष रहे तब उतार शीतल कर हाथों से मलकर छान ले, फिर दो औक़िया जैतून के तेल के साथ दुहेरी देग में मिलाकर काम में लाए।

गुण—इस रोगन के पीने से पसीना निकलकर सर्दी का ज्वर नष्ट होता है। यह सर्दी के यावन्मात्र रोगों को नष्ट करता एवं मैथुनशक्ति को बढ़ाता है।

अकरकरा का सऊत नाक में टपकाने से मस्तक पीड़ा, आधा शीशी तथा मृगी नष्ट होती है एवं यह शीतल व मस्तक को बलिष्ट करने में उत्तम है।

जिगर के रोगों में अकरकरा की प्रतिनिधि पीपल और शहत है और आमाशय के रोगों में रासना और अगर। यदि समय पर ये दोनों न प्राप्त हो तो उनके स्थान में सोंठ और इससे आधी काली मिरच लेनी चाहिए। गंडूष में पहाड़ी पोदीना डेढ़ गुना, हलक की पीड़ा में इलायची लेनी चाहिए। एवं अकरकरा के उसारे से निर्मित तैल लेना चाहिए।

वामक व विरेचक औषध पीने से पहिले यदि अकरकरा खा लें तो फिर कड़वे, चरपरे, कसैले रस का कुछ भी ज्ञान न होगा। अतएव जिसको क्वाथ आदि पीने से घृणा होती है हकीम लोग उसको प्रथम अकरकरा चबाने को देते हैं। जब वह चबाकर थूक देता है तो ऊपर से फिर जो क्वाथ पिलाना हो पिलाते हैं।

ऑफ़िशल प्रिपेयरेशन्स (ए० मे० मे०)—
टिङ्क्चूरा पाइरोथ्राई (Tinctura Pyrethri)-ले० । टिङ्क्चर ऑफ़ पाइरीथ्रम (Tincture of Pyrethrum)-इं० । अकरकरासव-हिं० ।

निर्माणविधि—पाइरीथ्रम की जड़का ४०नं० का चूर्ण ४ आउन्स अलकुहॉल (७०%) आवश्यकतानुसार । चूर्ण को ३ फ्लुइड आउन्स अल्कुहॉल में तर करके पर्कोलेशन द्वारा एक पाइन्ट टिंक्चर तय्यार कर लें ।

प्रयोग—लालास्राव हेतु इसका स्थानिक उपयोग होता है । यह दाँतके दर्द,गठिया,अपस्मार, पक्षाघात, कफवात, तोतलापन और ज्वर तथा अनेक अन्य रोगों में लाभ पहुँचाता है ।

मात्रा—३॥ मा० । अहित—फुफ्फुस को । दर्पनाशक—कतीरा और मुनक्का ।

गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेद की दृष्टि से—अकरकरा उष्णवीर्य, कटुक तथा बलकारक है, तथा प्रतिश्याय शोथ एवं वात का नाश करता है । धु० नि० र० ।

वैद्यकीय व्यवहार

भावप्रकाश—फिरंग रोग में—विशुद्ध-पारद आधा तोला, खदिरचूर्ण आधा तोला, अकरकरा चूर्ण १ तोला, मधु १॥ तोला, इनको एकत्र मर्दन कर वटिका प्रस्तुत करें । इसमें से प्रातःकाल १-१ वटी जल के साथ सेवन करने से फिरंग रोग (Syphilis) नष्ट होता है ।

यूनानी एवं नव्यमत—अकरकरा को चबाने से प्रथम दाह प्रतीत होता है; तत्पश्चात् शीघ्र झुनझुनाहट एवं सनसनाहट का ज्ञान होता तथा अधिक मात्रा में लाला की उत्पत्ति होती है । क्योंकि मौखिकी धमनी कोथमन्तु तथा लालाग्रंथि पर इसका उत्तेजक प्रभाव होता है । परन्तु थोड़ी देर पश्चात् नाड़ियाँ शिथिल होजाती हैं । अस्तु, यह एक सशक्त लालानिस्सारक (पायकुॅल स्यालेगॉग) तथा किञ्चित् अवसन्नताजनक (अनस्थेटिक) है । उक्त प्रभावों के कारण इसको दन्तपीड़ा, कव्वा लटकने (रीलै-क्सड् युवुला) और कण्ठशोथ (सोरथ्रोट) में मंजन गण्डूष प्रभृति रूप से व्यवहार लाते हैं । दन्तपीड़ा में अकरकरा को विकृत के नीचे रखने तथा चबाने से आ इसका टिंक्चर तथा टिंक्चर आयोडीन द समभाग सम्मिलित कर इसमें जरा सी तर करके पीड़ा युक्त अन्त में रखने से वेद शमन होती है । २ आउंस (१ छं०) ज में एक ड्राम (३॥ मात्रा) इसका टिंक् मिलाकर इसका गंडूष करते है । डॉक्टर रॉ इसको योषापस्मार (ग्लोयस हिस्टैरिकस) गुणदायी बताते हैं । (ए० मे० मे०)

यूनानी ग्रन्थकार—इसे तीसरी कक्षा के अ में और चतुर्थ कक्षा तक रूक्ष मानते हैं परन्तु कोई कोई तीसरी और चतुर्थ कक्षा शीतल मानते हैं ।

देह में जो सुद्दा (रुधिर आदि की गाँठ पड़ जाता है उसको खोलता, मस्तक को दुष मल से शुद्ध करता तथा मस्तक के अवय तथा कफ आदि को निस्सन्देह चमक (जिला देता है । अर्दित (लकवा), पक्षाघात, कफवात पीड़ा के साथ गर्दन का जकड़ जाना, जोड़ों का ढीला होना, तोतलापन, छाती, दाँत और संधि वेदना, गृध्रसी, जलंधर, पसीना और ज्वर को दूर करता,शीतल प्रकृति वाले की इन्द्री की शक्ति को तथा स्तनों में दूध को बढ़ाता, खुलकर पेशाब लाने को व स्त्रियों के आर्तव को पतला तथा गाढ़ा लेप करने से लाभ पहुँचाता है । मस्तक रोग, संधि के रोग, वात-तन्तु (पुट्ठे) के, मुख के और छाती के रोग में अकरकरा को जैतून तेल में पीसकर मर्दन करने से लाभ होता है और कुबड़ापन, सुन्नवात, व ढीलेपन को, अवयवों के पुराने रोगों को पूर्वोक्त उपयोग गुणदायक होता है ।

यदि अकरकरा के क्वाथको गरम गरम पर लेप और तालू पर मर्दन करें तो मस्तक क गरम कर नज़ले को नष्ट करता है । यदि इसे मस्तगी या कर्पूर्ली वस्तु के साथ चटाएँ तो यह मृगी रोग, जो दूषित दोषों से प्रकट हुआ है,

नष्ट होता है। शहत के साथ अकरकरा चूर्ण को चाटने से मृगी, अंधकार आना और पक्षाघात प्रभृति रोग नष्ट होते हैं।

अकरकरे के कपड़छन किए हुए बारीक चूर्ण को सूंघने से नाक रुकना अर्थात् श्वासावरोध दूर होता है। यदि इसको सिरके में भिगो दाँत के नीचे रक्खें तो दन्तशूल नष्ट होता है। चबाने या जिह्वा पर बुरकाने से जीभ की आर्द्रता दूर होकर तुतलाना मिटता है।

इसके क्वाथ को मुख में रखने से हिलते दाँत मज़बूत होते हैं। उक्त क्वाथ में सिरका मिला कर गंडूष करने से गले का फोड़ा, काग का लटकना तथा जीभ के लटकने (जो कफ के कारण हो) को लाभ पहुँचता है।

पीस कर मर्दन करने से पसीना लाता है। केवल अकरकरा, या अकरकरा और फावानिया दोनों, को गलेमें डोरेसे बाँधकर लटकावें तो बच्चे की मृगी दूर होती है। यदि इनमेंसे काले कुत्ते के बाल और अकरकरा दोनों को बालक के बाँध दे तो इन्द्रियों में चैतन्यता हो तथा आमाशय के रोग और ज्वर नष्ट हों।

अकरकरा के लऊक (अवलेह) में शहद मिला के पीने से देह की कांति बढ़ती है, तथा छाती का दर्द, कफ को पुरानी खाँसी एवं सरदी के रोग दूर होते हैं। यह आमाशय से आँव को निकालता एवं शीतल प्रकृति वाले की मैथुन शक्ति को बढ़ाता है।

यदि आधा दिरम (1॥ मा०) घोट के पियें तो बलपूर्वक कफ को जुलाब द्वारा निकालता है। ज्वर आने से प्रथम अकरकरा को जैतून के तेल में पीस सम्पूर्ण शरीर में मालिश करें तो ज्वर, सरदी का लगना दूर होता है और पसीना लाता एवं देह के जोड़ (संधियों) की बीमारी दूर करता है। अकरकरा के तैल को इन्द्रीपर मलने से इन्द्री दृढ़ तथा कामशक्ति प्रबल होती है, और मैथुन में विशेष आनन्द आता है। विधि-पूर्वक शहद में घोल मिला (पतला लेप) करने से स्त्री को बहुत जल्दी स्खलित करता है। यदि बाकला के आटे के साथ घोट पोटली में रख इन्द्री और अण्डकोषों में बांधे तो गुण करता है, अर्थात् जिसके फोतों को बहुत सर्दी लगती हो उसे लाभ पहुँचाता है।

सबसे अद्भुत बात इसमें यह है कि इस को नौसादर के साथ बारीक पीस तालु और मुख में खूब लगाए अर्थात रगड़े, तो आग से मुंह कदापि नहीं जलता। अकरकरा को सिरके के साथ औटाए तो खमीर के सदृश हो जाएगा। इसे कीड़े खाए हुए दांतों के ऊपर रखने से सब कीड़े मर के गिर पड़ेंगे।

एक औकिया शुष्क अकरकरा को कूटे और आधसेर जलमें औटाए जब एक औकिया शेष रहे तब उतार शीतल कर हाथों से मलकर छान ले, फिर दो औकिया जैतून के तेल के साथ दुहेरी देग में मिलाकर काम में लाए।

गुण—इस रोगनके पीने से पसीना निकलकर सर्दी का ज्वर नष्ट होता है। यह सर्दी के वातजन्य रोगों को नष्ट करता एवं मैथुनशक्ति को बढ़ाता है।

अकरकरा का सऊत नाक में टपकाने से मस्तक पीड़ा,आधा शीशी तथा मृगी नष्ट होती है एवं यह शीतल व मस्तक को बलिष्ट करने में उत्तम है।

जिगर के रोगों में अकरकरा को प्रतिनिधि पीपल और शहत है और आमाशय के रोगों में रासना और अगर। यदि समय पर ये दोनों न प्राप्त हों तो उनके स्थान में सोंठ और इससे आधी काली मिरच लेनी चाहिए। गंडूष में पहाड़ी पोदीना डेढ़ गुना, हलक की पीड़ा में इलायची लेनी चाहिए। एवं अकरकरा के उसारे से निर्मित तैल लेना चाहिए।

वामक व विरेचक औषध पीने से पहिले यदि अकरकरा खा लें तो फिर कड़वे, चरपरे, कषैले रस का कुछ भी ज्ञान न होगा। अतएव जिसको क्वाथ आदि पीने से घृणा होती है हकीम लोग उसको प्रथम अकरकरा चबाने को देते हैं। जब वह चबाकर थूक देता है तो ऊपर से फिर जो क्वाथ पिलाना हो पिलाते हैं।

अकरकरादिचूर्ण akarkarádi chúrna. –हिं० अकरकरादि चूर्ण– अमृतधारा चूर्ण– अकरकरा, सेंधानमक, चित्रक आमला, अजवायन, इन इन्हें समान भाग लें और सोंठ २ भाग लेकर बारीक पीस कपड़ छान करें। पुनः बिजौरे के रस की भावना देकर रक्खें।

गुण—मन्दाग्नि, अरुचि, खाँसी, श्वास, गले के रोग, मरोड़ा, पीनस, मृगी, उन्माद तथा सन्निपात को नष्ट करता है। अभि० नि० भा० १।

अकरकराहा akarkaráhá. –हिं० } अकरकरा
अकरकरो akarkaro –गु० } (Pyrethri Radix.)

अकरकेशियम acer Cæsium, *Wall.* –ले० हजल, किलपत्तर। इसका प्रयोग औषध हेतु अथवा मवेशियों के चारे के लिए होता है। प्रयोगांश–शाखा और पत्र। मेमे० । फा० इं० १ भा०।

अकरकाँटा akarkántá. –हिं०, बं० ढेरा, अंकोल (Alangium Decapetalum, *Lam.*) इ० मे० मे०।

अकरखना akarakhaná –हिं० क्रि० स० [सं० आकर्षण] (१) खींचना, तानना। (२) चढ़ना।

अकरपिक्टम् acer pictum, *Thunb.* –ले० अकर केशियम (Acer Cæsium.) मेमे० । फा० इं० १ भा०। देखो–किलपत्तर।

अकरफ्स akarafsa –अजमोद, करफ्स प्रसिद्ध है (Apium involucratum.)

अक़रब áaqarab.–अ० (Scorpion.) वृश्चिक, बिच्छू–हिं०। कज़दुम–फ़ा०।

अक़रब áakrab–अ० जंगली मरसों का एक भेद है जिसका बीज श्वेत और लम्बा होता है।

अक़रब aqaraba–हिं० संज्ञा पुं० [अ०] जिस घोड़े के मुँह पर सफ़ेद रोएँ हों और उन सफ़ेद रोओं के बीच बीच में दूसरे रँग के भी रोएँ हों उसे अक़रब कहते हैं। यह ऐबी समझा जाता है।

अक़रब बहरी áaqrab bahrí–अ० मिनी (–घी) मछली। यह एक प्रकार की त्र्याभायुक्त खाकी रँग की वृश्चिक सदृश छोटी मछली है। (Saccho Branchus.)

अक़रबुलमाअ áaqrabulmáa–अ० वर्ड, कर्कट, केकड़ा–हिं०। सर्तान–अ०। (Crab)

अक़रयान áaqaryán – इक्क्लुल्मद्यून (Asplenium Falcatum, *Willd.*)

अकरविलोसम (acer villosum, *Wall.*) –ले० केरेंशेरा–हिम०। यह चारे के काम में आता है। प्रयोगांश–पत्र। मे० मे०।

अकरश áakrash.–अ० सोल भेद।

अक़रस,-सा aqras,-sa–यु० दवक, एक फल है जो चने के दाने के बराबर होता है। किन्तु गोल नहीं होता।

अकरा akará–सं० स्त्री० आमला का वृक्ष –हिं०। (Phyllanthus Emblica, *Linn.*)–ले०। श० च०। महँगा, बहुमूल्य।

अकराकरभः akarákarabhah.–सं० पुं० अकरकरा। (Pyrethrum Radix.) शार्ङ्ग० अकारादि चू० ६ अ०। म० खं०।

अक़रामातीक़ान aqará-mátiqán.–यु० ज़ुरूर, अर्थात् वे शुष्क औषधियां जो पीसकर व्रण प्रभृति पर छिड़की जाती हैं। अवचूर्णन–सं०।

अकराम्भकः akarámbhakah –सं० पुं० अकरकरा (Pyrethrum Radix.)

अकरास (akarása)–हिं० संज्ञा पुं० [हिं० अकड़] (१) अँगड़ाई, देह टूटना। संज्ञा पुं० [सं० अकर] आलस्य, सुस्ती, कार्य शिथिलता

अकरास सेपोटा achras Sapota, *Linn.* –ले० चिकु–महा०। चिकलीचिक्कुकाय–कर्ना० फल–सपोटा–हिं०, बं०। शिमें एलुप्पै–ता० शिम-इप्प–ते० । कुम्पोले–कना०। चक्की कोटी-कजहार–इ०। सैपोडिला प्लम (Sapodilla plum.), बुलीट्री (Bully tree)–इं०। सैपोटिलीर (Sapotillier)–फ्राँ०। शिमई इलुप्पई–म०।

मधुक वर्ग

(N. O. Sapotaceæ.)

उत्पत्ति स्थान-पश्चिमी द्वीप तथा भारत वर्ष के अनेक भागों में इसको लगाते हैं।

इतिहास व प्रयोगआदि-पश्चिमी किनारों तथा बंगाल में फल के लिए इसके वृक्ष लगाए जाते हैं और फल बाज़ारों में विक्रय हेतु लाए जाते हैं। भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों में यह कम होता है। पश्चिमी द्वीप एवं अमरीका में इसकी छाल वस्य तथा ज्वरघ्न प्रभाव के लिए प्रयोग में लाई जाती है। इसका बीज तीन रत्ती की मात्रा (अधिक परिमाण में यह विषैला प्रभाव उत्पन्न करता है) में मूत्रल है। भारतीयों में इसके फल की बहुत प्रसिद्धि है। उनका कथन है कि यदि इसके फल को पिपले हुए मक्खन में रात्रिभर भिगो रक्खा जाय और प्रातःकाल सेवन किया जाय तो यह पित्त एवं ज्वर संबन्धी आक्रमणों से सुरक्षित रखता है। (डाइमाक)

वानस्पतिक वर्णन-इसकी त्वचा रक्तवर्ण की होती है। ऊपरी भाग धूसर वर्ण का होता है।

स्वाद-तिक्त और अत्यन्त कसैला।

फल-बाहरसे खुरदरा और अंडाकार भीतर से पीताभायुक्त श्वेत, नर्म और गूदादार-और पकने पर इसका स्वाद मेव के समान होता है। बीज काले रंगके चमकीले अंडाकार और लम्बे होते हैं।

रसायनिक संगठन-(१)दो रेज़िन (Resins) जिनमें से एक ईथर में घुल जाता है, (२) कषायीन (Tannin.) ११`= प्रतिशत, और (३) एक क्षारीय सत्व सैपोटीन(Sapotine) जो ईथर, नवसार और सम्मोहिनी (Chloroform) में घुल जाता है; तथा एमोनिया द्वारा अपने लवणों से भिन्न होकर तलस्थायी हो जाता है। ई० मे० प्ला०; फा० इं० २ भा०।

क़रासुलमलिक aqrásul-malik-अ० एक हिन्दी बूटी का नाम है। कोई कोई जैनफल को कहते हैं।

अकरी Akari-हिं०, (१) Dunal (seeds of-) अँकरी। (२) एक असगंध की जाति का पौधा या झाड़ी जो पंजाब, सिंध और अफग़ानिस्तान आदि देशों में होती है। पुनीर के बीज -हिं०। कड़ी-पं०। आलिश-पु०। Witharia (Puneeria) Coagulans. इं० मे० मे०। फा० इं० २ भा०। स० फा० इं०।

अक़्रीतस-मातस aqrítas-matas-यु० गुलेऊर्लीकुल् क़ुद्स।

अक़रुज़्ज़ैत aakaruzzait-अ० तेल या ज़ैतून तैलकी तलछट। सेडिमेण्ट (Sediment)-इं०।

अकरूट akrut-पं० अखरोट walnut(Juglans regia, Linn.)

अक़रुलबहर akrul-bahar-अ० मोथा के सदृश एक जड़ है जिसको लैफ़ुलब़ह्र भी कहते हैं।

अक़्रूस aqrús-यु० अक़सूस, मवेज़ज अस्ली के नाम से प्रसिद्ध है।

अकरोट akrot-इं० } अखरोट- Juglans regia, Linn. (walnut)
अकरोट्टु akarottu-ता० }

अकरोफ़स akarofas-यु० हौज़ रूमी।

अकरोः akaroh-सं० पु० अखरोट (Juglans regia, Linn.)

अकरोहक akarohak-फ़ा० अंज़रूत (Astragalus Sarcocolla, Dymock.) फा० इं०।

अकरौट akarout-हिं० } अखरोट,अक्रोट Walnut (Juglans regia, Linn.)
अकरौटु akaroutu-ते० }
अकरौड akaroad-मह० }
अकरौडु akaroudu-कना० }

अकर्करः akarkarah } सं० पु० अकरकरा (Pyrethrum Radix) गुणधर्म-उष्णवीर्य, बलकारक और कटु तथा प्रतिश्याय शोथ और वात नाशक है। वै० निघ०।
अकल्करः akalkarah }

अकर्णः akarnah-सं० त्रि० (१) Devoid of ears, deaf बहरा, बुचा, बधिर-हिं०। इं०च०। (२) कान रहित (Destitute of

karna.) । (२) साँप, सर्प (Snake, A serpent)।

अकर्त्तनः akartanah–सं० त्रि० (Dwarfish) वामन । वै० श० सिं० । बाँयोन-बं० ।

अकर्षण akarshaṇa– हिं० संज्ञा पु० दे० आकर्षण ।

अकलकरः akalkarah–सं० पु० उकरा, पोकरमूल (Spilanthus Oleraceæ) इं० मे० मे० । फा० इं० ।

अकलकरा akalkará } –फ़ा० अकरकरा
अक़लक़ोरा aqalqorá } (Pyrethrum Radix) स० फ० इं० ।

अकल akala—हिं० वि० [सं०] (१) अवयव रहित । जिसके अवयव न हों । (२) जिसके खंड न हों । अखंड । सर्वाङ्गपूर्ण । (Not in parts, without parts.) (३) [सं० अ=नहीं+हिं० कल=चैन] विकल । व्याकुल । बेचैन।

अकलबर akalabar–हिं० संज्ञा पुं० दे० अकलबीर ।

अकलबीर akalabíra–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] करवीर भांग की तरह का एक पौधा जो हिमालय पर काश्मीर से लेकर नैपाल तक होता है । इसकी जड़ रेशम पर पीला रंग चढ़ाने के काम में आती है । (Datisca cannabina, *Linn.*) देखो—अकलबार

अकलबर्की akalbarki–इ० सर्वजया, कामाक्षी-सं० । स्वर्गजया-हिं० । देवकली-मह० । कृष्णताम्र-ते० । कल्ढामखर-ना०, (Canna Indica, C. orientalis.) इं०मे० मे० ।

अकलबार akalabár–हिं० (१) सवजया-बं० । सर्वजया, कामाक्षी-सं० । तेहर्ज-काश० । (Common Indian Shot.) इं० हैं० गा० । इं० मे० मे० । फॉ० इं० ३ भा० ।

अकलबार akalbár } —हिं० बैर-बज,
अकलबेर akalbar } महजल(फॉ० इं०) –पत्र बंग (इं० मे० मे०)–पं० । वगतेल-तेहर्ज-काश० । डेटिस्का केनाबीना (Datisca Cannabina, *Linn.*)–ले०।

अफलबार जाति
(*N. O. Datisceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान — हिमालय (काश्मीर से नैपाल पर्यन्त) और सिन्ध ।

वानस्पतिक विवरण-प्रकाण्ड–२-६ फ़ो०, कठोर, शाखी; निम्नपत्र–१ फु०, पक्षाकार । लघुपत्र (पत्रक)–७-११ संख्या में, ६ इं० लम्बा १॥ इं० चौड़ा, पत्रमूल (डंठल)–युक्त, ऊर्ध्व (पत्र) अत्यन्त सूक्ष्म तथा कम कटे हुए; पुष्पपत्र (पंखड़ी) सामान्य (अनिश्चित) ३ इं० लम्बा तथा ३। इं० चौड़ा, पुष्पदण्डी में प्रायः पतली अंथनियां होती हैं ।

पराग-कोष–लम्बा अधिक बड़ा, तन्तु बहुत सूक्ष्म ।

मादितन्तु–चौथाई इं०, डोड़ा (छीमी) चौथाई इंच लम्बा तथा इससे कम चौड़ा, एक कोषीय, सिरे परखुला हुआ; बीज बहुसंख्यक धारीदार होते हैं तथा आधार पर एक जालीनुमा आच्छादन लगा रहता है। फलो० मि० इं० ।

प्रयोगांश—क्षुप, मूल, और त्वचा ।

रसायनिक संगठन (या संयोगी तत्व)–

पत्र तथा मूल में एक प्रकार का ग्लूकोसाइड अकलबारीन (Datiscin) क[२१] उद[२२] ऊ[१२], एक राल (Resin) तथा एक भांति का कटु सत्व पाया जाता है। अकलबारीन (Datiscin) वर्णहीन रेशमवत् सूची अथवा छिलके रूप में पाया जाता है। यह शीतल जल में कम तथा उष्ण जल एवं ईथर में अंशतः विलेय होता है। ये (Neutral) और स्वाद में कटु होते हैं। ये १८०° शतांश के ताप पर पिघल जाते हैं।

औषध-निर्माण—पौधे का शीतकषाय (१० भाग में १ भाग); मात्रा–आधे से १ आउंस (४॥ तो० से २॥ तो०), चूर्ण-मात्रा ५ से १५ ग्रेन (२॥ रत्ती से ७॥ रत्ती) ।

प्रभाव व उपयोग—अकलबार कटु तथा सारक है और कभी कभी ज्वर, गण्डमाला तथा आमाशयिक रोगों में उपयोग किया जाता है। खगान (Khagan) में इसकी जड़ को

कुचल कर शामक रूप से सिर में लगाते हैं। मद्न (Madden) के कथनानुसार कर्नूल (Kurnool) में अक्रवक नामसे उक्त औषध का व्यवहार में लाते हैं। (स्टयुवर्ट)

यह पौधा २ से १२ ग्रेन (२॥ से ७॥ रत्ती) की मात्रा में विषम ज्वरों में उपयोग किया जा सकता है। (डाइमॉक)

आमवात (गठिया) में औषध रूपसे इसका अवसादक प्रभाव होता है। क्वासिया (Quassia) के समान इसकी छाल में एक तिक्त सत्व होता है। (वैट)

पौधे का शीतकषाय कंठमाला, छर्दि सहित विषम ज्वर तथा कंठ व वायु प्रणालियों की श्लैष्मिक कलाओं के प्रदाह में व्यवहार किया जाता है। इं० मे० मे०।

वायु प्रणालीस्थ प्रदाह में श्लेष्मनिःसारक रूप में और दंत रोग में इसका स्थानिक प्रयोग किया जाता है। (लन्दन प्रदर्शिनी १८६२)

अकलाकरी akalákari ⎫ –कला० अकर-
अक्कलाकरी akkalákari ⎭ करा–हिं० । (Pyrethrum Radix.) फा० इं०। स० फा० इं०।

अकलंक akalanka–हिं०वि० [सं०] [संज्ञा अकलंकता वि० अकलंकित] दोष रहित। निर्दोष, बे दाग़।

अकलंकता akalankatá–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्दोषता, सफ़ाई, कलङ्कहीनता।

अकलंकित akalankita–हिं० वि० [सं०] निष्कलंक, निर्दोष, बे दाग़, साफ़, शुद्ध।

अकल्क akalka–हिं० वि० (Free from sediment, pure.) मलरहित, स्वच्छ।

अकल्का akalká–हिं०स्त्री० (Moon light) ज्योत्स्ना, चाँदनी।

अकल्पन akalpan–हिं० सचाहट, अकृत, सत्य, यथार्थ, वास्तविक। रीयल् (Real)–इं०।

अकल्मष akalmasha–हिं० वि० [सं०] निर्विकार निर्दोष, पाप रहित, बे ऐब।

अकल्यः akalyah–सं० त्रि० रुग्ण, रोगी। डिज़ीज़्ड (Diseased.), इल (Ill.) इं०।

अकल्याण Akalyána–हिं० वि० [सं०] अमंगल, अशुभ, अहित।

अकल्लः akallah–सं० पु० अकरकरा (Pyrethrum Radix.) अ० टी० घा०। वै० निघ० २ भा० घा० व्या०।

अकल्लकः akallakah–सं० पु० अकरकरा (Pyrethrum Radix.)

अकवारakavár–हिं० पु० कुक्षि, कोख, गोद, बग़ल (Bosom.)–इं०।

अकश akash–अ० बालोंका उलझना, गुथजाना, घुंघरवाले केश। कर्ल्ड हेयर (Curled hair.) –इं०।

अकसा akasá–हिं० पु० अकश।

अकसीर akasira–हिं० संज्ञा स्त्री० [अ०] देखो–अक्सीर।

अक़ा âaqá–अ० ज्वर के कारण मुख का स्वाद बदल जाना, रोग से अन्न जल का बुरा लगना।

अकाकरभः akákarabhah–सं० पु० अकरकरा (Pyrethrum Radix, *Linn.*)

अकाकरा akákará–हिं० करैला, काकरा (Momordica Charantia, *Linn.*)

अक़ाक़ा aqáqá–मिo एक मिश्र देशीय वृक्ष केफल हैं।

अक़ाक़ालिस aqáqális–यु० चाकसू. (श.) Cassia absus। फा० इं० १ भा०।

अक़ाक़िया aqáqiyá–अ० यह यूनानी शब्द अक़ाकिया (akákia) से अरबी बनाया गया है। युनानी भाषा में अक़ाकिया कीकर को कहते हैं; किन्तु प्रामाणिक एवं विश्वस्त अरबी तथा फ़ारसी निघंटु ग्रन्थों के मतानुसार यह एक सत्व है जो क़र्ज़ (यह मिश्र के एक कण्टकयुक्त वृक्ष का फल है, जो कीकर का एक भेद है; कीकरकी फलियों से जो सत्व बनाया जाता है उसमें भी ये ही प्रभाव प्रगट होते हैं।)के रस से तैयार किया

जाता है। निर्माण-विधि—इसके फल और पत्तों को कूट कर रस निचोड़ लें। पुनः इसको छानकर मन्दाग्नि पर यहां तक पकाएँ कि यह गाढ़ा होजाए।

विवरण—यह भारी द्रव तथा प्रियगंधयुक्त होता है। इसके मोटे टुकड़े प्रकाश के सामने देखने से हरित बोतल के रंग के मालूम होते हैं; किन्तु कोई२ कुछ ललाई लिए हुए होते हैं। इसके बड़े बड़े टुकड़े काले वर्ण के दीख पड़ते हैं। स्वाद—मधुर, कसैला और लुआबदार होता है। शीतल जल में डालने से यह लुआब रूप में परिणत हो जाता है और इसमें पीताभायुक्त धूमरवर्ण अथवा भूरापन लिए हुए हरे रंग के पदार्थ तैरते हुए प्रतीत होते हैं। छानने के पश्चात् लुआब का रंग बबूल गोंद के समान होता है।

प्रकृति—३ कक्षा में (असुद्ध) ठण्डी और रूक्ष है। हानिकर्ता—रोध उत्पादक है।

दर्पनाशक—रोगन बादाम। प्रतिनिधि—चन्दन और रसौत। मात्रा—३॥ मा०।

अक़ाक़िया-गुणधर्म—यूनानीग्रन्थकारों के मत से अक़ाक़िया बालोंको काला करता है। क्योंकि यह बालों की तरी को दूर करता है। सर्दी के फटे हुए हस्तपाद (विपादिका) के लिए गुणदायक है, क्योंकि अपनी संकोचनीय शक्ति के कारण यह अवयवों से विच्छिन्न भागों को सकुचित एवं एकत्रित करता है, अवयव को बलवान बनाता और इसे फटने से रोकता है। दाउस्सअलब (अंगुलबेढ़ा) के लिए लाभदायक है, क्योंकि इस में ठण्डक पैदा करता तथा माद्दाको लौटाता है। इसी कारण अन्य शोथों कोभी लाभप्रद है। मुँह के व्रणों को दूर करता है क्योंकि उन रतूबतों को शुष्क कर देता है जो व्रणको पूरित नहीं होने देतीं। अपनी शुष्कताके कारण संधियों की शिथिलता को लाभप्रद है। दृष्टि को बल देता और उसे सूक्ष्म एवं तीव्र बनाता है क्योंकि यह नेत्र की सान्द्र रतूबतों को जो रूहको ग़लीज़ करने वाली हैं, अभिशोषित कर लेता है। आंव आने में लाभ व शान्ति प्रदान करता है, क्योंकि यह आँत की और मलों के बहाव को रोकता है। और नाखूना (नेत्रस्थ रक्त बिन्दु) को औषधों में डाला जाता है, क्योंकि यह दृष्टि को शक्ति प्रदान करता है, और इसकी चिकित्सा में जो उष्ण तीक्ष्ण एवं भक्षक (अक्काल) औषधियाँ उपयोग में आती हैं उनकी पीड़ा से नेत्र को सुरक्षित रखता है। पान, अनुलेपन तथा वस्ति (हुक़ना) रूप में प्रयुक्त करनेसे यह क़ब्ज़ पैदा करता है। प्रवाहिका रक्तातीसार और रक्तस्राव को गुणा करता है। निकली हुई काँच (गुदभ्रंश) को असली दशा पर लौटाता एवं उसकी शिथिलता को दूर करता है, क्योंकिइसमें संकोचक शक्ति तथा रूक्षता विद्यमान होती है। उक्त अभिप्राय हेतु इसको खिलाते हैं अथवा इसे लेप रूप में उपयोग में लाते हैं। (नफ़ा०)

अक़ाक़िया या अकाकिया के प्रभाव तथा प्रयोग—कफ निस्सारक, वक्षःस्थलस्थ वेदना शामक, संकोचक, रक्तस्थापक, मृदुताजनक और बल कारक। अन्त्र प्रणालीय कलाओं तथा जननेन्द्रिय या मूत्र सम्बन्धी अवयवों पर इसका सर्वोत्तम प्रभाव होता है। इसी कारण अतिसार, प्रवाहिका, सूज़ाक(पूयमेह), नासूर और पुरातन वस्तिप्रदाह प्रभृति विकारों में यह अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होता है। यद्यपि अफ़ीम तथा इसके कुछ यौगिकों की अपेक्षा यह कम प्रभावजनक होता है, तथापि उस अवस्था में, जब कि यह अकेला उपयोग में लाया जाए, समस्त वानस्पतिक तथा संकोचक औषधों से अधिकतर प्रभावकारक प्रमाणित होता है। जलोदर के साथ जब अतिसार एवं प्रवाहिका हो तो अफ़ीम और इसके यौगिक प्रायः हानिकर होते हैं; क्योंकि जिस मात्रा में ये अतीसार प्रभृति को रोकते हैं उसी अनुपात में ये जलोदर की वृद्धि करते हैं। इसी कारण "अक़ाक़िया" आंत्र रोगों में तथा इसके अन्य यौगिकों की अपेक्षा श्रेष्ठतर तथा लाभदायी औषध है।

अक़ाक़िया मग़सूल (धोया हुआ)—इसकी विधि इस प्रकार है—अकाकिया को पानी में खरल

कारके ऊपर का पानी नियार कर टपका लें, और इसी प्रकार तब तक करते रहें जब तक कि पानी स्वच्छ न दिखाई देने लगे तथा इसका रंग बदलना बन्द न हो जाय। पश्चात् उसकी टिकिया बना लें। उपयोग में लाने से पूर्व इसके धो लेनेसे यह और उत्तम होजाता है। स० फा० इं०। इं० मे० सां०। फा० इं० २ भा०। त० न०।

देखो–बब्बुरः।

अकाकिया akákiya–फ़ि०, इं०, अ०, हिं०, बाज़ा०, अकाकिया–कर्त का गाढ़ा किया हुआ स्वरस (उसारह्), कीकर का रस, रस।

अक़ाक़ीर ăaqáqír–अ० (ब० व०); अक़ार (ए० व०) जड़ी बूटियाँ, ओषधि। हर्ब (Herb)–इं०।

अकाचा akáchá–सं० स्त्री० पपोटन, पुनीर (एक भारतीय बूटी है), काकनज। Withania (Puneeria) coagulans, *Dunal.* –ले०।

अक़ाम ăaqám–अ० अक़ीम। बन्ध्या स्त्री वा पुरुष। स्टेराइल (Sterile)–इं०।

अकाम akáma–सं० त्रि० (Free from desire),–हिं० वि० बिना कामना का। कामना रहित। इच्छाविहीन। अथ० सू०, २, ७, का० ६।

अकामा akámá–हिं० वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसमें काम का प्रादुर्भाव न हुआ हो। यौवनावस्था के पूर्व की।

संज्ञा स्त्री० काम चेष्टा रहित स्त्री।

अकामी akámí–हिं० वि० [सं० अकामिन्] [स्त्री० अकामिनी] जो कामी न हो। जितेन्द्रिय।

अकाय akáya–हिं० वि० [सं०] (१) (Without body, incorporeal) बिना शरीर वाला। देह रहित। कायाशून्य।

(२) अशरीरी। शरीर न धारण करने वाला, जन्म न लेने वाला। (३) रूपरहित, निराकार।

अकार akára–हिं० संज्ञा पुं० अक्षर अ। दे० आकार।

अक़ार ăaqár–अ० शराब, मद्य। वाइन (Wine)–इं०।

अक़ार अर्तनीसा ăaqár ăartanisá–यु० आज़रबुया, चक्र, अरनान–फ़ा०। Cyclamen Persicum, *Miller.*

अक़ारआदम–ăaqár-ádam–अ० मैदा लकड़ी –हिं०। मसाम्, मग़ासे,–हिन्दी–अ०। किल्ल –फ़ा०। Tetrantha Roxburghii, *Nees.* (Wood of–)। मुशेप्पीयेट्टि, मैदा लक्ट्टि, पिसिन पट्टइ–ता०। नरमामिडि मेदा –ते०। कुकुर चिता–बं०। स० फा० इं०।

अकारक मिलाव akáraka-miláva–हिं० संज्ञा पु० [सं० अकारक+हिं० मिलाव] ऐसा रसायनिक मिश्रण वा मिलावट जिसमें मिली हुई वस्तुओं के पृथक् गुण बने रहें और वे अलग की जा सकें।

अक़ार कोहान ăaqár-kohán (१) अकरकरा (Pyrethri Radix)

(२) ऊदे सलीब, फ़ावानिया–फ़ा०, अ०। ऊद सालप–हिं०। Pœonia officinalis, *Linn.*, P. Corallina, *Linn.* (Male variety)

अकारकाँटा akár-kántá–हिं० पु० ढेरा, अंकोल। (Alangium Decapetalum, *Lam.*)–ले०।

अकारतलून akár-talún–रू० फारस देश में होने वाले एक जंगली वृक्ष का बीज है। इस वृक्ष का पुष्प अत्यन्त लाल तथा नीलगूं एवं सुन्दर होता है। स्वाद–मधुर।

अक़ारवा aqárává–करोया, ज़ीरा भेद। (A kind of cumin seed.)

अक़ार सौसीनाई ăaqár-sousínái सुरः ईरसा–हिं०। पुष्करमूल, पद्मपुष्कर–सं०। Orris root (Iris Florentina.)

अकारा,–रः akárá,-rah–हिं० अपामार्ग, चिरचिटा (Achyranthes aspera, *Linn.*) फा० इं०।

अक़ाराअरून aaqárá-aarún–सिर० अस्रारा, एक बारीक चूर्ण है जो कभी कभी श्रांत्र द्वारा और कभी खुन्सा की जड़मे बनाया जाता है।

अकारीक़ून akáriqún–जंगली जैतून का बीज (Wild Olive-oil seed)

अक़ारून aqárún–रु० वज–अ०। वच–हिं०। Acorus calamus, *Linn.*

अकाल akála–हिं० संज्ञा पु० [सं०](वि० अकालिक) (१) दुर्भिक्ष, दुष्काल, महँगी, कहत (Famine)। (२)। असमय अनुपयुक्त समय, अनवसर, अनियमित समय। बे ठीक समय। कुसमय। ठीक समय से पहिले या पीछे का समय। प्रिमेचर (Premature) } —इं०। अनटाइमली (Untimely) } —इं०। (३) घाटा, कमी, न्यूनता।

अकालह akálah–अ० अक्लान, हिक्क। खारिश–फ़ा०। कण्डु, खाज, खुजली, खुजाहट, –हिं०। प्रुराइटिस (Pruritus)–इं०।

अकालकु(कू)ष्माण्डः akála-ku,-kúshmán-dah–सं०पु०(A pumpkin produced out of season.) असमय मे होने वाला कुष्माण्ड, ऋतु के अतिरिक्त होनेवाला कुम्हड़ा।

अकालकुसुम akála-kusuma–हिं० संज्ञा पु० [सं० अकालकुसुमं] (१) बे समय फूलने वाला, बेसमय का फूल। बिना समय वा ऋतु में फूला हुआ फूल। (A flower blossoming out of season) (२) बेसमय की चीज।

नोट—यह दुर्भिक्ष वा उपद्रव–सूचक समझा जाता है।

अकालजम् akálajam–सं० त्रि० (Unseasonable, Premature, produced out of season) अकाल उत्पन्न, अकाल जात, बे समय उत्पन्न हुआ, यथा—

"अकालजन्तु विरसं न धान्यं गुणवत्स्मृतम्।" अर्थात् बे समय उत्पन्न हुआ धान्य स्वाद रहित और गुणहीन होता है। राजं०।

अकालजलदः akála-jaladah–सं० पु० बेसमय का बादल।

अकालपुष्पम् akála-pushpam–सं० क्ली० अकाल कुसुम, बे मौसमका फूल (A flower blossoming out of season.)

अकाल भोजनम् akála.bhojanam–सं० क्ली० असमय भोजन अर्थात् भोजन के समय से पहिले अथवा समय बिताकर भोजन करना।

गुण–इससे शरीर असमर्थ हो जाता है और इस कारण शिर दर्द, विषूचिका, अलस और विलम्बिका आदि रोग उत्पन्न होते हैं और रोगों की वृद्धि होने पर मृत्यु भी होजाती है, जैसे—

अप्राप्तकालेभुञ्जानो ह्यसमर्थतनुर्नरः तांस्तान्व्याधीनवाप्नोति मरणञ्चाधिगच्छति भा० पू० १ भा० १५१ श्लो०।

अकालमृत्यु akála-mrityu–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] असामयिक मृत्यु। ठीक समयसे पहिले की मृत्यु। अनायास मृत्यु। थोड़ी अवस्था मरना। अपक्व मृत्यु, कुसमय (असमय) मृत्यु (संस्कृत में मृत्यु पुलिङ्ग है)। अनटाइमली डेथ (Untimely death)

अकालमेघोदयः akálameghodayah–सं० पु० १–(An unseasonable rise or gathering of clouds) अकालजलोदय, असमय में बादल होना (mist or fog) कुहिरा, अबरगाय।

अकालवृष्टिः akála-vrishtih–सं० हिं० स्त्री० असमय की वर्षा (Untimely rain)

अकालवेला akálavelá–हिं० संज्ञा पु० (Unseasonable or improper time) असमय।

अकालशयनम् akála-shayanam–सं० क्ली० असमय का सोना, बेसमय की निद्रा।

गुण—अकाल शयन से कफ कुपित होता और प्रतिश्याय, पीनस, क्षय, सूजन, शिरोरोग तथा अग्निमांद्य प्रभृति रोग होते हैं। वा० सू० अ०.८। हा०। अग्रिः १ स्थान २३ अ०।

अकालिक akálika–हिं० वि० [सं०] असाम-यिक। बिना समय का। बे मौके का।

अकालीम aqálim–अ० (ब० व०), इक्लीम (ए० व०) देश, भाग, स्थान–हिं०। कश्वरी (Country)–इं०।

अकाव akáva–हिं० संज्ञा पु० [सं० अर्क] Calotropis gigantea, *R. Br.* आक, मदार।

अकाशदेवी akáshadevi–द० एक पौधा विशेष।

अकाश (स) पवन akásh,-s-pavan–द० अकासवेल, अमरबेल–हिं०। कमूस–फ़ा०। (Cuscuta Reflexa, *Roxb.*) इं० मे० मे०।

अकाशबवर,–री akásha bavar,-rí–हिं० अकासबेल(Cuscuta Reflexa, *Roxb.*)

अकाशवल्ली akásha balli–सं० स्त्री० अकासबेल (Cuscuta Reflexa, *Roxb.*)

अकाश (–स) बेल akásha, -sa-bela –हिं० संज्ञा पु०[सं० आकाशवेलि] अकाशबँवरी, अमर-बेल, अकाशवेलि, अंबरवेलि, आकाश वोर, –हिं०। अकाशवल्ली, खवल्ली, अमर वल्ली–सं०। अकाशवेल, आलोकलता, अल्गुसी, हल्दी, अलगुसीलता–बं०। अफ़्तीमून हिन्दी–यु०, अ०। कमूसे हिन्दी–फ़ा०। कस्क्युटा रिफ्लेक्सा (Cusuta Reflexa, *Roxb.*) केस्सिथा फिलिफ़ॉर्मिस (Cassytha Filiformis, *Linn.*)–ले० डॉडर (Dodder) –इं०। कोत्तान, इन्दिरावल्ली, सान्दे-ता०। इन्द्र जाल, पाचीतिगे, पच्चतिगा–ते०, तैलं०। श्राकाश वल्ली–मल०। बेल्लुवल्लि,नेलमुद्रवल्लि, शविगेबल्लि अमरवल्लि–कना०,कर्ना०। अ मरबेल, अन्तरवेल, सोनवेल, अमरोइल्ला–मह०। अमरवेल–गु०। कोतन–द०। अलगजरी–सन्ता०। नेदमुदुवल्ली–का०। अन्तरवेल–कों०। शियून–तु०।

लतावर्ग–

(*N. O. Convolvulaceæ*)

उत्पत्ति स्थान—प्रायः समस्त भारतवर्ष।

वानस्पतिक विवरण–अकासबेल सर्वथा एक पराश्रयी लता है जो झौरे सी कीकर, बेर, अड़ूसे इत्यादि वृक्षों पर जाल की तरह फैली हुई होती है। इसका तना गहरे हरित वर्ण का होता है जिस पर लम्बाई के रुख पीली पीली धारियाँ पड़ी होती हैं। अंकुर से पतली जड़ निकल कर भूमि में प्रविष्ट होजाती है और तना शीघ्र शीघ्र बढ़ने लगता है। इससे चोषक सूत्र (Suckers) निकल कर निकटस्थ वृक्ष की डालियों में निज आहार हेतु मार्ग बनाते हैं और उस वृक्ष से आहार सम्बन्धी आवश्यक तत्व, जैसे–जल तथा लवण जो वृक्ष में विद्यमान होता है, प्राप्त करते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था होजाने पर जड़ सूख जाती है और पुनः लता का भूमि से कोई भी सम्बन्ध नहीं रह जाता। ऐसे भी इसके टुकड़े करके वृक्षों पर डाल देने से यह उस पर बढ़ने लगता है। यदि अंकुर को कोई उपयुक्त आधार न मिले तो भी वह सूख जाता है। सूक्ष्म पत्तों के अतिरिक्त इसमें पत्ते नहीं होते और नहीं इनसे उनको कोई लाभ होता है। तने को काट कर देखने पर बाहर मज़बूत जालीदार रेशे और मध्य में मृदु गूदा और पड़ता है। पुष्प श्वेत रंगके आते हैं,पुष्पवाह्यावरण (Sepals) को हटाने पर भीतरसे मटर के आकार के गोला-कार बीज निकलते हैं। वर्षाकाल में इसकी बेल उगती है तथा एक ही वृक्ष पर प्रतिवर्ष पुनः नवीन होती है; इसी कारण इसको "अमरबेल" (Immortal) कहते हैं। यह वृक्षों के ऊपर होती है और इसका भूमि से कोई सम्बन्ध नहीं रहता इस कारण इसको आकाशबेल आदि नाम से पुकारते हैं। इसका लेटिन नाम कस्क्युटा (Cuscuta) कसूस से, जो अफ़्तीमून (अ-काश बेल विलायती) का अरबी पर्याय है, व्युत्पन्न है। देखो—अफ़्तीमून। उपर्युक्त दोनों लेटिन पर्यायों में से प्रथम अर्थात् कस्क्युटा कॉन्वॉल्व्युलेसीई वर्ग का तथा द्वितीय अर्थात् केस्सिथा लॉरेसीई (Lauraceæ) वर्ग का पौधा है। छोटे छोटे भेदों के कारण इसकी बहुत सी जातियाँ होगई हैं। अस्तु, इनमें से किसी के

डंठल पीले और किसी के लाल होते हैं; किसी के फल बड़े और किसी के छोटे होते हैं ; इसी प्रकार और अनेक भेद प्रभेद को जाते हैं। यूनानी हकीम जिस औषध को काम में लाते हैं वह अफ़्तीमून नामसे फ़ारस प्रभृति देशों से भारत वर्ष में आती है।

प्रयोगांश–सम्पूर्ण पौधा, बीज (तुख्मेकसूस) और तना।

रसायनिक संगठन–क्वरसेटीन (Quercetin) राल और एक प्रकार का क्षारीय सत्व कसूसीन या असरीन (Cuscutine) जो कुछ २ तिक्त एवं ईथर और क्लोरोफ़ार्म में विलेय होता है।

गुणधर्म तथा उपयोग

आकाशबेल—ग्राही, तिक्त, पिच्छिल, नेत्ररोग-नाशक, अग्निवर्द्धक, हृद्य और पित्त तथा कफ को नाश करने वाली है। भा० पू० १ भा०। मद० व० १।

मधुर, कटुपित्तनाशक, शुक्रवर्द्धक और रसायन एवं बल्य है। रा० नि० व० ३।

यूनानी हकीम आकाशबेल को उष्ण व रूक्ष मानते हैं। हानिकर्त्ता—मूर्च्छाजनक, तृष्णाजनक और वात प्रकोपजनक है।

प्रभाव—अकाशबेल के जोगुण वैद्यक ग्रन्थोंमें वर्णित हैं अफ़्तीमून के प्रायः वेही गुण यूनानी ग्रन्थों में पाए जाते हैं। यही क्यों, प्रसिद्ध युनानी निघण्टु मख़्ज़नुल अद्विया के लेखक मीर-मुहम्मदहुसेन ने तो इसके गुण अफ़्तीमून के सदृश ही वर्णन किए हैं। अतः सर्व सम्मत से इसके मुख्य मुख्य गुणधर्म निम्न प्रकार हैं–परिवर्तक, पित्त, कफ, तथा आमनाशक अशोघ्न, मस्तिष्कविकार, यथा—उन्माद मूर्च्छा आदि को लाभदायक, रक्तशोधक, हृदय को हितकारी, शुक्र-वर्धक, नेत्र रोगनाशक, अग्निकारक, पिच्छिल, ग्राही, बलकारक, रसायन और दिव्यौषध है। इसका बाह्य प्रयोग (पुल्टिस रूप में) स्थानीय वेदनाशामक तथा कण्डुघ्न है।

स्वाद—मधुर, कड़वा, कषैला और चरपरा।

औषधनिर्माण—शीतकषाय, क्वाथ, चूर्ण और पुलटिस। मात्रा—४ रत्ती से १॥ तोला तक।

दर्पनाशक—सेब, कतीरा, बादामरोग़न।

प्रतिनिधि—काली निशोथ या बिसफ़ायज।

अकाशबेल द्वारा वङ्ग भस्म प्रस्तुत करना—हरी अकाशबेल का पानी १० तो० निकाल कर चांदी के पत्र १ तो० डालकर खरल में घोटें। शुष्क होने पर टिकिया बना कर छोटे शरावों में बंद करके पांच सेर उपलों की आंच दें। शीतल होने पर श्यामाभायुक्त भस्म निकाल लें। मात्रा–एक चावल से एक रत्ती तक, उपयुक्त अनुपान के साथ सेवन करें।

अकास akása–हिं० पुं० संज्ञा दे० आकाश।

अकासकृत akásákrita–हिं० संज्ञा पुं० [सं० आकाशकृत] बिजली। अनेक०।

अकासनीम akásanima–हिं० संज्ञा पुं० [सं० आकाशनिम्ब] एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ बहुत सुन्दर होती हैं।

अकासबेल विलायती akása-bela-viláyati–हिं० अकाशबेल भेद। अफ़्तीमून–अ०। (Cuscuta Reflexa, *Roxb.*)

अकासमुग्री akása-mugri–कों० सन्ध्याराग, कृष्णकली, गुल-अब्बास–फ़ा०। Four o' clock flower (Mirabilis Jalappa, *Linn.*)। इं० मे० मे०।

अकाहुली akáhuli–हिं० स्त्री० अंधाहुली, अंधपुष्पी (Trichodesma Indicum) –ले०।

अक़ित aqit–अ० उस पनीर को कहते हैं जो दही के पानी टपकाने के पश्चात् शेष रहता है। उसमें लवण मिलाकर शुष्क कर लेते हैं।

अक़ितन aqitan–यु० या यम०मुद्गं, मूँग–हिं० (Phaseolus Mungo, *Linn.*)

अकित मकित akitmakit–अ०, सिर०, कारञ्जुवा, कान्जो, कञ्जरञ्ज–हिं०। कुबेराक्षिफलम्–सं०। ख़ायहे इब्लीस–फ़ा०। Cœsalpinia (guilandina) bonducella, *Linn.* (Nut of Bonduc-nut.) इ० फा० इं०। फा० इं०।

अक़िब aaqib–अ० (१) पार्ष्णि, एड़ी–हिं०। पाश्नह्–फ़ा०। (Calcis, Heel. (२) संधिबंधन, स्नायुतन्तु–हिं०। रिबात्–अ०। (Ligament)

अकिलबहार akilabahára–हिं० संज्ञा० पु० [अ० अक़ीकुल बह्] वैजयन्तीका पौधा व दाना।

अकिल्विष akilvisha–हिं० वि० [सं०] (१) पवित्र (२) निर्मल, शुद्ध।–संज्ञा पु० शुद्धात्मा, पापशून्य मनुष्य।

अक़ीक़ aqiqa–हिं० संज्ञा पु० } अगेट(Agate)
अक़ीक़ äaqiq–अ० } –इं०यह एक प्रकार का खनिज पत्थर है जो कई प्रकारका होता है इनमें यमनी,पीताभायुक्त,रक्त वर्णीय इनके पश्चात् पीत पुनः श्वेत वर्णीय, तदोत्तम होता है। किसी किसी हकीम के विचार में यकृत के रंगका अर्थात् लोहित वर्णवाला सर्वोत्तम होता है। यह बंबई, खंबा और खंभात में आता है। इसकी कई किस्में यमन और बगदाद में भी आती हैं।

गुणधर्म–अक़ीक हृद्य है और मूर्छा, शोक, रक्तस्राव, प्लीहा और यकृतके सुद्दों तथा अश्मरी को नष्ट करने वाला है। इसे नेत्र में लगानेसे ज्योति की वृद्धि होती है। इसकी भस्म–उपर्युक्त रोगों के अतिरिक्त उत्तमाङ्गों को बलप्रद, कामोद्दीपक और शुक्रको गाढ़ा करने वाली है। दस्तों में इसका उपयोग लाभदायी सिद्ध होता है। पुरातन सूजाक तथा व्रणों को पूरित करता है।

अक़ीक़ भस्म बनाने की विधि—

(१) अक़ीक १ तो०, धनलगट्टा ऽ॥, धनलगट्टा को कूटकर एक टाटपर आधा बिछा दें और अक़ीक़ की समूची डली उसपर रखकर शेष आधा ऊपर बिछा दें। टाट का गुल्ला सा बनाकर १० सेर उपलों की आंच दें। एक आंच में भस्म होगी अन्यथा दो तीन आंच और दें। उचित तो यह है कि अक़ीक़ को गुलाबार्क में १०–१२ बार बुझाव देलें जिससे वह टुकड़े टुकड़े हो जाय। इसे गुलाबार्क या बेदमुश्क में खरल करके टिकिया बनाकर आग दें। यथाविधि भस्म प्रस्तुत होगी। मात्रा–१ से २ रत्ती तक।

गुण—हृद्य विशेष कर मूर्च्छा तथा पुरातन शुष्क कासको अत्यन्त लाभ पहुँचाता है। रुधिरको बन्द करता है। उचित अनुपानके साथ सेवन करें।

(२) रीठे की छाल १ छटांक, १ तोला अक़ीक़ श्याम, एक बर्तन में उक्त छाल अक़ीक़ के टुकड़ों के नीचे ऊपर देकर बन्द कर कपड़ मिट्टी करके एक मन उपलों की आंच दें। यदि फूल न हो तो एक आंच और दें।

गुण—आमाशय को बलप्रद, कामोद्दीपक, हृदय व मस्तिष्क को बलप्रद (हृद्य व मेध्य), क्षुधावर्धक और पूयमेह को लाभकारी है।

(३) शुद्ध उत्तम रंगरहित अक़ीक को अर्क बेदमुश्क और केवड़ा में इतना बुझाएँ कि टुकड़े टुकड़े होजाय फिर उसी अर्क केवड़ा और बेदमुश्क से ३ प्रहर खरल करके टिकिया बना लें और गुलाब के कल्क में लपेट कर शराव सम्पुट कर २०–२५ सेर उपलों की आंच दें। एक या दो आंचों में फूल होजाएगा। मात्रा–एक रत्ती तक।

गुण—उत्तमांगों को बल प्रदान करने, विशेष कर मूर्च्छा, के लिए उत्तम है।

न,ट—चूंकि यह एक अत्यन्त कठोर पत्थर है अस्तु इसके भस्मीकरण में ऐसा प्रयत्न करें कि जिसमें यह बिल्कुल आटे की तरह बारीक पिस जाय और इसमें करकराहट अवशेष न रहे। उक्त अभिप्राय हेतु इसको बूटियों के जल में देर तक खरल कर तीव्राग्नि देते रहें।

अक़ीक़ह äaqiqah–अ० नवजात शिशु के सिर के बाल।

अक़ीक़ुल्बहार äaqiqul bahár–अ० जयापुष्प, जयन्ती (Sesbania aculeata, Pers.)

अकीख akikh–अ० रोदे, आंत्र, तांत (Intestines)

अक़ीदुल् अनबäaqidul äanab–अ० मद्यभेद–हिं०। मैफ़्तह–अ०। (A kind of wine)

अकीदून akidún–फ़ा० सुम, खुर। हुफ़ (Cloven, A hoof)–इं०।

अफ़ीम् āaqím–अ० बन्ध्या, बाँझ चाहे पुरुष हो अथवा स्त्री। स्टेराइल (Sterile)—इं०।

नोट—बाँझ पुरुष वह है जिसके वीर्य में गर्भोत्पादक शक्ति न हो और बन्ध्या स्त्री वह है जिसमें गर्भ न ठहरे। अक़ीम शब्द यद्यपि पुलिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग दोनों के लिए प्रयोग में लाया जाता है, तथापि कभी स्त्रीलिङ्ग के लिए अक़ीमह् शब्द का उपयोग में लाते हैं।

अक़ीमह āaqímah–अ० बन्ध्या स्त्री। स्टेराइल वुमन (Sterile woman)—इं०।

अकीमूज़ akímúz–अ०

अकीमूस akímús

यह शब्द एकिमोसिस (Echymosis) से व्युत्पन्न है, जिससे वे चिह्न अभिप्रेत हैं जो चोट प्रभृति के कारण अधः त्वचा में रक्त के जमने से रक्त अथवा नीलवर्ण के पड़ जाते हैं, जैसे–नेत्र का लाल बिन्दु।

अक़ीर āaqír–अ० निहायत,अत्यन्त कटु (कड़ुआ)। दी मोस्ट बिटर(The most bitter)—इं०

अकीरैन्थस होली लीव्ड achyranthus holy leaved–इं० हरकुच काँटा–बं०।

अ (ए) कीरैन्थीस आइलिसिफोलिया (achyranthes Ilicifolia)—ले० हकुच काँटा; हरकन।

अ (ए) कीरैन्थीस आल्टर्निफोलिया (achyranthes, alternifolia)—ले० अजाश्रृंगी, गंगाटी (–तिया), उतरन–हिं०। इं० हैं गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस आल्टर्नेट लीव्ड achyranthes alternate leaved–इं० गंगाटी, उतरन—हिं०। इं० हैं गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस ऑब्ट्युज़ीफोलिया achyranthes obtusifolia, *Lamb.*–ले० (The prickly chaff flower) अपामार्ग—हिं० । इं० मे० मां०।

अ (ए) कीरैन्थीस इण्डिका achyranthes Indica, *Rorb.*–ले० अपामार्ग –हिं०। इं० मे० मां०।

अ (ए) कीरैन्थीस एस्पेरा achyranthes aspera, *Linn.*–ले० अपामार्ग, चिरचीटा –हिं०। स० फा० इं०। इं० मे० मे०। इं० मे० मां०। मेम०। इं० हैं० गा०। फा० इं० २ भा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, क्लाइम्बिंग achyranthes, climbing)–इं० (A Scandens *Rorb.*) इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, ट्रिएण्ड्रा achyranthes, triandra, *Rorb.*–ले० साँची, शालुयह। इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, थ्री स्टेमेण्ड achyranthes, three stamened, *Rorb.* –इं०, साँची, शालुहड़। इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, रफ achyranthes, rough.–इं० अपामार्ग, चिरचिरा (–री), हलीम, महुत। इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, लैनेटा achyranthes lanata, *Rorb.*–ले० बाया। इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस लेपेरिया achyranthes Laparia–ले० रक्तापामार्ग, लाल-चौंगा।

अ (ए) कीरैन्थीस वूली achyranthes, wooly–इं०, बाया इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थस स्पिकेटा achyranthes Spicata, *Burm.*–ले० अपामार्ग The prickly chaff flower–इं०। इं० मे० मां०।

अकीरैन्थस होली लीव्ड achyranthes holyleaved–इं० हरकुच काँटा–बं०।

अक़ीला āaqílá गोरह्।

अकीलिया कस्पिडेटा achillea cuspidata, *D. C.*–ले०, बरञ्जासिफ़–फल, हिं० बाज़ा०। रोज़मरी–यरच० इं० मे० मां०।

अकीलिया टर्मिका achillea termica–ले० कुन्दस–यु०। जुन्दबेदस्तर (Castoreum.)

अकीलिया मॉस्केटा achillea moschata -ले० यह आल्पपार्वतीय पौधा है जिसमें कस्तूरी-वत् गंध होती है। इसमें उग्र स्वेदजनक तथा आरोग्यकारक प्रभाव होता है। फा०इं०२भा०।

अकीलिया मिलीफोलिअम् achillea millefolium, *Linn.*-ले० बरिञ्जासिफ़, बूंमादरान-फ़ा० । सोमाद्र-चोपन्दिया-फाश०। बरबर-मि०। स्टुवर्ट महोदय के कथनानुसार यह बाजार में बिकने वाला एक पौधा है। इसके पुष्प और पत्र औषध कार्य में आते हैं। इं० मे० प्लां०। फा० इं० २ भा०। मेमो०।

अकीलिया सैन्टोलीना-achillea santolina, *Linn.*-ले० बरिञ्जासिफ़-फ़ा० । फा० इं० २ भा०।

अकीलीइक एसिड achilleic acid-इं० बरिञ्जासिफ़ या विषका मैंजाब (Aconitic acid) फा० इं० २ भा०।

अकीलीईन achilleine-इं० यह अकीलिया मॉस्केटा द्वारा निर्मित एक क्षारीय सत्व है। फा० इं० २ भा०।

अकीलीन achillein-इं० रक्तानायुक्त धूसर वर्ण का सत्व जो बरञ्जासिफ़ द्वारा प्राप्त होता है। फा० इं० २ भा०।

अक़ीलीस aqilis-यु० फ़रञ्जमिश्क,रामतुलसी, मर्वा (Ocimum gratissimum *Linn.*)-ले०।

अक़ीसून aqisún-यु० एक अप्रसिद्ध कण्टकमय बूटी है जो बादावर्द के सदृश होती है, और इस्तुम (Spain) में उत्पन्न होती है।

अकुजीमडु akuji madu-ते० थूहर, सेंहुड़, (Euphorbia Nerifolia, *Linn.*) इं०मे० मे०।

अकुप् akup-फ़ा० मुख के भीतर, मुख की नाली (Œsophagus)

अकुप्यम् akupyam-सं० क्लो० स्वर्ण, सोना gold (Aurum) हला०।

अक़ु (-क़ू) माली aqu,-qú-máli-अ० माउल् अस्ल। शहदजल, शहद का पानी या अन्य पदार्थ जिसमें शहद को हल करके जोश नहीं दिया जाता। हनीवाटर (Honey water)-इं०।

अकुरु akuru-सिंगा० गुड़-हिं०। कन्द-फ़ा०। गुड़-द०। जैगरी (Jaggery of sugar cane)-इं०। स० फा० इं०।

अकुरु अरक akuru-arak-सिंगा० गुड़ की शराब-हिं०। गुड़ की दारू, गुड़की शराब-द०। (Liquor of Jaggery) स० फा० इं०।

अकुलः akulah-सं० त्रि० (१) निरन्धि द्रव्य, बीजशून्य। च० चि० १ अ०। (२) लम्ब कर्णहीन मध्यम परत, यथा-"लम्बकर्णोऽध्दर्घव चाकुलः परिकीर्तितः। जय० ६ अ०। (३) कुल रहित, परिवार विहीन। जिसके कुल में कोई न हो। (४) बुरे कुल का। अकुलीन। नीच कुल का।

अकुलाना akulána-हिं० क्रि०अ० [सं० आकुलन] (१) व्याकुल होना, व्यग्र होना। (२) विह्वल होना, मग्न होना, लीन होना, आवेग में आना।

अकुलिनी akulini-हिं० वि० स्त्री० [सं० अकुलीना] जो कुलवती न हो, कुलटा, व्यभिचारिणी।

अकुलीन akulina-हिं० वि० [सं०] बुरे कुल का, नीच कुल का, तुच्छ वंश में उत्पन्न, कमीना, क्षुद्र।

अक़ुल्लबलसाँ aqulla-balasán-अ० रोग़ने बलसाँ-फ़ा० । बलसाँ का तेल-हिं०, द०। Balsamum, var.of (Blasam of Mecca or Balm of Gilead.)-ले०।

अक़ुवोयलासमूँ aquvoyalá-samún-अ० दोहनुल् बलसाँ, रोग़ने बलसाँ-फ़ा०। बलसाँ का तेल-हिं०, द०। (Balsamum)

नोट—यद्यपि उपर्युक्त शब्द वस्तुतः बालसम ऑफ़ मक्का (Balsam of Mecca) के पर्याय हैं, पर वे भारतीय ऑइल आफ कॉपैबा (Oil of Copaiba India) के लिए भी प्रयुक्त होते हैं। स० फा० इं०।

अकुशलं akushalam-सं० क्ली० } अशुभ,
अकुशल akushala-हिं० संज्ञा पु० }
अहित, बुराई, (Evil or misfortune.) वि० (not clever or skilful) जो दक्ष न हो, अनिपुण, अनाड़ी।

अकूटः akúṭah-सं० पु० फलवृक्ष विशेष, आगई रत्नाo।

अकूनीतून aconitún-यु० (१) अतीस, अतिविषा (Aconitum Heterophyllum, *Wall.*)। (२) वत्सनाभ (Aconitum Napellus, *Linn.*)। (३) वत्सनाभ वर्ग।

अकूनैतस aqúnaitas-यु० स्वानिकुन्नमिर-अ०। विष, मीठा ज़हर, वत्सनाभ (aconitum Napellus, *Linn.*)

अकूनस्यून aqúnosyún-यु० रईयुलअयल। एक बूटी है जिसके लक्षण में मतभेद है।

अकूपार akúpára-हिं० संज्ञा पु० } (१) कच्छप,
अकूपारः akúpárah-सं० पु० }
कछुआ (A tortoise in general.) स्त्रि० फा० (२) बड़ा कछुआ। वह कच्छप जो पृथ्वी के नीचे माना जाता है। (३) पत्थर या चट्टान। (४) समुद्र (The sea.) (५) सूर्य (The sun.)

अकूमारून aqumarshún-यु० जंगली सौंफ (Wild anise.)

अकूरून aqúrún-यु० बच, वंश (Acorus calamus, *Linn.*)

अकूल ãaqúl-अ० (१) बुद्धिमान मनुष्य (*Idem*) (२) संकोचक औषध (astringent Medicine.)

अकूसालियून aqúsáliyún-यु० करफ़स नब्ती जो कि पानी से पैदा होता है।

अकृच्छ्र akrichchhra-हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) क्लेश का अभाव (Absence of difficulty.) (२) आसानी। सुगमता। असंकोच वि० (1) (Free from difficulty.) क्लेश शून्य। जिसे किसी प्रकार संकोच व कष्ट न हो (२) आसान। सुगम

अकृत akrita-हिं० वि० [सं०] (१) (Not done or prepared.) (२) स्वयंभू (३) प्राकृतिक (४) मन्द, कर्महीन (One who had done no work.) संज्ञा पु० (१) कारण, (२) मोक्ष, (३) स्वभाव। प्रकृति।

अकृत काल akrita kála-हिं० वि० [सं०] जिसके लिए कोई काल नियत न हो। जिसके लिए कोई समय न बाँधा गया हो। बेमियाद।

अकृताख्ययूषः akritakhya-yúsha सं० पु० लवण, स्नेह, कटु आदि पदार्थ हीन यूष, यह लघु होता है। वै० निघं०।

अकृतार्थ akritártha-हिं० वि० [सं०] अपटु, अकुशल, कार्य में अदक्ष।

अकृत्रिम akritrima-हिं० वि० [सं०] जो बनावटी, आपसे उत्पन्न, प्राकृतिक, स्वाभाविक, प्रकृतिसिद्ध, नैसर्गिक। (२) असली, सच्चा, वास्तविक, यथार्थ, (३) हार्दिक। आन्तरिक।

अकृथित क्षीरम् akrithita-kshiram-सं० क्ली० कच्चा दुग्ध। यह कफ कुपित करता और भारी होता है। वै० निघ०।

अकृदुद्वाह Akridudváha-हिं० वि० (Unmarried) अविवाहित।

अकृष्टपच्य akrishṭa pachya } -हिं०
अकृष्ट रोही akrishta rohi }
वि० [सं०] [स्त्री० अकृष्टपच्या, अकृष्टरोहिणी] जो बिना जोते पैदा हों, जंगली (Growing exuberant or wild.)

अकेन्थस इलिसिफोलिअस, अस acanthus Ilicifolius, *Linn.*-ले० हरकुच काँटा-हिं० बं०। हरिकुश-सं०। मोरंडा-गों०। मारवाड़ी-मह०। पैना म्कुळीमा-मल० (Holly-leaved acanthus.) इ० मे० मे० १ मा०, इं० गा०, फा० इं० ३ भा०।

अकेन्थस होली लीह्व्‌ड - acanthus holly leaved-इं० हरकूच काँटा-हिं०, बं०। इं० मे० मे०, इं० हैं० गा०, फॉ० इं० ३ भा०।

अकेन्थेसीई acanthaceæ-ले० अडूसावर्ग, अरूसे के वर्ग की औषधियाँ। The adusa order (acanthad's)।

अकेम्पे पेपिलोसा acampe papillosa, *Lindl.*-ले० इसकी जड़ औषध कार्य में आती है। मेमो०।

अकेलिफा इण्डिका acalypha Indica-ले०
अकेलिफा इण्डियन acalypha Indian-इं० } कुप्पी, श्वेतवसन्त।

अकेलूचाँग गुल akelú-chánggula-ले० कुरा, कुटज, कोरैया (Holarrhena-antidysenteric, *Woll.*)।

अकेशा akeshá-सं०क्षां० जयन्ती, रयासन, जैत -हिं० (Sesbania Ægyptiaca, *Pers.*)

अकेशिया acacia-इं० फलीवर्ग (Leguminasæ) के माइमोसी (Mimosæ) उसवर्ग की औषधियाँ जिनसे समगोअरबी प्राप्त होता है। समगो अरबी 'बबूल का गोंद' (Gum arabic)

नोट—प्राचीन अंगरेजी में इसका उच्चारण अका-किया था, किन्तु अर्वाचीन अंगरेजी में अकेशिया है।

अकेशिया—अरेबिका acacia—arabica, *Willd.* ले० बबूल (र), कीकर-हिं० (Babool tree)। मे० मां०। स० फॉ० इं०। देखो-बब्बुरः।

अकेशियाइन्ट्सिया acacia Intsia, *Willd.* ले०, घईई, घई की बेल-सत०। कतार-कुमा०। कोंडूजनुम-सन्ता०। कुन्डुस्-कोल० हर्रारी-ने०। पाथिरिक, उमात्रिक-लेप०। कोरिन्दा, केरेन्डम्-ते०। चिल्दारी-मह०। माइमोसा इन्ट्सिया (Mimosa Intsia *Linn. Roxb.*)-ले०।

अकेशिया वब्बुर वर्ग।
(*N. O. Leguminosæ.*)

उत्पत्ति स्थान—हिमालय के उष्ण प्रदेश, पूर्वी और पश्चिमी प्रायद्वीप। गुणधर्म-संतालों की स्त्रियां अनियमित ऋतु (Deranged courses) में इसके पुष्प का उपयोग में लाती हैं। इं० मे० मां०। इसकी छाल तथा पत्र रंग के काम में आते हैं। मेमो०।

अकेशिया कॉन्सिन्ना acacia Concinna, *D. C.*)-ले० सातला, अईल, रस्सॉल-हिं० अव०। सातला, सतला, चर्मकषा-सं०। फली या छीमी के नाम (The Pods.)-सीकी (के)काई-द०। शीका, शीकाकाई-ता०। शीकाय, चीकाय, गोगु-ते०। चीनिक्-काय-मल०। शीगे-कायि-कना०। कोचै, बनरीठा-बं०। शीका, तेलसेझा-मह०। केन्मोन-सी, केन्मोन पेडाइ, केझोन-ति-बर०। अ० रुगुटा (Acacia Rugata)-ले०। स० फॉ० इं०। इं० मे० मां०।

अकेशिया कॉर्टेक्स acacia Cortex-ले० बब्बूर त्वक्, बबूल की छाल-हिं०। (acacia bark)। इं० मे० मां०। वी० पी०। देखो-बब्बुर।

अकेशियाकेचोउ acacia cachou, *Willd.* -फ्रां० खैर वृक्ष, खदिर वृक्ष, कथा का पेड़ -हिं०। (Acacia Catechu, *Willd.*) फॉ० इं० १ भा०।

अकेशिया कैटेशू—श्यू acacia Catechu, *Willd.*-ले० खदिर वृक्ष, खैर का पेड़, खैर, कथा खैर, खैर बबूल-हिं०। (Catechu tree, Cutch) इं० मे० मां०। फॉ० इं० १भा०। स० फॉ० इं०।

अकेशिया गम Acacia gum } —इं०
अकेशियागम्माई Acaciagummi } —ले०
समगो अरबी, बबूल, का गोंद बबुर-निर्यास, (gum acacia) इं० मे० मे०। वी० पी० देखो बब्बुरः।

अकेशिया जैक्वोमॉण्टियाइ acacia Jaquemontii, *Benth.*–ले० कीकर, बबुल, बमुल, बहिबल–पं० । इज्ज–अफ़ा । रतबॉली–गु० । मे० मॉ० । देखो–बब्बुर ।

अकेशिया डी अरबी acacia d' arabie –फ्रां० बबूल, बब्बुर । (acacia arabica, *Willd.*) फॉ० इं० १ भा० ।

अकेशिया डीकरेन्स acacia decurrens, *Willd.*–ले० इसकी छाल रंग के काम में आती है । मेमो० ।

अकेशिया नाइलेटिका acacia nilatica, *Delile.*—ले० करज़ वृक्ष । फॉ०इं० १ भा० ।

अकेशिया पाइक्नेन्था acacia pyonantha, *Benth.*—ले० आरि विलायल । इं०मे०मां० ।

अकेशिया पॉलीअकेन्था acacia Polyacantha—ले० खदिर वृक्ष (Catechu tree.) इं० मे० मे० ।

अकेशिया पिनेटा acacia Pennata, *Willd.*—ले० आरि, विलबूल–हिं० । (Mimosa Pennata) इं० मे० मां० ।

अकेशिया फार्नेशियाना acacia Farnasiana, *Willd.*)–ले० (अ) इ रिमेद, दुर्गन्ध खैर, गूहकीकर (Farnesiana Mimosa, *Linn.*) ले० इं० मे० मां० ।

अकेशिया फेरगीनिया acacia ferruginea, *D. C.*–ले० खैर–नेपा०, अनसयङ्, अनचन्द्र और वुनि ते० शीमै–वेलवेल, वेलवीलम–ता० नोट – तेल गुनाम "वुनि" तामिल "वनि" के साथ मिलाकर प्रायः भ्रम कारक बना दिया जाता है, जो वस्तुतःसमी(Prosopis spicigera) का नाम है । देखो–बबुर । स० फॉ० इं० ।

अकेशियाबार्क acacia bark–इं० बबूल का छाल, बबुर त्वक् (acacia cortex.) । देखो-बबुर ।

अकेशिया मॉडेस्टा acacia modesta, *Wall.*–ले० पलोस–अफ़० । फुलही–पं० । मेमो० । कारटोसरियो–गु० ।

उत्पत्तिस्थान—पश्चिमी और मध्य मूल ।

प्रयोगांश—गोंद । देखो–बबुर ।

अकेशियामॉलिस् acacia mc'l' लाको (acacia soft) इं० हैं० गा० ।

अकेशिया रयुगेटा acaia rugata सातला–हिं० । acacia concinna, *D. C.* इं० मे० मे० ।

अकेशिया लेण्टिक्युलेरिस acacia lenticularis, *Wall.*–ले० ... कुमा० । मेमो० ।

अकेशिया लेटॉनम् acacia lationm *Willd.*–ले० मेघ–हिं० । पाकीतुम्म–ते० । मेमो० ।

अकेशिया ल्युकोफ्लोआ acacia leucophlœa, *Willd.*–ले० रीवाँ, सुफ़ेद–कीकर–हिं० । श्वेत बबूर वृक्ष–सं० । उज्लो कीकर पट्टे की कीकर, शराब की कीकर–द० । सफेद बावल बं० । वेल–वेल, वेल– वेलम्–ता०, तेल्ल–तुम –ते० । वेल–वेलम्–मला० । बिलि जालि मर –कना० । हेवुरु, पाँवर, पाँवरियो बावलिचेमांत –महा० । सफेद बावल्–गु० । नन्लीनकियिङ् अफ़ियु, तनोङ्–बर० । अरिज–राज० ।

उत्पत्ति स्थान—पञ्जाब के मैदान मध्य तथा दक्षिण भारत और राजपूताना ।

प्रयोगांश–त्वचा । देखो–"बबुर" ।

अकेशियावेरा acacia vera; *Willd.*–ले० क़रज़ वृक्ष । फॉ० इं० १ भा० । शौकुल्म शौकुल्–एष्पराबियइ, शौकुल–मिश्रियइ–अ० ।

नोट—अन्तिम तीन नाम मिश्र तथा अरब में पाए जाने वाले बबूर वृक्ष के कुछ अन्य भेदों के लिए भी प्रयोग में लाए जाते हैं । फॉ० इं० १ भा० । स० फॉ० इं० ।

अकेशियावैलीक्याना acacia Wallichiana —ले० कत्थाका पेड़, खदिर वृक्ष । इं० मे० मे० ।

अकेशिया समा acacia suma–ले० स (अ) मी, छोकरा । सई–बं० (Prosopis Spicigera White Mimosa.) फॉ० इं० ३ भा० ।

अकेशिया सॉफ्ट acacia soft–इं० खाकी। इं० हिं० गा०।

अकेशियासेनेगल acacia senegal, Willd. –ले०, खोर–सिंध। कुम्ता–राजपु०।
उत्पत्तिस्थान—यह एक कंटकमय छोटा वृक्ष है जो सिंध और अजमेर में उत्पन्न होता है।
नोट—यह अफरीका के सेनेगल प्रांत में होने वाला 'बब्बुर' ही है।
प्रयोगांश–निर्यास।

अकेशिया सुन्ड्रा acacia sundra *D. C.* -ले० खैर, संद्रा-ने०। इसका गोंद काम में आता है। मेमो०।

अकेशियास्टेनोकार्पस acacia stenocarpus–ले० बब्बूर भेद। इसके पत्र द्वारा एक नया स्पर्शाज्ञता जनक सारीय सत्व प्राप्त होता है, जिसको स्टेनोकार्पीन (Stenocarpine) कहते हैं। इसके दो प्रतिशत के घोल में से दो बूंद नेत्रों में टपकाने से यह उक्त भाग को पूर्णतः अवसन्न कर देता है। इसका उपयोग करने से ५ मिनट पश्चात् बिना कष्ट अनुभव किए नेत्र कनीनिका में सूची चुभाई जा सकती तथा उसे खुरचा एवं बल दिया जा सकता है। १० से १५ मिनट अनन्तर कनीनिका विस्तार उपस्थित होता है, और क़रीब क़रीब बत्तीस घण्टे तक स्थिर रहता है। इससे नेत्रपिण्ड का तनाव कम होता है। अस्तु, हरित मोतियाबिन्द में लाभ दायक होता है। इसी भांति त्वचा के किसी भाग को स्थानिक रूप से अवसन्न किया जा सकता है। पी० वी० एम०।

अकेशिया स्पेसीओज़ा acacia speciosa, *Willd.*–ले० सिरस का पेड़–हिं०। शिरीषः -सं०। सिरिस का झाड़-द०। (albizzia lebbeck) इं० मे० मे०।

अकोटः akotah सं० पुं०–सुपारी–गुवाकः, पूग (गी)–सं०। (areca catechu)।

अकोटा akotá–कना० कोसम। गौसम्-पं० हिं०। (Schleichera Trijuga, *Willd.*) ले०। इं० मे० मां०।

अकोडः akodah–सं०। अखरोट (Juglans regia.)।

अकोड़गन्धः akoragandhah-सं० हींग हिंगु; रामठम् (assafoetida)।

अकोढ़ई akorhai–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अक्रूर] सरल, मुलायम वह भूमि जो सींचने से बहुत जल्द भरजाए। वह भूमि जिसमें पानी ठहरा रहता हो।

अकोंद akonda–हिं० मदार आक (Calotropisgigantea, *R. Br.*) मदार सं० फॉ० इं०।

अकोरकपरायुः akorakaparáyuh–सं० पु० (chorion Leave)।

अकोरा akorá–पु० चाँदी रजत (Silver) (Argentum)–ले०।

अकोरिया akoriyá–उ० प० सू०, भलियून।

अकोरीटीन acoretine–इं० वचीन; वचसार कोलीन (choline)–इं०। यह मधु सदृश तरल ग्लुकोसाइड (Glucoside) है जो अत्यन्त तिक्त और सुगन्धित होता है तथा मद्यसार (alcohol), क्लोरोफ़ॉर्म और इंथर में घुल जाता है, और शर्करा तथा उड़नशील तेल रूप में पृथक् हो जाता है। इं० मे० मे०।

अकोरीन acorina–इं० यह एक उड़नशील तेल है जो बच में वर्तमान होता है। देखो–बच। इं० मे० मे०।

अकोल akola–द०, हिं० काला अकोला, ढेरा भेद (alangium hexapetalum, *Lam.*) स० फॉ० इं०। देखो–अंकोल।

अकोला akolá–हिं० संज्ञा पु० (सं० अंकोल) ढेरा का पेड़–हिं०। अंकोल, ढेरा (alangium Decapetalum, *Lam.*)–स०फॉ०इं०।

अकोविद akovida–हिं० संज्ञा पु० (सं. अग्र) ऊख के सिर पर की पत्ती, अगोला, अगौला, गेंड़ा।

अकौआ akouá–हिं० (१) संज्ञा पु० (सं० अर्क) मदार, आक (Calotropis gigantea,

R. Br.) (२) कौवा, लालरी, घंटी, (Uvula.)

अकोल;-ला akoul,-lá-हिं०, ढेरा, अंकोल (alangium Decapetalum Lam.)

अक़ीस aqous अ० कुबड़ा, कुब्ज, जिसका पृष्ठ बाहर निकल आया हो। हञ्चबैक (hunch backed)-इं०।

अक़म akam-सं० स्त्री० संज्ञा दुःख (Pain)

अक़्अब akaab-अ० (प०व०), कअ्ब (ए०व०) गुल्फ, टखने-हिं० वह स्थान जहाँ पर पैर सामने को और पीछे को मुड़ सकता है (ankles)

अक़्अम् aqaam-अ० चपटा (चिपटी) नासिका वाला (Flat-nosed)

अक़्अस aqaasa-अ० उत्तरोत्तर वक्षीय अर्थात् वह जिसका वक्षःस्थल बाहर को निकला हो और पृष्ठ भीतर को दबा हो।

नोट—अहदब और अक़अस का भेद अहदब में देखो।

अ (-इ) क़्आद a-i-qaad -अ० लुञ्जापन, लंगड़ापन अथवा अवयवों का ऐसा विकार जो बैठने को बाध्य करे (lameness.)।

अक़्उमा agauma-अ० कनुआ एक प्रकार का कफज व्रण। विशेष कर यह कठिनता पूर्वक अच्छा होता है। यह पपड़ी के समान होता तथा झिल्ली को खा जाता और नेत्र को विनष्ट कर देता है।

अक़्क़ह aaqqah-फ़ा० अक्अक़ (महूका पक्षी)

अक़्क़त् aaqqat-अ० वह उष्ण रात्रि जिसमें वायु सर्वथा बन्द हो।

नोट—जम्म, रज़्रात्र, मुफ़र्रह और हुई तिदाम इनमें से अक्कई वायु के रुकने और उष्णताधिक्य को कहते हैं। जम्मका अर्थ कठिन गर्मी है और मुफ़रत तथा हुई ति-दामइसके पर्याय हैं। रज़्रात्र तेजी कठिन उष्णता एवं उत्ताप को कहते हैं जिससे कंकरी आदि भी जल उठें।

अक़लकरा akkala-kará महा०, अक़्लाकरे akkalá-karé-कना०, अक़लाकरी akalá-kari-कना० } -हिं०। अकरकरा।

(Pyrethri Radix.) फ़ॉ० इं०। फ़ॉ० इं०।

अक्का akká-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (A mother) बीता। मा। नोट—संबोधन में इस शब्द का रूप "अक्का" होता है।

अक़्क़ार aaqqár-अ० (ए० व०) अक़ाक़ीर (ब० व०) औषधियाँ, जड़ी बूटी-हिं०। ग्रा (Herb.)-इं०। स० फ़ॉ० इं०।

अक्कारकारम् akkára-káram-ता०, ता० अकरकरा-हिं० (Pyrethri Radix.) स० फ़ॉ० इं०।

अक्काल akkál -अ० इसका शाब्दिक अर्थ भक्षक अर्थात् खाजाने वाला है, किन्तु आयुर्वेद की परिभाषा में उस औषध को कहते हैं जो अपनी तीक्ष्णता एवं भेदक गुण की अधिकता के कारण अवयवों के सार अंशों को नष्ट कर दे। वा औषधि जो व्रण कारक एवं गलाने वाले गुण के कारण मांस को खा जाय और उसके सार भाग को क्षीण कर दे, यथा चूना और हड़ताल करोसिव (Corrosive), एस्केरोटिक (Escharotic)-इं०।

अक्किकरुका akkikaruká-मला०, अक्किराकारम् akkirákáram-ता०, अक्किलाकारम् akkilákáram-मला० } (Pyrethri Radix)-स० फ़ॉ० इं० फ़ॉ० इं०।

अक्की aakki-कना०, चावल (Rice) फ़ा० इं०।

अक्कीसारायि akkisaráyi-कना०, चावल दारू-द०। तण्डुलमद्य, चावल की शराब-हिं० अरिशशारायम-ता०। बिय्यम् सारायि-तै० अरिचारायम-मल०। लाइकोर ऑफ (Liquor of Rice)-इं०। स० इं०।

अक़्ज़म akzama- अ० (१) कोताहबीनी, (२) जिसकी नासिका छोटी हो।

अक्ज़ाज़ akzáza-अ० कम्पित शीत लगना, कम्पन, कँपना।

अक्ज़ार aqzára-अ० (ब० व०) क़ज़र (ए० व०) कस़ाफ़त, नि जासत, गंदगी-फ़ा० । मैलापन, अशुद्धि-हिं० । फ़िल्थ्ज़ (Filths)-ई० ।

अक्तअ् aktaā-अ० जिसकी अंगुलियाँ हथेली की ओर फिरी हुई हों ।

अक़्तअ् aqtaā-अ० छेदित हस्त, कटाहुआ हाथ, विच्छिन्न हाथ ।

अ-इ क़् तुअ् रार a-eqtaárára-अ० हाँपना, हाँफना। (To pant, To be out of breath.)

अक्त akta-हिं० वि० सं० (Smeared, Anointed) व्याप्त । संयुक्त । मकल । युत । रँगा हुआ । लिप्त । भरा हुआ ।

नोट—यह प्रत्यय रूप से शब्दों के पीछे जोड़ा जाता है ; जैसे-विपाक्त, रक्ताक्त ।

अक्तद् aktad-अ० उच्च कंधावाला, ऊँचे कंधा वाला मनुष्य ।

अक़्तन aqtana-अ० कूज़पुरत-फ़ा० कुबड़ा, कुब्जा हम्प बैक्ड (Hump-backed) ई० ।

अक़्तम aqtama-अ० रक्तवर्ण, श्यामतायुक्त, श्यामता युक्त रक्त वर्णीय कलता (सूत्र) ब्राउनिश रेड (Brownish red)-ई० ।

अक्ता aktá-सं० स्त्री० (night) रात्रि ।

अक़्तात् aqtáta-अ० घुंघराले (लहरदार, मुड़े) बालों वाला पुरुष । कर्ल्ड हेयर्ड (Curl haired)-ई० ।

अक्ताद् aktáda [ब० व०] कतिद् [ए० व०]-अ० स्कन्ध, तथा मध्य स्थल पृष्ट की दूरी (Shoulder) ।

अक्ताफ़् aktáfa-अ० (ब० व०), कतिफ़् (ए० व०)-स्कन्ध, कंधे । शोल्डर्स (Shoulders)-ई० ।

अक़्तार aqtár-अ० (ब० व०) क़ुतर (ए० व०) शारीरिक दूरियाँ, व्यास, चौड़ाई, घेरा । डायमीटर्स (Diameters)-ई० ।

अक़्तार ख़ार्जिय्यह् aqtár khárjiyyah-अ० शरीरकी बाह्य दूरियाँ, अंतर (External Diameters.)

अक़्तारदाख़िलिय्यह् aqtár-dákhiliyyah-अ० शरीर का आभ्यन्तरिक दूरियाँ (अन्तर, फ़ासले) (Internal Diameters.)

अक़्तारसलासह् aqtár-salásah-अ० शरीर की दूरीत्रय, घनत्व अर्थात् लम्बाई, चौड़ाई व गहराई ।

अक़्तियूस aqtiyúsa-यू० अक़्तीक़ूस-अ० । यह युनानी भाषाका शब्द है, जिसका अर्थ सत्य व स्थिर होता है, किंतु तिब्ब की परिभाषामें तपेदिक (राजयक्ष्मा, क्षय) को कहते हैं । हेक्टिक फीवर (Hectic Fever)-ई० ।

अ(अ)क़्द् áaqda-अ० (ए० व०) गिरह लगाना, गांठ देना, बाँधना, ग्रंथि देना-हिं० । तरल पदार्थों का सान्द्र (गाढ़) हो जाना, बँध जाना, घनीभूत होना । अक़ूद (ब० व०) ।

अक़्दह् áaqdah-अ० लुक़नते-ज़ुबान, ज़ुबान की लुक़नत-फ़ा० । हकलाना, तुतलाना, शुद्ध शब्द का न निकलना । स्टैमरिंग (Stammering), बलब्युटीज़ (Balbuties) -ई० ।

अक़्दह áakdah-अ० (१) बीख़ें ज़ुबान-फ़ा० । जिह्वामूल, ज़ुबान की जड़-हिं० । (२) हृदय सूत्र अथवा हृदयाधार, (३) मध्य हृदय ।

अक़्दीदूस aqdidús -अ० देखो-अक़्दीकूस ।

अक़्न áqna-अ० चीन, शिकन-फ़ा० । झुर्री पड़ना, सिकुड़न, वली जो मेदावी होने के कारण उदर पर पड़ जाय । वलि-सं० । रिंकिल (wrinkle)-ई० ।

अक़्नफ़ aqnafa-अ० लघुकर्ण वाला, छोटे छोटे कान वाला-हिं० । (Small eared) ।

अक़्नह् áaknah-अ० सूरिंजान (Hermodactylus) । सं० फा० ई० ।

अक़्नह् aknah-मुतलख़िय्यह्, तुहनियाह्, और हस्तुम्मुया-अ० । यौवन पिड़िका, कील,

मुहांसे जो जवानी के आरम्भ में मुख मंडल पर निकलते हैं। एक्नी (acne)-इं० ।

नोट—जो युवा स्त्री पुरुष नाम्य मार्ग का अवलम्बन न कर स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का उल्लंघन करते हैं उनको सामान्यतः यह विकार हो जाया करता है।

अक़्नार aqnár–अ० सुराही में मुंह लगाकर जल पीना अथवा मद्यपान करना।

अक़्फ़अ् aqfaá–अ० जिसके पाँव की अंगुलियां फिरी हुई हों।

अक़्फ़स akfasa–अ० जिसका पैर टेढ़ा हो और वह अपने पैर की छोटी अंगुली पर सहारा देकर चले।

अक़्फ़ह akfah–अ० श्याम, काला–हिं० । ब्लैक (Black)-इं० ।

अक़्बद akbada–अ० यकृत रोगी, वह रोगी जिसका यकृत बढ़ा हुआ हो, बढ़े हुए यकृत वाला। एनलार्ज्ड लिवर (Enlarged liver)-इं० ।

अक़्बस akbása–अ० जिसके शिर का आगा निकला हुआ और ललाट फैला हुआ हो।

अक़बाद akbáda अ० (ब० व०), कबिद (ए० व०), यकृत, जिगर, कलेजा (Liver)।

अक़्बीस aqbisa–अ०, रसूलिया, जिसका शिश्नाग्र (भगिमुण्ड) ख़तना से पहिले त्वचा से बाहर निकलता हो।

अक़्मअ् aqmaá–अ० जिसके नेत्र से जल स्राव हो।

अक़्मस akmasa–अ० जो कठिनता पूर्वक देख सके।

अक़्मह akmah–अ० कोरमादरज़ाद–फ़ा०। जन्मांध, माजांध–हिं०। बॉर्न ब्लाइण्ड (Born Blind) इं०।

अक़्माक akmáka–अ० वमन, छर्दि, मतली। वॉमिटिङ्ग (vomiting), नॉशिया (Nausea)-इं० ।

अक़्माल aqmála–अ० (ब० व०), क़म (ए० व०), जुओं (ढीलों) के अण्डे व अर्थात् लीख। निट (Nit) The egg of a louse-इं०।

अक़्मावस aqmávasa–अ० एक दैनिक ज्वर एक दिन का ज्वर। हुम्मायूम–अ०। तप ए रोज़ह्–फ़ा०। फेब्रिक्युला (Febricula)-इं०।

अक्याघास akyághása-हिं० अपभ्रं० अगिया (lemon grass)-इं०। स० फॉ० इं०

अक्याघास का इत्र akyá-ghás-ká-itr –हिं०। देवजग्धक-तैल–सं०। अग्याघास-तैल–बं०। (lemongrass oil)-इं०। स० फॉ० इं०।

अक़्रअ् aqraá–अ० कल, गञ्जा, केशहीन, जिसके शिर के बाल गिर गए हों, टँकला। बाल्ड (Bald)-इं०।

अक़्रन् aqran–अ० पैवस्तह् अब्रु–फ़ा०। जिसकी दोनों भौंएँ मिली हों।

अक़्रफ़ aqrfa–अ० अत्यन्त रक्तवर्ण, गाढ़ रक्तवर्ण–हिं०। डार्क-रेड (dark-red)-इं०।

अक़्रबी āakrabi–फ़ा० दरूनज अक्र (Doronicum Pardalianches *Linn.*)। फॉ० इं० २ भा०।

अक्रम akrama–हिं० ब० [सं०] सं० पु० क्रम रहित, व्यतिक्रम, विपर्य (Irregularity, Confused)-इं०

अक़्रा aqráa–अ० (ब० व०) क़ु (क़ु रू (ए० व०) रजःकाल, आर्तवकाल, मासिक धर्मका समय (Period of the menses)

अक्रानीक़ी akrániki–यु० (१) शुक्रा याज़ा० (२) बादावर्द (shuka फॉ० इं० ३ भा०।

अकान्ता akrántá–सं० पुं० कटेरी, भटकटाई, वृहती, वृहतीक्षुप–सं०। व्याकुद–बं०। डोरली पारवरी, वनभरटी–म०, कं०। व्याक्रान्ति–उत्० माकुड चेट्टु–तें०। र० मा०। गुणधर्म–उष्ण वीर्य, पाचन, संग्राही। चक्र० द०। रा० नि०।

यह उष्ण वीर्य, रस में कटु तिक्त, लघु, वात नाशक, ज्वरनाशक, अरोचक व कास नाशक तथा श्वास और हृद्रोग नाशक है। रा० नि० व० ४।

अक़ाबाज़ीन aqrábázína–अ० क़राबाज़ीन किताबे अद्‌वियह मुरक्कबह्‌–फ़ा०। योग संबन्धी ग्रन्थ, योग शास्त्र–हिं० वह ग्रन्थ जिसमें यौगिक औषध एवं उनके योग लिखे हों, फार्माकोपिया (Phormacopœea), डिस्पेन्सेटरी (Despensatory)–इं०।

अक़ाबादीन aqrábádína–अ० अक़ाबाज़ीन

अक़ास aqrása–अ० (ब० व०), क़ुर्स (ए० व०), टिकिया–हिं० । टेब्लॉइड्स (Tabloids)–इं०।

अक्रीय akriya–हिं० वि० [सं०] (१) क्रिया रहित (Inactive, dull) (२) चेष्टा रहित। निश्चेष्ट। जड़। व्यापार रहित। जो कर्म करने से रहित हो। स्तब्ध।

अक्रूर akrúra–हिं० वि० [सं०] जो क्रूर न हो, सरल, दयालु, सुशील, कोमल, मृदु, (not cruel)।

अक्रोध akrodha–सं० हिं० वि० क्रोध रहित (Free from anger)

अक्रोसाइन achrosine–इं० ई० अरञ्जक (Not colouring)–इं०। फॉ० इं० १ भा०।

अक्ल akla–अ० व्याधिमूल–विज्ञान की परिभाषा में उस औषध को कहते हैं जो अवयवों के मांस या त्वचा को खाजाए अर्थात् उसे नष्ट करदे। करोडि (Corrode)–इं०।

अक़्ल áaqla–अ० (ए० व०) अक़ू (ब० व०), ख़िरद, दानाई–फ़ा०। बुद्धि, समझ, सेधा, भूझ, मनीषा, धी, धिषण, विवेक शक्ति–हिं०। इण्टेलिजेन्स (Intelligence)–इं०। प्रकृति में यह वह शक्ति अथवा यथार्थिय भाव है, जिससे बुरे भले में विवेक किया जाता है।

अक़्लफ़ aklafa–अ० उक्सांदिन, श्यामाभायुक्त रक्तवर्ण–हिं०। ब्राउनिश् रेड (Brownish red)–इं०।

अक़्लफ़ aqlafa–अ०, वह व्यक्ति जिसका ख़तना न हुआ हो। अनसर्कमसाइज़्ड (uncircumcised)–इं०।

अक़्लब aqlaba–अ० जिसके ओष्ठ उलटे हुए हों।

अक्ल–व–शुर्ब akla-va-shurba–अ० ख़ुर्द व नोश–फ़ा०। भक्ष्य एवं पेय अर्थात् खाने पीने के पदार्थ–हिं०। (edible anb drinkable)–इं०।

अक़्लह् aqlah–अ० क़लह (अर्थात् जिसके दाँत मैले हों) का रोगी।

अक्लह् aklah–अ० एक बार खाना।

अक्लाअ् aklán–अ० अवस्था (उमर) की पूर्णता तथा अंत तक न पहुँचना।

अक़्लाबोतस aqlábotasa–यु० अञ्जुरह्–फ़ा०। उटङ्गन–हिं०।

नोट अञ्जुरह्, उटङ्गन और कज़मह् प्रभृति शब्द भूल से "केवाँच" के लिए प्रयुक्त होते हैं। वस्तुतः केवाँच से ये सर्वथा भिन्न हैं। (Blepharmis edulis, *Pers.*)

अक़्लारोतस aqlárotasa–यु० झाऊ–हिं०। फ़रास, फ़रवा–मरलेई–पं०। (Tamarix Gallica, *Linn.*)

अक्लिका akliká–सं० स्त्री०
नील, नीलीवृक्ष। The Indigoplnt; (Indigofera tinctoria.)। नीलिचे–झाड़–मह०। नीली०–कं०। नल्लचेट्टु गेरिट पेट्ट नीलिचेट्टु–तें०। नीली, महानीली भेद से यह दो प्रकारकी होतीहैं। गुण—यह उष्ण वीर्य, रस में तिक्त और कटु तथा केशवर्द्धक, कफ, कास

और आमनाशक, लघु तथा वात, विष विकार, उदररोग, गुल्म (वायुगोला) कृमि और ज्वर नाशक है। रा० नि० व० ४। रेचक, मोह, भ्रम, आनवात तथा उदावर्त को नाश करने वाली है। भा० प्र० १ भा० । मद० १ व० ।

अक्लिन्त-वर्त्म aklinta-vartma-हिं० पुं० } अक्लिन्न-वर्त्म aklinn-vartma-सं० पुं० } नेत्रवर्त्मगत रोग विशेष । जिसमें धोए हुए अथवा बिना धोए हुए पलक परस्पर बारम्बार चिपक जाँय और कोए पक के पीपसे न चिपकें उसे "अक्लिन्न वर्त्म" नामक रोग कहते हैं। इसीको वाग्भट्टजी "पिल्लाख्य" नाम से पुकारते हैं। मा० नि० ।

अक्लिष्ट aklishta-हिं० वि० [सं०] (१) बिना क्लेश का । कष्ट रहित (disease-less)
(२) सुगम । सहज । साधारण । सरल सीधा । (Easy) ।

अक्लीका akliká-सं० स्त्री० नीलका पेड़, नीली वृक्ष (The Indigo Plant)।

अक्लीतक़ूसaqlitaqúsa } -रू० अरण्य प्लाण्डु अक्लीतून aqlitúna } सं० (Scilla indica, roxb) ।

अक्लीमिया aqlímiyá-पुं० कलीमिया,क़लीमिया अ० । धातुओं का मैलजो उनके पिघलाने केबाद ऊपरनीचे फागऔर मिलछटके समान उत्पन्न हो जाता है। कैलेमीन (calamine)-इं० ।

अक्लीलुलजबल aklilul jabala-अ० यह एक बूटी है, जो इरेन तथा मिस्र देश में उत्पन्न होती है। (रोस्मैरिस् rosmaris)-लै० । रोज़मैरी (RoseMary)-इं० । रू० फा० इं० ।

अक्लीलुलमलिक aklilulmalika-अ० वन मेथी, वन मेथिका-सं० । (Trifolium Indicum, Melgiotuspar viflora) नाखूना-हिं० । देखो-इक्लीलुलमलिक ।

अक्वथित क्षीरम् akvathita kshíram-सं० बिना पकाया हुआ दूध ।

गुण गुरु और कफ कारक है। वै० निघ०

अक्वन akvana-हिं० आक, आम्र, मदार, (Calotropis gigantea, R. br.)

अक्रम akrama-अ० मद का अधोभाग ।

अक्वा akvá-हिं० आक, मदार, (Calotropis gigantea, R. Br)

अक्वा aqua-लै० जल । देखो गुक़ा ।

अक्वाअ् akváa-अ० (ब० व०). (ए० व०) पहुँचे अर्थात कलाई की (Rist bones) ।

अक्वात aqváta-अ० (ब० व०) कुव्वत (ए०) भक्ष्य पदार्थ, गिज़ायें, (Edible)-इं० ।

अक्विलांजिया वल्गैरिस् aquilegia Vulgaris, Linn.-यह एक (Ranuncula ceae) वर्ग की औषधि है।

अक्विलेरियाअगेलोका aquilaria agalloch Roxb.-लै० अगर, अगुरु, ऊद । अग अ० Aegle wood-इं० मे० ८० । ग० ।

अक्विलेरिया-ओवेटा aquilaria, Ova -लै० अग (Ægle wood)-इं० ।

अक्विलेरिया मलाकेन्सिस् aquilar Malaccensis, Lamk.—लै० अ Ægle wood-इं० ।

अक्वेज़ान akvezána-रू०मदर भेद । इसे कोई रईसुल हमाम भी कहते हैं।

अक़्शाब aqshába-अ० (ब० व०). (ए० व०) क़िश्ब (१) मुहलिकात, ज़हरें, (Deadly poison), घातक (२) ज़ङ्ग, मुरचा, कीट, (Rust) ।

अक़्शी aqshi-आसा० करकोट — अग्गाई-अव० ।

अक़्शूरीयून aqsúriyúna-यु० एक औषध है।

अक़्शूस. akshúṣa–अ० कम् स् । अकाशवेल (Cuscuta reflexa)–लै० ।

अक्स aksa–हिं० संज्ञा पु० (अ० अक्स) (१) प्रतिबिम्ब । छाया । परछाईं । (२) चित्र, तसवीर ।

अक्सअ् aksaā–अ० वह व्यक्ति जिसके मसूड़े फूलेहों ।

अक्सम aksama–अ० मेदावी मनुष्य, वह व्यक्ति जिसका मेद (तोंद) बड़ा हो । कार्प्युलेण्ट (Corpulent), फैटी (Fatty)–इं० ।

अक्सह् aksah–अपाहिज, लोथ, जो अपने स्थान से हिल न सके । क्रिपल (Cripple) –इं० ।

अक़्साब aqsába–अ० (ब० व०) कुस्ब (ए० व०), अंतड़ियाँ, आंत्र–हिं० । (Intestines)

अक्सियह् aksiyah–फ़ा० जौ की शराब, यव-मद्य । (Barley wine)

अक़्सिया aqsiyá–फ़ा० सुफ़ेद माज़रियून । अपराजिता श्वेत (Clitoria ternatea, *Linn.* White)

अक्सियानूस aksiyánúsa–यु० जुन्दवेदस्तर जुन्द–अ० (Castoreum)–लै० ।

अक्सीर aksíra–हिं० छड़ीला (Nardostachys Jatamansi, *D. C.*)–लै० ।

अक्सीर aksíra–अ० (१) वह रस या भस्म जो धातु को सोना व चांदी बना दे । रसायन, कीमिया, पारस पत्थर, पारसमणि (Philosopher'sstone) (२) वह औषधि जो प्रत्येक रोग को नष्ट करे । वह औषधि जिसके खाने से कभी मनुष्य बीमार न हो । वि० अव्यर्थ । अत्यन्त गुणकारी । अत्यन्त लाभकारी ।

अक्सीर बवासीर aksira-bavásíra–हिं० पु० बूटी बवासीर, एक बूटी है जो पृथ्वी से मिली हुई होती है । चैत मास में प्रायः होती है । गुण—रक्त स्थापक, अतिसार नाशक, हामिद यु० मार्च १९२८

अक्सीरी aksiri–फ़ा० माहिर, कीमिया दाँ, कीमियाँ । कीमियागर । रासायनिक । रसायन शास्त्री । (Alchemist)

अक्सीरी आक aksiri áka–हिं० पु० प्रसिद्ध पौधा विशेष

अक्सीरी बूटी aksiri-búti–हिं० स्त्री० यह एक रसायनी बूटी है जो लग भग १ फुट ऊंची होती है । टहनी तथा पत्र घने, पत्र-जाल-पत्रवत् परन्तु उससे अर्धलम्बे, गम्भीर, हरित वर्णके होते हैं । इससे लौह ताम्र हो जाता है । हामि यु० जून १९३२ ई० ।

अक्सुनाफि (फ)न aksunáfin,–(phan) अ० हकीमी माप भेद, यह ६ तोले ११ माशे २ रत्ती अथवा ६ तोले ६ माशे के बराबर होता है ।

अक्सूफैलस aksúfailasa–यु० सहंसकोई नाम की एक बूटी है ।

अक्सूमानस aksúmánasa–यु० रतनजोत (Alkanet)–इं० ।

अक्सूमाली aksúmálí–यु० सिकञ्जबीन–अ० हिं०, द० सिकङ्गबीं–फ़ा० (Oxymel) ..

अक्सूस. aksúsa–अ० अकाशबेल का बीज । तुख़्मे कम् स्–फ़ा० Cuscuta Reflexa (Seeds-of)

अक्हल akhala–अ० स्याहचश्म, सरमगीं, आँखवाला । (२) छेदनशास्त्रकी परिभाषा में रगे हफ़्तअन्दाम को कहते हैं । वह रग कुहनी के मध्य में भीतर की ओर स्थित है । और क़ीफ़ाल व बासलीक़ के मिलाप तथा संयोग द्वारा पैदा होती है । चूंकि इसमें क़ीफ़ाल (Cephalic-vein) और बासलीक दोनों से शोणित आता है इस कारण इसके फ़सद (रक्तमोक्षण) से सम्पूर्ण शरीर का रक्त निकलता है । मीडियन कॅफ़ैलिक (median cephalic)–इं० ।

अक्हाल akhála–अ० (ब० व०) कहल (ए० व०) सुर्मा, अंजन, नेत्र में लगाने को शुष्कौषध । कॉलिरियम्ज़ (Collyriums) –इं० ।

अख akha–हिं० संज्ञा पुं० बाग़, बगीचा। (Garden)–इं०।

अखगरिया akhagariyá–हिं० संज्ञा पुं० (फा०) वह घोड़ा जिसके मलते समय उसके बदन से चिनगारी निकलती हो। ऐसा घोड़ा ऐबी समझा जाता है।

अखट्टः akhaṭṭah–सं० पुं० चिरौंजी–हिं०। (पियाल वृक्ष), पीलिया, इसके बीजको पीयाल बीज या चारदाना कहते हैं। चारोली–भा०। रा० नि० व० ११। भा० आम्रादिव०। (buchanania lati-folia, *Roxb.*)

अखनी akhani–हिं० संज्ञा स्त्री० (अ० अख़्नी) (meat-juice) देखो–अख़्नी।

अख़्नी akhani–अ० मांस रस। मांस का रसा। शोरबा।

अखन्न akhanna–अ० गुणा, गुनगुना, भुनभुना, मुनमुना, मिनमिना, नाकके बल से बोलने वाला, नकनका।

अखर akhara–सं० पुं० कर्पास, कपास, वाड़ी (Gossypium Indicum)–ले०।

अख़रसाज akharasája–फा० एक वृक्ष है जो उष्ण देशों में एवं शुष्क स्थानों में उगता है। मनुष्य के कद के बराबर अथवा कुछ अधिक ऊँचा एवं खुरदरा और अंजीर के समान नर्म और खोखला होता है।

अखरा akhará–हिं० वि० (सं० अ=नहीं +हिं० खरा) जो खरा या सच्चा न हो। झूठा। बनावटी। कृत्रिम। संज्ञा पुं० सं० (अक्षर) भूसी मिला हुआ जौ का आटा जिसको गरीब लोग खाते हैं।

अखरोट akharota–हिं० संज्ञा पुं० बं०, अक्षोट आक्रोट,–बं० हिं०, द०। अखोट, पीलु, शैलभवः और कर्परालः–अक्षोटः; अक्षोटकः, आखोटः, पर्वतपीलुः, कन्दरालः, आक्षोड (ख०), आस्फोटकः, (श्रा० र०) गिरिज पीलुः, अक्षो-टकः–सं०। जौज़, जौज़ुल्‌ख़ैनिफ़–अ०। गिर्दगाँ, चारमग़ज़, चेहार मग़ज़, गौज़, फा०। कासलीस, क़ादस्याह–यु०। क़ौज़–तु०। जुग्लैंस Juglans regia जु० रेजिया (J. regia, Linn.)–ले०। वॉलनट (Walnut) इं०। वल नस बॉम (Wallnussbaum)–ज०। नॉयर कल्टिव Noyer Cultive–फ्रां०। अक्रो–ता०। अक्रोटु–ते०। अक्रोड, अक्रोट–कर्ना०। अक्रोड–म०। अखरोट, अखोड–सिम्–स्या–मिया निश्या–जि–चर०। अ–कों०। उख्काई–द्राचि०। नगरिन्न–भू कब्‌सिन्न–आ०। कॉथल–लेप०। थाक, अखोट, अखरोट–उ० प० प्रा०। अखरोट–कुमा०। अखोर, क्रोट, खून–अखरोट, खून, चारमाज़, थनथान, खोर, रग, अखोरा, क्रोट, कबोटक, स्तार्ग, उग़, थामक, खाल–डिराडामा–पं०। उग़, –अफ़्०।

अक्षोट वर्ग

(Juglandaceæ)

उत्पत्ति स्थान–हिमालय (शीतोष्ण) पर भू से लेकर अफ़ग़ानिस्तान तथा काश्मीर तक है। खसिया की पहाड़ियाँ तथा और और स्थानों में भी यह लगाया जाता है। इसका एक और है [Aleurites Moluccana, *Willd.*] बंगाल और दक्षिणी भारत में तायत से होता है। पीलु [Mustard tree of scripture] भी कोंकन देशमें स्पन्न अखरोट जातिका एक प्रकार का ... इनके लिए उक्त २ नामों के अन्तर्गत ... श्वेत श्याम भेद से अखोट २ प्रकार का होता है।

वानस्पतिक विवरण–यह शाखी वृक्ष पर्वतों में उत्पन्न होता है। इसके वृक्ष बहुत ऊँचे होते हैं। इनकी ऊंचाई लगभग से ६० फी० होती है। पत्ते ४ से ८ इं० अंडाकार नुकीले और बराबर या तीन तीन युक्त एक डंठल के दोनों ओर विषमवर्ती होते हैं। छूने में सख़्त और मोटे मालूम होते। पुष्प सफेद रंग के छोटे छोटे शाख के सि गुच्छे में कई कई आते हैं। एकही गुच्छे

पुष्प दोनों प्रकार के पुष्प होते हैं। इनमें पुकर (andrœcium) की संख्या अत्यधिक होती है। फल दो कोष युक्त मैनफल या बहेड़े के समान अण्डाकार होते हैं। उसके ऊपर तीन छिलके होते हैं, इनमें प्रथम हरा और मोटा (पकने पर जैतूनी रंग का हो जाता है) स्वाद में कसैला और कड़ुआई लिए हुए होता है। यह फल कच्चेपन में नरम परन्तु सूखकर कठोर हो जाते हैं। द्वितीय छिलका पहिले छिलके के नीचे कठोर होता है। फिर इसके दो टुकड़े आपस में मिले और निरा उनका निकला हुआ तथा तीसरे छिलके के भीतर से टेढ़ा मेढ़ा गूदा या मींगी गिरी निकलती है। मींगी के ऊपर बहुत बारीक छिलका होता है। मींगी अंडाकार सफेद कुछ चिपटी और चिकनाई लिए चिकने और चिल गोजे की मींगी के समान होती है, इन सबके चार भाग होते हैं। दो दो भाग आपस में मिले इनके बीच में बहुत बारीक परदा होता है। फल का वृहत्तम व्यास लग भग २॥ इंच होता है। इसकी लकड़ी बहुत ही अच्छी मजबूत और भूरे रंग की होती है और उसपर बहुत सुंदर धारियाँ पड़ी होती हैं।

अखरोट तैल-गुण—अखरोट के गूदे में से तेल भी बहुत निकलता है। मूलक तेलवत्। कृमिनाशन हेतु मुख्यतः कद्दूदाना (Tape worm) को मारने के लिए, मृदुभेदन और त्वक्‌निःस्सारण हेतु इसके तेल का आभ्यन्तरिक और दृष्टि मान्द्य हेतु बाह्य प्रयोग किया जाता है।

नोट—उपर्युक्त समस्तपर्याय इसी के मींगी अथवा फलके हैं। लेटिन नाम जुग्लेन्स रेजिया (juglans regia) इनके वृक्ष के लिए आया है।

प्रयोगांश—फलत्वक्, त्वचा, बीज (मींगी), फल और खोपरी (Nut)

प्रभाव या उपयोग। गुण—मधुर, बलकारक स्निग्ध, उष्ण, वातपित्तनाशक, रक्तविकारहर, शीतल तथा कफ प्रकोपक है। रा० नि० व० ११ मधुर, बल्य, गुरु, उष्ण, विरेचक और वातनाशक मंद० वं० ३०।

परिवर्तक, और संकोचक इसका क्वाथ (१२ में १) कंठ-माला, श्वेतप्रदर प्रभृतिके लिए लाभ जनक है। बीज-इसमें तेल, एल्युमीन या जुग्लैन्डिक एसिड और राल होती है।

अपक्वफल कृमिघ्न। पक्वफल या मींगी—"अ क्षोटः कोऽपि वाताद् सदृशः कफ पित्त कृत्" भा० प्र० फ० व०। स्वादिष्ट, भक्ष्य, पुष्टिकर और कामोद्दीपक। फलत्वक् कृमिघ्न, उपदंश नाशक मूल-त्वक् संकोचक,कृमिघ्न और दुग्ध नाशक (Lactifuge) तथा व्रणशोधक। इं० मे० मे०। इं० मे० प्लां०।

इसकी लकड़ी मेज, कुरसी, संदूक के कुन्दे, संदूक आदि बनाने के काम में आती है। इसकी छाल रंगने और दवाके काममें भी आती है। डंठल और पत्तियों को गाय बैल खाते हैं।

अखरोट-जंगली akharoṭa-jangali-हिं० संज्ञा पुं० (१) जायफल (Nut-meg) जरगया-खोट। जंगली अखरोट।

अखरोस akharosa-पुं० (१) एक बूटी है, जो फ्रांस तथा सर्द दरियाई देशों में उत्पन्न होती है (२) जंगली गेहूं।

अखरौट akharouṭa-पं० अखरोट, अक्षोट Walnut-इं० (Juglans-regia.)।

अखर्व akharba-हिं० वि० [सं०]। बड़ा। लम्बा। (Not dwarfish.)।

अखर्यूस akharyúsa- पुं० पहाड़ी गन्दना।

अखलः akhalah-सं० पुं० उत्तम वैद्य।

अखसत akhasata-हिं० संज्ञा पुं० [अक्षत] चावल (Rice)।

अखा akhá हिं० संज्ञा पुं० देखो—आखा।

अखाड़ा का भेद akhdqá-ká-bheda-इं० अपामार्ग भेद।

अखात akháta-हिं० संज्ञा पुं० बिना खुदाया हुआ स्वाभाविक जलाशय ताल, झील खाड़ी (A natural lake.)।

अखातम् akhátam-सं० क्लो० } देवखात-हिं०।
अखातः akhátah-सं० पुं० }

देवखाद्-यं०। हेच० का० ४। पुष्करणी। अम०। (A natural lake.)।

अखाद्य akhádya-हिं० वि० [सं०] अभक्ष्य, खाने के अयोग्य, (uneatable.)-इं०।

अखाव मियाआ akháva-miyáá—अर० छाल, त्वक। Barks-इं०। स० फॉ० इं०।

अखाव akháva-अर, (ए० व०) छाल, त्वक (Bark)-इं०। स० फॉ० इं०।

अखियारी akhiyárí-पं० अरण्य गुलाब, वन गुलाब (wild rose.)-इं०।

अखिल akhila-हिं० वि० [सं०] (१) सम्पूर्ण, समग्र, पूरा, बिलकुल, सब (whole) (२) अखण्ड, सर्वांग पूर्ण।

अखिलिका akhiliká-सं०, पुं०, करेली छोटी, सुग्रकारवेल्ली, उच्छे-बं० A kind of gourd (Momordica charantia, *Linn.*)

अखीतहे ज़ौहय्यह Akhítahe-zouyyah-अ० ख़्यालाते चश्म-फ़ा० चक्षुरोग विशेष जिसमें नेत्र के सामने चिनगारियाँ अथवा तारे दृष्टिगोचर होते हैं। मस्की वॉलिटेण्टीज़ (Muscæ volitantes.)-इं०।

अख़ीफ़ Akhífa-अ० जिसका एक नेत्र श्याम और दूसरा हरित या नीलवर्ण युक्त हो।

अख़ीरूस akhirúsa-यु० जङ्गली गेहूँ के अतिरिक्त एक बूटी है जो जल के समीप उगती है।

अख़ील Akhila-अ० अस्थिर, क्षण क्षण में रंग बदलने वाला (१) गिरगिट केमीलिअन (Chameleon)-इं०। (२) एक रूमी कपड़ा है जो घंटा घंटा पश्चात् रंग बदलता है। (३) एक प्रकार का पक्षी है, जिसके परों के विभिन्न प्रकार के रंग होते हैं।

अख़ीलस Akhílasa-यु० एक काबिज़ (संकोचक) और शुष्क बूटी है (An astringent and dry herb.)।

अख़ो (खँ) लूस akhilús-यु० नानख़ाह, अजवाइन। (Carum ptychotis *D. C.*)-अ० चश्मस्थ चक्षुकोण-शोथ नेत्र के भीतरी कोये का शोथ। ऑब्स्ट्रक्शन ऑफ़ दी पंक्टा (Obstruction of t[he] puncta)-इं०।

अखुविषः Akhu-vishah-सं० पुं० विन्द[ाल], घगरबेल, देवदाली-हिं०। (Luffa Ech[in]ata, *Roxb.*) फॉ० इं० २ भा०।

अखोटिकः Akhotikah सं० पुं० (१) वृक्ष [मात्र] (A tree in general) (२) शिक[ारी] कुत्ता।

अखोररी akhorari-पं० कपटीच, आम्बी, रैरा

अखोट akhoṭa-कॉ० अखरोट, Waln[ut] (Juglans regia.)।

अखोड akhoḍa यु० अखरोट Waln[ut] (Juglans regia)।

अखोर akhor-काश० अखरोट। Waln[ut] (Juglans regia.)।

अखोर-मोरनु akhor-moranu-कना० सिहोर, सहोर-हिं०, शरव्य०। शाखोटक:-सं०। (Streblus Asper, *Linn.*) इं० मे० मे०

अखोरी akhori-पं० कपटीचा, आम्बी, रैरा-पं० -हिं० संज्ञा पुं० अकोला। अंङ्कोल।

अखोला akholá-अङ्कोल।

अखोह akhoh हिं० संज्ञा पुं० (सं० क्षोभ= असमानता) ऊँची नीची भूमि। ऊभड़-खाबड़ पृथ्वी। असम भूमि।

अखंड Akhanḍa हिं० वि० [सं० वि०] अखंडनीय, अखंडित, (Unbroken, whole, entire.) (१) अटूट। जिसके टुकड़े न हों। अविच्छिन्न। सम्पूर्ण। समग्र। समूचा। पूरा। (uninterruptedly) (२) लगातार। जिसका क्रम या सिलसिला न टूटे। जो बीच में न रुके। (३) बेरोक। निर्विघ्न।

अखंडनीय Akhanḍaniya-हिं० वि० [सं०] (१) जिसके टुकड़े न हो सकें। जिसका खंडन न हो सके। जो काटा न जा सके।

अखंडल akhanḍala-हिं० वि० [सं० अखंड]

अखंडित akhandita हिं० वि० [सं०] (unbroken) जिसके टुकड़े न हुए हों। अविच्छिन्न। विभाग रहित।
(२) सम्पूर्ण। समग्र। परिपूर्ण। पूरा।
(३) निर्विघ्न। बाधा रहित। जिसमें कोई रुकावट न हो। (४) लगातार।

अखंडित-ऋतु akhandita-ritu-हिं० वि० (Fruit ful.) जो ऋतु पर फल फूल दे।

अख़ akh अ० खंकार, खांसीका शब्द, वेदना शब्द, खांसने का शब्द। कफ (Cough)-इं०।

अख़्रोर akhrora-फ़ा० अमरूद भेद (Wild pear.)। इं० हिं० ना०।

अख़ज़ akhza-अ० गिरफ़्त फ़ा०। लेना, थामना, पकड़ना, आशोब चश्म (आँख आना), गिरफ्तार होना।

अख़ज़ाअ akhzaa अ०-संकुचित ग्रीव, लघुग्रीव, ठौना, ठिगना-हिं०। ड्वार्फ़ (Dwarf) पिग्मी(Pigmy)-इं०।

अख़्ज़र akhzara-अ० फ़ा०। हरा, हरी हिं०, द०। हरित सं०। हरा, सबुज-बं०। ग्रीन-(Green)-इं०। हकीम लोगों ने इसकी चार कक्षाएँ स्थिर की हैं, यथा—(१) फ़ुस्तकी या पिस्ती अर्थात् पीताभयुक्त हरितवर्ण, (२) नीलजी अर्थात् नीलगूँ, नीलवर्ण, (३) ज़ंगारी या ज़ंगारी या सदियाला सब्ज़ीमायल अर्थात् हरिताभयुक्त मटियाला और (४) गन्दने के सदृश हरित वर्ण।

अख़्ज़र akhzara-अ० कनखियोंसे देखने वाला।

अख़ुज़ुल बर्द akúzul-bard-अ० शीत लगना, शीतल वायु लगना, वायु लगना, प्रतिश्याय। कोल्ड (Cold), केचकोल्ड (Catchcold)-इं०।

अख़ज़ुल् शम्स akhzulshamsa-अ० गिफ़्लह् शम्सियह्, लू लगना, आतपाघात-हिं०। सनस्ट्रोक (Sunstroke), इन्सोलेशन (Insolation)—इं०।

अख़्तावर akhtávara-हिं० संज्ञा, पुं० [फ़ा०] अख़्तो-वह घोड़ा जिसे जन्म से अंडकोष की कौड़ी न हो। ऐसा घोड़ा ऐबी समझा जाता है।

अख़नस akhanas-अ० चपटी, सपाट नाक वाला (Snub-nosed)

अख़नियूस akhniyús-यु० पालक (Spinacea oleracea, *Linn.*) या अस्नैमूस।

अख़्नैमूस akhnaimúsa यु० एक प्रसिद्ध घास है जो तर स्थानों तथा नहरों के किनारे पर उगती है।

अख़नैमूस akhnaimúsa—यू० पालक।

अख़्फ़श akhfash-अ० रतौंध अर्थात् चुन्धा (दिवसांध) रोगी (Dayblind)

अख़्फ़ाक़ akhfák-फ़ा० चान्दबेल, इश्कपेचा (लताविशेष)।

अख़्बसान akhbasána अ० (१) मलमूत्र अर्थात् गूहमूत्र से संकेत है। (२) गुदरुगन्धि, पुरुषमीमिलस् (Excrements)-इं०।

अख़्म akhma अ० ललाट और भौं (भ्रू) की शिकन (बलस्थान) (Frown)।

अख़्माद akhmáda-अ० ताप बुझाना, गर्मी मारना, आग की लौ दबाना, कमज़ोर करना, ताप शमन करना।

अख़्रब akhraba-अ० वीरान मुक़ाम-उ०। निर्जन स्थान, उजाड़-हिं०। तिब्ब की परिभाषा में कर्णकटा को कहते हैं अर्थात वह व्यक्ति जिसका कान कटा हो।

अख़्रम akhrama-अ० क़ाइक़ाइदहे अख़रमियह्, नक्टा। छेदन शास्त्र की परिभाषा में नकुटा उभार, स्कन्धास्थि का वह उभार जो कन्धे की ऊँचाई बनाता है, अंसकूट। एक्रोमियॉन प्रॉसेस (Acromion Process)-इं०।

अख़्रस akhras-अ० मूक, गुंह, गूँगा। डम्ब (Dumb)-इं०।

अख़्रास akhrasa-यु० नाशपाती, अमृतफल (Pyrus Communis, *Linn.*)

अख़्रीज़ हब्बुल् अस्फ़र akhriz-habb-ul-asfara-अ० कुसुम्भः, कुसुम (सम) (Carthamus Tinctorius, *Linn.*)।

अख़्रीत् akhrita-अ० जंगली गन्दना।

अख्रीतूस akhritús यु० जंगली कामय; करम-कल्ला, गोभी भेद (wild cabbage.)।

अख्लह akhlah एक कंटकयुक्त बूटी है जो बालिश्त के बराबर होती है। पुष्प नीले एवं श्वेत और पत्ते कठोर होते हैं।

अख्लात akhlat –अ० (ब० व०) खिल्त (ए० व०) यूनानी वैद्यक के मतानुसार खिल्त (दोष) चार हैं, यथा—दम (रक्त) सफ़रा (पित्त) बल्ग़म (कफ, श्लेष्मा) और सौदा (रक्त) शारीरिक—द्रव (तरी) अर्थात् शरीर की वह चारों रतूबतें (तरी, स्निग्धता) जो भोजन के प्रथम परिवर्तन द्वारा उत्पन्न होती हैं। ह्यूमर्स (Humours) इं०।

अख्लीलुल मलिक akhlilul-malika–यू० अपस्मा० इकलीलुस्मलिक, ताज बादशाही।

अख्शम akhsham -अ० नक्श रोगी, घ्राणहत रोगी। वह रोगी जिसकी घ्राणशक्ति नाश हो गई हो अर्थात् जो वस्तुओं के गन्ध को न मालूम कर सके। अनॉस्मैटिक (Anosmatic.) –इं०।

अख्स़ा akhsá–अ० गोबर, गू। डङ्ग (Dung) फीसेज (Fœces) इं०।

अख्समुलैन akhsamúlain–अ० पलकों के किनारों के मिलने का स्थान।

अख्सीनह akhsinah-जङ्गली राई (Brassica Juncea, Willd.)।

अग aga–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अङ्ग] मूढ़ अन जान। अग, शरीर,–हिं० सं० पुं० [सं० अग्रारी] ऊख के सिरे पर का पतला भाग जिसमें गाँठें बहुत पास २ होती हैं, और रस फीका होता है। अगौरा। अगौरा। वि० [सं० अज्ञ] मूढ़, अनजान, अनाड़ी। वि० सं० (१) न चलने वाला। अचर। स्थावर। (२) टेढ़ा चलने वाला।

अगंड aganda–हिं० सं० पुं० (सं०) धड़ से जिसके हाथ पैर कट गए हों।

अगः agah–सं० पुं० (१) पहाड़, पर्वत-हिं० (Mountain) (२) एक वृक्ष। (३) पत्थल (४) सर्प (५) सूर्य्य। पहाड़ आग्नेय व सौम्य गुण भेद से दो प्रकार के होते हैं इनमें विन्ध्य पर्व्वत आग्नेय गुण युक्त और हिमालय सौम्य गुण युक्त है। आग्नेय गुण विशिष्ट पहाड़ों में होने वाली औषधियाँ भी गुण विशिष्ट होती हैं, और सौमगुण विशिष्ट पर्व्वतों में होने वाली औषधियाँ सौमगुण विशिष्ट होती हैं। सु० ५०।

अगई agai–हिं० संज्ञा पु० (?) चलता की जाति का एक पेड़ जो अवध, बंगाल, मध्य और मद्रास में बहुतायत से होता है। इसकी लकड़ी भीतर सफेद लिए हुए लाल होती है जहाज़ों और मकानों में लगती है। इसका कोयला भी बहुत अच्छा होता है। इसके पत्ते दो दो फुट लम्बे होते हैं और पत्तल का काम भी देते हैं। इसकी कली और कच्चे फलों की तरकारी बनती है।

अगज agaja–हिं० संज्ञा पु०, पर्वत में उत्पन्न होने वाला। शिलाजीत।

अगजः agajah–सं० पु० (१) आई धनियाँ नैपाली धनियाँ, तुम्बुरु-हिं०। तुम्बुरु, धान्यकम्–सं०। कौंचधनम्–यं०। Excœcaria agallocha (२) बन्दकः–सं०, बांदा–हिं०। बाँदरा। बरगाछा–बं०। A parasiteplant (Epidendrum Tessellatum)।

अगजन agajana–पं० मवानी बूटी। मे०

अगजम् agajam–सं० क्ली० शिलाजतुः। जीत (Bitumen) र० मा०।

अगट agata–हिं० संज्ञा पु० [देश] बिक मांस बेचने वाले की दूकान।

अगड़धत्ता agaradhattá–हिं० पु० (१) पुष्पी, गुसा। (२) हिं० वि० [अग्रोद्धत, चढ़ा] लम्बा तड़ंगा। ऊँचा (श्रेष्ठ) बड़ा

अगड़ा agadá–हि० संज्ञा पु० (देश) ज्वार बाजरे आदि अनाजों की बाल जिसमें से दाना झाड़ लिया गया हो। नुमसी, खगरा।

अगण aganа–हि० वि० जिसकी गिनती न हो।

अगति agati–हि० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) गति का उलटा (२) स्थिर या अचल पदार्थ।

अगतिक agatika–हि० वि० [सं०] जिसकी कहीं गति या पैठ न हो।

अगती agati–हि० संज्ञा स्त्री० (१) चक्रमर्द, चकौंड़। दद्रुघ्न। दाद्रुमर्द। Cassia tora (२) अगस्तिया, अगस्त, (Agati Grandiflora.)।

अगत्ति agatti–ता० सु०, मला० हि० अगस्तिया अगस्त्य वृक्ष। Agati Grandiflora.

अगतीहुन agatihúna–सं० पु० एक वृक्ष है जो सब जड़ और पत्तों के उत्तर में हो जाती है। मु० आ०

अगथिया agathiyá–हि० } Agati Grandiflora
अगथियो agathiyo–गु० }
अगस्तिया, अगस्त का पेड़, अगस्त्य वृक्ष।

अगद agada–हि० संज्ञा पु० } (१) रोग रहित
अगदः agadah–सं० पु० } Healthy
(२) औषध। (Medicine) रा० नि० व० २०।

अगदम् agadam–सं० क्ली० (१) आरोग्य, स्वस्थ, निरोग (Healthy) रा० नि० व० २० वा० उ० ३५ अ० (२) प्रति-विष, विषघ्न औषध –हिं० क़ादे ज़हर–फ़ा०। तिर्याक़–अ०। Antidote–इं०।

अगदङ्करः agadnkarah } –सं०, पु० वैद्य
अगदङ्कारः agadnkárah }
चिकित्सक (A physician.)। रा० नि० व० २०।

अगदतंत्र agadatantra } सं० क्ली० विष
अगदतन्त्रम् agada-tantram }
चिकित्सा विषयक तन्त्र, निखिल स्थावर व जङ्गम विष चिकित्सा; विष तन्त्र (शास्त्र)। इल्मुस्समूमियात इल्मुस्सुमूम–अ०। टॉक्सिकॉलोजी (Toxicology.)–इं० यह शल्य शालाक्यादि अष्टविध तन्त्रान्तर्गत वैद्यक का एक अंग विशेष है। जिसमें सर्प वृश्चिक आदि के विष से पीड़ित मनुष्य की चिकित्सा का विधान है। सु० सू० १ अ०।

यह शास्त्र जिसमें विषों के गुणधर्म, उनके मनुष्य शरीरावयवों पर होने वाले प्रभाव एवं लक्षण तथा उपचार और चिकित्सा इत्यादि प्रभृति का पूर्ण विवेचन किया जाय।

अगदनस्यम् agada-nasyam–सं० क्ली०, सर्पदंष्ट्र प्रभृति विषयक नस्य विशेष, विष के नस्य (Sternutatory used in snake poisoning) सु० क० प०।

अगदाञ्जनम् agadánjanam–सं०, क्ली०, विष द्वारा मूर्च्छित हुए प्रभृति का अंजन, विषघ्न अंजन (Collyrium used as antidote to poison.) सु० क० प०।

अगदेश्वरः agadeshvarah–सं० पु० योग–शुद्ध गंधक १ भाग, पारद १ भाग, मैनसिल १ भाग, वर्क चांदी १ भाग, हरताल १ भाग, शुद्ध अभ्रक भस्म गंधक का चौथाई भाग, चूर्ण कर इसमें हंसराज, चिरचिरा और नीम के रस की सौ भावना दें फिर आतशी शीशी में रख बालुका यंत्र द्वारा ३२ पहर की आँच दें।

मात्रा—चना प्रमाण।

गुण—यह उचित अनुपान से प्रत्येक रोगों को नष्ट करता है। र० यो० सा०।

अगन aghana–अ० मिनमिना वह व्यक्ति जो नकिया कर बात करे।

अगनagana–हि० संज्ञा स्त्री (१) दे० अग्नि। (२) दे० अगस्त।

अगन चश्मानोका agana-chashmánoká–हि० पु० आतशी शीशा, सूर्य-कान्त-मणि, अग्नि-गर्भ (The sun-stone)–इं०।

अगनश aghanasha–यमo, हजा०, नौसादर, नुसार। (Ammonii chloridum)

अगना aganá–उ० प०सू० धामन। मे० मो०।

अगनाद aganáda–बं० वन तिक्तिका, आकनादि सं० बं० । Stephania Hernandifolia । फॉ० इं० १ भा० ।

अगनी aganí–हिं० संज्ञा स्त्री० दे० अग्नि । संज्ञा स्त्री० [सं० अग्र] घोड़े के माथे पर की भौंरी वा घूमे हुए बाल ।

अगनीन aganina–इं० जलीय ऊर्ण वसा (Adeps lanæhydrosus) । इं० मे० मे० ।

अगनीयूस aghaniyúsa–सिरि० किर्मिज़ दाना, मसूर के बराबर रक्त वर्ण का एक कीट है (Cochineal) देखो-कोचनील ।

अगनीस aganísa यु० निर्गुण्डी सम्हालू-हिं० । (Vitex negundo, Linn.)

अगनू aganú
अगनेऊ agnaeú
अगनेत agnata –हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आग्नेय] अग्नि कोण । आग्नेय दिशा ।

अगन्धखर्पर पर्पटी agandhakharparpati–सं० स्त्री० योग-शुद्ध पारद १२ मासे, लौह भस्म १२ मासे, दोनोंकी कज्जली करें पुनः थोड़े से घी में मन्दी आग पर पिघला कर विधिवत् गोबर के ऊपर केले के पत्र रख उस पिघली हुई कज्जली को डालकर ऊपर से दूसरे केले के पत्र से दाब दें। फिर भारंगी, सोंठ, अगस्तिया, त्रिफला, जयन्ती, निर्गुण्डी, त्रिकुटा, धामा, कुमारी इनके रसकी ७-७ भावना देकर एक लघु पुट दें।

गुण—उचित अनुपानोंसे समस्त रोगों को नष्ट करती है । पान, तुलसीके रस तथा गो मूत्रके साथ सेवन करने से श्वास और खाँसी का नाश होता है । मात्रा–१ मासा से २ रत्ती ।

अगन्धिकम् agandhikam–सं० क्ली० संचल लवण–बं० । sochal-salt भा० मध्य० । देखो-सौवर्चलम् ।

अगम agama–हिं० वि० [सं० अगम्य] (१) अथाह । (२) अलभ्य ।

अगमकी agamakí–हिं० स्त्री० बिलारी । म्युकिया स्कैब्रेला Mukia scabrella, Arn.), मार्या निया स्कैब्रेला (Bryonia Scabrella, Linn)-लैं० । अहिलेखन, घण्टाली,–सं० । चिराती, बेल्लारी-हिं० चिराती–म० । ग्वाल ककड़ी–उ० प० सू० मोसुमुरुक्की, मुसु मुसुक्काइ– ता० । पुटेन-पुड़ि पांट्टी बुद्‌सु, नूधोम्म कुलतरु युदम-ते० मुकपिरी, मुक्कल-पीरम्-मला० । ब्रिस्टली ब्रायनी (Bristly Bryony)-इं० ।

कुष्माण्ड वर्ग.

(N. O. Cucurbitaceæ.)

उत्पत्ति स्थान—समग्र भारतवर्ष ।

वानस्पतिक विवरण–पौधा लोमश, सूत्र (विषम तलीय), आधारकतन्तु (tendril) सामान्य, पत्र–हृदाकार, खण्डयुक्त या कोणयुक्त पुष्प-लम्बवृन्त युक्त, जिसमें असंख्य नर पुष्प होते हैं । और पुष्प गुच्छाकार होता है नारि पुष्प १ से ४, लघु, घण्टाकार और पीत वर्ण का, बीज (berry) वर्तुलाकार पक्वावस्था में गम्भीर रक्त वर्ण का जिसपर लम्बी की रुत श्वेत धारियाँ पड़ी रहती हैं; चिकने (समतल) अथवा कतिपय प्रहृष्ट रोमों से व्याप्त होता है । फल एवं पौधा स्वाद में कटु होते हैं । फल अक्टूबर से दिसम्बर मास तक परिपक्व होते हैं ।

इतिहास व गुणधर्म आदि- डाइमॉक के वर्णनानुसार इसका दाक्षिणात्य संस्कृत नाम अहिलेखनम् है जो स्पष्टतया अहिलेखनका अपभ्रंश है । इसके फल पर सर्पाकार श्वेत धारियाँ पड़ी रहती हैं इस कारण इसका उक्त नाम भी उचित ही है ।

इसका तथा शिवलिङ्गी (Bryonia Laciniosa) का दूसरा संस्कृत नाम दो प्रयोगों में आता हुआ दीख पड़ता है । वह घण्टाली है जिसका अर्थ "सूत्र में एक पंक्ति में पिरोई हुई घण्टियां" है जैसाकि नर्तक कुमारी गण नृत्य काल में पहनती हैं । यह नामभी उपर्युक्त सादृश्यता के कारण ही रखा गया है ।

यह पौधा साधारण भेदक एवं आमाशय बलप्रद है । इसका शीत कषाय अर्द्ध प्याली की मात्रा

दिन में दो बार दिया जाता है। यह अब उन्हीं आशयों के लिए व्यवहार में आती है तथा यह उन मिश्रणों में जो बालकों को दी जाती है, प्रविष्ट होती है। ऐन्सली।

यह मूत्रल है—एर्वाइरो।

बीज का क्वाथ मांत्र स्वेदक है। इसकी जड़ द्वारा निर्मित क्वाथ आख्मान में हितकर है तथा जड़ को दांत में चर्वण करने से यह दंतशूल को लाभ पहुँचाती है। वैट।

कोमल अंकुर एवं तिक्त पत्र सामान्य भारक प्रभाव करते हैं। और डाक्टर वॉटर (Watts' dictionary) शिरोऽर्ति या शिर चकराने और पित्त विकार में प्रयोग करने की सिफ़ारिश करते हैं।

यह दवा कुछ मिश्रित योगों का एक अवयव है जो कफयुक्त (मुख्य लक्षण) पुरातन रोगों में व्यवहृत है। सम्भवतः इसके श्लेष्म निस्सारक प्रभाव के कारण ही ऐसा किया जाता है। इं० मे० मे०।

अगमन agamana-हिं० क्रि० वि० [सं० अग्रयान] आगे। पहिले। प्रथम। आगे से, पहिले से।

अगमनीया agamaniyā-हिं० वि० स्त्री० [सं०] न गमन करने योग्य (स्त्री), जिस (स्त्री) के साथ संभोग करने का निषेध हो।

अगम्य agamya-हिं० वि० [सं०] (Unapproachable) न पहुँचने योग्य।

अगम्या agamyá-हिं० वि० स्त्री० [सं०] न गमनकरने योग्य (स्त्री) मैथुन के अयोग्य स्त्री। संज्ञा स्त्री० न गमन करने योग्य स्त्री। वह स्त्री जिसके साथ सम्भोग करना निषिद्ध है। जैसे-गुरुपत्नी, राजपत्नी, इत्यादि [A women not deserving to be approached, (for cohabitation)

अगम्यागमन agamyágamana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अगम्या स्त्री से सहवास। उस स्त्री के साथ मैथुन जिसके साथ संभोग का निषेध हो। जैसे-राजपत्नी, गुरुपत्नी, मित्रपत्नी, माता, बहिन इत्यादि।

अगम्या गामी agamyágámi-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अगम्यागामिन] (Practising illicit intercourse) अगम्या स्त्री से संभोग करने वाला।

अगया agaya } हिं० [१] रोहिष-
अगयाघास agaya-ghása } तृण, गंधतृण, भूतृण। Andropogon Schoenanthus, *Linn.* फा० इं० ३ भा०। इं० मे० मे०। देखो अगिया। (१) जल धनियाँ, हेमकॉडर-हिं०। स्वरूप-हरा। स्वाद-कडुआ और तीखा। पहिचान-प्रसिद्ध बूटी है। रासायनी लोग इसको ढूंढने में बहुत रहते हैं। प्रकृति-तीसरी कक्षा में गरम और दूसरी कक्षा में रूक्ष है। हानिकर्ता-त्वचा को और खुजली उत्पन्न करती है। दर्पनाशक-मुर्दासंग और गाय का घी। मात्रा-२ रत्ती। गुणकर्म-प्रयोग-(१) यदि इसके स्वरस में चालीस दिन गंधक भिगोकर धूप में रक्खे फिर उस गंधक को २ रत्ती पान में रखकर खाएँ तो अत्यन्त क्षुधा लगती है, (२) अति कामोद्दीपन कर्ता, (३) यदि वंग को इसके स्वरस में भस्म करें तो स्तम्भन काम को अत्यन्त गुण करती है और किसी प्रकार का अवगुण नहीं करती (निर्विषैल) यु० मु०।

अगर agara-हिं० संज्ञा पुं० काली अगर, अगर सत। अगरु, अगुरु, वंशिकं, राजार्हम्, लोहं, कृमिजं, क्रिमिजं, जोङ्गकं, [अ०], अनार्य्यजं, [हे०], वंशकं, [हा०], लघु, पिच्छिलं [कै०] भृङ्गजं, कृष्णं, लोहाख्यं अर्थात् लोहे के सम्पूर्ण नाम [र०] रातकं, वर्णप्रसादनं, अनार्यकं, असारं, अग्निकाष्ठं, क्रिमिजग्धं और काष्ठकं, लोहं, प्रवरं, योगजं, पातकम्, क्रिमिजम्, सं०। अगरु, अगुरचन्दन, आगु-बं०। ऊद, ऊदुल्-बखूर, ऊदे ग़र्क़ी, अगरे हिन्दी-अ०, फ़ा०। एकिलेरिया एगेलोका (Aquilaria agallocha, *Roxb.*) ए० मलाकेन्सिस (A. Malaccensis, *Lamb*) ए० ओवेटा [A. Ovata]

–ले० । एलोवुड Aloewood, ईगल वुड Eaglewood–इं० बॉयस डी कैलम्बक (Boisde Calambac)–फ्रां० । अगर, अगलोचन्दन–सा० । हलुहचेट्टु–ते । कृष्णागरु, अगरु–ता० ते०, कना० । कृष्णागरु शिशवाचे झाड़–म० । अगरु–गुं० । अवयन–यरु० । आकिल-मलारा० । हागलगंध-तु० । चिन-हि-अंगाचीन । गरू, पयागहरू–मल० । सांसी –आसा० ।

थाईमलेसीई वर्ग

[N. O. thymelaceæ]

उत्पत्ति स्थान—आसाम, पूर्वी हिमालय पश्चिमीमलय पर्वत, खसिया पर्वत, मूटामसिलहट, टिपेरा पहाड़ी, मर्तबान पहाड़ी, पूर्वी बंगाल प्रांत, दक्षिण आयद्वीप, मलक्का और मलायाद्वीप ।

नाट—आसाम प्रदेश प्राचीन काल से अगुरु वृक्ष की जन्मभूमि होने के लिए विख्यात है। रघु दिग्विजय वर्णन काल में कालिदास लिखते हैं—

चकम्पे तीर्णलौहित्ये तस्मिन् प्राग् ज्योतिषेश्वरः ।
तद्गजालानतां प्राप्तैः सह कालागुरु द्रुमैः ॥
[रघु०, ४ र्थ सर्ग]

इतिहास—अगर का सुगन्धि तथा औषध तुल्य उपयोग आज का नहीं वरन् अत्यन्त प्राचीन है । इसकी प्रचीनता का पता तो केवल एक इसी बात से लग सकता है कि इसका वर्णन सभी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथों–सुश्रुत, चरक आदि में आया है । इतना ही नहीं प्रत्युत लोबान और तेजपात प्रभृति के साथ अहलोट तथा अहलीम नाम से इसका ज़िकर यहूदी धर्म ग्रन्थों में भी पाया जाता है । (साम ४५ ८, कहा० ७ १७) । डाइसकूरीदूस (Dioscorides) के कथनानुसार यह भारत वर्ष एवं अरब से यूरूप में लाया गया । ईटियस (Ætius) से परचात्कालीन लेखकों ने एलोवुड (Aloo wood) नाम से इस औषध का उल्लेख किया है, और इसी नाम से यह अब तक यूरूप में प्रसिद्ध है । अगर का संस्कृत नाम अनार्य्यज या अनार्य्यक है । अस्तु विलियम डाइमाक महोदय का निश्चय है कि भारतीय से प्रथम कदाचित् पूर्वी एशिया के मूल निवासियों को इसके उपयोग का ज्ञान हुआ । प्राचीन समय में इसकी के रास्ते यह मध्य एशिया और फ़ारस में लाया गया और वहां से अरब और यूरूप में पहुँचा । राजनिघण्टुकार ने कृष्णागुरु (काला अगर), काष्टागुरु (पीली अगर), दाहकाष्ठम्, दाहाग (रु) रु (गुर्जर देश प्रसिद्ध अगर विशेष) तथा स्वादुरुगु (मङ्गल्यागुरु, मधुरसागुरु, कंधार देश प्रसिद्ध 'अगर') नाम से इसे पांच प्रकार का लिखा है । निघण्टुकार के मत से मङ्गल्यागरु ... है । विस्तृत विवरण के लिए उन उन नामों के अन्तर्गत देखिए ।

भावप्रकाशकार—इसके चार प्रकार के भेदों को स्वीकार नहीं करते । ऐसा विदित होता है कि अरब यात्रियों ने इसके व्यापार एवं उत्पत्ति स्थान के सम्बन्ध में काफ़ी समाचार संग्रह किए हैं ।

यांस्था विम—सेरापियन—ने हिन्दी, मंडली, सिम्फी और कनारी नाम से इसके चार भेद वर्णन किया है । दशवीं शताब्दि में इब्नसीना इसके सम्बन्ध में निम्न विवरण देते हैं । मंडली हिंदी या (पहाड़ी) समंदूरी,कमारी, और काकुली,किस्मूरी ये दोनों म.दुल मधुर हैं ।इनमें से सबसे ख़राब प्रकार हलाई, कमक्ताई, लख़्वी या रक्तायी है । मंडली सर्वोत्तम है, इसके बाद समंदूरी धूसर वर्ण युक्त, चरबी एवं तैलीय भारी श्वेत धारियों से रहित और धीरे धीरे जलने वाली होती है । कोई कोई पूर्ण काली अगर को उत्तम ख़याल करते और मध्यम अधिकतर काली,श्वेत धारी रहित बसामय तैलीय और धीरे धीरे जलने वाली "कमारी" होती है। संक्षेप में सर्वोत्तम अगर वह है जो 'काली, भारी जल में डूबने वाली, चूर्ण करने पर रेशा रहित हो, तथा जो जल में न डूबे वह अच्छी नहीं अरब यात्री भी अगर को लगभग उन्हीं नामों से पुकारते हैं ।

मीर मुहम्मद हुसैन—[१७७०] लिखते हैं- "ऊद जिसे हिन्दीमें अगर कहते हैं, यह एक लकड़ी है जो कि सिलहट के निकट जन्तिया की पहाड़ियों में उत्पन्न होती है। ये वृक्ष बंगाल से दक्षिणस्थ टापुओं में भी जो कि विषुवत रेखा के उत्तर में स्थित हैं, पाए जाते हैं। इसके वृक्ष बहुत ऊँचे होते हैं। और प्रकाण्ड एवं शाखाएँ वक्र होती हैं और काष्ठ मृदु होता है। इसकी लकड़ी से घड़ी, प्याले तथा अन्य बर्तन बनाते थे। यह सड़ता गलता भी है और इस दशामें विकृत भाग सुगंधयुक्त द्रव्य से व्याप्त हो जाता है। अतः उक्त परिवर्तन लाने के लिए इसे नम पृथ्वी गर्भ में गाड़ देते हैं। अगर के जिस भाग में उक्त परिवर्तन आ जाता है वह तैलयुक्त भारी एवं काला हो जाता है। पुनः इसे काटकर पृथक् कर जल में डाल देते हैं। इनमें जो जलमें डूब जाता है उसे गर्क़ी (डूबने वाला), जो आंशिक जल मग्न होता है उसे नीम गर्क़ी (आधा डूबने वाला) या समालाई वाला और जो तैरता रहता है उसे समालाह् कहते हैं। इनमें से अन्तिम सर्व सामान्य होता है। गर्क़ी काला होता है तथा अन्य काले और हल्के धूसर वर्ण के होते हैं।

औषध कार्य के लिए ऊदे गर्क़ी, जो सिलहट से प्राप्त होता है, सर्वोत्तम होता है। इसे तिक्त सुगंधमय तैलीय तथा किञ्चित् कसैला होना चाहिए, इससे भिन्न निम्न कोटि के ख्याल किए जाते हैं। चूंकि ऊद की लकड़ी को कुचल कर जल में भिगोकर अथवा इसे बादाम के साथ मिलाकर पुनः कुचल दबाकर इसका तेल निकाल लेते हैं, इसलिए योगों में प्रायः ऊदे खाम (कच्चा ऊद) ही लिखा जाता है। और क्योंकि "चूरा अगर" नाम से अगर के टुकड़े भारतीय व्यापारिक द्रव्य हैं, अस्तु इसमें चन्दन, तगर अथवा एक सुगन्धित काष्ठ के टुकड़े मिला दिए जाते हैं।

रॉक्सबर्ग तथा अन्य वनस्पति शास्त्रियों ने सिलहट में अक्विलेरिया (aquilaria) अर्थात् अगर की परीक्षा की और हाल ही में यह निश्चय किया कि यह मर्गुई आर्चिपेलेगो द्वीपों में उत्पन्न होने वाले एक वृक्ष की लकड़ी है। गैम्बल (Gamble) के कथनानुसार इसका बर्मी नाम "अक्याबु" है और यह टेनासरम तथा मर्गुई आर्चिपेलेगो में उत्पन्न होता है।

अगर (aloe wood) धूप देने के लिए अथवा सुगन्ध हेतु समस्त पूर्वीय देशों में व्यवहृत है और पूर्वकालमें यह कुष्ठ से उन्हीं व्याधियों के लिए व्यवहार में आता था जिनके लिए आज भी यह भारतवर्ष में प्रयुक्त होता है।

एक पेड़ जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है, इसकी ऊँचाई ६० से १०० फुट और घेरा ५ से ८ फुट तक होता है। जब यह बीस वर्ष का होता है तब इसकी लकड़ी अगर के लिए काटी जाती है। पर कोई कोई कहते हैं कि ४० या ६० वर्ष के पहिले इसकी लकड़ी नहीं पकती। पहिले तो इसकी लकड़ी बहुत साधारण पीले रंग की और गंध रहित होती है पर कुछ दिनों में धड़ और शाखाओं में जगह जगह एक प्रकार का रस आ जाता है जिसके कारण उन स्थानों की लकड़ियाँ भारी हो जाती हैं। इन स्थानों से लकड़ियाँ काट ली जाती हैं और अगर के नाम से बिकती हैं। यह रस जितना अधिक होता है उतनी ही लकड़ी उत्तम और भारी होती है। पर ऊपर से देखने से यह नहीं जाना जा सकता कि किस पेड़ में अच्छी लकड़ी निकलेगी। बिना सारा पेड़ काटे इसका पता नहीं लग सकता। एक अच्छे पेड़ में ३००) तक का अगर निकल सकता है। पेड़ का हलका भाग, जिसमें यह रस या गोंद कम होता है, 'धूप' कहलाता है और सस्ता अर्थात् १), २) रुपए सेर बिकता है। पर असली काली लकड़ी जो गोंद अधिक होने के कारण भारी होती है गरक़ी कहलाती है। और १६) या २०) सेर बिकती है। यह पानी में डूब जाती है। लकड़ी का बुरादा धूप, दशांग आदि में पड़ता है। बम्बई में जलाने के लिए

इसकी अगर बत्ती बहुत बनती है। सिलहट में अगर का इत्र बहुत बनता है। चोवा नामक सुगंध इसी से बनता है।

वानस्पतिक वर्णन—अगर के बेडौल टुकड़े होते हैं जो उनमें राल के परिमाणानुसार धूमर या गहरे धूमर वर्ण आदि विभिन्न रंगों के होते हैं। उनके तथा गहरे दोनों रंगों के टुकड़े लम्बाई की रुख गहरे रंग के नसों से चित्रित होते हैं, ये जल में डालने से जलमग्न हो जाते हैं। इसे चबाने से ये दाँतों में चिपट जाते हैं तथा मृदु प्रतीत होते हैं। स्वाद—तिक्त तथा सुगन्ध युक्त। जलाने से इसमें से ग्राह्य गंध आती है।

प्रयोगांश—काष्ठ।

रसायनिक संगठन—एक उड़न शील तैल, जो ईथर में विलेय होता है, दूसरा राल जो मद्यसार (अलकुहाल) में घुलनशील तथा ईथर में अल्प घुल होता है।

औषध निर्माण—क्वाथ (१० में १); मात्रा—४ से १२ ड्राम। चूर्ण तथा कल्क अनेक औषधियों से युक्त पाक आदि; मात्रा—१० से ३० रत्ती। तैल—२० से ६० बूंद।

गुणधर्म तथा उपयोग.

आयुर्वेदीयमतानुसार—अगर शीत, प्रशमन और कासघ्न है। च०।

अगर वात-कफहर, वर्णप्रसादक, (देह का रंग सुधारने वाला) खुजली नाशक और कुष्टनाशक है। अगर की लकड़ी को जल में औटाकर उस पानी को पीने से ज्वर में लगने वाली तृषा न्यून होती है और यह मृगी एवं उन्माद आदि रोगों में परमोपयोगी है। सु०।

अगर तिक्त, उष्ण, चरपरा, लेप करने से रूक्षता उत्पन्न करने वाला, त्वचा को हितकर, तीक्ष्ण-पित्तकारक और हलका है तथा व्रण, कफवात, वमन, मुख रोग एवं चक्षु और कर्ण रोग नाश करने वाला है। रा० नि० व० १२। वा० चि० ४ अ०।

जो अगर काले रंग का होता है उसे कृ[illegible] कहते हैं। यह अधिक गुण वाला और लोहे सदृश पानी में डूब जाता है। अगर से [illegible] हुए तैल में भी काले अगर के सदृश ही [illegible] हैं। भा० क० व०। अगर गन्ध-गरम, ति[illegible] कटु, स्निग्ध, मंगल दायक, रुचिकारी धूपके [illegible] पित्त जनक, तीक्ष्ण है तथा वात, कफ, [illegible] और क्लेद का नाश करता है। लेप में और [illegible] में श्रेष्ठ है। नि० र०

वक्तव्य

इस देश में अति प्राचीन काल से अनुलेपन [illegible] औषध रूप से अगर व्यवहार में आरहा है। अतः चरक सूत्रस्थान ३४ अध्याय में शिरो-वेदनाहर एवं शीतहर प्रलेप में अगरू का उल्लेख दिखाई पड़ता है।

चरकोक्त शीत ऋतुचर्या में अगर के अनुलेपन का उपदेश किया गया है। सुश्रुत में धूमपान द्रव्यों के मध्य अगर का पाठ दिया है। (सू० ६ अ०)। अगर का तैल पीत वर्ण का एवं अगर के समान गंध वाला होता है। भावप्रकाशकार लि[illegible] हैं—अगर के तैल का गुण कृष्णागुरु अर्थ[illegible] काले अगर के समान है, यथा—

"अगुरु प्रभवः स्नेहः कृष्णागुरु समोमतः। उत्तम अगर की लकड़ी को जल में घिस[illegible] शरीर में लगाने से उसका वर्ण उज्वल हो जा[illegible] है इसी लिए इसका एक नाम "वर्ण प्रसाद[illegible] है।

यूनानी मत के अनुसार—प्रकृति दूसरी क[illegible] में गरम और तीसरी कक्षा में रूक्ष है। किस[illegible] किसी के मतानुसार दूसरी कक्षा में गरम व [illegible] है। हानिकर्त्ता—उष्ण प्रकृति को इसका पीना और धूनी देना। दर्पघ्न—गुलाब, कपूर, सिकं[illegible] बीन। प्रतिनिधि—दालचीनी, लौंग, केशर, चंद[illegible] बालछड़, रूमी मस्तंगी। गुण धर्म-प्रयोग—(१) हलकी अपनी सुगन्धि एवं प्रकृतोष्मासे प्राण वायु को बलप्रद होने के कारण आमाशय यकृत, हृदय तथा इंद्रियों को बल देता है और इसी

कारण मस्तिष्क के लिए अत्यन्त लाभदायक हैं, (२) अपनी सुगन्धि एवम् ऊष्मा से रोधोद्घाटक है, (३) इसका चबाना मुख को सुगंधि प्रदान करता है। और वायु लयकारक हैं। त० नफ़ी० (४) हृदय को प्रसन्न करता है। (६) वात तन्तुओं को बलप्रद (७) पक्वाशय और आंत्र को बलप्रद, (८) मर्माशय की शीतता, को लाभ कर्त्ता, (९) ओजप्रद और हृदय की व्याकुलता का नाशक है।

अगर के सम्बन्ध में नऽथमन—सुगंध हेतु चूर्ण रूप में तथा उत्तेजक पित्त निस्सारक एवम् रोधोद्घाटक प्रभाव के लिए इसका आभ्यन्तरिक उपयोग होता है।

अनेक नाड़ी बलदायक वायुनिःसारक तथा उत्तेजक औषधियों का यह एक अवयव है। निक्रिस (Gout) तथा सन्धिवात में एवं वमन निग्रह हेतु भी इसका उपयोग होता है। प्रश्न चिकित्सा सम्बन्धी व्रण एवं क्षतों की वेदना शमनार्थ इसको अंगमर्द प्रशमन धूनी रूप में उपयोग में लाते हैं। बालकों की खांसी में अगर तथा ईश्वरी (Indian birth wort) के कल्क को ब्रान्डी के साथ वक्षस्थल पर लगाते हैं। शिरःशूल में इसे शिर में लगाते हैं। धूप बत्तियों के बनाने में भी यह प्रयुक्त होता है। इसे अगर की बत्ती कहते हैं।

जवारश ऊद में भी यह पड़ता है (अम्नु, देखो-जवारिस) इसकी मात्रा १० से ३० रत्ती तक है। शुक्र-शुक्र सम्बन्धी निर्बलता, शिर में चक्कर आना तथा श्वेतप्रदर में यह नाड़ी को बल दायक औषध है। ई० मे० मे०।

अगर agar-फ़ा० सुरीन, चूतड़-उ०। नितम्ब हिं०। (Hip)

अगर-अगर agar-agar-अङ्ग्रे० (१) चीनी घास-भा० बा०, बम्ब०। दरिया की घास, पाचो-ओम-द०। समुद्रपु-पाचो, समुद्रपु-पाचि -ते०। अगर-अगर-सिं०। सीलोन मॉस (Ceylon moss), एडिबल मॉस (Edible moss), सी वीड्स (Sea-weeds)-इं०। ग्रेसिलेरिया लाइकेनॉइडीज़ (Gracilaria lichenoides, Grev.) कडल् पाचि-ता०। किंयाव् थोपड्-बर०। ग्रेसिलेरिस कॉनफर्वाइडीज़ (Gracilaris confervoides, Grev.)-लें०।

शैवाल जाति.

(Algæ or sea weed.)

उत्पत्ति स्थान—लंका का स्थिर समुद्री भाग तथा हिंद महासागर।

वानस्पतिक वर्णन—अगर-अगर श्वेताभायुक्त या पीताभायुक्त श्वेत शाखी तन्तुमय जलीय पौधा है जो कई इञ्च लम्बा (बारवेनकृत वेंगनी) होता है। आधार पर वृहत्तन्तु कुक्कुट पक्ष से अधिक मोटे नहीं होते; लघु तन्तु सीने के सूत्र के लग भग मोटे होते हैं। नंगी आंखों से वे तन्तु करीब करीब बेलनाकार प्रतीत होते हैं। परन्तु सूक्ष्म दर्शकयंत्र से देखने पर वे लहरदार या झुर्री युक्त दीख पड़ते हैं। शाखाक्रम कभी कभी युग्म (Dichotomous.) होता है। और कभी अयुग्म। शुष्कावस्था में सूक्ष्म वृत्ताकार कोष (Coccidia) अप्रत्यक्ष रहते हैं किन्तु आर्द्र होने पर स्पष्ट रूप से तत्क्षण दीख पड़ते हैं। वे करीब २ व्यास बीजाकार या अर्द्धवृत्ताकार होते हैं और उनमें सूक्ष्म आयताकार (स्तम्भाकार) गंभीर रक्तवर्णीय दानों (Spore) का एक समूह होता है। अगर-अगर (Ceylon moss) कार्टिलेजीय पदार्थ है। स्वाद-निर्बल लवणयुक्त शैवालीय होता है।

रसायनिक संगठन—वेजिटेबल जेली (वानस्पतीय सरेश) ४० से ८० प्रतिशत, अल्ब्युमेन मैलिन (Iodine), निशास्ता (True starch), लिग्निअस पदार्थ (Ligneous matter), लुआब, लवण यथा सैंधगन्धेत (Sodium sulphate) तथा सैंध हरिद (Sodium chloride), चूनस्फुरेत (Calcium phosphate), चूनगन्धेत (Calcium sulphate), मोम, लौह तथा शैलिका।

इतिहास तथा उपयोग—अगर-अगर

Ceylon moss) दक्षिण भारत तथा लंका में प्राचीन काल से पोषण मृदुता जनक, स्निग्धता कारक तथा परिवर्त्तक रूप से और मुख्यतः वक्ष रोगों में उपयोग में लाया जाता है। पुलजन और कालपेण्टिर के मध्यस्थित महाकील या प्रशान्त जल में यह अधिकता के साथ उत्पन्न होता है। प्रधानतः दक्षिणी पश्चिमी मानसून काल में जलस्थ क्षोभ के कारण जब यह पृथक् होजाता है तो देहाती लोग इसे एकत्रित कर लेते हैं। तदनन्तर उसको (सिवार को) चटाइयों पर बिछा कर दो तीन दिवस पर्यन्त धूप में शुष्क करते हैं। पुनः ताजे जल से कई बार धोकर धूप में सुखा रखते हैं जिससे वह श्वेत हो जाता है।

बैंगाल फार्माकोपिया (पृष्ठ २७६) में उसके उपयोग का निम्न क्रम वर्णित है :—

क्वाथ—शुष्क अगर-अगर चूर्ण २ ड्राम, जल १ क्वार्ट०-इनको २० मिनट तक उबालकर मलमल से छान लें। इसमें चाहें आउंस के अनुपात से विचूर्णित शैवाल की मात्रा अधिक करने से (या १०० भाग जल तथा शुष्क शैवाल चूर्ण १ भाग ई० मे० मे०)—शीतल होने पर छना हुआ घोल दृढ़ सरेश में परिणत हो जाता है और जब इसको दालचीनी या निम्बूफल त्वक् या (तेज-पत्र) शर्करा तथा किञ्चित् मद्य द्वारा स्वादिष्ट बना दिया जाता है तो यह रोगी, बालकों तथा रोगान्तर होने वाली निर्बलता के लिए उत्तम एवं हलका (पोषक) पथ्य होजाता है। (डाइमॉक)

अगर-अगर का शुष्क पौधा औषध रूप से व्यवहार में आता है। इसमें पेक्टिन् तथा वानस्पतीय सरेश अधिक परिमाण में वर्तमान होते हैं। इसका क्वाथ (४० में १) मृदुताजनक एवम् स्नेहकारक रूप से वक्ष रोगों, प्रवाहिका तथा अतिसार में लाभदायक होता है। इसके द्वारा निर्मित सरेश (Jelly), श्वेतप्रदर, असृग्दर तथा मूत्रपथस्थ क्षोभ में व्यवहृत होता है। इसमें नैलिका (Iodine) होती है अस्तु यह घेघा (Goitre) तथा कंठमाला आदि में लाभ-

प्रद होता है। यह सिरेशन माही (Isingl[illegible] का उत्तम प्रतिनिधि है। ई० मे० मे०।

हिन्दू जनता इसे अगर-अगर (J[illegible] ese isinglass) की सरेश अधिक करती है क्योंकि उनको इसके प्राणि[illegible] निर्मित होने का सन्देह है, जो सर्वथा भ्र[illegible] एवं अज्ञानता पूर्ण है। (डाइमॉक)

(२) अगर-अगर agar-agar-जाप[illegible] याइसिन् ग्लास (Japanese Isingla[illegible] जेलोसीन (Gelosin.)-ई० जेलो[illegible] कॉर्नियम् (Gelidium Corne[illegible] Lam.) जी० कार्टिलेजीनियम् (G- Ca[illegible] lagineum, Gaill.)-ले०। मास[illegible] चाइनी (Mousse de chine)-फ्रां[illegible] थेओ (Thao)-जापा०। यह-इसे चा[illegible] चीनी घास-भा० बा०।

शैवाल जाति।

(N. O. Algæ)

(नॉट ऑफिशल Not official.)

उत्पत्ति स्थान—हिन्द महासागर।

विवरण—अगर-अगर जापान दोनों प्र[illegible] के सिवारों से निर्मित झिल्लीमय फीता की शकल[illegible] शुष्क सरेश है। सम्भवतः यह स्फीरोकॉकस कॉ[illegible] (Sphaerococcus com[illegible] Ag.) तथा ग्लॉइओपेल्टिस टिनेक्स ([illegible] opeltis tenax, Ag.) से भी [illegible] किया जाता है।

हैन्बरी—इसके विषय में निम्न वर्णन करते हैं :—जापानीज़ आइसिन् ग्लास के [illegible] नाम से अभी हाल में ही जापान से इ[illegible] में एक वस्तु भेजी गई है जो दबी हुई, [illegible] चतुर्भुजीय छड़ होती और प्रत्यक्ष [illegible] लहरदार, पीताभयुक्त श्वेत एवं अर्ध[illegible] झिल्लियों की बनी होती है। ये छड़ ११ इंच [illegible] तथा १ से डेढ़ इंच चौड़े, आशयों से अत्यन्त हलके (प्रत्येक लगभग ३ [illegible] अधिक लचीले परंतु सरलता पूर्वक टूट जाने[illegible]

तथा स्वाद एवं गंध रहित होते हैं। शीतल जल में स्पर्श होने पर इनका द्रव्यमान बढ़ जाता है तथा वे चतुष्कोणीं स्पष्टतर होजाते हैं और उनकी मुटाई नतोदर तथा चौड़ाई में १॥ इंच होती है। यद्यपि जल में यह किसी परिमाण में अविलेय होता है तथापि कुछ काल पर्यन्त उबालने पर इसका अधिक भाग लय हो जाता है और घोल, जब कि अभी यह जल मिश्रित (या पतला) है, शीतल होने पर सरेश में परिणत हो जाता है। चीन देशीय यूरूप निवासी इसे वास्तविक सिरेशम माही (Isin-glass) की प्रतिनिधि स्वरूप व्यवहार में लाते हैं जो कि बहुधा उससे भी गुण-दायक है। यह बहुत जल में मिलकर भी उसे सरेश में परिवर्तित कर देता है। उसका यह गुण एम० पेयन (M. payon) द्वारा अभि-हित जेलोज़ (Gelose) नामक पदार्थ के कारण है जो जापानीय शैवाल में विशेष रूप से पाया जाता है। यह सिरेशम माही की अपेक्षा अधिक उत्ताप पर पिघलता है। यह अपने से १०० गुने जल में भी घुल कर शीतल होने पर सरेश में परिणत हो जाता है।

(४) एक ही वजन में इससे सिरेशम माही से १० गुना अधिक सरेश तैयार होता है। आहार हेतु बेचो सरेश (अगर-अगर) प्राणिज सरेश से अधिक प्रिय नहीं होता, क्योंकि यह (बेचो) मुख में अघुल होता है और उसमें नत्रजन की भी अभाव होता है। उसमें सर्वोपरि गुण यह है कि यह अति न्यून परिवर्तनशील होता है, अस्तु, उपयोग हेतु प्रस्तुत, स्वादिष्ट एवं मधुरीकृत 'सी वीड जेली' (समुद्र शैवाल सरेश) नाम से कभी कभी सिंगापुर से आया हुआ सरेश बिना विकृत हुए उसी रूप में वर्षों रक्खा रह सकता है।

अधुना विशेषतया उष्ण जल वायु में जीवाणु शास्त्रान्वेषणार्थ व जीवाणु उत्पादन वर्द्धन हेतु यह अधिक उपयोग में लाया जाता है। (डाइमॉक)

रसायनिक संगठन—उक्त सिवार से प्राप्त सरेश में जेलोज़ (gelose) जो सरेशी सत्व है प्राप्त होता है। इसमें कोई नत्रजन घटक नहीं होता तथा शर्करा पदार्थ (mannite), सिताल्बा तथा अल्ब्युमेन वर्तमान होते हैं।

प्रभाव तथा उपयोग—उन छिद्र आदिकों को, जिनसे कभी आन्त्र पूरण में उतर आती है, संकुचित (छोटा) करने के विचार से अगर-अगर के कीट रहित घोल का तत्स्थानीय तन्तुओं में अन्तः क्षेप करते हैं। मृदुभेदक रूप से इसका प्रायः सफलता पूर्ण उपयोग किया गया है। अगर-अगर द्वारा निर्मित रिग्यूलीन (Regu-lin) नामक एक शुष्क एवं स्वाद रहित औषध जिसमें २० प्रतिशत कैस्करा सत्व (Extract of cascara) होता है प्रचार पा चुकी है। १ से ३ ड्राम की मात्रा में पुरातन मलावरोध में यह मृदु भेदक प्रभाव करता तथा मल परिमाण की वृद्धि करता है। कुचले हुए आलू व उबाले हुए फलों के साथ मिलाकर इसका उपयोग करना चाहिए। अगर-अगर के शुष्क बारीक पत्र चाय की चम्मच भर की मात्रा में कैस्करा के बिना मरोड़ एवं रेचन के उत्तम परिणाम उत्पन्न करते हैं। अगर के प्रभाव को आन्त्रीय पृष्ठों तक ही निश्चित रखने की दृष्टि से इसके साथ बहुत सी अन्य औषधियाँ जैसे फिनोल-थैलीन (Phenol-phathalein) रूबर्ब (रेवन्द), टैनोन (कषायीन), कैटेच्यू (कत्था) तथा कैलशिया इत्यादि सम्मिलित करली गई हैं। ह्विट० मे० मे०।

यह पोषक तथा स्नेहकारक है और सीलोन 'मॉस (चीनी घास नं० १.) के समान व्यवहार में आता है। यह उत्तम आहार है। इं० मे० मे०।

अगरई agarai—हिं० पि० [सं० अगरु] श्यामता लिए हुए सुनहला संदली रंगका अगर।

अगरता agharata—बर ब० छोटी मांई का वृक्ष (झाऊवृक्ष) Tamarix gallica, *Linn.*

अगर तेलियह् agar-teliyah-हिं० ऊद ग़र्क़ी अर्थात् पानी में डूब जाने वाली 'अगर' या जो अगर तैलीय एवं श्यामवर्ण की तथा उपरोक्त गुण वाली अर्थात् डूब जाने वाली हो-(Aquilaria Malaccensis, *Laml.*

अगरघत्ता agaıdhattá-सं० स्त्रीं०, अगरधाक agardhák " } गूमा, द्रोणपुष्पी (Leucas Cephalotes, *Spreng.* फा० इं० ३ भा० ।

अगरबत्ती agarbatti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अगरुवर्त्तिका] सुगन्ध के निमित्त जलाने की पतली सींक या बत्ती जिसमें अगर तथा कुछ और सुगन्धित वस्तु पीसकर लपेटते हैं। इसका व्यवहार मद्रास तथा बम्बई में बहुत होता है।

अग़रलयूस aghar-layúsa-यू० इन्द्रायन का फल-हिं० (Citrulluscolocynthis, Schrad. Fruit of-Colocynth.)।

अग़रस agharas-यू० वृक्ष विशेष, इसके गोंद को कहरुवा कहते हैं। (Succinum Amber [tree of-] ।

अगरसत agar-sata-हिं० पुं० अगर -aquilaria agallocha, *Roxb.*)

अगरसार agárasára-हिं० सं० पु० देखो-अगर।

अगर सोमिनह agara sominah-अर० यह ग़ाफ़िस के नाम से प्रसिद्ध है। एक घास है।

अग़रस्तस agharastasa-यू० बेद गयाह। एक गाँठदार वृक्ष अथवा घास।

अगरा,-री agará,-rí-सं० स्त्री० A kind of grass Dootar। एक प्रकार की घास। देवदाली। देवताड़ा-बं०। अ० टी० भ०। (२) पीत-देवदाली। आ०, रा० नि० व० ३।

अग़रिया aghariyá-यू० मिट्टी का नाम है। (A knid of clay)

अग़रियूस aghariyúsa-यू० (१) गज्जरम्, गाजर Daucus carota, *Linn.* (car-rot) (२)देवदाली, बिन्दाल (L. Echinata, *Roxb.*)

अगरी agarí-सं० स्त्री० देवताड़ वृक्ष, (Deotar) वै० श० । 'अपामार्ग'-द० । (Achyranthes Asper *Linn.*) इं० मे० मे० ।

अगरु agaru-सं० क्लीं० } -अगर
अगरू agarú हिं० संज्ञा०पुं० } लकड़ी।

काली अगर, अगरु चन्दन, कृष्णागुरु-हिं० अगराड़-चन्दन-बं० । Aloe wood (A allochum, the black variety) चा० उ० २७ अ० । देखो-अगर ।

अगरु गंध काष्ठ agaru-gandha.káṣ ṭha-सं० क्लीं० रक्तचन्दन। Ptero carpus santalinus, *Linn.* (wood of-Red sandal wood)स० फा० ।

अग़रू ग़ौलीत् स agharú-ghoulítúsa-यू० बोल-हिं० फा०, बं०, द० । गंध रसः बोल -सं० । मुर-अ० Mirrh, (Balsamo endron Mirrh.)

अग़रूस agharúsa-यू० ख़रहा, ख़रगोश । है (Hare), रैबिट (Rabbit)-इं०

अगरूसारः agarú-sárah-सं० पुं० कालीअगर, कृष्णागुरु । काला अगुरु-बं० Aloe wood (the black variety देखो-अगर

अगरेतुर्की agare-turkí-फ़ा० वच०-हिं० वज, वज-अ० । acorus calamus, *Linn.* (Root of-sweetflag)

नोट—बहुधा समस्त वर्नाक्यूलर अंगरेज़ी कोषों में वच (Sweet flag) को पुष्करमूल (Orris root) के साथ मिलाकर भ्रम कारक बना दिया गया है। अतिरिक्त इसके ग्रा वज या वज रिचार्ड्सन (Richardson) शेक्सपीअर (Shakespear) और फोर्ब्स (Forbes) प्रभृति कोषों में प्रमादवश लिंज (Gallangal) के लिए प्रयुक्त

किया गया है। अनीस प्रकरणान्तर्गत फ़ारसी नाम "यज्ञे तुर्की" के सम्बन्ध के नोट को देखिए। स० फा० इं०।

नोट—हाजिजुल् अत्तार (१३६८) इसे उद्दुल ज़ुज कहते हैं और इसका फ़ारसी नाम वलज़ुज बताते हैं।

अगल agala-ता०। चिकरस्सी-चं०। वीगापोमा-आसा०। मे० मो०।

अग़ल्सोलीस aghal-solisa-यू० एक वृक्ष है जिससे उशक़ नामक गोंद निकलता है।

अगलहिया agalahiyá-हिं० संज्ञा स्त्री० [देश०] एक चिड़िया, (चक्षु का)

अगला agalá-हिं० वि० [सं० अग्र] [स्त्री० अगली] (१) आगे का। अग्र भागका। सामने का। अगाड़ी का। पिछला शब्द का उलटा। (२) पूर्ववर्ती। पहिले का। प्रथम। (३) आगामी। आने वाला। भविष्य। (४) अपर। दूसरा। एक के बाद का।

अगलाकोष्ठ agalá-koshtha-हिं० पुं० (Anterior chamber.) अग्रकोष्ठ।

अगलागल agalágala-हिं० कचैटा, किंगलो।

अग़लानअशी aghalán-ashí-तु० जुन्दबे-दस्तर, गंधमार्जार (Castoreum.)

अगलाय agaláya-ता० चिकरस्सी-चं०। वीगा पोमा-आसा० मे० मो०।

अग़लीक़न aghaliqana-यू० मैफ़स्तज (दोशाव के नाम से प्रसिद्ध है)

अग़लीक़शा aghaliqasha-यू० दोमर (एक पटी है जिसके पत्ते गेहूं के पत्तों के सदृश होते हैं और उसके फल पर दो तीन पर्दे होते हैं और उस पर बाल के समान रोंआ होता है।)

[illegible] aghaliqi-यू० (१) मूलों का तेल (२) मैफ़स्तज।

अग़लीतूस aghalitúsa-यू० फ़ाशरा, शिव-लिंगी-हिं० (Bryonia Alba)

अगवन्त agavanta-सं० अरनी [Premna Integrifolia, *Linn.*)

अग़वर aghávara-तु० खीस, प्यूसी, पीयूष, (The milk of a cow during the first seven days after calving.)

अगवोसी agavose-इं० यह एक प्रकार की निष्क्रिय शर्करा है जो राकसपत्ता (Agave americana, *Linn.*) नामक वृक्ष के डंठल के रस से पृथक की जाती है। इं० मे० मे०।

अगशि agashi-कना० अगस्त वृक्ष, अगस्तिया (Agati grandiflora, *Desv.*) फा० इं० १ भा०।

अगसतामरेरय agasa-tamme-raya-ता० जलकुम्भी-हिं०। कुम्भिका-सं०। Pistia Stratiotes, *Linn.* इं० मे० मे०। फा० इं० १ भा०।

अग़साक़ aghasáqa-अ० (Black crow.) कुलाग़ स्याह (स्वेत का कौआ)।

अगसांगिदा agasi.gidá-कना० चकवँड़-हिं० चक्रमर्द, दद्रुघ्न-सं०। दादमर्दन-बं०। Ringworm shrub (Cassia alata.) *Linn.* इं० मे० मे०।

अगसेयमरनु agasoya-maranu—का० अगस्त, अगस्तिया (agati grandiflora, *Desv.*)

अगस्त agasta-हिं० पुं०, } —अगस्तिया
अगस्तिः agastih-सं० पुं०, } -Sesbania Grandiflora, *Pers.*)

अगस्तिकुसुमः agasti-kusumah-सं० पुं०,
अगस्तिद्रुः,-मः agasti-drub,-drumah

अगस्तिया

Agati grandi flora, *Desv.*

अगस्तिपत्र नस्य agastipatra-nasya-सं० पुं०, अगस्ति (अगस्तिया) के पत्तों के रस की नस्य लेने से चौथिया ज्वर का नाश होता है। (वृ० नि० र०)

अगस्तिया agastiyá-हिं० पुं०

अगथिया, अगस्त, वस्न, वासना, हथिया हतिया, हदया-हिं०। पर्याय-अथा-गस्त्योवंगसेनोमुनिपुष्पोमुनिद्रुमः। अगस्त्यः, वङ्गसेनः, मुनिपुष्पः, मुनिद्रुमः, शिववल्ली, पाशु-पतः, एकाष्ठीलः, वृकः, वसु, वसुकः, वसुहट्टः, वसूकः, वकपुष्पः, शिवप्रियः, शिवमल्ली, काक-

नामा, काकशीर्ष, स्थूलपुष्पः, मुनिद्रुमः, रक्तपुष्पः, मुनितरुः, अगस्तिः, वङ्गसेनः, शीघ्रपुष्पः, व्रणारिः, व्रणापहः, दीर्घफलकः, वक्रपुष्पः, सुरप्रियः, शिवापीडः, मुनिः, शिवाङ्गः, शिवेष्टः, शिवाह्लादः, शाम्भवः, क्रमपूरकः, रविनिभः, शुभ्रपुष्पः, कनली, स्वरध्वंसी, और पवित्र-सं० । बकपुष्प बक (ओ) बकफुलेर-गाछ बाम्फोना फुलेर गाछ -बं० । अगस्त्य- अ०, फा०, उ० । सिस्बेनियां ग्रांडिफ्लोरा Sesbania Grandiflora, *Pers.*) अगेटि ग्रांडिफ्लोरा agati Grandiflora, *Desv.*) इस्कीनॉमेनी ग्रां० (Æschynomene, *Gr.*, *Linn.*)-लै० । लार्ज फ्लावर्ड एगेटी (Large flowered agati)-इं० । अकसि, अगसी, अगाति, अगति-ता० । आनिसे, अविसि, अवविसे-चेट्टु-ते० । अकत्ति-मल० । अगशी (गो)-कना० हदगा, अगस्ता-मह० । अगथियो-गु० । अगसियमनु-का० । । अगमेल-पाय० । कफल-सुहृद० व० । कतुर-मुरुङ्गा-सिंहली ।-लीग्यूमिनोसी (शिम्बी या बब्बुर वर्ग) (N. O. Leguminosæ.)

उत्पत्ति स्थान—दक्षिणी तथा पश्चिमी भारतवर्ष । गंगा की घाटी और बंगदेश ।

वानस्पतिक वर्णन- अगस्तिका वृक्ष समस्त भारतवर्ष में विशेषकर पुष्पोद्यानों में अधिक होता है । इसकी अवस्था बहुत थोड़ी होती है । यह थोड़े वर्षों में ही लगभग २० फीट की ऊँचाई तक पहुँचकर पुनः मृतप्राय हो जाता है।

काण्ड-सरल, ६-१.६ हाथ दीर्घ; शाखा-घन सन्निविष्ट नहीं-फाँक फाँक होती है।

पत्ते-बबूल के समान किंतु इससे बड़े; दीर्घ वृन्त के जोड़ेजोड़े दोनों ओर २१ । २१ अथवा इससे न्यूनाधिक संख्या में लगे होते हैं । ये १-१॥ इं० लम्बे और अंडाकार स्वाद में कुछ अम्ल और कसैले होते हैं।

पुष्प-बड़ा, शुभ्र वा रक्तवर्ण का पूर्व कोरकितावस्था में चन्द्रकला के समान वक्र होता है । श्रीहर्ष कवि ने यथार्थ कहा है—

"मुनिद्रुमः कोरकितः सितद्युति र्वनेऽमु मन्यत सिंहिका सुतः । तमिस्र पक्ष त्रुटि भक्षितः कलाकलापं किल वैधवं वमन्

—नैष०"

बाह्यकोष—(Calyx) घंटाकार, द्विओष्ठीय और हरितवर्ण का होता है । ३ . स्वरूप, श्वेत या रक्तवर्णीय (आयुर्वेद में और श्याम भी अधिक लिखे हैं) १॥-२ इंच वक्र तथा गुच्छाकार होता है ।

पुष्पाभ्यन्तरकोष—(Corolla) विषमाकृति की चार पंखड़ियाँ (दल) होती हैं जिनमें से ऊपर ध्वजा (Standard) दोनों बगलमें १-१ पक्ष (wing) तथा नारकी (keel) होती है । नारकी(keel के भीतर परागकेसर (१०) तथा रति केसर (१) ढके होते हैं । प्रत्येक गुच्छे में २ या ४ पुष्प कक्षस्थ डंठल में लगे होते हैं। इसका स्वाद-सुआदी तथा तिक्त होता है।

फली—तलवारनुमा, १-१॥ फीट के लगभग लम्बी कुछ चिपटी तथा बीजों के मध्यमें दबी होती है । प्रत्येक फलीमें लगभग ४०-४१ बीज होते हैं वृक्ष त्वचा-लम्बाई के रुख चिरचिराई की बाहर से देखने में धूसर वर्ण की प्रतीत होती है । शुष्क काण्ड मोटाई में ताजे काण्ड के बराबर होता है । ताज़ी दशा में दरारों के मध्य अत्यन्त सूक्ष्म अरुण सा ताम्रवर्ण के निर्यास दीख हैं, किंतु वायु में खुले रहने में ये पुनः श्यामवर्ण के हो जाते हैं। नवीन त्वचा का भीतरी रक्तवर्ण का और इसी प्रकार के नसों से लदा रहता है।

इतिहास तथा नाम विवरण—मुनि के नाम पर इस वृक्ष के नाम अगस्ति व अगस्त्य प्रभृति रक्खे गए हैं । कहते हैं अगस्त्य मुनि का उदय होता है तब ही अगस्तिया के फूल खिलते हैं । इसका उपयोग आज का नहीं वरन् अति प्राचीन है।

प्रयोगांश—त्वचा, पत्र, पुष्प, मूल, और निर्यास ।

रासायनिक संगठन—त्वचा में कषायीन (Tannin) और निर्यास होता है।

औषधि निर्माण—त्वक् क्वाथ (२० भाग में १ भाग), मात्रा–१॥ तोला से २॥ तोला। मूल (स्वरस) २॥ मा० से ५॥ मा०। इसकी जड़ की लुगदी और पत्र का पुलटिस स्थानीय रूप से उपयोग में लाया जाता है। शर्बत की मात्रा २ मा०। हानिकर्ता–उदर में वायु उत्पन्न करता है। दर्पनाशक–सोंठ और मिर्च।

गुण धर्म (प्रभाव) तथा प्रयोग—आयुर्वेदिक मतानुसार—अगस्तिया पित्त कफ नाशक, गर्मी को शांत करनेवाला, शीतल, योनि शूल, तृष्णा, कोढ़ तथा शोथ नाशक है। वक अर्थात् अगस्त अत्यन्त शीतल, तिक्त, मधुर और मदगंध युक्त (कहीं कहीं "मधु गंधकः" पाठ आया है जिससे अभिप्राय 'मधु गंध युक्त' है) तथा पित्तदाह, कफ, श्वास एवं श्रम नाशक और दीपन है। रा० नि० व० १०।

सफेद, पीले, नीले और लोहित पुष्प भेद से अगस्तिया चार प्रकार का होता है। यह मधुर, शीतल, क्षीदोष, श्रम, कास और भूतबाधा का नाश करने वाला है। रा० नि०।

अगथिया–शीतल, रूक्ष, वातकारक, कड़वा है, और पित्त कफ चातुर्थिक ज्वर (चौथिया) तथा प्रतिश्याय को नष्ट करता है।

अगस्त पुष्प के गुण—अगस्तिया पुष्प-शीतल (मधुर) है, तथा त्रिदोष, श्रम, बलास, कास, विवर्णता, भूतबाधा और श्रम को नष्ट करता है। रा० नि० व० १०।

अगस्तिया के फूल–शीतल, चातुर्थिक ज्वर निवारक, रतौंधे को दूर करने वाले, कड़वे कसैले पचने में चरपरे, रूक्ष, और वातकारक हैं तथा पीनसरोग कफ एवं पित्त को दूर करते हैं।

भा० पू० १ भा० शा० व०। वृ० नि० र०।

अगस्ति के पत्ते के गुण—अगस्तिया के पत्ते चरपरे, कड़वे, भारी, मधुर, किञ्चित गरम और स्वच्छ हैं तथा कृमि, कफ, कण्डू (खुजली), विष और रक्त पित्त को हरते हैं। वै० निघ०।

अगस्तिया की फली के गुण—अगस्तिया की फली सारक (कहीं कहीं दस्तावर) बुद्धिदायक रुचिकारक, हलकी, पचने में मधुर, कड़वी, स्मरण शक्ति वर्धक है तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पांडुरोग, विष, शोष, (कहीं कहीं शोफ पाठ है) और गुल्म को दूर करती है। इसकी पकाई हुई भाजी रूक्ष एवं पित्त कारक है।

अगस्तिया के वैद्यकीय व्यवहार

सुश्रुत—अगस्तिया अधिक शीतल एवं उष्ण नहीं है और नक्तांध रोगी के लिए हित कारक है। सू० ४६ पु० व०।

वाग्भट—नक्तांध्यमें अगस्तिया के पत्र: अगस्तिया के पत्र को सिल पर पीस कर इसको गो घृत में पकाकर घृत सिद्ध करें इस घी को नक्तांध रोगी को पिलाएँ। (उ० १३ अ०)

पाक करने की विधि—गौ घृत १ सेर, अगस्तिया के पत्ते सिल पर पिसे हुए ऽ। एक पाव, इसे मंद अग्नि पर यहां तक पकाएँ कि रस शेष न रहे। पुनः कपड़े से छानकर रक्खें।

वक्तव्य

चरक के पुस्तकों में इसका उल्लेख नहीं है। धन्वन्तरीय निघंटुकार ने अगस्तिया का गुण वर्णन नहीं किया। राजवल्लभ में अगस्तिया के फूल का गुण वर्णित है। पत्र तथा शिम्बी फली का गुण नहीं लिखा है।

भाव प्रकाशकार–लिखते हैं कि अगस्तिया का पत्र प्रतिश्याय अर्थात् तरुण प्रतिश्याय (सर्दी) निवारक है।

बृहन्निघण्टुकार के मत से अगस्तिया की की शिम्बी (फली) 'सरा' अर्थात् रेचक है।

चक्रदत्त चातुर्थिक ज्वर में अगस्तिया के पत्र—जब दो दिन के अन्तर से ज्वर आए तब अगस्तिया के पत्र का नस्य दें। (ज्वर चि०) ज्वर आने के दिन ज्वर से पूर्व नस्य लें। यह प्लीहा यकृद्विवर्जित चातुर्थिक ज्वरमें प्रयोज्य है।

भाव प्रकाश—वात रक्त में अगस्तिया का फूल—अगस्तिया के फूल का चूर्ण कर इसको भैंस के दूध में मिलाकर उसकी दधि जमाएँ।

उस दधि से निकाले हुए नवनीत से वातरक्तजन्य शरीरस्थ स्फोट (काँटे) अच्छे होते हैं। (म० खं० २ य० भा०)।

हारीत—(१) अपस्मार पर अगस्तिया के पत्र—अगस्तिया पत्र बहुत मरिच थोड़ी इनको गोमूत्र में भली प्रकार बारीक पीसकर अपस्मार रोगी को नस्य कराएँ। (चि० १६ अ०)

(२) बालापस्मार—में अगस्तिया के पत्ते के रस के साथ मरिच योजित कर नस्य देने से लाभ होता है। उक्त रस में रुई का फाया भिगोकर उसे बालक के नासारंध्र के पास स्थापित करना अच्छा है। (चि० ४३)

अगस्त के सम्बन्धमें यूनानी व डाक्टरी मत-यूनानी ग्रन्थकार अगस्तिया को दूसरी कक्षा में शीतल और रूक्ष मानते हैं। फारसी द्रव्य गुणशास्त्र के प्रसिद्ध लेखक मीर मुहम्मद हुसैन लिखते हैं कि सरेकमाँ अथवा मस्तक दुखता हो तो इसके पत्तों का रस निकाल नाकमें २ बूंद टपकाएँ तो छींक आकर नासिका द्वारा जलस्राव होकर मस्तक का भारीपन दूर हो जाएगा।

बम्बई के निवासी इसके पत्ते और पुष्प के निचोड़े हुए रस को प्रतिश्याय एवं मस्तक शूल में नस्य रूप से उपयोग करते हैं। इससे नासिका द्वारा अत्यन्त जलस्राव होता है तथा शिर की वेदना एवं भारीपन सर्वथा दूर होता है। (फ़ा० डाइमॉक)।

फूल का साग करके खाते हैं। छाल पाचन शक्ति बढ़ाने में दी जाती है। पत्तों को गरम जल में भिगोकर उस जल को पीने से जुल्लाब लगता है। आँख में जाला पड़ गया हो तो अगस्तिया के फूल का रस आँख में डालने से फायदा होता है। म० अ०।

यह उष्ण तथा पित्त हारक है। इसका पुष्प पित्तनाशक घ्राणशक्तिको बलप्रद और नक्तांध्य अर्थात् रतौंधे को दूर करता है।

अगस्तिया का मूल कफ निःसारक, त्वक् कषाय, तिक्त, बलकारक, पत्र तथा पुष्प के रस की नस्य देने से पीनस, प्रतिश्याय और शिरोवेदना कम होती है। मूल रस मधु के साथ तरुण [illegible] रोगमें प्रयोजनीय है। अगस्तिया तथा [illegible] की जड़ समान भाग लेकर पीस कर [illegible] युक्त शोथ स्थल पर प्रलेप करे। (मे० मे० आर० एन० खोरी खण्ड २ या संड २२१-[illegible] पृ०)।

लाल फूल वाले अगस्तिए की जड़ को [illegible] साथ पीसकर बनाई हुई लुगदी का संधिवात [illegible] उपयोग होता है। १ से २ तो० तक इसकी [illegible] रस प्रतिश्याय में मधुके साथ उपयोग में [illegible] श्लेष्मा निस्सारक प्रभाव करता है। एक [illegible] अगस्तिए की जड़ तथा इमली की थड़ें की [illegible] इन दोनों से तैयार की हुई लुगदी को वेदना[illegible] शोथ में बरतते हैं। इसके पत्ते को मधुमेह [illegible] लाते हैं। फ़ा० डाइमॉक।

चेचक की प्रथमावस्था तथा अन्य स्फोट[illegible] ज्वरों में इसकी त्वचा के शीत कषाय का [illegible] दायक उपयोग होता है। डॉ० एन० मुक[illegible] डॉक्टर बोनेविया (Dr. Bonavia) कथनानुसार इसकी छाल अत्यन्त संकोचक [illegible] और वे इसको बलकारक रूप से उपयोग [illegible] लाने की सिफारिश करते हैं।

डॉक्टर रम्फिअस (Dr. Rumphius) के वर्णनानुसार इसके पत्ते की पुलटिस [illegible] लगाने अथवा कुचल जाने के लिए एक [illegible] औषधि है।

सहज काम अथवा बच्चों की सर्दी में दो [illegible] अगस्त के पत्ते के रस की ८ या १० बूंद [illegible] में मिलाकर इसे अंगुली के सिरे पर लगा [illegible] के ब्रह्मरंध्र पर दाई लोग चतुरता पूर्वक [illegible] हैं। (इं० मे० मे०)

इसके पुष्प को निचोड़ कर निकाले हुए [illegible] को चक्षुओं में डालने से दृष्टिमांद्य अथवा [illegible] को लाभ होता है। (डा० मुर्रे)।

अगस्त की ताजी छाल को कूटकर इसका [illegible] निचोड़ कपड़े की वर्तिका इसमें तर कर [illegible] रखने से श्वेतप्रदर तथा योनि कण्डू का [illegible] होता है। (लेखक)

अगस्ति रस agasti ras सं० पुं० देखो-अगस्त्यरसः।

अगस्ति सूतराजः agasti-sútarájah-सं० पुं० पारा, तांबा, उमालगोटा, सोंठा, अनजिम हल्दी और गंधक इनके तुल्यभाग ले कज्जली प्रस्तुत कर पुनः त्रिकुटा, चित्रक, भांगरा, अडूसा, निम्बू, सम्हालू, अमलतास और मूली इनके रसों से पृथक् पृथक् भावना दें, गुड़ के साथ सेवन करने से सर्व प्रकार का उदर रोग दूर होता है। मात्रा-१-३ रत्ती।

(र० सं० र० चि० मो० सं०) उदराधिकार

अगस्ति agastya-हिं० सं० पुं०
अगस्त्यः agastyah सं० पुं० } अगस्तिया
अगस्त्यजय agastya-jaya

(Sesbania grandiflora, *Pers.*) मिश्रा०।

(२) एक ऋषि का नाम जिनके पिता मित्र वरुण थे। इनको अैसा यक्ति मांडेल, कुम्भ संभव, घटोद्भव और कुम्भज भी कहते हैं। विन्ध्यकूट, समुद्र चुलुक और पीताब्धि इनके अन्य नाम हैं। कहीं कहीं पुराणों में इन्हें पुलस्त्य का पुत्र भी लिखा है।

अगस्त्यतामरस agastya-támarasya-सं० जलकुम्भी-हिं०। कुम्भिका-सं० (pistia stratiotes, *Linn.*)

अगस्त्य मोदकः agastya modakah-सं० पुं० अर्शाधिकार में वर्णित योग विशेष-हड़ ३ पल, त्रिकुटा ३ पल, तेजपत्र आधापल, गुड़ आधा पल में मोदक प्रस्तुत करें। इसे सेवन करने से शोथ, अर्श, ग्रहणीदोष, उदावर्त तथा काम का नाश होता है।

वंग० सं० अर्शो० यो० श्लो० ४०

अगस्त्यरसः agastyarasah-सं० पुं० उदर रोगघ्न रस विशेष-पारा, गंधक, जयपाल बीज, लौह, शिलाजतु, ताम्रभस्म, हल्दी समभाग लेकर त्रिकुटा, भांगरा, अडूसा, नीम की छाल, सम्भालू, स्वर्णवल्ली के एकत्र क्वाथ में एकवार मर्दनकर रक्खें। मात्रा-१ रत्ती प्रमाण गुड़, हरड़ बधौला के साथ देवे, इसे उदर रोग का नाश होता है। (र० सा० सं० र० रा० चि०)

अगस्त्यरसायनम् agastyarasáyanam-दशमूल, त्रिकुटा, त्रिफला (जल आंवला, इलायची, तेजपात,) गिलोय, वायविडंग, चव्य, चित्रक, पुष्कर मूल, विष्णुक्रान्ता, मुगवन्पाला, गोखरू, नागर, नागकेशर, कुलिञ्जन, सफेद मूसली, काकड़ासिंगी, भांग और अगर इनको छाल प्रत्येक १-१ तो० ले चूर्ण कर इसमें ८ तो० अभ्रक भस्म मिलावें पुनः शुद्ध शिलाजीत ८ तो० और १०० वर्ष का पुराना गुड़ सबके बराबर मिलावें; भगरा का रस १ सेर, गोमूत्र आधा सेर बकरी का दूध १ सेर और १॥ सेर शक्कर मिलाकर पाक विधि से पकावें। जब वह गुड़ पाक की तरह सिद्ध होजाए तो चिकने पात्र में रक्खें। मात्रा—१-४ मासे।

गुण—संग्रहणी, शूल, सूजन, गुदभ्रंश, प्रमेह, विषमज्वर, जीर्णज्वर, क्षय, श्वास, हिचकी, भगन्दर, हृदयशूल, पार्श्वशूल, परिशूल, अरुचि अम्लपित्त, पांडुरोग, कामला, आनाह, उदररोग, और बवासीर को यह रसायन नष्ट करता है। इस परम सेव्य शतात्मिक नाम वाले रसायन को अगस्त्य ऋषि ने बनाया है। यह बुड्ढे को काम शक्ति देता है। स्त्रियों को पुष्टि देता है। और वृद्धाओं को भी गर्भ धारण कराता और प्रदर को दूर करता है। ना० वि०।

अगस्त्य वटी agastyavati } सं० स्त्री०
अगस्ति वटी agasti vati } अभ्र १० पल कुचिला १० पल, दोनों को तुषों के काढ़े में पका कर चूर्ण करें तथा इसमें त्रिकुटा, सज्जी खार, जवाखार, अजवाइन, अजमोद, खुरासानी अजवाइन, विडंग, हींग, सैन्धव, बिड़, सौंचर नमक, प्रत्येक का चूर्ण ३ पल मिलाकर नींबू के रस में घोट कर बेर प्रमाण गोलियां बनावें।

गुण—शूल, मन्दाग्नि, गुल्म, कृमि, तिल्ली आमवातको नष्ट करती है। वृ० नि० र० शूल०चि०

अगस्त्य सूतराज रसः agastya-sútarája rasah-सं० पुं० पारा, गंधक, सिंगरफ,

प्रत्येक १–१ तो० धत्तूर का बीज २ तो०, अफीम २ तोला इनका चूर्णकर भांगरे के रस की भावना दें। मात्रा–१ रत्ती से १॥ रत्ती पर्यन्त। अनुपान सोंठ,मिर्च, पीपर और शहद के साथ देने से वमन शूल, कफ, वातविकार, मन्दाग्नि तथा घोर निद्रा को तथा नून और मिर्च के चूर्ण के साथ प्रवाहिका तथा छः प्रकार के अतिसार में जीरा और जायफल के चूर्ण के साथ देने से इनका नाश करता है

अगस्त्यहर्र agastya-harra–हिं० संज्ञा पुं० }
अगस्त्य हरीतकी agastya-haritaki }
अगस्त्यावलेहः agastyá-valehahसं० पु० }
सं० स्त्री० (१) यह काम्य में हित है। निर्माण क्रमः–दशमूल, कौंच, शंखपुष्पी, कचूर, बरियारा, गजपीपल, चिरचिटा, पीपलामूल, चित्रक, भारंगी पुष्करमूल ये सब आठ आठ तो० ले और जव (यव) २५६ तो०, हर्र १०० अदद, इन्हें १०७० तो० जल में पकाएँ अब सीज जाएँ तो उस क्वाथ को वस्त्र से छान के सौ हर्रों में ४०० तो० गुड़ और १६ तो० गोघृत मिला पकाएँ। और तेल, पीपल का चूर्ण भी १६–१६ तो० मिलाएँ जब सिद्ध हो के शीतल हो जाए तो इसमें १६ तो० शहद मिलाकर पात्र मे रक्खें। जो दो हर्र रसायन विधि से खाने से वली व पलित पाँचों खाँसी, क्षय, श्वास, हिचकी, विषम ज्वर, अर्श, संग्रहणी, हृद्रोग, अरुचि और पीनस को नाश करता है। यह अगस्त्यमुनि का रचा हुआ रसायन है। वंग० च० द० सं० कास० अ० यो० नि० वा० भ० चि० अ० ३।

(२) बड़ी हड़ १००; अजवाइन १ आढक, दशमूल २० पल, चित्रक, पीपलामूल, चिरचिरा, कचूर, केवांच, शंखपुष्पी, भारंगी, गजपीपर, बरियारा, पुष्करमूल प्रत्येक २–२ पल, ५ आढक जल में पकाय छान लें तिस में १०० हड़, तेल, घृत आठ पल, गुड़ १ तो० देकर पकाएँ। जब ठंडा हो जाए तो इसमें शहद, पीपल का चूर्ण १–१ कुड़व डालें, इस तरह इस सिद्ध अवलेह के संग २ हड़ नित्य खाएँ तो क्षय, कास, श्वास, ज्वर, हिचकी, अर्श पीनस, अरुचि और ... का नाश हो, यह अगस्त्यमुनि की कही ... प्रत्येक रोगों का नाश करती है। भा० सं० म० ख० अ० २।

(३) दशमूल, गजपीपल, कौंच के बीज, भारंगी, कचूर, पुष्करमूल, सोंठ, पाढ़, गिलोय, पीपलमूल, शंखाहुली, रास्ना, चित्रक, अपामार्ग, बला, जवासा ये प्रत्येक २–२ पल लें।

तथा यव (जौ) १ आढ़क लें०, बड़ी हर्र १०० सौ लें, प्रथम १ द्रोण (१६ सेर) अथवा ८१ आढ़क (४ सेर) जल लेके उसमें हर्रों को औटाएँ जब चौथा हिस्सा जल शेष रह जाए तो उतारें फिर १ तुला (५ सेर) गुड़ लेकर उसमें औटाकर तेल, शहद, घृत, ४–४ पल डालें और पीपल का चूर्ण ४ पल डालें, फिर पूर्वोक्त हर डालें, इस प्रकार पाक कर शीतल कर उसमें ४ पल शहद और डालें तो सुन्दर हरीतकी पाक तैयार होता है। यह रसायन है, नित्य दो हर्रों को अवलेह युक्त खाए तो राजयक्ष्मा, संग्रहणी, सूजन, मंदाग्नि, स्वरभेद, पांडु श्वास, शिरोरोग हृदयरोग, हिचकी और विषमज्वर को नष्ट करता है। और बुद्धि, बल तथा उत्साह गति, को बढ़ाता है। यह हरीतकीपाक सब: में श्रेष्ठ है। यो० चि० सु० सं० उ० तं० श्लो ५५।

अगस्थिओ agasthio–मो० अगस्तिया, अगस्त Sesbania Grandiflora, Pers.) फा० इं० १ भा०।

अगहन agahana–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्रहायण,] [वि० अगहनिया, अगहन] मार्गशीर्ष मगसिर।

अगहनिया agahaniyá–हिं० वि० [सं० अग्रहायणी] अगहन में होने वाला धान।

अगहनी agahani–हिं० वि० [सं० अग्रहायणी अगहन में तैयार होने वाला। संज्ञा स्त्री० वह फसल जो अगहन में काटी जाती है। जैसे जडहन धान, उरद, इत्यादि।

अगाडा agádá–हिं०, संज्ञा पु० [हिं० अगाड] अपामार्ग (Achyranthes. Aspera, Linn.)। (२) कछार.तरी।

अगाति agátti–ता० अगस्तिया. अगस्य (Sesbania Grandiflora.)

अगाथियोस agáthiyos–सिर० इसका शाब्दिक अर्थ अत्यन्त पवित्र है, पर शामी हकीम गण इसे मदार के लिए प्रयोग करते थे। इसी का अपभ्रंश हजाक़ियूस अरबी शब्द है।

अगाधम् agádham–सं० क्ली० (१) जल (Water, aqua) हे० च० ४ का० (२) छिद्र, गर्त (a-hole, a perforation)

अगाध त्वक् agádha-tvak–सं० पु०, (D ı mis,)

अगाधाधार तिरश्चीना agádhádhára-tirashchíná)–सं० स्त्री०, (Transversus parinœi profundus) ।

अगानी aganí–उ० प० सू०, त्रिधारा, वेत्तिरः, गुग्गुल मे० म ० ।

अगार agára–हिं० संज्ञा० पुं०, [सं० अगार घर, निवास स्थान । धाम, गृह, (२) ढेर । क्रि० वि० अगाड़ी, प्रथम ।

अगारह aghárah–नीबू वृक्ष । (Common lemon tree)

अगारधूमः agárdhúmah–सं० त्रि० गृहधूम, (Soot), सु० चं० ३८ चा० उ० अ० ।

अगारधूमाद्यतैलम् agáradhúmádya-taylam–चरक का, धुवाँसा (घरका) १ भा० हल्दी २ भा०, सुराकिट ३ भा०, इन्हें डालकर तैल पाक करें, यह खुजली गंध को दूर करता, तथा उपदंश के व्रण का शोधन व रोपण कर उसे नष्ट करता है। भै० र०। चक्र० द०। भा० म० ।

अगा (गे) रिक agáric अगारीक़ून, ग़ारीक़ून–अ० । साँप की छत्री, खुम्बी, कुकुरमुत्ता–हिं० । Boletos (Fungus) Agniarius. यह एक परान्नभोजी (Parasitic) पौधा है, जिसमें रक्तस्थापक गुण विद्यमान है। इ० हैं० गा० ।

अगा (गे) रिक ऑफ ओक agaric of oak –इं० ओक नामक इं० वृक्ष से उत्पन्न ग़ारीक़ून ।

अगा (गे) रिक एसिड agaric acid–इं० खुम्बीन, छत्री सत्व (Agaricin. Dr. Stewart.) देखो–अगारिकस पेल्यस ।

अगा (गे) रिक आफ ऑरसर्जन्स agaric oak or surgeon's.

अगा (गे) रिक फ्लाई agaric fly–इं० अगारिकस अमेनिटा ।

अगा (गे) रिकस् अमेनिटा agaricus amanita–ले० फ्लाई अगारिक (fly agaric)–इं० । अमेनिटा मस्केरिया (Amanita muscaria) अगारिकस् मस्केरिया (agaricus muscaria)–फ्लाई अगारिक् (Fly agaric)–इं० । मादीय छत्रांकुर–हिं० । ग़ारीक़ून ज़ुबाब, ग़ारीक़ून नजस –नि० (Not official)

अगा (गे) रिकस् पेल्यस् agaricus albus (Dr. Stewart)–ले० । पॉलिपोरस आफ़िसिनेलिस(Polyporus officinalis, Fries.) व्हाइट अगारिक (White agaric), पर्जिङ्ग अगारिक (Purging agaric), लार्च अगारिक (Larch agaric)–इं० । अगारिक ब्लैङ्क (Agaric blanch), पालिपोरी ड्यू मलेज़ी (Polypore dumelezo)–फ्रा० । ग़ारीक़ून–इण्डि० या० । छत्रिका, गोमय छत्रिका, द्विलीरं, शिलीन्ध्रकं, वमारोहं, गोलाम्, उच्चंगं, (हा०), उच्छिलीन्ध्रम्, शि (लि) लीन्ध्रः (कः), भूच्छत्राक, संस्वेदजशाकं, भूमिच्छत्रं, भूछत्रं, पृथ्वीकन्दं, कवचं, भूमिच्छत्रं, भूमिस्फोटः, धरांकुर, भूमुता, छत्र, छत्राक, स्वेदज–सं० । पाताल फोड़, भूई फोड़, कोडक छाता, पोयालछातु, छातकुड, छाता, भूई छाति, खुम्बा–बं० । छत्री, कुकुरमुत्ता, सांप की छत्री, छत्रांकुर छाता छतोंना,–हिं० । अलम्बी, भूँई फोड–मह० । किपेन–पं० । जंगली बलगर–काश० । अगारीक़ून–यू० । कामिल –कॉ० । कुम्प मीट डॉनीयली–गु० । ग़ारीक़ून अबेज़, ग़ारीक़ूनतिब्बी–अ० । ग़ारीक़ून मफ़ेद, ग़ारीक़ून मुरिहिल, ग़ारीक़ून मनोवर, माह शर्मां–फ़ा० ।

(नॉट ऑफ़िशल Not official)

छत्रिका वर्ग

(N. O. Polyporaceæ "Fungi-Mushroom.")

उत्पत्तिस्थान—दक्षिण तथा मध्य युरूप, साइबेरिया; एशिया माइनर, पञ्जाब, संयुक्त प्रान्त प्राचीन (सनोबर वृक्ष)।

नामविवरण—युनानी हकीम दीसकूरीदूस (Dioscorides) के मतानुसार जिसने सर्व प्रथम उक्त औषध का वर्णन किया है इसका युनानी नाम अगारीकून (Agarikon) अगारिया से, जो सर्मेशिया में एक देश है, व्युत्पन्न शब्द है। चूंकि उक्त औषध उस प्रदेश में अधिकता के साथ उत्पन्न होती है; अस्तु यह उस नाम से अभिहित हुई।

औषधविनिश्चय—ग़ारीक़ून [छत्रिका] के विषय में प्राचीन तथा अर्वाचीन चिकित्सकों में बहुत कुछ मतभेद है। अस्तु, किसी के मत से यह किसी प्राचीन या सड़े हुए वृक्ष यथा अंजीर व गूलर की सड़ी गली हुई जड़ है जो उसके खोखलों में से निकलती है; तथा किसी किसी के कथनानुसार यह ग़ार वृक्ष की जड़ है, इत्यादि—परन्तु किसी ने—उदाहरण स्वरूप हकीम मुहम्मद बिन् अहमद ने इसका यथार्थ वर्णन किया है। कि ग़ारीक़ून छत्रिका के प्रकार की एक बूटी है और इब्नमासूया ने जो लिखा है कि ग़ारीक़ून नर व मादा होता है तथा विभिन्न वर्ण का (श्वेत, पीत, रक्त तथा श्याम) होता है यह भी सत्य है। अस्तु, श्वेत छत्रिका जो युरूप के कतिपय प्रदेशों में औषध-तुल्य व्यवहृत होती है वास्तव में मादा ग़ारीक़ून ही है।

नोट—मशरूम (Mushroom) जिसको संस्कृत में छत्रिका या वर्षोजा, अरबी में फ़ितर, फ़ारसीमें समारोग़ और हिन्दी उर्दू में खुम्भी कहते हैं, सैकड़ों प्रकार के होते हैं। इनमें से कोई खाद्य कार्य में आते हैं और कोई औषध में, तथा कोई कोई अत्यन्त विषैले होते हैं मुख्यतः वे जो रक्त वर्ण के होते हैं। अस्तु मक्षिक छत्रिका (Fly agaric) इसी अन्तिम प्रकार में है। यह चमकीले वर्ण की सुर्खी है जिसमें मस्करीन (घातकीन) नामक पदार्थ वर्तमान होता है। इसमें घर्म ग्रन्थियों में अन्त होनेवाले नाड़ियाँ (बोधतन्तु) वातग्रस्त होजाती हैं।

छत्रिकाएँ बहुधा भूमिपर उत्पन्न होती हैं। अस्तु वर्षा ऋतु में ये इतनी अधिकता के साथ उत्पन्न होती हैं कि इनके उत्पत्त्याधिक्य का उदाहरण दिया जाता है। परन्तु किसी किसी प्रकार की छत्रिकाएँ प्राचीन वृक्ष की जड़ प्रभृति पर उत्पन्न होती हैं। अस्तु श्वेत छत्रिका (ग़ारीक़ून नि[illegible]) भी उसी प्रकार की छत्रिकाओं में से है। आज से अर्द्ध शताब्दि पूर्व युरुप में तीन प्रकार की छत्रिकाएं (ग़ारीक़ून) व्यवहार में आती थीं, जैसे—(१)—श्वेत छत्रिका, (२)—मक्षिक छत्रिका तथा (३)—शाल्य छत्रिका। परन्तु अधुना इनमें से केवल प्रथम प्रकार की छत्रिका ही युरूप किसी किसी प्रदेश में प्रयोग की जाती है।

इतिहास—छत्रिका का औषधीय उपयोग प्राचीन है। हकीम दीसक़ूरीदूस Dioscorid ने इसके नर मादा दो भेदों का वर्णन किया है इनमें से नर बिलकुल सीधा लपेटदार गोल है और इसके भीतर पृष्ठ पर परत नहीं परन्तु यह एक समान होता है। मादाकी रचना कंघी के समान परतदार होती है सर्वोत्तम है। स्वाद में दोनों समान अर्थात् में मधुर तथा पश्चात् को कटु होते हैं।

इनके अतिरिक्त माहनी, मीरा आदि इब्नसीना आदि मुसलमान तथा भावप्रकाश आदि आयुर्वेदिक चिकित्सा ग्रन्थ ने अपने अपने तौर पर इसके उपयोग का पर्याप्त वर्णन किया है।

वानस्पतिक विवरण - यह वृक्षों तथा भूमि उत्पन्न होने वाला एक पराश्रयी छोटा पौधा जो वर्षा ऋतु में अधिकता से उत्पन्न होता है इसका गर्भान्वित भाग बाहर वायु में होता है यह सीधा ऊपर को बढ़ता है। इसके तने ऊपर छत्रिकाकार एक टोपी लगी रहती है।

से इसमें स्पञ्जवत् कोठरियां होती हैं। इसका रस दुग्धवत् तथा नींबू के समान, स्वाद में चरपरा कसैला और किंचन् लावण्ययुक्त होता है। काट कर वायु में खुला रखने पर यह धूसर वर्ण का होजाता है।

रसायनिक संगठन—इसमें राल, तिक्त पदार्थ, निर्यास, वानस्पतिक अलब्युमेन तथा मोम आदि होते हैं, इसका वास्तविक प्रभावात्मक सत्व अगारिक एसिड या फलिक एसिड या लार्किक एसिड (छत्रिकाम्ल) है। इसमें स्कुरिकाम्ल, पोटाश, चून, एमोनिया और गन्धक प्रभृति होते हैं। अगारीसीन निर्यास में ६० प्रतिशत अगारिकाम्ल (Agaric acid) तथा ३% अगारिकोल (Agaricol) होता है। अगारिक एसिड [छत्रिकाम्ल) के अति सूक्ष्म श्वेत चमकीले रवे होते हैं जो मद्यसार, क्लोरोफ़ार्म तथा ईथर में (शीतल जल में न्यून परन्तु उष्ण जल में सरलतापूर्वक) विलेय होते हैं। जल में उबालने पर यह सरेशी घोल बनाता है।

औषध-निर्माण तथा मात्रा - (१) छत्रिका तरल सत्व *Fl. ext.* (२ में १) मात्राः— ३ से २० बुन्द या अधिक, (२) एक्सट्रैक्टम्अगारीसाई (छत्रिका सत्व) मात्रा-२० से ६० बुन्द। (३) टिंक्चर (१० में१) मात्राः—२० से ६० बुन्द (४) छत्रिकाचूर्ण (agaricus powder.) मात्राः—५ से ३० ग्रेन (२॥-१५ रत्ती), अगारीसीन (सिलीन्ध्रीन मात्राः—$\frac{1}{4}$ से $1\frac{1}{2}$ ग्रेन ($\frac{1}{12}$ से $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेन)

नोट—छत्रिका चूर्ण को किसी मुरब्बा में मिला कर देते हैं तथा इसके सत्व (अगारीसीन) को डोवर्स पाउडर के साथ वटिका रूप में वर्तते हैं।

कार्य—बलवान रेचक, रक्तस्थापक, सङ्कोचक, वामक, स्तन्यनाशक।

छत्रिका (ग़ारीकून) के गुणधर्म—
आयुर्वेदमतानुसार:—

शीतल, कसैला, मधुर, पिच्छिल, भारी तथा छर्दि, अतिसार, ज्वर, कफ रोग कारक, पाक में भारी, रूक्ष तथा रेणुज, गोष्ठज, शुचिस्थानज या काष्ठज श्वेत, छत्रिका (ग़ारीक़ून सफेद) दोषों को करने वाली एवं निन्दित है। रा॰नि॰।

बांस की छत्री शीतल, बलकारक, भारी, भेदक, मधुर, त्रिदोषजनक, वीर्य वर्द्धक और कफकारक है। यह कृष्ण, रक्त और पाण्डु भेद से तीन प्रकार की होती है। कालेरंग की-मधुर, गरम और भारी है। श्वेत—पाक में भारी और लाल अल्पदोष जनक है। नि॰ र॰।

सर्व प्रकार के संस्वेदज शाक शीतल, दोष जनक, पिच्छिल, भारी तथा वमन, अतिसार, ज्वर और कफ रोगों को उत्पन्न करते हैं। सफेद शुभ्रस्थान में उत्पन्न होने वाले तथा काष्ठ, बांस और गायों के स्थानों में उत्पन्न होने वाले अत्यन्त दोषकारक नहीं हैं और शेष सर्व त्यागने योग्य है। भा॰ प्र॰ १ खं॰ च निघं॰ खं॰ शा॰ व॰।

यूनानी ग्रन्थों के मतानुसार:—

यह सकोचक, उष्ण, तथा विरेचक है और इसे ज्वर, पांडु, वृक्कशोथ, गर्भाशयिक रोध, यक्ष्मा, अजीर्ण, रक्तस्राव, संधिशूल में देते हैं। यह विषघ्न है। दीसकूरीदूस नर छत्रिका अधिक दृढ़ एवं तिक्त है तथा यह शिरःशूल को भी उत्पन्न करती है। (साइनी) इब्नसीना ग़ारीक़ून या छत्रिका (agaric) के विषघ्न गुण के लाभदायकत्व पर बहुत जोर देते हैं। यह तथा अन्य मुसलमान चिकित्सकों ने छत्रिका के गुणधर्म वर्णन में यूनानी ग्रन्थकारों का बहुत कुछ अनुसरण किया है। उनके विचारानुसार यह सम्पूर्ण आशयिकावरोधों को नष्ट करती तथा विकृत दोषों को निकालती है। यक्ष्मा में छत्रिका का उपयोग नवीन नहीं प्रत्युत अति प्राचीन है। इसे बालों की चलनी में छानकर व्यवहार में लाएँ क्योंकि इसमें नखवत् जो वस्तु होती है वह विषैली होती है। (डाइमॉक) प्रकृति—प्रथम कक्षा में उष्ण तथा द्वितीय कक्षा में रूक्ष है। जब इसको चखा जाता है तो आरंभ में मधुर पुनः फीका प्रतीत होता है। तदनन्तर इसमें तिक्तता पुनः तीक्ष्णता एवं किञ्चित् कषेलापन प्रतीत होता है। फीकापन जल के कारण

और तिक्तता जले हुए पार्थिवांश के कारण होती है।

चरपराहट-(हिराफ़त) आग्नेयांशके कारण और संकोच (कषाय, क़ब्ज़) पार्थिवांश के कारण होता है। चूंकि यह हलकी होती है, अस्तु इसमें वायव्यता अधिकता के साथ होना आवश्यक है। इसी कारण इसकी उष्णता कम और रूक्षता अधिक होती है।

हानिकर्त्ता-व्याकुलता और गले में रोध उत्पन्न करती है।

दर्पनाशक-तुख्मखैरमतर, ताजादुग्ध, वमन कराना।

प्रतिनिधि-निशोथ, इन्द्रायण का गूदा, गुरुच, बसफ़ाइज।

गुण कर्म प्रयोग-अपनी उष्णता के कारण यह लय कर्त्ता और सान्द्र (गाढ़े) दोषों की छेदक एवं उनको रेचन करने वाली है, क्योंकि दोष त्रय (बल्ग़म, स़फ़रा, सौदा) को छेदन करती एवं उनको स्वच्छ करती है और कटुता तथा छेदकत्व के अतिरिक्त तारल्य (लताफ़त) उत्पन्न करती है। अपनी उष्णता के कारण सम्पूर्ण अवरोधों को उद्घाटित करती तथा मवादमें तारल्योत्पादन करती है। पार्थिवांश के कारण सङ्कोचक है। अपने विशेष गुण (ख़ासियत) से वात तात्विक मलों को शुद्ध करती है इस कार्य में रोगोद्घाटक, छेदक, निर्मल कारिणी एवं लयकारिणी शक्ति इसकी ख़ासियत को सहायता करती है। यह सम्पूर्ण संधिशोथों, गृध्रसी, अपस्मार, श्वास तथा रोषयुक्त रक्ताल्पता (यर्क़ान सुद्दी) में लाभ प्रदान करती है। ये समग्र लाभ इसकी तारल्य जनक (तल्तीफ़), लयकारिणी तथा रोधोद्घाटिनी शक्ति के कारण होते हैं। सिकञ्जबीनके साथ यह प्लीहा शोथ के लिए हित है, क्योंकि सिकञ्जबीन इसकी छेदक ■ रोधोद्घाटक शक्ति को बढ़ा देता है। इसकी पूरी मात्रा ७ मा० है।

यह अपनी रोधोद्घाटक तथा तारल्यकारी शक्ति के कारण मूत्र एवं आर्तव का प्रवर्तन करती है। न० नफ़ी०।

विशेष प्रभाव-श्लेष्मा तथा वायु की रेचक, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवर्त्तक और रोधोद्घाटक है। कफज शिरःशूल तथा अर्द्धशीशी को विशेष कर हरीतकी तथा सम्नगी के साथ, ग़ार नियां के साथ अपस्मार को लाभदायक है। इसका गंडूष शोथ लयकर्त्ता तथा रक्त निर्गम हित और रुब्बुस्सूस (रुब्ब मुलहठी) के साथ उ[illegible] व्यथा की नाशक तथा आन्त्र काठिन्य को हित है। रेवन्दचीनी के साथ आमाशय तथा [illegible] गुण दायक तथा पांडु या प्लीहा को हित, [illegible] व यरक़ानसदी निस्सारक तथा जलोदर को [illegible] प्रद है। इसका प्रलेप शोथ लयकर्त्ता है। [illegible] के साथ इसे उपयोग करने से सर्प विषघ्न है। मु० मु०।

वायुशोथ और गुल्म लयकर्त्ता, नाड़ी, [illegible] और मस्तिष्क को बलवान करता, प्रायः विष [illegible] दर्पनाशक है। कफ ज्वर को लाभ करता है। इसका पान करना उचित नहीं है (निर्दिष्ट परन्तु इसमें एक वस्तु नम के समान होती है यह विष और घातक है)

डाक्टरी मतानुसार

छत्रिका चूर्ण १२ ग्रेन (७॥ रत्ती) की [illegible] में या अगारीसीन या अगारिक एसिड, [illegible] सत्व, छत्रिकाम्ल यह श्वेत स्फटिकवत् चूर्ण है।

$\frac{1}{2}$ ग्रेन की मात्रामें यक्ष्मा रोगियोंके रात्रि स्वेद रोकनेमें अपना निश्चित प्रभाव रखता है।

यह विरेचक रूप से उपयोग में आता था। अ[illegible]धिक मात्रा में यह जलवत् मल प्रवर्त्तक करता है, थोड़ी मात्रा में अतिसार तथा प्रवाहिका को रोकता है तथा रक्त निष्ठीवन में गुण दायक होता है। यह वायु प्रणालियों तथा स्तन विषयक स्रावों (Secrations) को (अर्थात् कास तथा स्तन्यस्राव को) कम करता है।

साधारण स्वेदस्राव में $\frac{1}{5}$ ग्रेन की मात्रा का एक ही बार उपयोग पर्याप्त होता है परन्तु घर्माधिक्य में उतनी ही मात्रा में करने से २ घंटा पश्चात् स्वेदावरोध अथवा उसे बढ़ा बढ़ा कर बारम्बार उपयोग होता है। पर इच्छित प्रभाव हेतु इसके उपयोग की सर्वोत्तम विधि यह है कि इसे (इसके मृदुभेदक प्रभाव को रोकने के लिए

ग्रेन (अर्द्ध रत्ती) डोवर्स पाउडर के साथ वटिका रूप में प्रयोग किया जाय।

ओक अगारिक या सर्जन्स अगारिक जिसको अमेडो (Amadou) या फंगस इग्निएरियस् (Fungus agniarius) भी कहते हैं ओक अगारिक, लार्च तथा अल्कोलों का एक भिःया है जो स्थानिक रक्त स्थापक रूप से उपयोग में आता है। हि्द० मे० मे०।

विस्फोट जन्य ज्वरों में विस्फोटकोत्पत्ति विवर्द्धन हेतु इसे अधिक मात्रा में मधु के साथ वर्तते हैं। जलौका रक्तस्राव में यह रक्तस्थापक प्रभाव करता है। इं० मे० मे०।

थोड़ी मात्रा में यह संकोचक और बड़ी मात्रा में वामक तथा विरेचक प्रभाव करता है। डा० बी० एम०।

अगद तन्त्र

Fungi (or muscarin)

विषैले छत्रांकुर (Poisonous Fungi) में सम्भवतः दो विभिन्न विषैली वस्तुएँ वर्तमान होती हैं, यथा मस्केरीन (Muscarin) जिसका प्रभाव पिलोकार्पीन तथा धुस्तुर के सर्वथा विपरीत होता है; और द्वितीय जिसका प्रभाव धत्तूरीन (Atropine) और डैट्यूरिया (धत्तूरीन या धुस्तुर सत्व) के समान होता है।

अगद—वामक (जिंक सल्फेट १५ ग्रेन या अधिक जल के साथ) या स्तम्भक पम्प का व्यवहार करना चाहिए। तदनन्तर अहिफेन सम्मिलित टैनिक एसिड के साथ कॉफी फाण्ट देना चाहिए। कनीनिका विस्तार काल तक बारम्बार ऐट्रोपीन $\frac{1}{40}$ ग्रेन का 'त्वगन्तः क्षेप' करना अथवा डिजिटेलिस् या मार्फीन (अहिफेन सत्व) देना चाहिए। स्वतन्त्र उत्तेजना, राई के प्रस्तर तथा घर्षण की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार का गारीकून फिरंग के वनों में उत्पन्न होता है। यदि इसको दुग्ध में उबाल दिया जाय तो वह मक्खियों के लिए घातक होता है। इसको संयोगात्मक विधि से भी प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रभावमें यह बहुत कुछ पाइलोकार्पीन (Pilocarpine) के समान होता है। अस्तु इससे अत्यन्त लालास्राव, स्वेदस्राव तथा अश्रुस्राव होता है, तथा इससे बलपूर्ण एवं वेदनापूर्ण मूत्रस्राव और कभी कभी उद्वेग (मतली) तथा अतिसार उत्पन्न हो जाते हैं। इसका घोल (१० %) जब चक्षु में डाला जाता है तो इससे नेत्र कनीनिका विस्तृत हो जाती है और इसका अन्तः प्रयोग करने से (निगलन से) यह संकुचित होती है।

स्थानिक कनीनिका विस्तारक तथा स्वेदघ्न प्रभाव के सम्बन्ध में धत्तूरीन Atropine के प्रत्येक प्रभावको निश्चित प्रतिद्वंद्वी (Antagonist) है। अस्तु धत्तूरीन (Atropine) छत्रिका (Fungi) द्वारा विषाक्त दशाओं की प्रतिविष है। एक समय जब पाठशाला के बहु संख्यक बालक (Fungi) के खानेसे विषाक्त हुए उस अवसर पर लेखक धत्तूरीन (Atropine) के त्वगन्तः क्षेप द्वारा कतिपय प्राणियों की जीवन रक्षा करने में अपने को सन्तुष्ट कर सका। हि्द० मे० मे०।

मात्तीय छत्राकुरागद

Muscarin or Poisonous mushrooms कवक (Fungi) द्वारा विषाक्तोपचारवत्प्रयत्न करें (देखो–अगारिकस् गेलयस्) यथा स्तम्भक पम्प अथवा वामक औषध उपयोगानन्तर ऐट्रोपीन (धत्तूरीन) का त्वगन्तः रूप से व्यवहार करें।

इस प्रकार के विषैले गारीकून में से एक प्रभावात्मक सत्व निकलता है जिसे मस्करीन Muscarine (घातकी) कहते हैं। इस प्रकार के गारीकून को कहीं कहीं अफीम तथा भंग के सदृश उपयोग में लाते हैं।

अगा (गे) रिकस् ऑफिसिनेलिस A. officinalis–ले० गारीकून।

अगा (गे) रिकस् ऑस्ट्रीएटस् agaricus ostreatus, *Facq.*–ले० फणस आलोम्बे, फनसाम्बा, पनसलम्बे–मह०, कॉ० Agaric of the oak, Touchwood; Oyster mushroom.

उत्पत्ति-स्थान—पनस (कटहल) वृक्ष।
प्रयोगांश—छत्रिका।
रासायनिक संगठन—राल, मेन्ड्रिकास्ल तथा सरेश।
प्रभाव तथा उपयोग—संकोचक। मुखपाक (Apthae) में मसूढ़ों पर इसका प्रस्तर लगाया जाता है। यह लालास्राव की अधिकता को रोकती है प्रवाहिका तथा अतिसार में इसका अन्तः प्रयोग होता है और मुख पाक में पीड़ित बालकों के मुख में इसे लगाते हैं। इं० मे० मे०।

अगा (गे) रिकस् कैम्पेस्ट्रिस् agaricus campestris, *Linn.*–लें० शिलीन्ध्रः छत्रक –सं० खम्बूर कम्य०, मोसा–काश्मी० खुम्बह् खाम्बूर, चत्री अफ०, वाज़ा०। मांस खेल- –काश० । खुम्बह् समारोग (stewart)–बाजा०। हरार (विषैला) रूप। प्रयोगांश–छत्रिका (Mushroom)। आहार तथा औषध कार्य में आती हैं। मे० मो०

अगा (गे) रिकस्चिरर्गोरम् agaricus chirurgorum–लें० ग़ारीक़ून वलूनी।

अगारिकस् मस्केरिया agaricusMuscaria फ्लाइ अगारिक Fly agaric–इं०।

अगा (गे) रिकस्शिरर्जिअन् agaricus chirurgeon–लें० शल्य छत्रांकुर (Surgeon's agarics ग़ारीक़ून जर्राही। ग़ारीक़ून बलूती, घस्मौफान्–अ०,। फा० इं० ३ भा०।

इस प्रकार का ग़ारीक़ून, फिरंग के वनों में प्राचीन बलूत वृक्ष के तनों पर पाया जाता है। प्राचीन समय में इसे विशेष विधि द्वारा शुद्ध कर घावों में रक्तस्राव को रोकने के लिए उपयोग करते थे परन्तु अधुना इसका प्रयोग सर्वथा अव्यवहारिक हो गया है।

अगा (गे) रिकस् पामेलस agaricus palmalus–लें० पनमलगे–मद्र०, कों०। agaric of the oak, Touchwood, Oyster-mushroom। इं० मे० मे०।

अगारिकस् मस्केरिया agaricus Muscaria–लें० अगारिकस अमेनिटा।

अगारिक ह्वाइट ऑर पर्जिंग agaric white or purging–इं० अगारिकस् ऐल्बस्।

अगारीक़ून agárikon–यु० } ग़ारीक़ून–
अग़ारीक़ून agáriqún–अ० } खुम्बी
की छत्री, कुकुरमुत्ता–हिं० purgingAgarics,Large agaric,Boletia (Agaricus Albus)

नोट—बाँसीदह (सड़ी गली) जड़ के ... एक वस्तु है। जो किसी वृक्ष की जड़ों के ... से निकलती है यह वास्तव में एक प्रकार ... खुम्बी होती है। देखो–अगारिकस्ऐल्बस।

अगा (गे) रीसीन agaricin–इं० यह ग़ारी-क़ून (agaricus) का एक प्रभावात्मक ... है। यह शक्तिमान स्वेदघ्न औषध है जो यक्ष्मा रोगी के रात्रि स्वेद स्राव को रोकता है।
मात्रा—½ ग्रेन। इसके मृदु भेदकी प्रभाव को रोकने के लिए "डोवर्स पाउडर" के ... मिलाकर उपयोग में लाते हैं। इं० मे०
देखो—अगारिकस् ऐल्बस्

अगारूस अमरसी agárose amarase–यु० घास विसतानी, अलसवाशी–उ०। आल, ... –हिं० Morinda citrifolia, *Linn*
देखो—आच्छुकः।

अगालूजो agaloge–यु० अगर–हिं०। aloe wood (*Aquillaria agallocha*)

अगाव agáva–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र] ऊँख के ऊपर का पतला और नीरस भाग जिसमें गाँठें बहुत पास पास होती हैं। अगौरा अघोरी। अँगोरी।

अगास agása–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र, प्रा० अग्ग–हिं० आस (प्रत्य०) द्वार के का चबूतरा। संज्ञा पुं० [सं० आकाश] आकाश।

अगास्त agásta–म० अगस्त, अगस्तिया–... Sesbania Grandiflora, *Pers.* फा० इं० १ भा०।

अगि agi–लें० लाल मिर्चसे बनी हुई चटनी। फा० इं० २ भा०।

अगिकेसु,–सी agikesu,-si–दर० बड़ी अरंड का तेल वृहदेरण्ड तैल (Oleum ricini

obtained from the seeds of large seeded castor oil plant) रू० फा० इं०।

अगिन, ना agina, ná हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०अग्नि] [क्रि०अगियाना] (१) आग। (२) गौरैया या बया के आकार की एक छोटी चिड़िया जिसका रंग मटमैला होता है। इसकी बोली बहुत प्यारी होती है। लोग इसे कपड़े से ढके हुए पिंजड़े में रखते हैं। यह हर जगह पाई जाती है। (A bird,a sort of lark) (३) एक प्रकार का घास जिसमें नीबू की सी सोंधी महक रहती है। इसका तेल बनता है। अगिया घास। नींबी चाय। गंध तृण।

संज्ञा स्त्री० [सं० अंगारिका] ईख के ऊपर का पतला नीरस भाग। अगौरी।

अगिन-घास agina-ghása-अगिया घास रोहिष। भूतृण (Andropogon Schœnanthus, *Linn.*)

अगिन बाव agina-báva हिं० पुं०, (१) अश्व (the fairy in horse) रोग विशेष (२) मनुष्य में फोड़ा फुन्सी निकलने की बीमारी (An eruptive disease in men)।

अगिन-बूटा agina-búti दः, बम्ब० राह मारी,जंगली मेंहदी-हिं० । (Amm ma bacciforа, *Linn.*) इं० मे० मे०।

अगिनालागडी aginá-ligadi-बम्ब० कला-पित्ती हरिपत्ती-हिं० । (Mansuris granulatis, *Linn.*) इं० मे० मे०।

अगिया agiya-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि प्रा० अग्गि] (१) एक प्रकारकी घास जिसमें नींबू की सी सुगन्धि निकलती है और जिससे तेल बनता है। यह दवाओं में भी पड़ती है। अगिया घास। रोहिष तृण। नीली चाय। गंध तृण। (Andropogon Schœnanthus, *Linn.*)

(२) एक खर या घास जिसमें पीले फूल लगते हैं और जो खेतों में उत्पन्न होकर कोदों और ज्वार के पौधों को जला देती है। इसी नाम का एक और पौधा है जो धान के खेतों में उत्पन्न होता है। देखो अगया।

(३) एक हद ६ से १० फुट ऊंचा पौधा जो हिमालय आसाम ब्रह्मा में मिलता है। इसके पत्ते और डंठलों में जहरीले रोएं होते हैं जिनके शरीर में धँसने से पीड़ा होती है। इसी से इसे चौपाए नहीं छूते। नेपाल आदि देशों में पहाड़ी लोग इसकी छाल से रेशे निकाल कर अंगरा नामक मोटा कपड़ा बनाते हैं।

(४) जल धनियां।

(५) पक्षी विशेष। A bird (alauda aggiya)

(६) घोड़ों और बैलों का एक रोग।

(७) एक रोग जिसमें पैर में छाले पड़ जाते हैं।

अगिया बैताल agiyá-baitála-हिं० संज्ञा पुं० (सं० अग्नि, हिं० अग्नि+बैताल) (Ignis fatuus,Will-o'-the-wisp) दलदल में या तराई में इधर उधर घूमते हुए फ़ास्फरस (स्फुर) के अंश जो दूर से जलते हुए लुक के समान जान पड़ते हैं। ये कभी कभी कबरिस्तानों में भी अँधेरी रातमें दिखाई देते हैं। महाया।

अगियाना agiyáná-हिं० क्रि० अ० [सं० अग्नि] जल उठना। गरमाना। जलन या दाह युक्त होना।

अगिरः agirah-सं० पुं० चित्रक का पेड़ (Plumbago Zlanicum, *Linn.*) जटा०।

अगिरेटम् अक्वेटिकम् ageratum aquaticum, *Roxb.*-ले० बड़ी किरती। इं० हैं० गा०।

अगिरेटम्-कॉनिज़ॉइडीज़ ageratum conyzoides,*Linn.* देखो-अगिरेटम्-कॉर्डिफोलियम्

अगिरेटम्-कॉर्डिफोलियम् ageratum cardifolium, *Roxb.*)-ले० उचराटी-पं०। ओमदी-बम्ब०। सहदेवी भेद। फॉ० इं० २ आ०। इं० मे० प्रा०। पश्चिम भारत में होने वाली एक वनौषधि है। गुण—कृमि नाशक है।

... इसमें एक प्रकार का उड़नशील तैल पाया जाता है।

अगिला aglá-हिं॰ वि॰ दे॰ अगला।

अगिहाना agiháná-हिं॰ संज्ञा पुं॰ [सं॰ अग्निधान] आग रखने का स्थान। जहाँ आग जलाई जाती हो।

अगीकर agikara-ते॰। धार करेला-हिं॰। किरार पं॰ Momordica dioica, *Roxb.*

अगीरस agirasa-यु॰ एक प्रकार का वृक्ष है जिसका गोंद कहरुबा के नाम से प्रसिद्ध है। Succinum. (tree of-)

अगीरातून agdírátúna-यु॰ पटेर-हिं॰ एक प्रकार की बूटी है जो प्रायः मोथे की शकल की होती है। इसे गुजेना भी कहते हैं। यह जलाशयों में होती है, जिससे बोरिया इत्यादि बुने जाते हैं।

अगारिया aghiriyá-यु॰ पृथ्वी, भूमि, धरणी, ज़मीन (The Earth.)

अगुण aguṇa-हिं॰ वि॰ [सं॰] (Destitute of attributes) गुण रहित, निर्गुण, धर्म वा व्यापार शून्य, रज, तम आदि गुण रहित। संज्ञा पुं॰ अवगुण, दोष।

अगुरु aguru-सं॰ क्लीं॰ अगर (See-Agara) या॰ चि॰ ४ अ॰।

अगुरुः aguruh-सं॰ पुं॰ (१) अगुरु वृक्ष, अगर-हिं॰। Aloe wood (agallocha) यथा—"अगुरुः ... कुंकुमम्" वा॰ सू॰ १५ अ॰ एलादिवर्ग। (२) कपिल वर्ण शीसम, सीसम, सीसो-हिं॰। कपिल शिंशपा-सं॰। Dalbergia latifolia भा॰ पू॰ १ भा॰ वटादि वर्ग। (३) सीसम, सीसो शिंशपा वृक्ष-हिं॰। शिशुगाछ-बं॰। (Dalbergia sissoo, *Roxb.*) (४) -हिं॰ वि॰ हलका (Light) (५) जिसके गुरु (Teacher) न हो।

अगुरु गन्धम् aguru-gandham-सं॰ क्लीं॰ हिंगु, हींग हिं॰। हिङ-बं॰। (Assafoetida)

अगुरुसारः aguru-sárah-सं॰ पुं॰ ... वृक्ष, काली अगर हिं॰। काल अगर-बं॰ aloewood (the black variety) (२) लोह Iron (Ferrum) रत्न एकार्थः।

अगुरुसारा agurusárá-सं॰ स्त्रीं॰, ... वृक्ष। सीसो सीसम-हिं॰। Dalbergia Sissoo, *Roxb.* अ॰।

अगुरु शिंशपा aguru-shinshapá-सं॰ ... शीशम (व) सीसो-हिं॰। Dalbergia sissoo, *Roxb.* अ॰ टी॰ स्वामी। शिंशपा सं॰। शिशु-बं॰।

अगुर्वादिधूप agurvádidhúpa-सं॰ ... अगर, कपूर, लोबान, खसा, तगर, ... चन्दन और राल इसके धूप से दाह शान्त होता है। वृ॰ नि॰ र॰।

अगूढ़ agúrha-हिं॰ वि॰ [सं॰] जो छिपा हो। स्पष्ट। प्रगट।

अगूढ़ गन्धम् agúrha gandham सं॰क्लीं॰

अगूढ़-गन्धा agurha gandhá-हिं॰संज्ञा (हींग) गांधी हिंगु-हिं॰। Ferula assafœtida रा॰ नि॰ व॰ ६। (२) ... Alliumcepa, *Linn.* (३) (musk) लशुन, लहसुन (Allium Sativum, *Linn.*)

अगूढ़ः agúrhah-सं॰ पुं॰ श्वेतैरण्ड (सफेद) एरण्ड या अरण्ड-हिं॰। श्वेत भेरेण्डा-बं॰। The castor-oil plant (Ricinus communis) वै॰ निघ॰।

अगृद्धिः agriddhih-सं॰ स्त्रीं॰ ... (wish, desire) । या॰ चि॰ अ॰

अगेथ agetha-नेपा॰।
अगेथ agetha,
अगेथुथू agethu-thoo
} -हिं॰ पुं॰, अरनी का पेड़, अर्नी (Premna Integrifolia, *Linn.*)

अगेट agate-लं॰, (१) आर्तगल, नील किण्टी- सं॰। कट करैया-हिं॰। Barleria cœrulea (२) इं॰, अकीक एक मूल्यवान पत्थर विशेष।

अगेटि ग्रांडिफ्लोरा agati grandiflora, *Linn.*–लै० अगस्तिया, अगस्त (Great-flowered agati) फा० इं०। इं० मे० मे०।

अगेनोस्मा कैरयोफाइल्लेटा aganosma caryophyllata, *G. Don.*–लै० इसके पत्र औषधि कार्य में आते हैं। मेमो०। देखो मालती।

अगेनोस्मा कैलसिना aganosma Calycina, *A. De.*–लै० मालती–हिं०, बं०, हिं० मधोमालती–बं०। इसके पत्र औषधि कार्य में आते हैं। मेमो०।

अगेरिक agaric–इं० } अगारीकूम
अगेरिकस agaricus–लै० } अगारिकस

अगेरिक-ब्लैंक agaric-blanc–फ्रां० गारीकून। देखो अगारिक पेरीयस।

अगेला agelá–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र] हलका अन्न जो ओसाते समय भूसे के साथ आगे जा पड़ता है, और जिसे हलवाहे आदि ले जाते हैं।

अगेवि अमेरिकेना agave americana, *Linn. Roxb.*–लै० राकसपत्ता, बड़ा केवार, कंटला, बांस केवड़ा, (मेमो०, इं० मे० प्लां०) जंगली केवार, हाथी संगाड़ (स० फा० इं०) हाथी चिंघाड़–हिं० राकस दत्ता–द०। आनैक्-कटाज़ु (स० फा० इं० इं० मे० प्लां०) विरकल ग्रुन्थ–ता० (मे० मो० इं० मे० प्लां०) राकाशि-मट्टलु–ते०। पत्तम् कटाज़ु–मला०। भुत्तले, बुदुकट्ले नार–कना०। जंगली या विलायती अनन्नास (स), विलाति पात, कोयन कुर्गा, (आनारस अपभ्रंश)–बं०। जंगली कोनारी–गु०। जंगली कुंवार, पारकन्द–बम्ब० विलायती कैंटल–पं०। अमेरिकन एलो (American aloe), कैंटा Caratai–इं०।

नोट—(१) हैदराबाद के किसी किसी जिले में अगेवि अमेरिकेनाके लिए केनकी शब्द प्रयोग में लाया जाता है, किन्तु यही नाम भारतवर्ष के अन्य भागों में केवड़ा अर्थात् केतकी (Pandanus odoratissimus, *Willd.*) के लिए व्यवहृत होता है।

किसी किसी ग्रन्थ में उपरोक्त पौधे के लिए यही पर्याय कांटाज़ि निश्चित किया जाता है, किन्तु ये नाम बड़े कैवार दिवसदल अर्थात् सुग दर्शन (Crinum Asiaticum, *Linn.*) के हैं। अमेरिलिडीई अर्थात् (सुदर्शन-वर्ग) (N. O. amaryllideæ)

उत्पत्तिस्थान—इस पौधे का मूल निवास स्थान अमेरिका है, पर अब यह भारतवर्ष के अधिक भागों में पा जाता है।

प्रयोगांश—मूल, पत्र और निर्यास तन्तु, पुष्प, डण्डी तथा मध्य, आहार औषध तथा डोर हेतु।

रसायनिक संगठन—इसके डंठल के रस में एक शर्करा जनक ऐल्कोहल (मद्यसार होता है जिससे एक संधानित मादक पेयपदार्थ प्राप्त होता है जिसको मेक्सिको (Mexico) में पल्की (Pulque) कहते हैं। अगेवोसी (Agavose) एक निष्क्रिय शर्करा है।

प्रभाव—मूल-मूत्रल और उपदंशघ्न है। रस-मृदुभेदनीय, मूत्रल रजः प्रवर्तक और स्कर्वी नाशक (Antiscorbutic) है।

औषध-निर्माण—क्वाथ, पत्र स्वरस, मूली का रस एवं निर्यास।

प्रयोग—इसका मूल सारसापरिला के साथ क्वाथ रूप से उपदंश रोग में प्रयुक्त होता है, (लिण्डले)

अमेरिकन डॉक्टर इसके पत्ते से निचोड़े हुए रस को शोधघ्न और परिवर्तक प्रभाव के लिए विशेष कर उपदंश रोगमें उपयोग करते हैं।

इसका रस कोष्ठ मृदुकर, मूत्र विरेचनीय और रजः प्रवर्तक, २ फ्लुइड आउंस की मात्रा में स्कर्वी नाशक है। (यु० एस० डिस्पेन्सरी) जनरल शरीदन (Genl-Sheridan) का वर्णन है कि उन्होंने अपने आदमियों पर जो स्कर्वी से व्यथित थे इसका उपयोग किया और इसे बहुत लाभ दायक पाया। (इयर बुक-फार्मे० १८७२, २३२)

तर और गूदादार पत्तों का पुल्टिस रूप में उपयोग अत्यन्त गुणदायी है। इसका माजा रस कुचले हुए स्थान पर लगाया जाता है।

पत्तों तथा प्रकाण्ड के निम्न भाग में निकलता हुआ निर्यास सैंसिको में दांत के दर्द के लिए धर्ता जाता है। इसके पत्ते का गूदा अलमल के तह में रख आंख आने में चक्षुओं पर बांधा जाता है। और शर्करा के साथ दिन में दो बार सूजाक में प्रयुक्त होता है। (एम० एस० पी० किन्स ने मद्रास)

देशी लोग इसे पुरातन सूजाक में बर्तते हैं। (सर्ज० मेज० आई० एम० थोरह० थाला० शोर०)।

अगेविप्लेनोफोलिया agave Planifolia-लै०।

अगेवि कैंटयुला agaveCantula, *Roxb.*) लै० विलायती अनन्नास। ई० हैं० गा०।

अगेवि विविपेरा agave vivipara *Linn.* लै० कंडल-सं०। कांतलई-ना०। पेत्तकलबंद ते०। मे० मो०। इसके रेशे काम में आते हैं।

अगेरिक ऑफ दी ओक agaric of the oak ई०--खुम्बी शारीकून बलूती अगारिकस ऑस्ट्रिएटस् Agaricus ostreatus, *Cacq.* ई० मे० मे०।

अगेरिसीन agaricin-इं० अगारीसीन।

अगेह ageha-हिं० वि० [सं०] गृह रहित। जिसके घर द्वार न हो। बे ठिकाने का।

अगैरा agairá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र] नई फसल की पहली काँटी जो प्रायः जमींदार को भेंट की जाती है।

अगोचर agochara-हिं० वि० [सं०] जिसका अनुभव इंद्रियों को न हो। बोधागम्य, इंद्रियातीत, अप्रत्यक्ष। अप्रगट। अव्यक्त। (Imperceptible by the senses, Not obious)

अगोर aghora-तु० प्यूसी सीस,-हिं०। पीयूष-सं० दुग्ध देने वाले पशुओं यथा गो, भैंस प्रभृतिके ब्याने के प्रथम दिवस से लेकर चार छः रोज बाद तक का दुग्ध जो अग्नि पर रखने से जम जाता है। फटा।

अगोही agohi-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र] बैल जिसके सींग आगे की ओर निकले हों।

अगौड़ी agouri-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० ईख के ऊपर का पतला भाग, अगाव।

अगौका agoukáh-सं० पुं० (१) (A fab lous animal with eight legs शरभ (२) पक्षी (a bird) ।(३ सिंह। मे०।

अगौरा agourá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्र+ और] ऊख के ऊपर का पतला नीरस जिसमें गाँठें नज़दीक नज़दीक होती हैं।

अगौली agoulí-हिं० संज्ञा स्त्री० [देश०] की एक छोटी और कड़ी जाति है।

अगंड aganda-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] से जिसका हाथ पैर कट गया हो।

अग्गई aggai-अव० फकीह—यं०, द० अगा

अग़ज़ब aghzaba-अ० (ए० व०) अग़ा (ब० व०)। लिंग और जांघ या रानके म की दूरी, वक्षण, जंघासी, निम्नकच्छ। ग्रो (Groin)-ई०।

अग़ज़ल aghzala-अ० सर्दनौबत-फा०। नौब बुखार, बारी का बुखार-उ०। पर्याय ज्वर, पा का ज्वर-हिं०। Intermittent fever

अग़िज़य्यह् aghziyyah-अ० (ब० व० ग़िज़ा (ए० व०)। अश्याय खुर्दनी-फ़ा० भक्ष्य पदार्थ, भोज्य पदार्थ, खाद्य आहार, खा की वस्तु-हिं०। डाइट्स (Diets)-ई०।

अग़्तम aghtama-अ० वह व्यक्ति जो शुद्ध बा न कर सके।

अग़्तश aghtash-अ० अजहर, रोज़कोर-फ़ा० दिवसांध, दिन अंधा, दिनौंधी का रोगी, व्यक्ति जो दिन में भली भांति न देख सके। हेमीरॉलोप (पिया) Hemeralape,-pia ई०।

अग़्दीदूस aghdídúsa-अ० खुसयह् ख़ीज़ानी। उपांड-हिं०। (Epididymus)

अग्नायी agnáyi-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] The wife of agni and goddess of fire अग्नि की स्त्री स्वाहा। त्रेतायुग।

अग्नाशयः agnáshayah-सं० अग्न्याशयः (Pancreas)

अग्नाशयद्रव agnáshaya drava-हिं० पुं० अग्नाशय रस (pancreatic juice)

अग्नाशय प्रदाह agnáshaya-pradáha हिं० क्लोम ग्रन्थि प्रदाह, अग्न्याशय प्रदाह, अग्नाशय का शोथ, (Pancreatitis), इल्तिहाब बन्क्रियास, वर्म बन्क्रास-अ०। सोजिश लबलबह, लबलबह की सूजन-उ०।

अग्नाशय रस agnáshaya rasa-हिं० पुं० क्लोम रस। अग्नि रस। (Pancreatic juice)

अग्नाशयिक प्रणाली agnáshayika pranáli-हिं० स्त्री० (Pancreatic duct) क्लोम प्रन्यस्थ प्रणाली। मज्रीउल् बान्क्रास्-अ०। बान्क्रास या लबलबह की नाली-उ०। इस नाली द्वारा अग्नाशय रस द्वादशांगुलांत्र में गिरता है।

अग्नाशयिक क्षय agnáshayika-kshaya-हिं० पुं० (Pancreatic phthisis) अग्न्याशय जन्य क्षय रोग। सिल्ल इन्क्रासी-अ०। लबलबह की सिल-उ०। इस प्रकार का क्षय अग्नाशय के विकृत होकर संकुचित होजाने से उत्पन्न होता है। इसमें भी रोगी दिन दिन निर्बल होता जाता है।

अग्निः agnih-सं० पुं० } The fire of the
अग्नि agni हिं० संज्ञा स्त्री० } stomach, digestive faculty. जठराग्नि, पाचनशक्ति। यह मन्द, तीक्ष्ण, विषम और सम-भेद से चार प्रकार की होती है। यथा मनुष्य के कफ की अधिकता से मन्दाग्नि, पित्त की अधिकता से तीक्ष्णाग्नि, वात की अधिकता से विषमाग्नि तथा तीनों दोषों की समता से समाग्नि होती है। विषमाग्नि वातज रोगों को, तीक्ष्णाग्नि पित्तज रोगों को और मन्दाग्नि कफज रोगों को उत्पन्न करती है। लक्षण—समाग्नि वाले का किया हुआ यथोचित भोजन सम्यग् रूप से पच जाता है। मन्दाग्नि वाले मनुष्य का किया हुआ थोड़ा सा भी भोजन अच्छे प्रकार नहीं पचता और विषमाग्नि वाले मनुष्यका किया हुआभोजन कभी भली प्रकार पचता और कभी नहीं पचता; तथा जिस मनुष्य का अत्यन्त किया हुआ भोजन भी सुख पूर्वक पच जाए उसको तीक्ष्ण अग्नि कहते हैं। इन चारों प्रकार की अग्नियों में समाग्नि उत्तम है। मा० नि० अग्नि० मा० (२) पाचक, रञ्जक प्रभृति पञ्चपित्त [दोषों-पित्त]। (३) तेज पदार्थ विशेष, तेजका गोचर रूप, उष्णता, आग-हिं०। फायर (Fire)-इं० नार, ग़रह, आतश-अ०, फ़ा०। आगुनि-बं०। यह पृथ्वी, जल, वायु, आकाश आदि पंच भूतों वा पंच तत्वोंमें से एक है। इसके संस्कृत पर्याय-वैश्वानर, वह्नि, वीतिहोत्र, धनञ्जय, कृपीटयोनि, ज्वलन, जातवेदस्, तनूनपात्, तनूनपा, बर्हि, शुष्मा, कृष्णवर्त्मा, शोचिष्केश, उषर्बुध, आश्रयाश, आशयाश, बृहद्भानु, कृशानु, पावक, अनल, रोहिताश्व, वायुसखा, शिखावान्, शिखी, आशुशुक्षणि, हिरण्यरेता, हुतभुक्, हव्यभुक्, दहन, हव्यवाहन, सप्तार्चि, दमुना, शुक्र, चित्रभानु, विभावसु, शुचि, अप्पित्त (अर्चि) वृषाकपि, जुह्वान्, कपिल, पिंगल, अरणि, अजिर, पाचन, विश्वप्सा, छागवाहन, कृष्णार्चि, भास्कर, जुहुवार, ऊर्ध्व, वसु, शुष्म, हिमाराति, तमोनुत, सुशिख, सप्तजिह्व, अरणिक, सर्वदेवमुख (ज)।

अग्निताप के गुण—वात, कफ, स्तब्धता, शीत तथा कम्प नाशक, आमाशयकर और रक्त पित्त को कुपित करने वाला है। राज० भा०।
आग्नेय द्रव्य—आग्नेय द्रव्य रूक्ष, तीक्ष्ण, उष्ण, विशद (सूक्ष्म स्रोतोंमें जाने वाले) और रूप गुण बहुल होते हैं। ये दाह, कान्ति, वर्ण और पाक कारक होते हैं। चा० सं० अ० १।
(४) द्रव्यों का तीसरा रूप जिसे वायवीय अर्थात् गेसियस (Gaseous) कहते हैं इसे वाष्पीय

(भापकामा) कहते हैं। यह हमारा प्राचीन तेजस् तत्त्व है। हवा, पानी की भाप, इत्यादि इसके उदाहरण हैं। किसी पदार्थ को जब बहुत गर्मी दी जाती है तो वह अंत में इस रूप को धारण करता है। तेजस द्रव्यों में कुछ तो दृश्य हैं अर्थात् देख पड़ते हैं और कुछ अदृश्य, इनमें दो विशेष गुण हैं, एक तो अपना इसका कोई आकार नहीं होता, जैसे बर्तन में भर दीजिए उसी आकार का हो जायगा। गोले, चौखूटे, तिकोने आकार के धारण करने में इसे कोई कठिनाई नहीं होती। दूसरी बात जो इसमें पाई जाती है वह यह है कि इसका कोई अपना परिमाण नहीं होता। एक इत्र की शीशी लीजिए। अभी उसमें गंध के परिमाणु वाष्प रूप से हैं, किंतु उनका परिमाण उतना ही है जितनी कि शीशी में खाली जगह है। यदि आप शीशी की डाट खोल दीजिए तो अभी गंध सारी कोठरीमें फैल जायगी। अर्थात् अब वही परमाणु बढ़कर कोठरी के बराबर हो गया। अतः वाष्पीय द्रव्य वे हैं जो अपना स्वयं कोई परिमाण या आकार नहीं रखते प्रत्युत जिस पात्र में रक्खे जाते हैं उसी के आकार और परिमाण को ग्रहण कर लेते हैं। भौ० वि०।

(५) चित्रक वा चीता (Plumbago Zeylanica, *Linn.*) सियो० ग्रहणी चि०। विश्वाघ पून। वा० सु० १५ अ० आरग्वध व०। (६) अग्निजार वृक्ष (agnijára) रा० नि० व० २३। (७) पीतवालक। (८) केशर, Saffron (Crocuss ativus, *Linn.*) (९) पित्त (Bile), (१०) अन्न (११) निम्बुक वा नीबू (Citrus medica, (*Gold.*)। रा० नि० व० २१। (१२) स्वर्ण, सुवर्ण (Aurum)। रा० नि० व० १३। (१३) भल्लातक, भिलावाँ (Semecarpus anacardium, *Linn.*) रा० नि० व० ११। (१४) रक्त चित्रक, लाल-चीता (Plumbago Rosea, *Linn.*) रा० नि० व० ६। च० द० ग्रहणी चि०। वृषिराष्टक।

अग्नि-(१५) वैद्यकके मतसे अग्नि तीन की मानी गई हैं-यथा-(क) भौम, जो काष्ठ आदि के जलनेसे उत्पन्न होती है। (ख) दिव्य-जो आकाश में बिजली मे (ग) उदर व जठर, जो पित्त रूप से उपर हृदयके नीचे रहकर भोजन भस्म इसी प्रकार कर्मकांड में अग्नि छः प्रकार मानी गई है। गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्याग्नि, आवसथ्य, औपासनाग्नि। पहिली तीन प्रधान हैं। (१६) वेद के प्रधान देवताओं (अग्नि, वायु और सूर्य) में एक।

अग्नि-आर agni-ára-नैपा० अयार, मे० मो०।

अग्निउ agniu-कुमा० बसोटा, बकाव। मो०।

अग्निउम् agnium-हिं० पुं० बसौटा, अग्निरुहा, मांसरोहिणी-सं०।

अग्निक agnika-हिं० संज्ञा पुं० } (१)
अग्निकः agnikah-सं० पुं० } गोप, बहूटी। अपाडे पोका-बं०। an insect of a bright scarlet colour (Mutella occiden talis) सु० मि० अ०। च० ४ का०। (२) चित्रक वृक्ष (Plumbago zeylanica, *Linn.*) वा० चि० ७ अ०। (३) भिलावाँ, भल्लातक वृक्ष (Semecarpus anacardium, *Linn.*) भौ० प्र० १ भा० ह० व०।

अग्निकर चूर्ण agnikara-chúrna-हिं० पुं० शर्करा, अनार दाना, हड़, सोंचर नोंन, ... को छाल, इनका चूर्ण अग्नि संदीपक और ... सार नाशक है। व्यास० यो० सं०।

अग्निकरो रसः agnikaro rasah-सं० पुं० शिंगरफ को काले बैंगन के रस से ३ बार भावित करें। पुनः वन भाँटा, चित्रक, पीपल की मूल, अमली और केले की जड़ इनके रसों अथवा काथों की क्रम से भावना दें। फिर उसमें मोम, लाइ (चौलाई स्तरदार) आक, थूहर, विवि...

और दाक इनके चार, सज्जी, नवसार, सेंधा नमक, इन्हें शिंगरफ के बराबर मिलाएँ, फिर सर्वतुल्य काली मिर्च तथा मिर्चों से आधी लवंग मिलाकर नींबू के रस से खूब भावना दें। इसे अद्रख या पानके रसके अनुपान से आवश्यकतानुसार वर्त्तना चाहिए।

मात्रा—१-३ मा० पर्यन्त। गुण—यह जठराग्नि को प्रदीप्त करता है।

अग्नि कर्णी agni-karni—सं० स्त्री० (A tree) वृक्ष विशेष। वै० निघ० २ भा० अभिन्यास ज्वर चि०।

अग्नि-कर्म agni-karma—सं० क्ली०, हिं० संज्ञा पुं० ग्रन्थ्यादि रोगों में अग्नि में लाल किए हुए शलाका आदि से किए जाने वाले दाह क्रिया को 'अग्निकर्म' कहते हैं। क्षार से दाह कार्य श्रेष्ठ है गुण के विचार से न कि क्रिया के विचार से। काल—इसके लिए शरद और ग्रीष्मऋतु को छोड़कर अन्य समस्त ऋतु में श्रेष्ठ है। इसके लिए पात्र अर्थात् योग्य रोगी दुर्बल, बालक, वृद्ध और डरपोक प्रभृति के अतिरिक्त अन्य समस्त। सु० सू० १२ अ० वा० चि० १५ अ०।

अग्निका agniká—सं० स्त्री० (Gossypium Indeium) कपास, कर्पास।

अग्नि-काश agni-kásha—हिं० (oxygen) ऊष्मजन, ओषजन।

अग्नि काष्ट agnikáshtha—हिं० संज्ञा पुं०
अग्नि काष्ठम् agnikáshtham—सं० क्लीं०
(१) अगर, अगरु (agallochum) "अग्निकाष्ठ कर्णरेस्यात्" रा० नि० व० २३ (२) शमी काष्ट acacia suma) रा० नि० व० १२। करील।

अग्नि कीट agni-kita—हिं० संज्ञा पुं० [सं०] समंदर नाम का कीड़ा जिसका निवास अग्नि में माना जाता है।

अग्नि-कीलः agni-kilah—सं० पुं० अग्निशिखा। अग्नि ज्वाला-बं० (gloriosa superba) लाङ्गली, कलिहारी।

अग्नि कुक्कुट agni kukkuta—हिं० संज्ञा पुं०
अग्नि-कुक्कुटः agni-kukkutah—सं० पुं०
ज्वलदग्नि तृणोल्का, विद्युत। ज्वलंत-नूड़ी-बं०। (Lightning) जलता हुआ तृण या पुवाल का पूला। लुक। लुकारी।

अग्नि-कुण्ड-रसः agni-kunda rasah—सं० पुं० गन्धक, पारद ४-४ मा०, ताम्रभस्म २ मा०, सिला कज्जलीकर ४ तह मलमल या खादी में बाँध भल्लातक और मागधन के क्वाथ में डालकर १ दिन और एक रात रहने दें। दूसरे दिन निकाल कर १ अहोरात्र गिरनी के दूध में डालकर रक्खें। पुनः सम्पुट में बांध लघु पुट से पकाएँ जिससे कि पारद उड़ न जाए। पश्चात् उपर्युक्त द्रव्यों की पुट दें। इस प्रकार ४ पुट दें। पुनः इसके समान शुद्ध जमालगोटा मिला मर्दन कर २ या ३ रत्ती प्रमाण की गोली बनाएँ। गुण—जल के साथ सेवन करने से रेचन होकर आध्मान, शूल, उदरामय और मलेरिया ज्वर का नाश होता है। र० यो० सा०।

अग्निकुमार-मोदकः agni-kumára-modakah—त्रय, नेत्रबाला, नागरमोथा, दालचीनी, तमालपत्र, नागकेशर, जीरा सफेद, जीरा स्याह, काकड़ासिंगी, कायफल, पुष्करमूल, कचूर, सोंठ, मिर्च, पीपल, बेलगिरी, धनियां, जायफल, लौंग कपूर, कान्तलौहभस्म, शिलाजतु, वंशलोचन, छोटी इलायची बीज, जटामांसी, रास्ना, तगर, चित्रक, लाजवन्ती, गुलशकरी, अभ्रक भस्म, बंग भस्म, मुरामांसी इन्हें समभाग लें, इन्हीं के समान मेथी तथा इस चूर्ण से आधी शुद्ध पिसी भंग लें, इसमें शहद तथा मिश्री उचित मात्रा में मिलाकर मोदक प्रस्तुत करें। मात्रा—१ तो०। अनुपान—जल, बकरी का दूध।

यह सेवन से उग्र संग्रहणी, कास, श्वास, आमवात, मन्दाग्नि, जीर्णज्वर, विषम ज्वर, विदग्ध, अफरा, शूल, यकृत, प्लीहा, १८ प्रकार का कुष्ट उदावर्त, गुल्म तथा उदररोग को नाश करें। भै० र० ग्रहण्यधि०।

अग्नि-कुमार-रसः agni-kumára-rasah—सं० पुं० पारद, गन्धक, वत्सनाग, त्रिकुटा, सुहागा भुना, लौह भस्म, अजवाइन, अहिफेन,

प्रत्येक समान भाग सबके तुल्य अभ्रक भस्म लें। पुनः चित्रक के रस में १ प्रहर मर्दन कर चना प्रमाण गोलियाँ बनाएँ।

गुण—अजीर्ण, संग्रहणी, जठराग्नि की मन्दता, पक्वातिसार को दूर करता और वाजीकरण करता है। र० स०।

(२) मिर्च, वच, कूट, नागरमोथा, इन्हें सम भाग लें, इनके तुल्य मीठा विष लें, उत्तम चूर्ण कर अदरख के रस से खरल कर एक एक रत्ती की गोलियाँ बनाएँ। मात्रा—१ रत्ती।

अनुपान—आम ज्वर में शहद, सोंठ से, कफ ज्वर में सरहालू के रसमें, प्रतिश्याय और पीनस में अदरख के रस में, अग्निमांद्यमें लवंगसे, शोथ (सूजन) में दशमूल क्वाथ के साथ, संग्रहणी में सोंठसे, अतिसारमें सोंठसे, आमातिसारमें सोंठसे, धनियांके क्वाथमें, शहद, अदरखके साथ, पक्वातिसार में पीपर, अदरख के रस के साथ, सन्निपात ज्वरमें कटेरी के रस के साथ, श्वास, खांसी में तैल और गुड़ के साथ, यह चित्त स्वस्थ कारक, श्वास शोष नाशक और जठराग्नि को बढ़ाने वाला प्रसिद्ध अग्निकुमार नामक रस है। भै० र० ज्वराधिकारः।

(३) पारा, गंधक, सुहागा ये समभाग लें, मीठा विष ३ भा०, कौड़ी भस्म २ भा०, शंख-भस्म २ भा०, मिर्च ८ भा०, पारा गंधक की कज्जली कर सब औषधियों को चूर्ण कर मिलाएँ, पुनः पके जम्भीरी रस मे अच्छी तरह मर्दन कर दो दो रत्ती प्रमाण की गोलियाँ प्रस्तुत करें। इसके सेवन से विशूचिका (हैजा) अजीर्ण और वातरोग का नाश होता है। इसमें किसी किसी आचार्यों के मत से १ भाग वच का भी मिलाना चाहिए। रसे० सा० सं०। भै० र० अग्निमा० अधि०। यो० त० अजी० अ०।

नोट—इस नाम के भिन्न भिन्न योग अनेक पुस्तकों में वर्णित हैं।

अग्नि-कुमार-लौह agni-kumára louha—हिं० पुं० शोथाधिकार में वर्णित रस। योग इस प्रकार है—यथा—तूतिया, हींग, सुहागा, सेंधव, श्वेत जीरा, अजवाइन, मिर्च, सोंठ, लौंग, वायविडंग प्रत्येक १-१ तो०। इन सबों के तुल्य लौह तथा पारद ४ तो० व गंधक ४ तो०।

निर्माणविधि—सर्व प्रथम पारद व गंधक की कज्जली कर पश्चात् शेष औषधियों को भली भाँति घोटें पुनः इसको शीशी में सुरक्षित रक्खें। मात्रा—अवस्थानुसार। घृत और मधु। वृ० र० रा० सु० शो०।

अग्निकेतुः agniketuh-सं० पुं० (Smoke) धूम।

अग्नि-कोण agnikona-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (The south-east corner). दक्षिण का कोना, अग्निदिक्।

अग्निक्रिया agnikriyá-हिं० संज्ञा [सं०] (Funeral ceremonies) शव का अग्निदाह। मुर्दा जलाना।

अग्नि-गर्भः agni-garbah-सं० पुं० दारुमारी इ० मे० मे० (Ammannia Baccifera, *Linn.*)

अग्नि-गर्भ agni-garbha हिं० संज्ञा पुं०। **अग्नि-गर्भः** agni-garbhah-सं० पुं० (१) अग्निजार वृक्ष (A plant used in medicine, of stimulant properties) रा० नि० व० ६। (२) शीशा, सूर्य कान्त मणि (The sun stone). (३) शमी वृक्ष (Acacia suma).

अग्नि-गर्भ-पर्वत agni-garbha-parvat हिं० संज्ञा पुं० [सं०]। ज्वाला मुखी (Volcano).

अग्नि गर्भा agni garbhá-सं० स्त्री० (१) शमी वृक्ष (acacia Suma) गुण—तिक्त, कटु, कषाय, शीत वीर्य, रेचनी, कफ, काम, श्वास, कुष्ट, अर्श कृमि नाशक है। भा० पू० १ भा० (२) महा ज्योतिष्मती लता-सं०। बड़ी कागुनी-हिं०। बड़ा लता (Cardiospermum Halicacabum, *Linn.*) रा० नि०। करोल।

अग्नि गर्भा वटी agni-garbhá-vati–सं० स्त्री० र० र०, र० चं०, ज्वराधिकारे। शुद्ध पारा ४ तो० शुद्ध गन्धक ८ तो०, लोह, सुहागा वच, कूट, हींग, त्रिकुटा, और हल्दी ये सब पारे के सम प्रमाण में लें, सबका चूर्ण कर पश्चात् सूरनकन्द, निर्मोकन्द, व्याघ्रनखी (हिं०–बघनहा, सं०–व्याघ्री) और त्रिफला के रस अथवा क्वाथ से अलग अलग भावित करें। फिर १-१ रत्ती की गोलियां प्रस्तुत करें।

गुण—ज्वर, गुल्म, उदर रोग, शूल, यकृत, प्लीहा, कामला, हलीमक, पांडु, कृमिरोग, और कुष्ठ को नष्ट करती है।

अग्नि गर्भो रसः (१ म) agni-garbho rasah–सं० पु० शुद्ध पारा, ताम्र, लोह, अभ्रक, सीसा, बंग प्रत्येक की भस्म, वच्छनाग, सोनामाखी शुद्ध, मुर्दासंग शुद्ध, सुहागा भुना, शिलाजीत, मैनसिल शुद्ध, कसीस और गन्धक शुद्ध प्रत्येक तुल्यभाग और सर्वतुल्य श्वेत आक की जड़ की छाल लेकर घी कुंवार, चित्रक, त्रिफला, अम्लवेत, कपूर, ब्राह्मी और अम्ली के रस (जिसका रस न मिले उसके स्थान में उसका क्वाथ) से सात बार अलग अलग भावित करें, पुनः भिलावे के क्वाथ से २१, गोभी के रस से ६, त्रिकुटे के क्वाथ से १०, निर्मोकन्द क्वाथमें २० और तांबीले ३ भावना दें तो यह सिद्ध होता है। मात्रा – १ माशा।

अनुपान—तुलसी, पीपल और शहद, हड़ और शहद, काला नमक और चित्रक, त्रिकुटा, निर्मोकन्द, चित्रक, अजवाइन, गुड़, पीपल, ब्राह्मी, और शतावरी का चूर्ण अथवा आमले का चूर्ण और शहद अथवा घी और त्रिकुटा है। यह सभी प्रकार के अर्श, मन्दाग्नि, प्रमेह कास और नेत्र पीड़ा शूल, गुल्म, उदररोग, अंधेरी, दमा, उदावर्त, कृमिरोग, पीनस, पेट फूलना, तृषा, प्रयश्लेष्म, प्रसूती, शोथ और पांडु रोग को नष्ट करता है। इसे सेवन करने वालों को बैंगन, तैल, शाक, स्त्री प्रसङ्ग, दिन का सोना, और घोड़े की सवारी मना है। रसायनसारे—अर्श० अभि० (२) ज्वराधिकार रसायनसारे।

अग्नि घृतम् agni-ghritam–सं० क्ली० पीपल, पीपलामूल, चित्रक, गजपिप्पली, हींग, अजमोद, चव्य, पंच लवण, जवाखार, सज्जीखार, हाउबेर, प्रत्येक ८ ८ तो० गदहपूर्ना रस ६४ तो०, घृत ६४ तो०, दही, कांजी, शुक्त घृत के बराबर लें, पुनः विधिवत पकाएँ।

गुण—अर्श, गुल्म, उदर, ग्रन्थि, अर्बुद, अपची, खांसी, कफ, मेद, वायुरोग, मंदाग्नि, शोथ, भगन्दर, बस्तिगत रोग और कृमिगत रोग में हितकर है। च० द०। बंग० से० सं० अर्शो० अ०। अर्श० अ०।

अग्निचक्र agni-chakra–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] योग में शरीर के भीतर माने हुए छः चक्रों में से एक। इसका स्थान भौंहों का मध्य, रंग बिजली का सा और देवता परमात्मा माने गए हैं। इस चक्र में जिस कमल की भावना की गई है उसके दलों (पंखुड़ियां) की संख्या दो और उनके अक्षर ह और क्ष है।

अग्नि-चारः agni-chárah–सं० पु० एक औषधि है, जो पश्चिमी समुद्र के किनारे होती है। (Phaseolus gallus.)

अग्नि-चूड़ः agni-chúdah–सं० पु० (A cock) ताम्र चूड़ पक्षी। कोमड़ा-द्रा० हिं०। कुक्कुट, मुर्ग-हिं०। कुकड़ा-बं०। ग्राम्य व वन्य भेद से ये दो प्रकार के होते हैं। इनमें, (१) ग्राम्य बृंहण, वृष्य, पथ्य, गुरु, शुक्र एवं कफ कर्ता, स्निग्ध, उष्ण, वीर्य और रस में कषैला होता है। (२) आरण्य (जंगली), स्निग्ध, बृंहण, श्लेष्मा कारक तथा गुरु है और वात, पित्त, वमन प्रमन तथा विषम ज्वर नाशक है। भा०। हृद्य, श्लेष्मा नाशक तथा लघु है। रा० नि० व० १९। रुच, स्वाद, (मधुर) कषैला और शीतल है। राज०

अग्निज agnija–हिं० संज्ञा पुं० }
अग्निजः agnijah–सं० पु० } A plant used in medicine of stimulant properties.

(१) समुद्र फल का पेड़, अग्निजार वृक्ष। (२) (Semecarpus anacardium,

Linn.) पिपली, गजपीपल (३) (Gold) सोना, सुवर्ण (Aurum), मांस धातु (Muscle) पे० शु० ।

अग्नि-जननी agnijanani–सं० स्त्री०, हिं० वि० (१) अग्नि से उत्पन्न । (२) अग्नि को उत्पन्न करने वाला (३) अग्नि संदीपक । पाचक ।

अग्नि-जननी-वटी agni-janani vati–सं० स्त्री० पारद, गंधक, सोंठ, सुहागा, वत्सनाभ, कालीमरिच समान भाग लें। पुनः अदरख के रस में मर्दन कर चना प्रमाण गोलियां बनावें। गुण—यह अग्नि प्रदीपक है। भै० र० अग्नि मा० अ० ।

अग्नि-जातः agni-játah–सं० अग्नि जार वृक्ष । (See-agnijára.) रा० नि० व० ६ ।

अग्नि जार agnijára–हिं० संज्ञा पुं० }
अग्नि जारः agnijárah–सं० पुं० }
A plant used in medicine of stimulant properties.) पश्चिम समुद्र में उत्पन्न मामधी प्रसिद्ध सागर सम्भूत औषध विशेष, समुद्र फलका पेड़, इसके पर्याय निम्न हैं:—यथा—अग्नि निर्यासः, अग्निगर्भः, अग्निजः, वडवाग्निमलः, जरायुः, अर्णवोद्भवः, अग्निजातः और सिंधुफल । लक्षण—यह चार प्रकार के वर्ण वाले होते हैं, इनमें लोहित वर्ण का श्रेष्ठ होता है। जैसे—आरामो वृक्षसंस्पर्शी पिच्छिलः सागरोद्भवः। जरायुः स्याच्चतुर्वर्णः तेषु श्रेष्ठः स लोहितः ॥
गुण—कटु रस युक्त, उष्ण वीर्य, लघुपाकी तथा कफ, वायु, सन्निपात, शूल रोग नाशक और पित्त कारक है, यथा—स्यादग्नि जारः कटु रुष्ण वीर्यः गुल्मामय घ्नश्च कफामयघ्नः । पित्त प्रदः सोऽधिक सन्निपातशूलादि शीतामय नाशकश्च ॥ रा० नि० व० ६ । (amber) अम्बर अरहद ।

अग्नि-जालः agnijálah–सं० पुं० अग्निजार, समुद्रफल का वृक्ष ।

अग्नि-जिह्व agnijihva–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] देवता, असुर ।

अग्नि जिह्वा agnijihvá–हिं० संज्ञा स्त्री० }
अग्नि-जिह्विका agnijihviká-सं० स्त्री० }
(Gloriosa Superba, *Linn.*) वृक्ष । इसलांगली-हिं० । ईश लाङ्गलिका–सं० ।
गुण–रसायन, तिक्त, कड़वी, चरपरी, तीक्ष्ण, उष्ण, हलकी, पित्तकारक और को मिटाने वाली है। कुष्ठ, शोथ (सूजन) (बवासीर) व्रण, शूल, श्लेष्मा नाश करने वाली, कफ वात नाशक और गर्भ गिरानेवाली है। भा० पू० १ भ० । (A tongue or flame of fire.) आग की लपट ।

अग्नि-ज्वाला agnijvalá–सं० स्त्री०(1) –हिं० । गज पिप्पली–सं० । पैलांग (Pothos officinalis)–लें० । गज पिप्पल के फल को ही गजपीपल कहते हैं यथा—"कपिवल्ल्याः फलम् प्राज्ञैः कथितं गजपिप्पली"। भा० पू० १ भ० ।
गुण—गजपीपल, चरपरी, वात, कफ अग्नि को दीपन करने वाली और गरम है, अतिसार, श्वास, कंठ के रोग और कृमि रोग नष्ट करने वाली है। (२) कलिहारी (Gloriosa superba) (१) अग्निजार, (Agnijára) (१) जलपिप्पली-हिं० । ढोला–बं० जलपिप्पली-म० । (२) धातकी पु० रा० नि० व० २३ । (३) आग की (Flame) (४) आंवले का पेड़, आम (Phyllanthus Emblica) (५) अग्निबाडा । (Agnibadá)

अग्नि-झाल agnijhála–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्नि ज्वाला । जरायु । सुफेद चित्रक (white lead-wort)–इं० । (२) गज पिप्पली का पेड़ ।

अग्नि-तप्त agni-tapta–हिं० वि० आग से गरम किया हुआ ।

अग्नि-तुण्डा-वटी agni-tundá-vati–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि-तुण्डी वटी:—

अग्नि-तुण्डी-वटी agni-tundi-vati–सं० शुद्ध पारद, वत्सनाभ, गंधक, अजमोद, त्रिफला, सज्जी-खार, जवा-खार, चित्रक, सेंधा नमक, जी

ाला नमक, वायविडंग, समुद्रलवण, त्रिकुटा, त्येक समान भाग, सबके समान कुचला ले चूर्ण करें। पुनः जम्भीरी नीबू के रस में घोट कर मिर्च प्रमाण गोलियां बनाएँ।

मात्रा—१-३ गोली। रसेन्द्र कल्पद्रुम में इसकी मात्रा छः रत्ती लिखी है। परन्तु जब कुचले के स्थान में पकायन के बीज लिए जाएँ तो इसकी मात्रा दो गोली काफी होती है। गुण—इसके सेवन से सम्पूर्ण अजीर्ण और मन्दाग्नि दूर होती है। भै० र०। र० यो० सा०।

न-तुण्डी-रसः agni-tundi-rasah-सं० पुं० पारद शुद्ध, गंधक शुद्ध, विष शुद्ध, अजमोदा (यमानी), त्रिफला, सज्जी, सोडा, जवाखार, चित्रक, जीरा, सेंधा लवण, काला लवण, (सौवर्चल,) वायविडंग, समुद्रलवण, त्रिकुटा, इन्हें समान भाग लें। सब तुल्य विषमुष्टी (कुचिला) लें, चूर्णकर जम्भीरी के रस में घोट मिर्च प्रमाण गोलियां बनाएँ।

गुण—इस सेवन से मन्दाग्नि दूर होती है। शार्ङ्ग० सं० मध्य ख० अ० १२।

ग्निद agnida-हिं० वि० अग्नि दीपन। (Tonic,Stomachic)

ग्नि-दग्ध agni-dagdha हिं० वि०। आग से जला हुआ।

ग्नि-दमनकः agni-damanakah-सं० पुं०
ग्नि-दमनी agni-damani-सं० स्त्री०

Medicinal plant stimulant and stomachic considered as a small species of Cantacarica.

क्षुद्र कंटक वृक्ष विशेष। गणिकारी हिं०। गणिरी -बं०। दुरालभा भेद-हिं०, बं०। धमासा भेद, मणिदमणा-म०। वै० निघ०। कोई कोई शोला को कहते हैं। इसके पर्याय निम्न हैं:— यथा—वह्निदमनी, बहुकंटका, वह्नि कंटकाकिका, गुच्छफला, क्षुद्रफला, क्षुद्रकंटकारी, क्षुद्रदुःस्पर्शा, क्षुद्रकंटकारिका मर्येन्द्रमाता, दमनी। गुण— कटु, उष्ण, रुच, रुचिकारक, अग्निदीपक है।

रा० नि० व० ४। वात, गुल्म तथा कफ नाशक और प्लीहा विकार नष्ट करता है। वै० निघ०।

अग्नि-दाह agnidaha हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) आग में जलाने का कार्य। भस्म करना, जलाना (२) शवदाह, मुर्दा जलाना (Funeral ceremonies.)

अग्नि-दीपक agni-dipaka-हिं० वि० [सं०] जठराग्नि को उत्तेजित करने वाला, पाचक शक्ति को बढ़ाने वाला। अग्नि-वर्द्धक, दीपक (Stomachic)

अग्नि-दीपन agni-dipana हिं० वि० अग्नि-दीपक।

अग्निदीपन agni dipana हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अग्निदीपक] (१) अग्निवर्द्धन। जठराग्नि की वृद्धि। पाचन शक्ति की बढ़ती। (२) अग्नि वर्द्धक औषध। पाचन शक्ति को बढ़ाने वाली दवा। वह दवा जिसके खाने से भूख लगे।

अग्नि-दीपनः agni-dipanah-सं० पुं० (१) वरुण वृक्ष, बरना-हिं०। वरुण गाछ -बं०। (Crataeva religiosa, *Fort.*) भा० पू० १ भा०। (२) अग्नि वर्द्धक (Stomachic, Tonic)

अग्निदीपन रसः agni-dipanarasah-सं० पुं० पारद, मीठा तेलिया, लवंग, गंधक प्रत्येक १ भाग, मरिच २ भाग, जायफल आधा भाग। सबको महीन करके अम्ली के रस की भावना देकर रक्खें। मात्रा—१ मासा।

गुण—इसे अदरख के रसके साथ सेवन करने से शीघ्र ही अग्नि प्रदीप्त होती है। र० प्र० सु० अ० ८।

अग्नि-दीपनी, नीय agnidipani, niya-सं० त्रि० दीपन, अग्नि वर्द्धक, अग्नि वृद्धि करो-हिं० (A medicine which stimulates the digestive fire or increases the appetite, Stomachic.)

अग्नि-दीपनी वटी agni-dipani-vati-सं० स्त्री० गन्धक, काली-मिर्च सोंठ, सेंधा, नागर,

जवाखार समभाग ले मर्दन कर चने प्रमाण गोली बनाएँ। मात्रा–१ गोली।

गुण–यह जठराग्नि को प्रदीप्त करती है।

अग्नि-दीप्ता agni-diptā–सं० स्त्री० महाज्योतिष्मती लता, मालकांगनी, ज्योतिष्मती–हिं०। लताफटकी–बं०। थोर माल कांगनी–म०। (Celastrus paniculata, Willd.) रा० नि० व० ३ भा० पू० १ भा०।

अग्नि-दीप्ति agni-dipti–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] Improved digestion, good appetite) क्षुधा वृद्धि, पाचन शक्ति का बढ़ जाना।

अग्नि-धमनः agni-dhamanah–सं० पुं० (Melia azadirachta, Linn.) कटु निम्ब-हिं०, म०। कटु निम, घोड़ा निम–बं०। देखो–महानिम्ब, बकाइन।

अग्नि-निर्यासः agni-niryāsah–सं० पुं० अग्निजार वृक्ष। रा० नि० व० ६। See agni-jāra.

अग्नि-पत्री agni-patri सं० स्त्री० अग्नि पत्री, अगिया प्रसिद्ध–हिं० (Andropogon Schœnanthus, Linn.)

अग्नि पर्णी agni-parni–सं० स्त्री० वानरी, कौंच, केवाँच। (Mucuna pruriens, D. C.)

अग्नि-परिताप agni-paritāpa–हिं० पुं० आग की जलन (Scorching heat (-of fire).

अग्नि-परीक्षा agnipariksha–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] सोना चाँदी आदि धातुओं की आग में तपाकर परख।

अग्नि,पा (मा) ली agni-pā (ma) li–सं० स्त्री० (The white lead-wort) चित्रक, सुफेद चीता–हिं०। चिते–बं०। मद० २ व०।

अग्नि प्रदीपकानि agni-pradipakāni सं० क्ली० सोंठ अथवा गुड़ के साथ भक्षण की हुई अथवा सेंधालवण के संग भक्षण की हुई हरीतकी निरंतर अग्नि को प्रकाशित करती है।

सेंधा नमक, हर्ड़, पीपल, चित्रक इन्हें समान उष्ण जल के साथ खाने से वृद्धि होती है तथा नवीन अन्न, मांस, घृत किया हुआ शीघ्र भस्म हो जाता है।

सेंधा लवण, हींग, हर्ड़, बहेड़ा, अमलवेतस, सोंठ, मिर्च, पीपल इन्हें और सबके बराबर गुड़ मिला गोलियाँ इसके सेवन से मन्दाग्नि वाला पुरुष अधिक भोजन करता है।

वायविडंग, भिलावाँ, चित्रक, गिलोय, बराबर ले इनके समान गुड़ और गोलियाँ बनाएँ इसके सेवन से मन्दाग्नि होती है। गुड़ के साथ सोंठ अथवा पीपल, हर्ड़ अथवा अनार को आम रोग में, अर्श गुदा के रोगों में, मल के विबन्ध में नित्य सेवन करें।

भोजन के प्रथम नमक और अदरख का हृदय को हितकारक तथा दीपन है। चक्र० अग्नि० मा० चि०।

अग्निप्रदीपरसः agni-pradīpa-rasah सं० पारद, गंधक, सीसा, वत्सनाग, प्रत्येक तो० कज्जली कर आतिशी शीशी में यन्त्र द्वारा ८ प्रहर की अग्नि से पकाएँ। तो० त्रिकुटा मिलाकर बारीक पीस इस के मर्दन कर १–१ रत्ती प्रमाणकी गोलियाँ बनाएँ

गुण–इसके सेवन से मन्दाग्नि, क्षय, और स्वेदात रोग दूर होते हैं। र० प्र० अग्नि० मा० अ० र० प्र० सु० अ० ८।

अग्नि प्रभा वटी agniprabhā-vati स्त्री०। सेंधा नमक, नौसादर, जवाखार, नमक, सिंदूर, प्रत्येक समान भाग ले पटोल की जड़ के रस से भावना देकर प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसे पंचांग के क्वाथ से दें तो, घोर यकृत, प्लीहा, वातष्ठीला, मन्दाग्नि और गुल्म का होता है। र० यो० सा०।

अग्नि प्रस्तर agniprastara–हिं० संज्ञा पुं०

अग्नि प्रस्तरः agni-prastarah–सं० पुं०

(Fire-Stone, a glint) अग्नि उत्पन्न
नेवाला पत्थर । वह पत्थर जिसमें आग निकले ।
अग्निजनक पाषाण, चकमक पत्थर ।
-फला agni-phalá-सं० स्त्री० (Celastrus paniculata, *Willd.*) नता
ज्योतिष्मतीलता, ज्योतिष्मती लता, मालकांगनी
-हिं० । बड़लना फटकी-बं० । थोर मालकांगनी
-म० । रा० नि० व० ३ ।
-वाव agni-báva-हिं० संज्ञा० पुं०
[सं० अग्नि+वायु] घोड़ों और दूसरे चौपायों
का एक रोग, जिसमें उनके शरीर पर छोटे छोटे
चावले निकलते हैं और फूट कर फैलते हैं ।
यह रोग अधिकतर घोड़ों को होता है । (२)
मनुष्यों का चर्मरोग जिसमें शरीर पर बड़े बड़े
लाल चकत्ते वा ददोरे निकल आते हैं और साथ
ही कभी कभी ज्वर भी आ जाता है । पित्ती ।
ददरा । शुद्धपित्ती ।
-बाहुः agni-báhuh-सं० पुं०
(smoke) धूम्र ।
-भम agnibha-सं० क्लीं० } (Gold)
-भः agnibhah-सं० पुं० }
सुवर्ण, सोना । (aurum) रा० नि०
व० १३ ।
-भा agnibhá-सं० स्त्री० celastrus paniculata.-मालकाँगनी ।
-भु agnibhu-सं० क्लीं० Gold, (Aurum) सुवर्ण । सोना । रा० नि० व० १३ ।
(२) जल ,water (Aqua)
-मणि agni-maṇi-हिं० संज्ञा पुं० }
-मणिः agni-maṇih-सं० पुं० }
(The sun stone, a glint सूर्यकान्त
मणि । आतिशी शीशा-फ़ा० । एक बहुमूल्य
पत्थर । (२.) सूर्य-मुखी शीशा ।
-मथनः agni-mathanah-सं० पुं०
(Premna Integrifolia, *Linn.*)
अरनी-हिं० अग्नि मन्थ, गणिकारिका-सं० ।
गनिरी वा घारगन्त-बं० । रा० नि० वा० ६ ।
-मन्थ agni-mantha-हिं० सं० पुं० }
-मन्थः agni-manthah-सं० पुं० }

(१) (Premna Integrifolia)
अरनी-हरनी, अगेथ, टेकार । (२) अग्निवधू
पूर्व देशमें-उ० । सु०सू० ३६ अ० । (३)
सशोधन । वा० उ० २० अ० । (४) शान,
सर्जवृक्ष (५) अरणी नामक मन्त्र जिसमें यज्ञ
के लिए आग निकाली जाती है ।

अग्नि-मन्थादि-क्षार तैल agnimanthádi-kshára tail-सं० पुं० अरणी, सोनापाठा,
ढाक, तिलनाल, दला, केला और अपामार्ग ।
इनके क्षारों के पानी से सिद्ध किया हुआ तैल
उदररोग और वातज हृद्रोगों का नाश करता है ।
अग्नि-मयः agni mayah-सं० पुं० सुफेद
विधारा, श्वेत वृद्धदारक । श्वेत विधताड़क-बं० ।
श्वेत वरधारा-म० । वै० नि० । श्वेत बुड्ढा ।
See-Vidhárá.
अग्निमा agnimá-(Anona squamosa)
सीताफल, शरीफा । फा० इं० ।
अग्नि-मात agni-máta-तें० चित्रक, चीता
(Plumbago Rosea, *Linn.*) फा०
इं० भा० २ ।
अग्नि-मांद्य agni-mándya-हिं० संज्ञा०पुं० }
अग्नि-मांद्यम् agni-mándyam-सं० क्लीं० }
(Indigestion) अजीर्ण, मन्दाग्नि ।
(Anorexia) जठराग्नि की कमी । पाचन-
शक्ति की कमी । भूख न लगने का रोग ।
अग्नि-मारुति agni-máruti-हिं० संज्ञा पुं०
[सं०] अगस्त्य मुनिका एक नाम ।
अग्नि-मुखम् agni-mákham-सं० क्लीं० (१)
(Safflower carthamus-Tinctorius) कुसुम्भ पुष्प, कड़ का फूल । (२)
Saffron (Crocus) कुंकुम, केशर ।
अग्नि-मुख agni-mukha-हिं० संज्ञा पुं० }
अग्नि-मुखः agni-mukhah-सं० पुं० }
(Plumbago Zeylanica, *Linn.*)
(१) चित्रक, चीता । चितेगाछ-बं० । (२)
भिलावा, भल्लातक । भेलागाछ-बं० । (Semecarpus anacardium, *Linn.*)
अग्नि-मुखः agni-mukhah-सं० पुं० पारा,
गन्धक, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, अमलवेत,

सिंगिया, त्रिफला प्रत्येक समान भाग लें। सब को कूट-पीस, धतूरा, पान, कटेरी, अरनी, कमल, नेत्रवाला, अडूसा, कुचिला, थूहर और बिजौरा नीबू के रसकी पृथक् २ भावना दें तथा मय के बराबर अदरख के रस की भावना दें।
मात्रा–३ रत्ती।

गुण—इसके सेवन से प्रबल शूल दूर होता है।
शू० र० रा० सु०। शूल चि०।

अग्नि-मुख-चूर्णः agni-mukha-chúrnah-सं० पुं० हींग १ मा०, बच २ मा०, पीपल ३ मा०, अदरख ४ मा०, अजवाइन ५ मा०, हड़ ६ मा०, चित्रक ७ मा०, कूट ८ मा० इन सब का चूर्ण कर सेवन करने से उदावर्त, अजीर्ण, प्लीहा, उदर व्याधि, अंगों का टूटना, विषमज्वरविकार, बवासीर, कफ, और गुल्म दूर होता है। इसे वातव्याधि में गर्म जल, मद्य, दही, दही के पानी इसमें किसी एक के साथ दें।

बं० से० सं० यो० त० अजी० अ०

(२) जवाखार,सज्जी,चित्रक, पञ्चलवण, इलायची, पत्रज, भारङ्गी, भूनी हींग, पुष्कर मूल, कचूर, निसोथ, नागरमोथा, इन्द्रयव, डांसरा (तन्तरीक) अमलवेत, जीरा, आमला, अजवाइन, हड़ की छाल, पीपर, तिलखार, सहिजन खार, ढकारखार, सार इन्हें सम भाग ले महीन पीस कपड़ छान कर रस बिजौरेकी आठ २ पुट दें। सिद्ध कर प्रति दिन २ टंक जल के साथ लें तो भूख लगे, तथा अजीर्ण, गोला, उदर व्याधि, अण्डवृद्धि, और वातरक्त दूर होता है। अमृ० सा०

अग्नि-मुख-चूर्णम् (बृहत्) agni-mukha Chúrnam-(Brihat)-सं० पुं० सज्जीखार, यवखार, चित्रक, पाठा, करञ्ज, पाँचों नमक, छोटी इलायची, तमालपत्र, भारङ्गी, वाय विडंग, हींग, पुष्करमूल, सोंठ, दारुहल्दी, निसोथ, नागरमोथा, बच, इन्द्रजौ, कोकम्, जीरा, आमला, गजपीपल, कलौंजी, अमलवेत, अम्ली, अजवाइन, देवदारु, हड़, असीम, काली निसोथ, हाऊबेर, अमलतास, तिल, मोखा, सहिजन, तालमखाना; और पलाश इनके खार, गोमूत्र में तपाकर बुझाया हुआ मण्डूर, प्रत्येक तुल्य भाग लेकर बारीक चूर्ण कर लें। पुनः तीन २ तक बिजौरे का रस, सिरका, और रस की भावना दें। मात्रा – १-३ मा० गुण—इसके सेवन से अजीर्ण, सम्पूर्ण प्लीहा, बवासीर, उदर रोग, अन्त्रवृद्धि, वातरक्त, और मन्दाग्नि दूर होती है।

र० यो०

अग्नि-मुख-ताम्रम् agni-mukha-t... –सं० पुं०। पारा १ तो०, गन्धक १ तो० कर कज्जली बनायें, पुनः अर्जुन वृक्ष की के रस अथवा क्वाथ से घोट कर २ तो० के पत्र पर लेपकर पके हुए गूलर के पत्ते कर कच्चे सूत से लपेट के मिट्टी के बर्तन पाँचों नमक और चूने के बीच में क्रम रखकर अन्धमूषा में रखकर भाथी से धौंके सिद्ध हो जाय तो निकाल कर रक्खें। मात्रा रत्ती से प्रारम्भ करें और रोजाना १ रत्ती बढ़ा १ मा० तक पहुँचाएँ। यह रस अम्ल पित्त, शूल, और दारुण पक्ति शूल को नष्ट करता है सात रात्रि तक इसका प्रयोग करने से निर्मल होजाता है।

अम्लपित्ताधिकारे—र०र० र० च०।

अग्नि-मुख-मंडूरम् agni-mukha-maṇḍ ram–सं० पुं०। लौह किट्ट ४८ तो० अठगुने गोमूत्र में पकायें पुनः चित्रक, सोंठ, पीपर, पीपरामूल, देवदारु, नागरमो त्रिकुटा, त्रिफला, वायविडंग इनका चूर्ण लेकर उक्त मण्डूर में मिलाकर उपयोग अमाशय शोथ तथा पुराने पांडु रोग का होता है।

भैप० र० शोथाधिकारे।

अग्नि-मुख-रसः agni-mukha-ras पुं०। पारा, गन्धक, विष, सम भाग लें, अदरख के रस से खरल करें; पुनः पीपलखार, अम्लीखार, अपामार्गखार, सज्जीखार, जवाखार सोहागा, जायफल, लौंग, त्रिकुटा, ये भाग लें, शंख भस्म, लवणत्रय, हींग, जीरा दो दो भाग लें सब को चूर्ण कर नीबू रस से खरल कर एक २ रत्ती प्रमाण

बनाएं, इसके सेवन से अजीर्ण, शूल, विशूचिका, हिचकी, गोला, मोह नष्ट होता तथा तत्काल पाचन दीपन होता है।

यो० त०- रसेन्द्र स०।

अग्नि-मुख-लवणम् agni-mukha-lavanam–सं०पु०। चित्रक, त्रिफला, जमालगोटा मूल, निसोथ, पुष्करमूल इन्हें समान भाग लें, और सर्वतुल्य सेंधालवण लेकर चूर्ण बना थूहर के दुग्ध में भावना देकर थूहर के कांड में भरकर साधारण करौटी कर सुखाएं परचात अग्नि दे सुन्दर पाक करें, पुनः चूर्ण कर उष्ण जल से सेवन करने से अग्नि को दीप्त करता तथा यकृत, तिल्ली, उदर रोग, आनाह, गुल्म, बवासीर, पसली के शूल को दूर करता है।

भैष०र० अग्नि मान्द्याधिकारे। वं०से०सं०।

अग्नि-मुख-लौहम् agni-mukha-louham–सं० पु०। निसोथ, चित्रक, निर्गुण्डी, थूहर, मुण्डी, भू-आमलकी प्रत्येक आठ २ पल लें, एक द्रोण (१६ सेर) जल में पकाएं जब चतुर्थांश रहे तो इसमें वायविडंग १२ तो०, त्रिकुटा ६ तो०, त्रिफला २० तो०, शिलाजतु ४ तो०, मैनशिल व सोनामाखी से मारा हुआ रुक्न लौह भस्म का चूर्ण ४८ तो०, घृत, शहद, मिश्री प्रत्येक १६-१६ तो० इन्हें मिलाकर यह लौह प्रस्तुत करें, पुनः उचित प्रमाण से इसे सेवन करने से अर्श, पांडु, शोथ, कुष्ठ, प्लीहा, उदरामय, असमय केशों का श्वेत होना, आमवात, गुदा रोग, इन्हें सहज ही नाश करता है, इसके सिवाय मन्दाग्नि को दूर करते हुए समस्त रोगों को उचित विधान से बर्तने से दूर करता है। इसके सेवन करने वालों को ककार वाले पदार्थ वर्जित हैं। मात्रा–१-४ मा०। भैष०र० अर्शोधिकारे। वृ० रस० रा० सु० वं० से० सं०।

अग्निमुखा agni-mukhá–सं० स्त्री० The marking-nut tree (Semecarpus anacardium, Linn.) भल्लातकी भिलावाँ (अ)। भेला–बं०। (२) लाङ्गलिका (वि०)–सं०। कलिहारी–हिं०। ईशलाङ्गलीया–बं०। (Gloriosa Superba, Linn.)

अग्निमुखी agni-mukhí–सं० स्त्री० भल्लातकी भिलावाँ भेला–बं०। (Semecarpus anacardium, Linn.) मे० खचतुष्क। रत्ना०। च० सू० ४ अ० भेदनीय। (२) लांगलिका। ईशलाङ्गलीया–बं०। मे० खचतुष्क। भा० पू० २ भा० अने० वं०। (३) कक्कट–सं०। जलचीलाई-हिं०। कलिहारी-हिं० (Gloriosa superba, Linn.) कौंचड़ा–बं०। रा० नि० व० ४। भा० पू० ह० व०। गुडूची, गुरुच, गिलोय (Tinospora Cordifolia, Miers.)

अग्नि-मुखो-रसः agni-mukho-rasah–सं० पु०। पारा, गन्धक, वत्सनाग तुल्य भाग लें चूर्ण कर अदरख के रस की भावना दें। पुनः पीपल (वृक्ष) इमली, और चिरचिरा इनके क्षार, यवक्षार, सज्जी और सोहागा, जायफल, लवंग, त्रिकुटा, त्रिफला ये सब समान भाग, और शंख भस्म, पांचो लवण, हींग, जीरा प्रत्येक पारे से द्विगुण डाल कर अम्ल योग से खूब घोटकर २ रत्ती प्रमाणकी गोलियां प्रस्तुत करें। गुण—पाचन, दीपन, अजीर्ण, शूल, हैजा, हिचकी, गुल्म और उदर रोग को नष्ट करता है। रसेन्द्रसंहिता में इसे अग्निमुखरस कहा है।

र० यो० सा०।

अग्नियूम agniyúma-हिं० थकार, बकर्च, बसीटा। प्रेम्ना लैटिफोलिया (Premna Latifolia, Roxb.)–ले०। अगिनिऊ-कुमा०। बन, खार, गिथान– पं०।

निर्गुण्डी वर्ग

(N. O. Verdonaceæ)

उत्पत्तिस्थान—उत्तरी भारतवर्ष कमायूं से भूटान तक और खसिया पर्वत तथा सामान्यतः बंगप्रदेश के मैदान।

प्रयोग—उपर्युक्त पौधे के बकल का दुग्ध सूजन पर लगाया जाता है, और पशुओं के उदर शूल में इसका रस प्रयुक्त होता है (स्टेट्किन्सन); पञ्जाब देशमें इसका रस औषधितुल्य

प्रयोग में लाया जाता है। स्टुवर्ट। इं० मे० प्लां०।

अग्निरचस् agnirachas सं० पुं०
अग्निरजः agnirajah; (१) बीरबहूटी,
अग्निरजाः agni-rajah इन्द्रवधू, इन्द्रगोप-
अग्निरज्जुः agni-rajjuh: कीट-हिं०। या-
पांडे पोका-बं०। हे० च० ४। An insect of bright-scarlet colour. (Mutella occidentalis.)। (२) सुवर्ण gold (Aurum)

अग्नि रसः (प्रथमः) र० र० यक्ष्माधिक.रे। हीरा भस्म २ भा०, सुवर्ण भस्म ३ भा०, पारद भस्म ६ भा०, इन्हें ग्रहण कर दिन भर गोखरु के रस में भावना दें। शाम को उसका चूर्ण कर लें। मात्रा-१ रत्ती०। अनुपान थूहर की जड़ और जम्भीरी का रस। जिस राजयक्ष्मा के साथ ज्वर भी हो उसमें इसका प्रयोग करना उचित है। इस नाम के चार योग इन ग्रंथों में आए हैं। जैसे-(२) र० का०, र० क० ल०, र० र० स०, नि० र०,र० का०,कासाधि कारे।

अग्नि-रसः agni-rasah-सं० पुं० मिर्च, मोथा, वच, कूट, समान भाग लें, सब तुल्य विष लें, पुनः अदरख के रस से मर्दन कर मुद्ग प्रमाण की गोलियां बनाएँ। यह हर प्रकार के अजीर्ण को नष्ट करता है।

भै० र० अजी० अधि०।

अग्निरसः agni-rasah-सं० पुं० (१) (Pancreatic juice) क्लोम रस, क्लोमाशय रस। क्रसारिल् इन्किरास-अ०। (२) अग्निमान्द्याधिकारोक्त रस विशेष।

अग्निरुहा agni-ruha-सं० स्त्री० मांसरोहिणी। The Indian red wood tree (Soymida Febrifuga, *Juss.*) रा० नि० व० १८।

अग्निरोहिणी agni-rohini-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (Soymida Febrifuga, *Juss.*) (१) मांसरोहिणी-सं० हिं०, बं०। वा० उ० ३१ अ०। (२) Plague उक्त नाम का क्षुद्र रोग विशेष। यह त्रिदोष जन्य होता है। लक्षण-पित्ताधिक वातादि के कारण बगल में, ज्वर पैदा करने वाली, को विदीर्ण करने वाली; अग्नि के समान जो फुन्सियां हो जाती हैं उन्हें कहते हैं। ये पांच या सात या पन्द्रह रोगी का प्राय नाश कर देती हैं। वा ३२ अ०।

अग्नि-लोहः agni-louhah-सं० पुं० चित्रक, निर्गुण्डी, सेंहुड़, मुण्डी, प्रत्येक ८-८ पल, १ द्रोण [१६ सेर] पकाएँ। पुनः त्रिकटु ३ पल, त्रिफला ४ पल, शिलाजीत १ पल, चूर्ण १२ पल, दिव्यौषधि १२ पल, घृत १२ पल लें। इनको एकत्र चूर्ण, पल, मधु २४ पल, शर्करा २४ पल विधिवत् पकाएँ। जब सिद्ध होकर शीतल हो तो उतार कर रख लें। गुण-शर्करा मात्र करता है।

नोट:—दिव्यौषधि-स्वर्णमाक्षिक, मैनशिल यवमलौह-वज्र-पारद-लौह। वै० श०

अग्निवक्त्रः agni-vaktrah-सं० पुं० (Semecarpus anacardium, *Linn.*) भल्लातक वृक्ष, भिलावां का पेड़-हिं० गा.जे-बं०। लै० मद० व० १ (२) (चीता) क्षुप-हिं०। चिते गाछ-बं० (Plumbago zeylanica, *Linn.*)

अग्निवल्ला agni-vandá-सं० स्त्री० ज्वाला (एक गरम दवा है)। Sozjvala।

अग्निवती agni-vati-सं० स्त्री० (Andropogon Schœranthus, *Linn.*) अगिया घास एक प्रसिद्ध औषध है।

अग्निवधू agni-vadhu-सं० अरनी (Premna Integrifolia, *Linn.*)

अग्निवर्द्धकः, नः agni-vardhakah,-नः सं० त्रि० (Stomachic tonic) अग्नि उद्दीपक मरिच प्रभृति, आग्नेय द्रव्य अग्निवृद्धि कर। देखो दीपक [न] गाढ़०।

... उद्दीपक।
hih

... सं० स्त्री० जठराग्नि वृद्धि। च० द० अर्श चि०।

अग्निवल्लभ agni-vallabha हिं० संज्ञा पु० (१) शालवृक्ष। साल का पेड़। (Shorea Robusta, *Gærtn.*) (२) शाल से निकली हुई गोंद। Shorea Robusta, the gum of-)। मद० व० ३। See sarjah. राल, धूप, सर्ज, योनिशाल विशेष। धूना-पं०। रेजिन (Rosin)-इं०। हे० च०। रा० नि० व०। ६, १२

अग्निवल्लभः agni-vallabhah-सं० पु० दे० अग्नि वल्लभ।

अग्निवल्ली agni-valli-सं० स्त्री० (A creeper, turning or climbing plant) लता विशेष। र० सा० सं० अग्नि-व्यास ज्वर० स्वच्छन्दनायक रस।

अग्निवासः agnivásah-सं० अग्निका स्थान।

अग्निवाहः, हुः agni váhah-huh सं० पु० धूम। स्मोक (Smoke)-इं०। हे० च० ४ का०। (२) a goat अज, बकरा।

अग्निविकारः agni-vikárah-सं० पु० पुं०, उक्त नाम के रोग का एक भेद। यह चार प्रकार का होता है। शार्ङ्ग० पू० ७ अ०। देखो अग्निः।

अग्निविवर्द्धनः agni-vivarddhanah-सं० त्रि० यमानी, अजवाइन, Carum copticum, *Benth.*)

अग्निवर्द्धक agnivarddhaka-हिं० (१) दीपन (stomachic) (२) यमानी (अजवाइन) प्रभृति (Carum copticum, *Benth.*)

अग्निविसर्पः agnivisarpah-सं० पु० अग्नि-विसर्प, विसर्पभेद (Pain from a boil)

अग्निवीजम् agni-vijam-सं० क्लो० स्वर्ण, सुवर्ण, gold (Aurum)-त्रिका०।

अग्निवीजः agni-vijah-सं० पु० अग्निमन्थ, अरनी (Premna Integrifolia, Linn.)

अग्निवीर्य्यम् agni-virryyam-सं० क्लो० स्वर्ण, सुवर्ण। gold (aurum) रा० नि० व० ३।

अग्निवीसर्पः agnivisarpah सं० पु० (Pain from a boil) द्वन्द्वज विसर्प का एक भेद है। देखो विसर्पः। Erysipelas.

अग्निविसर्प के लक्षण-वात, पित्त, विसर्प में ज्वर वमन, मूर्छा, अतिसार, तृषा, भ्रम, अस्थिभेद, अग्निमांद्य, तमकश्वास और अरुचि ये सब लक्षण होते हैं। इसमें सम्पूर्ण शरीर जलते हुए अंगारों की भांति प्रतीत होता है। शरीर के जिस जिस अवयव में विसर्प फैलता है वहीं ही अंग बुझे हुए अंगार के समान काला, नीला, अथवा लाल हो जाता है। अग्नि से जले हुए स्थान की तरह वह फुन्सियों से व्याप्त हो जाता है और शीघ्रगामी होने के कारण हृदय प्रभृति मर्म स्थानों पर शीघ्र ही आक्रमण करता है। इसमें वायु अत्यन्त प्रबल होकर शरीर में पीड़ा, संज्ञानाश, निद्रानाश, श्वास और हिचकी उत्पन्न करता है। विसर्प रोगी की ऐसी दशा हो जाती है कि वेदना से ग्रस्त होने के कारण भूमि शय्या या आसन पर कहीं, इधर उधर लेटने से सुख प्राप्त नहीं होता और देह मन और श्रम जनित वेदना से ऐसा दुःखित हो जाता है कि दुष्प्रबोध अर्थात् चिरस्थायी निद्रा में लीन हो जाता है। इन लक्षणोंसे युक्त विसर्प को अग्नि विसर्प कहते हैं। मा० नि० १३ अ०।

चिकित्सा—अग्नि विसर्प में सौ बार धुला हुआ घी या केवल शतधौत अथवा मुलहठी का शीतल क्वाथ, कमलका जल, दूध या ईखका रस इनका परिसेक करें और महातिक्त घृत को पान-लेपन और परिसेक के काम में लावें। मा० च० १८ अ०।

अग्निवृद्धिः agni-vriddhih-सं० स्त्री० अग्निदीप्ति, क्षुधावृद्धि (Increase of digestive fire or appetite, Improved digestion, Good appetite)

अग्निवृद्धिकर agni-vriddhikara-सं० पुं० अग्निवर्द्धक (Stomachic.)

अग्निवेण्डु पाकु agni-vendupáku-ते० दाद-मारी, चँकवड़, चकमर्द (Cassia tora, Linn.)

अग्निवेन्द्र पाकु agni-vendra-páku-हिं० (Ammania Baccifera, Linn.) अग्निगर्भ-सं० । दादमारी हिं० । फा० इं० ३ भा०, इं० मे० मे० ।

अग्निवेश agni vasha-हिं० संज्ञा पु० [सं०] आयुर्वेद के आचार्य एक प्राचीन ऋषि का नाम जो अग्नि के पुत्र कहे जाते हैं ।

अग्निशिख agnishikha-हिं० संज्ञा पुं०
अग्निशिखम् agnishikham सं० क्लीo
Gold (aurum) (१) स्वर्ण, सुवर्ण, सोना । रा० नि० व० १३ । (२) कुसुम्भ पुष्प-सं० । कुसुम या बरें का फूल । कुसुम फूल-बं० । safflower. (Carthamus tinctorius, Linn.). (३) कुंकुम, केशर ।

Saffron (Crocus Sativus, Linn.) भा० पू० १ भा० । मद० व० ३ । (४) दीपक । (५) (An arrow) बाण, तीर ।

अग्निशिखा agni-shikhá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० । (१) लांगलिका औषधि-सं० । करि [-लि] हारी-हिं० (Gloriosa superba Linn.) भा० पू० १ भा० गु० व० । कलियारी व करियारी नामक पौधा जिसकी जड़ में विष होता है । (२) अग्नि की ज्वाला, आग की लपट ।

अग्निशिखः agnishikhah-सं० पुं० (१)कुंकुम, केशर । (Crocus sativus, Linn.) (Shrub of saffron.) । रा० नि० व० १२ । (२) लांगलिका वृक्ष सं० । कलिहारी-हिं० । विषलाँगलिका गाछ -बं० । (Gloriosa superba, Linn.) । रत्ना० (३) कुसुम्भ वृक्ष-सं० (Safflower Carthamus Tinctorius, Linn.) श० र० । (४) पूति करञ्ज-सं० । कट करञ्ज-हिं० । (Cæsalpinia Bonducella, ming.) (५) सूरणः (न)-सं० । -हिं० । ओल गाछ-बं० । ([illegible] allus campanulatus, Blu) प० मु० ।

अग्निशिर agni-shisha-ते० नाट का नाग, कलिहारी, लांगली । (Gl. Superba, Linn.) । इं० मे० ।

अग्निशिषा agni-shishá-सं० स्त्री० (Amaranthus spinosus, W.) तण्डुलीय, चौलाई । (२) (Gl. superba) कलिहारी, (३) (Plumbago zeylanica.)

अग्नि शुद्धि agnishuddhi-हिं० संज्ञा [सं०] (१) अग्नि से पवित्र करने क्रिया । आग दिखाकर किसी वस्तुको । (२) अग्नि-परीक्षा ।

अग्निशेखरम् agni-shekharam-सं० (Saffron Crocus Sativus, Lin.) कुंकुम, केशर । रा० नि० व० १२ । ... पुष्प, Safflower (Carthamus tinctorius, Linn.) । (३) -सं० । कलिहारी-हिं० । (Glo. Superba, Linn.) (४) नामक शाक भेद ।

अग्निष्टुत् agni-shtut-हिं० सं० पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जो एक दिन में होता है । यह अग्नि ष्टोम यज्ञ का ही ...

अग्निष्टोमः agni-shtomah-सं० (The moon plant) सोमलता, सु० चि० २६ अ० । (२) स्वर्ग की ... से किया जाने वाला एक यज्ञ विशेष ।

अग्निष्ठः agni-shthah-सं० पुं० तंडुल आदि अथवा कोई भी शाक आदि का लोह पात्र ।)

अग्निष्वात्ता agni-shváttá-हिं० संज्ञा [सं०] अग्नि-विद्युत आदि विद्याओं जानने वाला ।

अग्निसखा agnisakhá–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] वायु, हवा।

अग्निसंस्कारः agni-sanskárah–सं० पुं० (१) अग्निदाह कर्म (Funeral ceremonies)। मृतक के शव को भस्म करने के लिए उस पर आग रखने की क्रिया।
(१) आग का व्यवहार। तपाना। जलाना।
(२) शुद्धि के लिए अग्नि स्पर्श कराने का विधान।

अग्निसंस्पर्शा agni-sansparshá–सं० स्त्री० पर्पटी नामक सुगन्ध द्रव्य, पद्मावती, यह उत्तर में प्रसिद्ध है। भा०पू०पू० १ भा०क० व०। पपड़ी (-री) पपरी (-ड़ी)-हिं०।

अग्निसंदीपनः agnisandipanah–सं० त्रि० अग्निवर्द्धक, क्षुधावर्द्धक (Increasing appetite)

अग्निसंदीपनोरसः agni-sandipano-rasah सं० पुं० । पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिर्च, पञ्चलवण, जवाक्षार, सज्जीक्षार, सोहागा, सफेद जीरा, स्याह जीरा, अजवाइन, वच, सौंफ, हींग, चित्रककी छाल, जायफल, कूट, जावित्री, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, अम्लीक्षार, अपामार्ग क्षार, विष, पारा, गंधक, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, वंग भस्म, लौंह, इन में प्रत्येक एक १ भाग, अम्लवेत २ भा०, शंख भस्म ४ भा० सबका चूर्ण कर पञ्चकोल, चित्रक, अपामार्ग के क्वाथ की भावना दें, इसी तरह खट्टी लोनिया के रस की ३ तीन, तथा नीबू के रस की २१ इक्कीस भावना देकर बेर तुल्य गोलियां बनाएँ, सायंकाल व प्रातःकाल इसके सेवन से, तथा दोषानुसार अनुपान से यह रस मंदाग्नि को प्रज्वलित करता तथा अजीर्ण, अम्लपित्त, शूल और गुल्म को नष्ट करता है।

(२) शुद्ध पारा और गन्धक बराबर लेकर कज्जली कर के गाढ़े वस्त्र में उसको बांध दें। पुनः १ घड़े में नीचे बालू भरकर उस पोटली को इसमें रख दें और ऊपर से घड़े को बालू से भर दें। उसके ऊपर से दो दिन तक मृद्वग्नि जलाएँ अथवा उसको गजपुट में १ दिन तक पकाएँ। सिद्ध होने पर इसकी मात्रा २ रत्ती देने से जठराग्नि अत्यन्त प्रदीप्त होती है।

वृ० रस० रा० सु० अजीर्ण० चि०, भैष०।

अग्नि सन्निभा वटी agnisannibhávati सं० स्त्री०, टी०, र० रा०शि०, र० (भा०) ना० चि०, अजीर्णाधिकारे।

४० तोले कुष्ठे के बीज और गुवाक्ष (इन को दल कर उनकी जो कोठी बनाई जाती है उसको गुवाश्यु या गुवाक्ष कहते हैं) में उतनी ही हरड़ें, उबाले हुए सिंघाड़ा, हींग, त्रिकुटा, त्रिदीप्य (अजवाइन, अजमोद, खुरासानी अजवाइन) पारा, गंधक, ये सब ४ तो० मिलाकर घोटकर बारीक कज्जली के माफिक चूर्ण बनाएँ और सब चीजें कुचिले और इन वाले कल्क में मिला के जंगली बेरकी गुठली के सदृश गोलियां बनाएँ। गुण—कफ स्राव, मन्दाग्नि, तन्द्रा, स्वरभेद, अफारा, शूल, उदर रोग, खांसी, हिचकी, वमन, और कृमिरोग को नष्ट करती है। इसे अगस्त्य, हारित और पाराशरजी ने कहा है।

अग्निसम्भवः agni-sambhávah–सं० पुं० (Wild Saffron) जंगली कुसुम, अरण्य कुसुम वृक्ष। वन कुसुम–बं०। रा० नि० व० ४। (१) अग्निजार वृक्ष (Agnijára) रा०नि० व० ६।

अग्निसहायः agnisahayah }
अग्निसखः agni sakhah } सं० पुं०
(१) (Wild pigeon) जंगली कबूतर क्योंकि उसके मांस से जठराग्नि तीव्र होती है। वन्यपारावतः–सं०। घुघु–बं०। होगलापाखी-म०। रा० नि० व० १६। (२) वायु, हवा (air, wind)। (३) smoke धूम।

अग्निसात् agnisát–हिं० वि० [सं०] आग में जलाया हुआ, भस्म किया हुआ।

अग्निसादः agni-sádah–सं० पुं० (Indigestion) अग्निमांद्य, अपच, अजीर्णता, कफ द्वारा जठराग्नि का निस्तेज होना, मन्दाग्नि, सा० कौ० ज्व० चि०।

अग्निसाध्य agnisádhyah–सं० त्रि० अग्नि दाहसाध्य, अग्नि से जलने से जो ठीक हो। च० द० अर्श० चि०।

अग्निसारम् agnisáram–सं० स्त्री० रसाञ्जन, रसवत (A sort of collyrium) रा० नि० व० १३।

अग्निसारा agnisárá–सं० स्त्री० (१) (The fruitless branches) फल शून्य शाखा, फल रहित डालियाँ। रा० नि० व० २। (२) मञ्जरी, बौर, मुकुल (A blossom)

अग्नि सुन्दर रसः agni-sundara-rasah सं० पुं० अजीर्णाधिकार में वर्णित रस, यथा सुहागा १ भाग, मरिच २ भाग, इनके चूर्ण में अदरक के रस की भावना दें। अनु–लवंग। योगा०।

अग्नि-सूनुरसेन्द्रः agni-súnurasendrah–सं० पुं०। पीली कौड़ी भस्म १ मा०, शंख भस्म २ मा०, शुद्ध पारद १ मा०, शुद्ध गंधक १ मा०, काली मिर्च १ मा० सब को एकत्र कर नीबू के रस से खरल करें। मात्रा—१ रत्ती इसके सेवन से मन्दाग्नि शीघ्र दूर होती है।

नोट—किसी के मत में कौड़ी और शङ्ख की भस्में २-२ मा० मिलानी चाहिएँ।

अनुपान—रस, मिश्री के साथ वातज में, पीपर घृत के साथ संग्रहणी में, तक्र के साथ खाने से संग्रहणी, ज्वर, अरुचि, शूल, गुल्म, पांडु, उदर रोग, बवासीर, शोथ, प्रमेह दूर होते हैं।

बृ० रस० रा० सु० स' ग्रहण्याधिकारे।

अग्निसेवन agni-sevana हिं० संज्ञा पुं०
अग्निसेवनम् agni-sevanam–सं० क्ली०
अग्निसेवा, अग्निप्रयोग, आग तापना। इसके गुण–शीत, वात, स्तम्भ, कफ कम्पन, अरति को नाश करने वाला और रक्त, पित्तकर्त्ता तथा आम और अभिष्यन्द का पाचक है। मद० १३व०।

अग्निस्थापनीय agni-sthápaniya–अग्नि-वर्द्धक, दीपन (stomachic.)

अग्निहानिः agni-hánih–सं० पुं० (Indigestion, loss of appetite) अग्नि-मान्द्य, अजीर्णता, अपच, मन्दाग्नि। वा० नि० ११ अ०।

अग्निहोत्रः agni-hotrah–सं० पुं० (Ghee, clarified butter) (२) (Fire) अग्नि। मे०। (३) यज्ञ, वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति क्रिया। यह दो प्रकार की कही गई नित्य और (२) नैमित्तिक या काम्य।

अग्नीका agnīká–सं० स्त्री० कर्पास, (Gossypium Indicum)

अग्न्या agnyá–सं० स्त्री० (१) चिड़िया, तित्तर पक्षी (A partridge) (Perdix Francolinus) (२) (A cow) गाय, गौ हला०।

अग्न्याशयः agnyáshayah हिं० पुं०
अग्नाशयः agná-shayah–सं०
जठराग्निका स्थान, पैङ्क्रियस (Pancreas) इं०। क्लोमग्रंथि-हिं०। पन्कयास, बन्क्रास, रास वाल्क्रास, कुनुक्रूलिहाल, लब्लबइय नूर सिफ़दद–फ़ा०। यह एक ग्रंथि है जो लम्बी, चिपटी और श्वेत जिह्वोपम होती यह नाभि से ३-४ इंच ऊपर आमाशय के कटि के पहिले दूसरे कशेरुका के सामने पड़ी रहती है। इसका बायाँ सिरा तिल्ली से मिला हुआ रहता है। इसकी लम्बाई ८ इंच, चौड़ाई १॥ इंच तथा मुटाई इंच के लगभग और भार १ छटांक से १ तक होता है। इस ग्रंथि में एक प्रणाली है जो इसके वामपार्श्व से आरंभ होकर सिरे की ओर आकर पुनः पित्त प्रणाली से मिलकर द्वादशांगुलान्त्र में जा खुलती है। बने हुए पाचक रस को अग्न्याशय रस रस (Pancreatic juice)। इस रस का प्रधान कार्य यह है कि यह रस्य वसा (fats) अंडे की सुफ़ेदी के पदार्थ (albumen) और पाचनयोग्य बनाता है।

अग्बर aghbara–अ० ग़ुबार। ग़ुब्बार, गर्दआलूद, ग़ुब्बारी, ख़ाकीरंग, धूलिपूर्ण, धूसरवर्ण,) मटमैला–हिं०।

..(Dirty) -इं० (२) चक्षु वा सर्प के लिए एक यौगिक औषध है।

ग्रमस aghmasa- अ० । चेपड़ो उ० जिसके नेत्र में ग़मस अर्थात् चेपड़ (कीचड़) आती हो।

ग्यारी agyári-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि गा० अग्नि + सं० कार्य्य] अग्नि में धूप गुड़ आदि सुगन्ध द्रव्य देने की क्रिया, धूप देना (१) अग्निकुण्ड ।

gra-हिं० सं० पुं० } (१) पल परिमाण agram-सं०क्लीं० } यथा-"परिमाणेपलस्य "। एक पल ८ मां० के बराबर होता है। मे० द्विकं। (२) वृक्ष आदि का अग्र भाग। ३) हिं० क्रि० वि० पहिले, आगे, आदि। आगा, सिरा, नोक, अगला हिस्सा (The fore part of a thing, adjanterior, prior, first.) मुकद्दम, कुदामी-अ०। हिं० वि० अगला। प्रथम। श्रेष्ठ। उत्तम। प्रधान। अथ० सू० ७। ३। काद ८

काण्ड agra kándah-सं० पुं०(The fore part of the stem) काण्डाग्र, तने का अग्र भाग।

कास्थि agra kásthi-सं० स्त्रीं० (Frontal bone) ललाटास्थि, ललाट की हड्डी।

-कुम्भः agra-kumbhah-सं० पुं० (Frontal eminence)

ग्र-कोटरम् agra-kotaram-सं० क्लीं० (Frontal air sinus.)

-कोटिः agra-kotih-सं० पुं० (Ophryon)।

-कोणः agra-konah-सं० पुं० (Anterior fornix.) योनि का अगला कोण।

-खण्ड agra-khanda—हिं० पुं० उरोस्थि के तीनों टुकड़ों में से तीसरा नीचे का पतला टुकड़ा जो कौड़ी देश में दबाने से स्पर्श किया जा सकता है। (Xiphoid process.)-इं०।

ग्र-गामी agra-gámi-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अगुआ, आगे चलने वाला, अग्रसर, नेता (Preceding, going before)

अग्र-गायी agra-gáyí-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अगुआ। अग्रसर।

अग्र-गोर्दम् agra-gordam-सं० क्लीं० (Fore-brain) अग्र मस्तिष्क। भेजे का अगला हिस्सा।

अग्र-चर्वण agra-charvana-हिं० पुं० }
अग्र-चर्वणकः agra-charvanakah-सं० पुं० }
(Premolar teeth) सामने के दांत जिससे चबाया जाता है।

अग्रजः agrajah-सं० पुं० (१) काक विशेष वायस, कौआ (a crow) (२) मासपक्षी, कौवे के समान एक पक्षी है। (३) जो भाई पहले जन्मा हो। बड़ा भाई। श्रेष्ठ भ्राता। अनुज का उलटा।

अग्र-जन्मा agra-janmá-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) बड़ा भाई (२) ब्रह्मा।

अग्र-जङ्घा agra-jangha-सं० स्त्री० जंघाग्र-भाग, टाँग का अगला हिस्सा। The fore part of the leg)

अग्र-जिह्वा agra-jihvá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] The tip of the tongue जिह्वा का अगला भाग।

अग्रणी agrani-हिं० वि० [सं०] अगुआ श्रेष्ठ। संज्ञा पुं० प्रधान पुरुष। मुखिया। अगुआ, (The head)

अग्र-धान्यम् agra-dhányam-सं० क्लीं० धान्य विशेष, ज्वार, बाजरा।

अग्र-नाड़ी-मस्तक agra-nádi-mastaka-हिं० पुं० ललाट की नाड़ी।

अग्र-पर्णी agra-parní-सं० स्त्री० (१) शूक शिम्बी; कौंच, किवाँच-हिं०। आलकुशी-बं०। (Mucuna pruriens.) a plant cowhage-य० मु०। देखो-आत्मगुप्ता, अजलोमा (र०)

अग्र-पर्विका agra-parviká-सं० स्त्री०। (Anterior phalanx) पोर्वाग्र, अगला पोर्वा।

अग्र-पाणिः agra-pánih–सं० पु० The fore part of the hand. हस्ताग्र, हाथ का अग्र भाग।

अग्र-पादः agra-pádah–सं० पु० (The fore part of the foot,toes.) अंगुलियाँ।

अग्र-पुष्पः agra-pushpah–सं० पु० Calamus rotang, Linn. (Common cane) बेंत–हिं०। वेतस वृक्ष–सं०। वेत गाछ बं०। प० म०।

अग्र बाहुः agra-báhuh–सं० पु० (Fore arm.) कोहनी के नीचे अथवा कोहनी से कलाई तकका भाग, अग्रबाहु या प्रकोष्ठ कहलाता है। अग्रबाहु कोहनी के स्थान पर बाहु के ऊपर मुड़ जाती है। साइद, जिराअ्, कलाई–अ०।

अग्र-बाहुमूलगा-पेशी agrabáhumúlagá-peshí–हिं० संज्ञा स्त्री० (Pronator redii teres.) कोहनी से नीचे की पेशी।

अग्र-बीज agra-bija–हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) वह वृक्ष जिसकी डाल काट कर लगाने से लग जाए। पेड़ जिसकी कलम लगे। (२) कलम।

अग्र-भाग agra-bhága–हिं० संज्ञा पु० अगला हिस्सा। पहिला हिस्सा। आगे का भाग (The preceding part.) (२) सिरा। नोक। छोर। (Tip,point.)

अग्र-भूमि agra-bhúmi–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] घर की छत। पाटन।

अग्र-मस्तिष्क agra-mastishka–सं० पु० (Fore-brain) भेजे का अगला भाग।

अग्र-मांसम् agra-mánsam–सं० क्ली० (Flesh in the heart) हृदय के भीतर होने वाला मांस वृद्धि रूप रोग विशेष। सं० शा० हृदय, बुक्का। (The heart.)

अग्रया agrayá–सं० स्त्री० (The three myrobalans.) त्रिफला।

अग्रयून agrayúna–फ़ा० ख़ारिश, खुजली, कण्डु, खाज–हिं०। प्रुराइगो (Prurigo) प्रुराइटीज (Pruritis.) देखो–कण्डु।

अग्र-लम्बिका agra-lambiká–सं० स्त्री० (Frontal lobe.) ललाट–खण्ड।

अग्र-लोडयः agra-lodyah–सं० पु० (...rsolia dentata.) चेंचुना, चिञ्चोट–हिं०। चेंचकी, चिञ्चोड़–मुल–बं०। ... पाक में गुरु, शीतल तथा अजीर्ण कारक। राज०।

अग्र-लोहिता agra-lohitá–सं० स्त्री० ... शाक, चेलारी–हिं०। रा० नि० व० ७।

अग्र-वक्त्र agra-vaktra–हिं० संज्ञा पु० [सं०] सुश्रुत में वर्णित चीर फाड़ ... यंत्र।

अग्र-वर्त्ती agra-vartti–हिं० वि० [सं०] आगे रहने वाला। अगुआ।

अग्र-बीजः agra-víjah–सं० पु० A vi...parous plant as the gomphrena globosa, etc. बीजाग्र वृक्ष यथा कुब्जादि। हें० च०। देखो अग्रबीज।

अग्रव्रीहिः agra-vrihih–सं० स्त्री० नीवार। र० मा०।

अग्रशृंग agra-shringa–हिं० पु० (Anterior horn.) योनि का अगला शृङ्ग।

अग्रशोची agrashóchi–हिं० संज्ञा पु० [सं०] आगे से विचार करने वाला। दूरदर्शी।

अग्रसन्ध्या agra-sandhyá–हिं० सं... [सं०] प्रभात। प्रातः काल।

अग्रसर agrasara–हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) आगे जाने वाला व्यक्ति, अग्रगामी। अगुआ। (२) आरम्भ करने वाला। पहिले करने वाला व्यक्ति। (३) प्रधान व्यक्ति। वि० (१) जो आगे ... अगुआ (२) जो प्रारंभ करे। (३) मुख्य।

अग्रह agraha–हिं० संज्ञा पु० [सं०] गार्हस्थ्य को न धारण करने वाला पुरुष वानप्रस्थ।

अग्रहस्तः agra-hastah–सं० पु० (The fore part of the hand.) ...अगला भाग।

अग्रहण agrahana-हिं० पुं०
अग्रहायणं agraháyanam-सं० पुं०
अग्रहायणः agraháyaṇah-सं० पुं०
अग्रहायनः agraháyanah-सं० पुं०
वर्ष का पहिला महिना। मार्गशीर्ष मास अर्थात् अगहन का महिना। प्राचीन वैदिक क्रमानुसार वर्षका आरम्भ अगहनसे माना जाता था यह प्रथा अब तक गुजरात आदि देशों में है। पर उत्तरी भारत में वर्ष का आरम्भ चैत्र मास से लेने के कारण यह महीना नवाँ पड़ता है।

अग्रांश agránsha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अग्रांश] आगे का भाग।

अग्राशन agráṣhana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] भोजन का वह अंश जो देवता के लिए पहिले निकाल दिया जाता है। यह अग्राशन पशुओं और सन्यासियों को दिया जाता है।

अग्रास aghrása-अ० ,मुह्‌रुलअमूमात् । अंत्रांतरीय श्लेष्मा-हिं०। (Mucus)-इं०।

अग्राह्य agráhya-हिं० वि० [सं०] ग्रहण करनेके अयोग्य, न धारण करने योग्य। अप्रिय। अग्रहणीय। तुच्छ, निस्सार। (Unagreeable.) (२) न लेने लायक (३) त्याज्य। छोड़ने लायक।

अग्रिम agrima-हिं० वि० [सं०]
(१) आगे आने वाला। आगामी। (२) प्रधान। श्रेष्ठ। उत्तम। संज्ञा पुं० बड़ा भाई।

अग्रिमा agrimá-सं० स्त्री० लवली वृक्ष, हरफ़री-हिं०। लोणागाछ-बं०। श० च०।

अग्रिमोनियम् (-या)युपेटॉरियम् agrimonium Eupatorium, *Linn.*-लेo ग़ाफ़्‌ल बराग़िस, ग़ाफ़िस-अ०। (Agrimony) फा० इ० भा०।

अग्रिमोनी agrimony-इं० ग़ाफ़िस-अ०। (See-Gháfis)।

अग्रुह agruh-सं० स्त्री०
अग्रूह agrúh-सं० स्त्री०
अंगुली, अंगुश्त-फ़ा०। फ़िङ्गर (Finger)-इं०। आंगुल अं०। (Bone of finger, ortoa)

अग्रेटम् एक्वेटिकम् agratum-aquaticum -लेo बड़ी किरली इं० है० गा०।

अग्रेटम् वाटर agratum-water-इं० बड़ी किरली। इं० हैं० गा०।

अग्रेदिधिषु agredidhishu-हि० संज्ञा पुं० [सं०] ऐसी स्त्री से विवाह करने वाला पुरुष जो पहिले किसी और को ब्याही रही हो।

संज्ञा स्त्री० वह कन्या जिसका विवाह उसकी बड़ी बहिन के पहिले हो जाय।

अग्रेस्टो agresto-फ़ा० अपक्व द्राक्षारस, कच्चे दाख का रस (Juice of unripe grapes) फा० इ० १ भा०। देखो-अंगूर।

अग्रोपाइरम् agropyrum-लेo श्वेतदूर्वा ग्रन्थि, सफेद दूब। Couch grass, (Triticum)

अग्रोपाइरम् रिपेंस agropyrum repens, *Beauv.*-लेo सफेद दूब। श्वेत दूर्वा। (Couch grass.)

अग्रोस्टिस् एल्बा agrostis alba, Linn. -लेo सफेद दूब। श्वेत दूर्वा (Cynodon alba)

अग्रोस्टिस् डाइएण्ड्रा agrostis diandra, *Roxb* -लेo बेनाजोनी-बं० Diandrous bent grass -इं० हैं० गा०।

अग्रोस्टिस् लिनीयरिस् agrostis linearis, *Roxb.* लेo अनेवा, दूर्वाभेद। (Thread like bent grass.) इं० हैं० गा०।

अग्रोस्टिस् साइनास्युरि ऑइडीस् agrostis-Cynasureoides-लेo दूब, हरी दूब।

अग्र्य agrya-हिं० वि० [सं०] (Best, foremost.) प्रधान। श्रेष्ठ। संज्ञा पुं० बड़ा भाई।

अग़्लफ़ aghlafa-अ० बेख़तना, ख़तना न किया हुआ, जिसका ख़तना न हुआ हो। अनसरकमसाइज़्ड (Uncircumcised)-इं०।

अग्लुकूमा aghlukúmá-अ० गुज़्लुलसाइल अख़्ज़र, ख़ज़रतुल्‌ऐन सब्ज़ मोतिया, नेत्र में हरित जल उतर आना, हरित मोतिया। यह सब से बुरे प्रकार का मोतिया बिन्द है जिससे नेत्र पिंड कठिन हो जाता है और दृष्टि शक्ति नष्ट हो जाती है। यदि आरम्भ में इसकी चिकित्सा न

की जाय तो यह असाध्य होता है और क़द्ह. (Couching) के अयोग्य होता है। ग्लाकूमा (Glaucoma)-इं०। अगलकूमा इसी का अरबीकृत है।

अग्लेयाएड्यूलिस aglaia edulis, A. gry. -ले०। लतेमहवा-नेपा०। सिनकदंग-लेप०। गुमी गारो की पहाड़ी तथा सिलहट में बोलते हैं इसका फल खाने के काममें आता है। मे०मो०।

अग्लेयाकुमायूं aglaia kumayun-ले० गिरथन, गिदड़ड़ाक, कानक-पं०।

अग्लेयापॉलिस्टेकियाaglaia polystachya -ले०।

अग्लेया पॉलिस्टेकीन aglaia polystachine-इं० वन्दूरपाला-पं० इं० हैं० गा०।

अग्लेया रॉग्ज़ बर्ग्याना aglaia Roxburghiana,*mnq. Dr.wall.*-ले० प्रियंगु।

अग़्शर aghshara-अ० अग़्बर।

अग़्शियह् aghṣhiyah-अ० (ब० व०) ग़िशाअ् (ए० व०) कलाएँ, झिल्लियाँ, परदे -हिं०। मेम्बेन्स (Membranes)-इं०। देखो ग़िशाअ् (कला)।

अग़्शियह् जनीन aghṣhiyah-janína-अ० भ्रूणावरण (Fœtal membranes)

अग़्शियह् ज़ुलालियह aghṣhiyah-zuláliyah-अ० अग़्शियह् बल्ग़मियह् (Mucous membranes)

अग़्शियह् नुखाईयह् aghṣhiyah nukhaiyah-अ० सौषुम्नावरण (Spinal membranes)

अग़्शियह् बल्ग़मिय्यह् aghṣhiyah-balghamiyyah-अ० *अग़्शियह् ज़ुलालियह, बल्ग़मी* झिल्लियाँ, लुआबी झिल्लियां-उ०। श्लेष्मधर कला, स्नैहिक कला, एक पतली चमकदार झिल्ली जिसकी सेलें एक चिकनाईदार तरल (स्नेह) बनाती हैं जिससे संधियां चिकनी और मुलायम रहती हैं। इससे उनकी गतिमें सरलता होती है। साइनोवियल मेम्ब्रेन्स (Synovial membranes-इं०।

अग़्शियह् माइयह् aghṣhiyah-mi -अ०आबी झिल्लियाँ-उ०। जलीयावरण। 'ग़िशाअ् माई'। सीरम मेम्ब्रेन्स (Serous membranes)-इं०।

अग़्शियह् मुख़ातियह् aghṣhiyah mukhátiyah-अ० बल्ग़मी झिल्लियाँ, झिल्लियाँ-उ०। श्लैष्मिक कलाएँ हिं०। मेम्ब्रेन्स (Mucous membranes) देखो—ग़िशाअ् मुख़ाती।

अग़्शियतुद्दिमाग़ aghṣhiya tuddimá -अ० महायाया-अ०। परदाहाय दिमाग़ दिमाग़ की झिल्लियाँ, दिमाग़ के परदे मस्तिष्कीय कलाएँ,मस्तिष्कावरण-हिं०। (Meninges)-इं०।

नोट—(१) यह दो झिल्लियाँ हैं जो मस्तिष्क पर लिपटी हुई हैं। इनमें प्रथम जो एक पतली झिल्ली है मस्तिष्क के ऊपर लिपटी है, को उम्मरक़ीक़ (Piamater) कहते हैं, और दूसरी बाह्यावरण, जो ... और अस्थियों से चिपकी रहती है, (Durameter) कहलाती है।

(२) यह उपर्युक्त वर्णन यूनानी हकीमों का है परन्तु अर्वाचीन छेदनशास्त्र विदों के कथना-नुसार उपर्युक्त दो झिल्लियों के मध्य एक झिल्ली और मालूम हुई है जो उक्त दोनों के मध्य में स्थित है जिसे हिंदी में मध्यावरण, अरबी में अङ्कबूती तथा अंगरेजी में (Archanoid) कहते हैं। विशेष यथा स्थान देखिए।

अग़्शियतुन्नुख़ाअ् aghṣhiyatunnukhá -अ० अग़्शियह् नुख़ाइयह्। परदाहाय हराम मग़्ज़ के ग़िलाफ़-उ०। -हिं०। मस्तिष्क के सदृश सुषुम्ना पर भी झिल्लियाँ हैं। इनके नाम वही हैं जो मस्तिष्क की झिल्लियों के हैं (Spinal membranes)।

अग़्शियतुल् जनीन aghṣhiyatuljanín -अ० अग़्शियह् जनीन, जनीनके परदे,

की तीन झिल्लियाँ-उ०। गर्भ कला, भ्रूणावरण -हिं०। फीटल मेम्ब्रेन्स (Fœtal membranes.) डेसिडस (Decidus.)-इं०।

ये तीन कलाएँ हैं जो जरायुज्य भ्रूण के चारों ओर लिपटी रहती हैं। इन में से प्रथम को हिंदी में भ्रूण बाह्यावरण, अरबी में अन्फ़स और कोरिअन (Chorion) और द्वितीय को क्रमशः भ्रूणान्तरावरण, मशीमह् तथा एमनियॉन (Amnion.) और तृतीय को क्रमशः भ्रूण मध्या वरण, लफ़ाइफ़ी और गेलनटॉइस (Allantois.) कहते हैं।

अघसान aghsána-अ० (ब० व०) गुस्न (ए० व०) शाखाएँ, टहनियाँ। ब्राञ्चेज़ (Branches.)-इं०

अघ ágha-संज्ञा पुं० [सं०] (१) दुःख। (२) व्यसन।

अघनम् aghanam-सं० क्ली० दधि, दही-हिं० दई-बं०। (कर्ड (Curd)-इं०। हला०।

अघम् agham-सं० क्ली० (Distress) कष्ट। अथ० सू० ६, २६, का० ८।

अघडोडे aghadode-मं० अडूसा, अरूस हिं० (Adhatoda vasica, Nees.)

अघर्म aghrma-हिं० वि० (not hot, cold) शीतल।

अघविषः aghavishah-सं० पुं० सर्प, साँप (A serpent, A snake)।

अघाटः aghátah-सं० पु० अपामार्ग (Achyranthes aspera Linn.) रा०।

अघाडा,-ड़ा agháḍá,-ṛá-हिं० अपामार्ग, काँचवाली (Achyranthes aspera, Linn.)

अघेरन agherana-हिं० संज्ञा पुं० [देश] जौ का मोटा आटा।

अघोड़ी-ड़ा aghori,ro-गु० मार्ग।

अघोर aghora-सं० पुं० रस शास्त्र के पूर्व आचार्य 'शिव'।

अघोरनृसिंह (हो) रसः aghoranrisimh-a, ho, rasah-सं० पु० सान्निपातिक ज्वर में प्रयुक्त होने वाला रस। देखो—घोरनृसिंहरसः।

ताम्र भस्म १ भा० लोह भस्म २ भा० वङ्ग भस्म ३ भा० अभ्रक भस्म ४ भा० तथा स्वर्णमाक्षिक भस्म १ भा०, पारद १ भा० गन्धक १ भा० शु० मैनशिल १ भा०, शु० विष २ भा० त्रिकुटा २ भा० अथवा समस्त वस्तु समान भाग ले और विष सब से द्विगुण ले इन्हें चूर्ण कर मदर्ली, भँगा, और मोर के पित्त तथा चित्रक के रस में पृथक् २ एक २ पहर घोटे, पुनः सरसों बराबर गोलियाँ बनाए, धूप में सुखा कर रक्खे, इसको उष्ण जल के साथ खाने से तेरह प्रकार के सन्निपात, विसूचिका, अतिसार त्रिदोष जन्य खाँसी, त्रिदोष ज्वर, इत्यादि दूर होते हैं। इस पर दही और शीतल जल का पथ्य देना योग्य है।

अघोर-मंत्रः aghora-mantrah-सं० पुं० ॐ अघोरेभ्यश्च घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यश्च। सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमोऽस्तु रुद्र रूपेभ्यः॥ इस मंत्र-से रस क्रिया की सिद्धि होती है। भै० र०

अघोरास्त्रो रसः aghorastrorasah-सं० पुं० शुद्ध पारा, शु० गंधक, शु० वत्सनाभ, शु० हरताल, शु० संखिया, सोहागा, तांबा (भस्म) और शु० नीलाथोथा इन्हें समान भाग लें खरल में बारीक घोट रक्खें। मात्रा—१ रत्ती। गुण-यह सम्पूर्ण सन्निपातों को दूर करता है।

अघोरेश गुटिका aghoreshagutiká-सं० स्त्री० मुण्ड लोह (खेड़ लोह) की कड़ाही में ऊपर और नीचे धान की भूसी रख कर बीच में पारा रक्खें। फिर जामुन के रस से उस कड़ाही को पूर्ण कर १ रात तक रहने दें। प्रातःकाल जामुन रस अलग करके दिन में कड़ाही को सुखा कर फिर सायंकाल पूर्वोक्त विधि से पारे को रख दें। फिर इसी तरह ३ रात तक उक्त नियम से पारे में भावना दें। फिर समान भाग वङ्ग मिलाकर कज्जली बनाएँ। फिर इसका १ गोला बनाकर धतूर के फल के भीतर रख पुटपाक करें, इसी तरह ७ पुटपाक करें। फिर उस गोले पर धतूर के गाढ़े रसका लेप चढ़ा कर भङ्ग के लुगदी में बन्द करके भङ्ग के रसमें दोला यंत्र में पकाएँ।

इसी तरह अफीम का जेर चढ़ा कर पोस्ता के पानी में दोला यंत्र में पकावें, फिर तीसरी बार मद्य में पकावें तो यह गुटिका सिद्ध होती है। इसे केले के फल, गुड़ अथवा किसी मीठी वस्तु के भीतर रख कर मुंह में रक्खें, जब तक यह मुंह के अन्दर रहेगी वीर्य स्खलित न होगा। इसके प्रभाव से १०० स्त्रियों से भोग किया जा सकता है। र० यो० सा०।

अघोष aghosha-हिं० वि० [सं०] (१) शब्द रहित। नीरव। (२) अल्पप्राणनियुक्त।

अघ्ना aghná सं० स्त्री० गाय, गऊ गो, गव-यं०।

अघ्न्या aghnyá-सं० स्त्री० गवि, गाय। (Cow)-इं०। गामी-यं०।

अघ्रान aghrána-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आघ्राण] आघ्राण करना। गंध ग्रहण। महंक लेने की क्रिया। सूंघने का कार्य।

अघ्रानना aghránaná हिं० क्रि० स० [सं० आघ्राणे] आघ्राण करना, महंक लेना। सूंघना।

अघ्रेय aghreya-हिं० वि० [सं०] न सूंघने योग्य।

अङ्क anka-हिं० पुं०
अङ्कः ankah-सं० पुं० } (१) (Limb of the body) शरीरावयव, अंग। कोल-यं०। रा० नि० व० १८। वा० चि० ७ अ०। (२) चिह्न, निशान, छाप आँक, रेखा (Mark, Spot, a line.)

(३) Sin पाप। Pain दुःख। मे० कद्विकम्।

(४) number आँकड़ा, अदद, संकेत, संख्या का चिह्न, जैसे-१, २, ३, ४, ५ आदि।

(५) शरीर, देह, अंग।

[illegible] Ankadára-[illegible] (Leea sty-*loilld.*

Staphylea Indica) कुकुर जिह्वा, कुकुर जिह्वा। इं० मे० मे०।

अङ्कड़ी ankari-हिं० स्त्री० संज्ञा [सं० अंकुर=अँखुआ, टेढ़ी नोक] (१) कँटिया, हुक। (२) बेल, लता।

अङ्कतिः ankatih-सं० पुं०, (१) (...) वायु। त्रि० (२) Fire अग्नि। त्रि०।

अङ्कनः ankanah-सं० पुं० अंकोल, ढेरा। आङ्कोट गाछ-बं०। (A-docapetalum, *Lam.*) वै० श०

अङ्कनम् ankanam-सं० क्ली० (M... चिह्न।

अङ्कना ankaná-हिं० लिखना, छापना, ... करना, चिह्न करना।

अङ्कपादम् ankapádam-सं० क्ली० (१) पादचिह्न, पैर का निशान (Footprint) (२) तृतीयावयव विशेष। वा० सू० अ०।

अङ्कपाली ankapáli
अङ्कपालिः ankapálih } सं० स्त्री० (Midwife nurse) धाय, धात्, दाई। (२) गन्ध द्रव्य विशेष, यथा-'धात्री वेदिका मेलंचतुष्कं। (३) Embracing, embrace आलिङ्गन। मे०।

अङ्कपालिका anka-pálikà
अङ्कपाली anka pálí } हिं० संज्ञा [... Midwife धाय। देखो-अंकपाली।

अङ्कब áanakaba-अ० (A kind fish) मछली भेद। एक प्रकारकी मछली

अङ्कबूत áankabúta-अ० (A spider मकड़ी, ऊर्णनाभि। शेर मगस-फ़ा०।

अङ्कबूतिय्यह áanka bútiyyah-अ० के जाले का सा परदा। नेत्र का चतुर्थ पर देखो-तबक़हे अङ्कबूतिय्यह।

अङ्कमाल ankamála-हिं० पुं० संज्ञा [सं० आलिंगन, भेंट, परिरंभण, गले लगाना।

अङ्कमालिका ankamáliká हिं० स्त्री० [सं०]

(१) छोटा हार, छोटी माला।

(२) आलिंगन, भेंट।

अङ्करा ankará-हिं० पुं० संज्ञा [अंकुर] (१) एक खर या कुधान्य जो ... के पौधों के बीच जमता है। इसे काट कर बै... को खिलाते हैं और इसको साग भी खाते हैं

का दाना वा बीज काला, चिपटा, छोटी मूंग बराबर होता है, और प्रायः गेहूं के साथ मिल ा है। इसे ग़रीब लोग खाते भी हैं। खेसारी ी का एक रूपान्तर है। अँकरा।

ज (ankarása)-हिं० पु० संज्ञा। ो–अंकरास। अँकरास।

(ankari) हिं० स्त्री० संज्ञा [अंकरा अल्पार्थक प्रयोग] A kind of vetch Vicia Sativa) अकरी, रवाड़ी, रारी।

गे (ankalige)-कना० अंकोल, ढेरा Alangium decapetalum, Lam.) ० इं० २ भा०।

ख्य ankalekhyah } स०, पु०, ड्य. ankalodya } चिह्नोड़ (चिह्नो) पुष-हिं० चंचकोमूल-बं०। (Marsilea lentala.) वै० श०। देखो–अमलोड्यः।

: (ankshah)–सं० पु०, क्रोडस्थ ालक। कोलेर छेले–बं०।

–ङ्की (anká,-nki)-सं० स्त्री० मृदङ्ग विशेष। शब्द। र०।

ना (ankáná)–हिं०, परखना, जँचवाना, दाम कुतवाना (To cause to value, to examine 'as cloth, to approve of)

रक तैलम् ankáraka-tailam } सं० र तैलम् ankára-tailam } क्ली०। देखो अङ्कार तैलम्।

य ankáva–हिं० पु०, निरख, दर, माल का ठहराव (Valuation)

त ankita चिह्न किया हुआ, मुद्रित, चिह्नित (Marked, examined, valued, paged.)।

डु ankudu–ते० कुड़ा, कुटज, कुरैया Holarrhena anti-dysenterica, R.Br.) स० फा० इं०।

डु कर्र ankudu-karra–ते० गम्भीर मला० (Uncaria gambier, Roxb. wood of–) स० फा० इं०।

डु कोडिश ankudu-kodisha–ते० कोडिश-वित्तुलु। मीठा इन्द्रयव, इन्द्रजौ। Wrightia tinctoria, R.Br. (seed of–)। स० फा० इं०।

अङ्कुडु-चेट्टु amkudu-chettu–ते०प०व०
अङ्कुडु-चेट्लु-amkudu-chetlu-ते०व०व०
अङ्कुडु-मानु–amkudu-mánu–ते०प०व०
अङ्कुडु-मानुलु-ankudu-mánulu-ते०व.व.
कुड़ावृक्ष, कुटजवृक्ष, कुरैया। स० फा० इं०। Holarrhena anti-dysenterica, R. BR. (Tree of–)

अङ्कुडु-वित्तु amkudu-vittu–ते० प० व०
अङ्कुडु-वित्तनमुलु-amkdu-vittanamulu ते० व० व०।

अङ्कुडु वित्तुलु—amkudu-vittulu—ते० कड़ुआ इन्द्रजौ, इन्द्रयव तिक्त-हिं०। Holarrhena anti-dysenterica, R. BR. seeds of–)। स० फा० इं०।

अङ्कुरः ankurah सं० पु० } (A plaअङ्कुरम् ankuram सं० क्ली० } ntlet, a seed-bud)
अंकुर, अँखुआ, इँगुसा, गाभ, नवोद्भिद्, प्ररोह, फुनगी। वा० उ० ३६ अ०। पोंक-बं०। संस्कृत पर्या०–अभिनवोद्भिद् (अ,मे) उद्भिदः, पुरोहः, अङ्कुरः (रा) रोहः (हे)। (२) A shoot or sprout, a germ, a blade. डाभ, कल्ला, कनखा, कोंपल, आंख। (३) मुकुल, कली (Bud)। (४) (sharp) नोक। swelling अर्बुद, शोथ। (५) villi अंकुर (अपरा के) (६) Blood रुधिर, रक्त, खून। (७) hair रोयाँ, लोम। (८) water (Aqua) जल, पानी। माँसके बहुत छोटे लाल लाल दाने जो घाव भरते समय उत्पन्न होते हैं। मांस के छोटे दाने। अंगूर। भराव। (९) फल Fruit सर्व्वत्र मे० रत्रिकं। (१०) Tumour.

अङ्कुरआना ankuraáná–उगन जमना रह (germinate, sprout)

अङ्कुरकः ankurakah–सं० पु० पक्षिवास स्थान, घोंसला, खोंता (a nest) वै० श०।

अङ्कुर मात्रकम् ankura-mátrakam सं० क्लो० (rudimentary)

अङ्कुरना ankuraná } हिं० क्रि० अ०
अङ्कुराना ankuráná } [सं० अंकुर] Germinate, sprout उगना, जमना, रद.

अङ्कुर-विशिष्ट-आवरण ankura-vishista-ávarana

अङ्कुरित ankurita-हिं० वि०, अंकुर सहित कुमगी वाला (Having sprouts) अँखुवाया हुआ। उगा हुआ। जमा हुआ। निकला हुआ। जिसमें अंकुर होगया हो। (२) उत्पन्न, उगा हुआ (arisen)

अङ्कुरित यौवना ankurita-youvaná-हिं० वि० [सं०] वह स्त्री जिसके यौवनावस्था के कुच आदि चिह्न निकल आए हों। उभड़ती हुई युवती। स्त्री जिसकी उभड़ती जवानी हो।

अङ्कुरी ankuri-हिं० स्त्री० संज्ञा [हिं० अंकुर+ई] चने की भिगोई हुई घुघनी।

अङ्कुल ankula } हिं० पुं० संज्ञा [सं० अङ्कुलो ankulo } अंकोल] alangium decapetalum, Lam. अंकोल, ढेरा।

अङ्कुशः ankushah-सं० पुं० (१) [Hamular process]। प्र० शा० ह० शा० र० १ म०। (२) शस्त्र-सं०। डाइरा वै० हला० शा० स०, आंकुश, अंकुश, A hook on goad आंकड़ी, लोहे का एक छोटा शस्त्र वा टेढ़ा काँटा जिससे हाथी चलाया जाता है। (गजमार्ग।)

अङ्कुशकास्थि ankushasthi-सं० स्त्री० (Hamate)

अङ्कुशदन्ता ankusha-dantá-हिं० वि० [सं० अंकुशदन्त] हाथी का एक भेद। इसका एक दाँत सीधा और दूसरा पृथ्वी की ओर झुका रहता है। यह और हाथियों से बलवान और क्रोधी होता है तथा झुण्ड में नहीं रहता। इसे गुण्डा भी कहते हैं।

अङ्कुशदुर्धर ankusha-durdhara-हिं० पुं० संज्ञा [सं०] मतवाला हाथी। मस्तहाथी।

अङ्कुशिन् ankushin-सं० त्रि० (Ha- a hook or goad.)

अङ्कुश्त ankushta-फ़ा०, कोयला।

अङ्कुसा ऑफ़िसिनेलिस anchusa officinalis ले० गावजुबान।

अङ्कुसा टिंक्टोरिया anchusa tinctoria Desr.-ले० एक पौधा है [illegible] कार्य में आता है। मेम०।

अङ्कूर,-कुं ankúra-kum-सं० पुं० a sprout, a germin इ०

अङ्कूलंग ankúlang-ता० असगंध, (Withania somnifora, Dr.

अङ्कूलिया ankúliyá } -गु० ढेरा वृक्ष।
अङ्कूली ankúli }

अङ्कूशः ankúshah-सं० पुं० अङ्कुश।

अङ्केरिया गैम्बियर Uncaria Gambier Roxb.-ले० खदिर, कत्था वृक्ष, खैर [illegible] कत्था Gambier-इं० मे० मे०।

अङ्केरिया गैम्बीर (uncaria Gambier Roxb. (Wood of-) [illegible]

अङ्कोएड ankoed } सं० ढेरा,
अङ्कोएल ankoel } गम्भीरी-मल० फा० इं० (alangium decapetalum इं० मे० मे०।

अङ्कोटः,-ठः ankotah, thah-सं० अंकोल, अंकोटक वृक्ष, ढेरा (Alangium decapetalum, Linn.) रा०नि० व० २६) भा० पू० १ भा०, गु० व०।

अङ्कोटकः ankotakah-सं० पुं० अङ्कोल। आंकोड़गाछ, भला, (alangium Decapetalum) रा० व० ६। मद० व० ११। क० अम्सा-चि०।

अङ्कोट गुटिका ankota-gutiká-सं० ढेरे की जड़ ४ तो०, पाठा की तो० दारुहल्दी ४ तो० इन्हें चावल के जल से घोटकर १-१ तो० बनाकर छाया में शुष्क कर रक्खे। इसे

धोवन से उपयोग करे तो वात पित्त कफ और द्वन्द्वज सन्निपात तथा प्रत्येक प्रकार के अतिसारों को दूर करता है।

ोट वटकः ankoṭa-vaṭakah–सं० पुं० दारु हल्दी, ेरे की जड़, पाठा की जड़ (निर्विषी मूल), कूड़ा की छाल, ेमल का गोंद (मोचरस) धातकी [धौ पुष्प] लोध, अनार का छिलका प्रत्येक १–१ तो० लें, इन्हें चावलों के पानी में पीस कल्क कर शहद के साथ बड़े बनाएँ पुनः इसे प्रभात में सेवन करें तो हर प्रकार के अतिसार दूर हों।

चक्र०, द० अतिसार० चि०, वङ्ग० से० सं० अति० सा० चि०।

ोढ़ ankodhā–हिं०, ढेरा, अंकोल (Alangium Decapetalum, *Lam.*)

ोरना ankorana–अकोरना, घूस लेना, भूंजना।

ोल ankola–हिं० पुं० } अकोला, अङ्कुल, ोलः ankolah–सं० पुं० } काला अकोला ढेरा, ढेरा, थैल, अङ्कुल–हिं०, द०। संस्कृत पर्याय–"अङ्कोटो दीर्घकीलः स्यादङ्कोलश्च निकोचकः" । अङ्कोटः, दीर्घकीलः, अंङ्कोलः निकोचकः [अ०] निकोटकः, [भ०], अङ्कोटकः [भा०, रा० नि० व० ६] अङ्कोलकः, बोधः, नेदिष्टः दीर्घकीलकः (अ) अङ्कोठः, रामठः (र) कोरः, रेची, गूढपत्रः, गुप्तस्नेहः, पीतसारः, मदनः, गूढवल्लिका, पीतः, ताम्रफलः, गुणाढ्यकः, कोलकः, लम्बकर्णः, गन्धपुष्पः, रोचनः, विशालतैल, गर्भः, वपन्तः, घलन्तः, कोरः, वामकः और लम्बकर्णकः, लम्बपर्णः। आंकोड़, धलआंकोड़, धला कुरा, आंकोड़ गाछ, अकरकाटा, बाघाङ्कुर, बाघअङ्कुरा–बं०। एलेन्जियम डेकापेटेलम् Alangium decapetalum, *Lam.* एलेoलेमार्कियाई A. Lamarckii, *Thwaites.* एले० टोमेन्टोसम् A. Tomentosum–ले० सेज लीव्ड एलेन्जियम Sage-leaved alangium इं०। अंजिंजि मरम्, अलङ्गीता०। ऊडुग, (ऊडुगु) चेट्टु, अङ्कोलम् चेट्टु उडीके–ते०। अयङ्कोलम्, अंजिंजि–मरम्, चेम्मरम्, अङ्कोलम्–मल०। अङ्कोले, कोपोटा, अनीसरूलीमरा–कना०। अङ्कोल, अगोल–सिं०। शो० शौ०–हिन्द्या, तो शौविड्–बर०। अङ्कोली–वृक्ष, आंकुल–म०। अङ्कोल्या, आंग्रा–गु०। ढेला–सन्ताo। अङ्कोल–कोल०। अंकुला–डौलूके–उड़ि०। रक अङ्कुला–सिंहली।

कॉर्नेसीई या अङ्कोट वर्ग

N. O. Cornaceæ.

उत्पत्ति स्थान—इसका पेड़ हिमालय की घाटी से गंगा तक, संयुक्त प्रान्त, दक्षिण अवध व बिहार, बंगाल प्रभृति प्रान्तों के बड़े और छोटे जंगलों में पहाड़ी जमीन पर बहुतायत से पैदा होता है। राजपूतानेमें भी पाया जाता है। उष्णकटिबन्ध में स्थित दक्षिण भारतवर्ष और बर्मा के वनों और कभी कभी बगीचों में पाया जाता है। माघ से चैत्र तक अर्थात् प्रारम्भिक ग्रीष्मकाल में यह पेड़ फूलता, फलता है। पुष्पितावस्था में वृक्ष पत्रशून्य रहता है। वैशाख से सावन तक फल लगते और पकते रहते हैं।

इतिहास—चूंकि यह भारतीय पैदावार है इसलिए इसका वर्णन सभी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथों में पाया जाता है। यूनानी चिकित्सा ग्रंथों के लेखकों में पीछे के लोगों ने अपनी पुस्तकों में इसका वर्णन किया है।

वानस्पतिकवर्णन–यह एक जंगली वृक्ष है जो वनों में तथा शुष्क व उच्च भूमि पर अधिकतया उत्पन्न होता है। ऊंचाई भिन्न २ साधारणतः लघु, आरम्भ में कंटक रहित, पुराने अथवा युवा वृक्ष के प्रकाण्ड से निकलती हुई आरम्भिक शाखाएँ भी कांटा रहित होती हैं। उद्भिद् विद्यानुसार अङ्कोट कंटक को कंटक नहीं कहते किन्तु तद्युक्त शाखाओं को तीक्ष्णाग्र शाखा कहते हैं। पत्र–एकान्तरीय अर्थात् विषमवर्ती, अण्डाकार बर्छीनुमा अथवा तंग अण्डाकार ३-४ इंच लम्बा और १–१॥ इंच चौड़ा, चिकना, डंठल युक्त होता है। डंठल–लघु, अत्यन्त सूक्ष्म रोम, युक्त, लगभग चौथाई इंच लम्बा होता है। पुष्प–

मध्यवर्ती, सूक्ष्म, सुगन्ध युक्त, पीताभायुक्त, श्वेत साधारणतः फलीय, वृन्त युक्त। पुष्पवृन्त–लघु, सामान्य। पुष्प–बाह्य–कोष (Calyx) ऊर्ध्वगामी, दंताकार, लघु, स्थायी। पुष्पाभ्यन्तर–कोष (Corolla) बहुदलीय। पुष्पदल–अर्थात् पंखड़ियां ६ से १०, अण्डाकार, न्यूनाधिक उलटी हुई। परागकेशर–पुष्पदल से द्विगुण। परागतन्तु का निम्न भाग लोमश। पराग कोष–अण्डाकार। गर्भकेशर–सामान्यतः परागतन्तु से अधिक लम्बा होता है। फल–लगभग छोटे रीठ अथवा जंगली बेर के बराबर, गोलाकार चिकना, झुका हुआ, अपक्व दशा में नीलाहट लिए और कड़ुवा तथा पकने पर रक्त वर्णयुक्त (इन पर स्याही झलकती है) जिसके शिरे पर ऊर्ध्व–बाह्य कोष लगा होता है, एक बीज युक्त सूक्ष्मतः ग्राही तथा मधुर स्वाद युक्त, गदराहट की हालत में स्वाद्वम्ल होता है। बीज–गोलाकार ऊपर नीचे कुछ चपटा कठोर और धूसर वर्ण मय होता है। इसकी जड़ वजनी, लकड़ी मजबूत हलकी पीलापन लिए हुए, बीच का हिस्सा बादामी रंग का होता है। जिससे सुगन्धि आती है। परीक्षा–इसे तथा छाल को परक्लोराइड आफ आयर्न घोल का स्पर्श कराने से ये मटमैले हरितवर्ण में परिवर्तित होजाते हैं। इसकी छाल आध इंच तक मोटी, खाकी रंग की जिसके ऊपर छोटे २ कांटे से मालूम होते हैं। स्वाद–तिक्त और गन्ध अधिकतर मतली कारक (उत्क्लेश जनक) होती है।

नोट—देशी वैद्य तथा औषध विक्रेता सफेद तथा काले नाम से इसके दो भेद बतलाते हैं। इनमें श्वेत प्रकार वही है जिसका ऊपर वर्णन किया गया है; परन्तु डाक्टर मोहनशरीफ महोदय के कथनानुसार काला उसका भेद नहीं, जैसा कि सर्व साधारण का विचार है, वरन् यह उसी की एक निकटस्थ जाति अर्थात् एलेंजियम हेक्सापेटेलम् Alangium Hexapetalum of Lanlarck है। वे इसे अङ्कोल का काला भेद इस कारण बतलाते हैं कि यह उससे रंग रूप में बहुत कुछ समानता रखता है। उसके फूल का रंग बैंगनी और छाल धूसर वर्ण की होती है। इसकी छाल तथा त्रिपत्र प्रभाव में किसी-किसी स्थान उत्तम इस्ताल की जाती है और इसमें वमन शान्ति कारक गुण होने का निश्चय किया है। ख्रौ—कालाअङ्कोला।

प्रयोगांश—मूल, मूलत्वचा, बीज, पत्र, पुष्प और तैल।

रसायनिक संगठन—इस की जड़ में अत्यन्त तिक्त; रवा रहित अङ्कोटीन या (Alangin) नामक क्षारीय सत्व होता है जो हलाहल (Alcohol) क्लोरोफार्म और एसेटिक ईथर में तो विलेय है परन्तु जल में अविलेय।

गुणधर्म व प्रयोग—आयुर्वेदिक मत—अङ्कोल चरपरा, तीक्ष्ण, स्निग्ध, उष्ण, हलका तथा रेचक है और कृमि, शूल, सूजन श्लेष्मा (कहीं कहीं 'ग्रह' पाठ है) विष नाशक है। भा० मद० व० १। विसर्प, कफ, पित्त, रक्त, मूसा तथा को दूर करता है। भा०

ढेरा–कसैला, कड़ुवा, पारे को शुद्ध करने हलका, चरपरा, किञ्चित् सर (दस्तावर), स्नि तीक्ष्ण, गरम और रूक्ष है। (नि० र विसर्प, कफ, पित्त, रुधिर–विकार, तथा और चूहे का विष दूर करता है।

अङ्कोल का फल—शीतल, स्वादिष्ट, पुष्टि कारक, भारी, बलकारक, रेचक है वात, पित्त, दाह, क्षय और रुधिर विकार नाश करता है मद० व० १ भा०। विष, (मकड़ी) आदि दोष नाशक और वात नाशक तथा शुद्धि करने वाला है। रा० नि० ६। च० द० अ० सा० त्रि०।

अङ्कोल का रस—वान्ति जनक है तथा विकार, कफ, वात-शूल, कृमि, सूजन, आमपित्त, रुधिर विकार, विसर्प, कुत्ते का मूसे का विष, बिलाव का विष, कटिशूल, सार और पिशाच पीड़ा को दूर करने वाला है (वृं० नि० र०

अङ्कोल के बीज—शीतल, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ट मन्दाग्नि कारक, भारी, रस और पाक में मधुर, बलकारक, कफ कारी, सारक, स्निग्ध, वृष्य (वीर्य वर्द्धक) तथा दाह, वात, पित्त, क्षय, रक्त विकार, कफ, पित्त और विसर्प को नाश करने वाले हैं। नि० र०)

अङ्कोल का अर्क—शूल, आम, सूजन, ग्रहमह और विष को नष्ट करता है।

अङ्कोल तैल—इसको पूर्व वैद्य एवं महर्षियों ने वात कफ नाशक और मालिश करने से चर्मरोग नाश करने वाला कहा है (वै० निघ०)

अङ्कोट के वैद्यकीय प्रयोग—(१) दन्तकाष्ट-गत-विष में अङ्कोटमूल—दन्तकाष्ट विषयुक्त होने पर जिह्वा एवं दांत पर मैल जम आता है और ओष्ट सूज जाता है। इसके प्रतीकारार्थ अङ्कोट की जड़ की छाल का चूर्ण प्रस्तुत कर शहद के साथ शोथ स्थल पर धीरे धीरे रगड़ें या प्रलेप करें। (कल्प० १ अ०)

(२) विषैले अञ्जन से नेत्रों में अन्धता उत्पन्न होने पर अङ्कोल के फूलों का अञ्जन नेत्रों में लगाने से अन्धता दूर होती है।

(कल्प० १ अ० सुश्रु०)

अङ्कोल की जड़ की छाल बकरी के मूत्रमें पीस कर पीने व लेप करने से चूहे का विष नष्ट होता है। (वा० उ० ३८ अ०)। इसकी जड़ की छाल गो दुग्ध के साथ पीस कर पीने से कुत्ते का विष दूर होता है।

(भाव० म० खं० ४ भा०)

(१) अङ्कोट की जड़ की छाल का क्वाथ प्रस्तुत कर, इसका घन सत्व तैयार कर गो घृत के साथ सेवन करें। इसके सेवन से पूर्व रोगी के शरीरको तिल तैल मर्दित कर स्वेदित करलें, यह गरदोष नाशक है (विष० चि०)

नोट—उपविष सेवन जन्य उपद्रव को गरविष कहते हैं।

इसकी मूल त्वचा का चूर्ण १ तो० चावलों के साथ पीस कर सेवन करने से अतिसार और संग्रहणी में लाभ होता है।

(च० द० अतिसा० चि०)

नोट—यह मात्रा अधुना प्रयोजनीय नहीं।

वक्तव्य

चरक में अंकोट के फलका गुण इस प्रकार लिखा है— "श्लेष्मलं गुरु विष्टंभि चाङ्कोटफलमग्नि-जित्" (सू० २१ अ०)। चरकोक्त विष चिकित्सा के अमृत घृत कल्क "पाटा-ङ्कोटारग्वधाद्ये" पाठ में अङ्कोट का व्यवहार दिखाई देता है। इसमें भिन्न और समस्त विष चिकित्सा में अङ्कोट शब्द नहीं आया है। सुश्रुत ने कल्प स्थान के छठें अध्याय में चूहे तथा कुक्कुर आदि के विष की चिकित्सा लिखी है। सुश्रुत के स्वविष चिकित्सा में अङ्कोट व्यवहृत नहीं हुआ है, किन्तु मूषिक विष चिकित्सा में चूहा काटे हुए रोगी को वमन कराने के लिए अङ्कोट का प्रयोग किया गया है—"इङ्गं जालिनी क्वाथैः शुकाख्याङ्कोट योरपि" क० ६ अ० अङ्कोट का एक नाम वामक है। चरक के विमान स्थान के ८ वें अध्याय एवं सुश्रुत के सूत्र स्थान के ३९ वें अध्याय में विरेचक तथा वामक द्रव्यों की तालिका है। उस तालिका में अङ्कोट का नाम नहीं है। चरक और सुश्रुतोक्त कुष्ठ, अतिसार एवं ग्रहणी की चिकित्सा में अंकोट का नामोल्लेख नहीं है। सुश्रुत के अश्मरी चिकित्साध्याय में अंकोट के फल का उल्लेख है। "त्रिपुषाङ्कोल कतक शाकेन्दी-वरजैः फलैः। चूर्णितैः सगुडं तोयं शर्करानाशनं पिबेत्" (चि० ७ अ०)। निघंटुकार अङ्कोट को फलको "गुप्तस्नेह" बोलते हैं।

चरक के सूत्रस्थान के १३ वें अध्याय एवं सुश्रुत चिकित्सा स्थान के ३१ वें अध्याय में उक्त स्था-वर स्नेह योनि फलों में अङ्कोट का उल्लेख नहीं है। निघंटुकार अङ्कोटका एक नाम "रेची" लिखते हैं, किन्तु उन्होंने अङ्कोटको "संग्राही" कहते हैं। चक्रदत्त व वंगसेन दोनों ने ही अतिसार की चिकित्सा में अंकोट को संग्राही रूप से व्यवहार किया है। वास्तव में अङ्कोट रेची है या संग्राही इसकी परीक्षा करनी आवश्यक है।

अङ्कोलके सम्बन्धमें यूनानी मत—

प्रकृति—यूनानी ग्रन्थकार इसे प[illegible]

मध्यवर्ती, सूक्ष्म, सुगन्ध युक्त, पीताभायुक्त, श्वेत साधारणतः कक्षीय, वृन्त युक्त। पुष्पवृन्त–लघु, सामान्य। पुष्प–बाह्य–कोष (Calyx) ऊर्ध्वगामेय, दंष्ट्राकार, लघु, स्थायी। पुष्पाभ्यन्तर–कोष (Corolla) बहुदलीय। पुष्पदल–अर्थात् पंखड़ियां ६ से १०, अण्डाकार, न्यूनाधिक उलटी हुई। परागकेशर–पुष्पदल से द्विगुण। परागतन्तु का निम्न भाग लोमश। परागकोष–अण्डाकार। गर्भकेशर–सामान्यतः परागतन्तु से अधिक लम्बा होता है। फल–लगभग छोटे रीठे अथवा जंगली बेर के बराबर, गोलाकार चिकना, झुका हुआ, अपक्व दशा में नीलाहट लिए और कड़ुवा तथा पकने पर रक्त वर्णयुक्त (इन पर स्याही भलकती है) जिसके सिरे पर पुष्प–बाह्य कोष लगा होता है, एक बीज युक्त सूक्ष्मतः ग्राह्य तथा मधुर स्वाद युक्त, गदराहट की हालत में स्वाद्वम्ल होता है। बीज–गोलाकार ऊपर नीचे कुछ चपटा कठोर और धूसर वर्ण युक्त होता है। इसकी जड़ वजनी, लकड़ी मजबूत हलकी पीलापन लिए हुए, बीच का हिस्सा बादामी रंग का होता है। जिससे सुगन्धि आती है। परीक्षा–इसे तथा छाल को परक्लोराइड आफ आयर्न घोल का स्पर्श कराने से ये मटमैले हरितवर्ण में परिवर्तित होजाते हैं। इसकी छाल आध इंच तक मोटी, खाकी रंग की जिसके ऊपर छोटे २ कांटे से मालूम होते हैं। स्वाद–तिक्त और गन्ध अधिकतर मतली कारक (उत्क्लेश जनक) होती है।

नोट—देशी वैद्य तथा औषध विक्रेता सफेद तथा काले नाम से इसके दो भेद बतलाते हैं। इसमें श्वेत प्रकार वही है जिसका ऊपर वर्णन किया गया है; परन्तु डाक्टर मादनशरीफ महोदय के कथनानुसार काला उसका भेद नहीं, जैसा कि सर्व साधारण का विचार है, वरन् यह उसी की एक निकटस्थ जाति अर्थात् एलेंजियम हेक्सापेटेलम Alangium Hexapetalum of Lanlarck है। वे इसे अङ्कोल का काला भेद इस कारण बतलाते हैं कि यह उससे रंग रूप में बहुत कुछ समानता रखता है।

उसके फूल का रंग बैंगनी और छाल धूसर वर्ण की होती है। इसकी छाल तथा विषघ्न प्रभाव में किसी-किसी उत्तम ख्याल की जाती है और इसमें वान्ति कारक गुण होने का निश्चय किया है। स्त्री०—कालाअंकोला।

प्रयोगांश—मूल, मूलत्वचा, बीज, फल, पुष्प और तैल।

रसायनिक संगठन—इस की जड़ में अत्यन्त तिक्त, रवा रहित अङ्कोटीन या एलेंजिन (Alangin) नामक क्षारीय ... होता है जो इलाइल (Alcohol), क्लोरोफार्म और एसेटिक ईथर में तो विलेय है परन्तु जल में अविलेय।

गुणधर्म व प्रयोग—आयुर्वेदिक मतानुसार अङ्कोल चरपरा, तीक्ष्ण, स्निग्ध, उष्ण, हलका तथा रेचक है और कृमि, शूल, सूजन, श्लेष्मा (कहीं कहीं 'ग्रह' पाठ है) विष नाशक है। भा० मद० ध० १। विसर्प, कफ, पित्त, रक्त, मूसा तथा सर्प को दूर करता है। भा०

टेरा–कसैला, कड़ुवा, पारे को शुद्ध करने हलका, चरपरा, किञ्चित सर (दस्तावर), तीक्ष्ण, गरम और रूक्ष है। (नि० रा० विसर्प, कफ, पित्त, रुधिर–विकार, और चूहे का विष दूर करता है।

अङ्कोल का फल—शीतल, स्वादिष्ट, कफ, पुष्टि कारक, भारी, बलकारक, रेचक। वात, पित्त, दाह, क्षय और रुधिर विकार नाश करता है मद० ध० १ भा०। विष (मकड़ी) आदि दोष नाशक और वात नाशक तथा शुद्धि करने वाला है। रा० ६। च० द० अ० सा० नि०।

अङ्कोल का रस—वान्ति जनक है तथा विकार, कफ, वात-शूल, कृमि, सूजन, आमपित्त, रुधिर विकार, विसर्प, कुत्ते का, मूसे का विष, बिलाव का विष, कटिशूल, ... मार और पिशाच पीड़ा को दूर करने वाला। (धू० नि०

॥ वेग कम हो जाता है तथा तृषा, दाह आदि ार के उपद्रव शमन होते हैं।

इसकी जड़ का शीत कषाय तथा क्वाथ भी ाथ श्वान विष नाशक है। यह उदर शूल, ृमि, प्रदाह और सर्पदंश (२॥ मा० छिलके ा चूर्ण) प्रभृति विषों को शमन करने वाला । इसकी मूल त्वचा द्वारा निर्मित तैल का ंधिवात में वाह्योपयोग होता है। कम मात्रा में ाह रसायनिक गुणों को करता है।

मसूड़े और ओष्ठ सूजने पर मधु के साथ ालेप करने अथवा इसके काढ़े से कुल्ली करने से ाभ होता है एवं मसूढ़ों से खून बहना बन्द ोता है। यह विसूचिका नाशक है तथा कूकर खाँसी की प्रथमावस्था में प्रयोग करने से लाभ ारता है।

जलोदर में जड़ के चूर्ण की १॥ से ३ मा० ी मात्रा देने से दस्त होकर रोग दूर होता है। अजीर्ण नष्ट होता है।

दर्द और शोथ पर जड़ को पीसकर लेप करने से फायदा होता है।

जड़ के छिलके का चूर्ण सेवन करने से दस्त होकर पेट के कीड़े दूर हो जाते हैं।

छिलके का चूर्ण १ माशा, काली मिर्च का चूर्ण १ मा० दोनों को मिलाकर सेवन करने से बवा-सीर में लाभ होता है। इसके छिलके को पीस कर लेप करने से त्वचा के रोग दूर होते हैं।

जड़ के छिलके का चूर्ण जायफल, जावित्री लौंग, सम भाग के चूर्ण को २ माशे की मात्रा में उपयोग कराने से कोढ़ का बढ़ना रुक जाता है।

जड़ के छिलके के चूर्ण को अडूसे के काढ़े के साथ सेवन करने से राजयक्ष्मा के लिए गुणदायी है।

यदि छिलका और बीज समभाग लेकर कूट पीस कर गोली चना प्रमाण बना कर एक मा० से दो मा० तक सेवन कराएँ तो वमन व रेचन सरलतापूर्वक लाता है और आमाशय की सूजन तथा बदन के नीचे के भागों के दर्द और जलोदर में बहुत मुफीद है।

अंकोल का चूर्ण बनाकर शहद के साथ खाकर ऊपर से मिश्री मिला हुआ दुग्धपान करने से प्रमेह दूर हो जाता है और कटिशूल, शिरशूल एवं शारीरिक पीड़ा दूर होती है-तथा पौष्टिक है।

अंकोल की जड़ १ तो०, कूट ३ मा० पीपल ३ माशा, बहेड़ा ६ माशा मिलाकर इसका काढ़ा बनाएँ, इसे ठंढा होने पर मिश्री मिला कर पिलाने से इन्फ्लुएंजा [संक्रामक प्रतिश्याय] में अधिक लाभ होता है।

प्रत्येक भाँति के विष में जड़ का काढ़ा बनाकर खूब पिलाना चाहिए। इससे वमन और दस्त होकर विष दूर हो जाएगा।

इसकी ताजी छाल १ मा० से ४ मा० तक गोदुग्ध में पीसकर पिलाने से बिना कष्ट के वमन और रेचन होते हैं तथा बच्चों की मृगी (अप-स्मार) को बहुत फायदा पहुँचता है।

अङ्कोल मूल द्वारा भस्म निर्माण विधि–

अंकोल वृक्ष की छाल लाकर सुखा लें। पुनः उसी वृक्ष की मोटी जड़ पृथ्वी के भीतर से खोद लाएँ और उसमें गड्ढा बनाएँ। तत्पश्चात् उक्त गड्ढे में थोड़ी छाल रखकर उसमें कलई पत्र लपेटा हुआ शुद्ध ताम्र चूर्ण [या ताम्र का पैसा] रखें और ऊपर से उक्त छाल भर दें। अब इसे कपरौटी कर सुखा लें। और गजपुट की अग्नि मात्र दें। शीतल होने पर निकालें। कागज के रंग की श्वेतभस्म प्रस्तुत होगी। मात्रा:–१–२ चावल यथोचित अनुपान के साथ उपयोग में लाएँ।

गुण—सम्पूर्ण शारीरिक व्याधियों के लिए अक्सीर है। (कु० फां०)

अङ्कोल के पत्ते

चोट लगने से यदि दर्द होता हो तो अंकोल के पत्ते लाकर उसको जल में उबाल कर उसकी भाप उस जगह देना, पुनः उक्त पत्तों को गरम २ बाँध देने से फौरन दर्द दूर हो जाएगा। (डा० मसाराम अर्जुन)

अतिसार रोगी को पत्तों का ६ मा० रस दूध के साथ मिलाकर पिलाना चाहिए। इससे

[किसी किसी के मत से दूसरी कक्षा में] गरम तर मानते हैं।

हानिकर्ता—श्लेष्मा अधिक उत्पन्न करता है। दर्पघ्न—काली मिर्च और शीतल व रूक्ष वस्तुएँ प्रतिनिधि—किसी किसी रोग में कुकरौंधा है। मात्रा—४ या ६ मा० तक। विशेष प्रभाव—विरेचन व शोथलय कर्ता, हृदय को बलप्रद, करता, कफ और वायु के विकारों को हरण करता, उदर की पीड़ा को हरण कृमिघ्न, और इसकी जड़ के छाल का चूर्ण १ मा० काली मिर्च के साथ बवासीर को बहुत गुण कारक है।

इसके अत्यधिक उपयोग से आमाशय निर्बल होजाता है, और सिर में झनझनाहट के साथ सीरा दर्द शुरू हो जाया करता है। गुदा स्थान में जलन मालूम होती है। नेत्र पीले पड़ जाते हैं निद्रा कम आती है। मुर्त मस्तिष्क कार्य करने की इच्छा अधिक बढ़ जाती है। ऐसी अवस्था होने पर शंखपुष्पी चूर्ण ४ मा० दुग्ध पावभर में उबालकर ठंडा करके स्वाद के अनुसार मिश्री मिलाकर पिलाने से तत्काल समस्त विकार नष्ट होते हैं। जड़ उष्ण और चरपरी होती है। फल ठंडा पौष्टिक शरीर को मोटा करने वाला होता है। यह आहार कार्य में आता है। किन्तु अधिक खाने से गरमी मालूम होती है।

अङ्कोल के विविध अंगों के अनेक उत्तम उपयोग :—

अङ्कोल की जड़ तथा छाल—देशी चिकित्सा में इसकी जड़ की छाल रेचक तथा कृमिघ्न प्रभाव के लिए उपयोग में आती है। बम्बई में संधिवात की पीड़ा को शमन करने के लिए इसके पत्तियों का पुल्टिस व्यवहार में आता है। (डाक्टर संखाराम अर्जुन)

मि० मोहीदीन शरीफ के वर्णनानुसार उक्त औषधि कुछ एक गुप्त योगों का, जो, वीर्य रोग स्वचारोग तथा कुष्टरोग की चिकित्सा में अर्काट तथा वैलौर प्रभृति स्थानों में अत्यधिक प्रचार पा चुके हैं, एक प्रधान अवयव है। और वह स्वानुभव का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मैंने

उक्त छाल को कुछ कुष्ट रोगियों के कराया और अनेक दशाओं में मैंने इसे की इतनी कम मात्रा में भी वामक [illegible] पाया। अधिक मात्रा (अर्थात् [illegible] उपयोग में लाने पर यह औषध [illegible] (अहानिकर) वामक तथा थोड़ी [illegible] उत्क्लेश कारक और ज्वरघ्न औषध सिद्ध इससे भी न्यून मात्रा में यह सर्वोत्तम परिवर्तक, बलप्रद औषधियों में [illegible]

इसकी त्वचा अत्यन्त तिक्त है, [illegible] रोगों में इसकी प्रसिद्धि बिना आधार [illegible] यदि इसको पर्याप्त काल तक लगातार [illegible] में लाया जाय तो मदार की अपेक्षा [illegible] इसका प्रभाव अधिक होता है।

वे पुनः वर्णन करते हैं कि यह [illegible] (Ipecacuanha) की एक उत्तम [illegible] निधि है और प्रवाहिका के अतिरिक्त उन रोगों में लाभदायक सिद्ध होता है, इपिकेकाना व्यवहृत है।

ज्वरघ्न तथा स्वेद जनक होने के [illegible] नष्ट करने में यह उपयोगी पाया [illegible] उत्क्लेश कारक, मूत्र जनक और [illegible] हेतु इसकी जड़ की छाल की मात्रा १ से [illegible] तक और परिवर्तक रूप से १ से २॥ [illegible] है। यह कुष्ट एवं उपदंश में प्रयुक्त देशी लोग इसे विशेषतः विषैले काटने में विषघ्न ख्याल करते हैं।

[illegible]

साए में सुखाकर चूर्ण कर बारीक छान [illegible] बोतल में सुरक्षित रक्खें।

रत्ती, (२० ग्रेन) । (मो० श०)

इसकी जड़ की छाल चावल के पानी में [illegible] कर थोड़ी से शहद के साथ अतिसार में [illegible] जाती है। आमातिसार और रक्तातिसार में त्वचा का चूर्ण ५ रत्ती दिन में २-३ बार कराना चाहिए।

यह नित्य ज्वरों में भी उपयोगी है। की अवस्था में २॥ से ५ रत्ती देने से [illegible]

...मी सिर में दर्द हो और किसी तरह अच्छा न होता हो तो उक्त तैल को २० बूंद की मात्रा में बकरी के दूधमें थोड़ा सा शहद डालकर पिलाना लाभदायी है। इससे मस्तिष्क पुष्ट होता है।

इसके तैल को तिल के तेल में मिलाकर लगाना बालों को बढ़ाता है और सिर के जुओं को दूर करता है।

गरम पानी में तैल डाल कर कुल्ली करना मसूड़ों की सूजन, दर्द, खून बहने को आराम करता है।

चेचक के दाग पर गेहूं के आटे में हल्दी और अंकोल का तैल मिलाकर पानी से गीला करके लगाना रंगको ठीक करता है और रूप सुन्दर करता है।

नोट—प्रायः निघण्टुकार अङ्कोल को रेचक मानते हैं पर कई प्राचीन इसे संग्राही कहते हैं। चरक सुश्रुतमें विपत्र मात्रा है पर संग्राही विरेची गुण का उल्लेख देखने में नहीं आया।

...कः ankolakah-सं० पुं० अङ्कोल (Alangium Decapetalum, Lam.) र० सा०-सं०।

...ल फल्कः Ankola kalkah सं० पुं० ढेरे की जड़ की छाल चावल के धोवन में पीस शहद डाल कर पीने से अतिसार और विष के विकार दूर होते हैं। भा० म० ख० २ अति० चि० शाङ्ग० सं० म० ख० अ० ५

...ल तैलम् ankola tailam सं० क्लो० अङ्कोल बीज तैल। Alangium decapetalum, Lam. (Oil of-) । वै० निघ०।

...ल फल सङ्काशः ankola-phala-sankáshah-सं० पुं०, फल विशेष। संसार में इसी नाम से प्रसिद्ध है। वै० श०।

...ल पक्षद्धती ankola-baddhahvati-सं० स्त्री० यो० म० शुद्ध पारे को श्वेत अङ्कोल के रस से तीन दिन तक भावित करें, फिर पारे के समान भाग गन्धक मिलाएँ और खरलमें बारीक कज्जली बनावें। फिर अङ्कोल ही के रस को मिलाकर गोला बनालें, फिर तत्काल मारे हुए बकरे के मांस का पिंड जैसा बना कर गोले को उसके भीतर रक्खें। फिर लाल चित्रक के रस और तोल मूली की जड़ का रस इनमें उसको डुबाकर फिर बाहर से चारों तरफ़ बकरे का मांस लपेट दें फिर अग्नि के समान गरम तैलमें उसको डालकर भूनलें। और जब वह मांस पिंड भूनकर सिंदूर का सा रंग धारण करले तो निकाल कर रखलें।

मात्रा—१ रत्ती शहद और घी के साथ खाएँ।

गुण—इसके सेवन से मनुष्य वीर्यवान होजाता है। नपुंसकता जाती रहती है। इस पर कसैला पदार्थ सेवन करना निषेध है।

अङ्कोलन् ankolam-मल० ढेरा अंकोल (Alangium decapetalum, Lam.) इं० मे० मे०।

अङ्कोलमनचर ankolama-nachar-अज्ञात।

अङ्कोलम् चेट्टु ankolam-chettu—ते० अकोला, अङ्कोल ढेरा [Alangium decapetalum, Lam.] स० फा० इं०।

अङ्कोलमु ankolamu ते०, ढेरा, अङ्कोल (A. decapetalum, Lam.) इं० मे० मे०।

अङ्कोला ankolá-म०,	ढेरा, अङ्कोल,
अङ्कोली ankolí-कना०	अङ्कोला (Alangium decapetalum,
अङ्कोले ankole-कना०	Lam. -स०
अङ्कोल्य ankolya-गु०	फा० इं०।
अङ्कोलुम् ankolum-ता०	

अङ्कोल्लः ankollah-सं० पुं० (Cedrus deodara) देवदारु। रा० नि० व० २३। वा० उ० ३८ अ०।

अङ्कोल्लकः ankollakah सं० पुं० (Alangium Decapetalum, Lam.) अङ्कोल मद० व० १।

अङ्कोल्लसारः ankollasárah-सं० पुं० मालव प्रसिद्ध स्थावर विष भेद (A kind of poison) हे० च०-४ का०। अफीम, संखिया, प्रभृति। श्रो० श०।

अङ्कोहर ankohara-हिं०संज्ञा पुं०ढेरा,अङ्कोल (Alangium decapetalum, Lam.).

प्रथम दस्त होकर कोष्ट शुद्धि होती है फिर वे एकदम बन्द हो जाते हैं।

अंकोल के पत्ते पीस कर पुल्टिस बांधने से गठिया का दर्द दूर हो जाता है।

पत्तों को पीस कर टिकिया बना लें और सरसों के तेल के साथ कड़ाही में डालकर आग पर रख जला लें। जब जल जाए तो थोड़ी स्याह मिर्च का चूर्ण डाल कर मरहम तयार करें। इसको उपयोग में लाने से प्रत्येक भांति के व्रण, खुजली खरवा प्रभति अच्छे होजाते हैं।

पत्तों को जलाकर उसकी राख १ तो० लें। फिर इसमें काली मिर्च २५ नग, तुतिया भुनी ३ मा०, हरताल १ मा० मिलाकर खूब खरल करें। दाद को लिए का सेरा जिसमें मोम मिलाया गया हो इसमें खरल करके मरहम तैयार कर लें। इसके लगाने से बवासीर के मस्से सूख कर निकल जाते हैं।

अण्डवृद्धि—अंकोल पत्र उबालकर बांधने से जल निकलता है।

अंकोलकी लकड़ी—नासूरमें इसकी लकड़ी की राख भरनी चाहिए। इससे नासूर अच्छा हो जाता है।

इसकी लकड़ी का चूर्ण बनाकर इसे पियारांगा, कागजी नीबू के बीज तथा दरियाई नारियल आदि उपयुक्त औषधियों के साथ मिलाकर विशूचिका रोगी को खिलाने से लाभ होता है।

अंकोल की लकड़ी का फर्श बनाकर यदि इस पर सोया जाए तो कोई कीड़ा मकोड़ा पास न आएगा।

अंकोल पुष्प—इसके पुष्प मधुर, शीतल, कफ नाशक, वीर्यवर्धक, बलकारक, दस्तावर एवं वात, पित्त, दाह रुधिर विकारों को दूर करते हैं।

अंकोलके फल—इसका फल शारीरिक दाह, राजयक्ष्मा और रक्तपित्त को लाभ पहुंचाता है। शारीरिक दाह में फलों को पीस कर लेप करने से लाभ होता है। रक्तपित्त में फल को मिश्री के साथ पीस कर पीने से मुंह आदि द्वारा रक्तस्राव बन्द होजाता है।

अतिसार में इसके फल के गूदे को शहद में मिलाकर चावल के धोवन के साथ खाने से लाभ होता है।

फलों के गूदे और तिलों के तेल मिलाकर देने से सूजाक दूर होता है।

वर्षा ऋतु में जो फुड़ियां बगल के गले में प्रायः हो जाया करती हैं, रोगी मर जाते हैं, आरम्भ ही में सर्व यदि इसका एक फल खिलाया फल का पानी निकाल कर गिल्टियों दिया जाए तो दर्द को तुरन्त लाभ रोगी बच जाएगा।

अंकोल-तैल निकालनेकी विधि के मुंहको कपड़ेसे बांध दें की गिरी को कूट कर इस पर दिया टुकड़ा अभ्रक का इस पर रखकर धारा करें, इसकी गरमी से तैल में आजाएगा इसी को व्यवहार में लें।

यदि किसी धारदार शस्त्र से व्रण हो अंकोल तैल में रुई भिगोकर पट्टी बांध बहता हुआ रक्त भी रुक जाता है और शीघ्र सूख जाता है।

अंकोल तैल १ पाव, मो० १ छटांक पर जलाकर रख दो, २ मा० भुनी तूतिया दो, और ठंडा होने पर अच्छी प्रकार किसी बर्तन में रख दो। यह मलहम खुजली, भगन्दर, नासूर, घाव, फोड़ा प्रभति समस्त त्वचा सम्बन्धी रोगों करता है।

२ बूंद तैल मिश्री में मिलाकर रोगी को उपयोग कराने से उसे लाभ।

२ से १२ बूंद तक तैल उष्ण दुग्ध कर मिश्री डालकर प्रति दिन पीना बलवान बनाता है। और प्रमेह, निर्बलता, में चक्कर आना तथा आंखों में अंधेरा आना को दूर करता है।

३॥ मा० तैल उष्ण जल से पीना लाता है और पेट के दर्द व बदहजमी करता है।

…रणम् anga-daranam–सं० स्त्री० (Bilious pain) पित्त जन्य पीड़ा, पैत्तिक व्यथा। वै० श०।

…ान anga dána–फ़ा० अङ्गदान, हिंगु वृत्त, हींगका पेड़ (Ferula Fœtida, Regel.) हिं० पुं० संज्ञा [सं०] तनुदान, तनसमर्पण। सुरति। रति। नोट—यह स्त्री के लिए प्रयुक्त होता है। क्रि० प्र०—रति करना। सम्भोग करना।

…दाहः anga-dáhah–सं० पुं० (Burning of the body) गात्रदाह, देहकी ज्वाला। वै० श०।

…द्वार anga-dvára–हिं० पुं० संज्ञा [सं०] शरीर के मुख, नासिका आदि दस छेद।

…धारी anga-dhári–हिं० पुं० संज्ञा [सं०] शरीरी। प्राणी। शरीर धारण करने वाला।

…र angana–हिं० पुं० संज्ञा [सं० अङ्गण] A yard (१) आँगन। सहन। चौक–पं०। (२) चरवा, कुमा–उ० प० सू०। मेमो०

अगेनोस्मा केर्योफाइल्लेटा aganosma Caryophyllata–लेटदलुरी,चंगु फ्रैक्सिनस फ्लोरिबण्डा Fraxinus Floribunda, Wall. बनरिश–अफ़० । सुम,सुमु, हुन–पं०। कन्नु, तुहसी नैपा०।

जैतूनवर्ग

(N. O. Oleaceæ)

उत्पत्तिस्थान—शीतोष्ण और मधः शाल्पीय हिमालय–काश्मीर से भूटान पर्यन्त–तथा खसिया पर्वत।

उपयोग—इसके प्रकाण्ड (तने) को काटनेसे इसमें से एक भांति का ओस, मधुर स्राव (शीरखिश्त) प्राप्त होता है जो सम्मत शीरखिश्त (Officinal manna) का प्रतिनिधि है। इसे इसके मधुर एवं किञ्चित् कोष्ठ मृदुकारी प्रभाव हेतु उपयोग में लाते हैं। (वैट०)

…ना anganá–सं० स्त्री० १–(a woman or female in general, a wife) नारि, स्त्री, पत्नी, कामिनी। मे० नत्रिकं। २–(Prunus mahaleb, Linn.) प्रियंगु, भा०। ३–हिं० पुं० (A yard) आँगन, अङ्गना।

अङ्गनाप्रियः anganá-priyah–सं० पुं० १ (Saraca Indica, Linn.) अशोक वृक्ष। र० मा०। २–कुमोलक, कर्णिकार। श्वेतट्–कम्बल–यस्त्र०, यं०। Davil's Cotton (Abroma Augusta, Linn.) ई० मे० मे०। प० मु०।

अङ्गनाप्रिया anganá-priyá–सं० स्त्री० प्रियंगु, फूल प्रियंगु, गन्ध प्रियंगु, नारिवल्लभा, (prunus mahaleb, Linn.) भा० पू० १, भा० क० व०।

अङ्गनेर anga-ner–राज० पुं० ब्याजा–हिं०।

अङ्गन्यास anga-nyása–हिं० संज्ञा पुं० मंत्रों द्वारा अङ्गों का स्पर्श।

अङ्गपाक anga-páka–हिं० पुं०
अङ्गपाकता anga-pákatá–सं० स्त्री०
पित्तजन्य रोग, पके फोड़े के सदृश शरीरमें वेदना होना। वै० श०।

अङ्गपालिः anga-pálih–सं० स्त्री० (An embrace) गोद, आलिंगन।

अङ्गपीड़ा anga-pirá–सं० स्त्री० (Bodily pain) वायु जन्य रोग, शरीर व्यथा, गात्र-वेदना।

अङ्गपूजितः anga-pújitah सं० पुं० अश्वतर, अश्वखरज, खच्चर घोड़ा। ढंकी (Donkey, mule)–ई०। मद० व० १२।

अङ्गप्रसारणम् anga-prasáranam–सं० स्त्री० कायविस्तार, शरीर का प्रस्तार, शिथिलता। वा० नि० ४ अ०।

अङ्गवली anga-balí–सं० स्त्री० त्रिवलि, जठरावयव विशेष।

अङ्गबार angabára–फ़ा० अञ्जबार (Polygonum bistorta, Linn.)

अङ्गबीं Angabín–फ़ा० शहद, मधु। honey (Mol) । स० फ़ा० ई०।

अङ्गबीने खुश्क angabine khushka–फ़ा० सुरकशर्बी। एक प्रकार का शहद है जो अत्यन्त शुष्क होता है। गन्ध तीव्र होती है।

अङ्कुरा-विरइ ankhūrá-virai–ना० पुनीर के बीज । तुक्मे काकनजे-हिन्दी-फा० । (Withania puneeria Coagulans *Dunal.*) सं० फा० इं० ।

अङ्गम् angam–सं० क्लो० Myrrh (१) (Balsamodendron Myrrh.) बोल । सुगन्ध बोल–बं० । रा० नि० व० ६ । (२) शरीर, बदन, देह, तन, गात्र, जिस्म, (The body) । (३) शरीरावयव, अवयव (An organ, a limb or member of the body.) उज़्व–अ० । रा० नि० व० १८ ।

शरीर के छोटे छोटे भागों को अंग कहते हैं, जैसे—हाथ, पांव, जंघा, हृदय, अन्त्र, चक्षु– इत्यादि । कुछ अङ्ग पोले होते हैं और कुछ थैली के समान, जैसे–मूत्राशय, शुक्राशय, आमाशय और गर्भाशय । कुछ अङ्ग नली के सदृश होते हैं, जैसे–रक्त की नलियां, शुक्र की नलियां, पाचक रसों की नलियां, और मूत्र की नलियां । (३) उपसर्जनभूत । हे० च० नानार्थ पुं० (१) Earth, भूमि । (२) भाग, हिस्सा (A part or portion) । (३) A constituent, part.

अङ्गकम् angakam–सं० क्लो० १-(Body.) शरीर २—अगर (Aloe wood) । ३ – A limb शरीरावयव ।

अङ्गकर angakara–सं० भारकरेला, किरार । (Momordica dioica, *Roxb.*) फा० इं० १ भा० ।

अङ्गगौरवम् anga-gouravam–सं० क्लो० (Heaviness of the body.) शरीर का भारीपन, शरीरका गुरुत्व । गाभार–बं० । वा० नि० १३ अ० ।

अङ्गग्रहः anga-grahah–सं० पुं०, गठिया, अङ्गवेदना । वा० नि० १६ अ० । शरीर का दर्द शारीरिक व्यथा, शरीर की पीड़ा, अकड़वाई, वात रोग, देह का जकड़ना । वह रोग जिससे देह में पीड़ा हो । Spasm, (Bodily pain)

अङ्गग्लानिः anga-glánih–सं० क्लो० देह की जड़ता, देह जाड्य, शरीर का जड़ (Langour) । वा० नि० १।

अङ्गघातः anga-ghátah–सं० पुं० चोट का लगना, अङ्गाघात (Bo[illegible]) वै० श० ।

अङ्गचयः anga-chayah–सं० पुं० Perineum–इं० गुदा और वृषण भाग, मूलाधार । इजान–अ० । वै० ।

अङ्गचेष्टा anga-cheshtá–सं० क्लो० चालन, शरीर को गतिदेना । वा० अ० ।

अङ्गजम् ang-jam–सं० क्लो० (Blood) रक्त ३ - फोसिन [illegible] मे० जत्रिक ।

अङ्गजः anga-jah सं० पुं०, १-केश [illegible] केश । २–हिज़ाज (A disease) ३–हाल, रोम, मांस । (Muscle, धातु । ४-इन्टॉक्सिकेशन Intoxication मद । वि० । ५-देखो–अङ्ग । ६-(A Love, cupid, intoxicating passion. काम ।

अङ्गज्वरः anga-jvarah–सं० पुं० राजयक्ष्मा, यक्ष्मा, (Consumption

अङ्गज्वरम् anga-jvaram–सं० क्लो० के भागों में लगा हुआ ज्वर । अथ० सू० ८ का० ९ । शरीर के अङ्गों में ज्वर करने वाला । अथ० सू० ८, २, का० १।

अङ्गणं anganam–सं० क्लो० आंगन चौक, अजिर, घर के बीच का खुला भाग । अँगना, (हिं) अङ्गन भूमि (A [illegible]rd) वै० श० ।

अङ्गतिः angatih–सं० पुं० (Air, w[illegible] वायु । २-(Fire) अग्नि (श०) । ३–विष्णु ।

अङ्गतापः anga-tápah–सं० पुं०, शरीरोष्णता, देहकी गरमी (Body heat वै० श० ।

अङ्गदं angadam–सं० क्लो० (An armlet)

ंदरणम् anga-daranam-सं० स्त्री० (Bilious pain) पित्त जन्य पीड़ा, पैत्तिक व्यथा। वै० श०।

ान anga dána-फ़ा० अञ्जदान, हिंगु वृक्ष, हींगका पेड़ (Ferula Fœtida, ...gel.) हिं० पुं० संज्ञा [सं०] तनुदान, आत्मसमर्पण। सुरति। रति। नोट—यह स्त्री के लिए प्रयुक्त होता है। क्रि० प्र०—रति करना। सम्भोग करना।

ाहः anga-dáhah-सं० पुं० (Burning of the body) गात्रदाह, देहकी ज्वाला। वै० श०।

ार anga-dvára-हिं० पुं० संज्ञा [सं०] शरीर के मुख, नासिका आदि दस छेद।

ारी anga-dhári-हिं० पुं० संज्ञा [सं०] शरीरी। प्राणी। शरीर धारण करने वाला।

ा angana-हिं० पुं० संज्ञा [सं० अङ्गण] A yard (१) आँगन। सहन। चौक-पं०। (२) चत्वर, कुमा-उ० प० सू०। मेमो०

अगेनोस्मा केर्योफाइल्लेटा aganosma Caryophyllata-सं०दसुरी,चंदु मैक्मिनम

...फ्लोरिबण्डा Fraxinus Floribunda, Wall. बनरिश-अकु० । मूम,सुसु, सुन-पं०। ... कडु, गुहसी नैपा०।

जैतूनवर्ग

(N. O. Oleaceæ)

उत्पत्तिस्थान—शीतोष्ण और अधः आल्पीय हिमालय-काश्मीर से भूटान पर्य्यन्त-तथा खसिया पर्वत।

उपयोग—इसके प्रकाण्ड (तने) को काटनेसे इसमें से एक भांति का ओस,-मधुर स्राव (शीरखिश्त) प्राप्त होता है जो सम्मत शीरखिश्त (Officinal manna) का प्रतिनिधि है। इसे इसके मधुर एवं किञ्चित् कोष्ठ मृदुकारी प्रभाव हेतु उपयोग में लाते हैं। (वैट्स०)

ना anganá-सं० स्त्री० १-(a woman or female in general, a wife) नारि, स्त्री, पत्नी, कामिनी। मे० नत्रिकं। २-(Prunus mahaleb, Linn.) प्रियंगु, भा०। ३-हिं० पुं० (A yard) आंगन, अङ्गना।

अङ्गनाप्रियः anganá-priyah-सं० पुं० १-(Saraca Indica, Linn.) अशोक वृक्ष। र० मा०। २-कुमोल्पल, कर्णिकार। घोलट्-कम्बल-कस्य०, बं०। Devil's Cotton (Abroma Augusta, Linn.) इं० मे० मे०। प० मु०।

अङ्गनाप्रिया anganá-priyá-सं० स्त्री० प्रियंगु, फूल प्रियंगु, गन्ध प्रियंगु, गन्धिवल्लभा, (prunus mahaleb, Linn.) भा० पू० १, भा० क० व०।

अङ्गनेर anga-nei-राज० पुं० माला-हिं०।

अङ्गन्यास anga-nyása-हिं० संज्ञा पुं० मंत्रों द्वारा अङ्गों का स्पर्श।

अङ्गपाक anga-páka-हिं० पुं०
अङ्गपाकता anga-pákatá-सं० स्त्री०
पित्तजन्य रोग, पके फोड़े के सदृश शरीरमें वेदना होना। वै० श०।

अङ्गपालिः anga-páliḥ-सं० स्त्री० (An embrace) गोद, आलिंगन।

अङ्गपीड़ा anga-pírá-सं० स्त्री० (Bodily pain) वायु जन्य रोग, शरीर व्यथा, गात्र-वेदना।

अङ्गपूजितः anga-pújitah सं० पुं० अश्वतर, अश्वतरज, खच्चर घोड़ा। डंकी (Donkey, mule)-इं०। मद० व० १२।

अङ्गप्रसारणम् anga-prasáranam-सं० स्त्री० कायविस्तार, शरीर का प्रसार, शिथिलता। वा० नि० ४ अ०।

अङ्गबली anga-bali-सं० स्त्री० त्रिवलि, उदरावयव विशेष।

अङ्गबार angabára-फ़ा० अञ्जबार (Polygonum bistorta, Linn.)

अङ्गबीं Angabín-फ़ा० शहद, मधु। honey (Mel)। स० फ़ा० इं०।

अङ्गबीने खुश्क angabíne khushka-फ़ा० खुश्कअबीं। एक प्रकार का शहद है जो अत्यन्त शुष्क होता है। गन्ध तीव्र होती है।

अङ्गभङ्गः anga-bhangah—सं० पुं० (Yawning) १–अङ्गड़ाई, हड़फूटन, शरीर-भङ्ग वा० उ० २ अ० सू० ४ अ० २–(Perineum) गुदा और वृषण अथवा भग के मध्य का भाग, मूलाधार। ३–(A disease) रोग। ४–(Nervous disease) वायुरोग। ५–(Palsy or paralysis of limbs) पक्षाघात।

अङ्गभूः angabhúh—सं० पुं० (A son) पुत्र। (२) Cupid—काम।

अङ्गभेदः anga-bhedah—सं० पुं० (Nervous pain) वायुरोग, वायुजन्य गात्रभङ्ग; शरीर में होने वाली पीड़ा। अथ० सू० ३० अ० ८–४०५।

अङ्गमर्दः anga-marddah—सं० पुं० (१) गात्रवेदना, देह की पीड़ा, अंगड़ाई। वा० सू० ४ अ०।

अङ्गमर्दकः angamardakah—सं० पुं० (Rheumatism) अंगमर्दित। अंगमर्द, हड्डियों का फूटना। हड्डियों में दर्द। हड़फूटन रोग। (२) संवाहक। अंग मलने वाला। हाथ पैर दबाने वाला। नौकर। सेवक (One who shampoos his master's body)

अङ्गमर्दनम् anga-marddanam—सं० क्लो० गात्रफोटन, शरीर का फूटना, वेदना, व्यथा।

अङ्गमर्द प्रशमनम् anga-maridda-prashamanam—सं० क्लो० वेदना शमन (शा० क), वेदना हर, व्यथा (व्यथ, रुक्, भेद) प्रशमन—हिं० मुसक्किनुल्अलम् (ए० व०), मुसक्किनातेअलम्, (व० व०), मुसकिनुलअलम् (ए० व०) मुसक्किनाते अलम् (बहु० व०), मुफ़र्रिहातुल् दर्द्, सारा—अ०। दाफ़ादर्द—फ़ा०। एनोडाइन्स (Anodynes) एनलजे (जे) सिक्स (Analgesics)—इं०।

उक्त प्रकार की औषधियां नाड़ी अथवा वात केन्द्रस्थ उत्तेजना एवं क्षोभ को दबाकर या धीमा करके वेदना शामक प्रभाव करती हैं। ऐसी औषधियां सम्वेदनाओं को मस्तिष्क तक पहुँचने से रोकती हैं। अस्तु वे संज्ञा को या तो उसके उद्भव स्थान पर अथवा वाहन पथ में, स्थान पर, जहां कि वे मस्तिष्क पर हैं, अवरुद्ध कर देती हैं।

उक्त प्रकार की औषधियों की सूची यथा—(१) डाक्टरी औषधियाँ

(अफीम), मॉर्फीन (अफीम सत्व), दोना, धत्तूरीन या धन्तूरीन (ऐट्रोपीन), क्लोरल, कोनाइन (शौकरान), (अजवाइन खुरासानी), स्ट्रेमोनियम (केनाबिस इण्डिका (भंग), (पीली चमेली की जड़), क्लोरल, अनस्थेटिक्स (व्यापक अवसन्नता जनक औषधियां), कोनेसून, फेनेसीटीन, एसेटे (ऐसिटेनिलाइड), रोशन कायापुटी, हर्कोसाइटीन (विष-सत्व, विषीन), (सम्मोहनी), कोनाइन (सत्व केफ़ीन (कहवा सत्व), कैम्फर (स्पिरिटस ईथरिस (Spiritus Ethe...

(२) आयुर्वेदीय औषधियाँ—बृहती, कण्टकारी, एरण्डमूल, काकोली, चन्दन, उशीर (खस), बड़ी इलायची, बाकुल।

(३) आयुर्वेदीय व यूनानी औषधियाँ अगर, दारुहरिद्रा (रसौत), रक्तसेमल, (सुल्ताना चम्पा, सुर्पन), मुरक (मोथा), साल (साल्), पोहकरमूल (अशोक, नीलोत्पल (नीलोफर), कत्थ (धारकदम्ब (हल्दी), कायफल, (मुलेठी) मेथी, कैथ, हल्दी, देवदारु, इलायची, इं० मे० मे०। शेष यूनानी तथा परिभाषाओं के लिए देखो मुसकिन।

नोट—उपर्युक्त औषधियों में से ... का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं स्पष्ट होता है। ... दना को उपरोल्लिखित सम्पूर्ण स्थलों पर ... कर व्यथा को नष्ट कर देती है। ... संज्ञावहा वात नाड़ियों के क्षोभ को दबाकर प्रभाव करता है। तथा जेलसीमियम, ... हाइड्रेट और ब्युटल क्लोरल प्रभृति ...

ज्ञानतन्तुओं के केन्द्रों की उत्तेजना को कम करके ऐसा प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

अंगमर्द प्रशमन औषधों का उपयोग—जब वेदनाधिक्य के कारण व्यग्रता एवं अनिद्रा जन्य कष्ट हो तो ऐसी दशा में डायरेक्ट जेनरल ऐनोडाइन्स (प्रत्यक्ष व्यापक वेदना शामक) को उपयोग में लाना चाहिए।

अस्तु, अफीम अथवा उसके सत्व मार्फीन (Morphine) का येन-केन-प्रकारेण प्रयोग अत्यन्त लाभदायी सिद्ध होता है। विशेषतः मार्फीन के त्वक्स्थ सूचि प्रवेश (अन्तः क्षेप) करने से वेदना तत्काल शांत हो जाती है।

युरिनल कॉलिक अर्थात् वृक्क वेदना में वेलाडोना को बड़ी मात्रा में उपयोग में लाने से बहुत लाभ होता है। किन्तु जब यह अभीष्ट हो कि वेदना सत्वर शान्त होजाय तो उक्त अवस्था में (General anœsthetic) व्यापक अवसादक औषध उपयोग में लाना चाहिए। यथा प्रसवकाल व यकृत वेदना तथा वृक्क वेदना प्रभृति में फेनेजून जेलसीमियम और क्यूटिल क्लोरल प्रभृति वात वेदनाओं में अधिक लाभदायी होते हैं।

ङ्गमेजयत्वम् angamejayatvam-सं० क्लो० अङ्गकम्पन, देहकम्प, शरीर का काँपना। (Shivering)

ङ्गरक्तः anga-raktah-सं० पुं० (Monkey face tree) कम्पिल्ल, कमीला। कमला गुँडि-बं०। अम०।

ङ्गरक्षिणी anga-rakshiṇí-सं० स्त्री० अङ्गत्राण। माँजोया-बं०। वै० श०।

ङ्गरा angharā-यु० Hibiscus Rosa-sinensis, *Linn.* (Flowers of-) गुड़हल, जपापुष्प-सं०। उड़उल-हिं०।

ङ्गरागः anga-rágah-सं० पुं० अङ्गलेपन द्रव्य। यथा—कुङ्कुमादि अनुलेपन द्रव्य, लेप, गात्र रञ्जन द्रव्य। (Scented cosmetic application of perfumed unguents to the body, Fragrant unguent, Liniment.) मालिश-फ़ा०।

(२) (Act. of anointing) अनुलेप करना।

अङ्गराए-हिन्दी angharáe-hindí-अ०, या० फ़ा० अड़उल, गुड़हल, जवा, जासून-हिं०। जासून, गुड़ेल, कुद्दल-द०। जपा-पुष्पम्-सं० Hibiscus rosa-sinensis, *Linn.* (Flowers of-)-स० फा० इं०।

अङ्गरापान angará-páua-हिं० ताम्बूल भेद (A sort of betel)

अङ्गरुहम् anga-ruham-सं० क्लो० (Hair) रोम, बाल, लोम।

अङ्गरुहा anga-ruhá-सं० स्त्री० (Hair) लोम, केश।

अङ्गलाघवम् anga-lághavam-सं० क्लो० (Lightness of the body.) कायलघुत्व, शरीर का हल्कापन। या० उ० १६ अ०।

अङ्गलीह anga-lihna-हिं० पुं० उस्कुलक़ताई, बालछड़ भेद (Garden angelica) इं० हैं० गा०।

अङ्गलेपः anga-lépah-सं० पुं० चन्दनादि द्रव्य, अनुलेपन, लेप (Liniment.)।

अङ्गलेपन anga-lepana-सं० पुं० (१) उबटन (A paste for scouring the skin) (२) The hair wash। फा० इं० २ भा०।

अङ्गलोड्यः anga-lodyah सं० पुं० (१) आर्द्रक, आदी-हिं०। आदा-बं०। Ginger (Amomum Zinziber.) (२) Marsilea Dentata-चिञ्चोटक वृक्ष।

अङ्गवः agnavah-सं० पुं० (Dryfruit) शुष्क फल, सूखा हुआ फल। श० च०।

अङ्गवस्त्रोत्था anga-vastrotthá-[illegible] (White Ajowan-fruit [illegible]) यमानी, सुफेद अजवाइन। [illegible] श०।

अङ्गविकल anga-vil[illegible] imed, par[illegible] ting) [illegible]

अङ्गविकारः angavikárah–सं० (A bodily defect.) शारीरिक दोष।

अङ्गविकृतिः anga-vikritih–सं० पु० (१) अपस्मार रोग, मृगी या मिरगी रोग, मूर्च्छारोग (apoplexy, an apoplectic fit.) रा० नि० व० २० (२) Change of bodily appearance; collapse. गात्र-संकोच।

अङ्गविभ्रंशः anga-vibhranṣhah–सं० पु० काय शैथिल्यरूप-वातज रोग। भा०।

अङ्गविक्षेपः anga-vikshepah–सं० पु० अङ्गहार, अङ्गचालन, अंग (हाथ पाँव) फेंकना, (Spasm) । वा० उ० २ अ०। (२) Gesticulation. हाव भाव।

अङ्गशूलम् angaṣhúlam–सं० क्लो० (Bodily pain) गात्रतोद, गात्रशूल, शारीरिक वेदना। चै० शृ०।

अङ्गशोथः angaṣhothah–सं० पु० (Swelling of the body) कायशोथ, शरीर की सूजन।

अङ्गशोषणम् anga-shoshanam–सं० क्लो० अंग की शुष्कता (-रूक्षता), शरीर का सूखना। वा० उ० ३ अ०।

अङ्गशोषः anga-shoshaha–सं० पु० वातज रोग विशेष, गात्रक्षीणता, देह का सूखना, क्षय (Consumption)।

अङ्गस angasa–सं० पु० पक्षी (A bird)

अङ्गसङ्गम–anga-sangama–सं० क्लो० रति-संयोग, संभोग, मैथुन, स्त्रीप्रसङ्ग (Coition, Copulation)

अङ्गसदनम् anga-sadanam–सं० क्लो० (Depression) शरीरावसाद, अंग की शिथिलता, अवसन्नता, जड़ता। वा० नि० १२ अ०।

अङ्गसादः anga-sádah–सं० पु० (Depression) अवसाद, अवसन्नता। हारा०।

अङ्गसुन्दरः anga-sundarah सं० पु० १-(Cassia Tora) चक्रमर्द, दद्रुघ्न वृक्ष, पँवाड़-हिं०। दादमर्दन-बं०। अम०। (२) (Aloe wood) अगर।

अङ्गसुप्तिः anga-suptih–सं० स्त्री० (Anæsthesia) स्पर्श ज्ञान शून्य, शरीर अंग का सुन्न अथवा जड़ हो जाना, गात्रेर असाड़ता-बं०।

अङ्गसेनः anga-senah–सं० पु० अगस्तिया। बाकस गाछ-बं०। (Agti grandiflora, *Desv.*)

अङ्गसंहतिः anga-sanhatih सं० (१) Compactness, symm[etry] शरीर का गठाव। (२) Body शरीर (३) Stre[ngth] of the body शरीर बल।

अङ्गस्तूरा छाल angastúrá chhála–

अङ्गस्तूरा त्वक् angastúrá-tva[k]–

अङ्गस्तूरा बार्क angustura-bark–

कस्पेरीई कॉर्टेक्स (Cuspariæ cort[ex]) –ले० कथ अङ्गस्तूरा, पोस्त अंगस्तूरा– कस्पेरिया बार्क (Cusparia bark)

रयूटेसीई अर्थात् नागरङ्ग वर्ग।

(N. O. Rutaceæ.)

(ऑफ़ीशल–official)

उत्पत्ति स्थान—दक्षिणी अमेरिका।

लक्षण—उपयुक्त औषधि

(Cusparia Febrifuga) [की] सूखी हुई छाल है जो औषधि [रूप] [में] आती है। ये सपाट, वक्राकार या लिपटे हुए टुकड़े हैं जो ६ इं० या लम्बे, १ इञ्च चौड़े, $\frac{1}{12}$ इञ्च मोटे होते [हैं।] त्वचा का बाह्यतल छिद्रयुक्त एवं धूसरवर्ण का होता है, यह ऊपरी त्वचा [सु]गमता पूर्वक भिन्न की जा सकती है और तलमें श्याम धूसरवर्ण की रेज़िन (राल) वह निकल आती है। भीतरी तल सूक्ष्म [पीत]वर्ण का होता है। यह छाल बहुधा ... और कठोर होती है और इसको जहाँ से [तोड़ें] वहीं से टूट जाती है। टूटा हुआ तल ... दृष्टिगोचर होता है। गन्ध—अप्रिय। तिक्त या उष्ण।

२ परीक्षा – कुचिला वृक्ष की छाल स्वरूप
आकृति में इस उपर्युक्त छाल के समान होती है।
इस कारण इसमें प्रायः उसका मिश्रण किया
जाता है। इसकी एक साधारण परीक्षा यह है कि
कुचिला वृक्ष की छाल के भीतरी तलपर शोराम्ल
(Nitric acid) के लगानेसे उसमें म्रुसीन
होने के कारण रक्तवर्ण उत्पन्न हो जाता है।
इससे इसकी ठीक परीक्षा हो सकती है।

रसायनिक सङ्गठन—इसमें ये निम्न चार
अल्कलाइड्स [क्षारीय सत्व] होते हैं: यथा-
(१) एक तिक्त सत्व कस्पेरीन, (२) गैलिपीन
(३) गैलेपीडीन, (४) कस्पेरीडीन और एक
सुगन्धित तैल।

संयोगविरुद्ध (असम्मिलन)—खनिजाम्ल
और धातु लवण।

प्रभाव—सुगन्धित एवं तिक्त, बलप्रद और
ज्वरघ्न। अधिक परिमाण में उपयोग में लानेसे
यह आमाशय एवं आँतों में प्रदाह उत्पन्न करता
है। यूरुपमें इसको कैलम्बा के सदृश क्षुधावर्द्धन
हेतु अजीर्ण तथा निर्बलता में बरतते हैं। परन्तु
इसमें ज्वरघ्न प्रभाव होने के कारण अमेरिका में
इसे विषम ज्वर और प्रवाहिका में उपयोग में
लाते हैं।

ऑफ़िशल योग [Official propara-
tions. (१) इन्फ्यूज़म् कस्पेरी [Infusum
Cusparie.], इन्फ्यूज़न ऑफ़ कस्पेरिया
[Infusion of Cusparia]-डॉ० ना०।
अंगस्तूरा फांट-हिं०। खिसाँदहे अंगस्तूरा
ता० ना०।

निर्माण-विधि—कस्पेरिया बार्क का चूर्ण एक
औंस, खौलता हुआ परिस्रुत जल एक पाइंट,
१५ मिनट तक भिगोकर छान लें।

मात्रा—१ से २ फ्लुइड औंस (२८·४ से
५६·८ क्यु० से०)

(२) लाइकार कस्पेरी कन्सेण्ट्रेटस (Liquor Cusparie Concentratus)
–ले०। कन्सेण्ट्रेटेड सोल्युशन ऑफ़ कस्पेरिया
Concentrated Solution of Cusparia.–इं०। अंगस्तूरा घन द्रव-हिं०।
माइल अंगस्तूरा ग़लीज़–नि० ना०।

निर्माण-विधि–कस्पेरिया बार्क का ४० नं०
का चूर्ण १० औंस, अल्कुहॉल (२०%) २५
फ्लुइड औंस या आवश्यकतानुसार, कस्पेरिया
को ५ फ्लुइड औंस अल्कोहाल से तर कर के
पर्कोलेटर में डाल दें और तीन दिन तक पृथक्
रख दें। पुनः अवशिष्ट अल्कुहाल को १०
बराबर भागों में विभाजित कर के १२-१२ घंटे
के अन्तर से एक-एक भाग अल्कुहाल डालकर
इसे पर्कोलेट कर लें, यहां तक कि एक पाइंट
द्रव प्राप्त हो जाए।

मात्रा–आधे से १ फ्लुइड ड्राम (१.८ से
३.६ क्यु० से०)

परीक्षित-प्रयोग

(१) टिङ्क्चूरा कस्पेरीई ½ फ्लु० ड्रा०, टिङ्क्चूरा कैप्सिसाई ५ बूंद (मिनिम), सोडियाई
बाइकार्ब १५ ग्रेन, इन्फ्युज़म रीहाई ½ औंस
पर्यन्त ऐसी एक-एक मात्रा औषध दिन में ३
बार दें। गुण–एटोनिक डिस्पेप्सिया (आमाशयिक निर्बलता जन्य अजीर्ण) में लाभजनक है।
(२) टिङ्क्चुरा आरन्शियाई ३० मिनिम,
स्पिरिट एमोनिया ऐरोमैटिक १५ मिनिम, सिरुपस ज़िञ्जिबेरिस ३० मिनिम, इन्फ्युज़म् कस्पेरीई
१ औंस पर्यन्त, ऐसी १-१ मात्रा औषधि दिन
में तीन बार दें। बल्य (टानिक) है।

अङ्गहर्षः anga-harshah.–सं० पुं० (Horripilation.) रोमाञ्च, रोमहर्ष, रोंगटे खड़े
होना। वा० नि० ३ अ०।

अङ्गहारः anga-hárah.–सं० पुं० अंगचालन,
अंग विक्षेप। (spasm.)। (२) gesticulation, a dance. नृत्य।

अंगहीनः anga-hinah.–सं० त्रि० (Having some defective limb.)
अंगरहित, विकलांग, जैसे काणादि (काना
प्रभृति)। (२) crippled लुंज।

अङ्गाकर angákara.–ते० खारकरेला, किरर,
(Momordica Dioica, Rorb.)
फा० इं० २ भा०।

अङ्गारः angárah–सं० पुं० १–(Firebrand or embers) अँगार, अँगरा, नि

अग्निपिंड (बिना धुएँ की आग), आग का दहकता हुआ कोयला, जलता हुआ टुकड़ा यथा—"वृंहतः काष्ठसम्भूतोऽङ्गारः।" वा० सू० ६ अ० चरुणः। २–अंगारपूर्ण पात्र, वह बर्तन जिसमें अंगार रखा हुआ हो। ३ Yellow amaranth) कुरण्टक वृक्ष। कांटी विशेष, पीली कटसरैया, पीतवर्ण, अम्लाम वृक्ष। रत्ना०। ४ (Musk melon)-इं० हिं० शा०। ५–चिनगारी। ६–Charcoal, (whether heated or not)

अङ्गारं angáram–सं०क्ली० (Red colour) रक्तवर्ण।

अङ्गारकः angárakah–सं०पुं० १–कोयला। (A spark, embers) अंगारा, अंगार। २–कुरण्टक, कटसरैया का पेड़, पियाबाँसा–हिं०। कांटी जाति–बं०। (Yellow or white amaranth) मे० कचतुष्क। ३–(wedelia calendulacea, Less.) भृङ्गराज, भांगरा, भँगरा, भँगरैया। रा० नि० वा० ४। भा० पू० १ भा० गु० व०। ४–(Barleria prionitis, Linn.) कटसरैया (पात)। ५–कोयला (Charcoal.)

अङ्गारक तैलम् } angáraka-tailam-सं०
अङ्गारतैल } क्ली० कुडारा ४०० तो० भर लेकर १०२४ तोले पानी में पकाएँ, जब चतुर्थांश शेष रहे तो इसमें १४ तो० तिल तैल डाल कर पकाएँ, तथा इसमें कुड़ारा, अपामार्ग, मोसिका नामक मक्खी इनका कल्क बनाकर उक्त तैलमें डाल कर सिद्ध करें तो यह तैल घावों का शीघ्र शोधन कर अंकुर लाताहै और इसकी मालिशसे नाड़ियां सबल होती हैं। च० द० व्र० शो० चि०।

(२.) मरोड़फली, लाख, हल्दी, मजीठ, इन्द्रायन, बड़ी कटेली, सेंधानमक, कूट, रास्ना, जटामांसी, शतावर, इनका कल्क बनाएँ, २५६ तो० आरनाल नामक कांजी और ६४ तो० तिल तैल मिला तैल सिद्ध करें। इसकी मालिशसे हर प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं।

च०द० }
भैष०र० } ज्वर० चि०
वं० से० सं० }

नोट:—इ[illegible] हरिद्रे
चारुणी, बृहती सैधवं कुष्ठं
यो० त०। अर्थात् इसमें दास
ली हैं।

अङ्गारक मणिः angáraka-manih प्रवाल, मूंगा–हिं०। कोरल (–इं०। र० नि० व० १३।

अङ्गारककर्कटी angára-kar[illegible] (Balls or thick cakes of baked on coal) अर्थात् लिट्टी, बाटी–हिं०। [illegible]टी-बं०।

प्रस्तुतविधि—गेहूं अथवा [illegible] के आटे को जल के साथ [illegible] कर लें। पश्चात् उसमें से थोड़ा [illegible] २ अथवा गोल बटी के आकार के [illegible] पुनः इन्हें धूम रहित अग्नि [illegible] शनैः पकाएँ। बस यही अंगार[illegible] गुण—यह बृंहणी, शुक्रल, लघु[illegible] कारक, बलकारक तथा पीनस श्वास को जीतने वाली है। च० नि०

अङ्गारकित angárakita–हिं० वि० ([illegible] red, roasted) भूंजा, भुना हुआ, पकाया हुआ।

अङ्गार की बटा angára ki bat[illegible]
अङ्गारकी लिट्टा angára ki[illegible]
देखो—अङ्गार कर्कटी।

अङ्गारः angárah–उ०
अंथ्राक्स (Anthrax)–इं०

अङ्गारः का [illegible] का an[illegible]
सांसर्गिक कृमिघ्न सीरम। देखो–एन्टि[illegible]
क्स सीरम स्क्लेवॉस (A[illegible] A[illegible]
Serum Sclavos)–इं०।

अङ्गार कुष्ठका[illegible]
क्लो० हिलावली, हिंगोट[illegible]
(Ingua)[illegible]

अङ्गार धानिका
(A portable fire-pan,
[illegible]

रतन, बोरसी-हिं० । सँजाल य'० । आति-न–फ़ा० ।

धूपः angára-dhúpah-सं० पु० ncense, aromatic vapour) र पर किसी औषधि को डालने से जो धूम्र लता है उसे अङ्गारधूप कहते हैं, वा० चि० प्र० ।

परिपाचितम् angára-paripách-m-सं० क्ली० (१) शूलादि पक्कमांस, शलाका आदि पर पकाया हुआ मांस Roasted food) (२) त्रि० अंगार , अंगारा पर पकाया हुआ ।

र्णी angára-parni-सं० स्त्री०, (Cl-odendron Serratum, *Spreng.*) र्गी, भारंगी । बामण हाटी-बं० । र० सा० ।

(क) पुष्पः angára-k-pushpah सं० पु'० Balanites Roxburghii, *lanch.* जीवपुत्रद्रुम । जियापोता-हिं० । इंगुदी बं० । (Ingua) श० र० । हिंगुआ, गोंदी । गुदी वृक्ष जिसके फल अंगार के समान लाल ते हैं, हिंगोट का पेड़ ।

पात्री angárapátri-सं० स्त्री० (A. ortable fire-pan) बोरसी ।

पूरिका angára-púriká-सं० स्त्री० Bread) रोटक; रोटी । रुटी-बं० ।

रमञ्जरी angára-manjari } -सं० मञ्जी angára-manji } -स्त्री० रञ्ज विशेष (a species of Bonduc r Bonducella) श० र० । महा करञ्ज -हिं० । डहर करञ्ज-बं० । रा० नि० व० ६ अ० ।

रमणिः angára-maṇih-सं० पु० (Coral) प्रवाल, मूंगा ।

रवर्णी angára-varni-सं० स्त्री०, (Cl-erodendron Serratum, *Spreng.*) भार्गी, भारंगी । वामन हाटी-बं० ।

रवल्लरी angára-vallari-सं० स्त्री० करञ्ज विशेष (Ovieda verticulata.) भाषा में नाटा करञ्ज कहते हैं ।

अङ्गारवल्ली angára-valli-सं० स्त्री० १–(Cæsalpinia Bonducella, *Roxb*) महाकरञ्ज, रक्तकरञ्ज । २-(Clerodendron serratum, *Spreng.*) भार्गी । वा० सू० १५ अ० । सुरसादि । ३-(Ocimum album, *Linn.*) सुरसादि तुलसी । भा० पू० १ भा० । ४-(abrus precatorius, *Linn.*) गुञ्जा लता, घुंघची की बेल । चिरमटी की बेल हिं० । बं० । भा० पू० अने० व० । (५) कटुकरञ्ज, करञ्ज बल्ली । (६) रक्तगुञ्जा (लालघुंघची) । भा० पू० १ भा० गु० व० ।

अङ्गारवृक्षः angára-vrikshah-सं० पु० १-(Balanites Roxburghii, *Planch.*) इंगुदीवृक्ष । हिंगोट-हिं० । भा० पू० १ भा० वटा० । रत्ना० । (२) पूतिकरञ्ज ।

अङ्गारवेणुः angára-veṇuh-सं० पु'० (Bambusaarundinacea, *Retz.* The red variety) रक्तवर्ण वंश विशेष, लालबाँस ।

अङ्गारशकटी angárashakaṭi-सं० स्त्री० (A portable fire pan) चुल्हि, चुल्ही, चूल्हा (-ल्ही)-हिं० । चुलो-बं० ।

अङ्गारा angárá-सं० स्त्री० (Ingua) हितावली । इंगुदी वृक्ष, हिंगोट । प० मु० । जियापुता -बं० ।

अङ्गारिका angáriká सं० स्त्री० १- इक्षुकाण्ड, ईख का तना (The stalk of the sugar-can) २-(Butea frondosa, *Roxb.*) किंशुककोरक, पलाश की कली मे० कचतुष्क (३) The bud of the tree किंशुक-कली । (४) चूल्हा (A portable fire-pan)

अङ्गारिणी angáriṇi-सं० स्त्री० (A small fire-pan) छोटी कड़ाही, अंगारि ।

(२) अंगेठी, बोरसी, आतिशदान (३) (A creeper in general) लता।

अङ्गारित angárita-सं० त्रि० (Roasted, half-burnt) भूना, अधभूना। आ० सं० इं० डि०।

अङ्गारितम् angáritam-सं० क्लो० (The early bud of Butea frondosa.) पलाश (किंशुक) की आरम्भकालिक कलियाँ, किंशुक-कोरक, पलाश कलिकोद्गम, हारा०।

अङ्गारिता angáritá-सं० स्त्री० १—(A creeper in general) लतामात्र—अंगारधानी, चुल्हि, चूल्हा मे० चतुष्क। ३—(A bud in general) कली।

अङ्गारी angárí-सं० स्त्री० (A portable fire-pan) छोटी कड़ाही। आ० सं० इं० डि०।

अङ्गारीय angáriya-सं० त्रि०, कोयला बनाने में प्रयुक्त होना, (To be used in preparing coal)

अंङ्गार्कित ángárkita-सं० (Fried) भूना हुआ। आ० सं० इं० डि०।

अङ्गिका angiká-सं० स्त्री० कञ्चुक, सर्पकी कोंचुल, (The skin of a serpent, slough.)

अङ्गिरः angirah-सं० पुं० (Partridge) तित्तर पक्षी, तीतर।

अङ्गिरसीः angirasih-सं० त्रि० (१) अंग या शरीर में रस उत्पन्न करने वाली औषध। (२) शरीर शास्त्र वेत्ता। (अथ० सू० ७, १०, का० ८)।

अङ्गुएण्टम् unguentum-लै० (ए० व०) अंग्वेण्टा Unguenta (ब० व०) ऑइण्टमेण्ट Ointment (ए० व०) ऑइंटमेण्ट्स Ointments (ब० व०)-इं०। मलहम, अनुलेप-हिं०। मर्हम् (ए० व०), मराहम (ब० व०)-अ०, फ़ा०।

अंग्वेण्टम् अर्थात् मलहम एक या अनेक औषधों को किसी प्रकार की वसा या तैल प्रभृति में मिलाकर निर्मित किया हुआ एक अर्ध तरल या मृदु यौगिक है, जो केवल बाह्य प्रयोग में लाया जाता है। मलहम में निम्नांकित वसामय तैलीय (मुख्य अवयव) रूप से अकेले अथवा मिलाकर उपयोग में लाते हैं, यथा—(१) विशुद्ध भेड़ की वसा, (२) शूकर वसा, (३) शूकर की लोबान युक्त वसा, (४) भेड़ के सिर की वसा, (५) भेड़ अंडवसा, मोम, (७) जैतून तैल, (८) बादाम और (९) पैराफ़ीन। सूचना—उष्ण जहाँ उष्माधिक्य के कारण मलहम मृदु हो जाती है, वहाँ पर साधारण स्थान में इण्ड्योर्ड लार्ड (दबाकर हुई) शूकर वसा, विशुद्ध भेड़ की श्वेत या पीत मोम उपयोग में ला।

अङ्गुएण्टम् आयोडाई Unguentum Iodi-लै० आयोडीनानुलेपन, नैलिक प्रलेप (Iodine ointment)। संयोगी—आयोडीन (नैलिका), पोटाशियम् (आयोडाइड (नैलिद), मधुरीन (लार्ड (शूकर वसा)। शक्ति ४% आयोडम्। त्रि० फा०।

अङ्गुएण्टम् आयोडो-पैराफ़ीनी Unguentum Iodoparaffini-लै० नैल-पैराफ़ीन देखो—आयोडोफ़ॉर्म।

अङ्गुएण्टम् आयोडोफ़ॉर्माई Unguentum Iodoformi-लै० आयोडोफ़ॉर्म (Iodoform ointment)। आयथम-आयोडोफ़ॉर्म तथा शूकर वसा या पैराफ़ीन ऑइंटमेण्ट) शक्ति—१ देखो—आयोडोफ़ॉर्म। यो० फी०।

अङ्गुएण्टम् आयोडोफ़ॉर्माई कम यूकेलिप्टी Unguentum Iodoformi cum Eucalyptina-लै० धत्तूरीन व आयोडोफ़ार्म-देखो—आयोडोफ़ॉर्म।

अङ्गुएण्टम् ऑलियो रेज़ाइनी कैप्सिसी unguentum oleo-resinæ capsici-लै० रक्त मिर्च प्रलेप।

…एण्टम् इक्थियॉल unguentum ichthyol–लै० इक्थियॉल प्रलेप।

…एण्टम् एकोनाइटीनी unguentum aconitinæ–लै० विषीन या वत्सनाभी…तु लेपन (aconite ointment) संयोगी अवयव एकोनाइटीन (वत्सनाभीन), …कर वसा (लार्ड) ऑलीइक एसिड। शक्ति–…% देखो-वत्सनाभ। यो० पी०।

…एण्टम् एक्वी रोज़ी unguentum aquæ rosæ–लै० गुलाब जलानुलेपन (Rose water ointment) संयोगी अवयव–गुलाब जल (रोज़ वाटर), ह्वाइट बीज़वैक्स (श्वेत मधूच्छिष्ट), बोरैक्स (टङ्कण), आमण्ड ऑइल (बादाम तैल) तथा गुलाब तैल (ऑइल ऑफ़ रोज़) शक्ति–२०% (१६ में ० रोज़ वाटर) देखो–एक्वा रोज़ी।

…एण्टम् एमॉलियन्स unguentum Emolliens लै० अङ्गुएण्टम् एक्वा रोज़ी (गुलाबार्क प्रलेप। देखो गुलाब या एक्वा रोज़ी।

…एण्टम् एलिमाई unguentum elemi–लै० एलीमाई प्रलेप। देखो– अरण्य वातादि (नं० ३)

…एण्टम् एसिडाई कार्बोलिसाई unguentum acidi carbolici–लै० कार्बोलिकाम्ल प्रलेप। (Carbolic ointment) संयोगी अवयव–फ़ेनोल, ह्वाइट पैराफ़ीन ऑइण्टमेण्ट। शक्ति ३%। देखो–एसिडम् कार्बोलिकम्।

…एण्टम् एसिडाई बोरिसाई unguentum acidi borici–लै०, टङ्कणाम्ल प्रलेप (Boric ointment)। संयोगी अवयव बोरिक एसिड (टंकणाम्ल), ह्वाइट पैराफ़ीन ऑइण्टमेण्ट। शक्ति–१०%। देखो–एसिडम् बोरिकम्। बी० पी०।

…एण्टम् एसिडाई सैलिसिलिसाई unguentum acidi salicylici–लै० सैलिसिलिकाम्ल प्रलेप (Salicylic Acid ointment.) संयोगी अवयव–सैलिसिलिक एसिड, ह्वाइट पैराफ़ीन आइण्टमेण्ट। शक्ति–२%। देखो–एसिडम् सैलिसिलिकम्। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् ऐट्रोपीनी unguentum atropinæ. लै० धत्तूरीन प्रलेप (Atropine ointment) संयोगी अवयव–ऐट्रोपीन (धत्तूरीन), ऑलीइक एसिड, लार्ड (शूकर वसा)। शक्ति–२%। देखो–बिलाडोना। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् ऐट्रोपीनी कम एसिडो बोरिको unguentum atropinæ cum acido borico–लै० धत्तूरीन व टंकणाम्ल प्रलेप। संयोगी अवयव–ऐट्रोपीन, बोरिक एसिड तथा सॉफ्ट पैराफ़ीन। देखो–बिलाडोना।

अङ्गुएण्टम् ऐट्रोपीनी कम कोकीनी unguentum atropinæ cum cocainæ–लै० धत्तूरीन व कोकीन प्रलेप। संयोगी अवयव–ऐट्रोपीन, कोकीन तथा सॉफ्टपैराफ़ीन। देखो–बिलाडोना।

अङ्गुएण्टम् ऐट्रोपीनी डाइल्यूटम् unguentum atropinæ dilutum–लै० जल मिश्रित (हलका किया हुआ) धत्तूरीन प्रलेप। संयोगी अवयव–ऐट्रोपीन तथा पीत मृदु पैराफ़ीन। देखो–बिलाडोना।

अङ्गुएण्टम् ऐण्टिमोनियाई टार्टरेटी unguentum antimonii tartaratæ–लै० टार्टरेटीय अञ्जन प्रलेप, वामकलवण प्रलेप (ointment of tartarated antimony)। संयोगी अवयव–टार्टरेटेड ऐण्टिमनी, सिम्पल ऑइण्टमेण्ट। देखो–अञ्जन।

अङ्गुएण्टम् ओपियाई unguentum Opii–लै० अहिफेनानुलेपन, अफीम प्रलेप (opium Ointment)। संयोगी अवयव–एक्सट्रैक्ट ऑफ ओपियम (अहिफेन सत्व), स्पर्मेसेटाई ऑइण्टमेण्ट। देखो–पोस्तान्तर्गत (अफीम)

अङ्गुएण्टम् कॉक्युलाई unguentum cocculi–लै० काकमारी प्रलेप. (Kakmari ointment)। संयोगी अवयव- काकमारी बीज, …

अङ्गुएण्टम् केओलीनी unguentum kaolini–ले० केओलीन (चीन मृत्तिका) प्रलेप। संयोगी अवयव–वैज़ेलीन, हार्ड पैराफ़ीन, केओलीन। देखो–केओलीनम्।

अङ्गुएण्टम् कैन्थेरीडाइनाई unguentum cantheri dini–ले० तेलनी मक्खी प्रलेप (Cantheridies ointment)। संयोगी अवयव–कैन्थेरीडीन, बेंज़ोएटेड लार्ड, क्लोरोफार्म। शक्ति–०·०३३%। बी० पी०। देखो–कैन्थेरिस।

अङ्गुएण्टम् कैप्सिसाइ unguentum capsici–ले० कुमिरच (रक्त मिरचा) प्रलेप। (capsicum ointment, chilly paint)। संयोगी अवयव–कैप्सिकम् फ्रूट (रक्त मिरच), हार्ड एण्ड सॉफ्ट पैराफ़ीन (कठिन व मृदु पैराफ़ीन) और लार्ड (शूकर वसा)। शक्ति २५%। देखो रक्त मिरच बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् कोकीनी unguentum cocainæ)–ले० कोकीन प्रलेप (cocain ointment) संयोगी अवयव–कोकीन ऑलीइक एसिड तथा लार्ड। शक्ति–४%। देखो–कोका। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् कोनियाई unguentum conii –ले० शूकरान लेप। (conium ointment)। संयोगी अवयव–जूस ऑफ कोनाइम (शूकरान स्वरस) हाइड्रस वूल फैट। शक्ति १ में २। देखो–कोनाइम्। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् क्युप्राई ऑलिएटिस unguentum cupri oleatis–ले० ताम्र ऑलिएट प्रलेप। संयोगी अवयव कॉपर ऑलिएट सॉफ्ट पैरीफ़ीन। देखो–ताम्र।

अङ्गुएण्टम् क्राईसारोबाईनाई unguentum Chrysarobini–ले० क्राईसारोबीन प्रलेप (Chrysarobin ointment) संयोगी अवयव–क्राइसारोबीन और सॉफ्ट पैराफ़ीन (या बेन्ज़ोएटेड लार्ड)। शक्ति–४%। देखो–अरारोबा। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् क्रियोज़ोटाई unguentum creosoti क्रियोज़ोट प्रलेप (Creosote ointment) संयोगी अवयव-क्रियोज़ोट, एण्ड सॉफ्ट (हार्ड) पैराफ़ीन। शक्ति– देखो–क्रियोज़ोट। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् गाइनोकार्डीई unguentum gynocardiæ–ले० चॉलमूगरा (Ointment of chaulmogra) संयोगी अवयव–चॉलमूगरा तैल, सॉफ्ट पैराफ़ीन देखो–चॉलमूगरा। १०%। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् गॉली unguentum gallæ–ले० माई (माजू) प्रलेप (gall ointment) संयोगी अवयव–गॉल्स (तथा बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति–२०%। माई। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् गॉली कम् ओपियो unguentum gallæ cum opio–ले० अहिफेन प्रलेप (Gall and opium ointment) संयोगी ऑइण्टमेण्ट तथा ओपियम् (अफ़ीम)। ७½%। देखो–माई। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् चॉलमूग्री unguentum chaulmoogræ–ले० अङ्गुएण्टम् गाइनोकार्डीई। चॉलमूगरा प्रलेप। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् ग्लीसराइनाई सब्आसीटेटिस unguentum glycerini subacetatis–ले० मधुर सीसक प्रलेप (glycerin of lead subacetate ointment) संयोगी अवयव–सबएसीटेट, हाइड्रस डाइड्रटमेण्ट। देखो सीसक।

अङ्गुएण्टम् ज़िन्साई unguentum zinci–ले० यशद प्रलेप (Zinc ointment) संयोगी अवयव–ज़िङ्क ऑक्साइड (भस्म) बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति–१५%। यशदम्। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् ज़िन्साई ऑलिएटिस unguentum zinci oleatis–ले०

ऑलिएट प्रलेप (zinc oleate ointment) संयोगी अवयव ज़िङ्क आलिएट। ज़िंक सल्फेट, हार्ड सोप, जल, ह्वाइट सॉफ्ट पैराफ़ीन शक्ति १०°/₀। बी० पी० देखो–यशद।

गुएण्टम् ज़िन्साई कम एसिडो सैलिसिलिको unguentum zinci cum acido salicylico–ले० यशद व सैलिसिलिकाम्ल प्रलेप। संयोगी अवयव सैलिसिलिक एसिड, जिंक आइस्टमेण्ट, सॉफ्ट पैराफ़ीन। देखो–यशदम्।

गुएण्टम् डायाकिलाई unguentum Diachyli–ले० हेब्रास प्रलेप (Hebras ointment) संयोगी अवयव लेडप्लास्टर, आइल आफ लेवेण्डर। देखो–सीसकम्।

गुएण्टम् थाइमोल unguentum thymol–ले० थाइमोल (वन पुदीना) प्रलेप। संयोगी अवयव वैज़ेलीन व थाइमोल। देखो—थाइमोल, पुदीना।

गुएण्टम् नेफ्थोलिस unguentum naphtholis–ले० नैफ़्थोल (कपूर कोलटार) प्रलेप (Kaposis ointment)। संयोगी अवयव–पीत नैफ़्थोल तथा लार्ड। देखो–नैफ्थोल।

अङ्गुएण्टम् नेफ्थोलाई कम्पोज़िटस unguentum naphtholi compositus–ले० मिश्र नैफ़्थोल प्रलेप। संयोगी अवयव नैफ़्थोल, लार्ड, ग्रीन सोप, प्रीपेयर्ड चाक। देखो–नैफ्थोल

अङ्गुएण्टम् पाइलोकार्पीनी unguentum pilocarpinæ–ले० पाइलोकार्पीन प्रलेप। संयोगी अवयव पाइलोकार्पीन, वैज़ेलीन,लेनो- देखो–पाइलोकार्पीनो नाइट्रास

अङ्गुएण्टम् पाइसिस लिक्विडी unguentum picis liquidæ–ले०चुर्ईल तैल प्रलेप (Tar ointment)। संयोगी अवयव–टार, लार्ड, पीत मधूच्छिष्ट (यलो बीज़ वैक्स)। शक्ति ७०°/₀। बी० पी० देखो–पिक्स लिक्विडा (या देवदारु)

अङ्गुएण्टम् पाइसिस मॉली unguentum picis molle–ले० मृदुकान्तरान (चुर्ईल तैल) प्रलेप। संयोगी अवयव–टार,बेन्ज़, वैक्स आमण्ड आइल (बादाम तैल)। देखो– पिक्स लिक्विडा (या देवदारु)

अङ्गुएण्टम् पैराफ़ाइनो unguentum paraffini–ले० पैराफ़ीन प्रलेप (Paraffin ointment) संयोगी अवयव–हार्ड और सॉफ्ट पेराफ़ीन श्वेत या श्वेत व पीत मधूच्छिष्ट (ह्वाइट या ह्वाइट एण्ड यलो बीज़ वैक्स)। शक्ति १० 0/0। बी० पी०। देखो–पैराफ़ीनम्।

अङ्गुएण्टम् पोटेसियाई आयोडाइडाइ unguentum potasii iodidi–ले० पांशुनैलिद प्रलेप (Potassium Iodide ointment) संयोगी अवयव–पोटासियम आयोडाइड, पोटासियम कार्बोनेट, जल और बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति–१०0/0। बी० पी० देखो—पोटेशियम।

अङ्गुएण्टम् पोटेशी सल्फ्युरेटी unguentum potassæ sulphuratæ–ले० पांशु गन्धेत् प्रलेप। संयोगी अवयव–सल्फ्युरेटेड पोटास, हार्ड पैराफ़ीन, सॉफ्ट पैराफ़ीन। देखो–गंधकम् (या पोटाशा सल्फ्युरेटा)।

अङ्गुएण्टम् प्लम्बाई आयोडाइडाई unguentum plumbi iodidi–ले० सीसनैलिद प्रलेप (Iodid of lead ointment) संयोगी अवयव–लेड आयोडाइड (सीस नैलिद), और बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति–१०0/0 बी० पी०। देखो–सीसकम्

अङ्गुएण्टम् प्लम्बाई कार्बोनेटिस unguentum plumbi carbonatis–ले० सीस कज्वलेत् प्रलेप (Lead-carbonate ointment) संयोगी अवयव–लेड कार्बोनेट (सीसभस्म) और पैराफ़ीन। शक्ति–१०0/0 देखो–सीसकम्।

अङ्गुएण्टम् प्लम्बाई सबएसीटैटिस unguentum plumbi subacetatis–ले०

सीसमस्यसीटेट प्रलेप (Lead subacetate ointment) संयोगी अवयव–स्ट्राँग लाइकर (तीक्ष्ण), वूल फैट (ऊर्णवसा) हार्ड व साफ्ट पैराफीन। शक्ति–१३ %। बी० पी०। देखो–सीसकम्

अङ्गुएण्टम् बिस्मुथाई unguentum bismuthi–लै० स्वर्णमाक्षिक प्रलेप (Bismuth ointment)। संयोगी अवयव–बिस्मथ सबनाइट्रेट, लार्ड। देखो–बिस्मथम्

अङ्गुएण्टम् बिस्मुथाई ऑक्साइडम् unguentum bismuthi oxidum–लै० स्वर्णमाक्षिक भस्म प्रलेप। संयोगी अवयव–बिस्मथ ऑक्साइड, ओलीइक एसिड, श्वेत मधूच्छिष्ट। मोम। (साफ्ट) पैराफीन। देखो–बिस्मथम्।

अङ्गुएण्टम् बिलाडोना unguentum belladonnæ–लै० बिलाडोना प्रलेप (Belladonna ointment) संयोगी अवयव–लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ बिलाडोना (बिलाडोना तरल सत्व वाष्पीभूत), बेंज़ोएटेड लार्ड और वूल फैट (ऊर्ण वसा) शक्ति–० १०% अल्कलाइड (पार्थिव सत्व) बी० पी०। देखो–बिलाडोना।

अङ्गुएण्टम् बेंज़ोईनी unguentum benzoinæ–लै० लोबानानुलेपन, कुन्दुरु प्रलेप। संयोगी अवयव–बेन्ज़ोइन, एडेप्स (शूकर वसा)। देखो–कुन्दुरु या बेंज़ोईनम्।

अङ्गुएण्टम् बोरेसिस unguentum boracis–लै० टङ्कण प्रलेप (Boric ointment) संयोगी अवयव–बोरेक्स (टङ्कण) स्पर्मेसीटी ऑइण्टमेण्ट (मत्स्य वसा प्रलेप) देखो–टङ्कण।

अङ्गुएण्टम् माइरोबेलेनाई unguentum myrobalani–लै० हरीत की प्रलेप (Ointment of myrobalan) संयोगी अवयव–हरीतकी चूर्ण तथा बेंज़ोएटेड लार्ड। देखो हरीतकी। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् माइरोबेलेनाई कम ओपियो unguentum myrobalani opio–लै० हरीतकी व अहिफेन (ointment of myrobalan opium) संयोगी अवयव–हरीतकी तथा अहिफेन। देखो–हरीतकी।

अङ्गुएण्टम् माइलेब्रिडिस unguentum mylabridis लै० [illegible] (Mylabris ointment) देखो–[illegible]

अङ्गुएण्टम् मेटेलोरम् unguentum metallorum लै० खनिज [illegible] अवयव–मर्क्युरिक नाइट्रेट [illegible] एसीटेट ऑक्साइड और [illegible] देखो–पारद।

अङ्गुएण्टम् मेन्थोलाई unguentum mentholi लै० मेन्थोल प्रलेप (Menthol ointment) संयोगी अवयव–२½, पालसम ऑफ पेरू २ तथा [illegible] १०० | पी० बी० एम०। देखो–[illegible]

अङ्गुएण्टम् युकेलिप्टाई unguentum eucalypti–लै० युकेलिप्टस प्रलेप (Eucalyptus ointment) संयोगी अवयव–आइल ऑफ युकेलिप्टस, हार्ड व साफ्ट (व्हाइट) पैराफीन। शक्ति–[illegible] देखो–युकेलिप्टाई। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् रेज़ाईनी unguentum resinæ–लै० राल प्रलेप (Resin ointment) संयोगी अवयव–रेज़िन (राल), यैलो वैक्स (पीत मधूच्छिष्ट) ऑलिव (ज़ैतून तैल) तथा लार्ड (शूकर) शक्ति–२६% (३⅞ में १)। बी० देखो–राल।

अङ्गुएण्टम् सेनी का unguentum co–लै० संयोगी अवयव–[illegible] फैट तथा पैराफीन। ऑइण्टमेण्ट। श[illegible] ५०%। बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् वेरेट्राइनी unguentum veratrinæ–लै० अमरीका [illegible] प्रलेप (Veratrini ointment) [illegible]

…वयव बेरेट्रीन ओलीइक एसिड तथा लार्ड।
…क्ति—४९ में १। देखो—वेरेट्रीना

…गुएण्टम् सल्फ्युरिस unguentum sulphuris—लै० गंधकानुलेपन (Sulphur ointment) संयोगी अवयव—सब्लाइम्ड सल्फर (ऊर्ध्वपातित गंधक) तथा बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति—१००/० । बी०पी०। देखो—गंधकम्।

…गुएण्टम् सल्फ्युरिस आयोडाइडाई unguentum sulphuris iodidi—लै० गंधक नैलिद प्रलेप (Sulphur iodide Ointment) संयोगी अवयव—सल्फर आयोडाइड, ग्लीसरीन तथा बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति—२१ में १। देखो—गन्धकम्।

…गुएण्टम् सल्फ्युरिस एट रिसोर्सीना unguentum sulphuris et resorcini—लै० गंधक व रिसार्सीन प्रलेप। संयोगी अवयव—प्रेसिपिटेटेड सल्फर, रिसार्सीन, सॉफ्ट पैराफ़ीन पीत। बी० पी० सी०। देखो—गंधकम्।

…गुएण्टम् सल्फ्युरिस कम्पोज़िटम् unguentum sulphuris compositum—लै० मिश्र गंधक प्रलेप, विल्किन्सन प्रलेप (wilkinson's ointment) संयोगी अवयव—मार्श सोप, सब्लाइम्ड सल्फर (ऊर्ध्वपातित गंधक), प्रेसिपिटेटेड चाक, टार, लार्ड (शूकर वसा) बी० पी० सी०। देखो—गन्धकम्।

…ङ्गुएण्टम् सल्फ्युरिस कम हाइड्रार्जिरो unguentum sulphuris cum hydrargyro—लै० गंधक व पारद प्रलेप। संयोगी अवयव—सब्लाइम्ड सल्फर (ऊर्ध्व पातित गंधक) मर्क्युरिक-सल्फाइड (पारद गन्धित), एमोनिएटेड मर्करी, ऑलिव आइल (जैतून तैल,) लार्ड (शूकर वसा) देखो—गन्धकम्।

अङ्गुएण्टम् सल्फ्युरिस हाइपोक्लोराइटिस unguentum sulphuris hypochloritis—लै० संयोगी अवयव—सब्लाइम्ड सल्फर (ऊर्ध्व पातित गंधक), एसेन्शल आइल आफ आमण्ड्स (इंधर दाताद तैल), प्रिपेयर्ड लार्ड, सल्फर क्लोराइड (गंधक हरिद)। देखो—गन्धकम्।

अङ्गुएण्टम् सिटेसिआई unguentum cetacei—लै० ह्वेलमत्स्य शिरो वसा प्रलेप (Spermaceti ointment) संयोगी अवयव—स्पर्मेसिटाई, व्हाइट बीज़ वैक्स (श्वेत मधूच्छिष्ट) लिक्विड पैराफ़ीन। शक्ति—२००/० । देखो— बी० पी०।

अङ्गुएण्टम् सैलोल कम कोकीन unguentum salol cum cocain—लै० सैलोल कोकीन प्रलेप। संयोगी अवयव-सैलोल, कोकीन हाइड्रोक्लोराइड, पेट्रोलियम् साइट्रेट। देखो - सैलोल।

अङ्गुएण्टम् स्टैफिसैग्रिई unguentum staphisagriæ—लै० अरण्यद्राक्षा वा स्टैफिसैग्री प्रलेप (staphisagrie ointment) संयोगी अवयव स्टेवी सैक्री सीड्स। येलो बीज़वैक्स (पीत मधूच्छिष्ट) तथा बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति २० % बी० पी०। देखो—स्टैफीसैग्री।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराइ unguentum hydrargyri—लै० पारद प्रलेप (Mercury ointment) संयोगी अवयव—मर्करी (पारद) बेन्ज़ोएटेड लार्ड। प्रिपेयर्ड स्वेट (शुद्ध मेष वसा) शक्ति-३० %। बी० पी०। देखो पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराइ आयोडाईडाई रुब्राई unguentum hydrargyri iodidi rubri—लै० संयोगी अवयव-रेड आयोडाइड। बेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति-४ %। बी० पी०। देखो-पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्रार्जिराई आक्साईडाई फ्लेवाई unguentum oxidi flavi—लै० पीत पारद भस्म प्रलेप (yellow mercuric oxide ointment) संयोगी अवयव-

एलो मर्क्युरिक ऑक्साइड (पीत पारद भस्म) सॉफ्ट पैराफ़ीन (एलो) शक्ति–२ %। बी० पी०। देखो-पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्राजिराई ऑक्साइडाई रुब्राई unguentum hydrargyri oxidi rubri–ले० रक्त पारद प्रलेप। red-mercuric oxide ointment) संयोगी अवयव-रेड मर्क्युरिक ऑक्साइड (रक्त पारद भस्म) पेराफ़ीन ऑइण्टमेण्ट (पीत) शक्ति–१० %। बी० पी०। देखो पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्राजिराई एमोनिएटी unguentum hydrg- ammoniati–ले० पारदैमोनी प्रलेप (ammoniated mercury ointment) संयोगी अवयव एमोनिएटेड मर्करी, वेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति–१ %। बी० पी०। देखो-पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्राजिराई ओलिएटी) unguentum hydrarg oleati–ले० मर्क्युरिक ऑलिएट ऑइण्टमेण्ट (Mercuric oleate ointment) संयोगी अवयव-मर्क्युरिक ऑलिएट, वेन्ज़ोएटेड लार्ड शक्ति–२५ %। बी० पी०। देखो-पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्राजिराई कम्पोज़िटम् unguentum hydrarg compositum) ले० मिश्र पारद प्रलेप (Compound mercury ointment) संयोगी अवयव मर्करी ऑइण्टमेण्ट, ऑलिव ऑइल (जैतून तैल) एलो बीज़वैक्स (पीत मधूच्छिष्ट), कर्पूर। शक्ति–१२ % पारद। बी० पी०। देखो-पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्राजिराई डाइल्युटम् unguentum hydrarg Dilutum–ले० जलमिश्रित पारद प्रलेप (Ung. hydrg mitiusor blue unctio)संयोगी अवयव–मर्करी ऑइण्टमेण्ट (पारद प्रलेप) तथा लार्ड (शूकर वसा) देखो-पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्राजिराई नाइट्रेटिस unguentum hydrarg nitratis ले० नागरंग प्रलेप पारद नाइट्रेट प्रलेप, (mercuric nitrate ointment, ointment) संयोगी ... रद) नाइट्रिक एसिड (शोरकाम्ल (शूकर वसा) तथा ऑलिव ऑइल तैल) शक्ति १२ %। पारद। देखो-पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्राजिराई नाइट्रेटस unguentum hydrg ...atis dil.–ले० जलमिश्रित (Diluted mercuric nitrate ointment) संयोगी ... ट्रेट ऑइण्टमेण्ट, सॉफ्ट, पैराफ़ीन (शक्ति २० %। उक्त प्रलेप बी० पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्राजिराई मीटिग... entum hydrg. ... हाइड्राजिराइ डाल्युटम् देखो—पारद।

अङ्गुएण्टम् हाइड्राजिराई ... unguentum hydrarg subchloridi–ले० रसकपूर प्रलेप (Mercurous chloride ointment, calomel ointment) संयोगी अवयव मर्क्युरस... इड तथा वेन्ज़ोएटेड लार्ड। शक्ति... बी० पी०। देखो-पारद।

अङ्गुएण्टम् हेमेमेलिडिस unguentum hamamelidis–ले० हेमेमेलिस (Hamamelis ointment) अवयव-लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ ... सॉफ्ट पैराफ़ीन तथा वूलफैट (शक्ति—१० %। बी० पी०। देखो डिस। (हैमेमेलिस वर्जिनिका)।

अङ्गु angu–उ० द० मू० २–Fraxinus floribunda, *Wall.* अङ्गन। मे० मो०।

अङ्गुः anguh–सं० पु० १–(A hand) आ० सं० इं० डि०।

अङ्गुणः angunah–सं० पु'० (Solanum melongena, *Linn.*) वार्ताकी, भांटा। वेगुन-बं०। श० र०।

-,री angurih,-ri-सं० स्त्री० (A finger) अंगुली, हाथ पैर की अंगुली। [cut off]ी० । देखो-अंगुलिः।

[cut off]ः anguriyah-सं० पु०, स्त्री०, अंगु-[cut off]क । चाह्-रि यं० । अंगूठी।

[cut off] anguru-हिं० Carbon लकड़ीका [cut off]यला (Charcoal) इं० मे० मे० । स० [cut off]० इं०।

[cut off] angulah-सं० पु० (१) A finger [cut off]गुली। (२) Thumb अङ्गुष्ठ। [cut off](३) A finger's breadth (n. [cut off]80), equal to 8 barley corns [cut off]म्बाई की एक नाप। देखो-अंगुल।

[cut off]ः angulah } सं० पु० स्त्री०, १– [cut off]ः angulih } (finger) अंगुली [cut off]गुरी, करपाद शाखा। अंगुरतका। पाँचों अंगु-[cut off]लियों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं। यथा– [cut off]ङ्गुष्ठ, प्रदेशिनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा, [cut off]० नि० व० १८। आङ्गुल-यं० [२] [cut off]जकर्णिका वृक्ष। (३) हातिशुं डे-यं०। [cut off]तिशुं डाग्र मास, हाथीशुण्डी (Heliotro-[cut off]pium Indicum, *Linn*) इं० म० [cut off](४) वृद्धांगुष्ठ, अंगूठा (Great-toe) [cut off](५) लम्बाई का एक नाप। अङ्गुल The measure.

[cut off]गुलिकण्टकः anguli-kantakah-सं० पु० नख A finger nail (Helix [cut off]ushera)

[cut off]गुलिका angulika-सं० स्त्री० दे० अंगुली।

[cut off]ङ्गुलितोरणं anguli-toranam-सं० क्लीं० ललाट में चन्दन प्रभृति द्वारा अङ्कित [cut off]अर्द्ध चन्द्राकार चिह्न विशेष, तिलक विशेष। [cut off]देखो अंङ्गुलितोरण।

[cut off]ङ्गुलित्रं angulitram-सं० हाथ की पांच अंगुलियाँ जिनके नाम ये हैं :—अंगुष्ठ, तर्जनी [cut off]मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा।

[cut off]ङ्गुलित्राणकम् anguli-tranakam-सं० क्लीं० अङ्गुलित्रायक यन्त्र, उक्त नाम का यन्त्र विशेष। अङ्गुस्ताना अङ्गुष्ठाना। वा० सू० २५ अ०। (A finger-protector)

अङ्गुलिनलकम् anguli-nalakam-सं० क्लीं० (Phalange) अङ्गुल्यस्थि।

अङ्गुलिपञ्चकम् anguli-panchakam-सं०क्लीं० (The five fingers) कराङ्गुलि पञ्चक–हाथकी पांच उंगलियाँ जिनके नाम ये हैं— अङ्गुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिका।

अङ्गुलिपर्व्व anguli-parvva-सं० क्लीं० अङ्गुल्यस्थि, पर्व, पोर्वे, पोर, अङ्गुलिग्रन्थि। उँगलियों की पोर, उँगली का गाँठ वा जोड़ (Phalanx,phalanxes) फैलेंक्स Phalange (ए० व०), फैलेंजीज़ Phalanges (ब० व०) इं०। बुर्जुमह् (ए० व०), बराजिम् (ब० व०)। सुलामा (ए० व०), सलामय्यात् (ब० व०) –अ०।

अङ्गुष्ठ में दो और शेष अङ्गुलियों में तीन तीन पर्व अर्थात् अस्थियाँ होती हैं। पहिली पंक्ति के पोर्वे सब से लम्बे और मोटे होते हैं। दूसरी पंक्ति के इनसे छोटे और तीसरी पंक्ति के सब से छोटे होते हैं। अङ्गुष्ठ में केवल दो ही पंक्तियाँ हैं, अङ्गुष्ठ का दूसरा पोर्वा शेष अङ्गुलियों के तीसरे पोर्वे के सदृश होता है। तीसरे पोर्वे पर नख लगे रहते हैं, इन तीसरे पोर्वों को शकल घोड़े के खुर जैसी होती है। अङ्गुष्ठ के पोर्वे शेष अङ्गुलियों के पोर्वों से मोटे होते हैं।

अङ्गुलिप्रसारणी पेशी anguliprasarani-peshi-,हिं० स्त्री० (Extensor of the finger उंगलियां फैलाने वाली पेशी।

अङ्गुलिफला anguli-phala-सं० स्त्री० A sort of pulse (Paseolus radiatus.) श्वेतनिष्पावः,सफेद सेम। श्वेत शिम्-यं०। रा० नि०।

अङ्गुलिमानम् anguli-manam-सं० क्लीं० अङ्गुलि से योजन पर्यन्तमान यथा। ८ यव= १ अङ्गुल। २४ अङ्गुल=१ हाथ। ४ हाथ=

१ दंड । २००० दंड=१ कोश । ४ कोश=१ योजन ।

अङ्गुलिमुखम् anguli-mukham-सं० क्ली० (The forepart of the finger) अङ्गुल्यग्रभाग अङ्गुली का आगे का हिस्सा।

अङ्गुलिमूलसन्धि anguli-múla-sandhi सं० स्त्री० करभास्थि तथा अङ्गुल्यस्थिको मिलाने वाली सन्धि। मेटाकार्पो फेलेंजियल् या मेटाटार्सो फेलेंजियल् जॉइन्ट (Metacarpo phalangeal or Metatarso phalangeal joints)-इं०। नम्फ़िसुलुल् असाबिअ-अ०।

अङ्गुलिमोटनम् anguli-motanam
अङ्गुलि-स्फोटनम् anguli-sphotanam
सं० क्ली० (snapping or cracking of the fingr) अंगुलि तोड़ने का शब्द, अंगुलि मर्दन का शब्द, अर्थात् जो शब्द अंगुली मर्दन द्वारा उत्पन्न हो। त्रिका०।

अङ्गुलियाथूहर anguliyá thúhar हिं० पु० छीमियां सेंहुड़।

अङ्गुलियापीपर anguliyá pipara-हिं० पु० बड़ी पीपर।

अङ्गुलिसंकोचनी पेशियाँ angulisankochaní peshiyán-हिं० स्त्री० उंगली सिकोड़ने वाले पट्ठे।

अङ्गुलिसंकोचनी पेशी angulisankochanipeshi-हिं० स्त्री० (Flexor of finger) उंगलियों के अन्दर मोड़ने वाली पेशी।

अङ्गुलि संधि anguli-sandhi-सं० स्त्री० अङ्गुलियों की सन्धि या जोड़। डिजिटल आर्टीक्युलेशन (Digital articulation) इं०। मफ़सिलुल् असाबिअ-अ०।

अङ्गुलिसम्भूतः anguli-sambhútah सं० पु० nail (Helix ashera) नख रा० नि० व० १८।

अङ्गुलि संज्ञा anguli-sanjyá-सं० स्त्री० यवागू (yavágú) अंगुलि-संधि।

अङ्गुलित्राणकयन्त्रम् anguli-yantram-सं० क्ली० यह ... का बनाया जाता है। इसका प्रमाण ... होता है, यह अर्ध यंत्र के मदृश गौ के ... आकार वाला छिद्रों से युक्त होता है, ... सहज में खुल जाता है। इस यंत्र से ... की रक्षा दाँतों से हो जाती है। इसी ... नाम अंगुली त्राण यंत्र है। वा० ... देखो-अंगुलित्राणकम्।

अङ्गुली anguli-सं० स्त्री० (gajakarniká) मे० ... (finger) अंगुली। अंगुलियों की अंगुली माप।

अङ्गुलीय anguliya-सं० अंगूठी।

अङ्गुली प्रसारिणी (Anguli pra... सं० स्त्री० अङ्गुली को फैलाने वाली ... मुशैन्द आसाबिअुल् असाबिअ-अ०। ... डिजिटोरम् कम्युनिस (Extensor ... torum communis)-इं०।

अङ्गुलीया धमनी anguliyá-dham... सं० स्त्री० शिरियान अस्मांबियह ... पोषण करने वाली धमनी (D... artery)

अङ्गुल्याकुञ्चनी angulyákunch... सं० स्त्री० अङ्गुली को सिकोड़ने वाली ... मुअज्जलह् सफ़रीजुल् असाबिअ-अ०। ... डिजिटोरम् सब्लिमिस (Flexor ... orum sublimis)-इं०।

अङ्गुल्युदर्या angulyudaryá-सं० अङ्गुल्याधरा पेशी। प्रॉपर वॅलर डिजिटल (Proper vol... gital)-इं०।

अङ्गुल्यस्थि angulyasthi-सं०
अङ्गुल्यस्थीनि angulyásthi...
अंगुलीपर्व, पोर्व (Phal... (ब० व०)

अङ्गुल्यास्थियाँ angulyásthiyán-हिं० ब० व० पंचे की हड्डियाँ; (Bone ... rs)।

श्त angushta -फ़ा० १-(A finger) अंगुली, अङ्गुरी-हिं०। २-एक माप जो लगभग इंच के बराबर होता है। ३-(The thumb) अङ्गुष्ठ।

श्त-कोचक angushta-kochak-फ़ा० कनिष्ठा-सं०। कानी अङ्गुली, छोटी अङ्गुली, अंगुली-हिं०। लिट्ल फिंगर (Little finger)-इं०।

श्त गन्दह angushta-gandah-फ़ा० (Assafœtida) हींग-हिं०। अङ्गोज़ह-फ़ा०। हिल्तीत-अ०। हिंगु, रामठम्-सं०। हेंग-बं०। मो० श०।

श्त दराज़ angushta-daraza-फ़ा० बृहदांगुलि, मध्यमा, बीचकी अंगुली, लम्बी अंगुली-हिं०। मिड्ल फ़िंगर (Middle finger)-इं०।

श्त दुश्नाम angushta-dushnáma- अंगुश्त शहादत-फ़ा०। तर्जनी, प्रदेशिनी, अंगूठे के पास वाली अंगुली। फ़ोर फ़िंगर (Fore finger)-इं०।

श्त नर angushta nara-फ़ा० (The thumb) अङ्गुष्ठ।

श्त वर्ग angushta-barga-शो० छुछून्दर, चूहाभेद। Mole, musk rat (Sorex cœrulescens)

श्त बुज़ुर्ग angushta-buzurga-अङ्गुश्त नर-फ़ा०। अङ्गुष्ठः, अँगूठा-हिं०। थम्ब (Thumb)-इं०।

अङ्गुश्त मियानह angushta-miyánah-फ़ा० (Middle finger) मध्यमा, बिचली अँगुली।

अङ्गुश्तरी angushtarí-हिं० संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अँगूठी। मुंदरी। मुद्रिका।

अङ्गुश्त हल्क़ह angushta-halqah-फ़ा० अनामिका, अंगूठे की अंगुली, अंगुली (कनिष्ठा) के पास की अंगुली-हिं०। रिंग फ़िंगर (Ring finger)-इं०।

अङ्गुषः angushah-सं० पुं० (१) नकुल, नेवला। Mongoose (Vivora mungo)। २-(An arrow) बाण, तीर।

अङ्गुष्ठः angushṭhah-सं० पुं० बृहदंगुलि, अंगुष्ठांगुलि, अंगूठा (The thumb or great toe)। अंगुश्त बुज़ुर्ग-फ़ा०। पाँचों अंगुलियों में से सब से मोटी अंगुली। बुड़ो आङ्गुल-बं०। रा० नि० व० १८। ३।

अङ्गुष्ठ अन्तरनायनी angushṭha-antara-náyaní-सं० स्त्री० अंगुष्ठ को अन्दर की ओर ले जाने वाली पेशी। एडक्टर पोलिसिस (Adductor pollicis)-इं०। मुक़र्रिबह्, अम् बह्यह्-अ०।

अङ्गुष्ठ पृष्ठ्या angushṭha prishṭhyá -सं० स्त्री० धमनिया डार्सेलिस हैल्युसिस (Arteria darsalis Hallucis) -इं०।

अङ्गुष्ठ प्रतानना पेशी angushṭha pratánani peshí-हिं० स्त्री० (Extensor Primi entor nodii pollicis) अंगूठा खींचनेवाली पेशी।

अङ्गुष्ठ प्रत्याकुञ्चनी angushṭha pratyák-unchaní-सं०स्त्री० अंगुष्ठ सम्मुख कारिणी पेशी। ऑपोनेन्स पॉलिसिस (Opponens pollicis)-इं०।

अङ्गुष्ठ प्रसारणी दीर्घा angushṭha prasá-raní dírghá-सं० स्त्री० अङ्गुष्ठ को फैलाने वाली दीर्घ पेशी। एक्सटेन्सर पोलिसिस लॉङ्गस (Extensor pollicis longus)-इं०। अज़लह् बासितह् अस्माबिअ् यद् कबीरह्-अ०।

अङ्गुष्ठ प्रसारणी ह्रस्वा angushṭha-prasá-raní-hrasvá-सं० स्त्री० अङ्गुष्ठ को फैलाने वाली ह्रस्वा (छोटी) पेशी। एक्सटेन्सर पॉलिसिस ब्रेविस (Extensor pollicis brevis)-इं०। अज़लह् बासितह् अस्माबिअ् यद् सग़ीरह्-अ०।

अङ्गुष्ठ बहिर्नायनी angushṭha-bahirná-yaní-सं० स्त्री० अङ्गुष्ठ को बाहर (शरीर की मध्य-रेखा से दूर) ले जाने वाली

ऐब्डक्टर पॉलिसिस (Abductor pollicis)-इं०। अज़ुलह् मुबइ्दह् इब्‌हाम-अ०।

अङ्गुष्ठबहिर्नायनी दीर्घा angushtha-bahirnáyani-dirghá-सं० स्त्री० अंगुष्ठ को बाहर अर्थात् शरीर की मध्य रेखा से दूर ले जाने वाली दीर्घ पेशी। एब्डक्टर पॉलिसिस लॉङ्गस (Abductor pollicis longus)-इं०। अज़ुलह मुबइ्दह् इब्‌हाम्‌ तवील-अ०।

अङ्गुष्ठ बहिर्नायनी ह्रस्वा angushtha-bahirnáyani-hrasvá-सं० स्त्री० अङ्गुष्ठ को बाहर (शरीर की मध्य रेखा से दूर) लेजाने वाली ह्रस्व पेशी। ऐब्डक्टर पॉलिसिस ब्रेविस (Abductor pollicis brevis)-इं०। अज़ुलह मुबइ्दहे अङ्गुश्त सग़ीरह-अ०।

अङ्गुष्ठ सङ्कोचनी angushtha-sankochani-सं० स्त्री० अंगुष्ठ को सिकोड़ने वाली (मोड़ने या झुकानेवाली) पेशी। फ्लेक्सर पॉलिसिस (Flexor pollicis)-इं०।

अङ्गुष्ठ सङ्कोचनी दीर्घा angushtha-sankochani-dirghá-सं० स्त्री० अंगुष्ठ को मोड़ने वाली दीर्घ पेशी। फ्लेक्सर पॉलिसिस लॉङ्गस (Flexor pollicis longus) -इं०।

अङ्गुष्ठ सङ्कोचनी लम्बी angushtha-sankochani lambi-हिं० स्त्री० (Flexor longus pollicis) लम्बी अंगूठा सिकोड़ने वाली पेशी।

अङ्गुष्ठ सङ्कोचनी ह्रस्वा angushtha-sankochani-hrasvá-सं० स्त्री० अंगुष्ठ को मोड़ने वाली ह्रस्व पेशी। फ्लेक्सर पॉलिसिस ब्रेविस (Flexor pollicis brevis) -इं०।

अङ्गुष्ठाकर्षणी angushthákarshani-सं० स्त्री० अंगुष्ठ अन्तरनायनी। एडडक्टर पॉलिसिस (Adductor pollicis)-इं०। अज़ुलह मुक़र्रिबह अंगुश्त-अ०

अङ्गुष्ठाना angushthání-सं० स्त्री० (१) अंगुष्ठ। (२) अंगुलित्राणक, अंगुश्ताना।

अङ्गुष्ठावर्तनीपेशी angushthávart-peshi-हिं० स्त्री० A... cis) अंगूठे को लपेटने वाली पेशी।

अङ्गुष्ठ्यः angushthyah-सं० पुं० (thumb-nail) अंगूठा का नाखून।

अङ्गू angú-उ० प्र० सु० अंगन ... floribunda, Wall.) मे० मी०।

अङ्गूर angúra-हिं० संज्ञा पुं०,फा०,... दाख, द्राक्ष-हिं०। अंगूर, ताक-इं०। पर्याय-कृष्णा, चारुफला (ज), रसा, मृद्वीका, गोस्तनी, स्वाद्वी, मधुरसा, बरमल्ली (शब्दमा०), प्रियाला, गुच्छफला, रसाला, अमृतफला, ... हूरा, द्राक्षा, फलोत्तमा और ... द्राक्षा,) अंगुर-बं०। इनब, ... ओग़्म-तुर०। वाइटिस वाइनिफेरा ... vinifora, Linn. (Fruits of ... -ले०। ग्रेप, वाइन Grape ... ग्रेप Grape, वाइन Vine (tree ... -इं०। विग्नी कल्टिवी Vigno, Cult... -फ्रां०। एडलवीनरीबी Edlewein... रोज़ीनेन Rosinen-जर०। ... कोडि-मुन्दिरिप्-पज़म,दिराक्ष-परम ... कोडि मद्रि-ता०। द्राक्ष-पंडु, ... द्राक्षा-ते०। मुन्तिरिङ्ङप्-पज़म, मुन्ति... पच मुन्तिरिङ्ङप्-पज़म (मो० शु०), द्राक्षा-इण्णु (मा० शु०), द्राक्षे-... द्राक्ष, द्राक्षे-म्हह०। द्राक्ष (मो० शु० ... आस्त, मुदक-गु०। मुद-पलम्, मुदक... शु०)-सिं०। सबीसी, सब्बा-सी, ... -बर०। द्राक्षा-कों०।

सूर्यताप या कृत्रिम ताप पक्व अंगूर-मुनक्का, सूखे अंगूर (काल... -हिं०। मुनक्का,-इं०। गोस्तनी, मृद्वीका, कपिलफला, अमृतरसा, ... मधुवल्ली, मधुफला, मधुलि, हरिता, सुफला, मृद्वी, हिमोत्तरा, पथिका, हैम... वीर्या,तथा कारमीरी (-रिका)-सं०। ... मनेका, सस्का-द्राक्षा-बं०। अवीज...

नक्का,-अ० । अंगूरे सुरक-फा० । यूवी
Jvæ,यूवी पैसी Uvæ passæ-लै० । रेज़िन्स
Raisins-इं०,फ्रां० । रोज़िनेन Rosinen
-जर० । Monaqqá मोनक्का-हिं०,द०,फा० ।
इल्वन्देदिराक्ष्-पज़्म्, उल्वन्ददाच-परम्-ना० ।
गोपद्राच-पदड्,सच-द्राच-पंड्,एंड्,द्राच पंड्-ते० ।
मुन्तिरिङ्ङ्-पाहम्, उथाङ्ङ्-मुन्तिरिङ्ङ्-
शङ्ग्म् (-परम्)—मल० । दीप द्राचि-कना० ।
वेलिचे-मुद्-पलम्, वेलिच-मुद्का-सिं० । मवी-
नमी, मुव्यासी वा मुवी-ति- बरु० । बीज-
रहित लघु द्राक्षा-किशमिश, बेदाना-हिं०,
द०, फा० । काकली द्राक्षा, जाम्बुका, फलोत्तमा,
लघुद्राक्षा, क्षुद्र द्राक्षा, निर्बीजा, सुवृत्ता, रुचि-
कारिणी, (रसाधिका, लघुद्राक्षा)-सं० ।
किसमिस-बं०, गु०, म० । किसमिस-द्राक्ष-गु० ।
सुलतानस Sultanas, रेज़िन्स Raisins
० । किशमिश, अंगुल द्राक्ष (मा० श०)-
० । चिकुद्राचे-कना० । किसमिस पंड्-ते० ।
नोट—पके सूखे हुए दाख अंगूर को
रका और छोटे एवं बीज रहित को किसमिस
या बड़े और काले वर्ण वाले को गोलमी
काली दाख) कहते हैं । काले अंगूरोंकी काली
लें और भूरे अंगूरों की भूरी दाखें होती हैं ।
रक में केवल मृद्वीका और सुश्रुत में केवल
क्षा के गुण का निर्देश किया गया है । पर्वती
या करौंदी नाम से इसके और दो अन्य भेद हैं ।
नाव० ।

एम्पेलिडीई अर्थात् द्राक्षावर्ग

(*N. O. Ampelideæ*)

उत्पत्ति स्थान—यह उत्तरी पश्चिमी हिमालय (या भारतवर्ष) अर्थात् पंजाब, काश्मीर, काबुल, बलूचिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, कन्दहार तथा फ़ारस और यूरूप प्रभृति प्रदेशों में बहुत लगाया जाता है । हिमालय के पश्चिमी भागों में यह आप से आप भी होता है । और और जगह भी लगाया जाता है । संयुक्त प्रदेश के कमाऊँ, कनावर और देहरादून तथा बम्बई प्रांत के अहमदनगर और औरंगाबाद, पूना और नासिक आदि स्थानों में भी इसकी उपज होती है । बंगाल में पानी अधिक बरसने के कारण इसकी बेल वैसी नहीं बढ़ सकती । वहाँ केवल तिरहुत और दानापुर में थोड़ी बहुत टट्टियाँ हैं ।

इतिहास—द्राक्षा और मृद्वीका नाम से अंगूर का वर्णन सुश्रुत और चरक आदि सभी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थों में मिलता है । यही दशा यूनानी तथा अरबी ग्रन्थों की है । इसकी कृषि एवं उपयोग का ज्ञान उन्हें बहुत प्राचीन काल से रहा है, और निज ग्रन्थों में अपने अपने दृष्टि कोण के अनुसार इसके उपयोग एवम् गुणधर्म के सम्बन्ध में उन्होंने काफी प्रकाश डाला है । जैसा कि आगेके वर्णन से विदित होगा । इसके द्वारा प्रस्तुत हुए मद्य के मादक प्रभाव से वे भली भाँति परिचित थे । अस्तु आर्यों का सोम तथा यूनानी पुराणों का प्रारम्भिक मद्य निःसन्देह स्वर्गीय अमृत था ।

भारतवर्ष में इसकी खेती कम होती थी । फल प्रायः बाहर ही से मँगाए जाते थे । मुसलमान बादशाहों के समय में अंगूर की ओर अधिक ध्यान दिया गया । आज कल हिन्दुस्तानमें सबसे अधिक अंगूर काश्मीर में होते हैं । जहाँ ये क्वार महीने में पकते हैं । वहाँ इनकी शराब बनती है और सिरका भी पड़ता है । महाराष्ट्र देश में जो अंगूर लगाए जाते हैं उनके कई भेद हैं, जैसे—भावी, फ़क़ीरी, हबशी, गोलकली और साहेबी इत्यादि ।

अफ़ग़ानिस्तान, बिलूचिस्तान और सिंध में अंगूर बहुत अधिक और कई प्रकार के होते हैं, जैसे—हेटा, किशमिशी, कलमक, हुसैनी इत्यादि । किशमिशी में बीज नहीं होता । कंधारवाले हेटा अंगूर को चूना और सज्जीखार के साथ गरम पानी में डुबाकर आबजोश और किशमिशी को धूप में सुखा कर किसमिस बनाते हैं ।

वानस्पतिक वर्णन—अंगूर की बेलें काठ की टट्टियों पर चढ़ती हैं । इसके पत्र हाथ की आकृति के कुम्हड़े वा नेनुए की पत्तियों से मिलते जुलते होते हैं, मानो हथेली में पाँच अंगुलियाँ लगादी गई हों । फल गुच्छों में लगते हैं ।

अंगूर पुष्प में दो कोषीय डिम्बाशय होता है और प्रति डिम्बाशय में दो-दो डिम्ब होते हैं। ये डंठल युक्त, स्थूल, गूदेदार, गोल या अण्डाकार (स्ट्रबेरी के सदृश) फल रूप में विकास पाते हैं। कोष भिन्न हो जाता है तथा उनमें से कुछ बीज साधारणतया नष्ट हो जाते हैं। चूँकि फल डंठल से और डंठल शाखा से नहीं जुड़े रहते, इस कारण परिपक्वावस्था में ये झड़ते नहीं, किन्तु उक्त पौधे में ही लगे रहते हैं (पर यह शर्त है कि सूर्यताप काफी हो) और धीरे धीरे सूख जाते हैं। उक्त शुष्क फल को सूर्यताप द्वारा पका हुआ किशमिश कहते हैं। फल इसके छोटे, बड़े, गोल और लम्बे कई आकार के होते हैं। कोई नीम के फल की तरह लम्बे और कई मकोय की तरह गोल होते हैं।

रासायनिक संगठन—फल के गूदे में अंगूरी शक्कर (ग्लूकोज) तथा क्रीम ऑफ टार्टर (Cream of tartar) वर्तमान होता है। इसमें निर्यास तथा सेब की तेजाब भी विद्यमान होती है। बीज में एक प्रकार का स्थायी तेल होता है। (ग्रेप्सीड-)। बीज तथा फलत्वक् में ५-६ प्रतिशत कषायाम्ल (टैनिक एसिड) पाया जाता है। फार्मा०। डॉ० जे० कोनिंग तथा सीकेश्च के विचार से काली द्राक्ष में जल २३.१८; अलब्युमिनस पदार्थ २.७१, वसा ०.६६; ग्लूकोज (ग्रेप शूगर) ५५.६२, अन्य अनत्रजनीय पदार्थ १४.१२, काष्ठोज १.३४, तथा भस्म १.३६ प्रतिशत विद्यमान होती है। शुष्कद्रव्य में उन्होंने नत्रजन ०.२६ और शर्करा ७२.४३ प्रतिशत पाया। डॉक्टर इ० मैक और के० पॉटेला के परीक्षणानुसार किशमिश में जल २०.४, शर्करा ३०.२ लिब्यूलोज ३१.४, पेक्टिन १.८३, फ्री एसिड्स १.७१, सेव की तेजाब ०.३८, अगार्ड ३.२८, अनघुल पदार्थ ४.० तथा भस्म २.०३ होती है। डॉक्टर एम. एल. क्युयार के परीक्षानुसार अंगूर पत्र में इमली की तेजाब (टार्टरिक एसिड) बाइटार्ट्रेट ऑफ पोटाश, क्वेर्सेटीन, क्वर्सिट्रीन, कषायिन, श्वेतसार, सेब की तेजाब, निर्यास, इनोसाइट, अस्फटिकवत् शर्करा, ऑक्सेलेट एमोनिया और फॉस्फेट व सल्फेट ऑफ् विद्यमान होते हैं।

प्रयोगांश—फल (पक्व या अपक्व) शुष्क फल [किशमिश मोनक्का] पत्र।

मात्रा—शर्बत, आधे से एक छटाँक (२४ घंटे में ३-६ बार)। किशमिश मुनक्का ½ तो० से २½ तो० तक (दिन में ३-४ बार)।

औषध-निर्माण—द्राक्षासव (द्राक्षारिष्ट, द्राक्षासव, द्राक्षा चुक या सिर्का (vinegar of grapes)।

प्रतिनिधि—यूनानीय औषध, अंगूर की तेजाब (अंगूर के लिए), और शीरखिश्त (किशमिश के लिए) और गम्भारी फल। दि० चि०, या० भैषज्य पित्तज्वरादि, चा० सू० १२, अ० ह० सू० चा० ज्व० चि० पित्तज्वरादि, ज्व० चि० द्राक्षादि।

द्राक्षा के गुणधर्म व उपयोग

आयुर्वेद की दृष्टि से—

पक्का अंगूर—दस्तावर, शीतल, हितकारी, पुष्टिकारक, भारी, पाक में मधुर, स्वर को उत्तम करने वाला, कसैला तथा मूत्र की प्रवृत्ति करने वाला, नेत्रों को हितकारक, वृष्य (वीर्य को बढ़ानेवाला) और तथा रुचि को उत्पन्न करता है और ज्वर, श्वास, कास, वातरक्त, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष और क्षय रोग को नष्ट करता है। गोस्तनी (गाय के स्तन के सदृश) अर्थात् काली द्राक्ष (वृष्य) भारी और कफ तथा पित्त को नष्ट करने वाली है। कच्चा अंगूर हीन गुण तथा भारी है। खट्टा अंगूर रक्तपित्त को करने वाला है। बीज रहित अथवा छोटे बीजों वाली (किशमिश) गोस्तनी द्राक्ष के सदृश गुण वाली है। पर्वत में उत्पन्न हुई (पार्वतीय) अम्ल और कफ तथा रक्तपित्त को करने वाली

हारहूरिका (काबुल के सदृश) द्राक्ष में भी पर्वतोत्पन्न द्राक्ष के सदृश गुण हैं ।

शा० द्राक्षा व० ।

द्राक्ष मधुर, खट्टी, कसैली है और किसी वार के साथ पित्त, वात और कफ का नाश करती है, उत्तम है तथा रुधिर रोग, दाह, शोष, मूर्च्छा, ज्वर, श्वास (दमा) और खाँसी को दूर करती है। जो द्राक्ष विपाक में कसैली व अम्ल (कषायाम्ल) होती है वह कफ में हित है।

अत्रि० १७ अ० ।

द्राक्ष मधुर, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, शीतल, मलभेदक, बलकारक एवं वृष्य है तथा क्षतक्षीण, घाव और रक्तपित्त का नाश करती है।

रा० नि० ।

द्राक्ष मधुर, खट्टी, शीतल, पित्तविनाशक, दाहनाशक, मूत्रदोषनाशक रुचिकारक, वृष्य और तृप्तिकारक है।

रा० नि० ।

कची द्राक्ष कटु, उष्ण, विशद, रक्तपित्तकारक है। मध्यम अवस्था की द्राक्ष खट्टी, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक है। पकी द्राक्ष, मधुर, खट्टी, तृषानाशक और रक्तपित्तनाशक है। पक कर सूख गई हुई द्राक्ष श्रमनाशक तृप्तिकारक और पुष्टिजनक है।

द्राक्ष धातुवर्द्धक, शोषनाशक, श्वास को हरनेवाली, घाव को दूर करने वाली, वमन रोगनाशक, पचने में सरल, सुगम, मधुर, शीतवीर्य, ज्वर और कफ को हरने वाली, मूत्र और मल को शोधने वाली है।

गोस्तनी द्राक्ष शीतल, हृदय को हितकारी, वीर्यवर्द्धक, वातानुलोमक, स्निग्ध, और हर्षजनक है तथा श्रम, दाह, मूर्च्छा, श्वास, खाँसी, कफ, पित्त, ज्वर, रुधिरविकार, तृषा, वात और हृदय की व्यथा को हरने वाली है।

किशमिश मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, रुचिप्रद, खट्टा, रसाल है तथा श्वास, खाँसी, ज्वर, हृदय की पीड़ा, रक्तपित्त, क्षतक्षय, स्वरभेद, तृषा, वात, पित्त और मुख के कड़वेपन को दूर करता है।

द्राक्षा रस में मधुर, स्निग्ध, शीतल, हृद्य और स्वर्य है तथा रक्तपित्त, ज्वर, श्वास, तृष्णा और दाह का नाश करने वाली है। मृद्वीका मधुर, स्निग्ध, शीतल, वृष्य और अनुलोमक है तथा रक्त, क्षीण, श्वास, कास, श्रम, तृष्णा और ज्वर का नाश करने वाली है।

धन्वन्तरीय निघण्टु ।

गोस्तनी—मधुर, शीतल, हृद्य और मदहर्षिणी है तथा दाह, मूर्च्छा, ज्वर, श्वास, तृषा और हृल्लास को नाश करने वाली तथा शीतल और मनुष्यों को प्रिय है। द्राक्षा के विशेष गुण—द्राक्षा 'बालफल' कटु, उष्ण, विदोषजनक और रक्तपित्त को करने वाली है। 'नव्य' और रसान्तर को प्राप्त अम्लरस युक्त रुचिकारक और अग्निजनक है। 'पक' और मधुर तथा किञ्चित् अम्लरस सहित तृष्णा और रक्तपित्त को दूर करने वाली है। "पक" अत्यन्त सूखी हुई श्रमजनित पीड़ा को शमन करने वाली, संतर्पण और पुष्टिदायक शीतल तथा पित्त और रक्त के दोषों को शमन करती है। एवं मधुर, स्निग्धरसवाली और अत्यन्त रुचिकारक है। मदात्यय, श्वास, कास, श्रम तथा वमन को शमन करने वाली, मूर्च्छा, तृष्णा और ज्वर का नाश करने वाली है एवं आध्मान, दाह तथा श्रम आदि को हरण करती और परम तर्पण है। द्राक्षा क्षीण वीर्य वाले को भी मदनकला केलि में दक्ष बनाती है। रा० नि० ।

तृष्णा, दाह, ज्वर, श्वास, रक्तपित्त, क्षत क्षय, वात, पित्त, उदावर्त, स्वरभेद, मदात्यय, मुँह का कड़वापन, मुखशोष और कास को दूर करती है। मृद्वीका बृंहण, वृष्य, मधुर, स्निग्ध, और शीतल है। चरक फ० व० ।

द्राक्षा हेमावर, स्वर्य; मधुर, स्निग्ध और शीतल तथा रक्तपित्त, ज्वर, श्वास, तृष्णा, दाह और क्षय का नाश करने वाली है। सुश्रुत।

द्राक्षा के वैद्यकीय व्यवहार

सुश्रुत—मूत्रावरोधज उदावर्त—अर्थात् मूत्रवेग के धारण से उदावर्त रोग होनेपर द्राक्षा का क्वाथ सम्मुन कर पिलाना चाहिये। (उ० ५५ अ०)

अङ्गूर

वाग्भट—

(१) मदात्यय रोग में होनेवाली पिपासा में वात, पित्त की अधिकता वाले मदात्ययी को, शीतल किया हुआ द्राक्षा का क्वाथ पिलाना चाहिए। औषध के पच जाने पर बकरे के मांस से बनाए हुए यूष के साथ मधुराम्ल धान्य का भोजन करने का आदेश कर देना चाहिए। (चि० ७ अ०)। (२) मूत्रकृच्छ्र में द्राक्षा को बासी जल के साथ पीसकर जल के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र प्रशमित होता है। (चि० ११ अ०)

चक्रदत्त—

दस वर्ष का पुराना घी ℥४ सेर, द्राक्षा कल्क ℥१ सेर एवं जल १६ सेर इनका मृदु अग्नि से यथा विधि पाक करें। यह घृत रक्त पित्त, कामला, गुल्म, पांडु रोग, ज्वर प्रमेह और उदर रोगों को नष्ट करता है। (रक्तपित्त-चि०)

यूनानी मतानुसार अंगूर को—दूसरी कक्षा में गरम तर मानते हैं। कच्चा प्रथम कक्षा में ठंडा और दूसरी कक्षा में रूक्ष है। हानिकर्ता—स्निग्ध आमाशय और प्लीहा को तथा वायुजनक है। दर्पघ्न—सौंफ और गुलकन्द। प्रतिनिधि-किसी किसी गुण में अंजीर व मवेज मुनक्का। गुण, कर्म, प्रयोग—यह पथ्याहार है; क्योंकि इससे शुद्ध रुधिर उत्पन्न होता है जो अपनी मधुरता के कारण हृदय को अत्यन्त प्रिय है। अति-[illegible] इसके अपनी [illegible]ता के कारण यह शीघ्र

[illegible] जो अंगूर के आहार में [illegible] और शीघ्र शीघ्र पहुँचता है। इसका कि अंगूर का दूध अपनी [illegible] जब आमाशय में अधिक [illegible] अतिरिक्त इसका [illegible] हुआ नहीं होता। इस कारण [illegible] और सरलतापूर्वक शोषित होता [illegible] बिना यह [illegible] पिलपिला होता [illegible] इसमें आहार मक्खियाँ आरम्भ [illegible] और चूंकि अंगूर की ओर आहार [illegible] गति से होता है, इसलिये यह [illegible] तथा उक्त अवस्था में शोथ होता है, [illegible] एवं [illegible] उत्पन्न होते हैं। किंतु [illegible] के पश्चात् जब कुछ समय तक [illegible] इसके अवशिष्ट रतूबतों का प्रायः [illegible] जाता है। अंगूर वस्ति को हानिकर्ता कि यह स्निग्धता, तीक्ष्णता और [illegible] करता है। शोथ [illegible] का कारण [illegible] रतूबत के कारण वस्ति अधिक [illegible] जाती है, क्योंकि इसकी ओर अंगूर की अधिकता के साथ प्रेरित होती है। और इसकी रतूबत मात्रा में अधिक [illegible] मूत्रजनक होती है। तीक्ष्णता का कारण माधुर्याधिक्य है। (नफ़ी०)

अंगूर शीघ्र [illegible]ी, पक्वाशय की [illegible] उतरनेवाला और पथ्याहार है; [illegible] उत्पन्न करता और [illegible]रीरको दृढ़ करता [illegible] रक्तशोधक वातज[illegible] को हरनकर्ता,

क है। अन्तिम दो रोगों में इसका बाह्य तथा
यन्तर उपयोग होता है।

।क्का-स्वरूप-काला और लाल। स्वाद-
। प्रकृति-१ कक्षा में गरम और तर।
र्ता-उष्ण प्रकृति वालों को और रुधिर,
को स्वच्छताप्रद है। दर्पनाशक-
वीन, इसबगोल और. आलूबुखारा।
निधि-किशमिश तथा इसका अन्य भेद आब-
। मात्रा—१० दाने से २० दाने तक।
कर्म, प्रयोग—विशेष कर यह पथ्याहार,
, कामवर्धक तथा हृद्य है। .पित्त की
ता और उष्णता को शमनकर्ता, कफशोधक,
को पक्व और समपक्व करता, प्रकृति को
र्ता, वायु को लयकर्ता, आमाशय और
यों को स्वच्छकर्ता, शरीर. को बृंहणकर्ता,
और शीत प्रकृति वालों के ओज को
द तथा फुफ्फुस प्रान्त के अनुकूल है।
ों की चरबीके साथ इसका लेप शोथको लय
है। यह भुना हुआ गरमागरम खाँसी को
कारक है।
मुनक्का रेचक औषधियों का सहायक एवं वस्ति
क के रोगों को लाभप्रद है। गावजुबान
ताजे छुहारे के साथ मूर्च्छा को लाभप्रद
अजवान के संग विस्मृति तथा सिरके के साथ
को लाभप्रद है। कालीमिर्च के साथ मूत्र-
तथा शुक्राश्मरी एवं वस्त्यश्मरी को लाभ-
है। इसका क्वाथ प्रकृति को मृदुकर्ता तथा
त कषाय सिरके के साथ प्लीहा शोथ को लय-
ता है।
मुनक्का के बीज-प्रकृति—१ कक्षा में ठंडे
र २-कक्षा में रूक्ष। हानिकर्ता—वृक्क को।
र्पनाशक-उन्नाव व अमलतास। स्वाद—
का, दुःस्वाद।
गुण, कर्म,-प्रयोग—ग्राहक, आध्मानकर्ता,
स्निग्ध-आमाशय तथा -आंत्र को बलप्रद तथा
स्निग्धता शोषणकर्ता है। किसी किसीने स्तम्भक
भी लिखा है।

किशमिश।

स्वाद—मधुर और .खटाईयुक्त। प्रकृति-गरम
और तर तथा बीज ठंडे और रूक्ष हैं। हानिकर्ता-
वृक्क एवं उष्ण प्रकृति को। दर्पनाशक—
सिकंजबीन व इसबगोल तथा उन्नाव। प्रतिनिधि-
अवेध मुनक्का उचित मात्रामें। गुण,कर्म,प्रयोग-
इसका विशिष्ट गुण यकृत, हृदय तथा मस्तिष्क
को बलप्रदान करना और कामशक्ति को बढ़ाना है,
एवं सारे दोषोंको पक्व करना, प्रकृतिको मृदु करना,
रोध उद्घाटन तथा आमाशयको स्वच्छ करना है।
यह कठोरता को मृदुकर्ता, कफ प्रकृति को कोमल
करना, श्वास को लाभप्रद, ओजको बलवान
करना, शरीर को बृंहण करना, रेचक होते हुए
भी मस्तिष्क को लाभप्रद है। मूर्च्छानाशक,
वस्ति तथा वृक्करोग को लाभप्रद, अंगूरी सिरके
के साथ प्लीहाशोथलयकारक तथा हृदय व वात
तंतुओं को बलप्रद और पथ्याहार, एवं विस्मृति
रोग नाशक भी है।

अंगूर क्षार—इसके पञ्चांग से निकाला हुआ
क्षार अश्मरीभेदक है। मात्रा-२-४ रत्ती।

अंगूर आदि के गुणधर्म व प्रयोग डॉक्टरों के मतानुसार।

डॉक्टर मोहीदीन शरीफ-स्वलिखित मेटे-
रिया मेडिका में स्वानुभव को निम्न प्रकार से पेश
करते हैं। यथा—

प्रभाव—अंगूर, उत्तापशामक, मूत्रजनक,
तथा ज्वरनाशक है। किशमिश (अधिक मात्रा
में) स्निग्धताकारक श्लेष्मानिःसारक तथा
उदरमृदुकर्ता (Laxative) है। (थोड़ी
मात्रा में) संकोचक है।

प्रयोग—अंगूर का शर्बत अतिग्राह्य तथा शीत-
जनक पेय है और अनेक ज्वरों में ज्वर सम्बन्धी
लक्षणों तथा तृषा को शमन करने में अत्यन्त
लाभदायक सिद्ध होता है। उक्त डॉक्टर महोदय
कहते हैं कि मैंने मूत्रदाह, मूत्रावरोध तथा
मूत्रकृच्छ्र और पैत्तिकाजीर्ण की कतिपय दशाओं में
इसका उपयोग किया और इसे लाभप्रद पाया।
यह अन्य औषधियों के लिए विशेषतः उनके लिए
जो अजीर्ण, प्रवाहिका, अतिसार तथा जलोदर

प्रभृति विकारों में व्यवहृत होती है, सर्वोत्तम पूर्व अतिग्राह्य अनुपान है।

शर्बत निर्माण-विधि—पक्व द्राक्षा स्वरस १ सेर, जल १॥ सेर, शुद्ध स्वच्छ शर्करा २ सेर। सर्व प्रथम शर्करा को जल में डाल कर अग्नि पर रखकर घोलें, पुनः अंगूर स्वरस मिलाएँ। तत्पश्चात् सम्पूर्ण द्रव को मधुर अग्नि द्वारा यहाँ तक पकाएँ कि यह द्रव रह जाए। मात्रा-आधा से १ फ्लुइड ऑउंस (२४ घंटे में २-३ बार)।

डार्मोक-अपक्व अंगूर स्वरस को अरबी में हस्रम, फ़ारसी में गुरह, अंग्रेज़ी में वरजूस (Verjuice) तथा रूमी में अग्रेस्टो (agresto) कहते हैं। यह इटली में अब तक कंकरीयों में व्यवहृत होता है। वसंत ऋतु में अंगूर की शाखाओं को काटने से उनमें से अधिकता के साथ रस निकलता है। यह त्वचा रोगों में व्यवहृत होता है। अब भी यूरुप में चक्षु प्रदाह के लिए यह एक प्रसिद्ध औषध है।

इसका पत्ता संकोचक है, तथा अतिसार में उपयोग किया जाता है।

आर० एन० खोरी—औषधार्थ प्रयोग करने से पूर्व अंगूर के बीज एवं छिलका दूर कर देने चाहिए। मुनक्का ६ महर;—स्निग्ध, शीत तथा मृदुरेचक है। इसको प्रायः औषध को मधुर करने के लिए प्रयोग में लाते हैं। यह ज्वर की पिपासा, प्रदाहमूलक पीड़ा एवं कोष्ठबद्ध रोग में सेवनीय है। पत्र-कषैला है और अतिसार रोग में व्यवहृत होता है।

काष्ठ की भस्म—अश्मरी रोग के पूर्वरूप में एवं भाविरोगोत्पादनानुकूल अवस्था में शरीर में सुरिक एसिड संचय हेतु अनागतव्याधि प्रतिषेधक रूप से अर्थात् भावी व्याधि उत्पन्न न हो; इस लिए इसका उपयोग करते हैं। एतद्देशीय लोग कोष्ठवृद्धि रोग एवं अर्श में इसका प्रलेप करते हैं।

कपिलद्राक्षा (मुरीदाम्ब) साधारणतः रेचक मिश्रणों में उपादान रूप से व्यवहृत होती है।

किशमिश—विविध संशमोदर्कों में ... इस होता है।

(मे० मे० इ० २ य भा०)

मुकर्जी—किशमिश शीतल तथा ... प्रयोग किया जाता है और खाँसी, तथा पांडुरोग में व्यवहृत होता है।

हिं० संज्ञा पुं० [सं० अंकुर] (१) ... के छोटे छोटे लाल दाने जो घाव भरते दिखाई पड़ते हैं। (२) अंकुर, अंखुआ।

अङ्गूर का मड़वा angúra-ká-maṛvá—संज्ञा पुं० अंगूर की बेल को चढ़ाने के लिए बाँस की फट्टियों का बना ...

अङ्गूर की टट्टी angúra-kí-taṭṭí—संज्ञा स्त्री० अंगूर का मड़वा।

अङ्गूर की शर्करा angúra-kí-sharkará—हिं० संज्ञा स्त्री० द्राक्षौज, द्राक्षा से ... की शर्करा। Grape sugar (Dextrose, glucose.)

अङ्गूर शेफ़ा angúra shefá—हिं० संज्ञा [फ़ा०] (Dulcamara) एक ... हिमालय पर शिमले से लेकर काश्मीर ... है। इसे सग अंगूर, सूची, अवराज ... बूटी भी कहते हैं। इसकी जड़ और ... और वायु के दर्द को दूर करती है। अंगूर शिफ़ा।

अङ्गूरी angúrí—हिं० वि० [फ़ा० अंगूर] (१) अंगूर से बना हुआ। (२) ... का।

संज्ञा पुं० कपड़ा रंगने का हलका हरा ... जो नील और टेसू के फूल को मिलाकर ... जाता है।

अङ्गूरी शकर angúrí-shakar—संज्ञा पुं० द्राक्षौज, द्राक्षखंड, अंगूर की ... (Dextrose)।

अङ्गूरी शराब angúrí-sharába—हिं० द्राक्षासव, मद्य। ख़म्र, शराब-अ० ... मुल-फ़ा०। शाड्गमा—ता०। द्राक्षा ...

—मल०। द्राख्-नु-शरु-गु०। मृदिर-का-अरक, मृदिरक-पान-सिं०। वाइनम Vinum (Fermented juice of grapes—Wine or Port wine)—ले०। स० फा० इं०।

...री सिर्का angúri-sirká-हिं०, द० अंगूरेर सिर्का-बं०। खल्लुल् खमर, ख़ल्लुल् अमब—अ०। सिर्कह् अंगूरी—फ़ा०। द्रिराव-काडी—ता०। द्राव-पुल्लनील्लु-ते०। मुन्तिरिङ्ङ्काडि-मल०। द्राक्षी-काडी-कना०। द्राख्नु-सिर्को-गु०। वेनेगर ग्रॅफ ग्रेप्स (Vinegar of grapes or wine vinegar)-इं०। स० फा० इं०।

...रे काबुली angúre kábulí-फ़ा० किशमिश, काबुली किशमिश। Raisin (Uvæ, Uvæ passæ.)

...रे कौली angúre-kaulí } -फ़ा०
...रे खिरस angúre-khiras } रीछदाख।
यूवी अर्साई फोलिया (Uvæ ursi folia)—ले०। ए० मे० मे०।

...रे खुश्क angúre-khushk-फ़ा० मुनक्का, सूखे अंगूर, किशमिश। Raisins (Uvæ, Uvæ passæ)

...रेर सिर्का angúrera-sirká-बं० अंगूरी सिर्का (Vinegar of grapes) स० फा० इं०।

...रे रूबाह angúre-rúbáh-फ़ा० मको, काला मको, कड़ा मको—हिं०। (Solanum Nigrum, Bl. not Linn.) स० फा० इं०।

...रे रूबाहे सुर्ख angúre-rúbáhe surkha-फ़ा० मको, रक्त (लाल) मको-बं०, हिं०। (Solanum Rubrum, Mill.)

...रे रूबाहे सियाह angúre-rúbáhe-siyáh-फ़ा० काला मको-हिं०। (Solanum nigrum, Bl. not Linn.)

...रे शिग़ाल angúre-shighála-फ़ा० मको Bitter sweet (Dulcamara).

...रे शिफ़ा angúre-shifá-फ़ा० (Dulcamara) मको-हिं०।

अङ्गूरे सग angúre-sag-फ़ा० (Jacquins nightshade) इं० हैं० गा०।

अङ्गूषः angúshah-सं० पुं० (An ichneumon) एक चारपाया जानवर।

अङ्गेज़ angeza-अफ़० अफगानी भाषा में इस का नाम नूरेआलम है। यह एक घास है जो गीलान के पहाड़ों में उगता है। नर व मादा भेद से दो प्रकार का होता है।

अङ्गेज़ अवरतस angeza-avaratasa-फ़ो० अजूफ़ाल्लोव,त्ल (Helix ashera)

अङ्गोकर angokara-ते० (Momordica dioica, Roxb.) खारकरेला-हिं०। फा० इं० भा०।

अङ्गोज़ह् angozah-फ़ा० (Assafœtida) हींग-हिं०। हिंगुः, रामठम्-सं०।

अङ्गोज़हे इलरी angozahe-ilarí-फ़ा० (Assafœtida) हींग, हिङ्गु-हिं०।

अङ्गोद्वर्तन angoda-vartana-सं० अंग-लेपन, अनुलेपन, लेप। The hair-wash (Liniment) फा० इं० २ भा०।

अङ्गोरम् angoram-कोंपल,नवपल्लव (Bud).

अङ्गोल angola-सिं० अङ्कोल (Alangium decapetalum, Lam.) स० फा० इं०।

अङ्गौन angouna-बर० (ए० व०) मुकुल, कली (Bud.)

अङ्गौन मियाआ angoun-miyáá-बर० (ब० व०) कलियां (Buds).

अङ्गुवेण्टा ungnenta-ले० (ए० व०) अङ्गु एण्टम् (ए० व०)

अङ्घालजी anghrálaji-सं० स्त्री० अन्ध्रालजी रोग (Andhrálaji).

अङ्घ्रिः anghrih } सं० पुं० १-(The
अंह्रिः anhrih } Root of a tree) द्रुम मूल, वृक्ष की जड़। रा० नि० व० २। अम०। २-(Foot) पाद, चरण, पाँव। (Lower limb) रा० नि० व० १८।

अङ्घ्रि ग्रन्थिकम् anghri-granthikam-सं० क्ली० पिप्पलीमूल (Piper root).

अङ्घ्रि जिह्विकः anghri-jihvikah-सं० पुं०

दमनक वृक्ष (Artemisia indica, Willd.)

अङ्घ्रि नामकः,–नामन् anghri-námakah-, námah-सं० पु० १-(Artemisia indica) दमनक वृक्ष। २-(The Root of a tree) वृक्ष मूल, जड़। गा० नि० व० २। अमं०।

अङ्घ्रिपः anghripah-सं० पु०(A Tree) अंह्रिप, पेड़, दरख्त, वृक्ष। रा० नि० व० २। हला०।

अङ्घ्रिपर्णिका anghri-parniká, अङ्घ्रिपर्णी anghri-parni —सं० स्त्री० (Doodia lagopodioides) पृश्निपर्णी। चाकुलिया –बं०। भा० पू० १ भा० गु०-व०।

अङ्घ्रिबला anghri-balá-सं० स्त्री० पृश्निपर्णी (Hemionites cordifolia)

अङ्घ्रिवल्लिः,–का anghrivallih,-ká, अङ्घ्रिवल्ली anghrivalli —सं० स्त्री० (Uraria Lagopoides, Dc.) पृश्निपर्णी। चाकुलिया–बं०। अ० टी० र०।

अङ्घ्रिषः anghrishah-सं० पु० उरु नाम का वातु रोग। देखो–अध्युषः (Adhiushah)

अङ्घ्रिसन्धिः anghrisandhih, अङ्घ्रिस्कन्धः anghriskandhah, अङ्घ्र्यः anghryah-सं० पु० गुल्फ, पादगुल्फ, गट्टा–हिं०। इं०:-न्कल The ankle (Malleolus), पायेर गोडालि –बं०।

अचण्ड Achanda-सं० कुसुम।

अचता achatá-नैपा० लाल कोइंदुरा-सिलहट। मैं० मो०।

अचर achara-हिं० वि० [सं०] (Immovable) न चलने वाला। जड़। स्थावर। संज्ञा पुं० न चलने वाला पदार्थ। जड़ पदार्थ। स्थावर द्रव्य।

अचरणा acharaná-सं० स्त्री० वह योनि जो मैथुन के समय पुरुष से प्रथम स्खलित हो जाती है।

अचल achala-हिं० वि० (Immovable) स्थिर।–हिं० पुं०, लः-सं० पुं० (१) A mountain पर्वत। (२) A bo[lt] pin शंकु। संज्ञा पुं० न चलने वाला

अचलकीला achalakilá-सं० स्त्री० ([Ear]th) पृथ्वी।

अचल त्विट् (–ष) achala tvit-सं० पु० कोकिल, कोइल (A cuck[oo])

अचल सन्धि achala sandhi स्त्री० अचेष्ट संधि, स्थिर संधि, वे सन्धियाँ [जिनमें] गति असम्भव है। जैसे दोनों [...] के बीच की संधि। इम्मूवेबल जाइण्ट Immovable joint, सिनार्थ्रोसिस Synarthiosis-इं०। मफ़ासिल स़ाबित, मफ़ासिल मुवसक़–अ०।

नोट—(१) अर्धाहन्वास्थि संधि को छोड़कर ऊपर की शेष सन्धियाँ ही हैं।

(२) अचल संधियाँ तीन प्रकार की होती हैं १—दरज़वाला जोड़ (मफ़ासिल दरज़ी) जैसे, कपाल की, २–कीलनुमा, गड़ा हुआ जोड़ (मफ़ासिल मिस्मारी) जैसे दन्त और [...] संधि। ३–नलिकाकार सन्धि (मफ़ासिल मीज़ाबी) जैसे जतूकास्थि और वंशास्थि की सन्धि। इनके अंगरेजी नाम इस प्रकार हैं:—(१) स्युचर (Suture) (२) कम्फोसिस (Comphosis) (३) स्केंडिलेसिस (Schendylesis).

अचला achalá, अचला कीला achalá-kilá —सं० [स्त्री०] पृथ्वी (earth)

अचलोत्र achalitra-हिं० संज्ञा पु० इटि[या] कोमाइला Itea macrophylla.

अचलेश्वरः achaleshvarah-सं० एक योग जिससे वृद्धता नष्ट होती है। पारा, भस्म, शुद्ध गन्धक, त्रिफला और इन सबको समान भाग लेकर बालक चूर्ण एरण्ड के तेल के साथ रोज चाटें। इस ६ महीने सेवन करने से वृद्धता दूर।

र आयु की वृद्धि होती है। इसके सेवन करने वालों को बकरे के अण्डकोष की कीमा को गाय के दूध में उबाल कर मिश्री मिलाकर खाना उचित है। रस यो० सा०

अचक्षु achakshu-हिं० वि० } बिना
अचक्षुस् achakshus-सं० वि० } आँख का। अंधा। नेत्र रहित। (Eyeless, blind).

अचपल,-ल्य achápala,-lya सं० वि० (Steady) स्थिर, अचंचल।

अचापलं,-ल्यं achápalam,-lyam—सं० स्त्री० (Steadiness) स्थिरता।

अचार achára-हिं० संज्ञा पु० (१) बड़ाई भेद। (२) चाल चलन, आचार, व्यवहार। (३) चिरौंजी का पेड़। पियाल वृक्ष (Buchanania latifolia, Roxb.).

अचार बोणडी achára-bondí-म० पोकर-मूल, उकरा-हिं०। अकलकर-सं०। धन मु-शली-कर्ना०। Paracress (Spilanthes Oleracea, Jacq.)

अचारी achárí-हिं० वि० [सं०] अचार करने वाला। आचरण शील।

अचिकित्स्य achikitsya-हिं० वि० }
अचिकित्स्यः achikitsyah-सं० वि० }
बे उपाय। बे इलाज। ला दवा। जिसकी दवा न हो सके। चिकित्सा के अयोग्य। असाध्य (Incurable.)।

अचिकुरः achikurah-सं० पु० कपाल रोग, खालित्य, इन्द्रलुप्त। (Alopecia Baldness).

अचिक्कन achikkana-हिं० वि० [सं०] खुरखुरा, खरदरा, (Rough, unpolished.)

अचित् achit-हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) Devoid of understanding अचेतन। जड़। प्रकृति। ("चित्" का उलटा)। (२) Material प्राकृतिक।

अचिन्त achinta-हिं० वि० [सं०] चिन्ता-रहित, निश्चिन्त, बे फ़िक्र।

अचिन्ता achintá-हिं० संज्ञा स्त्री० बे फ़िकरी, निश्चिन्तता (Absence of thought).

अचिन्त्य achintya-हिं० वि० [सं०]. (१) बोधागम्य। अज्ञेय। कल्पनातीत। (२) अतुल। (३) आशा से अधिक।

अचिन्त्यजः achintyajah सं० पु० पारद, पारा (Mercury) र० नि० व० १३।

अचिन्त्यशक्तिरसः achintya-shaktirasah-सं० पु० पारा, गन्धक प्रत्येक २ मा०, भाँगरा, केशराज (काला भाँगरा), मकाल, ब्राह्मी, पद्मसुन्दर (गूमा), सफेद अपराजिता की जड़, शालिग्रामक और कालमरिच इनको ४-४ मा० ले उपयुक्त सभी औषधियों के रसमें बारीक पीसें, फिर सोनामाखी १ मा०, कालीमिर्च १ मा० मिलाकर नैपाली तांबे के डब्बे में खरल कर मूँग प्रमाण गोलियाँ बना सायामें शुष्ककर रक्खें। इस प्रयोग को सन्निपात में बरतें। देखो-भै० र० सन्निपाताधिकारः।

अचिन्त्यात्मा achintyátmá-सं० पु० [सं०] परमात्मा (The Supreme Soul)

अचिरं achiram } सं०, हिं० क्रि० वि०
अचिर achira } (soon, quickly)
शीघ्र। तुरन्त। जल्दी।

अचिर द्युति achira-dyuti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली। क्षणप्रभा। विद्युत। (Lightning)

अचिर-पल्लवः achira-pallavah-सं० पु० (Alstonia scholaris, R. Br.) सप्तपर्णवृक्ष। छातिम। छतीऊन। छतिवन। सतवन।

अचिर प्रभा achira-prabhá } -सं० स्त्री०
अचिर भास् achira.bhás } (हिं०
अचिर रोचिस् achira-rochis } संज्ञा स्त्री०)
बिजली, चपला। विद्युत। (The lightning.)

अचिरात् achirát-हिं० क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। तुरन्त। जल्दी।

अचिराभा achirábhá } -सं० स्त्री० विद्युत।
अचिरांशु achiránshu } बिजली। (Lightning)

अचीता achítá-हिं० वि० स्त्री० [सं०] अनिच्छित । अचिंतित । (Unwished.)

अचुका achuká सं० स्त्री० आच्छुक । आल । आली (Morinda citrifolia, *Linn.*)

अचुवागन्दी achuvágandí-ना० असगन्ध । अश्वगन्ध । (Withania Somnifera, *Dunál.*)

अचूक achúka-हिं० वि० [सं०] अच्युत । जो न चूके । ठीक । जो अवश्य फल दिखाए । अवश्य निर्दिष्ट कार्य करने वाला । भ्रम रहित । पक्का । ज़रूर । (Sure, unfailing)

अचेत acheta-हिं० वि० [सं०] अज्ञान । मूर्च्छित । सुप्त होना । चेतना रहित । संज्ञा शून्य । बे होश । (Out of mind or senses)

अचेतन achetana-हिं० संज्ञा पुं०
अचेतनः achetanah-सं० त्रि०
(Inanimate object)जड़द्रव्य । अचैतन्य पदार्थ ।-हिं० वि० [सं०] Insensible, senseless बेहोश । संज्ञा हीन । मूर्छित । चेतना रहित । आत्मविहीन ।

अचेलः achelah-सं० पुं० वस्त्रहीन । नंगा । नग्न (Naked, clothless.)

अचेल परिसह achela-parisah-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अचेलपरिसह] आगम में कहे हुए वस्त्रादि धारण करने और उसके फटे एवं पुराने होने पर भी चित्तमें ग्लानि न लाने का नियम ।

अचेष्ट संधि acheshta-sandhi-सं० त्रि० अचल सन्धि (Synarthrosis)

अचेष्टा acheshtá- सं० स्त्री० अटल । स्थिर (Immovable).

अचैतन्य achaitanya-हिं०संज्ञा पुं०
अचैतन्यः achaitanyah-सं० त्रि०
निश्चेतना, चेतना का अभाव, अज्ञान ।-हिं० वि० [सं०] आत्माविहीन, अज्ञानता, जड़, चेतनारहित ।

अचैन achaina-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अ= नहीं+आयन=चैना] आराम न करना, विकलता, दुःख, कष्ट । (Uncomfortable).

अच्चेगिडा achchegidá-कना० दुदि, स्न-विन्दुच्छद (Euphorbia pilul. *Linn.*)

अच्छ achchha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (A crystal) स्फटिक । (२) (A bear) रीछ, भालू । भल्लूक, भल्ल । (३) -हिं० वि० (clear, pellucid, transparent) स्वच्छ ।-संज्ञा पुं० [(१) आँख, नेत्र । (२) स्वाद ।

अच्छः achchhah-सं० पुं० (१) (२) रीछ, भल्लूक) (३) स्फटिक । (४) पटेरे ।

अच्छकीकसम् achchha-kikas. स्त्री० सूत्रविहीन कार्टिलेज (Hy. cartilage)

अच्छटा achchhatá-सं० स्त्री० आमला, भूम्यामलकी (Phyllanthus niruri, *Linn.*)

अच्छत achchhata-हिं०संज्ञा पुं० [बिना टूटा हुआ चावल (Whole) वि० अखंडित ।

अच्छ-भल्लः,-ल्लुकः achchha-bhallukah-सं०पुं० १-मोतापाता (C... indicum, *Vent.*) । रा०नि०व० १६ । रत्ना० । २-(A b... भालू, रीछ ।

अच्छर्दिका achchhardiká-सं० (Vomiting, an emetic) छर्दि । उकाई । वमी । वान्ति । ... व० २० ।

अच्छलः achchhalah-सं० पुं० ति... कुचड़ी । तिलकल्क (Paste of sesam... indicum)

अच्छा achchhá-हिं० वि० [सं० अच्छ= निर्मल] [स्त्री० अच्छी] मनोहर । सुन्दर ।

अच्छा-विच्छा achchhá-vichchhá वि० [हिं० अच्छा] (१) दुरुस्त । चुना हुआ । (२) नीरोग । भला चंगा ।

अच्छिन्न achchhinna-हिं० वि० [छिद्र रहित, जो कटा न हो । अविच्छिन्न ।

-पत्रः achchhinna-patrah-सं० (१) शाखोट वृक्ष, सिहोर (Streblus asper, Linn.) । (२) पुष्कराग्र वृक्ष मात्र ।

: achchhukah-सं० पुं० उक्त नाम रञ्जन पुष्प वृक्ष । तिनिश वृक्ष । आल । ल फुलेर गाछ-बं० । (Lagerstrœmia os=reginœ, Retz.) प० मु० ।

दन achchholana-हिं० संज्ञा पुं० शिकार । आखेट । अहेर । (The chase, hunting).

दन् achchholan-सं० त्रि० (Having clear water)

त achyuta-हिं० त्रि० [सं०] (१) स्थिर, अटल, दृढ़, नित्य, अविनाशी । (२) जो गिरा न हो । (३) जो न चूके, जो त्रुटि न करे, जो विचलित न हो ।

ता achyutá-सं० स्त्री०, नैपा० लाल कोईपुरा-मिलहट ।

तावासः achyutá-vásah } सं० पुं० तवासः achyuta-vásah } (Ficus religiosa, Linn.) अश्वत्थ वृक्ष, पीपलवृक्ष । रा० नि० व० ११ । (२) उदुम्बरवृक्ष, गूलर का पेड़ । The sacred fig tree (Ficus glomerata, Roxb.)

वानी achhavání-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० यवनिका या यमानी] कॉडल (Candle)-इं० । बत्ती, बाती, प्रसूता स्त्रियों की औषध । अजवाइन, सोंठ तथा मेवों को पीस कर घृत में पकाया हुआ मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है ।

छाम achhámа-हिं० त्रि० [सं० अक्षाम्] (१) जो पतला न हो । मोटा । बड़ा । भारी । (२) जो क्षीण या दुबला न हो । हृष्ट पुष्ट । मोटा ताजा । बलवान् ।

छिद्र achhidra-हिं० त्रि० छिद्र रहित .(Impervious) ।

छी achhí-हिं० संज्ञा स्त्री० [देश०] आल का पेड़ (Morinda citrifolia, Linn.)

अछूता achhútá-हिं० त्रि० [सं० अ=नहीं + छुप्त=छुआ हुआ] अनछुआ, नवीन, पवित्र । [स्त्री० अछूती]

अछेद achheda-हिं० त्रि० [सं० अच्छेद्य] जिसका छेदन न हो सके । जो कट न सके । अछेद्य । अभेद्य ।

संज्ञा पुं० अभेद, अभिन्नता ।

अछेद्य achhedya-हिं० त्रि० [सं०] जिसका छेदन न हो सके, जो कट न सके, अभेद्य ।

अछेह achhoha-हिं० त्रि० [सं० अछेद्य] बहुत अधिक । अनंत । अत्यन्त । (२) अभेद्य । निरन्तर ।

अछोप achhopa हिं० त्रि० [सं० अ+छुप] आच्छादन रहित । नंगा । नीच । तुच्छ ।

अछोभ achhobha-हिं० त्रि०[सं० अक्षोभ] (१) क्षोभरहित, उद्वेग शून्य, चंचलता रहित, स्थिर, गम्भीर, शांत ।

अछोह achhoha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अक्षोभ, प्रा० अच्छोह] क्षोभ का अभाव, शांति, स्थिरता ।

अज aja-हिं० त्रि० [सं०] } (Unborn)
अजः ajah-सं० हिं० }
जिसका जन्म न हो । अजन्मा ।

संज्ञा पुं० (१) Cupid कामदेव । (२) Moon चन्द्रमा । (३) A ram, he goat बकरा । (४) A sort of corn or grain अनाज ।

अज़अर azaar-अ० कम बालों वाला । जिसके बाल कम हों ।

अज़क़ āazaq-अ० फलदार खजूर का वृक्ष । Fruitful date tree (Phenix sylvestris)

अज़क़ इब्न ज़ैद āazaq-ibna-zaid-अ० खजूर भेद । (A kind of date).

अज़क़ इब्न ताब āazaq-ibna-táb-अ० खजूर भेद । (A kind of date).

अजकम् ajakam-सं० क्लो० साखू, साल । The sal tree (Shorea robusta, Gærtn.) इं० मे० मे० ।

अजकर्णः ajakarṇah } -सं० पुं०
अजकर्णकःajakarṇakah
अजकर्णक ajakarṇaka-हिं० संज्ञा पुं०

बकरा के कर्ण के समान पत्र-वाला शालवृक्ष विशेष, असन। र० मा०। वालमर्जं। रला०। इसका प्रसिद्ध नाम पीतशाल है। (Indian kino tree) आसन, विजयसार, साल का पेड़-हिं०। आसना, पियासाल-बं०।

गुण—कटु, तिक्त, कषाय, उष्णवीर्य, कफ, पाण्डु, कर्णरोग, प्रमेह, कुष्ठ, विष विकार तथा व्रण-नाशक है। भा० पू० १ भा० वटा० व०। (Sal tree) सर्ज वृक्ष, साल। रा० नि० व० ६। महासर्ज तरु, शाल का एक भेद है। महासालवृक्ष। सुं०सू०अ०३८, २ गणः ड।

अजकर्णशाल ajakarṇa-shála-हिं० संज्ञा पुं० The sal tree (Shorea robusta, *Gærtn.*) साल, सालू।

अजका ajaká-सं०स्त्री० १-(Scrofulous disease of the goat) अजागलस्तन (बकरे का गलगण्डरोग)। देखो-गलस्तन। २ छाग पुरीष, लेंड़ी (Goat's dung)। ३—(A young she-goat)। ४—जो शुक्र कुछ ताँबे के से रंग का, पिच्छिल, रक्तस्रावी, कुछ ताँबे के से रंग की फुंसियों से युक्त, अत्यन्त वेदना सहित बकरी की मेंगनी के सदृश ऊँचा और कृष्ण वर्ण का होता है, उसे अजका कहते हैं। यह रक्त से उत्पन्न होता है। और असाध्य भी है। यो० उ० १० अ०। (५) शुक्ल तुलसी (Ocimum album, *Linn.*) इं० मे० मे०।

अजकाजात ajakájáta-हिं० संज्ञा पुं० }
अजकाजातम् ajaká-játam-सं० स्त्री० }

आँख में होने वाली लाल, फूली जो पुतली को ढक लेती है। टेंटड़ या ढेंढर। नाखूना। चक्षु तारा में होने वाला रोग विशेष। काले भाग में बकरी की सूखी लेंड़ी के समान पीड़ायुक्त लाल तथा गाढ़े आँसुओं को बहाने वाली शुक्र (फूली) की वृद्धि होती है उसको अजकाजात नामक शुक्र जानना चाहिए। यह तृतीय त्वचा में मांस होती है, इससे इसमें मेदा की वृद्धि होती है नि० नेत्रदृष्टिगत रो० निदा०। Pterygium-इं०। नाखुनह, —फ़ा० जु़फ़रह, ज़ुफ़रह-अ०।

अज़क़ु़ aazaqúh-अ०। बामनी। (A red tailed lizard)

अजकेशी ajakeshi-सं० स्त्री०। (Indigofera tinctoria, L.) वै० निघ०।

अजखीस aajakhisa-अ० खसा (A...

अजग ajaga-सं० राई, सरसों, सर्षप। (...apis dichotoma)।

अजगर ajagara-हिं० संज्ञा पुं०। A large serpent, the boa constrictor, बकरी निगलने वाला साँप, मोटी जाति का साँप जो अपने शरीर के कारण फुरती से इधर उधर डोल न... और बकरी तथा हिरन ऐसे बड़े ... जाता है। और सर्पों के समान इसमें ... होता। यह जंतु अपने स्थूलता और ... के लिए प्रसिद्ध है।

अजगरः ajagarah-सं० पुं० } स...
अजगर ajagara-हिं० संज्ञा पुं० }
साँप। A large serpent (Boa constrictor) who is said to swallow goats. भा० म० १२। १०९। शय(अर्थात् बिल में रहने वाला) मृग...

पर्य्या—शंयुः, वाहसः। (अ०)। (वबासीर) में हितकारी है। सु० ... अ०।

अजगल ajagala-दे० अजागल।

अजगलिका ajagaliká-हिं० संज्ञा स्त्री०
अजगल्लिका ajagalliká सं० स्त्री०
अजगल्ली ajagalli-सं० स्त्री०

बर्बरी वृक्ष, वनतुलसी। बाबुई (Ocimum album, *Linn.*) ... पु० १ भा० पु०। क्षुद्ररोगान्तर्गत विशेष। यह कफ वात जन्य होता है। ... १ अ०। बालकों के चिकनी, शरीर वर्ण की; गठीली, पीड़ा रहित, मूँग के

[illegible]यर छोटी पिड़िका (फुंसी) जो कफ और [illegible]त के प्रकोप से शरीर पर निकलती है, उसको [illegible]जगल्लिका कहते हैं। मा० नि० क्षुद्ररो०।

[illegible]र ajagava-हिं० संज्ञा पु० दे० अजकवः

[illegible]:,-वं ajakavah,-vam-सं० पु०, क्ली० [illegible]व का धनुष (The bow of Shiva).

[illegible]र ajaguta-हिं० वि० अद्भुत, अचरज।

[illegible]र ajagura-हिं० संज्ञा पु० एक बूटी है [illegible]एक से १॥ बालिश्त ऊँची होती है। इसमें [illegible]दमी सदृश पत्र एवं मञ्जरी लगती है। स्वाद-[illegible] लिके।

[illegible]गुण—विषमज्वर में इसके क्वाथ का सेवन केवल [illegible]रोग उपयोग लाभदायक होता है।

[illegible] ajagandhá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] [illegible]मंदा (Apium involucratum, [illegible]b.)।

[illegible]र ajagandhá) सं० स्त्री०, हिं० [illegible]का ajagandhiká } संज्ञा स्त्री०) वनयमानी, जंगली अजवाइन, वनयमानी [illegible]eseli Indicum, W. & A.) अम०। [illegible]ना०। (२) पर्य्या—वस्तगंधा, खरपुष्पा, [illegible]विगंधिका, उग्रगन्धा, ब्रह्मगर्भा, ब्राह्मी, पूति-[illegible]पूतिका-सं०। रामतुलसी-हिं०। (Ocimum [illegible]ratissimum, Linn.) गुण—कटु, [illegible]रूक्ष, रूक्ष, हृद्य, अग्निवर्द्धनी, हरिद्रामकारिणी, [illegible]पु, शुक्र, वात एवं कफ नाशनी है। मद० व० [illegible]। (३) (Ocimum album, Linn.) [illegible]तुलसी का पौधा, ममरी, बबरी, बबई-हिं०। [illegible]लीवि। मद०। रामतुलस, तिलवण-मं०। [illegible]० नि० व० ४। गुण-प्रभाव— लघु, रूक्ष, [illegible], वात एवं कफ नाशक। मद० व० १। वन [illegible]मानी। सं० द्र० नि० ज्व०। "नीलिनीमज [illegible]धान्ध"। नीलपुनर्नवा। बोलान्दो, वनयमानी। [illegible]० सू० ४ अ०। च० सू० २ शिरो वि०। [illegible]० चि० १५ अ० उ० २२ अ०।

[illegible]धिनी ajagandhini-सं० स्त्री०, हिं० [illegible]ज्ञा स्त्री० मेढ़ासिंगी। मेषशृङ्गी (Helicte-[illegible]is isora, Linn.). काकड़ा-सिंगी-बं०। [illegible]० मा०। (२) काकड़ासींगी (Rhus su-[illegible]ccedanea, Linn.)।

अजघोषः ajaghoshah-सं० पु० सन्निपात ज्वर भेद। लक्षण—शरीर में बकरे के समान गन्ध आए, कन्धों में पीड़ा हो, गले का छिद्र रुक जाय, और नेत्र लाल होजाएँ, ये सब लक्षण जिस ज्वर वाले को हों उसका "अजघोष" सन्निपात से पीड़ित जानना। भा० म० १ भा०।

अजज azaj-अ० अज़ज, चतुर्थ कोष्ट (Fourth ventricle)

अजजीवः ajajivah) सं० पु० (A अजजीविकः ajajivikah } goat-herd) गड़ेरिया।

अजटा ajatá-सं० स्त्री० भुँई आमला, भूम्यामलकी (Flacourtia Cataphracta, Roxb.)। रसे० चि० पर्या: अग्निमुख लौह।

अजड़ ajará-हिं० वि० [सं०] जो जड़ न हो। चेतन। (Not stupid)

संज्ञा पु० चेतन। चेतन पदार्थ।

अजड़ा ajará-सं० स्त्री० भूम्यामलकी, भुँई आमला (Phyllanthus niruri, Linn.) (२) कौंच, केवाँच, करिकच्छु-हिं०। आलकुशी, शुया शुग्रा-बं०। (Corpopogon pruriens। भा० पू० गु० व०। (३) लालमिर्च, कुमरिच-हिं०। लङ्का मरिच-बं०। (Capsicum annuum, Linn.) अग्नि०।

अजड़ाफलम् ajará-phalam-सं० क्ली० शुक-शिम्बी फल, कौंच, केवाँच-हिं०। Corpopogon pruriens (Pod of--)। च० चि० २ अ० वृष्य क्षीर।

अजथ्या ajathyá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० पीलीजूही, स्वर्ण यूथिका, पीले रंग की जूही का पेड़ और फूल। A plant (Yellow jasmin)। (२) पीली चमेली, ज़र्द चमेली (Jelsimium)। (३) छाग समूह (Flock of goats) वै० श०।

अजद aajada-अ० (A crow) कौआ। काग। (२) मवेज (मुनक्का)। (३) तुख्म (बीज) अंगूर। (४) मुनक्का सदृश खजूर का एक भेद (A kind of date)

अजदग्धी a ja-dagdhi–सं० स्त्री० बड़ी रास्ना।
अजदण्डी a jadandi–सं० स्त्री० महादण्डी
(Ech inops echinatus, *D. C.*) इं०
मे० मे० । फा० इं० २ भा० ।
अज़दर्द azadarda–अर० हिन्दकूशी।
चिपखप रा।
अज़दहा a zadahá–फ़ा० अजगर, बड़ा मोटा
और भार ी साँप (Boa constrictor)
अजदहा aj adahá–हि० संज्ञा पुं० [फ़ा०]
अजगर ।
अज़दाद az adáda–एक प्रकार का कपूर जो
गदला, मैर मैला-मैला होता है। (A kind
of cam nphor)
अज़दु aza dú–फ़ा० निर्यास, गोंद (Gum).
अजदुब aj idúb–अर० अज्ञात।
अज़दूय az adúya–अरब० कायफल। अज़री।
(Myr ica nagi, *Thunb.*)
अज़दूये ताज़ी azadúye-tázi–फ़ा० (Gum
acaci á) बबूर गोंद।
अजन ajan a–हि० वि० [सं०] जन्म रहित।
अजन्मा । अनादि।–वि० [सं०] निर्जन, सुन-
सान।
अजनस ajanas–अ० मोटा बलवान ऊँट
(Fat camel)
अजनह ajanah–अ० गालों का उभार। जल
का घर्ष व गंध बदल जाना।
अज़नाब azanáb–अ० ज़नब का बहु व०
अर्थ पुच्छ (दुम) है। टेल (Tail)–इं०।
अज़नाबुल् खील azanábul-khila–अ०
लिह यिरु टीस। यह एक पौधा है जो विदेशों
में उत्पन्न होता है। इसके लक्षण में मतभेद है।
अजनामकम् ajanámakam–सं० क्ली०
माक्षिक (Ferri Sulphuratum)
हे० च०।
अज़नुल्फ़ील azanul-fila–अ० राकस गड्ड-
ढ०। (Bryonia epigæa, *Rottl.*)
इसकी उ ड का मलहम गठिया को दूर करता है।
इं० हैं० गा०।
अजन्ता aj intá–हि० संज्ञा स्त्री० कुम्भी-पं०।

अजन्तुजग्धः ajantu-jagdha
अकीट भक्षित। च० द० अ० हा०।
पुट पाक।
अजन्म ajanma) हिं० वि० [सं०
अजन्मा ajanmá)
born, unbegotten)
अजप ajapa–हिं० संज्ञा पुं० [ह
A shepherd बकरी भेड़ पालने
गँड़ेरिया। (२) A butcher.
अजपत्री ajapatri–सं० स्त्री० दंती।
अजपा ajapá–हिं० संज्ञा पुं० [सं०]
shepherd बकरियों का पालक।
अजपादः ajapádah–सं० पुं०
Anisochilus carnosus (
leaved lavender) इं०
अजपालः ajapálah–सं० पुं० (A
herd) कसाई।
अजपा वरुणः ajapá-varunah–
अरमरीघ्न, पाशुन्द, वरुण। C
nurvala or C. religiosa,
(Three leaved caper) इं०
अजप्रिया ajapriyá–सं० स्त्री० बदरी
वृक्ष (Zizyphus jujuba, *L.*
पू० १ भा० फ० व०।
अज़फ़ aazafa–अ० ख़ुस ख़ुसर
वृक्षों के पत्तों को कहते हैं। जिसके पत्ते
बारीक हों।
अजफ़ aajafa–अ० (Thinness)
लागरी। दुबलापन। दौर्बल्य। कार्श्य।
अज़फ़ारुद्धन aza-fárujjana–अ०
एक बूटी है जिसमें फूल और पत्ते नहीं
वर्ण–श्यामाभायुक्त धूसर। यह बूटी मन
हुई वस्तु के सदृश होती है।
अज़फ़ा-रुत्तीब azafá-ruttiba–अ०
नाख़ून परियाँ, नाख़ून देव, नाख़ून
नाख़ून मद्फ़–फ़ा०। सीपी के किस्म
का और वस्तु है जो समुद्र तट के निकट
है। यह नख सदृश गोलाकार एवं
होती और सुगंधियों में प्रयुक्त

...ल किया जाता कि यह भी घोंघे सीपी आदि के सदृश किसी समुद्री जीव का कोष है।

...त् āazafúta–चामनी,कमनी। (A red ...iled lizard).

... āajaba–अ० (१) कालादाना, ...बुल्नील। तुख़्मे-नील-फ़ा। फार्बिटिज़-निल ...harbitis nil, *Choisy*. (seeds ...f-káládáná).

(२) आश्चर्यजनक बात, अनोखी बात, अनोखा-...न-हिं०।

... āazaba–अ० (१) मीठा पानी, मीठी ...तु। (२) एक वृक्ष का नाम। (३) एक वस्तु ...ो बच्चा उत्पन्न होने के पश्चात् जरायु से निक-...लती है।

... āazaba–अ० स्त्री रहित पुरुष अथवा ...रुष रहित स्त्री।

...भ्रु ajababhru-सं० वह वृक्ष जिस पर बक-...रियाँ चराई जाती हैं। जैसे-बरगद, बेर, पीपर ...आदि। अथ०।

...बह āazabah–अ० बेवा, राँड़, वह स्त्री ...जिसका पति मर गया हो। विडो Widow ...-इं०।

...बह āazabah–अ० (१) छोटी माईं, ...माईं,सुर्द, झंडे झाऊका फल। (Tamarix ...orientalis, *Vahl.*)। (२) मीठा पानी। ...(३) काई। (Moss) फा० इ०।

...बर azabara-फ़ा० छोटी माईं का वृक्ष। (Tamarix orientalis, tree of-).

...ला ajabalá–सं० स्त्री० कृष्ण तुलसी (Ocimum sanctum, *Linn.*) ...वै० श०।

...बू ajabú-सं० सुगन्धवाला। (Pavonia odorata, *Willd.*)

...बूतह āazabútah–अ० चबूत्र मादह, ...घूँस मादा, चुहिया, मूस (Rat, mouse)

...भक्ष ajabhaksha-हिं० संज्ञा पुं०
...भक्षः ajabhakshah-सं० पुं० }
१—(Acacia arabica, *Linn.*) पशुरी वृक्ष, बबूल का पेड़ जिसे बकरियाँ अधिक चाव से खाती हैं। बाबुई, बाबर-बं०। रा० नि० व० ४।

अजभक्षा ajabhakshá–सं० स्त्री० छंटा भ-मासा। क्षुद्र दुरालभा (Nut of) रा० नि० व० ४।

अजम āajama–अ० १—(Fruit-stone) फलों की गुठली। २—(Young-one of camel) ऊँट का बच्चा।

अज़म āazama–अ० पुरत पअह। क़च्चा।

अज़म āazama–हड़। हरीतकी (Terminalia chebula, *Retz.*)

अजमह् āajamah-अ० खजूर का वृक्ष जो बीज से निकलता है। खजूर का गाभा (Shoot of Date tree).

अजमद ajamada–सं० यवानिका, अग्निवर्द्धन, दीप्यक। अजवाइन-हिं०। (Ptychotis Ajowan, *D. C.*)। ओमम (सीड्स) Omum (seeds), बिशप्स वीड (Bishop's wood)-इं०। इं० मे० मे०।

अजमलः ajamalah–सं० पुं० (Common wheat) गोधूम। गेहूं। गम्-बं०। प० मु०।

अजमसी āajamasí–अ० (A kind of small date) छोटा खजूर भेद।

अजमा ajamá–गु० अजवाइन, Carum (Ptychotis) Ajowan, *D. C.*

अजमाय āajamaya–अ० (१) क्वाड्रुपेड (Quadruped)-इं०। चारपाए,चतुष्पदजीव। (२) सतरान्यून।

अजमारः ajamárah–सं० पुं० (A butcher) कसाई।

अज़मालूस azamálúsa सिरo अजवाइन खुरासानी (Hyoscyamus nigrum, *Linn.*)

अजमांसम् ajamánsam-सं० क्लो० (Goat's flesh) छाग मांस। देखो-छागमांसम्। वा० सू० ६ अ०।

अज़मूत azamúta–बरब० रीठा, अरिष्टक, फनिल। Soapnut tree (Sapindus trifoliatus, *Linn.*).

अज़मेई azamei–ग्रा० ई० चाय । Tea plant (Gamollia theifora).

अजमो ajamo–गु० (१) अजमोदा (Apium involucratum.). (२) अजवाइन (Carum ptychotis Roxburghianum, Benth.)

अजमोदः ajamodah सं० पुं० } Carum
अजमोद ajamoda–हिं० संज्ञा पुं० } Ajowan *D. C.*) दीप्यक । चां० सू० ३४ अ० वत्सकादि० व० । देखो—अजमोदा (Apium involucratum.)

अजमोदा,–दिका ajamodá,–diká–सं०,हिं० ओ०यांकी अज्मोद, आज्मूद,आज्मूदा,यज्मद । आज्मूदह, आज्मूदह-अज्वान–द० । संस्कृत पर्याय—अजमोदा, खराश्वा, मयूर, दीप्यक, शिखकुरा, कारवी, ममरतका, खराह्वा, वस्तमोदा, मर्कटी, मोदा, गंधदला, हस्ती, गंधपत्रिका, मायूरी, शिखिमोदा, मोदाढ्या, वह्निदीपिका, ब्रह्मकोशी, विशाली, हयगंधा, उग्रगंधिका, मोदिनी, फलमुख्या, मयूरका, दीप्यका, वल्ली, लोमकर्कटी, रोमकर्कट, यवान, कृमिरोगजित्, दीप्यवल्ली, मर्कटा, खराह्वा, कर्कटा, लोचमस्तका, यवानिका, मेध्यदा, विशल्या, हस्तिकारवी, हयगंधा, उग्रगंधा, वनयमानी, हस्तिकारवी । रौंयनी, आज्मूद, वनयमानी, चन्, वनयोयान–बं० । करफ़्स-सख़री, करफ़ुल्-जिबली, करफ़सुल्-मक़दूनी, बज़्रुल्-करफ़्स- अ० । करफ़्से-कोही, करफ़्से-मक़दूनी, करफ़्से-हिन्दी, तुख़्मे-करफ़्स–फ़ा० । बिज़्र्रास्साल्लियून, (फ़िज़्रास्मालियून–अ० फ़ा०)–यू० । केरम (, टाप्कोटिस्) राक्सबर्घियानम् Carum (Ptychotis) Roxburghianum. *Benth.*, एपियम इन्वाल्युक्रेटम Apium Involucratum, *Roxb.* (Fruit-of--), एपियम पेट्रोसेलिनम Apium Petroselinum, पेट्रोसेलिनम Petroselinum, ए० ग्रेवियोलेन्स A. Graveolens, *Linn.* पिम्पिनेला इन्वाल्युक्रेटा Pimpinella involucrata, लिग्युस्टिकम् अज्वान Ligusticum ajwaena–लै० । (बीज) Celery (seed); (Wild celery), पार्स्ले (Parsley), सेलेरी Celeri–फ्रां० । बराननामम्, ओमम्–ता० । अजमोद-वोमम्, वोमम्, आजमोदा, वामम्–ते० । वोमा, अजमोदा–कना० । करा० । अजमोदा-वोवा–मह० । पीठी-अजमोदा, अजमो–गु० । अजमोदा–बं०, प० । अजवान के पत्ते, वाइण्–कछ । भूतघाट–पं० ।

अम्बेलिफेरी अर्थात् छत्री वर्ग
(*N. O. Umbelliferae.*)

उत्पत्तिस्थान–उत्तरी पश्चिमी मूल, पञ्जाब की बाह्य पहाड़ी, पश्चिमी और फ़ारस ।

इतिहास—अजमोदा का वर्णन लगभग प्राचीन एवं अर्वाचीन आयुर्वेदीय ग्रन्थों में पाया जाता है । अरब लोगों ने इसका ज्ञान यूनानियों से प्राप्त किया । हकीम (Dioscorides) ने पाँच प्रकार के का वर्णन किया है । थीओफ्रेस्टस (Theophrastus) ने सीलिनॉन (करफ़स) से इसका वर्णन किया है । ... लिखते हैं कि करफ़स (अजमोदा) को ... में सेलरी (Celery.) तथा यूनानी में सालियून कहते हैं । यह इसके तीन प्रकार का भी वर्णन करते हैं, जिनमें (१) ... जिसको यूनानी में फ़ितरसालियून, (२) नबती जिसको यूनानी में अकूमालियून (३) तरी जिसको यूनानी में ... कहते हैं । वास्तव में ये क्या हैं ? इसका ... करना अति दुःसाध्य है । बंबई में " सालियून" नाम से जो औषधि बिकती है, पहाड़ी सौंफ है जिसको हिन्दी में कोनल हैं । परन्तु वह बीज जो ईरान से बम्बई में करफ़्स नाम से बिकता है उसको वहाँ अजमोद" कहते हैं ।

वानस्पतिक-विवरण—अजमोदा ...

का एक भेद है। इसके क्षुप अजवाइन के ही
मान होते हैं। इनकी शाखाओं पर बड़े बड़े
ते से लगते हैं; उनपर श्वेत रंग के पुष्प आते
र जब वे छत्ते पक और फूट जाते हैं तब
में से जो दाने उत्पन्न होते हैं वे छत्तों में
ग होते हैं, उनको अजमोद कहते हैं। करफ्स
यही अजमोदा जो फारस से बम्बई में आती
वह एक अति सूक्ष्म फल होता है। यह
आकार और चिकना होता है। स्वाद-प्रथम
के समान पुनः कड़ुवा। गंध-सौंफ के
मान, किन्तु उससे निर्बल।

प्रयोगांश—बीज तथा मूल।

रासायनिक संगठन—(१) गंधक, (२)
उड़नशील तैल, (३) अल्बुमीन, (४)
क्षार तथा (५) लवण। इसमें से एक प्र-
र का कर्पूर निकलता है जिसे एपिओल
Apiol) कहते हैं।

औषध-निर्माण—चूर्ण, क्वाथ, परिस्रुत,
वाष्पीय जल (अर्क) आदि।

अजमोद के गुणधर्म तथा प्रयोग।

आयुर्वेद की दृष्टि से—

अजमोद शूलप्रशमन और दीपन है। (च०)
वातकफनाशक, अरुचिनाशक, दीपन, गुल्मशूल-
नाशक और आमपाचक है। सु०।

अजमोद, चरपरा, गरम, रूखा, कफवातना-
शक और रुचिकारक है तथा शूल, अफरा, अरो-
चक और उदररोग का नाश करनेवाला है।
(रा० नि० व० ६)

अजमोद चरपरा, तीक्ष्ण, अग्निदीपक, कफ,
तथा वात को नष्ट करने वाला, गरम, दाहकारक
हृदय को प्रिय, वीर्यवर्द्धक, बलकारक (कहीं कहीं
"बद्धमला" अर्थात् विबंधकारी पाठ है) और
हलका है तथा नेत्ररोग, कफ (कहीं कहीं कृमि
पाठ है), वमन, हिचकी, तथा बस्तिशूल नष्ट
करने वाला है। मद० व० २, भा० पू० १
भा० ह० व०, सि० यो० अग्निमांद्य चि०।

अजमोद रुचिकारक, दीपन, चरपरा, रूखा,
गरम, विदाही, हृदय को प्रिय, वीर्यवर्द्धक, बल-
कारक, हलका, कड़वा, मल स्तम्भक, ग्राही और
पाचन है तथा अफरा, शूल, कफ वात, अरो-
चक, उदर के रोग, कृमि, वमन, नेत्र रोग, बस्ति-
शूल, दन्तरोग, गुल्म और वीर्य के विकार को
दूर करता है। (नि० र०)

अजमोदार्क के गुण

अजमोद का अर्क वात कफनाशक और अग्नि-
दीपक है।

यूनानी ग्रन्थकारों की दृष्टि से अजमोद
के गुणधर्म व प्रयोग।

स्वरूप—काला। स्वाद—तीखा और चरपरा।
प्रकृति—१ कक्षा में उष्ण और २ कक्षा में रूक्ष
है। हानिकर्ता—गर्भवती तथा दुग्ध पिलाने
वाली स्त्रियों और उष्ण प्रकृति व मृगी के रोगियों
को। दर्पनाशक—अनीसून और मस्तगी। प्रति-
निधि—खुरासानी अजवायन। मात्रा—६ मा० से
९ मा० तक। गुण, कर्म व प्रयोग—समस्त श्ले-
ष्मज एवं शीतजन्य रोगों के लिए विशेषकर लाभ-
दायक है।

यह तीक्ष्ण तथा कड़वा है, इसलिए उष्ण,
मुकत्तअ (काटने छाँटने वाला) और तीव्र रोध-
उद्घाटक है। यह आध्मान लयकर्त्ता, रोध-
उद्घाटक और स्वेदजनक है तथा श्लेष्मा एवं
वायुजन्य वेदनाशामक है। मुखकी गंधको अत्य-
न्त सुगन्धि युक्त बनाता है। क्योंकि यह मसूढ़ों,
तालु, कण्ठ तथा आमाशय की दुर्गन्धि युक्त एवं
सड़ी गली रतूबतोंको लयकर्ता तथा काटता
छाँटता है। अपस्मार के लिए हानिकारक है और
अपस्मार रोगियों के दोषों को कुपित करता
है। क्योंकि आमाशय को गरम करता है
और उसमें वाष्पोद्भूत करनेवाला उत्ताप
उत्पन्न कर देता है; जिससे तीव्र धूम्रमय वाष्प
उत्थित होता है। जिस समय यह मस्तिष्क
तक पहुँचता है उस समय घनीभूत होकर वायु
बन जाता है। इसी से अपस्मार पैदा होता है।
इसके अतिरिक्त यह शिर की ओर मलों को भी
चढ़ाता है। किसी किसी के मतानुसार मल
नलिकाओं को खोलने के कारण यह आमाशय,
शिर तथा जरायु की ओर तीव्र मलीय रतुबतों
को शोषण करता है। इस हेतु अपस्मार को

हानि करता तथा काम को लाभ पहुँचाता है। यकृत, प्लीहा, वृक्क तथा वस्तिके लिए लाभदायक है, जलोदर और मूत्रावरोध को दूर करता है। अश्मरी को टुकड़े टुकड़े कर डालता है, क्योंकि इसमें तक्तीअ (मवाद के छाँटने), रोध उद्घाटक तथा रेचक शक्ति पाई जाती है। रजः प्रवर्तक होने के कारण गर्भवती को हानिकर्ता है और इसी कारण तीव्र मवाद एवं तीव्र रतूबतों से गर्भाशय को पूरित कर देता है। जिस समय यह भ्रूण की आहारमें सम्मिलित हो जाता है उस समय उसके शरीर में व्यर्थ फुन्सियाँ तथा दुष्टव्रण उत्पन्न हो जाते हैं चाहे वे जन्म के बाद ही क्यों न प्रगट हों। अपनी रोध उद्घाटनी शक्ति के कारण यह गरम मवाद को शुक्राशय की ओर गति देता है, अस्तु यह कामोद्दीपनकर्ता है जिससे कामेच्छा को उत्तेजना मिलती है। (नफ़ा०)

अजमोद श्वास, हृत्काम्प और आंतरिक अवयव के शीत को गुणकर्ता, यकृत और प्लीहा के रोध को खंडन कर्ता, अत्यन्त मूत्रप्रवर्तक, क्षुधा और ओज को चालनकर्ता है। इसकी जड़ सम्पूर्ण कफज रोगों को लाभ करती तथा आहार को पचाती और जलोदर को गुण करती है। यह प्रभाव में अपने बीज से बलवान है। जौ के आटे के साथ इसका लेप शोथ को लयकर्ता है तथा पार्श्वशूल और वान्तिनाशक है।

डॉक्टरी एवं अन्य मत

अजमोद के पत्तों को कुचल कर स्तन में लगाने से दुग्धस्राव अवरुद्ध हो जाता है। (तुफ़िन). यह इन्द्री नेत्रों में पुलटिश रूप से उपयोग में आता है। अजमोद की जड़ का वृक्क पर लाभदायक प्रभाव होता है। इं० मे० मे०

अजमोद बदहज़मी और दस्त की बीमारी में अत्यन्त उपयोगी है तथा खराब स्वाद वाली दवा अजमोद के पानी के साथ देने से उलटी आने की सी शंका नहीं होती। इसमें ये सब दवाएँ पेट में शूल होने की भी शंका होने को बन्द करती हैं। यह अत्यधिक लालास्रावक है। इससे पाचक रस अधिक उत्पन्न होते हैं, उदरशूल नष्ट होता है तथा पाचन [illegible] के भीतर की सूजन पर भी अजमोद ग्राही पदार्थ के साथ मिलाकर हित है। (डॉ० घांडा)।

अजमोद तैल अर्थात् एपियोल ([illegible]

नॉट ऑफ़िशल (Not offical

लक्षण—यह एक पीतवर्ण का है जिसमें विशेष प्रकार की गन्ध स्वाद—तीक्ष्ण एवं अग्राह्य।

घुलनशीलता—यह जल में नहीं किन्तु इलाहल (Alcohol) और सरलतापूर्वक घुल जाता है।

मात्रा—३ से ४ मिनिम् (बुन्द)।

उपयोग-विधि—इसको [illegible] में डालकर देते हैं।

नोट—स्फटिकवत् एपियोल ([illegible] मोदा), इसको भी कभी उस तैल के उपयोग करते हैं।

प्रभाव व प्रयोग—एपियोल को [illegible] तथा मूत्रजनक रूप से रजःरोध तथा वेदना और वृक्क आदि रोगों में (१-[illegible] मात्रा में कैप्सूल्ज या शर्करा के [illegible] हैं। कहते हैं कि विषम (मलेरिया) भी यह लाभदायक होता है, पर डॉ[illegible] माक महोदय के अनुसार इसकी परीक्षा पर निम्न इन्द्रियव्यापारिक क्रियाएँ होती हैं, यथा शिरोवेदन, मदकारी, [illegible] बारम्बार खाने की इच्छा, पाचन-विका[illegible] का नष्ट हो जाना और ज्वर आदि। [illegible] में एपियोल आपस्मारिक मूर्च्छा के [illegible] दायक बतलाया जाता है। इं० मे० मे०

नोट—यूनानी हकीम भी [illegible] को मूत्रविरेचक, रजःप्रवर्तक तथा वृक्क एवं गर्भाशय के लिए लाभदायी जानते। उसे इन्हीं गुणों के लिए उपयोग में ला[illegible]

योग-निर्माण—(१) क्विनीन [illegible] रत्ती, एपियोल $\frac{१}{३}$ ग्रेन ($\frac{१}{६}$ रत्ती) [illegible] नेट ऑफ़ पोटाश $\frac{१}{८}$ रत्ती ($\frac{१}{१६}$ ग्रेन) [illegible]

वटिका प्रस्तुत करें। यह एक मात्रा है।
ण—ज्वर सहित रजःरोध तथा मलेरिया ज्वर
लाभ होता है। इं० मे० मे०।

(२) एक्सट्रैक्टम् अर्गोटी $\frac{?}{?}$ रत्ती (१ ग्रेन),
ऑल ३ मिनिम् (बुंद).
उपयोग-विधि—इन दोनों औषधों को
खाली कैपशूल में डालकर खिला दें और
। एक एक कैपशूल दिन में ३ बार दें।
गुण—रजः रोध तथा बाधक वेदना में लाभ-
दायक है।

दाख्या ajamodákhyá–सं० स्त्री० (१) यमानी, वन अजवाइन। पैशयमानी, बन ... रसा०, वृहत लवंगादि चूर्ण। (२) ...नी। अजवाइन। Carum (Ptychotis) Ajowan, *DC.* । रा० नि०।

दादि गुटिका ajamodádi-gutiká सं० स्त्री० अजमोद, मिर्च, पीपल, चित्रक, वायविडंग, देवदारु, सोंधाके बीज, सेंधा लवण, पीपलामूल, इन्हें १ पल और सोंठ १० पल, विधारा १० पल, दन्ती (जमालगोटा की जड़) ... पल इनका चूर्ण कर चूर्ण के बराबर गुड़ मिला गोलियाँ बनाएँ।
मात्रा—२-४ मा०। इसे गर्म जल से उपयोग करने से समस्त वात रोग दूर होते हैं।

(योगचिन्तामणि)

मोदादि चूर्णः ajamodádi-chúrṇah -सं० पुं० अजमोद, वायविडङ्ग, सेंधानोन, देवदारु, चित्रक, पीपरामूल, सौंफ, पीपर, मिर्च, इन्हें एक एक कर्ष भर लें। हड़ ५ कर्ष, विधारा १० कर्ष, सोंठ १० कर्ष इन्हें चूर्ण कर गुड़ पुराना मिश्रित कर उष्ण जल से खाने से शोथ, आमवात, सन्धिपीड़ा, (गृध्रसी) गृध्रसी, कटि-पीड़ा, पीठ, जाँघ की पीड़ा, तूनी, प्रतितूनी वायु, विश्वाची, कफरोग तथा वायु के रोग दूर होते हैं। शार्ङ्ग० सं० मध्य० ख० अ० ६। योग० चि० म०।

मोदाद्य वटकः ajamodádya-vatakah -सं० पुं० अजमोदादि गुटिका।

(१) अजमोद १ सेर, हड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ मुल्तानी, विदारी कन्द, धनियाँ, मोथा, मोचरस, गजपीपल, लौंग, जायफल, पीपर, चित्रक, अनारदाना, भारंगी, कमलगट्टा, मिर्च, दोनों जीरा, कुटकी, अजवाइन, पीपरामूल, रेणुका, वायविडंग, वच, कायफल, पित्तपापड़ा विधारा, कुम्भी की जड़, कुलंजन इन्हें एक एक तोला लें, चूर्ण व कपड़छान कर इसमें २० वर्ष का पुराना गुड़ एक सेर मिलाकर पाक विधि से एक एक तो० प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसे उष्ण जल से उपयोग करने से पेट का भारीपन, कब्ज़ तथा उदर विकार दूर होते हैं।

(२) अजमोद, त्रिफला, विदारीकन्द, सोंठ, धनियाँ, मोचरस, मोथा, गजपीपल, लौंग, जायफल, पीपल, विजयामुलतानी, अनारदाना, दोनों जीरा, चित्रक, भारंगी, कमलगट्टा, कौंचबीज, मुलहठी, शिलाजतु, काकड़ासिंगी, केशर, नागकेशर, पुष्करमूल, शतावर, इन्हें ६-६ मासे लें, पुनः चूर्ण कर कपड़छान करें। पश्चात् ८४ सेर गोदुग्ध औटाएँ जब एक सेर शेष रहे एक सेर मिश्री की चासनी कर, उक्त चूर्ण मिला १ तो० प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसके सेवन से वीर्य वृद्धि होकर बल बढ़ता है। (अमृ० सा०)

(३) अजमोद १२ भाग, चित्रक ११ भाग, हड़ १० भाग, कूट ६ भाग, पीपर ८ भाग, मिर्च ७ भाग, सोंठ ६ भाग, जीरा ५ भाग, सेंधालवण ४ भाग, वायविडंग ३ भाग, वच २ भाग, हींग १ भाग। इन्हें चूर्ण कर चूर्ण से द्विगुण पुराना गुड़ मिलाकर ७॥ टं० प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसके सेवन से अनेक प्रकार के वातरोग, १४ प्रकार के हर्ष रोग, १८ प्रकार के गुल्म, २० प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं। तथा, यह हृद् रोग, शूल, कुष्ठ, वायु, गुल्म, गलग्रह, श्वास, संग्रहणी, पांडु, अग्निमान्द्य, अरुचि, इत्यादि को दूर करती है।

(४) अजमोद, मिर्च, पीपर, वायविडंग, देवदारु, चित्रक, शतावरी, सेंधालवण, पीपरामूल, इन्हें चार चार तोला लें। सोंठ ४० तोला, विधारा

४० तोला, हड़ २० तोला इन सब का बारीक चूर्ण बनाएँ और सर्व तुल्य पुराना गुड़ मिलाकर १ तोला प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसको उष्ण जल से सेवन करने से आमवात, विश्वाची, तूणी, प्रतितूणी, हृद्रोग, गृध्रसी, कटि, अस्थि, गुदा-स्फुरन, शोथ, सन्धिपीड़ा इत्यादि रोग दूर होते हैं। चक्र० द० उरुस्तम्भ० चि०। वङ्ग० से० सं०। भैष० र०।

अजमोदिका ajamodiká–सं० स्त्री० अज-मोदा (Ajamodá).

अजम्भः ajambhah–सं० पुं० (१) भेक (कृष्णाक्ष, मेंढक)। श० र०। Sea-bhaka. (२) वे दाँतका बच्चा। दन्त रहित। बिना दाँत का।

अजय ajaya–हिं० वि० [सं०] (Not victorious, unsuccessful, Subdued) जयरहित, असफल। –हिं० संज्ञा पुं० पराजय, हार।

अजयपाल ajaya-pála–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटा। (Croton tiglium, Linn.).

अजया ajayá सं० स्त्री० (Cannabis Indica, Linn.) विजया, भंग, भाँग। भाषा में इसको सिद्धि कहते हैं। रा० नि०। (२)–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अजा] बकरी (A she-goat).

अजर ajara—सं० त्रि०, हिं० वि० [सं०] (१) (Not Subject to old age or decay, ever young) जरारहित, जो बूढ़ा न हो। (२) [सं० अ=नहीं+जृ=पचना] जो न पचे, न हज़म हो।

अजरकम् ajarakam–सं० क्ली० अग्निमांद्य, अजीर्ण (Indigestion). सि० यो० श्वास० चि० वृन्दः। च० द० पांडु-चि० योगराज।

अज़रद azarad समुद्रफेन की एक क़िस्म है। (A kind of cuttle-fish).

अज़रन äazarana–फ़ारसी अरमनी।

अज़रफ़ूत äazarfúta]
अज़फ़ूत äazafúta] (A lizard).

अज़रब äazaraba–अ० ... गर) Boa constrictor, (

अजरम् ajaram–सं० क्ली० (Aurum). रा० नि० व० जरारहित ... (Devoid of old ...

अज़रह् äazarah–अ० पाषाण ...

अजरह äajarah–अ० ग्रन्थि (Node).

अजरा ajará–सं० स्त्री० (१) (A ... गृहगोधिका–सं० । छिपकली, टिकटिकि–बं०। (२) (Gmalina asiatica, ... धारक, विधारा। रा० नि० व० (Aloe indica, Roy.), कुमारी, घीकुआर। रा० नि० व० (Carpopogon pruriens), कपिकच्छु, कौंच–हिं०। आलाकुशी–बं०। भा० पू० १ भ०। ... वर्ण के संपुट होते हैं।)

अज़ारक azaráka–छोटे क़िस्म है। A sort of small ... of Prunus communis.

अज़ारार azarára–नौशादर, ... onii chloridum.)

अज़रासूल, अजोज़ äazarásul अ० (Tribulus terrestris), गोखरू, गोक्षुर (...)

अज़रासुलफ़स äazar... ... जो बसफ़ाइज के ... (Polypodium vulgare, ...

अजराशी a... सुवर्चला–हिं० ... Linn.)

अजरियून ajariyúna–अ० The (Sunflower ...

āajarúfa-अ० एक कीड़ा अथवा ...ी जिसके पाँव लम्बे होते हैं।

āajarúma-अ० जल का एक पक्षी है।

...jala-अ० काल, अन्त, अवस्था, मृत्यु ...० व०), आजाल (ब० व०)। डेथ (Death), मॉर्टिफ़िकेशन (Mortifica-...n)-इं०।

...ajala-अ० १—बछड़ा, गाय का बच्चा, ...ा-हिं०। गो-माल्ह्-फ़ा०। (A calf.) ...काली मिट्टी (Black clay).

...azala-अ० पृथक करना, भिन्न करना। ...। में पृथक वीर्यपात करना।

āazalama-अ० नील वृक्ष, नीली (Indigofera Tinctoria, Linn.)

...नम् ajalambanam-सं० क्ली० ...न स्रोतोऽञ्जन, सुर्मा (काला)। Anti-...ny। श० च०। देखो-अञ्जनम्।

āazalah-अ० अज़्लह्, मछली-उ०। पेशी, मांस, पेशी-हिं०। इसका बहुवचन ...ज़ाल है। मस्सल (Muscle) (ए० ...), मस्सल्ज़ (Muscles) (ब० व०) ...।

...अल्मइय्यह मुक़द्दमह् āazalah-...hamaāiyyah-muqaddamah-अ० ...ग्रीवा के कशेरुका पार्श्वों से प्रथम पर्शु का एक मांस पेशी है। स्केलेनस एण्टाइकस (Scalenus anticus)-इं०।

...अरीज़ह् बत्निय्यह āazalah-...rizah-batniyyah)-अ० अन्तः-...च्छदा पेशी-हिं०। ट्रान्सवर्सैलिस एब्डो-...मेन (Transversalis abdo-...mis)-इं०।

...आसिरह् āazalah-āásirah-अ० ...संकोचनी पेशी -हिं०। स्फ़िक्टर (Sphin-...cter), फ़्लेक्सर (Flexor)-इं०।

...आसिरतुल् इस्त āazalah-āásira-...tul-ista-अ० मलद्वार संकोचनी पेशी-हिं०। ...स्फ़िक्टर एनाई (Sphincter ani)-इं०।

अज़लह आसिरतुल् बौल āazalah-āásira-tul-boula-अ० मूत्रमार्ग सङ्कोचनी पेशी -हिं०। कम्प्रेसर युरेथ्री (Compressor Urethræ)-इं०।

अज़लह आसिरतुल् मह्बिल् āazalah-āásiratul-mahbil-अ० योनिसङ्कोचनी पेशी -हिं०। स्फ़िङ्क्टर वेजाइनी (Sphincter vaginæ)-इं०।

अज़लह इआनिय्यह मुस्तअ्रिज़ह āazalah-āijániyyah-mustaārizah-अ० सेवनी स्थल की चौड़ी पेशी जो पेडू के अवयवों को सहारा देती है। ट्रैंसवर्स्स पेरिनियाइ (Transversus perinæi) इं०।

अज़लह इल्वियह् कबीरह् āazalah-ilviyah-kabírah-अ० नैतम्बिका महती पेशी -हिं०। ग्लूटियस मैग्नस (Gluteus magnus)-इं०।

अज़लह् उस्उसियह् āazalah-āusāusiyah-अ० पुच्छिका-हिं०। कॉक्सीजीअस (Coccygeous)-इं०।

अज़लह् काबह् āazalah-kábah-अ० हस्त को औंधा या पट करने वाली पेशी। प्रोनेटर मस्सल (Pronator muscle)-इं०।

अज़लह् क़ाबिज़ह् āazalah-qábizah-अ० अ़ज़लह् उक़्लह्। सङ्कोचनी पेशी-हिं०। (Sphincter).

अज़लह् ज़ह्रिय्यह अरीज़ह āazalah-zahriyyah-āarízah-अ० पृष्ठच्छदा पेशी। वह पेशी जो कटि एवं कूल्हे से लेकर बाहु तक फैली हुई है। लैटिसिमस डॉर्साइ (Latissimus dorsi)-इं०।

अज़लह् ज़ाते सुलासियतुर्रऊस āazalah-záte-sulásiyaturraúsa-अ० त्रिशिरस्का पेशी-हिं०। ट्राइसेप्स (Triceps)-इं०।

अज़लह् ज़ातुर्रासैन āazalah-záturrásain-अ० द्विशिरस्का पेशी-हिं०। बाइसेप्स (Biceps)-इं०।

अज़लह् तह् तुल्कतफ़िय्यह् āazalah-tah-tul-katafiyyah-अ० अधः स्कंधिका पेशी-हिं०। सब्स्कैप्युलेरिस (Subscapularis)-इं०।

अज़लह् तह् तुलतर्कुवह् āazalah-tahtul-tarquvah-अ० अधः अक्षिका पेशी-हिं०। सबक्लेविअस (Subclaveus)-इं०।

अज़लह् दालियह् āazalah-dáliyah-अ० अंसाच्छादनी पेशी-हिं०। डेल्टॉइड (Deltoid)-इं०।

अज़लह् बातिहह् āazalah-bátihah-अ० करोत्तानिनी पेशी-हिं०। सुपाइनेटर (Supinator)-इं०।

अज़लह् बासितह् āazalah-básitah-अ० अज़लह् शादह्। प्रसारणी पेशी-हिं०। एक्सटेन्सर (Extensor)-इं०।

अज़लह् मुक़त्तिबह् āazalah-muqattibah-अ० संकोचनी (झुर्री डालने वाली) पेशी-हिं०। करूगेटर (Corrugator)-इं०।

अज़लह् मुक़र्रिबह् āazalah-muqarribah-अ० अन्तरनायनी, अन्तरवाहिनी-हिं०। एडक्टर (Adductor)-इं०।

अज़लह् मुबअ्इदह् āazalah-mubaâádah-अ० बहिर्नायनी पेशी-हिं०। एब्डक्टर (Abductor)-इं०।

अज़लह् मुबव्विक़ह् āazalah-mubavvqah-अ० मुखप्रसारणी, कपोलच्छदा पेशी जो मुख को फैलाती है। बक्सिनेटर (Buccinator)-इं०।

अज़लह् मुसन्ननहे कबीरह् āazalah-musannnahe-kabírah-अ० दंष्ट्राकार ऊर्ध्वपार्श्वीयबृहती, बृहत् दन्दानादार पेशी जो ऊपरी आठ पेशियों के सामने से आरम्भ होकर स्कंधास्थि के पिछले किनारे तक जाती है। सरेटस मैगनस (Serratus Magnus)-इं०।

अज़लह् राफ़िअतुल् इस्त āazalah-ráfiáatul-ista-अ० गुदोत्थापिका पेशी-हिं०। लीवेटर एनाइ (Levator ani)-इं०।

अज़लह् राफ़िअतुल् जफ़्न āazalah-ráfiáatul-jafna-अ० ऊर्ध्वपलक पेशी। ... पैल्पब्रैलिस (Palpebralis)...

अज़लह् सद्रिय्यह् कबीरह् āazalah-sadriyyah-kabírah-अ० बृहती पेशी-हिं०। पेक्टोरैलिस मेजर (Pectoralis major)-इं०।

अज़लह् सद्रिय्यह् सग़ीरह् āazalah-sadriyyah-saghírah-अ० ... लघ्वी पेशी-हिं०। पेक्टो... (Pectoralis Minor)-इं०।

अज़लह् सुद्ग़िय्यह् āazalah-sudghiyyah-अ० शंखिकी पेशी-हिं०। (Temporalis)-इं०।

अज़लह् सुल्बिय्यह् कबीरह् āazalah-sulabiyyah-kabírah-अ० ...स्यनी बृहती पेशी-हिं०। सोआस (Psoas Magnus)-इं०।

अज़लह् हर्क़फ़िय्यह् āazalah-harqafiyyah-अ० श्रोणि ... (Iliacus)-इं०।

अजलोमा,-मी ajalomá,-mí-सं० ... संज्ञा स्त्री० (१) कौंच, केवांच ... शिम्बी, आत्मगुप्ता। मासाकुशी-बं०। (Corpopogon pruriens). (२) महौषधि विशेष। देखो-...

अज़ल्ला azalla-अ० (ए० व०) ... व०), अंगुली का भीतरी अर्थात् ... ओर वाला भाग।

अजवला ajavalá-मं० वनतुलसी-सं०, तुलसी-बं०, द०। बनजई-हिं०। (Shrubby Basil)-इं०। (Ocimum Gratissimum, Linn.) इं०।

अजवल्ला ajávallá-मं० } रामतुलसी (Ocimum Gratissimum, Linn.) फा० इं०।
आजवल्ल ájavalla-सं० }

अजवल्ली ajavallí-सं० स्त्री० (Helicteres isora, Linn.) मेढ़ासिंगी, ... शिंई-बं०।

...iazavá-तु० (Aloes) एलुवा, कुमारी-
...रद्विया, मुसब्बर ।

...न ajaváina-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०]
...निका, अजवायन, (अ) जवान,
...) जमान, जवाइन-हिं० । अजवान-द० ।
...स्कृत पर्याय—अजमोदा (-दिकः), ब्रह्मदर्भा,
... यमानिका, भूतिकः, यवनिका, यवनी,
...नी, दीप्यः, दीप्या, दीपकः, दीप्यका, दीपनी,
...नीयः, यवजः, यवसाह्वः, यवसाह्वया, यवा-
...ः, उग्रगन्धा, वातारिः, भूकदम्बकः, शूलहन्त्री,
...ा, तीव्रगन्धा, कारवी, भूमिकः, अग्नि
...धा, अग्निवर्धनी, यवान, हृद्या, ब्रह्मदर्भाह्वय,
...ाह्व । अजोवान, जोवान, योवान, यमानी,
...जवाइन, अजवान-ब० । केरम कॉप्टिकम्
...Carum copticum, *Benth.*), लिग्युस्टि-
...स्म अजवान (Ligustiasm-ajowan,
...*ab.*), केरम (टाइकोटिस) अजोवान Car-
...n (Ptychotis) Ajowan, *D.*
... (Fruit of--Ajowan-fruit.),
...मी कॉप्टिकम (Ammi copticum)-लें०
...ग्ज क्युमिन King's cumin, लोवेज
...ovaga, बिशप्सवीड Bishop's weed,
...ओमम् Omum (seeds)-इं० । अम्मी
...ी इण्डी Ammi de l'Inde-फ्रां० ।
...इण्डिस्कीज फाल्टीनोर Indisches falte-
...fiohr-जर० । नानख़ाह्, कमूने- मलूकी,
...ज़िन्यान-अ०, फ़ा० । ओमम, अमन-ता० । ओ-
...मु (-मी), वामसु, वामु-तै० । अयमोदकम, ओमम
...-मल० । वोम, ओमु, ओव्दु, ओम,उड्-कना० ।
...यवसाह्वा, वोवाअजमा,उवा-मह० । ओवी अजवान,
...अजमो, जवाइन-गु० । अस्समोदगुड्, अस्समो-
...दगम, ओमम-सिं० । समहूम-बं० । ओमा--तु० ।
...अम्मी, वासलीक़न कमूनी (मलुकी)-यु० ।
...वोहरा-कच्छ० । ओव्दु, ओम्-करना० । ओम
...-माला० । अजवाइन--पं० । आत्रिन्द--काश० ।
...तेवा-ब्रम्ह० । वोयो--कों० । लाविश्‌ लामिसी
...-मला० ।

अम्बेलिफेरी अर्थात् छत्री वर्ग—
(*N. O. Umbelliferæ*)

उत्पत्तिस्थान—एक पौधा जो सारे भारतवर्ष में विशेषकर बंगाल में लगाया जाता है । यह पौधा अफ़रीका, दकन तथा पंजाब, मिश्र और ईरान (फ़ारस), अफगानिस्तान आदि देशों में भी होता है ।

नाम विवरण तथा इतिहास—यूनानी हकीम डायोसकोराइडीज़ (Dioscorides) ने अम्मी (अमीलूस) नामक जिस अफ़रीकीय ओषधि का वर्णन किया है वास्तव में वह यही दवा है । अस्तु, हकीम जालीनूस अम्मी और कमूने मलूकी या किंग्ज़ क्युमिन (King's cumin) को एक ही दवा मानते हैं । फ़ारस में भी एक इसी प्रकार का बीज ज़िन्यान तथा नान्ख़ाह के नाम से बहुत प्राचीन काल से प्रयोग में आता था । नान्ख़ाह (नान=रोटी+ख़्वाह = चाहने वाला) का अर्थ "रोटी का चाहने वाला" है । चूँकि यह क्षुधावर्द्धक है इसलिए इसका उक्त नाम पड़ा । प्राचीन काल में ईरानी लोग ज़िन्यान को, वास्तव में जो नान्ख़ाह ही था, तनूरी रोटियों पर लगाया करते थे । इब्न-सीना ने नान्ख़ाह नामसे इसका वर्णन किया है । साइनो अम्मी और किंग्ज़ क्युमिन (कमूने मलूकी) को एक ख्याल करते हैं । हाजी ज़ैनुल्‌अत्तार डायोसकोराइडीस द्वारा वर्णित अम्मी को नान्ख़ाह बतलाते हैं तथा उसके औषधीय गुणधर्म के सम्बन्ध में उन्हीं चिकित्सकों की सम्मतियों को उद्धृत करते हैं । वे और भी बतलाते हैं कि उक्त ओषधि शोधक रूप से प्रसिद्ध है और दुष्ट व्रणों को अच्छा करने तथा उससे दुर्गन्धि युक्त स्रावों को रोकने के लिए उपयोग में आती है ।

तुह फ़तुल् मोमनीन के लेखक तथा अन्य इसलामी चिकित्सक डायोसकोराइडीज़ के अम्मी या बैसिलिकॉन क्युमिनॉन (Basilikon kuminon) तथा फारसीयों के नान्ख़ाह व ज़िन्यान को अजवायन ही मानते और इसका अरबी नाम कमूनुल्‌मलूकी (King's cumin) बतलाते हैं । पश्चात् कालीन यूरूपीय लेखकों का यह टिकोटिस अजोवान (Ptychotis ajowan) है ।

प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथकारों ने इसी प्रकार के एक ओषधि का यवानी तथा यवानिका नाम से वर्णन किया है, जिससे इसका विदेशी होना साफ सिद्ध होता है। उनके वर्णनानुसार यह अजमोदा के भेदों में से एक है।

वानस्पतिक विवरण—अजवायन क्षुप जाति की वनस्पति के बीज हैं। ये क्षुप लगभग चार फीट ऊँचे होते हैं। पत्ते छोटे छोटे डालों के पत्तों के समान एवं कटीले होते हैं और इनकी डालियों पर छत्ते से आते हैं जिनपर सफेद फूल लगते हैं। जब ये छत्ते पक जाते हैं तब उनमें अजवाइन उत्पन्न होती है। उनको कूटने से छोटे छोटे दाने से निकलते हैं, इन्हीं को अजवाइन कहते हैं। अजवायन (फल) रूपाकृति में अजमोदा समान तथा धूमर वर्ण की होती है, जिसका ऊपरी धरातल अर्बुदाकार पत्र उभार युक्त होता है। इनकी मध्यस्थ नालियाँ श्याम धूसरित होती हैं, जिनमें एक तैल नलिका होती है। संधिस्थल में दो तैल नलिकाएँ होती हैं। गंध हाशा अर्थात् जंगली पुदीना के सदृश होती है।

भारतीय कृषक प्रायः धनिए के साथ इसे खेतों में बोते हैं। बोने का समय अक्टूबर से नवम्बर तक (कातिक, अगहन) और काटने का समय फर्वरी है। इसके लिए खेत खाददार होना चाहिए।

नोट—आयुर्वेद में यमानी, वनयमानी, पारसीक तथा खोरासानी आदि नामों से अजवायन को चार प्रकार का बतलाया गया है। इनमें से प्रथम दो में कोई भेद नहीं (दूसरी केवल जंगली है) और अंतिम की दो अजवायन खुरासानी ही के पर्याय हैं; किन्तु यह अजवायन से सर्वथा भिन्न वर्ग की ओषधियाँ हैं। इनका वर्णन यथास्थान किया जाएगा।

प्रयोगांश—फल, पत्री।

रासायनिक संगठन—स्टेनहाउस (१८५२) महाशय के मतानुसार अजवाइन के फल में एक प्रकार का ग्राह्य सुगंधियुक्त उड़नशील तैल (५–६ प्रतिशत) होता है जिसका विशिष्ट गुरुत्व ०·८८६ है। परिश्रुत जल के ऊपरी धरातल पर एक प्रकार का वत् द्रव्य (Stearoptin) होता है। इसे अजवायन का [illegible] कहते हैं। स्टॉक (stock) [illegible] प्रथम इसका वर्णन किया [illegible] (Stenhouse) और हेन्स (H[illegible]) ने परीक्षा करके इसकी थाइमोल (T[illegible]) से, जो जङ्गली पुदीना (Thym[illegible] [illegible]garis) से प्राप्त होता है, समानता देखी—थाइमोल। इसमें क्युमीन (C[illegible]) टर्पीन (Terpene) तथा थाइ[illegible]mone) भी पाए जाते हैं।

औषध-निर्माण—अजवायन गुटिका, चूर्ण, क्वाथ, अर्क (अमृत का पानी) [illegible]

अजवायन के गुणधर्म व [illegible]

आयुर्वेदीय मत के अनुसार लेखन (देहस्थ धातु तथा मलों को [illegible] वाली), पाचक, रुचिकारक, तीक्ष्ण, [illegible] परी, हलकी, अग्नि को दीपन [illegible] कड़वी और पित्तकारक है तथा वीर्य, कफ, उदर, आनाह, गुल्म, प्लीहा [illegible] नष्ट करने वाली है। (भा० पू० [illegible])

इसके शाक के गुण—अजवायन [illegible] आग्नेय, रुचिकारक, वात-कफ-नाशक, कड़वा, गरम, पित्तकारक, हलका [illegible] कारक है। (भा० पू० [illegible])

अजवायन चरपरी, कड़वी और [illegible] वात की बवासीर, कफ, शूल, [illegible] और वमन को दूर करने वाली तथा [illegible] है। (रा० नि० [illegible])

अजवायन कांद और यल को [illegible] है, हृदय को हितकारक, पित्तवर्द्धक [illegible] दद्रु के हैं।

अजवायन चरपरी, कड़वी, रु[illegible] अग्निप्रदीपक, पाचक, पित्तजनक, [illegible] हृदय को हितकारी, सारक और [illegible] तथा वात की बवासीर, कफ, शू[illegible] वमन, कृमि, शुक्रदोष, उदररोग, [illegible]

प्लीहा, गुल्म, द्वन्द्वज रोग और आमवात को (नष्ट) करती है। (रा० नि०)

अजवान-अजवायन का अर्क-हिं० द०। ... Ajowan, एका टाइकोटिस Agua ... chotis-ले०। ओमम् वाटर Omum ... ter-इं०। ओमसि-नीर-ता०। ओमद्राव-...नै०।

अजवायन के अर्क के गुण—अजवायन का अर्क पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्रनाशक ... शूलनाशक है।

यूनानी मतानुसार अजवायनके गुण धर्म प्रयोग—स्वरूप—धनीमूं के समान काला-... लिए भूरी। स्वाद—कडुवाम लिए तीखी ... तीक्ष्ण गंधयुक्त है। प्रकृति—३ कक्षा में ... और रूक्ष है। हानिकर्ता—उष्ण प्रकृति ... शिरः पीडाप्रद और स्तनों के दुग्ध की ... कर्ता। दर्पनाशक—उन्नाव, धनियाँ, ... स्निग्ध व शीतल द्रव्य। प्रतिनिधि—... और काला जीरा। मात्रा—६ मा० से ... तोला तक।

कर्म, प्रयोग—अजवायन विशेष कर ... अवयवों की वेदना को शमन करने वाली ... के लय करने वाली तथा कामोद्दीपक है। ... आर्द्रता शोषक, कोष्ट मृदुकारी, वायु ... कर्त्ता तथा अगद शक्ति से संयुक्त होती है, ... अजवायन का शर्बत लकवा, कम्पवायु तथा ... को लाभदायक है। इसके क्वाथ द्वारा ... धोने से नेत्र स्वच्छ होते हैं। इसे कान में ... ने से बधिरता को लाभ होता है, यह वक्षः- ... वेदना तथा रतूबतों को नष्ट करने के लिए ... है और रोधउद्घाटक, कोष्ट मृदुकारक, ... एवं प्लीहा की कठोरता को लयकर्ता, ... की, वमन, मतली, दुर्गन्धियुक्त डकार, बद-... मी, उदर में शब्द होना, मूत्रावरोध तथा ... री प्रभृति के लिए गुणदायक है। कामोद्दी-... है तथा यकृत, आमाशय, वृक्क तथा वस्ति ... उष्णता प्रदान करती एवं शक्ति देती है। यह ..., आर्तव, दुग्ध तथा स्वेद की प्रवर्तक है। जलोदर के लिए गुणदायक है और हर प्रकार के केचुओं को निकालती है।

लेमू (नीबू) के रसमें यदि इसे सातवार डुबोकर शुष्क कर लें तो यह नपुन्सकता के लिए अत्यन्त गुणदायक हो। इसका शर्बत श्लैष्मिक ज्वरों में विशेषकर चातुर्थिक ज्वर के लिए अत्यन्त लाभदायक है तथा ज़हरों को नष्ट करने में अगद है। अण्डशोथ के लिये इसका लेप उत्तम है। शहद के साथ मिलाकर उपयोग में लाने से यह सम्पूर्ण आन्त्रयिक वेदना तथा शोथ के लिए लाभदायक है। म० अ०। (निर्विषैल, परन्तु अधिक मात्रा में विषैला है।)

एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका तथा अजवाइन।

यमानी तैल—अजोवान ओलियम् (Ajowan Oleum)-ले०। अजोवान ऑइल (Ajowan oil), टिकोटिस ऑइल (Ptychotis oil)-इं०। रोगने नान्ख़ाह-फ़ा०। अजवाय (इ) न का तैल-हिं०, उ०। यवानीर तैल-बं०।

ऑफिशल (Official.)

लक्षण—यह एक वर्णरहित तथा उड़नशील तैल है जो अजवायन के फल द्वारा परिश्रुत करके प्रस्तुत किया जाता है। इसका स्वाद तथा गंध अजवायन के समान होती है। इसका आपेक्षिक गुरुत्व '६१० से '६३० तक होती है। ३२० फारनहाइट पर इसे शीतल करने से इसमें से ४० प्रतिशत थाइमोल पाया जाता है।

नोट—थाइमोल को भारतवर्ष में अजवायन का फूल और पञ्जाब में अजवायन का सत कहते हैं और मध्य भारत के किसी किसी स्थान में इसको बनाते हैं।

पहाड़ी पुदीना जिसे अरबी में हाशा और सातर तथा यूनानी में थाइमस (Thymus) कहते हैं और प्राचीन अरबों ने जिसका उच्चारण सोमस किया है। वस्तुतः उसके जौहर या सत को अंगरेजी में थाइमोल (Thymol) कहते हैं। परन्तु उपरोक्त वर्णनानुसार यह जौहर

अजवायन आदि से भी प्राप्त होता है। ट्रेमो-थाइमोल।

प्रभाव—वायुनिस्सारक (Carminative) तथा कृमिघ्न (Anthelmintic).

मात्रा—½ से ३ मिनिम (३ से १८ मि० ग्रा०).

यमानी तैल के प्रभाव तथा प्रयोग—थाइमोल तथा अन्य आक्रिजल तैलों के सदृश ३ बुंद की मात्रा में यह प्रबल वायुनिस्सारक है। थाइमोल के समान द्वादशांगुलांत्रकृमि (द्वादशांगुल नामक अंत्रमें पाए जाने वाले) केंचुओं पर यह सशक्त कृमिघ्न प्रभाव करता है। परन्तु उक्त प्रभाव हेतु एक वस्तुतः इस से अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है जो थाइमोल के तरल रूप में आत्मीकृत होजाने के कारण सम्भवतः विषैला होगा। आभ्यन्तरिक रूप से अजवायन का अर्क उदराध्मान (Flatulence) तथा उदरशूल में लाभदायक है।

अजवायन के गुणधर्म के सम्बन्ध में डॉक्टरों एवं अन्य मत—अजवायन के बीज तथा उड़नशील तैल उदराध्मान, उदरशूल, अतिसार, विशूचिका, योषापस्मार, और आंत्राक्षेप में लाभदायक हैं। इससे उष्मा एवं आह्लाद की वृद्धि होती है और आंत्रविकार के साथ होनेवाली उदासीनता तथा निर्बलता दूर होती है। उक्त तल को १ से ३ बुंद की मात्रा में किंचित शर्करा पर डालकर अथवा गोंद के लुआब और जलके साथ इसका इमलशन बनाकर उपयोग में लाना चाहिए। वात व आमवात सम्बन्धी वेदनाओं को दूर करने के लिए इसका वाह्य प्रयोग होता है। विशूचिका की प्रथमावस्था में वमन व रेचन को रोकने तथा शरीर को उत्तेजित करने के लिए, यमानी तैल एवं इसके बीजों द्वारा परिश्रुत जल (अजवान के अर्क) को १ से २ आउंस (२॥ तो० से ५ तो० तक) की मात्रा में उपयोग करना गुणदायक होता है।

अतिसार में एक आउंस (२॥ तो०) अजवायन का अर्क तथा उतने ही चूने के पानी में ४ बुंद अहिफेनासव (Tincture of Opium) मिला कर व्यवहार तथा २॥ तो० अर्क अजवायन ... चिरायते के शीत कषाय में १ ड्रेन ... सोडियम्धेस [सल्फेट ऑफ़ सायर्न] दिन में २ बार व्यवहार करना ... श्रमदायक औषध है।

इसे अन्य सुगन्धित औषधियों ... सिन्टस, पेपरमिन्ट तथा गॉवर्थि... साथ मिलाने से यह लाभजनक ... औषध होजाती है। यमानी तैल ... का फल इन दोनों को मात्रा ... अम्लपित्त, अजीर्ण तथा उदराध्मान ... होता है।

अजवायन का बीज, कालीमिर्च, ... सोंठ, दाभ और इलायची १ ड्राम ... चूर्ण कर १ ड्राम की मात्रा में ... में दो बार व्यवहार करने के लिए ... वायुनिस्सारक दवा है।

चक्रदत्त—अजवायन, ... धानक लवण, यवक्षार, हींग तथा हरी ... इनको ले चूर्ण करें। मात्रा—४ रत्ती से ... के साथ। गुण—अंतड़ियों की ... दूर करता है।

अजवायन के बीजों को मुँह ... निगल जायें और ऊपर से उष्ण जल ... इससे आमाशय शूल, कास तथा ... होते हैं।

अजवायन का तेल प्रस्तुत करने के लिए ... सेर कुचली हुई अजवायन में ... डाल के मद्य संधान की विधि से ... काढ़ना चाहिए। (मि० लिसडेल)

पैत्तिक वमन एवं शीत लगना प्रभृति ... वायन के बीज तथा गुड़ मिलाकर भक्षण ... जाता है।

जुकाम, आधाशीशी तथा उन्माद ... इसके बीज के चूर्ण को बारीक कपड़े में ... थोड़ी थोड़ी देर में सुँघाना चाहिए ... चूर्ण का सिगरेट बनाकर पिलाना चाहिए ...

उदरशूल निवारण हेतु इसके बीजों का ...

तरिय) या प्रस्तर उपयोग में आता है। इन चीजों को गरम कर दशा में सीने को तथा मूर्छा, मूर्छा व बेहोशी में हाथ पाँव को सेक करते हैं।

अजवायन के बीज, पिप्पली, अडूसा, पत्र और ... के बीज इनका क्वाथ कर आधे में ... मात्रा में अवस्थानुसार रूप से वर्तते हैं।

श्लेष्मा के शुष्क हो जाने या चिपचिपा हो ... के कारण जब कफस्राव कठिन हो जाता है, उस समय इसके बीज के चूर्ण में ... मिलाकर खिलाने से लाभ होता है।

यवनजानी भी उत्तम है और अनेक कृमि... घ योगों का एक मुख्य अवयव है।

शिथिल-... में इसका बीज संकोचक औषधियों के साथ उपयोग में आता है। औषधों विशेषकर एरण्ड तैल के अप्रिय स्वाद छिपाने के लिए एवं उनकी वामक प्रकृति व उससे युक्त वेदना को रोकने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

आध्यात्मिक मादकता तथा पागलपन में यह लाभदायक है।

अपने चरपरे तथापि मनोहर स्वाद और ... उत्ताप विवर्द्धन के कारण मादक व पान की इच्छा से व्यथित व्यक्तियों को इसे व्यवहार में लाने की आधुनिक काल में बहुत सिफारिश की जाती है। यद्यपि इसमें नशा नहीं पैदा होती, तो भी निर्बलता दूर करने के लिए सामान्य उत्तेजक औषधों की एक उत्तम ...निधि है-, युड)। आपका कथन है कि यह ... से बुद्धिमान व्यक्तियों को मद्यपान के अभाव की किरकिरता से मुक्ति दिलाने के लिए ... कारण सिद्ध हुई है।

अजवायन (बीज लगने से प्रथम) के पौधे के कोमल पत्ते कृमिघ्न प्रभाव हेतु व्यवहार में आते हैं। कृमि में इसके पत्र का स्वरस दिया जाता है।

विषैले कीटाणुओं के काटने पर दंश स्थान पर इसके पत्तों को कुचल कर लगाते हैं।

अजवायन के पत्ते का स्वरस, इस्पन्द (हेना) और मालकांगनी इनको समान भाग लेकर इससे तिगुना मीठा तेल मिलाकर पकाएँ। तैयार होने पर उतार लें और नासिका व क... रोगों में इसका व्यवहार करें। (इलाजु० गु०)

अजवाइनकाफूल ajaváia-ká-phúla }
अजवाइन-का-सत ajaváina-ká-sata }
हि० संज्ञा पुं० थाइमोल (Flowers of Ajowan Camphor)। देखो-थाइमाल व अजवाइन। फा० इं०। इं० मे० मे०। स० फा० इं०।

अजवाइन-के-बू-का-पत्ता ajawáina-ke-bú-ká-pattá-द० सोना की पत्तियाँ।

अजवाइ (य) न खुरासानी ajaváí (ya) na-khurásání-हि० संज्ञा स्त्री० [सं० यवानिका] खुरासानी अजवा (मा) यन। खुरासानी अजवान-द०। मदकारिणी, तुरुष्का, तिग्रा, यवानी, यावनी, मादक, मदकारक, शैत्य, श्याम, कुबेराख्य, पारसीक यवा (मा) नी, खोरासानी यमानी-सं०। खुरासानी योयान, खुरासानी अजोवान-बं०। हाइयो साइमस नाइग्रम् Hyoscyamus Nigrum, *Linn.* (Seeds of-), हाइयो साइमस (Hyoscyamus), हा० रेटिक्युलेरिस (H. Reticularis), हा० रेटिक्युलेटस (H. Reticulatus, *Linn.*)-ले०। हेन्बेन (सीड्स) Henbane (Seeds)-इं०। जस्क्वीएमि-वायर Jusquiame-noire-फ्रां०। अफियूम Afiyum-जर०। खुरासानि-योमम् -ना०। खुरासानि-यामम, खुरिशिवानम्। खुरासानी-यमनी, खुरसान वानो-ते०, तै०। खुरासानि बोमा, खुरासानि-ग्रादकि-कना०। किरमाणि ओवा, खोरासाणी-नि-ओवा, सुरवंदंचे-फूल-महा०। खुरासानि-आजमो, खुरासानि-अजवान, खुरमाणा-अजमा, करमाणी-छहारी-गु०। बजरभंग, इस्किराम-काश०। कटफिट-नू०। ब ज़ुलबञ्ज, बञ्ज, सीकरान, ... बंज, बंग, बंगदीवाना-फा०। अक़्मालम-निरि०। वा ... ल-तु०। अफ़ीकून,

अक्रियून-यु०। अफ़्लफ़ील, इस्कीराम अन्य०।
कीचंक-देहमी०।

सोलेनेसोई अर्थात् धुत्तू (त्) र या धत्तूर वर्ग

(N. O. Solanaceæ.)

उत्पत्ति-स्थान—उत्तरी भारतवर्ष, (काश्मीर, गढ़वाल) पश्चिमी हिमालय के शीतोष्ण प्रदेश। समस्त हिमवती पर्वत-श्रेणियों में ८००० से ११००० फ़ीट की ऊंचाई पर यह वन की तरह उपजता है। बलूचिस्तान, (ईरान) खुरासान, मिश्र, एशिया कूचक और साइबेरिया के अतिरिक्त सहारनपुर के सरकारी वनस्पत्योद्यान में भी बोया जाता है। यूरुप, (पुर्तगाल और यूनान से नार्वे और फिनलैण्ड तक) अमेरिका आदि।

नाम विवरण—इसका लेटिन नाम हायोसाइमस यूनानी हयॉस कुआमोस (Huoskuamos) से लातानीकृत शब्द है जो एक यौगिक है (हुयॉस=शूकर+कुआमॉस=बाकला, लोबिया)। अस्तु उक्त शब्द का अर्थ शूकर लोबिया हुआ। चूंकि इसके पत्ते लोबिया पत्रके सदृश होते हैं एवं इसे सूअर बहुत रुचिपूर्वक खाता है इसलिए यूनानियों ने इसका यह नाम रक्खा।

नोट—मख़ज़नुल्अद्वियः तथा मुहीतआज़म में जो इसका यूनानी नाम अक़्रीक़ून लिखा है वह शुद्ध अक़्यून है। कोई-कोई प्राचीन इस्लामी हकीम इसको यूनानियों का अफ़्यून ख़्याल करते रहें। अस्तु, इसीके वर्णन में लिखा है कि कभी इसके पत्तों तथा शाखाओं का उसारह, अफ़ीम की प्रतिनिधि स्वरूप उपयोग में आता है। अफ़्यून यूनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ निद्राजनक है।

इतिहास—यद्यपि उक्त बूटी हिमालय पर्वत तथा उत्तरी भारतवर्ष व इसके अन्य भागों में भी अधिकता से उत्पन्न होती है, तथापि सम्भवतः प्राचीन आयुर्वेदिक चिकित्सकों को इसका ज्ञान न था। पारसीक तथा खोरासानी यमानी आदि नाम इसका विदेशी होना सिद्ध करते हैं।

आज ही नहीं प्राचीन काल से ही भारत में व्यापारिक आयात निर्यात हो रही ... उत्तम चीजों का मंगवाना और विदेश में भेजना भारतीय परम्परा ... हैं। इसी प्रकार बहुत सी ओषधियां हमारे पूर्वाचार्यों ने रोगियों पर ... उनको मँगाते थे। खुरासानी अजवायन ओषधियों में से एक है।

प्राचीन यूनानी चिकित्सकों ने ... बज़ (पारसीक यमानी) का वर्णन ... परन्तु उनमें श्वेत प्रकार को ही ... य ग में लाते थे। डायोस्को... (Dioscorides) ने भी इसका ... है, एवं वह इसीके उपयोग करते थे ... करते हैं। इस सम्बन्ध में इस्लामी ... भी अबतक उन्हीं के अनुयायी हैं।

लेटिन लेखक हायोसाइमस को ... (Altercum) तथा हर्बा ... (Herba Symphonisca) ... साइनी के कथनानुसार अल्तर्कम ... सम्भवतः यह अतियोक्त का अपभ्रंश है ... में फ़ारसी शब्द है और जिसका अर्थ ... मुसलमान लेखक इसे बज़ कहते हैं जो ... बंग का भारतीय अपभ्रंश है। इसके ... यह यूनानियों का अक्रियून, सिरियन ... अस्मालूम, मूर लोगों को कतफ़ीत या ... है। वे पुनः कहते हैं कि देहली ... कीचक कहते हैं।

टिप्पणी—बज़ुल् बज़ अबैज़ (... सफेद) जो खुरासान से भारतवर्ष ... आता है, भारतीय चिकित्सकों ने ... समान समझ उसका नाम खुरासानी या ... यमानी रख दिया जो अब उर्दू भाषा ... में अजवायन खुरासानी के नाम से प्र... परन्तु इस बात को भली भाँति स्मरण ... चाहिए कि बज़ुल् बज़ (अजवायन खुरा...) और नान्खाह (अजवायन) गुण धर्म ... से सर्वथा दो भिन्न ओषधियाँ हैं। अत... सीक यमानी को कदापि यमानी (अज...) का भेद न ख़्याल करना चाहिए।

वानस्पतिक विवरण—खुरासानी या किर-
ा अजवायन वास्तव में अजवायन के वर्ग की
धि नहीं। अपितु, यह बादज्ञान अर्थात्
लेनेसीई वर्ग की औषधि है जिसमें बिलाडोना
धतूर आदि विषैली दवाएँ सम्मिलित हैं।
का क्षुप अजवायनके क्षुपसे ऊँचाई मे कुछ बड़ा
ता है। पत्ते कटे हुए कङ्गूरेदार करीब करीब
लहादनी के समान होते है। पुष्प श्वेत, अनार
 कलियों के समान, परन्तु पङ्खुड़ियों के कङ्गूरे व
य व मूल भाग सुर्खी-मायल होते हैं।
नके पकने पर मूल भाग में छत्ता सा लगता है
समें अजवायन खुरासानी के बीज लगते हैं;
अजवायन के बीज से दूने बड़े एवं वृक्काकार
जिनका पार्श्व भाग दबा हुआ होता है।)
या धूसर वर्ण के होते हैं। बाह्य त्वचा भली
कार चिपकी हुई होती है। अल्ब्युमीन तैलीय
ोता है। भ्रूण गर्भ इस प्रकार (9) वक्र
ोता है, जिसका पुच्छ अङ्कुर बनता है।

स्वाद—तैलीय, तिक्त एवं चरपरा होता है।

भेद—मख़ज़नके लेखक मीर-मुहम्मदहुसैन
ीज़ के नाम से उक्त औषधि का वर्णन करते हैं।
 इसके तीन भेद यथा श्वेत, श्याम तथा रक्त का
ज़िक्र करते हैं (किसी ने पीत पुष्पवाले का
वर्णन किया है) और इनमें श्वेत प्रकारको उत्तम
ख़याल करते हैं। प्राचीन ग्रन्थों में यही अर्थात्
श्वेत प्रकार (Hyoscyamus Albus, *Linn.*) मुस्तैमल थी। मुफ़र्दात नासरी में
इसके बीजको बज़ुल् बञ्ज अबैज़ (श्वेत पारसीक
यमानी बीज) लिखा है। प्लाइनी (Pliny)
ने उक्त पौधे अर्थात् हा० रेटिक्युलेटस के चार
भेदों का वर्णन किया है। उनमें से प्रथम
(H. reticulatus) काले बीज वाली
जिसमें नीले रंग के पुष्प आते हैं, तथा जिसका
तना काँटेदार होता है और जो गलेशिया से
उत्पन्न होती है; द्वितीय या साधारण प्रकार
हायोसाइमस नाइगर (श्यामपारसीक यमानी),
तृतीय भेद जिसका बीज मूली के सदृश होता है
अर्थात् हायोसाइमस ऑरियस (H. aureus, *Linn.*) और चतुर्थ हा० एल्बस (H. albus)
अर्थात् श्वेत बीजयुक्त है जो समस्त चिकित्सकों
द्वारा स्वीकृत है। उनके कथनानुसार इन सभी में
चक्कर तथा पागलपन पैदा करने का गुण है।
पारसीक यमानी बीज जो खोरासान से लाया
जाता है वह उक्त चारों में से प्रथम का ही बीज
है। यह क्वेटा में बहुतायत से होती है। इसके
अतिरिक्त इसका एक और भेद है जिसे कोही
भंग (H. muticus, *Linn.*, or H. Insanus, *Stocks.*) कहते है। यह अत्य-
न्त विषैला होता है। देखो—कोही भंग।

प्रयोगांश—वैद्यगण बहुधा इसके बीजों को
व्यवहार में लाते हैं और तिब्बी हकीम भी प्रायः
उन्हीं का अनुकरण करते हैं। प्राचीन यूनानी
लोग तो इसके पत्तों, शाखों तथा मूल व बीज
अर्थात् पञ्चाङ्ग को व्यवहार में लाते थे। परन्तु,
मध्यकालीन यूरुप में इसके बीज, मूल अधिक
उपयोग में आते रहे। आजकल यूरुप व अमे-
रिका में अधिकतर इसके पत्ते और जड़ न्यूनतर
व्यवहृत हैं। प्राचीन यूनानी व इस्लामी चिकि-
त्सक तो श्वेत पुष्पीय बञ्ज को औषध रूप से
उपयोग करना उत्तम ख्याल करते थे। यद्यपि
बञ्ज स्याह के उसारह् का भी उन्होंने ज़िकर
किया है, पर अधुना यूरुप में पारसीक यमानी
श्याम औषध रूप से व्यवहृत है। अस्तु, डाक्टर
लोग इसकी (शुष्क या नवीन) पत्तियों से
तरह तरह के योग निर्माण करते हैं। वे पत्तियाँ
को मय शाखा व फूल सावधानी से संग्रह करते
है। यह उस समय किया जाता है जब खुरा-
सानी अजवायन का पेड़ फूलने फलने लगता है
तथा अपनी पाकावस्था में दिखाई देने लगता है।

रासायनिक संगठन—हेनबेन (पारसीक
यवानी) में एक हायोसायमीन (Hyoscyamine) नामक सत्व जिसकी रासायनिक रचना
धतूरीन (एट्रोपीन) के समान होती है, पाया
जाता है। यह विभिन्न प्रकार के हायोसायमस
(बञ्ज) के बीज तथा पत्र स्वरस में हायोसीन
या विकृताकार हायोस्मायमीन के साथ पाया जाता
है। इनके सूचिकाकार या त्रिपार्श्वाकार रवे
होते हैं और यह धतूरीन की अपेक्षा जल एवं

डायलूट अलकुहॉल में अधिकतर लयशील होता है। यह धतूरीनके समान नेत्र कनीनिका विस्तारक है।

हायोसायमीन अनेक सोलेनेसी पौधों यथा-धतूर, बिलाडोना और सम्भवतः इसके कुछ अन्य भेदों में धतूरीन के साथ मिला हुआ पाया जाता है। हायोसायमीन उन्हीं द्रव्यों में विश्लेषित किया जा सकता है जिसमें एट्रोपीन वियोजित होता है, यथा-ट्रॉपीन और ट्रॉपिक एसिड।

हायोसीन (स्कोपोलेमीन) या विकृताकार हायोसायमीन-अपने कनीनिका प्रसारक तथा अन्य गुणों में निकट की समानता रखते हैं। जल में उबालने से यह ट्रॉपिक एसिड तथा स्युडो-ट्रोपीन में वियोजित हो जाते हैं। (थॅर्प्स डि० ऑफ केमिस्ट्री, द्वि० संस्क० ११, ७४४)।

उनके अतिरिक्त पत्र में हायोस्क्रीपीन (Hyoscripin), कोलीन (cholin), फैटी ऑइल, लुआब, अल्ब्युमीन-(अंडे की सुफेदी) और पांशुनत्रेत (पोटेसियम नाइट्रेट) २ प्रतिशत तक होते हैं।

बीज में एक स्थिर या वसामय तैल २६ प्रतिशत, एक एम्पाइर युमेटिक तेल (Empyreumatic oil) जो विनाशक परिस्रुति विधिद्वारा प्राप्त होता है, और वार्नीक (Warnoke) के मतानुसार ४·२१ प्रतिशत भस्म वर्तमान होती है।

प्रभाव—बीज-मादक, निद्राजनक (मदकारी), वेदनानाशक, पाचक, संकोचक तथा कृमिघ्न है। पत्र तथा हायोसाइमीन-अवमादक, वेदना-शामक, आक्षेप निवारक, उत्तेजक और नेत्र कनीनिका प्रसारक है। इनका उन्मत्तकारी प्रभाव बिलाडोना की अपेक्षा मृदुतर तथा निद्राजनक अधिकतर एवम् अधिक विश्वसनीय व शीघ्र और अफीम सत्व (मॉर्फिया) व ग्रॉरल से उत्तम होता है।

औषध निर्माण—पत्र चूर्ण, मात्रा-२॥ से ५ रत्ती (५ से १० ग्रेन); ताजा स्वरस (दबा कर निकला हुआ एवं सरक्षित रक्खा हुआ), मात्रा-आधा से १ ड्राम, द्वारा निर्मित टिङ्चर, १ ड्राम; ताजे पौधे का एक्सट्रैक्ट मात्रा-आधी से १॥ रत्ती (१ से ... इनके द्वारा प्रस्तुत प्रस्तर (प्लास्टर) का बाह्य उपयोग होता है।

यह मदकारी विष है तथा इससे ... एवं मृत्यु उपस्थित होती है। और ... अति शीघ्र होती है।

सत्व निर्माण-विधि—खुरासानी का पौधा जब फूलने फलने लगे, ... के उसकी छोटी छोटी शाखाओं को ... से भली भाँति धोकर स्वरस निकालें ... आदि का विशेष ध्यान रखना ... स्वरस को छानकर अग्नि पर पकाएँ ... लगे और खौलते हुए १० मिनट हो ... स्वरस के ऊपर मैल के भाग से, जैसे ... की चाशनी करते समय प्रायः हुआ ... उठने लगें, तब स्वरसको उतार कर ... निथारने के लिए स्वरस को चीनी के ... भर कर १२ घंटे रक्खा रहने दें। ... सावधानी से निथार कर फिल्टर करें (फिल्टर पेपर) में छान लें और फिर ... जब गाढ़ा होजाय अर्थात् अवलेह बनाने लायक होजाय तो उतार लें। ... ३-३ या ४-४ रत्ती।

पारसी कयथानी सरल सत्व-... विधि से स्वरस को फिल्टर करके ... हिसाब से हली [रेक्टीफाइड स्पिरिट] ... कर सद्यः निर्गत स्वरस का गर्म पानी ... मलन पूरा कर शीशी में भरकर ... करें। मात्रा-२० बुंद से ६० बुंद तक ... तो० जल में मिलाकर सेवन कराएं।

पारसीक यमानी के गुण धर्म व प्रयोग

आयुर्वेदिक मतानुसार—

खुरासानी अजवायन के गुण अजवायन के समान ही हैं, परन्तु विशेष करके यह रुचिकारक, ग्राहक, मादक तथा भारी ...

...रमीक यमानी तिक्त, गर्म, कटु, तीक्ष्ण, ...दीपन करने वाली, वृष्य तथा हलकी होती ...त्रिदोष (सन्निपात), अजीर्ण, उदरज कृमि ...दर्द, आमशूल (पेचिश की मरोड़) तथा कफ आदि को नष्ट करती है। वै० निघ०।

...रासानी अजवायन चरपरी, रूक्षा, पाचक, ..., गरम, नशा करनेवाली, भारी, वातकारक ... कफनाशक है, शेष गुण अजवायन के ...न हैं। वै० निघ०।

...ह बुद्धि और नेत्रको मन्द करती है, कानों में ...दन, कंठग्रह, शिर के चलायमान होने, ... रुधिरस्राव और सर्व प्रकार की पीड़ा को ... करती है। विशेषकर पाचन, ग्राही, ... और भारी है। अभि० १ भा०।

...खुरासानी अजवायन का अर्क—यह ...पक, पाचक और मदकारक है।

...नी मतानुसार अजवायन खुरासानी के गुण-धर्म व प्रयोग।

...वाद—तीखी और कड़वी। प्रकृति (श्वेत) ...सरे दर्जे में ठंडी और रूक्ष (काली) ३ कक्षामें ठंडी ...रूक्ष है। हानिकर्ता—(सफेद) चक्कर, कंठ... एवम् उन्मादकारी है; (काली जाति की) ...क है। दर्पनाशक—शहद या अनीसूँ सम... या न्यूनाधिक; किसी किसी ने अफीम और ... लिखा है। प्रतिनिधि – अफीम, अजवायन ... और ... स्याह। मात्रा—(श्वेत) ...मासे से ३ मासे तक, (सुर्ख) २ से २॥ मासा ...। आधुनिक मात्रा—आधा माशासे १ मा०

...यवों में शैथिल्योत्पादन कर्ता, निद्राजनक, अवयवों के रक्त विशेषतः आर्तव इत्यादिका रोधक व घटक है। कफज कास को गुण कर्ता, उन्माद में रुधिर आनेकी नाशक तथा अधिक रूक्षताकर्ता है। प्रत्येक भाँति की वेदनाशमनार्थ इसका बाह्य उपयोग होता है। अस्तु, तिल तेल में अकेले इसे अथवा अन्य औषधियों के साथ पकाकर गृध्रसी या कटि वेदना (अर्क् निसा) तथा निक्रिस (Gout) प्रभृति में इसकी मालिश की जाती है। उक्त तैल के ... कर्ण में टपकाने से कर्ण पीड़ा ... होती है। अग्नि पर डालकर धूनी ... इसके क्वाथ द्वारा कुल्ली करने से ... दूर होता है। मुफरिद अर्थात् ... व निद्राजनक होने के कारण यह ... तथा अनिद्रा रोगमें प्रयुक्त है। ... यन खुरासानी दोनोंको ... वटिका निर्मित कर ... जाती है और इसका ... जरायुस्थ व्रण तथा ... पहुँचाता है। ... वस्त्यश्मरी में ... अन्य दवा और ... में इसे ... म० मु०।

पीसकर कल्क प्रस्तुत कर पुनः जंगली सौंड के चमड़े में बाँध कर स्त्रियाँ गर्भ-निरोध हेतु इसे पहनती हैं। इसके बीजों के चूर्ण तथा राल दोनों को मिश्रित कर वेदना नाशन हेतु खोखले दाँतों में भरते हैं।

मालकाँगनी, वच, अजवायन खुरासानी के बीज, कुलंजन और पीपल इनको समभाग लेकर जल के साथ पीसकर कल्क प्रस्तुत करें। पुनः इसमें शहद मिलाकर स्वरयंत्र प्रदाह में ३॥ मा० की मात्रा में दिन में दो बार व्यवहार में लाएँ। (इलाजुलगुर्बा)

खोरासानी अजवायन और सेंधानमक को खाली पेट बहुत सवेरे सेवन करने से एंकिलोस्टोमा (Ankylostoma) नामक कृमि में लाभ होता है। (डॉ० रॉय)

एलोपैथिक मेटीरिया मेडिका

और

हायोसाइमस (पारसीक यमानी)

पारसीक यमानी पत्र

हायोसाइमाइ फोलिया (Hyoscyami-Folia)-ले०। हायोसाइमस लीव्ज़ (Hyoscyamus Leaves), हेनबेन लीव्ज़ (Henbane Leaves)-इं०। औराकुल्बञ्ज, औराकुस्सीकराम्-अ०। बर्ग बङ्ग-फ़ा०।

सोलेनेसीई अर्थात् धुत्तूर वर्ग

(*N. O. Solanaceæ*).

ऑफ़िशल (Official).

उत्पत्तिस्थान—ब्रिटेन।

वानस्पतिक नाम व प्रयोगांश—इसका वानस्पतिक नाम हायोसाइमस नाइगर (Hyoscyamus Niger.) अर्थात् काली खुरासानी अजवायन है। इसके नवीन पत्र व पुष्प की शाखा सहित अथवा केवल पत्र तथा पुष्प को तोड़कर शुष्क करके औषध कार्य में वर्तते हैं।

लक्षण—पत्तों की लम्बाई विभिन्न होती है। ये दस इंच तक लम्बी और कई अंशों में विभाजित होती हैं। कोई डंठल युक्त एवं कोई डंठल रहित होती हैं। इनका रूप अंडाकार और किसी कदर त्रिकोणाकार होता है। इनके किनारे अनियमित रूप से दंष्ट्राकार होते हैं। तथा निम्न भाग एवं शाखा होती है। नवीन पत्तों एवं शाखाओं गंध व बुरी होती है। स्वाद किञ्चित् चरपरा।

समानता—मिलाउंता और धतूरे इन पत्तों से मिलते जुलते होते हैं। रोमरहित होते हैं।

रासायनिक संगठन—इसमें (१) हायोसायमीन और (२) हायोसीन ये क्षारी अल्कलाइड्ज अर्थात् क्षारीय एक विषैला तैल होता है।

असम्मिलन (संयोग विरुद्ध)—पुटासी, लेड एसीटेट, सिल्वर नाइट्रेट, वानस्पतिक एसिड्स।

प्रभाव—निद्राजनक (Narcotic), वेदनाशामक (Anodyne) और मादक (Sedative).

ऑफ़िशल योग (Official preparations).

(१) एक्स्ट्रैक्टम हायोसाइमाई (Extractum hyoscyami)-ले०। एक्स्ट्रैक्ट ऑफ़ हेनबेन या हायोसाइमस (Extract of Henbane or Hyoscyamus)-इं०। पारसीक यमानी सत्व, खुरासानी अजवायन का सत-हिं०। खुलासह बङ्ग-फ़ा०; अ०।

निर्माण विधि—हायोसाइमस नाइगर (खुरासानी अजवायन) के नवीन पत्तों तथा कोमल शाखाओं को कुचल कर दबाने से जो रस प्राप्त हो उसे क्रमशः १३०° फ़ारेनहाइट का ताप दें तथा कॉलोकी फ़िल्टर द्वारा छानकर हरे अंश भिन्न करलें, पुनः छने हुए रस को २००° फ़ारेनहाइट की ताप दें और उसमें से पश्चात् शीरा के समान गाढ़ा कर लें; पुनः रंगीन पृथक किए हुए द्रव्य को बालोंका में छानकर इसमें सम्मिलित कर दें, और १४०° के ताप पर इतना शुष्क करें कि वह अवलेह के सदृश हो जाए।

मात्रा—२ से ८ ग्रेन अर्थात् १ से ४ रत्ती १२ से ५० सें० ग्रा०).

(२) पिल्युला कालोसिन्थिडिस एट-योसाइमाई (Pilula colocynthidis Hyoscyami.)-लै० । पिल आफ़ लोसिन्थ एण्ड हायोसाइमस (Pill of olocynth and Hyoscyamus) ० । इन्द्रायन व पारसीक यमानी वटिका हि० । ह.ब्ब हन्ज़ल व बञ्ज (बङ्ग)-अ०, ०।

निर्माण-विधि—कम्पाउण्ड पिल आफ़ लोसिन्थ २ आउंस (१ भ०), एक्सट्रैक्ट फ़ हायोसाइमस १ आउंस दोनों को मिला लें।

मात्रा—४ से ८ ग्रेन अर्थात् २ से ४ रत्ती २६ से ५२ ग्राम).

(३) सक्कस हायोसाइमाई (Succus yoscyami)-लै० । जूस ऑफ़ हायो-इमस (Juice of Hyoscyamus) ० । पारसीक यमानी स्वरस-हि० । उसार-र, अफ़शुर्दह बङ्ग-अ०, फ़ा० ।

निर्माण-विधि—नवीन पत्रों, पुष्पों तथा शा-ओं को कुचलने से जो रस प्राप्त हो उसके से तीन भाग (आयतन के विचार से) में १ ग हली (९० प्रतिशत) सम्मिलित करें र एक सप्ताह तक पड़ा रहने दें, पुनः फिल्टर लें।

मात्रा—आधा से १ फ्लु० ड्रा०-(१·८ से ६ क्यु० सें०)।

(४) टिंक्चूरा हायोसाइमाई (Tinct-ra Hyoscyami)-लै० । टिंक्चर ऑफ़ योसाइमस (Tincture of Hyoscy-mus)-इं० । पारसीक यमान्यासव-हि० । शाह, बञ्ज, तरफ़ीन बङ्ग-फ़ा०, अ० ।

निर्माण-विधि—हायोसाइमस के पत्तों और प युक्त शाखाओं का २० सं० का चूर्ण २ आ-र, हली (Alcohol) ४५ % यथो-न । चूर्ण को २ फ्लुइड आउंस हलाहल से तर के पर्कोलेशन (टपकाना) द्वारा १ पाइण्ट र तय्यार कर लें।

मात्रा—आधा से १ फ्लुइड ड्राम (२ से ४ मिलिग्राम)

नॉट ऑफ़िशल योग

(Not official preparations.)

(१) क्लोरोफ़ॉर्मम् हायोसाइमाइ (Chloroformum Hyoscyami)-पारसीक यवानी मूल (Hyoscyamus root) चूर्ण किया हुआ ३० भाग, क्लोरोफ़ॉर्म २० भाग। यह क्लोरोफ़ॉर्म एकोनाइटीनी के समान प्रस्तुत किया जाता है।

(२) टिंक्चूरा हायोसाइमाइ रेडिसिस (Tinctura Hyoscyami Radicis)-चूर्णित पारसीक यमानी मूल पाँच भाग, हली (६० प्रतिशत) ४० भाग में एक सप्ताह तक भिगोकर पर्कोलेट कर लें।

मात्रा—२० से ६० मिनिम (बुंद)।

हायोसाइमस के गुणधर्म व प्रयोग

पारसीकयमानीपत्र अर्थात् हायोसाइमाइ फोलिया (Hyoscyami Folia).

प्रभाव—हायोसाइमीन (पारसीक यमानी का स्फटिकाकार सत्व) जो हायोसाइमस अर्थात् खुरासानी अजवायन का प्रभावात्मक सत्व है, अपनी रचना में धत्तूरीन (एट्रोपीन) के समान होता है। अस्तु,स्थायी क्षार (फिक्स्ड अलकेलीज़) की उपस्थिति में सामान्य उत्ताप पर यह धत्तूरीन (एट्रोपीन) में परिणत हो जाता है। इसलिए यद्यपि पारसीक यमानी के बहुशः गुणधर्म स्वभावतः बिलाडोना और स्ट्रैमोनियम् (धुस्तुर, धतूर) के गुणधर्म के समान होने चाहिए (देखो–बिलाडोना), तथापि उसके प्रभाव में निम्नोल्लिखित पारस्परिक भेद प्रभेद पाए जाते हैं:–
(१) बिलाडोना की अपेक्षा हायोसाइमस से उन्मत्तता तो कम उत्पन्न होती है; किन्तु मस्तिष्क पर इसका अवसादक (Sedative) तथा निद्राजनक (Soporific) प्रभाव शीघ्रतर एवं बलवानतर होता है। (२) सुषुम्ना कांड पर भी इसका अवसादक प्रभाव अधिक स्पष्ट होता है। (३) यह आंत्र के कृमिवत् आकुञ्चन को तीव्र करता तथा प्रवाहिका या मरोड़ा को

अपेक्षाकृत बहुत कम करता है। (४) विलाडोना के सदृश यह हृदय पर मदक्षोभक प्रभाव नहीं करता, अपितु हृदय पर हायोसीन का अत्यन्त निर्बल प्रभाव पड़ता है। (५) मूत्रेन्द्रिय विशेषतः बस्ति पर विलाडोना की अपेक्षा इसका अधिकतर अवसादक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि बस्तिस्थ श्लैष्मिक कला की नाड़ियों के अन्तिम भाग पर अवसादक तथा निर्बलताजनक प्रभाव करके यह उसके मांस तन्तुओं की ऐंठन को दूर करता है। (६) हायोसीन से इन्ट्राओक्युलर टेन्शन (नेत्रपिंड का तनाव) कम हो जाता है। अस्तु, हायोसायमस का यह प्रभाव उतना नहीं होता जितना कि विलाडोना का।

उपयोग—हायोसायमस का उपयोग आक्षेप विकार की अवस्थाओं के अतिरिक्त जिनमें विलाडोना व्यवहृत है, निम्नांकित दशाओं में भी होता है।

(१) विविध रोगों की तीव्र पीड़ा में मस्तिष्कोत्तेजना को कम करके नींद लाने के लिए, यथा उन्माद (मेनिया) अनिद्रा या निद्रानाश (इन्सोम्निया), स्त्रियों की हिस्टीरिया (योषापस्मार के दौरे में), उषा की उन्मत्तावस्था में तथा वात वेदनाओं में इसे देना चाहिए। उन्मत्त शराबी को भी नींद लाने के लिए दे सकते हैं।

अतः खुरासानी अजवायन के तरल सत्व को १–१ घंटे के अन्तर से १०–२० बुंद दवा और २॥–२॥ तोला पानी एकत्र कर पिलाते रहें। जब नींद आजाय तब बन्द करदें। इस प्रकार ५–६ मात्रा सेवन कराने से ही रोगी सो जाता है।

नींदके लिए हायोसायमीन (खुरासानी अजमायन का सत्व) १ ग्रेन (आधी रत्ती) को साफ गरम जल ३ मा० ६ रत्ती में मिलाकर हायपोडर्मिक सिरिंज में भरकर १ से ४ बुंद तक त्वचा के नीचे पहुचाएँ। इसी को हाइपोडर्मिक इञ्जेक्शन हाइयोसायमीन कहते हैं।

(२) रेचक औषधियाँ जो मरोड़ पैदा करने वाली हैं उनके उक्त गुण को कम करने के लिए तथा पेचिश की ऐंठन को दूर करने व्यवहार में लाते हैं।

(३) मूत्रपथ सम्बन्धी ... वृक्क, बस्ति तथा मूत्र प्रणाली के ... बस्ति प्रदाह, प्रोस्टेट ग्रन्थि प्रदाह, ... प्रभृति में बस्तिस्थ आक्षेप निवारक प्रभावकारी सार, हायोसायमीन, ... अमोघ है, और शरीर से निर्गत ... प्रदाह युक्त भिल्लियों में ... तन्तुओं पर अवसादक प्रभाव करता ... अनावश्यक रूप से थोड़ा थोड़ा ... के लिए बस्ति में बार बार ऐंठन ... विशेष रूपसे इसका उपयोग होता ... में इसे क्षारों के साथ संयुक्त ... गुणदायक होता है।

ऐसी दशा में इसको साधारण ... सरी सिट्रेटिस (मूत्रावसादक) ... षियों यथा-बुच्चु या युवा ... इक्सलिड प्रभृति तथा ... साथ मिलाकर सेवन कराते हैं।

(४) श्वासनाड़ियों (काश या ... प्रदाह) में खाँसी को कम करने ... तथा शोथ की तीव्र ... को दूर ... इसका पुल्टिस-व्यवहार में ... पुतली फैलाने के उद्देश्य से ... लिए। (७) यह विलाडोना के ... मुखशोष, मेदकचोलिका, ... उत्पन्न करता है। सूक्ष्म मात्रा में ... और हृदयबलदायक है। अधिक ... एवं आत्यधिक मात्रा, निर्बलताजनक ... हृदय सम्बन्धी दमा तथा हृदय ... विकार एवं तज्जन्य हृदयोत्तेजना में ... योग किया जाता है।

बच्चों में इसकी बड़ी मात्रा ... होती है। किन्तु, वृद्ध एवं निर्बल ... इसकी छोटी मात्रा का भी गहरा ... एक बार के अनुसार भर इसका ... औषध है, परन्तु यह ...

हायोसीन(Hyoscine).

यह हायोमाइमसका एक क्षारीय सत्व (Alkaloid) है जो उसके द्वितीय रवा रहित सत्व हायोसायमीन में भी पाया जाता है। यह एक वाष्पशील तैलीय द्रव होता है जो अपने प्रभाव में हायोसायमीन से पाँच गुणा अधिक प्रभावशाली होता है। यह स्वयं औषधरूप में व्यवहार में नहीं आता। इसके हाइड्रोक्लोरेट, हाइड्रिओडेट तथा हाइड्रोब्रोमेट आदि लवणों में से अंतिम लवण ही अधिक उपयोग में आता है।

हायोसीनी हाइड्रोब्रोमाइडम् (Hyoscinæ hydro bromidum)-ले०। हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड (hyoscine hydrobromide), स्कोपोलेमीन हाइड्रोब्रोमाइड (Scopolamine Hydrobromide), हाइड्रोब्रोमेट ऑफ हायोसीन (hydrobromate of hyoscine)-इं०। पारसीक यमानी सत्व-हिं०। ज़ौहर बञ्ज, ज़ौहर मीकरान -फ़ा०।

रासायनिक संकेत

($C_{17}H_{21}NO_4,HBr,_3H_2O$)

ऑफ़िशल (official).

उत्पत्ति—यह हायोसायमस (पारसीक यमानी)के पत्तों तथा विविध भाँति के स्कोपोला के वृक्षों एवं सोलेनेसीई पौधों में पाए जाने वाले एक एल्कलाइड (क्षारीय सत्व) का हाइड्रोब्रोमाइड है।

लक्षण—इसके वर्ण रहित रवे होते हैं जो वायु में स्थिर तथा स्वाद में तिक्त और जल में अत्यन्त लयशील होते हैं। एक भाग यह, ४ भाग जल में घुल जाता है।

प्रभाव—निद्राजनक (hypnotic).

मात्रा—$\frac{1}{200}$ से $\frac{1}{100}$ ग्रेन(·३ से·६ मिलिग्राम) मुख या त्वगस्थ अन्तःक्षेप द्वारा।

नॉट ऑफ़िशल योग

(Not official preparation

(१) इञ्जेक्शिओ हायोसीनी हाइपोडर्मिका (Injectio hyoscinæ hypodermica)-ले०। १००० मिनिम परि० जल में १ ग्रेन (आधी रत्ती)। मात्रा-२ से मिनिम (बूँद).

(२) हाइपोडर्मिक लेमोली (Hypodermic lamole)-हरएक लेमोली में $\frac{1}{200}$ ग्रेन हायोसीनी हाइड्रोब्रोमाइड होता है।

(३) गटी हायोसीनी (Guttæ hyoscine) एक आउंस परिस्रुत जल में २ ग्रेन हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड होता है।

(४) ऑफ़्थैल्मिक डिस्क्स (Ophthalmic Discs)-प्रत्येक डिस्क में $\frac{1}{500}$ से $\frac{1}{200}$ ग्रेन हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड होता है।

हायोसीनी हाइड्रोब्रोमाइड के प्रभाव तथा प्रयोग

यह अधिक विषैला है और प्रभाव में धतूरीन (एट्रोपीन) से जिससे रसायनवाद के अनुसार यह इतना निकट का सम्बन्ध रखता है, किसी किसी बात में भिन्न होता है। यह समग्र मदकारक तथा निद्राजनक है और इसमें धतूरीन (एट्रोपीन) के समान हृदयोत्तेजक प्रभाव नहीं पाया जाता, एवं इससे मस्तिष्क के ... [illegible]

... निद्रोत्पादक मेल [illegible] ... ग्रेन की मात्रा में उपयोग करने से ... स्तब्धता तथा ... शीघ्र आ जाती है ... को भला ... लिए ... है। ... [illegible]

कि धत्तूरीन (Atropine) द्वारा विशाक्त रोगी में देखा जाता है, विरला ही उत्पन्न होता है। ऐट्रोपीन के समान यह तत्काल व बलपूर्वक नेत्र-कनी नका को प्रसरित कर देता है और इसका यह प्रभाव एट्रोपीन से ४-५ गुणा अधिक होता है। इससे इन्ट्राऑक्युलर टेन्शन (नेत्र पिण्ड का तनाव) स्पष्टरूप से नहीं बढ़ता।

डॉक्टर क्लॉस (Clauss) के कथनानुसार इसके उपयोग करने के पश्चात् उन्मत्तता विद्युताघात के समान तत्काल स्थिरता को प्राप्त होती है और रोगी की व्यग्रता शीघ्र शान्तिमय निद्रा में परिवर्तित हो जाती है। परन्तु यह व्यापक वातप्रसरता रूपी स्थिरता धीरे धीरे होती है। मद्योन्माद (डेलीरियम ट्रीमेन्स), प्रसूतिकोन्माद (प्योर्पेरल मेनिया) एवं विविध भाँति के अनिद्रा विकारों में यह गुणदायक सिद्ध हुआ है। उस अनिद्रा रोग में जिसमें पागलपन का छिपा हुआ भाव हो, यह सर्वोत्कृष्ट निद्राजनक औषध प्रमाणित हुआ है। डॉक्टर ब्रूस (Bruce) के अनुभव के अनुसार यह वृक्क रोगों में अच्छा प्रभाव करता है। हृच्छूल (अञ्जाइना पेक्टोरिस) में इसका उपयोग कर सकते हैं।

दमा, वीर्यस्राव तथा राजयक्ष्मा रोगी में स्वेदस्राव को रोकने के लिए और अफीम सत्व (Morphia) तथा कोकीन के अभ्यासियों की चिकित्सा में यह उपयोगी सिद्ध हुआ है।

जर्मनी के प्रसिद्ध डॉक्टर श्नीडरलीन (Schneiderlein) जेनरल अनस्थेसिया (व्यापकावसन्नता) उत्पन्न करने के लिए स्कोपोलेमीन तथा मॉर्फीन को मिलाकर प्रयोग करना लाभदायक ख्याल करते हैं। अस्तु, वे ऑपरेशन की पूर्व संध्या को लगभग $\frac{१}{१००}$ से $\frac{१}{२००}$ ग्रेन स्कोपोलेमीन तथा चौथाई ग्रेन मॉर्फीन को परस्पर संयुक्त कर इसका त्वचा के भीतर अन्तःक्षेप करते हैं। आवश्यकतानुसार ऑपरेशन की सुबह को इसे अधिक मात्रा में दोहराया जाता है। इससे रोगी को गम्भीर निद्रा आजाती है और यह ऑपरेशन के पश्चात् कई घण्टों तक सोता रहता है। इस प्रकार यह दुःख व वेदना काल

निद्रा में व्यतीत हो जाता है। ... में इसको "गोधूली निद्रा" कहा ... मे० मे०)

निद्राजनक रूप में ... सम्बन्धी रोगियों में यह गुणदा... है। इससे किसी प्रकार की हानि ... नहीं। वृक्क विकार में जहाँ अफ... सर्वथा वर्जनीय है और जब अन्य ... औषधियाँ निष्फल सिद्ध होती हैं, ... इसका उपयोग निर्भयतापूर्वक किया ...

हायोसीन के हाइड्रोब्रोमेट, हायो... हाइड्रोब्रोमेट शुक्रमेह में लाभदायक ... (मे० मो० एम०)

हायोसाइमीन (Hyoscyami...

यह रचना में धत्तूरीन (ऐट्रोपीन ... होता है तथा हायोसीन व हायोसि... में विश्लेषित किया जा सकता है। य... एवं विकृताकार दोनों रूपों में पाया... इसके सूक्ष्म श्वेत रवे होते हैं या ... वर्ण का मस्त सदृश पदार्थ होता है।

हायोसायमीनी सल्फास
Hyoscyaminæ sulpha...

पर्याय—हायोसायमीन सल्फेट (Hyo... scyamine sulphate)—...

रासायनिक संकेत ($C_{17}H_{23}NO$... $H_2SO_4, 2H_2O$.

ऑफिशल (Official).

यह पारसीकयमानी, धत्तूर-तथा अन्य ... सोलेनेसीई पौधों में पाए जाने वाले एक ... (क्षारीय सत्व) का गन्धेत (सल्फेट) ...

लक्षण—यह एक पीत या पीत... स्फटिकवत् व गन्धरहित चूर्ण है, ... नमी को अभिशोषित करता है।

स्वाद—तिक्त एवं चरपरा।

नोट—इसको वायु विशेषकर ... सुरक्षित गहरे अम्बरी रङ्ग के मजबूत ... बोतलों में रखना चाहिए।

विलयशीलता—यह २ भाग, एक भाग ... और १ भाग ४॥ भाग इथर (१०

अत्यन्त प्रकोष्ठ ग्रीवा और ईथर में ...ता है।

...व—व्यापारमादक (General se-...ve) और निर्बल निद्राजनक (Weak ...notic) । सामुद्र रोगों (Sea sick-...) में लाभदायी है।

...त्रा—$\frac{1}{200}$ से $\frac{1}{100}$ ग्रेन (३ से ६ मि०) मुख से या त्वगस्थ अन्तःक्षेप द्वारा।

...नॉट ऑफ़िशल योग
(...t official preparations).

(१) हायोस्सायमीनी हाइड्रोब्रोमाइडम् (Hyoscyaminæ hydrobromidum) छोटे छोटे श्वेत दानेदार रवे होते हैं, जो ...१ भाग जल में सत्ता होजाते हैं। मात्रा—$\frac{1}{100}$ ग्रेन।

(२) इञ्जेक्शिओ हायोसायमीनी हाइ... (Injectio hyoscyaminæ ...odermica)—हायोसायमीन सल्फेट ... (आधी रत्ती), परिस्रुत जल २ ड्राम। ...—१ से २ बुंद।

(३) हाइपोडर्मिक लेमेल्ज़ (Hypo-...mic lamels)—प्रत्येक लेमीली में $\frac{1}{100}$ ग्रेन उक्त औषध होती है।

(४) आफ्थेल्मिक डिस्कस (Ophth-...ic discs)—प्रत्येक डिस्क में $\frac{1}{200}$ ग्रेन दवा ... है।

(५) हायोसायमीनी ग्रेन्यूल्ज़ (Hyo-...aminæ granules)—प्रत्येक में ... ग्रेन।

...ह मी—सिकनेस (सामुद्र रोग) में लाभ-...क है।

हायोसायमीनी सल्फास के
गुणधर्म व प्रयोग

प्रभाव—हायोसायमीन या हायोसाइमस का ...य शारीय सत्व नेत्रकनीनिका प्रसारक है, ... थोड़ी मात्रा में यह नाड़ी की गति को मंद करता है तथा धामनिक तनाव की वृद्धि करता एवं शारीरोष्मा की कमी को रोकता है और भूल चूक (Hallucination) व विभ्रम पैदा करता है। अधिक मात्रा में यह नाड़ी स्पन्दन को कम कर देता है तथा प्राकृत्य वात-ग्रस्तता या चालन की असमर्थता तथा निद्रा उत्पन्न करता है।

उपयोग—हायोसीन की अपेक्षा हायोसाय-मीन प्रभाव में धत्तूरीन (Atropine) से अधिक समानता रखता है। अधिकांश रोगियों में यह बिना पूर्व विभ्रम के निद्रा उत्पन्न करता है। हायोसायमीन (Hyoscyamine) एट्रोपीन के समान हो, किन्तु उससे अधिक नेत्र-कनीनिका प्रसारक है। इसमें एट्रोपीन से विभ्रम-कारी प्रभाव कम तथा निद्राजनक प्रभाव अधिक है। इसमें अधिक विश्वसनीय तथा शीघ्र मद-कारी (नारकोटिक) गुण है। और यह मार्फ अफीम (मार्फीया) तथा क्लोरल हाइड्रेट से पूर्ण तथा कम वर्जनीय है। यह वातसंस्थानाव-सादक है।

डॉक्टर रिङ्गर (Ringer) के कथना-नुसार जिन्होंने सम्भवतः अशुद्ध लवण का मद्यो-न्माद में उपयोग किया इसके प्रभाव का एट्रो-पीनसे तुलना करनेपर कोई भेद नहीं ज्ञात हुआ। यह बलवान नेत्रकनीनिकाप्रसारक है तथा नेत्र रोग में इसका उपयोग होता है। परंतु एट्रोपीन की अपेक्षा यह विशेष लाभदायी नहीं है।

डॉक्टर ए० आर० कुश्नी (Cushny) के वर्णनानुसार विशुद्ध हायोसायमीन शुद्ध एट्रो-पीन की अपेक्षा नेत्रकनीनिका प्रसारण तथा लालास्राव प्रतिरोधन में द्विगुण शक्तिशाली है। किश्ती पर सवार होने से प्रथम यदि इसे कुछ दिवस तक $\frac{1}{100}$ ग्रेन की मात्रा में प्रयोग करें तथा इसे कुछ समय तक प्रति घंटा २–२ घंटा पर दोहराते रहें तो यह सामुद्र रोग (Sea sick-ness) को रोकने के लिए सर्वोत्कृष्ट औषध है। यह कनीनिकाप्रसारक रूप से भी व्यवहार में आता है। फ़ालिज (अर्द्धांगवात या पक्षाघात)

सहित कम्पन में कपकपी को रोकने तथा पारदीय पक्षाघात के लिए औषध रूप से उपयोग में आता है। परन्तु उक्त प्रयोजन के लिए यह हायोसीन से निम्न कोटि का है।

अनिद्रा (इन्सोम्निया), पागलपन (मेनिया), मद्योन्माद (डिलेरियम ट्रीमेन्स), साङ्गांग कम्पन (पैरालिसिस एजिटेन्स), दमा (एज्मा), वातवेदना (न्युरेल्जिया) तथा कम्पन (कोरिया) में इसका उपयोग किया गया; किन्तु यह हायोसीन की अपेक्षा कम उपयोगी प्रतीत हुआ। (एली० मे० मे० हिटला)

मानसिक विकार—क्योन्माद, असीम व्यग्रता, भ्रम, शंका, मोतेच्छ स्मृति भ्रंश तथा अव्यवस्थितता, अपस्मारोन्माद तथा पुरातन विस्मृति रोगमें इसका व्यवहार होता है। पागलपन एवं तत्सम्बन्धी दशाओं में बिना किसी कुप्रभावके क्लोरल की अपेक्षा निश्चित निद्रा उत्पन्न करता है। तीव्रोन्माद में इसके उपयोगकी उत्तम विधि त्वगन्तर अन्तः क्षेप है।

वात विकार—साङ्गांग कम्पन में यह वह काम करता है जो किसी और औषध ने कभी नहीं किया अर्थात् अचेतना उत्पन्न किये बिना ही यह अंगचालन को चार घंटे तक रोक देता है। जब सम्पूर्ण औषधियाँ असफल होजाती हैं उस समय यह वायु कम्पन को ठीक करता है एवं उसी प्रकार यह पारदीय कम्पन, वृद्धावस्था अथवा निर्बलता जन्य कम्पन, रेशा (कोरिया) तथा योषापस्मारीय आक्षेप को शमन करता है। युवा या बाल दोनों के तशन्नुज (आक्षेप) की अवस्था में यह वेदना तथा प्रदाह को शमन करता है। वातवेदना में इसका उपयोग किया गया और सम्भवतः ज्ञान तन्तुओं की उत्तेजना कम होकर वेदना शान्त होगई।

आक्षेप शमन—यह आक्षेपशामक है और इस लिए आक्षेप युक्त काम, श्वास, हिक्क (हिचकी) आदि में इसका लाभदायी उपयोग होता है।

मूत्रविकार—यह मूत्रविरेचक मदिन्यु (युरेटर) तथा मूत्राशय को शमन करता है।

निद्राजनक—यह सार्वाङ्गिक तथा निद्राजनक औषध है और [illegible] उपयोग अनुचित होता है उस [illegible] नींद आजाती है। इससे विबन्ध [illegible]

औषध-निर्माण तथा मात्रा—

भीम (स्फटिकवत्) $\frac{१२}{२००}$ से $\frac{१}{५०}$ ग्रेन

मीन (पिङ्कसाकार) $\frac{१}{१६}$ से $\frac{१}{८}$ ग्रेन।

में $\frac{१}{४}$ से १ ग्रेन की मात्रा में [illegible] कर (diluted) तथा [illegible] करना चाहिए। क्योंकि कुछ रोगियों [illegible] बरदाश्त की शक्ति नहीं होती।

हायोसायमीनी सल्फ—$\frac{१}{१२०}$ [illegible]

त्वगन्तरीय—सामान्य मात्रा—$\frac{१}{७५}$ [illegible]

अधिकसे अधिक $\frac{१}{१०}$ और कम से कम [illegible]

बी० एम०)

परीक्षित योग

(१) एक्सट्रैक्टम् हायोसायमाई [illegible] पल्विस कैम्फोरी २ ग्रेन, दोनों की १ [illegible] कर रात्रि में सोते समय दें। कास [illegible] सम्बन्धी शिरशोथ जेसा) में लाभदायक [illegible]

(२) एक्सट्रैक्टम् हायोसायमाई [illegible] क्रिम्साई वेलेरीएनेट्म २ ग्रेन, [illegible] और ऐसी १-१ गोली दिन में २ बार [illegible] सिडेटिव (वातावसादक) है।

(३) हायोसीनी हाइड्रोब्रोमाइड [illegible] पल्विस सैक्रि.लैक्टस (मिल्क शुगर) [illegible] गोली बनाकर सोते समय दें। पैरालिसिस [illegible] टैन्स (पक्षाघातीय कम्पन) में [illegible]

(४) सोडियाइ ब्रोमाइडाई [illegible] सक्काई हायोसाइमाई मात्रा ड्राम, सीरप [illegible] ब्रम १ ड्राम, एक्वा डिस्टिलेटा १ [illegible]

एक मात्रा औषध रात्रि में सोते समय दें। ...द्रा (इन्साम्निया) में लाभदायक है।

(२) टिङ्चूरा हायोसाइमाई ३० मिनिम, ...याई बेञ्ज़ोएट्स १० ग्रेन, एलिक्सर सक्कि... ५ मिनिम, इन्फ्युज़म् व्युक्यू १ आउंस ...। ऐसी एक एक मात्रा प्रति चार चार घंटा ...त दें। वस्तिप्रदाह (सिस्टाइटिस) और ...प्रदाह (पाइलाइटिस) में फलदायक है।

...न मुदव्वर ajaváin-mudabbar ...० शुद्ध अजवाइन। विधि—अजवाइनको तीन ...रात इतने सिर्कामें तर रखें कि वह अजवाइन ...पर अङ्गुल ऊपर रहे। फिर उसे सिर्कासे बाहर ...ल कर शुष्क कर लें। जीरा को भी इसी ...र शुद्ध करते हैं। प्योरिफ़ाइड अजोवान (Purified Ajowan)–इं०।

...ण ajavána–जय०
...न ajavána–हिं०, द०, गु० } अजवाइन (Carum Ajowan, *D. C.*)

...न का अर्क ajavána-ká-arka–द० ...र्क़ अजवाइन–हिं०। ओमम् वाटर (Omum water)–इं०।

...न का पत्ता ajavána-ká-pattá–द० ...जीरी का पत्ता। पञ्जीरी का पात, सीता की ...ञ्जीरी–हिं०। एनीसोकिलस कार्नोसस (Anisochilus Carnosus, *Wall.*)–लै०। ...क-लीव्ड लेवेण्डर (Thick-leaved Lavender)–इं०। इं०मे०मे०। फा०इं०।

...न का फूल ajavána-ká-phúla–द०, ...हिं० अजवाइनका सत। स्टियरॉप्टिन (Stearoptin), फ़्लावर्स ऑफ़ अजवान कैम्फर (Flowers of ajowan camphor) –इं०। देखो–अजवाइन।

नोट—यह अङ्गरेजी थाइमोल (सत पुदीना) के समान होता है।

प्रभाव—व्याक्षोत्तेजक, आमाशय बल्य, वायुनिःसारक, आक्षेपशामक, शोधनीय। यह पुरातन स्रावों, यथा—कास में अधिक श्लेष्मास्राव को रोकता है।

प्रयोग—अजवाइन का तेल और सत-अजवाइन को सोडा के साथ मिलाकर देने से आमाशयस्थ अम्लरोग, अजीर्ण तथा आध्मान दूर होते हैं। इ० मे० मे०। देखो—अजवाइन तथा थाइमोल।

अजवायण ajaváyana–जय०
अजवायन ajaváyana–हिं० संज्ञा स्त्री० } [सं० यवानिका] अजवाइन (Carum Ajowan, *D. C.*)

अजवायन गुटिका ajaváyana-guṭiká –सं० स्त्री० अजवाइन, जीरा, धनियाँ, मिर्च, विष्णुकान्ता, अजमोद, मँगरैल प्रत्येक ४ शा०, हींग भुनी ६ शा० तथा सज्जीखार, जवाखार, पञ्चलवण, निशोथ प्रत्येक ८ शा० और जमालगोटा, कचूर, पुष्करमूल, वायविडंग, अनारदाना, बड़ी हड़, चित्रक, अम्लवेद और सोंठ प्रत्येक १६ शा० लें, पुनः बिजौरे (नीबू) के रस से मर्दन कर चने प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। सेवन-विधि तथा गुण—घृत, दूध, मद्य, नीबू के रस और उष्ण जल के साथ देने से गुल्म का नाश होता है। मद्य से वात गुल्म, गोदुग्ध से पैत्तिक गुल्म, गोमूत्र से कफज गुल्म, दशमूल क्वाथ से त्रिदोषज गुल्म एवं स्त्री का रक्तगुल्म तथा ऊँटनी के दूध के साथ देने से हृद्रोग संग्रहणी, शूल, कृमिरोग और अर्श का नाश होता है। शार्ङ्ग० सं० मध्य० ख० अ० ७।

अजशृङ्गिका ajaṣhriṅgiká–सं० स्त्री०
अजशृङ्गी ajaṣhriṅgí–सं० स्त्री० } -हिं० संज्ञा स्त्री०, एक वृक्ष जो भारतवर्ष में प्रायः समुद्र के किनारे होता है। इसकी छाल संकोचक है और ग्रहणी आदि रोगों में दी जाती है। इसका लेप घाव और नासूर को भी भरता है। मेढ़ासिं(सिं)गी, मेषशृङ्गी। ऐस्क्लीपिआस जेमिनेटा (Asclepias Geminata, *Roxb.*)–लै०। भा० पू० १ भा० गु० व० ३७१। रा० नि० व० ६; सु० सू० ३८ अ०; रा०; मद०व० १। (२) कर्कटशृङ्गी, काकड़ासिङ्गी। (इसका वृक्ष पुत्रजीव वृक्ष के समान होता है)। (Rhus succedanea; Acuminata)–लै०। सु० सू० ३७ ड।

(अ), भा० ४ भा० रेवतीग्रह-चि० । मेषशृङ्गी या कर्कटशृङ्गी । सु० सू० ३८ अ० यल्लीपञ्चके । वा० चि० ८ अ० । "अजशृङ्गी जटाकल्कम् ।" भा० पू० २ भा० अने० व० ।

अजश्री ajashri-सं० स्त्री० फिटकिरी, फटिकारिका, फटिकारी, स्फटिकारि । भा० नि० । Alum (Alumen).

अजस äajasa-अ० अज्ञात ।

अजखर ajakhara-अ० रोहिषतृण । इज़खिर (Andropogon schoeranthes)

अज़ह् äazah-अ० हरिण, मृग । ग़ज़ालह्, आहू-फ़ा० । (A deer or antelope).

अज़हल äazahala-अ० नर कबूतर, कपोत, पारावत । (A pigeon).

अज़्ह्ह् äazahah-अ० मादा लोमड़ी । फॉक्स (A fox)-इं० ।

अजहा ajahá-सं० स्त्री० कौंच, केवाँच, शुकशिम्बी । आत्मगुप्ता-बं० । (Carpopogon Pruriens) । अ० टी० ।

अज़्हार azahára-अ० (ब० व०), ज़ह्र (ए० व०), कलियाँ, कलिकाएँ-हिं०, द० । गुञ्चा-फ़ा० । बड्स (Buds)-इं० । देखो-कलो (-लि).

अज़्हारुरेंह् azhárumreh } —फ़ा०
अज़्हारुल्फ़श्ह् azhárulfash } अनानून
(Pulsatilla).

अज़्हुन äazahúna-अ० ऊँट (A Camel). स० फा० इं० ।

अजक्षीरम् ajakshíram-सं० क्ली० छागीदुग्ध, अजादुग्ध, बकरी का दूध । वा० उ० १६ अ० । (Goat's milk).

अजक्षीरनाशः ajakshíra-náshah-सं० पुं० शाखोट वृक्ष, सहोरा (सि-), रूसा, सिओड़-हिं० । शेओड़ा-गाछ-बं० । (Streblus asper, *Linn.*) रा० नि० व० ६ ।

अजा ajá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) A she-goat. छागी, बकरी । (२) उक्त नामकी महौषधि विशेष । इसका स्वरूप-अजा (बकरी) के स्तन जैसा आकार वाली, दूध युक्त, क्षुप (पौधे) के रूप की; शंख, कुन्द, जैसी उज्वल और पांडुर रंगवाली सु० चि० ३० अ० । देखो-३ प्रकृति या माया । सां० द० ।-हिं० जन्म न हुआ हो । जो उत्पन्न न जन्म रहित ।

अज़ा äazá-अ० सीपी का एक kind of common oyster

अजाकर्ण ajákarna-सं० मरी, हिन्दी वृक्ष है) । (A huge tree).

अजागरः ajágarah-सं० पुं०(भँगरैया, भृङ्गराजवृक्ष । भीमराज लिप्टा ग्रेस्टा (Eclipta alba, शा० र० । (२) महासर्प, (फणदार या गेहुँअन साँप) cobra).

अजागरी ajágari-सं० चि० Nam plant. एक पौधा है ।

अजागलस्तनः ajágalastanah The fleshy protuberan nipple hanging down neck of goats. ललरी ।

अजाघृतम् ajághritam-सं० क्ली० बकरी का घी । गुण—बकरी का के लिए हितकारी, दीपन, बल पाक में कटु, कास, श्वास और क्षय करता है एवं कफ, अर्श (बवासीर) यक्ष्मा के लिए परम हित है । वै० निघ०

अजाज äajája-अ० (१) Dust धूल; Smoke. धूम्र । (२) camel बहुत मोटा ऊँट ।

अज़ाज़ äazáza-अ० बड़ा ऊँट (A camel).

अजाजिकः,-का ajájikah,-ká- पीला जीरा, पीतजीरक , Yellow seed) रा० नि० व० ६ ।

अजाजी,-जिः ajáji,-jih-सं० स्त्री० हिं० संज्ञा स्त्री०

और काला जीरा। जीरक, स्थूलजीरक। Cumin seed (Cuminu-ymimum) रा० नि० व० ६। द० संग्रहणी चि० बृहच्चुक्र। (२) s oppositifolia काकोडुम्बरिका, । जीरा, सफेदजीरा। भा० पू० १ भ० ०। च० द० संग्रहणी चि० आयाम-क। र० सा० सं० माणिक्य रस। Nigella sativa or Indica जीरक, कालाजीरा। सि० यो० दिवारात्रि न्द०। "गुड़ संयुक्त जीरा विषमज्वर : है।"

: ajájívah } सं० पुं० (A
:ajápálakah }
t-herd) गडेरिया, भेड़ बकरी पालने ।

दि चूर्णम् ajájyádi-chúrnam-स्त्री० जीरा श्वेत ८ तो०, जवाखार ४ तो०, मोथा ८ तो०, अहिफेन शुद्ध ४ तो०, मंदार १६ तो०, ले चूर्ण कर सेवन करने से उग्र णी, ज्वरातिसार, रक्तातिसार, निरक्तातिसार, घोर विशूचिका दूर होती है। भैष० र० याधिकारे।

ajáta- हिं० वि० [सं०] (Unborn) पैदा न हुआ हो। अनुत्पन्न। जन्म रहित। न्मा।

म् ajátakram- सं० स्त्री० छागी , बकरी का तक्र। गुण—बकरी का तक्र लघु, ध तथा दाह, गुल्म और अर्शनाशक है एवं रोग, शोथ (सूजन), ग्रहणी और पांडुरोगमें म हितकारी है। वै० निघ।

ककुत्,-द् ajáta-kakut,-d-सं० पुं० A young bull whose hump is ot yet fully developed) वह युवा ड़ जिसका डील पूर्ण विकास को प्राप्त न आ हो।

तान् ajátán-सं० स्त्री० वह स्थान जहाँ रा न उगें। अथ०। सू० १३६। २। का० ६।

अज़ाद ãazáda-अ० पस्तक़ामत-फ़ा०। बौना, ठिंगना, छोटे कद का-हिं०। पिग्मी Pigmy -इं०।

अजात दन्तः ajátadantah-सं० त्रि० छः मास व्यतीत होने पर भी जिस बालक के दन्त न उगें, अर्थात् दन्तोद्भेद न हो उसे 'अजातदन्त' कहते हैं।

अजादनी ajádaní-सं० स्त्री० क्षुद्र दुरालभा। छोटा धमासा, जवासा। (A small species of prickly night-shade.) रा० नि० व० ४।

अजादुग्धम् ajádugdham-सं० क्ली० छागी (-ग) दुग्ध, बकरी का दुग्ध (Goat's milk.) वै० श०।

अजान ajána-हिं० वि० (१) अज्ञान, मूर्ख, निर्बोध, (Ignorant,simple,innocent.)। (२) अजायन। एक पेड़ जिसके नीचे जाने से लोग समझते हैं कि बुद्धि भ्रष्ट होजाती है। यह पेड़ पीपल के बराबर ऊँचा होता है और इसके पत्ते महुए कैसे होते हैं। इसमें लम्बे लम्बे फल लगते हैं।

अजानयः ajánayah-सं० पुं० } उत्तम अश्व,
अजानेयः ajáneyah-सं० पुं० } कुलीन घोटक, अच्छी जाति का घोड़ा। (A horse of good breed.) जयदत्तः।

अजानस ãajánasa-इजानस, जुअ़्लान। गोबरौंदा, गुबरौला, गोबरीला (एक प्रकार का कीड़ा जो गोबर में पैदा होता है)। A beetle found in dunghill or old cow-dung (Scarabeus or stercomarius copris.)

अजान्त्री ajántrí-सं० स्त्री० (१) नील वृद्धा। नीलवाँना, छागल वेंटे-बं०। A pot-herb convolvulus argenteus.) रत्ना०। पर्य्याय—नीलवृद्धा, नीलपुष्पी (नील अपराजिता), अतिलोमशा, नीलिनी, छागलान्त्री, अन्तः कोटरपुष्पी (र), वस्तान्त्री, वृद्धदारकः, (रा)। गुण—रस में कटु, कामलानाशक, वीर्य-

वर्द्धक तथा गर्भजनक है। रा० नि० व० ३।
(२) (Gmelina Asiatica or Rourea santaloides.) वृद्धदारक, विधारा। रा० नि० व० ३।

अजानिः ajánih-सं० पुं० (Without a wife, a widower.) रंडुआ।

अजानिकः ajánikah-सं० पुं० (A goat-herd.) गड़ेरिया, भेड़ बकरी पालने वाला।

अजापक्वम् ajápakvam-सं० क्लीं० पक्वघृत विशेष।

अजापञ्चकम् ajápanchakam-सं० क्लीं० यक्ष्मा रोग में प्रयुक्त होने वाला घृत। निर्माण-विधि-छागीघृत ४ श०, छागविड्रस ४ श०, छागीदुग्ध ४ श०, छागीदधि ४ श०, छाग मूत्र ४ श०, इनको एकत्रित कर उसमें ८ पल यवक्षार डालकर यथा विधि पाचन करें। बस इसी को "अजापञ्चक" कहते हैं। च० द० यक्ष्मा-चि०। भैष०।

अजापञ्चक घृतम् ajápanchaka-ghritam-सं० क्लीं० छाग। पुरीष रस, छाग मूत्र, छाग दुग्ध, छागदधि, इनमें घृत सिद्ध कर सेवन करने से राजयक्ष्मा, श्वास तथा खाँसी दूर होती है।

अजापयः ajápayah-सं० क्लीं० (Goat-milk.) छाग दुग्ध, बकरी का दूध। चा० उ० १३ अ०।

अजापाद ajápáda-सं० पञ्जीरी, मिरची। इन्दुपर्णी, उत्पलभेद-सं०। एनिसोकिलस कार्नोसस (Anisochilus carnosus) -ले०। इं० मे० मे०। देखो—सीता की पञ्जीरी।

अजाप्रिया ajápriyá-सं० स्त्री० भाड़बेरी-पं०। बदरी वृक्ष, बेर-हिं०। बालक प्रिया, भू-कर्कट, सूक्ष्म-फल-सं०। मल्ह, बेर, झाड़ी-यू० पी०। ज़िज़िफस् नुम्मुलेरिया (Zizyphus nummularia,), ज़ि० माइक्रोफाइला (Z. Microphylla)-ले०। आ० फ० व०।

अजाफ़ ăajáfa-अ० इन्द्रायनका फल। इ,न्ज़ल -फ़ा०। (Citrullus colo. Schrad.)

अजाम ăajáma-अ० बड़ा बन चिड़िया, चमगादड़, चमगुदड़ी(?)

अजामांसम् ajámánsam-सं० क्ली० (Goat flesh) छाग मांस, बकरी का मांस। गुण—लघु, स्निग्ध, किञ्चित शीतल, मधुर, पुष्टिकारक, बलकारक तथा है। वै० निघ०।

अजामूत्रम् ajámútram-सं० क्लीं० (goat's urine) छागीमूत्र, ब... गुण—रस में कटु, उष्ण वीर्य, ... विषघ्न, एवं प्लीहोदर, कफ, श्वास, शोथ (सूजन) नाशक और लघु है। च० १५। च० उ० २४ अ०।

अजामेदः ajámedah-सं० क्लीं० (fat) छागवसा, बकरे की चर्बी। ... ३ अ०।

अजायन ajáyana } -हिं० संज्ञा पुं०
अजान ajána } बराबर होने वाले
तीय वृक्ष का नाम है। इसके पत्ते ... के समान किन्तु इससे बारीक और ... हैं। इसमें फलियाँ लगती हैं जो ... बराबर मोटी और प्रायः गज़ तक लम्बी ... इसकी छाल रक्तशोधक है।

अज़ायह ăazáyah-अ० सारा (... क़िस्म का एक जानवर है)। A lizard.

अजार ajára-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०] रोग। बीमारी। (A disease).

अज़ार ăazára-अ० अज़्‌वह, (छोटी या बड़ी माई), भाऊ। (T. Gallica, Linn.)

अजारम् ăajárama-अ० मज़बूत पुरुष शिश्न। (Strong-ne... human penis).

अजारह ăajárah अ० खजूरभेद। (... of Date).

azáráqi–अ० कुचिला । नक्स (Nux vomica), वामिट नट mit-nut)–लें० । मु० अ० । म०

सिरिया azáráqi-Syria–इं० कु- । (Nux vomica) फा० इं० ।

azálata–अ० पिस्सू (केक)–हिं० । (A flea)–इं० ।

कारत azálahe-bakárata अ० खुद को नष्ट करना । रप्चर ऑफ़ दी । (Rupture of the Hy-)–इं० ।

ajá-vayah–सं० पु० वह ओषधियाँ बकरियाँ खाती हैं । अथ० । सू० ७ । १५। ८ ।

ajávikam–सं० क्लो० (Small le) क्षुद्र पशु ।

ajávit–सं० क्लो० छाग विट्, बकरे की । Goat's Fæces (excre- ts) । फा० इं० १० भा० ।

गिड्स ajáve seeds, *Percival.* अजवाइन । फा० इं० २ भा० ।

ajáshringí–सं० स्त्री० मेढ़ासिंगी, ङी । (Asclepias Geminata, *b.*)

ajáshvam–सं० क्लो० (Goats horses) बकरे और घोड़े ।

āajáhana–अ० साही–हिं० । रत–फ़ा । पॉक्युपाइन (A Porcu- e), हेज हॉग (Hedge-hog)–इं० ।

ajáhvá–सं० क्लो० (Carpopogon riens.) केवाँच, आत्मगुप्ता । आला- –थे० । अ० टी० भ० । देखो–अजहा ।

āazáh–अ० कण्टकयुक्त बदर वृक्ष, जैसे– अथवा बबूर वृक्ष । (Any spinous e).

ajákshí–सं० स्त्री० अञ्जीर A (Ficus oppositifolia, *Roxb.*) नि० घ० ११ ।

अजाक्षीरम् ajákshíram–सं० क्लो० छागी दुग्ध, बकरीका दूध (She-goat milk). वै० श० ।

अजिका ajiká–सं० स्त्री० (१) रामतुलसी, वन तुलसी (Ocimum gratissimum, *Linn.*) इं० मे० मे० । (२) (A young she- goat) जवान बकरी ।

अ'जिज़ āajiza–अ० विवशहोना, निर्बलता, असक्ता हिं० । डेबिलिटी (Debility) –इं० ।

अजित ajita- हिं० वि० [सं०] अपराजित । जो जीता न गया हो ।

अजित तैलम् ajita-tailam–सं० क्लो० मुलेठी का कल्क ४ तो०, आमले का रस ६४ तो०, गो दुग्ध ६४ तो०, तिल तैल मिलाकर तैल सिद्ध करें । गुण—इसके सेवन करने से दृष्टि विमल होती है । भैष० र० नेत्र० रो० चि० । वङ्ग० सें० स० नेत्र० रोग० चि० ।

अजित प्रसारणी तैलम् ajita-prasáraní-tai- lam–सं० क्लो० शरत्कालके सुपक्व प्रसारणी मूल ४०० तो०, दशमूल, बरियारा (बला), अश्व- गंध, शतावर, पियाबाँसा, गोखरू, रास्ना, कौंच- बीज, गुरुच, पुनर्नवा प्रत्येक पृथक् पृथक् ४०० तो० । कुलथी, बदरीमूल, यव प्रत्येक २२६ तो० कूटकर छः द्रोण (९६ सेर) जलमें क्वाथ करें,जब १ द्रोण शेष रहे तब उसमें तिल तैल ४ सेर,मांसरस ४ सेर,दही ४ सेर, गोदुग्ध १६ सेर, शुक्त ४ सेर, दही का पानी ४ सेर, मूलीका रस ४ सेर, काँजी ४ सेर, तथा रास्ना, सौंफ, अगर, देवदारु, मजीठ मुलहठी, महुआ पुष्प (मधुक पुष्प), नख, नेत्र- वाला, बालछड़, बच, सेंधानोन, चित्रक, जवा- खार, सरल, दारुहल्दी, वायविडङ्ग, भिलावाँ, पुष्करमूल, कूट, पीपलामूल, चव्य, मेदा, महा- मेदा, जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीर काकोली, मिर्च, दालचीनी इलायची, काकड़ासिंगी, कचूर, नख़ो, गजपीपल, स्पृक्का, मैनफल, सोंठ, केशर, चन्दन, तेजपात, गोखरू, अदरख, कंकोल, ऋद्धि वृद्धि, हल्दी, कमल, अजवायन, जीरा, अजमोद,

नागरमोथा, सिंघाड़ा, नख, पीपर, इन्हें २-२ तोला लेकर, कूट बारीक चूर्ण कर उक्त तैल में मिलाकर पकाएँ। सेवन विधि तथा गुण—इसके सेवन से पंगुरोग वाले, विसर्प, स्नायु, संकोच, खंज, शिरा संकोच, गात्र भग्नता, गति की मन्दता, मन्यास्तम्भ, भुजा, कंठस्तम्भ, एकांगवात, सर्वांगवात, लकवा, सोजा, खुजली, हनुग्रह, महावात तथा जिनके अंग जर्जरित हो गए हों, कटि, कपाल, आनुस्थित वायु, संधियों का मारजाना, शिरास्तम्भ, स्नायु, अस्थि, सन्धि, उरु, इनमें स्थित वायु, शूल, शिरोशूल, गात्रशूल, एकांग तथा सर्वांग वात, स्त्रियों का योनिशूल जो वातरक्त के प्रकोप से हुआ हो, पुरुषों का शुक्रक्षय, मेढ्रशूल, विकलता, इन्द्रीक्षीणता, गूँगापन, स्मृतिविभ्रम, तुतलाना, निरुद्ध वाणी, स्त्रियों की सन्तान हीनता, आर्तव, शुक्र का दूषित होजाना, इन समस्त विकारों को दूर करते हुए मनुष्य को स्फूर्ति प्रदान होताहै।

इसके सिवाय, आध्मान, प्रत्याध्मान, अधिक डकार का आना, जृम्भा, कर्णनाद, पत, वातोन्माद, अपस्मृति, आक्षवात, गृध्रसी, अस्सी प्रकार के वातरोग, मिश्रित वात, कफ के रोग, इसके अभ्यंग, पान और नस्य से दूर होते हैं तथा जिनके अंग सिकुड़ गए हों उन्हें प्रसारित करता है। उर्ध्वगत, अधोगत समस्त वात रोगों को यह *अजितप्रसारणी नामक तैल शीघ्र दूर* करता है। यं० से० सं० वातव्या० चि०।

अजितागदः ajitágadah-सं० क्लो० वायविडंग, पाठ (निर्विषी हरिद्वारे), आमला, हड़, बहेड़ा, अजमोद, हींग, सोंठ, मिर्च, पीपल, चित्रक, लवणों का सूक्ष्म वर्ग चूर्णकर शहद मिला कर गाय के सींग में भर कर १२ दिन तक बंद रक्खें। प्रयोग—इसके सेवन से स्थावर तथा जंगम विष दूर होते हैं। भै० र० विषाधिकारे।

अजितात्मन् ajitátman } -सं० पुं० (One-
अजितेन्द्रिय ajitendriya } who has not subdued his mind or his senses.) वह मनुष्य जिसके आत्मा एवं इंद्रियाँ वश में न हो।

अज़िन azina-अ० जिस मनुष्य के सर्वदा सरल स्राव होता हो।

अजिनम् ajinam-सं० क्ली० } (1
अजिन ajina-हिं० संज्ञा पुं० } (The hairy skin of any an[imal]) श्रम०। (२) चर्म, खाल, [मृ]गछाला ब्रह्मचारी आदि के धारण करने के मृग और व्याघ्र आदिका चर्म। ३ क्का०।

अजिनपत्रा ajina-patrá-सं० [(A] bat.) चमगादड़-हिं०। अ[जि]नपत्रिका (टी)-सं०। बादु[र] -बं०। रा० नि० व० १९।

अजिन पत्रिका ajina-patrik[á] (१) (A bat) चर्मचटी, -हिं०। हे० च०। (२) (An ow[l]) उलूक पक्षी, उल्लू।

अजिनपत्री ajina-patri-सं०स्त्री० (... जतु (-तू-) का, चमगादड़, चामचिकी-बं०। र० नि० व० १९।

अजिन योनिः ajina-yonih-सं० ...
अजिन योनि ajina-yoni-हिं० ... हरिण, मृग (A deer, An Ant[elope]) प० मु०।

अजिन्नह् ajinnah-अ० (ए० व०, ...) (ब०व०) गर्भ, भ्रूण, जरायुस्थ [शिशु] शिशु जो माताकी उदरमें हो। फीटस [(Foetus)], एम्ब्रयो Embryo-इं०।

नोट—अंगरेज़ी में ६ मास से ... वाले भ्रूण को एम्ब्रयो और इससे अधि[क] को फ़ीटस कहते हैं।

अजिप्टिशो इण्डिगोप फ्लेञ्ज agyp[tian] Indigop flange-जर० श्वेत लिनी-सं०। नील बं०। (Indi[gofera] Argenta) इं० मे० मे०।

अज़ीब āaziba-अ० वह जल जिस[में] ... जमी हो।

अजिरः ajirah-सं० पुं० क्ली० } (१)
अजिर ajira-हिं० संज्ञा० पुं० } आँगन

og (Rana tigrina). (२) , *Air.* वात। (३) Any object nse विषय (इन्द्रिय) । (४) The तन, शरीर। (५) A court-yard. सहन। मर्त्यत्र मे० रत्निक।

azirata-अ० (ए० व०), अज़िरात o) मल, विट्, गूह, पाखाना (मनुष्य Fœces, Excrement.

azirata-अ० मूलाधार, गुदा और वृ-मध्यकी रेखा (सुरट),वह रेखा जो वृषणोंके ाग से लेकर गुदा तक है; सेवनी, सीवन। उच्चारण इ..ज़रित और सही है। पेरीनियम् neum, रैफ़ी Rhaphe-इं०।

jihma-सं० त्रि० (Straight) सीधा।

ajihmagah-सं० पुं० (An w) तीर, बाण।

jihvah } -सं० पुं० मण्डूक, ajihmah } मेंडक,भेक। A Frog ana tigrina) त्रिफा०।

ji-अ० सूखे छिल्के जिनको पकाकर हैं।

s ajigarttah-सं०पुं० (A ser-t) सर्प, साँप।

āajiza-अ० क्लीब, नपुन्सक, नामर्द, थुन न कर सके (Impotent).

aziza-अ० देग के उबलने की आवाज़। गरजने की आवाज़, मेघशब्द। वर्तमान ीय परिभाषा में हाँप कर श्वास लेने तथा का शब्द। ((Snoring).

āazizi-अ० यौगिक सुर्मा (Compnd antimony).

क कॉमून azedarak commun-० बकायन, महानिम्ब (Melia azeda-ch) इ० मे० मे०।

क मीलिया azedarach, melia, n.-ले० बकायन। (Common ad tree) इ० मे० मे०।

इ् āazitah-अ० रोग विशेष जिसमें मैथुन काल में वीर्यपात समय मल निस्सरित हो जाता है।

अजीन āajina-अ० ख़मीर, ख़मीरी आटा। गुँधा हुआ आटा। डो (Dough)-इं०।

अज़ीमा azímá-अ० क्रु० तहव्वुज, यर्म रिख्व -अ०। शिथिल सूजन, ढीली सूजन-हिं०। अडीमा (Œdema)-इं०।

अज़ीमाटेट्राकैन्था azima tetracantha, *Lam.* -ले० कुण्डली-सं०। कण्ट-गूरकामाई -हिं०। त्रिकण्ट जड़ी-यं०। अज़ीमा टेत्रा कैन्था-ले०। इं० मे० मे०। फा० इं० २ भा०।

अज़ीमा टेमाकैन्था azima tobracantha, *Lam.*)-ले० कुण्डली-सं०। कण्टागूरकामाई-हिं०। त्रिकण्ट-अति-यं०। सुक-पात-द०। सुङ्गेली-ता०। तेल्लउपी-ते०। मेमो०। इ० मे० मे०। फा० इं० २ भा०।

अज़ीर āazira } -अ० क़ु०,तुरियून (Di-अज़ीरन āazirana } anthus anatolicus, *Boiss.*)

अजीरन ajirana-हिं० संज्ञा पुं० दे० अजीर्ण।

अजोरु ajoru-कों० हस्त शुंडी-हिं०। सूर्यावर्त्त, श्री हस्तिनी-सं०। हीलिओट्रॉपिअम् इण्डिकम् (Heliotropium indicum), ही. कॉर्डिफोलिअम् (H. cordifolium)-ले०। हीलिओ ट्रॉप (Helio-trope)-इं०। इं० मे० मे०।

अजीर्ण ajírṇa-सं० त्रि०, हिं० वि० (Undigested) अपक।

अजीर्णम् ajirṇam सं० क्लीं० } (१) अपाक अजीर्ण ajirṇa-हिं० संज्ञा पुं० } रोग विशेष, अजीर्णिः ajirṇih-सं० स्त्रीं० } अपच, अध्यसन, बदहज़मी—हिं०। ज़ुअ्फ़ हज़्म, फ़सादुल् हज़्म, सूअ्हज़्म-अ०। हज़्म का ज़ईफ़ या कमज़ोर होना, हाज़्मा की कमज़ोरी, खाना अच्छी तरह हज़्म न होना, बदहज़्मी, ख़राबिये हज़्म-उ०। इण्डाइजस्चन (Indigestion), डिस्पेप्सिया (Dyspepsia-इं०।

अजीर्ण की निरुक्ति—जिस रोग में अन्न

पचे नहीं, अपितु जल जाय उसको अजीर्ण कहते हैं। भा० म० ए० १ भा० अ० अ० मा०।

प्रायः पेट में पित्त के बिगड़ने से यह रोग होता है जिससे भोजन नहीं पचता और वमन, दस्त और शूल आदि उपद्रव होते हैं। आयुर्वेद में इसके छः भेद बतलाए हैं:—

१—आमाजीर्ण जिसमें खाया हुआ अन्न कच्चा गिरे।

२—विदग्धाजीर्ण जिसमें अन्न जल जाता है।

३—विष्टब्धाजीर्ण—जिसमें अन्न के गांठे या कंडे बँधकर पेट में पीड़ा उत्पन्न करते हैं।

४—रसशेषाजीर्ण जिसमें अन्न पतला पानी की तरह होकर गिरता है।

५—दिनपाकी अजीर्ण जिसमें खाया हुआ अन्न दिन भर पेट में बना रहता है और भूख नहीं लगती है।

६—प्रकृत्याजीर्ण या सामान्याजीर्ण जो सदैव स्वाभाविक रहे।

डॉक्टरी में इसके दो भेद मानते हैं—(१) उग्र अजीर्ण (Acute dyspepsia) और (२) पुरातनाजीर्ण (Chronic dyspepsia). पुरातनाजीर्ण के पुनः तीन भेद होते हैं—(१) आमाशयविकार जन्य अजीर्ण (Atonic dyspepsia), क्षोभजन्याजीर्ण (Irritative dyspepsia) और वाताजीर्ण (Nervous dyspepsia).

अजीर्ण निदान।

ईर्षा (पराए धनधान्यादिको देखकर जलना), डरना, क्रोध करना इन कारणों से व्याप्त तथा लोभ, शोक, दीनता इन कारणों से पीड़ित और दूसरों के शुभ कामों को बुरा समझने वाले मनुष्यों का किया हुआ भोजन भली भांति नहीं पचता है। ये अजीर्ण के मानसिक कारण हैं।

शारीरिक कारण ये हैं—

अत्यन्त जल पीने से, विषम (असमय वा न्यूनाधिक) भोजन करने से, मल-मूत्रादि के वेग रोकने से, दिन में सोने से, रात्रि में जागने से, इन कारणों से भोजन के समय यदि प्रकृति अनुकूल, लघु तथा शीतल पदार्थ सेवन करें तो भी अन्न भली प्रकार नहीं पचे [illegible] कहते हैं।

जो लोभी मनुष्य जिह्वा के वश समान बेप्रमाण भोजन करते हैं [illegible] का कारण अजीर्ण रोग शीघ्र [illegible]

माधवः।

अजीर्ण के लक्षण

(१) आमाजीर्ण—यह [illegible] होता है। इसमें देह का भारीपन, कपोल व नेत्रगोलक में सूजन, [illegible] रस खाया गया हो उसी की [illegible] लक्षण होते हैं।

(२) विदग्धाजीर्ण—यह पि[illegible] होता है। इसमें भ्रांति, तृष्णा, [illegible] प्रकार की पित्तज पीड़ा, धूएँ [illegible] भाप, पसीना आए तथा दाह [illegible] होते हैं।

(३) विष्टब्धाजीर्ण—यह [illegible] होता है। इसमें रोगी को शूल, [illegible] नाना प्रकार की वातज पीड़ा, मल [illegible] वायु का न निकलना, पेट का अकड़[illegible] में मोह और शरीर में पीड़ा, ये [illegible] होते हैं।

(४) रसशेषाजीर्ण—इसमें हृदय में जड़ता और देह में भारीप[illegible] माधवः। वा० नि० १२ अ०।

नोट—दिनपाकी तथा प्रकृत्याजीर्ण अजीर्ण के भेदों के अन्तर्गत वर्णित।

अजीर्ण के उपद्रव

अजीर्ण रोगी के बेहोशी, प्रलाप, से पानी का आना, देह शिथिल होना, ये सब उपद्रव होते हैं। [illegible] हुआ अजीर्ण मनुष्य को मार भी [illegible]

नोट—अग्नि मन्द होने ही से ग्रहणी पैदा होती है अर्थात् अधिक अग्निमान्द्य और अजीर्ण रोग इसी की गणना ग्रहणी में होने लगती [illegible]

उपरोक्त आम, विष्टब्ध तथा विदग्ध[illegible] विसूची (हैजा), अलसक और [illegible]

को भी उत्पत्ति होती है। मा० नि०।
रसा–मन्दाग्निवत्।

ण्टकरसः ajirna-kntaka-rasah
पुं० अजीर्ण नाशक योग विशेष।
द्ध पारा, बच्छनाग, गन्धक प्रत्येक तुल्यांश,
समान काली मिर्च लें, फिर कंटकारी के
अथवा क्वाथ में भावना देते हुए २१ बार
करें। मात्रा—२ रत्ती। गुण—यह सभी
के अजीर्णों को नष्ट करता है। यो०
चि० सा०, वै० क०, र० सं०,
सा०, र० सि०, र० रू० सं०, र०
ल०, र० चि०, र० ध०, र० म०,
०, नि० र०, चि० र०, र० सु०, वै०
भै० र०, र० (मा०), र० को०, र०
पो०, वै० चि०, र० का०, रसायन०
मा०धि०, चि०क०, र० क०, भा० प्र०,
र्णाधिकारे० ग० रा० (अग्निकुमारः)।

ण्टक वटी ajirna-'antaka-vati
स्त्री०—शुद्ध पारा, बच्छनाग, गन्धक
क समान भाग, सबके बराबर सुहागा
मब को मिश्रित कर २१ बार नीबू के रस
भावना दें, फिर चने प्रमाण गोलियाँ
एँ। गुण—यह अजीर्ण तथा अलसक
र को दूर करती है। यो० म०।

ण्टकोरसः ajirna-kantako-rasah
० पुं० सोहागा भूना, पीपल, बच्छनाग,
रक प्रत्येक समान भाग लें, और काली
सोहागे से द्विगुण लें, पुनः नीबू के रस
ोटकर मटर प्रमाण गोलियाँ बनाएँ।
—यह रस अजीर्ण की शान्ति, जठराग्नि
वृद्धि करता और कफ के रोगों का नाश करता
मात्रा—१–२ गोली। यो० म०, भा० प्र०,
क० ल०, रसायन० सं०, वै० र०,
र्णाधिकारे। नि० र०, र० रा० सु०,
ट रत्नाकरे, रसराजसुन्दरे चास्य शुद्धो-
ति नाम।

कालानलोरसः ajirna-kálánalo-ra-
h–सं० पुं० शुद्ध पारा, गन्धक, प्रत्येक
८ तो०, लोहा, ताँबा, हरताल, बच्छनाग,
तूतिया, बंग, लवङ्ग, सुहागा, दन्तीमूल और
निसोथ का चूर्ण प्रत्येक ४ तो०, अजमोद,
अजवाइन, मज्जी, जवाखार, और पाँचो नमक,
प्रत्येक २ तो० इनका चूर्ण करके २० बार
अदरख के रस की और पीपल, पीपला-
मूल, चव्य, चित्रक तथा सोंठ के क्वाथ की १०
और गिलोय के रस की १० भावना दें। पुनः
सब के आधा भाग काली मिर्च मिला मर्दन
कर चना प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। गुण—यह
प्रत्येक अजीर्ण के विकार को शीघ्र दूर करता है।
र० सु०, व० रा०, अजीर्णाधिकारे।

अजीर्णगजाङ्कुशः ajirna-gajánkushah
-सं० पुं० शुद्ध पारा, गन्धक, विडङ्ग, अजमोद,
बच्छनाग, सूरन, पुनर्नवा, पाँचो नमक, पञ्चकोल,
अम्लवेत, तीनों खार, अम्ली, हस्तिकर्णी, (एरंड
की जड़ की छाल), कालीमिर्च और हींग प्रत्येक
समान भाग लें, इसमें समुद्र लोन को भूनकर
मिलाएँ। सब का बारीक चूर्ण करके चित्रक,
पाठा और शरपुङ्ख के रस अथवा क्वाथ में पृथक
पृथक भावना दें। मात्रा–½ तो०। अनुपान–
अदरखका रस है। गुण—यह सम्पूर्ण अजीर्ण के
विकारोंको शीघ्र दूर करता है। र० क० यो०।

अजीर्णजरणः ajirna-jaranah–सं० पुं०
कर्चूर। See Karchúra। वै० श०।

अजीर्णनाशनः ajirna nishanah–सं०क्ली०
पारे को भोजपत्र में बाँध के काँजी में लवण
डाल के तीन रात्रितक स्वेदन करें तो यह पारद
सुवर्ण आदि धातुओं के अजीर्ण को दूर करे।
जब तक अजीर्ण दूर न होजाय तब तक पाराभ्रमन
का अधिकारी नहीं है। योगतरङ्गिणी० पारद०
विधान०।

अजीर्ण बलकाला नलो रसः ajirna-bala-
kálá-nalo-rasah–सं० पुं० शुद्ध
पारा २ पल, शुद्ध गन्धक २ पल, लौह-
भस्म, हरिताल, विष, नीलाथोथा, वङ्गभस्म,
लौंग, सोहागा, दन्ती की जड़, निशोथ इन्हें
पृथक पृथक एक-एक पल लें; अजमोद, अज.

यादून, जवाखार, सज्जीखार, पञ्चलवण प्रत्येक चार चार तो० इन्हें एकत्र कूट पीस कपड़छान कर अदरक के रसकी २१–२१ भावना दें। इसी तरह पञ्चकोल, तथा सूरण की १० १० भावना दें। पुनः सब के अष्टमांश कालीमिर्च का चूर्ण मिलावें। सब को खरल कर चने प्रमाण की गोलियाँ बनायें। जब सूख जाय शीशी में बन्द कर रक्खें। गुण—इसके सेवन से दुस्साध्य अजीर्ण, आमवात, पाण्डु, प्लीहा, प्रमेह, दिग्भ्रम, प्रसूत, संग्रहणी, खाँसी, श्वास, पीनस, क्षय, अम्लपित्त, शूल, भगन्दर अर्श, चार प्रकार के उदर रोग, यकृत रोग तथा मन्दाग्नि को दूर करते हुए खाए हुए अन्न को प्रहर मात्र में भस्म करता है। यह गहनानन्द सिद्ध का कहा हुआ रस है। यू० रस० रा० सु० अजीर्ण० चि०।

अजीर्णहर महोदधि वटीः ajirṇahara-mahodadhi-vaṭih–सं० स्त्री० शुद्ध जमालगोटा बीज, चित्रक, सोंठ, लौंग, गन्धक, पारा, सोहागा, मिर्च, विधारा, विष इन्हें सम भाग ले चूर्ण कर इसी के रस की पन्द्रह भावना दें। इसी तरह नींबू के रस की तीन, चीते के रस की तीन तथा अदरख के रस की सात भावना देकर शुष्क कर जब गोलियाँ बनाने योग्य हो जाए तब मटर प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। गुण—इसके सेवन से शूल, अजीर्ण, ज्वर, खाँसी, अरुचि, पाण्डु, उदर रोग, आम रोग, पेट का गुड़गुड़ाहट, हलीमक, मन्दाग्नि तथा सब रोगोंका नाश होता है। यू० रस० रा० सु० अजीर्ण० चि०।

अजीर्णहर रसः ajirṇa-hara-rasah–सं० पुं० इस नाम के तीन योग हैं—

(१) रसेन्द्र मं०। (२) यो० र०, अजीर्णाधिकारे। (३) यो०र०,अजीर्णाधिकारे। सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, पारा, लवङ्ग, लवणत्रय (काला, सेंधा और बिड़ नमक), पीपल, गन्धक, सोंठ, कालीमिर्च प्रत्येक ४ तो०, बच्छनाग १ तो० मिलाकर बारीक चूर्ण कर लें। पुनः आक के दूध से ७ दिन तक भावना देते रहें फिर गजपुट में उसे [illegible] उसका धूँआ (भाप) बाहर [illegible] ठंडा होनेपर निकालें। फिर इसमें मिर्च, फिटकिरी प्रत्येक ४ तो० चूर्ण करें और शीशी में रख दें रखें सायंकाल खाने से खाया हु[आ] पच जाता है। इसको सेवन करने के एक पहर बाद पुनः [भूख] उत्पन्न करता है। यह [illegible]

अजीर्णारि रसः ajirṇāri-rasah [illegible] शुद्ध पारा, गंधक प्रत्येक ४ तो०, सोंठ, पीपल, मिर्च, सेंधानमक [illegible] भाङ्ग १६ तो० सब को मिला [कर] फिर नीबू के रस से घोटें। इसी [illegible] [illegible] सात भावना दें। मात्रा— गुण—शूल, प्लीहा, उदरशूल, [illegible] रोग को नष्ट करता है। र० [illegible] सं०, चि० क०, टी०, अजीर्णाधि[कारे]

अजीर्णी ajirṇi सं०त्रि०हिं० अजी[र्ण] [रो]गि रोग वाला (Indigestive Dyspeptic.) वै०श०।

अजीलह यतूस aajilah-yatusa [illegible] इर्देह–फ़ा०। (A lizard, a cha[meleon])

अजीव ajiva–हिं० संज्ञा पुं० [सं० ...] [...]oless) अचेतन (जीव तत्त्व से [रहित]) वि० बिना प्राण का। मृत।

अजीवनिः ajivanih–सं० स्त्री० (Death, Non-existence.)

अजीविजः ajivijah–सं० पुं० (Inorganic.)

अजुगा कैमीपाइटिस ajuga cha[maepitys] –ले० कमाफ़ीतूस–यु०। कुकरौंधा–

अजुगा डिस्टाइका ajuga dis[ticha] गोबरा।

अजुगा ब्रैक्टीओसा ajuga bra[cteosa] Wall.)–ले०। कौड़ी बूटी–[...] नीलकण्ठी–सम०। खुर-बदी–[...]

नाम निम्न प्रकार हैं, यथा—जनेश्रादम,
बावरी, नीलकण्ठी।
:—मि० वेडेन पॉवेल "अजुगा रेपटन्स"
(यूरोपीय भेद) को पश्चिमोत्तर में जने-
नाम से अभिहित करते हैं, पर मि०
(Stewart) सैलविश्रा प्रेनलेटा
(via anlati) को उक्त नाम प्रदान
। मेमा० । इं० मे० मां० ।
ajuz-अ० (ए० व०) अअज़ाज़
व०) सुरीन, चूतड़-उ०। नितंब,
हिं०। अर्वाचीन वैद्यकीय परिभाषामें यह
तेकास्थि (अज़् मुलअज़ुज़) के लिए प्रयोगमें
जाता है।बटक्स (Buttocks), नेट्स
tes) श्रोर सेक्रम (Sacrum)-इं०।
ıṭá-सं० भुँई-आमला, भूम्यामलकी।
yllanthus niruri.)
द āa(ái)zad-अ० भुजा, बाजू, डण्ड,
और स्कन्ध का मध्य। आर्म Arm-इं०।
वोमम् ajumoda-vomam-ते०
द। स० फा० इं०। Carum
ychotis) Roxburghianum,
h.
ajuliní-अज्ञात।
)ज़ āajúz-अ० (१) शराब, (२)
, (३) शेर, (४) गाय, (५) भे-
(६) बछड़ा, (७) बिच्छू, (८) घोड़ा,
कुत्ता, (१०) ऊँटनी, (११) हथिनी,
) एक हवा का नाम है, (१३) निरक
१४) एक प्रकार का खाना भी है।
) पीरज़ाल-फ़ा०। बुड्ढी स्त्री, बुढ़िया
।
ıjújá-हिं० संज्ञा पुं० [देश०] बिज्जू
ड का एक जानवर जो मुर्दे खाता है।
út-अ० यह यूनानी शब्द अज़ूट का अरबी-
ख्द है(जिसका अर्थ प्राण-नाशक है)। यह
ोजन का पर्याय है। नाइट्रोजन (नत्रजन)
[ऐसा वायव्य है जो वायु में ७७ प्रतिशत
जाता है। नाइट्रोजन Nitrogen-इं०।
ajúm-अ० ऊँट का बच्चा।

अजूरा ajúrá-बरब० अज्ञात।
अजूल āajúla-अ० बछड़ा। गोसालह-फ़ा०।
अज्रूह् āajúh-अ० खजूर भेद। यह मदीना
मुनव्विरा में होता है। (A kind of date).
अजेयः ajeyah-उ० पुं० } अर्जुन वृक्ष।
अजेय ajeya } (Terminalia arjuna *W. & A.*) मै० निघ०।
वि० न जीते जाने योग्य। जिसे कोई जीत न
सके।
अजेय घृतम् ajeya-ghritam-मुलहठी, तगर,
कूट, देवदारु, विसखपरा, केशर, पुलुश्रा, नाग-
केशर, कमल, मिश्री, वायविडंग, श्वेत चंदन,
तेजपत्र, प्रियंगु, रोहितघृत, हलदी, दारुहल्दी,
छोटी कटेली, बड़ी कटेली, शालिपर्णी, शालपर्णी,
बला, इनके काढ़ों से सिद्ध घृत प्रत्येक विषों
को दूर करता है। चक्र० सै० सं० विष० चि०।
अज़ेरान azarona-(Artemisia sibersiana, *Wall.*) माज़रीना। फा० इं० २
भा०।
अज़ेडिरैक्टा इण्डिका azadirachta Indica, *Kurs.*-ले० नीम-हिं०, द०, पं०,
म०। रात्रीप्रिय, मधुशीर्षकी-सं०। मोलिश्रा
अज़ेडिरैक्टा (Melia azadirachta)
-ले०। दी नीम (The Neem), मार्गोसाट्री
(Margosa tree), इण्डियन लिलैक
(Indian lilac)-इं०।
अजैडकं ajaidakam-सं०क्ली० (Goats and
rams) बकरे और भेड़ें। इं० मे० मे०। स०
फॉ० इं०।
अजैपाल ajaipála हिं० संज्ञा पुं० जमालगोटा
(Croton seeds).
अजैरू ajairú-नैपा० बगडा-म०, सं०, सो०
पी०।
अज़ोमूत azomúta } -गोश्रा० प्लेस्मोमम् मार्गो-
उज़ोमेत uzometa } र्टिफॉर्म (Plesmomum Margortiform, *Schott.*), एरम
मार्गो र्टिफॉर्म (Arum Margortiform,

Rxb.) फॉ० इं० । इं० मे० मे०। (डाइ-मॉक)

मदनमस्त या सूरण वर्ग

(*N. O. Irideae or Araceae*)

उत्पत्तिस्थान—बंगाल (रायबु०), मिनगढ़ (येय०), घरोता "जोयादेवस्त" (घूंग०); हिन्दुस्तान ।

उपयोग—गोवा में देशी लोग इसके बीज को कुचल कर दंतरोग में बरतते हैं। थोड़ी मात्रा में इसे रुई में रख कर खोलले दाँतों में भर देते हैं। इसमें नाडयस्य घोन तत्कान शमन होजाता है। इसी प्रयमादक गुण के कारण चाट लगने प्रथवा कुचल जाने प्रवृति में इसका बाह्य उपयोग होता है। (डाइमॉक)

नोट—देरी-सूरन प्रर्थात् पन्न सिल्वेटिकम् (Aram sylvaticum, *Rxb.*) या सिनैन्थेरिप्रस सिल्वैटिका (Synantherias sylvatica, *Schol.*).

अजोवान ajowan-यन्य० अजवाइन । Carum (ptychotis) Ajowan, *D. C.*

अजोवान ऑइल ajowan oil-इं०
अजोवान ऑलियम ajowan oleum-ले० }
अमानी तेल । देखो—अजवाइन ।

अज़ौफ़ ajoufa-अ०(बहु० व०), जौफ़ (ए० व०) शाब्दिक अर्थ जौफ़दार या खोखली वस्तु; किन्तु छेदनशास्त्र की परिभाषा में उस बड़ी नलीदार सिरा को कहते हैं जो यकृत के उरूगोदर भाग से निकलकर अज़ौफ़ साइद या नाज़िल दो भागों में विभाजित होती है। महासिरा-हिं०। (Vena cava)

नोट—प्राचीन कुस्तामुअइतिब्बा अज़ौफ़ को उदर तथा योनि के लिए भी प्रयोग में लाते हैं

अज़ौफ़अअ़ला ajoufa-aala अ० देखो—अज़ौफ़ साइद। (Superior vena cava).

अज़ौफ़ तहतानी ajoufa-tahtani-अ० देखो-अज़ौफ़ नाज़िल (Inferior vena cava).

अज़ौफ़ नाज़िल ajoufa-nazil-अ० अज़ौफ़ तहतानी । अधोगा महासिरा, प्राचीन छेदनशास्त्र की परिभाषा में सिरा का वह भाग जो यकृत के नीचे की ओर जाकर शाखाओं में विभक्त हो जाता है। इन्फ़ीरियर वेना केवा (Inferior vena cava)-इं०।

अज़ौफ़ फ़ौक़ानी ajoufa-foqani अज़ौफ़ साइद (Superior vena cava).

अज़ौफ़ साइद ajoufa-sáid अज़ौफ़ अअ़ला और अज़ौफ़ फ़ौक़ानी। ऊर्ध्व(-गा) महासिरा-हिं०। इसे प्राचीन छेदनशास्त्र की परिभाषा में उपरोक्त सिरा का वह भाग जो यकृत से ऊपर की ओर जाकर शाखाओं में विभाजित होता है। सुपीरियर वेना केवा (Superior vena cava) इं०।

टिप्पणी—प्राचीन हकीमगण सिराओं का उद्गम यकृत से मानते थे। वे उस भाग को जो यकृत के उत्पत्ति भाग से निकल कर वक्षउदरमध्यस्थ पेशी के ऊपर हृदय की ओर जाता है प्रर्थात् "अज़ौफ़ साइद" या कहते हैं। इसके प्रतिकूल सिरा को जो यकृत से निम्नभाग की ओर पृष्ठकशेरुका के सम्मुख होकर जाती है प्रधोगा महासिरा प्रर्थात् "अज़ौफ़ नाज़िल" वा अज़ौफ़ तहतानी" कहते हैं। परन्तु योरोपीय डॉक्टरगण चूँकि सिराओं का अन्त हृदय के दहिने भाग में मानते हैं। अतः उनके वर्णनानुसार दोनों सिराओं, यथा—"अज़ौफ़ साइद" और "अज़ौफ़ नाज़िल" का संगम होता है। सिरा सम्बन्धी अर्वाचीन डाक्टरी व प्राचीन वैद्यक मत के लिए देखिए सिरा।

अजंभ ajambha-सं० त्रि०, हिं० (Toothless) दंतहीन ।

अजंभः ajambhah-सं० पुं० (

...क, मेंडक। (२) The sun सूर्य। ...) Toothless state (of a ...ld) वह बालक जिसके अभी दाँत न ...ले हों।

...ah-सं० पुं० (१) छाग, बकरा (A ...goat)। भा० पू०। (२) स्वर्णमाक्षिक ...Ferri sulphuretum) सोनामक्खी। ...अ०। (३) उक्त नाम की औषधि विशेष, ...घ्दी (Asclepias geminata, ...ab.) च० चि० १ अ०।

...फ़ azáafa-अ० (१) (Double) ...र करना, ...देना। (२) (Weaken) ...बल करना, कमज़ोर करना।

...स, अह्लाम azghása-ahláma-अ० ...त्य कारक स्वप्न। असत्य या मिथ्या स्वप्न। ...फ्युजिङ्ग ड्रीम (Confusing dream) ...इं०।

...aazza-अ० दाँत से काटना। अज़्ज़, ...ग़, कद्म, नक्र, कस्व, लस्अ, नह्श और नक्ज़ ...भृति के अर्थ भेद विवरण प्रत्येक पशु के काटने ...ो अज़्ज़ और प्रत्येक विषधर जीवों के काटने ...ो रहश और कद्म, पक्षियों के काटने को नक्र, ...बिच्छू के डङ्क मारने को कस्व और सर्पदंशन को ...लस्अ, नह्श और नक्ज़ कहते हैं।

...ज़म ajzama-अ० (ब० व०), जज़्म (ए० ...व०) जुज़ामी, कोढ़ी-उ०। कुष्ठ रोगी, कुष्ठी, ...जिसकी अंगुलियों के पोरवे झड़ गए हों। लेप्रस ...(Leprous)-इं०।

...ज़म ajzama-अ० अजदअ्। नकटा, जिसकी नासिका कटी हो। नोज़क्लिप्ट (Nose ...clipt)-इं०।

...ज़ा ajzá-अ० (ब० व०), जुज़ (ए० व०) ...हिस्सम, हिस्से, टुकड़े-उ०। भाग, अंश, टुकड़ा -हिं०। पार्ट्स (Parts)-इं०। (२) अद्-...वियह्। औषधियाँ। ड्रग्ज़ (Drugs)-इं०।

...ज़ा अव्वलिय्यह ajzáa-avvaliyyah -अ० अर्कान। तत्व-हिं०। (Elements)

...ज़ाइयह् ajzáiyah-अ० अज़ाख़ानह्। दवाख़ानह्-उ०। औषधालय-हिं०। डिस्पेन्सरी Dispensary-इं०।

अज़्ज़ाजी ajzáji-अ० अज्जाई, मुदनी। दवा-साज़, अत्तार-उ०। औषध-निर्माता, औषध-विक्रेता -हिं०। अपाथेकरी Apothecary, केमिस्ट Chemist, ड्रगिस्ट Druggist-इं०।

अज़्ज़िफ़्तुल्बर्ग़न्दी azziftul-barghandi-अ० बर्गुण्डी पिच (Burgundipitch) -इं०।

अज़्ज़ाउस्सग़ीरह् ajzá-us-saghírah-अ० अवयवों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंश,अणु-हिं०। मॉलीक्युल्ज़ (Molecules)-इं०।

अज़्ज़ेमा ajzemá-अ० अग्ज़ेमा से अरबीकृत शब्द है। नार फ़ारसी, आतशक, जलनदार फुन्सियाँ--उ०। एक्ज़ेमा (Eczema) इं०

अज़्ज़ैबक़ुल् क़ुम् लियाई azzaibaqul-qimúliyái-अ० धूसर चूर्ण, ख़ाकी सफ़ूफ़। ग्रे पाउडर (Grey powder)-इं०।

अज्झटः ajjhatáh-सं० स्त्री०(Phyllanthus niruri, Linn.) भुँई आमला, भूम्यामलकी, आमरा। भा० पू० १ भा० गु० व०।

अज्झलं ajjhalam-सं० क्लो० १-(A shield) ढाल। २ (A live coal) दहती का कोयला।

अज्झलः ajjhalah-सं० पुं० कोकिल, कोईल -हिं०। The black or Indian cuckoo (Cuculus).

अज़्द aazda-अ० (An arm) भुजा, बाहु। सहायक, सहायता करना (Helper).

अज़्दअ् ajdaá अ० नकटा, बूचा, वह व्यक्ति जिसकी नासिका कटी हुई हो। नोज़क्लिप्ट (Nose clipt) इं०।

अज़्दरान् azdarána-अ० शंखस्थल पर दो रगें हैं जो कर्ण और बाह्य चक्षुकोणके मध्य स्थित हैं।

अज़्दार ajdára-अ० (ब० व०), जद्र(ए० व०) दाग़, धब्बे, चिह्न। स्कार्ज़ (Scars) -इं०।

अज़्दिलाम azdiláma-अ० नासिका को मूलसे काट डालना।

अज़्दियाजिलनब्ज़ azdivájil-nabza-अ० मब्ज़ मितरक़्क़ी। नाड़ीमें एक ही बार दो गतियों (धमक, धपक) की प्रतीति होनी। डाइक्रॉटिज़्म (Dicrotism)-इं०।

अज़्दियाजिलबस्र azdivájil-basra-अ० एक वस्तु का दो दिखाई देना। डिप्लोपिया (Diplopia)-इं०।

अज़्दियाजिलहदब azdivájil-hadaba-अ० पलक के रोमों का दोहरा अर्थात् दो पंक्तियों में होना। नेत्र में रोमाधिक्य (परवाल) का होजाना।

अज्न āajna-अ० संधानित करना, ख़मीर करना, गूँधना, मानना, गूँधना-हिं०। निर्बलता के कारण पृथ्वी पर हाथ टेक कर उठना। फर्मेंट (Ferment), लीवेन (Leaven)-इं०।

अज्नास ajnása-अ० (ब० व०), जिन्स (ए० व०) जाति-हिं०। Genuses। देखो—जिन्स।

अजिनहह् ajnihah-अ० (ब० व०), जनाह् (ए० व०) शाब्दिक अर्थ पंख,पर,पक्षियोंके पंख। छेदन शास्त्र की परिभाषा में पृष्ठ के मुहरों के उस उभार या प्रवर्द्धन को कहते हैं जो उनके दोनों बग़लों पर स्थित होते हैं और जिन पर पशुकाओं के सिर जुड़ते हैं। पार्श्वत्यकूट, पश्चिम प्रवर्द्धन-हिं०। लेटरल प्रोसेस (Lateral process)-इं०।

अजिनहह् सग़ीरह् ajnihah-saghirah-अ० अजिनहह् कबीरह, वतदी,असफ़ीनी। जतुकास्थि, तितली स्वरूपास्थि-हिं०। स्फीनॉइड (Sphenoid)-इं०।

अज़्फ़ azfa-अ० व्रण पूरित होना, घाव भर जाना, क्षत का अंगूर ले आना। ग्रेन्युलेशन (Granulation)-इं०।

अज़्फ़र azfara-अ० साधारणतः उग्रगंध चाहे बुरी हो या अच्छी। विशेषण या संबन्ध द्वारा इसमें भेद किया जाता है अर्थात् इस शब्द का सम्बन्ध यदि किसी अच्छे या सुगन्धित द्रव्य से हो तो इससे कोई उग्र सुगन्धित द्रव्य अभिप्रेत होता है, यथा-मुश्क अज़्फ़र अर्थात् उग्र कस्तूरी और यदि बुरी और दुर्गन्धित वस्तु से हो तो उससे अभिप्राय दुर्गन्धि होती है।

अज़्फ़ान ajfána (ब० व०), ज़फ़(न) -अ० पपोटे, पलक। आई लिड्स (Eye-lids)-इं०।

अज़्फ़ार azfára-अ० (ब० व०) ज़ुफ़्र (ए० व०) नख चाहे मनुष्य या पशु का। नेल्ज़ (Nails)-इं०।

अज्ब āajba-अ० हुद्बतुल्वर्क। नितंबास्थि का वह भाग जो बैठने में लगता है। इस्कियल ट्युबरॉसिटी (Ischial tuberosity)-इं०।

अज़्बत azbata-अ० खेवड़ा, बाँयाँ (बायें) हस्त से खाने पीने और काम करने वाला।

अज़्बह् āazbah-अ० (ए० व०) (ब० व०), अज़्बात। जिह्वाग्र, जिह्वा या तीक्ष्णता।

अज़्बूतह् āazbútah-अ० चूँहा मादा (A she rat).

अज़्बाद azbáda-अ० झाग निकालना।

अज्म ajma-अ० एक ही प्रकार का भोजन करते उकता जाना। इतना अधिक भोजन कि क़रीब अजीर्ण के हो। सनक़ और इस भेद को "सनक़" में देखें।

अज़्म azma-अ० निराहार रहना, उपवास -हिं०। फ़ास्ट (Fast)-इं०।

अज़्म āazma-अ० (ए० व०), इज़ाम (ब० व०)। उस्तख़्वाँ-फ़ा०। अस्थि, हड्डी-हिं०। बोन Bone, ऑसिस osis (ए० व०), Bones बोन्ज़, ऑसा ossa (ब० व०) -इं०।

नोट—यह मूल धातुओं अर्थात् अवयवों से एक कठोर व श्वेत अवयव है जो अपनी कठोरता के कारण दोहरी नहीं हो सकती। वैद्यक के अनुसार यह वीर्य से उत्पन्न होती और शरीरका आधार बनती।

आयुर्वेद में अस्थि की उत्पत्ति मेद धातु से होती है नकि वीर्य से) विस्तार हेतु देखिए—
...म।

...अरीज़ ăazma-ăariza-अ० । चौड़ी अस्थि, कुकुन्दरास्थि, नितंबास्थि, त्रिकास्थि, चूतड़ की हड्डी। सैक्रम (Sacrum)-इं०।
...-त्रिकास्थि।

...अस्फ़ञ्जी ăazma-asfanji-अ० अज़्म ...ही (एथ्मॉइड) का वह पतला परत जिससे ...स्वभावस्था में इसके दोनों रन्ध्र बन्द रहते हैं। ...कास्थि चूड़ा। एथ्मॉइडल क्रेस्ट (Ethmoidal crest)-इं०।

...अस्फ़ञ्जी अअ़्ला-ăazma-asfanji-lá-अ० ऊर्ध्वशुक्तिका, ऊर्ध्वसीपाकृति। ...पिरियर कोंचा (Supeior concha), ...पिरियर टर्बिनेटेड बोन (Superior Turbinated bone)-इं०।

... अस्फ़ञ्जी अस्फ़ल ăazma-asfanji-asfal-अ० अज़्म मशाशी अस्फ़ल, अज़्म मुनद्दरह्, अज़्म-मुसत्वी। उस्तख़्वाँ सद्‌फ़ी, सीपमा हड्डी फ़ा०। अधः सीपाकृति, अधः शुक्तिका-हिं०। इन्फ़ीरियर कोंचा (Inferior concha), इन्फ़ीरियर टर्बिनेटेड बोन (Inferior Turbinated bone)-इं०।

...र अस्फ़ञ्जी मुतवस्सित्-ăazma-asfanji mutvassit-अ० मध्य सीपाकृति, मध्यशुक्तिका-हिं०। मिडिल कोंचा (middle concha), मिडिल टर्बिनेटेड बोन (Middle Turbinated bone)-इं०।

...क़मह् दुवह azma-qamah-duvah-अ० (Occipital bone) अस्मुवख़्ख़री, अज़्मुवख़्ख़र रास। उस्तख़्वाने क़फ़ा-फ़ा०। गुद्दी की हड्डी, शिर की पिछली हड्डी, पश्चात् कपालास्थि-हिं०।

...म क़ाइदतुद्दिमाग़ ăazma-qáaidatu-...

...bone)।

अज़्म क़ासिमुल् अन्फ़ ăazma-qásimul-anfa-अ० उस्तख़्वाँ परदहे-बीनी-फ़ा०। नासाफलकास्थि-हिं०। वोमर (Vomer), ऑस वोमर (os vomer) इं०।

अज़्म कुर्सनी ăazma-kursaní-अल्वली-अ०। वर्त्तुलक, मटराकार, गोलाकार-हिं०। पिसीफ़ॉर्म (Pisiform)-इं०।

अज़्म ख़ञ्जरी ăazma-khanjari-अ० ग़ज़्रूफ़ ख़ञ्जरी, ग़ज़्रूफ़ सैफ़ी उस्तख़्वाँ, ख़ञ्जरी-फ़ा०। ख़ञ्जरनुमा हड्डी-उ०। वक्रास्थि, दात्रवत, फणधर-हिं०। अन्सिफ़ॉर्म(Unciform), हैमेट बोन (Hamate bone)-इं०।

अज़्म नर्दी ăazma-nardí-अ० अन्नर्दी। मर्दुमा हड्डी-उ०। घनास्थि-हिं०। क्युबॉइड (Cuboid)-इं०।

अज़्म मशाशी ăazma-masháshí-अ० अज़्म अस्फ़ञ्जी। झर्झरास्थि चूड़ा हिं०। एथमॉइडल क्रेस्ट (Ethmoidal crest)-इं०। देखो-इज़ाम मशाशियह् तथा अज़्म अस्फ़ञ्जी अस्फ़ल इत्यादि।

अज़्म मुइय्नी ăazma-muăiyní अज़्मुश्श्कल् मुन्हरिफ़-अ०। विषमकोण चतुर्भुजास्थि-हिं०। यह उक्त स्वरूप की अस्थि पहुँचे की संधि की दूसरी पंक्ति की अस्थि और संधि की बाह्य ओर स्थित है। ट्रेपीज़ियम् (Trapezium)-इं०।

अज़्म मुक़द्दम रास ăazma-muqaddam-rás-अ० ललाटास्थि-हिं०। फ्रॉन्टल बोन (Frontal bane)-इं०। देखो-अज़्मुल् जब्हह्।

अज़्म मुवख़्ख़र रास-ăazma-muvakhkhar-rása-अ० पश्चात् कपालम्; पश्चात् कपालास्थि, गुद्दी की हड्डी-हिं०। ऑक्सीपीटल बोन (Occipital bone)-इं०। देखो-अज़्म क़मह् दुवह।

अज़्म मुवख़्ख़री ăazma-muvakhkhari-अ० पश्चात् कपालास्थि, गुद्दी की हड्डी-हिं०। ऑक्सीपीटल बोन (Occipital bone)-इं०। देखो-अज़्म क़मह् दुवह।

अज़्म रिकाबी āazma-rikábi-अ० अर्रिकाब। रकाबास्थि-हिं०। स्टेपस (Stapes)-इं०

अज़्म ला-इस्म लह āazma-láism-lah अ० उस्ताख़ाँ बेनाम। बेनाम, हड्डी-फ़ा०। अ (-बे-) नामास्थि-हिं०।

ऑस इन्नॉमिनेटम् (Os innominatum)-इं०।

नोट—इस अस्थि में यह तीन भाग होते हैं—अर्थात् (१) अज़्मुलख़ास्रह, (२) अज़्मुल्-अरिक, (३) अज़्मुल्आनह जिनको यथास्थान देखिए।

अज़्म लामी āazma-lámí-अ० अज़्मुल्लसान। उस्तख़ाने ज़ुबान-फ़ा०। ज़ुबान की हड्डी, यह हड्डी यूनानी अक्षर लामकी सी होती है और कंठाग्र जिह्वामूल में स्थित है। कण्टिकास्थि-हिं०।

ऑस हॉइड (Os hyoid)-इं०।

अज़्म वतदी āazma-vatadí-अ० अज़्मुल् वतद। उस्तख़ाने फ़ाइक़तुरिसाल-फ़ा०। करोटितलास्थि। अनूकास्थि-हिं०। स्फ़ीनॉइड बोन (Sphenoid bone)-इं०।

अज़्म शबियहबिलमइय्नी āazma-shabiyha-bilmaáiyni-अ०, अल्शबियह बिलमुन्हरिफ़। ट्रैपीज़ाइड (Trapezoid)-इं०।

अज़्म सिन्दानी āazma-sindání-अ० अस्सिन्दान। नेहाई, कर्णान्तरस्थ शूर्मिकास्थि-हिं०। इङ्कस (Incus) इं०।

अज्मह ajmah-अ० नैज़ार, नेस्ताँ-फ़ा०। दल-दल, फैलाव-हिं०। मार्श (Marsh)-इं०

अज़्मा āazmá-अ० मापभेद। यह सात औक़ियह या उनतीस तोला ८ मा० २ रत्ती (२९ तो० ८ मा० २ र०) के बराबर होता है। A measurement equal to 29 tolas, 8mashas & 2ratis.

अज्माअ āajmáa-अ० बहीमह, चौपायह-उ०। वह स्त्री जो शुद्ध बात न कर सके, गूँगी या हकली स्त्री-हिं०।

अज़्मान āazmána-अ० (अज़्म का द्विवचन) दो अस्थियाँ, किसी स्थानकी दो अस्थियाँ। अस्थिच्छेदशास्त्र की परिभाषा में यह शब्द ऐसे स्थान पर बोला जाता है जहाँ एक समान ... आती हैं। उदाहरणार्थ ... नासिका की दो अस्थियाँ और ... अर्थात् तालु की दो अस्थियाँ इत्यादि।

अज़्मिदह azmidah-अ० (ए० व०) लेप, अनुलेप-हिं०। ... te-इं०।

अज़्मुज़्ज़ौरक़ी āazmuzzou... अज़्म ज़ौरक़ी। नौकाकृति-हिं०। (Scaphoid)-इं०।

अज़्मुज़्ज़ौज azmuzzouja-अ० ... उस्तख़ाँ ... फ़ा०। ... बोन (Temporal bone)। ... अज़्मुस्सुदग़।

अज़्मुत्तर्कुवह āazmuttarqu... अ० उस्तख़ाँ चम्बरे... अक्षकास्थि, हँसली की हड्डी। ... होती है जो वक्ष के ऊपर ग्रीवामूल में ... क्लैविकल (Clavicle)-इं०।

अज़्मुद्दम्अ āazmuddamá-अ० ... अज़्म दम्अ, ... उस्तख़ाने ... फ़ा०। अश्रुवस्थि, हड्डी, जो अन्तरीय ... कोष में होती है। लैक्रिमल (Lacrimal)

अज़्मुर्रज़्फ़ह āazmurrazfah-अ० ... उस्तख़ाने ज़ानू-फ़ा०। ... -हिं०। पैटला (Patella)-इं०

अज़्मुल्अक़ब āazmul-āaqba-अ० उस्तख़ाने पाश्नह-फ़ा०। ... कूर्च-हिं०। कैल्केनियम (Os calcaneum), ऑस कैल्केनम (Os ...) हील (Heel)-इं०।

अज़्मुल्अजुज़ āazmul-āajuz-अ० अज्ब, अज़्मुल् अरीज़, ... सुरीन फ़ा०। त्रिकास्थि-हिं०। (Sacrum)-इं०।

अज़्मुल्अन्फ़ āazmul-anfa-अ० ... बीनी-फ़ा०। नासास्थि-हिं०। (Nasal bone)-इं०।

अज़ुद āazmul-āazuda–अ०
ने बाज़्-फ़ा० । प्रगण्डास्थि,बाहु–हिं० ।
(Aim), ह्युमरस (Humerus)
।

आनह् āazmul-āānah–अ०
स्थि, पेड़ की हड्डी–हिं० । ऑस प्युबिस
s pubis)–इं० ।

उस्‌उस् āazmul-āusāus–अ०
स्‌उस् । उस्तख़ाने दुम–फ़ा० । दुम्ची की
उ० । गुदास्थि, पुच्छास्थि, चञ्चवस्थि
। कॉक्सिक्स (Coccyx)–इं० ।

कअ्‌ब āazmul-kaāba–अ० अल्कु-
। उस्तख़ाने बुजूल–फ़ा० । टखनेकी हड्डी
। अस्ट्रागेलस (astragalus)–इं० ।

कतिफ़ āazmul-katif–अ० अल्लोह् ।
ख़ाने शानह्–फ़ा० । स्कंधास्थि, अंसफ-
हिं० । स्केपुला (Scapula)–इं० ।

फ़मह्‌दुव्वह āazmul-qamah-
vvah–अल्मुवख़्ख़री, अज़्‌म मुवख़्ख़र राम
० । उस्तख़ाने कफ़ा–फ़ा० । पश्चात् कपा-
स्थि, पश्चात् कपालम्–हिं० । ऑक्सीपीटल
(Occipital bone)–इं० ।

क़स्‌स् āazmul-qassa-अ० उस्तख़ाने
ह्–फ़ा० । वक्षोऽस्थि, उरोऽस्थि, उरः
कम्–हिं० । स्टर्नम (Sternum)–इं० ।

ल् क़िह्‌फ़ āazmul-qihfa–अ०
मुल्याफ़ोख़, अल्जिदारी । उस्तख़ाने
हे सर–फ़ा० । पार्श्विकास्थि,पार्श्विक कपा-
–हिं० । पेराइटल बोन (Parietal-bo-
)–इं० ।

ल्‌जन्ब āazmul-janba–अ० शङ्खा-
–हिं० । देखो-अज़्‌मु‌स्सु‌दग़ । (Tem-
ral bone).

ल् जब्हह् āazmul-jabhah–अ०
जब्ही,अज़्‌म मुक़द्दम राम । उस्तख़ाने पेशानी
० । ललाटास्थि–हिं० । फ्रॉण्टल बोन
Frontal bone)–इं० ।

ल् फ़ख़िज़ āazmul-fakhiz–अ०
फ़ख़ज़् । उस्तख़ाने रान–फ़ा० । उर्वस्थि
हिं० । फ़ीमर (Femur)–इं० ।

अज़्‌मुल् फ़ाइक़ āazmul-fāiqa–अ० देखो–अज़्‌म लामी । कंठिकास्थि-हिं० । (Os-hyoid.)

अज़्‌मुल् मशाशियुल् अस्फ़ल āazmul-mashāshiyul-asfal–अ० अल्क़ौनुल् अस्फ़ल,अज़्‌म अस्फ़ञ्जी अस्फ़ल । सीपीनुमा हड्डी –उ० । अधः शुक्तिका, अधः मांसाकृति–हिं० । इन्फ़ीरियर टर्बिनेटेड बोन (Inferior Turbinated bone)–इं० ।

अज़्‌मुल् माक़ āazmul-māqa–अ० उस्तख़ाने गोशहे चश्म –फ़ा० । देखो—अज़्‌मुद्दम्अ अश्रुवस्थि–हिं० । (Lacrimal.)

अज़्‌मुल् मित्‌रक़ी āazmul-mitraqi–अ० अल्मित्‌रक़ह् । मुद्गरास्थि–हिं० । मालिअस (Malleus)–इं० ।

अज़्‌मुल् मिस्‌फ़ात āazmul-misfāta–अ० अज़्‌म मशाशी । छलनीनुमा हड्डी–उ० । झर्झरास्थि, बहुछिद्रास्थि–हिं० । इथ्मॉइड बोन (Ethmoid bone)–इं० ।

अज़्‌मुल् याफ़ुख़ āazmul-yāfūkha–अ० तालवस्थि, पार्श्विकास्थि–हिं० । देखो—अज़्‌मुल क़िह्‌फ़ । (Parietal bone.)

अज़्‌मुल्‌वज्‌नह् āazmul-vajnah–अ० उस्तख़ाने रुख़्सार–फ़ा० । कपोलास्थि–हिं० । (Cheek bone).

अज़्‌मुल् वतीरह āazmul-vatīrah–अ० अज़्‌म क़ामिमुल् अन्फ़, अल्मेकअ्‌ह् । नासा-फलकास्थि, नासावंश–हिं० । ऑस वूमर (Os vomer), वूमर (Vomer) –इं० ।

अज़्‌मुल् वरिक āazmul varika–अ० उस्तख़ाने निशिस्तगाह–फ़ा० । कुकुन्दरास्थि –हिं० । ऑस इस्कियम (Os ischium), इस्कियल बोन (Ischial bone)–इं० ।

अज़्‌मुल् हजबह āazmul-hajabah–अ० सर उस्तख़ाने निशिस्तगाह–फ़ा० । कुकुन्दर-पिण्ड–हिं० । इस्कियल ट्युबरॉसिटी (Ischial tuberosity)–इं० ।

अज़्म रिकाबी āazma-rikábi-अ० अस्किाब। रकाबास्थि-हिं०। स्टेपस (Stapes)-इं०

अज़्म ला-इस्म लह āazma-láism-lah अ० उस्तख़ाँ बेनाम। बेनाम, हड्डी-फ़ा०। अ (-बे-) नामास्थि-हिं०।

ऑस इन्नोमिनेटम (Os innominatum)-इं०।

नोट—इस अस्थि में तीन भाग होते हैं-अर्थात् (१) अज़्मुल्हरक़फ़, (२) अज़्मुल्-इरिक, (३) अज़्मुल्आनह जिनको यथा-स्थान देखिए।

अज़्म लामी āazma-lámi-अ० अज़्मुल्लसान। उस्तख़ाने ज़ुबान फ़ा०। ज़ुबान की हड्डी, यह हड्डी यूनानी अक्षर लामकी सी होती है और कंठाग्र जिह्वामूल में स्थित है। कण्ठिकास्थि-हिं०।

ऑस हायड (Os hyoid)-इं०।

अज़्म वतदी āazma-vatadi-अ० अज़्मुल् वतद। उस्तख़ाने क़ाइदतुद्दिमाग़-फ़ा०। करोटि तलास्थि। जतूकास्थि-हिं०। स्फीनॉइड बोन (Sphenoid bone)-इं०।

अज़्म शबियहबिलमइयनी āazma-shabiyha-bilmaaiyni-अ०, मुअय्यनशबियह बिलमुअय्यिन। ट्रैपीज़ाइड (Trapezoid)-इं०।

अज़्म सिन्दानी āazma-sindáni-अ० अस्सिन्दान। नेहाई, कर्णान्तस्थ शूर्मिकास्थि-हिं०। इन्कस (Incus) इं०।

अज्मह ajmah-अ० नैज़ार, नेस्ताँ-फ़ा०। दल-दल, फँसाव-हिं०। मार्श (Marsh)-इं०

अज़्मा āazmá-अ० मापभेद। यह साल औक़ियह या उनतीस तोला ८ मा० २ रत्ती, २६ तो० ८ मा० २ र०) के बराबर होता है। A measurement equal to 29 tolas, 8mashas & 2ratis.

अज्माअ āajmáa-अ० अहीमह, चौपायह-उ०। वह स्त्री जो शुद्ध बात न कर सके, गूँगी या हकली स्त्री-हिं०।

अज़्मान āazmána-अ० (अज़्म का द्विवचन) दो अस्थियाँ, किसी स्थानकी दो अस्थियाँ। अस्थिच्छेद-शास्त्र की परिभाषा में यह शब्द ऐसे स्थान पर बोला जाता है जहाँ एक समान... आती हैं। उदाहरणार्थ ... नासिका की दो अस्थियाँ ... अर्थात् तालु की दो ...

अज़्मिदह azmidah-अ० (ब...) (ए० व०) लेप, अनुलेप-हिं... to-इं०।

अज़्मुज़्ज़ौरक़ी āazm... अज़्म ज़ौरक़ी। नौकाकृति-... (Scaphoid)-इं०।

अज़्मुज़्ज़ौज ... उस्तख़्वाँ बिनागोश-फ़ा०। ...बोन (Temporal bone)... अज़्मुस्सुद्ग।

अज़्मुत्तरक़ुवह āazmutta... तरक़ुवह-अ० उस्तख़्वाँ चम्बरी... अक्षकास्थि, हँसली की हड्डी। ... होती हैं जो वक्ष के ऊपर ... क्लैविकल (Clavicle)-इं०

अज़्मुद्दम्अ āazmud... दमाअ, अज़्म नुज़्री। उस्त... उस्तख़ाने सरश्क-फ़ा०। अश्रु... हड्डी, जो अन्तरीय चक्षुकोष में ... होती है। लैक्रिमल (Lacri...

अज़्मुर्रज़फ़ह āazmurrazfa... रुबह। उस्तख़ाने ज़ानू-फ़ा०। ... -हिं०। पैटला (Patella)

अज़्मुल्अक़ब āazmul-āaqba... उस्तख़ाने पाश्नह-फ़ा०। पा... एड़ी, कूर्च-हिं०। कैलकेनि... neum), ऑस कैल्किस (... हील (Heel)-इं०।

अज़्मुल्अज्ज़ āazmul-āaju... अज्ब, अज़्मुल् अरीज़, अलूस... सुरीन फ़ा०। त्रिकास्थि-हिं०। (Sacrum)-इं०।

अज़्मुल्अन्फ़ āazmul-anfa-अ०। ... बीनी-फ़ा०। नासास्थि-हिं०। नै... (Nasal bone)-इं०।

[illegible] अज़ुद āazmul-āazuda-अ० [illegible]ने बाज़ू फा० । प्रगण्डास्थि,बाहु-हिं० । [illegible] Arm), हुमरस (Humerus)

[illegible] आनह् āazmul-āānah-अ० [illegible]स्थि, पेड़ू की हड्डी-हिं० । ऑस प्युबिस [illegible] pubis)-इं० ।

[illegible] उस्उस् āazmul-āuṣāus-अ० [illegible]स्उस् । उस्तख़ाने दुम-फ़ा० । दुम्ची की [illegible] । गुदास्थि, पुच्छास्थि, चञ्चस्थि [illegible] । कोक्सिक्स (Coccyx)-इं० ।

[illegible]कअ्ब āazmul-kaāba-अ० अल्कु-[illegible] उस्तख़ाने कुजूल-फ़ा० । टख़नेकी हड्डी [illegible] । अस्ट्रागेलस (astragalus)-इं० ।

[illegible] कतिफ़ āazmul-katif-अ० अल्लौह् । [illegible]ख़ाने शानह्-फ़ा० । स्कंधास्थि, अंसफ-[illegible] हिं० । स्कैपुला (Scapula)-इं० ।

[illegible] क़मह् दुव्वह āazmul-qamah-[illegible]vah-अल्मुवख्खरी, अज़्म मुवख्खर रास [illegible] । उस्तख़ाने कफ़ा-फ़ा० । पश्चात् कपा-[illegible]स्थि, पश्चात् कपालम्-हिं० । ऑक्सीपीटल [illegible] (Occipital bone)-इं० ।

[illegible] क़स्सः āazmul-qaṣṣa-अ० उस्तख़ाने [illegible]-फ़ा० । वक्षोऽस्थि, उरोऽस्थि, उरः [illegible]कम्-हिं० । स्टर्नम (Sternum)-इं० ।

[illegible] क़िह्फ़ āazmul-qihfa-अ० [illegible] सुल्याफ़ोख़, अल्जिदारी । उस्तख़ाने [illegible]रहे सर-फ़ा० । पार्श्विकास्थि,पार्श्विक कपा-[illegible]-हिं० । पेराइटल बोन (Parietal-bo-[illegible])-इं० ।

[illegible] जन्ब āazmul-janba-अ० शंखा-[illegible]-हिं० । देखो-अज़्मुस्सुद्ग़ । (Tem-[illegible]ral bone).

[illegible]ल् जब्हह् āazmul-jabhah-अ० [illegible]जब्ही,अज़्म मुक़द्दम रास । उस्तख़ाने पेशानी [illegible]फ़ा० । ललाटास्थि-हिं० । फ्रॉन्टल बोन (Frontal bone)-इं० ।

[illegible]ल् फ़ख़िज़ āazmul-fakhiz-अ० [illegible] । उस्तख़ाने रान-फ़ा० । उर्वस्थि [illegible]हिं० । फ़ीमर (Femur)-इं० ।

अज़्मुल् फ़ाइक़ āazmul-faiqa-अ० देखो-अज़्म लामी । कंठिकास्थि-हिं० । (Os-hyoid.)

अज़्मुल् मशाशियुल् अस्फ़ल āazmul-mashashiyul-asfal-अ० अल्क़ुरीनुल् अस्फ़ल,अज़्म अस्फ़ञ्जी अस्फ़ल । सीपीनुमा हड्डी -उ० । अधः शुक्तिका, अधः सीपाकृति-हिं० । इन्फ़ीरियर टर्बिनेटेड बोन (Inferior Turbinated bone)-इं० ।

अज़्मुल् माक़ āazmul-máqa-अ० उस्तख़ाने गोशहे चश्म -फ़ा० । देखो-अज़्मुद्दम्अ । अश्रुवस्थि-हिं० । (Lacrimal.)

अज़्मुल् मितरक़ी āazmul-mitraqi-अ० अल्मित्रक़ह् । मुद्गरास्थि-हिं० । मालिअस (Malleus)-इं० ।

अज़्मुल् मिस्फ़ात āazmul-misfáta-अ० अज़्म मसाफ़ी । छलनीनुमा हड्डी-उ० । झर्झरास्थि, बहुछिद्रास्थि-हिं० । इथ्मॉइड बोन (Ethmoid bone)-इं० ।

अज़्मुल् याफ़ूख़ āazmul-yáfúkha-अ० तालव्वस्थि, पार्श्विकास्थि-हिं० । देखो-अज़्मुल क़िह्फ़ । (Parietal bone.)

अज़्मुल्वजनह् āazmul-vajnah-अ० उस्तख़ाने रुख़्सार-फ़ा० । कपोलास्थि-हिं० । (Cheek bone).

अज़्मुल् वतीरह āazmul-vatirah-अ० अज़्म क़ासिमुल् अन्फ़, अल्मेकअह् । नासाफलकास्थि, नासावंश-हिं० । ऑस वूमर (Os vomer), वूमर (Vomer) -इं० ।

अज़्मुल् वरिक āazmul varika-अ० उस्तख़ाने निशिस्तगाह-फ़ा० । कुकुन्दरास्थि -हिं० । ऑस इस्कियम (Os ischium), इस्कियल बोन (Ischial bone)-इं० ।

अज़्मुल् हजबह āazmul-hajabah-अ० मर उस्तख़ाने निशिस्तगाह-फ़ा० । कुकुन्दर-पिण्ड-हिं० । इस्कियल ट्युबरॉसिटी (Ischial tuberosity)-इं० ।

अज़्मुल् हज्री āazmul-hajri-अ० उस्तख़्वाने सख़्ती-फ़ा० । अश्मास्थि, अश्मकूट-हिं० । पेट्रोसल बोन (Petrosal bone), पेट्रस प्रोसेस (Petrous process)-इं० ।

अज़्मुल् हनक āazmul-hanaka-अ० उस्तख़्वाने काम-फ़ा० । तालव्वस्थि-हिं० । पैलेट बोन(Palate bone)-इं० ।

अज़्मुल् हर्क़फ़ह् āazmul-harqafah-अ० अज़्मुल् ख़ासिरह् । उस्तख़्वाने सिरगाह-फ़ा० । जघनास्थि, नितम्बास्थि-हिं० । इलियम् (Ilium), इलियक बोन (Iliac bone), ऑस काक्सी (Os coxæ)-इं०

अज़्मुश्शसी āazmushshasi-अ० चक्कलाथी, अज़्मिस्सनारी । फणाधर, चक्रास्थि, दात्रवत् हिं० । अन्सिफ़ार्म (Unciform), हैमेटबोन (Hamate bone)-इं० ।

अज़्मुस्सद्फ़ह् āazmussadfah अ० अधः शुक्तिका-हिं० । देखो-अज़्म अस्फ़ली अस्फ़ल (Inferior turbinated bone).

अज़्मुस्सफ़ीनी āazmussafini-अ० अस्हरमी । कलाई की नौकाकृति अस्थि । क्युनिआईफ़ॉर्म (Cuneiform)-इं० ।

अज़्मुस्सफ़ीनियुल्इन्सी āazmussafiniyul-insi-अ० अल्अस्सफ़ीनियुल्अव्वल । अन्तः त्रिपार्श्विक-हिं० ।

इण्टर्नल क्युनिआईफ़ार्म (Internal cuneiform)-इं० ।

अज़्मुस्सफ़ीनिय्युल्वस्ती āazmussafiniyyul-vasti-अल्अस्सफ़ीनियुस्सानी-अ० । मध्यत्रिपार्श्विक-हिं० । मिड्ल क्युनिआईफ़ार्म (Middle cuneiform)-इं० ।

अज़्मुस्सफ़ीनिय्युल्वह्शी āazmussafiniyyul-vahshi-अ० अल्अस्सफ़ीनियुल्मुरल्लम । बहिः त्रिपार्श्विक-हिं० ।

एक्सटर्नल क्युनिआईफ़ार्म (External cuneiform)-इं० ।

अज़्मुस्सबक़ āazmussabaqa-अ० अरन, पर जो घोड़े व गदहे के खुरों में ऊपर होते हैं ।

अज़्मुस्सिनारी āazmussinári-अ०

देखो—अज़्मुश्शसी । चक्रास्थि-हिं० । ... iform).

अज़्मुस्सुद्ग āazmussudg... अज़्मुस्सुद्गी, अज़्मुल्जन्य । उस्तख़्वाने... -फ़ा० । शंखास्थि-हिं० । (Tem... bone)

अज़्मे कबीर āazmo-kabira-... (कलाई) की बड़ी हड्डी ।

ऑस मैग्नम (Os ma...

अज़्य azya-अ० अज़्य्यत । दुःख, इन्जुरी (Injury)-इं० ।

अज़्रक़ azraqa-अ० गुर्बह, ज़रका (... लाप जैसी चक्षुओं वाली-हिं० । गुर्बह...

अज्रद ajrada-अ० जिसके सिर पर गञ्जा, चन्दला, खालित्यी-हिं० । बैल्ड (... -इं० ।

अज्रब ajraba-अ० जर्ब अर्थात् तर खाज का रोगी । स्कैबी (Scaby)-इं० ।

अज्रम āajrama-अ० बीख ज़कर-फ़ा० । ... मूल-हिं० । रूट ऑफ़ दी पेनिस (R... the Penis)-इं० ।

अज़्रा āazrá-अ० बिक्र, दोशीज़ह, कुँवा... -उ० । कुमारी, कुँवारी, अक्षतयोनि, ... -हिं० । वर्जिन (Virgin), मेडन (... en)-इं० ।

अज़्रार लह्मिय्यह azrára-lahm... अ० ज़ख़्मके अंगूर-उ० । ग्रेन्युलेशन (... ulation)-इं० । मांसांकुर ।

अज़्रास azrása-अ० (ब० व०), ... व०) हन्वस्थि-हिं० । मोलर्स (Mo... -इं० ।

अज़्रास ख़ुमासियह् azrása-kh... iyah-अ० पञ्च उभार युक्त सिरे का...

अज़्रास रुबाइयह् azrása-rub... अ० चार उभार युक्त सिरे की दाढ़ें ।

अज़्रास सुनाइयह् azrása-su... -अ० द्वि उभार युक्त सिरे की दाढ़ें ।

अज़्रास सुलासियह् azrása-... yah-अ० तीन उभार युक्त सिरे...

...त् वे जिनके बाह्य सिरे पर जरा जरा सी उभारें होती हैं।

...ुलहु.लम azlásulhulma–अ० ...ल दन्त,बुद्धि दन्त–हिं०। अकल दाढ़ें अर्थात् ...स की चार दाढ़ें जो युवावस्था (बालिग़ा- ...) पश्चात् से पचीस वर्ष तक के काल ...निकलती हैं।

...jla–अ० (ए० व०), आजाल (ब० ...) मुद्दत, उम्र, मौत–उ०। काल, अवस्था, ...ु–हिं०। डेथ (Death), मॉर्टिफ़िकेशन ...Mortification) इं०।

...अ.वल ajla-atvala–अ० लम्बी मौत, ... मृत्यु जो सब से बड़ी अवस्था अर्थात् १२० ... की अवस्था में आए।

...आर्ज़ी ajla-áárzi–अ० अजल इख़्तरामी। ...वाभाविक मृत्यु, अप्राकृतिक मृत्यु, अचानक ...ु–हिं०। सडन डेथ (Sudden death) ...०।

...ख़्तरामी ajla-ikhtarámi–अ० देखो– ...जल आर्ज़ी। अचानक मृत्यु, आकस्मिक ...ु–हिं०। (Sudden death)

... ajlaj–अ० जिसके शिर के दोनों बग़ल के ...न गिर गए हों।

...तबोई ajla-tabiái–अ० तब्ई मौत, ...ापे की मौत–उ०। प्राकृतिक या स्वाभाविक ...ृत्यु अर्थात् वृद्धावस्था के कारण होने वाली ...ृत्यु। नेचरल डेथ (Natural death) ...इं०।

...अ azláá–अ० (ब० व०), ज़िलअ ...(ए० व०) पसलियाँ–उ०। पशुकाएँ–हिं०। ...ज़ (Ribs)–इं०।

...अ हक़ीक़िय्यह azláá haqíqiyyah ...अ० अज़्लाअ् सालमह्, अज़्लाअ् सादिक़ह्, ...ज़्लाअ् स़द्र, अज़्लाअ् मक्फ़लह्। सच्ची ...पसलियाँ–हिं०। ट्रू रिब्ज़ (True ribs), ...स्टर्नल रिब्ज़ (Sternal Ribs)–इं०।

...ाउल् ख़ुल्फ़ azláául-khult–अ० ...अज़्लाअ् ज़ार, अज़्लाअ् काज़िब। झूठी पस-लियाँ, आज़ाद पसलियाँ–उ०। फ़ाल्स रिब्ज़ (False Ribs), फ़्लोटिङ्ग रिब्ज़ (Floating Ribs), ऐब्डोमिनल रिब्ज़ (Abdominal Ribs) और वर्टिब्रोकोन्ड्रल रिब्ज़ (Vertebrochondral Ribs)–इं०।

अज़्लात áazlát–अ० (ब० व०), अज़्लह् (ए० व०) देखो–अज़्लह्।

अज्वाफ़ ajváf–अ० (ब० व०), जौफ़ (ए० व०) गढ़े, पोल–उ०। नालियाँ, कोष्ठ –हिं०। बेलीज़ (Bellies) - इं०।

अज़्वाज azváj–अ० (ब० व०), ज़ौज (ए० व०) जोड़े, नाड़ियोंके जोड़े,युगल, युग्म-हिं०।

अज्सम ajsam–अ० जसीम, बदीन, समीन, मोटा, चाक–उ०। स्थूल, मेदस्वी, बृंहित–हिं०। कॉर्पुलेण्ट (Corpulent)–इं०।

अज्साद ajsád–अ० (ब० व०), जस्द या जसद (ए० व०) १–बदन–उ०। शरीर, वस्तु–हिं०। बॉडीज़ (Bodies)–इं०। २–धातु (Metals)

अज्साम तुवामिय्यह् अर्बअ्ह् ajsám-tuvámiyyah-arbaáah)–अ० अज्साम अर्बअह। चार जुड़े हुए छोटे छोटे उभार जो बृहत् मस्तिष्क में पाए जाते हैं। कॉर्पोरा क्वाड्रिजेमिना (Corpora Quadrigemina.)–इं०।

अज्साम दसिमह् ajsáma dasimah–अ० वसा या तैलीय पदार्थ, यथा–तैल, वसा (चर्बी) या मल्हम प्रभृति। फ़ैट्स (Fats), ऑइली सब्स्टैन्सेज़ (Oily substances)–इं०।

अज्साम मुज़ल्लअह् ajsáma-muzallaáah–अ० अज्साम मुख़त्तह्। रेखांकित प्रन्थ, धारीदार उभार–हिं०। कॉर्पस स्ट्राइटम (Corpus striatum)–इं०।

अज्साम शअरिय्यह् ajsáma-shaáriyyah –अ० लोमश या रोमयुक्त सेलें। सिलिएटेड सेल्ज़ (Ciliated cells)–इं०।

अज़्हान azhána–अ० (ब० व०), ज़िह्न (ए० व०) बुद्धि, समझ, स्मरणशक्ति।

अभिञ्जी ajhinji–ता०
अभिञ्जीमरम् ajhinji-maram–ता० }

टेरा, अङ्कोल (Alangium Decapetalum, *Lam.*)

अञ्चकम् anchakam–सं० क्लो० नेत्र, चक्षु, आँख। ऐन–अ०। चश्म–फ़ा०। आई (Eye) –इं०। रा० नि० व० १८।

अञ्चञ्चक anchanchak–अञ्जकक। Pyrus communis (seeds of-) फा० इं० १ भा०।

अञ्चित anchita-हिं० वि० (Bent; curved) झुका हुआ, तिर्छा, टेढ़ा।

अञ्चुसा anchusá-यु०, रू० अन्चुसा। दम्मुल्-अख्वैन, ख़ूनाख़राबा, विजयसार निर्यास। फा० इं० २ भा०।

अञ्चू anchú–नैपा०, हिमा०, प्रसिद्ध। कलहेर, कलहिमरा (-री)–गढ़०. हिं०। फ्यु फ्लावर्ड रैस्पबेरी (Few flowered raspberry) –इं०। रयुबस पासीफ्लोरस (Rubus pauciflorus), रयु० वैलिकियाई (R. wallichii)–लै०। इं० मे० मे०। इं० हैं० गा०।

गुलाब वर्ग

(*N. O. Rosaceæ*)

उत्पत्ति स्थान—नैपाल, हिमवती-पर्वतश्रेणी तथा उत्तरी पश्चिमी भारत। ब्रिटेनमें यह जंगली पौधों की तरह बहुतायत से होता है।

वानस्पतिक विवरण—यह एक झाड़ी है जिसका तना सीधा होता है और जिसमें असंख्य सूक्ष्म मृदु कण्टक लगे होते हैं। पत्र गुलाब के समान और कोंपल बदामी रंग के मखमली जो देखने में अत्यन्त मनोहर प्रतीत होते हैं। पुष्प अत्यन्त सूक्ष्म श्वेत और गुच्छे में आते हैं। फल गोल और रक्त, पीत एवं श्वेत वर्ण के तथा रस से परिपूर्ण होते हैं। फलका उपरी धरातल सूक्ष्म मृदु गोलाकार दानों से युक्त होता है। फूल गुच्छों में अथवा अकेले होते हैं। रस मधुराम्ल और सुस्वादु होता है। बीज अत्यन्त सूक्ष्म और गोल होते हैं। चैत में यह पुष्पित होता है तथा आषाढ़, श्रावण में इसमें पक्व फल प्राप्त होते हैं। पीले फलवाले को गढ़वाल में पांडा कहते हैं।

रासायनिक संगठन— ...
शर्करा, पैक्टिन (Pectin) ... के तेजाब (Citric and mal...) खनिज तथा रञ्जक पदार्थ, वृक्ष... और जल।

गुणधर्म—यह ज्वरतापशामक है ... पर यह केम्परी (Strawberry) रिक्त किसी भी अन्य फलकी अपेक्षा ... हेतु श्रेष्ठतर है। इसको अकेले खाने ... में अम्लीय संधानोद्भूत होने की ... रहती। इसका अचार अथवा ... पदार्थ हैं। अञ्चू के पत्ते का शीत ... आंत्रशैथिल्य, प्रवाहिका, विसूचिका, तथा उत्तापव्यथा और आमाशय ... उत्तम औषध है। इं० मे० मे०।

अञ्ज़ ãanza–अ० बकरी–हिं०। (Sh...

अञ्ज़अ anzaa–अ० जिसके ललाट ... बगल से रोम जाते रहे ...।

अञ्जकक anjakak } —फ़ा० इं०
अञ्जुकक anjukak }

(ये जङ्गली अमरूद के बीज हैं जिस... श्यामवर्ण का होता है। ये बिही ... भाँति बड़े और उसके सदृश ... हैं। इसके भीतर से श्वेत गूदा नि... फा० इं० १ भा०। Anjukak ... communis (seeds of-)

अञ्जद ãanjad–अ० मुनक्का के ... मवेज़) अथवा फलों के दाने।

अञ्जदान anjadán–अ०,इं० यह अरबी बनाया हुआ शब्द है जिसका ... का दाना अर्थात् बीज है। इस ... हींग कहते हैं। इसी कारण हींग ... नाम अञ्जुदु अर्थात् अञ्जका गोंद है। (बीज अञ्जदान) को अरबी में ... ऊ़ुदुह्ह्दं कहते हैं। इसका बीज ... विचार से काराम है।

नोट—अञ्जदान का वृक्ष ... समान होता है तथा यह खुरासान, ... और भारतवर्ष के पर्वतों में उत्प...

ा फोटीडा (Ferula Fœtida, l.)--लें० । दी गम रेज़िन (The resin)--इं० । फा० इं० २ भा० । हींग या हिङ्गः ।

रूमी anjadána-rúmi-अ०फ़ा० ालियूस (भापन्नी); कोई कोई काशम हते हैं । (See--Sisáliyús)

विलायती anjadána-viláyati फ़ा० अन्नदान--फ़ा० । हिङ्गु, हींग का वृत्त । erula Fœtida, Regel.)

स्याह anjadána-siyáh--अ० कमात । वृत्त, हिङ्गु । फेरुला फेटिडा (Ferula tida, Regel.)--लें० ।

njana--हिं० संज्ञा पुं० (१) वह औषध आँख में डाली जाती है । (२) स्रोताञ्जन ीर-सं० । अञ्जन, सुर्मा का पत्थर-हिं० । ऐन्टि- सल्फाइड (Antimony sulphide) ० । किर्मीज़ मिनरल (Kermes mine-.), ब्लैक ऐण्टिमनी (Black anti-ony) इं० । । इं० मे०मे० । देखो- अञ्जनम् ३) घोघुघेर (गोयडा) । मेमो० । ३)--पर्या० अञ्जन, पाल्की, दूर्प, लोगरडी ० । काशमरम्--ता० । अल्पेिड्डु--ते० । सुर्मा ना० । वरीकह्, मेस्काय--सिं० । अञ्जनी ० । मेमीसीलोन एडयूली (Memecy-n Edule, Roxb.)--लें० । आयर्नवुड (Iron-wood tree)--इं० । मेमी-लोन कमेस्टिब्ल (Memecylon com-tible)-फ्रैं० । फा० इं० । देखो--अञ्जनी ।

४) कहुआ, अर्जुन, अर्जुना-हिं० । र्जुना-बं० । हअल-उड़ि० । अर्जुना मं० । मरड वेल्लमट्टी-ता० । मद्दी, विल्लीमद्दी-मै० । मद्दी, टेल्लामड्डु-तै० । सीकयाल-अ० । टर्मि-लिया अर्जुना (Terminalia Arjuna, edd.)-लें० । मेमो० । -पं० चरवा, कुसा उ० प० प्रा० । मेमो० । पं-ऐनिमेटम् मिको-इडिस ।

anjan-देखो-अञ्जनम् (सुर्मा) । अथ० । ० ६ । ३ । का० ४ ।

anjanah-सं० पुं० (A lizard) गृहगोधिका, छिपकली-हिं० । टिकटिकी-बं० । वै० श० । देखो—ज्येष्ठा ।

अञ्जनक anjanaka-हिं० पुं० अञ्जनम्, सुर्मा (Antimony).

अञ्जनक्-कल्लु anjanak-kallu-ता० सुर्मा -हिं० । (Antimony sulphide). देखो-अञ्जनम् । स० फा० इं० ।

अञ्जन कर्म्म anjana-karmma-सं० क्ली० (१) नेत्रप्रसादन (Anointing or making clear) सुर्मा, काजल, आँजन —हिं० । देखो अञ्जनविधि ।

अञ्जन का पत्थर anjana-ká-patthar द० सुर्मा-हिं० । अञ्जनम्-सं० । ऐन्टिमोनियाई सल्फ्युरेटम Antimonii sulphuretum लें० । सल्फ्युरेट ऑफ़ ऐन्टिमनी sulphuret of Antimony इं० । स०फा०इं० ।

अञ्जन केशिका anjana-keshiká-सं०स्त्री०
अञ्जनकेशी anjan-keshi- "
(१)हनु-हट्टविलासिनी, नखी, नख-सं० । नाख़ुन देव, छोटे नख को कहते हैं-हिं० । नाख़ुन पर्या -फ़ा० । अज़् फ़ारुत्तीब-अ० । Helix ashera हेलिक्स आशेरा-लें० । शेल Shell-इं० । (२) नलिका नामक गंध द्रव्य । यह उत्तरी देशों में प्रसिद्ध है । ए वेजिटेब्ल पर्फ्यूम A Vegetable perfume-इं० । भा० पू० १ भ० क० व० । देखो—नख ।

अञ्जन गुटिका anjana-guṭiká—सं० स्त्री० (१) सोंठ, मिर्च, पीपर, करंजफल, हल्दी, बिजौरे की जड़, इनकी गोली बना छाया में शुष्क कर नेत्रांजन करने से विशूचिका (हैज़ा) दूर होती है ।

(२) महुआ पुष्प, श्वेत अपराजिता, अपामार्ग मूल और त्रिकुटा इनकी गोली बना नेत्रांजन करने से विशूचिका दूर होती है ।

(भैष० र० अग्निमां० चि०)

(३) मैनसिल, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, आमला, हड़, बहेड़ा, सोंठ, मिर्च, पीपल, लाख, लहसुन, मंजीठ, सेंधालवण, इलायची, सोनामाखी, मावर लोध, लौहचूर्ण, ताम्रचूर्ण, काला-

तुत्थारिया, मुर्गे के अंडे का छिलका, इन्हें समान भाग लेकर स्त्री के दूध में घोटकर गोली बनाएँ। इसका अञ्जन स्राव, तिमिर, शुक्रार्म तथा नेत्र की रक्त रेखा को दूर करता है।

(४) काँसे के पात्र के रगड़ने से उत्पन्न स्याही, मुलैठी, सेंधालवण, तगर, एरंड की जड़ इन्हें बराबर लें, तथा इनमें से एक से द्विगुण बड़ी कटेली मिलाएँ, इनको बकरी के दूध से पीसकर ताम्र पात्र पर लेप करें। इसी तरह सात बार बकरी के दूध में पीस पीस कर उक्त पात्र पर लेप करें और छायामें शुष्क कर बत्ती बनाएँ। यह अञ्जन नेत्र रोग को दूर करता है।

(सु० सं० अध्या० १२, नेत्र० रो० चि०)

(५) गेरू १ माशा, सेंधा लवण २ मा० पीपर ३ मा०, तगर ४ मा०, इस प्रकार ले इनसे द्विगुण जल से खरल करें, पुनः गोली बनाकर नेत्रांजन करने से नेत्र रोग दूर होता है।

(भैष० र० नेत्र रो० चि०)

अञ्जनगुड़िका anjana-guḍiká-सं० स्त्री० विसूचिका में प्रयुक्त औषध विशेष, यथा-महुआ के पुष्प का रस, चिरचिटा बीज, अपराजिता मूल, हरिद्रा और त्रिकटु। इनका अञ्जन करना। (च० द० अग्निमांद्य चि०)

अञ्जन ताडनाद्युपायः anjana-táḍanádyu-páyah-सं० पुं० शुद्ध मनुष्य के आचार के नष्ट होजाने पर तीक्ष्ण नस्य, तीक्ष्ण अञ्जन, ताडन तथा मन, बुद्धि, स्मृति इनका संवेदन, ये हित हैं। उन्माद से विस्मृति होजाने पर तर्जन दुःखदेना, सांत्वना, हर्ष, आनन्द, भय दिखाना, विस्मय (आश्चर्यान्वित) मन को प्रकृति में स्थिर करें। काम, शोक, भय, क्रोध आनन्द, ईर्षा तथा लोभ से उत्पन्न उन्माद में परस्पर प्रतिद्वन्द्व क्रिया से शांत करें। वांछित द्रव्य के नष्ट होने से उत्पन्न उन्माद में तत्तुल्य द्रव्य प्राप्ति, शांति तथा आश्वासन से उसकी शांति करे।

(चक्र० द० उन्माद चि०)

अञ्जनत्रयम्,-त्रित्रयम् anjana-trayam,-titrayam-सं० क्लो० कालाञ्जन, सोताञ्जन और रसाञ्जन। रा० नि० व० २२"यथा-कालाञ्जन समायुक्तं सोतोऽञ्जन रसाञ्जने।"

अञ्जन हरिद्र प्रसादनी शलाका anj-hçi-prasádani-şbaláká- काँसे को बारम्बार तपाकर हर, ... के रस में, घी में, गोमूत्र में, शहद, ... के दूध में बुझाएँ, पश्चात् उस ... बनाकर नेत्रों में फेरें तो नेत्र ... रोग नष्ट हों।

(भा० प्र० रा० नेत्र)

अञ्जन नामिका anjana-námiká (Styo) नेत्रपक्ष्म में होनेवाले ... भेद। यह रोग रक्त से उत्पन्न होता है। छियों (नेत्रपक्ष्मों) के मध्यमें ... तरफ खुजली, दाह और वेदना से युक्त ... की, कठोर, मूँग प्रमाण की फुन्सियाँ ... इन्हें अञ्जन रोग अथवा अञ्जनना... हैं। वा० उ० ८ अ०। जो फुन्सी ... चुभाने की सी पीड़ा वाली, लाल, ... और मन्द पीड़ा वाली नेत्रके कोये में ... है उसको अञ्जना (अञ्जनहारी) नामिका कहते हैं। यह रक्त से उत्पन्न। म० नि०।

अञ्जन पत्री anjana-patri-सं० स्त्री० भंग के पत्ते Cannabis Indica (Leaves of-)। (२) गाँजा।

अञ्जन भैरवः anjana-bhairav... पुं० पारा, लौहभस्म, पीपर, गंधक १ ... भाग लें, जमालगोटा के बीज १ ... जम्भीरी के रस से अच्छी तरह पीस ... करने से सन्निपातज्वर दूर होता है। भै...

अञ्जन माई anjana-máí-ता० ... ऐन्टिमोनिआई सल्फ्युरेटम् (Antimoni ... huretum.)-ले०। देखो-अञ्जनम्

अञ्जन मूलक anjana-múlaka ... प्रकार के मणियों में से एक। यह ... काला चित्रित वर्णका होता है। कौटि०

अञ्जनम् anjanam-सं० क्लो०
'अञ्जन anjana-हिं० संज्ञा पुं०
(anointing, smearing mixing) लगाना।

) Collyrium or black ent used to paint the eye- ... अाँजन, कज्जल, काजल। हि० च० नि० ... कामला चि०, रक्तपित्त चि०।

...हल्दी, गेरू, आमलेका चूर्ण इन्हें द्रोण ... गूमा के रस में मिलाकर अञ्जन करने से ... दूर होता है। यो० र० पाण्डु० चि०।

...शिग्रु बीज, पीपल, कालीमिर्च, सेंधा ... मैनसिल, लहसुन, वच इन्हें गोमूत्र में ... अञ्जन करने से सन्निपात रोगी चैतन्य ... है। यो० र० ज्वर० चि०। भैष० र० ... चि०।

...जकी मींगी, सोंठ, मिर्च, पीपर, बेल ... हल्दी, दारुहल्दी, तुलसी की मंजरी ... गोमूत्र में पीसकर अञ्जन करने से विषाक्त ... जी उठता है। यो० त० विष० चि०।

...जमालगोटे का बीज शुद्ध ४० मासे, ... मिर्च, पीपर चार चार मासे इन्हें गम्भारी ... पेट अञ्जन करने से सन्निपात दूर होता ... शार्ङ्ग० सं० म० ख० १२ अ० श्लो० २१।

...पीपर, मिर्च, सेंधालवण, शहद, गाय ... पित्त, इनका अञ्जन बनाकर नेत्र में आँजने ... अनेक भूत दोषों से उत्पन्न उन्माद और ... अपस्मार का नाश होता है। भैष० र० ... उन्माद० चि०।

...त्रिकुटा, हींग, सेंधालवण, वच, कुटकी, ... के बीज, करंज के बीज, सफेद ... इनकी वत्ती बनाकर नेत्राञ्जन करने से ... अपस्मार, चातुर्थिक ज्वर, और उन्माद दूर ... है। च० द० उन्माद० चि०।

...तगर, मिर्च, जटामांसी, शिलारस इन्हें ... समान भाग ले, सर्वतुल्य मैनशिल, पत्रज ... भाग (तगरकादि से चौगुने) तथा सबसे द्विगुण ... सुर्मा, और उतनी ही मुलहठी लेकर बारीक ... अञ्जन बनावें। सु० सं० उ० अ० १२।

...हल्दी, दारुहल्दी, मुलेठी, दाख, देव- ... इन्हें समान भाग ले बकरी के दूध से ... अञ्जन करने से अभिष्यन्द दूर होता है। ... ० र०।

(३) A cosmetic ointment कान्तिजनक प्रलेप, वर्णलेपन।

(४) Ink रोशनाई।

(५) Night रात्रि, रात।

(६) Fire अग्नि, आग।

(७) सौतोऽञ्जन। गा०। सु० चि० २५ अ०।

(८) रसाञ्जन। च० द० अ० सा० चि० प्रियङ्ग्वादि। रक्त पित्त-चि०। च० ३ अ० प्रदेहपट्के। स्तम्भन योग। भा० वात चि०।

(९) सौवीराञ्जन वा० सू० १५ अ० अञ्जनादि। सु० सू० ३८ अ०। देखो—अञ्जनविधि।

(१०) सुर्मा धातु विशेष। यह आभा प्रभायुक्त एक श्वेत धातुतत्त्व है। यह कठोर होता तथा तोड़नेसे टूटजाता है, और सरलतापूर्वक चूर्ण किया जा सकता है। इसका रासायनिक सङ्केत अञ्ज० (Sb.) तथा परमाणुभार १२० है और आपेक्षिक गुरुत्व ६·७ है। यह ६३०° शतांश की उत्ताप पर गल जाता और चमकीले रक्तताप पर वाष्पीभूत हो जाता है।

सामान्य तापक्रम पर वायु तथा आर्द्रता का अञ्जन पर कुछ भी प्रभाव नहीं होता। वायु में उत्ताप पहुँचाने पर यह हरिताभायुक्त नीले रंग के लौ में जलने लगता है।

प्रकृति में अंजन स्वतन्त्र या शुद्ध रूप में नहीं मिलता; अपितु गन्धक के साथ मिला हुआ स्रोताञ्जन या सुर्मा रूप में पाया जाता है। यह प्रायः सीसलिका, निकिलम् और रजतम् धातु के साथ मिला हुआ यौगिक रूप में भी पाया जाता है। विशेष रासायनिक विधि द्वारा इसे अन्य धातुओं से भिन्न कर लेते हैं।

इसके पर्याय—अञ्जनम् (अञ्जनक)—सं०, हि०। इस्मद, कुहुल् कोहूल, अश्नीमूनुल् मादनी —अ०। अन्तीमून, संगेसुर्मह—फ़ा०। ऐण्टिमोनियम् (Antimonium), स्टीबियम् (Stibium)—लें०। एण्टिमनी (Antimony)—इं०

नाम विवरण—एण्टिमोनियम् यौगिक शब्द

है (ऐण्टि = विपरीत + मोनाकस = उपदेष्टा, सन्यासी) जिसका अर्थ सन्यासी या साधु के विपरीत अर्थात् नष्ट करनेवाला है। कहा जाता है कि सन् १०१० ई० में वालरटेन नामी एक रासायनिक ने, जिसने कि सर्व प्रथम उक्त शुद्ध धातु के असली गुण-धर्म का वर्णन किया, इसके औषधीय गुणधर्म दर्याप्त करने के लिए इसे कुछ सन्यासियों को खिलाया। फलतः वे सब के सब इस विष द्वारा मरणासन्न हो गए। इसी कारण इसका नाम ऐण्टिमोनियम पड़ गया।

इतिहास—उपर्युक्त वर्णनानुसार स्रोतोञ्जन अर्थात् सुर्मा रूप से यह औषध प्राचीन वैदिक काल से, यूनानी व रूमी चिकित्सकों को मालूम थी। अस्तु, हकीम दीस्क़ूरीदूस (Dioscorides) यूनानीने स्टीमी नाम से तथा हकीम पलीनास रूमी ने स्टीबियम् नामसे इसका वर्णन किया है। इन दोनों ने इसको शोधक (मुनेक्केयट) अर्थात् वामक तथा रेचक लिखा है और अबतक प्रायः चिकित्सक इनके अनुयायी हैं। परन्तु, हकीम बुक़रात व हकीम जालीनूस ने इसमें संग्राही तथा मुक़त्ता (काटने छाँटने वाले) गुण की विद्यमानता का भी वर्णन किया, पर उन्होंने इसका बाह्यरूप से ही उपयोग किया था।

प्राचीन चिकित्सक इस धातु को प्रकृति में पाया जाने वाला यौगिक सुर्मा रूप से उपयोग में लाते थे। उनका यह विचार था कि सुर्मा (अंजन गन्धिद) गन्धक और पारद का यौगिक है और किसी किसी का यह विचार था कि यह गन्धक और सीसा का यौगिक है। इससे स्पष्ट है कि उनको अंजनम् धातु के मौलिक रूप का ज्ञान न था। शेखुर्रईस ने इसे मृत सीसा का जौहर लिखा है। जिसका कारण आगे वर्णित होगा।

प्रायः प्राचीन भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं रसशास्त्रों में सभी जगह सुर्मा के विविध प्रयोगों का वर्णन आया है। वे इसके गुण धर्म एवं बाह्य व आभ्यन्तर उपयोग से भली भाँति परिचित थे। इतना ही नहीं; अपितु, संसार के सब से प्राचीनतम ग्रन्थ वेद (अथ०) में भी इसका पर्याप्त वर्णन उपलब्ध होता है।

नोट—शुद्ध अञ्जनम् धातु (A...
औषध रूप से व्यवहार में नहीं ...
इसके निम्न लिखित प्रकृति में पा...
या रसायनशालामें बनने वाले यौगि...
रूप से उपयोग में आते हैं।

आयुर्वेद शास्त्र में अञ्जनम् धा...
mony) अर्थात् इसके यौगिकों...
अञ्जन शब्द उन समस्त द्रव्यों के लि...
में आता है जिनका आँजने से ...
चाहे वे खनिज या वानस्पतिक द्रा...
प्राणिज। कहा भी है :—

अञ्जनं क्रियते येन ...
अर्थात् जिस द्रव्य से आँजन कि...
अञ्जन कहलाता है। अस्तु, जहाँ ...
वर्णन होता है। वहाँ से भी यह ...
है। यथा—

सौवीरमञ्जनं प्रोक्तं रसाञ्जन मतः...
स्रोतोऽञ्जनं ...
नीलाञ्जनश्चेति॥ (रस०...

अर्थात्—सौवीरांजन, रसांजन, पुष्पांजन और नीलाञ्जन प्रभृति ... में से रसांजन किसी किसी के मत ... चन्दन का गोंद है अथवा पीले ... से बनता है और पीत होता है।

पीत चन्दन निर्यास' रसांजनमिति ...
तत्क्वाथजं वा भवति पीताभं वक्त्र रोग...

और किसी किसी के मत से ... को बकरी के दूध में मिलाकर ... करलें। यही रसांजन अर्थात् रसवत है।

दार्व्वी क्वाथ समं क्षीरं पादंपक्वं यदा ...
तदा रसांजनाख्यं तन्नेत्रयोः परमं हितम्।

और किसी किसी के विचारानुसार पाषाणाकृति का एक द्रव्य या नीला... अंग्रेज़ी में गैलेना (Galena) या ... ऑफ लेड (Sulphate of Lead ... हैं। यह गन्धक और सीसा का ... गिक है।

भी कहा है :—

जाम्बलं तुत्थं मयूरं श्रीकरं तथा।
मेघनीलञ्च अञ्जनानि भवन्ति षट् ॥
(कालिका पुराण)

र सौवीर, जाम्बल, मयूरतुत्थ (तूतिया ीकर, दर्विका (काजल) और मेघनीलांजन) ये छः प्रकार के अञ्जन पुराण के रचयिता ने लिखे हैं। इनमें ा कज्जल अंजनम् (Antimony) र भिन्न वस्तु हैं। इन सब बातों से साफ होता है कि अंजन से उनका अभिप्राय न वस्तुओं से था जो नेत्रचिकित्सा में होती थीं। इनके विभिन्न भेदों का पूर्ण यथाक्रम किया जाएगा। यहाँ पर जो न होगा वह अंजन (सुरमा) अथवा ौगिकों का ही होगा।

स्रोतोऽञ्जन अर्थात् सुरमा

ीरं, कापोताञ्जनं, यामुनं, नदीजं, रे, वारिभवं, स्रोतोनदीभवं, स्रोतोभवं, ारं,(का-) कपोतसारं, वल्मीकशीर्षम्। ा०, सु० चि०। १० अ०। ं, जयामलं, स्रोतजं, सौवीरसारं, नं,—सं०। सुरमा, सुरमे का अंजन-हिं०। अंजन, अंजन का पत्थर सुर्मा, शुर्मा, जलांजन, काल शुर्मा-बं०। ं, कुह्ल-अ०। सुर्मह्, संगेसुर्मह्, स्याह सुर्मह् अस्फहानी-फ़ा०। ऐंटिमोनियाई टेम् (Antimonii Sulphuret-, एंटिमोनियम् सल्फ्युरेटम् (Antiium Sulphuratum)-लें०। ऐंटिफाइड (Antimony Sulphiसल्फ्युरेट और टर्सल्फ्युरेट ऑफ ऐंटिमनी ulphuret or Tersulphuret ntimony), ब्लैक ऐं० (Black imony), किर्मीज़ मिनरल (Kermineral)-इं०। अंजनक-कल्लु, अंजना०। अंजन-राथि, नीलांजनम्, कटुक। अंजनक—कह्र-मल०। अञ्जना। सुर्मा, सुर्मा-नु-पत्थो, कुह्ल-अंजन-गु०। शुर्म-खियिथ, सुर्मे-खियो, तयलक्यो-बर०। सुर्मा-मह०, कों०। काला-सुरमा—मह०।

रासायनिक संकेत

(अञ्ज$_2$ गं$_3$) (Sb_2S_3).

(ऑफ़िशल)

काला सुरमा जो प्राकृतिक रूप में खानों से निकलता है उसे पिघला कर शुद्ध कर लेते हैं।

नोट—आयुर्वेदिक शुद्धि का वर्णन आगे होगा।

उद्भवस्थान चीन, जापान, (ब्रह्मदेश) बर्मा, थोड़ी मात्रा में मायसूर में भी पाया जाता है। विजयानगरम तथा पञ्जाब (झेलम आदि स्थानों से खानों से निकलता है। चीन में यह सब से अधिक मिलता है।

लक्षण—किञ्चित् धूसर श्यामवर्ण का दानेदार चूर्ण होता है। यह भंगुर द्रव्य है।

घुलनशीलता—यह जलमें अनघुल होता है, किन्तु कॉस्टिक सोडा के सोल्युशन (दाहक सोडा घोल) और गरम हाइड्रोक्लोरिक एसिड (लवणाम्ल) में घुल जाता है तथा उदजन वायव्य उत्पन्न करता है।

परीक्षा—कोहले पर सोडियम् कार्बनित सहित दग्ध करने से श्वेत चूर्ण सा प्राप्त होता है। अञ्जनम् धातु के कण प्राप्त नहीं होते।

मात्रा—आधी से १ रत्ती (१ से २ ग्रेन).

मिश्रण—सोमलिका तथा अन्य गन्धित्र्।

प्रभाव—स्वेदक, परिवर्तक और वामक।

नोट—स्रोताञ्जन जैसा कि वर्णन हुआ अञ्जनम् धातु तत्व (Antimony) तथा गंधिका (Sulphur) अधातु तत्व का एक यौगिक है। परन्तु, भारतवर्ष तथा पंजाब में जो कंधारी सुर्मा अधिकता के साथ विकता है, वह वस्तुतः गंधक और सीसा का एक यौगिक है जिसको अंग्रेजी में गैलेना (Galena) या सल्फ्युरेट ऑफ लेड (Sulphuret of Lead) कहते हैं। यह कृष्ण वर्ण युक्त एक गुरु कठोर पदार्थ है। यही कृष्णाञ्जन या काला

सुरमा है। यह सीसक और गन्धक को मूषा में उष्ण करने से भी प्राप्त हो सकता है। यही सीसक की कृष्ण भस्म है। कदाचित् इसी भाँति के सुरमाके लक्षण को जनाब शेख रईस बूअलीसीना ने मालूम करके इ.स्मद अर्थात् सुरमा को मृत सीसा का जौहर लिखा है।

सुरमो—यह भी काले सुरमे का एक भेद है जिसमें गंधक जस्ता (यशद) के साथ मिला हुआ होता है। यह अधिक कठोर होता है।

सुरमहे अस्फ़हानी—सम्भव है शुद्ध होता हो। परन्तु, डॉक्टर पावल महाशय अपनी पुस्तक "एकॉनॉमिकल प्रॉडक्ट्स ऑफ़ पञ्जाब" के पृष्ठ ११ पर लिखते हैं कि सुरमहे अस्फहानी के नमूने की परीक्षा करने पर इसमें लौह का मिश्रण पाया गया। वह पेशावर के निकटस्थ बाजौर नामक स्थान के खनिज सुरमा को शुद्ध सुरमा बतलाते हैं और पर्वतीय सुरमा तथा पञ्जाब के किसी किसी अन्य स्थान के सुरमा को अशुद्ध बतलाते हैं।

सफेद सुरमा—वास्तवमें खटिक धातु का एक योग विशेष अर्थात् कार्बोनेट ऑफ़ लाइम (संगमरमर) है। आयुर्वेद के अनुसार इसको सौवीराञ्जन कहते हैं। इसको लोग भूल से सुरमा समझ कर उपयोग में लाते हैं, किन्तु यह बिलकुल सुरमा नहीं। तोड़ने पर भीतर से यह सुरमा के सदृश चमकदार होता है। अस्तु, इसी सादृश्य के कारण यह सुरमा ख़याल किया जाता है।

अञ्जन शुद्धि

(१) सब अञ्जनों की शुद्धि भाँगरे के स्वरस में खरल करने से होती है।

(२) सूर्यावर्त (काला भाँगरा अथवा हुलहुल) के रस में खरल करने से अञ्जन शुद्ध होता है।

(३) सब अञ्जनों का चूर्ण कर एक दिन जंभीरी के रस में भावना देकर धूप में सुखा लेने से उनकी शुद्धि होती है तथा वे समस्त कार्यों में योजनीय हो जाते हैं।

(४) गोबर के रस, गोमूत्र, घृत, शहद तथा घसा इनकी बहुत बार ... होता है।

(५) स्रोताञ्जन और ... त्रिफला के काढ़े या भाँगरे के ... शुद्धि होती है।

(६) नीलाञ्जन के चूर्ण को ... के रस में खरल कर धूप में ... शुद्ध और समस्त रोगों में प्रयो[ग] ... इसी प्रकार गेरू, कसीस, सुहागा, ... सिल एवं मुरदासंग की शुद्धि ...

(७) सर्व प्रथम केले के तने ... पुनः अञ्जन का एक टुकड़ा ... से वही केले का छिलका भर ... दिन तक इसी प्रकार रहने दें। ... काल कर इसी प्रकार नीम के ... दिन तक रक्खें। इससे अञ्जन की ... होती है। नेत्र के लिए तो यह ... गुणदायी है।

सलायह सुरमह

(१) रक्त सुरमा १ तो०, ... बहुत छोटी हों ४ तो०, दोनों ... मिलाएँ और एक दिन तक ... रख दें।

गुण—अर्श भेद और ... [प्रकाश]ित है।

मात्रा—१ रत्ती से ४ रत्ती तक ... को किञ्चित् गुड़ के साथ मिला[कर] ... इसके पश्चात् रोज सुबह को ... पिलाएँ। २० दिन तक लगातार ... रहें। पथ्य—... प्याज, ... और घी चुपड़ी हुई गेहूँ की रोटी ... हिए। इससे मस्से गिर जाएँगे।

(२) रक्त सुर्मा २ तो० को ... औषधियों के रसमें खरल करें। ... की छाल, माग, माईं, कथा, ... प्रत्येक ५ तो०, काली हड़ बड़ ... कूट कर मूली के चार सेर पानी में ... सार करके एक दी आंश देकर

रो इनसे खरल कर के चने बराबर गोली
।

—अर्श तथा असाध्य नासूर के लिए
है। १ गोली से ४ गोली तक ४० दिन
में खाते रहें। और उन ओषधियों को
निकालने के पश्चात् मच रहें, बारीक
गली बेर के बराबर वटिका बनाएँ और
ाम १-२ गोलियाँ खाते रहें। ३ सप्ताह
रोग को जड़-मूल से नष्ट कर देगा।
(मनह्)

) काला सुरमा, जलाए हुए नील के
प्रत्येक १ तो०, फिटकरी (भुनी हुई)
मोती प्रत्येक १ मा०, यशद भस्म
चाँदीके वर्क ५ इनको ५ दिन मेंहदी और
के रस में खरल करके रख दें।
—उक्त औषध अञ्जन रूप से नेत्र रोगों
र मोतियाबिन्द की आरम्भिक अवस्था,
और रक्तबिन्दु के लिए परीक्षित है।
(मनह्)

) सुहागा शुद्ध, नौसादर, समुद्र झाग,
शोरा, संगयसरी, फिटकरी का लावा,
की जड़ की गुद्दी, राई की गिरी, प्रत्येक
ला और काला सुरमा १० तोला को
नींबू का रस डालकर ३ घंटे तक भली
टकर मिलाएँ। शीशी में रखने से पूर्व
या में सुखा कर खूब बारीक कर लें।
—इसको अञ्जन रूप से उपयोग में लाने
गत दृष्टिशक्ति, आँख आने, नेत्रकण्डु,
, खराश और नेत्र द्वारा जलस्राव प्रभृति
अत्यन्त लाभप्रद है। संक्षेप में यह
नेत्र रोगों की अचूक औषध है।
(पं० जे० एल० दुबे जी)

सुरमा श्वेत को ताजी इन्द्रायन में अष्ट
लकर रख दें। पुनः उक्त शुद्ध सुरमा को
दहवक् भस्म तथा मोती की सीपी की
प्रत्येक १-१ तो० के साथ मिलाकर एक
खरल करके रख दें।
—यह सुरमा पड़वाल के लिए प्रजाज
के समान और सदैव का परीक्षित है।
(मनह्)

(६) सुरमहे अस्फहानी २ तो०, मोती ६ मा०, प्रवाल ४॥ मा०, शादनह् अदसी मग़सूल (धोया हुआ) ४ मा० पृथक पृथक बारीक करके मिला लें और गुलाब में हल करके संगयसरी ६ मा० बढ़ाएँ तथा बारीक करके रख लें।

गुण—यह सुरमा दृष्टि की निर्बलता तथा जाले को लाभदायक और आँख आने में जो जलस्राव होता है उसका शोषणकर्ता है।

(शरीफ़)

(७) काला सुरमा, यशद भस्म प्रत्येक २०मा०, समुद्र झाग, ज़ङ्गार, केशर, प्रत्येक १ तो०, सफेदा और अफीम प्रत्येक ३ मा० बारीक कर लें।

गुण—दृष्टि की निर्बलता अर्थात् दृष्टिमांद्य के लिए सर्वोत्तम औषध है। इसे चक्षुओं में लगाया करें। (इ० सद०)

(८ , सफेद सुरमे को अग्निमें तपा तपा कर सातबार हरड़, बहेड़े तथा आमले अर्थात् त्रिफला के रसमें डालकर बुझाएँ, फिर तपा तपा कर सात बार घीके दूधमें बुझाएँ। पुनः उक्त सुरमे का चूर्ण करके नित्य नेत्रों में आँजें तो नेत्रों को हितकारी होता है और नेत्र सम्बन्धी सम्पूर्ण विकारों का निःसन्देह नाश होता है। भा०।

सुरमे की भस्म

(१) तबकदार श्वेत सुरमे को १० दिवस पेठा के रस में खरल करके टिकिया बना लें और एक पेठा में डालकर भली भाँति कपरौटी करें।

गुण—ज्वर की उन्मत्तावस्था में इसे १ रत्ती की मात्रा में अर्क सौंफ तथा अर्क कैवड़ा के साथ तीन बार खिलाने से लाभ होता है।

नफेमुह् रिक़ासफ़रावी (आंत्रिक ज्वर)—मूत्रदाह, यकृदूष्मा, नवीन सूज़ाक के लिए उपर्युक्त शर्बतों के साथ व्यवहार में लानेसे लाभ होता है। चक्षुओं में लगाने से दृष्टिवर्द्धक और नेत्र स्वच्छकारक है। (कु० रही०)

(२) श्वेत सुर्मे को हरे लम्बे कद्दू की गर्दन में रखकर कपरौटी करें और बहुत सी अग्नि दें, भस्म होगी। इसमें सम भाग नीले वंशलोचन मिलाकर अर्क बेदमुश्क व केवड़ा में १ सप्ताह खरल करके रख दें।

गुण—मुख, नासिका तथा शिश्न प्रभृति से रक्तस्राव होने और शुक्रप्रमेह, रजःस्राव तथा सम्पूर्ण ऊष्मा सम्बन्धी रोगों के लिए लाभदायी है। राजयक्ष्मा के लिए सुर्मा की भस्म १ तोला, चाँदी का वर्क़, धनविध मोती प्रत्येक ३ मा०, स्वर्ण वर्क (पत्र) १ मासा, केशर ४ रत्ती सबको अर्क बेदमुश्क में खरल करके २ रत्ती की मात्रा सबेरे व शाम खिलाएँ। परीक्षित है।

(मनहर)

(३) काले सुरमे की भस्म—भिलावे की स्याही, भाँगरा, ग्वारपाठे का लुआब प्रत्येक पाव-पाव कूटकर नुगदा (कल्क) बनाएँ। शुष्क होने पर इसमें १ तो० सुरमेको डली डालकर बंद करें और सकोरे में बन्द कर गिलेहिकमत (कपरौटी) कर सुखा कर २५ सेर कण्डेकी अग्नि दें। भस्म प्रस्तुत होगी।

मात्रा—१ से २ रत्ती तक मक्खनमें। ऊपरसे दुग्ध दें। गुण—पुरातन सुजाक तथा शुक्रमेह में लाभप्रद है। सम्पूर्ण त्वग् रोगों, नासिका तथा मुख द्वारा रक्तस्राव, स्त्रियों में अनियमित एवं अधिक रक्तस्राव और अर्श में मुफीद एवं प्रभावकारी है।

(कुश्ता० फ़ा०)

(४) सुरमा श्वेत, मङ्गजराहत समान भाग, सुरमा को एक दिन दही के जल में और एक रोज़ घृतकुमारी में खरल करके टिकिया बनाएँ और अग्नि दें। संगजराहत को मदार के दूध में घोटकर अग्नि दें। पश्चात् दोनों को मिला लें।

गुण—पुरातन सुजाक और नवीन व्रण प्रभृति के लिए परीक्षित है। मात्रा–२ रत्ती तक अवस्था में।

(इस० सद०)

ब्रिटिश फार्माकोपिया द्वारा स्वीकृत (ऑफ़िशल) अंजन के यौगिक

(१) अञ्जनाम्लद अर्थात् ऐंटिमोनियाई ऑक्साइडम् (Antimonii Oxidum)-ऐंटिमोनियस ऑक्साइड (Antimonius Oxide)-इं०। क़िर्मिज़ुलमश्हूनी, क़िर्मिम मश्हूनी–फ़ा०। ऑक्सीदुल् अन्तीमून–अ०।

रासायनिक संकेत (Sb_2O_3)।

निर्माण विधि ... घोल को जल में मिलाने से ऑक्. ऐंटिमनी घनीभूत ... जाता है। इसे पृथक् ... यम के साथ मिश्रित करने से ... ऑक्साइड प्राप्त होता है।

लक्षण—किञ्चित् धूसर रंग ...

घुलनशीलता - जल में तो नहीं घुलता, किन्तु लवणाम्ल (... एसिड) में सरलतापूर्वक घुल ...

मिश्रण—अञ्जन के यत्र ... द्रवम्)।

प्रभाव—स्वेदक और वामक।

मात्रा—१ से २ ग्रेन (... से ... १ वर्ष के बालक को ... से ...

ऐंटिमनीनियम् टार्टरेटम के ... है और यह उसका एक यौगिक ...

ऑफ़िशल योग

(Official prepara... पल्विस ऐंटिमोनिएलिस (P... monialis)-लै०। ऐंटिम... (Antimonial Powd... पाउडर (James's Pow... अञ्जन चूर्ण, जेम्स का चूर्ण-हि... सफूफ़ अन्तीमून, सफूफ़ जेम्स ...

निर्माण-विधि—ऐंटिमनी ... (अञ्जनाम्लिद) १ आउंस, ... (चूनस्फुरेत) २ आउंस दोनों ... जित करलें।

मात्रा – ३ से ६ ग्रेन अर्थात् (.२ से .४ डेकाग्राम); १ वर्ष ... से ½ ग्रेन।

प्रभाव—टार्टर एमेटिक के ... उससे निर्बल। मृदुस्वेदक प्र... यह ४ ग्रेन (२॥ रत्ती) की ... वस्था में उपयोग में आता है। (... अलकुहाल (मद्यसार) तथा ... के समान यह यक्ष्मा के रा... रोकता है।

ऐण्टिमोनियम् टार्टरेटम्

(Antimonium Tartaratum)—टार्टरेटेड ऐण्टिमनी (Tartarated Antimony), टार्टर इमेटिक (Tartar Emetic), पोटासियो टार्टरेट ऑफ ऐण्टिमनी (Potassio Tartarate of Antimony)-इं०। टार्टराञ्जन, वामक लवण, टार्टराञ्जन, वामक टार्टर-हिं०।

रासायनिक संकेत

$(SbOC_4H_4H_4O_6)_2, H_2O$.

निर्माण-विधि—ऐण्टिमोनियम आक्साइड एसिड पोटैसियम् टार्टरेट को कुछ जल के परस्पर मिश्रित कर इसकी लेई बना लें और इसे २४ घंटे तक पड़ा रहने दें इससे इनका पारस्परिक संयोग हो जाए। पुनः देकर जल को जला डालें। शीतल होने इसके रवे बन जाएँगे।

लक्षण—वर्ण रहित, स्वच्छ रवे जो मिर्कोणा- होते हैं। स्वाद-कुछ कुछ कसैला तथा र।

घुलनशीलता—यह एक भाग १७ भाग तल जल में और १ भाग ३ भाग उबलते जल में घुल जाता है। घोल की प्रतिक्रिया ज होती है।

मिश्रण—एसिड टार्टरेट ऑफ पोटैसियम्।

असम्मिलन (संयोग विरुद्ध)—क्षारीय , सीसा के लवण, माजूफल (गैलिक एसिड) र कषायाम्ल (टैनिक एसिड) तथा अनेक न्य सङ्कोचक द्रव्य।

प्रभाव—स्वेदक, श्लेष्मानिःसारक, हृद्याव- ादक तथा वामक।

मात्रा—स्वेदन हेतु $\frac{1}{24}$ से $\frac{1}{8}$ ग्रेन (२.४ ८ मि० ग्राम); श्लेष्मानिःसारण हेतु $\frac{1}{8}$ से ग्रेन; वमन हेतु, $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेन (३ से ६ सें०ग्राम), एक साल के बालक के लिए चौथाई ग्रेन। इन विभिन्न मात्राओं को ध्यानपूर्वक स्मरण रखें।

योग-निर्माण-विधि—इसको घोल रूप में या इसका मद्य उपयोग में लाना चाहिए। यदि इसको वटिका रूप में देना हो तो इसे दुग्ध की शर्करा (मिल्क शुगर) के साथ भली प्रकार मिश्रित कर और द्राक्षा के शीरा (ग्लुकोज़) द्वारा वटिका प्रस्तुत कर उपयोग में लाएँ।

ऑफ़िशल योग

(Official preparations).

अञ्जनात्व अंजनीय मद्य-हिं०। वाइनम् ऐण्टिमोनिएली (Vinum Antimoniale), ऐण्टिमोनियल वाइन (Antimonial Wine), डा० ना०।

निर्माण-विधि—टार्टरेटेड ऐण्टिमनी २० रत्ती (४० ग्रेन), खौलता हुआ परिस्रुत जल (डिस्टिल्ड वाटर) १ फ़्लुइड आउन्स और शेरी वाइन १९ फ़्लुइड आउन्स। टार्टरेटेड ऐण्टिमनी को पहिले खौलते हुए परिस्रुत जल में डालकर घोल लें पुनः इसे शीतल कर शेरी मद्य में मिश्रित कर लें।

शक्ति—इसके एक फ्लुइड आउन्स में २ ग्रेन अर्थात् एक रत्ती ऐण्टिमोनियम् टार्टरेटम् होता है।

मात्रा स्वेदक रूप से १० से ३० बुंद (मिनिम) और वामक रूपमें २ से ४ फ़्लुइड ड्राम। एक वर्षीय बालक के लिए श्लेष्मानिःसारक रूप से ३ बुंद और वामक रूप से १५ बुंद (मिनिम) तक।

नोट—इनके अतिरिक्त ऐण्टिमोनियम् आइसम् प्यॉरीफिकेटम (शुद्ध स्रोतोंजन) और ऐण्टिमनी सल्फाइड (काला सुरमा) दो और अंजन के यौगिक ब्रिटिश फार्माकोपिया में ऑफ़िशल हैं। इनका वर्णन प्रथम स्रोतोंजन में कर दिया गया है। अतः वहाँ देखिए।

नॉट ऑफ़िशल योग

(Not official Preparations).

अङ्गुएण्टम ऐण्टिमोनियाइ टार्टरेटी Unguentum Antimonii Tartratæ-ले०। ऑइंटमेंट ऑफ टार्टरेटेड ऐण्टिमनी (Ointment of Tartrated antimony)

–ई०। मरहम वामक टार्टार (लवण), टार्टारा-अनानुलेपन–हिं० । मरहम तर्तीफ़लमुक़र्र, मरहम नमक ग़ै–ति० ।

निर्माण-विधि—टार्टरेटम् ऐन्टीमनी का बारीक चूर्ण १ भाग सिम्पुल ऑइन्टमेन्ट (सादा मरहम) ४ भाग भली भाँति मिश्रित करलें । (ब्रिटिश फार्माकोपिया के परिशिष्टांकस्य योगानुसार)

अंजन के विभिन्न यौगिकोंके विस्तृत गुण धर्म व प्रयोग

(१) आयुर्वेदिक मतानुसार—

अञ्जन सम्पूर्ण चक्षुदोषनाशक, आयुष्य-वीर्य करता, सर्व रोगनाशक, ज्ञान प्रकाशक, शान्ति दायक, प्लीहा रोग नाशक, स्त्रियों से प्राप्त होने वाले सपेदिक, मधुमेह, यक्ष्मा आदि रोग नाशक है ।त्रिककुत् नामक पर्वतमें उत्पन्न अञ्जन सर्वश्रेष्ठ है । अथ० । सू० ४४ । ६ । का० १९ ।

स्रोतोऽञ्जन काला सुरमा और सौवीर श्वेत सुरमा को कहते हैं । जो बांबी के शिखर के सदृश होता है वह स्रोतोऽञ्जन कहलाता है। सफेद सुरमा भी स्रोतोंजन के सदृश होता है । किन्तु कुछ पीले रंग का होता है । भा० ।

काला सुरमा शीतल, कटु, कपैला, कृमिघ्न, रसायन, रस शोध्य और स्तम्भशुद्धिकारक है ।

(रा० नि० व० १३)

स्रोतोऽञ्जन (काला सुरमा) मधुर, नेत्रों को हितकारी, कपैला, लेखन, ग्राही तथा शीतल है और कफ, पित्त, वमन, विष, श्वित्र (सफेद कोढ़), क्षय तथा रक्तविकार को नष्ट करता है । यह सदा बुद्धिमानों को सेवनीय है । जो स्रोतोऽञ्जन में गुण हैं वे सौवीर में भी हैं; ऐसा विद्वानों ने कहा है । किन्तु, दोनों अंजनों में स्रोतोऽञ्जन ही श्रेष्ठ है । भा० ।

सफेद सुरमा नेत्रों को परम हितकारी है । अतएव इसे नित्य लगाना चाहिए । इसको लगाने से नेत्र मनोहर और सूक्ष्म वस्तु के देखनेवाले होते हैं । सिन्धु नामक पर्वत में उत्पन्न हुआ काला सुरमा (शुद्ध किया हुआ न होने पर भी) उत्तम होता है । इसको लगाने से यह नेत्रोंकी खुजली मैल, तथा दाह को नष्ट करता है, और क्लेद

(नेत्रों से पानी का बहना) तथा करता है । नेत्र स्वरूपवान होते हैं, वायु और धूप को सहन करने में ... काला सुरमा लगाने से नेत्रों में रोग ... इस कारण इसको भी लगाना चाहि... जागा हुआ, थका हुआ, वमन भोजन कर चुका हो, ज्वर रोगी ... से स्नान किया हो उनको सुरमा चाहिए ।

(भा०

(२) यूनानी मतानुसार—

स्वरूप—श्याम, श्वेत तथा ...

स्वाद—बेस्वाद ।

प्रकृति—प्रथम कक्षा में शीतल कक्षा में रूक्ष (किसी किसीके ... में ठंढा और रूक्ष) । ... अवयवों को । ...

प्रतिनिधि–अमार ।

गुण, कर्म व प्रयोग—सुरमा गंधक दो वस्तुओं का यौगिक है ... प्रधान है । इसी कारण यह ... ग्रक व रूक्षता प्रद है । रूक्षता की कारण यह व्रणपूरक है तथा ... मांस को नष्ट कर देता है । अपनी ... रूक्षता एवं नेत्र की ओर मलों को ... रण दृष्टि को बलप्रद तथा नेत्र की रक्षक है । उस नकसीर को ... जो मस्तिष्क के परदों से फूटा करती है। सरदी गरमी और कोचरोंका हरणकर्ता है। हुमूल (बर्ती) जरायु द्वारा रक्तस्राव रोकता है । (नफ़ी० । इसकी पिपुलित भिगोया हुआ कपड़ा रखना गुदभ्रंश (... निकलने) को गुण करता है और ... कठोरता को मृदु करता है । सुरमा ... आर्तव का रोधक है तथा रक्तस्राव (... रक्तस्राव), पुरातन सूजाक, क्षत, ... सूरों (नाड़ीव्रण) को आराम है और ... को दूर करता एवं अन्य भाँति के ... लिए गुणकारी ...

) डाक्टरी मतानुसार अञ्जन के
बाह्य प्रभाव

ञ्जन के यौगिकों का त्वचा पर सशक्त साधक या क्षोभक (इरिटेन्ट) प्रभाव होता रन्तु, टार्टरेट पेन्टिमनी को मलहम रूप में पर लगाने से शीतला सदृश दाने उत्पन्न हो हैं, जिनसे पक होकर सर्वदा के लिए चिह्न जाते हैं।

आभ्यंतरिक प्रभाव

आमाशय तथा आंत्र—अञ्जन के यौगिकों आभ्यंतरिक उपयोग से भी वैसा ही उग्रता क (क्षोभक) प्रभाव होता है जैसा कि उसके उपयोग से। परन्तु, यदि टार्टरेट पेन्टिमनी अधिक मात्रा में खाया जाए अथवा अधिक न तक औषध रूप से उपयोग में लाया तो मुख, कण्ठ, अन्नप्रणाली, आमाशय आँत पर इसका वैसा ही उग्रता साधक व होता है जैसा कि त्वचा पर।

इसे सूक्ष्म मात्रा में व्यवहार करने से आमाशय ऊष्मा एवं वेदना का भान होता है और धिक मात्रा में देने से क्षुधा प्रायः नष्ट होजाती जी मचलाता है और आमाशय व आंत्र श्लैष्मिक कला से अधिक द्रवस्राव होता है। इससे भी अधिक मात्रा अर्थात् २ या ३ ग्रेन की त्रा में देने से यह वामक प्रभाव करता है और इसका यह (वामक) प्रभाव आमाशयपर इसके प्रत्यक्ष (सरल) वामक (डायरेक्ट एमेटिक) प्रभाव प्रतिफल स्वरूप होता है। किन्तु,तत्काल अभि-शोषित होकर मास्तिष्कीय वमन केन्द्र पर भी ह किसी भाँति अप्रत्यक्ष (असरल) वामक (इनडायरेक्ट एमेटिक) प्रभाव करता है। यदि इसको स्वस्थ अन्तःक्षेप द्वारा रक्तमें प्रविष्ट किया जाए तो भी इससे वमन आने लगता है; जिसका कारण यह होता है कि कुछ तो इसका प्रभाव वमन केन्द्र पर होता है और कुछ इस प्रकार कि यह शोषित हो अभिशोषित होकर किसी भाँति आंत्र तथा आमाशय में खारिज होता है जिससे कुछ समय तक वमन आता रहता है। और यदि इसको बहुत से पानी में घोल कर दिया जाए तो वमन भी कम आता है; किन्तु, दस्त अधिक आते हैं। अत्यधिक मात्रा अर्थात् विषैली मात्रा में इसे देने से आमाशय तथा आंत्र में प्रदाह होकर विशूचिका के समान लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं और उदर में मरोड़ होकर दस्त आने लगते हैं। अति सूक्ष्म मात्रा में यदि इसे मुख द्वारा आमाशय में प्रवेशित किया जाय तो यह यदी मात्रा में शिरामें अन्तःक्षेप द्वारा पहुँचाए जानेकी अपेक्षा शीघ्र प्रभाव करता है। इससे यह सिद्ध होता है कि वमन लाने में वामक केन्द्र की अपेक्षा इसका स्थानीय प्रभाव ही मुख्य है।

हृदय तथा शोणित परिभ्रमण—अञ्जन के विलेय गुण युक्त लवण शीघ्र रक्त में शोषित होजाते हैं। परन्तु, ये रक्तधारि (प्लाज़्मा) की अण्डयुलिन में मिश्रित नहीं होते।

उपयोग के आरम्भ से ही चाहे इसको सूक्ष्म ($\frac{1}{4}$ ग्रेनसे $\frac{1}{12}$ ग्रेन) मात्रा में ही दिया जाए तो भी यह हृदय की शक्ति तथा गति दोनों को कम कर देता है। परंतु, धमनी को उत्तेजना मिलती है। उसकी गति रुक-रुक कर (क्रैं)होने लगती है। इसे अधिक मात्रा में व्यवहार करने से हृदय अत्यन्त निर्बल होजाता है। और द्वितीय यह कि वैसो-मोटर सिस्टम के किसी स्थल पर निर्बलताजनक प्रभाव पड़ने से धामनिक मांस पेशियाँ शिथिल होजाती हैं। इस कारण अंजन (पेन्टिमनी) रक्तभ्रमण तथा हृदय को सशक्त निर्बलकारी या हृदयावसादक औषध है। (अंजन का उक्त निर्बलकारी प्रभाव बहुतांश में विष अर्थात् शोणिया के समान ही होता है।)

फुफ्फुस तथा श्वासोच्छ्वास—अंजन के प्रभाव से प्रथम तो श्वासोच्छ्वास में सूक्ष्म सी उत्तेजना होती है, तत्पश्चात् वह अत्यन्त शिथिल होजाता है। अस्तु, श्वासकाल घट जाता है और श्वास छोड़ने का समय बढ़ जाता है। अन्ततः श्वासोच्छ्वास का मध्य काल बहुत बढ़ जाता है और उसकी गति अनियमित होजाती है। अंजन वायुप्रणाली की श्लैष्मिक कला के मार्ग से विसर्जित होता है। इस हेतु यह शोफघ्न श्लेष्मानिस्सारक (ऐन्टिफ्लोजिस्टिक एक्सपेक्टो-रेन्ट) प्रभाव करता है।

शारीरोष्मा—स्वस्थ दशा में अञ्जन की थोड़ी मात्रा से शारीरिक ताप पर कुछ भी प्रभाव नहीं होता। किन्तु, ज्वरावस्था में उपयोग करने अथवा बड़ी मात्रा में देने से शारीरिक ताप कम होजाता है। जिसका कारण अधिकतर तो (१) हृदय का निर्बल होजाना तथा शोणित के दबाव (रक्त भार) का कम होजाना है, (२) स्वेद स्राव और (३) तापोत्पादन (थर्मोजेनेसिस) अर्थात् मास्तिष्कीय तापोत्पादक केन्द्र पर इस का किसी भाँति निर्बलताजनक प्रभाव पड़ता है, जिससे शरीरोष्मौत्पत्ति न्यून होजाती है।

यकृत्—टार्टर एमेटिक तथा विशेषकर ऐंटि-मोनियम् सल्फ्युरेटम् प्रत्यक्षतया पित्तस्राव की वृद्धि करते हैं। अस्तु, ये पित्तनिःसारक (कोले-गॉग) हैं। ये यूरिया तथा कज्जलिकाम्ल (कार्बो-लिक एसिड) की पैदायश की वृद्धि करते और यकृत की ग्लाईकोजिनिक (शर्कराजनन) क्रिया को निर्बल करते हैं। यदि इसका अधिक समय तक उपयोग किया जाय तो मल्ल तथा स्फुर के समान ये यकृत की क्रिया को खराब करते और इसमें फैटीडीजेनरेशन (यकृत का वसा में परिणत होजाना) उत्पन्न करते हैं।

त्वचा—त्वचा पर अंजन का सशक्त स्वेद-जनक प्रभाव पड़ता है, जिसका प्रधान कारण रक्तभ्रमण का शिथिल होजाना है। किसी भाँति स्वेदजनक ग्रन्थियों पर इसका दूरस्थ स्थानीय प्रभाव पड़ना भी हेतु होता है। यदि मेंढक की त्वचा पर अंजन को लगाया जाए तो यह उसे मल्ल की भाँति सरेश जैसा मृदु कर देता है जिसे सरलतापूर्वक खुरचा जासकता है।

मूत्र- टार्टरएमेटिक गुर्दों में से गुजरते समय सूक्ष्म मूत्रजनक प्रभाव करता है, जिसका बहुत कुछ आधार त्वचाकी क्रिया पर होता है। अस्तु, यदि अत्यधिक स्वेदस्राव हो तो मूत्र कम आता है और यदि स्वेदस्राव कम हो तो मूत्रस्राव अधिक होता है।

वात संस्थान—मस्तिष्क तथा विशेषतः सुषुम्ना कांड पर अंजन का अत्यन्त निर्बलकारी प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि इसके उप-

योग के पश्चात् तबीयत सुस्त हो जा[illegible] ऊँघ सी प्रतीत होती है तथा का[illegible] जी नहीं चलता। प्राणियों पर [illegible] ज्ञात हुआ है कि अंजन के प्रभाव [illegible] क्रिया नष्ट हो जाती है और सौषुम्[illegible] स्थल शिथिल एवं निर्बल हो जाता है।

मांस संस्थान—ऐच्छिक तथा [illegible] दोनों प्रकार की विशेषकर ऐच्छिक [illegible] निर्बल एवं शिथिल हो जाती हैं। [illegible] अवस्था में जब कि इसे वामक [illegible] योग किया जाए। अस्तु, अंजन [illegible] निवारक (मसक्युलर ऐंटिस[illegible])

मेटाबोलिज्म (अपचयतंत्र)—[illegible] परिवर्तन पर अंजन का प्रभाव [illegible] तथा स्फुर के सदृश ही होता है ([illegible] वर्णनों का अवलोकन करें)। प्रति[illegible] देने से यह सूक्ष्म परिवर्तक प्रभाव [illegible] किन्तु, यदि इसको अधिक समय त[illegible] में लाया जाए तो यह धातु [illegible] (टिश्यूज़) के साथ कुछ मास तक [illegible] चिपटा रहता है। जिससे आत्यन्ति[illegible] विशेषतः यकृत में फैटीडीजेनरेशन ([illegible] वसा में परिणति) हो जाता है।

डॉक्टर रिंगर महोदय के कथनानु[illegible] जीवनमूलीय विष है, तथा यह म[illegible] और हाइड्रोस्यानिक एसिड के सा[illegible] (माइटोजीनस) धातु या तन्तुओं [illegible] या व्यापार को निर्बल करता है।

विसर्जन—अंजन के लवण मूत्र, [illegible] वायु प्रणालीस्थ श्लेष्मा, दुग्ध, तथा मल द्वारा शरीर से विसर्जित होते हैं। कुछ भाग शरीर में अवशेष रह जाता है। [illegible]

हृदय—औषधीय मात्रा में प्रयु[illegible] अनुसार इसके प्रभाव में भेद उपस्थित है प्रेम की मात्रामें इसके हृदय पर प्रभाव पड़ने के कारण यह नाड़ी की गति को [illegible] कर देता एवं स्वेदक प्रभाव करता है, जिससे स्वेदस्राव होता है। इसका यह प्रभाव क्युटेनियस मसल्ज़ (त्वगीय मांस तन्तु) है [illegible]

होता है। यह वायु प्रणालीस्थ श्लेष्मा अधिक करता है। उक्त औषध का यह भाव है जो इसे श्लेष्मानिःसारक औषधों में प्रथम स्थान प्रदान करता है।

अञ्जन के प्रयोग

बाह्य प्रयोग

य से कुछ काल पूर्व एमेटिक द्वारा मलहम काउण्टर इरिटेण्ट (स्थानीय धक) रूप से फुफ्फुस, मस्तिष्क तथा त प्रभृति रोगों में व्यवहार किया जाता न्तु इसके लगाने से कठिन वेदना होती से सदा के लिए चिह्न पड़ जाते हैं, आजकल इसका उपयोग सर्वथा है।

आभ्यन्तर प्रयोग

माशय तथा आंत्र—विषाक्त प्राणी को राने के लिए टार्टार एमेटिक का उपयोग नहीं; क्योंकि प्रथम तो इसका प्रभाव से होता है, और द्वितीय इससे अत्यधिक ता उत्पन्न होती है। किन्तु, श्वासीय प्रदा- गों, यथा कठिन कास अर्थात् वायुनलिका स्वरयन्त्र प्रदाह (लेरिञ्जाइटिस) तथा (क्रूप) प्रभृति में जहाँ कि वमन एवं चालन की निर्बलता दोनों प्रभावों की कता होती है, वहाँ पर उक्त औषध गुण प्रदर्शित करती है। विषम ज्वरमें जब ति से लाभ नहीं होता तब टार्टारएमेटिक न करा के पुनः क्विनाइन खिलाने से लाभ है।

श्रमण तथा श्वासोच्छ्वास—शोथघ्न टफ्लोजिस्टिक) प्रभाव के लिए टार्टार एमे- को $\frac{1}{60}$ ग्रेन की मात्रा में मॉर्फिया (एको-) के समान बहुत से कठिन प्रादाहिक रोगों रम्भावस्था, यथा–गलग्रह (टॉन्सिलाइटिस), न्त्रप्रदाह (लेरिंजाइटिस), कठिन (वायुप्रणाली प्रदाह), फुफ्फुस प्रदाह मोनिया), फुफ्फुसावरक कला प्रदाह (प्लुरिसी), हृदयावरक प्रदाह (पेरिकार्डाइटिस), उदरच्छदा कला प्रदाह (पेरिटोनाइटिस) और डिम्बाशय प्रदाह (ओवेराइटिस) प्रभृति में उपयोग करते हैं।। बच्चों के कठिन कास या क्रूप (खुनाक) आदि में जब कि इसे अकेले अथवा इपीकाक्वाना के साथ मिलाकर दिया जाता है तब यह और अधिक लाभ करता है।

नोट—नवीन तीव्र कास के आदि में इसको सामान्यतः व्यवहार में लाते हैं। परन्तु, यदि रोगी बलवान अर्थात् दृढ़ प्रकृति का हो तो इसके प्रयोग से अधिक लाभ होता है। और जब इसके उपयोग से पतला होकर श्लेष्मास्राव आरम्भ हो जाए तब फिर इसका उपयोग स्थगित कर देना चाहिए। डिफ्थीरिया में इसका उपयोग न करना चाहिए।

टार्टार एमेटिक प्रतिश्याय ज्वर के आक्रमण को शीघ्र कम कर देता है। हृदय दौर्बल्यकारी होने के कारण अञ्जन को अब स्वेदक प्रभाव हेतु बहुत कम उपयोग में लाते हैं। पर यदि रोगी सशक्त हो तो कभी कभी इसे उक्त प्रभाव हेतु उपयोग में लाते हैं।

पल्विस ऐण्टिमोनिएलिस एक सूक्ष्म स्वेद- जनक (डायफोरेटिक) औषध है, तो भी प्रतिश्याय ज्वर तथा कासीय फुफ्फुस प्रदाह में इसको देने से कभी लाभ होता है। डॉक्टर ग्रेविस महोदय ऐसे ज्वर में जिसमें कठिन उन्माद की अवस्था हो, $\frac{1}{4}$ (चौथाई) ग्रेनकी मात्रामें टार्टार एमेटिक को उतनी ही अफीम के साथ योजितकर एक एक या २–२ घंटा पश्चात् कुछ बार उप- योग करना लाभप्रद बताते हैं।

सर वि० व्हिटला के कथनानुसार मदात्यय (डेलीरियम ट्रीमेन्स) में जब अफीम निद्रा उत्पन्न करने में असफल हो जाता है उस समय उसके साथ $\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ ग्रेन उक्त औषध को मिलाकर व्यवहार करने से शीघ्र प्रभाव होता है।

वात संस्थान तथा मांस संस्थान— मेनिया (उन्माद) रोग में पागलपन को दूर

करने के लिए तथा इसी द्वारा तीव्र विषाक्तता अर्थात् उग्र मद्यात्यय (एक्यूट अलकुहलिज़म) में निद्रा हेतु टार्टरेटेड ऐण्टिमनी उपयोग में आ सकते हैं।

व्यापक अवसन्नताजनक औषधों यथा क्लोरोफॉर्म आदि के प्रचार पाने से प्रथम टार्टरेटेड ऐण्टिमनीको अन्त्रवृद्धि (हर्निया) रोग तथा संधि-च्युति (डिस्लोकेशन) में पेशियों को ढीला करने के लिए अधिकता के साथ व्यवहार में लाते थे, किन्तु क्लोरोफॉर्म के दर्याफ्तके बाद उक्त अभिप्राय हेतु अब यह बिलकुल व्यवहार में नहीं आती।

परिवर्तक तथा स्वेदनिःसारक रूप से ऐण्टि-मनी सल्फ्युरेटम् को प्रायः गठिया रोग (गाउट) और (हिपैटिक फुलनेस) में देते हैं। कैलोमेल के साथ पलमर्स वटी रूप से इसे उपदंश रोग में बर्तते हैं।

नोट—डाक्टरी चिकित्सा में काला आज़ार के लिए तो केवल एक टार्टार एमेटिक ही एक ऐसी औषध सिद्ध हुई है जो कि उक्त रोग को समूल नष्ट कर सकती है।

पूर्ण विवेचन के लिए देखो—काला आज़ार। श्लीपद रोग में सोडियम् ऐण्टिमनी-टार्ट का अन्तःक्षेप कराना गुणदायी है। आव-श्यकतानुसार, १, २ या ३ सप्ताहके अन्तर से दें। टार्टरेटेड ऐण्टिमनी अब बहुत कम उपयोग में आती है। चूँकि यह घुलनशील एवं स्वादरहित औषध है, अतएव इसको घोल रूप में व्य-वहार करना उत्तम है। इसको सदा अति-न्यून मात्रा ($\frac{१}{६०}$ से $\frac{१}{४०}$ ग्रेन) से आरम्भ करना चाहिए; क्योंकि यह देखा गया है कि इसको $\frac{१}{४०}$ ग्रेन की मात्रा में बारम्बार देनेसे वमन आने लगता है।

इसको रेचक प्रभाव के लिए कदापि उपयोग में न लाना चाहिए। इसके उक्त प्रभाव को रोकने के लिए प्रायः इसको अफीम के साथ मिलाकर दिया करते हैं। जब इसको नैलिद (आयो-

डाइड) या इपिकेकुआ [illegible] दिया जाता है तब [illegible] पर इसका प्रति [illegible]

एक वर्षीय शिशु को [illegible] खुनाक (Croup) म- [illegible] ऐण्टिमनीटार्ट [illegible] १ ग्रेन [illegible] वाइनाइ इपीकाक ४ ड्रा० [illegible] सिरपाइ स्प्रिन्स० १ [illegible] मुक्ता [illegible] १ [illegible]

इसको मिश्रित कर [illegible] एक चाय के चम्मच भर अर [illegible] देते रहें। पश्चात [illegible] तीन घंटे बाद दें। सल्फ्युरेटेड [illegible] सुरमा) न्यून मात्रा में टार्टा [illegible] गुणधर्म रखता है।

उपदंश (सिफिलिस) [illegible] कर चुका है। किन्तु [illegible] ऑफ ऐण्टिमनी ([illegible] अम्बनोम्पिद घोल) [illegible] (शिरान्तरीय) या इण्ट्रामस्क्यु [illegible] रीय) इंजेक्शन ऑफ टार्टा [illegible] रकार के साथ उसका उपयोग [illegible] इसे त्वगन्तर, शिरान्तर या [illegible] द्वारा उपयोग में लाना चाहिए।

अञ्जन विषतन्त्र ([illegible]

तीक्ष्ण विषके लक्षण [illegible] अवस्था संखिया विष के [illegible] आध, पौन घंटेसे एक घंटेके [illegible] लक्षण उपस्थित होजाते हैं। वम- [illegible] कंठ में गरमी तथा दाह [illegible] गला घुटकर निगलन कठिन होजाता [illegible] जाता है। बारम्बार दस्त व [illegible] किया हुआ अन्य कभी हरा या [illegible] आकारान्तर नीला होता है। [illegible] और पिण्डली की मांस-पेशियाँ [illegible] हैं। मूत्रावरोध होता है। [illegible] उन्माद या शिथिलता भी हो [illegible] अंतिम कक्षा की निर्बलता होती [illegible]

ीव्र और अनियमित तथा अप्रकट रूप ती है। त्वचा शीतल तथा पिचपिची हो । कभी शरीर पर दाने निकल आते हैं।
पद—यदि स्वयं खुलकर वमन न आता वामक प्रयोग करें, यथा—१२ रत्ती (३० सफेट ऑफ ज़िङ्क को ४ आउंस उष्ण जल र घोलकर दें या एपोमार्फीन $\frac{1}{15}$ से $\frac{1}{10}$ त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करें अथवा स्टमक पम्प प से आमाशय को भली भाँति धोएँ। ाजू सत्व (टैनिक एसिड) को जो कि मुख्य अगद है किसी न किसी रूप में र में लाएँ।
, टैनिक एसिडको १२ रत्ती (२० ग्रेन) की एक पाव गरम पानी में मिलाकर पिलादें यदि आवश्यकता हो तो ऐसी एक एक औषध और २-३ बार पिलादें, या (२) चूर्ण १ तो० पावभर पानी में जोश देकर ३) फीकर को छाल १ छं० आर्द्ध सेर जल घिस कर पिलादें या तेज़ चाय अथवा पिलादें और जब वमन बन्द होजाय तब अण्डों की सुफेदी जल या दुग्धमें फेंटकर या दुग्ध ही पिलादें। वेदना शमन हेतु अफ़ीम (मॉरफीन का) त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करें। ता हरण हेतु उत्तेजक औषध उपयोग में या कुचला सत्व (स्ट्रिक्नीन) अथवा टेलिस का त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करें। रान बगल में उष्ण जल की बोतलें लगाएँ।
ोट—पटर ऑफ ऐंटिमनी के वे ही अगद र खनिजाम्लों के। इस लिए देखिए—खनि-म्ल (Mineral acids)

ञ्जनयुग्मम् anjana-yugmam—सं० स्त्री० ाञ्जन और रसांजन। वा० सू० प्रियंगु दे। देखो—अञ्जनम्।

ञ्जनरसः anjana-rasah—सं० पुं० (१) ं, मिर्च, इन्हें बराबर ले पीसकर नस्य दें तो पात ज्वर दूर हो।
(२) हींग, फिटकरी इन्हें पीसकर नस्य देने से सन्निपात ज्वर दूर होता है।
(र० सा० सं० ज्वर० चि०।)

अञ्जन रायि anjana-rayi—तै० काला सुरमा—हिं०। देखो—अञ्जनम्। ऐण्टिमोनिआइ सल्फ्युरेटम् (Antimonii Sulphuretum)—लें०।

अञ्जनवटी anjana-vaṭi सं० स्त्री० पारा १ टङ्क, गंधक २ टङ्क, मिर्च ३ टङ्क सब को पीस कजली करें, पुनः करेले के रस की २१ भावना देकर मर्दन कर एक रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसको जल से घिस अञ्जन करने से हर प्रकार के ज्वर दूर होते हैं। (किसी किसी जगह केले के पत्र के रस में ३१ पुट देने को कहा है।)
(वृ० रस० रा० सु० ज्वर चि०।)

अञ्जन विधिः anjana-vidhih—सं० पुं० (Method of using collyrium). नेत्रप्रसाधन भेद, अञ्जनकर्म यथा-दोष पकनेके पश्चात् योग्य अञ्जन आँजना चाहिए। जो पदार्थ नेत्रों में आँजा जाता है, वह अञ्जन कहलाता है। गोली, रस, और चूर्ण रूप से अञ्जन तीन प्रकार का होता है। इनमें चूर्ण से वटी बलवान है, और वटी से रस बलवान् है।

अञ्जन को सलाई अथवा अँगुली से आँजना चाहिए। गोली रूप अञ्जन से रसरूप अञ्जन और रसरूप अञ्जन से चूर्णरूप अञ्जन निर्बल है। प्रागुक्त प्रत्येक अञ्जन के स्नेहन रोपण और लेखन आदि तीन भेद होते हैं। क्षार, कड़वे (तीक्ष्ण भा० प्र० ख० १) और खट्टे रस वाले अञ्जन को लेखन कहते हैं। (यह अञ्जन नेत्रों में, पलकों में, मर्मों के समूह में, कान में और कपाल की हड्डी में रहने वाले दोषों को स्थान से गिराकर मुख से, नाक से तथा नेत्रों से निकाल देता है।) कसैले तथा कडुए रस वाले और स्नेह युक्त अञ्जन को रोपण अञ्जन कहते हैं। स्नेह तथा शीतल होने से रोपण अञ्जन वर्ण को उत्तम करता है और दृष्टि के बल को भी बढ़ाता है। (भा० प्र० ख० १)

मधुर रस युक्त और स्नेह युक्त अञ्जन स्नेहन कहलाता है (स्नेहन अञ्जन दृष्टि के बल के

इलायची, मुलहठी प्रभृति द्रव्य विष
न्तर्दाह तथा पित्तनाशक हैं। वा०सू० १५
सुर्मा, फूल प्रियंगु, जटामांसी, सफेद
, नीलकमल, रसांजन, इलायची, मुलहठी,
सर। यह गण विष अन्तर्दाह तथा पित्त-
क हैं। चं० सं० द्रव्यगणाधिकारे।

का anjanádhiká-सं० स्त्री० (१)
कपास का क्षुप। देखो-कालाञ्जनी।
) अञ्जनी, लेपकारिणी। भा०नाद-चं०।
०। हे० च० ४ श०। क्षुद्रमूषिका।

ः anjanámbhah-सं० क्ली० अञ्जन
लोशन, चक्षु प्रक्षालनार्थ औषधीय द्रव।
क्विड कॉलीरियम् (Liquid colly-
m), आई वाटर (Eye Water)
। चै० श०।

ः anjanikah-सं० पुं० गन्धरास्ना।
श०।

का anjaniká-सं० स्त्री० देखो-अञ्ज-
धिका। छाँगरी। लु० क०।

anjani-सं०स्त्री० (१) कटुका (-की)-सं०
की-हिं०। पिक्रोरहाइज़ा कुरोआ (Pic-
rrhiza kurroa)-ले०। (२) काली
पास। देखो-कालाञ्जनी। वा० नि० घ० ४।
३)-हिं० संज्ञा स्त्री० अञ्जननामिका।
जन, यालिक, कुर्प, सोमरडी (फा० ई०
भा०), लिम्ब (इं० मे० प्लां०) मह०।
शमरम (फा० इं० २ भा०), कायमपूवेट्टि,
री-चेट्टि (इं० मे० प्लां०)-ता०। अञ्जि-
ट्टु-(चेट्टु) ते०। सुर्प (फा० इं० २ भा०),
स्व-नोलि-ब ना०। वारी-काह, सेह काय
सि०। काशवा-मल०। अंजन, यालिक, सोमरडी
बम्ब०। काली कुडी-कों०। मे० टिङ्क्टोरियम्
I. Tinctorium, मेमीसीलोन ईडयुली

० कमेस्टिबल (Memecylon Come-
stible)-ले०।

मेलास्टोमेसीई वर्ग

(N. O. Melastomaceae.)

उत्पत्ति स्थान—पूर्वी व पश्चिमी प्रायद्वीप
और लङ्का।

वानस्पतिक विवरण—अञ्जनी के लघु
वृक्ष अथवा झाड़ियाँ होती हैं, जो पथरीली भूमि में
उत्पन्न होती हैं। "फ्लोरा ऑफ ब्रिटिश इण्डिया"
में इसके द्वादश भेदों का वर्णन किया गया है।
यह एक सुन्दर झाड़ी है जिसमें चमकीली हरित
वर्ण की पत्रावली और निम्न शाखाओं में नीला-
भायुक्त बैंगनी रंग के पुष्प-गुच्छ लगते हैं।
चौथाई इंच व्यास के फल लगते हैं। इसके
सिरे पर चार पंखड़ी युक्त पुष्प-वाह्य-कोष
(Calyx) लगा होता है। फल खाद्य है।
किन्तु कसैला होता है। पत्ते १॥ से ३॥ इं०
लम्बे, १ से १॥ इं० चौड़े, सम्पूर्ण (अखण्ड), दृढ़,
चर्मोपम, पत्र-डंडी लघु, अत्यन्त अस्पष्ट पार्श्विक
शिरायुक्त होते हैं। ये सूखने पर पीताभायुक्त
हरितवर्ण के हो जाते हैं। स्वाद-अम्ल, तिक्त और
कसैला।

रसायनिक संगठन-इसमें क्लोरोफिल (हरि-
न्मूर्ति) के अतिरिक्त पीत ग्ल्युकोसाइड, राल
(Resin), रञ्जक पदार्थ, निर्यास, श्वेतसार, मेद
का तेज़ाब, वेडौल रेशे (Crude fibre)
और शैलिका (silica) युक्त अनैन्द्रियक द्रव्य
विद्यमान होते हैं।

प्रयोगांश—मूल और पत्र।

प्रभाव व प्रयोग—भारतवर्ष और लङ्का में
इसके पत्र रङ्ग के लिए प्रयुक्त होते हैं।
इसका विशेष प्रभाव रंग को पक्का करना है;
इसलिए मद्रास में चटाई बनाने वाले
हड़, पतङ्ग और मजीठ के साथ इसे विशेष रूप
से उपयोग में लाते हैं। गम्भीर रक्तवर्ण
उत्पन्न करने में वे इसे फिटकिरी से उत्तम ख़याल
करते हैं।

अञ्जनी शीतल और संकोचक है। इसके पत्ते
का शीत कषाय (२० भाग में १ भाग) आँख
आने में संकोचक लोशन रूप से व्यवहार में
आते हैं और सूज़ाक एवं श्वेत प्रदर में इसका

आभ्यन्तरिक उपयोग होता है। इसकी जड़ का क्वाथ (१० में १) ११ तो० से ३॥ तो० की मात्रा में अत्यधिक रजःस्राव के लिए लाभदायी ख़याल किया जाता है, (डूरी०)।

अञ्जनी की छाल का चूर्ण सुगन्धित द्रव्यों, यथा—अजवायन, (काली)मिर्च और उदबार प्रभृति के चूर्ण के साथ मिलाकर इसे कपड़े में बाँधकर मोच आने अथवा कुचल जाने में इसका सेक करें अथवा इसे लेप के काम में लाएँ। (थि० डाइमॉक)।

डॉक्टर पीटर के वर्णनानुसार अञ्जनी पत्र बेलगाँव (दकन) में सूजाक के लिए बहुत प्रसिद्ध है। इस हेतु इसको खरल में कुचलकर उबलते हुए जलमें डाल इसका इन्फ्यूजन (शीत कषाय) तय्यार करना चाहिए।

अञ्जबार } anjabára–अ० किसी २ ग्रंथ में
अञ्जुबार } अन्जुबार और अक्षिवार भी आया है। अञ्जबार होज़र, बंदक-फ़ा०। बु० मु०। सिरोमती –सं०। इं० मे० मे०। मचूटी, इन्द्राणी, केसरु, कुबर,सिसोमली, बीजबन्द-हिं०। मस्लून, बिलोरी अञ्जबार-पं०। हीव-काश०। इन्द्रारू–सिंध। पॉलीगोनम् अविक्युलरी Polygonum Aviculare, पॉ० बिस्टोर्टा P. Bistorta Linn., पॉ० विविपरम P. vivipa-rum–ले०। नॉटग्रास knot grass–इं०। फॉ० इं०। इं० मे० मे०। इं० मे० प्लां०। मेमो०। रिनोयी ओइसी Renouee oise-aux–फ्रां०।

पॉलिगोनेशिई (अञ्जबार) वर्ग
(*N. O. Polygonaceæ*)

उत्पत्ति स्थान—उत्तरी एशिया और यूरोप। यहाँ से यह भारतवर्ष में लाया गया। फा० इं० ३ भा०। पश्चिमी हिमालय, काश्मीर से कुमायूँ तक, रावलपिण्डी और डेकन। इं० मे० प्लां०।

इतिहास—सर्व प्रथम यूनानी ग्रन्थों में अंजुबार का वर्णन किया गया है। अस्तु, दीसक़ूरीदूस (Dioscorides) और प्लाइनी (Pliny) के ज़माने में यह रक्तावरोधक मूत्रमेहनीय तथा मूत्रल प्रभाव हेतु आता था। जलनयुक्त आमाशयिक इसके पत्र को स्थानीयरूप से प्रयोग और मूत्राशय एवं विसर्प लेप करते थे। इसका रस तिजारी प्रभृति ज्वरों में, ज्वर चढ़ने से थोड़ा विशेषरूप से उपयोग में आता था।

अस (Scribonius) का चूँकि यह प्रत्येक स्थान में पाया लिए इसको पालिगोनोम (Poly- कहते हैं। इब्नसीना तथा अन्य इसको असाउराई, तथा ... हैं। इनके विचार से अन्जुबार होता है तथा वर्णन क्रम में वे इसके उन्हीं उल्लेख करते हैं जिनका वर्णन ने सर्व प्रथम अपने ग्रंथों फ़ारसी लेखक इसको ... कहते हैं। आयुर्वेदिक इसका कहीं भी वर्णन नहीं मिलता भारतवर्ष में हकीम लोग अबभी रोगों में वर्तते हैं जिनका ज़िक्र ने किया है।

वानस्पतिक विवरण—इसका के क़न्द के समान होता है। मूल अत्यन्त कठोर, कुछ कुछ काष्ठीय, शाखी एवं सिरा साधारण, श्यामताप्रद विषम होती है। प्रकाण्ड अनेक फैला हुआ,साधारणतः दण्डवत बहुशाखा युक्त, गोल, धारीदार पर पर्णसंयुक्त होता है। पत्र–एकान्तर विषमवर्ती, डंठल युक्त, मुश्किलसे अण्डाकार या बर्छीके आकारका,सम्पूर्ण अधिक कोणीय, एक नस से युक्त, चिकना, विभिन्न चौड़ाई वाला, चर्मोपम, वर्ण कुछ कुछ धूसर अथवा डंठल की ओर गावदुमी होता है। गंभीर रक्त तथा हरित वर्ण से चित्रित। बीज–त्रिकोणाकार चमकीले और होते हैं।

प्रयोगांश जड़ (अधिकतर जड की छाल, [illegible]वा जड़के रेशे) उपयोगमें आती है। स्वाद-[illegible]का। प्रकृति-२ कक्षा में ठंडी और रूक्ष है। [illegible]निकर्ता-शीत प्रकृति को। दर्पनाशक-सोंठ, [illegible]द। प्रतिनिधि-ज़रिश्क और गिले अरमनी। [illegible]त्रा-४ से ६ मा० तक।

रासायनिक संगठन—अञ्जुबार सत्व अर्थात् [illegible]लिगोनिक एसिड (Polygonic acid), [illegible]नाम्ल (Tannic acid), माज्वाम्ल (Gallic acid), श्वेतसार और कैल्शियम् [illegible]क्ज़ेलेट (Calcium oxalate)।

गुण, कर्म, प्रयोग—(१) सम्पूर्ण अवयवोंके [illegible]धिरका रुद्धक, फुप्फुस और विशेष करके वक्षः-[illegible]ल के रुधिर का रुद्धक है। (२) पित्त और [illegible]धिर के दाह का शमनकर्ता। (३) पक्वाशय [illegible]सम्बन्धी रुधिर, प्रवाहिका, वमन और जीर्णा-[illegible]तिसार (पुराने दस्त) का रुद्धक और नक़साओं [illegible] रुद्धक है। (४) इसका चूर्ण क्षतों पर बुर-[illegible]ने से रक्तस्राव रुककर वे भरने लगते हैं। [illegible] निर्विशेष).

[illegible] अञ्जुबार श्लेष्मानिस्सारक, मूत्रविरजनीय, [illegible]ध्य, सङ्कोचनीय और परियायज्वरनिवारक है। [illegible]सकी जड़ का क्वाथ (१० भाग में १ भाग) [illegible]॥ तो० से २ तो० की मात्रा में जनशान (Gentian) के साथ विषम ज्वर (Malaria), पुरातन अतिसार और अश्मरी रोग [illegible] तथा रक्तष्ठीविका सम्बन्धी कास, कुकुरखाँसी और अन्य फुप्फुसीय रोगों में भी व्यवहृत होता है। इसका रस भी लाभदायक है। श्वेतप्रदर [illegible]था व्रणों में इसका क्वाथ पिचकारी द्वारा (पाय-[illegible]निमें) व्यवहृत होता है तथा मसूड़ों की सूजन और कव्वा लटक आने पर इसकी कुल्ली करना [illegible]सर्वोत्तम है। ई० मे० मे०।

[illegible]नासिका प्रभृति से रक्तस्राव को रोकने के लिए अञ्जुबार उपयोग में आता है। चि० डाइमॉक

इसकी सूखी जड़ का वेदनाशमन हेतु बाह्य प्रयोग होता है। (स्टुवर्ट).

[illegible]रह anjarah-फ़ा०, अ० देखो-अञ्जुरह।

अञ्जरा anjará-फ़ा० सिरियारी, सिरवाली-हिं०।

अञ्ज़रान áanzarána अ० आज़रयू। लु०क०।

अञ्ज़रूत anzarúta-अ० सिर०,अञ्ज़रूत। गुज़र-वस्व०। यह गुज़ुद (फ़ा०) शब्द का अपभ्रंश है। "मख्ज़नुल् अद्वियह्" के लेखक मीर मुहम्मदहुसैन महाशय के विचार से इसके पर्याय निम्न प्रकार हैं, यथा-कुह्ल फ़ारसी (फ़ारसी अञ्जन), कुह्ल किर्मानी (किर्मानी अञ्जन) -अ०। अञ्जदक, कुञ्जुद, अगाधक, कुन्दरू -फ़ा०। लाई,लाही-हिं०। ऐस्ट्रागेलस सर्कोकोला (Astragalus sarcocolla, *Dymock.*)

लिग्युमिनोसी अर्थात् शिम्बी वर्ग

(*N. O. leguminosæ.*)

उत्पत्तिस्थान—फ़ारस।

इतिहास—यद्यपि पूर्वी देशों में आज भी अञ्ज़रूत अधिकता के साथ उपयोग में आता है, तो भी वर्तमान कालमें लोग यूरुपमें मुश्किल से इसे जानते हैं। दीसकूरीदूस (Dioscorides) हमें बतलाता है कि यह एक फ़ारसी वृक्ष का गोंद है जो चूर्ण किए हुए लोबान के सदृश और सुर्ख़ीमायल तथा कुछ कुछ तिक्त स्वाद युक्त होता है। इसमें ज़ख्मों के बन्द करने और चक्षुप्रदाहशोधक गुण है। यह प्लस्तरों(पलास्तरों) का एक अवयव है इसमें गोंदों का मिश्रण करते हैं।

प्लाइनी (Pliny) उन्हीं गुणों का वर्णन करता है और इतना विशेष बतलाता है कि चित्रकार इसकी बड़ी इज़्ज़त करते हैं। इउनसीना कहते हैं कि यह बिना दाहके व्रणों को पूर्ति करता एवं अंकुर लाता है। प्रस्तर (प्लास्टर) रूप से उपयोग करने पर यह समस्त प्रकार के शोथों को लयकर्ता है।

मसीह इतना विशेष बतलाते हैं कि यह [illegible] रेचक है और कफ एवं विकृत दोषों [illegible] करने के लिए उत्तम है। [illegible] कहते हैं कि इसका [illegible] है [illegible] जिस वृक्ष से यह [illegible] है वह [illegible]

निकट राधानकारह् की पहाड़ियों में पाया जाता है। उक्त निर्यास का अन्य नाम ज़ुदुरानह् है। जब यह पहिले निकलता है तब श्वेत होता है, किन्तु वायु में खुले रहने पर लाल होजाता है।

अर्वाचीन लेखकों में "मख़ज़नुल् अद्वियह" के लेखक मीर मुहम्मद हुसैन हमें बतलाते हैं कि इस्फ़हान में अञ्जरूत को कुन्जुद और अनरबक कहते हैं (शेषके लिए देखो-पर्याय सूची)। आप के कथनानुसार यह शाइकह् नामक काँटेदार वृक्ष का गोंद है जो ६ फीट ऊँचा होता है और जिसके पत्र लोबान पत्र सदृश होते हैं। इसका मूल निवास स्थान फ़ारस और तुर्किस्तान है। पुनः वे उक्त औषध का ठीक विवरण देते हैं।

आयुर्वेदीय ग्रन्थों में इसका कहीं भी ज़िकर नहीं पाया जाता।

वानस्पतिक विवरण—सार्कोकोला के न्यूनाधिक सामूहिक एवं अत्यन्त विचूर्णित दाने होते हैं। यह अपारदर्शक अथवा अर्धस्वच्छ होता है और गम्भीर रक्त से पीताभायुक्त श्वेत अथवा धूसर वर्ण में रूपान्तरित होता रहता है। इसमें मुश्किल से कोई गन्ध पाई जाती है। इसका स्वाद अत्यन्त कड़ुआ और मधुर होता है। उत्तप्त करने पर यह फूलता है और जलते समय इसमें से जले हुए शर्करा की सी गन्ध आती है। सार्कोकोला (अञ्जरूत) निर्यास फ़ारसी बन्दरगाह बुशायर से थैलों में बम्बई आता है। इसके अन्य भागों का विवरण निम्न प्रकार है—

फल—ऊँठल छोटा, पतला, पुष्प-वाह्य-कोष अण्डाकार, पत्राकार, भूसी संयुक्त, ½ इञ्च लम्बा, ४ तंग त्रिभाग युक्त (पद्म सूक्ष्म खण्डयुक्त) और खुला हुआ होता है। इसके भीतर पुष्पदल (Petals) और एक अण्डाकार, सख्त, तुण्डाकार, फली जो धान के इतनी बड़ी और जिसका बाह्य धरातल एक घने सुफेद वर्ण के रोओं से आवरित होता है। यद्यपि फली पक जाती है तो भी पंखड़ियाँ लगी रहती हैं। उनमें से सबसे ऊपर वाली फणाकार होती और फली के तुण्ड भाग को ढाके रहती। द्विकपाटीय होती है, उभारकी एक ओर धूसरवर्ण का ... है, जिसका व्यास ⅟₆ इञ्च होता भिगोने से फूलता और फट... समूह में निकल पड़ता है। कुछ... नीय तथा निर्यासपूर्ण होती है।

प्रकाण्ड-अर्थात् तना—काष्ठीय, ... एवं प्रकाश मय गड्ढे होते हैं, ¾ से १ इंच लम्बे जो लघु शाखा... से आवरित होते हैं और जिन... पपड़ी जमी होती है।

पत्र—कहते हैं कि इनके पत्र... सदृश होते हैं। (लर...

प्रयोगांश—निर्यास।

रासायनिक संगठन—सार्कोकोलीन... निर्यास ४.६०, सरेशी पदार्थ... काष्ठीय द्रव्य प्रभृति २६.८०। ४० भाग, शीतल जल तथा २५ भाग... हुए जल में घुलनीय है। (गिबर्ट)

मात्रा—२॥ मा० से ४॥ मा० (४... १ मा०)। प्रकृति—दूसरी कक्षा के... उष्ण और उसी कक्षा के आरम्भ में... हानिकर्ता आम्र को। ४ दिरम... विशेषकर अभ्रक के साथ विष है।... कतीरा, बबूल का गोंद और रोग़न बादाम... प्रतिनिधि—इसके समभाग गुग्गुल और... धिक निशास्ता। मुख्य प्रभाव—अव... और नेत्ररोग को लाभ पहुँचाता है।

गुण, कर्म, प्रयोग—यद्यपि ... प्रकार की रतूबत भी होती है। ... खुश्की के साथ दृढ़ता पूर्वक मिली हुई है, तो भी खुश्की ग़ालिब रहती है। इसी... बिना कान्तिकारी गुण एवं तीक्ष्णता के... व्रणरोपक है और इससे यह व्रणों को... करता है, क्योंकि यह उस राध और ... द्रवों को जो व्रणों को भरने नहीं देते... देता है। अपने लहेस के कारण व्रणों के... को जोड़ देता है।

...व धाने को अन्त में लाभप्रद है, क्योंकि ... कांतिकारिणी गुण एवं कष्ट के दोषों को ...ता है और नेत्र की ओर बहकर आनेवाले ...से रोकता है। संधियों से गाढ़े दोषों को ...द्वारा विसर्जित करता है; क्योंकि इसमें ...रक अंश है जिसकी क्रिया में तस्कीन ...(द्रा कारित्व), नुजुज (परिपाक), ...ह (स्रोतावरोधन) और तहलील ...(विलायन) समावेशित है। परन्तु किसी ... के विचारानुसार उसकी यह क्रिया (गाढ़े ...ों को दस्त द्वारा निकालना) केवल इसकी ...यत की वजह से है।

(नफ़ी०)

...अन्जरूत रेचक और विकृत एवं श्लैष्मिक ...ों को लयकर्ता है। निशोथ तथा ह... ...ते के साथ मिलाकर उपयोग में लाने से ...सर्वोत्तम प्रभाव करता है। अपस्मार में एरंड ...के साथ मिलाकर भीतरी रूप से और नेत्र ... जलस्राव होने पर इसका स्थानीय उपयोग ...ता है। संधिवातनाशन और कृमिघ्न प्रभाव ...इसका आभ्यन्तरिक प्रयोग होता है।

...बृंहण प्रभाव हेतु मिश्रदेशीय स्त्रियाँ इसे ...योग करती हैं। मात्रा आधा से २ मिस्क़ाल है। ...धिक मात्रा में आंत्रीय अंध्यवरोध के कारण ... घातक सिद्ध होता है। अंजन रूप से उपयोग ...ने के लिए इसे गधी के दूधमें रखना चाहिए; ...पश्चात् इसको चूल्हे में यहाँ तक शुष्क करें ...यह हलका भुन जाय, पुनः घोंट कर अंजन ...पुन करें। इसका प्लास्टर (प्रलेप) सम्पूर्ण प्रकार ...शोथों को लयकरता है। प्याज़ के भीतर ...कर अग्नि पर भूनकर इसका रस कान में ...काने से कर्णवेदना शमन होती है।

(मीर मु० हुसेन)

अञ्जरूत, श्वेत सीसा प्रत्येक २ भाग, ...शास्ता ६ भाग इनको खूब घोंटकर बारीक चाल... । यह उत्तम अंजन प्रस्तुत होगा।

(तिब्बे अकबरी)

...मोती, मूँगा जलाया हुआ ... मिश्री ...समभाग के साथ आँख की सुपेदी को अभिवर्धक- है। इसका पीना गर्भपातक और कृमिघ्न है। तरबूज़ के पानी में तर किया हुआ शरीर को बृंहण कर्ता है। यह वायु लयकर्ता, रोधउद्घाटक और श्लेष्मानिस्सारक है।

अञ्जरूत लेपन ओषधियों का एक प्रधान अवयव है। पारसी लोग इसके साथ रुई मिलाकर टूटी हुई अथवा मोच खाई हुई अस्थियों तथा निर्बल सन्धियों में भी उनको सहारा देने के लिए इसका उपयोग करते हैं। साधारण लेपन योग निम्न है —

अञ्जरूत ६ भाग, जदवार १ भाग, एलुआ मकोतरी १६ भाग, फिटकरी ८ भाग, मैदालकड़ी ४ भाग, गूगल ४ भाग, लोबान ७ भाग और उसारह रेवन्द १२ भाग। इन समस्त औषधों का बारीक चूर्ण कर पुनः जल मिलाकर सिल बट्टा द्वारा इसकी लुगदी प्रस्तुत कर उपयोग में लाएँ। (फ़ि० डाइमॉक)

अञ्जल anjala–खित्मी, ख़ैरू। (See-Khitmi) लु० क०।

अञ्जलिः anjalih–सं० पुं० (१) प्रसृति द्वय (=१६ तो०); ३२ तो० (प० प्र० १ ख०)। (२) कुडुपः (पः) मान (=३२ तो०, ८ वा ४ पल)। रत्ना० नानार्थः। भा० उ० वाजी०। (३) अञ्जलिपुट, करसम्पुट, अँजुरी। मे० लत्रिकम्।

अञ्जलिका anjaliká–सं० स्त्री० (१) लज्जालुका। (२) मुद्रमूषिका। जटा०।

अञ्जलिकार anjalikára–ओषधि विशेष। कौटि० अर्थ०।

अञ्जलिकारिका anjalikáriká–सं० स्त्री० लज्जालुका, लज्जालु, छुईमुई। माइमोसाप्युडिका (Mimosa Pudica)-ले०। सेन्सिटिव प्लाण्ट (Sensitive plant)-इं०। रा० नि० व० ५। भा० पू० गु० व०। (२) वाराहक्रान्ता, वाराहीकन्द-हिं०। लाइकोपोडियम् इम्ब्रिकेटम् (Lycopodium imbricatum)-ले०।

अञ्जलिनी anjalinī–सं० स्त्री० लज्जालुका, छुईमुई–हिं० । देखो—लज्जालु । वै० श० । दी सेन्सिटिव प्लाण्ट (The sensitive plant)–इं० ।

अञ्जलिपुटः,-पुटं anjalipuṭah,-puṭam –संपुं०,क्लीं०(The Cavity formed by joining the hands together) कर सम्पुट । अञ्जलि ।

अञ्जस,-सी anjas,-si–सं० त्रि०, स्त्री० (Not crooked, straight) सरल, सीधा ।

अञ्जस anjas–अ० अशुद्धतर, अत्यन्त अपवित्र (नजिस), बहुत पलीदा । म० अ० ।

अञ्जायना पेक्टोरिस angina pectoris–इं० हृच्छूल ।

अञ्जिवम् anjivam–सं० क्लीं० मकट कामी । अथ० । सू० ६ । ६ । का० ८ ।

अञ्जिष्ठः,-ष्ठुः anjishṭhah,-shṭhuh–सं० पुं० (The sun) सूर्य्य ।

अञ्जीरः anjirah–सं० पुं०, फ़ा०, हिं०, संज्ञा पुं० चं०, द०, अंजीर फॉ०, म०, गु० । मञ्जुलं (-लः),काकोदुम्बरिकाफलं, अंजीर (वृत्त) –सं० । अंजीरी, गुलनार, खबार, बेल, बेड़, अञ्जीर । इं० मे० सां०, मेमो० । (काक)डुमुर, अञ्जीर, बड़ पेयारा गाछ,आँजीर–बं० । भगवार, फाक, फोक, फेड़, इञ्जर, फाग, किम्रि, फगोरू, फागू, फोग, खबारी, फेमा, थपुर, जमीर, धूरू, दूधी, दहोलिया, फगूरी, फगारी (मेमो०)–पं० । फग्वार–पश्तो० । अंजीर, इञ्जर–अफ़गा० । फेम्री–राज० । धौरा–म० प्र० । पेपरी, अञ्जीर –गु० । फगवार, थपुर–उ० प० के मैदान । (इ०मे० मां०) अञ्जीर–बम्ब० । शीमह–अत्ति, तेन अत्ति-ता० । शीम-अत्ति, तेने-अत्ति, अंजूस, मांदी पालू–ते० । शीम-अत्ति–मला० । बैएडनैड-फरना० । शीमे-अत्ति–कना० । रट-अत्ति-का –सिं० । स-फान्-सी, तिम्बो-थान-दि, सिम्बो-सफान-मी-बर्मी । तीन, वल्स–अ० । सोडियम पॉमिफेरम् (Psidium Pomiferum,

Linn.)–ले० । काला उमर्ज० । फ्रां० । फाइकस केरिका(Ficus Linn.)–ले० । फिग (Fig)

अश्वत्थ वा वटवर्ग

(N. O: Urticaceæ)

उत्पत्ति स्थान—कारिया वा एशिया माइनर है । ... में भी बहुत होता है । अफ़ग़ानिस्तान, तुर्किस्तान और अफ़रीका तथा ... कास्मीर इसके मुख्य स्थान हैं ।

वानस्पतिक वि ... जाति का एक वृक्ष है । इसमें ... खोखला, नाशपाती की शकल का (receptacle) होता है । ... इस पर सूक्ष्म फल समूह ... उक्त आवरण के सिरे पर एक छिद्र ... वह प्रथम (अपरिपक्वावस्था ... कठोर और चर्म सदृश होता है । ... चुभाने पर उसमें से दुग्ध ... परिपक्वावस्था में वह मृदु एवं ... तथा दुग्धीय रस शर्करा रस में ... जाता है । छिद्र घिरा हुआ एवं ... से आवरित होता है । उसके निकट ... के भीतर नरपुष्प स्थित होते हैं, ... उनका अभाव होता है अथवा ... नहीं हुआ होता । नारी पुष्प ... कुछ दूरी पर स्थित होते हैं ... हुए और डंठलयुक्त होते हैं, ... युक्त पुष्पकोष और ... gma) होता है । ... एक कोषीय होता है, ... सूक्ष्म, शुष्क कठोर गिरी में ... है जिसे ही बीज ख़याल किया जाता ... कोमाफिया) ।

इसके लगाने के लिए ... मिट्टी चाहिए । लकड़ी इसकी पोली ... इसके कलम फागुन में काटकर ... में लगाए जाते हैं । क्यारियों पानी ...

—ाहिएँ। लगाने के दो ही तीन वर्ष बाद
ाद फलने लगता है और १४ या १६
रहता और बराबर फल देता है। यह
ो बार फलता है। एक जेठ असाढ़ में
ा फागुन में। माला में गुथे हुए इसके
हुए फल अफ़गानिस्तान आदि में
न में बहुत आते हैं। सुखाते समय रंग
ौर छिलके को नरम करने के लिए या
क की धूनी देते हैं अथवा नमक और
ले हुए गरम पानी में फलों को डुबा देते
रतवर्ष में पूना के पास खेड़ शिवपुर
गाँव के अंजीर सबसे अच्छे होते हैं। पर
तेस्तान और फ़ारसके अञ्जीर हिन्दुस्तानी
से उत्तम होते हैं। यह दो तरह का
, एक जो पकने पर लाल होता है, और
काला।

ागांश—शुष्क आवरण अर्थात् (अंजीर)-
गुण—यह मृदु होता है इसके भीतर बहुत
र एवं बीज होते हैं। दबने से फल चपटे
ाकायदा हो जाते हैं। वर्ण—पीताभायुक्त
पर कोई कोई श्वेताभायुक्त रक्त व श्याम।
:—मधुर।

र्ण भेद से यह तीन प्रकार का होता है।
—

१) पीत, (२) श्वेत और (३) श्याम।
ा फार्माकोपिया के अनुसार स्मरना का
र दवा के काम में आता है जो पीला
है।

ासायनिक संगठन—फल-इसमें द्राक्ष
र (Grape sugar) ६२ प्रतिशत,
स, वसा और लवण होता है। शुष्क
ीर में शर्करा, वसा, पेक्टोज, निर्यास,
युमीन (अण्डे की सुफ़ेदी) और लवण
ते हैं। दुग्ध-में पेप्टोनकारी अभिषव
eptonising ferment) होता है।

गुण धर्म व प्रयोग

आयुर्वेद में इसे शीतल, स्वादु, गुरु,
पित्त, वात, क्रिमी, शूल, हृत्पीड़ा, कफ और मुख की विरसता नाश करने वाला कहा है। मद० व० ६।

अञ्जीर अत्यन्त शीतल, तत्काल रक्तपित्त नाशक, पित्त और शिरोरोग में विशेष करके पथ्य है तथा नाक से रुधिर गिरने को बन्द करता है।

अञ्जीर भारी, शीतल, मधुर, वातनाशक, रक्तपित्त हारी, रुचिकारी, स्वादु, पचने में मधुर तथा श्लेष्मा और आमवातकारक है एवं रुधिर विकार को दूर करता है। गु० नि० र०।

यूनानी ग्रन्थकार इसे (ताजा अन्जीर) १ कक्षा में उष्ण और दूसरी में तर मानते हैं। हानिकर्ता—यकृत, आमाशय और अधिकता से खाना दाँतों को। दर्पनाशक—बादाम और सातिर। प्रतिनिधि—चिलग़ोज़ा और दाख।

ताजा अञ्जीर मृदुकर्त्ता, पोषक और शीघ्रपाकी है। कच्चा अन्जीर अत्यन्त जाली (कांतिकारी) है; क्योंकि इसमें दुग्ध बहुत ज्यादा होता है और पार्थिवांश की अधिकता के कारण यह सर्दी की ओर मायल है। शुष्क अन्जीर शीतोत्पादक है। जलांश की न्यूनता के कारण यह १ कक्षाके अन्तमें उष्ण और सूक्ष्म है। इससे पतला ख़ून उत्पन्न होता है जो बाहर की ओर गति करता है। अन्जीर सम्पूर्ण मेवों से अधिक शरीर का पोषण करता है; क्योंकि पूर्व कथनानुसार जलांशाधिक्य के अतिरिक्त पार्थिवांश की अधिकता भी है। भली प्रकार पका हुआ अन्जीर तक़रीबन् निरापद, होता है; क्योंकि इससे वह तीक्ष्ण दुग्ध जो इसमें होता है, नष्ट हो जाता है और इसके पार्थिवांश में समता स्थापित हो जाती है।

अधिक गूदादार अन्जीर शारीरिक दोषों का अधिक परिपाक करता है। क्योंकि गरम व तर होने के कारण दोष परिपाककारी (मुंज़िज़्) है। इसके गूदे में स्नेहोष्मा विशेषकर होती है। इसी कारण अधिक गूदे वाला अन्जीर अधिक परिपाक करता है।

इसमें अन्तिम कक्षा को क़ुव्वते तलय्यन (दोष मृदुकारी शक्ति) है; क्योंकि इसकी उष्मा रतूबतों

के बहाने पर अधिकार रखती है। परन्तु, शुष्कता उत्पन्न करने पर इसका कोई अधिकार नहीं होता अर्थात् यह शोषक गुण रहित है। यह स्वेदजनक एवं उत्तापशामक है।

अञ्जीर कान्तिदायक है; क्योंकि यह सूक्ष्म शोणित उत्पन्न करता है और उसको बहिर्भाग की ओर गति देता है। अपनी रतूबत, उष्मा और सूक्ष्मता के कारण इसका लेप फोड़ों को पकाता है।

अपनी तीक्ष्णता और मधुरता द्वारा आमाशय को उत्तप्त करने के कारण यह उष्ण प्रकृति वालों को तृषान्वित करता है और उस पिपासा को जो खारी श्लेष्मा (बल्गमशोर) के कारण उत्पन्न हुई होती है उसको शमन करता है; क्योंकि यह बल्गम (श्लेष्मा) को पिघलाता एवं पतला करता और काटता छाँटता है।

अञ्जीर पुरानी खाँसी को लाभ पहुँचाता है; क्योंकि यह खाँसी केवल बल्गम से उत्पन्न होती है और अञ्जीर बलगम को पिघलाता या नुजूज (पका) देता एवं तहलील (लय) करता और दोषों से शुद्ध करता है।

अपनी रोधउद्घाटक तथा कान्तिकारिणी शक्ति के कारण यह मूत्रविरजनीय है तथा यकृत एवं प्लीहा के रोध का उद्घाटक है।

क्योंकि यह तीक्ष्ण मलों को त्वचा की ओर प्रक्षेपित करता है, परन्तु मूत्र उनसे रहित होता है, जिससे वस्ति में मूत्र सम्बन्धी कोई कष्ट नहीं होता। इससे सम्भव है कि मूत्र चिरकाल तक वस्ति में बिना किसी कष्ट के बन्द रहे।

यह वस्ति और वृक्क प्रत्येक के लिए उपयुक्त है, क्योंकि यह कान्तिप्रदायक है एवं दोनों के मलों को मूत्र द्वारा विसर्जित करता तथा उनको त्वचा की ओर मायल कर देता है। निहार मुँह खाने से यह अन्न प्रणाली को खोलने में आश्चर्यजनक लाभ दिखलाता है।

जब इसे अखरोट अथवा बादाम के साथ खाया जाता है तब यह आहार में मिश्रित नहीं होता, जिससे इसकी वैयक्तिक शक्ति टूटने नहीं

पाती, क्योंकि उनकी [illegible] को जो तीक्ष्ण दुग्ध के [illegible] देती है। अखरोट के साथ [illegible] पुष्टिकारक है।

अंजीर गलीज़ (स्थूल) [illegible] पर्यन्त रही होता है। [illegible] के बाह्य भाग की ओर गति देता [illegible] द्वारा चेहरे में रोध एवं अन्य रोग [illegible]

इसका दुग्ध तीक्ष्णता के कारण रक्त एवम् दुग्ध को जमा देता है। [illegible] द्रव्य को लय एवम् शुष्क करता [illegible] रक्त व दुग्ध जमे हुए हों तो उनको [illegible] है क्योंकि यह अपनी तीक्ष्णता [illegible] दोनों के घनांश को पिघला देता है।

यह वायु को, लयकर्ता, अर्श [illegible] पक्षवध और बहुधा कफ के रोगों [illegible] प्रकृति को मृदु कर्ता, [illegible] रोध, प्लीह, शोथ, बहु मूत्रता और [illegible] को हरण करता है। इसका [illegible] गुण कर्ता है। शुष्क सर्व कर्मों [illegible] इसका मुख्य प्रभाव शरीर को स्थूल [illegible] क मीहलिल जा (जिसका अधिक [illegible] रह बने)। [illegible] भाग बने, जिससे अधिक [illegible] कर उस अवस्था में जब इसे [illegible] ४० दिवस पर्यन्त सुबह को खायें।

बादाम और पिस्ते के साथ भक्षण [illegible] यष्टक है। सुदाब के साथ विषघ्न, [illegible] (कुसुम्भ) और सौरहै अरमनी के साथ [illegible] और अखरोट के साथ विशेषतः [illegible] इसका लेप खनाज़ीर को लाभ [illegible] इसका दुग्ध चक्षुओं में लगाना मोतियाबिन्द के [illegible] लिए लाभदायक है। (मु० मु०, मु० [illegible]

अञ्जीर पथ्य सहज में पच जाने [illegible] औषध रूप में उपयोग करने पर [illegible] संबन्धी अश्मरियों को भग्न करने [illegible] यकृत तथा प्लीहा के अवरोधों को [illegible] वाला है। यह गठिया एवं अर्श [illegible]

ई । मुख व्रण में इसका दूध लगाया बच्चों के यकृत रोग में इसका उपयोग क है । शुष्क अञ्जीर, बादाम की गुद्दी, लायची छोटी, चिरोंजी, बेदाना, शकर ी समभाग लेकर चूर्ण बनाएँ और चित् केशर मिलाकर पुनः उसे आठ गोघृत में डुबो रक्खें । मात्रा—२ तो० ड़ा। गुण—अत्यन्त पुष्टिकारक एवं क ।

४ तले अञ्जीर और थोड़ा सा शर्करा दोनों को मिलाकर रात्रि में ओस में या रक्खें और सवेरे इसे खाएँ । इसी भर, करें । गुण—शारीरोष्मा शामक, नुष्य जिनके ओष्ठ, ज़बान और मुख ने हों, उनके लिए ताजा अंजीर उत्तम क औषध है । इं० मे० मे० ।

ध्यता, वस्ति तथा फुप्फुस व्याधि में ा से इसका विशेष उपयोग होता है । ० एलां०)

डॉक्टरी मत

ा फार्माकोपिया में अंजीर ऑफिशल है । -नुभेदक या कोष्ठमृदुकारी । यह यों मेवा में पड़ता है । प्रायः यह और पोषक मेवा है । साधारण विष्टम्भ इसके कुछ दाने निहार मुँह खाने से र हो जाता है । किन्तु, इसके बीज आंत्र वदयपंथ करके कुछ मरोड़ उत्पन्न करते हैं । njiri–हिं० संज्ञा स्त्री० त्थार, गुलनार, ड़ । फाइकस पामेटा (Ficus Pal-, Forsk.)–लें० । भगवाड़, काक, ड़, इंजर, फाग, किर्मी, फगांरू, फागू, वारी, फेम्रा, थपुर, जंमीर धृड़, धूड़ी, ा–पं० । फगवार–पश्तु० । अंजीर, इंजर ० । केम्बी–राजपु० धौरा–म० प्र० । –गुज० । भगवार, थपुर–(उत्तर भारतीय) । इं० मे० प्लां० ।

वटादि वर्ग

(*N. O. Urticaceæ.*)

त्पत्तिस्थान—उत्तर पश्चिम भारतवर्ष, पूर्वीय सिन्धु नदी से लेकर यवन पर्यन्त, हिमालय पर्वत (३००० फीट की ऊँचाई पर) और आबू पर्वत ।

उपयोग—इसके फलमें मुख्यतः शर्करा तथा लुआब वर्तमान होते हैं, तदनुसार यह स्नेहजनक एवम् कोष्ठ मृदुकर प्रभाव करते हैं । कोष्ठबद्धता (विबन्ध), फुफ्फुस एवम् वस्ति रोगों में यह मुख्यकर पथ्य वा आहार रूप से व्यवहार में आते हैं । इनका पुल्टिस रूप में भी प्रयोग होता है । (Punjab Products.)

अञ्जीरे अहमक़ anjire-ahmaqa फ़ा० गुलर, गूलर–हिं० । फाइकस ग्लोमरेटा Ficus glomerata, *Roxb.*(Fruit of-)–लें० ।

अञ्जीरे आदम anjire-ádama–फ़ा० गुलर, गूलर–हिं० । किसी किसी ने अन्य फल का नाम लिखा है जिसको हिन्दी में "कलह" कहते हैं । यह काबुलके पर्वतों पर उत्पन्न होता है । हकीम अली गीलानी के कथनानुसार एक भारतीय वृक्ष का फल है जो इन्द्रायन के समान गोल और रक्त वर्ण का होता है । लु० क० ।

अञ्जीरे दश्ती anjire-dashti–फ़ा० काकोदुम्बरिका सं० । कटूमर, कठूमरी, कटगूलर, जंगली अञ्जीर–हिं० । देखो–कटुम्बर । Ficus oppositifolia, *Roxb.* (Fruit of-) –लें० । लु० क० । स० फा० इं० ।

अञ्जीरेनैपाल anjire-naipála–यमनपाल–नैपा० ।

अञ्जीरे बग़्दादी anjire-baghdádi फ़ा० अखरोट वृक्ष के बराबर लम्बा एक वृक्ष है जिसके पत्ते चिनार पत्र सदृश और फल अञ्जीरके समान होते हैं । रुक्अ यमानी (देखो) का फल । लु० क० ।

अञ्जीरे यमन anjire-yamana–फ़ा० अञ्जीरे बग़्दादी । लु० क० ।

अञ्जीलक anjilaka–माज़न्दरानी सुदयाज़ी का पौधा । लु० क० ।

अञ्जीश anjisha–सिराजुल कुतरुब । लु० क० ।

अञ्जुकक anjukak–फ़ा० Pyrus comm-

unis, *Linn.*)-ले० । अञ्जरूक, कुसुम हिंदी ।

अञ्जुदान anjudán-फा० हींग, हिंगु-हिं० । Assafoetida-फा० इं० ।

अञ्जुबार anjubár-अ० मीरोमनी-सं० । देखो-अञ्जबार । Polygonum aviculare.

अञ्जुबारे रूमी anjubáre-rúmí—अ० प्रसिद्ध । यह आरम से भारतवर्ष में लाया जाता है । यह एक वृक्ष की जड़ की छाल है जो मोटी, गठीली और ललाई लिए धूसर वर्ण की होती है । फा० इं० ।

अञ्जुरूक anjurak- मज़ोश । लु० क० ।

अञ्जुरतुस्सौदाअ anjuratussoudán-अ० स्याह (काली) उटङ्गन या एक घास है जो नाग शुद्धि तथा उसके हल करने में काम आता है ।

अञ्जुरह anjurah-फ़ा० क्रीज़, क्रीसुल् कल्ब, बुसरंबुल्कलाब अ० । कुनेह-शीराज़ । कजीत-तु० । उटञ्जन, उटङ्गन-हिं० । फा० इं० ३ भा० । मु० अ० । म० अ० । अर्टिका पिल्युलिफरा Urtica pilulifera, *Linn.*) एक बूटीके बीज हैं जो अलसी या तालमखानाके सदृश होते हैं । किसी किसी के मतसे अञ्जुरह और उटङ्गन भिन्न भिन्न बीजे हैं ।

अञ्जुली anjulí- } -हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०]
अञ्जुरी anjuri- } अंजलि । दे०-अञ्जली, अँजली ।

अञ्जुसा anjusá-यु० रतनजोत । Alkanet. लु० क० । फा० इं० ।

अञ्जुरक anjúrak-फ़ा० (१) ऊनीला हिं० । मकड़ी का एक भेद । लु० क० । (२) मज़ञ्जोश ।

अञ्जरू anjúrú-ते० अञ्जीर (Ficus carica, *Linn.*) स० फा० इं० ।

अञ्जुसा anjúsá-यु० रतनजोत । (Alkanet) लु० क० ।

अञ्जेना anjená-कना० सुर्मा, अञ्जन । Antimonii Sulphuretum.

अञ्जेलिका आर्केञ्जेलिका angelica archangelica-ले० । मुंबुल् खताई । ई० हैं० गा० ।

अञ्जेलिका गार्डेन angelica-garden मुंबुल् खताई । बालछड़भेद ।

अञ्जेलिका ग्लॉका angelica glauca, *Edgw.*-ले० । चोरा या चुरा- यह औषध तथा भोजन के काम में प्रयोगांश- जड़ या पौधा ।

अञ्जेलिका रूट angelica-root -मुंबुल् खताई । अंगलीना ।

अञ्जेलिका सीड angelica-seed तुख्म मुंबुल् खताई । बालछड़ बीज ।

अञ्जेलिम् angelim-ई० आँकमारी फा० इं० ।

अञ्जेलिम् अमरगोसो angelim-amargoso -ई० अरारोबा । (Araroba) इं० १ भा० ।

अञ्जेलिम् आर्वेन्सिस angelim-arvensis -ले० । आँकमारी । अँगनी । फा०

अंञ्जेली वुड anjelly-wood-ई० एरिस हिस्पिडा (Antiaris hispida) नामक वृक्ष से प्राप्त होता है । भारतवर्ष में अञ्जेली वुड और यानी कहते हैं । वहाँ यह अधिकता होता है । फा० इं० ३ भा० ।

अञ्जोह anjoh-अ० ऊद, अगर (wood.) लु० क० ।

अञ्जनक कल्ल anjanak-kalla-अ० अञ्जनम् (Antimonii Sulphuretum-)ले० । स० फा० इं० ।

अज्म-ज़बीब ãajma-zabíba-अ० ।

अज़्मोर ãzmora-बरब० । मकोय (Solanum nigrum).

अटकुड़ा atakurá-सन्ताल० तिर (Wrightia Tomentosa, *Rœm.* & *Sch.*) देखो—इन्द्रजौतिक । -ले० । इं० मे० मां० ।

kka-मल० सुपारी-हिं० Areca chu, *Linn.* (Nut of—Be-nt.)-ले० । स० फा० इं० ।

ग्ु atakká-mani-मल० मुण्डी । maranthus hirtus, *Willd.*)
ा० इं० ।

adi-ने० पीतल, पित्तल (Brass). ° मे० ।

aṭabhúshana-सं० क्लो० हड़ताल ment (Trisulphuret of nic) लु० फ० ।

arú-सं० अड़ूसा (Justicia atoda).

ṭarúshah } -सं० पुं० अड़ूसा, ṭarushah } वासक वृत्त (A-toda Vesica, *Nees.*) र० सा० सूतिकारि रस और कन्दर्पसार तैल । या० २ अ० । देखो-वासकः ।

aṭarúshah } -सं० पुं० aṭarúshakah } (१) वासक अड़ूसा । र० मा० । च० द०, रक्तपित्त । (२) झाड़ । (३) घरलू । (४) न्य । श० श० । इं० मे० मे० ।

aṭavih } -सं०स्त्री० (A forest, ṭavi } *Wood.*) अरण्य, वन ।

ी-अत्ति aṭavi-atti-कना० जंगली -हिं० । Ficus oppositifolia, *b.* (Fruit of.)

म्बि (म्बी, म्भी)रः aṭavi jambi,-i,-mbhirah-सं० पुं० जंगली निम्बू, ०, द० । एटलेंटिया मोनोफाइला (At-tia Monophylla, *Corr.*); फ्लोरिबण्डा (A. floribunda, *eede.*); लाइमोनिया मोनोफाइला (Li-nia monophylla, *Linn.*)-ले० । ल्ड लाइम (wild lime)-इं० । म्नार (इं० मे० मे०)-द० । मलङ्गनार, र, माकड़-लिम्बु-मह० । अड्वी-निम-ते० । लुमिचई, कटे-इलुमिचम-परम, काट्-इलि-मिचम्, कट्यालु-ता० । कडुनिम्बे-गिडा,कनिम्बे, अड़वी-निम्ब-कना० । नरगुनी-उ.इ० । मल-नारङ्गा, मले-नारकम-मल० । मातङ्गनर-द०, कौं० । चोर-लिम्बु, इंद-लिम्बु-कों० । थोवी-लिम्बु -गु० ।

नागरङ्ग वर्ग

(N.O *Aurantiaceae.*)

उत्पत्ति स्थान—पूर्वीय बङ्गदेश, दक्षिण-भारत, लङ्का, सिलहट, खसिया पर्वतमूल, सम्पूर्ण पश्चिमी प्रायद्वीप, कारोमण्डल तथा कोंकन में दक्षिणात्य ।

वानस्पतिक वर्णन—अटवी जम्बीर एक विशाल, कण्टकमय, आरोही झाड़ी है जो पश्चिमी प्रायद्वीप तथा सिलहट की पहाड़ियों पर सामान्य रूपसे पाई जाती है । इसके पत्र नारङ्गी पत्रवत् सुगन्धित होते हैं । फल गोलाकार, पीले लगभग १ इञ्च मोटे (व्यासमें) और झिल्लीदार परदे द्वारा चार कोषों में विभाजित होते हैं । एक कोष साधारणतः पतनशील होता है । मज्जा (गूदा) मोमवत, परन्तु अति न्यून होता है । प्रत्येक कोष में $\frac{3}{4}$ इञ्च लम्बा और $\frac{1}{2}$ इञ्च चौड़ा एक बीज होता है उसके एक उन्नतोदर (उभरा हुआ) और दो चिपटे पृष्ठ (नारंगी के फोंक की तरह) होते हैं । फलत्वक् में नागरङ्ग त्वक्वत् अल्प (निर्बल गंध एवं अगंध्य तैल की ग्रंथियाँ होती हैं । देहाती लोग इसके बीज को जो ताजा होने पर अत्यन्त सुगन्धियुक्त होता है, चूर्ण कर इसे मीठे तैल (तिल तैल) में डाल कर निचोड़ लेते हैं । फलतः इससे एक गम्भीर हरितवर्ण का प्रिय गंधयुक्त तैल प्रस्तुत होता है । इसका त्वचा पर अभ्यङ्ग करने से यह उसे आवश्यक उष्णता प्रदान करता है । बीजों को दबाने से इसमें से किसी प्रकार का वसामय तैल नहीं प्राप्त होता; प्रत्युत वह वस्त्र जिसमें बीज दबाए जाते हैं, स्थिर तैल द्वारा तर होजाता है । नीलगिरि पर्वत पर पाए जाने वाले कुरुन्थु (ता०) नामक (Limonia alata, *W. and A.*) नींबू से भी इसी प्रकार की

एक औषध निर्मित होती है तथा इसके पत्र का क्वाथ कटुष्ण है एवं अन्य त्वग्दोषों को हित-प्रद है।

प्रयोगांश—तैल, मूल, फल (Berries) और पत्र।

औषध-निर्माण—क्वाथ, तैल व प्रलेप।

प्रभाव तथा प्रयोग-र्‌हीडी (Rheede) का वर्णन है कि पत्र द्वारा निर्मित तैल शिर के लिए हित; जड़ आक्षेपशामक; और फल स्वरस पिपाघ्न है। लॉरीरो (Loureiro) के मतानुसार इसकी जड़ उष्णताजनक, लयकर्ता और उत्तेजक है।

एन्सली (Ainslie) कहते हैं कि इसके फल (Berries) से एक उष्ण, प्रिय गंधियुक्त तैल निर्मित किया जाता है जिसे दक्षिण भारतमें पुरातन आमवात (गठिया) एवं पक्षाघात में एक मूल्यवान बाह्य औषध ख्याल किया जाता है। कोंकण में इसके पत्ते का स्वरस अर्दांग रोग में प्रयुक्त एक मिश्रित प्रस्तर का एक अवयव है। वनौषधि-प्रकाश, १,४०१। डाइमॉक।

-इसके फल का उत्तम अचार (Pickle) बनाया जाता है जो ज्वर एवं स्वाद या क्षुधा ह्रास्ययुक्त अन्य रोगों में लाभदायक पथ्य है। इं० मे० मे०।

अटवी जीरकः atavi-jirakah-सं० पुं० जङ्गलीजीरा-हिं०।

अटवी मधुकम् atavi-madhukam-सं० क्ली० जङ्गली महुआ-हिं०।

अटवीलता atavi-latá-सं० स्त्री० कुष्माण्डवृक्ष, कुम्हड़ा। रत्ना०। देखो—कुम्हड़ा, कोहड़ा।

अटलरिया atalariyá-ता० लरबोरन, बिहलाइली, पथरमा-आसा०। पॉलिगेनम् ग्लैब्रम (Polyganum glabrum)-ले०। इं० मे० मे०।

अटलरी atalari-ता० बोत्र अञ्जुवार (Polyganum barlatum)-इं०। मे० मे०।

अटलेण्टिया मॉनोफाइला atlan-phylla, Corr.-ले०। अरबी नीमस्तेo। मासुर-ता०। अटवीजम्बीर, जङ्गली नीबू। (...) -इं० मे० मे०।

अटलोपटकम् ataloeṭak... (Adhatoda vasika)...

अटाइलोसिया बारबेट-atylo...ata, Bake.-मापपर्णी। (...

अटापू atápú-शोरा (Nitre)...

अटिः aṭih-सं० पुं० शरारि (Turdus gingipianus...

अटिक मामिडि atika-mámi... बूटी, ठिकरी-का-झाड़-द० पुनर्नवा-हिं०, बं०। Boerhaavia... ussa; Linn.-ले०। स...

अटि(ति)सीन atisine-इं० देखो-अतीस। फा० इं०।

अटी aṭi-हिं० संज्ञा स्त्री० (... चिड़िया जो पानी के किनारे रहती...

अटुप्प करी aṭuppa-kari-मल० कोयला। (Carbon—ले०। (wood)-इं०। स० फा०।

अट्ट aṭṭa-सिं० बीज। (Seed) -मल० जोंक Leech (... स० फा० इं०।

अट्ट aṭṭa-हिं० संज्ञा पुं० } (१)...
अट्टः aṭṭah-सं० पुं० } कोठा ...
मकान, कोठा-हिं०। (An apart... the roof or upper storey)... सौधम्। वै० श०। (२)-म... (Leech) इं० मे० मे०।-हिं... हट। बाजार] हाट। बाजार-हिं०...

अट्टई aṭṭai-ता० जोंक। Hiru... फा० इं०।

अट्टकः aṭṭakah-सं० पुं० कोठा, ... (An upper storey).

अट्टनम् aṭṭanam-सं० क्ली० ... त्रिका०।

…um-सं० क्ली० (१) अन्न। (२) शुष्क। …द्विकं। (Food, boiled rice) …। भक्त।

…ilu-ने० जोंक, जलौका। Leech …udo) स०फा०ई०। इ० मे० मे०।

…कः attahásah,-kah-सं० पुं० }
attahásaka-हिं० संज्ञा पुं० }
…कुन्द पुष्प वृक्ष, कुन्द का फूल और पेड़ …। कुँद फुलेरगाछ-बं०। (Jasminum …iflorum-ले०। रा० नि० व० १०। … Very loud laughter कहकहा …हँसना। बहुत ज़ोर से हँसना।

…ttálah- } -सं० पुं० (An
attálakah } apartment
…the roof, an upper storey) …लगृह, दोतलाघर, अटारी। वै० श०।

… attáliká-सं० स्त्री० (A pal- … lofty mansion) राजोचित गृह, …। वै० श०।

…trophy-इं० सुखंडी या कृशता, शोषरोग, …।

…समोनेटा atriplex moneta, …ige.-ले० मरसक, सुरका, कोरके, पोई …। मे० मो०।

…स लेसिनिएटा atriplex lacini- … L.-ले० क़तफ़, भतुआ-पं०। मे० …

…स हॉर्टेन्सिस atriplex horten- … L.-ले० क़तफ़, भतुआ-पं०। मे० …

…मस्युमिनेटा atropa acuminata, …yle.-ले० एक प्रकार का बेलाडोना है। …इ० ई०।

…। बेलाडोना atropa belladona, …na.-ले० देखो-बेलाडोना।

… athakhatá-सं० अस्थिसंहार, …जोड़। लु० क०।

…या athagathiyá-हिं० संज्ञा स्त्री० एक बूटी है जिसका स्वाद क्षारीय होता है। यह कंकरीली भूमि में अधिक होती है। इसका पकाया हुआ शाक अत्यन्त सुस्वादु होता है। इसमें क्षार अंश की अधिकता के कारण लवण कम डालना चाहिए।

अठपहला athapahalá-हिं० वि० [सं० अष्ट पहल, पा० अट्ठपटल) आठ कोने वाला। जिसमें आठ पार्श्व हों।

अठमासा athamásá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अष्ट, प्रा० अट्ठ + सं० मास] वह खेत जो आषाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाता रहे और जिसमें ईख बोई जाए। अठवांसा।

अठमासी athamási-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टमाश] आठ मासे का सोने का सिक्का। सावरिन। गिन्नी।

अठवाँस athavánsa-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अष्टपार्श्व] अठपहली वस्तु। अठ-पहले पत्थर का टुकड़ा।

वि० अठ-पहला। अठ-कोना।

अठवाँसा athavánsá-हिं० वि० [सं० अष्ट-मास, पा० अट्ठमास] वह गर्भ जो आठ ही महीने में उत्पन्न होजाए।

—संज्ञा पुं० (१) सीमन्त संस्कार। (२) वह खेत जो आषाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाता रहे और जिसमें ईख बोई जाए।

अठाना athána-हिं० क्रि० स० [सं० अट्ट= वध करना] (१) सताना। पीड़ित करना।

अड ada-उड़ि० लिसोढ़ा-हिं०। श्लेष्मांतक -सं०। Sebesten plum (Cordia myxa)

अडकुमणियम adakumaniyam-मल० गोरख मुण्डी-हिं०। मुसुंरिया-बं०। कमाज़रियूस-अ०। (Sphæranthus hirtus) इं० मे० मे०।

अडण्ड adanda-ले० करवीर-पं०।

अड़द arada-गु० उर्द, उड़द-हिं०। माष-सं०।

(Phaseolus roxburghii) इं० मे० मे० ।

अडद्-वेल aḍada-vela–गु० माषपर्णी, मषवन । (Glysine debilis, Roxb.)

अडद वेल्य aḍada-velya–गु० बन उड़द, करियासेम । माषपर्णी ।

अडद्वेल्य काडोगलिया aḍada-velya-káḍo-galiyá–गु० बन उड़द, बन उर्दी –हिं० ।

अडन्सोनिया adan-sonia–इं० गोरख इमली ।

अन्डसोनिया डिजिटेटा adansonia digitata, Linn.–ले० गोरख इम्ली–हिं० । बोआबाब या मङ्की-ब्रेड ट्री ऑफ़ अफ़रीका Boabab or monkey-bread tree of Africa–इं० । इं० मे० मे० । फा० इं० । मे० मो० । स० फा० इं० ।

अडन्सोनीन adansonin–इं० गोरख-अम्लीन, गोरख इमली सत्व–हिं० । इं० मे० मे० ।

अडपु-कोडी aḍapu-koḍí–ता० दोपातीलता –हिं० । चाइलाइ़, छागल खुरी–बं० । आइपोमिया बाइलोबा Ipomœa biloba, Forsk.–ले० । गोट्स-फ़ुट कॉनवाल्व्युलस Goat's foot Convolvulus–इं० । वृद्धदारक, विधारा–सं० । फा० इं० २ भा० । इं० मे० मे० ।

अडबन वुपोरियो aḍaban-vuporiyo–कच्छ० पोरबन्दर० १-(Gram) चणकः,चना । १-(Lady's finger) भिण्डी –हिं० ।

अडमरम् aḍamaram–मल० जंगली बादाम –हिं० । (Terminalia catappa, T. myrobalans) । The Indian almond । इं० मे० मे० ।

अडमोरिनिका aḍamoriniká–ते० असल, सरह–म० । Indian cadaba (Cadaba Indica) इं० मे० मे० ।

अडम्पाकु aḍampáku–ते० अरूष, अडूसा, वासक–हिं० । Adhatoda Vasika–ले० Malabar nut–इं० । इं० मे० मे० ।

अडम्बेदी aḍambedi–ता० Indigofera Enneaphy[lla] इं० मे० मे० ।

अडर्सा aḍarsá–हिं०, द० अडूसा, वासक–हिं० । [A.] Vasica, Nees.–ले० । स०

अडल्सा, aḍalsá हिं०, द० अडूसा, वासक–हिं० । A[dhatoda] Vasica, Nees.–ले० ।

अडवाऊ गाजर aḍaváú-gāj[ar] [बन] गाजर–हिं० । (wild carrot)

अडवाड aḍavára–गु० बन उर्दी –हिं० । माषपर्णी–सं० । (Gram dras patana.)

अडवाड मगवेल aḍaváḍa [...] –गु० मुद्गपर्णी । बन-उर्दी,

अडवी aḍaví–ते० कना० वन्य, wild–इं० । स० फा० इं० ।

अडवी अत्ति aḍaví-atti–कना० अंजीर–हिं० । Ficus oppo[sitifolia] Roxb. (Fruit of–)–ले० ।

अडवी-अलधा aḍaví-alavá–स० [...] m. (Cassia absus, Lin[n.])

अडवी–आमूदमु aḍaví-ámúd[amu] जंगलीएरंड, जंगली रेंड–हिं० । Ja[tropha] Curcas–ले० । Angul[ar] physic-nut –इं० । इं० मे० मे० जंगली जमालगोटा–हिं०, गु० । [Croton] Polyandrum, Roxb, [Baliospermum] Roxburghii,–Wall.–ले० । हिं०

अडवी-इप्पे-चेट्टु aḍaví-ippe-che[ṭṭu] जंगली महुआ–हिं०, द० । Ba[ssia la]tifolia, Roxb.–ले० । स० फा०

अडवी-इरुल्ली aḍaví-irulli–कना० प्याज, काँदा–हिं०, बं० । Urg[inea Ind]ica, kunth syn. Scill[a Indica] Roxb. (Bulb of Indian S[quill]) –ले० । स० फा० इं० । फा० इं०

...ाय adavi-olakáya-तै० जंगली ..., बड़ी इलायची-हिं० । Amo... subulatum, Roxb.-लै० । स० ... । ई० मे० मे० ।

...ला adavi-kachholá—मल० ...हिं० । Curcuma Zedoaria, ...लै० । Round Zedoary-ई० । ... मे० ।

...द adavi-kanda-सं० जंगली जिमीकन्द-हिं० । S. M.

...द-गड्ड adavi-kanda-gadda— ... मेवाला-म० । जङ्गली सूरन-हिं० । ...orphophallus Paniculatus. ...e.

...रू adavi-gannorú-तै० गुल... ...हिं० । Plumeria Acuminata-... ई० मे० मे० ।

...ण्टा adavi-gorantá-तै० देव... ...रा० । Erythroxylon monogy... ..., Roxb.-लै० । ई० मे० मां० ।

...रण्टी adavi-goranti-कना० । ...throxylon monogynum, or ...ndicum, Roxb.—लै० । नाट का देव... ...० । अडवी गोरण्टा-तै० । देवदार-ता० । ...ो० मां० । फा० ई० ।

... छोटा जंगली प्याज़-हिं०, द० गु० । Scilla Indica-लै० । ई० मे० मे० ।

अडवी-नाभी adavi-nábhí-तै० ... बच्छनाग-द० । अतिविषा-लै० । Aconitum ferox, Wall. (Root ...) —लै० । स० फा० ई० ।

अडवीनिम्म adavi-nimma-तै० ... नीबू-हिं० । अडवी ... । Atala...ntia monophylla, C... —लै० । Wild lime-ई० । ई० मे० ... ।

अडवी-नीम adavi-nima-तै० ... नीबू-हिं० । Atalantia monophylla ... —लै० । Wild lime-ई० । ...

अडवी-पसुपु adavi-pasupu ... हल्दी, वनहरिद्रा-हिं० ... aromatica, ... turmuric-ई० ...

अडवी-पुच adavi-... इन्द्रायन-हिं० । ... Roxb.-Sy... ocynthi... Bitter ... मे० ...

अडवी-... [illegible]

अडवी मल्ली adavi-malli-ते० मधुमाधवी --सं०। चमेली, चम्बेली--हिं०। नयमल्लिका -म०। (Jasminum arborescens, Roxb.)-ले०। इं० मे० मे०।

अडवी मल्ले adavi-malle-ते० मालती --सं०, हिं०। (Jasminum angustifolium, Vahl.)-ले०। इं० मे० मे०।

अडवी मामडी adavi-mámadi-ते० आम्रातक-सं०। अमड़ा, अम्बाड़ा--हिं०। Hog-plum- इं०। (Spondias elliptica.) -ले०। इं० मे० मे०।

अडवी मुनगा adavi-munagá }
अडवी मुनग adavi-múnaga } --ते०
जंगली कासनी--हिं०। ओर्मोकार्पम् सेन्नोइडीस (Ormocarpum sennoides, D. C.)-ले०। काट मोरिङ्ग-ता०। कुदुरुगे-कना०।

शिम्बी या बबूर वर्ग
(N. O. Leguminosæ)

उत्पत्ति स्थान—पश्चिम प्रायद्वीप और लङ्का।

वानस्पतिक वर्णन—एक छोटी झाड़ी है जिसकी शाखाएँ पतली होती हैं। नूतन अंकुर तथा पुष्पवान भाग एक प्रकार के चिपचिपे लोम से आच्छादित होते हैं। चिपचिपा रोम सुवर्ण पीत रंग का होता है। पत्र-पक्षाकार; लघु पत्र (या पत्रक) ३ से १७, एकान्तरीय, आयताधिक-कोणाय और किसीदार। पुष्प-कक्षीय, एक डंठल में ३ से ६ और पीत वर्ण के होते हैं। फली (छीमी) २ से ८ जुड़ी हुई, पेचड्डलसदल, संधि स्थल पर अधिक सिकुड़ी हुई और चेपदार होती है।

उपयोग—इसकी जड़ का क्वाथ उत्तरावस्था में वल्य एवं उत्तेजक रूप से व्यवहृत है। इसका प्रस्तर (या तैल) पक्षाघात और कटिशूल मे वरता जाता है। (डाइमाक) फा० इं० १ भा०।

अडवी मुल्लङ्गी adavi-mullangi-ते० कुकरौंदा-हिं०। जंगली या दीवारी मूली, जंगली कासनी-द०। कमाक्षी त म-पु oriantha, D. C.)-ले० भा०। (Blumea auri -ले०। स० फा० इं०।

अडवी येलकाय adavi-yela बड़ी इलायची-हिं०, द०। A sp. of. (Capsules of. फा० इं०।

अडवी-लवङ्ग-पट्टे adavi-lava -कना० जंगलीदारचीनीपत्र, Cinnamomum Iners; la;-ले०। इं० मे० मे०।

अडवी-लवङ्गमु-पट्ट adavi-la pattra-ते० तेजपात-हिं०। omum Iners-ले०। मेमो०।

अडवी-वुड्डुलु adavi-vuddulu पर्णी, जंगली उड़द, वनउड़द उरिद-मह०। माषपर्णि म०। T. labialis, Spreng wight, -ले०। फा० इं० १ भा०।

अडवी-सुदाप adavi-sudápa जंगली तिनकी--हिं०। (Ruta lens, Linn.)

अडसी adasi-महानिम्ब।

अडस्पुडूस adaspudúsa सोया-हिं०। Peucedanum lens -ले०। इं० मे० मे०।

अड्हुल arahulá-हिं० संज्ञा [ओण्ड्र+फुल्ल, हिं० ओड़हुल] देवीफूल, जपा। या जवाकुसुम ६-७ फुट ऊँचा होता है। हरसिंगार से मिलती जुलती इसका बहुत बड़ा और लाल इसके फूल में महँक (गंध (Hibiscus Rosa-sinen

अडासरा adásará-ते० अडूसा, -हिं०। Adhatoda Vasic मेमो०।

कॉडेटम् adiantum cauda- Linn.-लें० मोरपंखी, मयूर-शिखा मेमो०। अधमारित की जड़ी-ड़० इं०।

कैपिलस वेनेरिस adiantum llus veneris, Linn. --लें० राज--अं०हृ० देखो-मुबारक--कुमा०, हंसराज--हिं०। मेमो०।

ट्रैगोज़िफ़ॉर्मी adiantum Tra- forme, Linn.--लें० हंसराज। Hansarája.

पेडेटम् adiantum pedatum, --लें० हंसराज। see-Hansarája

फ्लेबेल्युलेटम् adiantum fla- llatum, Linn.-लें० मयूरशिखा। इसको जड़ औषध कार्य्य में बरती है। मेमो०।

ल्युन्युलेटम् adiantum lunu- m, Linn.-लें० हंसराज या राजहंस। कालीझाँट(प) --पं०। मुबारक--कुमा०। ।

म् वेनसटम् adiantum venu- m, Don.--लें० हंसराज--हिं०। परसियावशान--फ़ा०। कालीझाँट--हिं०। क- यस्व०। म० अ०। मेमो०।

dike-कना० सुपारी--हिं०। Areca chu, Linn.--लें०। स० फा० इं०। din-लें० अज्ञात।

कॉर्डिफोलिआ adina Cordifolia, k- f.--लें० धाराकदम्ब—सं०। , हडु, कदमी, करम-हिं०। बङ्का, केलि- , पेट पुड़िया-प०। हडुँआ, हडु-म० प्र०। -नै०। कुरम्बा, कोम्बामंकु--कोल०। कराम- ०। बड़ा कुरम-मल०। निका-भड़ी० व ०। हडु, परपु, कुर्मा (गो०), हलोंदा ड़ि०। मह डॉग-गारो। रोघु,केलो-कदम-आ०। कदम्बे-ता०। दाड़ुड,बेत्तगंधष,बनदारु,हुडागु, कन्द्री ,पुप्पुकदिमी-ते०। अर्मिन्तेग-मैसू०। , येत्तेग-पेत्तेग, अर्मन्तेग, येत्तद, अहुन- कना०। हेटू-मह०। हलधवान-गु०। Nauc- lea cordifolia, बेंडा० ना०। इं० मे० सां०। फ़ा० इं० २ भा०। थरली, वला, गुआ -यस्व०।

अडिनेन्थेरा पेवोनीना Adenanthera pav- onina, Linn.-इं०रक्त-कम्बल--बं०। इं० ड्र० इं०।

अडुई adui-पं० आड़। See-ádú.

अडुप्पुकरी aduppukari-ता० लकड़ी का कोयला-हिं०। Wood charcoal-इं०। इं० मे० मे०। स० फा० इं०।

अडरास्पी aduráspí- | अडूसा adulsá | अडूसो adulso — गु० अडूसा,अरूस-हिं०। Adhatoda vasica, Linn--लें०। इं० मे० मे०

अडू adú-हिं० पु० अर० म०। शफ़ताल्-फ़ा०।

अडुसोगए adusogae-कों० अडूसा, अरूस-हिं०। (Adhatoda vasica, Nees.)--लें०। इं० मे० मे०।

अडूनाइडीन adonidin-इं० अडूनी सत्व। देखो-अडूनिस। म० अ० डा० १ भा०।

अडूनिस adonis-इं० अडूनी, अडूनी बूटी-हिं०। अडूनिसवर्नेलिस (Adonis vernalis.) --लें०।

वत्सनाभ वा रैननक्युलेसीई वर्ग

(*N.O. Ranunculaceae*)

नोट—यह बूटी तीन प्रकार की होती है और यूरोप व एशिया के भिन्न भिन्न प्रदेशों में उत्पन्न होती है। पर कदाचित् यह भारतवर्ष में नहीं होती क्योंकि डॉक्टर वाट महाशय और डॉक्टर डीमॉक महाशय के भारतवर्षीय ओषधि सम्बन्धी विस्तृत ग्रन्थों में इसका कहीं भी उल्लेख नहीं पाया जाता है।

वानस्पतिक विवरण—यह झाड़ी १० इंच के लगभग ऊँची होती है। इसकी पत्तियाँ चमकीली हरितवर्ण की और बारीक बारीक सूत्रों में विभाजित होती हैं। इसके पुष्प सुवर्ण-मय रक्त वर्ण के होते हैं।

रासायनिक संगठन—इसमें ग्ल्युकोसाइड की तरह का एक सत्व "अडूनाइडीन" और एक अन्य सत्व "अडूनेट" नाम का होता है। अडूनाइडीन जल और मद्यसार (अल्कुहाल) में विलेय होता है।

मात्रा—इसका चूर्ण १ से ३ रत्ती तक और इसी अनुपात से इसके हिम अथवा टिंक्चर या स्वरस को भी प्रयोगमें ला सकते हैं। इसके सत्व अडूनाइडीन की मात्रा $\frac{१}{६}$ से $\frac{१}{२}$ ग्रेन तक है और इसको वटिका रूप में वर्तते हैं।

नोट—यूरोप के इटली, रूस व स्पेन प्रभृति देशों में यह औषध ऑफ़िशल है।

प्रभाव—हृदय बलकारक (हृद्य), हृदय रोगके लिए लाभदायक है। म० अ० डॉ० १ भा०।

अडूनिस ईस्टीवेलिस adonis æstivalis, Linn.–ले० वत्सनाभ वर्ग की एक ओषधि है। ई० डू० ई०।

अडूनिस वर्नेलिस adonis vernalis–ले०। अडूनिस का वानस्पतिक नाम। देखो—अडूनिस। म० अ० डॉ० १ भा०।

अडूनी adúní-हिं०, उर्दू० अडूनिस-इं०। See--Adonis.

अडोमा adomá–गोआ० माइमुसॉप्स कौकी (Mimusops kauki, Linn.), माइमुसेक्टा (M. disecta, Br.)–ले०। खुर्णा-सोर्–मल०। (मेमो)। खीरिनी–ता०। खीरी खिरइ (खिरनी भेद)–हिं०। कौकी–मह०। क्षीरिका-सं०। ई० मे० प्लां०।

क्षीरिका या मधुक वर्ग

(*N. O. Sapotaceæ*)

उत्पत्ति स्थान—मद्रास तथा मलाका; कभी कभी होशियारपुर, मुल्तान, लाहौर और गुजरानवाला के निकट अमीनाबाद में लगाया जा चुका है।

उपयोग—इसके बीजका चूर्ण नेत्राभिष्यन्द रोग में व्यवहृत होता है और ज्वरघ्न एवं बल्य रूप में इसका अन्तः प्रयोग भी होता है। इसकी जड़ लाहौर में ऑफ़िशल है। (स्टयुवर्ट)

बीज उष्ण एवं तर ख्याल किया जाता है।

और कुष्ठ, पिपासा, उन्माद ... (Secretion) ... बढ़ता जाता है। यह कृमिघ्न ... जाता है। (गेड्डेन पॉवेल)

इसका फल अत्यन्त मधुर ... वृष्य दुग्ध कर्षशोथ तथा ... धाने) में व्यवहृत है। (ई...

जड़ एवं त्वक् संकोचक ... और शिरशूल... में इसे जल ... तथा शहद योजित कर प्रयोग ...

इसके पत्र को तिल तैल में ... लिप्त त्वचा में योजित कर ... मेदा मेदा रोग के लिए उ... किया जाता है। त्वचा संकोच ... इसमें से एक प्रकार का ... सता है। इसके पत्र की पीस... और सोंठ मिला ग्रंथियों पर ... है। (डूरी)। ई० मे० प्लां०

अडूलसा adúlasá–म० } देखो ...
अडूसक adúsak–हिं० } ...
Vasica Nees.–ले०। अ०

अडूसा adúsá हिं० संज्ञा पुं० [प्रा० अडरूस] अडलसा (-मो), बाँसा, रूसा, वसौटा, वासा, बंस्यo। अडलसा, अड़र्सा, ... अडूमा–द०, हिं०।

संस्कृत पर्याय—

वासको वाशिका वासा सिंहपर्णी सिंहास्यो वाजिदन्ता स्यादाटरू... आटरूषो वृषस्ताम्रः सिंहपर्णश्च ...

भाषा—वासक, वाशिका, ... सिंहिका, सिंहास्यः, वाजिदन्ता, ... रूषकः, वृषः, ताम्रः, सिंहपर्णी ... संस्कृत नाम हैं (रामरूपक, मा... वृषः, कसनोत्पाटन, कमलोत्पाटन ... दन्तकः, आमलक, वाशा, ... वाजी, वैद्यसिंही, सिंहपर्णी, ... कंठीरवी, सिंहकर्णी, वाजिदन्ती, ...

मृगेन्द्राणी और सिंहानन ये अडूसे के
म अन्य ग्रन्थों में पाए जाते हैं.)
, आरूसा, वासक, छोटावासक, वासन्ती-
ड़ू-म० । हशीशतुस्सुआल्–अ० । बाँसड़,
, हुआज़ह्–फ़ा० । ऐढाटोडा वैसिका
atoda vasica, Nees.), अडे-
वैसिका (Adenanthera vas-
जस्टीसिया ऐढाटोडा (Justicia
toda, *Roxb*; Linn.), ओरोक्सीलम
(Orocylum indicum .)
ऐढाटोडा (Adhatoda), मलाबार
(Malabar nut tree)–इं० ।
ई, अधडोडे-ता० । अट्टसरम्, अडसरपाकु,
, अडसरा, अड्सर-तै०, तैं० । आटलोट-
रल० । आडमोगे-सप्पु, आड्साल, आडु-
मा० । शोधा, शोडीलसर–करना० ।
, पावट्–सिं० । मेस् ‌न–बिह्–बर्मी ।
तोरवंजा, वाशाइ-बरूस, भिकर-हिं० ।
-मह० । अडुलसो, बाँस, अडूसा
, अरडूसी(शी)–गु० । वाइकस्टर–
— । आडसांगे-का० । भीकर–पं० ।
वासकादि (आटरूष) वर्ग
(*N. O. Acanthaceae.*)

उत्पत्ति स्थान—भारतवर्ष के अधिकतर
पंजाब और आसाम से लेकर लङ्का एवं
र पर्य्यन्त । राजपूताना, शाहजहाँपुर,
सिंह (जम्मू, कश्मीर) प्रभृति स्थान ।

वानस्पतिक विवरण—यह क्षुप जाति की
ति है; परन्तु किसी किसी स्थान में इसके
बड़े बड़े वृक्ष पाए जाते हैं । शरद् ऋतु में
पुष्प आते हैं । प्रकाण्ड सीधा; त्वचा मस,
वर्षीय; शाखाएँ अर्द्ध सरल, त्वचा प्रकांड
श किन्तु समतर; पत्र सम्मुखवर्त्ती, ४
इंच लम्बे और १॥ इंच चौड़े, नुकीले,
दोनों पृष्ठ चिकने होते हैं, पीटियोल
Petiole) अर्थात् पत्रवृन्त सूक्ष्म,
प्रधानाक्ष लम्बा, शाखा रहित, बालियाँ
कक्षीय और अकेली; पुष्पडंठल
पत्रवृन्त) छोटा और बड़े बड़े बन्धनियों

(Brackts) से ढका होता है । पुष्प
सम्मुखवर्त्ती, बड़े, श्वेत रंग के होते हैं जिनके
भीतरी भाग पर रक्ताभायुक्त लोहित वर्ण के धब्बे
होते हैं, पुष्प के दो ओष्ठ सिंह-मुखाकृति के होते
हैं जिनकी भीतरी पृष्ठों पर बैंगनी रंगकी धारियाँ
पड़ी होती हैं; बन्धनियाँ तीन, सम्मुखवर्त्ती और
एक पुष्पीय, तीनों में से बाह्य बन्धनी (Bra-
ckt) बड़ी, अण्डाकार, अत्यन्तलघु पत्रशिरायुक्त
और भीतरी दो अत्यन्त छोटी होती है । ये सब
स्थायी होती हैं । पुष्प-बाह्य-कोष (Calyx)
पाँच समान भागों में विभाजित होता है; पुष्प-
आभ्यन्तर-कोष (Corolla) विस्तीर्ण
ओष्ठीय, लघुनालिकेय, विशाल ग्रैव, ऊर्ध्व ओष्ठ
नौकाकार, जिसका मध्य भाग परिखा युक्त होता
है जिसमें रति केशर स्थान पाता है, निम्न ओष्ठ
चौड़ा, जिसमें तीन भाग होते हैं; पुरुष-केशर
तन्तु लम्बा और ऊर्ध्व ओष्ठीय खात के सहारे
रहता है और ये संख्या में दो होते हैं ।

प्रयोगांश—पत्रांग, क्षार । प्रयोगाभिप्राय-
औषध, रङ्ग, खाद्य ।

रासायनिक-संगठन—एक सुगन्धित उड़न-
शील सत्व, वसा, राल (Resin), एक
तिक्तक्षारीय सत्व जिसे वासीसीन (Vasicine)
जिसे संस्कृतमें वासीन या वासकीन कह सकते हैं,
एक सेन्द्रियक अम्ल (वासाम्ल) ऐढाटोडिक एसिड
(Adhatodic Acid), शर्करा, निर्यास,
रंजक पदार्थ, और लवण । वासीन का अधिक
परिमाण अडूसे की मूल त्वचा और पत्र से प्राप्त
होता है । वासीन के स्वच्छ श्वेत रवे होते हैं
जो अलकुहॉल (मद्यसार) में सरलतापूर्वक
घुल जाते हैं । ये जल में भी विलेय होते हैं ।
इनकी प्रतिक्रिया क्षारीय होती है । खनिजाम्लों
के साथ यह स्फटिकवत् लवण बनाता है ।
अमोनिया भी किसी अंश में विद्यमान होती है ।

औषध-निर्माण—शीत कषाय (१० भाग
जल से १ भाग); मात्रा—१॥ तो० से २ तो०;
तरल सत्व; मात्रा-२ से ४ रत्ती । पत्र स्वरस;
०॥ मा० से १ तो० ३ मा० । टिंक्चर (१०
में १), मात्रा–२ मा० से ४ मा० । संयुक्त क्वाथ,

घृत, अवलेह, चूर्ण और वटिका (साधारण मात्रा ६ मा०)। डॉक्टर लोग अडूसेको द्रवसत्त्व, स्वरस और टिङ्चर रूप से उपयोग में लाते हैं।

प्रतिनिधि—इसके समान गुणधर्म की यूरोपीय ओषधि सिनेगा (Senega) है।

स्वाद—फीका और कुछ मीठा। प्रकृति—गरम और रूक्ष तथा फूल १ कक्षा में ठंडा है। हानिकर्त्ता—मैथुन शक्ति को। दर्पघ्न—शहद शुद्ध और कालीमिर्च।

गुणधर्म व प्रयोग

आयुर्वेदीय मतके अनुसार—

वासा तिक्ता कटुः शीता कासघ्नी रक्तपित्त जित्।
कामला कफ वैकल्य ज्वर श्वास क्षयापहा॥
(रा० नि० व० ४)

भाषा—अडूसा तिक्त, कटु, शीतल है, तथा खाँसी, रक्तपित्त, कामला, कफ, विकलता, ज्वर, श्वास और क्षय रोग को नष्ट करता है।

आटरूषः शीतवीर्यो लघुर्हृद्यः कटु स्मृतः।
तिक्तः स्वर्यः कासहन्ता कामला रक्तपित्त हा॥
विवर्णता-ज्वर-श्वास-कफ-मेह-क्षयापहः।
कुष्ठारुचि तृषा छर्दिनाशकः परिकीर्तितः॥
(वैद्यक)

वासकस्य च पुष्पाणि अरुसेनस्य चैव हि।
कटुपाकानि तिक्तानि कास क्षय हराणि च॥
राज० ३ चिकित्सासार संग्रहकार।

चूर्णं तु यमि कासघ्नं रक्तपित्त हरं परम्।
(वा० सू० अ० ६)

वासको वात कृत्स्वर्यः कफ पित्तास्र नाशनः।
तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुशीतस्तृडर्तिहृत्॥
कास श्वास ज्वर छर्दि मेह कुष्ठ क्षयापहः।
(भा० नि० २०)

भाषा—अडूसा शीत वीर्य, लघु, हृदय को हितकारी, तिक्त, स्वरके लिए उत्तम, कासघ्न, कामला तथा रक्तपित्तनाशक है। विवर्णता, ज्वर, श्वास, कफ, प्रमेह तथा क्षय, कोढ़, अरुचि, प्यास और वमन को नष्ट करता है। वैद्यक। अडूसा और अगस्तिया के फूल तिक्त, पाक में कटु एवं खाँसी और क्षय को हरण करने वाले हैं। राज०

३ च०। अडूसा वमन, खाँसी ... दूर करता है। वा० सू० अ० ... कारक स्वर के लिए उत्तम, ति... को हितकारी, लघु, शीतल, ... कार तृषा की पीड़ा को हरण क... श्वास कास, ज्वर, वमन, प्रमेह ... नाश करता है। वृ० नि० र०।

युनानी मत के ...
... गुणधर्म व प्रयोग

... भारतीय द्रव्यगुणशास्त्र ... हिन्दुस्तानी नाम अडूसा के ... का वर्णन करते हैं। ... महोदय ने स्वरचित "मखजनुल ..." नामक बृहद् ग्रंथमें इस पौधेका ... उनके कथनानुसार अडूसे का ... अर्थात् रक्तोष्मा और प्रमेह ... विसनाशक है। अडूसे की ... ज्वर और प्रमेह, बलगमी ... को)मतली, वमन, पाण्डु, सूजाक, राजयक्ष्मा को नाश करती है। ... लगने या खाँसी से बचाने के ... अडूसे के बीज को उनके गले में ...

अडूसे के विभिन्न अवयवोंके ...

मूल—अडूसा पत्र और मूल ... श्लेष्मानिस्सारक (Stimulant ... rant) और आक्षेप शामक (... modic) है। इसीलिए अधिका... सीनीगा (Senega) के ... कास, श्वास में उपयोग करते हैं।

अडूसा की जड़ का क्वाथ ... तथा साधारण ज्वर में लाभ करता ...

अडूसा की जड़ पुरातन ... कोढ़ और सूजाक के लिए ... अडूसा मूल त्वचा को ... एक सप्ताह तक भिगो रक्खें। ... कर चूर्ण करलें। इसमें से १ ... खायँ तो पुरातन उपदंश से मुक्ति ...

जड़ और मुण्डी बूटी दोनों को घोट हद मिलाकर नित्य पीने से कोढ़ मिलता है।

मूल-त्वचा को जौकुट कर तथा जल कर और उस जल को घूंट घूंट पिलाने तथा मलनी को अवश्य लाभ होता है।

पावभर अड़का नियमपूर्वक एक बोतल कर उचित मात्रामें प्रति दिवस उपयोग य तो श्वास और पुरातन कास जड़ से ता है।

जड़ द्वारा धातु मारना

ी जड़ के छिलके के पानी में एक तोला ी लाल करके सौ बार बुझाएँ। पुनः ी के कल्क (लुगदी) में रखकर अग्नि म करें।

—इस भस्म को उचित मात्रा में उपयुक्त द्वारा सेवन करने से सुजन की गर्मी और शुक्र प्रमेह नष्ट होता है।

अड़ूसे के पत्र

मे के समान रक्तपित्तनाशक कोई अन्य नहीं है। कहा है:—

ाणि संपीड्य रसः समधु शर्करः।
शमं याति रक्तपित्तं सुदारुणम् ॥

ीन् अडूसा-पत्र-स्वरस (अथवा क्वाथ) रा तथा मधु मिलाकर सेवन करने से रक्तपित्त शांत होता है।

ूसे के स्वरस का नस्य देने से नाक, कान, रुधिर का बहना बन्द होता है।

ूसे के पत्तों में कीटाणुनाशक (Inse-icide) गुण विद्यमान हैं और इस कारण ान या अन्य फसलों पर कीड़े लग जाते उनको मारने के लिए इसके पत्तों का उप-अत्यन्त लाभदायी ख्याल किया जाता है। ० वैट०)

कि इसके पत्तों में किसी कदर अमोनिया ती है इसलिए इसके चुरट बनाकर पिलाने ा के दौरा में कमी हो जाती है। डॉ० वैट य अपने अनुभव के आधार पर इसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। देखो—"डिक्शनरी ऑफ़ दी एकानामिक प्रॉडक्ट ऑफ़ इण्डिया।"

यदि इस वृक्ष के ताजे पत्ते अथवा पुष्प को कूट कर टिकिया बनालें और इसे लाल तथा दुखती हुई आँखों पर बाँध दें तो तीन चार रात ऐसा करनेसे बिलकुल आराम हो जाता है। इसके पत्तों के चूर्ण को दाँतों पर मलने से दाँत मजबूत होते हैं और दर्द दूर होता है एवं दाँत के समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं। इसके पत्तों को कूटकर रस निचोड़ लें और उसमें शहद मिलाकर चाटें तो खाँसी दूर हो और कंठ साफ होकर वाणी की शुद्धि हो।

१ तो० अडूसे के पत्ते, ६ मा० मूली के बीज और ६ मा० गाजर के बीज इनका क्वाथ कर कुछ दिन पिलाने से रजःरोध दूर होता है।

अडूसे के पत्ते और सफेद चन्दन इनके सम-भाग बारीक चूर्ण में से ४ माशा प्रति दिवस खाने से खूनी बवासीर को बहुत लाभ होता और खून का दौरा बन्द हो जाता है।

यदि किसी अवयव में शोथ हो तो इसके पत्ते के क्वाथ का वाष्प देने से लाभ होता है।

इसके पत्तों को रोगन बाबूना में घोटकर लेप करें तो फुफ्फुस प्रदाह दूर हो। अडूसा-पत्र-स्व-रस को तिल तैल में मिलाकर पकाएँ जब केवल तैल मात्र रह जाए तब उतार कर ठंडा होने पर शीशी में रख लें। इस तैल से आक्षेप, वातव्यथा उदरस्थ वायुवेदना और हाथ पाँव की ऐंठन दूर होती है।

इसके पत्ते समभाग खर्बूज़ा बीज के साथ घोट छानकर पीने से पेशाब खूब खुलकर आने लगता है और मूत्र सम्बन्धी बीमारियों में बहुत कुछ न्यूनता आजाती है। यदि अडूसा पत्र १ तोला, शोरा कलमी ६ माशा और कासनी ६ माशा इनको घोट छान कर पिलाएँ तो मूत्र अधिकता के साथ आता है जिससे कामला रोग दूर होजाता है। इसके पत्तों के ,जुलाल को पीने से ज्वर, तृषा और घबराहट प्रभृति दूर होते हैं।

अडूसा के पत्तों को पानी से पीसकर आरम्भ

ही में यदि इसे फोड़े पर लेप करें तो उसे बिठा देता है और कोई कष्ट भी नहीं होता।

अडूसे के पत्ते को कूट कर गोला सा बनालें और उस गोले पर अरण्ड के हरे पत्ते लपेट कर ऊपर से माश (उड़द) के आटे का लेपन कर चूल्हा में दबा दें जब आटा पक जाय तब उसे हटाकर अरण्ड पत्र को पृथक करके अडूसा का रस निकाल कर रखलें। अब उस निकाले हुए रस में से आधसेर यह रस, १ पाव खाँड़ देशी, ४ तोला पीपल का चूर्ण और चार तोला गोघृत मिलाकर पकाएँ। जब चाशनी गाढ़ी हो जाए तब उतार कर उसमें एक पाव शुद्ध शहद मिलाकर माजून बनाकर रख लें।

मात्रा—४-४ माशा शाम व सुबह। इसे क्रमशः बढ़ाते जाएँ।

गुण—राजयक्ष्मा, खाँसी, दमा, प्रतिश्याय, अजीर्ण और वक्षःस्थलस्थ वेदना को अत्यन्त लाभप्रद है।

भस्मीकरण

यदि शुद्ध तालपत्र को अडूसे के पत्ते के रस में सौ बार बुझाएँ। पश्चात् राई की गन्दलों की लुगदी में एक मन उपलों की अग्नि दें। इसी प्रकार तीन बार करें, भस्म तैयार होगी।

गुण—इसमें से १ रत्ती उचित रूप से उपयोग करने से सम्पूर्ण वातव्याधि, कफ, खाँसी, दमा, निर्बलता एवम् बुढ़ापा प्रभृति दूर होता है।

अडूसे के पुष्प

अडूसे के पुष्प, पत्र और मूल, परन्तु विशेषकर पुष्प में आक्षेप शामक गुण होने का निश्चय किया जाता है और दमा की कई अवस्थाओं तथा विषमज्वरों की तीव्रता के पुनरावर्तन में योजित किए जाते हैं। ये किञ्चित तिक्त एवं अर्ध सुगन्धियुक्त होते तथा शीत कषाय एवं अवलेह रूप से उपयोग में आते हैं। अवलेह की मात्रा लगभग चाय के चम्मच भर दिन में दो बार प्रयोग में आती है। (डॉ० पेन्सली)।

"हिन्दू मेटीरिया मेडिका"
दत्त महोदय के ...
है कि यह व्यक्ति जो राजयक्ष्म
उसे उस समय तक उद्गम ...
तक वासक वृक्ष यहाँ स्थित है।

यह पुरातन कास, दमा
एवं कफ सम्बन्धी रोगों में
दायक है। (डॉ० ...

इसका पुष्प राजयक्ष्मा
पित्तज्वर और रुधिर की
यदि पुष्प को रात्रि में जल में
सवेरे मल छानकर पान करें
एवम् अरुच्यता दूर हो।

इसके शुष्क किए हुए पुष्प,
उसमें द्विगुण वङ्गभस्म मिला
खुर्फा और खीरा के साथ व्यवहा
शुक्रप्रमेह नष्ट होता है।

शुष्क पुष्प चूर्ण के साथ
नौसादर योजित करके २ रत्ती
खिलाने से तर खाँसी दूर होती है।

इसके एक पाव पके ...
तय्यार करें। चार मा० यह शर्बत
केवड़ा और उचित मात्रा में ...
कर सवेरे पिलाने से हृदय की
फूलना, घबराहट और
होता है।

अडूसेका फूल १ सेर, इसमें ...
कर गुलकन्द तैयार करें। यह ...
यक्ष्मा में लाभप्रद है।

अडूसा पुष्प द्वारा भस्म प्रस्तुत

अडूसे के फूल को कूटकर रस नि...
उस रस में गोदन्ती हड़ताल को
नियमानुसार अग्नि दें। इसी
बार करें तो गोदन्ती भस्म ...

गुण—यह जीर्ण ज्वरके लिए ...
सिद्ध होगी। खून थूकने में २ ...
एक रत्ती यह भस्म रखकर ...
साथ खिलाने से कुछ ही ...

। पुरातन कासके लिए २-२ रत्ती यह एजाज़ के साथ मिलाने से राम-होगी।

। द्वारा प्रस्तुत विविध योग

वासक क्वाथ, वासा घृत तथा वासा-ते तथा अनेक अन्य योग "शाङ्गंधर प्रकाश" आदि ग्रंथों में वर्णित हैं। में भी वे यथाक्रम आए हैं। अतः देखिए।

अडूसा पत्र १ सेर, अडूसा पुष्प हल ॥ सेर डालकर रातको भिगो दें। औटा देकर गोदुग्ध चार सेर मिलाएँ (नाडीयंत्र) द्वारा २ सेर अर्क खींचें। यह अर्क शर्बत एजाज़ ५ तो०में मिला-और शामको पिलाएँ और उष्ण वस्तुओं कराएं। राजयक्ष्माकी प्रथम एवं द्वितीय लाभदायी है। दो सप्ताह पश्चात् रोगी आश्चर्यजनक वृद्धि दीख पड़ती है लाल और आभायुक्त हो जाता है। रक्तता, जलन और रक्तोष्मा को दूर अनुपमेय सिद्ध होता है।

अडूसा पत्र, अडूसे की जड़ की छाल का फूल प्रत्येक २ सेर, २० सेर जल दें। आधा रह जाने पर मल कर। उक्त जल में उपर्युक्त तीनों १ सेर, डालकर पुनः जोश दें। आधा उपर्युक्त नियमानुसार मल कर छान उपर्युक्त वस्तुएँ प्रत्येक आधा सेर डाल दें। आधा रह जाने पर छान कर भर कर रख दें। दिन में तीन बार को मात्रा मे रोगी को पिलाएँ। मधु शहद १ तो० मिला लिया जाए। खाँसी, ज्वर, मुँह द्वारा रक्तस्राव, रक्त-कार्श तथा पाचनशक्ति को लाभ है।

अडूसा क्षार

के पञ्चांग को लेकर जलाएँ और म द्वारा नियमानुसार क्षार प्रस्तुत क्षार २ रत्ती की मात्रामें खाँसी, दमा और नफ़्सुद्दम (खून थूकने) के लिए अमृत समान है। १ रत्ती से तीन रत्ती तक पान के साथ उपयोग में लाने से यह प्रत्येक भाँति की खाँसी और दमा को लाभ पहुँ-चाता है।

अडूसा काला adúsá-kálá-हिं०। अडूसा भेद (Black adhatoda)-इं०।

अडूसा क्वाथ adúsá-kváthah-सं० पुं० अडूसे के पत्र या मूल १ तो०, जल १६ तोला में क्वाथ करें; जब चतुर्थांश शेष रहे तब उसमें शहद डालकर पीने से रक्तपित्त तथा क्षय का नाश होता है।

(यो० त०; सा० सं०)

अडूसा पुटपाक adúsá-puṭapákah-सं० पुं० अडूसे के पुटपाक का रस निचोड़ कर शहद मिला पीने से रक्तपित्त, छर्दि, कास तथा ज्वर का नाश होता है।

(शार्ङ्ग० सं० म० ख० १ अ०)

अडूसा सुफ़ेद adúsá-sufeda-हिं० संज्ञा पुं० अडूसा भेद। देखो-अडूसा। White adhatoda-इं०।

अडेका मञ्जेन adaca manjen-ले० मुण्डी, गोरखमुण्डी-हिं०। देखो-मुण्डी। (Sphæranthus Indicus, Linn.)-ले० फा० इं० २ भा०।

अडेनएन्थेरा पेवोनीया adenanthera pavonia, Linn.)-ले० लालचन्दन, रक्तचन्दन-हिं०। देखो—रक्तचन्दन। इं० मे० प्लां०। इं० मे० मे०। मे० मो०। (Pterocarpus santalinus, Linn.)-ले०। फा० इं०।

अडेन्सोनिया डिजिटेटा adansonia digitata, Linn.)-ले० गोरख इम्ली। मे० मो०।

अडोमा adomá-गोआ। बुआ-मोव, मलय।

नोट—इस शब्द का वर्णन भूलसे पृष्ठ २०६ पर अडूसी शब्द के आगे कम्पोज हो गया है। अस्तु, वहाँ देखें।

अड्डः addah–ता० मालजन–दृग्हा० । (See–Málajan).

अड्डलय addalaya–ता० निकुम्भ–सं० । (See–Nikumbha)

अड्डसरम् addasarm ते० अडूसा, वासका –हिं । (Adhatoda vasica, Nees.) –ले० । रू० फा० इं० ।

अड्डुतिन पल्ली addutina-palli–ता०कोड़ा-मार–हिं० ।

अड्डुनम् addunam–सं०क्लो० (A shield) ढाल ।

अड्गजः aragajah–सं० पुं० चक्रमर्द । चाकु-दे–बं० । वै० श० । (Cassia tora, Linn.)– ले० । फा० इं० १ भा० ।

अड्ङ्गः arangah–सं० पुं० गोधूम, गेहूँ— Common Wheat-इं० । वै० श० Triticum vulgare–ले० ।

अड्हुः arahuh–सं० पुं० लकुच वृक्ष । बड़-हल–हिं० । Artocarpus Lakoocha, Roxb.–ले० । वै० श० ।

अढ़उल ádhaula–हिं० जपा पुष्प, ओड्रपुष्प –सं० । देखो–ओड्र (कः) । Shoeflower (Hibiscus Rosa-sinensis, Linn.)

अढ़केयसरतु adhakeyasaratu–क़ा० सुपारी–हिं० । Areca catechu–ले० । श्र० नि० १ भा० ।

अढ़हर adhahara हिं० संज्ञा पुं० अरहर, रहर, तुवर, आढ़की । See–árhaki

अढ़ैया arhaiyá–हिं० संज्ञा पुं० [हिं० अढ़ाई, टाई] (१) एक तौल जो २॥ सेर की होती है । पंसेरी का आधा । (2½ Seers.)

अढ़ूईका वेल arhui-ká bela–रुतलज०,पं० (Acacia Intsia, Willd.) कोरिट्टा –ते० । कटार–कुमायूँ । मेमो० ।

अणि ani–हिं० संज्ञा स्त्री० } (1) The point
अणिः anih–सं० पुं० } of a needle.
नोक, सुनई । (२) धार । बाढ़ । (३) धुरी की कील । (४) सीमा । हद । सिवान । मेड़ । (५) किनारा । (६) अत्यन्त छोटा ।

अणिमरम् animaram–मल० (Cedrela toona, Roxb.)

अणियाली aniyálí–हिं० संज्ञा [अणि, धार] कटारी । –हिं० ।

अणी aní–हिं० संज्ञा स्त्री० दे०

अणीय aníya–हिं० वि० [सं०] बारीक । झीना ।

अणुः anuh–सं० पुं० } [सं०
अणु anu–हिं० संज्ञा पुं० }
आ०] (१) जब एक परमाणु ... से मिल जाता है तब उस मिले हुए कहते हैं । अणु केवल सत्त्वांके ही नहीं यौगिक पदार्थों के सूक्ष्मतम अंश भी हैं । मॉलीक्यूल (Molecule) ... खुर्दतरीं अंजा-उ० (२) ... (३) सूक्ष्म धान्य । (४) ब्रीहि ... तण्डिक । (५) चीन धान्य (६) सूक्ष्म, परमाणु से बड़ कण । (७) ... त्रुटों का संघात या बना हुआ ... परमाणु । (१०) सूक्ष्म कण । (११) अत्यन्त सूक्ष्म मात्रा कण । (...)
वि० (१) अति सूक्ष्म । छोटा । (२) जो दिखाई न दे ... दिखाई पड़े ।

अणुक anúka–सं०(संज्ञा) वि०[...] (Subtle, small, atomic) (... fine) अत्यन्त सूक्ष्म ।

अणु कोषः anu-koshah–सं० हिं० ... या सेल (Cell) । ... सेल ।

अणु-ज्योतिः anu-jyotih–सं० ... ज्योति अथवा तेज की ... वा० शा० ५ अ० ६६ श्लो० ।

अणुता,–त्वं anutá,-tvam (१) ... ness सूक्ष्मता, अणुरूप होना । (... mic Nature परमाणु स्वभाव ।

अणु-तैलम् anu-tailam–सं० ... सूक्ष्मातिसूक्ष्म भागों में प्रवेश करने ... केश में होने वाले रोग के लिए प्रयुक्त तैल विशेष । धा० सू० २० अ० ।

जिस किसी काष्ठ के कोल्हू की लाट
ल सरसों आदि पदार्थ पानी में पेरकर
ना जाता है, उस उस लकड़ी के टुकड़े
के एक बड़ी कड़ाही में जल भर कर
पकाएँ। उक्त रीति से पकाने पर उन
से जो तैल का अंश पानी पर आ जाए
ाढ़ कर अलग कर लें। उस तैल में
ह औषधों को मिलाकर स्नेह पाक की
पका लें, इसे अणु तैल कहते हैं।
ह विशेष कर वात रोगों को दूर करता
भगन्दर में भी इसका प्रयोग होता है।
(सु० सं० चि० अ०, च० क० ५० ।)
) जीवन्ती, नेत्रबाला, देवदारु, नागर-
ालचीनी, कालावाला, अनन्तमूल, रक्त-
दारुहल्दी, तज, मुलहठी, कमल, अगर,
, पौंडरीक, बेलगिरी, कमल, छोटी
बड़ी कटेरी, मकोय, शालपर्णी, पृश्निपर्णी,
ा, तेजपात, छोटी इलायची, रेणुकबीज,
र, पद्मरेणु इन्हें समान भाग लेकर
आंतरिक्ष जल में क्वाथ करें, और ऊपर
द्रव्यों के मुख्य निर्मल तैल लें। जब तैल में
क्वाथ रह जाए तब उतार कर तैल पाक
र जब तैलमात्र शेष रहे तब पुनः उस तैल
वर क्वाथ मिलाकर पकाएँ इस प्रकार दस-
काएँ, अन्त में जब तैलमात्र शेष रह जाए तो
तैल के बराबर ही बकरी का दूध मिलाकर
काएँ। फिर तैलमात्र शेष रहने पर उतार लें।
अणु तैल कहते हैं। यह नस्य द्वारा
करने में महा गुणकारी है। चूँकि यह
छिद्रों में प्रवेश करता है इसलिये इसे अणु
कहते हैं। (वाग्भट्ट० अ० २०)

[illegible] anu-darshaka-हिं० संज्ञा पुं०
[M]icroscope) सूक्ष्मदर्शक।

[illegible] anubhá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०]
[Li]ghtning बिजली। विद्युत। अशनि
[illegible]।

[अणुमस्तिष्]क anumastishka-हिं० संज्ञा पुं०
[अणुमस्ति]ष्कम् anumastishkam-सं० क्ली०
[अणु]मस्तिष्क, अनुमस्तिष्क हिं०। मुख्तसर दिमाग़, दमीग़, सग़ीर दिमाग़-अ०।
सेरीबेलम् Cerebellum इं०।

अणुमींगी anumingi-हिं० स्त्री० नुक्तियह,
-अ०। न्युक्लीओलस Nucleolus-इं०।
सेल (Cell) को बड़े यंत्र की सहायता से
ध्यानपूर्वक देखने पर मींगी के भीतर जो एक
छोटा सा बिन्दु दिखाई देता है, उसको अणुमींगी
कहते हैं। इ० शा० र०। देखो सेल।

अणुमुष्टिः anumushtih-सं० पुं० विषमुष्टि,
मदालिका। रा० नि० व० ४। See-visha-mushtih.

अणुमुष्टिका: anumushtikáh-सं० स्त्री०
डोडी, मुद्रिका। See-Dodi.

अणुरन्ध्रम् anurandhram-सं० क्ली० (Foramen vesalu) सूक्ष्म छिद्र।

अणुरेवती anurevati-सं० स्त्री० (Croton Polyandrum, Roxb.) दन्ती वृक्ष। प० मु०। रा० नि० व० ६।

अणुवीक्षण anuvikshana-हिं० संज्ञा पुं०
अणुदर्शक, सूक्ष्मदर्शक यंत्र। नज़ारह, मकबरह,
-अ०। माइक्रोस्कोप Microscope-इं०।
सूक्ष्म वस्तुओं को बड़ा करके दिखाने वाला यंत्र
यह यंत्र जिसके द्वारा अत्यन्त सूक्ष्म से सूक्ष्म
वस्तु भी देखी जा सकती है। इसी के द्वारा वि-
ज्ञान ने ऐसे अनेक सूक्ष्म कीटाणुओं का पता
लगाया है जिनकी विद्यमानता का मनुष्य को
स्वप्न में भी ख्याल न था। देखो सूक्ष्मदर्शक।

अणुवीक्ष्य anuvikshya-हिं० वि० सूक्ष्मदर्शक
यंत्र से दिखाई देने योग्य। नज़ारह नक्बरियह,
-अ०। माइक्रोस्कोपिक Microscopic-इं०।

अणुव्रीहिः anu-brihih-सं० पुं०
अणुव्रीहि anu-vrihi-हिं० संज्ञा पुं०
अणुब्रीही anu-brihi-हिं० संज्ञा पुं०
श्यामक, साँवाँ, साँठी, छोटे धान। सूक्ष्मधान्य,
एक प्रकार का बढ़िया धान, जिसका चावल बहुत
छोटा होता है और पकाने से बढ़ जाता है और
महँगा भी बिकता है। शीतशूक-हिं०। रा० नि०
व० १६। पदार्थ-प्रमाणिका (२०)। A Sort of Paddy.

अण्टगलु anta-galu-कना० (ब० व०) गोंद, लासा-हिं० । गम्ज़ gums, रेज़िन्स Resins -इं० । स० फा० इं० । देखो-निर्यास ।

अण्टि anti-मल० (Nut) गुठली-हिं० । स० फा० इं० ।

अण्टिफल anti-kala-मल० (ब० व०), अण्टि (ए० व०) गुठलियाँ-हिं० । नट्स Nuts-इं० । स० फा० इं० ।

अण्टिचेट्ट anti-chettu } -ते० केला, कदली
अण्टिपण्डु antipandu } -हिं० । म्यूसा सेपिएण्टम (Musa sapientum, Linn.) स० फा० इं० ।

अण्टिमलरी anti-malari } -मल०
अण्टिमन्तारम anti-mantáram } गुलाबास -हिं० । गुलेअब्बास-फ़ा० । (Mirabilis jalapa, Linn.)-ले० । स० फा० इं० । देखो-गुलेअब्बास ।

अण्टिश antisha-ते० चिरचिरा, चिचिरी, अपामार्ग-हिं० । (Achyranthes aspera, Linn.) स० फा० इं० ।

अण्टु antu-कना० (ए० व०) गोंद, लासा -हिं० । गम, Gum, रेज़िन Resin-इं० । देखो-निर्यास । स० फा० इं० ।

अण्ड anda-हिं० संज्ञा पुं०
अण्डः andah-सं० पुं०
अण्डम् andam-सं० क्ली०

(१) अंडकोष को दबाने पर उसके भीतर गुठली के समान जो दो सख्त चीजें मालूम होती हैं, उनको अंड कहते हैं । इसकी लम्बाई १ $\frac{१}{२}$ से १ $\frac{३}{४}$ इंच, चौड़ाई १ इंच और मोटाई १ इंच से कुछ कम होती है; उसका भार एक तोले के लगभग होता है । टेस्टिकल Testicle, टेस्टिस Testis-इं० । आण्ड, मुष्क, पुरुषाण्ड, शुक्रग्रंथि-हिं० । बैज़तुलमनी; ख़ुस्यह, मंस्या, ग्रैमह-अ० । शा० नि० व० १८ ।

(२) अण्डकोष, वृषण-हिं० । सफ़्न, फ़ोतह, कीसहे ख़ुस्यतैन-अ० । स्क्रोटम् Scrotum-इं० । हिं० इं० डि० ।

(३) डिम्बः (मे०), इं बैज़तुलमनी-अ० । ग्रोवम Ova... चायडा-इं० । इसके ...

(अ) पेशिः, कोशः, पेशीकं... पेशी (के) । गुण-गर्भ ... रुचिकारक, शुक्रजनक, वात ...

(४) मृगमार्जारगण्ड । भा० धा० द्या० विपर्य ... Musk bag कस्तूरिका का नाफ़ा, मृगनाभि । (... virile वीर्य्य, शुक्र-सं० । वि... -हिं० । पामा क्रीस्टाई Palm (Ricinus Vulgaris) ... अण्डा (An Egg.) । हि० ... पंच आवरण । दे० कोश ।... (Cupid)...

अण्ड उपांड खान anda-upáng... -हिं० संज्ञा पुं० (Digital ...

अण्डकः andakah-सं० पुं० (Sc... अण्डकोष । हे० च० ।

अण्डकं andakam-सं० क्ली० ... संज्ञा (An small egg).

अण्डककड़ी anda-kakari }
अण्डककटी anda-karkati }
स्त्री० अण्डखर्बूज़ा, पपैया, पपीता Papaya, Linn. (Fruit of ...

अण्डकोटर पुष्पा andakotara p...
अण्डकोटरपुष्पी anda-kotara p...
सं० स्त्री० नीलबुहा । देखो-अज्ञा... herb (Convolvulus argent... -रत्नाo ।

अण्डकोशः andakoshah }
अण्डकोषः anda-kosha }
अण्डकोषकः andakoshakah }

(१) कुरण्ड । वृषण (Sc... Tunica albuginea testi... शा० नि० व० १५ .

[illegible]र पर्याय—मुष्कः, वृषणः, (अ)। [illegible]रं, अण्डकः (हे)। सीमा (ज)। [illegible]ः (त्रि)। फलं (के)। बीजपेषिका [illegible]सफ़न (ख़स्फ़ान, सिफ़न–अ० ख०), [illegible]स्यैन, कीमह् ख़ुस्यह् (खुसिया) [illegible] फोता)–अ०। पोस्त ख़ायह्–फ़ा०। [illegible]ी थैली उ०।

[illegible]इन्द्रिय के नीचे और पीछे वह चमड़े की [illegible]ली जिसमें वीर्यवाहिनी नसें और दोनों [illegible] रहती हैं। दूध पीकर पलने वाले उन [illegible]जीवों की यह कोश या थैली होती है [illegible]रोमें अंड या गुठलियाँ पेड़ू से बाहर [illegible]।

[illegible]) फल का छिलका। फल के ऊपर [illegible]छिला।

[illegible]ज़ा anda-kharabúzá–हिं० संज्ञा [illegible] अरण्डखरबूजा, अरण्डककड़ी, एरण्डककड़ी, [illegible] पपैया, पपैया, पीपैयह्, विलायतीरेंड, [illegible] पपैता–अरबा, पपैयह्। अरण्डखरबूजा [illegible]। पोपाई–द०। एरण्डचिर्भिट, वातकुम्भ, [illegible]कटी, नलिकादलः–सं०। पपैया, पांपुरि-[illegible], पेंपाई, पप्पिया, पेपिया, पपया–बं०। [illegible]ते–हिन्दी–अ०, फ़ा०। शाजरतुल् बतीख़ [illegible]। दरख़्त ख़ुरपुज़ह्, दरख़्तख़र्बुज़ह् [illegible]। ख़ुरपुज़ह् का दरख़्त-उ०। पपाय [illegible]apay), पपायपेपा ट्री (Papaw tree), [illegible]ट्री, (Melon tree,), मेलन मेमेयो [illegible] Melon- Mamao), कुकुरबिटा पेपा [illegible]Cucurbita papa)–इं०। पपाया [illegible]apaya), पपाव (papaw,) केरिका प-[illegible] Carica Papaya *Linn.* (Fruit [illegible])–ले०। पपायेरकम्यून Papayer [illegible]mmun–फ़्रां०। मेलोनेनबॉम Melo-[illegible]en baum–जर०। पप्पायि, पप्पायिपज़म, [illegible] पालि-पज़म, पप्पालिमरम्–ता०। बोप्पायि [illegible]ड्डु, मदन-अनपकाय, मधुरनकम्, बपैय-पण्डु [illegible]ते०। पप्पाय-पज़म, आपपाय-पज़म, पप्पा-[illegible]म, कप्पालम्–मल०। बोप्पायि–हण्णु, करङ्गि

–हण्णु परङ्गी, पेरङ्गी, पेरिङ्गि–यहलु। पप्पा-ङ्गाये–कना०। पोपया, पपाई, पपया–मह०। पपई, पपया–मह०, कच्छ०, बम्ब०। पप्पी, पपायि, पपिया, पपाई, पपाईकाट, पपाऊन, चिर्भड़, एरण्डककड़ी, झाड़-चिभड़ी–गु०। पपोल्का-सिं०। सिम्बो–मे, तिम्बो–मि–बर०। पप्पायाई–तु०। पोप्पाय–फल-कों०। पप्पा, कटचिभड़ो–सिंध०।

कुष्माण्ड या पपीता वर्ग

(N. O. Papayaceæ, or Passifloraceæ.)

नॉट ऑफ़िशल

(Not Official).

उत्पत्ति स्थान—इसका मूल निवासस्थान अमेरिका है, परन्तु अब यह सम्पूर्ण भारतवर्ष (विशेषकर पश्चिम भारतवर्ष) में तथा पुरानी दुनियाँ के उष्ण प्रधान प्रदेशों में लगाया जाता है।

नोट—किसी किसी ग्रन्थ में इसका अरबी फ़ारसी नाम ख़मबहे हिन्दी लिखा है। परन्तु प्रामाणिक चिकित्सा ग्रन्थों में यह नाम नहीं मिलता। मुहीत आज़म में पपय्यह् तथा मख़ज़नुल् अद्वियह् में पपीहा आदि नामों से इसका वर्णन किया गया है। गीलानी ने शरह् मुफ़रदातक़ानून में बतीख़ के अन्तर्गत इसका वर्णन किया है। इग्नेशिया अमारा (Ignatia Amara) को भी जो कि कुचिला वर्ग की ओषधि है उसके हस्पानी नाम पपीता से ही अभिहित करते हैं, परन्तु वह विषैली तथा अरण्ड-खरबूजा से सर्वथा भिन्न वस्तु है; अस्तु, उसके लिए देखो—पपीता।

वानस्पतिक वर्णन—इसके वृक्ष २० से ३० फ़ीट ऊँचे, आरम्भ में अशाखी (अर्थात् खजूर व तालवत् एक ही तनेपर); किन्तु प्राचीन होने पर शाखायुक्त (पृथक् पृथक् शिरोमय) हो जाते हैं। पत्र लम्बे डंठल युक्त (१—१ गज लम्बे), एकांतरीय (विषमवर्ती) पञ्जाकार, सप्त खंड-युक्त, एरण्डपत्रवत्, किन्तु उससे मृदु एवं लघु

होते हैं। खण्ड—आयताकार, न्यूनकोणीय, शिराओं से व्याप्त होता है जिसके सिरे पर पत्तों की छुरी बनी होती है।

मध्य खण्ड—पुनः त्रिपत्रपुटयुक्त होता है। पुष्पभ्यन्तरकोष नरपुष्प में, नलिकाकार और मादा में पृथक खण्डयुक्त होते हैं। नरपुष्प करीब किञ्चित भिन्न गुच्छों में, एवं श्वेत होते हैं। मादा (नारि) पुष्प साधारणतः भिन्न वृक्ष में कक्षान्तरीय, वृहत् एवं गुच्छदार और पीताभायुक्त होते हैं। फल रसपूर्ण आयताकार, धारीदार, लघु खबूजा के आकार के परिपक्वावस्था में पीताभायुक्त हरित या सुवर्णाचल वर्ण के और अपक्व दशा में हरे रंग के होते हैं। इनमें बहुसंख्यक गोलाकार भूमरे वर्ण के चिपचिपे मरिचवत् बीज होते हैं इनमें से सुगन्धयुक्त गंध आती है। अपरिपक्वावस्था में फल गाढ़े दूध से भरा रहता है। पत्र एवं प्रकांड में भी दुग्ध होता है। इसमें पेपीन (अरडखरबूजा सत्व) नामक एक प्रभावशाली पाचक तत्व होता है।

नोट—फल के विचार से ये चार प्रकार के होते हैं:—

१—नर-जिसमें फल नहीं लगते; ये केवल पुष्प आयुकने पर शुष्क हो जाते हैं। शेष तीन फलदार होते हैं। २—इनमें से एक बेल पपय्या है। इस प्रकार का फल तने में लगा हुआ नहीं होता, अपितु डंठलयुक्त होता है। शेष दो प्रकार (तीन व चार) के फल तने में लगे होते हैं, केवल फल के छोटे बड़े होने का भेद होता है।

अंडखरबूजा बम्बई, करांची और मद्रास में अधिकता से होता है।

प्रयोगांश—दुग्धमय रस, बीज तथा फलमज्जा और पत्र, दुग्धमय रस द्वारा प्रस्तुत सत्व "पेपीन" आदि।

रासायनिक संगठन—इसके दुग्धमय रसमें एक प्रकार का आल्ब्युमिनीय पाचक संधानोत्पादक (अभिषवकारी) पदार्थ होता है, जो दुग्ध को [illegible] पेपीन (Papain) या [illegible] ayotin) कहते हैं। [illegible] एक पदार्थ, एक म्रदु [illegible] अल्ब्युमीनाइड्स, शर्करा (Citric Acid), [illegible] aric Acid), [illegible] Acid) और ग्लानीन (ग्लू[illegible]) प्रभृति पदार्थ पाए जाते हैं। [illegible] परिमाण में मस्म (८.४[illegible]) जिसमें सोडा, पोटाश और [illegible] [illegible]sphoric Acid) पाए [illegible] बीजों में एक प्रकार का तैल [illegible] अप्राह्य गंध आती है। (१ [illegible] अरडखरबूजा तैल या पपैया [illegible] ya Oil or [illegible]) [illegible] अतिरिक्त इसमें पामिटिक [illegible] [illegible] एसिड, एक स्फटिकवत् अम्ल [illegible] (Papayic Acid) कहते [illegible] एसिड तथा एक मधुराल आदि [illegible] जाते हैं। इसके पत्रमें कार्पीन (C[illegible]) नामक एक क्षारीय सत्व होता है [illegible] हाइड्रोक्लोराइड (Carpain[illegible] chloride) बनता है। यह [illegible] होता है और हृदय बलप्रद [illegible] के स्थानमें $\frac{1}{20}$ से लेकर $\frac{1}{12}$ ग्रेन [illegible] में त्वगन्तःक्षेप रूप से उपयोग [illegible] कार्पीन एक विषैला पदार्थ है।

औषध निर्माण—१—पपीता [illegible] २० से ६० बुंद। २—शुष्क [illegible] मात्रा—१ से २ ग्रेन या अधिक। [illegible] पेपीन (पपीतासत्व) प्राप्त होता है। [illegible] सत्व अर्थात् पेपीन या पेपेप्टोन, [illegible] ग्रेन। ४—फल, मज्जा। ५—[illegible] आदि। ६—करक व पुल्टिस।

सेवन विधि—इसका क्वाथ [illegible] या लिक्वर (लिकरचर) या [illegible] तथा गुलिसिरर और ग्लिसरीन [illegible]

निम। सिरप से इसकी उत्तम वटिकाएँ ती हैं।

नॉट ऑफ़िसल योग
official preparations).
और पेटेन्ट औषध—

) एलिक्सिर पेपीन (Elixir n) यक्सीर जौहर पपय्यह्।
४ भाग, मद्यसार (एल्कोहल) १६ स्रुत वारि (डिस्टिल्ड वॉटर) ४२ रोमैटिक एलिक्सिर आवश्यकतानुसार जिसमें पूरा सौ होजाए। (यो० पी०

—आधा से १ ड्राम भोजन के साथ।

) ग्लीसराइनम् पेपीन (Glyceri-papain) ग्लीसरीन जौहर पपय्यह्, य पपीतासव। पेपीन ८ भाग, हाइड्रो-एसिड डाइल्यूट ८ भाग, सिम्पल १ ४ भाग, ग्लीसरीन (मधुरीन) ाग पर्यन्त।

—१ ड्राम भोजन के साथ।

) ट्रॉकिस्काई पेपीन (Trochisci n) पेपीन की टिकिया—

—प्रत्येक टिकिया में आधा ग्रेन पेपीन। टेब्लेट्स पेपीन, प्रत्येक में २ ग्रेन ता है।

हास तथा गुण-धर्म - ब्राज़ील निवासी प्राचीन काल से जानते थे। अस्तु, ि का की नरमादा जातिको वहाँ मेमेओ amao macho (नर मेमेओ या) तथा फलान्वित होने वाली स्त्री जाति ो फेमिया mamao famea (मादा) और अन्तिम की बोई जाने वाली को मेमेओ मेलेओ (फीमेल) कहते थे। परन्तु, उसके दूधिया रस ाचन प्रभाव १७ वीं शताब्दि मसीही में था। पश्चिम भारतीय द्वीपों में इसका चक प्रभाव सम्भवतः प्राचीन काल से । ऐसा प्रतीत होता है कि पुर्तगाल निवासी जब इसको भारतवर्ष में लाए तब उनसे भारतीयों को भी इसके मांसपाचक प्रभाव का ज्ञान होगया; क्योंकि भारतवर्ष में भी यह बहुत काल से व्यवहार में आ रहा है। अस्तु, मांसको कोमल करने के लिए कच्चे अंडखरबूज़ा का रस उस पर मलते हैं अथवा उसको इसके (पपय्या) पत्र में लपेट देते हैं। (पत्र साबूनवत् है-इं० मे० मे०।) मख़्ज़नुल् अद्वियह् तथा मुहीत् आज़म प्रभृति ग्रन्थों में भी पपय्यह् के दुग्ध के इस गुण का वर्णन है कि वह गोश्त को गुज़ार करता (कोमल करना या गला देना) और दुग्ध को जमा देता है।

मख़्ज़नुल् अद्वियह् के लेखक मीर मुहम्मद हुसेन (१७७० ई०) ने पपय्यह् वृक्ष का स्पष्ट वर्णन किया है। वे इसके रस में आर्द्रक को मिश्रित कर मांस के मृदु करने के उपयोग का वर्णन करते हैं। उनके वर्णनानुसार यह रक्त-निष्ठीवन, रक्तार्श तथा मूत्रप्रणालीस्थ क्षतों की औषध है और अजीर्ण में भी हितकारी है। दद्रु या विचर्चिका (जिसमें अत्यन्त खाज उठती हो एवम् जिससे अधिक स्नेह स्राव होता हो) में इसके दुग्ध को ३-४ बार लगाने से लाभ होता है।

प्रकृति—पक्व-गर्म तर; अपक्व-उष्ण, रूक्ष; वृक्ष-त्वक्-उष्ण रूक्ष, किसी किसी के मत में सर्दतर २ कक्षा में।

हानिकर्त्ता—यकृत् को या शीत प्रकृति और कफ प्रकृति वालों को। दर्पनाशक-सिकञ्जबीन बज़ूरी (खाँड़, लवण तथा सिर्का प्रभृति)। आहार मध्यमें इसका खाना उत्तम है। स्वाद—अपक्व कडुआ और पक्व मिठास लिए कुछ बे-स्वाद होता है।

प्रतिनिधि—हिन्दी अंजीर।

मात्रा—४ माशे।

गुण, कर्म, प्रयोग—कोष्ठमृदुकर, तृषाहर, प्रवाहिका, अर्श, प्लीहावृद्धि, कंठ मुखकी रूक्षता तथा वृक्कनैर्बल्य और यक्ष्मा को लाभप्रद है। अशुद्ध मलोंको त्वचा, हस्त व पाद द्वारा विसर्जित

करता है; बृंहण विस्मृतिहर, रक्तता, रक्त-निष्ठीवन, रक्तपरण, रक्तार्श, मूत्रप्रणालीस्थ क्षत, हृत् व आमाशय व यकृद् दाहहर, शीघ्रपाकी, कफ तथा रक्तवर्द्धक, कब्ज व वातज आन्त्रकूजन-प्रद है। मु० आ०। इसका परिपक्व फल उपदंश को गुणप्रद है। इसके पके हुए और कच्चे फल का अचार प्लीहा के रोग में गुणकारक है। यह पाचक, क्षुधावर्धक, वायु-क्षयकर्ता, वृक्क व वस्तयरमरी निःसारक और मूत्रल है। मांस विशेषतः कबाबों के मांस को अतिशीघ्र गलाता एवम् उसका दर्पघ्न है। भारतवर्ष में प्रायः यह इसी काम में आता है। म० मु०। हु० मु०।

भारतवर्ष में डॉ० फलेमिङ्ग (१८१० ई०) ने इसके दुग्ध के कृमिघ्न रूप से उपयोग की ओर ध्यान दिलाया। इसके कथित गुणधर्म के प्रमाण के लिए वे मि० कार्पेण्टार कोसिग्नी (Mr. Carpentier Cossigni) के लेखों से एक मनोरञ्जक भाग उद्धृत करते हैं। अभी हाल ही में मि० बौटन (Mr. Bouton) ने इसका प्रबल प्रमाण पेश किया है; जिससे यह निश्चिततया निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इसके कृमिघ्न प्रभाव विषयक वर्णन वास्तविक घटना पर स्थापित किये गये हैं। वे डॉ० लेमारचन्द (Dr. Lemarchand) द्वारा व्यवहृत निम्न सेवन विधि का उल्लेख करते हैं—

ताजे अंडखरबूजे का दुग्ध, और शहद, प्रत्येक चाय की चम्मच भर इनको भली भाँति मिश्रित कर, उसमें उबलता हुआ जल ३ या ४ चम्मच भर धीरे धीरे योजित करें। और जब यह काफी शीतल होजाय तो इसे एक घूँट में पी जाएँ। इसके दो घंटे पश्चात् सिर्का या नीबूके रस मिले हुए एरण्ड तैल की एक मात्रा सेवन करें। आवश्यकतानुसार इसको दो दिन तक बराबर सेवन करें। यह पूर्ण वयस्क मात्रा है। ७ से १० वर्ष के भीतर के बालक को इसकी आधी मात्रा देनी चाहिए और तीन वर्ष से भीतर के शिशु को इसका तिहाई अथवा एक [illegible] भर देना चाहिए। यदि [illegible] जैसा इसमें कभी [illegible] एनिमा (वस्ति) करने में वह [illegible] है।

मुख्यतः यह [illegible] (Tænia) पर इसका [illegible] बीज में भी कृमिघ्न प्रभाव [illegible] किया गया है, परन्तु इसके गुण [illegible] से भलीभाँति यह परिणाम नहीं [illegible] दक्षिण तथा पश्चिम भारतवर्ष [illegible] की सभी जाति की स्त्रियों में [illegible] आर्तवप्रवर्तक गुणमें प्रबल [illegible] यहाँ तक धारणा है कि यदि [illegible] मध्यम मात्रा [illegible] भी [illegible] अवश्यम्भावी परिणाम होगा। [illegible] इसके फल खाने के खिलाफ है। [illegible] के प्राकथित आर्तवप्रवर्तक गुणों [illegible] घटनाओं की बहुत कमी है। ([illegible] आर्तवप्रवर्तक है-इ० मे० मे०) इसके दूधिया रस का गर्भाशयिक [illegible] रूप से स्थानिक उपयोग होता [illegible] हुए अवचूषण का लगकती है।

१ आउंस इसके पत्र, १० ग्रेन [illegible] अहिफेन तथा १० ग्रेन (१०· [illegible] लवण इनको रगड़ कर कल्क प्रस्तुत [illegible] स्थानिक उपयोग से गिनी कृमि ([illegible] worm) नष्ट होती है। [illegible] कॉक्स'।

एक चाय की चम्मच भर अंडखरबूजे [illegible] तथा उतनी ही शर्करा को परस्पर मि[illegible] तीन मात्राएँ बनाकर दैनिक सेवन [illegible] एवम् यकृत् वृद्धि चिकित्सा में [illegible] प्राप्त हुए। एवर्स (इ० मे० मे० [illegible] ई०)।

फल पुरातन अतिसार में गुणदा[illegible] इसका अपक्व फल कोष्ठमृदुकार[illegible] है। इसका ताजा दूधिया रस [illegible] (Rubifacient) तथा [illegible]

। यह वृश्चिक दंश की निश्चित औषध भी इस हेतु उतने ही लाभप्रद है। परिवर्तक है और इसका निरन्तर सेवन मलावरोध को नष्ट करता है। यह तथा रक्तार्श में हित है। उबालने के इसमें निम्बु स्वरस तथा शर्करा सम्मि-ने से इसकी उत्तम चटनी प्रस्तुत होती का शुष्क किया हुआ एवं लवण योजित हा शोथ तथा यकृद् शोथ को कम करता के अपक्व फलकी कढ़ी प्रस्तुत कर स्तन्य-भाव हेतु स्त्रियाँ सेवन करती हैं। वात-में इसके पत्र को उष्ण जल में डुबोकर अग्नि पर गरम करके वेदनास्थल पर । पत्तियों को कुचलकर इसको पुल्टिस ै कहा जाता है कि श्लैपदिक शोथ कम । इस हेतु इसके फल द्वारा निष्कासित ुध का २ से ४ ग्रेन (१ से २ रत्ती) ा में वटी रूप में आन्तरिक उपयोग । इं० मे० मे० ।

खरबूज़ा का दुधिया रस और तन्निर्मित सत्व (पेपीन)

दुधिया रस

से घ निर्माण-विधि—अपक्व (वा अर्द्ध-फल में लम्बाई की रुख बारम्बार चीरा दें। ाहार जब पर्याप्त दुग्ध निकल आए तब उसे कर सैण्डबाथ (वालुकाकुण्ड)पर रख मन्द द्वारा शुष्क करें। इस प्रकार एक मन्द श्वेत ा चूर्ण प्राप्त होगा। आन्तरिक रूप से यह एक उत्तम औषध है। पूर्ण वयस्क को इसकी १ या २ ग्रेन की मात्रा शर्करा ध के साथ देनी चाहिए। इसी प्रकार की औषध "फिड्लर्स पेपीन" के नाम से ा है। स्वाद अप्रिय होने के कारण टिंक्चर उत्तम नहीं होता। आवश्यकता र बालकों अथवा स्त्रियों के लिए इसके का शर्बत बनाया जा सकता है। अजीर्ण अत्यन्त गुणदायक है।

दुग्ध तथा पेपीन से इसकी तुलना—क्षारीय, अम्लीय, तथा न्युट्रल (उदासीन) घोलोंमें विलायक रूपसे यह पेप्सीनके समान एक एन्ज़ाइम है। यह मांसीय एल्ब्युमेन का प्रबल पाचक एवं वास्तविक पेप्टोन्स का निर्माण करता है और पेप्सीन के समान दुग्ध को जमा देता है। पेप्सीन से यह इस बात में भिन्न है कि बिना अम्ल योग के तथा अधिक उत्ताप पर एवं थोड़े काल में यह प्रभाव करता है। फाइब्रिन तथा अन्य भग्नजनीय पदार्थों का विलायक होने के कारण यह मांस को गलाता है। छना हुआ रस पेप्सीन से रासायनतः इस बातमें भिन्न है कि उबालने पर यह तलस्थायी (अधःपातित) नहीं होता। और मर्क्युरिक क्लोराइड (पारद-हरिद्), आयोडीन (नैलिका) एवं सम्पूर्ण खनिजाम्लों द्वारा तलस्थायी हो जाता है। इस बात में वह पेप्सीन के समान है कि न्युट्रल एसी-टेट ऑफ लेड द्वारा यह तलस्थायी हो जाता है तथा कॉपर सल्फेट (ताम्रगन्धेत्) और आयर्न क्लोराइड (लौह हरिद्) के साथ तलस्थायी नहीं होता।

पेपीन या पेपेयोटीन

(Papain or papayotin)

प्राप्ति व लक्षण—यह एक एल्ब्युमीनीय वा पाचक खमीर वा अभिषव (प्रभावात्मक सत्व) है जो अपक्व अण्डखर्बूजा के दूधिया रसको मद्यसार (ऐलकुहॉल) के साथ तलस्थायी करने से प्राप्त होता है। यह एक श्वेत वर्ण का विकृता-कार (अमूर्त) आर्द्रभूत चूर्ण है। जो ७१ % शुद्ध मद्यसार, जल एवं ग्लीसरीन (मधुरीन) में विलेय होता है। इसमें माणिज द्रव्यों के पचाने की शक्ति है। एक ग्रेन पेपीन २०० ग्रेन ताज़े दबाए हुए रक्त फाइब्रिन को पचा देगा।

नोट—यद्यपि अण्डखर्बूज़ा के अपक्व रस से निकाल कर शुष्क किए हुए दूधिया रस को अंग्रेजी में पेपेयोटीन कहते हैं तथापि पेपीन और पेपेयोटीन अधुना पर्याय रूप से व्यवहृत होते हैं।

पेपीन (Papain) को पेपाइन (papaine) के साथ मिलाकर भ्रमकारक न बनाना चाहिए। पेपाइन एक द्रव पदार्थ है जिसमें पपीते के वर्तमान क्षारीय सत्वों से भिन्न उसमें प्रशमन गुणों के होने की प्रतिज्ञा की जाती है।

इन्द्रियव्यापारिक कार्य या प्रभाव—इसकी प्रभाव विषयक बातों में सिवा इसके और कोई स्मरणीय बात नहीं कि इसका नत्रजनीय पदार्थों पर प्रबल प्रभाव होता है; और जब पपेयोटीन को सीधा रक्त में पहुँचाया जाता है तब यह प्रबल विषैला प्रभाव उत्पन्न करता है; जिससे हृदय तथा वातकेन्द्र वातग्रस्त हो जाते हैं। अन्यथा आन्तरिक रूप से औषधीय मात्रा में यह सर्वथा निरापद है।

उपयोग—डिफथीरिया (खुनाक, कंठरोहिणी), अल्सरेटेड थ्रोट (कण्ठव्रण), क्रूप (स्वरघ्नीकास), एक्ज़ीमा (कन्द) और फिशर ऑफ दी टङ्ग (जिह्वा की कर्कशता) आदि में इसका स्थानिक उपयोग और अग्निमांद्य, अजीर्ण, यकृद्वृद्धि, कद्दूदाना (टीनिया सोलियम), आमवात, अतिसार; तथा मुक्ताहारी एवं दुग्धोद्भेदजन्य संग्रहणी (Lienteric Diarrhoea) प्रभृति में इसका आन्तरिक उपयोग लाभदायक होता है।

(१) पेपीन तथा पेप्सीन या पेनक्रिएटीन (प्रोमीन) के पाचक प्रभाव की तुलनात्मक व्याख्या— (…)

(क) अम्लीय, क्षारीय तथा न्युट्रल घोलों (वा माध्यम) में भी इसका प्रभाव होता है जिससे उस अवस्था में भी इसके प्रभाव करने की आशा की जा सकती है जबकि अस्वस्थता के कारण अथवा कृत्रिम रूप से जैसा औषधकाल में होता है; आमाशयस्थ पदार्थों की प्रतिक्रिया क्षारीय या न्युट्रल (उदासीन) होजाती है। उक्त दशाओं में पेपीन सर्वथा व्यर्थ प्रमाणित होगा।

(ख) क्षारीय एवं न्युट्रल घोलों में प्रभावजनक होने के कारण आहारीय पदार्थों के आमाशय में … जाने पर भी इसका … रहेगा जो पैङ्क्रियाटीन (प्रोमीन) तुल्य है। सम्पूर्ण … पर इसका … रहेगा।

(ग) इसमें कुछ … प्रभाव भी है।

(घ) पचनीय … दुग्धाहार की मात्रा … भी यह पेप्सीन की अपेक्षा … हित करता है।

(ङ) Proteolytic … पेपीन का तेज पर … होता है।

(च) पेप्सीन तथा पेप्टि… की उपस्थिति में पेपीन का प्र…

मांस को कोमल करने के … में डुबा रखने पर वह अधिक … सड़े गले सुरक्षित रहता है … कदापि सम्भव न होता। इससे … जा सकता है कि इसमें प्रेरित … निवारक) तथा पाचक प्रभाव … गाढ़े द्रवों में इसका विलयन …

(२) आमाशयिक व आन्त्र… सम्बंधी तथा अन्य आमाशयिक … विकारों में मांस पचाने में … लिए फ्रांस देश में पेपेयोटीन का … गया। बालकों के कतिपय … विकारों में इसका संकेत … गया। कहा जाता है कि थोड़ी … अग्निमांद्य एवम् छर्दि में … हुआ। स्वाभाविक आमाशयिक … की अवस्था में पेपेयोटीन का … पोषकतरित रूप में प्रयोग करने से … होता है। पेपीन बालकों के … प्रतिश्याय, अम्लाजीर्ण, —शूल जो भोजन के थोड़ी देर पश्चात …

विशेष रूप से लाभदायक होता है। ब्री० एम०"।

२ ग्रेन की मात्रा में अजीर्ण, पुरा- आमाशयिक प्रदाह तथा आमाशयिक (अल्सर) या मलीन या मांसा- कैन्सर) में शुद्ध पेप्सीन द्वारा उत्पन्न [illegible]न प्रभाव से लेखक को अत्यन्त सन्तुष्टि [illegible] निम्नोल्लिखित पेप्सीन मिश्रित योग के [illegible] से लिखते हैं कि बहुत से आमाशयिक [illegible] में इससे उत्तम प्रभावकारी कोई अन्य नहीं।

[illegible]ग—पेप्सीन ३ ग्रेन, सोडाबाईकार्ब ३० ग्रेन [illegible]म् पाउडर (विचूर्णित मैग्नेशिया कार्ब) [illegible] ग्रेन, बिस्मुथाई कार्ब १० ग्रेन, मॉर्फीई [illegible]और $\frac{1}{12}$ ग्रेन, यह सूखी रूप में सोडा के अथवा बिना सोडा के और किसी शक्ति [illegible]ग्लिसराइनम् पेप्सीन रूप में दिया जा सकता [illegible] इसके आमाशयिक प्रभाव में क्रियोजूट से कोई [illegible] उपस्थित नहीं होती है। "हिट० मे०"।

(क) बालकों का पुरातन आमाशयिक [illegible]प्रदाह—बालकों के उस पैत्तिक विकार में जिसमें [illegible] का नष्ट हो जाना, आलस्य, चेहरे के रंग [illegible] पीला हो जाना, रात्रि में निद्रा का न [illegible]ना, दिन में शीघ्र क्रोधित होना, प्रायः शिरः[illegible] का होना, चूना जैसा मूत्र आना इत्यादि [illegible]ण होते हैं। (जब यह दशा कुछकाल लगा- [illegible] रहती है तब इससे बालक दुर्बल हो जाता [illegible]एवम् विकृतश्लेष्मा आमाशय तथा आंत्र की [illegible]तरी पृष्ठ को आच्छादित करलेती है जिससे [illegible]हार रस उचित मात्रा में अभिशोषित नहीं [illegible]ता।) ऐसी निर्बलता की दशाओं में जो [illegible]धारणतः कॉडलिवर ऑइल (कॉड मत्स्य [illegible]तैल) तथा सिरप फॉस्फोरस कम्पाउण्ड आदि [illegible]षधें व्यवहार में लाई जाती हैं, उनका [illegible]भीकरण नहीं होता। किसी किसी समय काम [illegible] काम पाता है जिसमें बालक को प्रारम्भिक

यक्ष्मा से ग्रस्त कहा जाता है। डॉ० हर्शेल (Dr. Herschell) ने उक्त दशाओं में निम्न योग से बहुत लाभ होते हुए पाया—

योग—पेप्सीन (फिट्लर) आधा से एक ग्रेन, सैकरम् लैक्टेट १ ग्रेन, सोडा बाईकार्ब इनकी एक गोली बनाएँ। इसे प्रत्येक खाने के बाद सेवन करना चाहिए। थोड़े जल के साथ १ या दो बूंद डि० नक्स वॉमिका भोजन के ठीक पहिले देने से भी लाभ होता है।

बालकों को हरे रंग के दस्त और दूध के वमन होते हैं जैसा कि दन्तोद्भेद काल में प्रायः होता है तब उक्त अवस्था में निम्नोल्लिखित योग लाभदायक सिद्ध होते हैं।

पेप्सीन १ ग्रेन, पल्व, डोवराई (डोवर्स पाउडर) ४ ग्रेन, सोडा बाईकार्ब १० ग्रेन, इसकी १२ मात्रा बनाकर १-१ मात्रा प्रातः सायं सेवन करावे। पर्याप्त स्वस्थ के किञ्चित् संकोचकर प्रभाव के कारण अतिसार की अवस्था में डॉ० हचिसन (Dr. Hutchison) पेप्सीन को उससे उत्तम ख्याल करते हैं।

(ख) अम्लाजीर्ण—(Acid Dyspepsia) इस प्रकार के अजीर्ण में पेप्सीन अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होता है। चूंकि यह क्षारकी विद्यमानता में भी उतना ही उत्तमतापूर्वक प्रभाव प्रगट करता है, आमाशयस्थ अम्लाधिक्यता को न्यूट्रलाइज (उदासीन) करने के लिए पर्याप्त परिमाणमें बाइकार्बोनेट ऑफ सोडा देना चाहिए। यह अपने ऐण्टिमैटिक (पचननिवारक) प्रभाव द्वारा आध्मानजन्य अस्वाभाविक संधान (अभिषव) को रोकता है। उक्त अवस्था में निम्न योग उत्तम प्रमाणित होते हैं।

१—पेप्सीन २ ग्रेन, सैकरम् लैक्टेट (दुग्धोज) ४ ग्रेन। इसकी एक मात्रा बनाकर भोजन के एक घंटा पश्चात् निम्न मिश्रण के साथ सेवन करें।

मिश्रण—सोडाबाईकार्ब १२ ग्रेन, ग्लीसरीन, एसिड कार्बोलिक मिक्सचर ८, स्पिरिट एमोनिया एरोम्युटिक मिक्सचर २० जल १ आउंस

इसको भोजन करने के एक घंटा पश्चात् सेवन करें। इसको भोजन के साथ सेवन करने में पेपीन की उससे न्यूनतर मात्रा भी वही प्रभाव प्रगट करेगी।

डॉक्टर हचिसन (Dr. Hutchison) अजीर्णावस्था में अरण्डखरबूज़ा के शुष्क रस को अधिक उत्तम ख़याल करते हैं। जैसे—

अरण्डखरबूज़ा का शुष्क रस १२ ग्रेन, पल्व इपीकाक (इपीकेक्वाना चूर्ण) १२ ग्रेन, पल्व र्‌हीआई (रेवन्दचीनी का चूर्ण) ३ ग्रेन, ग्लीसरीन (मधुरीन) आवश्यकतानुसार इसे चाहे चूर्ण रूप में रखें अथवा इसकी १२ वटिकाएँ प्रस्तुत करें।

इसको वे भोजनोपरांत सेवन करने का आदेश करते हैं। शुष्क पपीता स्वरस को पसन्द करने का कारण यह है कि उसका औपयोगिक प्रभाव किंचित् कोष्ठमृदुकर है और वह अधिकतर संतोषप्रद है। जैसा कि प्रागुक्त मात्रा (प्रत्येक वटी में १ ग्रेन) में सेवन करने से यह अत्यन्त मृदुभेदक प्रभाव करता है और किसी भी भाँति रोगी को विरेक नहीं कराता। उक्त डॉक्टर महोदय के वर्णनानुसार पपीता वृक्ष से चतुरतापूर्वक निकाल कर शुष्क किया रस या पपीतादुग्ध पेपीन के सहित अपने संयोगी अवयवों की उपस्थिति में अनेक दशाओं में स्वयं प्रभावात्मक सत्व पेपीन की अपेक्षा श्रेष्ठतर प्रमाणित होता है। भोजनोपरान्त होने वाली बेचैनी को वास्तविक उदरशूल में परिणत होजाने पर आपने पपीता को अफीम के साथ निम्न प्रकार योजित किया:—

पपीता स्वरस १२ ग्रेन, अहिफेन चूर्ण ३ ग्रेन ग्लीसरीन आवश्यकतानुसार। इसको चूर्ण रूप में रक्खें अथवा इसकी वटिकाएँ प्रस्तुत करें। प्रति भोजनोपरान्त १ वटी सेवन करें।

(२) कण्ठरोहिणी तथा स्वरयंत्रशोथ (Diphtheria and Croup)—

उक्त रोग के निवारणार्थ पेपीन का स्थानिक प्रयोग लाभदायक होता है। इस हेतु उसका तीक्ष्ण घोल तैयार करना चाहिए। इसको उक्त स्थल पर लगाना तथा नासिका एवं मुख में २–२ मिनट के अन्तर से टपकाना चाहिए। से डिफ्थीरीयाजन्य ... अवस्थाओं में ... होता है, जिससे ज्वर ... नाड़ी स्वास्थ्यावस्थापर आजाती है। ताज़ा घोल प्रस्तुत करना चाहिए, पेपीन १ भाग, जल ४ भाग ४ भाग, आवश्यकतानुसार इसे पश्चात् लगाएँ।

(४) वृक्काश्म (Nephr...) वृक्काश्मरी में १ से ३ ग्रेन पेपीन के सेवन करने से लाभ प्रतीत होता है। एन्सा० फेन्विक।

(५) कृमिघ्न (Anthelmint...) और कद्दूदाने के लिए भी इसका औषधीय उपयोग किया गया है। प्रभाव के कारण इसमें कमी कमी... हुआ। हिट० मे० मे०।

अरण्डखरबूज़ा के दूधिया रस को ... मिलाकर देने और उसके पश्चात् एरण्ड तैलका व्यवहार करानेसे ... लाभ होता है। एक षोडशवर्षीया क... (Tænia Solium) के क... थी एवं उसके उदर में तीव्र शूल ... उसको डॉक्टर हचिसन (Hutchi...) पपीता स्वरस ३ ग्रेन में शुद्धतम ... डोवर्स पाउडर सम्मिलित कर सेव... इससे कद्दूदाना टुकड़ा टुकड़ा होकर निकल आया तथा रोगिणी के ... आते रहे एवम् उसको अत्यन्त ... हुआ।

(६) स्तन्यजनक तथा ... आंतरिक रूप से उपयोग करने अथ... रूप से लगाने से यह स्तन्य... करता है। हिट० मे० मे०। पी० गर्भवती स्त्री को उपयोग कराने से ... घातक प्रभाव होता है।

जिह्वा तथा कंठरोग—रवीमर ... mmor महोदय ने जिह्वा को कई

—में इसके घोल (१० में १) का —एवं उपयोग किया। हि० मे० मे०।

कर्कशता तथा जिह्वा और कंठ की क्षतज —चाहे वह औपदंशिक हो या अन्य, —ग्लीसरीन में १० से २० ग्रेन पेपीन —बनाकर उसमें वेदना हरणार्थ किञ्चित् —सम्मिलित कर इसको मुख में लगाने से —लाभदायक प्रभाव होता है। औपदंशिक —रस मुख वा कण्ठ में मि० ई० एच०

उक्त प्रयोग के स्थान में पेपीन $\frac{1}{2}$ ग्रेन

कोन $\frac{1}{5}$ ग्रेन इसके द्वारा निर्मित टिकिया —ता की असीम प्रशंसा करते हैं। पेपीन —औपदंशीय घट्ठे तत्काल लुप्त होते हैं —कोन के प्रभाव से निगलन में वेदना का —हीं होता एवं प्रदाहित श्लैष्मिक कला को —मिलती है।

—चिकित्सक लोग जब ऐसे रोगी की परीक्षा —जाते हैं जिसमें कंठ की श्लैष्मिक कला के —ण का भय होता है तब वे उक्त टिकिया को —रूप से अपने साथ ले जाते हैं।

(८) त्वक् रोग—पुरातन कंद (Eczema), विशेषतः हस्तपादस्थ, विचर्चिका (Psoriasis), हाथ की हथेली की प्रवर्द्धित अवस्था, —या घट्टा (corn), मशक (Wart) —त्वगिन्द्रिय में उसको प्रथम जल व साबुन —प्रक्षालित कर दिन में दो बार निम्नांकित —के लगाने से लाभ होता है। जैसे—पेपीन —ग्रेन, टङ्कण (सुहागा) ९ ग्रेन तथा जल २ —, यथा विधि घोल प्रस्तुत करें।

इसके ताजे दुग्ध को दिन में दो तीन बार —पर लगाने से लाभ होता है।

(९) कर्णस्राव—मध्यकर्ण के पुरातन —स्राव में पेपीन अभी हाल ही में लाभदायक —हा गया। आधे आउंस पेपीन घोल (२%) —२ ग्रेन सोडा बाइकार्ब मिला लेने से यह और —म होता है।

(१०) ग्रैवेयी ग्रन्थि, दुग्ध ग्रन्थि और कतीव ग्रन्थि विषयक शोथों प्रभृति के लय करने के लिए पेपीन का स्थानिक उपयोग होता है।

अण्डगः andagah-सं० पुं० Wheat (Triticum sativum, *Linn.*) गोधूम, गेहूँ। वै० श०।

अण्डगजः anda gajah-सं० पुं० (Cassia Tora, *Linn.*) चँकवड़, चक्रमर्द्द क्षुप -हिं०। रा० नि० व० ४

अण्डगा धमनियाँ andagá-dhamaniyán -हिं० संज्ञा स्त्री० (ब० व०) Spermatic Arteries अण्डकोष को रक्त ले जाने वाली नलियाँ।

अण्डजः andajah-सं० पुं० } (१) अण्डे
अण्डज andaja-हिं० संज्ञा पुं० } से उत्पन्न होने वाले जीव, अण्डे से जिसकी उत्पत्ति हो, यथा—सर्प, मत्स्य, पक्षी और छिपकली प्रभृति। ये चार प्रकार के जीवों में से एक है। ओवीपेरस बीइंग Oviparous being-इं०। हिं० ई० डि०। (२) मत्स्य (A Fish)। (३) पक्षी (A bird)। भा० पू० २ भा०। (४) A snake सर्प, साँप।

अण्डजा anda-já-सं० स्त्री० } (१)
अण्डजा andajá-हिं० संज्ञा स्त्री० } गिरगिट, शरट-हिं०। केमेलियन (A chemeleon) -इं०। वि०। (२) सर्प-हिं०। सर्पेंट (A serpent)-इं०। (३) मत्स्य-हिं०। फिश (A fish)-इं०। (४) पक्षी-हिं०। बर्ड (A bird)-इं०। मे०जत्रिकं। (५) (Musk) मृगनाभि, कस्तूरिका। वा० हेमा०।

अण्डधारक रज्जुः anda-dháraka-rajjuh -सं० पुं० (Spermatic cord) मश्चालीकुल् ख़ुम् यह्, हब्ल मन्वी, हब्लुल् मनी-अ०। अण्डकोष के ऊपर के भाग को टटोलने पर उसमें एक रस्सी या डोरी जैसी चीज़ मालूम होगी। इस-डोरी को अण्डधारक रज्जु कहते हैं। यह वस्तुतः धमनी, शिरा, वाततन्तु और शुक्र प्रणाली का एक संघात है जिस

पर श्लैष्मिक कला का एक वेष्टन चढ़ा रहता है। इसीसे अण्डकोषके भीतर अंड लटका रहता है।

अण्डधारक रज्जु anda-dháraka-rajju-हिं० संज्ञा स्त्री० देखो-अण्डधारक रज्जुः।

अण्डपर्णः anda-parnah-सं० पुं० मलाण्ड क। See-malándah. अत्रि०

अण्डपेशी anda-peshí-सं० स्त्री०. कोष (Sac, cyst)। (२) (Testicle) मुष्क, अण्ड, शुक्रग्रन्थि। हैं० च०।

अण्ड प्रदाह anda pradáha-हिं० संज्ञा पुं० अंड की सूजन (Orchitis).

अण्डरसोनिया रोहितका andersonia rohituka, Roxb.-ले०(Amoora rohituka, W. & A.) रोहिना, रोहेड़ा, रोहितक, सिकराज-हिं०। देखो-रोहितक।

अण्ड-लाल anda-lála-हिं० संज्ञा पुं० अण्डे की सुफेदी, अण्डोदक। The white of the egg (Albumen).

अण्डवर्धन anda-vardhanam-सं० क्ली०
अण्डवृद्धि anda-vriddhi-हिं० संज्ञा स्त्री० (Swelling of the scrotum) एक रोग जिसमें अंडकोश या फोता फूलकर बहुत बढ़ जाता है। फोते का बढ़ना। देखो-अन्त्रवृद्धि।

अण्ड वहा नाली anda-vahánálí-हिं० संज्ञा स्त्री० (Fallopian tube) रजः कोष (डिम्ब) लाने वाली, जो मासिकधर्म के बाद अण्ड (डिम्ब) गर्भाशय को लाती है।

अण्डवेष्टः anda-veshtah-सं० पुं० (Scrotum, Tunica albuginea testes) अण्डकोष।

अण्ड श्वेतक anda-shvetaka-हिं० पुं० अल्बुमेन (Albumen)। अण्डलाल। जुलाल-अ०।

अण्ड सत्व anda satva-हिं० संज्ञा पुं०, मुष्कीन, मुष्कसत्व, मुष्क रस, शुक्रीन, शुक्रकीट सत्व,उपाण्ड सत्व। टेस्टिक्युलर एक्सट्रैक्ट (Testicular extract); टेस्टीससिक्का (Testes sicca), टेस्टिक्युलीन (Testicul-

in), आर्चीडीन (Orchidin) (Spermin), डिडीमीन (Di... ...ट्रुत क्रीन या जौहर मनी, ...स्ह, ... जौहर ख़ुस्य... ...फ़ा०।

नोट—जैसा कि उपर्युक्त नामों ... यह सम्पूर्ण औषधियाँ पुरुष ... ग्रंथियों द्वारा बनाई जाती हैं।

रासायनिक लक्षण

(Poehl) का निर्माण, विशि... विशेषकर साँड (bull) की ... निर्मित रासायनिक पदार्थ ... लॉफ्वार्ड के इमलशन का ... दो प्रतिशत का क्लोराइड घोल है। ... निक दृष्टिसे पायपेराज़ीन (Piperazin) सहधर्मी है। शुक्रीन (Spermin) ... क्लोराइड (उज्जहरिद) और फास्फेट ... भी उपयोग में आचुके हैं। पर... (Poehl) का दो प्रतिशत का ... सम्पूर्ण कार्यों के लिए सर्व श्रेष्ठ है; ... द्वारा निर्मित शुष्क ग्रंथीय पदार्थ ... ग्रेन (२॥ रत्ती) की टिकियाओं (Tabloids) ... के रूप में मुष्कीन (आर्चीडीन, ... आर्चीटीन) और उपाण्डीन (Did... ... प्रभृति नामों से उपयोग में आते ... (एक द्रव) भी प्राप्य है, जो एक ... ग्लीसरीन एक्सट्रैक्ट है और जिसे ... मिनिम (बुन्द) की मात्रा में ... त्वकस्थ अन्तःक्षेप द्वारा देते हैं।

शुक्रीन का मुख्य मुख्य प्रतिक्रि... शुक्रीन (Spermin) में ... शुक्रीय गंध नहीं होती, तथापि ... भस्म (Metallic magnesium) ... साथ मिलाने पर उससे शुक्रवत् ... होता है। मिश्रण को उत्ताप पहुँचाने ... गंध अमोनिया में परिवर्तित हो जाती है। ... (spermin) घोल में न तो ... ऑफ पोटासियम (पांशु ...) और ... ऑफ लेड (सीस भस्म) हो से ...

... सकना है। हाइड्रोब्रोमाइड और शुक्रीन से मस्तन भिन्न नहीं कर ... लिड ब्रोराइड (स्वर्ण हरिद) और ...राइड शुक्रीन के साथ तलस्थायी हो उत्ताप पहुँचाने पर शुष्क शुक्रीन में उद्भूत होता है।

...स—अण्ड मन्त्र का उपयोग नया ...न अति प्राचीन है। हाँ! निर्माण क्रम ...में ही कुछ भेद हो। वाग्भट्ट महोदय ... "अष्टांगहृदय संहिता" में सर्व प्रथम ...न इस ओर आकृष्ट करते हैं, यथा—

...द्ध पयसि भावितान् स्सकृत्तिलान्।
...सतान् गच्छेन्स्त्री शतमपूर्ववत्॥
(अ० उ० ४० अ०)

...बकरे के अण्ड को दुग्ध में पकाकर ...की काले तिलों में बार-बार भावना ...तिलों को जो मनुष्य शर्करा के साथ ...ता है उसमें शत स्त्री सम्भोग की शक्ति ... है, और वह प्रथम समागम का सा ...व करता है।

...स्य अमरीकन डाक्टर ब्राउन सीकार्ड ...(...vn Sequard) महोदय का बहुत ... यह विश्वास रहा कि वृद्ध मनुष्यों की ...के मुख्य दो कारण हैः—(१) आव- ...रिवर्तन का प्राकृतिक क्रम। (२) शुक्र ...की शक्ति का क्रमिक ह्रास। उन्होंने ...या कि यदि वृद्ध मनुष्यके रक्त में शुक्र ...। अन्तःक्षेप किया जा सके तो सम्भ- ...वह शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों को ...च रूप से प्रदर्शित होने लगेगी। उक्त ...को ध्यान में रखकर आपने सन् १८७९ ...जीवधारियों पर अनेकों प्रयोग किए। ...तः प्रयोग क्रम के अनपकारकत्व एवं ...धारियों पर होने वाले उत्तम प्रभाव ...उनके सन्देह की निवृत्ति हो गई। उस ...य हो जाने पर उन्होंने स्वयं अपने ...योग करने का निश्चय किया। अतः,

थोड़े परिमाण में जल, आण्डीय शिरा का रक्त, शुक्र, कुत्ते या गिनी पिग (guinea-pig) के अण्ड को कुचल कर निकाला हुआ ताजा रस इन चार वस्तुओं को एकत्रित कर आपने इसका त्वगन्तः अन्तः क्षेप लिया। अधिक से अधिक प्रभाव प्राप्त करने के अभिप्राय से आपने अन्तः क्षेप भर में अत्यल्प जल का उपयोग किया। प्रागुक्त अन्तिम के तीनों पदार्थों में आपने उनके द्रव्यमान से तिगुने या चौगुने से अधिक परिलुत जल का उपयोग नहीं किया; तदनन्तर उनको कुचल कर फिल्टर पेपर (पोतनपत्र) द्वारा छान लिया। प्रत्येक अन्तःक्षेप में उन्होंने १ घन शतांशमीटर छाने हुए द्रव का उपयोग किया। पश्चात् फिल्टर द्वारा छाने हुए द्रव का १५ मई से ४ जून तक आपने १० अन्तःक्षेप लिए; जिनमें से २ बाहु में और शेष समग्र अधो शाखा में।

परिणाम निम्न प्रकार हुए—

प्रथम त्वगन्तः अन्तःक्षेप तथा दो और क्रमानुगत अन्तःक्षेपों के पश्चात् आप में एक स्वाभाविक परिवर्तन उपस्थित हुआ और उनमें वह सम्पूर्ण शक्ति जो बहुत वर्षों पहिले थी आगई। विस्तीर्ण प्रयोगशाला विषयक कार्य कठिनता से उन्हें श्रान्त कर सकते थे। वे कई घण्टे तक खड़े होकर प्रयोग कर सकते थे और उन्हें बैठने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती थी।

संक्षेप यह कि उन्होंने इतनी उन्नति की कि वे इतना अधिक लिखने तथा कार्य करने के योग्य हो गए जो आज २० वर्ष से भी अधिक काल तक में वे कभी न हुए थे। उन्हें मालूम हुआ कि प्रथम अन्तःक्षेप से १० दिवस पूर्व मूत्र-धार की जो औसत लम्बाई थी वह पश्चात् के २० दिवस की मूत्र-धार की लम्बाई से कम से कम ¼ न्यून थी। अन्य क्रियाओं की अपेक्षा मल विसर्जन क्रिया में उन्होंने अत्यधिक उन्नति की।

इन्द्रियव्यापारिक क्रिया—उपर्युक्त प्रयोगों से यह बात सिद्ध होती है कि आण्डीय द्रव के अन्तःक्षेप का हृदय एवं रक्त परिभ्रमण पर उत्तेजक प्रभाव होता है, सर्व शरीर की पुष्टि

करता, वातकेन्द्रीय क्रिया शक्ति पर आधारीभूत सम्पूर्ण कार्यों का विशेष रूप से सुधार करना, बस्ति पर सुषुम्णाकाण्ड की शक्ति की विशेष वृद्धि करता और आन्त्र पर शैथिल्यजनक प्रभाव उत्पन्न करता है।

औषधीय उपयोग—अण्ड द्वारा स्रावित (secreted) शुक्र में ऐसे पदार्थ होते हैं जो शोषण क्रिया द्वारा रक्त में प्रवेशित होकर वातसंस्थान तथा अन्य भागों को शक्ति प्रदान करने में अपना सब से आवश्यक उपयोग रखते हैं। इस पदार्थ (या पदार्थों) में महान गतिजनक शक्ति है जिसके लिए रक्त मुष्क का ऋणी है। यह बात इस घटने से प्रमाणित होती है कि सार्वांगिक निर्बलता तथा मानसिक या शारीरिक स्फूर्ति के अभाव ही नपुन्सक के स्वभाव कहलाते हैं। और इस बात से भी कि अप्राकृतिक वा हस्तमैथुन द्वारा मनुष्य के शरीर वा मन (विशेष कर शुक्र ग्रन्थियों के अपनी पूर्ण शक्ति प्राप्ति करने से पूर्व या अधिक अवस्था के कारण जब शक्ति का ह्रास हो रहा हो उस समय) कितने विकृत हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह भली भाँति ज्ञात है कि शुक्रक्षय चाहे वह किसी कारणसे उत्पन्न हुआ हो शारीरिक या मानसिक निर्बलता उत्पन्न करता है। (डॉ० ब्राउन सीक्वार्ड)

अण्ड सत्व के उपर्युक्त इन्द्रियव्यापारिक कार्य एवं गुण से यह सिद्ध है कि यह रोगीकी सामान्य दशा को स्पष्ट रूपसे सुधारता है। इसके सिवा वात संस्थान पर इसका उत्तेजक और बल्य प्रभाव अन्य सब प्रभावों की अपेक्षा अधिकतर होता है। यह विबंध को दूर करता तथा मूत्रविरेचक है। इन अन्तःक्षेपों से सिवा स्थानिक किञ्चित् सूक्ष्म अल्प समयक वेदना के कोई और अप्रिय सहायक सार्वांगिक या स्थानिक दृश्य उपस्थित नहीं होता। इनसे स्थानिक प्रदाह या पूय उत्पन्न नहीं होता। पेपर फिल्टर के स्थान में पास्चर्स फिल्टर से उक्त तरल को छानकर व्यवहार में लाने से यह वेदानाएँ एवं अन्य कुप्रभाव भी किसी भाँति कम प्रतीत होते हैं। (डॉ० पॉटोड्स्की)

पॉट्ल्म स्टेरिलाइज़्ड मंकू[illegible] निम (बुँद) की मात्रा में [illegible] बैल्य, उन्माद (पागलपन), [illegible] चाल का लड़खड़ाना (Ataxy) (Psoriasis), बहुमूत्र [illegible] रोगों में अन्तः क्षेप करते हैं। [illegible] के हिसाब से १२ या १४ दिन [illegible] मल में प्रायुक्त सम्पूर्ण रोगों के [illegible] वर्णन प्रकाशित हुए हैं और अन्य हार्दिक वात विकारों (Ca[illegible] roses) की मूल्यवान [illegible] इसका शरीर परिवर्तन क्रम (Metabolism) पर प्रभा[illegible]

इन्हें कामोद्दीपक रूप में [illegible] तथा वातनैर्बल्य, लड़खड़ानी [illegible] औफ्थैल्मिक गाइटर में वर्तते हैं।

अण्डसित anda-sita-हिं० वि० ([illegible] aneous) अंडश्वेतकीय, [illegible]

अण्डसित पदार्थ anda-sita [illegible] -हिं० संज्ञा पुं० (Albu[illegible] matter) अण्डश्वेतकीय व[illegible]

अण्डसू andasú-सं० त्रि०, हिं० [illegible] parous) अण्डज।

अण्ड स्कन्दः andaskandah-[illegible] के अण्ड में स्कन्द सदृश एक [illegible] जयदत्त ५० अ०।

अण्डहस्ती anda-hasti-सं० पुं० चक्रमर्द क्षुप (Cassia Tora) रा० नि० व० ५।

अण्डहानिकर andahánikar [illegible] मुज़िर्रात उन्स्.यैन-अ०। [illegible] पहुँचाने वाले। संज्ञा पुं० वे [illegible] हानि पहुँचाएँ। वे निम्न हैं—

इक्लीलुल्-मलिक, बोज़ीदान, (खीरा के बीज), अतमी, [illegible] (मेथी) और फ़र्फ़्यून।

ंá-हिं० संज्ञा पुं० पक्षी आदि के उत्पन्न
ं स्थान। एग (Egg)-इं०। गुण-धर्म
ं लिए देखो-कुक्कुट।

ंम् andákarshanam-सं० क्ली०
itration) बधिया करना।

andákára-हिं० संज्ञा पुं०
andákriti-हिं० संज्ञा स्त्री० } वि०
] (Egg-shaped,oval,Ovoid,
ltical) ऐसा वृत्त जिसका एक अक्ष
ी अपेक्षा लम्बा हो, अण्डा की शकल
डा की तरह। उस परिधि के आकार
ं अंडे की लम्बाई के चारों ओर खींचने
। लम्बाई लिए हुए गोल, अण्डे के
का। बैज़ावी।

ंखात andákára-khát́a-हिं०संज्ञा
(Fossa ovalis) अण्डे की शकल
ा। हुफ़रह् बैज़ावियह्-अ०।

andákriti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०]
ंका आकार, अण्डे की शकल।
डे के आकार का। अण्डरूप। अण्डाकार।

andálí-सं० स्त्री० भुईं आमला,
लकी (Phyllanthus niruri,
).

andáluh-सं० पुं० (A fish)
मछली। श० च०।

ndika-सं०स्त्री० चार जौ के बराबर का
प विशेष, यवचतुष्टय परिमाण। च०।

ndini-सं० स्त्री० सान्निपातिक योनि
रोग। लक्षण-स्थूल मेढ़ू वाले पुरुष से
ी हुई तरुणी (छोटी अवस्था वाली स्त्री)
नि अण्डिनी अर्थात् अंडाकृति (कहीं
लिनी पाठ आया है) हो जाती है।
न्धि०। स्त्रियों का एक योनि रोग जिसमें
ंस बढ़कर बाहर निकल आता है। इसे
न्द रोग भी कहते हैं।

di-हिं०संज्ञा स्त्री० (१) रेंडी,एरण्ड बीज
। Ricinus communis, Linn.

(Seeds of Castor oil plant)। (२) गंधमार्जारी।

अण्डीका तेल andí-ká-tela-हिं० संज्ञा पुं० एरंडतैल। (Oleum ricini) देखो-एरण्डः।

अण्डी माल्लेय्य andí-mállelyya-मल० सन्ध्या राग-सं०। गुलशब्बो, गुलचेरी-हिं०। रजनी गंधा-बं०। गुलमखो-कों०, हिं०। पॉलिएन्थस ट्यूबरोसा (Polyanthus tuberosa, *Linn.*)-ले०। इं० मे० मे०।

अण्डीरः andírah-सं० पुं० पुरुष, युवा मनुष्य (A full-grown man) मे० रत्रिकं।

अण्डीरा इनर्मिस andira inermis-ले० जिओफ्रोया इनर्मिस (Geoffroya Inermis)। कैबेज ट्री ऑफ़ ट्रॉपिकल अफ़रीका (Cabbage tree of Tropical Africa)-इं०।

वर्ग=शिम्ब्यः, उपवर्ग=पैपिलिओनेसीई

N. O. Leguminosae. Sub-Order Papilionaceae

उत्पत्ति स्थान—वेस्ट इंडीज़ (विशेषकर जमैइका)।

प्रयोगांश—त्वक्।

औषध-निर्माण—(१)-चूर्ण की हुई त्वचा २०–३० ग्रेन (१०–१२ रत्ती) कृमिघ्न रूप से, ३०–४० ग्रेन (१२–२० रत्ती) विरेचक रूप से। (२) टिंक्चर (३० से ६० मिनिम (बुँद)। (३) तरल सत्व १० से ४० मिनिम (बुँद)। (४) घन सत्व ३ ग्रेन (१॥ रत्ती)।

प्रभाव तथा उपयोग—कैबेज वृक्ष त्वक् (Cabbage tree bark) नामक त्वचा में जिसका व्यापारिक नाम कृमित्वक् (Worm bark) भी है, कृमिघ्न, ज्वरघ्न और मेदनाशक गुण है और निम्बुकाम्ल (Citric Acid). के साथ यह स्थौल्य रोग में अधिक उपयोग की जाती है। अधिक मात्रा में यह वामक, विरेचक और मादक है तथा इसकी इसमें भी अधिक मात्रा विषैला है। (फॉ० वी० एसo)।

अएडेल aṇḍela } -हिं० वि० [अण्डा]
अएडैल aṇḍaila }
जिसके पेटमें अंडे हों, अण्डा युक्त, अण्डे वाली। संज्ञा स्त्रो० वह मछली जिसके पेटमें अंडे हों।

अएडोदकः aṇḍodakah-सं० पु० अंडलाल, अंड श्वेतक। the white of an egg (Albumen).

अएडोत्थापिका प्रतिक्रिया aṇḍotthápiká-pratikriyá-हिं० संज्ञा स्त्रो० (Cremastric reflex) जाँघ के अंतरीय भाग को खुजाने से यह उत्पन्न की जाती है। इसमें अंड ऊपर को उठता है।

अएडोली aṇḍolí-हिं० संज्ञा स्त्रो० रेंडी, एरण्ड बीज। Ricinus communis, *Linn.* (Seeds of-)। देखो—एरण्डः।

अएडोआ aṇḍouá-हिं० संज्ञा पु० अरण्ड, एरण्ड। (Ricinus communis, *Linn.*).

अएणाशुप्पू aṇṇá shuppú-ता० अनामफल -हिं०। बादियाने खताई-फा०, अ०। (Illicium anisatum, *Linn.*) स० फा० इं०।

अएवस्थि aṇvasthi सं० स्त्री० मंधि बन्ध कादिमें स्थित एक सूक्ष्मास्थि विशेष। सु०शा०।

अएवी aṇví-सं० स्त्री० अङ्गुलि, अङ्गुली, अँगुरी (A Finger.)

अतकत atakata दारचीनी, दालचीनी। Cinnamomum Zeylanicum, *Nees.* (Bark of—cinnamon).

अतकुमह् atakumah-अ० चिर्चिटा, अपामार्ग-हिं०। (Achyranthes aspera, *Linn.*) स० फा० इं०।

अतगोकुडो atagokudo-कों० काला इन्द्रजौ (Nerium Tomentosum, *Roxb.*) इ० मे० मे०।

अतची atachi-हिं० आल-। आच, आछू -पं०। (Morinda Tinctoria, *Roxb.*)-ले०। फा० इं० ३ भा०। देखो—आच्छुक।

अतट ataṭa-हिं० संज्ञा पु० [सं० अतटः] (A precipice, Ad... पर्वत का शिखर। चोटी। भृ...

अतड़ी ataḍi-हिं० स्त्री० अत...

अतण्डक्स ataṇḍaks } -अ०
अतण्डय ataṇḍya } (G... rrida, *Linn.*)

अतद्मिम्स atadimm... सुमेर-हिं०। (Gmelin... *Linn.*)-ले०।

अतनामीस atanámís-... -हिं०। (Matrica... milla, Linn.)-ले०। फु...

अतनु atanu-हिं० वि० [सं... रहित। बिना देह का। (१) संज्ञा पु० अनंग। कामदेव।

अतन्द्र,-द्रित,-न,-ल atandra,-d... -सं० वि० चैतन्य, जागृत (vigil... ant).

अतन्द्रा atandrá-सं० स्त्रो० -हिं०। coffea Arab... -ले०। अबि०।

अतन्द्रिक atandrika-हिं० वि... (१) आलस्य रहित। निरालस्... (२) व्याकुल। विकल। बेचैन...

अतन्द्रित atandrita-हिं० वि... आलस्य रहित। निद्रा रहि... चञ्चल। चपल।

अतन्द्रियः atandriyah-हिं०... हर मत, कहवा का मत-हिं०। caffeine-ले०। देखो... मत। स० अ० डा० १ भा०।

अतन्द्री atandri-सं० स्त्री०... (coffea Arabica, Lin...

अतन्शुमत्फला atanshumat... स्त्रो० केला, कदली (Musa s... Linn.)

अतप्त atapta-हिं० वि० [सं... हो। ठंडा। (२) जो तपा न...

अतफ़ ataf-अ० मिश्क, दारचीनी... Zeylanica, *Linn.*)

ãatafal—(१) बेदमुश्क-फा० । lix caprea, Linn.)-ले० । (२) ’ε—अ० । लु० क० ।

atafála-पुं० (अ० ब०), तिफ्ल (ए०) Children बच्चे-हिं० ।

.atab-अ० अत्यन्त तथा नातिकटत्व-त्व-ध्यान । म० ज० ।

itab-अ० (Cotton) रुई, तूल । लु०

ãatabah-अ० (१) चौखट, दह-, चौखट । (२) अर्शोमुखपाक । दोनों स्थानों में स्थान पर अवपीड़न करते हैं । म०

itamal-अन्तमूल (Tylophora asthmatica, W. & A.) इं० हैं० गा० ।

ãatamúsa-गोरखुर (पहाड़ी या ी गया) लु० क० ।

a-i-tar-हिं० संज्ञा पुं० [अ० इत्र] म, गुलसार, भभके द्वारा खिंचा हुआ फूलों सुगंधि का सार । रोगन तैल (Essential) । देखो-इत्र ।

atara-हिं० संज्ञा पुं० [अ० इत्र] ential oil गुलसार । भभके द्वारा खिंचा फूलों की सुगन्धि का सार । निर्यास । -(इत्र) इत्र ।

atarádána हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा० दान] सोने चाँदी या गिलट के फूलदान आकार का एक पात्र जिसमें इतरसे तर किया रुई का फाहा रक्खा जाता है ।

atarala हिं० वि० [सं०] गाढ़ा । तरल या पतला न हो ।

स ataránúsa-अ० एक मान है जो तो० ४ मा० के बराबर होता है ।

ataráira-अ० ज़रिश्क (Berberis siatica, D. C., Berries of-)

दारुः atarunadáruh-
दारः (कः) atarunadárah,-kah

पुं० विधारा-हिं० । वृद्धदारक "अतरुणा दारुनामा ।" आ०म० १ सं० सन्धिक ज्व०

लि० । (Gmelina Asiatica, Linn.)

अतरुना atarunna-बम्ब० माम तालमखाना । See-Tálamakhána । मेमो० ।

अतर्यह् ataryah-अ० (१ रिश्ता, नाता, संबन्ध । म० ज० । (२) मैदा की सेवैयान, प्रसिद्ध भोजन है । लु० क० । म० ज० ।

अतलब ãatalaba } पत्थरकड़ी, पत्थरफोड़ी ।
अतलुब ãataluba } लु० क० ।

अतलसनी काली atalasani-káli-गु०
अतीस भेद (Aconitum heterophyllum, Wall.)।

अतलस्पर्श atalasparsha }
अतलस्पर्शी atalasparshi } सं० पुं०
अतलस्पृक् atala-sprik } जल, पानी ।
अतलस्पृश् atala-sprish } Water
(Aqua) हैं० च० ४ का ।

हिं० वि० [सं०] जिसके तल को छूने वाला । अत्यन्त गहिरा, अथाह (Bottomless, very deep, unfathomable).

अतली atali-गु० हरिताल, हरताल (Yellow orpiment..)

अतवस् atavas-गु० अतीस (Aconitum heterophyllum, Wall.) इं० मे० मे० ।

अतवान atavána-अ० एक घास है । (A sort of grass.)

अतविष atavisha-मह० अतीस (Aconitum heterophyllum, Wall.) इं० मे० प्लां० ।

अतवि(ब)सनी काली atavi(ba)shani-kali-गु० अतीस । इं० मे०प्लां० । फा० इं० ।

अतशान ãatashána अ० मरसुराई (एक प्रकार का काँटा है) । लु० क० ।

अतश् ãatash-अ० तृष्णा, प्यास लगना, प्यासा होना । थर्स्ट Thirst-इं० । म० ज० ।

अतश् काज़िब् ãatash-kázib-अ० मिथ्या तृष्णा, झूठी प्यास, वह प्यास जिसमें जितना जल पान किया जाय, उसी भाँति तृष्णा की वृद्धि होती है । किन्तु, उसको दमन कर यदि संतोष रक्खाजाय तो वह बुझ जाती है तथा

अण्डेल andela } -हिं० वि० [अण्डा]
अण्डैल andaila }
जिसके पेटमें अंडे हों, अण्डा युक्त, अण्डे वाली। संज्ञा स्त्री० वह मछली जिसके पेटमें अंडे हों।

अण्डोदकः andodakah-सं० पुं० अंडलाल, अंड श्वेतक। the white of an egg (Albumen).

अण्डोत्थापिका प्रतिक्रिया andotthápiká-pratikriyá-हिं० संज्ञा स्त्री० (Cremastric reflex) जाँघ के अंतरीय भाग को खुजाने से यह उत्पन्न की जाती है। इसमें अंड ऊपर को उठता है।

अण्डोली andolí-हिं० संज्ञा स्त्री० रेंडी, एरण्ड बीज। Ricinus communis, Linn. (Seeds of-)। देखो—एरण्डः।

अण्डौआ andouá-हिं० संज्ञा पुं० अरण्ड, एरण्ड। (Ricinus communis, Linn.).

अण्णाशुप्पू anná shuppú-ता० अनामफल -हिं०। बादियाने खताई-फा०, अ०। (Illicium anisatum, Linn.) स० फा० इं०।

अण्वस्थि anvasthi सं० स्त्री० मणि बन्ध आदिमें स्थित एक सूक्ष्मास्थि विशेष। सु०शा०।

अण्वी anví-सं० स्त्री० अङ्गुलि, अङ्गुली, अँगुरी (A Finger.)

अतकत atakata दारचीनी, दालचीनी। Cinnamomum Zeylanicum, Nees. (-Bark of—cinnamon).

अतकुमह atakumah-अ० चिचिंटा, अपामार्ग-हिं०। (Achyranthes aspera, Linn.) स० फा० इं०।

अतगोकुडो atagokudo-कों० काला इन्द्रजौ (Nerium Tomentosum, Roxb.) इं० मे० मे०।

अतचीं atachí-हिं० आल-हिं०, आच, आछ -बं०। (Morinda Tinctoria, Roxb.)-ले०। फा० इं० २ भा०। देखो—आच्छुक।

अतट ataṭa-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अतटः] (A precipice, A steep crag) पर्वत का शिखर। चोटी। टीला।

अतड़ी atadí-हिं०स्त्री० अन्त्र (Intestine)

अतण्डक्स atandaka } -ता० अरद, एत
अतण्ड्य atandya } (Cadaba Farinosa) rida, Linn.)

अतदिम्मत्त atadimmatta-मिं० सुमेर-हिं०। (Gmelina Arborea, Linn.)-ले०।

अतनामीस atanámis-यु० बाबूना, -हिं०। (Matricaria Chamomilla, Linn.)-ले०। लु० क०।

अतनु atanu-हिं० वि० [सं०] (१) रहित। बिना देह का। (२) मोटा। संज्ञा पुं० अनंग। कामदेव।

अतन्द्र,-द्रिन,-न,-ल atandra,-drita-n, -सं० वि० चैतन्य, जाग्रत (careful, vigilant).

अतन्द्रा atandrá—सं० स्त्री० काफी, -हिं०। coffea Arabica, Linn. -ले०। अत्रि०।

अतन्द्रिक atandrika-हिं० वि० [सं०] (१) आलस्य रहित। निरालस्य। चुस्त। (२) व्याकुल। विकल। बेचैन।

अतन्द्रित atandrita-हिं० वि० [सं०] आलस्य रहित। निद्रा रहित। चञ्चल। चपल।

अतन्द्रियः atandriyah-हिं० सं० पुं० हर मत, कहवा का सत-हिं०। caffeine-ले०। देखो कहवा, सत। मो० श० डा० १ भा०।

अतन्द्री atándri-सं० स्त्री० काफी, (coffea Arabica, Linn.)

अतन्शुमत्फला atanshumat-phalá स्त्री० केला,कदली (Musa sapientum, Linn.)

अतप्त atapta-हिं० वि० [सं०] जो हो। ठंडा। (२) जो पका न हो।

अतफ़ ãataf-अ० चित्रक,चीता (Plumbago Zeylanica, Linn.)

अतफ़ल āatafal—(१) बेदमुश्क-फ़ा० । (calix caprea, Linn.)-लैं० । (२) मझमर—अ० । लु० क० ।

अतफ़ाल atafála-फ़ा० (ब० व०), तिफ़्ल (ए० व०) Children बच्चे-हिं० ।

अतब āatab-अ० मध्यमा तथा तर्जिनकरस्थ-अंगुष्ठ-बात । म० ज० ।

अतब āatab-अ० (Cotton) रुई, तूल । लु० क० ।

अतबह् āatabah-अ० (१) आस्तानः, दह-लीज़, चौखट । (२) पर्वोभुक्तबात । दोनों बातों को फ़ारसी में अतदान या अनयैन कहते हैं । म० ज० ।

अतमल atamal-अन्तमल (Tylophora asthmatica, W. & A)ई० हैं० मा० ।

अतमूस āatamúsa-गोरखुर (पहाड़ी या जहली गधा) लु० क० ।

अ(इ)तर a-i-tar-हिं० संज्ञा पुं० [अ० इत्र] निर्यास, पुष्पसार, भभके द्वारा खिंचा हुआ फूलों की सुगंधि का सार । स्थिर तैल (Essential oil) । देखो-इत्र ।

अतर atara-हिं० संज्ञा पुं० [अ० इत्र] Essential oil पुष्पसार । भभके द्वारा खिंचा हुआ फूलों की सुगन्धि का सार । निर्यास । देखो-(इतर) इत्र ।

अतरदान ataradána हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा० इत्रदान] सोने चाँदी या गिलट के फूलदान के आकार का एक पात्र जिसमें इतरसे तर किया हुआ रुई का फाहा रक्खा जाता है ।

अतरल atarala हिं० वि० [सं०] गाढ़ा । जो तरल या पतला न हो ।

अतरानूस ataránúsa-अ० एक मान है जो ४ तो० ४ मा० के बराबर होता है ।

अतरार atarára-अ० ज़रिश्क (Berberis Asiatica, *D. C.*, Berries of-)

अतरुणदारुः atarunadáruh-
अतरुणदारः (कः) atarunadárah,-kah }
सं० पुं० विधारा-हिं० । वृद्धदारक "अतरुण दारुरत्नापुरः ।" भा०म० १ खं० सन्निक ज्व० चि० । (Gmelina Asiatica, Linn.)

अतरुन ataruna-यस्त्र० लाल तालमखाना । See-Tálamakhána । मेमो० ।

अतर्यह् ataryah-अ० (१) रिश्ता, नाता, संबन्ध । म० ज० । (२) मैदा की सांय्यान, प्रसिद्ध भोजन है । लु० क० । म० ज० ।

अतलब āatalaba } यदबख़्तों, यदक़स्मीं ।
अतलूब āatalúba } लु० क० ।

अतलसनी काली atalasaní-káli-गु० अतीस भेद (Aconitum heterophyllum, Wall.) ।

अतलस्पर्श atalasparsha } - सं० त्रि०
अतलस्पर्शी atalasparshí } जल, पानी ।
अतलस्पृक् atala-sprik } Water
अतलस्पृश् atala-sprish } (Aqua) हैं० च० ४ का ।

हिं० वि० [सं०] अतल को छूने वाला । अत्यन्त गहिरा, अथाह (Bottomless, very deep, unfathomable).

अतली atali-गु० हरिताल, हरताल (Yellow orpiment..)

अतवस् atavas-गु० अतीस (Aconitum heterophyllum, Wall.) ई० मे० मे० ।

अतवान atavána-अ० एक घास है । (A sort of grass.)

अतविष atavisha-मह० अतीस (Aconitum heterophyllum, Wall.) ई० मे० प्लां० ।

अतवि(ब)षनी कली atavi(ba)shaní-kali-गु० अतीस । ई० मे०प्लां० । फा० ई० ।

अतशान āatashána अ० मश्तुरोई (एक प्रकार का काँटा है) । लु० क० ।

अतश् āatash-अ० तृष्णा, प्यास लगना, प्यासा होना । धर्ष Thirst-ई० । म० ज० ।

अतश् काज़िब् āatash-kázib-अ० मिथ्या तृष्णा, झूठी प्यास, वह प्यास जिसमें जितना जल पान किया जाय, उसी भाँति तृष्णा की वृद्धि होती है । किन्तु, उसको दमन कर यदि संतोष रक्खाजाय तो वह बुझ जाती है तथा

मनुष्य शान्ति लाभ करता है। म०अ०।

अतश् मुफ़्रित् aatash-mufrit—} अ०
शिद्दतुल् अतश् shiddatul-aatash—}
तृष्णाधिक्य बहुत प्यास लगना, घड़ी घड़ी प्यास लगना। पालीडिप्सिया Polydipsia–इं०। म० अ०।

अतल atala–हिं० वि० [सं०] (Bottomless) निस्तल, तल रहित, चिकनी जगह पर न ठहरने वाला अर्थात् कट लुढ़क जाने वाला।

अतसरूना atasarúna–यू० सुमाक़ Rhus-coriaria (Dry seed of Sumach or sumac).

अतसः atasah–सं० पुं० (१) (Wind, air) वायु, हवा। (२) A garment made of the fibre of flax अतसी वस्त्र, अतसी के रेशे का बना हुआ कपड़ा।

अतसि-नूने atasi-núne—तै० Linum Usitatissimum, Linn. (oil of-Linseed-Oil.) इ० फा० इं०।

अतसी átasí–सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० एक पौधा और उसका फल या बीज। लाइनम् युसिटेटिस्सिमम् Linum Usitatissimum, *Linn.* (Seeds of), लाइनम् (Linum) -लें०। कॉमन फ्लैक्स (Common Flax), या फ्लैक्स (Flax) लिनसीड (Linseed)-इं०। लिन कल्टिव्ह (Lin-cultive), लिन् युस्वेल (Linusvel) -फ्रां०। जेमीनर लीन ऑर फ्लैक्स (Gemeiner Lein or Flachs)-जर०। अलसी के बीज-इं०। तीसी, अलसी-हिं०। संस्कृत-पर्याय—मसृणा, उमा, क्षौमी, रुद्रपत्नी, सुवर्चला, (र०); पिच्छिला, देवी, मदगन्धा, मत्तोत्कटा, क्षुमा, हैमवती, सुनीला, नील-पुष्पिका और पार्वती। तैलफला। पूर्वाचार्य कृत वर्णन–"अतसी मशिना इति लोके प्रसिद्धा" डल्हण (सु० टी० सु० ३६ अ०)। "अतसी तिसीति विख्याता" चक्रपाणि-(सु० टी० सू० ३६ अ०)। तीसी, मोसिना-बं०। कत्तान, बज्रुल् कत्ता (ता) न-अ०। कतॉ, तुख़्मे कताँ, बज़्रे कताँ, तुख़्मे ज़ग़ीर, बज़्रक-फ़ा०। अलिवि वि-ना०। अतसी, मदन गिड्डलु, नूव्वुलु-तै०। चेरु, चाणाक्किन्ते-वित्त-मल०। अगसी-कना०। अलसी, टीसी, उवम मह०, पं०, गु०। पेसु-उड़ि०।

अतसीतैलम्

ऑलियम् लाइनाई (Oleum Lini)-लें०। लिन्सीड आइल (Linseed oil)-इं०। अलसी का तैल, तीसी का तेल हिं०। अलसी या तेल-द०। मोसिनार तैल, तीसी तैल-बं०। दोहनुल् कत्तान, दोहनुल् कतॉ, तैल कतॉ-अ०। रोग़ने ज़ग़ीर, रोग़ने कताँ-फ़ा०

अलशी-यरुशी-कना०।

नोट—यह एक गाढ़े पीले रंग का तैल जो अतसी के बीजों से दबाकर निकाला जाता है। इसका आपेक्षिक गुरुत्व ·६३ से ·९३ होता है। वायु में खुला रहने पर यह शुष्क हो जाता है।

अतसी वर्ग

(*N. O. Linaceæ or lineæ*)

उत्पत्ति स्थान—इसका मूल निवास मिश्र देश है; परन्तु अब समग्र भारतवर्ष विशेषतः बंग देश, बिहार व ओड़ीसा एवं संयुक्त प्रान्त में तथा रूस, हॉलैंड और ब्रिटेन में इसकी खेती की जाती है।

वानस्पतिक वर्णन—अतसी एक फसली कांत पौधा है। यह पौधा प्रायः दो हाथ ऊँचा होता है। इसमें डालियाँ बहुत कम होती हैं, केवल दो या तीन लम्बी कोमल और सीधी डालियाँ छोटी छोटी पत्तियोंसे गुथी हुई निकलती हैं। पत्र विषमवर्ती और सूक्ष्म तथा लम्ब होते हैं। इसमें नीले और बहुत सुन्दर फूल निकलते हैं जिनके झड़ने पर छोटी घुंडियाँ बँधती हैं (इन्हीं घुंडियों में बीज रहते हैं।) ये घुंडियाँ गोलाकार होती और परदों द्वारा पाँच कोषों में विभक्त होती हैं। प्रत्येक कोष में

बीज होते हैं। बीज चिपटे, प्रलंबमान, अंडाकार होते हैं जिनका एक सिरा न्यूनकोणीय और किंचित् वक्र एवं अवकुंठित नोक युक्त होता है। इनका वर्ण बाहर से श्यामाभायुक्त धूसर चमकदार एवं सचिक्कण होता है किन्तु भीतर से गूदा का वर्ण पीताभायुक्त श्वेत होता है। नोक के ठीकनीचे एक सूक्ष्म छिद्र (Hilum) होता है। बीज बहिर्त्वक् के भीतर अल्ब्युमीन की एकपतली तह होती है जिसके भीतर बड़े, युग्म बैदल होते हैं। और उनके नोकीचे सिरेपर गर्भांकुर होता है। विभिन्न देशों के बीज आकार में ⅙–⅓ इं० लम्बे होतेहैं। (उष्ण प्रदेशोंमें होने वाले अपेक्षाकृत बड़े होते हैं) यह गंधरहित तैलमय लुआबी स्वाद युक्त होता है। जल में भिगोने से बीज एक रतले, फिसलनदार वर्ण रहित श्लैष्मिकावरण से आवृत्त हो जाते हैं। यह शीघ्र न्युट्रल (उदासीन) जैसी रूप में घुल जाते हैं और बीज किञ्चित् फूल जाते हैं और उनका पॉलिश जाता रहता है।

नोट—(१) कलकत्ता आदि स्थानों में धूसर, श्वेत और रक्त आदि तीन प्रकार की अलसी पाई जाती है। इनके अतिरिक्त एक प्रकार की और अलसी होती है, जिसको लेटिन भाषा में लाइनम् कैथार्टिकम् (Linum Catharticum) अर्थात् विरेचक अतसी कहते हैं। यह युरूप में होती है।

(२) किसी किसी ग्रन्थ में अतीस भूल से तीसी के लिए प्रयोग किया गया है। कभी कभी अतसी, अतिविष, अलसी, तिसी, अतसी या तीसी इत्यादि उपर्युक्त संज्ञाएँ अतिविष, अगरि, अगति प्रभृति इत्यादि संज्ञाओं के साथ मिलाकर भ्रमकारक बना दी जाती हैं जो वस्तुतः अग-स्तिया के पर्याय हैं।

रासायनिक संगठन—बीज की गींगीमें स्थिर तैल ३० से ३५ प्रतिशत (यह शोषिकात्म है) होता है। बीज त्वक् में म्युसिलेज (लुआब) १५ प्रतिशतः, प्रोटीड २५ प्रतिशत, एमिग्डलीन, राल, मोम, शर्करा तथा भस्म ३ से ५ प्रतिशत और भस्म में फॉस्फेट्स, सल्फेट्स और क्लोराइड्स ऑफ पोटासियम्, कैल्शियम् और मग्नेसियम् (पांशु नैलि चूर्णनैलिद, और मग्न नैलिद) आदि पदार्थ होते हैं। (मेटिरिया मेडिका ऑफ इंडिया आर० एन० खोरी, खंड २, पृ० १२०)

बीज में एक स्थिर तैल होता है जिसमें ३० से ४० प्रतिशत लाइनोलिक, एसिड (Linolic Acid) तथा उपरोल्लिखित पदार्थों के साथ मिला हुआ ग्लीसरील (Glyceryl) होता है। तैल उबलते हुए जल में विलेय होता है।

प्रयोगांश—अतसी बीज, तैल, पत्र और पुष्प एवं तन्तु।

औषध-निर्माण—(बीज) क्वाथ तथा शीत कषाय Infusion (३० में १), पाक या मोदक, पुलटिस, धूम।

(तैल)—इनहलेशन, लिनिमेंट और साबुन (मृदु साबुन)।

मात्रा—शीत कषाय (Infusion) २ से ४ फ्लुइड आउंस।

युरूपीय प्रतिनिधि द्रव्य—भारतवर्ष में होने वाली अतसी सर्वथा युरूपीय अतसी के समान होती है। अतः इनमें से प्रत्येक एक दूसरे की उत्तम प्रतिनिधि हैं।

इतिहास—आयुर्वेद में अतसी का औषधीय उपयोग आज का नहीं, प्रत्युत अति प्राचीन है जैसा कि आगे के वर्णनों से ज्ञात होगा। चरक, सुश्रुत आदि प्राचीनतम ग्रंथों में इसके उपयोग का पर्याप्त वर्णन आया है। तिसपर भी डि० डिमक महोदय लिखते हैं—

"Linseed, called in sanskrit Atasi, appears to have been but little used as a medicine by the Hindus." अर्थात् हिन्दू लोग अतसी का बहुत कम व्यवहार करते थे। यह बात कहां तक सत्य है—इसका निर्णय स्वयं पाठकगण ही कर सकते हैं।

इस्लामी चिकित्सकों ने इस ओर काफी ध्यान दिया है।

फल्कोअर तथा हेनवरी अपने फार्माकोपिया (पृ० ८१)में पाश्चात्य अतसी क्षुप के इतिहास का सारोल्लेख करते हैं और २३ वीं शताब्दि ख्री० पू० (मसीहसेपूर्व) में इसके उपयोगका पता देते हैं। दीसकुरीदूस और प्लाइनीने लिनम् नाम से इसका वर्णन किया है। गैलेस्की (१०६०) ने चित्रकारों के उदरशूल (Painter's colic) तथा अन्य आन्त्रीय आक्षेप विकारों में इसके तेल के उपयोग की बड़ी प्रशंसा की है।

अतसी के प्रभाव तथा प्रयोग

आयुर्वेद—

अतसी मधुर, बलकारक, कफवातवर्द्धक, कुछ कुछ पित्त को नाश करने वाली और कुष्ठ तथा वात को जीतने वाली है। रा० नि० व० १६। धन्व० नि०।

अतसी मधुर, तिक्त, स्निग्ध तथा भारी और पाक में कटु है, उष्ण, दृष्टि को हानिकर एवं शुक्र, वात, कफ तथा पित्त की नाशक है। धन्व० नि०।

अतसी दृष्टि के लिए हानिकारक, शुक्र को नष्ट करने वाली, स्निग्ध तथा भारी और वातरक्त को जीतने वाली है। मद० व० १०।

अतसी उष्ण, तिक्त, वातघ्नी, कफ पित्तजनक और स्वाद्वम्ल (मधुराम्ल) है। राजवल्लभः।

अतसी मधुर, तिक्त, स्निग्ध, भारी, पाक में कटु, उष्ण, दृष्टि को हानिकारक, शुक्र तथा वातनाशक और कफ एवं पित्त को नष्ट करने वाली है। भाव०।

पाक में कटु, तिक्त तथा कफ वात और व्रण को नाश करने वाली है। पृष्ठशूल, सूजन, पित्त, शुक्र और दृष्टि का नाश करने वाली है। वृ० नि० र०।

अतसी तैल

मधुर, पिच्छिल, वातनाशक, मदगंधि तथा कषाय है और कफ एवं कास को हरण करती है। रा० नि० व० १५।

आग्नेय, स्निग्ध, उष्ण तथा कफपित्तनाशक पाक में कटु, चक्षु को अहितकर, बल्य, वातनाशक तथा गुरु है, मलकारक, रस में मधुर, ग्राही, त्वग्दोष एवं हृद्रोग को नष्ट करने वाला और वात प्रशमनार्थ वस्ति, पान, अभ्यङ्ग, नस्य और कर्णपूरण रूप से तथा अनुपान रूप से भी प्रयोजनीय है। भा० पू० तैल० व०।

अतसी तैल उष्णवीर्य और कटुपाकी है। (राजवल्लभः)।

अतसी पत्र

तीसी का पत्ता खाँसी तथा कफ वात और श्वास तथा हृद्रोग नाश करने वाला है। वृ० नि० र०।

वैद्यक में अतसी का उपयोग

चरक—(१) फोड़ा पकाने के लिए अलसी को जल में पीसकर उसमें किञ्चित् जौ का सत्तू योजित करें और अम्लदधि के साथ इसका फोड़ा पर प्रलेप करें। इससे फोड़ा पक जाएगा। (चि० १३ अ०)।

(२) वातप्रधान व्रण में जो दाह और वेदनान्वित हो तिल और अलसी को भूनकर गोदुग्ध के साथ निर्वापित करें। शीतल होनेपर इसको उसी दुग्ध के साथ पीस कर फोड़ा पर प्रलेप करें। (चि० १३ अ०)

(३) पक्व शोथ प्रभेदन हेतु अतसी—

"× × उमाथ गुग्गुलः × ×।"

अलसी का प्रलेप करने से फोड़ा फट जाता है। (चि० १३ अ०)।

सुश्रुत—(१) वाताधिक वातरक्त में वेदना प्रशमनार्थ अलसी को दुग्ध में पीस कर प्रलेप करें। (चि० २६ अ०)।

(२) प्रमेह में अतसी तैल प्रमेह रोगी को सेवन कराना चाहिए, जैसे—

"कुसुम्भ सर्षपातसी × × स्नेहाः प्रमेहेषु" (चि० ३१ अ०) मात्रा—आधा से १ तो०।

वक्तव्य

चरक और सुश्रुत में उपनाह स्वेद (जिसे अंगरेजी में पुल्टिस कहते हैं।) के उपकरण स्वरूप अतसी व्यवहृत हुई है—"उमया

कुष्ठतैलाभ्यां युक्तयाचोपनाहयेत्" (चरक सू० १४ अ०)

"तिलातसी सर्षप कल्कैस्तनु धरमावनद्धैः स्वेदयेत्" (सुश्रुत चि० ३२ अ०)

निघण्टु ग्रंथों में अलसी तैल के गुण इस प्रकार लिखे हैं—अलसी का तैल वात नाशक, मधुर और बलात्मकारक है।

(धन्वन्तरीय निघण्टु)

नोट—शेष देखो—अतसी तैल।

अतस्यादि क्वाथ—अलसी के फूल, मजीठ बड़ के अंकुर, कुश आदि पंच तृण। सबको समान भाग लेकर यथाविधि क्वाथ बनाकर पीने और पथ्य में मूँग का यूष (और भात) खाने से रक्तपित्त का नाश होता है। सु० चि० २०।

यूनानी मतानुसार—

प्रकृति—१ कक्षा में शीतल व रूक्ष। किसी किसी ने १ कक्षा में उष्ण और १ कक्षा में रूक्ष लिखा है। हानिकर्त्ता—दृष्टि शक्ति, पाचन तथा शुक्र को। दर्पघ्न—धनियाँ, सिकञ्जबीन और मधु। प्रतिनिधि—मेथी। शर्बत की मात्रा—10॥ मा०।

प्रधान कर्म—कास, वृक्क एवं बस्त्यश्मरी को लाभदायक है तथा मूत्रकारक एवं स्तन्य-जनक है।

गुण, कर्म, प्रयोग—इसका कपड़ा पहिनना उत्ताप को दूर करता तथा स्वेद को शुष्क करता और कंडू एवं कठिन शोथ को लाभप्रद है। परन्तु, उष्ण प्रकृति वालों को एवं ग्रीष्म ऋतु में पहिनना चाहिए। इसमें जूँए कम पड़ती हैं। इसके पत्र एवं छाल मस्तिष्क के अवरोधों को उद्घाटक और ज़ुकाम को बढ़ाने वाली है। इसकी छाल को जलाकर छिड़कना रुधिरस्थापक है तथा व्रणों को भर लाता है। इसके पुष्प हृद्य एवं हृदय बलदायक है। बीज लयकर्त्ता, व्रण को स्वच्छकर्त्ता (जाली) और प्रकृति को मृदु करने वाले (मुलय्यिन तबीअ़त) हैं। ठंडे पानी में पीसकर अनुलेप करने से शोथजन्य शिरःशूल एवं मास्तिष्कीय क्षत (दद्रु) तथा शिरोव्रण के लिए उपयोगी हैं। इसबगोल के साथ सन्धिशूल को लाभ करते हैं। इसका लुआब, नेत्र में टपकाने से अभिष्यन्द तथा नेत्र की लालिमा को दूर करता है। इसका लऊक़ (अवलेह) श्लेष्मज कास को गुणदायक है और तीन दिरम (३॥ मा०) पीना वक्षःस्थल को शुद्ध करता है तथा बहुत शोथ और आन्तरावयवों के शोथ का लयकर्त्ता है। भूनी हुई अलसी सङ्कोचक (क़ाबिज़) है और २। मा० दैनिक सेवन करने से आन्त्रवेदना को लाभप्रद है तथा मूत्र, स्वेद, दुग्ध एवं आर्तव की प्रवर्तक है। प्रकृति को मृदुकर्त्ता और वृक्क एवं बस्तीस्थ क्षत को लाभप्रद है। १ तो० पानी में क्वथित कर पीना वृक्काश्मरी के निकालने में शतशोऽनुभूत है। मधु के साथ प्लीहा शोथ के लिए लाभप्रद और काली मरिच और मधु के साथ कामोद्दीपक और शुक्र को गाढ़ा करता है।

नव्य मतानुसार—

एलोपैथिक मेटिरिया मेडिका

ऑफिशल प्रिपेयरेशन्स्

(Official preparations)

लाइनाइ सेमिना—(Lini Semina) -लै०। लिन्सीड (Linseed)-इं०। अतसी बीज, तीसी का बीज। प्रभाव-अरेबिन (Arabin) के समान लुआबी पदार्थ की विद्यमानता के कारण यह स्निग्धता एवं मृदुताजनक है।

लाइनाइ सेमिना कंट्यूज़ा—(Lini semina contusa). लाइनम् कण्ट्युज़म् (Linum contusum)-लै०। क्रश्ड लिन्सीड (Crushed linseed)-इं०। कुट्टित (कण्डित) अतसी, कुटी हुई अलसी। अलसी को कूट कर उसका मोटा चूर्ण तैयार करलें। यह ताज़ा तैयार किया हुआ होना चाहिए। यह कैटाप्लाज़्मा लाइनाई (अतसी की पुल्टिस) बनाने में काम आता है।

ओलियम् लाइनाई—(Oleum Lini) –ले० । लिन्सीड ऑइल (Linseed oil) –इं० । अतसी तैल ।

मृदुताजनक रूप से इसका बहिर् प्रयोग होता है ।

प्रभाव तथा उपयोग—लाइनम् कंट्यु ज़म् अर्थात् कुट्टित अलसी उत्कारिका (पुल्टिस) रूप में स्थानिक प्रदाहों पर अवांतर आर्द्र उष्मा के उपयोग की सर्वोत्तम माध्यम है । जब अलसी की उष्ण पुल्टिस किसी भाग पर लगाई जाती है तब उष्मा के प्रभाव से क्षुद्र स्रोतस् (Small vessels) अबाध्य रूप से विस्तार को प्राप्त होते हैं और त्वगीय मांस तत्व, लोमकोष तथा ग्रन्थिक नलिकाएँ शिथिल हो जाती हैं । अतएव धातुएँ कोमल हो जाती हैं और कठोरता की अनुभूति एवं प्रादाहिक तनाव का सर्वथा लोप हो जाता है, अथवा उसमें कमी आती है । रुधिर के धरातल की ओर आकृष्ट हो जाने के कारण बोध तन्तुओं के अन्तिम भागों को दबाव की कम अनुभूति होती है । कूल्हे की सन्धि के प्रदाह में उष्ण उत्कारिका के प्रयोग से कभी कभी मांसपेशीय आकुंचन शिथिल हो जाता है और स्थानान्तरित जानु वेदना घट जाती है ।

पुल्टिस को फलालैन पर फैलाना चाहिए और उसे इतना गरम रखना चाहिए जितना सुखपूर्वक सहन होसके । स्थानिक उत्तेजक प्रभाव के कारण अत्यधिक उष्ण पुल्टिस से प्रायः तनाव एवं वेदना की वृद्धि होगी ।

प्रायः यह प्रश्न होता है कि स्थानिक प्रदाह यथा व्रिदलो (नाड़ाव्रण) में पुल्टिस का व्यवहार किस समय किया जाना चाहिए ? यदि बहुत पहिले पुल्टिस का उपयोग किया जाता है तो फलतः धातु (Tissue) का सार्वांगिक शैथिल्य उपस्थित होता है और तनाव जो जीवन के लिए घातक है दूर होजाता है तथा उसके क्षय की अधिकतर संभावना होती है । परन्तु, यदि प्रदाह यहाँ तक विवर्धित होगया हो कि श्वेताणु तन्तु स्रोत के पर्दे में बाहर आ गए हों अथवा पूय एकत्रित होगया हो तो पुल्टिस उसको धरातल तक पहुँचाने में सहायक होती है । अतः पुल्टिसें (उत्कारिकाएँ) प्रदाह की समग्र दशाओं में उपयोगी होती हैं । यदि इनका उपयोग बहुत पहिले किया जाए तो वे पूय निर्माण को रोक देती हैं और उसके उपरान्त उसके निर्माण में शीघ्रता उपस्थित करती एवं साहस प्रदान करती हैं । यदि उनमें पचननिवारक गुण वर्तमान होता तो उनसे प्रत्येक कार्य की सिद्धि होती । लेकिन रेशम में आवृत्त ... पर यही कमी हम हिरिट लोशन या ... लोशन में पाते हैं ।

बर्न्स या स्केल्ड्स अर्थात् अग्निदग्ध भाग में जले हुए स्थान पर अतसी तैल में सम भाग चूने का पानी मिलाकर, जिसको कैरन ऑइल (Carron oil) कहते हैं लगाना उपयोगी होता है । बृहदान्त्र के अधोभाग जब अवरोध के कारण मलावरोध हो तब कभी कभी आधा पौंड (१ पाव) अतसी तैल की बस्ति करने से विष्टम्भ दूर होकर एक दो मल आ जाते हैं । –वि० व्रिडला० ।

कूटी हुई अलसी की पुल्टिस को प्रादाहिक रोगों और फोड़े फुन्सियों पर लगाते हैं । इसके प्रयोग से न केवल वेदना कम हो जाती है, अपितु शोथ भी कम हो जाता है, और यदि सूजन पीब पड़ गई हो तो उसके विसर्जन में सहायता मिलती है । गंभीर शोथों जैसे फुफ्फुसौप, फुफ्फुसावरण प्रदाह, कास, परिविस्तृत कला प्रदाह, सन्धि प्रदाह (Arthritis) इत्यादि रोगों में अलसी की पुल्टिस अत्युत्तम अल्प उग्रतासाधक (काउंटर इरिटैंट) है ।

इसके उक्त प्रभाव को किञ्चित् प्रभावकर बनाने के लिए पुल्टिस के धरातल (सतह) पर विचूर्णित राई छिड़क देते अथवा कैरन ऑइल (कपूर मिलित तैल) चुपड़ देते या पुल्टिस बनाते समय १६ भाग इसमें १ भाग राई मिला देते हैं ।

नोट—पुल्टिस बहुत मोटी नहीं होनी चाहिए और लगाते समय उसके निम्न धरातल पर किंचित् तैल प्रभृति चुपड़ देना चाहिए जिसमें वह शरीर से चिपक न जाय।

अलसी की पुल्टिस इस प्रकार बनाई जाती —४ भाग कुटी हुई अलसी को १० भाग खौलते हुए पानी में धीरे धीरे डालकर मिलाते जाएँ। परन्तु, जिस बर्तन में पुल्टिस बनानी हो उसको पहले से गरम कर लेना चाहिए और पुल्टिस को आग के सामने तैयार करना चाहिए।

अलसी की खली (Linseed meal) से भी पुल्टिस बनाई जाती है।

अलसी के बीज में एक प्रकार का लुआबदार सत्व होता है जो उबलते हुए पानी में आजाता है। जब आमाशय-आन्त्रीय श्लैष्मिक कलाओं से इसका सम्बन्ध होता है, तब यह शांतिप्रद स्निग्धताजनक प्रभाव करता है और क्षोभक भावों से उनकी रक्षा करता है। इसमें प्रख्यात कफघ्न अर्थात् श्लेष्मानिस्सारक गुण है जो सम्भवतः आमाशय की ओर जाते समय कण्ठ पर प्रभाव करने पर पूर्णतः आधारित है। अधिक मात्रा में इसका फांट (Infusion) वृक्क को मन्दोत्तेजन देकर मूत्रकारक प्रभाव करता है। अतएव वस्तिप्रदाही प्रायः इससे लाभ अनुभव करता है।

फांट वा अलसी की चाय—(Infusion or linseed tea)—१५० ग्रेन अलसी और १० ग्रेन मुलेठी, इनके चूर्ण को १० फ्लुइड आउंस खौलते हुए पानी में दो घंटे भिगोकर शीतल होने पर छान लें।

मोहीदीन शरीफ—अलसी के बीज स्निग्धतासम्पादक (Demulcent), मृदुताकारक (Emollient), मूत्रल और तर्पक (बृंहण वा पोषक) हैं।

मूत्ररोध वा कष्टमूत्र (Dysuria), मूत्रकृच्छ्र, वस्तिप्रदाह और वृक्कप्रदाह में एवं बहुशः अन्य वस्ति, वृक्क तथा मूत्रप्रणाली सम्बन्धी विकारों में मूत्र की प्रदाहक अनुभूति के निवारणार्थ अलसी के बीज का आन्तरिक प्रयोग अत्यन्त उपयोगी होता है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ मैड्रास।)

आर० एन० खोरी—अलसी स्निग्धता-सम्पादक, कफनिःसारक और मूत्रकारक है। अधिक मात्रा में मृदुरेचक है। अल्प मात्रामें सेवन करने से वृक्कद्वय अर्थात् मूत्रोत्पादक अवयव की क्रिया वृद्धि होती है। पिच्छिल वा स्नेहान्वित रूप से अलसी को कफ कास में प्रयुक्त करते हैं। स्निग्ध एवं मूत्रल होने के कारण यह मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, शर्करा एवम् शूलरोग में हितकर है।

अलसी के तेल के धूम ग्रहण करने से शिरः स्थित श्लेष्मा तथा योषापस्मार (Hysteria) में लाभ होता है। अलसी के क्वाथ का उसमें तैल की विद्यमानता के कारण, अनुवासनवस्ति रूप से लाभदायक उपयोग किया जा सकता है। इसका तेल मृदुरेचक है; अतएव अर्श रोगी के गाढ़ विट्कता की दशा में इसका उपयोग होता है।

(मेटीरिया मेडिका ऑफ इंडिया-२ रा-पृ० १५)

पूयमेह तथा जनन-मूत्रावयवस्थ क्षोभ में इसके बीज का आन्तरिक प्रयोग होता है। पुष्प हृदय बलदायक माने जाते हैं। (डमसन)

यह भारतीय तथा ब्रिटिश फार्माकोपिया में ऑफिशल है। उत्कारिका अर्थात् पुल्टिस रूप से इसका औषधीय उपयोग होता है। (इं० मे० प्लां०—कर्नल बी० डी० बसु कृत)

१ आउंस पिसे हुए अलसी के बीज को रात्रि भर शीतल जल में भिगो रक्खें। प्रातः काल ही इसे हिला कर ठंडा ही अथवा गरम करके और नीबू का रस मिलाकर प्रयोग करें। यक्ष्मा रोगी के लिए यह एक उत्तम पेय है। इस प्रकार धोया हुआ ताज़ा तैल अत्यन्त रोग

प्रशामक है। भोजन से पूर्व इस अलसी की चाय को १ पाइंट की मात्रा में दिन में तीन बार सेवन कराना चाहिए। अर्श रोग में १ से २ आउंस की मात्रा में इसका तैल प्रातः सायं प्रयोग में आता है। (इं० मे० मे० नदकारणी कृत)

एक आउंस अलसी के बीज को १ पाइंट जल में १० मिनट तक उबाल कर छान लें। इसे अलसीकी चाय कहते हैं। यह अतीसार, प्रवाहिका और मूत्र विकारों के लिए एक उत्तम पेया है। (इं० ड्र० इं०—आर० एन० चोपरा कृत)

(२) विरेचक अलसी

लाइनम् कैथार्टिकम् Linum Cathaticum)-ले०। पर्जिङ्ग फ्लैक्स (Purging flax)-इं०। कत्तान मुस्हिल-अ०।

नॉट ऑफ़िशल
(Not Official.)

उत्पत्ति स्थान—युरोप।

वानस्पतिक वर्णन—यह एकवर्षीय पौधा है। कांड सरल, कोमल ६ से ६ इं० तक ऊँचा होता है। पत्र-सम्मुखवर्ती, संपूर्ण (कर्वुर) अंडाकार, नोकीले, होते हैं। पुष्प लघु, श्वेत रंग के; दल अंडाकार होते हैं।

स्वाद—तिक्त व चरपरा।

रासायनिक संगठन—इसमें लाइनीन (अतसीन) एक न्युट्रल (उदासीन), वर्ण रहित, रवादार अत्यन्त तिक्त सत्व होता है जिसमें विरेचक गुण का अभाव होता है।

मात्रा—६० ग्रेन चूर्ण रूप में। यह पौधा विरेचक रूप से व्यवहार में आता है।

अतस्यादिक्वाथः atasyádi-kváthah-सं० हिं० पु० अलसी के फूल, मजीठ, बड़के अंकुर, कुश आदि पद्म तृण। सब को समान भाग लेकर यथा विधि क्वाथ बनाकर पीने और पथ्य में मूँग का यूप (और मांस) खाने से रक्त पित्त का नाश होता है। वृ० नि० र०।

अतसी-कुसुम atasi-kusuma-सं० पु० (१) सीसी का फूल। (२) रेशमी वस्त्र (Silk Cloth)। (३) पाशुपत्या। (४) भंग। (Hemp)

अतसी तैलम् atasi-tailam-सं० क्ली० अलसी का तेल, सीसी का तेल-हिं०। Linum Usitatissimum, *Linn.* (Oil of-Linseed oil.) ग० नि० व० १३। भा० पू० तैल व०। देखो—अलसी।

अतह áatah-अ० (Unconsciousness) मूर्छा, अचेतना, अचेत होजाना, बेहोश हो जाना। म० ज०।

अता atá-हिं० पत्थर फोरी (Patthara-fori) फा० इं० १ भा०। लु० क०।

अताकुत्तीर áatá-quttir-अ० शिकारी पक्षी (The birds of prey.)

अतान पत्रिका atána-patriká-सं० स्त्री० अरण्ड, एरण्ड। (Ricinus Communis, *Linn.*)

अतापी atápi-हिं० वि० [सं०] ताप रहित; दुःख रहित। शांत।

अतार atár
अताल्हशफ़ह tájulhashfah } -अ० (१) शिश्नमुण्ड, मणि। (Corona Glandis)-इं०। (२) चतुनारा-मंडल। म० ज०।

अतारद áatárad
अतारह áatárah } -अ० सुम्बुल रूमी See-sumbul-rúmi

अतारद áatárad—यूना० Mercury (Hydrargyrum) पारा, पारद-हिं० म० अ० डॉ० २ भा०।

अतारा áatárá—गन्दना-फा०। गोनी-हिं० See-gandaná.

अतालीतून atálitúna-यु० अज्ञात।

अति ati-हिं० वि० [सं०] बहुत। अधिक ज्यादा।

संज्ञा स्त्री० अधिकता। ज्यादती। सीमा का उल्लंघन।

नार (Bauhinia race-
.)
त। अतिमिश्रधारा (व० य०)
।
rkah-सं० पु० श्वेतमदार,
Calotropis gigantea,
देखो—आक।
लिं० पत्थरभेद, पाषाण भेद।
ligulata, *Wall.*-ले०।
।
ratah-सं० त्रि० तिक्तादि द्रव्य।

ti-kaṇṭah,-kah-सं० पु०
गोखरू। (२) दुरालभा।

tikandah,-kah-सं० पु०
इह प्रसिद्ध महाकन्दशाक है।
कन्दः। रा० नि० व० ७।
atika-mámidi-ते० पुनर्नवा
via diffusa, Linn.)।
aishaṇam-सं० क्ली० अत्यन्त
बहुत दुर्बल करना। अतिकार्श्यकर,
जनक (कृशताकारक) द्रव्यों का
न करना।
áyah-सं० त्रि० } १-(Gi-
áya-हिं० वि० } gantic)
बहुत लम्बा चौड़ा। बड़े डील डौल
"अतिकाय-गृहीतायास्तरुणया—
भवेत्।" मा० नि०। २—स्थूल
सु० सं० ३० ३८।

kála-हिं० संज्ञा पु० [सं०]
व। देर। (२) कुसमय।
kṛichchhra हिं० संज्ञा पु०
(१) बहुत कष्ट। (An
dinary hardship)। -वि०
(Very difficult).

अतिकृत नाशिनी atikrita-náṣhini-सं० स्त्री० Mercury (Hydrargyrum). पारा, पारद। अथ०। सू० ६। ४४। ३।

अतिकृशः atikṛiṣhah सं० त्रि० अति दुर्बल, बहुत दुबला। वै० श०।

अतिकेश(स)रः atikeṣha(sa)rah-सं० पु० कुब्जक पुष्प वृक्ष। कूजा-हिं०। कोंकन देशीय पुष्प विशेष। रा०नि० व० १०। भा० पू० प्र० व०। कटक मेवती।

अति कोषयम् atikoṣvam-ता० अङ्कोल, ढेरा (Alangium decapetalum, *Lam.*) इं० मे०मे०।

अतिक्रम atikrama-हिं० संज्ञा पु० [सं०] (Act of overstepping; Breach of decorum or duty) नियम वा मर्य्यादा का उल्लंघन। विपरीत व्यवहार।

अतिक्रमण atikramana-हिं० संज्ञा पु० [सं०] उल्लङ्घन। पार करना। हद के बाहर जाना। बढ़ जाना।

अतिक्रांत atikránta-हिं० वि० [सं०] (१) (Gone beyond) सीमा का उल्लंघन किए हुए। हद के बाहर गया हुआ। बढ़ा हुआ। (२) (Past, gone by) बीता हुआ। व्यतीत। गया हुआ।

अतिक्रांता वेक्षणम् atikrántá-veksh-anam-सं० क्ली० जो बात पहिले कही गई। जैसे–चिकित्सा स्थान में कहा कि श्लोक स्थान में हम यह बात कह चुके हैं। सु० उ० ६५ अ० श्लोक २८। "यत्पूर्वमुक्तं तदति क्रांतावेक्षणम्। यथा चिकित्सितेषु ब्रूयात् श्लोकस्थाने यदीरितमिति।"

अतिखिरेटी atikhireṭí-सं० स्त्री० पीली बूटी। कंघी-हिं०। अतिबला-सं०। (Abutilon Indicum, *G. Don* or A. Asiaticum, *G. Don.*) इं० मे० मे०।

अतिगण्डः atigaṇḍah-सं० त्रि० वृहद्गण्ड। मे० डचतुष्कं।

अतिगुप्ता atiguptá-सं० स्त्री० पिठवन-हिं० । (Uraria lagopoides, *D. C.*) -लैं० । इं० मे० मे० । देखो-पृश्निपर्णी ।

अतिगुहा atiguhá-सं० स्त्री० (१) पिठवन-हिं०, पृश्निपर्णी-सं० । (Uraria lagopoides, *D. C.* । र० मा० । (२) (Hedysarum gangeticum, *Linn.*) शालपर्णी । मद० व० १ । वा० सू० २६ अ० । "लक्ष्मणां गुहामतिगुहाम् ।"

अतिगो atigo-सं० स्त्री० (An excellent cow) उत्तम गाय ।

अतिगन्धः atigandhah-सं० पुं०
अतिगंध atigandha हिं० संज्ञा पुं० } (१) भूतृण, गन्धतृण-सं० । (See-Bhútṛinam) रा० नि० व० ८ । (२) गंधराज, मोगरा-वृक्ष, मुद्गर पुष्प वृक्ष-सं०, हिं०, बं० । A sort of Jasmine (Jasminum z(s)ambac, *Ait.*) रा० नि० व० १० । (३) गंधक-हिं० । (Sulphur) रा० नि० व० १३ । (४) चम्पक वृक्ष, चम्पा, चम्पा का पेड़ वा फूल-हिं० । (Michelia champaca, *Linn.*). रा० नि० व० १० ।
वि० (Having an excessive or overpowering smell) अत्यन्त गन्ध पूर्ण ।

अतिगंधकः atigandhakah-सं० पुं० (१) हस्तिकर्ण (पलाश) वृक्ष । (२) चम्पक वृक्ष, चम्पा । रा० नि० वं० १० ।

अतिगंधा,-लुः atigandhá,-luh-सं० स्त्री० पुत्रदात्रीलता, पुत्रदा-सं० । बाँझ खेखसा, लक्ष्मणा-हिं० । रा० नि० व० १० ।

अतिगंधिका atigandhiká-सं० स्त्री० पुत्रदात्रीलता, पुत्रदा-सं० । देखो-पुत्रदात्री । रा० नि० व० ४ । (See-Putradátri).

अतिघूर्णता atighúrṇatá-सं० स्त्री० अतिनिद्रा, निद्राधिक्य, अत्यन्त निद्रा । मा० म० ४ मा० श्लो० २९, मसूरिका । "तृष्णा-दाहोतिघूर्णता" ।

अतिचर atichara-सं० त्रि० (Transient) क्षणिक, अस्थायी ।

अतिचरः aticharah-सं० पुं० (१) एक प्रकार की पक्षी (A sort of bird) (२) वृक्ष विशेष (a tree.) । वै० श० ।

अतिचरणा aticharaná-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) अत्यन्त मैथुन करने के कारण जिस योनि में सूजन हो जाती है उसे अतिचरणा कहते हैं । कफज योनिरोग विशेष, यथा—"मैथुनातिचारेण शोफं संयुक्तातिव्यवायतः" । वा० उ० ३३ अ० । देखो—अचरणा । (२) स्त्रियों का एक रोग जिसमें कई बार मैथुन करने पर तृप्ति होती है (३) वैद्यक मतानुसार, वह योनि जो बहुत मैथुन से तृप्त न हो । [illegible]

अतिचरा,-रा aticharā,-lá-सं० स्त्री० (१) पद्मचारिणी-सं० । गेंदेका फूल, गेंदा । (Tagetes Erecta, Linn.) । मद० व० १ । अभि० नि० १ भा० । (२) स्थल कमल-हिं० । स्थल पद्म, थलपद्म-बं० । Hibiscus mutabilis । मेमो० । गुले अजाइब-फ़ा० । रा० नि० व० ५ । भा० पू० १ भा० । देखो-स्थलपद्म । (३) भूल द्रव्य । (४) A lotus plant, कमल । पद्म (lotus) ।

अतिच्छत्रः atichchhatrah सं० पुं० (१) ताल (तालमखाना-हिं० । रक्त कोकिलाक्ष-सं०, बं० । प० मु० । रत्ना० । (२) कुकुरमुत्ता, साँप की छतरी, कुकुर-मुत्ता, भूमिछत्रा, काठछत्रा, दोयालछत्र-बं० । (A mushroom) (३) स्थूल तृण विशेष । (४) anise । सौंफ ।

अतिच्छत्रकः atichchhatrakah-सं० पुं० [(०१०)] भूतृण । प० मु० । (२) सुगंध, गंधराज । रा० नि० व० ८ । (३) मधुरक तृण । (४) एक वृक्ष जिसके मूल एवं पत्र वच की आकृति के होते हैं तथा जो रस में कटु होता है । रा० नि० । (५) शरवान, छत्रिका । श० श्री० श० मा० ।

च्छत्रका atichchhatraká
च्छत्रा atichchhatrá
च्छत्रिका atichchhatriká
सं० स्त्री० (१) सौंफ, जंगली सौंफ-हिं०। रा० नि० व० ४। मद० व० २। वा० उ० ६ अ० महावैशा० गृ०। 'अतिच्छत्रा पलङ्कषा'। सि० यो उन्माद चि० महापैशाच घृते। (२) मधुरिका। सोरी-बं०। च० चि० अ०। (३) छत्रवृक्ष। वह वृक्ष जिसके मूल व पत्र पंचहों पाकृति के और रस कटु हैं। (४) भूत तृण। रा० नि०। (५) अजशृंगी, मेढ़ासिंगी-हिं०। विषाणिका-सं०। वा० सू० २६ अ०। (६) उक्त नाम की महौषध। देखो—श्रोषधिः। (७) (A mushroom) साँपकी छत्री। अगारिकस पेट्रेस्ट्रस।

जव atijava-हिं० वि० [सं०] जो बहुत तेज़ चले। अत्यन्त वेगगामी।

जागरः atijágarah-सं० पुं०
जागर atijágara-हिं० संज्ञा पुं०
नील वर्ण का बगुला पक्षी। A kind of heron (Ardea jaculator). देखो—नील क्रौञ्च। रा० नि० व० १६।

जागरणः ati-jágaranah-सं० पुं०
जागरण ati-jágarana-हिं० पुं०
अधिक जागना। वा० सू० २ अ०।

तेजात atijáta वह संतान जो पिता के अधिक गुण रखती हो। अथ०। सू० ६। का० ८।

तिजीवः atijívah-सं० पुं० अन्य सामान्य जीवों को देशा की अपने ज्ञान बल से पार करना। अथ०। सू० २। का० ८।

तिजृम्भः atijrimbhah-सं० पुं० अति जँभाई का आना, वायु रोग विशेष। वै० निघ०

तिनपस्विनी atitapasviní-सं० स्त्री० मुण्डी, गोरखमुण्डी (Sphœranthus Indicus, *Linn.*) भा०पू० १ भा०गु०व०।

अतितर्पणम् atitarpanam-सं० क्लो० अति तृप्ति, अति तर्पण। वा० सू० ८ अ०।

अतितार्या atitárya-सं० स्त्री० पार करने योग्य। अथ०। सू० २। २७ का० ८।

अतितिभा: atitibhá-सं० स्त्री० गांडर दूब -हिं०। गंड दूर्वा-सं०। रा० नि० व० ८। (See-Ganda-dúrvá.)

अतितीक्ष्णः ati-tikshnah-सं० त्रि० (१) मरिच अमृत (Black pepper). -पुं० (२) सहिजन, शोभाञ्जन वृक्ष (Moringa pterygosperma, *Gœrtn.*)। -क्लो० (३) अजमोदा (Apium involucratum).

अतितृप्तिः atitriptih-सं० पुं० पित्तजन्य रोग विशेष (Biliary disease.)। वै० निघ०।

अतितेजिनी atitejiní-सं० स्त्री० तेजबल-हिं०, बं०, महा०, गु०। त्रिपर्णी सं०। मद० व० १।

अतिदग्धम् atidagdham-सं० क्लो० अग्निदग्ध रोग (Burn) सु० सू० १२ अ०।

अतिदाहः atidáhah-सं० पुं० अतिसन्ताप, दाहाधिक्य, तापबाहुल्य। वै० निघ०।

अतिदीप्तिः atidíptih-सं० स्त्री० श्वेत तुलसी -हिं०। श्वेत सुरसा-सं०। श्वेत बाबुई तुलसी -बं०। (Ocimum Basilicum, *Linn.*) वै० श०।

अतिदीप्यः,-कः atidípyah,-kah-सं० पुं० लाल चीता, रक्त चित्रक (Plumbago Rosea, Linn.) रा० नि० व० ६।

अतिदुष्टः atidushtah-सं० पुं० गोखरू -हिं०। गोक्षुर-सं०। (zygophylleæ. Tribulus terrestris, Linn.) वै० निघ०।

अतिदेशः atideshah-सं० पुं०
अतिदेश atidesha-हिं० संज्ञा पुं०
(१) प्रकृतस्यानागतेन साधनम् अर्थात् प्रकृत का अनागत (भविष्यत्) से साधन किया जाना

'अतिदेश' कहलाता है। जैसे, अमुक कारण से इसका वायु ऊर्ध्वगामी होता है इसलिए इसे उदावर्त होगा। यहाँ वायु का ऊर्ध्वगमन प्रकृत है इसका साधन अगाड़ी होने वाले उदावर्त से होता है। सु० उ० ६१ अ०।

(२) एक स्थान के धर्म्म वा नियम का दूसरे स्थान पर आरोपण। (३) वह नियम जो अपने निर्दिष्ट विषय के अतिरिक्त और विषयों में भी काम आए।

अतिनिद्रः atinidrah सं०त्रि० (१) (Given to excessive sleep) निद्रालु, वह जिसको अत्यन्त नींद आरही हो।

(२) (Without sleep, sleepless) अनिद्रा।

अतिनिद्रता atinidratá सं० स्त्री०
अतिनिद्रा ati-nidrá-हिं० संज्ञा,स्त्री०
} (Excessive sleeping) निद्राधिक्य, नींद की अधिकता। कफवृद्धि जन्य रोग विशेष। सु० सू० १५ अ०।

अतिनिद्राना(शि)नी गुटिका atinidránáshiní gutiká-सं० स्त्री० कालीमिर्च को शहद में घोंट कर गोलियाँ बनाएँ। इसे घोड़े के लार से घिस कर नेत्रों में लगाने से घोर निद्रा भी दूर हो जाती है। यो० चि०।

अतिनिद्रा रोग atinidra roga-हिं० संज्ञा पुं० वह रोग जिसमें बहुत नींद आती है। (Sleeping sickness.)

अतिनेरञ्चि atinoranchi-हिं० बड़ा गोखरू (Pedalium Murex, Linn.) स० फा० इं०।

अतिपक्वमांसम् atipakvamánsam-सं० पुं० ज्वर पाक हुआ मांस, अधिक पकाया हुआ सिद्ध मांस, पाकाधिक सिद्ध मांस। गुण—अधिक पकाया हुआ मांस विरस (स्वाद रहित), वातकारक और भारी होता है। वै० निघ०।

अतिपक्वक्षीरम् atipakva-kshiram-सं० पुं० अग्नि पर पकाकर अत्यंत गाढ़ा किया हुआ दुग्ध अतिशृत घन दुग्ध। यह प्रसंग है। "भवेद्गरीयोऽतिशृतम्" वा० चा० पाणिः।

अतिपज़म atipazam-ता० गूलर-हिं० फलम्-सं०। Ficus Glomerata (Fruit of) स० फा० इं०।

अतिपञ्चा atipanchá-सं० स्त्री० (past five) पांच वर्ष से ऊपर

अतिपत्रः,-कः atipatrah,-kah-सं० (The teak-tree) -हिं०। शाकतरु-सं०। -यं०। रा० नि० व० ६, महापत्राख्य पत्रे। (२)हस्तिकन्द नाम रा० नि० व० ७।

अतिपत्रा atipatrá-सं० स्त्री० (difolia, Linn.) बलाभेद, बीजबन्द। बेड़ेला-बं०। देखो-बला

अतिपरिच्छम् atiparichcham-

अतिपर्या atiparyá—सं० स्त्री० मालकांगुनी-हिं०। कटुम्भी-सं० strus paniculatus, मे० मे०। फा० इं० १ भा०।

अतिपातितम् atipátitam-सं० (cture) अस्थिभंग, कांडभग्न, से टूटजाना, जिससे अस्थि पूर्णतः है। सु० नि० १५ अ०।

अतिपिच्छः atipichchhah-सं० रताल (Dioscorea sati वै० नि०।

अतिपिच्छला atipichchhalá कुमारी, घृतकुमारी, घीकुआर-हिं० Barbadensis.) वै० निघ०

अतिपिञ्जरः atipinjarah
अतिपिण्डकः atipirakah
} -सं० ulcer) दुष्ट व्रण, दूषित व्रण

atipittá-सं० स्त्री० लजालू, लज्जालु, छुईमुई (Sensitive plant).

[अति]प्रगे atiprage-(Very early in the morning) प्रातःकाल।

[अति]प्रभंजनवात atiprabhanjana-váta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अत्यन्त प्रचंड और शीघ्र वायु जिसकी गति एक घंटे में ४० वा ५० कोस होती है।

[अति]प्रवाहण atipraváhana-सं० त्रि० (To grunt) किलपिला, कोंखना। सु० नि १३ अ०।

[अति]प्रस्रुतम् ati-prasrutam-सं० क्लो० अधिक रक्तमोक्षण, अधिक रक्त स्रावण। सु० शा० ८ अ० श्लो० १७।

[अति]प्रौढ़ा atiprourhá-सं० स्त्री० (A grown-up girl) विवाह योग कन्या।

[अति]बरसण atibárasana-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अतिवर्षण] मेघमाला। घटा। -हिं०।

[अति]बल atibala-हिं० वि० [सं०] (Very strong or powerful) प्रबल, प्रचंड, बली।

[अति]बला atı-balá-सं० स्त्री० (१) (Abutilon Indicum G. Don.) एक ओषधि, कंघी, कंघही, ककही, ककहिया-हिं०। देखो-कंघी वा बला। रा० नि०व० ४। मद०व० १। भा० पू० १ भ० गु० व०। सु०सू० ३६ संशमने। च०सू० ४ अ०। सु०सू० कृमिचि०। चि० म० क० बड़ी स्त्रीरोगचि०। वा० उ० ४० अ०। (२) श्वेत वाट्यालक। (३) गोरक्षतण्डुला। विष्णुनारायण तैले। समावरीयो-सा० कौ०। नि० म० क० बड़ी केतक्यादि तैले।

[अति]बलिका atıbalıká } -सं० स्त्री० वाट्यालक। बरियारा -हिं०। (Sida cordifolia; Linn.) रा० नि० व० ४।
[अति]बली atibali

[अति]बाला atıbálá-सं० स्त्री० (A cow two years old) दो वर्ष की गऊ।

अतिभक्ता atibhaktá-सं०स्त्री०गुलाब (The rose)

अतिभ (आ) रः atıbha,-bhá,-rah-सं० पुं० (Excessive burden) भारी बोझ।

अतिभारगः atı-bháragah-सं० पुं० अश्वतर। खच्चर, अश्वभेद-हिं०। (Donkey, mule) वै० श०।

अतिभीः atıbhih-सं० स्त्री० व-प्रभा, विद्युत, बिजली (Lightning, flash of Indra's thuderbolt.)

अतिभोजनम् ati-bhojanam-सं० क्लो० अधिक मात्रा में भोजन करना, अधिक भोजन, अत्याहार। गुण—इससे आलस्य, भारीपन, पेट की वेदनासहित गुड़गुड़ाहट तथा शरीर के शिथिल होजाने प्रभृतिकी अधिकता होतीहै। सु० सू० ४६ अ० कृतान्नव०।

अतिमङ्गल्यः atı-mangal-yah-सं० पुं० बिल्व वृक्ष। बेल का पेड़-हिं०। (Ægle or cratœva marmelos, Corr.) -ले०। रा० नि० व० ११।

अतिमञ्जुला ati-manjulá-सं० स्त्री० सेवती गुलाब-हिं०। कण्टक सेवती वृक्षः-सं०। गोलाप, रक्त गोलाप-बं०। (Rosa damascena, Mill.) भा० पू० १ भा० पु० व०। मद० व० ३। देखो—सेवती।

अतिमण्डलः ati-mandalah-सं० पुं० भूआमल वृक्ष। वै० निघ०।

अतिमदुरम् ati-maduram-ता०, सिं० मुलेहठी, यष्टिमधु, जेठीमध-हिं०। Glycyrrhizæ (Radix) glabra, Linn. (Liquorice root or Liquorice) स० फा० इं०।

अतिमदुरम्-पाल् ati-maduram-pál-ता० मुलेठी का सत-हिं०। रुब्बुस्सूस-अ०। Glycyrrhiza. (Extract of-E.of liquorice) स० फा० इं०।

अतिमधुरम् ati-madhuram–मल० मुलेठी (Glycyrrhizæ 'Radix' glabra, Linn.) स० फा० इं० ।

अतिमधुरम्-पालु ati-madhuram-pálu –ते० मुलेठी का सत्त–हिं० । Glycyrrhiza (Extract of–) । स० फा० इं० ।

अति-मधुरमु ati-madhuramu–ते०
अतिमधुरा ati-madhurá–कना०
मुलेठी (Liquorice root) स० फा० इं० ।

अतिमन्थः,-कः ati-manthah,-kah–सं० पुं० अरनी, अरणी, अग्निमन्थ (Premna serratifolia).

अतिमात्रम् ati-mátram–सं० क्ली० अधिक मात्रा (परिमाण), मात्राधिक्य । मात्रा से ज़ियादा । धा० स० ८ अ०

अतिमात्र ati-mátra–हिं० वि० [सं०] (Excessive) अतिशय । बहुत । ज़्यादा ।

अतिमानुष ati-mánusha–हिं० वि० [सं०] (Superhuman) मनुष्य की शक्ति के बाहर का । अमानुषी ।

अतिमित ati-mita–हिं० वि० [सं०] अपरिमित । अतुल । बे अन्दाज़ । बहुत अधिक । बे ठिकाना । बे हिसाब ।

अतिमुक्तः,-कः ati-muktah,-kah–सं० पुं०
अतिमुक्त ati-mukta–हिं० संज्ञा पुं०
अतिमुक्तका ati-muktaká
–सं० पुं० (१) तिनिश वृक्ष । तिनसुना । तिरिच्छ । (Mountain ebony) । अम० । (२) तिन्दुक वृक्ष (See–Tinduka) । तेंदु, गाब–बं०,हिं० । तत्पर्य्याय–पुरण्ड्रकः, मल्लिनी, भ्रमरानन्दा, कामुककान्ता–सं० । (३) नवमल्लिका भेद । वासन्ती, नेवारी–हिं० ।
रायबेल–बं० । रायबिर–म०, ते० । (J. zambac floribus multiplicatus) बेंगो–नवमल्लिका । (४) माधवीलता, कुमरी, कस्तुरमोगरा (Gærtnera racemosa) प०, मु० । "अतिमुक्त कमिर्णा वासन्ती माधवीलताम् ।" हला० ३१ । वासन्ती । तिनिश । मे० तचतुष्क । वा० ३ १३ अ० । गाब, तेंद । भा० पू० १ भ० गुण—कसैली, शीतल, स्तम्भन, ... ज्वर, उन्माद, हिक्का, तथा छर्दिनाशक है । रा० नि० व० १० । देखो -तिनिशः । माधवी ... शीतल, लघु तीनों दोषोंको नाश करने वाली । भा० पू० १ भ० पु०व० । –(५) हारा० । (६) मरुआ का पौधा ।

अतिमुक्त तैलम् ati-mukta-tailam–सं० क्ली० अतिमुक्त के बीज का तेल, ... बीज तैल ।
गुण—वातपित्तनाशक, केशवर्द्धक ... केश के लिए हित, श्लेष्माकारक, भारी शीतल है । ग्रा० टी० हेमा० ।

अतिमुक्ता ati-muktá–सं० स्त्री० मुक्तका । रा० नि० व० १० ।

अतिमूत्र ati-mútra–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Diabetes) वैद्यक में आयुर्वेद के अनुसार छः प्रकार के प्रमेहों में से एक । अधिक मूत्र उतरता है और रोगी क्षीण जाता है । बहुमूत्र ।

अतिमैथुन ati-maithuna–हिं० संज्ञा पुं० स्त्री सहवासाधिक्य, अधिक स्त्री संग करना ।

अतिमोदा ati-modá–सं० स्त्री०, हिं० स्त्री० (१) गुलसेवती–हिं० । नवमल्लिका–बं० सेउति–बं० । (Jasminum arborescens, Roxb.) रा० नि० व० १० । (२) गणिकारी वृक्ष–बं० । गणिरि– रा० नि० व० १० ।
(३) नेवारी का पौधा या फूल ।

अतिमोक्षा ati-mokshá–सं० स्त्री० ... पुष्पवृक्ष (Jasminum zambac floribus multiplicatus.)

अतियवः ati-yavah–सं० पुं० काली यव । मद० व० १० । "नि. शूकोऽ ... स्मृतः" अर्थात् जो जौ शूक (सुई) ...

उन्हें अतियव कहते हैं। जौ से अतियव में अल्प गुण हैं। भा० पू० १ भा० धान्य व०।

युक्तः ati-yuktah-सं० त्रि० बारम्बार उपयोगमें लाया हुआ। स्नेह आदि पञ्चकर्मों का अतियोग अर्थात् अत्यंत प्रयोग करना। भा०म० ख० १ भा० अ०सा०। "स्नेहाद्यैरतियुक्तैः।"

योगः ati-yogah-सं० पुं०
योग ati-yoga-हिं० संज्ञा पुं० } (१) अति प्रयोग, अतिशयित प्रयोग, अधिक उपयोग में लाना। वा० सू० १७ अ०। (२) अधिक मिलाव। (३) किसी मिश्रित औषधि में द्रव्य का नियत मात्रा से अधिक मिलाव।

र् ātir-अ० सुगंधित, सुगंधित होना। म० ज०।

रक्त atirakta-हिं० पुं०
रक्तः ati-raktah-सं० पुं०
रक्ता ati-raktá-सं० स्त्री० } (१) हिंगुल, शिंगरफ। Cinnabar (Hydrargyri Bisulphuretum.)। (२) ओड़हुल, अड़उलका फूल-हिं०। जपा पुष्प-वृक्ष-सं०। (Hibiscus Rosa=sinensis, *Linn.*) वै० निघ०।

रजःस्राव atiıajah-sráva-हिं० पुं० (Menorrhagia) मासिकधर्म का अधिक होना। देखो—प्रदर।

रसः ati-rasah-सं० पुं० पौण्ड्क-सं०। रा० मा०। See-Puṇḍrakah.

रसा ati-rasá-सं० स्त्री० (१) मूर्वा -सं०। चूरनहार, मुरहरी-हिं०। (Sansevieria, zeylanica, *Willd.*)। मुर्वा -बं०। वै० निघ० २ भा० अप० चि० पञ्चदश तैल। (२) रास्ना (Vanda Roxburghii)। मद० व० १। (३) मुलेठी (Liquorice) रा० नि० व० ६। (४) शतावरी-हिं०। शतमूली-सं०। च० सू० ४।

राष्ट् atiráshtra-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पुराण के अनुसार एक नाग या सर्प का नाम।

रुक् atiruk-सं० स्त्री० (A very beautiful woman) अत्यन्त सुन्दर स्त्री।

अतिरुच् atiruch-सं० पुं० (The knee) जानु, घुटना।

अतिरुहा ati-ruhá-सं० स्त्री० मांसरोहिणी -सं०। रोहिणी-हिं०। रा० नि० व० १२। भा० पू० १ भा०। मद० व० १। (See-mánsarohiní)

अतिरूक्षः ati-rukshah-सं० त्रि० अत्यन्त रूक्ष, स्नेह रहित, यथा-कंगु और कोदो प्रभृति। (Very dry.)

अतिरेचकः ati-rechakah-सं० पुं० काकोली कॉकला-बं०। (Tizyphus napeca.) वै० निघ०।

अतिरोगः ati-rogah-सं० पुं० क्षयरोग। क्षयीरोग। राजयक्ष्मा। (Pthisis, consumption.) रा० नि० व० २०।

अतिरो (लो) मश ati-ro,-lo-masha-सं० त्रि० (Very hairy, shaggy) बहुत रोमयुक्त।

अतिरोमशः ati-romaṣhah-सं० पुं० (१) वन बकरी, वन्यछाग (A wild goat.)। (२) (A sheep) भेड़, मेष। हारा०। (३) (A large monkey) बड़ा बन्दर (वानर)।

अतिरोमशा ati-romaṣhá-सं० स्त्री० वृद्धदारकलता, विधारा, नीलवुह्ना। प० मु०। See-Vidhárá.

अतिरोहण ati-rohaṇa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] जीवन या ज़िन्दगी। (Life.)

अतिलङ्घन ati-langhan-हिं० संज्ञा पुं०

अतिलङ्घनम् ati-langhanam-सं० [illegible] (Excessive fasting) [illegible] अधिक निराहार रहना।

अतिलङ्घितम् ati-langhit[illegible] यह पुरुष जिसने [illegible] किया हो, अत्यन्त [illegible]

अतिलशवी [illegible]

करोरुका (Atlas=First cervical vertebra.)। फ़ह्‌फ़ह्‌–अ०।

अतिलेशा पृष्ठकीयः ati-leshá prishta-kíyah-सं० त्रि० (Atlanto occipital.)

अतिलेशापृष्ठकीय-सन्धिः ati-lesháprishta-kíya-sandhih सं० पुं० (Atlanto occipital joint).

अतिलेशाक्षसमीयः ati-lesháksha-samiyah-सं० पुं० (Atlanto axial ligament)

अतिलोमशः ati-lomashah–सं० पुं० (१)। भेड़। (२) वन बकरी (A wild goat)। (३) बन्दर, वानर (A large monkey)

अतिलोहितगंधः ati-lohita-gandhah –सं० पुं० दौना, दमनक वृक्ष (wormwood)। प० मु०।

अतिवडदम् ati-vadayam–ता० अतीस Root of–(Aconitum Heterophyllum, *Wall.*) स० फा० इं०।

अतिवयस् ati-vayas-सं०त्रि० (Very old, aged) अधिक उम्र वाला, वृद्ध।

अतिवर्त्तुलः ati-varttulah–सं० पुं० मटर, केराव–हिं०। कलाय विशेष–सं०। मटर, वाटुना, कुराइ–बं०। (Sida rhombifolia, *Linn.*)। र० मा०।

अतिवल ati-vala सं० मधु चोंच, चोंच सुर्द। यह एक बूटी है।

अतिवला ati-valá–सं० स्त्री० नागबला, गंगेरन, गुलसकरी। (Sida Spinosa, *Linn.*).

अति-वला-चेट्टु ati-valá-chettu ता० महाबला, महदेवी। See–Mahábala.

अति-वष ati-vasha–गु०, अति-वस ati-vasa–ते०, अति-वसु ati-vasu–ते० } अतीस। (Aconitum Heterophyllum, *Wall.*) स० फा० इं०।

अतिवासा ati-vásá–ते० अतीस (Aconitum Heterophyllum, Wall.) लु० फ़०। वृ० नि० र०।

अतिविकट ati-vikata-सं० त्रि० (Very fierce) अतिभयावह।

अतिविकटः ati-vikatah-सं० पुं० (A vicious elephant) दुष्ट, बिगड़ा हुआ या पागल हाथी।

अतिविरेचक ati virechaka-हिं० वि० अधिक मात्रा में मल (दस्त) निकालने वाला। (Drastic purgative)

अतिविदाही ati-vidáhí–सं० त्रि० बड़ी मार्ग राज सर्षप। वै० श०।

अतिविद्ध ati-viddha–सं० पुं० अति वेधक वेदना संबन्धी रोग। अर्थ०। सू० १०१। का० ६।

अतिविद्ध भेषजी ati-viddha-bheshaji–सं० स्त्री० अत्यन्त पीड़ाको दूर करने वाली औषधि। अर्थ०। सू० १०१। १। का० ६।

अतिविद्धा ati-viddhá सं० स्त्री० जो प्रमाण से अधिक छेदित होजाए और कुछ की को प्रविष्ट हो जाए या बहुत अधिक छेद कि वह अतिविद्धा है। सु० शा० ८।

अतिविश्वा ati-vishvá–सं० स्त्री० व्यापी होने वाली।

अतिविष ativisha-मह०, गु० (Aconitum Heterophyllum Wall.) अतीस। मे० मो०। फा० इं०। वृ० नि० र०।

अतिविषः, -षा ati-vishah,-shá-सं० स्त्री०, अतिविष,-षा ati-visha,shá-हिं० संज्ञा स्त्री० अतीस (Aconitum Heterophyllum, Wall.) रा० नि० व० ६। सु० ३९ अ० वचादि। च० द० ज्वर पिप्पल्यादिघृत। मद० व० १। सा० कौ०।

अतिविषनी ati-vishaní-गु० (Aconitum Heterophyllum, Wall.) अतीस। मे० मो०।

अतिविषादिक्वाथः ati-vishádi-kváthah सं० पुं० अतीस, मोथा, नेत्रवाला, धवपुष्प, इन्द्रजौ), अनारदाना, लोध, बरियारा, मागके यथा विधि क्वाथ प्रस्तुत कर पीने से

संग्रहणी, ज्वर, अरुचि और मन्दाग्नि का नाश होता है तथा यह धातुवर्द्धक है। वृ० नि० र०।

अतिविषादिचूर्णम् ati-vishádi-chúrṇam-सं० क्ली० अतीस, त्रिकुटा, सैंधव, यवक्षार और हींगका क्वाथ या चूर्ण गरम पानी के साथ लेने से आम-युक्त संग्रहणी नष्ट होती है। अथवा पीपल, सोंठ, पाठा, शारिवों, दोनों कटेली, चित्रक, इन्द्र-यव, पाँचो नमक और यवक्षार का चूर्ण बनाकर दही, गरम पानी और सुरा आदि के साथ सेवन करने से अग्नि प्रदीप्त होती और कोष्ठगत वायु मिट जाती है। च० सं० चि० अ० १५।

अतिवीजः ativijah-सं० पुं० बबूर (बबूल) वृक्ष। (Acacia Arabica, Willd.) वै० निघ।

अतिवृष्टि ati-vrishti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] पानी का बहुत बरसना जिससे खेतों को हानि पहुँचे। अत्यन्त वर्षा।

अतिवृहत्फलः ati-vrihat-phalah-सं० पुं० पनस। कटहल (Artocarpus integrifolia, Linn) भा० पू० १ भा०।

अतिवृंहण ati-vrinhaṇa-सं० त्रि० अत्यंत दूध, घी तथा मांसादि भक्षण द्वारा प्राप्त स्थूलता।

अतिवृंहित ati-vrinhita-हिं० वि० [सं०] दृढ़। पुष्ट। मज़बूत।

अतिव्यथा ati-vyathá-सं० स्त्री० अतिवेदना, अतिपीड़ा, अतिशयित यन्त्रणा।

अतिव्याप्ति ati-vyápti-हिं० स्त्री० [सं०] न्याय में एक लक्षण दोष। किसी लक्षण या कथन के अन्तर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आजाने का दोष। जहाँ लक्षण या लिंग लक्ष्य या लिंगी के सिवाय अन्य पदार्थों पर भी घट सके वहाँ अतिव्याप्ति दोष होता है।

अतिव्यात्ताननम् ati-vyáttánanam-सं० क्ली० मुँह फाड़ कर, मुँह खोलकर। सु० शा० ८ अ० श्लो० ८।

अतिव्यायामः ati-váyámah-सं० पुं० व्यायामाधिक्य, अधिक व्यायाम करना अर्थात् कुश्ती व कसरत करना, किसी प्रकार के शारीरिक श्रम की अधिकता। अधिक व्यायाम पथ्य नहीं है। इससे कास, ज्वर, छर्दि, क्लान्ति (थकान), प्यास, क्षय, प्रतमक श्वास तथा रक्तपित्त प्रभृति रोग हो जाते हैं। भा० पू० १ भा०। वा० सू० अ० ३।

अतिशष्कुली ati shashkuli-सं० स्त्री० तिलकृत रोटिका।

गुण—यह रूक्ष है और श्लेष्म, पित्त तथा रक्त को नाशकरने वाली भारी, विष्टम्भ (मलावरोध) करने वाली और चक्षु के लिए हितकारी नहीं है। भा० पू० कृतान्नव०।

अतिशारिवा atisháriva-सं० स्त्री० अनन्त-मूल-हिं०, बं०। अनन्ता-सं०। (Hemidesmus indicus, R. Br.) । र० मा०। देखो—शारिवा।

अतिशीत ati-shita-सं० (हिं०) वि० अधिक ठंढा, अत्यन्त जाड़ा।

अतिशुपर्णी atishuparṇá-सं० स्त्री० बन मूँग, मुद्गपर्णी। (Phaseolus trilobus, Ait.)

अतिशूकः ati-shúkah सं० पुं० यव-सं०। जौ-हिं०। (Barley)। प० मु०।

अतिशूकजः ati-shúkajah-सं० पुं० गेहूँ-हिं०। गोधूम-सं०। (Wheat.).

अतिशृतक्षीरम् ati-shrita-kshíram-सं० क्ली० अत्यन्त औटाया हुआ दूध। यह बहुत भारी होता है। वा० सू० ५ अ०।

अतिशोषः ati-shoshah-सं० पुं० क्षयरोग (Pthisis)। देखो-क्षयः।

अतिसय्या ati-sayyá-सं० स्त्री० यष्टिमधु लता, मुलेठी की बल्ली (Glycyrrhiza glabra) वै० श०।

अतिसर्जनम् ati-sarjanam-सं० क्ली० वेध, बेधना, छेदन। मे० नपञ्चकं।

अतिसान्द्रः ati-sándrah-सं० पुं० लोबिया, बोड़ा-हिं०। राजमाष-सं०। (A kind of bean (Dolichos Sinensis.).

अतिसाम्या ati-sámyá–सं० स्त्री० मुलेठी की लता, काली मुख वाली गुञ्जाकी बेल। (Abrus precatorius)। वै० श०।

अतिसारः ati-sárah–सं० पुं०
अतिसार atisára–हिं० संज्ञा पुं० } (१)पर्पटक –सं०। पित्तपापड़ा, पापड़ा–हिं०। (Oldenlandia corymbosa)। (२) स्वनाम-ख्यात उदरामय रोग। बहुद्रवमलनिःसरण रोग। एकरोग जिसमें मल बढ़कर उदराग्निको मंद करता हुआ और शरीर के रसों को लेता हुआ बार बार निकलता है। इसमें आमाशय की भीतरी झिल्लियों में शोथ हो जाने के कारण खाया हुआ पदार्थ नहीं ठहरता और अँतड़ियों में से दस्त के रूप में निकल जाता है।

पर्याय—इस्हाल–अ०। शिकम रवी, पा रवी–फ़ा०। डायरिया Diarrhœa, डीफ्लक्सियो Defluxio, एल्वी फ्लक्सस Alvi fluxus, कैथार्सिस Catharsis, पर्गेशन Purgation–इं०। दस्त, दस्त आना, दस्त लाना, पेट चलना–हिं०, उ०। कोर्स डी वेण्ट्री Cours de ventre, डीवॉयमेण्ट Devoyement–फ्रां०। डेर डर्चफाल Der Durchfall, बोखफ्लस Bauchfluss, डुर्चलॉफ Durchlauf –जर०।

परिभाषा–प्रकृतिका अतिक्रमण कर गुदा मार्ग द्वारा अत्यन्त प्रवाहित होना अति(ती)सार कहलाता है।

नोट–जिस अवयवके विकार द्वारा यह रोग होता है उसीके नाम से इसे अभिहित करते हैं। जैसे–आमाशयातीसार, आंत्रातिसार तथा यकृदातीसार प्रभृति। इसी भाँति मल में जिस दोष की उल्वणता होती है उसी दोष के नाम से इसे अभिधानित करते हैं। जैसे पित्तज अतिसार, कफज अतिसार तथा वातज अतिसार आदि।

डॉक्टरी नोट—जब रोग के कारण दस्त आएँ तब डायरिया और जब विरेचन द्वारा आएँ तब उसे कैथार्सिस तथा पर्गेशन कहते हैं।

कोई कोई डॉक्टर इसकी रोगोंमें केवल इसको उपसर्ग मानते हैं।

निदान

भारी (मात्रा गुरु, स्वभाव गुरु) और पाक में भारी, अत्यन्त चिकनी, रूखी, अत्यन्त गर्म, अत्यन्त पतली ... ठ.ढेमे, अति स्थूल (अति कठिन), अति ... विरुद्ध (संयोग विरुद्ध, देश विरुद्ध, ... रुद्ध और मात्रा विरुद्ध), अध्यशन ... भोजन के बिना पचे फिर भोजन करने ... अजीर्ण और विषम भोजन करने आदि ... तथा स्नेह, स्वेद, वमन विरेचनादि के ... अयोग और मिथ्यायोग से, विष ... भय, शोक, दूषित जलपान, अतिशय ... स्वभाव तथा ऋतु विपरीत और जल क्रीड़ा ... से, मल मूत्रादि के वेग को रोकने से तथा ... दोष आदि कारणों से यह रोग उत्पन्न होता ... सु० उ० ४० अ०। मा० नि।

सम्प्राप्ति

शरीर के दूषित रस, रक्त, जल, स्वेद, मेद ... मूत्र आदि सम्पूर्ण जलीय धातु बढ़कर ... को पैदा कर मल के साथ मिल जाते ... द्वारा नीचे की ओर प्रेरित होकर अधिक ... निःसृत होते हैं, इसी को अतिसार कहते हैं। वैद्यक के अनुसार इसके ६ भेद हैं।

(१) वायुजन्य, (२) पित्तजन्य, कफजन्य, (४) सन्निपात जन्य, (५) ... जन्य और (६) आमजन्य।

नोट—उपर्युक्त भेदों के अतिरिक्त शा... भयजन्य अतिसार भी लिखा है। अन्य ... मत से अतिसार सात प्रकार का ... वाग्भट्ट महोदय उक्त छः प्रकार के अति... आमजन्य की गणना न कर उसके ... भयज अतिसार के वर्णन द्वारा उक्त छः ... गणना की पूर्ति करते हैं। वे पुनः कुल ... को दो भागों में बाँटते हैं। जैसे (१) स... (२) निराम तथा एक सरक्त और दूसरा

कोई कोई आम, पक्व तथा रक्त नामक अतिसारों को अतिसार की अवस्थाएँ मानते हैं नकि स्वतन्त्र व्याधियाँ।

लक्षणों का अनुशीलन करने से भयजन्य और शोकजन्य अतिसारों के लक्षण एक समान पाए जाते हैं। अतएव किसी किसी आचार्य ने इनका पृथक् वर्णन नहीं किया और यही प्रशस्त भी जान पड़ता है। आम और पक्व अतिसार की ही अवस्थाएँ हैं तथा रक्त पित्तातिसार का परिणाम। इस प्रकार कुल अतिसार पाँच ही प्रकार के हुए।

पाठकों की ज्ञानवृद्धि हेतु अब डॉक्टरी मत से अतिसार के भेदों का, मय उनके आयुर्वेदिक एवं यूनानी पर्यायोंके, यहाँ संक्षिप्त वर्णन कर देना उचित जान पड़ता है। डॉक्टरी मतसे अतीसार के मुख्य मुख्य भेद निम्न हैं—

(१) श्वेतातिसार—सफेद दस्त। इस्हाल अब्यज़—अ०। डायरिया एल्बा Diarrhœa Alba, व्हाइट डायरिया White Diarrhœa—इं०।

उष्ण प्रधान देशों में साधारणतः बालकों को इस प्रकार के दस्त आया करते हैं। इसके कारण विशेष प्रकार के कीटाणु माने जाते हैं।

(२) हरितातिसार—हरे दस्त। इस्हाल अख़्ज़र—अ। ग्रीन डायरिया Green Diarrhœa—इं०।

इस प्रकार के दस्त शिशुओं को ग्रीष्म ऋतु वा दन्तोद्भेद काल में आया करते हैं।

(३) शिश्वतिसार वा बालातीसार—बच्चों के दस्त। इन्फैंटाइल डायरिया Infantile Diarrhœa—इं०।

(४) इस्हाल बुह्रानी—अ०। क्रिटिकल डायरिया Critical Diarrhœa—इं०।

जब प्रकृति किसी रोग में विकृत दोष को रेचन द्वारा विसर्जित करती है तब उक्त प्रकार के दस्त को इस नाम से अभिहित करते हैं।

(५) श्लेष्मातिसार—कफजन्य अतिसार। इस्हाल बल्ग़मी—अ०। म्युकस डायरिया Mucous Diarrhœa—इं०।

इस प्रकार के दस्त शरीर में श्लेष्माधिक्य एवं उनके प्रकुपित होने से आया करते हैं और उनमें श्लेष्मा मिली हुई होती है।

(६) क्षोभजन्य अतीसार—ख़राशदार दस्त। इस्हाल तहय्युजी—अ०। डायरिया क्रैप्युलोसा Diarrhœa Crapulosa, इरिटेटिव डायरिया Irritative Diarrhœa—इं०। इस प्रकार के दस्त किसी क्षोभक आहार या औषध के सेवन द्वारा अंत्र में ख़राश होने के कारण आया करते हैं।

क्षोभजन्य अतिसार वस्तुतः प्रादाहिक, प्रावाहिकीय तथा वैशूचिकीय आदि अतिसारों की प्रारम्भिक अवस्था है।

(७) वातातिसार (मास्तिष्कीयातिसार)—मस्तिष्क के योग वा विकार द्वारा उत्पन्न हुआ अतीसार। इस्हाल दिमाग़ी—अ०। नर्वस डायरिया Nervous Diarrhœa,—कटारल डायरिया Catarrhal Diarrhœa—इं०।

यूनानी मतके अनुसार वह अतीसार जो मस्तिष्क से कण्ठ एवं अन्न प्रणाली के रास्ते आमाशय में नज़्लह् तथा रतूबतों के गिरने से हुआ करता है। इसी कारण उसको इस्हाल नज़्ली (प्रातिश्यायिक अतिसार) भी कहते हैं।

डॉक्टरी मत से—इस प्रकार का अतिसार प्रायः मनोविकार एवं आन्त्रीय कृमिवत् आकुञ्चन और तद्स्थानीय ग्रंथियों की क्रिया की वृद्धि के कारण हुआ करता है। इस प्रकार के दस्त बहुधा स्त्रियों एवं बालकों को आया करते हैं।

(८) प्रादाहिकातिसार—प्रदाह जनित अतिसार। इस्हाल वर्मी—अ० (इन्फ्लमेटरी डायरिया Inflammatory Diarrhœa, डायरिया सिरोसा Diarrhœa Serosa, कैटारल एण्टेराइटिस Catarrhal Enteritis इं०। इस प्रकारके दस्त सामान्यतः आंत्रीय श्लैष्मिक कलाओं के शोथ से और कभी यकृत्प्रदाह के कारण आया करते हैं।

(९) वैशूचिकीयातिसार—
इस्हाल मानिन्द हैज़ा—अ। कॉलराफोर्म

डायरिया Choleriform Diarrhœa, कॉलरिक डायरिया Choleric Diarrhœa, थर्मिक डायरिया Thermic Diarrhœa-इं०। उष्ण प्रधान देशों एवं ग्रीष्म ऋतु में आहार विहार आदि दोष के कारण प्रायः इस प्रकार के दस्त आया करते हैं। इसमें पित्तातिसार एवं विसूचिका के बहुत से लक्षण मिलते जुलते हैं।

(१०) प्रातिनिधिक अतिसार—

इस्हाल बुह्रानी-अ०। विकेरियस डायरिया Vicarious Diarrhœa-इं०।

वर्षा ऋतु में शीतल वायु के कारण स्वेदावरोध हो जाने से अथवा किसी प्रवृत्त हुए रक्तस्राव के बन्द हो जाने से इस प्रकार के प्रातिनिधिक दस्त आने लगते हैं।

(११) पित्तातिसार—

पित्त के दस्त। इस्हाल सफ्रावी-अ०। बिलियरी या बिलियस डायरिया Biliary or Bilious Diarrhœa-इं०।

उष्ण प्रधान देश तथा ग्रीष्म ऋतु में आहार आदि दोष के कारण प्रायः इस प्रकार के दस्त आया करते हैं। ऐसे दस्तों की आदि में पित्त के वमन भी आते हैं।

(१२) गिर्यातिसार—

पर्वती अतीसार। हिल डायरिया Hill Diarrhœa-इं०

अतिसार का वह भेद जिसमें दस्त बिलकुल सफेद खड़िया मिट्टी और जल के मिश्रण जैसा पतला होता है।

(१३) चिरकारी व पुरातन अतिसार

पुराने दस्त। इस्हाल मुज़्मिन-अ०। क्रौनिक डायरिया-Chronic Diarrhœa -इं०।

नोट—प्रसंगवश यहाँ डॉक्टरी मत से सामान्य परिचययुक्त अतिसार के कतिपय भेदों का उल्लेख कर अब आयुर्वेदीय मत से इसके अलग अलग भेदों आदि का पूर्णतया वर्णन होगा। अन्त में इसकी सामान्य चिकित्सा व पथ्य आदि देकर इस वर्णन को समाप्त किया जाएगा। इसके पृथक पृथक भेदों की चि[illegible] उन उन नामों के सामने दी जाएगी। वर्णन एवं भेद के लिए देखिए—इस्हाल।

अतिसार के पूर्वरूप

जिस मनुष्य को अतिसार होने वाला होता है उसके हृदय, गुदा और कोठमें सुई चुभाने की पीड़ा होती है; शरीर शिथिल पड़ जाता है, [illegible] का विबंध अर्थात् मलावरोध, आध्मान, और [illegible] का अपरिपाक होता है। वा० नि० अ० [illegible]

माधव निदान में नाभि तथा कुक्षि (कोख) में सुई छिदने की सी पीड़ा और अधोवायु रुक जाना, इतना अधिक लिखा है।

अतिसार के लक्षण

(१) वातातिसार—इसमें अल्प[illegible] थोड़ा शब्द (गुड़गुड़ाहट) और शूल में [illegible] बँधा हुआ झागदार पतला, छोटे छोटे [illegible] युक्त, बराबर जले हुए गुड़ के समान, पि[illegible] (चिकना), कतरने की सी पीड़ा से संयुक्त निकलता है। इसमें रोगी का मुख सूख [illegible] है। गुदा विदीर्ण हो जाती (गुदभ्रंश) [illegible] रोमांच होता है। रोगी कुपित सा मालूम होता [illegible] वा० नि० अ० ८। माधव निदान में [illegible] लिए हुए रूखा मल उतरना, कटि, और [illegible] पिंडलियों का जकड़ना ये लक्षण [illegible] लिखे हैं।

(२) पित्तातिसार—इसमें दस्त [illegible] लाल रंग के होते हैं, गुदा में जलन तथा [illegible] हो जाता और रोगी प्यास और मूर्छा से [illegible] होता है। मा०नि०। वाग्भट्ट महोदय ने [illegible] हरा, हरी दूबके समान, रुधिरयुक्त, [illegible] न्धि युक्त दस्त होना, दस्तों से रोगी की गुदा [illegible] दर्द होना, शरीर में दाह और स्वेद होना [illegible] लक्षण अधिक लिखे हैं।

(३) कफातिसार—इसमें मल [illegible] गाढ़ा, चिकना, कफ मिश्रित, आमगन्धियुक्त [illegible] तथा रोमहर्ष होता है। मा० नि०। [illegible] में गाढ़ा, पिच्छिल तन्तुओं से युक्त, स्निग्ध, मांस और कफ युक्त, बारबार

(जल में डूब जाने वाला), दुर्गन्धि युक्त, विबद्ध, निरन्तर वेदना युक्त, प्रवाहिका से युक्त थोड़ा थ ड़ा दस्त होता है। इसमें रोगी को निद्रा, आलस्य, अन्न में अरुचि, रोमहर्ष और उत्क्लेश होता है। वस्ति, गुदा, और उदर में भारीपन होता और दस्त होने के पीछे भी ऐसा मालूम होता रहता है कि दस्त नहीं हुआ है। वा०नि० ८ अ०।

(४) त्रिदोषज या सान्निपातिकातिसार—

शूकर की चर्बी के समान व मांस के धोए पानी के सदृश तथा वातादि तीनों दोषोंके लक्षण जिसमें हों अर्थात् जो दोषत्रय से उत्पन्न हो उसे सान्निपातिकातिसार कहते हैं। यह कष्टसाध्य होता है। मा० नि०। वा० नि० ८ अ०।

(५) शोकातिसार के लक्षण—

जो प्राणी पुत्र, स्त्री, धन, बांधवादि के नाश होने से अति शोक युक्त होकर अल्प भोजन करते हैं, उनकी बाष्पोष्मा नेत्र, नासिका, कण्ठ आदिका पानी वायुसे कोठे में प्राप्त हो अग्नि को मन्द कर रुधिर को दूषित कर देती है जिससे घुँघची के समान लाल रुधिर गुदाके मार्ग होकर विष्ठा मिला हुआ या विष्ठा रहित, निर्गन्ध वा गन्धयुक्त निकलता है। शोक जनित अतिसार प्रायः अति कठिन होता है। कारण यह शोकशांति हुए बिना केवल औषधों से शांत नहीं होता, इस लिए इसे कष्टसाध्य मानागया है। मा० नि०।

नोट—एक भयज अतिसार भी होता है जो भय द्वारा चित्त के क्षोभित होने पर पित्त से संयुक्त वायु मलको पतला कर देता है, तदनन्तर वात पित्त के लक्षणों से युक्त गरम, पतला, प्रवाहयुक्त जल्दी जल्दी मल निकलता है। इसमें प्रायः शोकातिसार के लक्षण घटित होते हैं। वा० नि० ८ अ०।

(६) आमातिसार –

जब अन्न के न पचने के कारण प्रकुपित हुए दोष (वात, पित्त और कफ) अपने मार्ग को छोड़कर कोठ, रसादि धातु तथा मल को दूषित कर बारबार गुदा मार्ग से अनेक प्रकार के मल बाहर निकालते हैं, तब उसको आमातिसार कहते हैं। इससे रोगी के पेट में अत्यन्त पीड़ा होती है।

(७) रक्तातिसार—

पित्तातीसार रोगी यदि अत्यन्त पित्तकारक द्रव्यों का भोजन करे तो उसको निश्चय रूप से रक्तातीसर रोग हो। रक्तातिसार के वातजादि विशेष लक्षण उपर्युक्त अतीसार के लक्षण के समान होते हैं। अतीसार रोग में अँतड़ी आदि में घाव होने से भी मल के साथ रक्त गिरता है।

रोग विनिश्चय

कुछ व्याधियाँ ऐसी हैं जो अतीसार से बहुत समानता रखती हैं। अतएव इसके ठीक निश्चीकरण में बहुधा भ्रम हो जाया करता है। वे निम्न हैं—

१—विशूचिका या वैशूचिकातिसार, २–ग्रहणी, ३–प्रवाहिका और ४–मलावरोध जन्य आमाशयस्थ श्लैष्मिक कलाओं का क्षोभ।

यहाँ पर अतीसार के साथ इनकी तुलनात्मक व्याख्या कर दी जाती है जिससे अतीसार एवं उक्त व्याधियोंके ठीक निदान करने में सुविधा रहे।

(१) अतीसार के प्रारम्भ में मल संयुक्त किन्तु पश्चात् को मल संयुक्त एवं पतले दस्त आते हैं और उनका रंग आरम्भ से अंत तक पीला अथवा दोषानुसार विविध वर्ण मय होता है। परन्तु विशूचिका में मल संयुक्त न रहकर केवल मड़े कोहड़े के जल की भाँति पतले दस्त आते हैं।

अतिसार अपने उत्पादक विशेष कारणों से उत्पन्न होता है। पर विशूचिका में स्पष्टतया कोई विशेष कारण लक्षित नहीं होता। इसमें वमन और पेशाब बन्द हो जाते हैं और रोगी शीघ्र असीम निर्बलता का अनुभव करता है। अतीसार में प्रायः ऐसा नहीं होता।

मल में पित्त का पाया जाना सदा अतीसार का सूचक है। विशूचिका में वमन बहुत आते हैं और वे एक वर्ण रहित द्रव होते हैं। अतीसार में वमन बहुत कम आते हैं और जब कभी आते भी हैं तो उनमें पित्त अथवा अजीर्ण आहार का कुछ अंश विद्यमान रहता है।

(२) ग्रहणी—आहार के पचने पर व्याधि द्वारा अतिशय साम वा निराम मल निकलना अतीसार कहलाता है। अत्यन्त मल निकलने के कारण इसको अतीसार कहते हैं, यह स्वाभाविक ही शीघ्रकारी है।

परन्तु, ग्रहणी रोग में भुक्त अन्न के अजीर्ण होने पर कभी आमसहित और कभी साम (भुक्त अन्न) मल निकलता है। अन्न के जीर्ण होने पर कभी पक्व मल और निकलता है और कभी कुछ भी नहीं निकलता। कभी बिना कारण ही बारम्बार बँधा हुआ और कभी ढीला दस्त होता है। यह रोग चिरकारी होता है और मल इकट्ठा हो होकर निकलता है। अतीसार और ग्रहणी में यही अन्तर है। ग्रहणी चिरकारी है और अतीसार आशुकारी है।

(३) प्रवाहिका (Dysentery):

नाना विध द्रव धातु का प्रचुर परिमाण में निकलना अतीसार और केवल कफ का निकलना प्रवाहिका कहलाती है। ज्वरांश, मरोड़, गुदा में एक अथवा शोथ वेदना की अनुभूति होना, प्रायः अल्प मात्रा में आम व रक्तमिश्रित मल का निकलना प्रवाहिकाके सामान्य लक्षण हैं। यद्यपि प्रारम्भिक अवस्था में कभी कभी अतीसारवत् प्रचुर मात्रा में जलीय वा मल मिश्रित दस्त आते हैं, पर मरोड़ आदि प्रवाहिका के पूर्वोक्त लक्षण तथा अन्त्रपुट एवं मलाशयः भागका मृदु स्पर्श रोग के प्रावाहिकीय स्वभाव को प्रगट करते हैं। रोग के पूर्व इतिहासमें उग्र प्रवाहिका का अभाव, अथवा श्लेष्मा एवं गुदस्थ वेदनानुभूति का न होना और मल के साथ रक्त का कम आना आदि लक्षण अतीसार सूचक हैं।

(४) मलावरोध के कारण बिलकुल अतीसार के समान ही अवस्था उपस्थित हो सकती है—प्रायः पतली श्लेष्मा व मल मिश्रित दस्त आने लगते हैं। परन्तु, अन्वेषण करने पर वे मात्रा में कुछ कम पाए जाते हैं।

अतीसार के पक्व अथवा अपक्व होने के लक्षण

अर्थात्

(सामत्व या निरामत्व)

यह मल जो पूर्वोक्त वातादि लक्षणों से [illegible] हो तथा जल में डालने से डूब जाए और [illegible] दुर्गन्धित या पिच्छिल (लसदार) हो [illegible] आम या अपक्व कहते हैं। साम तथा निराम [illegible] में अतीसार को दो वर्गों में बाँटते हुए [illegible] महोदय 'साम' अर्थात् आमातीसार के [illegible] इसी प्रकार का होना बतलाते हैं। वे [illegible] कहते हैं कि इसमें रोगी के पेट में पीड़ा, [illegible] शब्द होना, विष्टंभ या रुका पाखाना होना, [illegible] से मुँह भरा रहना एवं मल [illegible] आदि लक्षण होते हैं।

इसके विपरीत जब देह हलका हो, [illegible] में न डूबे और दुर्गन्धि एवं लुआब रहित [illegible] उस मलको पक्व मल कहते हैं। वाग्भट [illegible] ने इसे निराम लिखा है और वे लिखते [illegible] निराम के लक्षण साम से विपरीत होते हैं, [illegible] जन्य होने के कारण पक्व होने पर भी यह [illegible] डूब जाता है। इसे निरामातीसार वा पक्वा[illegible] कहते हैं।

अतिसार की असाध्यता

जिस अतीसार रोगी का मल पके [illegible] समान काला, यकृत पिण्ड के समान [illegible] लोहित वर्ण का, साफ तथा घृत, तैल, [illegible] मज्जा, वेशवार (एक मांस विशेष) के [illegible] दूध, दही तथा धुले हुए मांस के जल के [illegible] वर्ण का, चित्र विचित्र रंग का, चिकना, [illegible] पूँछ की चन्द्रिकाके सदृश वर्णको, घन ([illegible] मुर्दों की सी दुर्गन्धियुक्त, मस्तक की [illegible] समान गंधयुक्त (मस्तकेस्थित स्नेह तुल्य [illegible] युक्त), उत्तम गंध वा दुर्गन्धियुक्त द्रव्य[illegible] निकले और जिसको प्यास, दाह, अँधेरा [illegible] श्वास, हिचकी, पार्श्वशूल, अस्थिशूल, [illegible] में मोह, अनिच्छा, मन में मोह ये [illegible] तथा जिसकी गुदा की वलियाँ (आँटें) [illegible] हो और जो अनर्थ भाषण करे ऐसे अतीस[illegible] वैद्य छोड़ दे। अवश्य जो मलद्वार [illegible] असमर्थ हो जिसके बल व मांस क्षीण हो [illegible]

अत्यन्त अफरा हो, सूजन हो, अतिसार के उपद्रवयुक्त जिसकी गुदा पक गई हो और शरीर शीतल हो उसको वैद्य त्याग दे। और भी जो मनुष्य श्वास, शूल तथा प्यास से पीड़ित हो, बल मांस हीन हो तथा ज्वर से पीड़ित हो उसका और विशेष कर वृद्ध रोगी का अतीसार नाश कर देता है।

अतिसार निवृत्ति के लक्षण

जिस मनुष्य के बिना मल के मूत्र उतरे अर्थात् दोनों की क्रियाएँ पृथक पृथक हों, मल अलग उतरे और मूत्र अलग, शुद्ध अपानवायु खुले, अग्नि दीप्त और कोठा हलका हो उसको अतीसार से मुक्त जानना चाहिए।

अतीसार की सामान्य चिकित्सा

अतीसारी को सुखपूर्वक शय्या पर लिटाए रखें और उसके शरीर को गरम रखें। रोगारम्भ काल से २४ घंटे पश्चात् तक उसे किसी प्रकारका आहार न दें, प्रत्युत उपवास रूप लंघन कराएँ। यथा वाग्भट्टः—

अतीसारोहि भूयिष्ठं भवत्यामाशयान्वयः
हत्वाग्निं वातजोऽप्यस्मात्प्राक् तस्मिंल्लंघनं हितम्। वा० चि० अ० ६।

अर्थात्—अग्नि को मन्द करके अतिसार रोग आमाशय में उत्पन्न होता है, इसलिए वातज अतिसार में भी प्रथम उपवास रूप लंघन देना हित है। अपि शब्द से कफादि जन्य अतिसार में भी लंघन हित है। प्राक् शब्द के प्रयोग से यह समझना चाहिए कि उत्तर काल में लंघन कराना हित नहीं है।

परञ्च यदि रोगी बलवान हो तभी लंघन भी कराना चाहिए। अन्यथा दुर्बलता की दशा में लघु पथ्य (पाचक तथा अग्निसंदीपक) की व्यवस्था करनी चाहिए।

अस्तु, केवल क्वथित कर शीतल किया हुआ जल, फाड़े हुए दूध का पानी तथा वच, अतीस, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, नेत्रबाला, और सोंठ, इनमें से किसी एक के साथ पकाया हुआ पानी १ छ० की मात्रा में ३–३ घंटा पश्चात् रोगी को तृषा उत्पन्न होने पर देते रहें। २४ घंटे पश्चात् क्षुधा लगने पर उपयुक्त भोजन काल में उसको अर्थात् तरल आहार २–२ छ० की मात्रा में ३–३ घंटा के अन्तर से दें। इसके अन्त में रोगी को शीघ्र ही अन्न में रुचि बढ़ जाती है और उसकी जठराग्नि प्रदीप्त तथा देह बलिष्ठ होता चला जाता है।

अतः पका कर शीतल किया हुआ दूध उत्तम आहार है। उक्त दूध में ३ ग्रेन सोडियम् साइट्रेट प्रति १ छ० दूध में मिलाकर देना उपयोगी होता है। अथवा पावभर दूध में ३० बुंद मधुर चूर्णोदक (मीठा चूने का पानी) मिलाकर देना लाभदायक है। यदि दूध से उदराध्मान हो तो दूध के स्थान में अरारोट या साबू (सागूदाना) पका कर दें। पुनः मूँग के दाल का पानी, दाल भात, शोरबा चावल, खिचड़ी और दूध तथा पाव रोटी प्रभृति भी दे सकते हैं।

अतिसार रोगी को जल के स्थान में तक्र, पेया, तर्पण, सुरा और मधु यथा सात्म्य अर्थात् प्रकृति के अनुकूल व्यवहार कराएँ। पके केले को जल से भली भाँति मल छान कर पुनः किञ्चित् मिश्री मिला कर आहार के स्थान में व्यवहार कराते रहना अत्युपयोगी है। उसके आहार में ग्राही, अग्निसंदीपक और पाचन औषधियों का समावेश होना अत्यावश्यक है।

उक्त प्रतीकारों द्वारा जब रोग शमन हो जाए तब रोगी को क्रमशः उसके पूर्व आहार पर ले आएँ। परन्तु, अधिक जल वा दुग्ध से परहेज रखें।

मीठे अनार का स्वरस थोड़ी मिश्री मिलाकर देना रोगी के बल का रक्षक एवं आमाशय की क्षोभ का नाशक है। और किसी वस्तु को न देकर केवल इसको ही देते रहना पर्याप्त है।

उपचार

चिकित्सक को रोगी तथा रोग की दशा की भली प्रकार परीक्षा करने के पश्चात् खूब सोच समझ कर ही किसी औषध की व्यवस्था करना उचित है। प्रारम्भ में ही किसी संग्राही औषध को देकर तत्क्षण दस्त बन्द कर देना उचित नहीं। यथा—

प्रयोऽयं ननु संग्राहि पूर्वमामातिसारिणि ।
वा० चि० ६ अ० ।

क्योंकि पहली दशा में धारक औषध द्वारा मलनिरोध करने पर पेट फूलना, ग्रहणी, बवासीर और शोथ प्रभृति उत्पन्न हो सकते हैं। परंतु दस्त होजानेपर भी यदि दोषोंको प्रबलता रहे वा रोगी शिशु, वृद्ध अथवा दुर्बल हो तो पहिले ही से धारक औषध का प्रयोग करना चाहिए।

यदि रोगी शूल आनाह और प्रसेक से पीड़ित हो तो उसे वमन कराना हित है। और यदि दोष अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त होगए हों तथा विदग्ध अर्थात् पक्वापक्व आहारसे मिलकर अतिसार उत्पन्न करते हों तो उन सब उत्क्लेशजनक अर्थात् अतिसार को उत्पन्न करने में समुद्यत और बिना यत्न ही चलने में प्रवृत्त हुए दोषों में पाचनादि किसी औषध का प्रयोग न करके केवल पथ्य अर्थात् हितकारी आहार का ही सेवन कराना उपयोगी है।

पर यदि मलावरोध के कारण थोड़ा थोड़ा मल निकलने से उदर में अफरा, भारीपन, शूल तथा स्तिमिता उत्पन्न हो अथवा उदर में कोई क्षोभक द्रव्य या अजीर्ण या सड़ा गला आहार हो तो सर्व प्रथम किसी सामान्य मृदुभेदक औषध को देकर पेट को साफ़ करना चाहिए। फिर दस्तों को रोकने के लिए धारक औषध का व्यवहार करना उचित है।

पक्वातिसार

आम के पके हुए होने की दशा में प्रथम बार बार मृदु धारक और बाद को बलवान धारक औषध व्यवहार करनी चाहिए।

अत्यन्त निर्बलता की हालत में उत्तेजक औषध यथा सुरा (ब्रांडी) जल में मिलाकर देना लाभदायक होता है।

अब स्वानुभूत बहुशः योगों में से यहाँ कतिपय ऐसे योगों का उल्लेख किया जाता है जो अतिसार की प्रत्येक अवस्था की चिकित्सा में अत्युपयोगी सिद्ध हो चुके हैं और सहस्रों बार परीक्षा की कसौटी पर आ चुके हैं। मात्रा रोगी, रोग तथा अवस्था आदि के अनुसार ... हो सकता है। इसको कोष्ठ शुद्धि पर देना चाहिए, योग निम्न हैं:—

(१) अवयव—सफेद राल, अतीस, ... रस, दालचीनी, छोटी इलायची के बीज, ... अजवायन और सफेद जीरा। निर्माण विधि— इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करें फि... अनार के रस में भली भाँति १२ घंटे तक ... करके चना प्रमाण गोलियाँ बनाएँ।

अनुपान—जल, अर्क सौंफ और ... पुदीना।

(२) अवयव—वटांकुर, अहिफेन ... हींग घी में भुनी हुई, जीरा भुना, ... सुहागा भस्म और पोदीना। निर्माण विधि— इन सबका चूर्ण समान भाग लेकर कुड़ा ... के रस की सात भावना देकर एक रत्ती प्रमाण गोलियाँ प्रस्तुत करें।

सेवन-विधि—खट्टे अनार के रस ... आवश्यकतानुसार १ या २ वटिका दिन में ... बार दें।

(३) अवयव-भङ्ग, छोटी इलायची, ... जीरा, जायफल, कपूर, अनारदाना ... कौड़ी की भस्म। निर्माण-विधि—इनको ... भाग लेकर बारीक चूर्ण कर रखें।

सेवन-विधि व मात्रा—१ रत्ती से ... तक उक्त चूर्ण को अर्क पुदीना के साथ ... कराएँ।

(४) मेथी भुनी, जीरा भुना, ... कपूर, इन्द्रयव, जामुनकी गुठली और आम ... गुठली। इन सबको समभाग लेकर बारीक ... करें और जितना यह चूर्ण हो उतनी ही मात्रा ... शुद्ध भाँग का चूर्ण मिलाकर कागदार बोतल ... सुरक्षित रखें।

मात्रा—बच्चों को आधी रत्ती से १ र... पूर्ण वयस्क मात्रा—२ रत्ती से १ माशा ...

अनुपान—अर्क पुदीना और अर्क सौंफ।

शूलयुक्त अतिसार में—
सत अजवायन, सत पोदीना, औहर ...

ीरा सफेद भुना हुआ और मांड प्रत्येक २-२ ो०, छोटी इलायची दाना ६ मा०, शंख भस्म तो०, कौडी भस्म १ तो० और मूली का क्षार तो०। निर्माण-विधि—इन सबको पुदीना के रस मे बारह प्रहर घोट कर सुखा लें। पुनः चूर्ण कर शीशे के कागदार बोतल में वायु से सुरक्षित रखें। मात्रा—१ रत्ती से ६ रत्ती तक।

अनुपान—शुद्ध जल। गुण—उक्त प्रकार के शूल तथा अन्य सभी प्रकारके उदर शूल की दशा में इसकी एक मात्रा देते ही तत्काल शूलकी शांति होती है।

डॉक्टरी योग

(१) सोडा बाईकार्ब	१ ग्रेन
स्पिरिट अमोनिया एरोमेटिक २० मिनिम (बुंद)	
स्पिरिट क्लोरोफॉर्म	५ मिनिम
टिंक्चर कार्ड० को०	२० मि०
टिंक्चर कैनाबिस इण्डिका	५ मिनिम
एक्वा एनिस	१ आउंस

यह एक मात्रा है।

ऐसी ही एक एक मात्रा दिनमें तीन बार देनी चाहिए।

उपयोग—यह अतिसार के लिए सर्वोत्कृष्ट वायुनिःसारक औषध है।

(२) स्पिरिट क्लोरोफॉर्म	१ ड्राम
स्पिरिट अमोनिया एरोमैटिक	१ ड्राम
टिंक्चर ओपियाई	१ ड्राम
" कैनाबिस इण्डिका	१ ड्राम
" कार्ड० को०	२ ड्राम
" कुचियाई	१ ड्राम
" कैटेक्यू	१ ड्राम
रेक्टीफाइड स्पिरिट	८ आउंस
शुगर प्योर (शुद्ध शर्करा)	६ आउंस

इनको भली प्रकार मिलाकर स्टॉपर्ड (शीशे के डागदार) बोतल में रखें।

मात्रा—पूर्ण वयस्क मात्रा, १० से ३० बुंद तक। बालक को, २ से १० बुंद तक (अवस्थानुसार)।

अनुपान—इसकी एक मात्रा द्विगुण शुद्ध जल में मिलाकर रोगानुसार दिन में तीन बार अथवा तीव्रता की हालत में २-२, ३-३, घंटे के अन्तर मे दें।

उपयोग—इसे अतिसार की प्रत्येक अवस्था में दे सकते हैं। यह उक्त रोग की रामबाण औषध है और शतशोऽनुभूत है।

नोट—अतिसार के अन्य भेदों की चिकित्सा आदि तथा योगों को क्रम में उनके पर्यायों के सामने देखिए।

अतीसारमें प्रयुक्त होनेवाली औषधियाँ
(आयुर्वेदीय तथा यूनानी)

आमिश्रित

सुगंध बाला, लवण, नीलोत्पल, (निलोफ़र), उशीर (खस), लोध, पाठा, वच, चिरायता, धयपुष्प (धायकी), दाडिम्ब अर्थात् अनार की छाल (रस, पत्र, फलत्वक् और बीज), सतला; (चिरकारी वा पुरातन) अगारी फल, विल्व, सप्तपर्ण, भंग, थंडखरबूज़ा, काफी (मलेरफल), दूर्वा, जामुन (जम्बु), सरपुंखा, निर्मली (कतक), हरीतकी, अंगूर वा लाल मुनक्का, चौलाई (तण्डुलीय), सीताफल (शरीफ़ा), सुपारी, समुद्रफल, समुद्रशोष, कचनार, पलास निर्यास (कमरकस, ढाक का गोंद), पतंग, देवदारु, दालचीनी, धातकी, नागरमोथा, कसेरु, तिन्दुक, गोजिह्वा, आमला, कपित्थ और भूम्यामलकी; (उग्र व पुरातन) ईसबगोल का छिलका, कुडा की छाल, इन्द्रजौ, राजन, कानन, एरण्ड, ज़ख्म हयात (घाव पत्ता), चन्द्रसूर, आम्र (बीज व छाल तथा निर्यास), कायापुटी और केला; (वैशूच्यिक तथा ग्रीष्म) जायफल, नीबू का रस, सन्तरा का रस, मेंहदी, कृष्ण जीरक, कमल, कपूर, दरियाई नारियल, ज़हर मुहरा खताई, अर्क सौंफ, अर्क पुदीना (अर्क नाना) अहिफेन, पत्थर का फूल, करञ्ज, पोनशाल माल बीज, रुद्राक्ष, अजवाइन, माजूफल और कतक, (दन्तोद्भेजजन्य) रेवन्दचीनी, और चूर्णोदक; (व लालासार) काकड़ासिंगी, और एरण्ड तैल,

अफीम; (प्रबलज्वरातीसार) अगस्तिया की जाति के वृक्ष, साल, रोहिना और राल; (एस्ट्रोनिक अर्थात् आमाशयनैर्बल्यहरद्रव्य) कुचिला, आसन प्रभृति, पिरङ्गतगार भेद, अर्जुन, बहेड़ा, तिर्याक् फ्राल्क, जंगली काली मरिच आदि और शृंगाटक (सिंघाड़ा प्रभृति); (नास्तिक) सम्भालू प्रभृति, धातकी (धवपुष्प), मेथी, अन्तमल (जंगली पिकवन), मूत्र (भूप का), आर्द्रक और बदरी प्रभृति ।

अतिसार में प्रयुक्त डॉक्टरी औषध

अकमगाल, (भूपपित्त) अर्जेन्टाइ नाइट्रास, अर्जेन्टाइ ऑक्साइडम्, आर्सेनिक (संखिया), ऑइल टेरेबिन्थीनी (निरांध तैल), एरिका (सुपारी), आल्सटोनिया (सप्तपर्ण), युवी अर्सोई (रीछ द्राक्ष), इदेप्ट (सुराबीज), इफिकेक्वाना, इंमबगोल, एसिड नाइट्रिक (शोरकाम्ल), इन्फ्युजन लाइनाई (अतसी फांट); एकोरस (बच), एलम (फिटकरी), अकेशिया (कीकर), ओपियम् (अफीन), एसिड सल्फ्युरिक डिल (जलमिश्रित गंधकाम्ल), अकेशिया कैटेचू (खदिर), क्युप्राई अमोनिया सल्फास, कलम्बा, कार्बोलिक एसिड (कज्जलाम्ल), क्लोरोफॉर्म (संमोहिनी), केम्फर (कपूर), केनाबिस इण्डिका (भंग), कैल्सिस कार्बनास, कैल्सिस हाइपोफॉस्फॉस, कैलाट्रापिस, काफी, कैप्सिकम् (लाल मिर्च), कैटाक्यु (खदिर), कैसकेरिल्ला, कुर्चि (कुटज त्वक्), क्रियोज़ोट, क्युप्राई सल्फास (ताम्र गंधित) करवेरिया, कैस्टर आइल (एरण्ड तैल), काइनो (विज सारनिर्यास), क्रासिया, कोय.क्रम गाम, गैलिक एसिड (माज्वाम्ल); डिकक्ट ग्रेनेटा,

ज़िन्साइ सल्फास, ज़िन्साई आक्साइडम्, टैनिक एसिड (कषायिनाम्ल), नाइट्रो हाइड्रोक्लोरिक एसिड, नक्सवामिका (कुचिला), पोटाश सल्फ्युरेटा, प्रम्बाई एसिटास, पलास गोंद, माइरिस्टिका, मैटिको, फेरम (लौह); विसमथम ऐल्बम, विसमथाई टैनास, बावई, तुलसी, बेल,

रक्तमोचक, रयाटनि, लाइकर फेरि ... लाइकर फेरि पर क्लोराइड, लाइकर ... विरिट्राम विरिडि, मैलिमिलेट, मिना ... सल्फ्युरिक एसिड, सप्रम इडि, सोडियाई इडम् (सैंधव), सल्फर (गंधक), मैदोक, कॉरोसिव सब्लिमेट और हिमैटिक मिश्र।

(बालातीसार में)—अर्जेन्टाई ... इपिकाक्वाना, एसिड सल्फ्युरिक डि, ... यम् (अहिफेन), कलम्बा, कॉफी, ... (कपूर), क्युप्राई सल्फास, करवेरिया, कॉरो... सब्लिमेट, ज़िन्साइ ऑक्साइडम्, नाइट्रि... डाइल्युटेड, पेप्सीन, प्रम्बाई एसिटास, ... बिस्मथाई कार्ब, टिंक्चर केनाबिस इण्डि... स्पुयार्स, लाइकर हाइड्राजें, लाइकर ... लाइकर फेरि पर नाइट्रिम, सैलोल, हाइड्रा... क्रीटा, हाइड्राजें कॉरोसिव सब्लिमेट।

नोट—अतिसारोक्त योगों का वर्णन ... इसके भेदों की चिकित्सा लिखते समय ... जाएगा।

अतिसार नाशक शास्त्रीय योग

नेत्रबाला, अदरख, नागरमोथा, पित्त... और दारि इन्हें पकाकर वस्त्र से छानकर ... क्षुधा लगने पर नियत समय पर ... दें।

शालपर्णी, पृश्नपर्णी, बड़ी कटेरी, छोटी क... खिरेटी, गोखरू, पाठा, सोंठ, धनिया इन्हें ... के साथ क्वाथ कर देने से अतिसार शांत होता ... शालपर्णी, खिरेटी, बेलगिरी, पृश्नपर्णी ... सिद्ध की हुई पेया नीबू तथा अनार का रस ... कर पीने से कफ और पित्तातिसार दूर होता ... आमातिसार से पीड़ित रोगी को प्रथम ... तथा कब्ज करने वाली कोई भी औषध ... न दें, क्योंकि ऐसा करने से आदि में ही ... बद्ध हो जाने से शोथ, पांडु, प्लीहविवर्द्धन, ... गुल्म, उदरशूल, ज्वर, दण्डक, अलसक, ... अर्श, संग्रहणी इत्यादि रोग पैदा हो ... है। जिनका दोष वृद्धि होकर बल, धातु ...

तिव हो गए हों तथा मल भी जाता हो तो उसे स्ततः स्तम्भित कर देना उचित है। जिस रोगी के थोड़ा थोड़ा बँधा हुआ शूल सहित दस्त आते हों ऐसे रोगी को हड़ और पिप्पली की चटनी या लघु विरेचन देना चाहिए। चरक द० लि० चि०।

अतिसारकी ati-sáraki-सं० त्रि० } -हिं० वि०
अतिसारी ati-sári } अतिसार रोगी (Dysenteric, afflicted with dysentery; Cathartic) वै० श०।

अतिसारकुठारः atisárakuthárah-सं० पुं० बड़ी इलायची, वत्सनाभ, धतूरे के बीज, सुहागा, इन्द्रजौ, जीरा, सोंठ, अहिफेन, नागभस्म, अभ्रक, अफीम, करञ्ज के बीज प्रत्येक समान भाग चूर्ण कर धतूरे के पत्र के रस में घोटकर सुखाकर चूर्ण कर लें। मात्रा-१-३ रत्ती। अनुपान शहद। यह शिवजी का कहा योग है। यो०।

अतिसारघ्नः ati-sáraghnah-सं० पुं० श्वेत पापड़ा, श्वेतपापड़ा, दवन पापड़ा-हिं०। श्वेतपर्पटक-सं०। (Oldenlandia biflora, Roxb) वै० श०।

अतिसारघ्नी ati-sáraghni-सं० स्त्री० अतिसार नाशक औषध, अतीस (Aconitum heterophyllum, Wall.) वै० निघ०।

अतिसार दलनोरसः atisáradalano-rasah-सं० पुं०

(१) पारा, गंधक, वत्सनाभ प्रत्येक समान भाग ले चित्रक के क्वाथ के साथ पीसें, फिर इसे कौड़ियों के भीतर भरें। उन कौड़ियों के मुखों को पिसे हुए भिलावों की लुगदी से बन्द करके हाँडी में रख उसका मुख बन्द कर दें और उस आरह जंगली कंडों से पकाएँ। इसी तरह तीन पुट देने से सिद्ध होता है। मात्रा--३ रत्ती। गुण--अतिसार, संग्रहणी, शूल और मन्दाग्नि को नष्ट करता है। अनुपान--भाँग और जीरा। र० यो० सा०।

(२) तूतिया, पारा, वत्सनाभ, गंधक, शंखभस्म, अभ्रकभस्म, अफीम और धतूरबीज प्रत्येक समान भाग लें। फिर भाँग के रस और समुद्रशोष से पृथक् पृथक् सात सात भावना दें। मात्रा-१ रत्ती। गुण-सम्पूर्ण अतिसारों को दूर करता है। रसायन सं० अतिसाराधिकारे।

अतिसारनृसिंह रसः atisára-nrisinha-rasah-सं० पुं० शुद्ध अहिफेन २ तो०, शुद्ध पारद १ तो०, शुद्ध गंधक १ तो०, प्रथम पारद, गंधक की कज्जली कर पुनः अहिफेन मिश्रित कर भांग के रस में मर्दन करें। इसी तरह धतूर के रस में मर्दन कर १ रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसे जायफल के साथ देने से घोर अतिसार दूर होता है। वृ० रस० रा० सु०।

अतिसार भेषजम् atisára-bheshajam-सं० क्लो० (१) लोध-हिं०। लोध्र-सं०। (Symplocos racemosa)। (२) सङ्ग्रहनिवारक औषध। अतिसारघ्न, अतिसार नाशक औषध। (Anti dysenteric).

अतिसार भैरवीवटी atisára-bhairavi-vati-सं० स्त्री० जावित्री, अफीम, [illegible], शीतलचीनी, चन्दन, केशर, [illegible] प्रत्येक समान भाग, लें, [illegible] पुनः पारा भस्म, अहिफेन [illegible] मिला कर १ प्रहर मर्दन [illegible] प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ [illegible] चावल का पानी। गुण [illegible] को नष्ट करती है। [illegible]

अतिसारवारणरसः [illegible] -सं० पुं० [illegible] [illegible] इनको [illegible] [illegible]

वत्सनाग, आम की गुठली, धय पुष्प, अफीम, भाँग प्रत्येक समान भाग ले चूर्ण कर मिलाय के स्वरस में घोटकर १ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ। गुण—इसके सेवन से सम्पूर्ण अतिसार शीघ्रतामें दूर होजाते हैं। र० यो० सा०।

अतिसार सेतुः atisára-setuh–सं० पु'० सिंगरफ, लवङ्ग, राल, मिर्च, ताम्रभस्म, अहिफेन प्रत्येक समभाग लेकर चूर्ण करें। इसे चावल के धोवन से सेवन करने से सभी प्रकार के साध्य असाध्य अतिसार दूर होते हैं। मात्रा–१–२ रत्ती। रस० यो० सा०।

अतिसार हरो रसः atisára-haro-rasah –सं० पु'० (१) पारा, गंधक, अभ्रक भस्म, हरताल, सुहागा, सिंगरफ और वत्सनाग प्रत्येकको तुल्य भाग लेकर चूर्ण करें। पुनः धत्तूर के पत्र के रस से सात दिन तक अच्छी तरह घोंटें। फिर रत्ती प्रमाण की गोलियाँ प्रस्तुत कर रख लें। मात्रा—१ रत्ती, भाँग के चूर्ण और शहद के साथ खाने से ज्वर और अतिसार नष्ट होते हैं। रस० यो० सा०।

राल, मोचरस, अफीम, मीठातेलिया, अतीस, सोंठ इनको समान भाग लेकर चूर्ण बनाएँ। इसको उचित मात्रा के साथ खाने से अतिसार नष्ट होता है। र० प्र० सु० अ० ८।

अतिसारान्तको रसः atisárántakorasah –सं० पु'० स्वर्ण घटित रससिंदूर, रसकपूर से निकाला पारा और स्वर्ण भस्म घटित पर्पटी इन सब को बारीक घोट कर रक्खें। मात्रा–१ रत्ती। गुण—यह मृत्यु जैसे भयानक अतिसार को दूर करता है। रस० यो० सा०।

अतिसारेभ सिंहो रसः atisárebha-sinho-rasah-सं० पु'० शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, अहिफेन प्रत्येक समान भाग और पारेका ½ मा० जायफल मिलाकर भाँग और धतूरे के रस की पृथक पृथक भावना दें। मात्रा–१ रत्ती। यह अतिसार रूपी हाथी के लिए सिंह है। रस० यो० सा०।

अतिसारस्या ati-sárasyá सं० स्त्री० (Vanda Roxburghii) वै० नि०

अतिसूक्ष्मः ati-súkshmah-सं० त्रि० अत्यन्त सूक्ष्म, अतिशय सूक्ष्म, बहुत छोटा (subtle).

अतिसेवनम् ati-sevanam-सं० क्ली० किसी वस्तु का अधिक मात्रा में सेवन, अधिक उपयोग में लाना।

अतिसौम्या ati-soumyá-सं० स्त्री० मधुलता, मुलेठी की बेल ((Glycyrrhiza glabra) रा० नि० व० ६।

अतिसौरभः ati-sourabhah-सं० पु'० आम का पेड़। (Mangifera Indica) भा० पू० फ० व०।

अतिस्कंधा ati-skandhá-सं० स्त्री० कुलत्थी, लाल कुल्थी-हिं०। (Dolichos biflorus.) वै० नि०

अतिस्तम्भित् ati-stambhit-हिं० रुका हुआ।

अतिस्थूल atisthúla-हिं० वि० [सं०] संज्ञा पु'० [सं०] मेद रोग का जिस में चरबी के बढ़ने से शरीर मोटा हो जाता है।

अतिस्थूल वर्त्म ati-sthúla-vartma पु'० (Foul ulcer) दुष्टव्रण, दूषित व्रण। च०।

अतिस्निग्धः ati-snigdhah-सं० त्रि० स्निग्ध, बहुत चिकना।

लक्षण—मुख द्वारा श्लेष्म प्रस्राव का शिर का भारीपन और इन्द्रियविभ्रम स्निग्धता के लक्षण हैं। इसके निवारण प्रक्रिया ग्रहण करनी चाहिए। वै० नस्य चि०।

अतिस्रवा ati-sravá-सं० स्त्री० मधुस्रवा-बं०। वै० निघ०।

अतिस्वेदः ati-svedah-सं० पु'० (१) पसीना देना, अति स्वेदस्राव कराना। अ० १७। (२) बहुत पसीना आना।

क्षिप्त संधिः ati-kshipta-sandhih -सं० पुं० (Complete dislocation) संधि का सर्वथा भिन्न हो जाना, अत्यन्त संधि-च्युति, जिसमें संधि और अस्थि दोनों हट जाएँ। इसमें दोनों संधियों और अस्थियों में अन्तराय हो जाता है और पीड़ा होती है। सु० नि० १५ अ०। "अतिक्षिप्ते द्वयोः संध्यस्थ्नोरतिक्रांतता वेदना च"। च। देखो— भग्नः।

...क़ antiq-अ० (१) पुरातन, प्राचीन, पुराना-हिं०। देरीनह्, कुहनह्, पुराना-फ़ा०। (२) पुरातन चमा। (३) छोहारा भेद। (४) ...ल। (५) सुवर्ण। (६) मद्य। (७) ...द्य।

...त् atit-अ० (१) धुंआ। (२) आटोप, ...गुड़गुड़ाहट (क़राक़र) । गर्गलिङ्ग Gurgling-इं०। म० ज०।

...न्द्रिय atindriya-हिं० वि० [सं०] जो इंद्रिय ज्ञान के बाहर हो। जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा न हो। अगोचर। अप्रत्यक्ष। अव्यक्त।

...स atisa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अति-विषा, अतिवृक, आतइच। एकोनाइटम् हेटरोफाइलम् Aconitum Heterophyllum, *Wall.* (Root of—); ए० कोर्डेटम् (A. Cordatum)-ले०। इंडियन अतीस (Indian Atees)-इं०।

संस्कृत पर्य्याय—घुणवल्लभा (भा०), शृङ्गिका (शब्दर०), विश्वा, विषा, प्रतिविषा, उपविषा, अरुणा, शृङ्गी, महौषधं (अ०), काश्मीरा, श्वेता (र०), प्रविषा (के), श्वेतकन्दा, भङ्गा, भङ्गुरा, विरूपा, श्यामकन्दा, विषरूपा, वीरा, माद्री, श्वेतवचा, अमृता, अतिविषा, अतिविषः, शुक्लकन्दा, शृङ्गीका, भृङ्गी, मृदी, शिशु भैषज्य, अतिसारघ्नी, घुणप्रिया, शोकापहा, धन्वीका। (विलायती) वज्जे-तुर्की-द०। मातइच्-यं०। वज्जे-तुर्की फ़ा०। (शीमै) अतिविडयम्-ता०। (सीम) अतिवस (चेट्टु), अतिवासा-ते०, तै०। अतिविष-मह०। अतिवख (विष) नी-कली, अतिवस, अतिवख, अतिविष-गु०। आंगे-सफेद, मोहन्देगज सफेद -काश०। आइस-भो'टि०। सूखी हरी, चिति जड़ी, पत्रीस, परीस, बोंगा-पं०। अतीविषा -क०।

वत्सनाभ वर्ग

(N. O. Ranunculaceæ.)

उत्पत्ति-स्थान—एक पौधा जो हिमालय के किनारे सिंध से लेकर कुमाऊँ तक समुद्र-तट से ६,००० से लेकर १२,००० फ़ीट की ऊँचाई पर पाया जाता है।

नाम विवरण—"श्वेतकन्दा", "भंगुरा", "घुणवल्लभा" आदि परिचय ज्ञापिका संज्ञाएँ और "अतिसारघ्नी" और "शिशुभैषज्यम्" प्रभृति गुणप्रकाशिका संज्ञाएँ हैं।

वानस्पतिक वर्णन—अतीस के क्षुप हिमालय के ऊँचे भागों पर उत्पन्न होते हैं। इसके पत्ते नागदौन पत्र के समान किन्तु चौड़ाई में उससे किञ्चित् छोटे होते हैं। शाखाएँ चिपटी होती हैं और पत्रवृन्त मूल से पुष्पदण्ड निकलते हैं पुष्पदण्ड (पुष्पदण्ड की व्याख्या के लिए देखो—"आरग्वध") पत्रवृन्तसे दीर्घतर होते हैं प्रस्फुटित पुष्प देखने में टोपी की तरह दीख पड़ते हैं। ईषदीर्घ कंद के पार्श्व से मूल निकलता है। यह मूल अतीस (अतिविषा) नाम से विख्यात है। यह औषधि धूसर और श्वेत दो भागों में विभक्त होती है। धूसर लहरदार कंद जो श्वेत की अपेक्षा बड़े और लम्बे होते हैं, प्रधान मूल हैं और प्रायः पृथक कर कम दाम पर बेचे जाते हैं। तज्जन्य लघु कंद बाहर से धूसर वर्ण के और शाखाओं के सूक्ष्म चिह्नों से व्याप्त होते हैं। ये ½ से २ इंच लम्बे, शंक्वाकार या लगभग अण्डाकार, पतले मूसलावत छोरयुक्त, जो कभी कभी दो या दो से विभक्त होने की प्रवृत्तियुक्त होते हैं। सिरे पर छिलकायुक्त पत्राङ्कुर होता है। तोड़ने पर भीतर श्वेतसार के सफ़ेद कण दिखाई देते हैं। यह स्वाद में अतितिक्त और गंधरहित होता है।

राजनिघण्टुकार के मत से अतीस (अतिविषा) तीन प्रकार का है। जैसे, "त्रिविधातिविषा ज्ञेया शुक्लकृष्णारुणातथा।" अर्थात् अतीस शुक्ल, कृष्ण तथा अरुण भेद से तीन प्रकार का होता है। तीनों रस, वीर्य और विपाकमें समान होते हैं। परन्तु इनमें श्वेत जाति को उत्तम होता है। मदनपाल के मत से यह चार प्रकार का है। जैसे, "श्यामकंदाचातिविषा सा विज्ञेया चतुर्विधा। रक्ता श्वेता भृशकृष्णा पीतवर्णा तथैव च॥" अर्थात् रक्त, श्वेत, अत्यन्त कृष्ण और पीतवर्ण भेद से यह चार प्रकार का है। इनमें यथापूर्व अर्थात् क्रमशः पीत से कृष्ण और कृष्ण से श्वेत आदि गुणमें उत्तम और श्रेष्ठ होता है।

मख़ज़नुल-अद्वियह् में इसके तीन भेदों का वर्णन है अर्थात् अतीस, अतिभिक्षा और और श्यामकंद। मुहीतआज़म में केवल इसके दो ही भेद माने हैं। यथा—श्याम और श्वेत।

रासायनिक संगठन—अतीसीन (Atisine) नामक रवारहित एक अत्यन्त तिक्त क्षारीय सत्व (यह निर्विषैल है), वत्सनाभाम्ल (Aconitic acid), कषायीन, या कषायिनाम्ल(Tannic acid), पेक्टस सब्सटैंस (Pectous substance), बहुसंख्यक श्वेतसार, वसा तथा ऑलीइक, पामिटिक, स्टियरिक, ग्लिसराइड्स, वानस्पतिक लुआब, इक्षु शर्करा और (भस्मके मिश्रण २ प्रतिशत तक होते हैं।

मेटीरिया मेडिका ऑफ इण्डिया—आर० एन० खोरी भाग २, पृष्ठ ३)।

प्रयोगांश—कन्द।

औषध-निर्माण—(१) चूर्ण; मात्रा—२ रत्ती से ३॥ मा० तक।

ज्वर प्रतिषेधक रूप से—१ से २ ड्राम (२॥ ड्राम पर्यन्त यह निरापद होता है)।

पत्य रूप से—१० से ३० ग्रेन (५ से १५ रत्ती) इस मात्रा में इसका ज्वरघ्न प्रभाव अत्यन्त निर्बल होता है।

ज्वरघ्नरूप से—४० ग्रेन से १॥ ड्राम तक।

कृमिघ्न रूप से-

(२) टिंक्चर—(८ में १ भाग);

मात्रा—१० से ३० बुंद।

(३) कंद का क्वाथ।

वे युरूपीय औषध जिनका यह प्रति[illegible] हो सकता है। ज्वर प्रतिषेधक रूपसे-सिं[illegible] के क्षारीय सत्व (क्षारोद) यथा क्वीनीन प्रभृ[illegible]

ज्वरघ्न रूप से—पल्विस जेकोवाइ के[illegible] पल्विस एंटिमोनियम् (अंजन चूर्ण), [illegible] एंटिमोनियाई एसीटास।

(५) पत्य रूप से—जेंशन और कलंबा।

इतिहास—अतिविषा नाम से अती[illegible] ज्ञान आज का नहीं, प्रत्युत अति प्राचीन [illegible] अतः आयुर्वेद के प्राचीन से प्राचीन ग्रंथ[illegible] चरक, सुश्रुत तथा वाग्भट्टादि में इसका [illegible] वर्णन आया है। यही नहीं, बल्कि विविध [illegible] पर इसके लाभदायक उपयोग की उन्होंने [illegible] भूरि प्रशंसा की है जैसा कि आगे के वर्ण[illegible] विदित होगा।

फिर डिमक महोदय तथा उनके पादानु[illegible] शील एवं आयुर्वेद शास्त्र से सम्यक् प[illegible] चोपरा महोदय के ये वचन "The earl[illegible] notices of Ativisha are to [illegible] found in Hindu works [illegible] Matéria Medica, Sarang[illegible]hara and Chakradatta." [illegible] यह अर्थ होता है कि शार्ङ्गधर तथा चक्र[illegible] पूर्व के आयुर्वेदिक ग्रन्थों में अतिविषा का [illegible] नहीं है, कहाँ तक सत्य है, इसका पाठ[illegible] निर्णय कर सकते हैं।

आयुर्वेद के अति प्राचीनतम ग्रन्थों में [illegible] इसका उल्लेख है ही जिसके लिए इस [illegible] प्रकार के प्रमाणों की आवश्यकता नहीं, [illegible] सूर्य प्रकाशवत् देदीप्यमान एवं स्वयं सि[illegible] हैं। अरबी तथा फ़ारसी ग्रन्थों में इसका [illegible] संक्षिप्त वर्णन आया है और यह स्पष्ट [illegible]

ज्ञात होता है कि उन्होंने इसके वर्णन में आयुर्वेद ग्रन्थों का ही अनुकरण किया है।

इन सबके पश्चात् पाश्चात्य लेखकों ने अपने ग्रन्थों में इसका उल्लेख किया।

प्रभाव तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार

अतीस, दीपन, पाचन, संग्राहक और सर्वदोष नाशक है। च० सू० २५ अ०।

अतीस कटु, उष्ण, तिक्त तथा कफ, पित्त और ज्वर नाशक, आमातिसार, कास, विष, एवं छर्दिनाशक है। रा० नि० द० ६। भा० म० ३५ अ० मन्त्र दि०। धन्व० नि०।

अतीस, सर्व दोषनाशक, शोथघ्न (लेपार्थ), श्लैष्मिक रोगनाशक (२० प्रकार के श्लेष्म रोग का नाशक) और रसायन है। मद० व० १।

अतीस गरम, कटु, तिक्त, पाचन और दीपन कर्ता है। जीर्णज्वर, अतिसार, आमवात, विष, खांसी वमन और कृमि रोग को दूर करता है। भा०।

अतीस, पाचन, तिक्त, ग्राही और दोषनाशक है। राजवल्लभः।

अतिविषा तथा कटुकी प्रभृति की उष्ण गोमय जल द्वारा शुद्धि होती है। रसा० कौ०।

शिशु के कास, ज्वर तथा वमन प्रतीकारार्थ उपयुक्त मात्रा में अतीस का चूर्ण मधु के साथ सेवन कराना चाहिए। वंग० जी० सं० ८१६ पृ०।

वैद्यकीय व्यवहार

(१) आमातीसार—

"दद्यात् सातिविषां पेयां सामे साम्लां रुजागराम् (च० सू० २ अ०)।"

अतीस १ तोला, सोंठ १ तो०, इनको ६२ जल में सिद्ध करें। जब ५१ जल शेष रहे तब इसे लवण से छौंक कर इसमें अभीष्ट वस्तु की पेया प्रस्तुत करें। इसमें किञ्चित् खट्टे अनार का रस योजित कर आमातीसारी को व्यवहार करावें।

(२) कृमिरोग—चकोट की जड़ की छाल ३ भाग और अतीस १ भाग इसको तंडुलोदक (चावल के धोवन) में पीस कर पान करें। इससे कृमि रोग शमन होता है।

वंग० जी० सं० १२१ पृष्ठः।

(३) "आमगति विषाभयाः"।

च० द० ज्वर० चि० पिप्पल्याद्यघृत।

वक्तव्य - चरक चिकित्सास्थान २३ अ० एवं सुश्रुत कल्पस्थान २य अध्याय में स्थावर विष का वर्णन आया है। चरकोक्त मूल विष एवम् सुश्रुत के मूल विष या कन्द विष की नामावली में अतिविषा (अतीस) का उल्लेख दीख नहीं पड़ता। उपविष के मध्य इसका पाठ नहीं। सुश्रुत और चरक में जहाँ सम्पूर्ण विषों का उल्लेख आया है वहाँ वे इसके गुणों से सम्पूर्ण अपरिचित हैं। सुश्रुत के प्राचीन टीकाकार डल्हण मिश्र लिखते हैं—

"मूलादि विषाणां धत्तपर्यरपि ज्ञातुमशक्य स्यात्। तत्र तानि हिमवत् प्रदेशे किरात शबरादिभ्यो ज्ञेयानि।"

क० स्था० २ य० अ० टी०।

मदनपाल वर्ण भेद से इसका गुणांतर स्वीकार करते हैं। परन्तु, राजनिघंटुकार ऐसा नहीं करते।

सुश्रुत अतिसार चिकित्सा में और वाग्भट्ट अतिसार, ज्वरातिसार, और ग्रहणी चिकित्सा में भिन्न भिन्न औषध के साथ अतीस का पुनः पुनः प्रयोग दिखाई पड़ता है। चरक और सुश्रुत के केवल जीर्णज्वर की चिकित्सा में अतीस का प्रयोग नहीं आया है। चरक के "कालिंगक व्यामलकी सातिविषातिविषा स्थिरा।" (चि० ३ अ०) पाठ में तथा सुश्रुतोक्त "पिप्पल्यतिविषा द्राक्षा।" (उ० ३९ अ०) पाठांतर्गत विषम ज्वरहर घृत में अन्यान्य बहुशः वस्तुओं के साथ अतीस व्यवहृत हुआ है। सुश्रुत एवं वाग्भट्ट में केवल ग्रहणी तथा कास चिकित्सा वा रसायनाधिकार में अतीस का व्यवहार नहीं दिखाई देता।

यूनानीमतानुसार—

प्रकृति—२ कक्षामें उष्ण और १ कक्षामें रूक्ष। स्वाद—किञ्चित् विकट। हानिकारक—आमाशय के लिए। कब्जि है। दर्पघ्न—सर्द व तर देसुएँ। मात्रा शर्बत—आधा से १ माशा तक। मुख्य प्रभाव— श्लेष्मघ्न और वायुलयकर्ता।

गुण, कर्म, प्रयोग—अतीस कामोद्दीपक, क्षुधावर्द्धक, ज्वर प्रतिषेधक, कफ तथा पित्तजन्य विकारों को नाश करनेवाला, अर्श, जलोदर तथा कफ वा पित्तजन्य वमन एवं अतीसार को दूर करता है। वायुको लय करता और श्लैष्मिक रोगों को लाभप्रद है। म० अ०। (सिविपैज)

नव्यमत—अतीस, तिक्त, पाचक, बल्य, बलकारक एवं ज्वरप्रतिषेधक है और ज्वर तथा अन्य आवाहिक-विकारादि-जन्य रोगावसान की दशा में दौर्बल्य दूर करने के लिए इसका व्यवहार होता है। कास, अजीर्ण और अग्निमांद्य में अतीस का उपयोग किया जाता है। इन-सब रोगों के उपसर्ग रूपमें हुए अतिसार में इसे सुगन्ध, तिक्त-एवं कषाय द्रव्यों यथा गुरुच, करंज और कुटज आदि के साथ एवं ज्वर प्रतिषेधक रूपसे मलेरिया ज्वरों (विषम ज्वरों) में इसका प्रयोग किया गया और इसमें कुछ सफलता भी हुई; परन्तु क्वीनीन की अपेक्षा यह अत्यन्त निम्न श्रेणीका सिद्ध हुआ विरुन के साथ इसको सेवन करने से आंत्रस्थ कृमियाँ निर्गत होती हैं। (मेटीरिया मेडीका ऑफ इंडिया—२ य० खंड ३ पृ०)

मोहीदीन शरीफ

प्रभाव—ज्वर प्रतिषेधक (परिवाय ज्वर नाशक), उत्तम और बल्य। उपयोग—सविराम ज्वर तथा सामान्य स्वल्पविराम वा निरंतर ज्वर, कई तरह के अजीर्ण एवं दौर्बल्य में लाभदायक है।

रोग अथवा साधारण प्रकारका अतीस अत्यंत लाभप्रद परिवायनिवारक (Antiperiodic) एवं उत्तम है; किन्तु इसके बलोत्तम एवं निश्चित प्रभाव के लिए इसको पूर्ण औषधीय मात्रा में उपयोग करना चाहिए जो स्वयं के अनुभव के अनुसार १ से २ ड्राम तक। ?॥ ड्राम तक यह सर्वथा निरापद सिद्ध है। लघुतर मात्रा (२० से ४० ग्रेन) में यह उत्तम बल्य है। परन्तु इसमें इसका परिवाय निवारक प्रभाव अत्यन्त न्यून होता है। (मेटीरिया मेडिका ऑफ मद्रास १ म भाग।)

आर० एन० चोपरा एम० ए० एम० डी०

पहाड़ी लोग इसको प्रभावशून्य रूपमें प्रकार जानते हैं एवं इसे शाक रूप से खाते हैं काम में लाते हैं। देशी औषध में यह मुख्य तिक्त बल्य रूप से व्यवहृत है। इस देश इसको परिवायनिवारक, कामोत्तेजक, एवं बल्य रूप से व्यवहार में लाते हैं।

(इंडिजिनस ड्रग्स ऑफ इंडिया)

अतीसारः atīsāraḥ-सं० पु० (हिं० पु०) देखो—अतिसार (Diarrhœa)

अतुकार्णी atukārṇī-सं० स्त्री० जमालगोटा (Croton polyandrum, Roxb.) देखो—दन्ती।

अतुतिन्लप atutinlap-मला० गुप्तवी, पत्रबद्ध—सं०। गुधारी, किरमारा-हिं०, द०, बं०। Aristolochia Bracteata, -ले०। Birth-wort, worm-killer -इं०। इं० मे० मे०।

अतुनेटी atūneṭī ता० सोल-मं०। (Euonymous Aspera) पीकराम, गोबरा -बर०।

अतुलः atulah-सं० पु० } (१) श्लेष्मा।
अतुल atula हिं० संज्ञा पु० } (phlegm)। (२)तिल का वृक्ष, तिलवृक्ष—हिं०। तिलः (क०)वृक्ष-सं०। (Sesamum orientale) श० च०।

अतुलजन atuljan-प० बेबड़, कतुन, गुगम, बगराड़—मं०। मर्सिनी (Myrsine Africana, Linn.) म० बाइफेरिया (M. Bifaria, W.)

०। येवङ्ग; वाइ बड़ङ्ग-पं०, काश०, हिं०।
ाइनी-सं० ।ां० । पहाड़ी चा, चूर्ण-उ०
०उ०।

विड़ङ्ग वर्ग
(*N. O. Myrsinaceæ*)

उत्पत्तिस्थान—यह एक छोटा क्षुप है ।
ालय, काश्मीर और माल्टरेश (लवण श्रेणी) से
ाम तक।

प्रभाव तथा उपयोग—इसका फल सशक्त
क तथा विशेष-कर कद्दूदाना निःसारक
ना जाता है। यह वेमङ्ग -नाम से बिकता है
र (Samara Ribes) की प्रतिनिधि
रूप उपयोग में आता है । स्टयुवर्ट ।

इस क्षुप से एक प्रकार का निर्यास प्राप्त होता
जो,कल्टरस की एक उत्तम औषध है (येनु-
र)। जलोदर एवं उदरशूल में यह कोष्ठ--
कारी प्रभाव करता है। इं० मे० मे०।

इसका लगातार प्रयोग मूत्र को अत्यन्त
ीन करता है। इं० मे०,प्लां०।

रश्मि atuhina-rashmi-हिं० संज्ञा
० [सं०] the Sun सूर्य्य।

ãatúta-अ० तत्तू य (एक पक्षी है)।
A sort of bird.) लु० क०।

atúna-अड़ून।

ãatúsa.

, मुअत्तिस् ãauttása,-m ãattas

अ० छिंकारक औषध, वह औषध जो छींक
ए। इसका (ब० व०) अतमात है। इर्हा-
न Irrhine-इं०। म० ज०।

atúsá-हिं० भोजपत्र। (Betula
bhojapatra) इं० हैं० गा०।

atrishna-हिं० वि० [सं०] तृष्णारहित।
स्पृह। कामना हीन, निर्लोभ।

atripta-हिं० वि० [सं०] [संज्ञा
तृप्ति] (१) जो तृप्त वा संतुष्ट न हो, जिसका
न भरा हो।(२) भूखा।

ः atriptih-सं० स्त्री० } तृप्ति न्यता, अप-
atripti-हिं० संज्ञा स्त्री० }

रितोष, तृप्त न होना। इमतीप, मन न भरने
की अवस्था। च० शा०।

अतेइन्च atetch-अ० अतीस (Aconitum
Heterophyllum) इं० मे० मे०।

अतेज ateja-हिं० वि० [सं०] (१) तेजरहित
अंधकार युक्त, मंद, धुंधला।

अतेजः atejah-सं० स्त्री० (Shade,
Shadow) छाया। रा० नि० व० २१।

अतोय उदर atoya-udara-हिं० संज्ञा पु'०
"सर्वस्वतोयमरुण मशोफकम् भाति भारिकम्।"
वा० नि० अ० १२ श्लोक ११।

लक्षण जलोदर को छोड़कर सब प्रकार के
उदर रोगों में उदर का वर्ण लाल, सूजन रहित
और गुरुता रहित होता है । नसों के जाल के
समूह से करीले को तरह हो जाता है और
सदा गुड़गुड़ गुड़गुड़ करता रहता है। वायु
नाभि और अंत्र में विष्टब्धता उत्पन्न करके हृदय
कटि, नाभि, गुदा और वंक्षण में वेदना करता
हुआ अपने रूप को दिखाकर नष्ट हो जाता है.
तथा शब्द करता हुआ बाहर निकलता है।
इसमें मल बद्धता और मूत्र की अल्पता हो
जाती है। इसमें जठराग्नि अत्यन्त मन्द नहीं
होती है, भोजन में इच्छा नहीं होती और मुख में
विरसता उत्पन्न हो जाती है।

अ‍इमह् atãimah-अ० (ब० व०) तआम
(ए० व०), आहार, भोजन, खाना। डाइट्स्
Diets-इं०। म० ज०।

अत्कः atkah-सं० पु'० अङ्ग, अवयव (An
organ) उणा०।

अत्कुमः atkumah-अ० अपामार्ग। (Achyranthes aspera, *Linn.*)

अत्डी atdí-नै० पित्तल, पीतल (Brass)।

अत्तः attah-मल० जलौका, जोंक, जलायुका।
(Hirudo medicinalis). इं० मे०मे०।

अत्त atta-मल०, सिं० सीताफल, आत, शरीफा।
Custard apple (Anona squ-

amosa) । -हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अति] अति । अधिकता । ज़्यादती ।

अत्तका attaká-मल० मुण्डी, गोरखमुण्डी; (Sphæranthus Indicus).

अत्तनामामिडी attatá-mámidi-ते० पुनर्नवा, साँठ (Boerhaavia diffusa) । इं० मे० मे० ।

अत्तन,-ना attan,-ná-सिं० धुत्तूर, श्वेत धतूरा, कनक, धत्तूर । (Datura alba, *Linn.*) (White flowere I Dhatura)स० फा० इं० । इं० मे० मे० ।

अत्तबग़ुलहिन्दी attabaghul-hindi-फा० पाताल वन तामाल-सं० । अमरीका का जंगली तम्बाकू-हिं० । लोबीलिया Lobelia-ले० । मे० मो० डॉ० २ भा०

अत्तबड़ attabara-बं० भाला०, बड़, कगोरी -भा० । (Ficus Elastica)

अत्तमीमी Attamimi-अज्ञात ।

अत्तर्तीरुज़्ज़ाजी atthrtirúzzáji-फ़ा० कु० पोटा गंधेत्-सं० । पोटेसियम सल्फेट (Potassium sulphate)-इं० । मे० मो० डॉ० २ भा० ।

अत्तलु attalu-तै० जलायुका, जलौका, जोंक । (Hirudo medicinalis) । इं० मे० मे० ।

अत्तार aattára-अ० सुगन्धि द्रव्य बनाने और बेचने वाला, औषध विक्रेता, पनसारी । (A druggist) -हिं० संज्ञा पु०(अ) गंधी, सुगन्धि या इत्र बेचने वाला ।

अत्ताश aattásh-अ० नाक छिकनी-हिं० । क्षवः (कः) (कृत)-सं० । Diegea volubilis. ।

अत्ति atti-ता०, मल०, कना० । गूलर-हिं० । उदुम्बरफलम्-सं० । Ficus Glomerata, Roxb. (Fruit of-)-ले० । -हिं० संज्ञा पु० [सं०] देखो—अत्त ।

अत्तिअर attier-अं० शरीफ़ा, Custard apple (Anona squamosa) । इं० मे० मे० ।

अत्तिएवयूर attievayi-ता० गूलर फा० इं० ।

अत्ति-वयूर नत्तिर atti-vayia... -ता० कुल्लाल । गूलर का नीर-हिं० ।

अत्तिक्कल्लु attik-kallu-ता०
अत्तिकल्लु atti-kallu-तै०
} गूलर का नीर-हिं० । Toddy of Ficus Glomerata-ले० । स० फा० इं० ।

अत्तिका atti-ka-सिं० गूलर-हिं० । ...-सं० । (Ficus Glomerata, ...

अत्ति-तिप्पिलि atti-tippili-ता०, मल० पिप्पली, गजपिप्पली हिं० । गज-पिप्पली Scindapsus (Pothos) Officinalis, Schott. (Berries of) इं० । फा० इं० ।

अत्ति-पज़म् atti-pazham-ता० गूलर-हिं० । उदुम्बर, फलम्-सं० । Ficus glomerata, Linn. (Fruit of-) । फा० इं० ।

अत्ति-पण्डु atti-pandu-तै०
अत्ति-माणु atti-mánu-तै०
} गूलर (Ficus glomerata, Roxb.) स० फा० इं० । मे० मे० ।

अत्तिमान-अलोन attimit-alon- (Ficus excelsa, Vahl.) इसके ... उपयोग में आती है । मेमो० ।

अत्ति-यालुम् atti-yálum-मल० ...-हिं० । (Ficus glomerata, Roxb.) स० फा० इं० ।

अत्ति-रा atti-rá-सिं० गूलर का नीर (Toddy of Ficus Glomerata)

अत्तिरिल्ल-पाल attirilla-pála-सिं०

साग, बालू की भाजी–द० । (Gisekia Pharnacioides, Linn.) स०फा०इं० ।

रीक् attiryáq–अ० विषघ्न, विषहर, तिविष । (Antidote) । फा०इं० २ भा० ।

हण्णु atti-hannu–कना० गूलर (Ficus glomerata, Roxb.) स०फा०इं० ।

attier–कौं० सीताफल,शरीफा (Anona squamosa) । इं० मे० मे० ।

मट्टि attu-tummatti–ता० इन्द्रायन (Citrulus colocynthis) । इं० मे० मे० ।

attai–ता० जलायुका, जोंक,जलौका–हिं० । Hirudo medicinalis.) इं०मे मे० ।

attora–हिं० दाद मर्दन, चकवँड़, चक्र-ई । (Cassia alata, *Linn.*) फा० इं० ।

atnah–सं० पुं० सूर्य्य (The sun) निघ० ।

atnu–हिं० पुं० [सं०] The sun सूर्य ।

तून atbátúna–यु० एक प्रकार का मद्य जो द्राक्षा, मधु तथा गरम ओषधियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है । लु० क० ।

न atbána–अ० (ब०व०), तिब्न् (ए०व०) घास,तृण (Grass) । स० फा० इं० ।

न् áatbán–अ० कक्ष, कक्षतल, बगल –हिं० । पुत्रिकली Axillæ–ले० । आर्मपिट्स (Armpits)–इं० । म०.ज० ।

ते atbúta–यू० रीठा, अरिष्ट ।

म áatma–अ० धुना हुआ ऊन । लु० क० ।

मात atmáta–यू० }
मूत atmúta–यू० } रीठा (Sapindus trifoliatus, *Linn.*)

मोरह atmorah–बं० }
मरा atmora–बं० } मरोड़ फली, आवर्तनी

(Helicteres Isora) फा० इं० । इं० मे० मे० ।

अत्यः atyah–सं० पु० अश्व, घोड़ा (A horse) । वै० श० ।

अत्यग्निः atyagnih–सं० पुं० (१) क्षुधाधिक्य, भूख की अधिकता । च०द० अग्निमा० चि० । (२) भस्मक रोग विशेष । ऐसे रोगी को अत्यधिक क्षुधा प्रतीत होती है । देखो—भस्मकाग्नि । चिज० र० ।

अत्यन्त कुसुमाकरः atyanta-kusumákarah–सं० पुं० कङ्गुनी वृक्ष, मालकांगुनी । (Celastrus paniculata, *Willd.*)

अत्यन्तपद्मा atyantá-padmá–सं० स्त्री० कमलिनी । (Nymphæa edulis, *D. C.*) वै० नि० ।

अत्यन्त शोणितः atyanta-shonitah–सं० त्रि० (१) अतिरक्त, रक्ताधिक्य । –क्ली० (२) सुवर्ण गैरिक । वै० निघ० ।

अत्यन्तसुकुमारः atyanta-sukumárh–सं० पु० (१) कंगुनी वृक्ष (Panicum italicum) । (२) कङ्गुणी मालकांगुनी (Celastrus paniculatus, *Willd.*) रा० नि० व० १६ ।

अत्यम्बुपानम् atyambu-pánam–सं० क्लीं० अधिक जल पीना, परिमाण से ज़्यादा पानी पीना, इससे निम्न दोष होजाते हैं, यथा–अधिक जल पीने से तथा बिल्कुल जल न पीने से अन्न का विपाक नहीं होता । इस लिए मनुष्य को पाचकाग्नि वर्द्धन हेतु थोड़ी थोड़ी देर में जल पीते रहना चाहिए । इति जलपान लक्षण । रा० नि० व० १४ ।

अत्यम्लः atyamlah–सं० पुं० }
अत्यम्ल atyamla–हिं० संज्ञा पु० }

(१) अम्ली, इमली का पेड़ (Tamarindus Indicus) तेंतुल–बं० । रा० नि०

च०६। (२)मातुलुंग। (३)वन मातुलुंग। (४) आम्रातक (Spondias mangifera) –नि०अत्यम्लान्त रसयुक्त।

अत्यम्लदधिः atyamla-dadhih–सं०स्त्री० अत्यन्त खट्टा दही।

लक्षण—जिस दही में दाँत हर्षित होजाए, रोम हर्ष हो और कंठ आदि में दाह हो जाए उसे अत्यम्ल दधि कहते हैं।

गुण–यह अग्नि प्रदीपक, रक्तविकार, वात तथा पित्त को अत्यन्त उत्पन्न करता और रोगकारक है। यु० नि० र०।

अत्यम्लपर्णी atyamla parni–सं० स्त्री० (१) लताशूरण, सूरन। वल्लिशूरण लताविशेष। कण्डकवेमि। हेग्गोलि। रा० नि० व० ३। इसके पर्याय निम्न हैं, यथा—तीक्ष्णा, कण्डुरा, वल्लिशूरणः, करवल्ली, वनस्था, अरण्यवासिनी। (२) अम्ललोणी। गुण–अत्यम्लपर्णी रस में अम्ल, तीक्ष्ण, प्लीहा रोग व शूलको नाश करने वाली, वात एवं हृदय के लिए लाभदायी, दीपक, रुचिकारक तथा गुल्म व श्लेष्म रोग को लाभदायी है। मात्रा ३ मा०। रा० नि० व० ३। (३) रामचना वा खटुआ नाम की बेल

अत्यम्ला atyamlá–सं० स्त्री० जंगली बिजौरा नीबू–हिं०। मातुलुङ्ग वृक्ष, वन बीजपूरः–सं०। रा० नि० व० ११। रत्ना० तिन्तिडी। श० र०।

अत्ययः atyayah–सं० पुं०, } १–नाश,
अत्यय atyaya–हिं० संज्ञा पुं० } ध्वंस, मृत्यु
२–अतिक्रमण। हद से बाहर जाना। ३–दोष। ४–कृच्छ्र, कष्ट। रत्ना० अने० व०। मे० यत्रिकं।

अत्यर्कः atyarkah–सं० पुं० श्वेत मदारका वृक्ष –हिं०। शुक्लार्क वृक्षः –सं०। श्वेत आकन्द गाछ–बं०। Calotropis gigantea, R. Br. (the white var. of–) रा० नि० व० १०। देखो—आक।

अत्याग atyága–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] ग्रहण। स्वीकार।

अत्यानन्दा atyánandá–सं० स्त्री० योनिरोग विशेष। वैद्यक के ... एक भेद। वह योनि जो अत्यन्त मैथुन से भी सन्तुष्ट न हो। यह एक रोग है जिससे ... वंध्या होजाती है। इसका दूसरा नाम रतिप्रीता भी है। भा० म० ख० ४ भा०, योनिरोग। "अत्यानन्दा न सन्तोषं ग्राम्यधर्मेण विन्दति"

अत्यारक्ता atyáraktá–सं० स्त्री० जवा पुष्प –सं०। अड़हुल का पेड़–हिं०। (Hibiscus Rosa-Sinensis)

अत्यार्तवः atyártavah–सं० पुं० अधिक रजोस्राव। मेनोरेजिया Menorrhagia–इं०। च० क०।

अत्यालः atyálah–सं० पुं० रक्त चित्रक लाल चीता का पेड़। (Plumbago Rosea.) रा०।

अत्युग्रम् atyugram–सं० क्ली० हींग हिंगु–सं०। (Assafoetida) मद०।

अत्युग्रगंधा atyugra-gandhá–सं० हिं० संज्ञा स्त्री० १.कृष्ण गोकर्णी (Salvia zeylanica) । २–कृष्णापराजिता (Clitorea Ternatea, black var. of—) । ३–अ... (Apium involucratum.) । च० २।

अत्युदीर्णा atyudirná–सं० स्त्री० व्रण विशेष। बहुत तीक्ष्ण, बड़े मुँह के व्रण बहुत विस्तृत छेद हो जाए उसे ... कहते हैं। सु० शा० ८ अ०।

अत्युष्णः atyushnah–सं० पुं० (hot) अति गर्म, अत्यन्त उष्ण। ८ अ० श्लो० ४।

हः atyúhah-सं० पुं० कालकण्ठपक्षी। दात्यूह। मे० हर्यिक। See-Kálakant-hah,-kah.

हा atyúhá-सं०स्त्री०नीलशेफालिका-सं०। नील निर्गुण्डी-हिं०। नीलिका। मे०-ह्रयिक। (Vitex negundo).

atra-हिं० संज्ञा पुं० अस्त्र का अपभ्रंश।

तूस atrakatúsa-यु० कड़, कुसुमबीज। (Carthamus tinctorius, Linn.) फा० इं०।

atraja-फ़ा० निम्बुः। नींबू। (Citron) इं० हैं० गा०।

ऊलबत्न atráqul.batn-अ० पेट का मोड़। म० ज०।

तीन। सत, रज, तम नामक तीनों गुणों से पृथक्।

अत्रिज atrija-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अत्रि के पुत्र-(१) चंद्रमा, (२) दत्तात्रेय और (३) दुर्वासा।

अत्रिग्जातः atrigjátah-सं० पुं० चन्द्र। हे०।

अ(इ)त्रीफल atrífala-अ०इ० हिन्दी 'त्रिफला' से उक्त अरबी शब्द व्युत्पन्न है। त्रिफला से अभिप्राय हरड़, बहेड़ा और आमला आदि तीन फलों से है। अतः जिस मअ़जून में उपर्युक्त औषधियाँ पड़ती हैं उसे "अ(इ)त्रीफल" कहते हैं।

अत्रुश atrúsha } -अ० (ब० ध०),
अत्रश atrasha } अत्रश्ह (य० ध०)

बधिर, बधिरता का रोगी, जो ऊँचा सुने। डेफ Deaf-इं०। म० ज०।

अत्रुशाउख्मरम् atrú-shaukhú-maram -ता० शावक, भाबुक-सं०। झाऊ(Tamarix gallica, or Indica, *Linn.*) इं० मे० प्लां०।

अत्रेय atreya-हिं० संज्ञा पुं० दे० आत्रेय।

अत्रोग़ा atroghá-फ़ा० बीज, तुरञ्ज। (Citron) इं० हैं० गा०।

अत्लियह् atliyah-अ० (ब० व०), तिलाउ (ए० व०) मर्दन, मालिश, अभ्यङ्ग। म० ज०।

अत्वस atvas-मह० } अतीस (Aco-
अत्विका atviká-इ० } nitum heterophyllum,) लु० क०। स० फा० इं०।

अत्यीन atvín-पं० गिदड़ तम्बाकू, विछुआ। (Heliotropium Europæum) इं० मे० मे०।

अत्सी atsi-हिं० स्त्री० [सं० अतसी] तीसी-हिं०, उ०। लाइनम् Linum-ले०। म० अ० डॉ० २ भा०।

अत्हल athala-अ० धूमर वर्ण, धूमर वर्ण की चीज़। डस्टी Dusty-इं०। म० ज०।

अत्हलक़ athalaqa-अ० रेणुका बीज, (Vitex agnus costus) इं० मे० मे०।

अत्हानिक़ून athániqúna यु० उशक़-अ०, फ़ा०, इं० धाजा०। (Dorema ammoniacum, *Don.*)-ले०। फा० इं० २ भा०।

अत्हा(था)रयून athbáriyún-यु० दुरालभा -सं०। खारेंश्तुर, खारे शुतर-फ़ा०। (Alhagi camelorum, *Fisch.*) फा० इं० १ भा०।

अथर्वा atharvá-सं० पुं० एक ऋषि का नाम। अथर्ववेद के रचयिता।

अथर्वाणः atharvánah-सं० पुं० (१) आहिंसक। (२) विद्वान्। अथर्व०। सू० १। १। का० ४।

अथानीकून athánikúna यु० उशक़, कोंद्रल-फ़ा०, अं०, हिं०। कांद्रल-अफ़०। (Dorema ammoniacum, *Don.* & Fr.) फा० इं० २ भा०।

अथारियून athâriyún यु० दुरालभा खारे-शुतुर-फ़ा०। (Alhagi camelorum, *Fisch.*) फा० इं० १ भा०।

अथिबला चेट्टु athi-balá-chettu- महाबला-सं०। सहदेवी हिं०।

अद्कर adakar-पं० } अदरख, आर्द्रक
अद्का adaká }
Fresh root of Green ginger (Zingiber officinalis, *Rox.*) फा० इं०। रेसां-आर्द्रक।

अद्कुमणियम् adakumaniyam- गोरखमुंडी, मुण्डिका। (Sphæranthus hirtus). इं० मे० मे०।

अद्खना adakhana-यु० लूता, मकड़ी स्पाइडर Spider-इं०। लु० क०।

अद्गी adagi-ता० अरहर, रहर-हिं०। (Pigeon Pea; Dal). इं० मे० मे०।

अद्त्ता adattá-हिं० संज्ञा स्त्री० [अविवाहिता कन्या (Unmarried girl

अदनम् adanam-सं० क्लीं० } भक्षण,
अदन adana-हिं० संज्ञा पुं० }
(To eat.).

अदनागली adanágali-हिं० संज्ञा स्त्री० सुर्ख, लाल गुलाब। (Damask rose) हिं० गा०।

अदनातीस adanátisa यु० अनार की (see-Anára) लु० क०।

अदनीय adaníya-हिं० वि० [सं०] खाने योग्य। (Eatable)

अदनूस adanúsa-यु० पहाड़ी सोंठ। लु०

अदन् adan-अ० औक़िया। आउंस(Ounce) यह लगभग २॥ अथवा २। तो० के होता है। म० ज०।

दन्त adanta-हिं० वि०
दन्तः adantah-सं० त्रि० } (१) दन्त हीन, दन्त रहित (Toothless), बे दाँत का। जिसे दाँत न हों। (२) जिसके दाँत न निकला हो। बहुत थोड़ी अवस्थाका, दुधमुहाँ। (३) जिसने दाँत न तोड़ा हो। (चौपाया)

दमनिः adamanih-सं० स्त्री० अग्नि। (Fire)

दमसली adama-sali-आसा० जिह्वा-सिलह०। मेमो०।

दमिली ãadamili-अ० पुरातन स्थूल वस्तु। लु० क०।

दमुत्तहम्मुल् ãadamuttahammul-अ० असहनशीलता, असहिष्णुता। Intolerance-इं०। म० ज०।

दमुलतअ़ाज़ोन् adamul-taãazoun-अ० भई माहन का उत्पन्न न होना। ऐप्लेप्सिया Aplapcia-इं०। म० ज०।

दमूल ãadamúla-अ० मण्डूक, मेंडक। Frog (Rana Tigrina) लु० क०।

दम् ãadam-अ० अस्ति, अभाव, अभाव, न होना। ऐब्सेन्स Absence-इं०। म० ज०।

दम्बेदी adambedi ता० भुइ-गुलि-मह०। केबे गिलु-कन ०। (Indigofera enneaphylla, Linn.) फा० इं० १ भा०। ऐन्सली के मतानुसार उक्त पौधे का रस परिवर्तक, मूत्रल तथा ऐण्टिस्कॉर्ब्युटिक है।

दम्बु-वल्ली adambu-valli-कना० दोपाती-लता, उतरन की बेल-हिं०। देखो—उतरन। छागल-खुरी-बं०। (Ipomœa Biloba, Forsk.) फा० इं० २ भा०।

अदरक adarak-अ० आलूचह्। See-álúchah.। लु० क०।

अदरक adarak हिं० संज्ञा पुं०
अदरख adarakh-हिं०, उ० } [संoआर्द्रक, फा० अदरक] आर्द्रक। The green ginger (Zingiber officinalis, Roxb.)

अदरकी adaraki-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आर्द्रक] सोंठ और गुड़ मिलाकर बनाई हुई टिकिया। सोंठौरा।

अदरख अवलेह adarakha-avaleh-हिं० पुं० देखो—आर्द्रक अवलेह।

पुराना गुड़ ऽ। एक पाव, अदरख का रस ऽ१ एक सेर लेकर गुड़ मिलाकर पतली चाशनी करें, पुनः तज, पत्रज, नागकेशर, छोटी इलायची, लवङ्ग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर इन्हें टके टके भर लेकर महीन कूट कपड़ छानकर उक्त चाशनी में मिला रक्खें। मात्रा—१ माशा से १ तो०। गुण—इसके सेवन से श्वास, काम, मन्दाग्नि तथा अरुचि दूर होती है। अमृ० सा० यदमा० चि०।

अदरना ãadaraná-सोरि० कुन्दर। लु० क०।

अदरा adará-हिं० संज्ञा पुं० देखो—आर्द्रा।

अदराफ़स adaráfas-यु० सूरजमुखी, सूर्यमुखी। (Holianthus Annuses.)।

अदरारा adarárá }
अदरारु adaráru } माज़रियूनका एक भेद है जिसके पत्ते चौड़े होते हैं। लु० क०। See-Mazariyún

अदरूमाली adarúmáli-यु० वह मद्य जो वृष्टि-जल तथा शहद से बनता है। (Asort of wine prepared from rain-water & honey)। लु० क०।

अदरूलीस adarú-lísa-रू० स्वेद, घर्म, पसीना। (Perspiration) लु० क०।

अदर्मून adarmúna-अ० सूर्यमुखी, सूरजमुखी (Halianthns annuus, Linn.)

अदर्शक adarshaka-हिं० संज्ञा पुं० पदार्थस्थित गुण विशेष। यह पदार्थ का वह गुण है जिससे उसमें से कुछभी नहीं दीखता। इसे "अपारदर्शक वा अस्वच्छ भी" कहते हैं। ओपेक Opaque-इं०। अवेज़ु हक़ीक़ी-अ०।

अदर्शन adarshana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) अविद्यमानता। असाक्षात्। (२) लोप विनाश।

अदलः adalah-सं० पुं० } (१) समुद्रफल
अदल adala-हिं० संज्ञा पुं०
हिं०। हिज्जलवृक्षः-सं०। (Barringtonia acutangula, Gartn.) श० च०।
(२) घृत। Ghee (Clarified butter)।
-हिं० वि० [सं०] (१) बिनादल या पत्ते का। पत्र विहीन। (२) पंखड़ी रहित दलशून्य।

अदलसा adalasá-इं०, हिं० वासा, अड़ूसा। (Adhatoda vasica.)।

अदला adalá-सं० स्त्री० घृत कुमारी, घीकुवार (Aloes Barbadensis)। रा० नि०।

अदली adali-हिं० वि० [सं० अदल] (१) बिना पत्ते का। (२) पंखड़ी-रहित।

अदवी äadavi-अ० बकरी का बच्चा। (A kid) लु० क०।

अदवीका adaviká-यु० भूतांकुश। (An Indian plant).

अदस äadas-अ० मसूर। नरक-फ़ा०। (Ervum lens, Linn.)

अदस äadas-अ० मसूर-हिं०। नरक-फ़ा०। A sort of pulse or lentil (Ervum hirsutum) लु० क०। इं० मे० मे०।

अदस जबली äadasa-jabali-अ० श्वेत पुष्पीय बनफ्शा (Viola odorata). लु० क०।

अदस नबती äadasa-nabati-अ० (A plant like lentil) मसूर के सदृश एक पौधा है। लु० क०।

अदसबरी äadasa-bairi-अ० जंगली वा वन मसूर। (Wild lentil). लु० क०।

अदसिय्यह् äadasiyyah- }
अदसह् äadasah
-अ० (१) मसूरिका। प्लेग के प्रकार का मसूर सदृश एक दाना है जो मनुष्य शरीर पर निकल आता है और प्रायः घातक होता है। (२) आँख का पथरा जाना। (३) ख़ालाटोप युक्त बादह् रोग विशेष। (४) अर्वाचीन मिस्री चक्षु के स्फटिकवत् द्रव को भी इस नाम (मासूरिकीय) कहते हैं, जो आँग्ल शब्द का ठीक पर्याय है। म० अ०।

..Don. or a sort of moss).

अदसुलमुर्र äadasulmurr-अ० ... औषध। (An unimportant dru...

अदहन adahana-हिं० संज्ञा पुं० [... आदहन=खूब जलाना] खौलता हुआ पा... आग पर चढ़ा हुआ वह गरम पानी जिसमें चावल आदि पकाते हैं।

अदह्य adahya-हिं० संज्ञा पुं०, पदार्थविज्ञान विशेष। यह पदार्थ का वह गुण है जिससे वे नहीं सकते, अर्थात् "अज्वलनशील" पदा... (Incombustible).

अदक्षिण: adakshina-हिं० वि० [सं... अकुशल, अनाड़ी।

अदात adáta-अ० शस्त्र, अस्त्र, कारीगरी। अ... (य० व०)। म० अ०।

अदादा adádá-बर० माज़रियून भेद। ब... लु० क०।

अदानुद्दुब्ब adánuddubba-अ०
अदानुल्दुब्बअ adánul-dubbaä-अ०
अग्न्याशनस्वाकृ, वन तम्बाकू (Wi... Tobacco, Mullein)-इं०। Verb... scum Thapsus-ले०।

अदाम äadáma-अ० (A kind of pa... palm.) तरखजूर भेद। यह मदीना में ह... है। लु० क०।

अदामिल äadámila-अ० पुरातन स्थूल ... लु० क०।

अदार äadára-अ० पृथ्वीपर चलने वाला

...चर। (Moving on land, terrestrial). लु० क०।

...का adárika-सं० स्त्री० वृष कन्नल, ...पिचल-सं०। उलट कम्बल-सं०। (Petospermum acerifolium). मैं० ...प०।

...न adáhata-हिं० वि० [सं०] न ...ाने वाला, जिसमें जलाने या भस्म करने का ...ब न हो जैसे, जल में।

...adiko-कना० संज्ञ, सुंठि। (Dry ...inger)- देखो—आर्द्रक।

...adita-हिं० संज्ञा पुं० दे० आदित्य।

...aditih-सं०स्त्री० A cow, गाय। के०

...ãadila-अ० पुरातन स्थूल वस्तु। लु० ...०।

...न पालई adutin-pálai-ता० कीड़ामार, ...धानी-हिं०। फा०इं० ३ भा०। (Aristolochia bracteata, Retz.)

...तदा adumattadá-कना० जंगली ...किरन, अन्तमूल-हिं०। देखो—अन्तमूल। ...(Tylophora Asthamatica). ...फा० इं० २ भा०।

...adul-हिं० मोदुल, दुवान, दुवेह। मेमो०।

...adúnáh-सं० बिना जले ही सूख जाना। ...अथर्व०। सू० ३१। ३। का० २।

...adiik-सं० त्रि० अंधा, अंध। (Blind). ...० शु०।

...adiig-सं० पुं० घृत ghee (Clarified butter). उ०।

...adridhah -सं० त्रि० (१) अस्थिर। (Restless, Unsteady) । (२) -स्त्री० तृणविशेष। (A kind of grass). ...वै० निघ०।

...adriiha-हिं० वि० [सं०] (१) जो ...ढ़ न हो। कमजोर। (२) अस्थिर। चंचल।

...अ adrishta-सं० अन्धा, अंध। (Blind)

...ष्ट पुष्पवती adrishta-pushpa-vati ...र्तवा adrishtártavá

-सं० स्त्री० (Unmenstruating woman) वह स्त्री जिसे आर्तव न आता हो। वह जिसका मासिकधर्म रुक गया हो। नष्टार्तवा। रजः शून्या।

अदृष्टम् adrishtam सं०क्ली० जो नेत्रसे ओझल हो। अथर्व०। सू० ३१। का०२।

अदृष्टहा adrishtahá वह कीट जो आँख से न दीखें, अणुजीव। अथर्व०। सू० २३। ६। का०।

अदृष्टिः adrishtih-सं० पुं० } (१)
अदृष्टि adrishti-हिं० संज्ञा पुं० } अंधा, अंध (Blind)। (२) शिष्यों के तीन भेदों में से एक। अधम अधिकारी शिष्य।

अदेह adeha हिं० वि० [सं०] बिना शरीर का। संज्ञा पुं० कामदेव।

अदौरी adouri-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० ऋद्ध, प्रा० उर्द, हिं० उद्०+सं० वटी, हिं० बरी] केवल उर्द की सुखाई हुई बरी।

अद्ंशः adanshah-सं० पुं० महामूलक। बड़ मूला-बं०। See-mahámúlakah.

अदाँत adánta-हिं० वि० [सं० अदन्त] बिना दाँत का। जिसे दाँत न आए हों। (प्रायः पशुओं के सम्बन्ध में)।

अद्अज् adãaj-अ० श्यामचक्षु, काले नेत्रवाला। ब्लैक आईड (Black eyed)-इं०। म० ज०।

अद्द ãadd-अ० (१) गिनना, गणना करना (Count)। (२) उद्यत करना, तैयार करना (To make ready)। म०ज०।

अद्दन्दुस्सीनी addandussíni-अ० जमालगोटा (Croton seeds) । म० अ० डा० २ भा०।

अद्दीजतालुल्-फ़र्फ़ीरी addijatálul-farfiri -अ० (Digitalis Folia) डिजिटेलिस। म० अ० डा० २ भा०।

अद्दुहनुन्नअ नउल्अख्ज़र adduhnunnaãnaãul-akhzar-अ० रोग़न नअनअ

सब्ज़ फ़ा०। ताज़ा हरे पुदीना का उड़नशील तैल (Oleum menthæ viridis). म० अ० डॉ० २ भा०।

अद्दुत addúdat–अ० रक्त कृमी सं०। कृमीदाना। (Cochineal). म० अ० डॉ० २ भा० देखो–कोचीनील।

अद्दुदतुस्सब्ग़ addúdatussibgh–अ० कृमीदाना। देखो–कोचीनील। (Cochineal). म० अ० डॉ० २ भा०।

अद्नाफ़ adnáf–अ० कृश होना या कृश करना, मृतप्राय होना। म० ज०।

अद्भुत बालक adbhuta-bálaka–हिं० संज्ञा पुं० विलक्षण बालक। (Monster). कभी कभी जब दो शुक्राणुओं का एक डिम्ब से संयोग हो जाता है; तब ऐसे गर्भ से जो बच्चा उत्पन्न होता है उसके दो शरीर होते हैं जो आपस में जुड़े रहते हैं। इनको अद्भुत बालक कहते हैं। ये बालक बहुधा अधिक काल तक नहीं जिया करते।

अद्भुतसारः adbhutasárah–सं० पुं० खदिरसार, खैरसार। रा० नि० व० ८। देखो–खदिर।

अद्मह admah–अ० अधोवर्म, निम्न वा अधः त्वचा। कॉरियम (Corium), डर्मा (Derma)–इं०।

नोट–त्वचा के स्थूल निम्न भाग को 'अद्मह' और पतले ऊर्ध्व परत को 'बशरह' कहते हैं। म० ज०।

अद्मिय्यह admiyyah–अ० त्वगन्तर, त्वगधः। म० ज०।

अद्य adya–सं० भोजन। (Food). –हिं० क्रि० वि० [सं०] अब। अभी। आज।

अद्यतनः adyatanah–सं० त्रि०
अद्यतन adyatana–हिं० वि० } आधुनिक।
अद्यतनीय। आज के दिन का। वर्तमान।

अद्यनिः adyanih–सं० पुं० अग्नि। (Fire) उ०।

अद्यम् adyam–सं० क्लो० धान्य। (... sativa) देखो–धान्यम्।

अद्यश्विना adyaşuviná
अद्यश्वीना adyashviná } सं० स्त्री०
आसन्न प्रसवा गवि, हाल की ब्याई गाय। (Re...ntly born cow).

अद्रकः adrakah–सं० पुं०, महानिम्ब, बकाइन। (Melia azedarach, Lin...) वै० निघ०।

अद्रव adrava–हिं० वि० [सं०] जो ... वा पतला न हो। गाढ़ा, घना, ठोस।

अद्रव्य adravya–हिं० संज्ञा पुं० सत्ताहीन पदार्थ। अवस्तु। असत्। ... अभाव।

अद्राम् adrám–अ० दुग्ध दन्त का ... जिससे वह गिर कर उनके स्थान में ... उगें। म० ज०।

अद्रिः adrih–सं० पुं० (१) पर्वत (Mou...ntain.) । (२) शैलवृक्ष (Hilly tr...)। मे० रद्विक। (३) परिमाण विशे... (...weight.)।

अद्रिकर्णी adri-karni–सं० स्त्री० (१) अपराजिता (Clitorea ternatea, Li...). (२) श्वेतापराजिता, विष्णुक्रान्ता। रा... व० २३।

अद्रिका adriká–सं० स्त्री० (१) ... (Melia azedarach) । (२) ... धनियाँ। (Coriandrum sativ... Linn.) भा० पू० १ गु० व०।

अद्रिकी adriki–कना० सोंठ, शुंठि। (... ginger). देखो–आर्द्रक।

अद्रिछिद् adrichhid–हिं० संज्ञा पुं० वज्र। बिजली। (Lightning).

अद्रिजः adrijah–सं० त्रि० (१) ... पर्वत से उत्पन्न। स्त्री० (२) शिलाजतु, शि... (Bitumen) र० मा० रत्ना०। (... तुम्बुरुवृक्ष (Xanthoxylon alat...

० नि० व० ११। (४) गैरिक (See-airika).

तु adrijatu-सं० क्लो० शिलाजतु, शिला-त। (Bitumen) हेमा०। भा०।

adrijá-सं०स्त्री० सिंहली पीपल-हिं०। हल पिप्पली क्षुप-सं०। रा०नि०व० ६। ee-Sainhali.

adribhúh-सं० स्त्री० श्राखुकर्णीलता सं०। मूषाकानी, मूषाकर्णी-हिं०। (Salvinia cuculata) रा० नि० व० ३। पर्वतीय लता (Hilly creepers)।

adrimáshá-सं० स्त्री० वनमाष, मदद, माषपर्णी। (Teramnus labia-s) वै० निघ०।

ानुजा adri-sánujá-सं० स्त्री० त्राय-णा। वै० निघ०। See-Tráyamáná.

ारः adrisárah-सं० पुं० (१) लौह,
adrisára-हिं०संज्ञा पुं० Iron (Ferrum)। रत्ना०। (२) शिलाजीत (Bitumen).

adroshkah,-shká-सं० पुं०, मो० बकाइन-हिं०। निम्ब भेद। पाहड़ेनिम्ब०। भैष० कुष्ठचि०। (Melia Azedarach.)

adrok-सं० श्रादी,अदरक (Zingiber officinalis, Roxb. (Fresh root of—Green ginger)। देखो-श्राद्रक।

adla-श्र० मश के खुरण्ड का सूखकर गिर जाना। म० ज०।

áadla-श्र० न्याय, न्याय करना; समान करना, सादृश्य करना। म० ज०।

áadvah } -श्र०(१) संक्रमण,छूत
taáadiyah } लगना, किसी छूतदार रोग का एक दूसरे को लगना। (२) वह छूत अथवा विशेष कीटाणु (रोग सम्बन्धी). विष जिसमें उक्त रोग उद्भूत हो। (Contagion, Infection) म० ज०।

अद्वा áadvá-श्र० अम्ल मिश्री। (१) बीमारी की छूत या लाग जो एक से दूसरे को लग जाए। (२) रोग का वह विष या व्याधि बीज अर्थात् छूत या लाग जो रोगाक्रांत प्राणि द्वारा स्वस्थ व्यक्ति को लगकर उसी रोग का प्रादुर्भाव करती है। (३) एक व्यक्ति की व्याधि का अन्य को लग जाना। (४) वह रोग जो एक से अन्य को लग जाए। कन्टेजियन् (contagion), इन्फेक्शन (Infection)-इं०। देखो-संक्रामक रोग वा बैक्टेरिया।

अद्वार advár-श्र०(ब० व०),दौरह् (ए०व०) पर्याय, पारी, बारी, रोगों की पारी, वेग, दौरा। पैरॉक्सिज्म Paroxysm, फिट्स Fits-इं०। म० ज०।

अद्वितीय advitíya-हिं० वि० [सं०] प्रधान। मुख्य।

अद्वियह् adviyah-श्र० (ब०व०), दवा (ए० व०) औषधें, औषधियाँ। ड्रग्ज़ Drugs-इं०। म० ज०।

अद्वियह् ख़ुश्क adviyah-khushka-फ़ा० ख़ुश्क औषध, सूखी दवा। (Dried drugs)।

अद्वियह् ख़ुश्बू adviyah-khushbú-फ़ा० (Aromatic drugs) सुगंधित औषध, सुगंधित वस्तुएँ जो भोजन में प्रयुक्त होती हैं, यथा-लौंग प्रभृति। मसाला।

अद्वियह् तर adviyah-tar-फ़ा० गीली औषधि (Fresh drugs).

अद्वियह् बसीतह् adviyah-basítah }
अद्वियह् मुफ़्रदह् adviyah-mufradah } -श्र० साधारण औषधियाँ। अमिश्रित (अकेली) औषधियाँ। सिम्पल ड्रग्ज़ (Simple drugs) इं०।

अद्वियह् मुरक्कब् adviyah-murakkabah-श्र० मिश्रित व यौगिक औषधें। वह औषधें जो अन्य औषधियों से मिश्रित की गई हों, यथा पाक, शर्बत,खमीरा प्रभृति। कम्पाउण्ड ड्रग्ज़ Compound drugs-इं०। म० ज०।

अद्वियह् ह्.ार्रह् adviyah-hárrah अ० (अवाज़ोर) गरम मसाले को कहते हैं।

अद्हान adhán-अ० (ब० व०), दुह्न (ए० व०)। तैलम्-सं०। तेल, तैल-हिं। रोग़न-फ़ा०। Oil (Oleum).

अध adha-अव्यय० दे० अधः।

वि० [सं० अर्द्ध, प्रा० अद्ध] आधा शब्द का संकुचित रूप। आधा। (Half).

अधकचरा adhakachará-हिं०वि० [सं० अर्द्ध=आध+हिं०=कचा] (१) अपरिपक्व। अधूरा। अपूर्ण। (Unripe; Imperfect). (२) अकुशल। अदक्ष।

वि० [सं० अर्द्ध=आधा+हिं० कचरना] आधा कुटा वा पीसा हुआ। दरदरा। अधपिसा अधकुटा। दरदरावा किया हुआ। (Coarse powder)।

अधकच्चा adha-kachchá-हिं० वि० (Half-ripe) अधपका।

अधकपारी adhakapárí-हिं० स्त्री०
अधकपाली adhakapálí-हिं० स्त्री०

[सं० अर्द्ध=आधा+कपाल=सिर] आधे सिर का दर्द जो सूर्योदय से आरम्भ होकर दोपहर तक बढ़ता जाता है और फिर दोपहर के बाद से घटने लगता है और सूर्यास्त होते ही बंद होजाता है। आधासीसी, सूर्यावर्त। (Hemicrania) अर्द्धावभेदक।

अधखिला adhakhilá-हिं० वि० [सं० अर्द्ध +हिं०=खिलाना] [स्त्री० अधखिली] (Half-blown) आधा खिला हुआ। अर्द्ध-विकसित।

अधखुला adhakhulá-हिं० वि० पु० [सं० अर्द=आधा=हिं० खुलना] [स्त्री० अधखुली] (Half-open) आधा खुला हुआ।

अधगति adhagati-हिं० संज्ञा स्त्री० दे० अधोगति।

अधगो adhago-हिं० संज्ञा पु० [सं० अधः= नीचे+गो=इंद्रिय] नीचे की इंद्रियाँ। शिश्न वा गुदा। (Lower organs; Penis or anus).

अधगोहुआँ adhagohuán- हिं० [सं० अर्द्ध+गोधूम] जौ मिला हुआ गेहूं।

अधङ्ग adhanga-हिं० पु० अर्द्धांग, घात। (Palsy, Hemiplegia)

अधङ्गी adhangí-हिं० त्रि० पक्षाघा[illegible] वह रोगी जिसे पक्षाघात हुआ हो। (Af[illegible]ted with hemiplegia)

अधजर adhajara-हिं० त्रि० पु० [सं० अर्द्ध+हिं० जलन]। अधजला। अधज[illegible]। विदग्ध। (Half-burnt)

अधड़ी adhari-हिं० वि० स्त्री० [सं० [illegible] (१) [illegible] धार। [illegible] le)

अधपई adhapai-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० [illegible] आधा+पाद=चौथाई] तौलने का एक [illegible] सेर के आठवें हिस्सेकी तौल। आधा पा[illegible] का बाट वा मान। दो छटाँकी। [illegible] पैया। अधपौवा। (A measurem[illegible] =4 oz.)

अधबर्नी adhabarni
अधबिर्नी adhabirni
-सं० [illegible] (Her[illegible]is monnieria, Thime lea[illegible] -herpestes) ई० हैं० गा०। मे० [illegible]

अधमरा adhamará
अधमुआ adhamuá
-हिं० वि० [सं० अर्द्ध, [illegible] +हिं० मरा] आधा मरा हुआ। अर्द्धमृ[illegible] प्राय। (Half-dead)

अधमाङ्गम् adhamángam-सं० [illegible]
अधमांग adhamánga-हिं० संज्ञा पु० पाद, चरण, पैर, पाँव। देखो— चरण[illegible] च०।

अधमुख adhamukha-हिं० संज्ञा [illegible] [सं० अधोमुख]

अधमः adhamah-सं० पु० (१) अम्लवेतस। (Rumex vesicari[illegible]) (२) पाद (Foot)।

…र adhara-हिं०संज्ञा पु ० [सं०] (१) ओठ, ओष्ठ। (Lip, Labium)। शरत-अ०। …अत-फ़ा०। (२) नीचे का ओठ (Lower-lip)। -संज्ञा पु ० [सं० अ=नहीं+धृ=धरना] (१) पाताल। (२) बिना आधार का स्थान। अन्तरिक्ष। आकाश। शून्य, स्थान। …वि० नीच, बुरा।

…कण्टकः adhara-kantakah-सं० पु० जवासा, धमासा, दुरालभा। (Alhagi maurorum). वै० नि०।

…कण्टिका adhara-kantiká-सं० स्त्री० छोटी शतावरी, छुद्र शतावरी। (Asparagus racemosus (The small variety) वै० निघ०।

…कण्ठ्या adhara-kanthyá-सं० स्त्री० (Inferior or Inferior-laryngeal Artery.) कण्ठाधोगा धमनी।

…काकलकीया adhara-kákala-kíyá -सं० स्त्री० (Inferior Thyroid artery) अधः चुल्लिका धमनी।

…काण्डसिरा adhara-kánda-sirá
…कायसिरा adhara-káyasirá
-सं० स्त्री० (Inferior Vena cava) …अधोगा महाशिरा। अजीफ़ नाज़िल, अजीफ़ …

…केदारः adhara-kedárah-सं० पु० (Cerebellar Fossa) लघु मस्तिष्क खात। हुफ़रह मख़ेखियह-अ०।

…र कौक्षेय (यी) adhara-koukshey a, -yi-सं० स्त्री० (Hypogastric) …कौक्षीया, पेडु सम्बन्धी। ज़ेर नाफ़ी-अ०।

…र गल-सङ्कोचनी adhara-gala-sankochani-सं० स्त्री० (Constricter Phary.) कंठ संकोचनी।

…र गुदः adhara-gudah-सं० पु० (Anal canal) गुद नलिका।

अधर ग्रहणी adhara-grahani-सं० स्त्री० (Colic valve or Ileo-cæcal).

अधर चतुष्पिण्ड adhara-chatushpinda-हिं०संज्ञा पु०(Inferior colliculus).

अधर चतुष्पिण्ड बाहु adhara-chatushpinda-báhu-हिं० संज्ञा स्त्री० (Inferior brachium).

अधर-चालनी-ओष्ठ-नाड़ी adhara-cháláni oshtha-nárí-हिं०स्त्री० ओठ चलाने वाली नाड़ी।

अधरज adhara ja-हिं० संज्ञा पु० [सं० अधर+रज] ओठों की ललाई। ओठों की सुर्ख़ी। (२) ओंठों की धड़ी, पान या मिस्सी से रंग की लकीर जो ओंठों पर दिखाई देती है।

अधर जंघासन्धिः adhara-janghásandhih-सं०स्त्री० (Distal Tibio-fibular).

अधर जानवी adhara-jánavi-सं० स्त्री० (Inferior genicular).

अधर-तिरश्चीन स्थाविर विवलः adhara-tirashchína-sthávira-vibalah-सं०पु० Inferior-transverse tibio-fibular ligament).

अधरदन्त्या adhara-dantyá-सं० स्त्री० (Inferior alveolar).

अधर दार्शन केन्द्रम् adhara-dárshana-kendram-सं० पु०, क्लो० (Lower visual centre).

अधर धमनी adhara dhamani-सं० स्त्री० (Inferior labial) अधः ओष्ठीया धमनी।

अधर धारा adhara-dhárá-हिं० संज्ञा स्त्री० अधोधारा, निम्न किनारा (Inferior border).

अधर नामनी adhara-námani-सं० स्त्री० (Quadratus labii inferioris).

अधर नासाशुक्तिका adhara-násáshuk-

tiká-सं० स्त्री० (Inferior nasal concha) अधोशुक्तिका।

अधर पश्चिमसरदा adhara-pashchima-saradá-सं०स्त्री० (Inferior posterior serratus).

अधरपान adhara-pána-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अधर=ओठ+पान=पीना, चूसना] सात प्रकार की बाह्य रतियों में से एक रति। ओंठों का चुम्बन।

अधर-पायवी adhara-páyaví-सं० स्त्री० (Inferior Hæmorrhoidal.)

अधरपार्ष्णि नौकीयः adhara-párshni-naukiyah-सं०त्रि० (Inferior Calcaneo-navicular.)

अधर-पृष्ठ-कीया यनता adhara-prishṭa-kiyá-yanatá-सं० स्त्री० (Obliqus Capitis Inferior.)

अधर-पेश्या adhara-peshyá-सं० स्त्री० (Sural muscular, A.)

अधर-प्रकोण-गो-जिह्वकीया adhara-prakona-go-jihvakíyá-सं० स्त्री० (Inferior Aryepiglottideus.)

अधरप्रकोष्ठ-सन्धिः adhara-prakoshtha-sandhih-सं० स्त्री०(Distal Radio-ulnar joint)

अधर प्रास्तर-सरित्का adhara-prástara-saritká-सं० स्त्री० (Inferior Petrosal Sulcus.)

अधर प्रास्तरी adhara-prástarí-सं०स्त्री० (Inferior Patrosal Sinus.)

अधर प्रैणिकी adhara-prainikí-सं० स्त्री० (Inferior Phrenic.)

अधरप्रौधी (थी) adhar-proudhi (-thi) -सं० स्त्री० (Inferior Gluteal.)

अधर बिम्ब adhara-bimba-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कुन्दरू के पके फल जैसे लाल ओंठ।

अधर मस्तिष्कम् adhara-mastishkam -सं० स्त्री० (Cerebellum) लघु-मस्तिष्क।

अधर यमला adhara-yamalá-सं० स्त्री० (Gemellus Inferior) निम्न यमला।

अधर ललाट सीता adhara-laláṭa-sítá -हिं० संज्ञा स्त्री० (Inferior fronta sulcus.)

अधर-वर्त्मिका adhara-vartmiká-सं० स्त्री० (Inferior Palpibral.)

अधर-वस्तीया adhara-vastiyá-सं० स्त्री० (Inferior vesical.)

अधर-व्रणः adhara-vranah-सं० पुं० ओंठ का घाव, ओंठ में होने वाला व्रण।

अधर व्रणका यत्न—घृत, तिल तैल, धतूरा, गेरू, राल, लवण, मैं नफल इन्हें एकत्र पीसकर लेप करने से ओंठ (अधर) का महाव्रण (घाव) तथा ओंठों का फटना दूर होता है।

अधर शाखा क्षेत्र adhara-shákhá-kshetra-हिं० संज्ञा स्त्री० (Lower extremity area)

अधर [illegible]

([illegible])

अधर-सायकी adhara-sáyakí-सं० स्त्री० (Inferior Longitudinal.)

अधर-हानवी adhara-hánavi-सं० स्त्री० (Mandibular.)

अधर-हार्दी adhara-hárdí-सं० (Inferior Cardiac.)

अधर क्षुद्रांत्र adhara-kshudrántra -हिं० संज्ञा स्त्री० (Ileum) क्षुद्र-क्षुद्रांत्र।

अधरक्षुद्रासिरा adhara-kshudrá-sirá -सं० स्त्री० (Vena Hemi-azygos)

अधरा adhará-सं० स्त्री० निम्न, नीचे की तरफ। (Downwards) निम्न०।

धराग्नया-शयीय पैरीततौ adharágnyá-shayíya-pouritatí–सं० स्त्री०(Inferior Pancreatic duodenal artery). अ० श०।

धराच्यम् adharáchyam–सं० क्ली० नीचे भूमिमें सरकनेवाले कीट। अथर्व०। सू० ७। ३। का० ६।

धराजिः adharájih–सं० स्त्री० (Unstriped muscle). धारी विहीन मांस पेशी।

धराजिह्वा adhará-jihmá–सं० स्त्री० (Rectus Inferior). अधरासरला।

धरांञ्चम् adharáncham–सं० क्ली० नीचे दबाना। अथर्व०। सू० १२०। ३। का० ६।

धरातानिक रासनी adhará-tánika-rásaní–स० स्त्री० (Longitudinalis Linguæ Inferior).

धरातानिकी adhará-tániki–सं० स्त्री० (Inferior Longitudinal S.).

धराधर adharádhara–हिं० पु० [सं० अधः+अधर] नीचे का ओंठ (Lowerlip)

धरान्तर कौर्परी adharántara-kourpari–सं० स्त्री० (Inferior Ulnar).

धरान्त्रीय सप्तकम् adharántriya-plakshakam-सं० क्ली० (Inferior mesenteric Plexus).

धरान्त्रीया adharántriyá–सं० स्त्री० (Inferior mesenteric).

धरामहाशिरा adhará-maháshirá–हिं० स्त्री० अधोगामहाशिरा(Inferior-vena cava).

धरावनता adhará-vanatá–सं० स्त्री० (Obliquus Inferior).

धरांसधरा adharánsa-dhará–सं० स्त्री० (Lower subscapular). अंसाधरा अ० श०।

अधराक्षि-कुण्डीय-विशरणम् adharákshi-kundíya-visharanam–सं० क्ली०(Inferior Orbital fissure).

अधरेद्युः adharedyuh–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] गत दिन के पहिले का दिन। परसों।

अधरोत्तर adharottara–हिं० वि० पुं० [सं०] (१) ऊंचा नीचा। ग्बड़बीहड़।

अधरोत्तरकौक्षेयीadharottara-kouksheyí –सं० स्त्री०(Inferior Epigastric)

अधरौंथा adharonthá–हिं० वि० [सं० अर्द्ध = आधा+रोमंथ = जुगाली]आधा जुगाली कियाहुआ। आधा पागुर किया। आधा चबाया हुआ।

अधरोर्ध्वकौक्षेयी adharordhva-kouksheyí–सं० स्त्री० (Deeper Inferior Epigastric).

अधरौष्ठ्या adharoshṭhyá–सं० स्त्री०(Inferior Labial).

अधरौदूखल-स्रोतः adharoudúkhala-srotah–सं० पुं० (Mandibular canal).

अधरौदूखली adharoudúkhalí–सं० स्त्री० (Inferior Alveoler).

अधरौपमस्तिष्क पदकम् adharoupamastishka-padakam–सं० पुं०(Inferior Cerebellar Podum or Pedunele).

अधरंगा adharangá–हिं० संज्ञा पुं० [हिं० आधा+रंग] एक प्रकार का फूल।

अधरः adharah–सं० पुं० (१) ओष्ठ, ओठ –हिं०। टोट–बं०। लेबियम् Labium,-ia–ले०। लिप (Lip)–इं०। रा० नि० व० १८। –क्ली० (२) स्त्री योनि (Vagina).

अधवा adhavá–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अ+धव =पति) जिसका पति जीवित न हो। विधवा। बिना पति की स्त्री। राँड़। सधवा का उलटा।

अधवारी adhavárí–हिं० संज्ञा स्त्री० [देश०]

एक पेड़ का नाम जिसकी लकड़ी मकान और असबाब बनाने के काम आती है।

अधश्चर adhashchara-हिं० वि० [सं०] जो नीचे नीचे चले।

अधसेरा adhaserá-हिं० संज्ञा पु० [सं० अर्द्ध=आधा+सेटक=सेर] एक बाँट या तौल जो एक सेर की आधी होती है। दो पाव का मान।

अधस्तल adhastala-हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) नीचे की कोठरी। (२) नीचे की तह। (Inferior Surface)।

अधस्तल कारिणी adhastala-karini-सं० हिं० स्त्री० (Pronator teres).

अधातु adhátu-हिं० संज्ञा पु० (Non-metal) जिनमें धातु के लक्षण न पाए जाएँ। देखो—धातु।

अधामार्गः adhámárgah

अधामार्गवः adhá-márgavah-सं० पु० (१) अपामार्ग। (Achyranthes aspera) धामार्गव वृक्ष। See-Dhámárgavah। अ० टी०।

अधावर्त adhávarta-हिं० वि० पु० [सं० अर्द्ध=आधा+आवर्त्त=चक्कर] आधा औंटा हुआ। जो औटाते या गरम करते करते गाढ़ा होकर नाप में आधा हो गया हो।

अधि adhi-(A Sanskrita Prefix) एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहिले लगाया जाता है और जिसके ये अर्थ होते हैं—(१) ऊपर। ऊँचा। पर। (२) प्रधान। मुख्य। (३) अधिक। ज़्यादा। (४) सम्बन्ध में। उ० आध्यात्मिक। आधिदैविक। आधिभौतिक।

अधिकण्टकः adhi-kantakah-सं० पु० यास वृक्ष, दुरालभा विशेष। (Alhagi maurorum) र० हो० निघ० वं० ४।

अधिकप्रियम् adhika-priyam-सं० क्ली० त्वचा, दारचीनी। Cinnamomum zeylanicum, Nees. (Bark of cinnamon) वै० निघ०।

अधिकरणम् adhi-karanam-सं० क्ली० ... अर्थका अधिकार करके और ... जाए, उसे अधिकरण कहते हैं। ... दोष अर्थात् रस का अधिकार करके कही गई या दोष को अधिकार करके कही कि रस के ग्रहणार्थ रस शब्द (कई जगह बिना कहे भी उसका ग्रहण आता है। ये सब अधिकरण ही होते हैं। सु० उ० ६५ अ०। यमयमधिकृत्य तदधिकरणम्। यथा—रसं दोषं वा। जहाँ कोई काम किया जाता है। ... आधार। सु० सू० ४ अ०। सु० उ० ६५ अ०।

अधिकार adhikára-हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) कार्य्यभार। प्रभुत्व। आधिपत्य। ...ता। (२) प्रकरण। शीर्षक। (३) ... सामर्थ्य। शक्ति।

अधिकारी adhikári-सं० पु० पुरुष (man) वै० निघ०।

अधिकारी adhikári-हिं० संज्ञा पु० [सं०] ...

... वि०, जिसे कोई ... अवयव ... अंगुर ...

अधिक्रम adhikrama-हिं० संज्ञा पु० [सं०] आरोहण। चढ़ाव। चढ़ाई।

अधिजिह्वकः adhi-jihvakah-सं० पु० ... गत रोग विशेष। देखो—अधिजिह्वा। See Adhijihva

अधिजिह्वा adhi-jihvá } सं० स्त्री० (१) अधिजिह्विका adhi-jihviká } ... रक्त शोणित जन्य जिह्वा रोग विशेष, इसमें ... के ऊपर जिह्वा के अन्य भाग के समान ...

...गी है। देखो-अधिजिह्वः। सु० नि० ...१६। (२) घोड़े की जिह्वा के ऊपरी भाग ... शोफरूप से होने वाला जिह्वा रोग विशेष। ... द० २९ अ०।

...ह्वः adhi-jihvah--सं० पु०
...ह्व adhijihva--हिं० संज्ञा स्त्री०
...ट्यूमर्यान दी टङ्ग (A tumour on the ...ngue)-इं०।

...कण्ठगत मुखरोग। एक बीमारी जिसमें रक्त से ...हे हुए कफ के कारण जीभ के ऊपर सूजन हो ...ती है। इसको द्विजिह्वा भी कहते हैं। इसके ...क्षण निम्न हैं, यथा—इसमें जिह्वाग्र में कफ ...शोथ होता है तथा जिह्वा के प्रबन्ध (मूल) ...रुधिर में मिला हुआ रक्तवर्ण का शोथ होजाता ..., सूजन पक जाने पर यह दुःसाध्य ...और असाध्य हो जाती है। सु० नि० अ० १६।

...ण्डो रसः adhitundi-rasah-सं० पु० ... पारद, शुद्ध विष, शुद्ध गन्धक, अजमोद, ...हर्रा, मजीखार, जवाखार, चित्रक, जीरा, ... नमक, काला नमक, वायविडंग, सोंठ, ... त्रिकुटा प्रत्येक तुल्य भाग लें तथा सर्व तुल्य ... कुचिला चूर्णकर मिलाएँ, पुनः जम्भीरी के ... में घोटकर मिर्च प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। इसके ... से मन्दाग्नि दूर होती है। अमृ० सा०।

...त्वचः adhitvachah-सं० पु० आवरण ...। अथर्व०। सू० २१। १। का० ६।

...न्तः,-कः adhidantah,-kah-सं० पु० ... रोग विशेष, गजदन्त। (A tooth ...rowing over another) :जं० द० ... अ०।

...व adhi-daiva-हिं० वि० [सं०] दैविक, ...संयोग से होने वाली, आकस्मिक।

...वतम् adhidaivatam सं० क्लीव
...वत adhidaivata-हिं० संज्ञा पु०

(१) पदार्थ सम्बन्धी विज्ञान, विषय वा प्र... (२) अधिदेवता। आधिदैविक रोग ... दैवताधिकृत। सु० शा० १ अ०।

वि० देवता सम्बन्धी।

अधिपतिः adhi-patih-सं० पु० मर्मः प्राणहर मर्मस्थान विशेष। मस्तक के भीतर ऊपर की जहाँ बालों का आवर्त (भँवर) होता है वहाँ शिरा और संधि का सन्निपात (मिलाप) है। यह "अधिपति" नामक मर्मस्थान है। यहाँ पर चोट लगने से तत्काल मृत्यु होती है। सु० शा० ६ अ०।

हिं० पु० [स्त्री० अधिपत्नी] मालदार, मालिक। मुखिया। स्वामी। शासक।

अधिपति रन्ध्रम् adhipati-randhram-
अधिपति विवरम् adhi-pati-vivaram
-सं० क्ली० (Posterior Fontanelle)

पश्चात् विवर। दो मास से कम आयु वाले बालक के सिर में जहाँ पार्श्विकास्थियों के ऊपर के पिछले कोने पश्चादस्थि से मिलते हैं वहाँ पर एक गढ़ा रहता है, उसको अधिपतिरन्ध्र कहते हैं। यहाँ भी मस्तिष्क की फड़क ... है।

अधिपर्यङ्कदेशः adhiparyanka ... सं० पु० (Epithalamus) ... देश।

अधिविन्ना adhibinna ...

अध्यूढ़ा। प्रथम ... की जिसके ... कर ले।

अधिभूतः adhi... इन्द्रिय ... का ... इसके ...

अधि...

अधि...
अधि...

अभिष्यन्द रोग का एक अंश। यह वातज, पित्तज कफज और रक्तज भेद से चार प्रकार का होता है। इन सम्पूर्ण रोगों में तीव्र वेदना होती है। यही इनका मुख्य लक्षण है। अभिष्यन्द (चोक उठना, नेत्रशूल) रोग की उपेक्षा करने से फलतः अधिमन्थ नामक रोग उत्पन्न होता है।

लक्षण—अभिष्यन्द रोगों के बढ़ने पर उपाय और पथ्य नहीं करने वाले मनुष्यों के नेत्र में पीड़ा करने वाले उतने ही प्रकार के अधिमन्थ रोग उत्पन्न हो जाते हैं। जिस रोग में ऐसी पीड़ा होती हुई प्रतीत हो मानो नेत्र अत्यन्त उखाड़े या मीढ़े जाते हों और आधा सिर मथा सा जाता हो तो उसे अधिमन्थ जानना चाहिए। अधिमन्थ वातादि दोषोंके लक्षण से युक्त चार ही प्रकारका होता है। श्लैष्मिक अधिमन्थ सप्त रात्रि में तथा रक्तज, वातज क्रमशः ५ व ६ रात्रियों में और मिथ्या आचार से पैत्तिक तत्काल दृष्टि का नाश कर देता है।

चिकित्सा—सभी प्रकार के अधिमन्थ रोगमें सर्वथा ललाटस्थ शिराका वेधन करें अर्थात् फ़सद करें। इसकी शांति की दशा में आँखों को प्रदाहित करे। सु० उ० ९ अ०।

अधिमुक्तकः adhi-muktakah–सं० पुं० माधवी लता। वै० निघ०। See-mádha-vilatá.

अधिमुक्तिका adhi-muktiká–सं० स्त्री० सीपी, मोती की सीपी–हिं०। मुक्तागृहम्, शुक्ति–सं०। Oyster shell (Ostrea Edulis) वै० निघ०।

अधिमांसकः adhimánsakah–सं० पुं० (Inflammation of the tonsils) कफ जन्य दन्तवेष्टज रोग विशेष। एक रोग जिसमें कफ के विकार से नीचे की दाढ़ में विशेष पीड़ा और सूजन होकर मुँह से लार गिरती है।

लक्षण—यदि हनु (दाढ़) की पिछली तरफ के दन्त (मूल) में घोर, पीड़ायुक्त भारी सूजन हो और मुँह से लालास्राव हो तो उसे "अधिमांसक" कहते हैं। यह कफ के है। मा० म० ख० ४ भा०। मा० नि०। सु० नि० १६ अ०।

अधिमांसम् adhi-mánsam–सं० नेत्र रोग विशेष। मा० ने० रो०। (अधि) मांसार्म।

अधिमांसार्म adhi-mánsá... (Fleshy excrescence of the eye, cancer of the ...) दृष्टि शुक्लगत रोग विशेष। यह ... नाम से प्रसिद्ध है। इसके ... भागमें जो फैला हुआ बहुत मा... नील लोहित वर्ण का मोटा मांस ... उसे "अधिमांसार्म" कहते हैं।

अधिरूढ़ा adhi-rúrhá–सं० स्त्री० ... तथा, २० वर्ष में (ऊपर) ... अवस्था वाली स्त्री। See-Pr...

अधिरोहण adhirohana–हिं० [सं०] चढ़ना। सवार होना।

अधिरोहिणी adhi-rohini–सं० स्त्री० (Stair case, ...) निसेनी। ज़ीना। बाँस का बना ... मार्ग। इसके पर्याय,–निःश्रेणी ... निःश्रेणिः (अ०)।

अधिवास adhivása–हिं० सं... [वि० अधिवासित] (१) ... रहने की जगह। (२) महा... (३) उबटन।

अधिवासन adhivásana–... (१) सुगंधित करना। (२ ...

अधिवृक्क adhivrikka–हिं० ... (renals) उपवृक्क।

अधिवेत्ता adhivettá–हिं० ... पहिली स्त्री के रहते दूसरा वि...

अधिवेदन adhivedana–... [सं०] एक स्त्री के रहते दूस...

अधिश्रयणी adhishrayaní... चुल्हि –हिं० संज्ञा स्त्री० निसेनी। निःश्रेणी। ज़ीना।

...श्रवण adhi-shravana-हिं० संज्ञा पुं० [...] (१) चूल्हा, भोजन पकाने की अँगीठी, भाड़ के लिए अग्नि स्थान। चुल्लि-सं०। ...e", A fireplace) (२) आग पर ...। आग पर रखना।

...ता adhishṭhátá-हिं० संज्ञा पुं० [...] [स्त्री० अधिष्ठात्री] (१) करने ... नियंता। प्रधान। (२) किसी कार्य ... भाल करने वाला। वह जिसके हाथ में कार्य का भार हो।

...न adhishṭhána-सं० पुं० कलाई। ...की हड्डियाँ। च०। कूर्च। सु०।

...म् adhishṭhánam-सं० क्ली०
... adhishṭhána हिं० संज्ञा पुं०
) वास स्थान (Place)। (२) ग्राम ...llage)। (३) नगर। शहर। जनपद।) स्थिति। पड़ाव, मुकाम, ठहरने की जगह। ...न। रहने का स्थान। (४) आधार, ...।

...कला adhishṭhánakalá-सं० स्त्री० (Basement membrane).

...द adhiskanda अपने क्षेत्र में। ...वै० ...

...ष adhikshipta-हिं० वि० [सं०] ...हुआ।

...प adhikshepa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] फेंकना।

... adhírah-सं० पुं० (१) अधीर्य, adhíra-हिं० वि०, पुं० धीरता हीन, ...ये रहित, जिसको धीरज न हो। उद्विग्न, ...म, व्याकुल विह्वल, बेचैन, घबड़ाया हुआ। ...) अयोग्य वैद्य। वै० निघ०। (३) चंचल, ...स्थिर, उतावला, तेज़, आतुरा। (४) ...मंतोषी। ...

adho-अव्य० दे० अधः।

अधोओष्ठ adho-oshṭha-हिं० संज्ञा पुं० निम्न ओष्ठ। (Lower-lip).

अधो ओष्ठीया धमनी adho-oshṭhíyá-dhamani

अधःओष्ठ्या धमनी-adhah-oshṭhyá-dhamaní-हिं० संज्ञा स्त्री० (Inferior labial artery) निम्न ओष्ठकी पोषक धमनी।

अधोऽङ्गम् adho-angam-सं० क्ली० (१) मलद्वार। गुदा (Anus)। (२) योनि (Vagina).

अधोऽशुकम् adho-anshukam-सं० क्ली०
अधोंशुक adhonshuka-हिं० संज्ञा पुं०
परिधेयवस्त्र, एक नीचे का वस्त्र। जैसे पायजामा, धोती इत्यादि। अम०। (२) अस्तर।

अधोऽन्वायाम रसनिका adho-anváyáma-rasaniká-हिं० स्त्री० (Longitudinalis)

अधोऽन्वायाम शिरा कुल्या adho-anváyáma-shirá-kulyá-हिं० स्त्री० (Inferior sagital sinus).

अधोऽस्त्रपित्तम् adho-asrapittam-सं० क्ली० अधोगत रक्त पित्त रोग। देखो-रक्तपित्तम्।

अधोगतः adho-gatah-सं० पुं० अस्थिभंग रोग। (Fracture) वै० निघ०।

अधोगमन adho-gamana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) नीचे जाना। (२) पतन।

अधोगामहाशिरा adhogá-maháshirá
अधोगामीमहाशिरा adhogámi-maháshirá
-सं० स्त्री० निम्न महाशिरा। (Inferior vena cava) वर्जाक नाज़िल-अ०। दाहिनी और बाईं संयुक्त श्रोणिगा शिराओं के मेल से अधोगा महाशिरा बनती है। यह उदर में वृहत धमनी की दाहिनी ओर रहती है। देखो— अधोगा महाशिरा।

अधोगामहाशिरा adhogá-mahá-shirá-हिं० संज्ञा स्त्री० नीचे सब शरीरसे अशुद्ध रुधिर लाने

वाली। नीचे की महाशिरा। (Inferior vena cava).

अधोगा-महाशिरा खात adhogá-mahá-shirá-kháta-हिं० संज्ञा स्त्री० (Groove for inferior vena cava).

अधोगावृहद्धमनी adhogá-vrihad-dhamani-सं० स्त्री० (Descending aorta) निम्न महा धमनी।

अधोगामी adho-gámí-हिं० वि० [सं० अधोगामिन्] [स्त्री० अधोगामिनी] नीचे जाने वाली (Descending).

अधोगामी महाधमनी adho-gámimahád-hamani-सं० स्त्री० अधोगावृहद्धमनी।

अधोगामीवृहद्न्त्र adhogámi-vrihad-antra-हिं० संज्ञा पुं० (Descending colon.) वृहद् अन्त्र का तीसरा भाग जो प्लीहा से नीचे की ओर आकर वामपार्श्व से वस्तिगह्वर में पहुँचता है। क़ोलून नाज़िल, कोलून हाबित-अ०।

अधोगामीवृहत् धमनी adhogámi-vrihat-dhamani-सं० स्त्री० (Descending aorta). निम्न महाधमनी।

अधोघण्टा adho-ghanta-सं० स्त्री० (Achyranthes aspera) अपामार्ग, चिचड़ा। -रत्ना०।

अधोजिह्वा adho-jihvá } -सं० स्त्री०
अधोजिह्विका adho-jihviká } (Uvula)
अलिजिह्वा, उपजिह्वा, तालुमूलस्थ क्षुद्रजिह्वा। हारा०। (R.) जिह्वाधः शोथरोग, अधोजिह्वा, की सूजन (Uvulitis.)। च०।

अधोदेश adhodesha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) नीचे का स्थान। नीचे की जगह। (२) नीचे का भाग।

अधोद्वारम् adho-dváram-सं० क्ली० मलद्वार, धृति, गुदा,-हिं०। दुब्र, दुम, शरज, मक़अद, मब्रज़, रोदए-मुस्तक़ीम-अ०। एनस anus

-इं०। (२) योनि-हिं०। महबिल, हिम्-अ०। वेजाइना (Vagina) हिं० च०।

अधोधारा adho-dhárá-हिं० संज्ञा निम्नधारा, नीचे का किनारा (Inferior border.)

अधोनेत्रच्छद adho-netrachchhada संज्ञा पुं० (Lower eyelid) निम्न नीचे की पलक।

अधोपार्श्विक चक्राङ्ग adho-párshvika-kránga-हिं० संज्ञा पुं० (inferior lateral gyrus.)

अधोपुष्पी adho-pushpí-सं० स्त्री० दुधी। देखो-अधः पुष्पी (Adhahpushpi).

अधोपृष्ठ adhoprishtha-हिं० पुं० (Inferior surface).

अधोभाग adhobhága-हिं० संज्ञा (Base) अस्थि की तली का चौड़ा

अधोभार adhobhára-(Downward pressure.) दोषों के तीन प्रकार के में से एक। वायु का नीचे को दबाव

अधोभागहरः adho-bhága-harah-वि० नीचे के भाग की शुद्धि करने वा विरेचन कर्म में हित कारक। विरेचन। च०

अधोभुवन adho-bhuvana-हिं० संज्ञा [सं०] पाताल। नीचे का लोक।

अधोमर्म्म adhomarmma-सं० क्ली० गुदा (Anus)। (२) गुदद्वार (Fundum)। हे० च०।

अधोमार्ग adhomárga-हिं० संज्ञा [सं०] गुदा (Anus.)।

अधोमुख adho-mukha-हिं० वि० [सं०] (१) नीचे मुख किए हुए। मुँह लटकाए। (२) औंधा उलटा। मुँह के बल। औंधा। उलटा।

अधोमुखा,-खी adho-mukhá,-khí—सं० स्त्री० गोजिह्वा । गोभी-हिं० । रा० नि० व० ४ । (Elephantopus scaber).

अधोयन्त्रम् adho-yantram—सं० क्ली० पातनयन्त्र । (see-vakayantra)

अधोरेचनः adho-rechanah—सं० पुं० आरग्वध वृक्ष । अमलतास का पेड़-हिं० । Cassia fistula (Tree of-).

अधोर्द्ध adhorddha-हिं० क्रि० वि० [सं०] ऊपर नीचे । तले ऊपर ।

अधोललाट चक्राङ्ग adholaláṭa-chakráng-हिं० संज्ञा पुं० (Inferior temporal gyrus).

अधोलोमः adholomah—सं० (हिं०) पुं० गुह्य स्थान के ऊर्ध्व भाग के केश को कहते हैं । झाँट, कामाद्रि केश-हिं० । (The hair on the groin).

अधोलंब adho-lamba-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) लंब । (२) साहुल ।

अधोवर्ती क्षुद्रांत्रीय धमनी adho-vartti kshudrántriya-dhamaní-हिं० स्त्री० (Lower mesenteric artery) छोटी आँतों के नीचे की धमनी ।

अधोवातावरोधोदावर्त्त adho-vátávarodhodávartta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] रोग विशेष । अधोवायुके वेग को रोकने से उत्पन्न उदावर्त रोग । इस रोग के लक्षण ये हैं-मल मूत्र का रुक जाना, अफरा चढ़ना, गुदा-मूत्राशय-लिङ्गेन्द्रिय में पीड़ा तथा वायु से पेट में अन्य रोगों का होना ।

अधोवायुः adho-váyuh-सं० पुं०
अधोवायु adhováyu-हिं० संज्ञा पुं०
(१) अपानवायु । गुदा की वायु । (२) पाद । गोज़ । पर्दन । नीचेकी हवा । See-Apána-váyu.

अधोशाखा adho-shákhá-सं० स्त्री० (Lower extremity) निम्न शाखा, धड़ के नीचे की शाखा । इसमें नितंबास्थि, ऊर्वस्थि, जंघास्थि, जानुका, पाजो, गुल्फ, प्रपाद तथा अँगुल्यस्थियों का समावेश होता है । प्रत्येक शाखा में ३१ अस्थियाँ हैं, दोनों में ६२ ।

अधोशिरा कुल्या adhoshirá kulyá-सं० स्त्री० देखो—शिराकुल्या ।

अधोशुक्तिका adho-shuktiká
अधोसीपाकृति adhosipákriti
—सं०,हिं० स्त्री० (Inferior turbinate) नासिका की बाहरी दीवार पर की तीन मुड़ी हुई अस्थियों में से नीचे वाली अस्थि । यह तीनों में सब से बड़ी है और एक पृथक् अस्थि है । इस अस्थि की शकल सीपी जैसी होती है ।

अधोहनुः adhohanuh-सं० पुं० नीचे का जबड़ा । (Lower jaw) देखो—अधो हन्वस्थि ।

अधोहन्वस्थि adho-hanvasthi-हिं० संज्ञा स्त्री० नीचे के जबड़ेकी अस्थि । इज़्मुल्-फ़क्कुल्-अस्फ़ल-अ० । उस्तख़्वानुल्-यारहे-ज़ेरीं फ़ा० । मैण्डिबल (Mandible). इन्फ़ीरियर मैग्ज़िलरी बोन (Inferior maxillary bone)-इं० ।

यह चेहरे की अस्थियों में सब से बड़ी और मज़बूत अस्थि है और सब से नीचे के भाग में रहती है, ठुड्डी (ठोड़ी) इसमें बनती है । यह अस्थि देशी जूते की नाल की भाँति मुड़ी हुई होती है ।

अधंतरी adhantari-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अधः+अंतरी] मालखंभ की एक कसरत ।

अधः adhah-सं० क्रि० (अव्यय) निम्न । नीचे । तले । (Down, below.) ।-संज्ञा पुं० (१) अधोभाग, निम्न भाग । (२) योनि । वै० निघ० ।

अधःकर्षणम् adhah-karshaṇam-सं० क्ली० नीचे खींचना (Drawing Downwards.)

अधः काय adhah-káya-हिं० संज्ञा पुं०

[अधः=नीचे+काय=शरीर] कमर के नीचे के अंग। नाभि के नीचे के अवयव।

अधः कुन्तलः adhah-kuntalah-सं० पुं० अन्तर्लोम।

अधः कुक्षि देशः adhah-kukshideshah -सं० पुं० (Hypogastric region.) कुक्षि निम्नभाग। पेड़ के नीचे का हिस्सा। इक़्लीम् ग्रस्‌ली, क़िस्म ग्रस्‌ली-अ०।

अधःकौक्षेय-प्लक्षम् adhah-koukshoya-plaksham-सं०पुं० कुक्ष्यधः भाग स्थित नाड़ी जाल। ज़फ़ीरह्-ख़म्‌लिय्यह्-अ०। (Hypogastric Plexus.)

अधः पतन adhah-patana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१)। (Precipitation.) अधः क्षेपित या तलस्थायी होना। (२) नीचे गिरना। (३) विनाश, क्षय, पतन। देखो-अधः पातन।

अधः पात adhah-páta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) अधः क्षेपित (-त), तलस्थित, नीचे गिराहुआ। (Precipitate)। (२) नीचे गिरना। देखो-अधः पातन। (२)तलछट, गाद।

अधः पातनम् adhah-pátanam-सं०क्लीं०
अधः पातन adhah-pátana-हिं०संज्ञा पुं०

अधःपातनम् - इसका शाब्दिक अर्थ नीचे गिराना है। अधःक्षेपण तलस्थिरीकरण।

(१) किन्तु, प्राचीन भारतीय रसायनशास्त्र की परिभाषा में इसका अभिप्राय "पारद शोधन के तीन विधानों में से एक" है। विधि—नवनीत (नैनुआ) नाम का गंधक और पारद इनको सम भाग लेकर जम्भीर के रस से मर्दन करें। फिर केवांच की जड़, शोभाञ्जन की जड़, श्वेत अपामार्ग, सर्षप और सेंधा नमक (किसी किसी जगह पारद को त्रिफला क्वाथ, शोभाञ्जन बीज, चित्रक मूल, रक्त सर्षप और सेंधा लवण से मर्दन करने का विधान है।) के समान भाग कल्क को मिश्रित कर यंत्र के ऊपरी पात्र के भीतरी पेंदे में उक्त मिश्रित कल्क के साथ पारद का प्रलेप कर दें। यंत्र के जल-पूर्ण निम्न पात्र को पृथ्वी में गढ़ा बनाकर उसमें रखें और उसके ऊपर से पारद लिप्त पात्र को औंधा कर रख दें। दोनों पात्रों के मुख को मिलाकर मृदु मृत्तिका द्वारा उनकी संधियों को भली प्रकार बन्द कर दें। ऊपर के [illegible] उत्ताप देने पर पारद पृथक् होकर जल में गिरेगा। यह पारद शुद्ध होगा। पारद शोधन [illegible] क्रिया को अधःपातन और जिस यंत्र द्वारा यह क्रिया सम्पन्न होती है उसको चतुर्मुख भूधरयंत्र कहते हैं। देखो—पारद। "नवनीताह्वयं सूतनिर्यादि।" र० सा० सं०

(२) अर्वाचीन रसायनशास्त्र की परिभाषा में इससे अभिप्राय विलयन में से किसी द्रव्य का पात्र तल पर शनैः शनैः बैठना अथवा तलस्थ होना है।

कुछ द्रव्य ऐसे होते हैं, कि यदि उन के विलयन पृथक् पृथक् शुद्ध जल में बनाए जाएँ, तो यह विलयन सर्वथा स्वच्छ और पारदर्शी होते हैं। पर यदि उनको मिला दिया जाए, तो कोई ऐसा परस्पर रासायनिक विकार होता है, कि एक अविलेय वस्तु बन जाती है, जो विलयन को कलुषित कर देती है, और पात्र तल पर शनैः शनैः बैठ जाती है। इस प्रकार दो विलेय द्रव्यों के मेल से एक अविलेय वस्तु का बनना और पात्र तल पर शनैः शनैः बैठना अधःपातन (अधः [illegible]) कहलाता है, और जो द्रव्य पात्र तल पर बैठता है, उसे अधः पात (अधः क्षेप) कहते हैं।

पर्य्याय—अधःपातन—

प्रेसिपिटेशन Precipitation-इं० [illegible]-अ०। तहनशी करना-उ०।

अधःपात—

प्रेसिपिटेट Precipitate-इं०। [illegible] उकार, दुर्द, तलछट, तह[illegible] [illegible] उ०।

अधः पाश्चात्य चक्राङ्ग adhah-páshchátya-chakránga-हिं० संज्ञा पुं० [illegible] tero inferior gyrus)

अधः पुटः adhah-putah-सं० पुं० [illegible] -पुट। वै० निघ०।

अधः पुष्पी adhah-pushpí-सं०

गोजिह्वा क्षुप सं०। गोभी-हिं०। (Hieracinum) गा० नि० व० २। (२) चोर पुष्पी क्षुप विशेष। नीले फूल की एक बूटी जिसे अंधाहोली भी कहते हैं।

संस्कृत पर्य्याय—अधःपुष्पी, मङ्गल्या, अमर पुष्पिका। रा०। -हिं० स्त्री० अनंतमूल नामक औषधि। चोर काँटकी, चोर खड़िका, मोंड़ह, उकडे, वटिया, लेख्रा-बं०। हेदाहुली -गौड़। वै० निघ० मततज्वर, ब्रह्मदण्डी।

अधः प्रस्तरः adhah-prastarah-सं० पुं० तृणासन। वै० निघ०।

अधःशङ्ख चक्राङ्ग adhah-shankha-chakránga हिं० संज्ञा पुं० (Temporo-inferior gyrus).

अधः शयन adhah-shayana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी पर सोना।

अधः शल्यः adhah-shalyah-सं० पुं० (१) अपामार्ग क्षुप। (Achyranthes aspera) रा० नि० व० ४। भा० पू० १ भा०। (२) श्वेत अपामार्ग। Achyranthes Indica, *Roxb.* (The white variety of-) वै० श०।

अधः शाखः adhah-shákhah-सं० पुं० संसाराश्वत्थ वृक्ष। वै० श०।

अधः शेखरः adhah shekharah सं० पुं० श्वेत अपामार्ग। Achyranthes aspera (the white variety of).

अध्मान adhmána-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Flatulent) रोग विशेष। पेटका अफरना। आध्मान।

इस रोगमें पेट अधिक फूल जाता है, दर्द होता और अधोवायु का छूटना बन्द हो जाता है।

अध्यण्डा adhyandá } -सं० स्त्री० (१) कपि-
व्यण्डा vyandá } कच्छु लता।
केवाँच, कौंच, वानरी-हिं०। आलकुशी-बं०। (Mucuna pruriens, carpopogon pruriens)-ले०। देखो-आलकुशा या केवाँच।

(२) भूम्यामलकी, भूमि आमला, भुँई आँवला। (Phyllanthus niruri). रत्ना०। (३) कोकिलाक्ष-सं०। तालमखाना (Hygrophila spinosa) मद० व० १। भा० पू०। प० मु०।

अध्यर्ध adhyardha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) डेढ़। (२) वायु जो सबको धारण करने वाली और बढ़ाने वाली है और सारे संसार में व्याप्त है

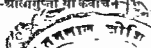
अध्यर्वुदम् adhyarvudam-सं० क्ली० }
अध्यर्बुद adhyarbuda-हिं० संज्ञा पुं० }
रोग विशेष। जिस स्थानपर एक बार अर्बुद रोग हुआहो उसी स्थान पर यदि फिर अर्बुद हो तो उसे अध्यर्बुद कहते हैं।

यथा—नु० नि० ११ अ०। "यज्जायतेऽन्यत् खलु पूर्वजाते ज्ञेयं तदध्यर्बुदमर्बुदज्ञैः"

अध्यशनम् adhyashanam-सं० क्ली० }
अध्यशन adhyashana-हिं० संज्ञा पुं० }
(१) अजीर्ण पर भोजन करना। यथा-वै० निघ० दिनचर्या०। "अजीर्णे भुज्यते यत्तु तदध्यशनमुच्यते।" पहिला भोजन बिना पचे अर्थात् अजीर्ण रहते हुए और भोजन कर लेना अध्यशन कहलाता है। भा० म० ख० १ भा० अतीसा० चि०। वा० सू० ८ अ०। (२) अजीर्ण। अनपच। (Indigestion).

अध्यक्षः adhyakshah-सं० पुं० (१) क्षीरिका वृक्ष, राजादनी-सं०। खिरनी-हिं०। (Mimusops hexandra) श० र०। (२) महार्कवृक्ष अर्थात् बड़े मदार का पेड़।
त्रि० (३) एक मानहै जो आधा कर्ष (१ तो०) के बराबर होता है। सि० य० र० [illegible] एलादिगुटिका वृन्द।
-हिं० पुं० (१) स्वामी। मालिक। (२) नायक। सरदार। मुखिया। प्रधान। (३) अधिकारी। [illegible]।

अध्युषितः adhyushitah-सं० पुं० समस्त पशु रोग।
त्रि० [illegible]।



अध्युष्ट adhyushta-हिं० वि० पुं० [सं०] बंसा हुआ। आबाद।

अध्यूढ़ा adhyúrhá-सं० स्त्री० (Married woman) प्रथम विवाहिता स्त्री। वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह करले। ज्येष्ठा पत्नी।

अध्रियामणी adhriyámaní-हिं० संज्ञा स्त्री० [?] कटार। कटारी। -हिं०।

अध्रुव adhruva-हिं० वि० पुं० [सं०] (१) चल। चंचल। चलायमान। अस्थिर। (२) अनिश्चित। अनित्य।

अध्रुषः adhrushah-सं० पुं० उक्त नाम का तालुगत क्षुद्र रोग विशेष। इस रोग में कड़ी सूजन, तालू प्रदेश में अधिक रक्तता, वेदना और ज्वर होता एवं यह रक्तविकार से उत्पन्न होता है। सु० नि० १६ अ०। यह रक्त दोषसे उत्पन्न होता है। इसमें तालु देश में आहित वर्ण की अति स्थूल सूजन होती है जिससे तीव्र वेदना और ज्वर होता है। मा० नि०।

अध्वगभोज्यः,-ग्यः adhvaga-bhojyah,-gyah-सं० पुं० आम्रातक वृक्ष।

अध्वगवृक्षः adhvaga-vrikshah-सं० पुं० (Spondias mangifera) आम्रातक वृक्ष, अम्बाड़ा।

अध्वगक्षमी adhvaga-kshamí-सं० पुं० (१) (See-Khecharah) खेचरः-सं०। (२) पक्षी-सं०, हिं०। (A bird) वै० निघ०।

अध्वगः adhvagah-सं० पुं० (१) (Camel) उष्ट्र-सं०। ऊँट-हिं०। (२) (Donkey) अश्वतर-सं०। खच्चर-हिं०। (३) बटोही, पथिक, यात्री, मुसाफिर।

अध्वजा adhvajá-सं० पुं० स्वर्णुलीक्षुप। See-Svarnulí रा० नि० व० ४।

अध्वनिषेवणम् adhva-nishevanam-सं० क्ली० अध्वचलन, भ्रमण। वै० निघ०। See-चंक्रमण (Chankramana).

अध्वरा adhvará-सं० स्त्री० मेदा। (Medá.) मा० पू० १ भ० ग०।

अध्वशल्यः adhva-shalyah-सं० अपामार्ग। चिचड़ी। (Achyranthes aspora) रा०।

अध्वशोषः adhva-shoshah-सं०(हिं०)

अध्वशोषि adhva-shoshi-हिं० संज्ञा पुं० रोग विशेष। रास्ता चलनेसे उत्पन्न शोष (क्षय) रोग। नि०।

अध्वसिद्धकः adhva-siddhakah-सं० पुं० सिन्धुवार वृक्ष, सिन्दुवार। See Sinduvárah. रा० नि० व० ४।

अध्वान्तशात्रवः adhvánta-shátravah सं० पुं० श्योनाक वृक्ष-सं०। सोनु, मोरवाला-हिं०। (Calosanthes Indica or Oroxylum Indicum. Syn. Bignonia Indica.) श० च०।

अध्वान्तं adhvántam-सं० क्ली० सायंकाल (Evening, Eventide).

अध्वः adhvah-सं० पुं० (१) चित्त वर्त्म, पक्ष्म (Eye-lid)। (२) पथ, मार्ग, रास्ता।

अन ana-हिं० क्रि० वि० [सं० अन्] बिना। वि० [सं० अन्य=दूसरा] और। संज्ञा पुं० [सं०] (१) अन्न। अनाज। (२) दमुल् अख़वैन-अ०। हीराबोली, खूनाखराबा-हिं०। Dragon's blood (Dracæna Cinnabar, Balf. f.) फा० ३ भा०।

अन अक्का सोडियम् क्लोराइड Unaq Sodium chloride-ले० कालानमक (Black Salt)-ई०।

अनअसी ana-asi-मेदा। See-Medá.

अन-इक्-कट्ट ana-ik-katta-ता० बड़ा कांटा, अगेविअमेरिकेना (Agave Americana)

अनऋतु ana-ritu-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अन+ऋतु] (१) विरुद्ध ऋतु। ऋतुविरुद्ध ऋतु

मिम। अकाल। असमय। (२) ऋतु-विप-
य। ऋतु के विरुद्ध कार्य।

नक़ āa-āu-naq-अ० (ए० व०) अश-
क (ब० व०) ग्रीवा। नेक (Neck),
वेंक्स (Corvix)-इं०।

ānakab-अ० मत्स्यभेद, एक प्रकार
मछली। (A sort of fish).

āanaqat-अ० नर्गिसजोश। See-
Marzanjosh.

ती āanqali-यु० मलजत।

ीमन anaqalimana-यु० बहार
जिसे हिन्दी में पाषा कहते हैं। यह पापना
का एक दुं डा भेद है। लु० क०।

ानक़ुस ana-qavánaqúsa-यु० मर्ग-
या दौरू। गाजर का बीज अथवा करप्स
ोका बीज। लु० क०।

सस anaqilasa-यु० मयूर सदृश एक
ी है जो उष्ण प्रदेशों में उगती है। लु० क०।

ली āaná-qili-यु० मलजम।

रिहम āanaqurihm-अ० } (Va-
हद्विल Mah-bul-अ० }

gina) यद्यपि [अनक़=ग्रीवा+रहिम=गर्भाशय]
ा शाब्दिक अर्थ गर्भाशय की ग्रीवा है, तो भी
ाचीन तिब्बी परिभाषा में यह योनि के लिए
ुक्त होता था। जरायु के साथ इस नाली
(योनि) का सम्बन्ध वैसा ही है जैसा कि
ुराही का उसकी ग्रीवा के साथ। इसीलिए
ाचीन यूनानी चिकित्सकोंने इसको अनक़ुर्रिहम
नाम से अभिहित किया। उक्त नाली के बहिर्द्वार
(छिद्र) या दरार को फ़र्ज और उक्त नाली
को मद्खिल या अन्दाम निहानी कहते हैं।

अनक़ुर्रिह्म और रक़बतुर्रिह्म का
भेद—

उपर्युक्त दोनों शब्दों का अर्थ 'गर्भाशय की
ग्रीवा' है। परन्तु, अनक़ुर्रिह्म तो योनि के लिए
प्रयोग में आता है, पर रक़बतुर्रिह्म अपने
वास्तविक अर्थों में गर्भाशय की ग्रीवा के लिए
प्रयुक्त होता है।

आधुनिक मिश्रदेशीय चिकित्सक रक़बतुर्रिह्म
के स्थान में अपने वास्तविक अर्थों में गर्भाशय
की ग्रीवा के लिए अनक़ुर्रिह्म शब्द का प्रयोग
करते हैं और अनक़ुर्रिह्म के स्थान में मद्खिल
शब्द का, जो अधिक उपयुक्त एवं यथार्थ है।

नोट—डॉक्टरीमें अनक़ुर्रिह्म या गर्भाशयकी
ग्रीवा के अर्थमें रक़बतुर्रिह्म को सर्विक्स युटराइ
(Cervix Utori) और मद्खिल या अन्दाम
निहानी अर्थात् योनि के अर्थ में अनक़ुर्रिह्म को
वेजाइना (Vagina) कहते हैं।

देखो—योनि।

अनक़ूद ana-qúda-फ़ा०, तु० काली तुलसी।
नमाम। लु० क०।

अनक़ूद āana-qúda-अ० गुच्छा। एक पौधा
है। लु० क०।

अनक़ून ana qúna-यु० सदा गुलाब। लु०
क०।

अनक़ूस ana-qúsa-यु० नाशपाती लु० क०।
(Pyrus communis).

अनकंप ana-kampa-हिं० संज्ञा पुं० देखो-
अकंप।

अनक् कालिक anak-kálika-वृश्चिपत्री।

अनगना anagana-हिं० संज्ञा पुं० गर्भ का
आठवाँ महीना।

अनग्ना anagná-सं० स्त्री० } कपास
अनग्निका anágniká सं० स्त्री० }
-हिं०। कार्पासी-सं०। (Gossypium
herbaceum, *Linn.*) इं० मे० मे०।

अनघः anaghah-सं० पुं० } सफेद सरसों
अनघ anagha-हिं० संज्ञा पुं० }
-हिं०। गौर सर्षप-सं०। (Brassica
juncea) रा० नि० व० १६।
हिं० वि० पवित्र, शुद्ध।

अनघुल anaghula-हिं० वि० अविलेय (In-
soluhble).

अनघ्नः anaghnah-स० पु० श्वेतसरसों-हिं०।
गौर सर्षप-सं०। (Brassica juncea)
वै० निघ०।

अनङ्कम,-कम् anangam,-kam-सं० क्ली० मन। (Mind) श० र०।

अनङ्गनिगडोरसः ananganigaro rasah -सं० पुं० ताम्बा, हीरा, सोंगी, हरताल, वैक्रान्त (तुरमली), सूर्यकांत, माणिक्य इनकी भस्म, सोना, चाँदी, सोनामाखी और अभ्रक भस्म प्रत्येक समानभाग और सबके बराबर पारा और पारा मिलाकर सबके बराबर गंधक मिश्रित कर काम के फूलों के रस से तीन भावना देकर सुखायें। फिर आतसी शीशी में बन्द कर बालुका यंत्र में क्रम से मन्द, मध्य और तीव्र अग्नि से तीन दिन पकाएँ। फिर शीतल होने पर निकालें और सोलहवाँ भाग विष, काली मिर्च, कपूर, वंशलोचन, जावित्री, लवङ्ग और कस्तूरी की भावना दें तो यह सिद्ध होता है। मात्रा-१ रत्ती। गुण-दूध मिश्री के साथ खाने से नपुंसकता दूर होती है। रस० यो० सा०।

अनङ्ग मेखला गुटिका ananga mekhalá guṭiká-सं० स्त्री० देखो-परिशिष्ट भाग।

अनङ्गमेखलामोदकः anangamekhalá modakah-सं०पुं० देखो-परिशिष्ट भाग।

अनङ्ग वर्द्धकोरसः anangavarddhakorasah-सं० पुं० पारा और धतूर बीजको सम भाग ले, धतूरके बीजको तेल डाल कर खरल में घोटें, पुनः गंधक द्विगुण भाग मिला बारीक घोट कर रख लें। इसमें पारे की भस्म (चन्द्रोदय) मिलानी चाहिए। मात्रा-१-२ रत्ती। गुण-इसके सेवन से मनुष्य कामान्ध हो जाता है। रस० यो० सा०।

अनङ्ग सुन्दर रसः ananga-sundara-rasah-सं० पुं० वाजीकरणाधिकारोक्त रस विशेष। यथा-एक पल पारा और एकपल गंधक को तीन दिन तक लाल कमल के रस की भावना दें। तत्पश्चात् इसको प्रहर भर बालुकायंत्र में पकाएँ। पुनः उतार कर एक दिन रक्त अगस्त पुष्प रस तथा श्वेत कमल के रस में भावना दें। र० सा० सं०।

अनङ्गसुन्दरो रसः anangasundarorasah -सं०पुं० (१) पारा १ .., .. भस्म १ कर्ष, ताम्रभस्म १ पल, .. निष्क। सबको मर्दित कर .. गोक्षुर, मूसली, मुण्डी और शतावरी कर बेर प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। अत्यन्त पौष्टिक है। रस० मं०।

(२) शुद्ध पारा, शुद्ध .. भाग लेकर तीन दिन तक .. रस से भावना दें। पुनः मयूर के .. बालुका यंत्र में पकाएँ, फिर निकाल .. रंग के अगस्त और सफेद कमल के रस से पृथक् भावना देकर रक्खें।

मात्रा-२ रत्ती। इसके सेवन से मनुष्य स्त्रियों से रमण करने की शक्ति प्राप्त .. है। रस० यो० सा०। इस नाम का .. योग र० मं०, रसायन सं० वाजीकरण में लिखा है।

अनङ्गुरः anangurah सं० पुं० .. वाला। अथर्व०। सू० ६। २२।..

अनचण्डई ana-chandai-ता० .. -ने० (Solanum Ferox)-..

अनचन्द्र ana-chandra ते० .. (Acacia Ferruginea, .. -लेo। स० फा० इं०।

अनज़ ánaz-अ० बकरी, छागी। (.. goat). लु० क०।

अनजल्ली ana-jalli-ता० .. अन्य पनस, जंगली कटहल। Artoc.. Hirsuta, Lam. फा० इं० ३ भ..

अनजान anajána-हिं० संज्ञा पुं० (१) .. प्रकार की लम्बी घास जिसे प्रायः .. हैं और जिससे उनके दूध में कुछ .. है। (२) अजान नाम का पेड़।

अनटीपण्डु anati-pandu-ते० केला, (Musa paradisiaca, Linn. इं० ३ भा०।

अनडुजिह्वा anadu-jjihvá-सं० स्त्री०

-हिं० । गोजिया शाक-बं० । रा० नि०
४ । (Elephantopus, Scaber.)

anaduha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०]
। वृष । (An ox).

-anaduhi-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री०
गवि । गाय । (A cow) देखो-गाय ।

anadvan-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं०
A bull, an ox) वृष-सं० । बैल
-हिं० । इसके पर्याय-बलीवर्द, वृषभ,
अनड्वान्, सौरमेय, गौ, उक्षा और भद्र ये
के संस्कृत नाम हैं । भा० पू० । रत्ना० ।
) the Sun सूर्य । (उपनि०) ।

anadvahi-सं० स्त्री० (A cow),
गवि-सं० । गाय-हिं० । इसके पर्याय-सुरभि,
सौरभेयी, माहेयी और गौ ये गायके संस्कृत नाम
हला० ।

ananuh-सं० पुं०, क्ली० सूक्ष्म धान्य ।
धान-बं० । वै० निघ० ।

anata-हिं० वि० [सं०] न झुका हुआ ।
था ।

anatra-janiya हिं० वि०
Non-nitroganous) नत्रजन विहीन ।
पदार्थ जिनमे नत्रजन नहीं होती जैसे-वसा
चरबी), शर्करा (शकर), श्वेतसार (मांड),

anadyah-सं० पुं० गौरसर्षप-सं० ।
सरसों-हिं० । (Brassica juncea).
० ।

anadyatana-हिं० वि० [सं०]
पतन के पहिले या पीछे का ।

ananas-म० । देखो अनन्नास ।

anansha-बं० छोटा घीकुवार, छोटी
कुवार-हिं० । (Aloe litoralis) इं० मे०
० ।

anannasa-हिं०, मल०, मह०, गु०
अनन्नास, अनरस-हिं० । (Ananas sativus) इं० मे० मे० ।

anantakah सं० पुं० (१) मूलक, मूली । (Raphanous sativus).

(२) नलतृण-सं० । नरकट-हिं० । Phragmites karka । मद० व० १ ।

अनन्त गुण मण्डूरम् anantaguna mandúram-सं० क्ली०(नवायस मण्डूर)गन्धक, सुहागा, पारा, त्रिकुटा, त्रिफला पृथक् पृथक् सम भाग लें और सर्व तुल्य लौह किट्ट शुद्ध मिलाएँ । पुनः मद्य मे दूने गोमूत्र में पकाएँ और फिर सर्व तुल्य पुरातन गुड़ मिलाकर घोटें । मात्रा—८ माशे । पथ्य दूध और चावल खाना चाहिए ।

गुण—इसके सेवन से क्षय और पांडुरोग का नाश होता है । रस० यो० सा० ।

अनन्त मूलम् anantamúlam-सं० क्ली०
(१) करालाख्य औषध । देखो-कराल ।
(२) सुगंधा । (३) यवासा भेद । श० चि० ।
(४) अनन्ता । देखो- शा(सा-)रिवा ।

अनन्तमूली ananta-múli-सं० क्ली० । (१) दुरालभा । (Alhagi Maurorum) । (२) रक्तदुरालभा Alhagi maurorum (the red variety of-) वै० निघ० ।

अनन्तरन्ध्रका ananta-randhraká- सं० स्त्री० मर्मर पोलिका । चारके पिठे-बं० । वै० निघ० ।

अनन्तवातः ananta-vátah- सं० पुं० उक्त नाम का शिरोरोग विशेष । लक्षण जिसमें तीनों दोष कुपित होकर मन्या (गर्दन) की नाड़ी को तीव्र पीड़ा समेत अति पीड़ित कर, चक्षु, भौंह कनपटी में शीघ्र आकर विशेष स्थिति करते हैं, और गण्ड स्थल की बगल में कंप, ठोंडी की जकड़न और नेत्र रोगों को करते हैं । इन तीनों दोषों से उत्पन्न हुए शिर रोग को "अनन्तवात" कहते हैं । मा० नि० ।

अनन्तः anantah-सं० पुं०,(१) दुरालभा । (Alhagi maurorum) वै० निघ० २ भा०, अनन्तादि चूर्णोक्त,सर्व्वज्वर प्रकरणोक्त । (२) सिन्धुवार वृक्ष अर्थात् सम्हालू (Vitex negundo) । (३) अभ्रक धातु । Talc (Mica). रा० नि० व० १३ । (४) आकाश ।

अनन्ता anantá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) उक्त नाम की प्रसिद्ध लता विशेष। अनन्तमूल –हिं०, बं०। सु० मिश्र० अ०। उत्तर में यह शारिवा नाम से प्रसिद्ध है। रा० नि० व० १२। देखो–(शा–)सारिवा तथा श्यामलता (Sárivá)। च० द० पि० ज्व० त्रि० शिरोलेप। "कालेय चन्दनानन्ता।" भा० म० खं० ४ भा० गर्भ–चि०। "अनन्ता शारिवा रास्ना।" भा० म० खं० १ भा० ज्वर० शारीवादि। "अनन्ता बालकं मुस्तम्।" च० सू० ४ ३१ दश०। (२) दूर्वा, दूब। (Cynodon Dactylon). हे० च० ४। (३) स्वर्णक्षीरी। भंभाँड़। सत्यनाशी। (Agremone Mexicana)। प० मु०। लाङ्गली, करियारी का पौधा। विषलाङ्गली–बं०। (Gloriosa Superba)। प० मु०। भा० पू० १ गु० व०। (५) दुरालभा, जवासा (Alhagi Maurorum)। प० मु०। भा० म० खं० ४ भा० मु० रो० चि०। "कटुकैरनन्ता खदिरारिमेदू......।" धा० १५ अ०, प्रियङ्ग्वादि–च०। प्रियङ्ग्वादि–दूर्वादि–प हेमा तथा अरण्य। "दूर्वामनन्त निम्नवासात्मगुप्ता पयाद्रको योजन वदरयनन्ता।" (६) नीलदूर्वा। भा० पू० १। रा०नि० व० २३। (७) गोलोमी श्वेत दूर्वा। रा० नि० व० ८। (८) यवासा। (Alhagi Maurorum) भा० म० ४ भा० कासेयादि० व०।

"अनन्तां कुकुटी विम्बीम्।" दुरालभा के अभाव में यवासा ग्रहण करना चाहिए। (६) अग्निमन्थ। अरणी (Premna Serratifolia)। (१०) गुडूची, गुरुच। (Tinospora Cordifolia)। (११) पीपर।

अनन्तामल anantámala-सं० हरताल। (Yellow orpiment).

अनन्तो ananto-बं० उरवा।–हिं० सालसा, कपूरी। Hemidesmus Indicus, R. Br. (Country Sarsaparilla). स० फा० इं०।

अनन्तोमूल ananto-múla-बं० उशबा। शारिवा। (Country Sa...) स० फा० इं०।

अनन्नास anannás-हिं० संज्ञा पुं० ... लियन (अमेरिकन) मानस, पुर्तं० अनानास। अनन्नस, अनानास–हिं०। पारवती, कौतुक–संज्ञक–सं०। अनारस, अनानस–बं०। ... अनानास सेटिवस (Ananas Sativus, Schult. mil', Linn.)–ले०। पाइन ए(पल) (Pine apple)–इं०। अनानास (Ananas) –फ्रां०, पुर्त०, अमे०। ... थल्ई–ता०। अनासु–पदडु, ... केत–चक, परङ्गि–चक्क–मल०। ... अनासु, परङ्गि–काई–कना०। ... रस, अनन्नास–गु०। अननस, ... –मह०। अन्नासि–सिं०। ... –बर०।

अनन्नास वर्ग।

(N. o. Bromeliaceæ.)

उत्पत्ति स्थान—समस्त भारतवर्ष, ... समग्र पूर्वी देशों में इसकी खेती होती, अमरीका।

नामविवरण—इसकी बहुश: ... संज्ञाएँ अमेरिकन अनासी तथा मानस ... व्युत्पन्न हुई हैं।

इसकी मालाबारी संज्ञा परङ्गि ... युरूपीय फल (European fruit) है।

वानस्पतिक वर्णन—राम बाँस का एक पौधा जो दो फुट तक ऊँचा होता है। यह पौधा घृतकुमारी के समान ... है। किन्तु, इसके पत्र अत्यन्त पतले ... जिनकी रचना कठोर तन्तुओं से ... पौधे के मध्य भाग से निकले हुए ... पर छिलकेदार, गावदुमी शकल की ... लगती हैं। जिस पर फल उत्पन्न होते

ऊपर बहुत से छोटे छोटे पंचदलत्र होते हैं जिनको ताज कहते हैं। उन नाल-पालियों में बहुसंख्यक पुष्प नीले रंग के आते हैं। पुष्पाभ्यंतर कोष त्रिपटल (न पंखड़ी युक्त) एवं पुष्पबाह्य कोष त्रिभाग होता है। पुष्पित होने के बाद ये क्रमशः और बड़े होते जाते हैं और रस से भरे होते यह अंकुर फिर मांसल पीत वर्ण का एवम् ...था स्वाद युक्त होता है।

रासायनिक संगठन—ब्युटिरेट ऑफ इथिल (Butyrate of ethyl) को ८ वा १० ... स्पिरिट ऑफ वाइन के साथ योजित करने ...अननास का एसेंस प्रस्तुत होता है। अननास ...में प्रोटीड-पाचक सन्धान (अभिषव) ...है। तीन ड्युहर्ड बार्डस यह स्वरस १० मे ...मेन घनीभूत ऐल्ब्युमीन को पचा देता है। ...तथा क्षारीय घोलों (विलयन) में इसका ...न और न्युट्रल (उदासीन) द्रवोंमें सर्वोत्तम ...व होता है। स्वरस में एक भाँति का दुधि-...क संधान (अभिषव) होता है।

...स्म में स्फुरिकाम्ल तथा गंधकाम्ल, चून मग्न, ...का, लौह और पांशु हरिद् एवं सैंधहरिद् ...रे होते हैं।

प्रयोगांग—पक्व या अपक्व फल और पत्र।

औषध-निर्माण—तैल, स्वरस का एसेंस ...र पत्र का ताज़ा रस।

इतिहास, प्रभाव तथा उपयोग—

अमेरिका के दर्यात होने से पूर्व भारतीयों ...अननास का ज्ञान न था। सर्व प्रथम युरुप ...वासियों को हर्नंडीज (१५१३) द्वारा इसका ...न हुआ और सन् १५४४ ई० में पुर्तगाल ...वासी मैगील से इसको भारतवर्ष में लाए। ...बुलफ़ज़ल ने आईने अकबरी में इसका उल्लेख ...या है। दार शकोह के लेखक ने भी इसका ...र्णन किया है।

र्‍हीडी (Rheede) के कथनानुसार ...मलावार में इसके पत्र को चावल के धोवन में ...डाल कर इसमें (Pulvis Baleari) योजित कर जलोदरी को जल से मुक्ति प्राप्त करने के लिए व्यवहार कराते हैं। अपक्व फल सिरका के साथ गर्भपात कराने तथा उदरस्थ आध्मान को दूर करने के लिए व्यवहार किया जाता है।

मख़्ज़नुल् अदुवियह के लेखक मीर मुहम्मद हुसेन लिखते हैं—अननास दो प्रकार का होता है—(१) साधारण और (२) पुष्प जो अत्यंत मधुर एवं सुस्वादु होता है। प्रकृति-सर्द व तर द्वितीय कक्षा में (किसी किसी के मत से १ कक्षा में उष्ण और २ कक्षा में तर है)। हानिकर्त्ता-सर्द व तर प्रकृति को, स्वर यंत्र तथा श्वासोच्छ्वास सम्बन्धी अवयवों को। दर्पघ्न-लवण तथा आर्द्रक का मुरब्बा (किसी किसी ने शर्करा या सोंठ का मुरब्बा लिखा है)। प्रतिनिधि-सेव या बिही प्रभृति। मुख्य कार्य-पित्त (उष्ण) प्रकृतिको लाभप्रद है (कफज प्रकृति को नहीं)। शर्बत की मात्रा—२ तो० से ४ तो० तक।

गुण, कर्म, प्रयोग—अननास पित्त की तीक्ष्णता का शामक और यकृत, उष्ण आमाशय को शक्तिप्रद एवं विलम्ब पाकी है। आह्लादकर्त्ता (हृद्य) और हृदय को बल प्रदान करता एवं मूर्च्छा को दूर करता है। उष्ण व रूक्ष प्रकृति वालों के लिए पथ्य एवं हृद्य है। इसके शर्बत, मुरब्बा, मिठाई और चटनी आदि पदार्थ बनाए जाते हैं। इसके मीठे चावल भी पकते हैं और यह अत्युत्तम आहार है।

इसकी शीतलता को कम करने के लिए इसके बारीक बारीक परत काट कर प्रथम उसको नमक के पानी से धोकर पुनः स्वच्छ जल से धोना चाहिए। फिर उस पर शर्करा एवं गुलाब जल छिड़क कर व्यवहार करना चाहिए। कहते हैं कि किंचित् सोंठ का चूर्ण मिलाने से भी यह उत्तम हो जाता है।

अननास मस्तिष्क एवं आमाशय को बलप्रद और निर्बल तथा शीत प्रकृति को बल प्रदान करता है। म० अ०। तु०।

नोट—मख़्ज़न में अपक्व फल एवं उसके पत्र

के औपधीय उपयोग के सम्बन्ध में कोई वर्णन नहीं आया है।

अननास पत्र का ताज़ा रस सशक्त कृमिघ्न और शर्करा के साथ विरेचक है। पक्व फल का रस स्कर्वीहर (Anti-scorbutic) मूत्रल, स्वेदक, मृदुभेदक और शैत्यकारक है तथा पैत्तयु-मिलीय पदार्थों के पचाने में सहायता पहुँचाता है। अपक्व फल का रस अम्ल, रक्तावरोधक, सशक्त मूत्रल और कृमिनाशक तथा रजः प्रवर्त्तक है। अधिक परिमाण में यह गर्भपातक है।

हिक्का प्रशमनार्थ इसके पत्तों का ताज़ा रस शर्करा के साथ व्यवहार में आता है। यह विरेचक भी है।

पक्व फल का रस ज्वरजन्य आमाशयिक क्षोभ को शांत करता है। कामला (Jaundice) में भी यह उपयोगी है।

अधिक परिमाण में अपक्व फल का रस गर्भाशयिक आकुञ्चन उत्पन्न करता है। अस्तु, गर्भवती स्त्रियों को इससे सख़्त परहेज करना चाहिए।

अननास का तेल वा एसेन्स मिठाई बनाने में उसे सुस्वादु करने के लिए व्यवहृत होता है। यह जमैइक मद्य (Jamaica rum) को स्वाद प्रदान करने में भी व्यवहृत होता है। अननास जैम बनाने में प्रयुक्त होता है। इं० मे० मे०।

इसके पत्र कृमिघ्न और फल गर्भशातक है।
(इं० ड्र० इं० पृ० ४६१)

भारतीय मेडिकल अफसरों की मुख्य सम्मतियों से, जिनका डिक्शनरी ऑफ़ एकॉनॉमिक प्रॉडक्ट्स ऑफ़ इण्डिया (१०, २३८) में वर्णन आ चुका है, यह प्रगट होता है कि समग्र भारतवर्ष के दिहातियों में इसके पत्र एवं अपक्व फल के गर्भशातक प्रभाव में सामान्यतः विश्वास है। फा० इं० ३ भा० पृ० ५०१।

अनन्यज ananyaja-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव। (Cupid).

अनन्यपूर्वा ananyapúrvá-हिं० स्त्री० [सं०] (१) जो पहले किसी की न रही हो। (२) [illegible]

अनपकाय annapakáya-ते० कड़ु [illegible] लौकी। (Lagenaria Vulgaris [illegible] इं० मे० मे०।

अनपच anapacha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अन्=नहीं+पच=पचना] अजीर्ण। [illegible] (Indigestion).

अनपत्य anapatya-हिं० वि० [सं० [illegible] [स्त्री० अनपत्या] निःसन्तान। लावल्द।

अ(इ)नब áanaba-अ० द्राक्ष [illegible] अंगूर, दाख-हिं०। Vitis Vinifera Linn. (Fruits of Grapes) [illegible] फा० इं०।

अनब anaba-अ० बैंगन, भाँटा। (Solanum Melongena)

अनबहे-हिन्दी áanababe hindi-[illegible] पोपैया, पपीता-हिं०। [illegible] देखो- अण्डखरबूज़ा। Carica Papaya Linn. (Fruit of) स० फा० इं० [illegible]

अनबा áanabá-एक हिन्दी पौधा है जिस[illegible] फल गूगल सदृश होता है।

अनबिधा anabidhá-हिं० वि० [सं० [illegible] विद्ध] बिना बेधा हुआ। बिना छेद कि[illegible] हुआ।

अनबुझा चूना anabujhá-chúná-हिं० [illegible] चूर्णम् सं०। कलीका चूना, अशांत चूर्ण-[illegible] अनस्लेक्ड लाइम् Unslaked-lime-[illegible]

अनबुल्जन áanabuljan-अ० फ़ाशरा। [illegible]

अनबुत्थालिब áanabuttbálib-यु० [illegible] (Solanum Dulcamara, Linn.) फा० इं० २ भा०।

अनबुद्दुब áanabuddub-अ० एक बूटे का फल है जो बेर के बराबर, गोल एवं [illegible] का होता है और गुच्छों में लगता है। [illegible] अनार के पत्तों के सदृश होते हैं।

अनबुल्हियह anabul-hiyah-अ० (कबर या [illegible] कबर का फल)

..)नबु..स्स.अ्.लब ãanabus-saãlab–अ० मकौ (काला वा लाल) । (Solanum nigrum, *Bl.* or solanum rubrum, *Mill.*) स० फा० इं० । Nightshade-इं० ।

..)नबु..स्स.अ्.लबे-अस्वद ãanabus-saãlabe-asvad–अ० मकौ, काला मकौ । (Solanum nigrum, *Bl.* not *Linn.*) स० फा० इं० ।

..)नबु..स्स.अ्.लबे-अह्मर ãanabus-saãlabe-ahmar–अ० मकौ, लाल मकौ । (Solanum rubrum, *Mill.*) स० फा० इं० ।

..स्स.अ्.लबे-कबीर ãanabus-saãlabe-kabira–अ० बेलाडोना । मूची पं०– पं० लां० । Great Morel–इं० । म० अ० डॉ० १ भा० ।

..स्स.अ्.लबे-मुख़द्दिर ãanabussaãlabe-mukhaddir–अ०बेलाडोना । (Belladonna).

..स्स.अ्.लबे-मुजन्निन ãanabus-saãlabe-mujannina–अ० बेलाडोना । डेड्ली नाइटशेड (Deadly nightshade)–इं ।

..स्स.अ्.लबे-मुनव्विम् ãanabus-saãlabemunavvim–अ० बेलाडोना ।

..स्स.अ्.लबे-मुहलिक ãnabus-saãlabe-muhlika–अ० बेलाडोना । डेड्ली नाइटशेड (Deadly Nightshade) इं० ।

..बेधा anabedhá–हिं० वि० दे० अनबिधा ।

..ब्याह anabyáhá–हिं० वि० [सं० अन= नहीं+हिं० ब्याहा] (Unmarried) बिना ब्याहा । क्वाँरा । अविवाहित ।

..भिलाषः anabhi-láshāh–सं० पुं० अनिच्छा,अरोचक,अनभिद्वेष, अरुचि । (Aversion, dislike, want of appetite) रा० नि० व० २० ।

अनम् ãanam–अ० गुलनार । शकरदारी ।

अनमद anamada–हिं० वि० [सं० अन्+मद] मद रहित । अहंकार रहित । गर्वशून्य ।

अनमना anamaná–हिं० वि० [सं० अन्यमनस्क] [स्त्री० अनमनी] बीमार । अस्वस्थ ।

अनमल anamal–याकला ।

अनमिल anamila–हिंवि० [सं० अन=नहीं+ मिल=मिलना] (१) बे मेल । (२) पृथक् । भिन्न अलग । निर्लिप्त ।

अनमिलत anamilata–हिं० जो मिलती न हो।

अनमीलना anamilaná–हिं० क्रि० स० [सं० उन्मीलन=आँख खोलना] आँख खोलना ।

अनमीवः anamivah–सं० पुं० अमीव, रोगरहित,रोगोत्पादक कीड़ोंसे रहित । अथर्व० । सू० २१ । ६ । का० २ ।

अनमेल anamela–हिं० वि० [सं० अन्+हिं० मेल] बिना मिलावट का । विशुद्ध । ख़ालिस ।

अनयन anayana–हिंवि० [सं०] नेत्रहीन । दृष्टिहीन । अंधा ।

अनरनिया anaraniyá–यु० विलायती कासनी ।

अनरब ãanarab–सुमाक़ । (Sumach.)

अनरस anaras–सं०, हिं० (१) अनन्नास । Ananas Sativus, *Mill.* (Pine apple) । (२) जो रस रसनेन्द्रिय द्वारा स्पष्ट रूप से मालूम नहीं होता उसे अनरस या 'अनुरस कहते हैं । देखो—अनुरसः ।

अनरस anarasa–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अन= नहीं+रस] (१) रसहीनता । विरसता । शुष्कता । (२) रुखाई । कोप । मान ।

अनरसा anarasá–हिं० वि० [सं० अन्+रस] अनमना । माँदा । बीमार । –संज्ञा पुं० दे० अँदरसा ।

अनराफेनूस anaráfenúsa–यु० एक बूटी है जिसके पत्ते गन्दना के समान होते हैं ।

अनरुचि anaruchi–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अन्+रुचि] (१) अरुचि । घृणा । अनिच्छा ।

(२) भोजन अच्छा न लगने की बीमारी। मन्दाग्नि।

अनरूप anarúpa–हिं० वि० [सं० अन्=बुरा+रूप] (१) कुरूप। बदसूरत। (२) असमान। अतुल्य। असदृश।

अनर्जल anarjala–फ़ा० आइरिस सॉसन। Iris sosan (Iris Ensata).

अनलः analah–सं० पुं०
अनल anala–हिं० संज्ञा पुं० } (१) चित्रक क्षुप, चीता। (plumbago zoylanica). रा० नि० व० ६। भा० पू० १ भा० ह० व०। च० द० संग्रहणी चि० पाठादि चूर्ण। (२) लाल चीता, रक्त चित्रक। (Plumbago Rosea) र० मा० मं०। (३) भिलावाँ, भल्लातक वृक्ष। (Semecarpus anacardium.) रा० नि० व० ११। (४) पित्त। (Bile) रा० नि० व० २१। (५) दैव धान्य। मद० व० १०। (६) अग्नि, आग (Fire).

अनलम् analam–सं० क्ली० भिलावाँ का बीज। semecarpus Anacardium (seeds of–) "अनल मरिच चूर्णं" भैष० कुष्ठ चि०।

अनलचूर्ण analachúrna–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] बारूद। दारू।

अनलनामा analanámá–सं० पु० चित्रक वृक्ष, चीता। (Plumbago Zeylanica). वै० श०।

अनलपंख, analapankha
अनलपक्ष analapaksha, } –हिं० संज्ञा पुं० [सं०] एक चिड़िया। इसके विषय में कहा जाता है कि यह सदा आकाश में उड़ा करती है और वहीं अंडा देती है। इसका अंडा पृथ्वी पर गिरने से पहिले ही पक कर फूट जाता है और बच्चा अंडे से निकल कर उड़ता हुआ अपने माँ बाप से जा मिलता है।

अनलप्रभा analaprabhá–सं० स्त्री० ज्योतिष्मती लता। मालकांगुणी (Cardiospermum halicacabum)। रा० नि० व० ३।

अनलमुख anala-mukha–हिं० वि० [जिसका मुख अग्नि हो। जो अग्नि द्वारा को ग्रहण करें। –संज्ञा पुं० (1) चित्रक (Plumbago Zeylanica)। (२) भिलावाँ (Semecarpus Anacardium)

अनलरसः analarasah–सं० पुं० ... नामेकी सफेद भस्म के साथ घोटकर पिट्ठी ... पुनः उस पिट्ठी के बराबर गंधक मिलाकर ... फिर पाठा, वच, कलिहारी, चित्रक, ... और आक के रस में पृथक् पृथक् ... अनल नामक रस सिद्ध हो। मात्रा–... गुण—इसे पीपल तथा गुड़ के साथ ... गुल्म का नाश होता है। र० यो० सा०।

अनलविवर्द्धनी anala-vivarddhani ... स्त्री० कर्कटिका–सं०। ककड़ी–हिं०। (... of cucumber). वै० श०।

अनलसूतेन्द्रो रसः analasútendrorasah –सं० पुं० शुद्ध पारा १ भाग, गंधक ... इनकी कज्जली करें। फिर विष्णुक्रान्ता, ... कलिहारी, मालकांगनी अथवा आकाश... तितली (पीत देवी) इनके रसों से ... एक एक दिन भावना दें। पुनः सबके ... मिलाकर १२ दिन तक बारीक घोटें। फिर ... प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ।

सेवन विधि तथा गुण—घी, ... भल्लातक के रसके साथ खाने से घोर गुल्म ... होता है। र० यो० सा०।

अनली लिन्(लिः) anli,-lina,-lih– ... एक वृक्ष–सं०। अगस्त वृक्ष, अगस्तिया– (Agati grandiflora) त्रिका०।

अनल्गे(जे)सिक analgesic–इं० ... मनम्, वेदना शामक, पीड़ाहर। (An... yne).

अनल्गेसिया analgesia–इं० ... ज्ञता। (Anæsthesia).

अनल्जीन analgen–... अनलजीन ... (analgen, क्विन अनलजीन। (Quinalgin) अनलजीन–हिं०। ...

नॉट आफ़िशल

(*Not official.*)

लक्षण—यह एक श्वेत स्फटिकवत्, गंध रहित एवं स्वाद रहित चूर्ण है, जिसका रासायनिक संगठन और गुणधर्म एवं प्रभाव फेनेसीटीन के समान होता है। पर इसमें फेनोल के सिवाय मिथोसीन का ऑकड़ा होता है।

घुलनशीलता—यह जलमें नहीं घुलता तथा ईथरमें भी करीब करीब नहीं घुलता और शीतल या उष्ण अलकुहाल (मद्यसार) में भी अति न्यून घुलता है। परन्तु, क्लोरोफॉर्ममें किसी प्रकार अधिक घुलता है।

प्रभाव—स्पर्शाशामक (वेदना नाशक)।

मात्रा—७॥ से १५ ग्रेन पर्यन्त (½ से १ ग्राम तक)।

वगाह anavagáha-हिं० वि० [सं०] [संज्ञा अनवगाहिता] अथाह। गंभीर। बहुत गहरा।

वगाहिता anavagáhitá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] गंभीरता। गहराव।

वगाह्य anavagáhya-हिं० वि०, दे० अनवगाह।

वच्छिन्न anavachchhinna-हिं० वि० [सं०] (१) अखंडित। अटूट। (२) पृथक् न किया हुआ। जुड़ा हुआ। संयुक्त।

वद्यरागः anavadyarágah-सं०, पुं० माणिक्य भेद। केशर के रंग का एक प्रकार का मणि विशेष। कौटि० अर्थ०।

वम बीजी anavam-bíji-अ० मुनक्का। (Dried grapes).

वय anaváya-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अन्वय] वंश। कुल। खानदान।

नवस्थानः anavasthánah-सं० पुं० वायु। (Air) रा०।

नवस्थित चित्तत्वम् anavasthita-chittatvam-सं० क्ली० (१) वायु रोग। (Nervous disease) वै० निघ०।

(२) चित्तचांचल्य, उद्विग्नमन, चित्त की चपलता (अस्थिरता)। (Restlessnes).

अनशनम् anashanam-सं० क्ली० }
अनशन anashana-हिं० संज्ञा पुं० }
लङ्घन, उपवास। (A fast, fasting) मा० नि०। अन्नत्याग। निराहार।

अनसखरी anasakhari-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अन्=नहीं+हिं० सखरी] निखरी। पक्की रसोई। घी में पका हुआ भोजन।

अनस्थेटिक anæsthetic-इं० अवसन्नता-जनक, कायसंज्ञाह्रासजनक। सुन्न करने वाला।

अनस्थेशिया anæsthesia-इं० अवसन्नता।

अनस्थेसीन anæsthesine-इं० इसको अजीर्ण रोग में ५ से १० ग्रेन की मात्रा में कीचट्स में डालकर देते हैं।

अनस्लेकड-लाइम unslaked-lime-इं० चूना। अनबुझा चूना। कली का चूना। अशांत चूर्ण। (Quicklime).

अनहदनाद anahada-náda-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अनाहतनाद] योग का एक साधन।

अनहाइड्रस वूल-फैट anhydrous-wool-fat-इं० मरहम (Gluten).

अनक्षः anakshah-सं० त्रि० अंध, अंधा। (Blind).

अनक्षि anakshi-सं० क्ली० कुचक्षु, कुत्सित चक्षु।

अनाक़ áanáq-अ० बकरी का बच्चा। (A Kid).

अनाकर anákar-कुस्तु० अनाग़ालुस। See–Anághálus.

अनाकार्डिअम् anacardium-ले० भल्लातक।

अ(ए)नाकार्डिअम् ऑक्सिडेण्टेली anacardium occidentale, *Linn.* (Nut of Cashew nut)-ले० काजू। स० फॉ० इं०। फॉ० इं० १ भा०। मेमो०। See–Káju.

अ(ए)नाकार्डिअम् लैटिफोलिया anacardium latifolia-ले० भिलावाँ, भल्लातक।

Marking nut-tree. (Semecarpus anacardium).

अ(ए)नाकार्डियसीई anacardiaceæ-लै० भल्लातकवर्ग अथवा काजूवर्ग। (Anacards, Terebinths or Sumacs).

अनाकार्डिक एसिड anacardic acid-लै० भल्लातकाम्ल, भिलावें का तेजाब। फा० इं० १ भा०।

अनाकार्डियर anacardier-फ्रैं० (१) काजू। Cashew-nut-tree (Anacardium occidentale, *Linn.*) फा० इं० १ भा०। (२) भल्लातक, भिलावाँ। The marking nut tree (Semecarpus Anacardium) इं० मे० मे०।

अनाक्रांत anákránta-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अनाक्रांता] जो आक्रांत न हो। अपीड़ित। रक्षित।

अनाक्रांतता anákrántatá-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आक्रांतता का अभाव। रक्षा। अपीड़ा।

अनाक्रान्ता anákrántá-सं० स्त्री० कण्टकारी, कटेरी, भटकटैया-हिं०। सोलेनम् जैन्थोकार्पम् (Solanum Xantho-carpum)-लै०। र० मा०।

अनाक्वा सोडिआई क्लोराइडम् anaqua-sodii chloridum-लै० सोंचर नोन। sochal salt.

अनागत anágata-हिं० वि० [सं०] (१) न आया हुआ। अनुपस्थित। अविद्यमान। अप्राप्त। (२) आगे आने वाला। भावी। होनहार।

अनागतार्त्तवा anágatárttavá-सं० स्त्री० कन्या, अजात रजस्का, अरजस्का, गौरी, नग्निका, कुमारी, बालिका। जो स्त्री रजोधर्मिणी न हुई हो। (A little girl, a girl nine years old, a virgin.) रा० नि० व० १८ आ०।

अनागतावेक्षणम् anágatá-vekshanam-सं० क्ली० आगे इसे कहेंगे (या ऐसा कहेंगे) इसे अनागतावेक्षण कहते हैं। सु० ३ अं० ६५।

अनागलुस anághalus यु० }
अनागालुस anághálus " }

फिर और फिरङ्गी में अनुकालन करते हैं। कोई इसका युनानी नाम, फ़र्जीयून और नाम इसीशतुल् मुलक लिखते हैं। ... है। इसके स्वरूप के सम्बन्ध में बहुत ... यह शाक और धान आदि ... होती है।

अनाग़ालिस anághális यु०, ... -कुस्तु० सरिशानह्-अ०। ... -हिं०। (Anagallis ar... *Linn.*) -लै०। फा० इं० ३ भा०।

अनाग़ीलस anághilas-यु० मर्ज़ंजोश। marzanjosha

अनागैलिस आर्वेन्सिस anagallis arvensis, *Linn.* -लै० कैथनी, जोंकमारी। ... प० स०। मे० मो०।

अनाग़ीरस anághoras-रू० ... ख़्नूबुल् ख़िन्ज़ीर-मिश्र०। इसके फल को ... लुकुल्या कहते हैं। गुलेकनेर के समान ... है जो शामादि देशों में उत्पन्न होती है। किसी के विचारानुसार एक अन्य बूटी है। पत्ते एवं शाखाएँ सैंभालूके समान होती है। वृक्ष बड़ा हो जाता है।

अनाचारिता anácháritá-हिं० संज्ञा ... [सं०] निंदित आचरण। दुराचारिता।

अनाचारी anáchárí-हिं० वि० [सं० ... चारिन्] [स्त्री० अनाचारिणी] संज्ञा अना... आचारहीन, भ्रष्ट, बुरे आचरण का, दुराचारी।

अनाचारः anácháraḥ-सं० पुं० (१) अ... अनिष्टकर्म, दुराचार, कुव्यवहार, निंदित ... (Undesired or evil or improper conduct) वै० निघ०। (२) कुप्रथा, कुचाल।

...anája-हिं० संज्ञा पु० [सं० अन्नाद] ...?, धान्य, नाज, दाना, गल्ला।

...ड्रम् पेनिक्युलेटम् anadendrum ...aniculatum-ले० ...ल्वा--अएड० ...०। मेमो०।

...: anátankah-सं० त्रि० ...रोग, रोग रहित, स्वस्थ। (Healthy). ...० श०।

...: anátapah-सं० पुं० } ...
...anátapa-हिं० संज्ञा पुं० } आतपा-
...भाव, छाया। (Shade) ई० श०। धूप का ...भाव। वि० (१) आतप रहित। जहाँ धूप न ...। (२) तर, ठंडा, शीतल।

...तिस anátitasa-यु० करञ्ज। A pl-...nt (Galedupa arborea).

...: anáturah-सं० त्रि० } [स्त्री० अनातुरा]
...र anátura-हिं० वि० }
...रोगी, निरोग, रोगरहित, स्वस्थ। (Free fr-...m sickness or pain, healthy) ...० श०।

...मन् anátman-सं० पुं० } वि० आत्मा
...म anátma-हिं० संज्ञा पुं० }
...का विरोधी पदार्थ, अचित्, पंचभूत। ...वि० आत्मा रहित, जड़।

...मक दुःख anátmaka-dukha-हिं० ...संज्ञा पुं० [सं०] सांसारिक आधि व्याधि, ...व बाधा।

...त्मधर्म anátma-dharma-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] शारीरिक धर्म। देह का धर्म।

...त्मीकृत anátmikrita-वि०बिना पचा या ...अपक्व अश। (Unabsorbed).

...दिल ãanádila-अ० (ब०व०) अन्दलीब (ए०व०)। बुलबुल (एक पक्षी विशेष)। (Nightingale.)

...दील ãanádila-अ० बुलबुल का गोश्त। (Flesh of Nightingale).

...धृषः anádh rishah-निर्बल। अथर्व० ...सू० २१। ३। का० ६।

अनान anán-बर० (Fagræa fragrans, Roxb.) मेमो०।

अनानसु हरणु anánasu hannu-कना० अनन्नास, अनानास-हिं०।

अनानास anánás-हिं० अनन्नास। (Pine apple)-इं०। मो० श०।

अनानास सेटाइवस ananas sativus-ले० अनन्नास। (Pine apple)-इं०। मो०श०। फा० इ० ३ भा०।

अनाप्तः anáptah-सं० पुं० } (१) अवि-
अनाप्त anápta-हिं० वि० }
श्वस्त, अविश्वसनीय, अश्रेष्ठ। (२) अकुशल, अनिपुण, अनाड़ी।

अनाफेलिस नीलगिरिएना anaphalis neelgeiriana, D. C.-ले० यह पौधा तथा इसके अन्य भेदके पौधे नीलगिरि पर्वत पर शतमें प्रयुक्त हैं। इसके पत्र ऊर्णवत् लोमसे आच्छादित रहते हैं और वहाँ के दिहाती लोग उसे काट-प्लास्टर या देशीय प्रस्तर (Country plaster) कहते हैं। ताजे पत्र को कुचल कर चिथड़े के भीतर रख कर वे इसको क्षत पर बाँधते हैं। डाइमॉक।

अनाबस स्कैण्डिअस anabus scandeous -ले०। कवई मछली। (Climbing perch). इं० मे० मे०।

अनाबिद्ध anábiddha-हिं० वि० [सं०] (१) अनबिंधा। अनछेदा। बिना छेद का। (२) चोट न खाया हुआ।

अनाबेबुर्रियह् anábeburriyah-अ० }
उरूकुल्खश्नह् ãurúqa khashnah }
फुफ्फुस प्रणालियाँ, वायु या श्वास प्रणालियाँ। ब्रॉङ्किओलज़ Bronchioles-इं०। मख़ज़०।

अनाबेसिस मल्टिफ्लोरा anabasis multiflora, Miq.-ले० बृहचोटि,मेश्रलाने,गोरलाने, शोरलाने, लाने, घालमे-पर्श०। मे० मो०।

अनामकम् anámakam-सं०क्ली० (Pile) अर्श रोग, बवासीर। श० र०।

अनामक(स्त्री०-मिका) anámak (-miká) -सं० स्त्री० (१) Innominate बे नाम का। (२) अंगुली विशेष। अनामा।

अनामयम् anámayam सं० क्ली०
अनामय anámaya-हिं० संज्ञा पुं०

(१) Health रोगाभाव आरोग्य, निरोगता, स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती, रोग हीनता। रा० नि० व० २०। (२) कुशलक्षेम।

हिं० वि० (१) निरामय, । रोगरहित । नीरोग चगा । स्वस्थ । तन्दुरुस्त । (२) निर्दोष । दोष रहित।

अनामय anámaya-सं० त्रि० रोग रहित । अथर्व०। सू० ११। ७। का ४।

अनामयाः anámayáh-सं० त्रि० (ब० व०) रोग रहित। अथर्व०। सू० ८। २५। का० ६।

अनामल anámala-अ० (बहु० व०), अन-मिलह् (ए० व०) अंगुल्याग्र भाग या अंतिम (अग्र) पोरवे।

अनामा anámá-सं० पुं०, हिं० संज्ञा स्त्री० अनामिका। श० र०। See-Anámiká.
हिं० वि० स्त्री० (१) बिना नाम की। (२) अप्रसिद्ध।

अनामिका anámiká-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की अंगुली। सबसे छोटी उँगली के बगल की उँगली। अनामा। अंगुश्ते हल्क़ह्, बिन्सर-अ०। रिङ्ग फिंगर (Ring finger)-इं०। रा० नि० व० १८। इ० श० द०। १ भा०।

अनामिका धमनी anámiká-dhamaní-हिं० संज्ञा पुं० (Innominate artery) एक धमनी विशेष।

अनामिका धमनी परिखा anámiká-dhamaní-prikhá-हिं० संज्ञा स्त्री० (Groove for innominate artery).

अनामिर्टा काक्युलस anamirta Cocculus, W.&A.-लें० ककमारि-हिं०, कना०, ते०, बं०। काकफल-गु०, सं०। Cocculus Indicus। फा० इं० १ भा०। देखो-काकफल।

अनामिर्टीन anámirtin-इं० काकफलसत्व। फा० इं० १ भा० देखो-काकफल।

अनामिष anámisha-हिं० वि० [सं०] निरामिष। मांस रहित।

अनार anára-हिं० संज्ञा पुं० [फा०] एक पेड़ और उसके फल का नाम दाडिम है। प्युनिका ग्रेनेटम् (Punica Granatum, Linn.)-लें०। पॉमेग्रेनेट (Pomegranate)-इं०। ग्रेनेडियर कम्यून (Grenadier Commun)-फ्रां०। अनार, अनार का पेड़-हिं०। अनार का झाड़-द०। संस्कृत पर्याय—दाडिम वृक्षः, करकः (अ०), शिखर (पुष्पः, दाडिम्बः, पर्वरुद्, स्वाद्वम्लः, पिच्छ फलशाडवः, शुकवल्लभः (त्रि०), सुवल्क (शब्दमा०), रक्तपुष्पः (र०), दाडि (अ० टी० भ०), शुकादनः (श०), विसोसारः, कुट्टिमः, फलसाडवः, फलषाड रक्तबीजः, सुफलः, दन्तबीजकः, मधुबीजः, फलः, मणिबीजः, कर्कफलः, वृत्तफलः, सु नीलपत्रः, नीलपत्रकः, लोहित पुष्पकः, दन्तबीजः। दाडिम गाछ, दालिम गाछ-बं०। रुम्मान-अ०। दरख्ते नार-फ़ा०। सिरि०। रूमोनूस-यू०। मादळी-चु-चेटि- दानिम्म-चेट्टु, दाडिम चेट्टु, दालिम्ब चेट्टु- मातलम्-चेटि-मल०। दालिम्बे-गिडा-का दालिम्ब-काड़-मह०। दाडम-नु-काम- देलुङ्गहा-सिं०। सले-बिद्, सली-बिद्- दाडिम्ब-कॉ०। दालिम्ब-उत्०। डालम-मा दाद्मन्-झाड़ दालिंबे, दालिम्ब-उड़ि०। असाॅर। मादल, मोचो-उ० प० सू० दाढ़नी, दाड़ियूस, दानू, दोआव, आमन, अनार-पं०। अनार, नरगोश, दरगोई प।

जम्बू वर्ग।

(N. O. Lythraceæ or myrtaceæ)

उत्पत्ति स्थान—दक्षिण युरोप, अफ्रीका,

शिया (अरब ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, बलूचिस्तान, भारतवर्ष तथा जापान)। पश्चिम हिमालय और सुलेमान की पहाड़ियों पर यह वृक्ष ार से आप उगता है। यह सम्पूर्ण भारतवर्ष में लगाया जाता है। काबुल-कंधार के अनार प्रसिद्ध हैं। भारतीय अनार वैसे नहीं होते।

वानस्पतिक वर्णन—यह पेड़ १५-२० फुट ऊँचा और कुछ छतनार होता है। इसके तने की गोलाई ३-४ फुट होती है। माघ या फागुन में इसके नए पत्ते लगते हैं। इसके पत्ते टहनियों के सामने सामने लगे रहते हैं। यह कुछ लम्बे नोकदार और सिरे पर गोलाई लिए होते हैं। इसके फूल की पंखड़ियाँ रक्तवर्ण की होती हैं और फूल अधिक तर एक एक स्थान पर लगते हैं। इसके फल की मध्य रेखा २ से ३॥ इंच लम्बी होती है। इसके फूल हर मौसम में लगते लेकिन चैत, वैशाख में बहुत लगते हैं। अषाढ़ से भादों तक फल पकते हैं।

रासायनिक संगठन—वृक्ष एवं फलत्वक् में २२ से २५ प्रतिशत कषायीन (Tannin) होता है। वृक्ष मूल त्वक् में २० से २५ प्रतिशत प्युनिको टैनिक एसिड (दाड़िम-कषायिनाम्ल) मैनिट (Mannit), शर्करा, निर्यास, पेक्टीन, भस्म १५ प्रतिशत, एक प्रभावात्मक पैलीटिएरीन या प्युनीसीन (अनारीन) नामक तरल क्षारीय सत्व होता है और तैलीय द्रव आइसो पैलीटिएरीन या आइसोप्युनीसीन (अनारीनवत्) तथा मीथल पैलीटिएरीन व स्युडोपैलीटिएरीन (मिथ्या अनारीन) नामक दो प्रभाव शून्य क्षारीय सत्व होते हैं। दाड़िम कषायाम्ल (Punicotannic acid) को जब जलमिश्रित गंधकाम्ल (सल्फ्युरिक एसिड) में उबाला जाता है तब वह इलैजिक एसिड (Ellagic acid) और शर्करा में विलेय होता है।

नोट—जड़ की छाल में यह सत्व अपेक्षाकृत अधिकतर होते हैं; विशेषतः रक्त तथा श्वेतपुष्प वाले अनार में।

प्रयोगांश—मूल त्वक, वृक्षत्वक्, अपक्वफल, पक्वफल, बीज स्वरस, फलत्वक्, पुष्प, कलिकाएँ और पत्र।

इतिहास—चरक के कृमिनिप्रहण एवं श्रमःहर वर्ग में दाड़िम का पाठ आया है और वहाँ इसे वमन नाशक एवं हृद्य लिखा है। सुश्रुत में भी अनार का वर्णन आया है। तो भी इसकी जड़ की छाल के उपयोग का वर्णन किसी भी प्राचीन आयुर्वेदीय निघण्टु ग्रंथ में नहीं दिखाई देता। भावप्रकाश में इसकी जड़ को कृमिहर लिखा है।

बुक़रात (Hippocrates) ने पोआसाइड नाम से अनार का वर्णन किया है। दीसक़ूरीदूस (Dioscorides) ने पराइपोअाम के नाम से अनार की जड़ की छाल का वर्णन किया है। इसको वे कृमियों को मारने एवं उनके निकालने के लिए सर्वोत्तम ख़याल करते थे। अस्तु, आज भी इस औषध को उसी गुण के लिए व्यवहार में लाते हैं।

इसलामी हकीम संग्राही होने के कारण इसके पुष्प एवं फल त्वक् को विभिन्न प्रकार से उपयोग में लाने के अतिरिक्त वे इसके मूल त्वक् को जो इसका सर्वाधिक धारक भाग है, कद्दूदाना के लिए अमोघ औषध होने की शिफ़ारिस करते हैं।

अनार का बीज आमाशय बलप्रद और गुदा हृदय एवं आमाशय बलप्रद व्याख्या किया जाता है। दीसक़ूरीदूस (Dioscorides) एवं प्लिनी (Pliny) के ग्रंथों में भी इसी प्रकार के वर्णन मिलते हैं। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि अरब लोगों ने अनार के औषधीय गुणधर्म का ज्ञान अपने पूर्वजों से प्राप्त किए।

अनार की जड़ की छाल एवं फल का छिलका ये दोनों फार्माकोपिया ऑफ इंडिया में ऑफिशल हैं।

अनार (फल)

दाड़िम फलम्, दाड़िमः—सं०। अनार, दाड़म, दामु—हिं०। प्युनिकाग्रेनेटम् Punica Granatum, *Linn.* (Fruit of Pomegr-

anate.)-ले०। पॉमेग्रेनेट Pomegranato. -इं०। अनार-द०। ग्रेनेडियर कल्टिव Grenadier Cultivo.-फ्रां०। ग्रेनेट बॉम Granat baum.-जर०। अनार, डालिम, दाड़िम, दाडमी, दाड़म-बं०। रुम्मान्, राना -अ०। अनार, नार-फ़ा०। रुम्माना-सिरि०। रूतीनूस-यु०। दालिम्ब-तु०। मादलैप्-पज़म्, माडले-ता०। दानिम्म पण्डु, दाडिम-पण्डु, दालिम्ब-पण्डु-ते०। मातलम्-पज़म्-मल०। दालिम्बे-कायि-कना०। दालिम्ब, डालिम्ब -मह०। दारम, दाड़म-गु०। देलुङ् या देलुङ् -सिं०। सले-सि या तली-सी-बर०। दालिम, दालिम्ब-उड़ि०। दालिम्-आसा०। अनार, दाड़िम-उ० प० सू०। पं० तथा परतु-देखो— अनार वृक्ष। अनार, धालिम, धारिम्ब, डाड़िंध। धीन-काश०। दालिम्ब-कौं०। दाड़म -मारवाड़ी। मादल-द्राविड़ी। दालिम्ब-कर्ना०।

उत्पत्तिस्थान—अनार।

वानस्पतिक वर्णन—अनार का फल गोलाकार किञ्चित् चपटा, अस्पष्टतः पटपार्श्व, सामान्य नारंग के आकार का प्रायः बृहत्तर होता है जिसके सिरे पर स्थूल, नलिकाकार, ५–६ दंष्ट्राकार खपलयुक्त पुष्प बाह्य कोष लगा होता है। फल त्वक् सचिक्कण, कठोर एवं चर्मवत् होता है जो फल के परिपक्व होने पर धूसर पीतवर्ण का प्रायः सूक्ष्म रक्तरंजित होता है। फल की लम्बाई की रुख छः झिल्लीदार परदे होते हैं जो अक्सर मिलते और फल के ऊर्ध्व एवं बृहत्तर भाग को बराबर कोषों में विभाजित करते हैं। उसके नीचे अव्यवस्थित गावदुमी चौड़ाई की रुख पड़ा हुआ एक परदा होताहै जोनीचेके लघुतर अधो भागको उससे (ऊर्ध्व भाग से) भिन्न करता है। यह ४ या ५ असमान कोषों में विभक्त होता है। प्रत्येक कोष स्थूल, स्पञ्जवत् अमरा से संलग्न बहुसंख्यक दानों से पूर्ण होता है जो ऊर्ध्व कोषों में पार्श्वीय, किन्तु अधः कोषों में केन्द्रीय प्रतीत होते हैं। दाने लगभग आध इंच लम्बे आयताकार या गावदुमी, बहुपार्श्व तथा एक पतले पारदर्शक कोष से आवृत्त और अम्ल, मधुर तथा सुगंधित रक्त रसमय गूदे से आवरित कर्म कोणयुक्त बीजयुक्त होते हैं।

नोट—(१) धन्वन्तरीय निघण्टु और सुश्रुताचार्य ने रस के विचार से इसे दो प्रकार का लिखा है अर्थात् (१) मधुर और (२) अम्ल। "द्विविधं तच्च विज्ञेयं मधुरञ्चाम्लमेव च।" (ध० नि०, सु० ४६ अ०)

परन्तु, यूनानी निघण्टुकार तथा भावप्रकाशकार इसे तीन प्रकार का लिखते हैं, यथा—"फलं त्रिविधं स्वादु स्वाद्वम्लं केवलाम्लकम्।" भा०

(क) स्वादु, मधुर-हिं०। अनार शीरीं-फ़ा०। रुम्मान हुलुव्व (हुलो)-अ०। स्वीट पॉमे-इं०। (ख) अम्ल, खट्टा-हिं०। अनार तुर्श-फ़ा०। रुम्मान हामिज़ -अ०। सावर sour-इं०।

(ग) स्वाद्वम्ल, मधुराम्ल, खटमीठा-हिं०। अनार मैख़ोश-फ़ा०। रुम्मान मुज़्ज़-अ०।

(२) खट्टे अनार के वृक्ष में खट्टे ही फल लगते हैं और मीठे में मीठे लगते हैं। भादों तक फल पकते हैं, परन्तु देश के हर हिस्से में ऋतु के अनुसार अलग अलग मौसम में पकते हैं। खट्टा अनार गुण में मीठे से बढ़कर होता है। यद्यपि इसकी प्रत्येक चीज़ प्रायः मीठे में दूसरी चीज़ के बराबर होती है, तो भी कमी-बेशी ज़रूर है, जैसे, गूदा में पत्तों की अधिक प्रभाव है और इससे अधिकतर निसपाल में है। फूल में कली से कम होता है। इसकी जड़ की छालमें सब से अधिक प्रभाव है।

इसके अतिरिक्त अनार के दो और भेद हैं, यथा—

(१) गुलनार का पेड़ (नर अनार) Punica Granatum, *Linn.* (Variety of.)। इसका पुष्प जिसको गुलनार कहते हैं, औषध के काम आता है। देखो—गुलनार। इसमें फल नहीं लगते।

(२) अनार जंगली-यह अनारका भेद है।

प्रयोगांग—दाड़िम (फल) त्वक्, दाड़िम के फल का रस।

औषध-निर्माण—(१) दाड़िमाष्टक (च० द०)

(२) खट्टे अनार—ताजे अनारदाना का पानी लेकर आग पर पकाएँ। बाद शेष रहने पर उतार कर शीतल करके रक्खें।

(३) खट्टे अनार कुन्दी—ताजे अनार-दाना के पानी में समान भाग खाँड मिलाकर आग पर शहद की चाशनी करें। मात्रा—२ तो० से ३ तो० तक।

(४) शर्बत अनार—१ सेर मिश्री या खाँड की चाशनी में १ पाव खट्टे अनार सादा या आधसेर अनार कुन्दी मिला दें। मात्रा—२ से ३ तो० तक।

(५) शर्बत अनार तुर्श—जिस अनार का छिलका पतला और रंग सुर्ख हो, दाने उम्दा और मोटे हों, उसका छिलका उतार कर दानों से पानी निचोड़ लें और छान कर १ सेर पानी में सवापाव मिश्री मिलाकर शर्बत बनाएँ। आवश्यकतानुसार पानी में मिलाकर पिलाएँ। गुण—तृषाशामक होनेके सिवा मतली वमन और पित्तोत्वणय के लिए अत्यन्त लाभप्रद है।

(६) शर्बत अनार शीरीं—उपयुक्त मीठे अनार लेकर पानी निचोड़ लें। पावभर उक्त रस में आधसेर श्वेत शर्करा मिलाकर मुलायम आँच पर पकाएँ और शर्बत की चाशनी लें। मात्रा—२ तो० से ४ तो० तक।

सेवन विधि—आवश्यकतानुसार शीतल जल में मिलाकर सेवन कराएँ।

गुण—तृषाशामक एवं हृद्य।

(७) शीतकषाय (नक़ूअ्)—२ तो० शुष्क अनारदाना को आध सेर पानी में तीन घंटा तक भिगाएँ। बाद को मल छान लें और काम में लाएँ। मात्रा–२ तो० से ४ तो० तक।

फलत्वक्, मात्रा--१० से ३० ग्रेन (५ से १५ रत्ती)।

अनार के गुण-धर्म तथा प्रयोग

आयुर्वेदीयमतानुसार

अम्ल, कषैला, मधुर, वातनाशक, ग्राही, दीपन, स्निग्ध, उष्ण तथा हृद्य है और कफ एवं पित्त का विरोधी नहीं है। खट्टा अनार रूक्ष है तथा पित्त एवं वात प्रकोपक है। मधुर अनार पित्त नाशक होने से उत्तम है। (च० सू० सू० २७ अ०)

अनार कषैला एवं फीका (अनुरस), अति पित्त कारक नहीं है तथा, दीपन, रुचिकारक, हृद्य एवं मलविबन्धकारक है। वह अम्ल तथा मधुर दो प्रकारका होता है। इनमें से मधुर त्रिदोष नाशक और अम्ल वात एवं कफ नाशक है। सुश्रुत सू० ४६ अ०।

अनार स्निग्ध, उष्ण, हृद्य और कफ पित्त विरोधी है। धन्वन्तरीय निघण्टु।

अनार मधुर अम्ल कषैला, वातनाशक, कफनाशक, पित्तनाशक, ग्राही, दीपन, लघु, उष्ण, शीतल, श्रमनाशक तथा रुचिकारक है और कास का नाश करने वाला है। अनार अम्ल, मधुर भेद से दो प्रकार का है जिनमें से प्रथम वात-कफ, नाशक और द्वितीय तापशामक, लघु एवं पथ्य है। अन्य ग्रंथों में इसको अम्ल, कषैला, मधुर, वातनाशक, ग्राही और दीपन लिखा है। रा० नि० व० ११।

अनार का फल तीन प्रकार का होता है। मीठा, मीठाखट्टा और केवल खट्टा। इसमें मीठा अनार त्रिदोषहर, प्यास, दाह, ज्वर, हृदयरोग, कंठरोग, मुख की गंध को नष्ट करता तृप्त करता, शुक्रकर तथा हलका, कषाय रस, ग्राही, स्निग्ध, स्मरणशक्तिवर्द्धक और बलकारक है। खट्टा और मीठा अनार अग्निदीपिकर, रोचक, किंचित्पित्तजनक, लघु और केवल खट्टा अनार पित्तकारी और वात कफ नाशक है। भा०।

हृद्य, अम्ल, श्वास, रुचि तथा तृष्णा का नाश करने वाला है और कंठशोधक एवं पित्त कफ का बोध करानेवाला है। राज०।

अनार श्रेष्ठ तथा वातादिक रोग नाशक है। अत्रि० १७ अ०।

दाडिम हृद्य, अम्ल, वातनाशक, दीपन, कषाय तथा कफ पित्त विरोधी है। मधुर अनार त्रिदोषनाशक और खट्टा एवं वात व कफ नाशक है। ज्वरनाशक, दीपन, पथ्य, लघुपाकी तथा अग्निप्रदीपक है। राजवल्लभ०।

अनार के वैद्यकीय व्यवहार

हारीत—मुख द्वारा रक्त स्राव में दाडिम फल त्वक् चूर्ण को चीनी के साथ चाटने से मुख द्वारा रक्तपात प्रशमित होता है। (चि० ११ अ०)।

चक्रदत्त—अरोचक रोग में अनार के फल का रस बिड्-लवण-चूर्ण एवं मधु के साथ मुख में धारण करने से असाध्य अरुचि भी प्रशमित होती है। (अरोचक-चि०)

वंगसेन—(१) ज्वरकृत मुख वैरस्य में चीनी के साथ पिसा हुआ अनार दाना किंवा शर्करा मिश्रित अनार का रस, किसमिस तथा अनार के रस में पीसा कर मुख में धारण करने या गण्डूष करने से ज्वर रोगीके मुख की विरसता नष्ट होती है। (ज्वर-चि०)

(२) रक्तातिसार में अनार का रस (दाडिम बीज स्वरस)—कूटा हुआ ताजे कुडज त्वक् ■ तो० को ६४ तो० जल में पकावें। पाद (१६ तो०) शेष रहने पर उतार कर वस्त्र से छान लें। इसमें १६ तो० अनार का रस मिला कर पुनः पाक करें। जब वह लेहिकावत् होजाए (अर्थात् राब की चाशनी लें।) तब उतार कर रक्खें। इस फाणिताकार वस्तु में से १ तो० लेकर तक्र के साथ सेवन करने से मृत्युमुख अतीसार रोगी भी जीवन लाभ करता है।

भावप्रकाश—आमाजीर्ण में दाडिम फल को भली प्रकार पीसकर पुराने गुड़ के साथ खाने से आमाजीर्ण प्रशमित होता है। यह अर्श प्रभृति गुद रोगों एवं कोष्ठबद्ध में प्रशस्त है। (अजीर्ण-चि०)।

यूनानी मतानुसार

प्रकृति- मीठा अनार प्रथम कक्षा में सर्द व [illegible] है। शीतल होने का कारण यह है कि इस[illegible] अत्यधिक आर्द्रता होती है। और तर स्निग्ध हो[ने] का कारण यह है कि इसमें उष्णता नहीं पैदा क[रने] ओ तरी को कम करने का कारण ■ सकता [है] अन्यथा यह मधुर न रहता प्रत्युत अम्ल हो जा[ता]। किसी किसी के मत ■ यह शीतोष्ण ([समप्र]कृति) है।

खट्टा अनार द्वितीय कक्षा में शीतल एवं [रूक्ष] है। शीतल होने का कारण यह है कि इस[की] प्राकृतिकोष्मा उष्णता के कारण लय हो ज[ाती] तथा रूक्ष होने का कारण यह है कि इ[समें] आर्द्रता की कमी होती है। खटमिट्ठा अ[नार] प्रथम कक्षा में सर्द व तर है। अनार बीज—प्रथम कक्षा में शीतल एवं रूक्ष है।

हानिकर्त्ता—(मधुर) आमाशय तथा [यकृत] को। (अम्ल) शीत प्रकृति को, कुव्वत [हाज़िमा] (अभिशोषक शक्ति) को, यकृत तथा वात [को]। (स्वादम्ल) शीत प्रकृति को। (दाडिमबी[ज]) — शीत प्रकृति को। दर्पनाशक-(मधुर) [मीठे] अनार तथा शीत प्रकृति वालों को सौंफ का मु[रब्बा] (दाडिम बीज) जीरा। प्रतिनिधि-मीठे अ[नार] की प्रतिनिधि खट्टा अनार, खट्टे अनार का [प्रतिनिधि] अनार। खटमिट्ठा का कच्चा अंगूर और [बीज] बीज का सुमाक है। मात्रा - अनार बीज मात्रा ६ मारो से ६ मारो तक।

गुण, कर्म, प्रयोग— अनार अपनी शीतल[ता] एवं तरलता के कारण पित्त का नाश करता [है] और अपने क़ब्ज़ तथा रूक्षता के कारण [आंत्र] (कोष्ठों) की ओर मल वहन को रोकता [है]। विशेष कर इसका शर्बत, क्योंकि इसमें ताल[ता] कम होती है। इसके सम्पूर्ण भेदों में यहां [तक] कि अम्ल में भी क़ब्ज़ (संकोच) के [साथ] कांतिकारिणी शक्ति वा मलशोधकशक्ति (कुव्वतजि[ला]) होती है खट्टे अनारमें उष्णता तथा अम्लता के [कारण] कांतिकारिता (जिलाय्) होती है। परन्तु, [मीठे] अनार में उक्त गुण होने का कारण यह है

में सूक्ष्म ऊष्मा होती है जो कि मधुरता के
ए समाधायक है। इसका कारण यह है
। सम्पूर्ण पदार्थों की प्रकृति में प्रकृत परिवर्ति-
त है जैसा कि प्राचीनग्रन्थ में इसकी व्याख्या
ो है।

इसके दानों को दबा कर उसमें मधु मिलाकर
सेवन करने से कण्ठशूल, ग्रहणिका (कंगुरा बैठना)
पाक (मुँह आना), उदराशयस्थ व्रण और
दुष्ट व्रण के लिए उपयोगी है। क्योंकि उसमें
षाय (संकोच) और कालिकारिता होती है।
शहद के साथ मिश्रित करने से निरापद अधिक
ा जाता और कष्ट बढ़ जाता है। क्योंकि
अपनी उष्णता के कारण संकोचकारिणी एवं
ग्राहक शक्ति को शरीर के गम्भीर भागों में
पहुँचा देता है।

खट्टे अनार में मीठे अनार की अपेक्षा अधिकतर
की शक्ति है। यद्यपि दोनों रेचक हैं, क्योंकि
ों में कालिकारिणी शक्ति (सूक्ष्म निरावण)
है जाती है; तथापि खट्टे में रेचनी शक्ति के
क होने का कारण यह है कि इसमें आँतों में
क हो जाता है जो गुदद्वार (मलमार्ग) पर मुख-
रत होता है। इसके अतिरिक्त इसमें लज्जत
(न) भी है। मीठे अनार में रेचन के कम होने
कारण यह है कि इसकी स्वभाव सूक्ष्म उष्मा
साथ होती है जो कोमलमृदुकारिणी तथा रेचनी
कि में मानी नहीं होती।

खटमिट्ठा अनार आमाशयिक प्रदाह को लाभ
ता है। क्योंकि यह उसको सर्दी पहुँचाता
र पिपासा को शांति प्रदान करता है। क्योंकि
खट्टे अनार के समान इसमें क्षोभ एवं
तीक्ष्णता नहीं होती और न मीठे अनारके समान
इसमें आमाशय में उफान पैदा होता है और
र पित्त की ओर इसकी प्रवृत्ति ही होती है।
अतएव यह यातायातों को हानि नहीं पहुँचाता।

खट्टा अनार अपनी रूक्षतर्मोशक्ति तथा कषाय-
पन के कारण कंठ एवं वक्ष में कर्कशता उत्पन्न
करता है और मीठा अनार इन दोनों अवयवों
को कोमल करता है। चूँकि इसमें सर्वथा उष्मा-
के साथ रतूबत होती है। इस हेतु से और अपने
स्वभावसे यह वक्ष को शक्ति प्रदान करता है और
अपनी कालिकारिणी (निरावण) एवं मृदु-
कारिता के कारण कास को लाभ करता है।
अम्लपर्णी (अनार बैठना) जिसकी गुठली
मृदु होती है, सर्वश्रेष्ठ है। सर्वोत्तम वह अनार
है जिसमें कोई दूध न उगा हो।

सब तरह के अनार मूर्च्छा को लाभ करते हैं।
क्योंकि यह रूह तथा हृदय की प्रकृतिकी समानता
सम्पादित करते हैं और इसलिए भी कि ये हृदय
को नसों से स्वस्थ करते हैं। नफ़ीस।

मीठा अनार—रुधिर उत्पादक, शुद्ध
आहाररस उत्पादक, मधुराहार, आध्मान-
कर्ता, अर्शों को स्वस्थ करता, उदर को मृदु करता
तथा मूत्रजनक है और वक्ष को शांति प्रदान
करता, प्यास को शांत करता तथा कामोद्दीपन
करता एवं उत्तमांगों को बल प्रदान करता है।
लाभ युक्त इसका अर्क अर्शों को बन्द करता
है। सम्पूर्ण अर्शों में विलायती अनार उत्तम है।
अनार फल स्वक् भस्म बवासीर को लाभ पहुँ-
चाती है।

खट्टे अनार—वक्ष प्रदाह, आमाशय की गर्मी
एवं यकृदोष्मा को प्रशमन करता है तथा रक्त
प्रकोप एवं दाह को दूर करता है। उपरजन्य
अतिसार एवं वमन को लाभप्रद है। यर्कान और
शुष्क कास को लाभ करता तथा उन्माद एवं
गर्मी की मूर्च्छा को लाभप्रद है।

खटमिट्ठा अनार—इसके गुण मीठे अनार के
समान हैं। बल्कि यह उससे अधिकतर प्रभाव
शाली है। छिलका सहित इसके फल को कुचल
कर निकाले हुए रस में शर्करा मिलाकर पीने से
पैत्तिक वमन तथा अतिसार, खुजली और यर्कान
में लाभ होता है और यह आमाशय को बल
प्रदान करता और हिक्का को नष्ट करता है।

अनार का बीज—संकोचक, पाचक तथा
क्षुधाजनक है और आमाशय को बल प्रदान
करता, पैत्तिक मवाद को आमाशय प्रभृति पर

नहीं गिरने देता और पैत्तिक वमन, अतिसार तथा दोनों प्रकार की खुजली को लाभप्रद है।

अनार फल त्वक्

दाड़िम त्वक्, दाड़िमफल वल्कल, अनार के फल का छिलका, नि (मा)सपास। पोस्त अनार-फा०। क़श्र्रुर्रुम्मान-अ०। पॉमेग्रेनेट पील Pomegranate peel, या० रिंड Pomegranate rind-इं०।

वर्णन-अनारके फलकी छाल के विषम, न्यूनाधिक नतोदर टुकड़े होते हैं जिनमें कतिपय छत्राकार नलिकामय पुष्पपात्र कोष लगे होते हैं जिनके भीतर अब तक परागकेशर तथा गर्भकेशर अवशेष होते हैं। यह $\frac{१}{२०}$ से $\frac{१}{१०}$ इं० मोटा सरलतापूर्वक टूट जाने वाला (टूटने समय जिससे कॉर्कवत् धीमा शब्द हो) होता है। इसका बाह्य पृष्ठ अधिक खुरदरा एवं पीत धूसर वा किंचित् रक्तवर्ण का होता है। भीतर से यह न्यूनाधिक धूसर वा पीत वर्ण का, मधुमक्षिका गृहवत् और बीजस्थलयुक्त होता है। इसमें कोई गंध नहीं होती; अपितु यह तीव्र कषाय स्वादयुक्त होता है।

लक्षण—रक्ताभायुक्त पीतवर्ण। स्वाद-बिकठा प्रकृति-मीठे की सर्द तर और खट्टे की प्रथम कक्षा में शीतल तथा रूक्ष। हानिकर्ता शीत प्रकृति को। दर्पघ्न-मार्द्रक। प्रतिनिधि-ज़रेवर्द (गुलाब का केशर)। शर्बत की मात्रा-१ से २ तोला। प्रधान गुण- अर्श के लिए उपयोगी है

गुण, कर्म, प्रयोग—(१) गरमी की सूजन को लाभ करता और मसूढ़ों को शक्ति प्रदान करता है। (२) अनार के सूखे छिलकों को पीसकर छिड़कनेसे काँचका निकलना बन्द हो जाता है। (३) अनार के फल को पीसकर गोला बना पुटपाक की विधि से पकाकर रस निचोड़ कर मधु मिला पीने से सब तरह के दस्त बन्द होते हैं। (४) अनार के फल का छिलका पुराने अतिसार तथा आमातीसारको मिटाता है। (५) पाँच तोले अनार के छिलके को सवासेर

दूध में औटा १६ छटाँक रस छान लि
३-४ बार पिलाने से आमातिसार मि
(६) खट्टे अनार के २ तोले छिलके
तोले शहतूत को औटा छान के पिलाने
के कीड़े मरते हैं। (७) इसके
योनि में धूनी देने से मरा हुआ
निकल जाता है। (८) इसके
छुहारे के पानी के साथ पीस कर
सूजन बिखरती है। (९) अनार के
और आँवलेका काढ़ा पिलानेसे पुराना आमा
मिटता है। इस काम के लिए अनार के
और इसकी जड़ की ताजी छाल लेनी चाहि

नव्यमत

एक अनार का रस प्रिय
जन्य उत्ताप एवं तृष्णा आदि को
करने वाला है। ज्वर रोगी के लिवा
रोगी और मीरोगी को लाभदायक है।
हृदय और यकृत को अत्यन्त बलदाय
एवं शुद्ध रुधिर उत्पन्न करता है। अनार
निकाल कर मलमल और कपड़े
निचोड़ कर केवल उसका रस पिलाएँ।

अत्यन्त मद्यपान जन्य यकृद्दोष में
घंटे बाद अनार का रस निकाल कर
रहें।

कामला रोगी को प्रातः सायं
अनार का रस और ६ माशे शरिफ
सेवन कराएँ।

वमन एवं उत्क्लेश विकार में खट्टे
रस गुणदायक है।

विसूचिका रोगी के लिए खट्टे अनार
एक उत्तम औषध है। रस न प्राप्त होने
या शर्बत का सेवन कराना चाहिए।

छोटे बच्चों को प्रति दिन प्रातः सायं
तोले एक समय अनार का पानी पिलाते
४० दिन तक ऐसा करने से जिस्म की रंग
निकल आती है।

अनार दाने का ताजा रस उदर
मक है।

जिसकी चमड़ी से तुरन्त रुधिर निकल आए से बच्चों को ज़ुबान का खून बन्द करने के लिए अनार खिलाना चाहिए।

बवासीर वालों को अनार खिलाना हितकारी है।

इसके रस में शक्कर मिलाकर कुछ गर्मकर पिलाने से वमन रुक जाता है।

अनार के रस में जीरा और शर्करा मिलाकर खिलाने से अरुचि मिटती है। अनार के दाने खाने से रुचि बढ़ती है।

खट्टे अनार के रस में कुछ मधु मिलाकर कान में टपकाने से कान का दर्द दूर होता है।

मीठे अनार का रस निकाल बोतल में भर कर धूप में रख दें। जब वह चाशनी जैसा होजाए तब उसका अंजन करने से सब तरह की आँखों की खुजली मिटती है और आँख की रोशनी बढ़ती है।

जिस ज्वर रोगी को प्यास बेचैनी, मतली, वमन एवं रेचन होता हो उसको रुब्ब अनार या शर्बत अनार का उपयोग लाभदायक सिद्ध होता है।

अनार का फूल (दाड़िमपुष्प)

दाड़िमपुष्पः–सं० । गुले अनार–फ़ा० । जुल्नार-अ० । ग्रेनेटाइ फ्लोरीस Granati Flores–ले० । पॉमेग्रेनेट फ्लावर्स Pomegranate Flowers–इं० ।

यह अनार जिसमें फल लगते हैं उसकी कली को अरबी में अक़्माहरुम्मान या जुंबज़रुम्मान कहते हैं। पर वह अनार जिसमें फल नहीं लगते उसके फूल को गुलनार कहते हैं।

गुणधर्म तथा उपयोग—"घ्राणान् प्रवृत्ते रुधिरे दाड़िमपुष्परसः—तथा दाड़िमपुष्पतोयम्।" अनार के फूल के रस का नस्य लेने से नासिका द्वारा रक्तस्राव अर्थात् नासार्श वा नकसीर को लाभ होता है। च० चि० ५ अ० ।

अनार की वह कलियाँ जो निकलते ही हवा के झकोलों से वृक्ष से गिर पड़ती हैं, दस्तों के लिए हितकर हैं। क्योंकि ये अतिशय सङ्कोचक एवं ग्रेदण्न (मुजफ्फ़िफ़) होती हैं, विशेष कर जलाई हुई। क्योंकि जलानेसे उसका शुष्ककारित्व अधिक हो जाता है। नफ़ी० ।

खट्टे अनार के शुष्क फूल को बारीक पीसकर अवचूर्णन करने से मसूढ़ों से रक्तस्राव का होना रुक जाता है एवं यह व्रणपूरक है। म० अ० ।

(१) इसके पुष्प में सङ्कोचक गुण है। अनार की कली को चूर्णकर ४ से ५ ग्रेन की मात्रा में देने से काम को लाभ होता है। (२)अनार की अविकसित ताज़ी कलियों को पीसकर चूर्ण किए हुए शुद्ध पुल्ला बीज, पोस्त बीज तथा मस्तगी में मिश्रित कर शर्बत के साथ इसका अवलेह प्रस्तुत करें। बालकोंके पुरातन अतिसार एवं प्रवाहिका की चिकित्सा के लिए यह अमोघ औषध है। (Tukina).

अनार के फूल का रस और दूब का रस इनको समान भाग सेवन करने से अथवा इसके लाल फूलों का रस नाक में टपकाने से या सुँघाने से नकसीर बन्द होती है।

अनार के सूखे फूलों को दस्त को बन्द करनेवाले योगों में डालने से इनका गुण बढ़ जाता है।

अनार और गुलाब के सूखे फूल लेकर पीस कर मंजन करने से मसूढ़ों का पानी बन्द हो जाता है।

इसकी कलियों का दो ढाई रत्ती चूर्ण खाँसी के लिए बहुत गुणदायक है।

अनारके ताजे फूल ४ तो०,मेथी सब्ज़ १०तो० इनको बारीक रगड़ कर १ सेर पानी में पकाएँ। जब पककर लेई की तरह गाढ़ा गाढ़ा लुआब सा हो जाए तब सिर के बालों पर लेप करें। इसके दो घंटे बाद स्नान करें तो बाल घूँघरवाले और बारीक हो जाते हैं।

अनार की कली जो खिली न हो ताज़ी लेकर खूब कूटकर निचोड़ कर धूप या पानी की भाप पर शुष्क कर लें। मात्रा–३ माशे से ६ माशे तक।

दाड़िम मूल त्वक्

अनार की जड़ की छाल, अनार की छाल –हिं० । ग्रेनेटाई कॉर्टेक्स (Granati Cortex)–ले० । पॉमेग्रेनेट बार्क (Pomegranate bark)–इं० । क़शुर्रुम्मान अ० । पोस्त अनार–फ़ा० ।

नोट—इसकी तिब्बी, वैद्यक संज्ञाओं से यहाँ दाड़िम फलत्वक् (जिसे हिन्दी में नसपालो कहते हैं) नहीं समझना चाहिए; प्रत्युत यह दाड़िम वृक्ष के कांड तथा दाड़िम की जड़ की छालें हैं ।

वानस्पतिक वर्णन—इसके छोटे छोटे चतुष्पाकार अर्थात् मुड़े हुए या नलीदार टुकड़े होते हैं जिनकी लम्बाई २ से ४ इंच तक और चौड़ाई आध इंच से १ इंच तक होती है । छाल का बाहरी पृष्ठ खुरदरा धूसराभ पीतवर्ण का और भीतरी पृष्ठ सचिक्कण पीतवर्ण का होता है । यह सरलतापूर्वक टूट जाता है । यह गंधरहित तथा स्वाद में कषाय किंचित् तिक्त होता है ।

रासायनिक संगठन—इसमें पैलोटियुरीन या प्युनीसीन (अनारीन) नाम का एक द्रव क्षारीय सत्व होता है । देखो—अनारवृक्ष वर्णनान्तरगत रासायनिक संगठन ।

संयोग-विरुद्ध—ऐलकैलोज़ (क्षारीय औषधें), मेटैलिक साल्टस (धातुज लवणें), लाइम वाटर (चूने का पानी, चूर्णोदक) और जेलेटीन (सरेश) ।

प्रभाव—संकोचक तथा श्लीपदकृमिहर ।

औषध-निर्माण—(१) दाड़िम त्वक् क्वाथ, अनार की छाल का काढ़ा–हिं० । डिकॉक्टम् ग्रेनेटाई कॉर्टेक्स (Decoctum Granati Cortex)–ले० । डिकॉक्शन ऑफ पॉमेग्रेनेट बार्क (Decoction of Pomegranate Bark)–इं० । मत्बूख़ क़शुर्रुम्मान–अ० । जोशाँदहे पोस्त अनार–फ़ा० । निर्माण-विधि—पॉमीग्रेनेट बार्क (अनार की छाल) का १० नं० का चूर्ण ४ आउंस, परिश्रुत वारि के साथ १० मिनट तक क्वथित कर छान लें और इसमें इतना और परिश्रुत [जल मिलाएँ] कि प्रस्तुत क्वाथ पूरा एक पाइंट हो जाए । मात्रा– आधा से २ फ्लुइड आउंस=(१४ से ५६.८ क्युबिक सेंटीमीटर) ।

(२) चूर्ण किया हुआ मूलत्वक् [...] ३ ड्राम कृमिघ्न रूप से ।

(३) इसी का क्वाथ (२० में १), मात्रा—३ से ६ फ्लु० आउंस ।

(४) मूल त्वक् का तरल सत्व, [मात्रा] चौथाई से २ फ्लु० ड्राम ।

प्रभाव तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मत से—(चरक [मत से] दाड़िम त्वक्) अनार वृक्ष की छाल के [क्वाथ में] सोंठ का चूर्ण मिलाकर पिलाने से अर्श [जन्य] रक्तस्राव विनष्ट होता है । (चि० ६ अ०)

चक्रदत्त—(१) सरक्त अतिसार [में] दाड़िम त्वक्—कुटज और अनार वृक्ष की [छाल] इन दोनों का क्वाथ प्रस्तुत कर मधु के [साथ] सेवन करने से दुर्निवार्य रक्तातिसार में भी विजय प्राप्त होता है । (अतिसार चि०)

(२) उपदंश में दाड़िम वृक्ष त्वक् (अनार की छाल) के चूर्ण द्वारा उपदंश के व्रण को चूर्णन करने से व्रणरोपण होता है । (उ[पदंश] चि०) ।

भावप्रकाश—इसकी जड़ कृमिहर है ।

यूनानी एवं नव्यमत– अनार वृक्ष [की] विशेषतः इसकी जड़ की छाल कद्दू [दाना] (Tapeworm) के लिए सर्वोत्तम [...] औषध है । इसको अधिक मात्रा में देने से [वमन] एवं रेचन आने लगते हैं । इसके उपयोग [की] सर्वोत्तम विधि निम्न है—

इसकी जड़ की छाल ५ तो०, जल १ [...] इसका क्वाथ करें; जब एक सेर पानी रह [जाए तब] उतार कर छान लें । इसमें से २ तो० [प्रातः]काल खाली पेट सेवन करें (बालक को २ फ्लु० ड्रा०) ऐसी ऐसी ४ मात्राएँ आध आध घण्टा पश्चात् देनेके बाद एक [मात्रा] एरंड तैल का देकर आँतों को साफ [...]

मे कद्दूदाना मर कर निकल जाता है।
अ०। डिमक। ई० में० में०। आर० ए० चोपरा। पी० वी० एम०।

पुरातन अतिसार एवं प्रवाहिका में अनार की छाल तथा फल त्वक् के स्तम्भक गुण का उपयोग किया जा चुका है। आर० एन० चोपरा।

पैलेटिएरीन(*Pelletierine*).

($C_8H_{13}NO$)

(ऑफ़िशल Official)

लक्षण एवं परीक्षा—यह एक क्षारीय सत्व जो दाड़िम की जड़ की छाल द्वारा प्राप्त होता है। इसके वर्ण रहित सूक्ष्म रवे होते हैं जो खुली वायु में या ऐसी शीशी में जो पूरी भरी न हो बहुत शीघ्र वर्णयुक्त हो जाते हैं। यह जल में विलेय होते हैं। मात्रा—२—१० ग्रेन।

पैलेटिएरीन सल्फास

Pelletierine Sulphas

प्युनिसीन सल्फेट Punicine Sulphate—इं०। अनारीन गंधेत्।

लक्षण एवं परीक्षा—यह एक भूरे रंग का गाढ़ा तैलवत् द्रव है जो जल में सरलतापूर्वक विलेय होता है। कभी कभी इसकी रवायुक्त डलियाँ होती हैं। इसको टेपवर्म (कद्दूदाना) को निकालने के लिए २ से ८ ग्रेन की मात्रा में देते हैं। परन्तु, इसको खाली मुँह खिलाकर उसके दो घंटा पश्चात् कम्पाउंड टिंक्चर ऑफ़ जैलप की एक पूरी मात्रा पिला देते हैं। (फ्रैंचकोडेक्स)

मात्रा—पूर्ण वयस्क को ४ से ८ ग्रेन तक; तेरह वर्ष के नवयुवक को २॥ से ४ ग्रेन तक और दो वर्ष के बच्चे के लिए $\frac{१}{२}$ से $\frac{४}{५}$ ग्रेन तक।

पैलेटिएरीनी टैनास

(*Pelletierinæ Tannas*)

पैलेटिएरीन टैनेट Pelletierine Tannate—इं०। अनारीन कषायेत्।

लक्षण एवं परीक्षा—यह एक हलका विकृताकार पीत या धूसर वर्ण का चूर्ण है जो अनार Punica granatum (*Myrtaceæ*) की जड़ एवं कांड की छाल द्वारा प्राप्त क्षारीय सत्व का टैनेट मिश्रण होता है। प्रभाव—कद्दूदाने (Tapeworm)के लिए कृमिघ्न है। मात्रा—२ से ८ ग्रेन (१३ से ५० मैटीग्राम)।

यह अनार की जड़ एवं कांड की छाल की प्रतिनिधि स्वरूप व्यवहारमें आता है। यह छाल द्वारा प्राप्त चार क्षारीय सत्वों के टैनेट का मिश्रण है। यह जल में कम परन्तु ऐलकोहल (८०%) के ८० भाग में १ भाग विलेय होता है।

प्रभाव तथा उपयोग—कद्दूदाना (Tapeworm) पर इसका विशेष मारक प्रभाव होता है। पेलीटिएरीन नामक क्षारीय सत्व के विलयन (१०, ००० में १) में थोड़ी देर तक डुबो रखने से यह मृतप्राय हो जाता है। इनमें टैनेट अधिक पसंद किया जाता है। क्योंकि अल्प विलेय होने के कारण इसका अधिकांश अपरिवर्तित दशा में ही आमाशय से गुजर कर क्षुद्रांत्र में पहुँच जाता है, जहाँ कि इसका कृमि के साथ सम्पर्क होता है। इसका शुद्ध क्षारीय सत्व अथवा विलेय सल्फेट (गधेत्) सम्भवतः आमाशय द्वारा अभिशोषित होकर कतिपय प्रकृति सम्बन्धी लक्षणों को उत्पन्न करता है, यथा—सिर चकराना, दृष्टिमांद्य, मांसपेशीस्थ आक्षेप और कायविस्तार। परन्तु टैनेट के सेवन के बाद ये लक्षण बहुत कम दीख पड़ते हैं। इसको उपवास के बाद ८ ग्रेन (४ रत्ती) की मात्रा में देना चाहिए और उसके एक या दो घंटे पश्चात् मृत कृमि को निकालने के लिए तीव्र रेचन जैसे जैलप (७॥ रत्ती) अथवा एक आउंस (२॥ तो०) एरंड तैल व्यवहार कराएँ (इससे कृमि भी निर्गत हो जाता जाता है और उदर एवम् सिर में दर्द भी नहीं होता)। थोड़ी मात्रा में टिटनस (धनुस्तम्भ) और पक्षाघात के कतिपय भेदों में पैलीटिएरीन सल्फेट का त्वगन्तःअंतःक्षेप किया जा चुका है। (Sir W. Whitla.).

नोट—इसके नूतन लवण तो विश्वास के योग्य होते हैं, परन्तु पुरातन होने पर ये खराब हो जाते हैं।

अनार फल त्वक् अथवा मूल त्वक् के क्वाथ से कभी कभी शिथिल कण्ठस्त आदि रोगों में गण्डूष कराते हैं। इस हेतु इसकी जड़ की छाल के कल्क का कंठ में प्रलेप करते हैं। गुदा एवं जरायु सम्बन्धी रसों में इसका स्थानिक प्रयोग उपयोगी होता है।

इसकी जड़ की छाल श्वेत प्रदर तथा रक्त-प्रदर के लिए अत्यन्त गुणदायक है। इसको आधसेर जौ कुट करके ३–४ सेर पानी में धीमी आँच पर पकाएँ जब पाव भर पानी रह जाए तब उतार कर छान लें। इससे स्त्री अपनी योनि धोया करे। और मलमल का कपड़ा तर करके योनि में रक्खे।

अतीसार में इसकी छाल के क्वाथ में थोड़ी सी अफीम मिलाकर प्रयोग करने से बहुत लाभ होता है।

इसकी छाल के काढ़े में सोंठ और चन्दन का बुरादा छिड़क कर पिलाने से रुधिर युक्त संग्रहणी मिटती है।

अनार की जड़ को पानी में घिस कर लेप करने से शिर का दर्द दूर होता है।

इसकी छाल का चूर्ण बुरकाने से उपदंश की टांकी मिटती है।

इसकी छाल के काढ़े में तिलों का तेल डाल कर तीन दिन तक पिलाने से पेट के कीड़े बाहर निकल जाते हैं।

आँख आने में अनार का क्वाथ एक, दो बुंद आँख में टपकाएँ। कुकरे में आँख के पपोटों को उलट कर उक्त काढ़े से आँख को धोने से अत्यन्त लाभ होता है। कर्णशूल तथा कान के भीतर की सूजन में, अनार के काढ़े को कान में डालना चाहिए।

अनार के पत्ते

हारीत—चलित गर्भ में द्रा[illegible] अस्थिरगर्भा अर्थात् जिसका प्रायः ग[illegible] जाता हो उस स्त्री के गर्भस्राव को [illegible] निवारणार्थ गर्भ में पाँचवें मास [illegible] श्वेत चन्दन को दधि और मधु के [illegible] [illegible]दित कर सेवन कराएँ। (चि० ५१[illegible])

रिसाला अमृत के कतिपय चुने हुए प्रयोग

इन योगों में मीठे अनार के पत्ते [illegible]

अनार के ताजे पत्तों को पत्थर पर पी[illegible] को सोते समय हाथ की हथेलियों पर [illegible] के तलवों पर लेप करने से यह हाथ [illegible] जलन को दूर करता है।

अनार के १० तोले ताजे पत्ते [illegible] में औटाएँ, ऽ॥ पानी शेष रहने प[illegible] दिन में दो तीन बार इसी पानी से [illegible] गुदभ्रंश रोग दूर होता है। गर्भाश[illegible] निकल आने पर भी इसका प्रयोग [illegible] होता है।

गर्भाशय के बाहर निकल आने [illegible] में अनार के हरे पत्तों को साया में [illegible] बारीक पीस कपड़ छान कर ६–६ [illegible] सायं ताजे जल से सेवन कराएँ।

अनार के ताजे पत्ते दो तोले, [illegible] १ माशा, दोनों को ऽ= पानी में पीस [illegible] प्रातः एवं इसी प्रकार सायंकाल [illegible] यह स्त्रियों के प्रदर रोग को दूर करता [illegible]

अनार के दो तोले ताजे पत्तों [illegible] पानी में रगड़ और छान कर पिलाना [illegible] के पत्तों को पीस कर पेड़ू पर लेप [illegible] हुए गर्भ को रोकता है।

अनार के पत्तों को साया में सु[illegible] कपड़ छान करके ६–६ मा० सुबह और शाम को, ताजे पानी के साथ [illegible] पांडु रोग दूर हो जाता है।

अनार के पत्तों को बारीक पीसकर थोड़ा स- [र]सों का तेल मिलाकर उबटन के तौर पर दिन में [ए]क बार प्रयोग करना खुजली को दूर करता है।

उपर्युक्त विधि के अनुसार सेवन करने अथवा [प]ाव भर अनार के पत्तों को पाँच सेर पानी में [औ]टाकर ४ सेर शेष रहने पर इससे नहाने [से] गरमियों में पित्ती निकलने को लाभ [ह]ोता है।

अनार के दो तोले हरे पत्तों को आध पाव [प]ानी में रगड़ और छान कर प्रातः सायं और [श]ीत की अधिकता में दो पहर को भी सेवन करने [स]े पित्त (उरःक्षत) को लाभ होता है।

अनार के हरे पत्तों को आध पाव पानीमें पीस [औ]र छानकर प्रातः सायं पिलाने तथा अनार के [ह]रे पत्तों को पत्थर पर बारीक पीसकर मस्तक [प]र लेप करने से नकसीर को लाभ होता है।

अनार के हरे पत्तों को कुचल कर निकाला [हु]आ रस १० तो०, गोमूत्र ६० तो०, तिल तैल [१]० तो०, तीनों को नरम आग पर पकाएँ। जब [तै]ल मात्र शेष रह जाए तब आग पर से उतार [क]र और छानकर ठंडा होने पर शीशी में डाल [ले]ं। इसको दो तीन बुंद थोड़ा गरम करके [प्रा]तः और सायं कान में डालने से बहरापन, [क]ान का दर्द और कानों की खुश्की और साँ साँ [श]ब्द होना बन्द होता है।

अनार के पत्तों को कुचल कर निकाला हुआ [र]स १ सेर, बेल के पत्तों को कुचल कर निकाला [हु]आ रस १ सेर, गाय का घी १ सेर, तीनों को [न]रम आँच पर पकाएँ। केवल घी मात्र शेष [र]हने पर छान कर रखें। दो दो तोला यह घी [प्र]ातः सायं पाव भर गरम दूध में मिलाकर प्रातः सायं पिलाना बधिरता को दूर करता है। दूध में आवश्यकतानुसार मिश्री या खाँड़ मिला लें।

अनार के दो तोले ताजे पत्तों को आध सेर पानी में पकाकर आधपाव रहनेपर छानकर प्रातः सायं पिलाना और अनार के पत्तों को पानी में पीस टिकिया बनाकर बाँधना कंठमाला और गल-गंड को दूर करता है। इसी भाँति सेवन करना भगंदर में भी लाभप्रद है।

छाया में सुखाए हुए अनार के पत्ते ४ भाग और नवसादर १ भाग, दोनों को बारीक पीसकर कपड़छान करें, और ३-३ मा० प्रातः सायं ताजे पानी के साथ खिलाएँ। यह प्लीहा के लिए गुण दायक है।

अनारके पत्तोंको कुचल कर निकाला हुआ रस १ सेर और मिश्री आधसेरका शर्बत तय्यार करें। २-२ तोला यह शर्बत दिन में दो तीन बार चटाना आवाज के भारीपन, खाँसी, नजला तथा जुकाम (प्रतिश्याय) को दूर करता है।

अनार के पत्तों को छाए में सुखाकर बारीक पीसकर कपड़ छन करें और शहद के साथ जंगली बेर के समान गोलियाँ बना कर छाए में सुखाकर रक्खें। यदि शुद्ध शहद न उपलब्ध हो तो गुड़के साथ गोलियाँबनालें। इन गोलियों को मुँह में रख कर चूसनेसे भी यह आवाज के भारीपन, खाँसी और नजला व जुकामको दूर करता है।

२ तो० अनार के पत्तों को आध सेर पानी में औटाएँ। जब आधपाव जल शेष रहे तब छान कर १ तो० खाँड मिलाकर प्रातः सायं सेवन करें। इससे आवाज का भारीपन खाँसी, नजला व जुकाम और दर्द सीना इत्यादि दूर होते हैं।

अनार के पत्तों को छाया में सुखा बारीक पीस कर कपड़छान करें और ६-६ मा० सुबह गो की छाछ और शाम को ताजे पानी के साथ खिलाएँ। इससे पेटके कीड़े दूर होते है।

अनार के ताजे पत्तोंको कुचल कर रस निकालें और इससे कुल्ले कराएँ। इससे मुख, हलक़ और जुबान का पकना, मसूढ़ोंसे खून और पीव का आना, जुबान और मुँह के छाले तथा ज़ख्म दूर हो जाते हैं। रस निकालने के लिए यदि काफी पत्ते न मिल सकें तो पत्तों को दुगुने पानी में पीस और छान कर रस निकालें।

अनार के दो तोले पत्तों को १० तो० पानी में

रगड़ और छान कर सुबह इसी तरह शाम को पिलाना बवासीर के खून को बन्द करता है।

अनार के पत्तों को पीस कर टिकियाँ बनाकर ज़रा गरम करके घी में भून कर बाँधना बवासीर के मस्सों की जलन, दर्द और शोथ को दूर करता है और मस्सों को शुष्क करता है।

२ तोले अनार के पत्तों को १० तोले पानी में रगड़ और छान कर सुबह और शाम को पिलाना खून के वमन को रोकता है। इसी प्रकार सेवन करने से खून के दस्त भी बन्द होजाते हैं।

अनार के पत्तों को पानी में पीस कर लेप करने से पित्त का सिर दर्द दूर होजाता है। वात और कफ के सिर दर्द में अनार के पत्तों को पानी में पीस कर किंचित् गरम करके लेप करना चाहिए।

छाया में शुष्क किए हुए अनार के पत्ते ऽ॥, धनियाँ शुष्क ऽ॥ इनको बारीक पीस कर कपड़ छान करें, गेहूँ का आटा ऽ१ तीनों को मिला कर गाय के ऽ२ घी में भून कर ठंडा होने पर ऽ४ खाँड मिलाकर रखें। इसमें से १-१ तो० या पाचन शक्ति के अनुसार न्यूनाधिक मात्रा में प्रातः सायं गरम दूध के साथ खिलाना सिर के दर्द तथा सिर चकराने को दूर करता है।

अनार के दो तोले ताजे पत्तों को ऽ= पानी में रगड़ और छान कर प्रातः सायं पिलाना खूनी पेचिश को दूर करता है।

अनार के पत्तों को छायामें सुखा बारीक पीस कर कपड़ छान करें। ६ मा० प्रातः गौ की छाछ और सायं उसी छाछ के पनीर के साथ खिलाएँ। कामला में लाभप्रद है।

अनार के २ तोले हरे पत्तों को आधपाव पानी में रगड़ और छान कर सुबह इसी प्रकार शाम के वक्त पिलाना पेशाब के रास्ते खून आने में गुणदायक है।

अनार के ताजे पत्तों को पत्थर पर बारीक पीस कर दिन में दो बार लेप करना दाद और चंबल को दूर करता है।

अनार के पत्तों को छाया में सुखा [illegible] कर कपड़ छान करके सुबह और शाम १-१ [illegible] ताजे पानी के साथ खिलाना दाद, चर्म [illegible] खून की खराबी को दूर करता है।

अनार के पत्तों को पानी में पीस कर [illegible] दो बार १-१ घंटे के लिए लेप करना [illegible] दूर करता है।

अनार के ताजे पत्तों को कुचल [illegible] हुआ रस १ सेर, अनार के ताजे पत्तों [illegible] सरसों का तेल आधसेर, तीनों को मिला [illegible] आँच पर पकाएँ। तैल मात्र शेष रहने पर [illegible] पर से उतार और छान कर ठंडा होने पर [illegible] में भरकर इस तैल को दिन में दो बार [illegible] गंज और बालझड़ को दूर करता है। [illegible] की मालिश करने से चेहरे की कील [illegible] काले धब्बे भी दूर हो जाते हैं।

अनार के पत्तों को छाया में शुष्क [illegible] पीस कपड़ छान करें और १-१ तो० [illegible] पानी के साथ खिलाने से आतशक [illegible] दूर होता है।

आधपाव अनार के ताजे पत्तों को [illegible] १ सेर पानी में औटाएँ, आधसेर पानी [illegible] पर छान कर इस पानी से दिन में दो [illegible] आतशक के ज़ख्मों को धोना चाहिए।

अनार के पत्तों को छाया में शुष्क [illegible] कपड़ छान करें और अनार के पत्तों [illegible] कर निकाले हुए रस में २१ दिन [illegible] शुष्क होने पर कपड़ छान करें। [illegible] ज़ख्मों को शुष्क करने के लिए यह [illegible] चूर्ण है।

अनार के दो तोले ताजे पत्तों को [illegible] पानी में जोश देकर आधपाव पानी [illegible] छान कर पाव भर गरम दूध में मिला [illegible] से शारीरिक एवम् मानसिक शांति [illegible] है। प्रातः एवम् रात्रि को सोते समय [illegible] सेवन करना अनिद्रा या स्वल्प निद्रा [illegible] लाभदायक है। नींद आने के लिए [illegible] सेवन करना सर्वोत्तम है।

अनार के हरे पत्ते २ तोले को आध सेर पानी पकाकर आधपाव शेष रहने पर छानकर तो० गोघृत और १ तो० खाँड़ मिलाकर बह और शाम पिलाने से मृगी दूर हो ती है।

२ तोले अनार के हरे पत्तों को आधसेर पानी रगड़ और छानकर सुबहशाम पिलाना मूत्राक ो दूर करता है।

अनार के पत्तों को कुचलकर निकाला हुआ र एकसेर सरयानामी कटेरी को कुचल कर काला हुआ रस १ सेर, गोमूत्र १ सेर, काले लों का तेल २ सेर, अनार के पत्तों का कल्क धसेर सबको मिलाकर आग पर चढ़ाएँ। वल तेल मात्र शेष रहने पर आग पर से उतार र छान कर रक्खें। इस तेल को दिन में दो न बार फुलवरी (श्वित्र) के दागों पर गाना गुणदायक है। इस तेल के लगाने से ाले धब्बे, झींप, दाद, चंबल, भगंदर और कंठ-ाला इत्यादि रोग दूर हो जाते हैं। इसे कोढ़ ़ ज़ख्मों पर लगाने से भी लाभ होता है।

इसको दिन में तीनबार लगाने से श्लीपद को ाभ होता है।

अनार के पत्तों को छाए में सुखाकर बारीक ीसकर कपड़छान करें। ६-६ मा० सुबह और ाम ताजे पानी के साथ खिलाने से श्वित्र सफेद कोढ़) दूर हो जाता है।

अनार के २ तोले हरे पत्तों को आधपाव पानी ं रगड़ और कपड़छान कर सुबह इसी प्रकार ाम के वक्त पिलाने से यह सोम रोग को दूर करता है।

अनार के ६ मासे हरे पत्तों को २ तो० पानी में रगड़ और छानकर २ तो० शर्बत मिलाकर लाभ होने तक एक-एक घण्टा बाद पिलाना हैजे के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। यह वमन को भी बन्द करता है।

एक तो० अनार के हरे पत्ते और १ मा० कालीमिर्च, दोनों को ऽ= पानी में रगड़ और छानकर सुबह और शाम पिलाना, रक्तपित्त को दूर करता है।

अनार के पत्तों को छाया में सुखा बारीक पीसकर कपड़ छान करें और १-१ तो० सुबह और शाम ताजा पानी के साथ खिलाएँ। इससे कोढ़ दूर हो जाता है।

साया में शुष्क कर बारीक पीस कर कपड़ छान किए हुए अनार के पत्ते ६-६ मासा सुबह और शाम ताजा पानी के साथ खिलाना, प्रमेह और क्षत (सत) को दूर करता है।

साए में शुष्क किए हुए अनार के पत्ते ४ भाग, सेंधानमक १ भाग, दोनोंको बारीक पीस कर कपड़ छान करें और ४-४ मा० दोनों समय भोजन से पहिले पानीके साथ खिलाएँ। यह भूख की कमी एवं बदहजमी को लाभप्रद है।

अनार के पत्ते २ तो०, ऽ= पानी में रगड़ और छान कर पिलाना, मूर्च्छा को दूर करता है। यदि रोग चिरकालीन हो तो सुबह शाम दोनों वक्त पिलाएँ।

अनार के पत्ते १ तो०, गुलाब के ताजे फूल १ तो० (यदि ताजे फूल न मिलें तो शुष्क पुष्प ६ मा० ले लें), दोनों को ऽ॥ पानी में औटाएँ। ऽ= पानी शेष रहने पर छानकर एक तो० गोघृत मिला कर गरम गरम सुबह और शाम पिलाने से योषापस्मार (Hystoria) दूर होजाता है। इससे उन्माद को भी लाभ होता है।

अनार के हरे पत्ते १ तो०, गोखरू हरा १ तो० दोनों को ऽ≡ पानी में रगड़ और छानकर सुबह और शाम पिलाना पेशाब की रुकावट और जलन को दूर करता है।

२ तो० हरे पत्तों को ऽ= पानी में रगड़ और छान कर सुबह और शाम पिलाना लू लगने में लाभप्रद है।

अनार के पत्तों को छाए में सुखा बारीक कर कपड़ छान करें और एक-एक तो० सुबह और शाम ताजा पानी के साथ खिलाने से श्लीपद दूर होता है।

अनार के पत्तों को पानी में पीस कर लेप करना श्लीपद को लाभप्रद है। । इसका प्रलेप कनफेड़ के वरम को दूर करता है।

अनार के २ तो० पत्तों को ऽ॥ पानी में क्वथित कर ऽ= पानी शेष रहने पर छान कर ४ रत्ती सेंधानमक मिला सुबह और शाम पिलाने से भी यह कनफेड़ के वरम को दूर करता है।

अनार के २ तो० हरे पत्तों को ऽ॥ पानी में क्वथित करें जब ऽ। पानी शेष रहे तब छानकर ठंडा होने पर इससे गण्डूष कराने से या खुनाक़ (Sore throat) को दूर करता है। आतशक में पारद सेवन से मुँह आने पर भी इसका उपयोग लाभदायक होता है।

अनार के २ तो० हरे पत्तों को ऽ॥ पानी में जोश देकर ऽ= रहने पर छानकर ठण्डा करके सुबह इसीतरह शामके वक्त पिलानेसे ~~यह खुनाक़~~ (Sore throat) और मुँह आने में मुफीद है।

अनार के पत्तों को छाए में सुखा बारीक पीस और कपड़ छान करके, सुबह और शाम दाँत और मसूढ़ों पर मञ्जन रूप से लगाने से दाँतों के हिलने, मसूढ़ों से खून या पीव आने और मसूढ़ों के फूलने इत्यादि में लाभप्रद है।

ऽ= अनार के पत्तों को ऽ१ पानी में जोश देकर ऽ। पानी शेष रहने पर छान कर इससे जख़्मों को धोने से उनसे खून आना बन्द हो जाता है और ज़ख़्मोंका गन्दापन दूर हो वे शीघ्र भर जाते हैं।

इस प्रकार धोने से और पूर्वोक्त अनार पत्र तथा सत्यानाशी द्वारा प्रस्तुत तैल के लगाने से नासूर भी दूर हो जाता है।

अनारके पत्तों को छाएमें सुखाकर बारीक पीस कपड़छान करके ६–६ माशा सुबह शाम ताजे पानी के साथ खिलाना भी नासूर में लाभ करता है।

अनार के पत्तों को पानी में पीसकर दिनमें दो बार लेप करना या अनार के पत्तों को पानी में भिगोकर अतीर पोटली आँखों [illegible] दुखनी आँखों को लाभ पहुँचाता है।

अनार की पत्तों को कुचल कर [illegible] को कपड़े में छान कर दिन में दे[illegible] चन्द क़तरे आँखोंमें टपकाना आँखों की [illegible] वरम, खुजली और गंदापन को दूर करता [illegible]

अनार के १ सेर ताजे पत्तों को ८ सेर [illegible] में भिगोएँ। २४ घंटे बाद आग पर रक्खें [illegible] २ सेर पानी शेष रह जाए छान कर इस [illegible] को दुबारा आग पर चढ़ावें। जब इसका र[illegible] गाढ़ा हो जाए तब आग पर से उतार कर [illegible] होने पर शीशी में डाल रक्खें। इसे मात्रा [illegible] सुबह और रात्रि में सोते समय आँखों में [illegible] दुखती आँखों को लाभ करता है और आँख [illegible] खुजली, ललाई, गंदापन, पलकों को [illegible] पानी आना और फुकरों को दूर करता है [illegible] काल तक सेवन करते रहने से परवाल भी [illegible] जाते हैं। पत्ती को पानी में भिगोने से [illegible] पानी से अच्छी तरह साफ कर लें जिसमें [illegible] आदि अलग हो जाएँ। यथासम्भव इसको [illegible] पात्र में तय्यार करें।

अनारकी हरी पत्तीको कुचलकर निकाल[illegible] रस ४०-५० तो०, सुरमा स्याह २ तो०, [illegible] को खरल करें। शुष्क होने पर कपड़[illegible] रक्खें। इसको दोनों समय आँखों में [illegible] आँखों के उपर्युक्त रोगों को दूर करता है।

अनार के हरे पत्तों को कुचल कर [illegible] हुआ रस खरल में डाल कर खरल क[illegible] शुष्क हो जाए तब कपड़े में छान क[illegible] प्रातः सायं सलाई द्वारा आँखों में [illegible] पूर्वोक्त नेत्र रोगों में यह प्रयोग [illegible] लाभप्रद है।

सिंगरफ़ रूमी १ तो०, अनार के [illegible] २ तो० दोनों को खरल करके ७ टिकि[illegible] कर छाया में शुष्क करें। नामे के दु[illegible] आग पर गरम करके उस पर एक टिकि[illegible] जलाएँ और आतशक के रोगी को [illegible]

बदन पर एक कपड़ा लपेट कर कपड़े के
यह ताम्बे का गरम टुकड़ा रखदें, जिस पर
ा पड़ी हो। जब धुआँ निकलना बन्द हो
ौर बदन पर खूब पसीना आचुके तो तेज
ा बचा कर रोगी के ऊपर से कपड़ा हटा
मरे कपड़े से पसीना साफ करदें। सात
क यह प्रयोग करने से आतशक दूर हो
है।

पथ सेवन काल में गेहूँ और चने की रोटी
साथ खिलाएँ। अनार के हरे पत्तों को
पर बारीक पीसकर आग से जली हुई
पर दिन में दो तीन बार लेप करना लाभ-
है।

० तोला अनार की पत्ती को कुचल कर २०
तिलों के तैल में जला कर काला होनेपर
से उतार लें और छान कर रखें। आव-
ा होने पर इस तेल को ७ बार पानी से
मलहम सा तय्यार कर आग से जली
गह पर लगाने से लाभ होता है।

ड, ततैया, मधु मक्खी, मकड़ी और बिच्छू
ं से दंशित स्थान पर अनार के हरे पत्तोंको
कर लेप करना चाहिए।

गाव और भिलावेंके तैल प्रभृति, तेज चीजों
ली हुई जगह पर उपर्युक्त प्रयोग उत्तम
मकड़ी के विष में दर्द मर बुखार और दाह
कई रोग पैदा हो जाते हैं। इन सब में
र के दो तोले ताजे पत्तों और दो माशे
ी मरिच को आधपाव पानी में रगड़ और
कर सुबह और तकलीफ की अधिकता की
में इसी तरह शाम को भी पिलाएँ।

अनार के पत्तों को छाया में सुखाकर बारीक
कर कपड़ छान करें। पित्त ज्वर में सुबह
ाम को ताजा पानी के साथ ६-६ माशा
लाएँ, वात कफ ज्वर में गर्म पानी के साथ
लाएँ।

टाइफ़ाइड (आंत्रिक सन्निपात ज्वर) में
तो० अनारके पत्तों का आध सेर पानी में जोश
दें, आध पाव पानी शेष रहने पर छानकर और
४ रत्ती सेंधा नमक मिलाकर सुबह और इसी
प्रकार शाम को पिलाया करें।

अनार के पत्तों को छाया में सुखाकर बारीक
पीसें और कपड़ छान कर के ६-६ माशा सुबह
व शाम ताजे पानी के साथ पिलाएँ या १ तो०
अनार के ताजे पत्र को ऽ= पानी में रगड़ और
छान कर सुबह और शाम पिलाने से दिल के
धड़कन को लाभ होता है। छाया में सुखाए हुए
अनार में दही, नीम के पत्र १-१ तो०, छोटी
इलायची और गेरू १-१ तो० सब को बारीक
कपड़ छान कर और ४-४ मा० सुबह और शाम
ताजे पानी के साथ सेवन कराने से दिल की
धड़कन, धूप या उष्णताधिक्य के कारण शरीर
से चिनगारियों के निकलने में बहुत लाभ होता
है। इससे प्यास भी कम हो जाती है।

बढ़ी हुई प्यास में अनार के पत्तों को कुचल
कर मुँह में रखकर चूसते रहना या १ तो०
अनार के पत्तों को ऽ= पानी में रगड़ और
छान कर सुबह शाम पिलाने से बहुत लाभ
प्रतीत होता है।

अनार के पत्तों को पीस कर लेप करना
स्तनों को दृढ़ करता है।

अनार के पत्तों को कुचल कर निकाला हुआ
रस ऽ१, तिल तैल २० तो० दोनोंको गरम आँच
पर पकाएँ, तैलमात्र शेष रहने पर उतार कर
छान कर रखें। इसकी दिन में दो तीन बार
मालिश करने से भी स्त्रियों के कुच कठोर हो
जाते हैं, परंतु शीघ्र नहीं।

अनार के ताजे पत्तों को कुचल कर निकाला
हुआ रस ऽ२, गाय का घी ऽ१, अनार के ताजे
पत्तों का कल्क ऽ=, तीनों को मिलाकर नरम
आग पर पकाएँ। जब पानी जल कर घी शेष
रह जाए तब उतारकर कपड़े से छानकर ठण्डा
होने पर मिट्टी के चिकने बर्तन में रख छोड़ें।
यह घृत मेदाजनक, वीर्य एवं बुद्धिवर्द्धक है।
ऽ। उष्ण गोदुग्ध में आवश्यकतानुसार मिश्री

अनावृत्त anávritta-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अनावृत्ता] जो ढँका न हो । अनावेष्टित । आवरण रहित । खुला । (२) जो घिरा न हो ।

अनावंशः anávanṣhah-सं० पु० मर्मविशेष । फे० । (A maimma.) See-Maimma

अनाशप्-पऴम anáshap-pazham-ता० अनन्नास । (Pine apple). स० फा० इं० ।

अनाशवादी anáṣhavádí—ता० गोभी । (Elephantopus scaber).-इं० मे० मे० ।

अनाशोवदी anáṣho-vadí-ता० गोभी । (Elephantopus scaber). फा० इं० २ भा० ।

अनासपण्डु anása-panḍu-ते० अनन्नास । (Pine apple) स० फा० इं० ।

अनासपुव्वु anása-puvvu-ते० अनासफल -हिं० । बादियाने ख़ताई-अ०, फ़ा० । Illicium anisatum, *Linn*. (Fruit of-star anise) ले० । स० फा० इं० ।

अनासफल anása-phala-हिं० सौंफ । अनसफल-द० । बादियान-अरब० । अनाशुप्-पू-ता० । बादियाने-ख़ताई-अ० । राज़ियानहे-ख़ताई, बादियाने-ख़ताई-फ़ा० । अनास पुव्वु -ते० । नक्षत्र-पोएन-बर्मी० । Illicium anisatum,Linn. (Fruit of-Star anise)-ले० । रा० फा० इं० । मेमो० । देखो—सौंफ ।

नोट-उपर्युक्त फलका एक प्रकारके पुष्प के साथ सादृश्यता होने के कारण किसी किसी ग्रंथ मे भ्रमवश इसका नाम "अनासफल" के स्थान में "अनासफूल" लिखा गया है । इसके अतिरिक्त किसी किसी फ़ारसी ग्रंथमें शब्द "अनास" तथा 'अनानास' अभेद रूप से उपयोग में लाए गए हैं; तदनुसार स्टार-एनीसी (अनासफल) का नाम ग़लतीमें भूले अनानास अर्थात् अनन्नासपुष्प लिखा गया है ।

प्रभाव—इसका फल वायुनिस्सारक है । परिस्रुत करने पर सौंफ़ (Anise) के सदृश तैल प्राप्त होता है । इसी कारण [illegible] स्थान में व्यवहृत होता है । मद्य को बनाने के लिए इसे उपयोग में लाते हैं ।

अनासफूल anása-phúla-हिं० दे[illegible] फल ।

अनासाइकलस पाइरीथ्रम anacycl[illegible] othrum, *D. C.*)-ले० अकरकरा ([illegible] litory) फा० इं० १ भा० । [illegible]

अनासिकः anásikah-सं० त्रि० [illegible] नाक रहित, बिना नाक का, नकटा । ([illegible] clipt)

अनासिक anásika-हिं० वि० [सं० [illegible] +नासिका] अनासिकः ।

अनासिर aanásira-अ० (ब० व०) [illegible] (ए० व०) तत्व । देखो-एलीमेंट्स ([illegible] ments)-इं० ।

अनासिर अर्बअह् aanásira-arbaa[illegible] तत्व चतुष्टय । यूनानी लोगों के निकट [illegible] चार मूल तत्व हैं । ये आर्यों के माने हु[illegible] तत्वों में से आकाश तत्व को तत्व नहीं [illegible] करते, प्रत्युत वे इसे ख़लाऽ अर्थात् शून्य [illegible] है, पर नवीन अनुसन्धानों द्वारा यह [illegible] भाँति सिद्ध हो चुका है कि आकाश शून्य [illegible] प्रत्युत द्रव्यों की एक ऐसी दशा है [illegible] द्रव्य एक-रूप होते हैं । इसको [illegible] ईथरिक (Etheric) कहते हैं । [illegible] तत्व या आकाश ।

अनासु anásu-कना० अनरस, अनन्नास । ([illegible] nas sativus).

अनासुप्पा anásuppá-ता० बादियान [illegible] सौंफ (Illicium anisatum, *Lin*[illegible]

अनासुप्पान anásuppán-त० [illegible] ख़ताई । सौंफ । (Illicium anisat[illegible] *Linn.*)-इं० मे० मे० ।

टिका हारोकंटोना anastatica hierochuntina, Linn.-लै० कफेमरियम. कफेना-फा० ।गर्भफूल-हिं०, गु० । फा० इं० १ भा० । देखो-कफेमरियम् (Kafemaryam).

náha-हिं० संज्ञा पु० देखो-अनाहः ।

अनाहतम् anáhatam-सं० क्लो० / अनाहत anáhata हिं० संज्ञा पु० } (१) नया वस्त्र, नया वस्त्र (New cloth)। (२) शब्द योग में वह शब्द या नाद जो दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों कानों को बन्द करके ध्यान करने से सुनाई देता है। अनाहत-शब्दयोग। (३) हठ योग के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक। इसका स्थान हृदय, रंग लालपीला-मिश्रित और देवता रुद्र माने गए हैं। इसके दलों की संख्या १२ और अक्षर 'क' से 'ठ' तक हैं।

वि० (१) जिस पर आघात न हुआ हो। अक्षुब्ध। (२) अगुणित। जिसका गुणन न किया गया हो।

अनाहत चक्रम् anáhata-chakram-सं० पु० हृदयचक्र, द्वादश-दल-कमल। ज़फ़ीरह् ऐसब्यह्-अ०। कार्डिएक प्लेक्सस (Cardiac plexus)-इं०। देखो-हृदयचक्र।

अनाहत शब्दः anáhata-shabdah-सं० पु० अनाहत चक्र से होने वाला शब्द।

अनाहद वाणी anáhada-váṇí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अनाहत+वाणी] (१) घट में होने वाला आवाज़। (२) आकाश वाणी। देववाणी। गगनगिरा।

अनाहशूलम् anáha-shúlam-सं० क्लो० दर्द के साथ पेटका फूलना। (Flatulent with pain).

अनाहारः anáhárah-सं० पु० (१) भोजन का अभाव वा त्याग। आहाराभाव (Abstinence, starvation)। हिं० वि० (१) भूखा, निराहार। जिसने कुछ न खाया हो। (२) जिसमें कुछ न खाया जाए।

अनाहारी anáhárí-हिं० पु० भूखा रहने वाला। भूखा। (Fasting).

अनाहूत anáhúta-हिं० वि० अनिमंत्रित, बिना-बुलाया हुआ, बिना न्योता दिए।

अनाहः anáhah-सं० पु० रोग विशेष, आ(अ) नाह रोग, मलमूत्र रोधक व्याधि, अफरा, पेट फूलना, आध्मान। (Flatulence).

अनिकर्णी anikarṇí-ता० शिङ्गिनी, अजशृङ्गी, नेत्रशृङ्गी-सं०। (Odina wodier) इं० मे० मे०।

अनिकेत aniketa-हिं० वि० / अनिकेता aniketá-सं० स्त्री० } गृहहीन, बिना घर का, स्थान रहित।

अनिगीर्ण anigírṇa-हिं० वि० [सं०] जो निगला न गया हो।

अनिगुण्डुमणि anigunḍumaṇi-ता० रक्त-कम्बल। (Adenanthera Pavonina).

अनिग्रह anigraha-हिं० वि० [सं०] पीड़ा रहित। नीरोग।

अनिच्छः anichchhah-सं० त्रि० तृप्त इच्छा न होना। वै० निघ०। (Indifference.)

अनिच्छा anichchhá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अनिच्छित, अनिच्छुक] (१) इच्छा का अभाव। अरुचि। (२) अप्रवृत्ति।

अनितून anitún-यु० / अनिथूम anithúm-यु० } सोआ-हिं०। शब्त-फ़ा०। डिल (Dill)-इं०। फा० इं० २ भा०।

अनिद्र anidra-हिं० वि० [सं०] निद्रारहित। बिना नींद का। जिसे नींद न आए।

संज्ञा पु० नींद न आने का रोग। प्रजागर।

अनिद्रा anidrá-हिं० स्त्री० निद्रानाश, नींद न आना। (Insomnia, sleeplessness).

अनिद्राजनक anidrájanaka-निद्राहर, निद्रा-नाशक, निद्रा न्यूनकर।

अनिद्रान्तक anidrántaka-हिं० वि० निद्रा-जनक। (Hypnotic).

अनिपीपुल anipipul-द० पीपल वृक्ष, अश्वत्थ वृक्ष। (Ficus Religiosa). इं० मे० मे०।

अनिफ़ anif-अ० नासिका रोगी। (Nose diseased.)।

अनिमा onoma-हिं० संज्ञा स्त्री० देखो—पनिमा।

अनिमिषः animishah-सं० पुं०
अनिमेषः animeshah-सं० त्रि०
(१) मत्स्य। मछली। (A fish) चिका० मे० पचतुष्कं। (२) चक्षु रहित, निमेषशून्य।

अनिमिष animisha-हिं० वि० [सं०] निमेष रहित। स्थिर दृष्टि। टकटकी के साथ देखनेवाला।
क्रि० वि० (१) बिना पलक गिराए। एक टक। (२) निरन्तर।
संज्ञा पुं० मछली। (A fish)

अनिमेष animesha-हिं० वि०, क्रि० वि० दे० अनिमिष।

अनियारा aniyárá-हिं० वि० [सं० अणि= नोक+हिं०-आर (प्रत्य०)] [स्त्री० अनियारी] नुकीला। कटीला। पैना। धारदार। तीक्ष्ण। तीखा।

अनिरुद्धम् aniruddham-सं० क्ली०
अनिरुद्ध aniruddha-हिं० संज्ञा पुं०
(१) पशु आदि बाँधने की रज्जु विशेष। (Rope,string)। —हिं० वि० अनिवारित, जो रोका हुआ न हो, अबाध। (Unobstructed)।

अनिरुद्धपथम् aniruddha-patham-सं० क्लो० आकाश। (Sky) श०।

अनिर्दशा anirdashá-हिं० वि० स्त्री० [सं०] जिसको बच्चा दिए दस दिन न बीते हों।

नोट—इस शब्द का व्यवहार प्रायः गाय के सम्बन्ध में देखा जाता है। ऐसी गाय का दूध पीना निषिद्ध है।

अनिर्माल्या anirmályá-सं० स्त्री० वृक्षा-सं०। पिंड्रि शाक-बं०। Medicago esculenta, Rxb. रत्ना०।

अनिर्वाणः anirvánah-सं० पुं० ... legm) वै० निघ०।

अनिलः anilah-सं० पुं०
अनिल anila-हिं० संज्ञा पुं०
(Air or wind)। (१) ... —थ०। शाकतरु। रा० नि० व० ११।

अनिल anila-हिं० ... phrosia tinctoria, Pers. इसके पत्र रंग के काम में आते हैं। ...

अनिलकपित्थः anila-kapitthah-सं० पुं० स्थूल आम्रातक। (Spondias mangifera) वै० निघ०।

अनिलकारकः anila-kárakah-... काँजी भेद। वै० निघ०। See-Kh...

अनिलघ्नः,-कः anilaghnah-,kah-... बहेरेका पेड़, बिभीतक वृक्ष। टर्मिनेलिया बेलेरिका (Terminalia belerica) रा० नि० व० ११।

अनिलज्वरः anila-jvarah-सं० पुं० ... ज्वर, वातज्वर। यह साम और निराम दो प्रकार का होता है। च० द०। Vátajvara.

अनिलनिर्यासः anila-niryásah-... पियाल वृक्षः-सं०। पियबेहू, चिरौंजी -हिं०। Buchanania latifolia चिरला-महा०। वै० निघ०।

अनिलपर्य्ययः anilaparyyayah-... वायु रोग (Nervous disease.)

अनिलभुक् anila-bhuk-सं० पुं० साँप, कीरा। स्नेक (Snake), सर्पेन्ट pent)-इं०। वै० निघ०।

अनिलरसः anila-rasah-सं० पुं० (... रस पांडु रोग में हित है। रस० र०।

(२) ताम्रभस्म, पारद भस्म, गन्धक, वत्स-नाग प्रत्येक समान भाग ले चूर्ण कर चित्रक के क्वाथ से भावना दें और चौथाई पहर तक मन्द अग्नि (लघु पुट) में पकाएं।

मात्रा—२ रत्ती।

गुण—इसके सेवन से शोथ और पांडु दूर होते हैं। रस० यो० सा०।

अनिलरिपुः anila-ripuh-सं० पुं० एरंड वृक्ष, अरण्ड। (Ricinus communis) वैं० निघ० २ भा० सन्नि० ज्व० चि० रास्नादि।

अनिलसखः anila-sakhah-सं० पुं० अग्नि, आग। फ़ायर (Fire)-इं०।

अनिलहरम् anila-haram-सं० क्लो० कृष्णा-गुरु, काली अगर। वैं० निघ०। Eagle wood (Aquilaria agallocha.)।

अनिला anilá-सं० स्त्री० (१) नदी (River)। (२) खटिका, फूल खड़ी, सेलखड़ी। (Chalk) र० मा०।

अनिलाजीर्णम् anilájírnam-सं० क्लो० वाता-जीर्ण। वा० सू० ८ अ०। See-Vátájírna.

अनिलाटिका anilátiká-सं० स्त्री० रक्त पुन-र्नवा। See-Rakta-punarnavá

अनिलान्तकः anilántakah-सं० पुं० इंगुदी वृक्ष। हिंगोट, हिंगुआ। (Balanitis roxburghii) रा० नि० व० ८।

अनिलामयः anilámayah-सं० पुं० (१) वायुरोग, वात व्याधि। (Nervous disease)। (२) अजीर्ण।

अनिलारिरसः anilári-rasah-सं० पुं० (१) पारद १ तो०, गंधक २ तो० की कज्जलीकर अरंड और निर्गुण्डी के रस से १-१ दिन खरल करें। पुनः ताम्र के सम्पुट में रख कपरौटी कर बालुका-यन्त्र में जंगली कंडे के चूर्ण की अग्नि दें। जब शीतल हो तब निर्गुण्डी, अरण्ड, चित्रक इनके रस की भावना दे रक्खें।

मात्रा—१ रत्ती।

गुण—सेंधानमक के साथ या मिर्च, घृत, त्रिकुटा, चित्रक के साथ खाने से वात रोग दूर होता है।

(२) पारा, मैनसिल, हल्दी, शुद्ध जमाल-गोटे के बीज, त्रिफला, त्रिकुटा और चित्रक प्रत्येक समान भाग लें और गन्धक पारेसे दूना ले एकत्र चूर्ण करें। फिर दन्ती, थूहर और भांगरा इनके रस, दूध और क्वाथ से भावना दें।

मात्रा—१-२ रत्ती।

गुण—इसके प्रयोगसे रेचन होगा। जब रेचन हो चुके तब इसका पथ्य म॰ के साथ दें। कोई ठंडी वस्तु न दें। फिर शरीर में शक्ति आजाने पर उसी प्रकार उपर्युक्त रस को तब तक दें जब तक कि रोग शान्त न हो जाए। यह ८० प्रकार के वात व्याधियों को दूर करता है। रस० यो० सा०।

अनिलाशिन् aniláshin-सं० पुं०
अनिलाशी aniláshi-हिं० संज्ञा पुं०
अनिलाशी. aniláshih-सं० पुं०
सर्प, साँप (A serpent)। -हिं० वि० हवा पीकर रहने वाला। (Air eater)

अनिलासः anilásah-सं० पुं० कृष्णकान्ता (Clitorea ternatea)। देखो-अपरा-जिता।

अनिलेकायी anile-káyi-कना० हड़, हरीतकी। (Terminalia chebula) इं० मे० मे०।

अनिलोचितः anilochitah-सं० पुं० नील-माष, राजमाष, काली उड़द। (Dolichos sinensis) वैं० निघ०।

अनिष्ट anishta-हिं० वि० [सं] जो इष्ट न हो। इच्छाके प्रतिकूल। अनभिलषित। अवांछित। संज्ञा पुं० अहित। हानि।

अनिष्टकर anishtakara-हिं० वि० [सं]

[स्त्री० अनिष्टकरी] अपकारक, अहितकारी, अनिष्ट करनेवाला, हानिकारक, अशुभकारक।

अनिष्टा,-ष्टा anishtá, shthá-सं० स्त्री० नागवला, गुलसकरी। (Sida spinosa) रा० नि०।

अनिस anis-फ्रें० राजियानह-फ़ा०। राजियाराज-अ०। Anise (Pimpinella anisum, Linn.)-ले०। फॉ० इं० २ भा०।

अ(आ)निसबाईबेरेल anis-biberoll-जर० सौंफ। (Pimpinella anisum) इं० मे० मे०।

अनिःसारा anih-sárá-सं० स्त्री० कदली वृक्ष, केले का पेड़ (Musa sapientum, *Linn.*)। कला गाछ-बं०। रा० नि० व० ११। वै० निघ०।

अनिसैकी anisacre-फ्रें० सुफेद जीरा, श्वेत जीरक।(Cuminum cyminum.) इं० मे० मे०।

अनिसो-किलस-कार्नोसस् anisochilus carnosus, *Wall.*-ले० पञ्जोरी का पात, सीता को पञ्जोरी-हिं०। पञ्जोरी का पत्ता-द०। स० फा० इं०। फॉ० इं० ३ भा०। मेमो०। इं० मे० मे०। इसके पत्र एवं पौधे औषध कार्य में आते हैं।

अनिसोमेलिस ओवेटा anisomelis ovata, R. Br.-ले० गोबुर। मेमो०। (Malabar catmint)-इं०। मोगवीर-द०। इं० मे० मे०।

अनिसोमेलीस डाइस्टिका anisomeles disticha-ले० मोगवीर। इं० मे० मे०।

अनिसोमेलीस फ्रूटिओसा anisomeles frutiosa-ले० मोगवीर। इं० मे० मे०।

अनिसोमेलीस मालाबेरिका anisomeles malabarica, R.Br.-ले० मृताङ्कुशम्-सं०। मोगवीरे का पत्ता-द०। मालाबार कैट मिण्ट (Malabar catmint)-इं०। स० फा० इं०। गावज़ुबान-हिं०। मभेरी, चीना, रणभेरी-ते०। पैनैतिल-ता० मेमो०।

अनिक्षुः anikshuh-सं० पुं० इक्षु वि (Saccharum spontaneum) -बं०। र० मा०। अनानासुः। रत्ना०।

अनी aní-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अणि=अग्र नोक] नोक, सिरा, कोर (The point edge of any sharp instrument) हिं० तीखा, पैना, नोक।

अनी ani-अर० (Red) रक्त, लाल-हिं०। सुर्ख-अ०।

अनीक़ áaniq-अ० (Neck, cerv ग्रीवा। धड़ और सिरका मध्यस्थ करोरु

अनीक़रूस aniqarús-यु० किर्मिज़।

अनीकस anikas-सं० शिगूफ़ा, कली।

अनीकस्थः anikasthah-सं० त्रि० शिक्षाविचक्षण, कोचवान। मे० थ (An elephant driver).

अनीकाही anikáhi-सं० स्त्री० एक (A tree)

अनीकिनी ani-kini-हिं० स्त्री० सेना कटक, सैन्य। (An army, a fo

अनीकिनी anikini-हिं० संज्ञा "[सं०] कमलिनी। पद्मिनी। नलिनी

अनीची anichi-यु० मोती (pearl

अनीतरून anitarún-हं० गंडना के एक बूटी है जो कठोर भूमि पर उगती plant like Gandaná.

अनीदोतूस anidotús-यु० माजूनात fectiones) । देखो—मअ्जून।

अनीनशन् aninashan-सं० विनाश का है। अथर्व०।

अनीमून anemone-इं० शक़ायिकुन्नुअ्‌मान-अ०। वायुपुष्प-सं०। पल्म- (pulsatilla)-ले०। फा० इं०।

[ए]मून ऑब्ट्युज़ीलोबा anemone obtuiloba, *Don.*, Royle –लै० शक़ीक़-अ० । [वा]युपुष्प-सं० । रत्तनजोग, पाद्दर-पं० । फा० [इं]० १ भा० । इं० मे० प्लां० । मेमो० ।

[एनीमू]न डिसकलर anemone discolor [–]लै० रत्तनजोग, पाद्दर-पं० । फाकरूज [ख]ुमा० । इं० मे० मे० ।

[एनीमू]न पल्सेटिला anemone pulsatilla –लै० शक़ायिक़ुन् नु'मान–अ० । वायुपुष्प-सं० । (pulsatilla.)

[एनीमू]न हार्टेन्सिस anemone hartensis –लै० । बिस्तान अफ़रोज़–फ़ा० । मदूरा, कलगा ।

[एनीमू]न हेपेटिका anemone hepotica –लै० लीवर वर्ट (Liver wort)–इं० ।

[एनी]मोनिक एसिड anemonic acid –इं० तेज़ाबे-शक़ायिक़ुन्नुमान–अ० । वायु-[पुष्पा]म्ल-सं० । फा० इं० १ भा० ।

[एनी]मोनीन anemonin–इं० जौहर शक़ीक़ –अ० । वायुपुष्प सत्व-सं० । फा० इं० १ भा० ।

[एनी]मोनोल anemonol–इं० पीत वायुपुष्प-[तै]ल (Yellow anemone oil) । इं० फ़ा० १ भा० ।

[अनि]ली anili–सं० स्त्री० कासतृण । A species of grass (Saccharum spontaneum) र० मा० । देखो—काशः ।

[एनी]लेमा ट्युबेरोसा aneilema tuberosa, *Ham.*–लै० स्याह मुसली । मेमो० ।

[एनी]लेमा स्कैपीफ्लोरम् aneilema scapiflorum, *Wight.*–लै० स्याह मुसली । कुरेली –पं० । सीसमुलिया–गु० । इं० मे० प्लां० । देखो—मुसली ।

[अनी]सून anísúna } –हिं० संज्ञा पुं० [यू०]
[अनी]सूँ anisún } विलायती रूम्मी । सौंफ़-रूमी–उ० । अनीसून (anison)–यु० । एनिस फ्रूट (Aniso Fruit), एनिस (Anise), एनिसीड (Ani-seed)–इं० । एनिसाई फ्रुक्टस (Anisi Fructus), पिम्पिनेला एनिसम (pimpinella anisum, *Linn.*)–लै० । एनिस(Anis)-फ़्रं० । राज़ियानजुरूमी, राज़ियानजुरशामी; (बीज) ब ज़ुराज़ियानजुरूमी, ब ज़ुराज़ियानजुरशामी, हब्बुल् हलो, कमूनुल् हलो–अ० । बादियान रूमी–फ़ा० । विलायती रधूनी–बम्ब० ।

छत्रक या शतपुष्पा वर्ग
(*N. O. Umbelliferæ.*)

उत्पत्ति स्थान—यह एक वार्षिक पौधा है जिसका मूल उत्पत्तिस्थान मिश्र और सीचांद है; परन्तु, अब यूरुप में विशेषकर रूस और स्पेन, हॉलैंड, बलगेरिया, फ्रांस, टर्की, साइप्रस तथा अन्य प्रदेशों में इसकी कृषि होती है । फ़ारस और भारतवर्ष में यह संयुक्तप्रांत और पंजाब के विभिन्न भागों तथा ओड़ीसा के थोड़े भाग में पाया जाता है । अनीसूँ अब उत्तरी भारतवर्ष में बोया जाता है । यद्यपि अब भारतवर्ष की भूमि इसकी प्रकृति के अनुकूल हो गई है तो भी वह इसका वास्तविक जन्मस्थल नहीं है ।

संज्ञा निर्णायक नोट–इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स, इंडियन मेटीरिया मेडिका और इंडिजिनस ड्रग्स ऑफ इण्डिया इत्यादि ग्रन्थों में से किसीमें इसका संस्कृत नाम मधुरिका लिखा है तो किसी में शतपुष्प वा शताह्वा तथा किसी में उभय नामोंका उल्लेख आया है जो सर्वथा भ्रमकारक है । अनीसून उनसे भिन्न ओषधि है । मधुरिका वा मिश्रेया अर्थात् सौंफ (बादियान) Fennel (Foeniculum Capillaceum or Vulgare), शतपुष्प अर्थात् सोश्रा (शिबित्त) Dill (Peucedanum Graveolens), बादियाने खताई star-anise(Illicium Verum) आदि और कतिपय अन्य ओषधियोंमें बहुत कुछ पारस्परिक सादृश्यता के कारण प्रायः ग्रन्थोंमें संज्ञा निर्णय में भूल किया गया है । इनकी विस्तृत व्याख्या के लिए यथा स्थान देखो । इसको बादियान रूमी इसलिए कहा जाता है कि इसकी शकल बादियान (सौंफ)एवं जीरा के सर्वथा समान होती है ।

इतिहास—अनीसून अति प्राचीन औषधियों में से है। अतएव सावफ़रिस्तुस (Theophrastus) और दीसक़ुरादूस (Dioscorides) आदि यूनानी तथा प्लाइनी (Pliny) प्रभृति रूमी चिकित्सकों ने भी इसका उल्लेख किया है। पर, ऐसा ज्ञात होता है कि प्राचीन हिन्दुओं को इस औषधि का ज्ञान नहीं था; क्योंकि आयुर्वेदीय ग्रंथों में इसका उल्लेख नहीं पाया जाता है। अनुमान किया जाता है कि मुसलमान आक्रमणकारी इसे फ़ारस से अपने साथ लाए जहाँ से कि अब भी यह बम्बई के बाज़ारों में लाया जाता है।

वानस्पतिक वर्णन—इसका पौधा लगभग १ गज़ ऊँचा होता है। शाखाएँ घनाकार पतली होती है। पत्र एला-पत्रवत् किंतु छोटे एवं सुगंधियुक्त होते है। प्रत्येक शाखाके सिरे पर श्वेताभ पुष्प होते हैं, जिनके भीतर कोषावृत्त जीरा के समान छोटे छोटे बीज होते हैं। अनीसूँ के फल का आकार एक सा नहीं होता। उत्तम भूमि में होने वाला २ से $\frac{२}{१०}$ इं० लंबा होता है। सामान्यतः ये $\frac{१}{४}$ इं० लंबे और $\frac{१}{१२}$ इं० चौड़े होते हैं। ये किसी प्रकार गोल, अंडाकार, किनारों पर से दबे हुए, लोमश, ख़ाकी या भूरे रंग के और दो भागों में विभक्त होते हैं। इनके संधिस्थल पर एक छोटी सी डंडी होती है। प्रत्येक फल पर दस उभरी हुई रेखाएँ होती हैं। ये सौंफ से छोटे और रंग में उनकी अपेक्षा हरित एवम् श्यामाभायुक्त पीतवर्ण के होते है। इनकी गंध अत्यन्त प्रिय होती है। शुष्क बीजों को कूटने और फटकने पर इनके कोष भूसीकी तरह पृथक् हो जाते है। इनमें सर्वोत्तम प्रकार वह हैं जो आकारमें अपेक्षाकृत वृहत् एवं तीव्र सुगंधिमय हों और जिनके ऊपर से भूसीके समान छिलका न उतरे। क्योंकि इनका प्रभाव अधिकतया इनके कोष में ही है। स्वाद-सुगंधियुक्त, अत्यन्त प्रिय एवं मधुर।

परीक्षा—यद्यपि अनीसून के बीज, शतपुष्प (Dill), विलायती जीरा (कराविया), सौंफ (Fennel) और शूकरान (Conium) के समान होते हैं। तोभी, अपने विशेष रूक्ष-लिक लक्षणों द्वारा पहिचाने जा सकते है।

रासायनिक संगठन—फल में ? से ? प्रतिशत उड़नशील तैल होता है जिसको अनीसू का तैल कहते हैं। इसमें एनीथोल (अनीस सत्व) या एनिस कैम्फर (Anise camphor) ८० प्रतिशत, एनिस एल्डीहाइड (Aniso aldehyde) तथा मीथिल-कैविकोल (Methyl chavicol) होते हैं।

प्रयोगांश—औषध तुल्य इसके बीज (फल) ही अधिकतर व्यवहार में आते हैं।

—और वातानु

यद्विपह् के लेखक के मतानुसार यह ? कक्षा में उष्ण और तीसरी कक्षा में रूक्ष है।

प्रतिनिधि—सोया, आमाशय के लिए और और कामोद्दीपन हेतु तुख़्मअञ्जुरह्। ...नि... तथा दर्पघ्न-यकृत को हानिकर है और ... स्सूस (मुलेठी के सत) से उसका सुधार होता है। उष्ण प्रकृति वालों में शिरःशूल उत्पन्न करता है और सिकञ्जबीन से वह दूर होता है।

मात्रा—१॥ मा० से ६ मा० तक। शर्बत की मात्रा ७ मा० से १ मा० है।

औषध-निर्माण—युनानी चिकित्सा में इसके हर प्रकार के मिश्रण, यथा क्वाथ, अर्क, तैल घनसत्व (रूब्ब), नख़ूजून, शर्बत, चूर्ण, ... लेपन, हुमूल (पिचुक्रिया) और धूनी (धूपन) प्रभृति व्यवहार में आती हैं। इनमें से कतिपय मिश्रण निम्न प्रकार हैं—

(१) अनीसून का मिश्रित क्वाथ—द्रव्य अनीसून, हुल्बह (मेथिका), लोबिया सुर्ख़ प्रत्येक १४ मा०, सुदाब १०॥ मा०। निर्माण-विधि—सबको तीनपाव पानी में क्वाथ करें। जब एक पाव रह जाए तब उतार कर साफ करें। सेवन-विधि—थोड़ा गुड़ मिलाकर सेवन करें। गुण—आर्त्तवप्रवर्तक और अवरोध उद्घाटक है।

(२) अर्क़ अनीसून—२० तो० अनीसून जौकुट करके १ सेर जलमें भिगो दें। चौबीस घंटे पश्चात् यथाविधि अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ से ४ तो० तक दिनमें २ या तीन बार सेवन करें। गुण-बालकों के लिए विशेष कर लाभप्रद है। आमाशय, यकृत तथा आंत्र के वायुजन्य रोगों के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

(३) अनीसून का मिश्रित तैल- अनीसून २ तो०, अकरकरा १ तो०, शिगूफ़ा इज़खिर १ तो०, दारचीनी १ तो०, ऊद सलीब ६ मा० और कुचिला ३ मा०।

निर्माण-विधि—संपूर्ण द्रव्यों को १० तो० तिल तैलमें जला कर साफ़ करलें और यथाविधि मालिश करें।

गुण—पक्षाघात, शैथिल्य, अवसन्नता एवं वातविक विकार के लिए लाभदायक है।

(४) अनीसून का मिश्रित चूर्ण—अनीसून २ तो०, अजवायन २ तो०, सोआ २ तो०, काला नमक २ तो०, और नौसादर ४ मा०।

निर्माण-विधि—सब औषधियों को कूट छानकर चूर्ण बनाएँ।

मात्रा व सेवन-विधि—इसमें से ३ मा० चूर्ण दिन में २ बार सेवन करें।

गुण—आमाशय, यकृत, आंत्र और जरायु के वायुजन्य वेदनाओं में लाभप्रद है। मूत्र प्रवृत्ति एवं आर्त्तव की प्रवृत्ति करता है।

(५) शर्बत अनीसून (मिश्रित)—अनीसून १२ मा०, अफ़्सन्तीन १०॥ मा०, तुख्म करफ़्स १०॥ मा०, तज ७ मा०, गुलाब २१ मा० और बालछड़ २४॥ मा०।

निर्माण-विधि—सबको अधकुट करके १ सेर पानी में क्वथित करें। जब आधा रह जाए, मल छानकर तीनपाव मिश्री मिलाकर शर्बत की चाशनी करें। शीतल होने पर ७ मा० मस्तगी, रूमी बारीक पीस कर ऊपर छिड़क कर सेवन करें।

मात्रा-१॥ तो० से २ तो० तक।

गुण—आमाशय नैर्बल्य में लाभप्रद है। आमाशय, आध्मान एवं शूल को दूर करता है। प्लीहा एवं यकृत के रोध का उद्‌घाटक है तथा पेशाब जारी कराता है।

एलोपैथिक चिकित्सा में यह निम्न रूपों में प्रयुक्त होता है।

ऑफ़िशल योग

(*Official preparations.*)

(१) एनिसाई फ़्रक्टस (Anisi Fructus) –ले०। एनिस फ़्रूट (Aniso Fruit) –इं०। अनीसून के बीज।

(२) एक्वा एनिसाई (Aqua anisi) –ले०। एनिस वाटर (Aniso water) –इं०। अर्क अनीसून, अर्क बादियान रूमी।

निर्माण-विधि—एनिसफ़्रूट (अनीसून के बीज) १ पौंड, पानी २ गैलन, अनीसून को कुचल कर और पानी में भिगोकर एक गैलन (८ पाइंट) अर्क़ खींचें। मात्रा-आधा से २ फ़्लुइड आउंस =(१४.२ से ५६.८ सी० मी०) एक वर्ष के बालक को १ से २ ड्राम।

(३) ऑलियम् एनिसाई (Oleum anisi)–ले०। ऑइल ऑफ़ एनिस (Oil of aniso)–इं०। अनीसून तैल–हिं०। ज़ैत अनीसून–अ०। रोग़न अनीसून–फ़ा०।

यह एक उड़नशील तैल है जो एनिस फ़्रूट (अनीसून) से अथवा स्टार एनिस (अनीसून रूमी, बादियान ख़ताई) से प्रस्तुत किया जाता है। (यह दोनों ऑफ़िशल हैं)।

लक्षण—यह एक वर्ण रहित या किञ्चित् पीत वर्ण का तैल है जिसका स्वाद एवम् गंध अनीसून के समान होती है।

आपेक्षिक गुरुत्व .९७७ से .९८३ तक। १००° से १२०° शतांशके ताप पर इसके रवे बँध जाते हैं।

रासायनिक संगठन-इसमें (१) ७५ प्रतिशत एनीथोल (अनीसून सत्व), (२) एनिसिक एल्डिहाइड और (३) मीथिल केविकोल होता है।

प्रभाव—आक्षेपहर और वायुनिस्सारक।

मात्रा—आधा से ३ बुंद (·०३ से ·२ घन शतांशमीटर)।

यह टिंक्चूरा कैम्फोरी कम्पॉजिटा, टिंक्चूरा ओपियाई एमोनिएटा और निम्नोल्लिखित मिश्रणों में पड़ता है।

(४) स्पिरिटस एनिसाई (Spiritus anisi)-ले०। स्पिरिट ऑफ़ एनिस (Spirit of anise)-इं०। रूह अनीसूँ, रूह बादियान रूमी।

निर्माण-विधि—ऑइल ऑफ एनिस १ भाग, ऐलकोहल (९० %) ९ भाग दोनों को मिला लें। यदि निर्मल न हो तो विचूर्णित अभ्रक मिलाकर हिलाने के बाद छान लें।

प्रभाव—आक्षेपहर और वायुनिस्सारक।

मात्रा—५ से २० बुंद=(·३ से १·२ घन शतांशमीटर)। एक वर्ष के बालक को ५ बुंद।

नॉट ऑफ़िशल योग

(Not Official Preparations)

(१) एलिक्सिर एनिसाई (Elixir Anisi)-ले०। एनिसीड कॉर्डियल (Aniseed Cordial)-इं०। अक्सीर अनीसून, मुफ़रिंह अनीसून।

निर्माण-विधि—एनिथोल ३५ भाग, ऑइल ऑफ फेनेल ०५ भाग, स्पिरिट ऑफ़ बिटर आमंड १·२५ भाग, एलकोहल (९०%) २४ भाग, सिरप ६२·५ भाग, मैग्नेशियम कार्बोनेट १·५ भाग, डिस्टिल्ड वाटर आवश्यकतानुसार या इतना जितने में सारी औषध पूरी १०० भाग हो जाए।

मात्रा—मध्यम मात्रा बालकों के लिए १२ बुंद=(१ घन शतांश मीटर)।

(२) एसेंशिया एनिसाई (Essentia Anisi)-ले०। एसेन्स ऑफ़ एनिस (Essence of Anise)-इं०। रूह अनीसून, रूह बादियान रूमी।

निर्माण-विधि—ऑइल ऑफ़ एनिस १ भाग, रेक्टिफ़ाइड स्पिरिट ४ [...] लें। (ब्रि० फा० सन् १८८५ ई० [...]

नोट—उपर्युक्त स्पिरिट [...] इस एसेंस की शक्ति लगभग द्विगुण है।

(३) एनिसिक एसिड (A[...] Acid)-अनीसूनाम्ल, अनीसून की [...] हम्ज़ुल् अनीसून, तेज़ाब बादियान रूमी [...]

अनीसून के तैल या सत्व को [...] (उप्सिद) करने से यह अम्ल प्राप्त [...] इसके चमकदार, वर्णरहित एवं सूचिका[...]रवें होते हैं।

(४) सोडियम-एनिसेट (S[...] Anesate)-यह एक रवादार [...] सुगन्धिमय चूर्ण होता है जो [...] एनिसिक एसिड में मिलाने से बनता [...]

घुलनशीलता—यह एक भाग [...] में और एक भाग २४ भाग ऐलकोहल में विलेय होता है।

नोट—कहते हैं कि एनिसिक ए[...] सूनाम्ल) और सोडियम एनिसेट [...] एसिड के समान पचननिवारक [...] प्रभाव रखते हैं।

एनीथोल (Anethol)

अर्थात्

अनीसून का सत्व

एनीथोल (Anethol)-ले[...] कैम्फर (Aniso Campho[...] अनीसून सत्व, अनीसून कपूर [...] अनीसून काफ़ूर, अनीसून [...] अर्थात् वालेटाइल या उड़नशील तैल [...] है। यह अनीसून तैल तथा बादिया[...] दो तैलों से प्राप्त होता है।

नोट—वॉलेटाइल ऑइल अर्थात् [...] में जो जम आने वाली वस्तु [...] डाक्टरी परिभाषा में स्टियरॉप्टीन [...] का सामान्य उदाहरण कपूर है। [...] सून सत्व को भी अंगरेज़ी में एनि[...] अर्थात् अनीसून का कपूर कहते हैं।

लक्षण—एनीथोल की श्वेत रवेदार डलियाँ ती हैं जिनसे अनीसून की तीव्र सुगन्धि आती । स्वाद—किञ्चिन्मधुर । यह ६८° फारन-हट के उत्ताप पर पिघल जाता है । द्रव रूप में वर्णरहित होता है और इसमें से सूर्यरश्मि भूत होकर गुज़रती हैं ।

विलेयता—यह एक भाग लगभग ३ भाग अलकोहल (९०%) में विलेय होता है ।

मात्रा—१ से २ बुंद=(·०६ से ·१२ घन टीमीटर) ।

अनीसून के प्रभाव तथा उपयोग

यूनानी मतानुसार—(१) यह वृक्क, तन, जरायु एवं प्लीहा व यकृत के अवरोधों का दक है । क्योंकि यह चरपरा और तेज़ है र इसका कर्म रोधोद्घाटन है । (२) अपने शोधक, विलायक और उत्तापजनक प्रभाव के रण यह वायुनिस्सारक है, विशेषकर जब यह ना हुआ हो । क्योंकि भूनने से इसकी आर्द्रता र हो जाती है एवं इसकी तीक्ष्णता बढ़ जाती । (३) मुख तथा हस्तपाद के मंदशोथ के ए लाभदायक है । क्योंकि यह प्रवर्तनकर्ता और अवरोधउद्घाटन एवं किञ्चित् संकोच था यकृत को शक्ति प्रदान करता है । (४) व में लगाने से पुरातन सबल रोग को लाभ-यक है । क्योंकि यह उसके माद्दा को लय करता । (५) शिरः शूल होना तथा सिर चकराता , ऐसी दशा में इसका नस्य एवं धूपन (धूनी) त्यन्त गुणदायक है । क्योंकि यह उसके माद्दों लय करता है ।

(६) यदि इसको गुल रोग़न में खरल करके न में डालें तो अपने थोड़े संकोच के कारण कर या चोट के द्वारा उत्पन्न हुए कर्ण क्षतको रक्षा करता है और विलायक शक्ति से कर्ण-शूल को दूर करता है ।

(७) रोध उद्घाटन तथा उष्मा बाहुल्य मूत्र, आर्तव और जरायुस्थ आर्द्रता का रेचक ।

(८) श्लेष्मज तृषा को प्रशमन करता है । क्योंकि यह श्लेष्मा को पिघलाता एवं लय करता है ।

(९) स्तन्यजनक एवं शुक्रवर्द्धक है । क्योंकि आहारीय पथों को मुक्त तथा स्तन की ओर उद्घाटित कर देता है ।

(१०) विषदोषघ्न है । क्योंकि मूत्र तथा आर्तव के प्रवर्त्तन द्वारा स्रोतों को विष से शुद्ध कर देता है ।

(११) प्रायः यह उदरीय विष्टंभ उत्पन्न कर देता है । क्योंकि यह रूक्षताजनक एवं प्रवर्तक है और आहार को अवयवों की ओर प्रविष्ट करा देता है जिससे आंत्र में रूक्षता उत्पन्न हो जाती एवं क़ब्ज़ हो जाता है । (नफ़ी०)

नव्यमत—एलोपैथिक मेटिरिया मेडिका-(एनिथम तथा एनिसम), डिल (सोया, शत-पुष्प), एनिस (अनीसून), कोरिएण्डर (धा-न्यक), फेनेल (सौंफ मधुरिका) और कारवी अर्थात् करावे (Caraway) प्रभाव में समान हैं । ये सशक्त पचननि-वारक हैं । अधिक मात्रा में ये सार्वांगीय उत्तेजक हैं तथा विरेचक औषधों के ऐंठन के निवारणार्थ वायुनिस्सारक रूप से और बालकों के उदरशूल एवं आध्मानजन्य पीड़ा के लिए इनका व्यवहार किया जाता है । इस हेतु अनी-सून अधिकतर उपयोग में आता है । सम्भवतः इन अन्तिम दशाओं में ये परावर्त्तित क्रिया द्वारा आक्षेपहर प्रभाव करते हैं । थोड़ी मात्रा में इनसे आमाशयिक रस का और सम्भवतः अग्न्याशयिक रस का भी स्राव बढ़ जाता है । श्वास द्वारा निःसरित होते समय श्वासोच्छ्वास सम्बन्धी कलाओं को उत्तेजित कर इन सबका निर्बल कफघ्न (श्लेष्मानिस्सारक) प्रभाव होता है । पूर्ण (वयस्क) मात्रा में इनमें मन्द निद्राजनक शक्ति है । किन्तु, यदि इनको अन्तः-क्षेप द्वारा सीधे रुधिराभिसरण में पहुँचाया जाए तो इनका सशक्त हृदयावसादक प्रभाव होता है । (सर वि० हिटला)

डॉ० के० एम० नदकारणी—फल जिनसे अनीसून के बीज तैयार किए जाते हैं, अजीर्ण रोग की एक विश्वस्त औषध है। अनीसून के फल व तैल की सुगंधि, दीपन पाचन और वायुनिस्सारक प्रभाव का बड़ा आदर किया जाता है। सब उड़नशील तैलों के सदृश इसका तैल उत्तेजक एवं कफघ्न है। आध्मान जनित उदरशूल में उदर तथा शिरोशूल की अवस्था में सिर में इसके तेल का स्थानिक प्रयोग होता है। इसके बीज सुपारी के साथ चबाए जाते हैं और इसकी चटनी आहार में काम आती है। आन्त्र-विकार एवं वायुप्रणालीय प्रतिश्याय में भी, विशेषकर बालकों में, जब कि उग्रावस्था व्यतीत हो चुकी हो, उस समय यह उपयोगी होता है। अनीसून के बीज ½ ड्राम, शर्करा तथा हरीतकी प्रत्येक १–१ ड्राम। इनका चूर्ण उत्तम कोष्ठमृदुकर (Laxative) है। अनीसून के बीज और करावियां (Caraway) को समभाग ले भूनकर चाय की चम्मच भर की मात्रा में भोजनोपरांत सेवन करें। यह उत्तम पाचक है। चूर्ण किए हुए बीज की मात्रा—१० से ३० ग्रेन (५–१५ रत्ती) है। शीतकषाय एवं परिस्रुत जल (८० में १) की मात्रा—१ से २ आउंस (½ से १ छ०)। तैल की मात्रा—५ से २० बुंद शर्करा पर डालकर दें। (इं० मे० मे०)

अनु anu–उप० [सं०] जिस शब्द के पहिले यह उपसर्ग लगता है उसमें इन अर्थों का संयोग होता है। (१) पीछे। जैसे, अनुगामी, अनुकरण। (२) सदृश। जैसे, अनुकाल, अनुकूल, अनुरूप, अनुगुण। (३) साथ। जैसे, अनुकंपा, अनुग्रह, अनुपान। (४) प्रत्येक। जैसे, अनुक्षण, अनुदिन। (५) बारंबार। जैसे, अनुगुणन, अनुशीलन। संज्ञा पुं० दे० अणु। इसके विपरीत "अभि" आता है।

अनुकः anukah–सं० पुं०
अनुक anuka–हिं० संज्ञा पुं० (Cupidinous, Lustful) कामुक, कामातुर, कामी, विषयी। अ०।

अनुकदली anukadali–सं० पुं० शेप, केला। सोलचक्रोकेल मह०। AP... tain tree.

अनुकम्पा anukampá–हिं० स्त्री० (T... orne [illegible]

अनुकर्षम् [illegible]
कान के [illegible]

[illegible]

अनुकर्षणम् anukarshanam–सं० ...
अनुकर्षण anukarshana–हिं० संज्ञा पुं० (१) पानपात्र। (a glass, a drinking vessel) हारा०। (२) अनुकर्म, ... खिंचाव।

अनुकल्पः anukalpah–सं० पुं० ... पथ के अभाव में उक्त औषध के गुण ... अन्य औषध का ग्रहण। प्रतिनिधि ... (an alternative)–इं०।

अनुकूट प्रवर्द्धन anukúta-pravardhana–हिं० संज्ञा पुं०, (Jugular process).

अनुकूल anukúla–हिं० वि० साम्य, ... (Favourable).

अनुकूलका anukúlaká–सं० स्त्री० ... क्षुद्रदन्ती, जमालगोटा भेद। वै० नि० ... (Croton Tiglium, *Linn.* (small var.)

अनुकूलन anukúlana–हिं०
अनुकूलना anukúlaná–हिं० क्रि० ... (१) (Accomodation) ... मुआफ़िक होना। (२) पक्ष में होना। ... होना।

अनुकूल सन्धिः anukúla sandhih–सं० ... अल्पसन्धिः (Amphiarthrosis, ... ding joint.)

अनुकूला anukúlá–सं० स्त्री० ... दन्ती वृक्ष, क्षुद्र दन्ती। रा० नि० व० ...

[अनु]कुलिनी anukúlini-सं० स्त्री० क्षुद्रदन्ती। Croton Tiglium, *Linn.* (A small var. of-).

[अनु]कंपा anukampá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अनुकंपित] सहानुभूति।

[अनु]क्त anukta-सं०, हिं० वि० जिसका वर्णन न किया गया हो। जो न कहा गया हो। (Not Spoken, not told).

[अनु]क्त द्रव anukt-adrava-हिं० वि० निद्रव, जहाँ स्वरसादि पतले पदार्थोंका वर्णन न आया हो।

[अनु]क्त-परिमाण anukta-parimáṇa—सं० त्रि०, हिं० वि० जहाँ द्रव्यों का परिमाण (मान) न दिया गया हो।

[अनु]क्रम anukrama-सं० पुं० विधान, कायदा। (method, order).

[अनु]खाल anukhála-हिं० पुं० खाई, खाड़ी, नाला। (A creek).

[अनु]गः anugah-सं० पुं० } परिचारक, सेवक। (An attendant.) रक्षक। –हिं० वि० (following.) पश्चाद्गामी, पीछे चलने वाला, अनुगामी, अनुयायी, पैरोकार।
[अनु]ग anuga-हिं० संज्ञा पुं० }

[अनु]गत anugata-सं० पुं०, –हिं० वि० [संज्ञा अनुगति] (१) पीछे पीछे चलने वाला, आश्रित, अनुगामी, अनुयायी (Dependant on)। (२) अनुकूल। मुआफ़िक।–हिं० संज्ञा पुं० सेवक, अनुचर।

अनुगमन anugamana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पीछे चलना। अनुसरण। (२) समान आचरण। (३) सहवास। संभोग।

अनुगामी anugámi-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अनुगामिनी] (१) पीछे चलने वाला, पश्चाद्वर्ती (Followrig)। (२) समान आचरण करने वाला। (३) सहवास या सम्भोग करने वाला।

अनुघात anugháta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] नाश। संहार।

अनुचिबुक anuchibuka-हिं० संज्ञा पुं० ठोड़ी या ठुड्डी के नीचे का भाग।

अनुच्छ्वासः anuchchhvásah-सं० पुं० श्वासरोध, साँस बन्द होना, दम बन्द होना, दम घुटना। इख़्तिनाक़-अ०। (Asphyxia)

अनुज anuja-हिं० वि० [सं०] जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। –संज्ञा पुं० [स्त्री० अनुजा] (१) छोटा भाई। (२) एक पौधा। स्थलपद्म।

अनुजम् anujam-सं० स्त्री० (Root stock of Nymphæa lotus.) प्रपौण्डरीक (कमल नाल) नामक गंध द्रव्य विशेष। पुण्डरिया-म०। रा० नि० व० १२।

अनुजस् anujas सं० पुं० पुण्डरिया, कमलनाल। (The root stalk of Nymphæa lotus.)

अनुजा anujá-सं० स्त्री० त्रायमाणलता। गोक्षोशालियालता-बं०। रा० नि० व० ५। बलाडुमुर-बं०। भा० पू० १ भा० गु० व०। Thalictrum Fliosam। देखो—त्रायमाणा।

अनुजात anujáta-सं० पुं० वह सन्तान जो पिता के गुण रखती हो। अथर्व०। सू० ६। का० ८।

अनुजिघ्रम् anujighram-सं० गंध लेकर। अथर्व०।

अनुजंघास्थि anujanghásthi-हिं० संज्ञा स्त्री० टाँग या जंघा की दोनों लम्बी अस्थियों में से वह जो अंगुष्ठ (शरीर की मध्यरेखा के निकट) की ओर रहती है। फ़िबुला Fibula इं०।

अनुज्ज्वल मण्डल anujjvala-maṇḍala (Non-Luminous Zone) ज्वाला के मण्डलों में से वह जो उसके उज्ज्वल मण्डल के सर्वतः बाहर स्थित है। इसमें ओषजन के आधिक्य के कारण कज्जल कणों का ज्वलन सम्यक् रीतिसे होता रहता है। एतदर्थ इसमें उज्ज्वलता की न्यूनता होती है, परन्तु ताप मय से अधिक होता है। देखो—ज्वाला।

अनुतक्रम् anutakram-सं० क्ली० तक्रानुपान। "जग्ध्वा तक्रं पिबेदनु।" सि० यो० पाण्डु चि० वृन्दः।

अनुतन्त्री anutantri-सं० स्त्री० पिंगला नाड़ी। (Sympathetic nerve)

अनुतन्त्री पद्धतिः anutantri-paddhatih-सं० स्त्री० पिंगल नाड़ी मंडल। (Sympathetic system)

अनुतप्त anutapta-हिं० वि० [सं०] (१) तपा हुआ। गर्म।

अनुतर्षः anutarshah-सं० पुं० (१) तृष्णा (Thirst)। (२) मद्य पीनेका पात्र, सुरापान पात्र। मेद०। मे० ष चतुष्कं।

अनुताप anutápa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुतप्त] तपन। दाह। जलन।

अनुतापिकाण्ड anutápikánda-सं० पुं० पिंगल कांड। (Sympathetic trunk)

अनुतापिनीपद्धतिः anutápini-paddhatih-सं० स्त्री० पिंगल मंडल। (Sympathetic system).

अनुत्क्लेशः anut-kleshah-सं० पुं० उत्क्लेशाभाव, वमनावरोध। च० सं० विसूचि०।

अनुत्थित विद्धा "शिरा" anutthita-viddhá "shirá"-सं० स्त्री० ठीक पट्टी न बाँधने के कारण जिसकी शिरा न उठी हुई हो वह वेधित की हुई। इससे रुधिर नहीं निकलता। सु० शा० ८ अ०।

अनुत्रिकास्थि anutrikásthi-हिं० स्त्री० पुच्छास्थि, गुदास्थि, चञ्चु अस्थि। उस उस, अलउम उम, अज़ मुलउस उ स-अ० दुमग़ाह, उस्तख़्वाने दुम-फ़ा०। दुमची की हड्डी-उ०। त्रिकास्थि के नीचे रहने वाली एक छोटी सी अस्थि जो वस्तुतः चार छोटी छोटी अस्थियों के जुड़ने से बनी है। इस अस्थि में न कोई छिद्र होता है न कोई नली। इसका स्वरूप कोकिल चञ्चुवत होता है। इसलिए अँगरेजी में इसको कॉक्सिक्स (Coccyx) कहते हैं।

अनुदर anudara-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अनुदरा] कृशोदर। दुबला पतला।

अनुद्धत anuddhata-हिं० वि० [सं०] जो उद्धत न हो। अनुग्र। सौम्य। शांत।

अनुद्भूत ताप anudbhúta tápa लेटेण्ट हीट ऑफ़ वेपराइज़ेशन (Latent heat of vaporisation) जो किसी तरल द्रव्य [illegible] रूप में परिणत करने में [illegible] किन्तु, जिसका कोई प्रत्यक्ष फल विदित [illegible] उस द्रव्यको वाष्पीय "अनुद्भूत ताप" कहते [illegible] उदाहरण-यदि आप एक बर्तनमें जल गर्म करना आरम्भ करें तो जैसा आप [illegible] है, उसका तापक्रम बढ़ने लगेगा [illegible] बढ़ते बढ़ते 100° सें० तक पहुँचेगा। उस [illegible] जल उबलने लगेगा। परन्तु उस समय एक [illegible] विलक्षण बात देखने में आती है। जल के तापक्रम का बढ़ना बन्द हो जाता है, आप चाहे [illegible] दुगुनी या तिगुनी कर दें परन्तु तापक्रम [illegible] 100° पर ठहरा रहेगा और जब तक सारा [illegible] भाप में परिणत न हो जाएगा वहीं ठहरा [illegible] परन्तु आप जो ताप देते जा रहे हैं वह कहाँ चला गया? इसका यही उत्तर हो सकता है कि वह किसी अप्रगट रीति से जल को [illegible] भाप बनाने में व्यय हो रहा है। इसे "अनुद्भूत ताप" कहते हैं। भौ० वि०।

अनुद्वाह anudváha-हिं० पुं० अविवाह, [illegible] (Virginity)।

अनुधावन anudhávana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुधावक, अनुधावित, [illegible] धावी] (१) पीछे चलना, अनुसरण, (२) अनुसन्धान। खोज।

अनुनाद anunáda-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनुनादित] प्रतिध्वनि, गूँज, गुंजार।

अनुनादित anunádita-हिं० वि० [सं०] प्रतिध्वनित। जिसका अनुनाद या गूँज हो। (?) [illegible]

अनुन्मदितः anunmaditah-सं० पुं०

अनुन्मदितम् anunmaditam-सं० क्ली० उन्माद रहित। अथर्व०। सू० १११। १। का० ६। अथर्व०। सू० १११। १। का० ६।

[अनु]पकार anupakára–हिं० संज्ञा पुं० [सं० [अनुपकार] वि० अनुपकारक, अनुपकारी] अपकार, हानि ।

[अनुप]कारी anupakári–हिं० वि० [सं०] (१) उपकार न करने वाला । अपकार करने वाला । हानि करने वाला । (२) फजूल, निकम्मा

[अनुप]जः anupajah–सं० त्रि० अनुप देश में [उत्]पन्न हुआ । देखो–अनूपवर्गः (Anúpa-vargah) ।

[अनुप]दीना anupadíná–सं० स्त्री० उपानह, जूता, खड़ाऊँ इत्यादि । हला० ।

[अनुप]ल anupal–हिं० पुं० सेकेण्ड काल-मान विशेष । (A second of time).

[अनुप]शयः anupashayah सं० पुं०
[अनुप]शय anupashaya–हिं० संज्ञा पुं०
(What increases the disease)
(१) उपशय के विपरीत, व्याध्यसात्म्य औषधाहार-विहार आदि अर्थात् वह औषध, अन्न तथा विहार जो रोगी के रोग के ख़िलाफ़, हानिकारक अथवा असात्म्य (अर्थात् जो उसके अनुकूल न हो) हो उसे अनुपशय कहते हैं ।
(२) रोग-ज्ञान के पाँच विधानों में से एक जिसमें आहार विहार के बुरे फल को देख यह निश्चय किया जाता है कि रोगी को अमुक रोग है । मा० नि० । दे० उपशय ।

[अनु]पात anupáta–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Ratio) सम, बराबर का सम्बन्ध, गणित की त्रैराशिक क्रिया । तीन दी हुई संख्याओं के द्वारा चौथी को जानना ।

[अनु]पानम् anupánam–सं० क्लीo
[अनु]पान anupána–हिं० संज्ञा पुं० } रा० नि० व० २० । अनुपान का प्राथमिक अर्थ वह तरल या जो औषध सेवनोपरान्त व्यवहार में लाया जाता है । परन्तु, बहुत काल से [illegible] उस द्रव पदार्थ के अर्थ में प्रयुक्त होने [illegible] जिसके साथ औषध सेवन की जाती है । [illegible] शब्दों में इससे वह द्रव अभिप्रेत है [illegible] गई हुई औषध को पथप्रदर्शक का काम देता है ।

वह वस्तु जिसके साथ औषध खाई जाए । वह वस्तु जो औषध के साथ या ऊपर से खाई जाए । औषधांगपेय विशेष ।

बद्रिक़ह, मुबद्रिक़-अ० । पेशदारू-फ़ा० । विहिकल Vehicle–इं० ।

नोट—यह बात सिद्ध है कि यदि किसी तरल वस्तुके साथ औषध सेवनकी जाए तो इसका शीघ्र प्रभाव होता और वह औषध को शरीर में उसके अभीष्ट प्रदेश तक प्रविष्ट करानेमें सहायक होती। यही कारण है कि प्रायः सभी औषधें किसी न किसी तरलके साथ सेवनकी जाती हैं । वह वस्तु जो अनुपान रूपसे व्यवहारमें लाई जाए, [illegible] उसका भी प्रभाव औषध [illegible] होना चाहिए । कतिपय रोगों के प्रशस्त अनुपान [illegible]—

वात रोग—स्निग्ध तथा [illegible] ।
श्लेष्म व्याधि—रूक्ष तथा [illegible],
पित्त रोग—[illegible] ।
स्नेहपान में—[illegible]
च० ११ ।

चूर्ण, अवलेह, [illegible] की मात्रा [illegible]
३, २ तथा १ [illegible]

[illegible]

[illegible] और

[illegible] संज्ञा

[illegible] (१) [illegible] हो।

नागरमोथा, कुटज बीज (इन्द्रयव), पाठा (अम्बष्ठा) मूल, आम्र बीज, दाडिम्ब (अनार) मूल वा फल त्वक्, धवपुष्प और कुटज (वृक्ष) त्वक्।

यक्ष्मा, कफज श्वास, प्रतिश्याय और तत्सम अन्य रोग—वासक अर्थात् अड़ूसे के पत्तेका रस, तुलसी पत्र स्वरस, पान का रस, आर्द्रक स्वरस, अड़ूसे की छाल का क्वाथ, वासुनहाड़ी, मुलेठी, कण्टकारी, कट्फल और कुष्ठ इनमें से किसी का क्वाथ; वचाबीज चूर्ण, तालीसपत्र, पिप्पली (पीपल), काकड़ासिंगी और वंशलोचन इनमें से किसी एक का चूर्ण।

वातप्राधान्य श्वास—बहेड़े का क्वाथ अथवा चूर्ण मधु के साथ।

रक्तातीसार तथा रक्तपित्त—अड़ूसे के पत्तों का रस, अपामार्ग-पत्र स्वरस, दाडिम्ब (अनार) पत्र स्वरस और कुलहला पत्र स्वरस; गूलर का फल, कुटज वृक्ष की छाल और दूर्वा का रस, बकरी का दूध और मोचरस का चूर्ण।

शोथ रोग—बिल्व पत्र स्वरस, श्वेतापामार्ग का क्वाथ अथवा स्वरस, शुष्क मूली का क्वाथ और कालीमरिच का चूर्ण तथा अर्क मको या मको स्वरस।

पाण्डु या रक्ताल्पता और स्त्रियोंके हारिद्र रोग—पित्तपापड़ा स्वरस और गिलोय का रस।

विरेचन योगों में—निशोथ का चूर्ण, दन्ती की जड़ का चूर्ण, सनाय (सोनामुखी) के पत्तों का क्वाथ या चूर्ण, कटुकी का क्वाथ, हरीतकीका शीतकषाय उष्ण जल और उष्ण दुग्ध।

मूत्रोद्घाटन अर्थात् मूत्रप्रवर्त्तक योगों के अनुपान-स्थल पद्म के पत्तों का रस, पाथरकुची के पत्तों का रस, कलमीशोरा का विलयन, कबाबचीनी का चूर्ण और गोक्षुर, कुशमूल, कास मूल, खस की जड़ तथा इक्षुमूल इनका क्वाथ।

बहुमूत्र (मूत्रातीसार)—गूलरके बीज का चूर्ण, जम्बु के बीज का चूर्ण और मोचरस का चूर्ण; तोरई के भूने हुए फल का रस और कन्दूरी (कुन्दरू) की जड़ का रस।

पूयमेह (सूज़ाक)—गिलोय ... कच्ची हल्दी का रस, आमला का रस, शाल्मलीवृक्ष ... स्वरस, दारुहरिद्रा ... मँजीठ और अश्वगंध का क्वाथ, ... का कल्क, बबूल के गोंदका हिम, ... का रस और कसेरू का रस।

श्वेतप्रदर—गिलोय का रस, ... छाल का क्वाथ और ...

रजःप्रवर्त्तक योगों के साथ— ... के पत्तों का रस या ... बाँस की छाल का शीत कषाय, कर्णिकार (... कम्बल) के पत्रका रस, कलिहारी (...) के पत्र का रस और जवापुष्प का रस।

अजीर्ण व अग्निमांद्य—अजवाइन, यमानी और सौंफ का क्वाथ, पीपल, ... कालीमरिच, चव्य, सोंठ और हींग इनका ...

आन्त्रीय कृमिनाशक योगों के साथ— बायविडंग का चूर्ण, अनार की जड़ का ... अनन्नासके पत्तों का रस, तथा खजूर, ... चम्पाके पत्तियोंका रस, ... और निर्गुण्डी ... रस।

छर्दिघ्न योगों में अनुपान—... चूर्ण या क्वाथ।

वायु रोग—त्रिफला का हिम, शतमूली ... रस, बरियरा (बला) का क्वाथ, भूनिम्ब ... का रस और आमला या त्रिफला का फांट।

शुक्रवर्द्धक तथा वृष्य अनुपान—... (मक्खन), मांस रस, दुग्ध, केवाँच के ... बिदारीकन्द, अश्वगन्ध, सेमल के मूसला ... रस और अनन्तमूल का रस।

रोगी और रोग दोनों की दशा का ... विचार कर अनुपान चुनना चाहिए, क्वाथ ... फांट की मात्रा १ छँ० (२ आउंस), ... के निचोड़े हुए रस की मात्रा १ या २ तो० ... चूर्ण की मात्रा १ या आध आना भर ... चाहिए। जब चूर्ण अनुपान रूप से व्यवहार ... लाए जाएँ तब उनको मधु में मिला कर ... पित्तोल्बणता की दशा को छोड़कर शेष

ागों में शब्द को अनुपान रूप से प्रयोग
।

उपर्युक्त अनुपानों को केवल उस दशा में काम जाएँ, जब कि औषध वटिका अथवा चूर्ण में बरती जाए। किन्तु, जब मोदक, गुग्गुल र औषधीय पाक प्रभृति का उपयोग किया ए तब शीतल या उष्ण जल अथवा उष्ण व को अनुपान रूप से व्यवहार में लाया ए। सभी औषधीय चूर्णों में चवन्नी भर शर्करा मिला कर लगभग एक छटाँक कवोष्ण दुग्ध साथ सेवन करें। बहुत से घी बिना शर्करा भी उपयोग में आते हैं।

(२) अष्टांग हृदय से अनुपान का संक्षिप्त वर्णन।

विपरीतं यदन्नस्य गुणैः स्याद् विरोधि च"।
० सू० अ० ६। श्लो० ४१।

खाद्य पदार्थों के विपरीत गुण वाले अविकारी द्रव्यों का अनुपान सदा ही हितकारी है।

जैसे रुक्ष का स्निग्ध, स्निग्ध का रूक्ष, गरम का ठंडा, ठंडे का गरम, खट्टे का मीठा, मीठे का खट्टा इत्यादि ! परन्तु ऐसा विपरीत सम्बन्ध न होना चाहिए। जैसा दूध और खटाई का होता है।

अनुपान का कर्म—अनुपान से उत्साह, तृप्ति शरीर में अन्न रस का संचार, दृढ़ता, अन्न-संघात, शिथिलता, क्लिन्नता और अन्न का परिपाक होता है।

अनुपान के अयोग्य रोग—जत्रु (ग्रीवा और वक्षःस्थल) के ऊपर वाले अंगों में होने वाले रोगों में अनुपान अहित होता है। जैसे— श्वास, खाँसी, उरःक्षत, पीनस, अत्यन्त गाने वा बोलने के सम्बन्ध में वा स्वरभेद में अनुपान हितकारी नहीं है।

अनुपानके अयोग्य रोगी - जिनका शरीर विसर्पादि रोगों से क्लिन्न हो गया हो अथवा जो नेत्र और क्षत रोगों से पीड़ित हों उन्हें पीने के पदार्थ त्याग देने चाहिए। स्वस्थ और अस्वस्थ सभी लोगों को पान और भोजन के पश्चात् अधिक बोलना, मार्ग चलना, नींद लेना धूप में जाना, अग्नि तापना, सवारी पर चढ़ना, पानी में तैरना और घोड़े आदि पर चढ़ना इत्यादि प्रत्येक काम त्याग देना चाहिए। वा० सू० अ०६।

अनुपार्श्व सरित्का anupárshvasaritká-सं० स्त्री० (Collateral Fissure).

अनुपालुः anupáluh-सं० पुं० अनुपदेशज आलू, पानीयालुक, वन आलू। रा० नि० व० ७। See-Páníyáluh.

अनुपुष्पः anupushpah-सं० पुं० (१) शरतृण-सं०। सरपत-हिं०। Pomced grass (Saccharum sara). श० च०। (२) सहतृण। (३) वेतसः। Common cane (Calamus rotong.)

अनुप्त anupta-हिं० वि० [सं०] जो बोया न गया हो। बिना बोया हुआ।

अनुप्रस्थ anuprastha-सं० पुं० (Horizontal, transverse) समस्थ, व्यत्यस्थ, आड़ा, चौड़ाई की रुख। मुस्तअरिज़, अरीज़ -अ०।

अनुप्रस्थ बृहदन्त्रम् anuprastha-vrihad antram-सं० क्ली०
अनुप्रस्थ बृहत् अन्त्र anuprastha-vrihat antra-हिं० संज्ञा स्त्री० (Transverse-colon) बृहद् अन्त्र का समस्थ या आड़ा भाग। बृहद् अन्त्र का वह भाग जो यकृत तक पहुँच कर बाँई ओर को मोड़ खाता है और नाभि प्रदेश में होता हुआ प्लीहा तक पहुँचता है। बृहद् अन्त्र का दूसरा भाग जो व्यत्यस्त या आड़ा (चौड़ाई की रुख) यकृत से प्लीहा की ओर जाता है। कौलून मुस्तअरिज़-अ०।

अनुप्राशन anupráshana- हिं० संज्ञा पुं० [सं०] खाना। भक्षण।

अनुबन्धः anubandhah-सं० पुं० (१) वात, पित्त और कफ में से जो अप्रधान हो।

(२) बंधन। लगाव। (३) अनुसरण। (४) आरम्भ।

अनुबन्धी anubandhí-सं० स्त्री० (१) तृष्णा, प्यास (Thirst)। (२) हिक्का, हिचकी। (Hiccup) मे०। -हिं० वि० [अनुबंधिन्] [स्त्री० अनुबंधिनी] (१) लगाव रखने वाला, संबन्धी। (२) फलस्वरूप, परिणाम स्वरूप।

अनुबोध anubodha-हिं०संज्ञा पु'० गंधोद्दीपन।

अनुभासः anubhásah-सं०पु'० काक विशेष। (A kind of crow) वै० निघ०।

अनुभूत anubhúta-हिं० वि० (Experienced) परीक्षित। सिद्ध। तजरबा किया हुआ। आजमूदा। (२) जिसका अनुभव हुआ हो।

अनुभूत चिकित्सा anubhúta-chikitsá -हिं० वि० परीक्षित इलाज।

अनुभूत योग anubhúta-yoga-हिं० वि० परीक्षित योग।

अनुभूत लाक्षादितैल anubhúta-lákshádi-taila-सं० पु'० एक सेर लाख को चार सेर पानी मे औटाएँ। जब एक सेर जल शेष रहे तब उतार कर छान लें। पुनः इसमें १ सेर शुद्ध तिल तैल डालें, और चार सेर दही का जल डालें। फिर सौंफ, असगन्ध, हल्दी, देवदारु, रेणुका, कुटकी, मुर्वा, कूट, मुलहठी, मोथा, चन्दन, रास्ना प्रत्येक एक एक तोला लें, इन सब का कल्क करके उक्त तैल मे डाल मन्द मन्द अग्नि से पचाएँ, फिर सिद्ध कर रक्खें। इसके मर्दन से विषमज्वर, खुजली, देह का दर्द दुर्गन्धि, तथा अंगों का स्फोटक इत्यादि दूर होते हैं।
(यो० त० ज्वर० चि०)

अनुभूतिः anubhútih-सं०स्त्री० त्रिवृता, त्रिवृत -सं०। निशोत, निसोथ-हिं०। तेउड़ी-बं०। Ipomœa turpethum। दे० त्रिवृत् (ता, इया)।

अनुमतम् anumatam-सं० क्ली० जहाँ पराए मत का निषेध नहीं किया जाए (स्वीकार किया जाए) उसे "अनुमत" कहते हैं, जैसे-[illegible] कहा कि सात रस होते हैं और दूसरे [illegible] मान लिया, यही अनुमत हुआ। सु० [illegible] अ०। सम्मत, स्वीकृति, एक मत।

अनुमति anumati-हिं० स्त्री० अनुज्ञा, [illegible] सम्मति। (An order, advice).

अनुमस्तिष्कम् anumastishkam-[illegible] अणुमस्तिष्कम् (Cerebellum).

अनुमान anumána हिं० पु'० अटकल, [illegible] भावना, क़यास। (Inference, [illegible]

अनुमानी anumání-यु० मद्य और शह[illegible] हुआ (Wine and honey mix[illegible]

अनुमाली anumálí-यु० एक प्रकार [illegible] जिसको अङ्गूरको निचोड़ कर बिना पकाए [illegible] प्रस्तुत करते हैं।

अनुमेसा anumesá-रू० गुले-लाला, [illegible] शक़ायिक़ुन्नुअ्मान-अ०। (Pulsatill[illegible] श्वेता-पल्साटिल्ला।

अनुयवः anuyavah-सं० पु'० (१) [illegible] से न्यून हो उसे "अनुयव" कहते हैं। [illegible] (२) निःशूक यव, शूक रहित य[illegible] रहित जौ। हेमा०। (३) क्षुद्रयव, [illegible] अपेक्षा गुणहीन होता है। वा० सू० [illegible] शूक धान्यवर्ग। (A sort of Barle[illegible]

अनुयोजनम् anuyojanam-सं० क्ली० ([illegible] pposition).

अनुरस anurasa-हिं० संज्ञा पु'० [illegible] गौण रस। अप्रधान रस। वह रस द[illegible] वस्तु में पूर्ण रूप से न हो। वा० सू०।

अनुराधा anurádhá-हिं० स्त्री० २० [illegible] से १७ वाँ नक्षत्र। The 17th Nak[illegible] tra or lunar mansion, de[illegible] ted by a row of oblations ([illegible] ars in Libra).

अनुरुहा anuruhá-सं०स्त्री० नागरमुस्ता[illegible] नागरमोथा-हिं०। (Cyperus p[illegible] rotundus).

ी anurevatí-सं० स्त्री० (Small r. of Croton Tiglium, *Linn.*) दन्ती । रा० नि० व० ६ ।

anurodha-हिं० पुं० अपेक्षा, बाधा, पात, उपरोध । (Obligingness) ।

ः anulásah सं० पुं० } मयूर-
्यः anulásyah-सं० पुं० } पक्षी,
। (A peacock)

anulipta-हिं० वि० (Smeared) , अभिषिक्त, पोता हुआ ।

: anulepah-सं० पुं० } (१)
नम् anulepanam-सं० क्ली० } लेपन, ी तरल वस्तु की तह चढ़ाना । (२) plaster लीपना, पोतना । (३) osmetic) सुगन्धित द्रव्यों वा औषधों का ल । उबटन करना, बटना, जगाना, अंगराग, । (न), चन्दन आदि वा गंधद्रव्य आदि का न । सुदस्मित, गुञ्जह-अ० । हुस्नअफ़्ज़ा, ीयह् । ग़ाज़ह्, उब्टना-फ़ा० ।

इसके गुण—अनुलेपसे तृषा, मूर्च्छा, दुर्गंधि, म और वात दूर होते हैं तथा सौभाग्य, तेज, ा, वर्ण, प्रीति, ओज और बल की वृद्धि होती । मद० व० १३ । अनुलेपन बल्य तथा तेज ि सौभाग्य का देने वाला है । पूर्व आचार्यों ने ि स्वस्थ, प्रीति का देने वाला, तृषा, मूर्च्छा ि श्रम का नाश करने वाला तथा वातनाशक ा है । वै० निघ० । प्रीतिकारक, ओज का े वाला, शुक्रवर्द्धक, दुर्गंधिनाशक तथा श्रम, प और तन्द्रा का नाश करने वाला है । ाज० ।

ोम anuloma-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पर से नीचे की ओर आने का क्रम । सीधा म से, अवरोही, जाति विशेष ।

ोमन anulomana-हिं० संज्ञा पुं० }
ोमनम् anulomanam-सं० क्ली० }
(१) अनुलोमकरण । वह औषध जो मलादि धातुओं को यथा मार्ग प्रवृत्त करे, जो मलादि धातुओं का पाक करके और वात द्वारा हुए मल के बंध को तोड़ फोड़ के यथा मार्ग नीचे ले जाए उसे "अनुलोमन" कहते हैं, जैसे-हरड़ । भा० ।

(२) कोष्ठबद्ध को दूर करने वाली रेचक वा भेदक औषध ।

अनुल्की anulkí-सं० स्त्री० (१) हिक्का, हिचकी (Hiccup, Hiccough) । (२) तृष्णा, तृषा, पिपासा (Thirst) । मे० ।

अनुल्वण anulvaṇa-सं० त्रि० फटा सा न दिखने वाला । यह चन्दन का एक विशेषण है । कौटि० अर्थ० ।

अनुवंधी anuvandhí-सं० स्त्री० प्यास, तृषा । (Thirst).

अनुवासः anuvásah- } सं० पुं०,
अनुवासनः anuvásanah- } क्ली० (१)
अनुवासनकः anuvásanakah } Fragrant सौरभ, सुगंधि, सुवास । (२) स्नेह वस्ति । (Oily enemata) । (३) स्नेहन । (४) धूपन । मे० । जो स्नेह अर्थात् चिकनाई प्रदान करे उसे "अनुवासन" कहते हैं । इसकी मात्रा दो पल का आधा अर्थात् एक पल (४ तो०) है । भा० । दे० अनुवासन वस्तिः ।

अनुवासन वस्तिः anuvásana-vastih-सं० पुं० (Oily enemata) स्नेह वस्ति, मात्रावस्ति । पिचकारी द्वारा गुदा मार्ग (रेक्टम) से तरल पदार्थ अन्दर पहुँचाने का नाम "वस्ति" (पिचकारी देना, एनिमा) है । देखो-वस्ति ।

इस का एक भेद "अनुवासन वस्ति" भी है । यह वस्ति घी तेल आदि स्नैहिक पदार्थों से की जाती है । इसलिये इसे स्नेहवस्ति भी कहते हैं ।

आयुर्वेद शास्त्रमें सोना आदि धातुओं और बाँस, नल, सींग तथा जानवरों की अँतड़ी, अण्डकोष आदि से वस्ति बनानेकी क्रिया लिखी है; परन्तु, आजकल अंग्रेज़ी दवा बेचने वालों के यहाँ जो रबर की नली वाली वस्ति मिलती है, उसी से समस्त प्रकार का वस्ति कर्म सिद्ध हो सकता है ।

बलवान मनुष्यों को वस्ति देने के लिए

६ पल, मध्यम बल वालेको ३ पल, और निर्बल मनुष्य को वस्ति देने के लिए १॥ पल स्नेह लेना चाहिए।

अनुवासन वस्ति का एक भेद मात्रावस्ति भी है, इसमें १ पल से २ पल तक स्नेह लिया जाता है।

अनुवासन वस्ति रूक्ष और वात रोगी के लिए हितकारक है। परन्तु रोगी की जठराग्नि तीव्र हो, तभी यह वस्ति देनी चाहिए। मन्दाग्नि, वाले कुष्ठरोगी, प्रमेही, उदर रोगी और स्थूल शरीर वाले पुरुष को स्नेहवस्ति कदापि न देनी चाहिए।

स्नेह वस्ति वसन्त ऋतु में सायंकाल में और ग्रीष्म, वर्षा तथा शरद ऋतु में रात में देनी चाहिए। पहिले रोगी को विरेचन दें, फिर ६ दिन बाद पूर्ववत् शक्ति आने पर स्नेह वस्ति देनी चाहिए। जिस रोज स्नेह वस्ति देनी हो, उस दिन रोगी के शरीर में तैल मर्दन करके पानी की भाप से पसीना देना चाहिए। और चावलों की पतली पेया आदि शास्त्रोक्त भोजन कराके ज़रा देर टहलना चाहिए, इसके बाद यदि आवश्यकता हो तो मल मूत्रादि त्याग करके यथाविधि वस्ति देनी चाहिए। उस रोज रोगी को अधिक स्निग्ध भोजन देना हानिकारक है।

वस्ति लेने के समय रोगी को छींकना, जँभाई लेना, खाँसना आदि कार्य न करने चाहिए।

स्नेह वस्ति लेने के बाद रोगी को हाथ पैर सीधे फैलाकर लेटे रहना चाहिए। यदि स्नेह वस्ति का स्नेह मल युक्त होकर २४ घंटे के अन्दर स्वमेव बाहर न निकले, तो रोगी को तीक्ष्ण निरूहण वस्ति, तीक्ष्ण फलवर्ति (शाफ़ा), तीक्ष्ण जुलाब और तीक्ष्ण नस्य देनी चाहिए।

वस्ति देने के बाद यदि समस्त स्नेह बाहर आ गया हो और रोगी की जठराग्नि तीव्र हो तो उसे सायंकाल में पुराने चावल का आहार देना चाहिए।

अनुवासनोपयोग anuvásanopayoga-सं० पुं० अनुवासनोपग वर्ग।

अनुवासनोपयगः anuvásanopayagah-सं० पुं० यह विरेचक-गण ... द्रव्य औषधियाँ जो अनुवासन के उपयोगी हैं। यथा—(१) रास्ना, (२) देवदारु, (३) बेल, (४) मैनफल, (५) सौंफ, (६) श्वेत पुनर्नवा, (७) बड़ी कटेरी, (८) अरनी, (९) गोखरू, (१०) सोनापाठा। च० सू० ४ अ०।

अनुवासाख्यः anuvásákhyah-सं० अनुवासन। वै० निघ०।

अनूवृजौ anúvrijou-सं० पुं० ... कुङ्कुम द्वयम्। चरकौ-सं०। अथ०। ४। १२।

अनुवेदना anuvedaná-सं० स्त्री० सहानुभूति। (Sympathy).

अनुवेल्लितम् anuvellitam-सं० क्ली० व्रण बन्धन भेद। सु० सू० १८ अ०।

अनुशय anushaya-हिं० संज्ञा पुं० पश्चात्ताप, द्वेष।

अनुशयी anushayí-सं० स्त्री० ... पादरोग विशेष।

लक्षण—जो फोड़ा गहरा हो, आरम्भ में ... सा दीखे, ऊपरसे त्वचाके रंग ही का हो (... चक्करदार हो) और भीतर ही में पकता हो, ... वैद्य पैरका "अनुशयी" कहते हैं। इसको ... उत्पन्न जानना चाहिए। "कफादन्तः ... विद्यादनुशयी भिषक्"। मा० सं० क्ष० ...

चि—श्लेष्म विद्रधि के समान इसका ... करना चाहिए। भा० पा० रो० चि०।

अनुशस्त्रम् anushastram सं० क्ली० ... सार, स्फटिक, काच, जलौका, अग्नि, ... नख आदि रूप शस्त्र। यह शिशु एवं ... के लिए होता है। सु० सू० ८ अ०।

अनुष्ठान शरीर anushthána-sharíra-हिं० संज्ञा पुं० लिंगदेह, आदिदेह, ...

अनुष्णम् anushnam-सं० क्ली० ...

नीलकमल, कुमुद। रा० नि०। (Blue lotus).

अनुष्णवल्लिका anushna-vallika
अनुष्णवल्ली anushna-valli —सं० स्त्री० नील दूर्वा, नीली दूब। रा०नि० व० ८। (See-Nila-durrva)

अनुसंधान anusandhana-हिं० पु० खोज, तलाश। (Search)

अनुसार्य्यकम् anusaryyakam-सं० क्लीo सुगंध द्रव्य विशेष। बालछड़-महo। Nardostachys Jatamansi, D. C. वै० श०।

अनुह anuha
अनूह anuha —अ० श्वास लेना, दमफूलना, खाँसना, खंकारना, दमा। (Dyspnœa).

अनूक anuka
अनूकम् anukam
अनूक्यम् anukyam —सं० पुं० पसली, पशुका (Ribs)। करुकास्थि। शतप० १२ अ० ४।

अनूक anuka-हिं० संज्ञा पुं० (१) पीठ की हड्डी। (२) कुल, वंश। (३) गत जन्म, पूर्व जन्म।

अनूक़ anuqa-अ० (A bird) धेनुक पक्षी, हरकीलह्। See-dhenuka।

अनूचानः anuchanah-सं० पुं० (१) अंगसहित वेद का अध्ययन करने वाला उत्तम वैद्य। (२) वह जो वेद वेदांग में पारंगत हो कर गुरुकुल से आया हो। स्नातक।

अनूढ़ा anurha-हिं० स्त्री० कुमारी, कुआँरी, अविवाहिता स्त्री। (Virgin, maiden).

अनूढ़ागामी anurha-gami-हिं० पुं० लम्पट, व्यभिचारी, छिनरा।

अनूतीलून anutiluna-यु० एक अप्रसिद्ध बूटी है जो कद्दू के समान, पर फल रहित होती है। (A plant).

अनूदिया anudiya-कड़ुआ(-द्वा)त या रस उस्मारहेक़िस् ।उल्हिमार)। (Succus Elaterinum).

अनूप anupa-हिं० संज्ञा पुं०
अनूपः anupah-सं० पुं० (१) (A buffalo) महिष, भैंस। मे० पत्रिक। (२)अम्बु(जल)प्राय देश, जलप्रावित देश, सजल देश, वह स्थान जहाँ जल अधिक हो। मे०। अनूप देश के लक्षण—जिस प्रदेश में जल तथा वृक्ष बहुल हो और जहाँ वात कफ के रोग होते हों उस देश को अनूप देश कहते हैं।

गुण—गुरु, सान्द्र, पिच्छिल, मधुर, कफकारक तथा स्निग्ध है और प्रमेह, गलगण्ड, श्लीपद, (फीलपाव) और छर्दि आदि रोगों का उत्पादक है। रा० नि०।

राजवल्लभ के मत के अनुसार स्निग्ध, शीतल वात तथा कफकारक और भारी है।

वि० [सं०]जलप्राय। जहाँ जल अधिक हो।

अनूपजम् anupajam-सं० क्लीo (१) अनूपज-हिं० पुं०। आर्द्रक, अदरक, आदी। (Zingiber officinalis, Roxb.) रा० नि० व० ६। -पुं० (२) वृक्ष विशेष। आनारस शाक-च०। वैoनिघ०। -त्रि० अनूप देश में उत्पन्न होने वाले द्रव्यमात्र।

अनूपदेशः anupadeshah-सं० पुं० अनूप लक्षण युक्त प्रदेश। वे प्रदेश जिनमें अनूप के से लक्षण हों। देखो-अनूपः। See-Anupah.

अनूपमांसम् anupa-mansam-सं० क्लीo अनूपदेशस्थजन्तुमांस। अनूप देश में होने वाले जन्तुओं का मांस। देखो-आनूपमांसम्। See-anupamansam.

अनूफ़ोतानस anufotanas-यु० गोह, सूसमार (A guana)। See Susamara.

अनूमा anuma-यु० रतनजोत। (Alkanet).

अनूयस anuyas-अशराम। Se [illegible] hras.

अनूशरा anúshará-गु० जपा, अड़उल। (Hibiscus Rosa Sinensis).

अनूषणम् anúshṇam-सं० क्लीo उत्पल, नील कमल (Blue lotus)। शुन्दिफुल, इस ला-उ० । रा० नि० व० १० ।

अनूस anús-गु० सांकोहो, पहाड़ी सरो।

अनृजुः anṛjuh-सं० त्रि० शठ, अबरल। -पुं० तगर पुष्प वृक्ष। See-sharham

अनेक aneka-हिं०वि० अधिक,बहु,भूरि (many, much, abundant).

अनेकदिग्वायुः aneka-digváyuh -सं०पुं० (A whirlwind) विघ्नवायु, घूर्णित वायु, बवंडर, घूमती हुई हवा।

अनेकपः anekapah-सं० पुं० गज, हाथी (An elephant)। मद०व० ११।

अनेकरूप aneka-rúpa } -हिं०संज्ञा पुं०
अनेकाकार aneká-kára } नाना रूप, भाँति भाँति के रूप, बहुरूप। मल्टिफॉर्म Multiform-इं०।

अनेकान्तः anekántah-सं० त्रि० } जो
अनेकांत anekánta-हिं० वि० } स्थिर न हो। चंचल। -सं० पुं० कोई ऐसा कहें और कोई अन्यथा (और तरह) वह "अनेकार्थ" कहलाता है। जैसे कोई आचार्य द्रव्य को प्रधान मानते हैं कोई रस को प्रधान कहते हैं, कोई वीर्य को और कोई विपाक को प्रधान कहते हैं। सु० उ० अ० ६५। "कचित्तथा क्वचिदन्यथेति यः सः।"

अनेगुन्दुमनी anegundumani ता० कुचन्दन, कम्बोजी-सं०। रक्त कम्बल, रञ्जन-बं०। अडेनऐन्थरा पैवोनीना (Adenanthera Pavonina)-ले०। इं० मे० मे०।

अनेनेग्गिलु aneneggilu-कना० बड़ा गोखरू-हिं०, द०, गु०, बं०। पेडेलियम म्युरेक्स (Podalium Murex)-ले०। इं० मे० मे०।

अनेडमूकः anedamúkah-सं० त्रि० (१) जो शब्द न सुन सके, वाक्श्रुति रहित, बधिर। डेफ (Deaf)-इं०। मे०। (२) अन्धा। ब्लाइंड (Blind)-इं०।

अनेमल anemal-सं० क्ली० (Enamel)

अनेमुई anomui-ता० असन वृक्ष-हिं०। See-Asana.

अनेमोनीन anemonin-इं० काकड़ा म... अनीमोनीन, रत्तन जोग सत्व-हिं०। ... शक़ायिक़-अ०। यह उपर्युक्त औषध ... मून ऑब्ट्युज़ीलोबा (Anemone Obtusiloba) अथवा पल्साटिला (Pulsatilla) अर्थात् शक़ायिक़ या रत्तनजोग के पौधे ... सत्व है, जो १२२° के उत्ताप पर पिघ... तुल्यधातुसंजीय रवारूप में तलस्थाई हो... है। वाष्प के साथ उड़नशील होता है। साधारण ताप क्रम पर वायु में खुला रखे... यह शनैः शनैः अनीमोनिक एसिड में ... यास हो जाता है।

प्रभाव — चरपरा और फोस्काजनक। ... मोनीन विषैला पदार्थ है। इसके प्रयो... मध्यस्थ वातमण्डल वातग्रस्त (पैरा...) हो जाता है। इं० मे० मे०। फ़ा० इं०।

अनेसाइक्लस पाइरेथम anacyclus pyrethrum-ले० अकरकरा। (Pellitory...)

अनैक्-कट् रज़ाई anaik-kat-razhai-... राकसपत्ता, कराल। (Agave americana).

अनैच्छिक anaichchhika-हिं० वि० स... और इरादी, सुद्दरिक बिला इरादः-... इन्वॉलंटरी Involuntary, ऑटो... Automatic-इं०। शरीर की ... में से वह जो हमारी इच्छा के अधीन न ... हम उनको अपनी इच्छा से रोक नहीं ... और जब वे न होती हों या होनी बन्द ... तब हम अपनी इच्छा से उनको रोक नहीं स... ये और ऐसी ऐसी और गतियाँ इच्छा के ... न होने के कारण स्वाधीन या अनैच्छिक ... जाती है।

च्छिक पेशी anaichchhika-peshí
च्छिक मांस anaichchhika-mánsa
हिं० स्त्री०, हिं० पुं० (Involuntary muscle) स्वाधीन मांस, अनैच्छिक मांस। अज़ुलह ग़ैर इरादी-अ०। अनैच्छिक मांस से हृदय नालियों, मार्गों और आशयों की दीवारें बनी हुई हैं।

च्छिक मांस सेल anaichchhika-mánsa-sela-हिं० पुं० स्वाधीन मांस सेल। (Involuntary muscular cell) यह सेलें लम्बी होती हैं; बीच में से मोटी होती हैं और सिरों पर पतली और नोकीली। उनकी लम्बाई $\frac{1}{५२०}$ से $\frac{1}{१००}$ इञ्च तक और मोटाई $\frac{1}{३०००}$ से $\frac{1}{२०००}$ इंच तक होती है। प्रत्येक सेल में अंडाकार या सलाकाकार मींगी होती है। प्रत्येक सेल से वात मंडल का एक सूक्ष्म तार लगा रहता है।

नेरुञ्जी anai-nerunjí-ता० बड़ा गोखरू। (Pedalium Murex, *Linn.*). फा० इं० ३ भा०।

न्द्रिक anaindrika-हिं० वि० निरेन्द्रिक, निरावयविक। (Inorganic).

नैन्द्रिक दोष anaindrika-dosha-हिं० पुं० अनैन्द्रिक अशुद्धि। Inorganic Impurities.

नैन्द्रिक द्रव्य anaindrika-dravya-हिं० पुं० अनैन्द्रियक पदार्थ। (Inorganic-Substances)

नैन्द्रियक पदार्थ anaindriyaka-padártha-हिं० संज्ञा पुं० सृष्टि में पाए जाने वाले दो प्रकार के पदार्थों में से वह जिसकी उत्पत्ति में प्राणिवर्ग का कोई हाथ नहीं, जैसे जल, वायु, मट्टी, लवण, शोरक, गन्धकाम्ल, स्वर्णादि धातु वा अधातु। इन्‌र्गानिक सब्स्टेन्स Inorganic substance-इं०। जमादी-अ०।

अनैन्द्रियक रसायन anaindriyaka-rasáyana-हिं० संज्ञा पुं० (Inorganic chemistry) रसायनका वह विभाग जिसमें अनैन्द्रियक पदार्थों का वर्णन होता है।

अनैपुलियमरम् anaipuliyamaram-ता० गोरख इमली। (Adansonia Digitata, *Linn.*) इं० मे० मे० स० फॉ० इं०। फॉ० इं०।

अनैपुलियरोय anaipuliyaroya-ता० गोरख इमली। (Adansonia Digitata, *Linn.*) मेमो०।

अनैफ़ anaif-अ० जिसकी नासिका में व्यथा हो अथवा चोट लगी हो।

अनोकहः anokahah-सं० पुं० वृक्ष, पेड़। ट्री (Tree)-इं०। गाछ-बं०।

अनोजीसस अक्युमिनेटा anogeissus acuminata, *Wall.*-ले० चकवा-बं०। पाँची, पासी-उड़ि०। तुम्मा-ता०। पाची-माँग, पासी, पाँसी-ते०। फास मर्द०। थाँ-बर०। इसके पत्र रङ्ग के काम में आते हैं। मेमो०।

अनोजीसस लेटिफ़ोलिआ anogeissus latifolia, *Wall.*-ले० धवः। (Conocarpus Latifolia)

अ(ए)नोडाइन anodyne-इं० वेदनानाशक, व्यथाशामक, अऌमदे्मशमनम्। (Analgesic).

अनोना anoná-हिं० वि० (१) अलोना, नोन रहित। साल्टलेस (Saltless)-इं०। हिं० को०। -हिं०। (२) अतिबला, कंघी। अब्युटिलन इण्डिकम् (Abutilon Indicum) -ले०। इं० मे० मे०।

अनोना डयुमोसा unona dumosa, *Roxb.* -ले० तुवाई चारह्। (Unona bushy). इं० हैं० गा०।

अनोना नेरम unona narum-ले० अज्ञात।

अनोना बुशी unona bushy-इं० तुवाई चारह्

(Unona dumosa, *Roxb.*–लें० । इं० हिं० गा० ।

अनोना म्युरिकेटा anona muricata–लें० यह आतृप्य वर्ग (या सीताफल वर्ग) अर्थात् (Anonaceæ) की वनस्पति है। इसका मूल उत्पत्तिस्थान पश्चिमी द्वीप समूह है, परंतु अब यह पूर्वी भारतवर्ष में भी लगाई गई है।

गुणधर्म—पक्वफल में मिष्ट व किंचित् अम्ल गूदा होता है जिससे ज्वर में शैत्यकारक प्रपानक प्रस्तुत किया जाता है। अपक्वफल–अत्यन्त संकोचक होता है और आन्त्रिक असुस्थता एवं स्कर्वी की दशामें व्यवहारमें आता है। त्वक् संकोचक है तथा मूल-त्वचा शव अर्थात्‌तत शरीर जन्य विषाक्तता (Plomaine-poisoning) में बरती जाती है, विशेषतः सड़ी हुई मछलियों के खानेके बाद। पत्र कृमिघ्न रूपसे और पूयजनन हेतु इसका बहिःप्रयोग होता है। इं० मे० मे०।

अनोना रेटिक्युलेटा anona reticulata, *Linn.*–लें० रामफल–इं०, । नोना–बं० । मेमो० । शरीफा Bullocks heart–इं०। इं० हिं० गा० । Citron–इं० ।

अनोना लॉङ्ग लीव्ड unona, long-leaved, –इं० कलाकुरा । (unona longifolia, *Pro., Lind.*)–लें० । इं० हिं० गा० ।

अनोन लौङ्गि फोलिआ unona, longifolia, *Pro., Lind.*–लें० कलाकुरा । (Unona, long-leaved, R.)–लें० । इं० हिं० गा० ।

अनोना स्कामोसा anona squamosa, *Linn.*–लें० शरीफा, सीताफल, आतृप्य ।

अनोनेसीई anonaceæ–लें० आतृप्य या सीताफल वर्ग ।

अनोफिलिज़ anopheles–इं० यह रोगको एकसे दूसरे मनुष्य तक पहुँचाने वाला एक विशेष जाति का मच्छर है।

अनोप्ल्युरा लेण्टाइसी anopleura lentisci –लें० धकिम । फा० इं० १ भ०३२१ । देखो–पिस्ता ।

अनोरस्मा anorasmá–अ० देखो–अव्रस्मा ।

अनोशदारू anosha-dárú] –अ० ।
नोशदारू nosha-dárú–] के समान

गिक औषध है, जिसका प्रधान
है। इसकी निर्माण-विधि–एक आमला
तोलकर जल में पकाकर भली भाँति
इसके बीज पृथक् करें और मसलें कि
जिससे रेशे को छोड़कर आमले का गूदा
आए। तत्पश्चात् बीज तथा रेशे को
प्रकार कुल आमले के भार में से इनके (
भारको घटाकर आमलेके गूदेका भार माप
इस गूदे के भार से दुगनी मिश्री (अथवा
अन्य शुद्ध शर्करा) मिलाकर चाशनी कर
होनेपर अभी जब कि यह कुछ कुछ गर्म
रहे, इसमें औषधों के चूर्ण मिश्रित करें
यदि आमला शुष्क हो तो उसके बीज
मापकर धो डालें, जिसमें वह धूल प्रभृति
होकर शुद्ध हो जाए। इसके पश्चात् इसे
गोदुग्धमें भिगोएँ जिसमें आमले का
प्रहर पश्चात् अधिक जल डालकर उबालें
आमले का कसैलापन एवं दुग्ध की
हो जाए। पुनः अन्य स्वच्छ जल में
उपरोल्लिखित नियमानुसार "अनोशदारू"
करें।

अनौम anouma–अ० निद्रापूर्ण, जिसके
निद्रा भरी हो। निद्रालु। निद्रित। (S
sleeping)

अनंग anange–हिं० वि० [सं०
अनंगमा] बिना शरीर का। देह रहित।
संज्ञा पुं० कामदेव (Cupid)
अनङ्गम् ।

अनंगक्रीड़ा ananga-krirá–हिं० सं
[सं०] (१) रति। संभोग। (Coit

अनंगवती anangavati–हिं० वि०
[सं०] कामवती, कामिनी ।

अनंगारि anangári–हिं० संज्ञा पुं०

ी anangí-हिं० वि० [सं० अनङ्गित] स्त्री० अनंगिनी] अंग रहित। बिना देह का। शरीर।

संज्ञा पुं० कामदेव। (Cupid).

ananta-हिं० संज्ञा पुं० दे०—नन्तः।

मूल anantamúla-हिं० संज्ञा पुं० सं० अनन्तमूलम्]

ा anantá-हिं० वि० स्त्री० [सं०] जिसका अंत वा पारावार न हो।

संज्ञा स्त्री० (१) पृथ्वी। (२) अनन्तमूल सो—अनन्ता।

ी anandi-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] १) एक प्रकारका धान। (२) दे०-आनन्दी।

anambha-हिं० वि० [सं० अन्=नहीं + अम्भ = जल] बिना पानी का।

ुमत्फला ananshumatfalá-सं० स्त्री० दलीवृक्ष, केला का पेड़। (Musa sapientum, *Linn.*) जटा०।

an-अव्य० [सं०] संस्कृत व्याकरण में यह निषेधार्थक 'नञ्' अव्यय का स्थानादेश है और अभाव वा निषेध सूचित करने के लिए स्वर से आरम्भ होने वाले शब्दों के पहिले लगाया जाता है। उ०-अनन्त, अनधिकार, अनीश्वर। पर हिन्दी में यह अव्यय वा उपसर्ग, कभी कभी सस्वर होता है और व्यंजन से आरम्भ होने वाले शब्दों के पहिले भी लगाया जाता है। उ०-अनहोनी, अनबन, अनरीति इत्यादि।

anta-हिं० पुं० नाश स्वरूप, शेष, समाप्ति, सीमा, निकट, अति। (End, completion, death.)

कः antakah-सं० पुं० (१) काञ्चनार वृक्षः-सं०। कचनार का पेड़-हिं०। (Bauhinia Variegata, Linn.) भा० गु० च०। (२) नाशकर्त्ता, काल (the Supposed regent of death)। (३) सन्निपात ज्वर विशेष। इसके लक्षण—अंगोंका टूटना श्रम, कम्प और शिरका हिलना, दाज तथा रोना, कुछ का कुछ बकना, संताप, हिचकी का आना जिसमें ये लक्षण हों उसको असाध्य अन्तक सन्निपात जानना चाहिए। इसकी अवधि १० दिन की है, जैसे-"अन्तके दश वासराः।" मा० नि०।

उक्त सन्निपात के लक्षण भावमिश्र महोदय ने निम्न प्रकार वर्णन किए हैं, यथा—जिस मनुष्य के अन्तक नामक सन्निपात कुपित होता है, उसके शरीर में बहुत सी गाँठें पड़ जाती हैं, उदर वायु से भर जाता है, निरन्तर श्वास से पीड़ित रहता है और अचेत रहता है। भा० म० १ भा०।

अन्तकोटर पुष्पी antakoṭara-pushpi-सं० स्त्री० नील बोना-बं०।

अन्तड़ी antari / अन्त्री antrí- } -हिं० स्त्री० आँतें, आन्त्र। (Intestines, Bowels, Entrails, Gut.)

अन्तरम् antaram-सं० क्लीं० अवकाश, छिद्र, मध्य; बीच; दूर, भीतर। (Interval, hole or rent, midst).

अन्तमल antamala-सं० (१) मद्य, मदिरा (Wine)। (२) मल, विष्ठा (Fœces)।

अन्तमात्रिका धमनी antamátrika-dhamaní-हिं० स्त्री० (Internal carotid artery) ग्रैवान्तरिक धमनी। शियान सुबाती गाइर-अ०।

अन्तमल antamala / अन्तमूल antamúla } -हिं० संज्ञा पुं० काला मदार। [सं० अन्तर्मलः] जंगली पिकवन (-क्वा-)। टाइलोफोरा अस्थमेटिका Tylophora asthmatica, *W. & A.*, एस्क्लिपियस अस्थमेटिका Asclepias Asthamati-

ca, *Willd.*, Roxb.–ले०। इंडियन इपीकेक्वाइना Indian Ipecacuanha–कंट्री इपिकेक्वाइना प्लांट Country Ipecacuanha plant–इं०। संस्कृत पर्याय–मलाएडः, अरडमलः, पूति, अम्भपर्णः, रोमशः (भा०); अन्तर्पाचक, मलान्तः, अन्तर्मलः, अरडपर्णः, लोमशः। पित्-काडी–द०। इकुंजुज़हव हिन्दी –अ०। अन्तोमुल–बं०। पितमारी,खड़की रास्ना, अन्यमुल, पित्तकाड़ी–बम्ब०। पितकाड़ी, खड़की रास्ना–मह०। मेरडी –उड़ि०। नच्-चुरुप्पान, नञ्ज-मुरिचान, माय्-पाले, पैयूप्-पाले–ता०। वेरिपाल, कुक्कपाल–ते०। वल् लि-पाल–मल०। बिन्नुगं–सिं०। अंटु-मुतद–कना०।

शारिवा वा मूलिनी वर्ग

(*N. O. Asclepiadeæ.*)

उत्पत्ति स्थान—उत्तरी तथा पूर्वी बंगाल, आसाम से बर्मा पर्यंत, दकन (वा दक्षिण भारतवर्ष) और लंका।

पर्याय-निर्णायक नोट अन्तोमुल (अन्तमल, अन्तमूल–हिं०)तथा अनन्तोमूल (अनन्तमूल–हिं०) इन दो बंगला भाषा के शब्दों के उच्चारण में बहुत कुछ समानता होने के कारण ये भ्रमवश एक दूसरे के लिए प्रयोग किए जाते हैं। परन्तु, इनमें से प्रथम अर्थात् अन्तोमुल जंगली पिक्क Country Ipecacuanha(Tylophora Asthamatica) और दूसरा शारिवा वा अनन्तमूल Country Sarsaparilla (Hemidesmus Indicus, R Br.) के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए।

वानस्पतिक वर्णन—यह शारिवा की जाति का एक बहुवर्षीय लता है। मूल एक लंबु काष्ठमय ग्रंथि है, जिससे बहुसंख्यक सूत्रमय जड़ें निकल कर नीचेकी ओर जाती हैं। यह २ से ५ या ६ इंच या अधिक लम्बी और $\frac{१}{२४}$ या $\frac{१}{१२}$ इं० व्यासमें और अत्यन्त कर्कश अर्थात् टूटनेवाली (भंगुर) होती हैं। सौत्रिक जड़ोंकी संख्या विभिन्न होतीहै। ये २ से १२ या २० और कभी इनमेंभी अधिक होती हैं। ये ... श्वेत वर्ण की होती हैं। जड़ें प्रायः ... हैं। पर साधारणतः उनमें बहुत ... तन्तु या क्षुद्र मूल लगे रहते हैं।

इनमें से २ से ३ आकाशी धड़ (कांड) ... लते हैं। कांड, अनेक, दाएँ बाएँ ... साधारणतः कुक्कुट-पराकार, कभी कभी ... के समान मोटे शाखायुक्त, किञ्चि ... पत्र सम्मुखवर्ती, पत्र-प्रांत समान अर्थात् (जड़के समीप प्रायः व्यत्यस्त) २ से ... दीर्घ और १॥ से २॥ इं० चौड़ा, डंठल(पत्रवृन्त)के पास कभी कभी तथा हृद... कार, किञ्चिन् नोकीला, ऊपरका भाग(वक्ष) ... और नीचेका भाग(पृष्ठ)किञ्चित् लोमश ... युक्त होता है। पत्रवृन्त (डंठल) लघु, ... $\frac{१}{४}$ इं० लम्बा, लोमश किञ्चिन् नालिका... है। पत्र शुष्कावस्था में अधिक पीले ... पीताभहरित ... वर्ण के होते हैं। ... किसी प्रकार की अप्रिय गंध नहीं होती। ... बहुत कम होता है। पुष्प, सूक्ष्म, ... प्रातः सायं तथा रात्रि में विकसित होते, ... दिन में जब सूर्य का प्रखर उत्ताप होता है ... कुम्हला जाते हैं। ये वृन्तयुक्त, ... पुष्पावलंब्यावरण युक्त होते हैं। पुष्पवृन्त ... साधारण, सामान्यतः विषमवर्ती, ... अपेक्षा दीर्घतर होते हैं। छत्रक (Umb... साधारणतः मिश्रित, त्रिपन, आकार ... वल्यावरण (Involucros) द्वारा ... है। पुष्पावलंब्यावरण (Involu... अत्यन्त लघु और स्थायी होता है। पुष्प... वरण बीजकोषाधः, स्थायी, बहुमरकीय(... sopalous) होता है। सपल (Se... ५, लघु, $\frac{१}{१२}$ से $\frac{१}{४}$ इंच लम्बे, हरि... हरित होते हैं। पुष्पाभ्यंतर-कोष, ... पृथक् बहुदलीय होता है। दल ५, ... $\frac{१}{१२}$ से $\frac{१}{४}$ इंच लम्बे, कभी कभी ... पीछे को झुके हुए; पीले (मिश्र... सामीप्य भीतरी भाग के जहाँ वे ...

(अथवा गुलाबी रंग के चिह्नों से युक्त) होते हैं। पराग-केशर तथा गर्भकेशर परस्पर संयुक्त होकर एक हो जाते हैं जिसका व्यास लगभग $\frac{1}{12}$ इंच होता और जो पंच पीताभ उभरी हुई रेखाओं से अंकित होता है। बीजकोष (फिगा-ल्य) दो होते हैं। शिम्बी युग्म, एक दूसरी के सम्मुख और आधार पर किंचित चिपकी हुई, एक ओर नावदुमी, २ से ४ इंच लम्बी, मध्य में लगभग $\frac{1}{4}$ इंच मोटी, चिकनी, एक कपाटयुक्त और स्फुटित होने वाली होती है। बीज लोमश जिसके ऊपरके सिरे या आधार पर रुईका एकगुच्छा होता है, लघु, अत्यन्त पतला, रक्ताभायुक्त धूसर रंग का और किंचित् अंडाकार होता है। इसका पौधा वर्ष भर पुष्पमान रहता है, विशेषतः उस समय जब कि लगाया जाता है।

इस पौधेके दो भेद होते हैं। यह केवल आकार एवं कुछ अन्य साधारण लक्षणों से एक दूसरे से भिन्न होते हैं। जब इनको एक अवस्था में रक्खा जाता है तब इनमें से एक दूसरे से सदा बड़ा होता है। बड़ी जाति में पुष्पदल बृहत्तर एवं स्थूलाधिक परावर्तित और कभी कभी किंचित् लिपटे हुए भी होते हैं। पुरातन पत्र अधिक चौड़े, पतले, गम्भीर वर्ण के और कुछ कुछ पीछे की ओर झुके होते हैं।

इस पौधे की जड़ के सम्बंध में ऐसा प्रतीत होता है कि कतिपय ग्रंथों में यह एक दूसरी जड़ के साथ मिलाकर भ्रमकारक बना दिया गया है। उदाहरण के लिए मेटीरिया मेडिका खंड २ पृ० ८३ पर लिखे हुए वाक्य को ही लीजिए जो इस प्रकार है—

"The root of this plant, as it appears in the Indian bazars, is thick, twisted, of a pale colour, and of a bitterish and somewhat nauseous taste."

अर्थात् इस पौधे की जड़ जो बाजारोंमें दिखाई देती है, मोटी, बलखाई हुई, अस्पष्ट वर्ण की और किंचित तिक्त एवं कुछ कुछ उत्क्लेशजनक स्वादयुक्त होती है।

प्रथम तो इसकी जड़ें विक्रयार्थ बाजारों में नहीं आतीं और द्वितीय यह कि इसकी जड़ें पूर्वोक्त वर्णनके अनुसार नहीं होतीं। देखो—वानस्पतिक वर्णनांतर्गत मूल वर्णन।

रासायनिक-संगठन—इसके पत्र का घन शीतकषाय स्वाद में किंचित् चरपरा होता है। पत्र एवं मूल में टाइलोफोरीन (Tylophorine) अर्थात् अंतमलीन नामक एक क्षारीय सत्व और दूसरा एक वामकसत्व ये दो प्रकार के सत्व पाए जाते हैं। टाइलोफोरीन जलमें तो कम परन्तु मद्यसार एवं ईथर में अत्यन्त विलेय होता है।

प्रयोगांश—शुष्क पत्र तथा मूल।

औषध-निर्माण—(१) पत्र का अमिश्रित चूर्ण Simple Powder of Tylophora Leaves (Pulvis Tylophoræ Foliæ Simplex)-पत्र जड़ की अपेक्षा कठिनतापूर्वक चूर्ण किए जा सकते हैं। पहले उनको धूपमें अथवा सैंडबाथ (वालुकाकुंड) पर रखकर भलीप्रकार सुखालें। फिर चूर्णकर वस्त्रपूत करलें। इस स्थूल चूर्ण को पुनः विचूर्णित करें और पुनः बारीक चलनी वा वस्त्र से छान लें तथा बन्द मुँह की बोतल में सुरक्षित रक्खें। मात्रा—मूल चूर्णवत्।

(२) जड़ का अमिश्रित चूर्ण Simple Powder of Tylophora Root (Pulvis Tylophoræ Simplex)-सामान्य विधि से तैयार कर बन्द मुख के बोतल में रक्खें। मात्रा—वामक प्रभाव के लिए ४० से ६० ग्रेन (२० रत्तीसे ३२ रत्ती तक); प्रवाहिका में १५ से ३० ग्रेन (७॥ रत्ती से १५ रत्ती) या इससे अधिक। कफनिस्सारक रूप से $\frac{1}{2}$— ग्रेन।

(३) अभ्यङ्ग वा उद्वर्तन (Liniment).

(४) टाइलोफोरीन नामक सत्व।

प्रतिनिधि—यह इपिकेक्वाइना की उत्तम प्रतिनिधि है और प्रायः उन सम्पूर्ण दशाओं में

जिनमें इपिकेक्वाइना व्यवहृत होता है, इसका उपयोग किया जाता है।

इतिहास, गुणधर्म तथा उपयोग—यद्यपि ऐसा प्रकट होता है कि भारतवर्ष के उस प्रांत के निवासी जिसमें अन्तमूल होता है, इसके औषधीय गुणधर्म से अति प्राचीन काल से परिचित हैं; तथापि इसके व्यापारिक द्रव्य होने का हमारे पास कोई प्रमाण नहीं और न किसी प्रामाणिक हिन्दू अथवा इसलामी निघण्टु ग्रन्थों में इसका वर्णन आया है। किसी किसी ग्रंथ में भावप्रकाशोक्त मलायड शब्द इसके पर्याय स्वरूप लिखा है। भावप्रकाशकार मलायड का गुण इस प्रकार लिखते हैं— "वामनः स्वेदजननः कफनिर्हरणस्तथा।" अर्थात् मलायड वामक, स्वेदजनक और श्लेष्मनिस्सारक है। ये सम्पूर्ण गुण अन्तमूल में विद्यमान हैं। अतः मलायड को अन्तमूल मानना हमें अनुपयुक्त नहीं प्रतीत होता।

रॉक्सबर्ग लिखते हैं—कारोमण्डल तट पर अन्तमूल की जड़ इपिकेक्वाना की प्रतिनिधि रूप से प्रायः प्रयोग में लाई जा चुकी है। मैंने प्रायः इसका सेवन कराया और सदा इससे वे ही प्रभाव उत्पन्न होते हुए पाया, जिनकी इपिकेक्वाना के द्वारा होनेकी आशाकी जाती है। दूसरों से इसके अनुसार प्रभाव होने की भी मुझे प्रायः सूचनाएँ मिलीं। सन् १७८०–८३ ई० के युद्धकाल में अभाग्यवश हैदरअली द्वारा बन्दीकृत यूरोपियनों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी औषध सिद्ध हुई। अधिक मात्रा में वामक, थोड़ी मात्रा में और बारम्बार प्रयोग करने से विरेचक, उभय विध यह अत्यन्त प्रभावात्मक सिद्ध हुआ।

डॉक्टर रसेल (Dr. Russell) को मद्रास के फिज़िशन जनरल (चिकित्सकों के अधिनायक) डॉक्टर जे० एण्डरसन (Dr. J. Anderson) ने सूचित की कि उनको इसके युरोपीय तथा देशी दोनों सेनाओं द्वारा प्रवाहिका में, जिसने उस समय सेनामें संक्रामक रूप धारण की थी, सफलतापूर्ण उपयोग किए जाने का बहुत वर्ष पूर्व से ज्ञान है। ऐसा ... कि इपिकेक्वाइना सर्वथा समाप्त हो ... और डॉक्टर एण्डरसन ने देशी ... चिकित्सा में अपनी अपेक्षा अधिकतर ... प्राप्त करते हुए पाकर उन्होंने सहज ... हृदय से स्वीकार किया कि उनसे शिक्षा ... करनेमें मुझे कोई लज्जा नहीं। और उन्हें ... बतलाए हुए पौधे को अधिक परि... त्रित करके उनकी जड़ का एक बड़ा ... को भेजा। वस्तुतः यह हिन्दू मेटेरिया ... (आयुर्वेदीय निघण्टु) का वह द्रव्य है ... और अत्यन्त ध्यान देने की आवश्यकता ... (फ्लोरा इंडिका खं० २, पृष्ठ १४, ११)

ऐन्सली लिखते हैं—इसकी जड़ ... निस्सारक (कफघ्न) तथा स्वेदक ... लिए अत्यन्त प्रशस्त है। इसका शीत... (Infusion) आधे चाय की चम्मच ... मात्रा में कफ पीड़ित बालकों को वमन ... लिए प्रायः प्रयोग किया जाता है। इपिके... के कुछ कुछ समान गुण [illegible]ने के कारण ... हिका जन्य विकारों में यह लाभदायक ... ज्ञात हुई और लोअर इंडिया के ... चिकित्सकों द्वारा समय समय पर इसका ... लाभदायक प्रयोग किया गया। (मे... मेडिका ऑफ़ इंडिया, २, पृ० ८३)

डॉक्टर मोहीद्दीन [illegible]रीफ़—इस ... कालबेलियों (सपेरों) में यह सर्पविष ... अगद होने के लिए बहुत प्रसिद्ध है। ... कहना है कि जब नकुल को सर्प काट ... वह इसी पौधे की शरण लेता है। ... इसके वामक प्रभाव से परिचित हैं, ... इसका बहुत कम उपयोग करते हैं। ... का कोई अंग बाज़ार में नहीं बिकता। ... लाने के लिए इसके एकत्रित करनेकी ... होती है।

कांड एवं फली सहित उक्त पौधे ... वामक है। परन्तु जड़ एवं पत्र केवल ... ही नहीं, प्रत्युत उपयोग के लिए ... चूर्ण भी किए जा सकते हैं।

पुनः प्रवाहिका में तथा कष्टकर एवं सैन्द्रक रूप इसकी जड़ इपिकेकुआना की यहाँ सर्वोत्तम प्रतिनिधि है।

चार वर्ष हुए जब मुझे कतिपय देशी दवाओं की आलोचना का अवसर प्राप्त हुआ, तब अनन्तमूल के सम्बन्ध में मेरे विचार निम्न प्रकार थे।

वामक रूप में तथा अधिक मात्रा में प्रवाहिका की चिकित्सा में दोनों प्रकार से इपिकेकुआना के प्रतिनिधि स्वरूप में पाए जाने वाली भारतीय औषधों में यह सर्वोत्तम है। २० से ३० ग्रेन (१० से २० रत्ती) इसका चूर्ण और अफीम की बुंद की मात्रा में दिन्‌तुरा प्रतिआठ १२ घंटों में दिन में तीन-चार बार सेवन कराने से यह उतना ही शीघ्र एवं सफलतापूर्वक रोग का निराकरण करता है जितना कि इपिकेकुआना। श्वास रोग में वामक या कफघ्न रूपमें भी इसका उपयोग इपिकेकुआना की अपेक्षा उत्तम रहता है।

सर्पदंश के अगद स्वरूप कोई अन्य औषध की अपेक्षा एमोनिया के बाद अनन्तमूल पर मेरा अधिक विश्वास है। जब तक स्वतन्त्र वमन न आने लगें तब तक इसका ताजा रस अधिक मात्रा में थोड़ी थोड़ी देर पर देते रहें। इसके बाद मद्य एवं अमोनिया उत्तेजक का व्यवहार करें।

देशी औषधों के अपने अधिक विशाल अनुभव के पश्चात् मैंने अनन्तमूल को सर्वोत्तम ही नहीं, प्रत्युत भारतीय ४, ५ सर्वोत्कृष्ट वामक औषधियों में एक पाया।

कनक (निर्मली) तथा मदनफल के पश्चात् इसका दर्जा आता है। यद्यपि इसका सर्वांश वामक है तथापि प्रवाहिका में केवल इसकी जड़ उत्तम रोगनिवारक कार्य करती है। उक्त रोग में इसका प्रभाव फलप्रद होता है। (फा० इं० पृ० ३६३)

डॉ० किर्कपैट्रिक (Cat. of mysore drugs) में लिखते हैं—यदि प्रबल वमन की आवश्यकता हो तो २० से ३० ग्रेन की मात्रा में उक्त औषधि को एक या आध ग्रेन टार्टर इमेटिक के साथ दे। मैं शुष्क पत्र का चूर्ण औषध रूप में व्यवहार करता हूँ।

कोंकण में १ से २ तो० तक इस तरह रूप में व्यवहार किया जाता है। शुष्क कर इसकी सूँघ के बराबर वटिकाएँ अनुसार भी प्रवाहिका में वर्ती जाती है। पर्याप्त मल प्रवर्तन हेतु एक मात्रा पर्याप्त है। इंडियन फार्माकोपिया में इसका पद प्राप्त है। (फा० इं० २ भा० पृ० ५३६)।

डा० नदकर्णि प्रभाव में पत्ते देते हैं। ये सारक (Laxative) और प्रवाहिका में १२ ग्रेन की मात्रा में उत्तम होते हैं। इनको साधारणतः चूर्ण रूप में किंचित् कपूर मिलाकर तथा अफीम १ ग्रेन के साथ मिलाकर व्यवहार करते हैं। शिरोरोग एवं वात वेदना में सिर में इसकी जड़ का प्रलेप करते हैं। कास तथा अन्य उन शिरोविकारों में जिनमें साधारणतः इपिकेकाना व्यवहृत होता है। यह अत्यन्त लाभदायक पाया गया है। अतीसार तथा प्रवाहिका की प्रथमावस्था में भी जब कि ज्वर विद्यमान हो इसको १० ग्रेन की मात्रा में १ आउंस जल के साथ तथा उसमें १ ड्राम कीकर का गुआर और आवश्यकतानुसार ½ ग्रेन अफीम मिलाकर दिया जा सकता है। यदि विषम अथवा मलेरिया ज्वर हो तो इसके साथ क्विनीन (कुनैन) सम्मिलित कर देना चाहिए। श्वासोच्छ्वास विकार तथा कुकुरखाँसी (Whooping Cough) की प्राथमिक अवस्था में इसे २ ग्रेन की मात्रा में दिन में तीन बार अकेले अथवा आधा ड्राम मुलेठी के शर्बत में आधा आउंस जल मिलाकर इसके साथ दिनमें तीन बार सेवन करें। यह रक्तशोधक तथा परिवर्तक रूप में अति प्रख्यात है और आमवात में इसका उपयोग किया जाता है। यह तिक्त सुगन्धित तथा उत्तेजक है। यह औपदंशीय आमवात में भी प्रयुक्त होता है। स्थानिक रूप से यह प्रशामक है और संधिवात जन्य वेदना निवारणार्थ प्रयोग में आता है। इं० मे० मे०।

श्वास, कास और प्रवाहिका में अन्तमूल के पत्ते के साथ (१० में १) तथा इसकी जड़ के शीत-कषाय की परीक्षा की गई। उक्त रोगों में ये अत्यन्त लाभदायक पाए गए। (Ind. Drugs Report, Madras.)

यह औषध बंगाल फार्माकोपिया (१८४४) और फार्माकोपिया ऑफ इंडिया (१८६७) में प्रविष्ट है। विस्तार के लिये देखो—फार्माकोग्राफिया फार्माकोज़र मजोड्य रचित पृ० ४८७।

आर० एन० चोपरा—यह पौधा नीची एवं रेतीली भूमि में साधारण रूप से मिलता है। यह औषधि देशी चिकित्सा में विस्तृत रूप से व्यवहार में आ चुकी है। इस लिए इसके पत्र एवं जड़ आयुर्वेद वमन की जाती हैं। इसके सूखे पत्तों को १० से २० ग्रेन की मात्रा में दिन में २-३ बार देने से कहा जाता है कि प्रवाहिका में उपयोगी है। पुरातन काल में कफघ्न रूप से भी यह लाभप्रद है। (इ० ड्र० इं० पृ० ६००)।

अन्तमोरा anta-morá-बं० मरोड़फली, आवर्तकी, आवर्तनी। (Holictoros Isora, Linn)। मृगशृङ्ग-गु०, सं०।

अन्तर antara-हिं०, संज्ञा पुं० (१) एक कीड़ा जो बैलों को काटता है। -अथ० (२) दूसर। अमृ० सा०।

अन्तरङ्ग antaranga-कुम्भिका। -सं० भीतरी अंग। अथर्व०। सू० ७।८। का० ६।

अन्तरगङ्गा,-ङ्गे antara-gangá,-ge-कना०, द० जलकुम्भी। (Pistia stratiotes, Linn.) मे० मो०।

अन्तर तामर antara-támai-ते० जलकुम्भी। (Pistia stratiotes, Linn.) मेमो०। इं० मे० मे०।

अन्तर नायनी antara.náyaní-सं० स्त्री० अन्तर वाहिनी। (Adductor).

अन्तर नायनी पेशी antara-náyaní-peshí }
अन्तर वाहिनीपेशी antara-váhiní-peshí }
सं० स्त्री० किसी अंग को मध्य रेखा की ओर ले जाने वाली पेशी (जैसे बाहु को छाती की ओर और एक आँख को दूसरी आँख की ओर ले जाने वाली)। एड्डक्टर (Adductor muscle)-इं०। मु.क़र्रिब,-मुक़र्रिब-अ०।

अन्तरपड़त antara-padata-हिं० ... का भीतरी पर्दा। पं० फ़ा०।

अन्तरपाचक antara-páchaka-सं० अन्तमूल (Tylophora ... tion). इं० मे० मे०।

अन्तरम् antaram-सं० क्ली० अवकाश, मध्य। मे० रत्रिक।

अन्तरमुख antaramukha-हिं० पुं० गर्भाशय की ग्रीवा तथा उसके अन्दर का ... मिलता है उसको "अन्तरमुख" कहते हैं। कल्प।

अन्तर लसिका antara-lasiká-हिं० (Endolymph).

अन्तर वाहिनी antara-váhiní-सं० अन्तरनायनी। (Adductor)

अन्तर वाह ... krimi-ná ...

अन्तरा antar... निकट, बीच, ... among; ... except)।

अन्तरा ज्वर antará-jvara }-हिं०
अन्तरातप antarátapa }
(Tertian-fever) वह ज्वर जो एक एक दिन का अंतर देकर चढ़े। इसको अँतरिया बुखार, तिजारी बुखार। हे तृतीयकः।

अन्तरात्मा antarátmá-हिं० पुं० ... प्राण। (The internal and spir... part of man, the soul).

अन्तरापत्या antarápatyá-सं० ... गर्भिणी, गर्भवती। हामिलह्, हामिलह्-अ० -अ०। प्रेग्नेन्ट (Pregnant)-इं०।

अन्तरामिषीयः antrámishíyah-सं० ... (Endomysium) मांसान्तरीय।

ntaráya-हि० पुं० बाधा, विघ्न, ।(Obstruction.)

: antaráyámah-सं० पुं० क भेद। एक रोग जिसमें वायु कोप से की आँखें, ठुड्डी और पसुली स्तब्ध हो हैं और मुँह से आपही आप कफ गिरता दृष्टिभ्रम से तरह तरह के आकार दिखाई ।

ण—जब बलवान वायु अन्तरायाम को तथा अङ्गुली, गुल्फ (पाँवकी गाँठ, गट्टा), दय, वक्षःस्थल और गलेमें रहने वाली वायु होकर स्नायु समूह (नाड़ीसमुदाय) को रत करती है तो उस समय उस मनुष्यकी धरा जाती हैं, ठोड़ी जकड़ जाती है, पसलियों की भी पीड़ा होती है। कफ का वमन और वह छाती से (आगे की ओर) के समान नत हो जाता है। भा०। मा० ।

(antarálam सं० पुं० antarála हि० संज्ञा पुं० } न्दर, अन्तर (Interspace)(२) घेरा, हुआ स्थान। आवृत्त स्थान।(Inclu- space)।(३) बीच।

व antarávayava-हि० संज्ञा पुं० ी वस्ति का आभ्यंतरीय भाग जिसमें गर्भा- था गर्भाशय के बंधन, डी अण्ड, फलवा- और योनिमार्ग का समावेश होता है। थं० ० ।

क्ष,-क्ष antarichchha,-ksha-हि० पुं० आकाश (The sky, atmos- ere) ।

antarita-हि० वि० भीतरी, आन्तरिक nward,internal.) ।

। antariyá-हि० स्त्री० तिजारी, तीसरे जाड़ा देकर आने वाला ज्वर, अन्तरात tertian ague.)। देखो—तृतीयकः ।

(री)क्षम् antari,-ri,-ksham-सं० क्ली० पृथ्वी और सूर्यादि लोकोंके बीचका स्थान। कोई दो ग्रहों वा तारों के बीच का शून्यस्थान। आकाश, गगन, शून्य, नभ, व्योम, अम्बर रोदसी। (The sky or atmosphere). रा० नि० व० १३।

अन्तरी antari-हि० स्त्री० अन्त्र। (Intestines.)

अन्तरीप antarípa-हि० संज्ञा पुं० (१) द्वीप, टापू। (२) A Promontory, cape) रास। पृथ्वी का वह नोकीला भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो।

अन्तरीय antariya } अन्तः antah } -सं० त्रि० वि० बिचला, भीतर का, अन्दर का, भीतरी, मध्य। (Inward, internal) जो चीज़ शरीर में मध्य रेखा की ओर रहती है उसके लिए छेदन शास्त्र की परिभाषा में अंतरीय या अतः शब्द का प्रयोग होता है। इन्सी, अन्दरूनी —अ०।

अन्तर्मुखम् antarmukham-सं० क्ली० (१) शस्त्र विस्रावणास्त्र विशेष। अ०शि०। कुश- पत्र और आटी मुख के समान अन्तर्मुखनामक शस्त्र स्राव के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसका फल डेढ़ अंगुल होता है। (२) कुशादा के सदृश ही एक अर्द्ध चन्द्रानन शस्त्र होता है, यह भी स्राव के निमित्त काम आता है।

अन्तर्मुखी antarmukhi-सं० स्त्री० स्त्री योनि रोग विशेष। च० चि०।

अन्तर्लसीका antarlasiká-सं० स्त्री० (Endolymph).

अन्तर्वत्नी antarvatni-सं० स्त्री० गर्भिणी, गर्भवती। (Pregnant)। अम०।

अन्तर्वमिः antarvamih-सं० स्त्री० अपरिपाक, अजीर्ण। (Dyspepsia) त्रिका०।

अन्तर्विद्रधिः antarvidradhih-सं० पुं० जठरांतरस्थ विद्रधि रोग।

निदान व लक्षण—भारी अन्न का भोजन करने से, असात्म्य (जो अपने को प्रतिकूल हो), विरुद्ध

भोजन, सुखादु या शाक और खट्टे पदार्थों के खाने से, अत्यंत मैथुन करने से, श्रम से, मल मूत्रादि वेगों को रोकने से, अत्यन्त उष्ण पदार्थों से, दाहजनक पदार्थों से, अलग अलग अथवा सब एकत्र मिलकर कोपको प्राप्त हुए दोष गुदाके भीतर, वंक्षण संधियों के भीतर, कोखमें, बगल में, प्लीहा और यकृत् में, हृदय में अथवा तृषा लगने के स्थान के भीतर साँप की बाँबी और ऊँचे गुल्म के समान विद्रधि उत्पन्न करते हैं। इन विद्रधियों के लक्षण बाहर की विद्रधियों के समान जानना चाहिए। भा० म० २। विद्रधिः

अन्तर्वृद्धिः antarvriddhih--सं० पुं० अन्त्र-वृद्धि रोग, आँत उतरनेका रोग। (Hernia).

अन्तर्वेधः antarvedhah--सं० पुं० मर्मभेद, मर्म्म पीडा। (Serious Pain.)

अन्तल antala--कना० रीठा। (Sapindus Trifoliatus) फा० इं० १ भा०।

अन्तलीस antalís--यु० एक बूटी है जो वृक्ष तथा घास के मध्य होती है। इसके पत्ते मसूर के पत्तों के समान होते हैं और इसकी शाखाएँ अत्यंत खुरदरी और एक बालिश्त के बराबर होती हैं। (A plant.)

अन्तशय्या antaṣbayyá--सं० स्त्री० मरण, मृत्यु। (Dying, death). मे०। (२) मृत्युशय्या, मरण खाट, भूमिशय्या। (३) श्मशान, मसान, मरघट।

अन्तश्श्रोत्रम् antashṣhrotram--सं० क्लो० अन्तःश्रवकर्ण। (Internal ear.)

अन्तश्श्रोत्रमार्गः antashṣhrotra-márgah--सं० पुं० (Internal Acoustic Meatus) अंतःश्रवकर्ण सुरंग। कर्णान्तरनाली।

अन्तश्श्रोत्रमार्गद्वारम् antashṣhrotra márga-dwáram--सं० क्लो० (Porus Acousticus Internus). कर्णान्तर द्वार।

अन्तस्तल antastala } -सं०हि० पुं० भीतरी भाग। भीतरीतल।
अन्तस्थल antasthala }
(Endplates, Internal Surface).

अन्तस्त्वक् antastvak-सं० पुं० (१) कला (Epithelium)। (२) (वृक्ष)।

अन्तस्नेहफला anta-sneha-phalá-... श्वेत कंटकारी, सफेद भटकटाई, ... रिका (रो), श्वेत कण्टारिका।

अन्तस्सुषिर antassushira-सं० ... छिद्र। (Hollow).

अन्तामरा antámará-यं० मरोडफली, अइंठा-गाँ०, हि०। (Helicteres I... Linn.) इं० मे० प्ला०।

अन्तावसायी (इन्) antávasáyi-... (१) नापित, नाई, हज्जाम। (A b... a shaver) मे०। (२) चांडाल।

अन्तिक antika --हिं० पुं० समीप, ...

अन्तिका antiká-सं० स्त्री० (१) सीकाकाई (Acacia con... D. C.)। (२) चुल्हि। मे० ...

अन्तिम antima-हिं० वि० [सं०] (... ultimate) जो अंत में हो, सबसे पिछला, सबसे पीछे का। (२ ... सबसे बढ़के।

अन्तुलह् antulah-अंदलुसी० पुं० ... यह दो प्रकार की होती है। (१ ... बैज़ाअ् तथा (२) अंतुलहे सौ...

अन्तुलहे बैज़ाअ् antulahe-bai... लुसी० साधारण इन्दुलमी (Sp... लोग इसको भी अक्रीक़ कहते हैं। ... सनाय के पत्तों के समान होते हैं, ... सुगंधियुक्त और स्वाद मधुर होता है ... उपयोग में आते हैं। ये समस्त त्रिं... हैं। यह बूटी इंदुलस (Spai... सिरवन और भारतवर्ष के पर्वतों ... होती है।

अन्तुलहे सौदाअ् antulahe-sou... लुसी० इसको जदवार, इंदुलमी (S...

[..]ं फ़ीक़ और हिन्दी मे निर्विषी कहते हैं। [इ]सके मूल शाखा में शाखा युक्त और पत्ते होते [हैं] । पत्र मकोपत्र सदृश, किंतु रक्त आभायुक्त होते [हैं] । किसी किसी के मतानुसार हंसराज के पत्तों [के] समान होते हैं । स्वाद–तिक्त ।

[अन्तू]-कल-डुम्बो antú-kala-ḍumbo–ता० [..]पातालता (Ipomœa biloba, *Forsk.*) । फा० इं० २ भा० ।

[अन्तो]मूल antomúla–सं० अन्तमूल । (Tylophora Asthamatica.)

[अन्त]रीय उदरच्छदा antariya-udarachchhadá–हिं० स्त्री० (Transversalis Abdominis) अन्त: उदरच्छदा ।

[अन्त]रीय जननेन्द्रिय antariya-jananedriya–हिं० संज्ञा स्त्री० (Internal organ of generation) वह जननेन्द्रिय जो वस्ति गह्वर के भीतर रहती है और इस कारण बाहर से दिखाई नहीं देती जैसे शुक्राशय, शुक्रप्रणाली, प्रोस्टेट, शिश्नमूल ग्रंथि ।

[अन्त]रीय नाड़ी-कोष antariya-nári-kosha–हिं० संज्ञा पुं० (Internal capsule).

[अन्त]रीय पटल antariya-paṭala–हिं० संज्ञा पुं० भीतरी परदा । (Inner coat)

[अन्त]रीय पटल शोथ antariyapaṭala-shotha–हिं० संज्ञा पुं० (Choroiditis) नेत्र के भीतरी परदे की सूजन ।

[अन्त]रीय पृष्ठ antariya-prishṭha–हिं० पुं० भीतरी पृष्ठ, अन्तस्तल । (Internal surface).

[अन्]तरीक्ष antariksha–हिं० पुं० आकाश । (The sky or atmosphere)

[अन्]तरीक्ष जलम् antariksha-jalam }
[अन्]तरिक्ष जलम् antariksha-jalam }
–सं० क्लीं० आकाशजल, गगनाम्बु, गगनोदक, नीहारजल, वर्षा (वृष्टि) जल । (Rain water.)

अन्तरुहा anta-ruhá–सं० स्त्री० श्वेत दूर्वा, सफेद दूब । See–shveta-dúrvvá.

अन्तरोत्पादक antarotpádaka–हिं०(Entoderm)

अन्तर्गत antargata–हिं० पुं० (In the midst.) भीतरी । शामिल, अन्तर्भूत ।

अन्तर्गति antargati–हिं०स्त्री० (Inward Sensations) मन की तरङ्ग । (Forgotten.) विस्मरण ।

अन्तर्जङ्घास्थि antarjanghásthi–हिं०स्त्री० Shin-bone (Tibia) जङ्घास्थि, टाँग की दो अस्थियों में से बड़ी (शरीर की मध्यरेखा के निकट) की ओर की अस्थि । क़स्बहे कुबा, क्स्सुल् क़स् यत्–अ० ।

अन्तर्जठरम् antarjaṭharam–सं० क्लीं० कोष्ठ, कोठा । कुक्षिमध्य, कोख । अम० ।

अन्तर्जानु महराब antarjánu-maharába –हिं० पुं० (Inner condylar notch) घुटनों के अन्तरीय हड्डी की महराब ।

अन्तर्दधनम् antar-dadhanam–सं० क्लीं० सुराबीज, किण्वक । येस्ट Yeast –इं० । श० च० ।

अन्तर्दाहः antardáhah–सं० (हिं०) पुं० (१) शरीराभ्यान्तरदाह । शरीर के भीतर दाह होना, छाती की जलन, कोष्ठ संताप, कांठे के भीतर की जलन । रा० नि० व० २० । (२) संनिपात ज्वर विशेष ।

लक्षण—जिस सन्निपात ज्वर में मनुष्य शरीर के भीतर दाह हो, ऊपर से शीत लगे, सूजन, बेचैनी, श्वास और सम्पूर्ण शरीर जला सा हो जाए उसे "अन्तर्दाह" सन्निपात ज्वर से पीड़ित जानना चाहिए । भा० म० १ भा० ।

अन्तर्द्वार antar-dvára–हिं० पुं० भीतरी दरवाजा (केवाड़) । (A private door)

अन्तर्धर्मा antardharmá–सं० स्त्री० (Endoderm or Hypoblast:) अन्तर्बेलिष्टर ।

अन्तर्धू मः antardhúmah-सं० त्रि० मुख बँधे हुए हंडिका के भीतर अग्नि जलाने से उत्पन्न हुआ धूम । च० द० ग्रहणी चि० चित्रकचार ।

अन्तर्पट antarpaṭa-हिं० पु'० ओट, आड़, टट्टी, पर्दा । (A curtain, a skreen.)

अन्तर्बलिष्टा antarbalishṭá-सं० स्त्री० (Endoderm or Hypoblast.) अन्तर्धर्मा ।

अन्तर्बेल antarbela-स्त्री० अकासबेल (Cuscuta Reflexa.) ।

अन्तर्भू त antarbhúta-हिं० वि० [सं०] मध्यगत, मध्य में स्थापित । (In the midst.) अन्तर्गत । शामिल । -संज्ञा पु'० जीवात्मा । जीव ।

अन्तर्मणिक antarmaṇika—हिं० पु'० (Styloid process of ulna.) अन्तः प्रकोष्ठास्थि के शिर के पासका एक छोटा नोकीला उभार जो अंगुली से टटोल कर मालूम किया जा सकता है ।

अन्तर्मलः antarmalah-सं० पु'० (१) मलांत वृक्ष, अन्तमूल । करिचदग्निः । See-Antamúla । (२) भीतर का मल । पेट के भीतर का मैला ।

अन्तर्महानादः antarmahá-nádah-सं० पु'० शङ्ख । (A Conch.).

अन्तर्मु खी antarmukhi-सं० स्त्री० योनिरोग विशेष । यदि स्त्री बहुत भोजन करके विषम रीतिसे बैठ कर पुरुषसेवन में प्रवृत्त हो तो वायु शुक्र चबसे प्रपीडित होकर योनि के स्रोत में अवस्थित होकर योनि के मुख को टेढ़ा कर देता है । ऐसा होने से योनिकी हड्डी और मांसमें घोर वेदना होने लगती है । इस रोग का नाम अन्तर्मु खी योनिव्यापद् है । वा० उ० अ० ३३ ।

अन्तर्लोहिता antarlohitá-सं० स्त्री० ऐसा रोगी जिसके भीतर रुधिर भर जाने से हाथ पाँव श्वास और मुख ठंडे हो गए हों, आँखोंमें ललाई, देह में पांडु वर्णता और अफरा भी हो तो उसे अन्तर्लोहिता कहते हैं । यह [illegible] होती है । वा० उत्तर० अ० २६ ।

अन्तः उदरच्छदा पेशी antah-udara-chhadá-peshí-सं० स्त्री० अन्तःस्था । (Transveralis Abdominis).

अन्तः उपाङ्गीया antah-upángiyá-सं० (Internal angular artery) धमनी विशेष ।

अन्तः अंस नाड़ी antah-ansa-náḍí स्त्री० कंधे की भीतरी नाड़ी । ([illegible] nerve of the shoulder.

अन्तः कण्ठगाशिरा antah-kaṇṭhagá[illegible] हिं० स्त्री० (Internal jugular [illegible]) गले की अन्दर वाली अशुद्ध रक्त नाली ।

अन्तः कण्ठशल्यावलोकिनी antah-kaṇṭha-shalyávalokiní-सं० स्त्री० [illegible] विशेष । यह दस अंगुल परिमाण की [illegible] आकृतिः ।

अन्तः करणम् antah-karaṇam-सं० (१) अन्तरिन्द्रिय, भीतरी अवयव, [illegible] अन्तरात्मा । (२) भीतरी चार इन्द्रियाँ (बुद्धि, अहंकार, चित्त और मन) अन्तः करण भीतर के ४ औज़ार कहलाती हैं । (understanding, the heart, will, the conscience, thes[illegible] देखो-अंतः करण ।

अन्तः करतली नाड़ी antah-karatali-[illegible] -हिं० स्त्री० (Deeper nerve [illegible] hand.) हथेली की गहरी नस ।

अन्तः कर्त्तनक antah-karttanak[illegible] संज्ञा पु'० कर्त्तनक दंतोंमें से भीतरी [illegible] छेदक दन्त । (First molar.)

अन्तः कुटिलः antah-kuṭilah-सं० (The conch shell) शंख । [illegible] See-shankha.

न्तः कूर्परिका धमनी antah-kúrpariká-dhamaní-सं० स्त्री० (Medial cubital). तत्वात्मक धमनी विशेष।

न्तः कूर्परिका शिरा antah-kúrpariká-shira-सं० स्त्री० तत्वात्मक शिरा विशेष।

न्तः कोटरपुष्पी,-ष्पिका antah-koṭara pushpí, shpiká-सं० स्त्री० नील वृक्षा, छागलांत्री-सं० । छागलयँदें-यं० । प० मु० । स्त्री० । देखो-छगलांत्री (Chhagalántrí).

न्तः जानु पिण्ड antah jánu-pinda हिं० पु० (Inner tuberosity) घु-टनों पर जंघास्थि का मोटा उभार।

न्तः जंघास्था की आंतरिक शाखा antah-janghásá-kí-ántarika-ṣhákhá-हिं० स्त्री० (Deep tibial nerve, inner branch) पैरकी नाड़ी की भीतर की शाखा।

न्तः जंघास्था की बाह्य शाखा antah-janghásá-kí-váhya-ṣhákhá—हिं० स्त्री० (Deep tibial nerve outer branch) पैर की नाड़ी की बाहरी शाखा।

न्तः जंघास्था नाड़ी antah-janghásá—nárí-हिं० स्त्री० (Deep tibial nerve) टखने (पैर) की गहरी नस।

न्तः जंघास्था पेशी antah-janghásá-peshí-हिं० स्त्री० (Inner part of the soleus muscle) टखने की अन्दर की पेशी।

न्तः जंघास्थि antah-janghásthi-हिं० स्त्री० (Tibia) टखने की अन्दर की हड्डी।

न्तः जंघीया धमनी antah-janghíyá-dhamaní-हिं० स्त्री०(Inner artery of the thigh) जाँघ के अंदर वाली धमनी।

न्तः जंघीया नाड़ी antah-janghíyá-nárí-हिं० स्त्री० (Deep nerve of the thigh.) जांघ के अन्दर की नाड़ी।

अन्तः जंघीया शिरा antah-janghiyá-ṣhirá-हिं० स्त्री० (Internal saphenous vein) जाँघ के अन्दर वाली अशुद्ध रुधिर की नली।

अन्तःत्रिपार्श्विका antah-tripárṣhviká-हिं० संज्ञा स्त्री० (Internal or first cuneiform) कूर्चास्थियों में से एक (प्रथमा) त्रिपार्श्विक अस्थि विशेष।

अन्तः पटल antah-paṭala-हिं० पु० (Retina) नेत्र का जालदार परदा। शबृक्रिय्यह्, तबक़हे शब्किय्यह्-अ०।

अन्तः पदवी antah-padaví-सं० स्त्री० सुषुम्ना नाड़ी। (Spinal cord). वै० श०।

अन्त पाती antah-páti-हिं०वि० (Medial) बीच वाला, मध्यवर्ती, अन्तर्गत।

अन्तः पादतलिकी धमनी antah-pádataliki-dhamaní-सं० स्त्री० धमनी विशेष।

अन्तः पुणुकः antah-púṇukah-सं० पु० (Endoneurium).

अन्तः प्रकोष्ट चालिनी नाड़ियाँ antah-prakoshta-chálini--náriyáṅ-हिं० स्त्री० (ब० व०) (Deep nerves of the lower arm) अग्रबाहु (हाथ) के अन्दर की नाड़ियाँ।

अन्तः प्रकोष्ठास्थि antah-prakoshṭhá-sthi-सं० स्त्री० दोनों प्रकोष्ठास्थियों में से कनिष्ठा की ओर की अस्थि। (Ulna)

अन्तः प्रकोष्ठिका धमनी antah-prakoshṭhiká-dhamaní-सं० स्त्री० (Ulnar artery) अग्रबाहु (हाथ) की अन्दर वाली रुधिर नाली।

अन्तः प्रकोष्ठ (-ष्ठिका) नाड़ी antah-prakoshṭha-nárí-हिं० संज्ञा स्त्री० (Ulnar nerve). भीतरी प्रकोष्ठ नाड़ी।

अन्तः प्रकोष्ठिकाशिरा antah-prakoshṭhiká-shirá–सं० स्त्री० (Basilic vein). शिरा विशेष।

अन्तः प्रगण्ड चालिनी antah-praganḍa-chálini–हिं० स्त्री० (Deep nerves of the upper arm) भुजा को अन्दर की नाड़ियाँ।

अन्तः प्रगण्डीया शिरा antah-pragandíyá-shirá–सं० स्त्री० शिरा विशेष।

अन्तः प्रविष्ठ योनि antah-pravishṭha-yoni–सं० स्त्री० वह योनि जो भीतरकी तरफ चली गई हो।

अन्तः प्राचीर antah-práchíra–सं० (हिं० संज्ञा) पुं० (Inner wall) भीतरी दीवार।

अन्तः फल antah-phala–हिं० संज्ञा स्त्री० अण्ड, आण्ड–हिं०। ओवरी (Ovary)–इं०। यह गर्भाशय के प्रत्येक बाजू (बगल) में एक एक पृथुबन्ध के बीचमें स्थित बादाम की आकृति के स्त्री अंड को कहते हैं। इनकी लम्बाई आधइंच चौड़ाई ¾ इंच और मुटाई आधा इंच होती है। प्र० व० कल्प०। देखो–डिम्बाशय।

अन्तः शरीर antah-sharíra–हिं० पुं० आत्मा, चिदात्मा। (The internal & Spiritual part of man, the conscience, the soul).

अन्तःशिरोधीया धमनी antah-shirodhíyá-dhamaní–सं० स्त्री० (Internal carotid artery) सवामक धमनी विशेष।

अन्तःश्रोणिगाधमनी antahshronigá-dhamaní–सं० स्त्री० (Internal iliac artery, Hypogastric) पेडूके आंतरिक अंगों को पोषण करने वाली धमनी।

अन्तः श्रोणिगा शिरा antah-shronigá-shirá–सं० स्त्री० वस्ति देश की शिरा। (Internal iliac vein, Hypogastric vein)

अन्तःश्रोत्र धमनी antahshrotra-dhamaní–सं० स्त्री० (Internal Auditory artery.) अन्तःश्रवर्ण धमनी।

अन्तःश्रोत्रम् antahshrotram–सं० अन्तःस्थकर्ण। अंतर्कर्ण। (Internal ear)

अन्तःश्रोणिगाशिरा antah-shrodhíshirá–सं० स्त्री० शिरा विशेष।

अन्तः श्वसनम् antah-shvasanam–सं० क्ली० निःश्वास, श्वास लेना, ऊर्ध्वश्वास, मुंख श्वास। (Inspiration) वायु का नासिका में से होकर फुस्फुसों में प्रवेश करना (इससे छाती फैल कर चौड़ी हो जाती है)। जवान मनुष्य एक मिनट में १६-१८ लिया करता है।

अन्तः श्वेत antahshveta–हिं० पुं० गज। (An elephant).

अन्तः सत्त्वा antah-sattvá–सं० स्त्री० संज्ञा पुं० (१) (Semecarpus acardium.) भल्लातक वृक्ष, भिलावे का पेड़। –हिं० वि० गर्भिणी, गर्भवती (pregnant female) मु० च०

अन्तः सुषुम्ना शोथ antah-sushumná-shotha–हिं० संज्ञा पुं० (Polio-myelitis)

अन्तः स्तनीया antah-staníyá–सं० स्त्री० स्तन की पोषण करने वाली। (Internal mammary artery.)

अन्तः स्थकर्ण antah-sthakarna–सं० (Internal ear) गहन, अंत

अन्तः क्षेप antah-kshepa–हिं० सं० [सं० अन्तः+क्षिप् फेंकना] (Injection) इंजेक्शन। इसका शाब्दिक अर्थ भीतर फेंकना है। परन्तु अर्वाचीन वैद्यकीय परिभाषा में तरल द्रव्य का शरीर के किसी भाग में सूचीवेध (इंजेक्शन सिरिंज) द्वारा अथवा तद्वत किसी अन्य यंत्र द्वारा प्रविष्ट करना (सूचिकाभरण) अन्तःक्षेप कहलाता है। अन्तर्वेध। सूचिकाभरण। सूच्यग्र–वेध। सूचिवेध।

ntya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] शेष का, अधम जाति, जघन्य। A shúdra man of the fouth tribe। ०० चंत का। चंतिम। चाखिरी। सब छका।

...कः antya-koshtakah-सं० पुं० (Terminal Ventricle) चाखिरी ...।

...डुः antya-ganduh-सं० पुं० (Terminal Ganglion) चंतिम गण्ड।

...तुः antya-tantuh-सं० पुं०

...पा antya-pushpá-सं० स्त्री० धावकी ...धव का पेड़। (Anogeissus latifolia) फै० मिय०।

...लकम् antya-phalakam-सं० क्ली० (Motor end-plate)

...म् antyángam-सं० पुं० अंतके यंत्र। (End organ).

antyah-सं० पुं० मुस्ता, मोथा। (Cyperus rotundus)।

antram-सं० क्ली०
antra-हिं० संज्ञा पुं० } प्राणियोंके पेट के भीतर की लम्बी नली जो गुदा मार्ग तक रहती है। ...या हुआ पदार्थ पेट में कुछ पच कर फिर इस ...ली में जाता है और मल या रद्दी पदार्थ बाहर ...काला जाता है। मनुष्य की आँत उसके डील ...पाँच व छः गुनी लम्बी होती है।

पर्य्याय—पुरीतत् (रा० नि० व० १८), ...त्र-सं०। अँतड़ी, अंत्र, आँत, रोधा, अंत्री -हिं०। मिश्रा (ए० व०), अम्आम् (ब० व०), मस्रा (ए० व०), मस्रीन (ब० व०)-अ०। इन्टेस्टाइन Intestine (ए० व०), इन्टेस्टाइन्ज Intestines (ब० व०); बॉवेल Bowel (ए० व०), बॉवेल्ज़ Bowels (ब० व०)-इं०।

नोट—आकार तथा परिमाण के अनुसार आँतें दो प्रकार की होती हैं—

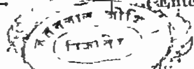
(१) छोटी और (२) बड़ी। पुनः इनमें से प्रत्येक के ३-३ भेद होते हैं। देखो-क्षुद्रांत्र व वृहदांत्र।

अन्त्रअन्योन्यानुप्रविष्ट antra-anyonyánupravishta-हिं० संज्ञा पुं० आँत का एक भाग से दूसरे भाग में उतर जाना। इस विकार में ऊपर के आँत्र का भाग, अधःस्थित आँत्र भाग के पोले स्थान में घुस जाता है। आंत्र के उस भाग को जो प्रवेश करता है प्रवेशक (Intussusceptum) और जिस आंत्र के पोले स्थान में यह प्रविष्ट होता है उसको ग्राहक (Intussuscipiens) कहते हैं। आन्त्रान्त्र प्रवेश।

पर्य्याय—आँतों में बल पड़ना, आँतों में गिरह पड़ जाना। इल्तिवाउल्अम्आऽ, इल्तिवाउल् अम्आऽ, एलाऊस, कौलञ्ज इल्तिवाई, मग्स् रव्व इन्स, इन्सिमाउल् अम्आऽ, तदाखुल् अम्आऽ-अ०। इन्टस् ससेप्शन (Intussusception, ईलियस Ileus, वॉल्व्युलस Volvulus, इन्वैजिनेशन Invagination-इं०।

पर्य्याय-निर्णायक नोट—एलाऊस वस्तुतः यूनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ बलखाना या आवर्त्तन है। एलोपैथिक परिभाषा में इन्टस्ससेप्शन तथा वॉल्व्युलस सामान्यतः स्थूल एवं क्षुद्र दोनों प्रकार की आँतों के आवर्त्तन के लिए प्रयोग में आते हैं। परन्तु, ईलियस मुख्यतः केवल ऊर्ध्व क्षुद्रांत के आवर्तन के लिए प्रयुक्त होता है।

उक्त अन्त्रान्त्रप्रवेशन की क्रिया लघ्वान्त्र और स्थूलान्त्र की सन्धि स्थान में हुआ करती हैं। लघ्वान्त्र का भाग स्थूलांत्र के भीतर कभी कभी इतने वेग से प्रविष्ट हो जाता है या खिंचा हुआ चला जाता है कि उसके परत एकदम गुदद्वार के मुख तक पहुँच जाते हैं। कभी कभी लघ्वांत्र का एक भाग उसी के अन्य भाग में प्रविष्ट हो जाता है, इस प्रकार को लघ्वांत्रिक (Enteric) कहते हैं। और कभी कभी



स्थूलांत्र का एक भाग उसी के अन्य भाग में प्रविष्ट होजाता है, इसे स्थूलांत्रिक(Colica) कहते हैं। ८० प्रतिशत से भी अधिक रोगियों में अधर क्षुद्रांत्र और अंत्रपुट को बृहदांत्र में प्रविष्ट होते हुए देखा गया है। इस प्रकार की अंत्रप्रवेशन क्रिया को अधःक्षुद्रांत्रपुटिक (Ileo-cæcalis) कहते हैं। इसीप्रकार अधर क्षुद्रांत्र, उत्तर क्षुद्रांत्र तथा द्वादशांगुलांत्र का भी व्यावर्त्तन होता है। किसी किसी में अधर क्षुद्रांत्र अपने एक अन्य भाग में प्रविष्ट होकर अधरक्षुद्रांत्रपुटिक कपाट से गुज़र कर बृहदांत्र में पहुँच जाती हैं। इसको अधरक्षुद्रबृहदांत्रिक (Ileo-colica) कहते हैं।

निदान

आंत्र प्रदाह, आंत्र क्षत तथा आंत्रस्थ मांसार्बुद के कारण आंत्रावरोध होना, आंत्र के ऊर्ध्व भाग का अधःभाग में उतर आना और अंत्रवृद्धि में आंत्रावरोध का हो जाना प्रभृति।

लक्षण

तीव्र, आशुकारी, आंत्रांत्रप्रवेशजन्य आंत्रावरोध विशेषकर छोटे बच्चों में पाया जाता है। इसके कारण बच्चों को कभी कभी आक्षेप होता होता है। रोगी को सख्त मलावरोध होता है, बार बार वमन आता है, अंततः वमन में मल विसर्जित होने लगता है जो इस रोग का एक वैज्ञानिक लक्षण है। उदरशूल होता है और उदराध्मान द्वारा वह फूलकर ढोलवत् हो जाता है। रक्त और श्लेष्मा मिश्रित मल निकलता, रोगी अत्यधिक कँखता रहता और बलक्षय आदि लक्षण होते हैं। बलक्षय से बालक २४ घंटे में गत प्राण हो जाता है। यदि उक्त अवधि के भीतर गत प्राण न हो तो उदरककलाप्रदाह के लक्षण (श्वास, हिक्का, तीव्र ज्वर, हृदय की त्वरित गति इत्यादि)होते हैं। विकारी स्थल एक उभार सा मालूम होता है। रोगी अत्यंत तड़फड़ाता है और बड़े कष्ट से प्राण निकलते हैं।

रोग विनिश्चय

बाल्यकाल एवं प्रत्युग्र अंत्रअन्योन्यानुप्रविष्ट की दशा में प्रागुक्त लक्षणों को भ[...] से सरलतापूर्वक इसका निदान हो [...] परंतु कतिपय अति पुरातन दशाओं में [...] वस्था में होता है, इसका निदान द्वारा [...] सरल नहीं। इसका स्वरूप [...] वैसा ही व्यक्त होता है। उदर को [...] पर ही इसका वास्तविक रूप समझ [...] सकता है।

चिकित्सा

इस रोग में कदापि विरेचन न देना [...] बल्कि प्रारम्भ में जब शूल, आध्मान और [...] बलक्षय हो तब उष्ण जल, तैल या तैल [...] मंड की बस्ति देनी चाहिए अथवा धौं[...] आंतों में वायु प्रविष्ट कराना या रोगी [...] करके बलपूर्वक हिलाना उपयोगी। परंतु, जब वेदना व आध्मान अत्यधिक [...] बलक्षय एवं निर्बलता असीम हो [...] सिवा शस्त्रक्रिया अर्थात् चीर फाड़ की [...] और कोई उपाय नहीं। अस्तु, जितनी [...] किया जाए उतना ही अच्छा हो। यह [...] दक्ष शल्यशास्त्री ही कर सकता है।

नोट—बस्तिदान काल में सेर स[...] जल बस्तियंत्र की नली द्वारा अंत्र [...] पहुँचाना चाहिए। जल बाहर निक[...] उदर को नीचे से ऊपर की ओर धीरे [...] चाहिए। यदि रोगी को उलटा कर [...] तो पहिले उसको ईथर या क्लोरोफ[...] विसंज्ञ कर लेना चाहिए।

आयुर्वेद के अनुसार उदावर्त रोग[...] गीत चिकित्सा,कुछ अंशमें, इसरोग [...] सफलीभूत हो सकती है। अस्तु, ल[...] कर तदनुसार कोई औषध की व्यव[...] रोगी लाभ अनुभव करता है और [...] के बखेड़े से बच जाता है। किंतु दवा [...] यथासम्भव शीघ्र ही करना चाहिए।

प्राचीन यूनानी चिकित्सकों ने इस[...] वास्तविक रूप को समझने में धोख[...] अतएव उन्होंने इसकी चिकित्सा अंत्रो[...]

ग़ूल के समान लिखी है। उदाहरणार्थ-विरे-
का प्रयोग और वस्तिदान या पेट पर अट्ठी
ःपिया) लगाना आदि। परंतु जैसा कि
ा हुआ इस रोग में विरेचन देना अत्यंत
ाकारक है। इसलिए प्राकथित डॉक्टरी
ाक्सा की ही शरण लेनी चाहिए।

ाथ्य—रोगी को थोड़ा, स्निग्ध एवं उष्ण
पतला आहार दें। दूध में सोडावाटर मिला
या दूध में अंडे फेंटकर या पतला सागू,
रूट, यख़नी (मांसरस) अथवा शोरबा
ति थोड़ी थोडी मात्रा में तीन-तीन चार-चार
बाद दें। यदि इतने पर भी न पचे तो
क वस्ति द्वारा रोगी का पोषण करें।

ाणिका antra-kaniká-सं० स्त्री० गेंदा,
ःचारिणी। (Tagetes Erecta).

ाः antrakújah-सं० पुं० वायुरोग
ोष। नाड़ी शब्द। (Rumble) सु० नि०
अ० १६ श्लो०।

ाजनम् antra-kújanam-सं० क्लो०
Rumble) आंत्रध्वनि, आँतोंका शब्द, पेट में
गुड़ (गड़गड़) आदि शब्द होना, आँतो की
ाुड़ाहट, अंतड़ियों की कुड़कुड़ाहट।

ाच्छदा कला antrachchhadá-kalá
हिं० संज्ञा स्त्री० (Omentum)-अंत्रछ-
ाकला।

ाम्रा antra-támrá-सं० स्त्री० गेंदा,
ाचारिणी। (Tagetes Erecta).

ाधारक कला antra-dháraka-kalá-
हिं० संज्ञा स्त्री० उदरच्छदा कला का वह भाग
जो आँत को पृष्ठवंश के साथ बाँधता है। मेसे-
ण्टरी Mesentery-इं०। मासारीक़ा-अ०।
देखो-मासारीक़ा।

ापरिशिष्ट antra-prishishta-सं० हिं०
पुं० उपांत्र (Appendix), बृहत् अंत्रके आर-
म्भिक थैली जैसे भाग (अंत्रपुट) में दो तीन इञ्च
लम्बी एक पतली नली लगी रहती है, उस नली
को उपांत्र या अंत्रपरिशिष्ट कहते हैं। उपांत्र
का क्या विशेष काम है यह अभी किसी को ठीक
तौर से मालूम नहीं। सब मनुष्यों में इसकी
लम्बाई एक ही जैसी नहीं होती; किसी में यह
½ इञ्च से अधिक लम्बी नहीं होती किसी में ८
इञ्च लम्बी भी होती है। इस नली का कभी
कभी प्रदाह हो जाता है; और फोड़ा भी बन जाता
है तब इसको काटकर निकाल देनेकी आवश्यकता
होती है। देखो—उपांत्र।

अन्त्रपाचम् antra-pácham-सं० क्लो० स्थावर
विषांतर्गत त्वक् (छाल) और सार तथा निर्यास
(गोंद) विष विशेष। सु० कल्प० २ अ०
श्लो० ७।

अन्त्रपुच्छ antra-puchchha-हिं० संज्ञा पुं०
(Appendix) अन्त्रपरिशिष्ट।

अन्त्रपुट antra-puta-हिं० संज्ञा पुं० सीकम्
Cæcum-इं०। (मिआअ्) अअ्वर-अ०।
रोदहे चहारम्, रोदहे काज, कानी आँत-उ०।

चतुर्थ आँत, यह बृहद् अंत्र में की वह आँत
है जो अधरक्षुद्रांत्र के बाद थैली की शकल में
स्थित होती है। आँतों के विरुद्ध दो मार्गों के
स्थान में इसमें केवल एक ही मार्ग होता है।
इसीलिए अरबी में इसको अअ्वर अर्थात् एक
चक्षु या कानी आँत कहते हैं। अन्त्रवृद्धि में प्रायः
यही आँत अंडकोषों में उतर आती है; क्योंकि
अन्य आँतों के समान यह बंधक सूत्रों द्वारा बँधी
नहीं होती।

अन्त्ररुत्सेचनापः antra-rutsechanápah
-सं० पुं० मेदाघातरोधक, पचननिवारक।
(Antiseptic.)

अन्त्रवचा antravachá-सं० हिं० स्त्री० चोब-
चीनी (Smilax glabra, Roxb.)

अन्त्रवल्लिका antra-valliká-सं० स्त्री०
महिषवल्ली। रा० नि० व० ६।

अन्त्रवल्ली antravalli-सं० स्त्री० सोमवल्ली
लता। वै० श०।

अन्त्रविद्रधि antravidradhi-सं० हिं०
स्त्री० उपांत्र प्रदाह, (Appendicitis)

अन्त्रवृद्धि antra-vriddhi–हिं० संज्ञा स्त्री०
अन्त्रवृद्धिः antra-vriddhih–सं० स्त्री०

आंत्रवृद्धि, आंत्रवृद्धि। (Intestinal Hernia, Hernia)। फ़त्क़ मिआई, फ़त्क़ मिअ्वी–अ०। आँत का फ़त्क़–उ०। आँत उतरना आँत उतरने का रोग। एक रोग जिसमें आँत का कोई भाग ढीला होकर नाभि के नीचे उतर कर फोते में चला आता है और फोता फूल जाता है, जिससे अण्डकोष में पीड़ा उत्पन्न होती है। अतएव केवल लक्षणकी ओर ध्यान रखकर आयुर्वेद में इसे वृषण विकारांतर्गत मान लिया गया है। परंतु अण्डवृद्धि एक अलग रोग है जिसको डॉक्टरीमें ऑर्काइटिस (Orchitis) अर्थात् अण्डप्रदाह कहते हैं। देखो—वृद्धि।

नोट—चिकित्सा प्रणालीत्रय के ग्रंथों के गवेषणापूर्ण तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि आयुर्वेदीय चिकित्सा ग्रंथों में वृद्धि शब्द का प्रयोग जिन अर्थों में होता है प्रायः उन्हीं अर्थों में अँगरेज़ी शब्द हर्निया (Hernia) और फ़ारसी फ़त्क़ का होता है। यद्यपि ये तुल्यार्थक नहीं और न इनका सर्वांश में समान भावों के लिए उपयोग ही होता है, तोभी अल्प सामान्य भेदोंके सिवा इनमें समानता काफ़ी अधिक भाव सन्निविष्ट है। अस्तु इनका पूर्णतः समान अर्थों में प्रयोग करना हमें श्रेष्ठतर जान पड़ता है। पूर्ण विवेचन के लिए देखिए वृद्धि।

तीनों चिकित्सा प्रणाली के मत से अंत्रवृद्धि वृद्धिरोग का केवल एक भेद मात्र है।

निदान लक्षण—वातप्रकोपक आहार करने, शीतल जल में डुबकी लगाकर नहाने, मल मूत्र के वेग रोकने अथवा मल मूत्र का वेग न होते हुए बलपूर्वक उनके प्रवर्तन करने, बलवान के साथ युद्ध करने, अधिक बोझ उठाने, अत्यंत मार्ग चलने, अङ्गों के टेढ़ा मेढ़ा चलाने इत्यादि कारणों से तथा अन्य वातप्रकोपक कारणों द्वारा प्रकुपित वात क्षुद्रांत्रीय अवयवों को विकृत (संकुचित)कर उनको जब अपने स्थान से नीचे लेजाता है तब ये वंक्षण की संधि में स्थित हो ... के समान सूजन को प्रकट करते हैं। ... अन्त्रवृद्धि कहते हैं। फिर ... स्थित ... कुछ काल में यह ... होती है। इसकी चिकित्सा न करने से ... पीड़ा तथा स्तम्भयुक्त मुष्कवृद्धि ... मा० नि० वृद्धि०।

चूँकि आंत्रवृद्धि रोग कभी तो ... है और कभी संपादित। अस्तु, ... दो प्रकार के होते हैं। अर्थात् एक ... दूसरा संपादित। अब इनमें से प्रत्येक ... पृथक् सविस्तार वर्णन किया जाता है।

(१) जातज या सहज अर्थात् पैदायशी ...

(क) विटप प्रदेश में अण्डमार्ग ... न होना, बालकों में अण्ड का वृषण ... अथवा कम उतरना।

(ख) उदर की दीवार तथा मांस ... जन्म से कमज़ोर होना और वंक्षण प्रभृति के छिद्रों का कोमल होना।

(ग) आंत्र के बंधन अथवा ... वसामय झिल्ली का अस्वाभाविक ... होना भी इस रोग का हेतु है।

(घ) सहज रूप से उदर की दीवार ... पथ मांसपेशियों के सम्मुख छिद्र या ... जाना जिनके मार्ग से अंत्र (... प्रभृति ऊपर को उभर आती है। ... का प्रायः यही कारण हुआ करता है।

(ङ) जन्म काल में नाभि ... जाना, जिससे नाभ्यंत्रवृद्धि होती है।

(२) संपादित हेतु

(क) उदर पर चोट का लगना।

(ख) शस्त्रक्रिया करने के पश्चात् ... यथार्थ रूप से पूरित न होना।

(ग) अधिक भार वहन, अधिक ... विशेषतः उठाकर सीधे खड़ा हो जाना ... क्योंकि उक्त अवस्था में उदर पर जो ... विषमांग प्रवर्तन, खाँसने आदि

इन कारणों से वात प्रकुपित होने के कारण) छिद्र और भी बड़े हो जाते हैं, तथा उन्हीं के काल पाकर बड़ी अँतड़ियों का (अथवा छोटी अँतड़ियों का भी) कुछ भाग नीचे उतर कर सरल मार्ग से वंक्षण संधि से होते हुए वृषणों में प्रवेश कर जाता है। ऐसी स्थिति में जब उन छिद्रों में आकुञ्चन की क्रिया होती है तब उन अँतड़ियों में दबाव के पड़ने से अत्यन्त वेदना होती है।

चिरकारी कास, अत्यन्त श्रम और चिरकारी मलावरोध इत्यादि कारणों से भी यह रोग हो जाता है।

(घ) जठरस्नायु को दुर्बल या शिथिल करने वाले कारण—मेदोवृद्धि, आंत्रपतन रोग इत्यादि।

(ङ) बस्त्यश्मरी प्रभृति के कारण जब मूत्रावरोध हो, जिससे मूत्रोत्सर्ग काल में काँखना या जोर लगाना पड़े, तब भी प्रायः यह शिकायत हो जाती है।

(च) गर्भावस्था में उदर की दीवार पर जोर पड़कर उसके तनने से भी उदरांत्रवृद्धि की उत्पत्ति होती है।

(छ) इसी प्रकार वृद्धावस्था में जब उदर शिथिल होकर तोंद निकल आता है तब उग्र कास प्रभृति से इस रोग के होने का भय होता है।

(ज) स्थूल या मेदस्वी व्यक्तियों को भी यह रोग अधिक हुआ करता है। क्योंकि उदरस्थ मेदवृद्धि के कारण उदरीय अवयवों पर भार पड़ कर पेट तना रहता है, इत्यादि।

वृद्धि के भाग

प्रत्येक वृद्धि सम्बन्धी अर्बुद के तीन भाग होते हैं। यथा—(१) ग्रीवा, (२) गात्र और (३) मुख।

अस्तु आँत का हिस्सा जहाँ निकलता है उसको ग्रीवा और जहाँ ठहरता है उसे गात्र कहते हैं। कई बार ग्रीवा के तंग होने के कारण या ग्रीवा का मुख बंद हो जाने के कारण अंत्रवृद्धि विन्यस्त नहीं हो सकती।

अंत्रवृद्धि भेद

स्थानानुसार पूर्व विविध लक्षणों से युक्त होने के कारण अंत्रवृद्धि रोग कई प्रकार का होता है। यहाँ उनमें से प्रत्येक का विस्तृत वर्णन दिया जाता है :—

(१) वंक्षणांत्रवृद्धि—जब अन्त्रच्छदा कला वंक्षण स्थान में विदीर्ण हो जाए, जिससे कोई वस्तु (अंत्र या वसा प्रभृति) उदर में से नीचे आकर वंक्षण अर्थात् पड्डे की नली में रुक जाए, किंतु अंडकोष में न उतरे, तब उसको उक्त नाम से अभिहित करते हैं। अरबी में इसे फ़त्क़ुल् उर्बियह् या फ़त्क़ क़ाज़्री तथा अँगरेज़ी में ब्युबोनोसील (Bubonocele) कहते हैं।

नोट—ज्ञात रहे कि वंक्षण में दो प्राकृतिक नलियाँ होती हैं—(१) वंक्षण नलिका (Inguinal canal)–इस मार्ग से होकर अंड अपनी डोरी (अण्डधारक रज्जु) से अण्डकोष में उतरता है। और (२) ऊर्ध्व नलिका (Femoral canal) इसके रास्ते उरु की रगें गुज़रती हैं। अस्तु जब उदर में से अन्त्र या वसा वंक्षण नलिका में उतर कर उभर आए तब उसको वंक्षणांत्रवृद्धि कहते हैं और यदि वह ऊर्ध्व नलिका (जो वंक्षण के बाहर की ओर स्थित है) में उतर कर उभर आए तो उसको ऊर्ध्वांत्रवृद्धि कहते हैं। अब इनमें से प्रत्येक का अलग अलग वर्णन किया जाता है।

वंक्षणांत्रवृद्धि

पड्डेका फ़त्क़–उ०। फ़त्क़ुल् उर्बियह्-अ०। इंग्विनल हर्निया (Inguinal hernia) –इं०। इसके मुख्य ४ भेद हैं—

(१) वंक्षण सरलांत्रवृद्धि, (२) वंक्षण तिर्यग् (असरल) अन्त्रवृद्धि, (३) सहजांत्रवृद्धि और (४) कोषाकार वृद्धि। रोग की उत्पत्ति के विचार से पुनः इनकी ये अवस्थाएँ होती हैं। अस्तु, यदि वृद्धि वंक्षण की नली के भीतर ही रहे, बाहर न निकले तो उसे अपूर्ण अन्त्रवृद्धि, अरबी में फ़त्क़ नाक़िस् तथा अँगरेज़ी में इनकम्प्लीट हर्निया (Incomple:

hernia) वा ब्युबोनोसील (Bubonocole) कहते हैं । और जब वह बाहर निकल आए तब उसको क्रमशः पूर्ण अन्त्रवृद्धि, फ़त्क़ कामिल तथा कम्प्लीट हर्निया (Cmpiete hernia) कहते हैं । चूँकि पुरुषोंमें यह अण्डकोष में चली जाती है । अस्तु इसको अण्डकोषवृद्धि (मुष्क वृद्धि) फ़त्क़ मिफ़्न वा फ़ोतह् का फ़त्क़ और स्क्रोटल हर्निया (Scrotal hernia) कहते हैं । स्त्री के शरीर में यह वंक्षण या ऊरुसंधि के कुछ नीचे प्रकट होती है । स्त्रियों की अपेक्षा यह पुरुषों को ही हुआ करती है । इसे आयुर्वेद में ब्रध्न कहा गया है । इनमें से यहाँ प्रत्येक का पृथक् पृथक् वर्णन किया जाता है—

(क) तिर्यग् वंक्षण-अंत्रवृद्धि

चड्डेका तिर्छा फ़तक़–उ० । फ़त्‌कुल् उर्बिय्यह् मुन्हरिफ़–अ० । ऑब्लीक इंग्वीनल हर्निया (Oblique inguinal hernia)–इं० ।

इस प्रकार की आंत्रवृद्धि वंक्षण प्रणाली (Inguinal canal) में होती है, उससे बाहर नहीं निकलती । लक्षण-इस प्रकार की वृद्धि में रोगी के खड़े होने या खाँसने से वंक्षण की नाली के भीतर उभार प्रतीत होता है । यदि नाली के भीतर अंगुली प्रविष्ट कर रोगी को खाँसने की आज्ञा दें तो खाँसने से अंगुली पर उक्त वृद्धि के आघात का बोध होता है । इस भाँति की तिर्यग् वंक्षण वृद्धि में वृद्धि अण्डाकार होती है । उस पर छः परत होते हैं । कौशेयी धमनियाँ और अण्डधारक रज्जु उक्त वृद्धि के पीछे तथा अण्डकोष उसके नीचे होते हैं ।

(ख) सरल वंक्षण-अन्त्रवृद्धि

चड्डेका सीधा फ़तक़–उ० । फ़त्‌कुल् उर्बिय्यह् मुस्तक़ीम–अ० । डायरेक्ट इंग्वीनल हर्निया (Direct inguinal hernia)–इं० ।

लक्षण-इस प्रकार की वृद्धि में आंत्र प्रभृति वंक्षण नलिका में से न निकल कर उसके बहिरियग्र के पीछे से निकलती है । इस दशा में वृद्धि अत्यन्त स्थूल होती है । तिर्यग् वृद्धि के समान इस पर भी छः परदे होते हैं । इस की वृद्धि में कौशेय धमनियाँ और रज्जुएँ वृद्धि की ग्रीवा की पीछे की ओर स्थित मालूम होते हैं । अंगुष्ठाकार गोल शकल को उपस्थमूल के [illegible] स्थित होती है ।

(ग) जातज या पैदायशी (सहज) अंत्रवृद्धि

पैदायशी फ़त्क़–उ० । फ़त्क़ मौलूदी–[illegible] कन्जेनिटल हर्निया (Congenital hernia)–इं० ।

यह भी एक प्रकार की तिर्यग् वंक्षणवृद्धि है [illegible] जन्म काल अथवा जन्मके पश्चात् उत्पन्न [illegible] है । इस में वसा वा अंत्र का भाग आंत्र [illegible] अंडवेष्ट में उतर आता है और उसमें [illegible] रहता है । इसकी थैली उक्त वेष्टके पर्दों [illegible] है और अंत्र अण्ड के पीछे रहती है । [illegible] की वृद्धि की रसौली (अर्बुद) [illegible] उसकी ग्रीवा संकुचित होती है । [illegible] वृद्धि से पृथक् होते हैं । परन्तु, उसमें [illegible] होते हैं । इसके साथ अण्डकोष में जल [illegible] (कुरण्ड–हाइड्रोसील) भी होता है ।

नोट—गर्भावस्था में अण्ड उदरमें [illegible] कला (परिविस्तृत कला) के पीछे और [illegible] नीचे रहते हैं । पाँचवें मास में वृषण की [illegible] वृषणों में उतरती हैं । किसी किसी के [illegible] या ६ मास हो जाने पर ये गुठलियाँ [illegible] वस्ति नहर में आती हैं, फिर सातवें [illegible] कमर के सामने और आठवें मास में [illegible] स्थान में उतर पड़ती हैं । जब अण्ड उतर [illegible] उतर कर अण्डकोष में आता है, [illegible] उदर की दीवार के मांस एवं सौत्रिक [illegible] कोषों के अतिरिक्त एक कोष उदरककला (Peritoneum) का भी होता है । [illegible] भाग होते हैं । प्रथम वह जो अण्डधारक [illegible] को आच्छादित करता है और द्वितीय [illegible] को आवरित करता है । जन्म के बाद [illegible] रज्जु को आच्छादित करने वाला उदरक [illegible] भाग नष्ट हो जाता है और [illegible]

ण्डवेष्ट का निर्माण करता है। परन्तु जातज वृद्धि में अण्डधारकरज्जु वाला उदरककला भाग नष्ट नहीं होता। अतएव उदरक कला अण्डवेष्ट के बीच रास्ता रह जाता है इसे होकर उदर से वसा वा अंत्र उतर आती है।

कोषयुक्त वृद्धि—कीसह्‌दार फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ मुकय्यस-अ०। इन्सिस्टेड हर्निया (Incysted Hernia)-इं०।

यह भी एक प्रकार की जातज वृद्धि ही है जिसमें अण्डधारकरज्जु-आच्छादक उदरककला भाग एक पर्दे के कारण थैली बन जाता है। यह थैली साधारणतः अण्डवेष्ट के पीछे रहती है। इस प्रकार की वृद्धि का जातज वृद्धि से निदान करना कठिन होता है। क्योंकि दोनों के लक्षण समान होते हैं।

स्थानानुसार इसके कतिपय अन्य भेद होते हैं जिनमें से प्रत्येक का यहाँ क्रमशः वर्णन किया जाता है, यथा—

उदरीय वृद्धि—पेट का फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ बत्नी, फ़त्क़ मराक़ुय्यह्‌ नी-अ०। ऐब्डोमिनल हर्निया Abdominal hernia-इं०।

इस प्रकार की वृद्धि में नाभि के गिर्द उदरक कला के फट जाने के कारण वसा वा अन्त्र ऊपर को उभर आती है।

(२) नाभ्यंत्र-वृद्धि—नाफ़ का फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ सुर्री, फ़त्क़ सुर्रती, नुतुउल्-सुर्रह्-अ०। अम्बिलाइकल हर्निया Umbilical hernia, ऑम्फैलोसील Omphalocele-इं०।

इस प्रकार की वृद्धि में नाभिस्थल पर उदरक कला के फट जाने के कारण वसा वा अन्त्र ऊपर को उभर आती है। इस लिए नाभि भी उभरी हुई मालूम होती है। ऐसे रोगी को भारतवर्ष में सूण्डा (पं० में धुन्नल) कहते हैं। इसके तीन प्रकार हैं :—

१—जन्मतः बाल्यावस्था में होने वाली,

२—प्रौढावस्था में होने वाली—(और

३—वृद्धावस्था में होने वाली।

(३) अंत्रवृद्धि—आँत का फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ मिआई, फ़त्क़ मिअ्‌वी-अ०। इन्टेस्टाइनल हर्निया Intestinal hernia-इं०।

यह वही प्रकार है जिसका वर्णन हो रहा है। आयुर्वेद में केवल एक इसी प्रकार की अन्त्रवृद्धि का वर्णन किया गया है। देखो—वृद्धिः।

(४) सक्थि वृद्धि (ऊर्वन्त्र वृद्धि)—रान का फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ फ़ख़्ज़ी-अ०। फेमोरल हर्निया Femoral hernia-इं०।

इस प्रकार की वृद्धि में वंक्षण के बाहर (उरु या जानु के ऊपरी भाग) की ओर उरु की नाली (Femoral Canal) में वसा वा अंत्र बाहर को उभर आती है। इस प्रकार का फ़त्क़ प्रायः स्त्रियों को हुआ करता है। जिस स्त्री के कई बच्चे हो गए हों उसको प्रायः यह विकार होता है।

लक्षण—वंक्षणके बाहरकी ओर उरुके ऊर्ध्व भाग में एक गोल उभार वा सूजन जान पड़ती है और खाँसते समय संक्षोभ इत्यादि लक्षण होते हैं।

नोट—पूर्व यूनानी चिकित्सकों ने इस प्रकार की वृद्धि (फ़त्क़) को भी वंक्षणस्थवृद्धि (फ़त्क़ उर्बिय्यह्) संज्ञा से ही अभिहित किया है; परन्तु इसको ऊर्वंस्थवृद्धि (फ़त्क़ फ़ख़्ज़ी) कहना अधिक उपयुक्त एवं उचित है। डॉक्टरी में इसको फेमरलसील (Femoralcele) भी कहते हैं।

(५) अंडकोष वृद्धि (अंत्राण्डवृद्धि)—फ़ोते का फ़त्क़-उ०। फ़त्क़ सफ़्नी, क़ीलह्, उद्रह्, कर्व-अ०। स्क्रोटल हर्निया (Scrotal hernia-इं०।

इस प्रकार की वृद्धि में अंडकोष में अंत्र उतर आता है।

नोट—अंडकोष में पानी उतरने को कुरण्ड Hydrocele (मूत्रज वृद्धि) और वायु उतरने को वातज वृद्धि Physocele कहते हैं। देखो—वृद्धिः।

(६) गुह्येन्द्रिय वृद्धि—शर्मगाह की

फ़त्क़-उ० । फ़त्क़ुल् इस्तहियाई-अ० । प्युडेण्डल हर्निया Pudendal hernia -इं० ।

इस प्रकार की वृद्धि में वसा या अन्त्रका कोई भाग गुह्येन्द्रिय की ओर उतर आता अर्थात् उभर आता है ।

(७) जठरस्थ वृद्धि—वेण्ट्रल हर्निया Ventral hernia-इं० ।

यह वृद्धि नाभि के ऊपर होती है ।

दबने वाली वृद्धि

दबने वाला फ़त्क़-उ० । फ़त्क़ ग़ैमाज़ी -अ० । रेड्युसिब्ल हर्निया Reducible hernia-इं० ।

इस प्रकारकी वृद्धि चित लेटने पर आप ही या हाथ से उसको (आंत्रवृद्धि को) विन्यस्त करने पर दूर हो जाती है, केवल उस समयके जब ग्रीवा का मुख बंद हो या तंग । खाँसने या खड़े होनेकी दशा में वह फिर प्रकट होती है । रोगी के खाँसते समय यदि शोथस्थल पर हाथ रक्खा जाए तो वह फैलता हुआ मालूम होता है । खाँसने से शोथ पर एक तरंग सी मालूम होती है । यह शोथ उदर की दीवार से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है ।

आंत्रवृद्धि होने की दशामें शोथ गोल, कोमल, और लचकदार (लचकदार) होता है । हर्निया को विन्यस्त करने पर यदि आँत होगी तो गड़गड़ शब्द करेगी और झटके के साथ उदर गह्वर के भीतर प्रविष्ट होगी । मेदवृद्धि होने पर उभार चपटा, ढीला और विषम होता है और विन्यस्त करने पर धीरे धीरे उदर में प्रविष्ट होता है ।

न दबने वाली वृद्धि

न दबने वाला फ़त्क़-उ० । फ़त्क़ आसी -अ० । इर्रेड्युसिब्ल हर्निया Irreducible hernia-इं० ।

इस प्रकार की वृद्धि में उतरी हुई वस्तु (आंत्र प्रभृति) दबाने से अपनी जगह पर लौट नहीं जाती, अपितु दिन दिन बढ़कर विविध प्रकार के दुःखों का कारण होती है । इस प्रकार की वृद्धि पाशित वृद्धि में परिणत होकर उत्पन्न कर देती है ।

लक्षण—उदर में शूल, चूमनवत् आध्मान, मलबद्धता इत्यादि नानाप्रकार के [illegible] द्रव खड़े हो जाते हैं । ऐसी स्थितिमें, उस [illegible] को ऊपर स्वस्थान में पहुँचाने का प्रा[illegible] उपाय तो करना ही चाहिए, किन्तु साथ [illegible] साथ उसमें शोथ न आने पाए इसका भी [illegible] करते रहें । रोगी को अल्पाहार कराना उस [illegible] रहना चाहिए । इधर उधर घूमना भी [illegible] रहना हानिकर है ।

शोथयुक्त वृद्धि

सूजा हुआ फ़त्क़, मुतवर्रम फ़त्क़-उ० [illegible] फ़त्क़ वर्मी-अ० । इन्फ्लेम्ड हर्निया In[illegible] med herina-इं० ।

इस प्रकार की वृद्धि में उतरी हुई [illegible] (आँत प्रभृति) में शोथ हो जाता है । [illegible] विकारी स्थल पर सूजन होती और उसमें [illegible] उष्णता तथा रक्तवर्णता हो जाती है और [illegible] कला के प्रदाह के लक्षण भी प्रारम्भ हो जाते [illegible] सूजन के बाद अवरोध के लक्षण उत्पन्न [illegible] हैं, तीव्र वेदना होती और प्रायः न्यूनाधि[illegible] वमन, अजीर्ण मलबद्धतादि लक्षण हो [illegible] इसमें अन्त्र भाग विन्यस्त नहीं हो सकता ।

अवरोधजन्य वृद्धि

मुरद्द शाला (दार) फ़त्क़-उ० । फ़त्[illegible] -अ० । इन्कार्सिरेटेड हर्निया Incarcerat[illegible] hernia-इं० ।

यह वृद्धि की एक अवस्था है जिसमें [illegible] हुई वस्तु (आँत प्रभृति) कोष की [illegible] किसी प्रकारका अवरोध होने अथवा किसी [illegible] कारण से उसका विन्यास नहीं हो सकता । [illegible] में अत्यंत वेदना होती है । कभी कभी आँत [illegible] वस्त के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं । इस [illegible] की वृद्धि वृद्ध व्यक्तियों को ही आया करती है ।

पाशित या अवरुद्ध अंत्रवृद्धि

फँसा हुआ फ़त्क़-उ० । फ़त्क़ [illegible] -अ० । स्ट्रैंगुलेटेड हर्निया Strangulat[illegible] hernia-इं० ।

इस प्रकार की वृद्धि में उतरी हुई वस्तु (आंत्र प्रभृति) शोथयुक्त होकर छिद्रों में पूर्णतः फँस जाती है। यह (अन्त्राँत्री) ऊपर तो नहीं जाती, प्रत्युत उसका कुछ भाग, वंक्षण संधि के आन्तरिक छिद्रों में दृढ़ता के साथ अटक जाता तथा अत्यन्त वेदना को करता है। कोई इसी को "आन्त्र या वद्" कहते हैं। यह अंत्रवृद्धि की एक तीसरी अवस्था है जिसकी उपेक्षा करने से मृत्यु अवश्यम्भावी होती है।

लक्षण—मलावरोध तथा उदराध्मानजन्य शूल होता और बारबार इसकी हाजत होती है। किन्तु मल नहीं उतरता या बहुत कम होता है। वमन आते हैं। पहिले आमाशयस्थित सब आहार मुख द्वारा बाहर निकल पड़ता है। फिर अम्ल या तिक्त ऐसा पित्त निकलता है, फिर कुछ श्वेत द्रव्य (कदाचित् यह रस ही निकलता हो) निकलता है। बाद में मल के समान दुर्गंधित द्रव्य निकलता है—अर्थात् पुरीषावरोध जन्य आवर्त के प्रायः सब लक्षण इसमें दिखाई पड़ते हैं।

यथा—

शूलो परिकर्तिका च संगः पुरीषस्य तथोऽन्त्रजातः।
आस्याद्यथा निरेति पुरीष येनोऽभिहते नरस्य॥

तदनन्तर वृषण या वंक्षण स्थित शोथ पत्थर के समान कठोर हो जाता है; किन्तु धीरे धीरे बढ़ता जाता है। रोगी का चेहरा काला पड़ जाता है। वमन बन्द नहीं होते, रोगी को किसी प्रकार चैन नहीं पड़ता, वह निराश हो जाता है। नाड़ी की गति मंद पर रह रह के चपल होती है। हिक्का की भी प्रबलता होती है।

कुछ काल पश्चात् वह सूजन या गाँठ कुछ श्याम वर्ण की होती है, वेदना कुछ शमन हुई सी जान पड़ती है, रोगी की जीवनाशा कुछ पल्लवित सी होती है कि तुरन्त ही यमराज उसका समूल नाश कर देते हैं।

अन्त्रवृद्धि की असाध्यता

वह अंत्रवृद्धि (उपलक्षणात्मक अंडवृद्धि) जिसमें अफरा, पीड़ा और जकड़ना हो; उसकी चिकित्सा न करने पर यदि अंडकोष को दबाने पर उसमें की वायु आँतों सहित ऊपर को चढ़ जाए और छोड़ने पर नीचे उतर कर अण्डकोषों को फुला दे और उसमें उक्त सभी वात के लक्षण मिलते हों तो यह अन्त्रवृद्धि असाध्य है। जैसा कि लिखा है—

उपेक्ष्यमाणस्य च मुष्कवृद्धिमाध्मानरुक्स्तम्भवती स वायुः। प्रपीडितोऽन्तः स्वनवान् प्रयाति प्रध्मापयन्नेति पुनश्च मुक्तः॥
अन्त्रवृद्धिर साध्योऽयं वातवृद्धिसमाकृतिः।
मा० नि०।

यहाँपर यह बात ध्यान रखने योग्य है कि आयुर्वेदीयमतानुसार अंत्रवृद्धि और मूत्रजवृद्धि दोनों वात के ही कारण से होती हैं। केवल उत्पत्ति के हेतु पृथक् पृथक् हैं। अर्थात् मूत्र संधारणादि से कुपित हुआ वात मूत्रजवृद्धि करता है, और भार हरण, विषमांग प्रवर्तनादि से कुपित वायु अंत्रवृद्धिको (Intestinal Hernia) को करता है। जैसा कि लिखा है—

मूत्रान्त्रजावप्य निलाद्धेतुभेदस्तु केवलम्।

अंत्रवृद्धि में वृषणान्तर्गत अण्ड या ग्रंथि में किसी प्रकार शोथ या प्रदाह प्रभृति नहीं होता और जो वेदना होती है, वह सदैव नहीं होती; किंतु जब होती है तब बहुत असह्य होती है।

चिकित्सा.

आयुर्वेदीय मतानुसार—

आँतें जब तक अंडकोष में न उतरी हों तब तक वात वृद्धि के सदृश चिकित्सा करें। यथा—

अंत्रहेतु के।
फलकोशम सम्प्राप्ते चिकित्सा वात वृद्धिवत्।
वा० चि० अ० १३।

यदि रोगी को क़ब्ज़ियत रहती हो तो उसकी जठराग्नि दीपन करने के लिए वस्तिकर्म के द्वारा नारायण तैल का प्रयोग करें।

अंत्रवृद्धिमदीप्ताग्ने वस्तिभिः समुपाचरेत्।
तैलंनारायणंयोज्यं पानाभ्यंजन वस्तिभिः॥

अंडकोष में आँतों के उतर आने की दशा में निम्नांकित उपचार करें।

सुकुमार नामक रसायन वाग्भट्टोक्त तथा गंधर्वहस्त तैल इस रोग में उत्तम प्रमाणित होते हैं। अस्तु इनमेंसे किसी एक का नियमपूर्वक उपयोग करने से लाभ होता है।

गोमूत्रयोग—गोमूत्र १॥ से २ तो० में गूगल (१ से ३ मा०) अथवा एरण्ड तैल १ से १॥ तो० मिलाकर नित्य सवेरे पान करने से अंत्रवृद्धि का नाश होता है। यह योग वातज वृद्धि पर भी अच्छा काम देता है।

रास्नादि क्वाथ—

रास्ना, गिलोय, खिरेंटी, मुलहठी, गोखरू, और एरण्ड की जड़, इनको समभाग लेकर, यवकुट चूर्ण करलें। नित्य प्रातः २ से ४ तो० तक चूर्ण लेकर उसमें ३२ से ६४ तो० तक जल डालकर मन्दाग्नि से औटाएँ। जब ४ तो० या ८ तो० जल शेष रहे तब उतार कर छान लें। फिर उस में एरण्ड तैल १ या २ तो० डालकर पान करने से (७ या १४ दिन तक) अवश्य लाभ होता है। यथा शार्ङ्गधर—

रास्नामृतावलायष्टी गोकण्टेरण्डजः शृतः।
एरंडतैल संयुक्तो वृद्धिमंत्र भवांजयेत्॥

लाख कचनार के बीज, सोंठ, देवदारु, गेरू, कुंदरू, इनको काँजी में पीस कर अण्डकोश पर गरम गरम प्रलेप करने से अंत्रवृद्धि दूर होती है, यथा—

लाक्षा कांचनका बीजं शुंठी दारु गैरिकम्।
कुन्दरू कांजिकैर्लेप्यमुष्णं च विवर्द्धने॥
(योगचिन्तामणिः)

पीपल, जीरा, कूट, बेर सुखाया हुआ, गोबर, इनको काँजी में मिला कर लेप करने से भी उपरोक्त परिणाम होता है। यथा—

पिप्पली जीरकं कुष्ठं बदरं शुष्क गोमयम्।
कांजिकेन प्रलेपैरन्त्रवृद्धि विनाशनः॥
(वृ० नि० र०)

बालकों की अंत्रवृद्धि पर केवल पलाश की छाल व काढ़ा पिलाने से ही लाभ होता है। यथा—

अन्त्रवृद्धिप्रशमनाय किंशुकत्वकषायमपि।
पाययेच्छिशुम्॥ (वैद्य मनोरमा)

करंज के बीजों को पिसकर अंत्र[illegible] थोड़ा अरण्डी का तेल मिलाएँ। फिर इस को तम्बाकू के पत्ते पर गाढ़ा गाढ़ा लेप पत्ता अपत्य पर रात्रि के समय बाँध देने से अंत्रवृद्धि में लाभ होता है।

छोटे बालकों की अंत्रवृद्धि या इसके[illegible] पर इन्द्रायन अच्छा काम देता है। यथा—

इन्द्रवारुणिका मूलं तैलं पुष्करजं[illegible]
संमर्द्य च स गोदुग्धं पिबेद्वृद्धि[illegible]
(वृ० नि० र[illegible]

एलोपैथी मतानुसार—

प्रायः सभी प्रकार के अंत्रवृद्धि रोग[illegible] एवं अत्यंत भयावह होते हैं। अकस्मात[illegible] उत्पन्न होने से शोथ होकर यह रोगी के नाश का कारण हो सकता है, अस्तु इसके उपचार में विलम्ब व आलस्य कर[illegible] नहीं।

यद्यपि वृषणोंमें उतर आई हुई अंतड़ियों को फिर से पूर्ववत् दाबकर ऊपर[illegible] कठिन कार्य है तथापि उष्ण जल में[illegible] अथवा वृषणों पर बर्फ आदि का उपयोग[illegible] के मार्ग में पाशवत् फँसी हुई अंतड़ी[illegible] को ढीला किया जा सकता है तथा अंतड़ी[illegible] भाग को कुछ संकुचित कर, युक्तिपूर्वक[illegible] चढ़ाया भी जा सकता है। परंतु यदि[illegible] स्थित बंधन का दबाव अधिक और[illegible] चिकित्सा करने में बहुत देर हो गई हो[illegible] क्रिया करना अधिक उपादेय है।

यद्यपि इसकी वास्तविक चिकित्सा[illegible] है, जो केवल बच्चों और युवाओं[illegible] भूत होती है; तो भी ऐसा न हो सकने पर[illegible] बाह्योपचार ट्रस (Truss) अर्थात् पट्टी[illegible] है। अस्तु, विविध प्रकार की अंत्रवृद्धि[illegible] नाना भाँतिकी पट्टियाँ डॉक्टरी औषध विक्रे[illegible] दूकानों से मिल सकती हैं। पट्टी[illegible] प्रकार अथवा किसी भी वस्तु से निर्मित हो[illegible] विशेषता यह है कि उसके लगाने से न तो[illegible] को किसी प्रकार की हानि पहुँचे व[illegible]

ने ही पाए और न उससे शारीरिक चेष्टा में किसी प्रकारकी बाधा उपस्थित हो और न उसके निरुपयोगसे छिद्रका प्रसार ही हो। ठीक मापकी यदि किसी अन्य स्थान से मँगाना हो तो पृथ भेद और यथार्थ माप लिखना चाहिए।

अन्त्रवृद्धि में माप लेने का नियम यह है—की अस्थि की ऊर्ध्व धारा से लगभग १ इंच वृद्धि के छिद्र तक पेड़ू की परिधि को नाप। इस नापके अनुसार पेटी मँगवानी चाहिए। प्रत्येक पुरुष की मोटाई पर निर्भर है। से वृद्धावस्था में स्थायी आराम नहीं होता तक ट्रस (पेटी) लगी रहे तब तक आँत हिस्सा नहीं उतरता, जब वहाँ से न लगाई तो फिर आँत का हिस्सा उतर आता है। यदि बाल्य एवं युवावस्था में प्रारम्भ से ही तर १–२ वर्ष तक पेटी लगी रहे और उतने में एक बार भी आँतका भाग न उतरा हो तो मार्ग सदैव के लिए बंद होजाता है एवं रोगी स्थ्य लाभ करता है। तो भी स्वस्थ होजाने बाद भी रोगी को वर्ष दो वर्ष तक पेटी लगाते रहना चाहिए, जिसमें रोग के पुनराक्रमण की का न रहे।

पेटी लगाने से यद्यपि प्रारम्भमें किञ्चित् कष्ट अनुभव होता है। पर दो चार दिवस में ही वह हो जाता है। रात्रि में सोते समय पेटी को उतार देना चाहिए शेष सभी काल में उसको लगाए रहना चाहिए। प्रातः काल शय्या से उठने प्रथम उसे लगा लेना चाहिए जिसमें वृद्धि बार बार बाहर आने से उसका छिद्र बड़ा न हो जाए। अन्यथा पेटी लगाने का लाभ नष्ट होता रहेगा। पेटी की गद्दी अर्थात् पिचु भाग को स्वच्छ एवं शुष्क रखना चाहिए। उस पर भी कभी खड़िया मिट्टी वा जिंक ऑक्साइड (यशद भस्म) अवचूर्णित कर दिया करें जिसमें स्वेद तथा भार से वहाँ की त्वचा निर्बल एवं क्षतयुक्त न हो जाए।

टिप्पणी

• यह उपर्युक्त उपाय विन्यस्त होने वाली अन्त्रवृद्धि के लिए है। अस्तु, यह स्मरण रहे कि पेटी लगाने से पूर्व रोगी को उत्तान लिटाने और टाँग सिकोड़ने से आँत वा परिविस्तृत कला का आया हुआ भाग स्वयमेव यथा स्थान चला जाता है। इस प्रकार उनको विन्यस्त करके फिर पेटी लगाएँ।

यदि इस प्रकार वे यथास्थान प्रविष्ट न हों तो वृद्धि को वाम हस्त की उँगलियों से पकड़ कर दाहिने हाथ से उनको धीरे धीरे भीतर प्रविष्ट करें। किंतु यह स्मरण रखें कि जो भाग सबसे पीछे उतरा हो वह सबसे पहिले भीतर जाए यदि इस प्रकार भी सफलता न हो तो क्लोरोफॉर्म सुँघाकर यह क्रिया करें।

इस भाँति पेशियों को शिथिल कर हर्निया भीतर प्रविष्ट की जा सकती है।

यदि वृद्धि विन्यस्त न होने योग्य (न दबने वाली अर्थात् यथास्थान न लौट जाने योग्य) हो तो पेटी का पिचुभाग वा गद्दी ऐसी हो जो उसकी पूर्ण रक्षा कर सके और उस पर किसी प्रकार का भार न पड़े। इस प्रकार की वृद्धि में शोथ हो जाने पर रोगी को सुखपूर्वक लिटाए रखें, किसी प्रकार की गति न करने दें। उसकी जानु के नीचे एक बड़ा सा तकिया रखें, जिसमें हर्निया का छिद्र ढीला होकर वेदना कम हो जाए। वस्त्र या रबड़ की थैली में बर्फ भरकर शोथ युक्त स्थान पर रखें और आध आध घंटा पश्चात् वृद्धि को धीरे धीरे नीचे और पीछे को दबाएँ। ऐसा करने से प्रायः हर्निया अपने स्थान पर चली आती है और रोगी के प्राण बच जाते हैं। वेदना हरणार्थ मॉर्फीन (अहिफेनीन) और एट्रोपीन (धत्तूरीन) का त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करें, अथवा एक एक ग्रेन अहिफेन आध आध घंटा के अन्तर से तीन चार बार दें। परन्तु, खाने को कुछ न दें और विरेचन किसी दशा में न दें। २४ घंटे हर्निया के फँसे रहने पर फिर उसमें शोथ होकर रोगी के प्राणांत हो जाने की आशंका होती है। अस्तु, यदि उसमें अवरोध प्रभृति हो तो तत्काल वस्तिक्रिया करनी चाहिए। तदनन्तर उस पर बर्फ लगाना चाहिए।

नोट—अन्त्रवृद्धि रोगी को बहुत दस्तावर से विरेचन लेना चाहिए। यथासम्भव उसका म लेनाही उत्तम है। मलावरोध होने की दशा में उष्ण जल द्वारा वस्ति लेनी चाहिए।

अन्त्रवृद्धि के लिए—डॉक्टरी चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाली अमिश्रित औषधें—

टार्टर इमेटिक, क्लोरोफॉर्म, ईथर, ओपियम् (अहिफेन), अम्बाई एमीडान्,, टबेकम् (तम्बाकू), उष्ण स्नान, रसमोषध और बर्फ।

अन्त्रवेल antra-vela-सं० एक हिन्दी दवा है (An indigenous drug.)

अन्त्रश्छदा कला antrashchhadá-kalá-हिं० संज्ञा स्त्री० अन्त्रच्छदा कला, अन्त्रावरण, उदरावरण। ओमेण्टम् Omentum, एपिप्लून Epiploon, कॉल Caul-इं०। म. र्ब-अ० थारोमईं थियह्, चादर पियह्-फ़ा०।

नोट—कॉल उस झिल्ली को भी कहते हैं जो जन्मकाल में शिशु के शिर पर लिपटी हुई निकलती है। वस्तुतः यह भ्रूणावरण का एक भाग है।

उदर की बसामय झिल्ली जो आँतों पर फैली होती है। वास्तव में यह उदरच्छदा कला का ही एक भाग है जो उसके नीचे आमाशयिक द्वार से कोलून तक परिस्तृत होता है।

इसके दो भाग हैं—

(१) वृहद् अन्त्रच्छदा कला (म. र्ब कबीर) जो आमाशय के वृहन्मुख से आरंभ होकर कोलून तक जाती है इसको अँगरेज़ी में ग्रेट ओमेण्टम् (Great omentum) कहते हैं।

(२) क्षुद्र अन्त्रच्छदा कला (म. र्ब सग़ीर) जो आमाशय के क्षुद्रमुख से आरम्भ होकर यकृत तक जाती है। अंगरेज़ी में इसको लेसर ओमेण्टम् (Lesser omentum) कहते हैं।

अन्त्रश्छदाकला छेदन antrashchhadá-kalá-chhedana-हिं० संज्ञा पुं० अन्त्रच्छदा कला का काटना। कृतए म. र्ब-अ०। ओमेण्टेक्टोमी Omentootomy-इं०।

अन्त्रश्छदाकला प्रदाह antrashchhadá-kalá-pradáh-हिं० संज्ञा पुं० अन्त्रच्छदा कला (आँतों को आच्छादित करने वाली कला) की सूजन। ओमेण्टाइटिस Omentitis-इं०। इल्तिहाब म. र्ब, वर्म म. र्ब-अ०।

अन्त्रश्छदिक वृद्धि antrashchhadika-vridhi-हिं० संज्ञा स्त्री० अन्त्रच्छदा कला के किसी भाग का उतर आना। एपिप्लोसील Epiplocele-इं०। फ़त्क़ म. र्बी-अ०।

अन्त्रशोधक antrashodhaka-हिं० पुं० आंत्र पचननिवारक। दाफ़िआते तअफ़्फ़ुन अम्आ-अ०। Intestinal antiseptic-इं०। आंत्रस्थ द्रव्यों में अभिषव (किण्व) अथवा सड़ांध पैदा न हो या उनमें हो तो द्रव्यों को अभिशोधित होने से रोकें इस हेतु कभी पचननिवारक (Antiseptic) औषधों का उपयोग होता है। आमाशय-पचननिवारक (Gastric antiseptics) तथा दुग्धाम्ल (Lactic) और सैलोल (Salol) और कैलोमेल प्रयोजन के लिए व्योहार किए जाते हैं।

नोट—आंत्रस्थ द्रव्यों का (शरीरमें होते हैं) कीट रहित (Disinfect) करना सम्भव है या नहीं? यह बात संदेहपूर्ण है। यदि यह सम्भव हो तो भी प्रद भी है या नहीं? क्यों कि आंत्र में सूक्ष्माणु विद्यमान होते हैं जो सामान्य आंत्र की पाचनक्रिया के सहायक होते हैं। अभी ऐसी औषधों के प्रयोग का चलन रहा है। और उसमें किसी सीमा तक भी हुई है।

अन्त्रशोषान्तकः antrashoshántak-सं० पुं० नीबू, सहिजन, दुग्धवहारी (?), चिरायता, गिलोय, शतावरी, अश्वगन्धमूल, विदारीकंद, बला, असगंध, मुसली, इनके रस द्वारा कांत लोह में टृथक्

र भावना देकर वाराहपुट की आँच दें। नः इस भस्म के समान सीसभस्म, अभ्रक, [व]र्ण, ताम्र तथा लोह भस्म लें और त्रिफला [ति]लौह मे आधा भाग मिलाकर उपर्युक्त [द्रव्]यों के क्वाथ तथा चित्रकार के रस की भावना [क]र रख लें। मात्रा–३ रत्ती।

गुण–यह अंत्रशोथ, कुक्कुमप्रदाह, जीर्ण ज्वर, [क्]षय, राजयक्ष्मा, श्वास, गुल्म, अरुचि, अति-[सा]र, संग्रहणी को नष्ट करता और बल की वृद्धि [क]रता है। र० यो० सा०।

[अन्त्रच्छ]दा शिरा antraṣhchhadá-ṣhirá सं० स्त्री० अंत्र से अशुद्ध रक्त को ले आने वाली [शि]रा।

[अन्त्रस]ंकोचक antra-sankochaka-हिं० [सं]० पुं० इन्टेस्टाइनल ऐस्ट्रिञ्जेण्ट्स (Intestinal astringents)। वे औषधें जो [अन्]त्र के कृमियत् आकुंचन को शिथिल एवं उनके [स्रा]वों को कम करती हैं।

[अन्त्र]संधि antra-sandhi-हिं० स्त्री० दोनों [आ]ँतों का जोड़।

[अन्त्रहा]निकर antra-háni-kara-हिं० देखो–[अन्त्र]क्षिरात अमुआश्।

[अन्त्रक्ष]य antra-kshaya-हिं० संज्ञा पुं० (Intestinal Tuberculosis) यह [रोग] एक प्रकार के यक्ष्मा कीट के अन्त्र में [प्र]वेश करने से होता है। देखो–राजयक्ष्मा।

[अन्त्राण्]डवृद्धि antránḍa-vriddhi-हिं० संज्ञा [स्]त्री० [सं०] (Scrotal hernia) देखो–[अ]न्त्रवृद्धि।

[अन्त्राद]: antrádah-सं० पुं० आभ्यन्तर कृमि (Internal worm)। देखो–कृमिः। [मा]० नि०। शार्ङ्ग ७ अ०।

[अन्त्रा]धः धमनी antrádhah-dhamaní-[हिं]० संज्ञा स्त्री० (Inferior mesenteric artery.)। वह धमनी जो अंत्रधारक [क]ला से नीचे स्थित है।

[अन्त्रा]धः शिरा antrádhah-ṣhirá-हिं० संज्ञा [स्]त्री० (Inferior mesenteric vein). वह शिरा जो अन्त्रधारक कलासे नीचे स्थित है।

अन्त्राधः पेशी antrádhah-peshi-सं० स्त्री० (Inferior mesenteric muscle) वह पेशी जो अन्त्रधारक कलामें नीचे स्थित है।

अन्त्रान्त-अन्त्रसंधि antránta-antra-sandhi-हिं० स्त्री० (Cecum) दोनों आँतों का जोड़। देखो–अन्त्रपुट।

अन्त्रालजी antrálaji (मा०) | अन्त्रालजी andhrálaji (सु०) –सं० स्त्री० वात श्लेष्म जन्य क्षुद्ररोग विशेष। लक्षण–यह फुन्सी जो कठिन, मुख रहित, ऊँची, गोल, मण्डलाकार तथा अल्पपीव (रत्त) युक्त हो। यह कफ और वात के प्रकोप से होती है। मा० नि० क्षुद्ररो०।

अन्त्री antrí-सं० स्त्री० वृद्धदारक लता, वृद्धदारु, विधारा। (See–Vidhárá.) फॉ० इं० २ भा०। अ० टी०। –हिं० संज्ञा स्त्री० अन्त्र, आँत, अँतड़ी। (Intestine.)

अन्त्रोर्ध्व धमनी antrordhva-dhamani -हिं० संज्ञा स्त्री० (Superior mesenteric artery.) वह धमनी जो अन्त्रधारक कला से ऊपर स्थित है।

अन्त्रोर्ध्व शिरा antrordhva-ṣhirá-सं० स्त्री० (Superior mesenteric vein) वह शिरा जो अन्त्रधारक कला से ऊपर स्थित है।

अन्थकम् anthakam-सं० क्ली० अङ्गार। (A firebrand; embers.) रत्ना०।

अन्थाइलिस anthyllis-यु० रुद्रवन्ती, रुद्रवन्ती-हिं०। (Cressa cretica, Linn.) फा० इं० २ भा०। देखो–रुदन्तिका (न्ती)।

अन्थीनालू anthinalú-ता० गुले-अब्बास -फा०, इं० बा० । (Mirabilis jalapa, Linn.) फा० इं० ३ भा०।

अन्थेमिक एसिड anthemic Acid-इं० बाबूने का सत, बाबूने का तेजाब। इसके सूचिकाकार वर्णरहित रवे होते हैं। गंध–बाबूना के समान ग्राह्य। स्वाद–अत्यन्त कड़ुआ। यह जल, मद्यसार, ईथर एवं क्लोरोफार्म में घुल जाता है। इसको वर्नर (Werner) महोदय ने सन्

१८६७ ई० में बाबूना पुष्प से विशेष प्रक्रिया द्वारा प्रस्तुत किया था। फा० इं० २ भा०। देखो—बाबूना।

अन्थेमिस आर्वेन्सिस anthemis Arvensis, Linn.)-ले० बाबूनह, शज्रतुल्-काफ़ूर। फा० इं० २ भा०। देखो—बाबूना।

अन्थेमिस किआ anthemis chia, Linn. -ले० बाबूनह् भेद। फा० इं० २ भा०।

अन्थेमिस नोबिलिस anthemis nobilis-ले० बाबूनह्, शज्रतुल्-काफ़ूर। फा० इं० २ भा०।

अन्थेमाइडीन anthemidin-इं० बाबूनह् के तेज़ाब को मद्यसार में घोलने पर जो पदार्थ तलस्थायी होजाता है उसमें एक प्रकार का स्वाद रहित, रवायुक्त सत्व होता है, जिसे "अन्थेमीडीन" कहते हैं। यह मद्यसार, ईथर और क्लोरोफॉर्म में अविलेय होता है, किन्तु एसीटिक एसिड (सिरकाम्ल) में विलीन हो जाता है। फा० इं० २ भा०।

अन्थेमून anthemon-यु० बाबूनह् भेद। फा० इं० २ भा०।

अन्थेरिकम ट्युबरोसम anthericum Tuberosum, Roxb.-ले०, खुन्स्-अ०,फा०, यु०। (Asphodel) फा० इं० ३ भा०।

अ (ऐ) न्थेल्मिण्टिक anthelmintic इं० कृमिघ्न, कृमिहर, कृमिनाशक। (Medicine) of use against intestinal worms. । देखो—कृमिघ्न।

अ (ऐ) न्थोसिफैलस् कडम्बा anthocephalus cadamba, Miq.H.K; Br.-कदम्ब, कदम। इं० मे० मे०।

अ(ऐ)न्थ्रिस्कस सेरीफ़ोलिअम् anthriscus cerefolium, Hoffm.-ले०। अत्रीलाल -इं० वा०। फा० इं० २ भा०। देखो—आतरीलाल।

अन्थ्रैक्स anthrax-इं० देखो—ऐन्थ्रैक्स।

अन्दम ãandam-अ० (१) पतंग (Cæsalpinia sappan, Linn.) बक़म। (२) (Kino) दम्मुल अख़्वैन-अ०। (३) Red sandal wood. रक्तचन्दन। इं० हैं० गा०।

अन्द्रूमाख़ुस andarumákhus-यु० (Andromachus) हकीम बुक़रात के समकालीन एक प्रसिद्ध यूनानी हकीम हुए हैं। यह यूनान के महाराजाधिराज नीरो के निजी चिकित्सक (राजवैद्य) थे। इन्हीं ने एक अगद निर्मित किया था जो "तिर्याक फ़ारूक़ रूमाली" नाम से प्रसिद्ध है। ये ६० वर्ष की अवस्था में स्वर्गवासी हुए।

अन्दलीब ãandalíba-अ० बुलबुल, पक्षी विशेष। (Nightingale.)।

अन्दलुस andalus-अ० इस्पानिया। स्पेन (Spain-इं०)। अरब के लोग स्पेन (Spain) को अन्दलुस कहते हैं। अन्दलूसिया स्पेन का एक प्रान्त था, जिसको प्रतिभाशाली के समयमें ज़ियाद के पुत्र तारिक़ ने सन् ... में सर्व प्रथम विजय किया था। इसी समय से अरब लोग स्पेन को अन्दलुस कहते हैं। इस देश में बड़े बड़े नामवर हकीम या चिकित्सक उत्पन्न हुए। इनमें से किसी किसी का वर्णन इस कोष में दिया जायगा। चूँकि "स्पेन" यूरोप महाद्वीप में स्थित है, अतः इस मुल्क के हकीम एवं वैद्यों को पश्चिमी हकीम भी कहते हैं।

अन्दाब andáb-अ० प्रण चिह्न, क्षतों के ...।

अन्दाम andám-फ़ा० शरीर; अवयव; ...। (Body, an organ.)

अन्दाम दाना andám-dáná-फ़ा० ... अंगुली। फोर फिंगर Fore Finger-इं०।

अन्दाम पेश andám-pesha } ...

अन्दाम शर्म andám-sharma } ... भाग, भग। अन्दामनिहानी, शर्मगाह ... औरत-अ०। (Pudendum, Vulva)

अन्दिका andiká-सं० स्त्री० चुल्लि। अग्नि... See-Chulli.

अन्द्रानी andraní-सहाल्, निर्गुण्डी। (Vitex Negundo.)। इं० हैं० गा०।

andhah-सं० त्रि० (१) नेत्रहीन, धा (Blind)। -क्लो० (२) तिमिर, धकार (Darkness.)। मे० धद्विक। ३) (न्धम्) यश। रा० नि० व० २०। ४) जल (Water)। श्रम०। (५) त, ओदन, भक्त (Boiled rice)। ० नि० र० रू० व०।

andhakah-सं०पुं० तुम्बुरु, धनियाँ वाली) । (Xanthoxylon alatum) ० पू० १ भा० ह० व०।

कः andha-kákah-सं० पुं० (A ird) काकाकार पक्षी। पानकौड़ि-बं०। तुवा-म०। नि०का०।

ारः andha-kárah-सं० पुं० अँधेरा, प्रकाशाभाव (Darkness)। इसके निम्न यायवाची शब्द हैं, जैसे—ध्वान्तं, तमिस्रं, मिरं, तमः (अ०), भूच्छाय (रा०),अंधतमसं वतामसं, सन्तमसं, अवतमसं। गुण— , दृष्टि, तेज तथा अवरोधकारक और रोग- क। राज०।

नोट—महाअंधकार को अंधतमस, सर्व- तपो वा चारों ओर के अंधकार को संतमस र थोड़े अंधकार को अवतमस कहते हैं। (२) उदासी। कांतिहीनता।

पः andha-kúpah-सं० पुं० (१) (Loss of consciousness or nse)। (२) अंधा कुआँ। (A blind ell)

मस andha-tamasa-हिं० पुं० अत्य- अन्धकार। (Great darkness).

t andhatá-सं० स्त्री० (१) पित्तरोग Biliary disease)। वै० निघ०। २) अन्धापन। (Blindness)

ुष्पी andha-pushpí-हिं० संज्ञा स्त्री० न्धाहुली, अर्क-पुष्पी, अर्काहुली।

ूतना andha-pútaná-सं० स्त्री० बालक हपीड़ा विशेष। इसके लक्षण निम्न हैं, यथा- . जो बालक स्तन से द्वेष रक्खे (अर्थात् माता के स्तन को नहीं पीवे) तथा अतिसार, खाँसी, हिचकी, वमन और ज्वर इनसे पीड़ित हो, वर्ण बिगड़ जाए, सोते समय नीचे को मुख करके सोए, खट्टा खट्टा गंध आए, ऐसे बालकको अंध पूतना से पीड़ित कहते हैं।

चिकित्सा—तिक्त द्रुम अर्थात् निम्बादि तिक्त रसयुक्त वृक्षों के पत्र में सिद्ध किए हुए जल से स्नान, सुरादि साधित तैल तथा पिप्पली आदि द्वारा साधित घृत के उपयोग द्वारा उपयुक्त सम्पूर्ण विकार शमन होते हैं। सु० उ० २७। ३३ अ०।

अन्धमूषा andha-múshá-सं० स्त्री० औषध पाकार्थ यन्त्र विशेष। इसे वज्रमूषा भी कहते हैं।

विधि—दो भाग तिनकों की भस्म, एक भाग बाँबी की मिट्टी, एक भाग लोह किट्ट, एक भाग सफ़ेद पत्थर का चूरा और कुछ मनुष्य के बाल डालें। सब को एकत्र कर बकरी के दूध में औटा दो पहर पर्यन्त अच्छी तरह घोंटें, पीछे उस मिट्टी का गौ के थन के सदृश गोल और लम्बी मूषा बनाएँ। पीछे इसका ढकना बनाकर धूप में सुखा इसमें पारा भर ढकने से ढक दें और सन्धियों को उसी मिट्टी से बंद करें। यह पारा मारने को वज्रमूषा कहा है। इसी को अंध- मूषा कहते हैं। र० सा० सं०। कश्चिद्विः।

अन्धमूषिका andha-múshiká-सं० स्त्री० (१) देवताड़ वृक्ष। (See-Devatára)। (२) तृण विशेष। (A grass.) श० च०।

अन्धरन्ध्रम् andha-randhram-सं० क्लो० अन्धपुट छिद्र। (Foramen cæcum).

अन्धला andhalá- } -हिं० वि० अचक्षु, बिना
अन्धा andhá- } आँख का। (Blind)

अन्धस्थानम् andha-sthánam-सं० क्लो० }
अन्धस्थान andhasthána-हिं० संज्ञा पुं० }
अंधेरा स्थान। (Blind spot).

अन्धसुदर्शक अञ्जनम् andha-sudarshaka anjanam-सं० क्लो० कृष्ण सर्प १, काले बिच्छू ७ लेकर एक दूधके कलश में २१-दिन पर्यंत

ने दिन तक रखें। उसमें से निकाले हुए मक्खन को मुर्गे को खिलाकर पुष्ट करें। उसका बीट से अञ्जन करने से अन्धता दूर होती है। चं० से० सं० नेत्र रो० चि०।

अन्धाहिः andháhih–सं० पुं० कुँचिया मीन। कुँचेमाछ, जलमेटे–बं०। त्रिका०।

अन्धाहुली andháhulí–सं० स्त्री० आहुल्य नामक शिम्बी-फल वनस्पति विशेष। भुञ्जित रस–हिं०। तरवड़–काश०, मह०। See–áhulyam.

अन्धाहिक andháhika–अन्धा साँप। एक प्रकार का साँप। कौटि० अर्थ०।

अन्धिका andhiká–सं० स्त्री० (१) सर्वपी, सफेद सरसों। (२) स्त्री विशेष। (A woman) मे० कत्रिक। (३) नेत्र रोग विशेष (An eye-disease.).

अन्धियार,–रा andhiyára,–rá–हिं० पुं० अंधेरा। (Dark, darkness).

अन्धुक andhuka–हिं० पुं० जंगली अंगूर–द०। आमोलुका–बं०। इण्डियन वाइल्ड वाइन (Indian wild vine)–इं०। वाइटिस इण्डिका (Vitis Indica, *Linn.*)–ले०। विग्नी डी' इण्डी (Vigne d' Inde)–फ्रां०। युवॉस डास ब्युगिऑस (Uvas dos bugios)–पुर्तगा०। शेम्बर-वल्लि–ते०। चेम्पार-वल्लि-मल०। राण-द्रॉन, कोले जान–मह०। गाव-मंम्बर-कों०।

द्राक्षावर्ग

(*N. O. Ampelideæ*)

उत्पत्तिस्थान—पश्चिम प्रायद्वीप, मध्य भारतवर्षीय पठार, बङ्गाल, मालाबार तथा ट्रावनकोर।

वानस्पतिक-विवरण—यह एक वृहत् आरोही पौधा है जिसमें चिरायु (बहुवर्षीय) कंदमूल होता है। उक्त पौधे के पत्र पुष्प तथा समग्र आकृति द्राक्षा का स्मरण दिलाती है। इसका मूल कन्द के वृहद् गुच्छों का समूह है जो माध्यमिक मूल-तन्तुमें लगा रहता है। कंद एक से दो फीट लम्बे, शंक्वाकार (दोनो सिरों पर), ताजे होने पर अधिकाधिक व्यास (चौड़ाई) [illegible] इंच; बाहरमें ये धूसर वर्णीय उत्तरी [illegible] चिन्ह होते हैं जिन पर वृत्ताकार धारी [illegible] सूक्ष्म मस्सावत् उभार होते हैं भीतर से [illegible] वर्णीय एवं नरम होते हैं। पतन (पत) [illegible] पर एक स्थूल धेरा युक्त त्वक् भाग [illegible] पृथक् किए जाने योग्य और माध्यमिक [illegible] भाग मुकुन्दवत् दीख पड़ता है।

सूक्ष्मदर्शक से जड़ की परीक्षा करने [illegible] पतली दीवार के पैरेन्काइमा (Parenchyma) से बने दीख पड़ते हैं जिनके [illegible] वृहदायतनाकार श्वेतसारीय कण तथा [illegible] रवों के असंख्य गट्ठे (Bundles) [illegible] मूल तथा मूल त्वक् के बाहरी भाग में [illegible] बड़े बड़े कोष्ठ होते हैं।

स्वाद—कुछ कुछ मधुर, लुआबी [illegible] दैला। कंद चूर्ण तथा पांशु (Pot[illegible] —अवयवों से पूर्ण होते हैं। ताजी अवस्था में [illegible] लेट ऑफ लाइम की सूचियों द्वारा उत्पन्न [illegible] क्षोभ के कारण वे चरपरे होते हैं।

इतिहास तथा उपयोग—रहीडी के [illegible] इसकी जड़का रस नारियलके मलाई के साथ [illegible] दूषापहक (Depurative) तथा [illegible] साथ रेचक रूप से व्यवहार किया जाता है। [illegible] कच्छ के देहाती लोग इसके क्वाथ को [illegible] आउंस की मात्रा में परिवर्तक रूप से भी [illegible] में खाते हैं।

उनका विचार है कि यह रक्त शुद्धिकर्ता [illegible] अल प्रभावकर्ता और स्रावों (की क्रिया) [illegible] स्वस्थता प्रदान करता है।

गोवील (बं०) Vitis latifolia [illegible] भी उसी हेतु उपयोग में आता है। (फा० [illegible] १ भा०। इं० मे० मे०) इसके मूलस्वरसको [illegible] साथ मिलाकर चक्षु रोगोंके लिए एक उत्तम [illegible] प्रस्तुत करते हैं। और नारिकेल दुग्ध के [illegible] मिलाकर इसको कारबंकल तथा अन्य [illegible] के दुष्ट व्रणों पर लगाते हैं। इं० मे० प्लां० [illegible] यह परिवर्तक तथा मूत्रल है। इं० ड्र० इं०।

... andhulah-सं० पु०)
... andhula-हि० संज्ञा पुं०)
...र वृक्ष, सिरिस का पेड़ (Albizzia
Lebbeck.)। शा० प०।

...-री andherá,-ri-हि० पुं०, स्त्री०
...धेरा। (Darkness).

annam-सं० क्लो० } (१) Grain,
anna-हि० संज्ञा पुं० } (१) Grain,
...ज्ञ द्रव्य, अनाज, नाज, धान्य। दाना,
...ना। (२) (Food material) खाद्य
...र्थ, व्रीहि एवं यव आदि खाद्य द्रव्य मात्र।
...र्स, चोष्य, लेह्य और पेय भेद से यह चार
...र का होता है। किसी किसी ने लिलेप, निः
...धेय, चर्वोष्य और खाद्य इन चार और भेदों
... मिलाकर इसको ८ प्रकार का लिखा है।
राजनिघण्टुकार भी चर्व्य आदि भेद से अन्न
...ो ८ प्रकारका लिखते हैं। रा० नि० व० २०।
(३) पकाया हुआ (अन्न)। भक्त। भात।
...स्कृत पर्याय—भक्त, अन्धः, भिस्सा (स्त्री),
...ई, कूरः, ओदनः (पुं), भक्तं (क्ली), जीवनक
... है), दीदिविः, ...िकं, ...ति, ...
...इ र०)। इसको पांच गुने जल में पकाना
...हिए। यह पंच गुण में सिद्ध करणीय है।
...० ह० ज्वर० चि०। च० सू० २ अ०। भिस्स
...पक्व। पक्वान्न (Boiled rice)। मधा-
...र (भृगीपुर) अनाज को धान्य और तुष-
...हित पदार्थ को अन्न कहते हैं, भोग में जो हो उसको
...न्य और तुषरहित को अन्न कहा है। वशिष्ट।
जिस प्रकार जलदान (जल की मात्रा) के अनुसार
...ग्र के चार भेद होते हैं। उसी प्रकार भक्त, वि-
लेपी, यवागू और पेया भेद से भक्त चार प्रकार
का होता है। प्रयोग रत्नाकरः। अन्न के
गुण—अग्निकारक, पथ्य, तर्पण, मूत्रल, और
हलका। बिना धोया हुआ और बिना
माँड निकाला हुआ अन्न—शीतल, भारी,
वृष्य और कफजनक है। भली प्रकार धोया
हुआ अन्न—उष्ण, विशद और गुणकारक है।
भूंजिया चावल का भात—रुचिकारक,सुगंधि,
कफघ्न और हलका है। अत्यन्त गीला—

...ग्निनाशक और ...हुआ होता
है। भइ० प० ११। ६। ...में पकाया
हुआ भक्त लघु, अग्निदीपक और रुचिकारक
है। वै० निघ०।

मिश्रित गुणः अन्न—स्वादु शीतल, रुचिकारक,
अग्निदीपक, ... एवं पुष्टिकर है तथा ...,
... और ... नाशक है।

... में ... हुआ अन्न—रुचिकारक,
तृप्तिजनक, दीपन और ... का नाश करने
वाला है।

गुड़युक्त युक्त अन्न—बलकारक, और ...
मिला हुआ पित्तज्वर में हित है।

... अन्न—लघु, शीतल, अग्निजनक, मधुर
वृष्य, निद्राकारक, रुचिजनक और ...
... है।

यवान्न (यव)—भारी, मधुर, वृष्य तथा
स्निग्ध है और गुल्म, ज्वर, कफरोग, कास और
प्रमेह नाशक है।

गेहूंवान्न (गेहूँ)—तर्पण, भारी, वृष्य
और धातुवर्धक है।

यौनान्न (यवनालान्न अर्थात् ज्वार
का भात)-भारी, बल तथा काम और श्वास की
प्रवृत्ति करने वाला है।

कोद्रवान्न (कोद्रों का भात)—रुचिकारक,
मधुर, प्रमेहनाशक और मूत्र विकार नाशक तथा
मुखनाशक है और वमन, कफ, वात एवं दाह
नाशक है।

श्यामाकान्न (सावाँ का भात)—रुचिकर,
लघु, रूक्ष, दीपन, बल्य एवं वातकारक है और
प्रमेह, गलरोग तथा मूत्रकृच्छ्र नाशक है।

नीवारान्न—रुचिप्रद, लघु, दीपन, गुरु तथा
वातकारक है। और यकृत, प्लीहा, श्वास एवं
शूलनाशक है।

कुलत्थान्न (कुलथी)—मधुर, रूक्ष, उष्ण,
लघु, पाक में कटु तथा दीपन है और कफ, वात,
कृमि रोग और श्वासनाशक है।

माषान्न (उड़द)—दुर्जर (कठिनतापूर्वक
पचने वाला), भारी, मांस वर्द्धक और वृष्य
तथा वातनाशक है।

शिग्व्यन्न मधुर तथा रूक्ष है और वात पित्त प्रकोपक है।

वैदलान्न—भारी और रुचिकारक है।

आढक्यन्न (अरहर)—भारी है तथा कफ पित्त नाशक है।

मत्स्यौदन (मीनपक्व भक्त, मछली का पोलाव)—कफकारक, त्रिदोषजनक और मन्दाग्निकारक है।

शाकान्न—लेखन, रूक्ष तथा उष्ण है और दोषद्रावक अर्थात् दोषों को पतला करने वाला है।

मांसौदन (मांस सिद्धौदन, मांस का पोलाव)—धातुवर्द्धक, स्निग्ध और भारी है।

फलान्न (फलान्न)—रुचिकारक, भारी और फल के समान गुण वाला है अर्थात् जिस फल में वह तय्यार किया गया है उसी के समान गुण करता है।

साधारण साठी चावल का भात—दीपन, वल्य, पाचन, त्रिदोषनाशक तथा व्रण और विष का नाश करनेवाला है।

नवान्न(नवीन अन्न)—मधुर, स्निग्ध, गुरु तथा मलस्तम्भक अर्थात् मलावरोधक है और रक्त, पित्त नाशक है।

उष्णान्न (गरम)—दीपन, लघु, श्लेमकारक तथा मदात्यय, रक्तपित्त, प्रमेह और वातकारक है एवं कास, श्वास, कृमि, आध्मान, गुल्म, जड़ता, वात और कास का हरण करनेवाला है।

शीतान्न (शीतल)—शीतल तथा लाला-स्रावक है और मन्दाग्नि, प्रमेह, मूर्च्छा आदि का हरण करने वाला है। वै० निघ०।

क्लिन्नान्न (गीला अन्न)—दुर्जर (कठिनता से पचने वाला) और ग्लानिकारक है।

(४) वह जो सबको भक्षण वा ग्रहण करे। (Omnivorous) हमा ख़ोर-फ़ा। आकिलु-साइरिल् माकूलात-अ०।

(५) सूर्य्य (The sun).

(६) पृथ्वी (The earth).

(७) प्राण (Prána).

(८) जल (Water)-

अन्नअ् नउल् अख़ज़र annaānaául akhzar -अ० पुदीनाहर्वा, पुदीनामुस्तुवी। Spearmint (Mentha viridis)। ख़॰ डॉ० २ भा०।

अन्नअ् नउल् मुजअ् अद annaānaául mujaāada-अ० पुदीना पेचीदा। (Mentha crispa).

अन्नअ् नाउल् फ़िल्फ़िली annaānaául filfilí-अ० पुदीना फ़िल्फ़िली, पिप्पली। Peppermint (Mentha piperata).

अन्नअ् नाउल् बर्री annaānáául-barri अ० पुदीना बर्री, अरण्य पुदीना। Horse mint (Mentha sylvestris).

अन्नअ् नाउल् माई annaānáául-mái पुदीना नहरी। (Mentha aquatica).

अन्नअ् नाउल् मुस्तदीरुल् औराक़ annaānaául-mustadirul-ouráqa-अ० पत्रीय पुदीना। (Mentha rotundifolia).

अन्नअ् नाउरूमी annaānáurrúmí पुदीना रूमी, पुदीना सुस्तुली। Spearmint (Mentha viridis).

अन्नकालः annakálah-सं० पुं० भोजन समय, आहार काल। रस, दोष तथा मलपाक होनेपर जबही क्षुधा प्रतीत हो वही वा अकाल हो वही अन्नकाल अर्थात् समय कहा गया है। भा०।

अन्नकोष्ठः annakoshthah-सं० पुं० खाना, तण्डुल, धान्य आदि सुरक्षित आधार। (A storehouse) श० -चं०।

अन्नगंधिः annagandhih-सं० पुं० रोग, मलभेद। दस्तका-मर्ज़। (Diarrhoea) त्रिका०।

अन्नजम् annajam-सं० क्ली० मैदेयिक तीन दिन का भक्त मंड (भात का माँड़)। -- दिब सांबी शिलीपेत-मह०।

annajala ⎫ -हिं० पुं० अन्नपानी,
annapáni ⎭ खाना पीना। (Victuals & drink.)

annajá-सं० स्त्री० हिक्का का एक भेद। (A kind of hiccup).

लक्षण— अत्यंत अन्न पानी के सेवन करने से ... साथ प्राणवायु दबकर ऊर्ध्वगति होकर (हिक् हिक्) शब्द करती है। उसको वैद्य ...जा हिक्का कहते हैं। भा० म० ख० २।

annadosha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] ( ) अन्न में उत्पन्न विकार। जैसे, दूषित अन्न ... में रोग इत्यादि का होना। (२) निषिद्ध ...न वा व्यक्ति का अन्न खाने से उत्पन्न दोष ...पाप।

...ल annadravashúla-सं०पुं०-क्ली०
...ल annadiava-shúla-हिं०संज्ञा पुं०
...परिणामशूल, पेट का वह दर्द जो सदा ...ा रहे, चाहे अन्न पचे या न पचे और जो पथ्य ...ने पर भी शांत न हो। लगातार बनी रहने ...ली पेट की पीड़ा। इसके लक्षण निम्न प्रकार ... जैसे—भोजन के पचने पर या पचते समय ...वा अजीर्ण हो अर्थात् सब काल में जो शूल ...न हो उसको "अन्नद्रवशूल" कहते हैं। ...पथ्यापथ्य से भोजन करने या नहीं भोजन ...नि प्रभृति नियमों के द्वारा शांत नहीं होता। ...मि तब तक चैन नहीं पड़ता जब तक वमन ...द्वारा पित्त निःसरित नहीं हो जाता। भा० ...०। देखो—पङ्क्तिशूलः।

...शूलनाशक annadrava-shúlanáshaka-हिं० वि० पुं० पक्तिशूलहर।

...ख्यः annadravákhyah-सं० पुं० ...अन्नद्रवशूल। मा० नि०।

...annadvesha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] ...वि० अन्नद्वेषी] अन्न में रुचि न होना। अन्न ... अरुचि, भूख न लगना। (Disgust)

...र कला annadhara-kalá-हिं० स्त्री० (१) (Pyloric valve) आमाशय ...दिगांश कपाट। (२) (Pyloric sphincter.) आमाशय दक्षिणांश संकोचक।

अन्ननाड़ी anna-nári-सं० स्त्री० (Œsophagus) अन्नपाक नाड़ी। यह कला एवं पेशी द्वारा निर्मित और १० हाथ लम्बी होती है। इसका काम अन्न पचाना है, इसलिए इसको पाक नाड़ी कहते हैं। इसके ऊपर के भाग का नाम मुख और नीचे का नाम गुदा है। इसमें कण्ठ से आमाशय तक जो भाग है उसको अन्ननाड़ी कहते हैं। आयु०। देखो—अन्नप्रणाली।

अन्ननाली,-डी annanáli-सं० स्त्री० (१) (Alimentary canal with its appendages) अन्नप्रणाली। (२) (Alimentary system) पाचक संस्थान।

अन्नन्नस annannasa-इं० अनन्नास। (Ananas sativus) । मो० शु०।

अन्नप्रणा (ना) ली annapraṇá,-ná, lí-सं० स्त्री० अन्ननाड़ी। (Œsophagus, gullet, Digestive tube) सरी-अ०।

अन्नप्रणाली annapranáli-हिं० स्त्री० (Œsophagus) गला या कंठसे आरम्भ होकर आमाशय या पाकस्थली पर अंत होने वाली एक नली विशेष। इसकी लम्बाई १०, इंच के लगभग होती है; ग्रीवा और वक्ष में होती हुई यह उदर में पहुँचती है और अन्नमार्ग के तीसरे भाग से जा मिलती है। अन्न प्रणाली में किसी प्रकार का पाचक रस नहीं बनता। इस नली का काम केवल भोजन को कंठ से आमाशय तक पहुँचाने का है।

अन्नप्रणाली का अधोभाग annapraṇali-ká-adhobhága-हिं० पुं० (Lower end of Œsophagus) आहार के मार्ग का मेदे के ऊपर का हिस्सा।

अन्नप्रणालीपरिखा annapranáli-parikhá-हिं० संज्ञा स्त्री० (Groove for œsophagus) वह नली जिसमें अन्नप्रणाली पड़ी रहती है।

अन्नप्राशनम् annapráshanam-सं० क्ली० ⎫
अन्नप्राशन annápráṣhana-हिं० संज्ञा पुं० ⎭

छठवें या आठवें महीने बालक का अन्न, आहार करना। भा०। बच्चों को पहिले पहिल अन्न चटाने का संस्कार। चटायन। पसनी। पेहनी। (Ceremony of giving Farinaceous food to a baby for the first time).

नोट—स्मृति के अनुसार छठे या आठवें महीने बालक को और पाँचवें या सातवें महीने बालिका को पहिले पहिल अन्न चटाना चाहिए।

अन्नवेदि annabedi-ता० हीराकसीस। (Ferri sulphas) स० फा० इं०।

अन्नभेदि anna-bhedi-मल०, ते० कसीस, हीराकसीस। Ferri sulphas. (Sulphate of iron or green vitriol) स० फा० इं०।

अन्नमण्डः annamaṇḍah-सं० पुं० (Rice gruel) माँड, भक्तमण्ड, मण्ड, भात का माँड। भातेर माड़-बं०। देखो-मण्डः (Maṇḍah)। गुण-क्षुद्बोधक (क्षुधा पैदा करता), बस्तिविशोधक (मूत्रल), प्राणप्रद तथा शोणितवर्द्धक है। ज्वरनाशक, कफ पित्त नाशक और वायु नाशक है। ये आठ गुण मण्ड (माँड) में पाए जाते हैं। च० द० अग्निमां० चि०।

अन्नमयः annamayah-सं० पुं० (Physical body) स्थूल शरीर। देखो—शरीर।

अन्नमयकोशः anna-maya-koshah-सं० पुं० (Physical body) वेदांत के अनुसार पञ्च कोषोंमें से अन्तिम (पाँचवाँ) कोश विशेष। (यह पञ्चतत्त्वमय तथा त्रिगुणात्मक होता है) अन्न से बना हुआ त्वचा से लेकर वीर्य तक का समुदाय। स्थूल शरीर। देखो-शरीर।

अन्नमल annamala-हिं० संज्ञा पुं०
अन्नमलम् annamalam-सं० क्लीं०
(१) पुरीष मल, विष्ठा (Excrement, Fæces)। (२) मद्य, सुरा, यव आदि अन्नोंसे बनी शराब। (Wine) वै० श०।

अन्नमार्ग anna-márga-हिं० संज्ञा पुं० आहार पथ, अन्नपाक नाड़ी। कनात् गिज़ाइय्यह्, कनात् हज़्म् मिरयह्-अ०। ग़िज़ा ... नाली-उ०।

एलिमेंटरी कैनाल (Alimentary canal), डाइजेस्टिव ट्रैक्ट (Digestive tract)-इं०।

शरीर की नलियों में से वह जिसमें भुक्त पदार्थ रहता है। यह नली मुख से ... होती है। इसका प्रारम्भ मुख से और इसका अन्त नीचे जाकर मलद्वार है। प्रौढ़ावस्था में मुख से मलद्वार तक की लम्बाई २८-३१ फ़ुट (नौ दस गज) लगभग होती है।

अन्नरसः anna-rasah-सं० पुं० (Rice-gruel) मण्ड, माँड, माँड, भक्तमण्ड। वै० श०। (१) रस। (Chyle).

अन्नलिप्सा anna-lipsá-सं० स्त्री० भोजन(खाने) की इच्छा, भूख, क्षुधा। (...etite, Hunger) वै० निघ० ...यामिमनोऽन्नलिप्सा।" च० द०।

अन्नवहा annavahá-सं० स्त्री० अन्नवाहि स्रोत द्वय (इनकी जड़ आमाशय ... अन्नवाहिनी धमनी है)। इनसे होकर खाया हुआ अन्न उदर में पहुँचाया जाता है। ...। ६ अ०।

अन्नवाहि स्रोतः anna-váhi-srotah-सं० क्लीं० गलनाड़ी, अन्नप्रणाली, ... (Esophagus) गलार नली-बं० श०।

अन्नविकारः anna-vikárah-सं० पुं०
अन्नविकार anna-vikára-हिं० संज्ञा (१) विष्ठा, मल। (Excrement, Fæces)। (२) शुक्र, वीर्य (Semen secretion, semen)। (३) मण्ड Rice gruel) जवड, मांड। (४ ... परिवर्तित रूप। अन्न पचनेसे क्रमशः बने रस, रक्त, मांस, मज्जा, चरबी, हड्डी और शुक्र

ाक नाड़ी anna-vipákanárí–सं० ० (Œsophagus) अन्ननाडी, पाकनाड़ी, नप्रणाली। आन्नेयः।

: anna-ṣhoshah-सं० पुं० उच्छि-ष्ट, जूठा, छोड़ा हुआ भोजन। एठो भात-बं०। (Food left or rejected).

न annahína-हिं० वि० अन्न रहित। (Destitute of food).

anná-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अन्न] (१) धात्रिपत्नि (The husband of nurse)। (२) धात्री, धाय, दाई, दूध पिलाने वाली स्त्री (A midwife)। [सं० अग्नि] एक छोटी अँगीठी या बोरसी जिसमें सुनार सोना आदि रखकर भाथी के द्वारा तपाते या गलाते हैं।

ीर्णम् annájírṇam-सं० क्लो० (१) आमाजीर्ण, भुक्त अन्न का अजीर्ण। भा० म० १ ० आमातीसा०। "अन्नाजीर्णादद्रुताः क्षोभ-न्तः।" (२) तत्रामक शूलरोग।

annáda-हिं० वि० अन्न खानेवाला, आहारी।

द्यम् annádyam-सं० क्लो० (१) अन्न, भात। रा० नि० व० २०। (२) धान्य।

भेदि annábhedi-कना० हीराकसीस, कसीस-हिं०। (Ferri sulphas)-ले०। सं० फा० इं०।

वृत वायुः annávrita-váyuh-सं० पुं० वायु के अन्नसे आवृत होनेपर भोजन करनेसे कुक्षि में शूल होता है और अन्न के पचने पर वेदना की शांति होती है। "भुक्ते कुक्षौ रुजा जीर्णे शाम्यत्यन्ना-वृतेऽनले।" वा० नि० अ० १६।

शयः annáshayah-सं० पुं० उदर। (Abdomen).

ास annása-द० } अनन्नास। (Ananas sativus, Mill.) स० फा० इं०।
ासि annási-सिं० }
निनस anninas-गु० }

ी anní-हिं० स्त्री० दाई, धात्री। (A nurse or female attendant on a child).

अन्नेटो annatto-इं० सेन्दूरिया-हिं०। लट्कन-बं०। (Bixa orellana)-ले० इं० मे० मे०। फॉ० इं० १ भा०।

अन्नेटोबुश annatto-bush-इं० सेन्दूरिआ-हिं०। (Bixa orellana, Linn.) -ले०। फॉ० इं० १ भा०।

अन्नेस्लो स्पाइनस anneslea, spinous-इं० मखाना। इं० हैं० गा०।

अन्नेस्ली स्पाइनोसा anneslea, spinosa *Dr. Wall.* Included by Prof. Lindley in plants "imperfectly known"-ले० मखाना। एक अप्रसिद्ध क्षुप है। इं० हैं० गा०।

अन्नोदवहा annodavahá-सं० स्त्री० अन्न और जल को भीतर ले जाने वाली नली।

अन्पल anpal-मल० कँवल, छोटा कमल, कुइ-बेरा, कुमुदिनी-हिं०। नीलोफ़र-अ०, फ़ा०। (Nymphæa Edulis, *D. C.*) स० फा० इं०।

अन्पाज़्म anpázham-मल० अमड़ा, अम्बाड़ा, आम्रातक, आम्रेका पेड़-हिं०। (Spondias mangifera, *Pers.*) स० फा० इं०।

अन्फ़ anf-अ० (Nose) नासिका-हिं०। इसके बहुवचन निम्न हैं, यथा-आनाफ़, उनूफ़, आनिफ़।

अन्फ़क़ह् anfaqah-अ० दाढ़ीकी बची, निम्नोष्ठ और चिबुक के मध्य के केश।

अन्फ़ख़ anfakh-अ० प्रदाह युक्त प्राणी, वह मनुष्य जिसके अण्डकोष में प्रदाह हुआ हो।

अन्फ़स् anfas-अ० भ्रूणवाह्यावरण। (Chorion).

अन्फ़ुल्बर्द anfulbarda-अ० शीताधिक्य, ठंडककी अधिकता। (Excessive cold).

अन्मस anmasa-गु० वस्ति-हिं०। मसानह-अ०। (Bladder)-इं०।

अन्मिल anmila
अन्मेल anmela } विरुद्ध, विपरीत। (Heterogeneous).

अन्मिलह् anmilah–अ० अंगुल्याग्र, अंगुली का अग्र पोरों। इसके बहुवचन–अन्मिलात या अनामिल हैं। (The top of the finger.)

अन्य anya–हिं० वि० भिन्न, पृथक, पर। (Another, different.)

अन्यकारुका anya-kárukâ–सं० स्त्री० शकृत् कीट, पुरीषज कृमि, पाखाने का कीड़ा। हारा०।

अन्यतः anyatah–हिं० क्रि० वि० [सं०] (१) किसी और से। (२) किसी और स्थान से, कहीं और से।

अन्यत्र anyatra–हिं० वि० [सं०] और कहीं (जगह), स्थानान्तर। दूसरी जगह।

अन्यतोपाक anyatopáka–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अन्यतोवात] दाढ़े, कान, और इत्यादि में वायु के प्रवेश होने के कारण आँखों की पीड़ा।

अन्यतोवातः anyatovátah–सं० पुं० अक्षिगत रोग विशेष (An eye-disease.)। जो वायु निज स्थित स्थान से अन्यत्र वेदना उत्पन्न करे उसे "अन्यतोवात" कहते हैं, जैसे—घांटी, कान, शिर, हनु और मन्या (गर्दन) की नसों में अथवा अन्य स्थानों में स्थित वायु भौंवों अथवा नेत्रों में तोद, भेद आदि पीड़ा करता है। मा० नि० नेत्रसर्वगत रो०।

अन्यपुष्टः anyapushtah–सं० पुं०
अन्यपुष्ट anyapushta–हिं० संज्ञा पुं० } [स्त्री० अन्यपुष्टा] (१) वह जिसका पोषण अन्य के द्वारा हुआ हो। कोइल, काकपाली, कोकिल। The black or Indian Cuckoo (Cuculus-)।

नोट—ऐसा कहा जाता है कि कोयल अपने अंडों को सेने के लिए कौवों के घोसलों में रख आती है।

(२) परपालित, दूसरों के द्वारा पालित।

अन्यपूर्वा anya-púrvá–सं० स्त्री० दो बार ब्याही हुई। (Twice married.); वह कन्या जो एक को ब्याही जाकर वा वाग्दत्त होकर फिर दूसरे से ब्याही जाए। ये हैं—पुनर्भू और स्वैरिणी।

अन्यभृत् anya-bhrit–सं० पुं० (१) किल, कोयल (Cuckoo)। हला०। (२) काक (a crow)। हे० च०।

अन्यभृतः anya-bhritah–सं० पुं० कोयल (A cuckoo)। रत्ना०।

अन्यलोहम् anya-loham–सं० क्ली० [Bronze) कांस्यधातु, कांसा। वै० निघ०

अन्या anyá–सं० स्त्री० हरीतकी, हरड़ (Terminalia Chebula.)। वै० नि०

अन्याब anyáb–अ० (ब० व०), नाब (ए० व०) रदनक (Canine tooth)

अन्येद्यु anyedyu–हिं० क्रि० वि० [वि० अन्येद्युक] दूसरे दिन।

अन्येद्युक anyedyuka–हिं० वि० [सं०] दूसरे दिन होने वाला।

अन्येद्युष्कः anyedyushkah–सं० पुं०
अन्येद्युःज्वर anyedyuh-jvara–हिं० सं० उरस्थ श्लेष्मजन्य ज्वर विशेष। यह दिन रात्रि में एक समय आता है। मा० यह एक प्रकारका मलेरिया (विषम ज्वर) ज्वर है जिसका दौरा हर रोज़ होता है ज्वर में एक बारी से दूसरी बारी तक अर्थात् एक दिन का अन्तर पड़ता है। इसको रोज़ाना का बुख़ार (आह्निक ज्वर) कहते हैं। वर्षा ऋतु के बाद होने के कारण को मौसमी या क्रमसे बुख़ार भी कहते हैं। एकाहिक ज्वर, एकतरा, आंता बुख़ार–हिं० आना नौबती बुख़ार–उ०। तपे हररोज़–फ़ा० नायब, हुम्मा मुवाज़िबह्–अ०। कोटि० फ़ीवर (Quotidian Fever)–इं०

अन्योदर्य anyodarya–हिं० वि० [सं० स्त्री० अन्योदर्या] दूसरे के पेट से 'सहोदर' का उलटा।

अन्योन्य anyonya–हिं० सर्व० [सं०] उभयता। (Reciprocal, mutual)

अन्योन्यलङ्घनम् anyonya-langhan

ंसं० क्लो० (Decussation) परस्पर एक दूसरेको पार करना (काटना) ।

न्याश्रय anyonyáshraya-हिं० पुं० ...पेक्ष, परस्परका सहारा । एक दूसरेकी अपेक्षा ।

anvaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० न्वयी] । (१) परस्पर सम्बन्ध, । तारतम्य । (२) संयोग । मेल । (३) वंश । खानदान ।

anvah-हिं० पुं० नित्य, प्रतिदिन । (Every day).

म anváma-अ० (यहु० व०), नौम (ए० व०) । निद्रा । नींद । (Sleep, narcosis, stupor).

शनम् anváshanam-सं० क्लो० (१) ...स्नेहशाला । हलाo । (२) स्नेह बस्ति (Oily enemata) । देखो—अनुवासन बस्तिः ।

ासन anvásana-हिं० पुं०
ासनम् anvásanam-सं० क्लो० } अनुवासन, स्नेहबस्ति । (Oily enemata).

ाहिकः anváhikah-सं० त्रि० प्रात्यहिक, प्रति दैनिक, रोज़ाना । (Daily, quotidian.)

ीत anvita-हिं० वि० [सं०] युक्त, मिला हुआ, सहित, शामिल ।

र anshara-अ० मदार, आंक । (Calotropis gigantea).

ं áansa-अ० अर्जुन । (Terminalia Tomentosa or Arjuna)

सल áansal
सलान áansalána } -अ० विलायती काँदा । विलायती जंगली काँदा-हिं० । पियाज़े दश्ती-फ़ा० । Scilla (Squill) स० फा० इं० । देखो—अरण्य पलाण्डुः ।

सले-हिंदी áansale-hindí-अ० काँदा, जंगली पियाज़-हिं० । पियाज़े दश्ती हिन्दी-फ़ा० Urginea Indica, *Kunth.*; Scilla Indica, *Roxb.* (Bulb of-Indian Squill) स० फा० इं० । देखो—अरण्य पलाण्डुः ।

अनसन्डा ansandrá-नेन० गार-नेपा० । वेल-वैलम्-ता० । (Acacia-Ferruginea, *D. C.*) ।

अन्सारिशा ansárishá-यं० हुल्हुल् । श्रादित्य-भक्ता । (Cleome Pentaphylla). इं० मे० प्लां ।

अनहैलोनियम् anhalonium-ले० मस्केल बटन्स (Muscale Buttons).

अनहैलोनियम लीवीनिआई Anhalonium lewinii-ले० ।

(N. O. Cactaceæ)

उत्पत्तिस्थान—वेस्ट इण्डीज़ ।

प्रयोगांश—पुष्प ।

इंद्रिय व्यापारिक कार्य—इसका प्रारम्भिक प्रभाव अवसादक होता है । इससे नाड़ी-स्पन्दन निर्बल एवं शिथिल होजाता है । (प्रायः ४० प्रति मिनट से न्यून) और शरीर बाह्य तल शीतल पड़ जाता है । प्रहर्षण (या शिश्नोत्थान) बिना वीर्य स्खलित होता है ।

उपयोग—सिरियस (Cereus grandiflorus and cereus "cactus" bonplandii) की अपेक्षा यह कहीं उत्तम हृदोत्तेजक तथा उत्तम घन हृदयबलप्रद ओषधि है । उग्र हृच्छूल,फुफ्फुसौप,श्वासावरोध में कदाचित् २ या ३ बुंद इसके तरल सत्वको जब तक कि लाभ प्रदर्शित न हो, कभी कभी उपयोग में लाना चाहिए; तदनन्तर बढ़ाने के स्थान में थोड़ी मात्रा उपयोग में ला सकते हैं । इसके उपयोग से उत्थान बिना वीर्य स्खलित होने लगता है । अस्तु, उक्त अवस्थाओं में इसके विरामरहित अधिक कालीन उपयोग से बचना चाहिए । अधिक वातल प्रकृति वाले व्यक्तियों में इसका उपयोग चतुरतापूर्वक करना चाहिए । शिथिल (कफ), लसीका या रक्त प्रकृति वालों में यह अधिक स्वतन्त्रतापूर्वक उपयोग में लाइ जा

सकती है। डिप्थिरेलिस की यह उत्तम सहायक औषधि है। (पी० वी० एम०)

अन्वान्त्रयम् anvántrayam-सं० क्लो० आँतों में उत्पन्न होने वाले विशूचिका के कीड़े। अथर्व०। सू० ३१। ५। का० २।

अन्वीक्षण anvikshana हिं० संज्ञा पु ०[सं०] (१)ध्यान से देखना। ग़ौर। विचार। (२) अनुसंधान। तलाश।

अन्वीक्षा anviksha-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) ध्यानपूर्वक देखना। (२) खोज, ढूँढ, तलाश।

अप apa-उप० [सं०] उलटा, विरुद्ध, बुरा, अधिक। यह उपसर्ग जिस शब्द के पहिले आता है उसके अर्थ में निम्न लिखित विशेषता उत्पन्न करता है।

(१) निषेध। उ०-अपकार। अपमान।
(२) अपकृष्ट (दूषण)। उ०-अपकर्म। अपकीर्ति।
(३) विकृति। उ०-अपकृति। अपांग।
(४) विशेषता। उ०-अपकलंक। अपहरण।

अपक apaka-हिं० संज्ञा पु ०[सं० अप्=जल] पानी, जल। -डिं०।

अपकर्ष apakarsha
अपकर्षण apakarshana } -हिं०संज्ञा पु ०
(१)नीचेको खींचना, गिराना, टालना। (२) बहिर्नायम, शरीर की मध्य रेखा से दूर लेजाना। Abduction, Drawing away from the median line). (३) निराकरण हटाया जाना। (Repulsion).

अपकर्षणी apakarshani-सं० स्त्री० (Abductor). बहिर्नायनी, शरीर की मध्य रेखा से दूर ले जाने वाली।

अपक apakk
अपक apaka } -हिं० वि० कच्चा, अपूर्ण। (Raw, unripe, imperfect, immature.)

अपक्कता apakkata-हिं० स्त्री० पन। (Immaturity).

अपक्रम apakrama-हिं० संज्ञा [सं०] भागना, छूटना। व्यतिक्रम, अनियम।

अपक्रीता apakrita-सं०,त्रि० यत्न से प्राप्त की गई। अथर्व०। सू०। का० ८।

अपक्वः apakvah-सं० त्रि०
अपक्व apakva-हिं० वि० } (१)(Unripe) बिना पका हुआ, आम, अपक्व, कच्चा, असिद्ध। प० प्र०। (२) (Undigested) जिसा पचा, अनजीर्ण।

अपक्व कदली apakva-kadali-सं० (Unripe-plantain) कच्चा केला, कदली (केला)। गुण केले-मह० । कोच -ये०। गुण--कच्चा केला मलस्तम्भक, अर्थात् काबिज़, तिक्त, कषैला, रुक्ष एवं रक्तपित्त, और तृषानाशक है। नेत्ररोग, रक्तातिसार तथा ज्वर नाशक है। निघं०।

अपक्वमांसम् apakva-mánsam-सं० (Raw-flesh) असिद्ध मांस, कच्चा गुण--कच्चा मांस रक्तदोषकारक और वातादि जनक है, ऐसा मांसविदों का मत है। निघं०।

अपक्व वस्तु apakva-vastu-सं० (Raw objects) असिद्ध या वस्तु। र० मा०।

अपक्वक्षीरम् apakva-kshiram-सं० (Nonboiled-milk) अपक्व दुग्ध, दूध। गुण—यह अभिष्यन्दी और भारी है।

अपग apaga--अं० कली का चूना, असात (Calx, Lime, quick lime) इं० मे० मे०। ( )

अपगत apagata-हिं० वि० [सं०] (१) गया हुआ, दूरीभूत, हटा हुआ, गत। (२) पलायित, भागा हुआ, पलटा हुआ। (३) मृत, नष्ट।

म् apagamanam } --सं० पुं०, apagama } हिं० पुं०

) वियोग, अलग होना। (२) दूर होना, ना। (Diverging).

तन्तुः apagámi-tantuh--सं० पुं० वहा नाड़ी (Efferent Fibre)।

apaghanah--सं० पुं० अङ्ग, शरीराव। (An organ) अम०।

: apaghátah--सं० पुं० अस्वाभाविक । हत्या, वध, मारना, हिंसा।

तक apaghátaka } ती apaghátí } --हिं० वि० [सं०] तक, विनाशक, विनाश करने वाला।

apagá--सं० वि० अन्यत्र जाने वाला। र्व। सू० ३०। २। का० २।

apanga--हिं० वि० [सं० अपांग = गंग] (१) अंगहीन, न्यूनांग। (२) लँगड़ा, ला।

पो) पङ्ग a-o-pang--बं० अपामार्ग, रखिरा। (Achyranthes Aspera, Linn.)

apacha--हिं० संज्ञा पुं० [सं०] न पचने का रोग। अजीर्ण। बदहज़मी। (Dyspepsia.)

चय apachaya--हिं० संज्ञा पुं० [सं०] घटा, घाटा, क्षति, हानि। (Loss, detriment)। (२) व्यय, कमी, नाश।

चायितः apacháyitah--सं० पुं० रोग, व्याधि (Disease)।

चारः apachárah--सं० पुं० }
चार apachára--हिं० पुं० }
(१) अजीर्ण (Dyspepsia.)। (२) दोष, भूल। (३) कुपथ्य। स्वास्थ्यनाशक व्यवहार। (४) कुव्यवहार (An error).

चिताम् apachitám--सं० स्त्री० अप बुरे माद्दे के संचय से उत्पन्न। अथर्व०। सू० २५। १ का० ६।

ची apachí--सं० स्त्री० (a kind of Scrofula) गण्डमाला नाम के कंठ रोग का एक भेद। कंठमाला की वह अवस्था जब गाँठें पुरानी होकर पक जाती है और जगह जगह पर फोड़े निकलते और बहने लगते हैं। इसके लक्षण--ठोढ़ी की अस्थि, काँख, नेत्र के कोये, भुजा की संधि, कनपुटी और गला इन स्थानों मे मेद और कफ (दूषित हो) स्थिर, गोल, चौड़ी, फैली, चिकनी, अल्प पीड़ा वाली ग्रंथि उत्पन्न करते हैं। आमले की गुठली जैसी गाँठें करके तथा मछली के अण्डों के जाल जैसी त्वचा के वर्ण की अन्य गाँठें करके उपचीयमान (संचित) होती है इससे चय (संचय) की उत्कर्षता से इसे अपची कहते हैं।

यह अपची रोग खाज युक्त होता है, और अल्प पीड़ा होती है। इनमें से कोई तो फूटकर बहने लग जाते हैं और कोई स्वय नाश हो जाते है, यह रोग मेद और कफ से होता है। यदि यह कई वर्षों का हो जाए तो नहीं जाता। सु० नि० ११ अ०। अथ०। सू० ८३। ३। का० ६।

चिकित्सा--

इस रोग में वमन विरेचन के द्वारा ऊपर और नीचे के अंगों का शोधन करके दन्ती, द्रवन्ती, निशोथ, कोषातकी (कड़वी तरोई) और देवदाली इन सब द्रव्यों के साथ सिद्ध किया हुआ घृत पान करना चाहिए। कफ मेद नाशक धूप, गण्डूष और नस्य का प्रयोग हितकारी है। नस (शिरा) में नश्तर लगाकर रुधिर निकालें और गोमूत्र में रसौत मिलाकर पान कराएँ।

अपची नाशक तैल

(१) कलिहारी की जड़ का कल्क १ भा०, तेल ४ भा०, निर्गुण्डी का स्वरस ४ भाग। इन सबको विधिवत् पकाएँ। नस्य द्वारा इसका सेवन करने से अपची रोग छूट जाता है।

(२) वच, हड़, लाख, कुटकी, चन्दन इनके कल्क के साथ सिद्ध किया हुआ तेल पान करने से अपची निर्मूल होती है।

(३) गौ, मेंढ़ा और घोड़े के खुर जलाकर राख करलें। इसे कड़वे तेल मे मिलाकर अपची पर लेप करें।

(४) काला सर्प या अपने आप मरा हुआ कौआ इनकी राख को इंगुदी के तेल में मिलाकर लेप करनेसे विशेष लाभ होता है। धा० उ० अ० ३० ।

अपच्छी apachchhi हिं० संज्ञा पु'० [सं० अ=नहीं+पक्षी=पक्ष वाला] विरोधी, विपक्षी, शत्रु वि० बिना पक्ष का, पक्ष रहित ।

अपजात apajáta--सं० पु'० वह संतान जो पिताके अधम गुण रखती हो। अथर्व० । सू० ६ । का० ८ ।

अपञ्चीकृत apanchikrita-हिं० वि० पु'० सूक्ष्म भूत ।

अपटक apaṭaka-हिं०वि० पु'० हस्तपाद पक्षाघात ग्रस्त (वातग्रस्त) । (Paralytic)

अपटन apaṭana-हिं० संज्ञा पु'० देखो—उप-टन ।

अपटुः apaṭuh-सं० त्रि० अपटु-हिं० वि० (१) रोगी, बीमार (Diseased) । रा० नि० व० २० । (२) निबुंद्धि, अनाड़ी ।

अपडा apaḍá--सं० स्त्री० अश्मन्तक वृक्ष । See-Aṣhmantaka,-kah-

अपण्य apaṇya--हिं० वि० [सं०] न बेचने योग्य ।

अपतन्त्रः apatantrah }
अपतन्त्रकः apatantrakah } --सं० पु'०
स्वनामाख्यात वातव्याधि विशेष । एक रोग जिससे शरीर टेढ़ा हो जाता है। लक्षण—अपने कारणों (रूक्षादि) से प्रकुपित हुई वायु यदि अपने निज स्थान को छोड़ ऊपर जाकर हृदय को पीड़ित करे, फिर मस्तक और कनपुटियों में पीड़ा करे, शरीर को धनुष के समान टेढ़ा कर दे तथा कम्पित करे और चित्त को मोहयुक्त करदे, रोगी बड़े कष्ट से श्वास ले, आँखें चढ़ी रहें अथवा ऊपर को लगी रहें, कबूतर के समान शब्द करे और बेसुध हो जाए, तो उसको अपतन्त्रक रोग कहते हैं। मा० नि० वा० व्या० ।

चिकित्सा—अपतन्त्रसे पीड़ित मनुष्यकी तृप्ति विरुद्ध किया न करें और कभी भी, निरूहवस्ति तथा वमन का सेवन न करावें। वायुसे घिरी हुई उस श्वास को ... ड़ियों को तीक्ष्ण प्रधमन (... देकर खोल दें। नाड़ियों के खुल ... संज्ञा को प्राप्त होता है।

अपतर्पण apatarpaṇa-हिं० पु'० लंघन। (Fasting).

अपत apata--हिं० वि० [सं० ... प्रा० पत्त, हिं० पत्ता] (१) पत्र ... पत्तों का। (२) आच्छादनरहित, ...

अपतिः apatih-सं० स्त्री० पतिहीन ...

अपतर्पणम् apatarpaṇam-सं० ... अपतर्पण, लङ्घन, तृप्त्यभाव, भूखा ... वास करना। (२) कार्श्य, क्षीण ... हरण, स्थूलता को दूर करना, ... यह दो प्रकार की चिकित्साओं ... है। इसका उलटा संतर्पण (... है। अग्नि, वायु और आकाशात्म ... र्थात् उक्त महाभूतों से उत्पन्न हुई ... तर्पण होती है। इसके दो भेद होते ... शोधनापतर्पण। यह जो शरीरस्थ ... को बाहर निकाल देता है। ये पाँ ... होते हैं, यथा—१-निरूह (गुदा ... लगाना), २-वमन, ३-विरेचन, ४ ... वन और ५-रक्तस्रुति (... (२) शमनापतर्पण—... औष ... रस्थ वातादिक दोषों को बाहर नहीं ... और अपने प्रमाण में स्थित वातादि ... उत्क्लेशित भी नहीं करती, प्रत्युत ... को समान भाव में ले आती है। उस ... औषध कहते हैं। यह सात प्रकार ... यथा—पाचन, दीपन, क्षुधानिग्रह, ... व्यायाम, आतप और वायु। वा० ... १४। हारा०। च०, द०, रक्त ... (३) व्रण के उपशमनार्थ प्रारम्भ ... सु० चि० १ अ० ।

अपतानः apatánah }
अपतानकः apatánakah } --सं० ... संज्ञा

[ा]मारयात वातन्याधि रोग विशेष एक रोग जो [स्त्रिय]ों को गर्भपात तथा पुरुषों के विशेष रुधिर [निक]लने वा भारी चोट लगने से हो जाता है। [इस]में बारबार मूर्च्छा आती है और नेत्र फटने [त]था कंठ में कफ एकत्रित होकर घरघराहट [श]ब्द करता है।

[अप]तानक—वायु कुपित होकर मनुष्य की दृष्टि [ए]वं संज्ञा को नष्ट कर देती, कण्ठ में घुरघुर [शब्द] करती है और जब वायु हृदयको त्याग देती [त]ब सुख होता है और जब पकड़ लेती है तब [मनुष्य] बेहोश हो जाती है। इस दारुण रोग को [अपत]ानक कहते हैं। मा० नि० वा० व्या०।

[असाध्]यता—गर्भ की उत्पत्ति से एवं [रक्]तके बहुत निकलने से उत्पन्न हुआ और [अभिघा]तसे उत्पन्न हुआ "अपतानक" नहीं [साध्]य होता।

[चि]कित्सा—अपतानक रोगसे पीड़ित मनुष्यों [के ने]त्रों में से यदि पानी बहता हो, कम्प नहीं [होत]ा हो और खाटपर न पड़ा हो तो इससे पहले [त]त्काल चिकित्सा करनी चाहिए। दशमूल [डाल]कर पकाया हुआ पानी अपतानक रोगी के [लिये प]र हित है। तैल की मालिश,स्वेद और तीक्ष्ण [नस्य] द्वारा कोनोंके शोधन के पश्चात् घी पिलाना [लाभ]कारक है। विशेष देखो—वात व्याधि।

[अपत्य]म् apatyam-सं० क्लो०
[अपत्य] apatya-हिं० संज्ञा पु०
[स]न्तान,पुत्र वा कन्या। (Offspring,male [or] female).

[अपत्यक]ामा apatyakamá-हिं० वि० स्त्री० [सन्तान] की इच्छा रखने वाली।

[अपत्यज]ीवः apatya-jivah-सं० पु० (Putranjiva Roxburghii) पुत्र[जीव] वृक्ष। जियापुता गाछ-बं०। रा० नि० [व०] १। देखो—पुत्रजी (जी) वः।

[अपत्यद]ा apatyadá-सं० स्त्री० पुत्रदालता, [लक्]ष्मणा। (see-putradá)। रा० नि० [व]० ४।

अपत्यपथः apatya-pathah-सं० पु० योनि (Vagina)। हैं० च०।

अपत्यशत्रुः apatya-shatruh-सं० पु०, हिं० संज्ञा पु० जिसका शत्रु सन्तान या संतान हो। कर्कट, केकड़ा। (Crab) श० च०।

नोट—अंडा देने के बाद केकड़ी का पेट फट जाता है और वह मर जाती है। (२) अपत्य का शत्रु। वह जो अपने अंडे बच्चे खाजाए। साँप।

अपत्यसिद्धिकृत् apatya-siddhi-krit-सं० पु० (Putrajiva Roxburghii) पुत्र जीव वृक्ष। देखो—पुत्रजीवः। वै० निघ०।

अपत्र apatra-हिं० वि० पत्र रहित, बिना पत्तों का।

अपत्रवल्लिका apatra-vallika-सं० स्त्री० महिषवल्ली, सोमलता विशेष। लघु सोमवल्ली -म०। रा०नि०व० ३। See-Mahisha-valli

अपत्रा apatrá-सं० स्त्री० पुष्प वृक्ष विशेष। महाराष्ट्र में यह "नेवती" नाम से प्रसिद्ध है। वै० निघ०।

अपतृष्णा apatrishná-सं० स्त्री० व्यर्थ लालच।

अपथम् apatham-सं० क्लो० अपथ-हिं० संज्ञा पु० (१) योनि। (Vagina) श० र०। (२) कुमार्ग, बुरारास्ता। (A bad road)

अपथ्यम् apthyam-सं० त्रि०
अपथ्य apathya-हिं० वि०
जो पथ्य न हो। स्वास्थ्यनाशक। (Indigestible, unwholesome)।

सं० क्लो०, हिं० संज्ञा पु० (१) व्यवहार जो स्वास्थ्य को हानिकर हो। रोग बढ़ाने वाला आहार विहार।

(२) अहितकर वस्तु। रोग बढ़ाने वाला भोजन।

अपथ्य ज्वरः apathya-jvarah-सं० पु० कुपथ्य से होने वाला ज्वर। अपथ्य और मल०

जन्य हेतु ज्वर के हेतु पित्त को प्रकुपित करते हैं, जिससे दाह, शैत्य, शिरःशूल और कोष्ठ की वृद्धि, तीव्र वेदना, खुजली, मल का अधिक निकलना अथवा उसका अत्यन्त बँधजाना आदि लक्षण अपथ्य जन्य ज्वर में होते हैं। वै० निघ० २ भा० ज्व०।

अपद् apada-हिं० वि० } पादहीन,
अपदः apadah-सं० त्रि० } पंगु, कर्मच्युत (Lame)। -पुं० बिना पैर के रेंगने वाले जंतु। जैसे, (१) सर्प, केंचुआ, जोंक आदि। (२) सर्प (Snake)।

अपदरुहा apada-ruhá } -सं०स्त्री०
अपदरोहिणी apadarohiní } वन्दा। बांदरा-बं०। बादांगुल-म०। च० निघ०। A parasite plant (Epidendrum tessellatum.)

अपदस्थ apadastha-हिं० वि० कर्मच्युत, पदच्युत।

अपदारथ apadáratha-हिं० पुं० अयोग्य वस्तु।

अपदेवता apadevatá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा पुं० प्रेत, पिशाचादि। दुष्ट देव। दैत्य। राक्षस असुर।

अपदेशः apadeshah-सं० (हिं० संज्ञा) पुं० "अनेन कारणेनेत्यपदेशः" अर्थात् इस कारणसे यह होता है इसे "अपदेश" कहते हैं। जैसे कहते हैं कि मीठा खाने से कफ बढ़ता है अर्थात् कफ वृद्धि का हेतु मधुर रस है। सु० उ० ६५ अ० १३ श्लो०।

अपद्रव्य apadravya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] निकृष्ट वस्तु। बुरी चीज़। कुद्रव्य। कुवस्तु।

अपध्वंसक apadhvansaka-हिं० वि० (१) घिनौना। (२) नाश करने वाला, क्षयकारी।

अपनयन apanayana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपनीत] (१) दूर करना। हटाना। (२) स्थानांतरित करना। एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेजाना। (३) खंडन।

अपनीत apaníta-हिं० वि० [सं०] ... हुआ। हटाया हुआ। निकाला हुआ।

अपवश्य apabashya } -हिं० वि०
अपवस-श apabasa,-sha } स्वाधीन, ...न्मुखी (Independent)।

अपबाहुकः apabáhukah-सं० पुं०
अपबाहुक apabáhuka-हिं० संज्ञा पुं० एक रोग : जिसमें बाहुकी नसें ... जाती हैं और बाहु बेकाम हो जाती ... अपबाहुक, वात कफ जन्य भुजगत ... भुजस्तम्भ रोग विशेष। ... स्कंधों में रहने वाली वायु स्कंधों के ... देती है। उस के बंधन के सूखने ... वेदनावाला अपबाहुक रोग उत्पन्न ... मा० नि०। बाहु में रहने वाली ... रहने वाली शिराओं को संकुचित ... बाहुक रोग को उत्पन्न करती है। ... २ खं०।

चिकित्सा

इस रोग में नस्य तथा भोजन के पश्चात् ... पान हित है। वा० चि० अ० २०।

अपभ्रंश apabhransha-हिं० पुं० ... हुआ शब्द। (Corruption, Com... or vulgur talk).

अपमुमूर्षु apamumúrshu-सं० हिं० ... जलमें डूब कर मरणोन्मुख हुआ रोगी।

अपर apara-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० ...] (१) जो पर न हो, पहिला, पूर्व का, ... जिससे कोई पर न हो। (२) अन्य, भिन्न। मे० रत्रिक०।

अपरपिण्डतैलम् aparapinda-tails... क्ली० बला (खिरेटी) पृश्नपर्णी, गङ्गेरन, ... और शतावर। इनके कल्क तथा ... सिद्ध किए हुए तैल के अनुवासन ... कारी) लेने से प्रबल वातरोग का नाश ... है। भा० म० मध्य खण्ड २ भाग ...

अपरतंत्र aparatantra-हिं० वि० [...] परतंत्र या परवश न हो, स्वतंत्र, स्वाधीन,

र्जन apamárjana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] शुद्धि । सफाई । संस्कार । संशोधन ।

ख apamukha-हिं० वि० [सं० स्त्री० अपमुखी] जिसका मुँह टेढ़ा हो । विकृ-तानन, टेढ़मुहाँ ।

त्यु apamrityu-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अकालमृत्यु कुमृत्यु, कुसमय मृत्यु, अल्पायु, जैसे बिजली के गिरने, विष खाने, साँप आदि के काटने से मरना ।

ोग apayoga-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) कुयोग, दुरायोग । (२) नियमित मात्रा से अधिक वा न्यून औषध पदार्थों का योग । (३) कुशकुन, असगुन । (४) कुसमय, कुवेला ।

काय aparakáya-हिं० संज्ञा पुं० शरीर का पिछला भाग ।

ना aparaná-हिं० स्त्री० अपामार्ग । वि० बिना पत्ते वाली । (Leafless).

म् aparam-सं० क्लीं० हाथी के पीछे का अर्द्ध भाग, गजपश्चादर्ध । हाथी का पिछला भाग, जंघा, पैर इत्यादि ।

स aparasa-हिं० संज्ञा पुं०, उ० चम्बल । सफ़्फ़िय्यह्, सद्फ़िय्यह्, क़रक़ुल्जिल्द-अ० । सोरायसिस (Psoriasis)-इं० । चर्मरोग भेद । एक चर्मरोग जो हथेली और तलवे में होता है । इसमें खुजलाहट होती है । और चमड़ा सूख सूख कर गिरा करता है । विचर्चिका ।

चिकित्सा

(१) गोधूम (गेहूँ) ८४ सेर लेकर पाताल यन्त्र द्वारा तैल निकालें । इस तेल के लगाने से अपरस नष्ट होता है ।

(२) आक का दूध १ छटाँक, बकुची का तेल १ पाव, सेंहुड़ के दूध १ छटाँक को एक पाव तिल तैल मिलाकर सिद्ध करें इसके लगाने से अपरस दूर होता है ।

(३) आठिल की जड़ की छाल लेकर स्वरस निकालें और उसे भेड़ (मेष) के १ छटाँक घी में पकाएँ, फिर काम में लाएँ ।

(४) सिन्दूर ६ माशा को भेड़ के घी में घोट-कर रक्खें । इसके उपयोग में अपरस दूर होता है ।

अपरा apará-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) (Placenta) खेड़ी, आँवल । भा० म० ४ भा० प्रसूतोपद्रव-चि०। अमरा-सं०। (२) पदार्थ विद्या । (३) पश्चिम दिशा । (४) पञ्चतन्मात्र, मन, बुद्धि और अहंकार इनको अपरा कहते हैं ।

वि० [सं०] दूसरी ।

अपराजित aparájita-सं० लहसुनिया । हिं० वि० [स्त्री० अपराजिता] (Inco-nqurable) जो जीता न जाए । जो पराजित न हुआ हो ।

संज्ञा पुं० विष्णु ।

अपराजित धूपः aparájita-dhúpah-सं० पुं० यह धूप सब प्रकार के ज्वरों का नाश करने वाला है । गुग्गुल, गंधतृण, वच, सर्ज, निम्ब, आक, अगर और देवदारु । च० द० ज्व० चि० ।

अपराजिता aparájitá-हिं० संज्ञा स्त्री०[सं० स्त्री०](१) यह कोयलकी बेल का साधारण नाम है ।

क्लिटोरिया टर्नेटिया (Clitorea Tern-atea, *Linn.*)-ले० । बटर फ्लाई पी Butterfly pea, विंग्ड-लीव्ड क्लिटोरिया (Winged -leaved Clitoria), इण्डियन मेज़ेरीन (Indian Mezer-eon)-इं० । क्लिटोरिया डी टर्नेटी Clitoria de Ternate-फ्रां० । फियुला-क्विका Feula-ciqua-पुर्त० ।

संस्कृत पर्याय—आस्फोता, गिरिकर्णी, विष्णुक्रांता (अ०), गिरिशालिनी (के०), दुर्गा (श०), अस्फोटा (अ० टी०), गवाक्षी, अश्वखुरी, श्वेता, श्वेतभण्टा, गवादनी (र०), अद्रिकर्णी, कटभी, दधि पुष्पिका, गर्दभी, सित पुष्पी, श्वेतस्पन्दा, भद्रा, सुपुत्री, विषहन्त्री, नगपर्य्याय कर्णी, अश्वाह्वादखुरी । अपराजिता, कवाठेंठी, कोयल, विष्णुकांति, कालीज़ीर-हिं० ।

अपराजिता–पं० । माज़रियूने हिन्दी–अ० । नयात पीले ह्यात–फ़ा० । फीकी की जड़ का भाड़, घुट्टी की जड़ का भाड़, फीकी–द०, हिं० । काक्कणड्-कोडि, कवधी, कुरु विलइ-ता० । नल्ल-विष्णुक्रांत, विष्णु क्रांत, दिन्टन, नल्लनेल गुम्मिरि, तेल, मेल, तेलदिन्टन, नीलदिन्टन–ते० । शरल, शङ्ख-पुष्पम्, काक्कणम्-कोटि, काक्वलि–मल० । कसरोडु–सिं० । गोकर्ण (-र्णी) काजलि–मह०, धरण० । काली पावटरी–मह० । गरणी–गु० । कर्णिके, शंखपुष्प, विष्णु –कान्टि–सुप्पु, कीर, गुल, गोकर्ण मूल–कना० । धम्मर–पं० । बिलीय गिरि फर्णिके, नीज गिरि कर्णिके–क० । प्यारल –माला० ।

अपराजिता बीज

क्लिटोरिया टर्नेटिया Clitorea ternatea Linn. (Seeds of.)–ले० । अपराजिता के बीज, कवाठेठी के बीज–हिं० । फीकी की जड़ के बीज, घुट्टी की जड़ के बीज–द० । अपराजितार बीज—बं० । ब ज्रु ल माज़रियूने-हिंदी–अ० । तुख़्मे–पीलेह्यात–फ़ा० । काक्कणक्कोडि-विरै-ता० । दिन्टन–विसुलु–ते० । शंगविरा, काक्कणम्-विरा, काक-विरा–मल० । कसरोडु-बीज-सिं० ।

नोट—अपराजिता शब्द से निघण्टु में अश्व-खुरक, वक्षा मोरा, विष्णुक्रांता, शुभ्रांगी, शेफालिका या शंखपुष्पी ली जाती है । अश्वखुरकः गिरिकर्णिका, कटभी, श्वेता, आदि नाम से कही जाती है ।

शेफालिका—गिरिसिन्दुक या श्वेत सुरसा कहाती है । यह विपक्ष है ।

शिम्बी या बब्बूर वर्ग

(*N. O. Leguminosæ*)

उत्पत्तिस्थान—सम्पूर्ण भारतवर्ष ।

संज्ञा निर्णय—अरबी संज्ञा माज़रियूने-हिंदी का अर्थ हिन्दी माज़रियून (Indian Mezereon) है और यही संज्ञा मद्रास में अपराजिता के लिए व्यवहारमें आती है, क्योंकि उन्होंने मान लिया है कि इसकी जड़ में माज़-रियून की जड़ के समान प्रभाव है ।

दक्षिणी संज्ञाएँ कालादाना ... क्लिटोरिया के बीज तथा सुफेद ... क्लिटोरिया के बीज कभी ... लिए कतिपय ग्रंथों में ही नहीं व्यवहार ... गई हैं, प्रत्युत किसी किसी बाज़ार में ... व्यवहार किया जाता है । परंतु ये कर्ण ... कालादाना और उसके लाल भेद की ... संज्ञाएँ हैं, अतः उन्हें उन्हीं तक सीमित ... देना चाहिए ।

काक्कण ट्टि मलयालिम भाषा का ... जिसका अर्थ काकलता होता है और ... लिए है कि इसके पुष्प का रंग काक ... होता है । परंतु हॉर्टस मालाबारिकस (Hor-tus malabaricus) तथा ... में यह नाम म्युकुना जायगैंटिया (Mucuna gigantea) के लिए प्रयोग में ... गया है ।

तामिल शब्द काक्कणङ्‌ या काक्कण ... अपराजिता तथा कालादाना दोनों के लिए ... रूप से व्यवहार में आते हैं, परन्तु यथार्थ ... अपराजिता के ही नाम हैं । अतः उनको ... लिए प्रयोग करना चाहिए, कालेदाने के ... उस नाम के अंतर्गत आए हुए नामों से ... पूर्वक पहचाने जा सकते हैं ।

डिमक (१ म खंड ४२१ पृ०) ... अपराजिता का संस्कृत नाम गोकर्ण लिख ... परन्तु, किसी भी प्रचलित वैद्यक ग्रंथ में ... उक्त संज्ञा का उल्लेख नहीं मिलता । ऐसा ... होता है कि "गिरिकर्णिका या गिरिकर्णी ... भ्रमवश "गोकर्ण" लिख दिया गया ... 'गोकर्णी' वा 'गोकर्ण' अपराजिता का ... नाम है ।

सकल अन्य लेखकों ने एक स्वर से ... के बीज को अपराजिता बीज के सर्वथा ... होने का उल्लेख किया है । परन्तु, कालादाना ... गात्र पूर्ण वर्ण रुक्ष कृष्ण होता है; इसके ... अपराजिता के बीज का गात्र चिकना ... वर्ण का होता है ।

ानस्पतिक-वर्णन—अपराजिता एक प्रकार
[ाखित बहुवर्षीय लता है। प्रायः शोभार्थ
उद्यानों में लगाते हैं। यह बहुशाखी एवं
त होती है। मूल किंचित् गूदादार गाजरमुखी
ायुक्त होता है। प्रकाण्ड अनेक काण्डों से
'को लिपटे हुए, छोटे पौधों में मृदुरोमयुक्त
bescent) होते हैं। पत्र छोटे प्रायः गोल
अंडाकार, विषम पक्षाकार, एक और की दोनों
जोड़े जोड़े होते हैं। प्रायः पत्र २-३ किसी
में ४ जोड़े होते हैं, किन्तु उनके सिरेपर पर्याप्त
भाग पर एक अयुग्म पत्र होता है। पुष्प बड़े,
या नीले (या रङ्ग), वृन्तयुक्त (सवृन्त)।
दे वैक्सिलेट होते हैं। पुष्पवृन्त लघु, लग-
चौथाई इंच लम्बा, पर्णीय, अकेला एक पुष्प-
होता है। ब्रैक्टिओलस किंचित् गोल,
-बाह्य-कोष के आधार से संलग्न होते हैं।
प-बाह्य-कोष पुष्पाभ्यन्तर कोष का ½ लम्बा,
शिखर युक्त, विषम, स्थाई, बीज-कोषाधः होता
पुष्पाभ्यन्तर-कोष निलीनरूप, वृहदोष्ठ
ज (Vexillum) बड़ा, सिरा गोलाकार
खरयुक्त; बहिः, नीला, (मध्यभाग पीताभायुक्त
श्वेतवर्ण का), पक्ष (Alæ) अंडाकार
यन्त पतला और संकुचित डंठलयुक्त, नरयिका
Keel) कुछ कुछ पद के आकार के दो पतले
अथवा डंठल से युक्त होते हैं। नरतंतु या
'व पराग केशर या पराग की तीली (Stamens) ९ से १० या इससे भी अधिक, दो
भागों में स्थित (Diadelphous) होते
जिनमें एक पृथक रहता है और शेष तन्तुओं
ारा आपस में मिले रहते एवं बीजकोषाधः होते
। परागकोष या पराग की घुण्डी (Anthers) बहुत सूक्ष्म, गोलाकार और श्वेत होती
। नारितंतु वा गर्भकेशर (Style)
साधारण, परागकेशर की अपेक्षा लंबे, किञ्चित्
वक्र, सिरेपर परिविस्तृत होते हैं। शिम्बी या छीमी
(Legume) २ से ३ इंच लम्बी और चौथाई
इंच चौड़ी, चिपटी, सीधी, कुछ कुछ लोमश,
द्विकपाटीय (दो छिलके युक्त), एक कोष युक्त
(पर कोष की दीवारों से बहुत से भागों में
विभाजित होती है, जिनमें से प्रत्येक में एक एक
बीज होता है) और बहुबीजयुक्त होता है।

बीज आयताकार ¼ इंच लम्बे, चिपटे, कृष्ण या हरिताभायुक्त धूसर या धूसरवर्ण के होते हैं। यह सदा पुष्पित रहती है।

पुष्पभेद से यह दो प्रकार की होती है—(१) वह जिसमें सफेद फूल लगते हैं श्वेतापराजिता श्वेतगिरिकर्णिका। विष्णुकान्ता। सफेद कोयल और (२) वह जिसमें नीले फूल आते हैं नीलापराजिता, नील गिरिकर्णिका, कृष्णक्रान्ता, नीली कोयल आदि नामों से संबोधित की जाती है।

नीलापराजिता का एक और उपभेद होता है जिसमें दोहरे फूल लगते हैं।

नोट—इन विभिन्न प्रकार के अपराजिता के बीजों के प्रभावमें कोई प्रकट भेद नहीं और यदि कुछ होता है तो वह इसकी सफेद जातिके बीजमें हो सकता है। किंतु इनमें वह बीज जो दूसरे की अपेक्षा अधिक गोल एवं मोटे होते हैं, प्रभावमें अधिकबलशाली सिद्ध होंगे पुनः चाहे वे किसी जातिके हों।

रासायनिक संगठन—मूलत्वक्-में श्वेतसार, कषायिन और राल; बीजमें एक स्थिर तैल, एक तिक्त राल (जो इसका प्रभावात्मक सत्व है।), कषायाम्ल (Tannic acid), द्राक्षौज (एक हलका धूसर वर्ण का राल) और भस्म (६ प्रतिशत) प्रभृति होते हैं। बीज बाह्य-त्वक् टूट जाने वाला (भंगुर) होता है। इसमें एक दौल होता है जो कणदार श्वेतसार से पूर्ण होता है।

प्रयोगांश—जड़ की छाल, बीज और पत्र।

औषध-निर्माण-(१) बीज का अमिश्रित चूर्ण–Simple Powder of Clitorea Seeds (Pulvis Clitoreæ Simplex).

निर्माण-विधि—साधारण तौर पर चूर्ण कर बारीक चलनी या कपड़े से छानकर बोतल में भरकर सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—१ से १॥ ड्राम तक (२-४ आना)।

गुण—इतनी मात्रा से ५ या ६ दस्त खुलकर

आएँगे और इसकी मात्रा २ ड्राम पर्यन्त करने से दस्तों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। इतने से साधारणतः ८ या ६ दस्त आएँगे।

(२) अपराजिताके बीजका मिश्रित चूर्ण–Compound Powder of Clitorea Seeds (Pulvis Clitoreæ Compositus).

निर्माण-विधि—अपराजिता के बीज, सैंधव या क्रीम ऑफ़ टार्टार इनको चूर्ण कर इनमें से प्रत्येक ७ औंस लें; सोंठ या कुलंजन वृक्ष का चूर्ण एक आउंस इनको एक साथ भली प्रकार रगड़कर बारीक चलनी या कपड़े से चालकर बंद बोतल में सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—१॥ ड्राम से २ ड्राम तक।

(३) शीत कषाय (Infusion)—(८ में १)।

मात्रा—१ से २ आउंस।

(४) एलकोहलिक एक्सट्रैक्ट।

(५) क्वाथ।

(६) पत्र एवं मूल स्वरस।

(७) सूखी हुई जड़की छालका चूर्ण। मात्रा-१ से ३ ड्राम।

प्रतिनिधि—काला दाना व लालदाना, जलापा तथा कॉन्वॉल्व्युलस के बीजकी यह उत्तम प्रतिनिधि है। भेद केवल इतना है कि यह अधिक अग्राह्य एवं चरपरी होती है।

अपराजिता के प्रभाव तथा प्रयोग

आयुर्वेद के मत से—दोनों गिरिकर्णी (श्वेतापराजिता तथा नीलापराजिता) तिक्त, पित्त के उपद्रव को प्रशमन करने वाली, चक्षुष्य, विष-दोषनाशक तथा त्रिदोषशामक होती हैं। गिरिकर्णी (अपराजिता) शीतल, तिक्त पित्तोपद्रव-नाशक, विष तथा नेत्र के विकारों को शमन करने वाली और कुष्ठरोग को नष्ट करने वाली है। (धन्वन्तरीय निघंटु)

गिरिकर्णी (अपराजिता) हिम, तिक्त, पित्तो-पद्रव नाशक, चक्षुष्य, विषदोषशामक और त्रिदोष को शमन करने वाली है। नीलाद्रिकर्णी (नीलापराजिता) शीतल, तिक्त है, [illegible] तथा दाह को नष्ट करने वाली तथा [illegible] उन्माद, भ्रमरोग, श्वास और [illegible] को हरण करनेवाली है। राज०।

कटु, तिक्त, कफ वातनाशक, [illegible] करने वाली, खाँसी को नष्ट करने [illegible] कण्ठ्य अर्थात् कण्ठ को शुद्ध करने [illegible] राज०।

अपराजिता कटु, मेध्य शीतल, [illegible] को प्रसन्नताकारक तथा कुष्ठ, मूत्र, त्रिदोष, [illegible] शोथ, [illegible] और विष को नष्ट करनेवा[ली] तथा कसैली, पाकमें कटुक (चरपरी) [illegible] तथा स्मृति और बुद्धिदायक है। भा०।

अपराजिता के प्रयोग

यह पृश्नि (चितकबरे, कौड़िया [illegible]) नामक साँप और बिच्छू के विष को [illegible] अथर्व०। सू० ४। १५। का० १०।

चरक—दर्वीकर सर्प के काटने पर [illegible] (श्वेत-निर्गुण्डी) वृक्ष की जड़ को [illegible] श्वेत अपराजिता की जड़ की छाल इनको [illegible] साथ पीस कर पिलाएँ। (चि २१ अ०)

चक्रदत्त—(१) श्वेतापराजिता की [illegible] छाल के रस को तण्डुलोदक के साथ [illegible] योग से पान कराएँ। इससे मूतोन्मा[द] होगा। (उन्माद चि०)

(२) सफेद कोयल की जड़ को [illegible] गो घृत मिला गलगण्ड रोगी को पिलाएँ (गलगण्ड चि[०])

शार्ङ्गधर—परिणाम शूल में [illegible] और गोघृत के साथ विष्णुक्रान्ता की [illegible] कल्क ७ दिन तक सेवन करने से [illegible] नष्ट होता है। (२ खं० ५ अ०)।

वंगसेन—शोथरोग में श्वेत या नील [अपरा]जिता की जड़ की छाल को उष्ण जल [से] पान करने से सूजन जाती रहती है। ([illegible] स० २१६ पृ०)।

हारीत—वल्मीक श्लीपद रोगमें गिरि[कर्णी] अर्थात् अपराजिता की जड़ की छाल को लेप करें। (चि० ३१ अ०)

जलोदर एवं प्लीहा व यकृत वृद्धि में— अपराजिता की जड़, निशोथ, इन्द्रायन और त्रिफला। इसको समभाग लेकर जल के साथ यवागूवत् प्रस्तुत करें और गोमूत्र के साथ पान करें।

सुश्रुत

सुश्रुत में सर्पादि विषों की चिकित्सा में अन्य द्रव्यों के साथ अपराजिता का प्रयोग दिखाई देता है, यथा—'श्वेत गिरिह्वा ■ गिरिकर्णिका' (क०५ अ०)। सुश्रुतोक्त शोथ एवं उन्माद की चिकित्सा में अपराजिता का उल्लेख नहीं है। सुश्रुत के सूत्र स्थान के ३९ वें अध्याय के वामक द्रव्यों की तालिका में अपराजिता का नाम नहीं आया है, किंतु शिरोविरेचन वर्ग की औषधियों में अपराजिता का उल्लेख है। यथा—

"अपामार्गाद्यानामश्वेतानां मूलानि"

वाक्य में अपराजिता के मूल को शिरोविरेचक माना गया है।

चरकोक्त वामिकर द्रव्यों में अपराजिता का पाठ नहीं है (वि० ८ अ०)।

चरक में पृथुमन्त् शिरोविरेचन द्रव्यों के वर्ग में इसका पाठ आया है। (सू० ४ अ०)। चरकोक्त शोथ चिकित्सा में अपराजिता का प्रयोग नहीं दिखाई देता। किंतु उन्माद चिकित्सा में द्रव्यान्तर के साथ इसका प्रयोग आया है। भगन्दर के शोथ और शूल की चिकित्सा में अपराजिता का प्रयोग नहीं है।

नव्यमत

डिमक महोदय के कथनानुसार विरेचक व मूत्रल गुणों के कारण इसको माजरियून हिन्दी (Indian mezereon) नाम से अभिहित किया गया है। किंतु यहाँ पर यह बतला देना आवश्यक प्रतीत होता है कि माजरियून उदरीय शोथको दूर करने के लिए व्यवहार में लाया जाता है। और यह फार्माकोपिया वर्णित माजरियून नहीं है।

वे और भी लिखते हैं कि कोंकण में इसकी जड़ का रस दो तोला की मात्रा में शीतल दुग्ध के साथ पुरातन कास में कफघ्न (कफनिस्सारक) रूप से व्यवहार में आता है। इसके प्रयोग (नस्य) से गला साफ होता है। महाराष्ट्र में रोगियों को जड़ का रस नथुनों द्वारा सूँघा जाता है।

पाश्चात्य चिकित्सक बालकों के लिए हितकर तथा कष्टप्रद कास (Croup) में अपराजिता की जड़ के उपयोग का वर्णन करते हैं।

"बंगाल डिस्पेंसरी" नामक पुस्तक के रचयिता बहुत से प्रयोगों के पश्चात् अपराजिता के चिकित्सा गुण को स्वीकार करते हैं। वे लिखते हैं कि अपराजिता की जड़ का "एल्कोहलिक एक्स्ट्रैक्ट" ५ से १० ग्रेन की मात्रा में शीघ्र विरेचक सिद्ध हुआ। किंतु इसके सेवन से रोगी के पेट में दर्द (ऐंठन) एवं बारम्बार मल त्यागने की इच्छा होती है और बहुत वेदना के बाद थोड़ा मल निकलता है। अतः वे इसे व्यवहार करने का परामर्श नहीं देते।

सर्व प्रथम इसका बीज टर्नेटी (Ternato) द्वीप से जो मलक्काद्वीपों में से एक है, इंगलैंड में लाया गया। अस्तु, इस पौधे का यह प्रधान नाम हुआ। हेम्स (Hames) इसको (नीलापराजिता पुष्प) हिंदपर की लिट्मस (रासायनिक) की प्रतिनिधि बतलाते हैं। (फा० इं० १ खंड, ४४१-४४०)।

डॉ० आर० एन० खोरी—अपराजिता की जड़, स्निग्ध, मूत्रकारक एवं मृदुरेचक है और पुरातन कास, जलोदर, शोथ एवं प्लीहा व यकृत विवृद्धि तथा ज्वर और स्वरघ्नी कास (Croup) में व्यवहृत होती है। अपराजिता की जड़ का शीत कषाय स्निग्ध (Demulcent) रूप से बस्ति तथा मूत्र प्रणालीस्थ क्षोभ और कास में व्यवहार किया जाता है। अर्द्धावभेदक अर्थात् अधकपाली रोग में इसकी ताजी जड़ के रस का नस्य देते हैं। इसका ऐक्सट्रैक्ट शीघ्र रेचक तथा कालादाना, गुलबास बीज और जलापा की उत्तम प्रतिनिधि है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ इंडिया २ य खंड २०६ पृ०)।

मि० मोहीदीन शरीफ़ स्वानुभव के आधार पर इसकी जड़ की छाल के १–२ ड्राम की मात्रा के शीत कषाय की वस्ति एवं मूत्रप्रणाली जन्य शोथों में स्निग्ध प्रभाव करने की बड़ी प्रशंसा करते हैं। साथ ही इसका मूत्रजनक और किसी किसी में मृदुरेचक प्रभाव होता है।

इसके बीज रेचक हैं। फा० इं०।

इसके पत्र का शीत कषाय विस्फोटक (Eruptious) में व्यवहृत होता है। चैट०।

इसके पत्ते के रस को आर्द्रक के साथ मिलाकर तपेदिक (Hetic fever) में स्वेद आनेकी हालत में व्यवहार करते हैं। टेलर।

कर्णशूल में विशेषतया उस अवस्था में जब कि कान के आस पास की ग्रंथियाँ सूज गई हों, तब कान के चारों ओर अपराजिता के पत्ते के रस में सेंधानमक मिलाकर गरमागरम लेप करें। ए० सी० मुकर्जी।

डॉ० नदकारिणी—अपराजिता के बीज को भून कर चूर्ण प्रस्तुत करें। इसको जलोदर और प्लीहा व यकृत विवृद्धि में २० से ६० ग्रेन (१२ से ३० रत्ती) की मात्रा में प्रयुक्त करें। साधारणतः इसको इस प्रकार बर्तते हैं—२ भाग क्रीम ऑफ़ टार्टर, १ भाग सोंठ और १ भाग अपराजिताके बीज, इनका चूर्ण बनाएँ। मात्रा—½ से १ ड्राम।

उपयोग—इसको दृष्टिदौर्बल्य, कंठक्षत, श्लेष्मविकार, अर्बुद, त्वग्दोष तथा शोथ आदि रोगों में बर्तते हैं।

एक दो वा अधिक बीजों को भूनकर फिर मानुषी दुग्ध में पीसकर वा घीमें भूनकर बालकों के उदरशूल तथा मलावरोध में देते हैं। जड़ का एल्कोहलिक एक्सट्रैक्ट भी एक से दो ड्राम की मात्रा में उपयोगी है। (इंडियन मेटिरिया मेडिका पृष्ठ २२१–२२२)।

आर० एन० चोपरा—अपराजिता की जड़ मलशोधक तथा मूत्रल है और सर्प के विष में प्रयुक्त होती है।

(इं० ड्र० इं० पृ० ४०६)।

अपराजिता की पत्ती का कल्क प्रस्तुत कर ना-

रु न ख़ोरह् अर्थात् नरुहिया (Whit… फोड़े पर बाँधने और निरन्तर जब मे… से बहुत शीघ्र लाभ होता है। पर्गनिर्…

(२) पीत निर्गुण्डी। (३) जयन्ती… रा० नि० व० २३, ४। (४) … भा० पू० २ भा०। (५) श्वेत… (६) ब्राह्मी। (७) एक प्रकार की … रा० नि० व० ८। (८) शेफालिका। … नि० व० ४। (९) शङ्खिनी। (१०) … प्रकार का अपुरा। (११) एक प्रकारका … रा० नि० व० ४।

अपराजिता धूपः aparájitá-dhúpah-… पुं० बिनौला, मोरपंख, बड़ी कटेरी, … मांसय, तगर, लज, वंशलोचन, बिल्ली का … धान के तुष (भूसी), वच, मनुष्य के … काले साँप की केंचुली, हाथीदाँत, गौ का … हींग, मिर्च, इन्हें बराबर लेकर धूप बनाएँ। … धूप पसीना, उन्माद, पिशाच, राक्षस, देवता … आवेश, ज्वर इन सबका नाश करता है। … इसकी धूप (धूनी) दें तो सब बालग्रहों … दूर करता है और पिशाच तथा राक्षसों … निकालकर सब ज्वरों को नाश करता है। … यो० चिन्ता म०।

अपराजितायोगः aparájitáyogah-सं० पुं० सफेद कोयल की जड़ को पीस प्रातः काल पीने… गलगण्डरोग नष्ट होता है। इसके ऊपर … गोघृत पीएँ और पथ्य से रहें। योग० त० ग० चि०।

अपराजितालेहः aparájitálehah-सं० पुं० (१) काकड़ासिंगी, कचूर, पीपल, भारंगी, … नागरमोथा, जवासा, तैल इनका लेह (चटनी) बना चाटने से वात की खाँसी नष्ट होती है। चक्र० द०।

(२) मजीठ २ तो०, कुड़ा ८ तो०, … की जड़ २ तो० इन्हें कूट कर ६४ तो० … पकाएँ। जब चतुर्थांश शेष रहे तो इसको … निकालें और उसमें ८ तो० मिश्री, … दूध १६ तो०, बेलफल, अतीस इनका …

...१ तो० मिला तथा नागरमोथा, इन्द्रजौ १-१ ...० मिलाकर पकाएँ। जब चटनी सी हो जाए ...। उतार रक्खें। इसके सेवनसे ग्रहणी, अतिसार ... होते हैं।

(२) मजीठ २ तो०, कुड़े की छाल ८ तो०, ...रामूल १ तो० इन्हें कूट कर १०२४ तो० ...र में पकाएँ जब चौथाई रहे तो इसमें १६ ...० बकरी का दूध मिलाकर पकाएँ। जब गाढ़ा ...नी के तुल्य हो जाए तब इसमें सोंठ, अतीस, ...गरमोथा, इन्द्रजौ, एक एक तोला मिला कर ...खे। इसे खाएँ और ऊपर से काँजी, मलाई ...में सिद्ध मांस खाएँ और बकरी का दूध पिएँ ... संग्रहणी, तथा अतिसार दूर हो। यह्सेसं ...ग्रहणी-वि० ।

...धीन apaŕádhína-हिं० वि० स्वाधीन। ... An voluntary).

...पातन apará-pátana-सं० पुं० अविज्ञ ...रता, खेती गिराना। सु०सं० शा० अ० १०।

...युः aparáyuh सं०पुं० प्रणांतरावरण। ...Amnion).

...ः aparáhnah सं० पुं०
...ह aparáhna-हिं० पुं०
(Afternoon) दिवस शेष भाग, तीसरा पहर। ...न का पिछला भाग, दोपहर के पीछे का काल ...ह काल प्रावृट् काल के समान होता है। सु० ...० ६।

...क्लिन्न apariklinna-हिं० वि० [सं०] ...शुष्क। सूखा।

...गृहीता aparigrihítá-सं०(हिं०) स्त्री० ...अविवाहिता स्त्री, रखैली स्त्री।

...चालक aparichálaka-हिं० वि० पुं० ...रोधक, अवाहक। जो विद्युत धाराका वाहक न हो। (Nonconductors-insulator.)

...रिच्छद् aparichchhada
...च्छिन्न aparichchhanna
...च्छन्न aprachchhanna
-हिं० वि० [सं०] आच्छादन रहित, आवरण रहित। जो ढका न हो। नंगा। खुला।

अपरिच्छिन्न aparichchhinna-हिं० वि० [सं०] (१) जिसका विभाग न हो सके। अभेद्य। (२) जो अलग न हुआ हो। मिला हुआ। (३) असीम सीमा रहित।

अपरिणत aparinata-हिं० वि० [सं०] (१) अपरिपक्व। जो पका न हो। कच्चा। (२) जिसमें विकार और परिवर्त्तन न हुआ हो। विकार शून्य। ज्यों का त्यों।

अपरिणामी aparinámi-हिं० वि० [सं० अपरिणामिन्] [स्त्री० अपरिणामिनी] परिणाम रहित। विकार शून्य। जिसकी दशा में परिवर्त्तन न हो।

अपरिणीत aparinita-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अपरिणीता] अविवाहित, क्वारा। (Bachelor).

अपरिणीता aparinitá-हिं० वि० स्त्री० क्वारी, अनूढ़ा। (Maid, virgin, unmarried girl).

अपरितुष्ट aparitushta-हिं० वि० [सं०] असन्तुष्ट, तृप्तिरहित। (Dissatisfied.)

अपरिपक्क aparipakka-हिं० वि० [सं०] (१) जो परिपक्व न हो। अपक्व, कच्चा। (Unripe)। (२) जो भली भाँति पका न हो। डँसर। अधकच्चा। यौ०-अपरिपक्व कषाय।

अपरिपूर्णयोग aparipúrna-yoga-हिं० पुं० (Unsaturated compound). ऐन्द्रियक रसायन के अनुसार यदि कार्बन वा किसी अन्य तत्व के परमाणु के साथ अन्य तत्व के संयोग से उसकी कोई शक्ति वा स्थान रिक्त हो तो उसे अपरिपूर्ण योग कहते हैं, जैसे-एसीटिलीन जो कज्जलन के एक और उदजन के दो परमाणुओं का एक यौगिक है।

अपरिपूर्णविलयन aparipúrna-vilayana -हिं० पुं० (Unsaturated-solution) रसायन शास्त्रानुसार जब किसी द्रव में विलेय पदार्थ का विलयन करते समय उस पदार्थ का घुलना बन्द न हो अर्थात् वह घुलता ही तो वह विलयन अपरिपूर्ण विलयन

अपरिमाण aparimána } -हिं० वि० [सं०]
अपरिमित aparimita }
परिमाणहीन, असंख्यात, अनंत। (Unlimited).

अपरिमेय aparimeya-हिं० वि० [सं०] जिसका परिमाण न पाया जाए। जिसकी नाप न हो सके।

अपरिम्लानः aparimlánah-सं० पु० (The red var. of Barleria prionites) रक्त अम्लान पुष्प वृक्ष। लाल कटसरैया।-हिं० वि० जो न कुम्हलाया हो, ताज़ा खिला हुआ। (Newly opened).

अपरिवर्त्तनीय aparivarttaniya-हिं० वि० [सं०] (१) जो परिवर्तन के योग्य न हो। जो बदल न सके।
(२) जो बदले में न दिया जा सके।

अपरिवृत्त aparivritta-हिं० वि० [सं०] जो ढका या घिरा न हो। अपरिच्छन्न।

अपरिष्कार aparishkára-हिं० संज्ञा पु० [सं०] [वि० अपरिष्कृत] (१) संस्कार का अभाव असंशोधन। सफाई वा काट छाँट का न होना। (२) मैलापन (३) भद्दापन।

अपरिष्कृत aparishkrita-हिं० वि० [सं०] (१) जिसका परिष्कार न हुआ हो। जो साफ़ न किया गया हो। (२) मैला कुचैला। (३) बेडौल, भद्दा।

अपरिसर aparisara-हिं० वि० संकीर्ण, संकुचित। (Crowded).

अपरीक्षित apariksita-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अपरीक्षिता] जिसकी परीक्षा न हुई हो। जो परखा न गया हो। जिसकी जाँच न हुई हो। जिसके रूप, गुण, परिमाण और वर्ण आदि का अनुसंधान न किया हो।

अपरूप aparúpa-हिं० वि० [सं०] (Deformed) कुरूप बदशकल। भद्दा। बेडौल। (२) [अपूर्व का अपभ्रंश] अद्‌भुत। अपूर्व।

अपरेद्युः aparedyuh-सं० [अव्यय] पर दिन।

अपरेशन apareshana-हिं० संज्ञा [अं० ऑपरेशन] (Operation) चिकित्सा। चीरफाड़।

अपरोक्ष aparoksha-हिं० पु० प्रत्य, (Present.)

अपर्णा aparná-हिं० संज्ञा स्त्री० [(अपरना, पत्रशून्य। (Leafless)

अपर्याप्त aparyápta-हिं० वि० [अयथेष्ट, अपूर्ण, स्वल्प, थोड़ा, कम (A little, not enough.)

अपर्व्वदण्डः aparvva-dandah-सं० रामशर, सरपत। (Saccharum रा० नि० व० ८।

अपर्स aparsa-हिं० संज्ञा पु० कुष्ठ (leprosy)। दे० अपरस।

अपर्स apurs-बिलूच०, शर्वत-हिमालय धूपड़ी, चन्दन-नैपा०। (Juniperus -celsa) मे० मो०।

अपलक्षण apalakshana-हिं० संज्ञा (१) अपशकुन। (२) (A Bad Sig कुलक्षण। बुरा चिन्ह। दोष। (३) दुश्च

अपलक्षणा apalakshaná-हिं० वि० [सं०] बुरे लक्षण वाली। दुर (of a bad sign, ominous.)

अपलापः apalápah-सं० पु० }
अपलाप apalápa-हिं० संज्ञा पु० }
पित्] यह पेट और छाती (अर्थात् पर) के में से एक शिरा मर्म है जो (अंसकूट से नीचे तथा पार्श्वों (पँसवाड़ों) के ऊपर एक दोनों ओर स्थित है। सु० शा० ६

अपलाषिका apaláshiká-सं० स्त्री० प्यास (Thirst)। दे० च०।

अपवनम् apavanam-सं० क्लीं० }
अपवन apavana-हिं० संज्ञा पु० }
(An artificial garden.) बाग। दे० च०।

रकः apavarakah-सं० पुं० गर्भगृह। (Inner room.) इला०। See-Garbhagriha.

र्गः apa-vargah-सं० पुं०
र्ग apavarga-हिं० संज्ञा पुं०
(१) अभिस्राव्य में से अपकर्षण करने को "अपवर्ग" कहते हैं, जैसे—विष-शास्त्र-विदों के अनुसार विष और विष वालों के विषोपसृष्ट स्वेद नहीं होते। इसमें से "विषोपसृष्ट प्रस्वेद अर्थात् स्वेदन क्रिया के अयोग्य होते हैं" यह व्यापक है जिसमें से कीट विष वाले पृथक् विष गए। सु० उ० ६५ अ० श्लो० १६। (२) मोक्ष, मुक्ति-हिं० । Liberation Deliverance.-इं०। (३) त्याग।

र्तन apavartan-हिं० संज्ञा पुं० परिवर्तन, उलटफेर, पलटाव।

र्त्तित apavartita-हिं० वि० [सं०] बदला हुआ। पलटाया हुआ। लौटाया हुआ।

वश apavasha-हिं० वि० [हिं० अप=अपना+सं० वश] अपने अधीन। अपने वश का। स्वाधीन। (Voluntary) परवश का उलटा।

विद्ध apaviddha-हिं० वि० [सं०] (१) त्यागा हुआ। त्यक्त, छोड़ा हुआ। (२) बेधा हुआ, विद्ध। (३) चूर्णित।

विषा apavishá-सं० स्त्री० निर्विषतृण, निर्विषी। (Curcuma zedoariae.) रा० नि०।

शोकः apa-shokah-सं० पुं० अशोक वृक्ष। (Saraca Indica.) रा० नि० व० १०।

ष्ट apashta-हिं० वि० अस्पष्ट, गुप्त। (Not clear, hidden).

सरण apasarana-हिं० पुं० प्रस्थान, चला जाना।

सर्जन apasarjana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] विसर्जन। त्याग।

अपसव्यः apasavyah-सं० त्रि०
अपसव्य apasavya-हिं० वि०
(१) दक्षिण, दाहिना (Right.)। (२) प्रतिकूल, उलटा, विरुद्ध (Opposite)। सव्य का उलटा। मे०।

अपसार apasára-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अप्=जल+सार] (१) गेंडुकवा। पानी का घोंघा। (२) पानी की भाप।

अपवाहक apaváhaka-हिं० वि० [सं०] स्थानांतरित करने वाला। एक स्थान से किसी पदार्थ को दूसरे स्थान पर ले जाने वाला।

अपवाहन apaváhana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] स्थानांतरित करना। एक स्थानसे दूसरे स्थान पर ले जाना।

अपवाहित apaváhita-हिं० वि० [सं०] एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया हुआ। स्थानांतरित।

अपवाहुक apaváhuka-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] देखो—अपवाहुकः।

अपशकुन apashakuna-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कुसगुन। असगुन।

अपशब्द apashabda-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पाद। अपान वायु का छूटना। गोज़। पर्दन।

अपसर्पण apasarpana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपसर्पित] पीछे सरकना। पीछे हटना।

अपसर्पित apasarpita-हिं० वि० [सं०] पीछे हटा हुआ। पीछे सरका हुआ।

अपसारण apasárana-हिं० पुं० (भौ० वि०) (Repulsion.) अपकर्षण।

अपस्कम्भः apaskambhah—सं० पुं० (Symplocos racemosa) लोध। अथर्व०। ४। ६। ४।

अपस्करः apaskarah-सं० पुं० (१) मल-द्वार, चूति। एनस (Anus)-इं०। (२) विष्ठा, पुरीष। (Fæces) धर०।

अपस्तम्भ (स्व) मर्म apastambha,-mba-marmma-सं० क्लीं० उदर और वक्षस्थ मर्मों में से एक शिरा मर्म विशेष। यह उर (हृदय)

की दोनों ओर वायु को बहाने वाली दो नाड़ियाँ "अपस्तम्भ" नामक दो मर्म हैं। सु० शा० अ० ६।

अपस्तम्भिनी apastambhini-सं० स्त्री० शिवलिङ्गिनी लता, शिवलिङ्गी। (Bryonia). वै० निघ०।

अपस्मारः,—"स्मृतिः" apasmárah,-smritih—सं० पु० अपस्मार-हिं० संज्ञा पु० [वि० अपस्मारी] स्वनामाख्यात प्रसिद्ध वात व्याधि, परियाय से होने वाला एक रोग विशेष। इसमें हृदय काँपने लगता है और आँखों के सामने अँधेरा छा जाता है। रोगी काँप कर पृथ्वी पर मूर्छित हो गिर पड़ता है। उसके हाथ पाँव में आकुंचन होता और मुँह से फाग आता है।

पर्याय—*अंग विकृति, लालाध, मूत विक्रिया* मृगी-सं०, हिं०,-बं०। मिरगी-हिं०, उ०। फेफ़्रे-म०। सरअ-अ०। म.र्ज़े काहनी, म.र्ज़े साक़ल। अबर क़लसा; अम्र अक़लसा-यु०। *एपिलेप्सी* Epilepsy, *एपिलेप्सिया* Epilepsia-इं०। मॉर्बस कॉमिटिएलिस Morbus-comitialis, सासर मेजर Sacer major-इं०। एपिलेप्सी Epilepsie, हॉट मैल Haut mal-फ्रां०। फालसुख़्ट Fallsucht-जर०।

पर्याय-निर्णायक नोट—इस रोग में स्मृति नष्ट हो जाती है। इसलिए इसको अपस्मार कहते हैं।

सरअ के शाब्दिक अर्थ गिर पड़ना, गिरना गिराना आदि हैं। परन्तु, *तिब्ब की परिभाषा* में मृगी को कहते हैं। इस रोग में संज्ञा व चेष्टा-वहा इंद्रियाँ अव्यवस्थित हो जाती हैं, ऐच्छिक मांस पेशियों में आकुञ्चन होता है और रोगी मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ता है। इसी कारण इसको उक्त नाम से अभिहित करते हैं। फ़ारसी में इसको नैदुल्वान कहते हैं।

नोट—शेष शब्दों की व्याख्या क्रमशः उन उन शब्दों के सामने की जाएगी।

निदान व सम्प्राप्ति

प्रायः यह रोग पैतृक होता है। ... में दाँत निकलना, उदरीय कृमि, अकस्मात ... का होना, युवा पुरुषों में अति ... मस्तिष्क को आघात पहुँचना, ... मस्तिष्कावरक प्रदाह, चिंता, शोक, ... श्रम की अधिकता, मद्यपान, उपदंश, ... वा सन्धिवात और रक्तविकार इत्यादि ... कंठ, आँत और जननेन्द्रिय में किसी ... क्षोभक व्याधि की उपस्थिति, स्त्रियों में ... दोष आदि इसके कारण हैं।

लिखा भी है—

चिन्ता शोकादिभिः क्रुद्धा दोषा हृत्स्रोतसि ...
कृत्वा स्मृतेरपध्वंसमपस्मारं प्रकुर्वते॥

अर्थात्—चिंता, शोक और भय के कारण ... एवं हृदय में स्थित हुए दोष (त्रय) ... नाश कर अपस्मार रोग को करते हैं।

वाग्भट्टः—

स्मृत्यपायोऽपस्मारः सधि सत्त्वाभि...
जायतेऽभिहते चित्ते चिंता शोक भयादि...
उन्मादवत्प्रकुपितैश्चित्तदेह गतैर्मलैः॥
हते सत्त्वे हृदि व्याप्ते संज्ञावाहिषु खेषु...

(वा० उ० ...

अर्थात्—जिस रोग में स्मृति का नाश ... जाता है, उसे अपस्मार कहते हैं। ... सत्त्वगुण में विघ्न होने के कारण चिंता, ... और भयादि द्वारा आक्रमित हुआ ... उन्माद के सदृश चित्त और देह में ... प्रकुपित दोषों से सत्व गुण नष्ट होकर ... और संज्ञावाही संपूर्ण स्रोतों में व्याप्त ... है; इसीसे स्मृति का नाश होकर अपस्मार होता है।

अपस्मार के भेद—

वैद्यक शास्त्रानुसार यह चार प्रकार का है, यथा—

अपस्मार इति ज्ञेयो गदो ... तुर्विधः। (मा०

या "मत्व दृष्टचतुर्विधः"
वातपित्त कफैर्न्॑णांचतुर्थः सन्निपातजः।
(सु०)

अर्थात्—(१) वातज, (२) पित्तज, (३) कफज और (४) सन्निपातज; (यह रोग नैमित्तिक है)

डाक्टरी मत से यह दो प्रकार का होता है—(१) ग्रैन्डमाल (Grand Mal) या हॉट माल (Haut Mal) अर्थात् उग्र अपस्मार या मरग बड़ी और (२) पेटिट माल (Petit Mal) अर्थात् साधारण अपस्मार या मरग छोटी। परंतु इस रोगका इसमें भी एक साधारण प्रकार यह है जिसको अंगरेजी में एपिलेप्टिक वर्टिगो (Epileptic Vertigo) अर्थात् आपस्मारिक शिरोघूर्णन या दुवार मरद' कहते हैं। इससे भिन्न अपस्मार की एक और अवस्था है जिसको अंगरेजी में स्टेटस एपिलेप्टिकस (Status Epilepticus) अर्थात् आपस्मारिकावस्था या मरग मुतवातिर कहते हैं। इसके अतिरिक्त बच्चोंके अपस्मारको बाल अपस्मार या शिशु-अपस्मार तथा अंगरेजी में इन्फेण्टाइल कन्वल्शन (Infantile convulsion) और अरबी में मद्'उल् अतफाल या उम्मुस्सिब्यान आदि नामों से पुकारते हैं।

नोट—यूनानी भेदों के लिए देखिए सरअ।

पूर्व रूप

जो किसी किसी समय रोगाक्रमण काल के बहुत समीप उपस्थित होता है; यहाँ तक कि रोगी अपने आपको सँभाल नहीं सकता और कभी उससे एक या दो दिवस पूर्व उपस्थित होता है। पूर्वरूप में से यह एक प्रधान लक्षण है कि रोगी को अपने शरीर के किसी मुख्य भाग साधारणतः हस्तपाद की अंगुलियों या पेट पर से सुरसुराहट मालूम होती है, जो वहाँ से आरंभ होकर ऊपर को जाती हुई शिर तक पहुँचते ही रोगी को मूर्च्छित कर देती है और रोग का दौरा हो जाता है। उक्त प्रकार की सुरसुराहट को डॉक्टरी की परिभाषा में ऑरा एपिलेप्टिका (Aura Epileptica) अर्थात् मरग की सुरसुराहट (मृगी की सुरसुराहट) कहते हैं। इसके अतिरिक्त रोगाक्रमण से पूर्व शिरोशूल एवं शिरोघूर्णन होता है अथवा नासिका से एक प्रकार की गंध आने लगती है और आँखोंके सामने चिनगारियाँ सी उड़ती प्रतीत होती हैं। कभी दौरे से पूर्व भयावह रूप दिखाई देते और कर्णनाद होता है, बुद्धि भ्रंश एवं विक्षिप्त निर्बलता होती, कभी उदरका वेग होता और कभी आक्षेप होकर शिर विक्षिप्त एक कंधे की ओर झुक जाता है, जो एक प्रधान लक्षण है। कभी कभी कोई रूप प्रगट नहीं होता। आयुर्वेद में भी प्रायः यही बातें लिखी हैं, यथा—

हृत्कम्पः शून्यता स्वेदो ध्यानं मूर्च्छा प्रमूढता।
निद्रानाशश्च तस्मिंश्च भविष्यति भवत्यथ॥
मा० नि०।

अर्थात्—हृदय का काँपना, हृदयकी शून्यता, स्वेदस्राव, चिन्तित सा रहजाना, मूर्च्छा (मनोमोह), अत्यन्त अचेतना और अनिद्रा आदि लक्षण अपस्मार रोग होने से पूर्व होते हैं।

रोगाक्रमणकालीन सामान्य लक्षण

जब इस रोग का आक्रमण होता है तब रोगी साधारणतः एक चीख मारकर और मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ता और तड़पने लगता है। हस्तपाद आकुंचित होकर मुखमण्डल भयावह और नीलवर्ण का हो जाता है, नेत्रपिण्ड ऊपर को फिर जाते एवं निश्चेष्ट हो जाते हैं। परन्तु, कभी कभी उनमें गति भी होती है, हृदय धड़कता है, श्वास कष्ट से आता और मुँह से झाग आता है। कभी जिह्वा दाँतोंके भीतर आकर कट जाती है। मूर्च्छितावस्था में ही मल व मूत्र का प्रवर्तन और शुक्र का स्खलन हो जाता है। फिर एक ओर से हस्तपाद में एक झटका सा लगकर आक्षेप प्रशमित हो जाता है तथा रोगी एक सर्द आह भरकर कुछ काल तक मूर्च्छित पड़ा रहता है। तदनन्तर ज्ञान होने पर उसकी बुद्धि ठिकाने नहीं रहती। अपितु, भ्रान्ति, शिरोशूल, शिरोभ्रमण, अजीर्ण स्थानिक आक्षेप या पक्षाघात तथा बुद्धिभ्रंश आदि विकार शेष रह

जाते हैं। उन्मत्त के समान कभी कभी रोगी को क्षोभ उत्पन्न हो जाता है। रोगाक्रमण काल २ मिनिट से १० मिनट पर्यन्त और कभी आध घंटा तक होता है।

इस रोग के वेग की न्यूनाधिकता विभिन्न व्यक्ति में एवं एक ही व्यक्ति को भिन्न भिन्न काल में विभिन्न होती है। यथा—

पक्षाद्वाद्वादशाहाद्वा मासाद्वा कुपिता मलाः।
अपस्मारायकुर्वन्ति वेगं किञ्चिदथान्तरम् ॥
देवे वर्षत्यपियथा भूमौ बीजानि कानिचित्।
शरदि प्रतिरोहन्ति यथा व्याधि समुद्भवः ॥

मा० नि०।

अर्थ—वात आदि दोषों के प्रकुपित होने से वातज का दौरा बारहवें दिन, पित्तज का पन्द्रहवें दिन और कफज का तीसवें दिन होता है। कभी कभी उपयुक्त अवधि को छोड़कर न्यूनाधिक दिनों में भी होता है। उदाहरणार्थ—जैसे चौमासे में मेघ के बरसने पर भी भूमि में पड़े हुए गेहूँ चने आदि बीज शरदऋतु में उगते हैं। उसी प्रकार सम्पूर्ण रोगों के बीज रूप वात आदिक दोष कभी किसी मृगी आदि रोग विशेष के निदान आदि के संयोग होने से उस रोग को प्रकट करते हैं। अतः एक रोगी को १७ वर्ष पर्यंत प्रति दिन रात्रि को एक बार इसका वेग होता रहा और एक अन्य ऐसे रोगी को हर रात्रि को १० बार रोग का वेग होता रहा तथा एक तीसरे को ६१ वर्ष की अवस्था में केवल ७ बार वेग हुआ।

पेटिट माल अर्थात् सामान्य प्रकार की मृगी अन्य मौबती रोगों के सदृश कभी नियत काल पर सप्ताह में एक बार या मास में एक बार होती है। कभी मृगी का वेग स्वप्नावस्था में ही आता है जिससे रोगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति को उसकी सूचना तक भी नहीं होती। स्टेटस एपिलेप्टिका मृगी रोग की वह अवस्था है जिसमें क्षण क्षण में वेग होते हैं। एक वेग का अंत भी नहीं होने पाता कि दूसरे वेग का आरम्भ हो जाता है। यह दशा अत्यंत शोचनीय होती है। एपिलेप्टिक वर्टिगो (आपस्मारिक शिरोघूर्णन)

अर्थात् मृगी के कारण शिरोभ्रमण-को क्षण भर के लिए चक्कर आकर आ जाता है। किसी किसी रोगी में इतना अवश्य होता है कि समीपस्थ देने वाले व्यक्तियों को उसका प[illegible] लगता। और किसी किसी में घबड़ा[illegible] होकर मुखमण्डल एवं ग्रीवा में तरंगु[illegible] उपस्थित हो जाता है, नेत्रकनीनिका जाती है और एक गम्भीर श्वास लेकर [illegible] में आकर काम में लग जाता है।

दोषानुसार अपस्मार के लक्षण

वातापस्मार—वात के अपस्मार [illegible] काँपता, दाँत पीसता व चबाता, फेन [illegible] करता अर्थात् मुख से झाग डालता, [illegible] लेता और कठोर (रूक्ष), धूसर व का[illegible] रंग के मनुष्यों को देखता है अर्थात् [illegible] प्रतीत होता है मानो कोई उक्त वर्ण वा[illegible] उसके ऊपर दौड़ा आता है। मा० नि० [illegible] अपस्मार में रोगी का पाँव काँपने लग[illegible] बार गिरता पड़ता है तथा ज्ञान के न[illegible] से वह विकृत स्वर से रुदन करने लगत[illegible] शोथ सी हो जाती, श्वास लेता, मु[illegible] डालता, काँपने लगता, सिर को घुमा[illegible] को चबाता, कन्धों को ऊँचे करता और [illegible] चारों ओर फेंकता है। देह में विषमता [illegible] और सम्पूर्ण अंगुलियाँ टेढ़ी पड़ जाती [illegible] त्वचा, नख और मुख रूक्ष, श्याव, [illegible] काले पड़ जाते हैं। रोगी को चंचल [illegible] विरूप और विकृतात्म सम्पूर्ण वस्तु [illegible] लगती हैं। वा० उ० अ० ७।

पित्तापस्मार—पित्तापस्मारी के मु[illegible] देह, मुख और आँखें पीली हो जाती हैं। समग्र वस्तुओं को पीतलोहित वर्णान्वित [illegible] है अथवा उसे ऐसा दीखता है मानो कोई [illegible] रंग का मनुष्य सामनेसे दौड़ा आता है, [illegible] "पीतोमामभिधावति"—सुश्रुत, और [illegible] होकर वह सम्पूर्ण जगत् को इस भाँति [illegible] है मानो वह उष्णता एवं अग्नि से व्याप्त [illegible]

० नि० । बारबार चेत कर लेना, स्तब्ध हो जा पड़ जाना, भूमि को खोदने लगना, श्वास लेना और भयानक, प्रदीप्त एवं क्रोधित रूप ना आदि लक्षण वाग्भट्ट महोदय ने अधिक हे हैं।

कफापस्मार—कफ की मृगी वाला रोगी द रंग के रूप को देखकर (मानों कोई श्वेत का मनुष्य सामनेसे उसके पास दौड़ा आता ऐसा देखकर-सुश्रुत) मूर्च्छित हो जाता है; ी का मुख, मुख का झाग, नेत्र और अंग द हो जाते हैं, शरीर शीतल हो जाता है, हर्ष होना और देह में भारीपन होजाता है। ष्मिक मृगी का रोगी अन्यान्य मृगी वालों की त देर में चैतन्य होता है। मा० नि०। । से लार का अधिक गिरना और नख का र हो जाना वाग्भट्ट ने अधिक लिखे हैं। ० उ० ७ अ० ।

त्रिदोषज या सान्निपातिक अपस्मार और अपस्मार की असाध्यता—

जिसमें तीनों दोषों के लक्षण मिलें उसे त्रिदो-अपस्मार कहते हैं। यह तथा क्षीण पुरुष का ना अपस्मार भी असाध्य है। जो बहुत कांपे, ण हो और जिसकी भौंह चलायमान हो और टेढ़े हो जाएँ ऐसे अपस्मार रोगी असाध्य हैं।

मा० नि०।

पैतृक अपस्मार को कम लाभ हुआ करता है। य प्रकार की वात व्याधियों की अपेक्षा स्तिष्कविकार जन्य अपस्मार, चाहे वह औप-ंशिक हो या न हो, अधिकतर चिकित्स्य होता । दन्तोद्भेदजन्य या आन्त्रविकारजन्य शैशव ल से आरम्भ होने वाला अपस्मार और जिसे त काल हो गए हों, लगभग असाध्य होते ।

रोग विनिश्चय

अपस्मारके लक्षण निम्न लिखित कतिपय रोगों लक्षण के बहुत कुछ समान होते हैं। अस्तु, पके निदान करने में उनका विचार कर लेना आवश्यक है:—

(१) अपस्मार तथा शिरोभ्रमण—

अपस्मार रोगी एकदम से पृथ्वीपर गिर पड़ता है और उसके हस्तपाद आक्षेपग्रस्त हो जाते हैं एवं उसके मुख से कफ जारी होता है। इसके विपरीत शिरोघूर्णन में यद्यपि रोगी चक्कर खाकर गिर पड़ता है तो भी न उसके हस्तपाद आक्षेप-ग्रस्त होते हैं और न तो मुख में झाग ही आता है।

(२) अपस्मार और योषापस्मार—

देखो—योषापस्मार।

(३) अपस्मार और आक्षेपक—

देखो—आक्षेपक।

स्वास्थ्य संरक्षण

रोगारम्भ से पूर्व जिस स्थान पर सुरसुराहट का बोध हो उससे ऊपर एक रूमाल या पटका कसकर बाँधना और वेग से पूर्व उक्त क्रिया का दोहराना या उक्त स्थल पर चुटकी लेना, सर्दी, गर्मी अथवा बिजली लगाना या ब्लिस्टर लगाना (फोस्का उत्पन्न करना) या उस स्थल की नाड़ी का छेदन करना, प्रायः लाभदायक सिद्ध होता है।

दोनों हाथों को उष्ण जल में रखना मन्या पर बर्फ लगाना, ५ १० मिनट तक उछलना कूदना या ज़ोर से पढ़ना, बस्तिकर्म, वमन कराना या विरेचन देना, २० ग्रेन क्लोरल एक आउंस पानी में मिलाकर पिलाना या ¼ ग्रेन मॉर्फिया (अहि-फेन सत्व) और $\frac{1}{40}$ ग्रेन एट्रोपीन (धत्तूरीन) का त्वगन्तरीय अन्तःक्षेप करना, आदि में मूर्च्छा न होनेपर अवयवोंको बलपूर्वक खींचना और शिर विपरीत दिशा की ओर घुमाना, श्वासावरोध में ईथर, क्लोरोफॉर्म या नाइट्रेट ऑफ इमाइल सुँघाना इत्यादि उपाय रोग प्रतिषेधक रूप से उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

रोगी के शिर को तीव्र गतिसे सुरक्षित रक्खें। कठिन परिश्रम, अधिक अध्ययन, अति मैथुन आदि से तथा मद्यपान एवं अधिक सर्दी गर्मी से परहेज करना चाहिए। गतिशील एवं घूमती हुई

चीज़ को देखना, ऊँचाई पर चढ़कर नीचे देखना, दौड़ना या घोड़े पर सवार होकर उसे दौड़ाना, स्नानागार के भीतर अथवा जिस ओर से गंदा वायु आता हो उस ओर बैठना, मधुर, स्निग्ध व गुरु (दीर्घपाकी) एवं उष्ण आहार का सेवन करना, दिन में सोना, मेघ का गरजन सुनना, विद्युत की चमक को देखना और वर्षा में भीगना इत्यादि ये सब हानिकारक हैं।

रोग के वेग से पूर्व जिस स्थल पर सुरसुराहट अनुभव हो वहाँ पर कपड़ा या रूमाल बाँधें या उक्त स्थल पर कोई भस्मक (या दाहक) औषध लगाकर क्षत उत्पन्न करें। भल्लक योग अर्थात् (कॉस्टिक)-रक्त मिर्च, राई और फ़र्फ्यून इनको सम भाग लेकर खूब कूटकर भिलावें के तैल में मिलाकर उक्त स्थल पर रखकर बाँध दें।

वेग के प्रारम्भ में रोगी के आक्षेपयुक्त अवयव को खींच कर पूर्व अवस्था पर ले आना प्रायः वेग को कम कर देता और कभी कभी रोक भी देता है।

सऊ़त अजीब (विलक्षण नस्य)—बासमती चावल को आवश्यकतानुसार लेकर आकदुग्धमें तर करके सुखालें। फिर बारीक पीस कर रखलें।

मात्रा व सेवन-विधि—एक रत्ती इस दवा को किसी नली (या इन्सफ़्लेटर) द्वारा नासिका में फूकें।

प्रभाव व उपयोग-प्रतिश्याय, कफज शिरोवेदना, सन्नवायु, (इस्माबह), अर्धावभेदक, अपस्मार, बालापस्मार और मूर्च्छा में लाभदायक है। सूचना—नियत मात्रा से अधिक कदापि सेवन न कराएँ। यदि एक बार में लाभ न हो तो दस पंद्रह मिनट बाद पुनः उतना ही प्रयोग में लाएँ।

अपस्मार के वेग (दौरे) की चिकित्सा

जब मृगी का वेग हो, तब रोगीको ऐसे गृह में जिसमें शुद्ध वायु का प्रवेश हो, सुरक्षित रूप से कोमल स्थान पर सुखपूर्वक लिटाएँ। ग्रीवा, वक्ष तथा उदर के बंधनको ढीला कर दें, शिर को

ऊँचा रखें, और दाँतों के बीच (काग) या कपड़े की गद्दी रखें। दाँतों तले आकर कट न जाए। उपयुक्त नस्य या अञ्जन का ... नाइट्रेट ऑफ इमाइल को १ बुं[द] सुँघाने से वेग की तीव्रता कम ... के शिर पर शीतल जल अथवा ... मुखमण्डल पर शीतल जल के ... जब रोगी सर्वथा निश्चेष्ट होजाए ... दशा में लेटा रहने दें। तत्क्षण मूर्च्छा ... का यत्न न करें। ज्ञान होने पर तो ... उसकी रक्षा करें। क्योंकि कभी ... पश्चात् रोगी मूढमति होकर उन्म[त्त] निंदित कामों को करने लगता है। ... के पश्चात् प्रायः शिरःशूल हुआ कर[ता] फिनेसेटीन को ५ ग्रेन (२॥ रत्ती) ... प्रायः लाभ हो जाता है।

वेग काल में हकीम लोग प्रायः उस्तूख़ुद्दूस को सिकंजबीन ... इसके कुछ बुंद कान में टपकाते हैं ... श्वेत कटुकी या इन्द्रायन का गूद[ा] मरिच या कलौंजी, सोंठ, सुमंकी, ... उस्तूख़ुद्दूस आदि में से जो उपलब्ध ... घिसकर नस्य दें या सुदाब को ... ऊदसलीब जलाकर उसका धूम्र सुँघाएँ।

विराम कालीन चिकित्सा

अपस्मार के वेग के प्रशमित होने ... स्वरूप एवं कारण का ज्ञान हो ... कूल चिकित्सा की व्यवस्था करनी ... दोषों से आवृत बुद्धि, चित्त, हृदय ... स्रोतों के प्रबोध कराने के निमित्त ... का दोषानुसार प्रयोग करें। यथा

वातिकं बस्ति भूयिष्ठैः पैत्तं प्रायो ...
श्लैष्मिकं वमनप्रायैरपस्मारमुपाच[रेत्] ...
(वा० ...)

अर्थात्—वातिक अपस्मार में ...

क अपस्मार में विरेचन और कफज में वमन-
न चिकित्सा द्वारा उपचार करें।

मन विरेचनादि द्वारा सब तरह से शुद्ध हुए
पेया पानादि द्वारा संसर्गी करके सम्यक्
ामन किए हुए रोगी को अपस्मार की शांति
निमित्त उचित संशमन औषधों का उपयोग
ा आवश्यक है।

ालकों के पाम्ग्रस्थ कृमिविकार या दन्तो-
होने की दशा में उनका उचित उपचार करें।
ोगों के आमाशय, आंत्र तथा यकृत की क्रिया
ठीक करें। किसी रोग के कारण यदि कोई
ा खराब हो गया हो तो उसका उचित उपाय
। मलावरोध न होने दें; क्योंकि इसमें
धारणतः रोगका वेग हो जाया करता है। तम्बाकू,
ा, चाय, मद्य एवं अन्य उत्तेजक औषधों से
तिकुल परहेज कराएँ। अधिक अध्ययन एवं
ठेन श्रम से बचें। उद्वेग तथा वासनाओं
शेषकर काम वासनाओं से एवं अन्य दुर्व्य-
ों से सख्त परहेज करें। चिंता, शोक, भय
ार क्रोध प्रभृति मनोविकारों का अवलम्बन
ना, अपवित्रता तथा विरुद्ध, तीक्ष्ण, उष्ण
था मांस और अंडे प्रभृति तथा भारी आहार
ना अपस्मारी के लिए अहितकर है। स्त्रियों
अनियमित मासिक स्राव को स्वास्थ्यावस्था पर
ाएँ।

ताजी तरकारी और दूध प्रभृति आहार अधि-
तर उसकी प्रकृति के अनुकूल होते हैं। साफ
स्वच्छ वायु में रहना, दैनिक शीतल जल से
ान करना, प्रातः सायं वायु सेवन के लिए
ाना, अधिक सोना, पथ्य लघु शीघ्रपाकी आहार
ा सेवन और स्वास्थ्य संरक्षण सम्बंधी नियमों
ा पालन करना अत्यंत उपयोगी है। अपराज
धूपन, अंजन, नस्य, शिराव्यधन (फ़सद
खोलना), भय दिलाना, बंधन, भय, तर्जन,
ताडन, हर्ष, धूम्रपान, धैर्य देना, स्नान, मर्दन और
विस्मय आदि भी उसके लिए हित हैं एवं लाल
शालिधान्य का चावल, मूँग, गेहूँ, प्रतन, घृत,
कूर्म (कछुए) का मांस, धन्वरसा, दुग्ध, ब्राह्मी के
पत्र, वच, पटोल, श्वेत कुष्मांड, वास्तुक, दाडिम,
शोभाञ्जन (सहिजन), नारिकेल, द्राक्षा, आ-
मला, परुषक (फालसा), तैल, गदहे और
घोड़े का मूत्र, आकाश जल और हरीतकी ये
अपस्मार रोगी के लिए पथ्य एवं अत्यंत हित-
कारक हैं। चिंता, शोक, भय, क्रोध आदि
मनोविकार, अपवित्रता और मत्स्य, विरुद्ध अन्न,
तीक्ष्ण, उष्ण और भारी भोजन ये अपस्मारी के
लिए अहित हैं।

देश काल, अवस्था और प्रकृति आदि का
विचार करके आवश्यकतानुसार निम्न योगों में से
किसी एक के उचित मात्रा में उपयोग करने से
अपस्मार में लाभ होता है:—

अपस्मार गजाङ्कुश, अपस्मारारि, कल्याण चूर्ण, सूतभस्म प्रयोग, वातकुलान्तक, चण्ड भैरव, इन्द्र ब्रह्मवटी, कुष्माण्ड घृत, स्वल्प पञ्च गव्य घृत, बृहत् पञ्चगव्य घृत, महा चैतस घृत, ब्राह्मीघृत और पलङ्कषाद्य तैल, सिद्धार्थक तैल, कुमारी आसव तथा चतुर्मुख रस इत्यादि।

नोट—योग, सेवन-विधि व अनुपान प्रभृति
क्रमानुसार दिए जाएँगे।

यूनानी वैद्यक के मत से रोग के मूलभूत
कारण को दूर करें। भोजन से पूर्व व पश्चात्
लघु श्रम विशेषकर अधोशाखाओं का मर्दन
लाभदायक है। श्रम काल में शिर को गति न
दें। वक्ष व उदर से दोनों पिंडलियों तक किसी
मोटे वस्त्र से इतना मर्दन करें जिससे अवयव राग
युक्त हो जाएँ। आह्निक मध्यम अवगाहन करें।

चिकित्सा

(१) मिश्रित दवाएँ—

नोट—अमिश्रित दवाएँ आगे वर्णित हैं।

खमीरह् गावज़ुबान अम्बरी जद्वार ऊद
सलीब वाला ५ मा०, अर्क़ गज़र (गजराक)
वा अर्क़ गावज़ुबान प्रत्येक ६ तो० और शर्बत
अबरेशम २ तो० के साथ देना अपस्मार में लाभ-
प्रद है।

अतरीफ़ल उस्तोख़ुद्दूस ७ मा० को अर्क़ मुण्डी

२ तो० तथा अर्क गावज़ुबान ७ तो० के साथ देने से लाभ होता है।

मअ्‌जून ज़बीब ७ मा० को अर्क गावज़ुबान १२ तो० के साथ देना प्रायः लाभदायक होता है।

मअ्‌जून फ़्लैकरा ७ मा० अर्क बादियान व अर्क गावज़ुबान प्रत्येक ६ तो० के साथ उपयोगी है।

मुफ़र्रिह शेखुर्रईस ३ मा० को २ मा० शीरह् गावज़ुबान १२ तो०, अर्क गावज़ुबान और ४ तो० ख़मीरा बनफ़्सा के साथ देना लाभप्रद होता है।

मअ्‌जून यारकर्रहो ३ मा० या मअ्‌जून कुनार ५ मा० अथवा मअ्‌जून मुतिरा ४ मा० को अर्क मुण्डी या अर्क गावज़ुबान, प्रभृति के साथ देना लाभदायक है।

सरअ्‌ मिअ्‌दी व सरअ्‌ मराक़ी

अर्थात

आमाशयिक या औन्मादिक अपस्मार

इसमें आमाशय तथा यकृत् का ध्यान रखकर चिकित्सा करें। अस्तु, अयारिज फ़ैक़रा, गुलकंद, मस्तगी, पुदीना और अफ़्सन्तीन प्रभृति औषधों द्वारा आमाशय को बल प्रदान करें तथा लघु और शीघ्रपाकी आहार की योजना करें। यदि रोगी के रक्त प्रकृति होने अथवा रोगिणी के ऋतुस्राव के अवरुद्ध हो जाने से शरीर में शोणित का प्रकोप हुआ हो तो साफ़िन नाम्नी शिरा का वेधन करें (फ़स्द खोलें) या पिंडलियों पर भरी सींगियाँ (शृङ्गी) लगाएँ तथा विरेचन दें।

मधुर एवं उष्ण आहार व मादक द्रव्यों से परहेज़ कराएँ और अनारदाना ज़रिश्क या सुमाक़ अथवा आबग़ोरह् मिलाकर शीतल आहार दें। यदि रोगी शीतल और कफ प्रकृति हो जिसके ये लक्षण हैं,- ज्ञान विभ्रम, शिरःगौरव एवं वेग काल में मुख में कफ की अधिकता हो, अवयव शिथिल वा आलस्य पूर्ण हों तो निम्न लिखित मुन्ज़िज व विरेचन देकर श्लेष्मा का शोधन करें।

उस्तोख़ुद्दूस
शाहतरज़ुब्बूया पत्र
(विल्लीलोटनका पत्ता) १०
बादियान (सौंफ़) १६
ऊदसलीब १
ज़ूफ़ा ख़ुश्क १
अनीसूँ

सेवन-विधि—इनको रात में
भिगोकर प्रातःकाल मल छानकर गुल
सम्मिलित कर रोज़ाना प्रातः काल
सायंकाल उनके साथ यह योग दें,
जदवार १
ऊद सलीब १
ख़मीरा गावज़ुबान १
मिलाकर रजत पत्र एक अदद सम्मि
प्रथम पिलाएँ और ऊपर से शीरा
७मा०, अंजीर ज़र्द ३ अदद, अर्क
मको प्रत्येक ६ तो० में निकालकर
ख़्शा २ तो० मिलाकर पिलाएँ और
को कम से कम सात दिवस पर्यन्त पि
8वें दिन उक्त मुन्ज़िज में मक़ोह
मक्की, गुलेसुर्ख़ प्रत्येक ७ मा०,
ख़ियार शंबर (अमलतासफलमज्जा) २
शीन (यवास शर्करा), शकर सुर्ख़ प्रत्ये
मग़्ज़ बादाम २ अदद या रोग़न बादा
मिलाकर विरेचन दें। दूसरे और
में मुख्यतः मस्तिष्क शुद्धि हेतु उक्त
रिक्त रात्रि को नियमानुसार
६ मा० सेवन कराएँ। शुद्धि हेतु निम्न
कार्यों में से किसी एक को व्यवहार

(१) हब्ब मुनक़्क़ी दिमाग़
शोधनी वटी)—सिब्र ज़र्द (पीत एलु
कून, तुर्बुद सफ़ेद (श्वेत निशोथ)
मा०, हब्बुन्नील १॥ मा०, सक़मूनिया
(भुलभुलाया हुआ सक़मूनिया)
इन्द्रायण मज्जा २ मा०, सबको कूट
मधु में गूँध कर चने प्रमाण गोलियाँ
आवश्यकतानुसार ७ मा० औषध
यान या उपयुक्त योग के साथ प्रयोग

(२) हुब्ब सरअ (अपस्मार वटी)—ग़ारीक़ून, उस्तोख़ुद्दूस, अक़्लीमून, बसफ़ाइज, धव, ऊदसलीब प्रत्येक १ मा०, इन्द्रायन का गूदा, निशोथ, सक़मूनिया मुशव्वी, पीत रह का बकल और कनोश प्रत्येक २ मा०, ायारिज फ़ैक़रा २ मा० सबको पीस कर गोलियाँ बनाएँ।

सेवन-विधि व मात्रा—७ मा० उक्त औषध ो अर्क सको या अर्क बादियान के साथ सेवन रायें।

जब अभीष्ट शुद्धि हो जाए तब निम्न लिखित ोगों में से किसी एक का सेवन करायें। इनमें प्रत्येक परीक्षित है—

(१) मअ्जून ज़बीब—इसको मुहम्मद ज़करिया राज़ी ने अत्यन्त परीक्षित बतलाया है।

अक़्लीमून, उस्तोख़ूदूस, अकरकरा, बसफ़ा-इज फ़िरनजी प्रत्येक ३ तो० को कूट छान कर ज़बीब मुनक़ा देढ़ पाव में या मिर्कजबीन उन्सुली देढ़पाव में मिलाकर मअ्जून बनाएँ। मात्रा—१ तो० से १॥ तो० तक।

(२) हलेलह् ज़र्द, हलेलह् काबुली, बलेलह् (बहेड़ा), आमला, उस्तोख़ुद्दूस प्रत्येक तीन तो०, ऊद सलीब १॥ तो०, आकरक़रहा १॥ मा० मवेज़ मुनक़ा ॥ऽ सेर सब दवाओंको कूट छानकर और मवेज़ मुनक़ा को सिल पर पीस कर मिलालें और किञ्चिद् उष्ण करके रख लें।

मात्रा व सेवन-विधि—७ मा० इस औषध को जल के साथ सेवन करें।

उपयोग—अपस्मार को दूर करता है।

(३) सफ़ूफ़ सरअ मुरक्कब (यौगिक अपस्मार चूर्ण)—

काबुली हड का बकल, हरड़ की छाल, गुठली निकाला हुआ आमला, काली हड़ प्रत्येक ३ तो०, निशोथ, बसफ़ाइज फ़िरनजी और उस्तोख़ुद्दूस प्रत्येक १॥ तो०, पोटासियम् ब्रोमाइड, सोडियम् ब्रोमाइड प्रत्येक २ तो० ८ मा० सबको बारीक पीस परस्पर मिलालें।

मात्रा व सेवन-विधि—६ मा० प्रातः काल अर्क बादियान १२ तो० के साथ फाँक लिया करें।

प्रभाव तथा उपयोग—सम्पूर्ण वातज (सौदावी) मस्तिष्क विकारों यथा मालीख़ोलिया, अपस्मार और अनिद्रा प्रभृति को लाभदायक है। ख़ुन्निनाक़ (कंठावरोध) को भी लाभ प्रदान करता है।

(४) अक्सीर सरअ—मंगिया, मनुष्यके शिर की खोपड़ी भस्म की हुई, आक़रक़रहा, हिंगु, ऊद सलीब, जदवार ख़ताई प्रत्येक ७ मा०, शुद्ध आमलासार गंधक १॥। मा०, सोंठ ३॥ मा०, शकर ४ मा०, सबको भृंगराज स्वरस में ३ दिन लगातार खरल कर एक एक रत्ती की गोलियाँ बनालें।

मात्रा व सेवन-विधि—एक गोली सुबह, एक शाम को अर्क सुद्दी ६ तो० के साथ खिलाएँ। गुण—अपस्मार के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

(५) दवाए जुनून—एक प्रसिद्ध औषध है जो उन्माद, मृगी और योषापस्मार के लिए विशेष रूप से लाभदायक है। स्वर्गवासी डॉक्टर जेयुर्रहमान प्रिंसिपल तिब्बिया कॉलेज लाहौर इस औषध को अधिकता के साथ प्रयोग करते थे।

हिन्दुस्तानी दवाख़ाना देहली प्राचीन औषधों को नवीन रंग रूप में पेश कर देश एवं कला की असीम सेवा कर रहा है। अतः उसने उक्त औषध की नव्य विधानानुसार खोज पड़ताल की है और उसका प्रभावात्मक सार प्राप्त किया है। यह क्रियात्मक सार ब्रोमाइड की तरह श्वेत है; किन्तु उससे अपेक्षाकृत अधिक प्रभावशाली एवं लाभदायक होने के सिवा उसके प्रत्येक हानि-कारक गुणों से रहित है। ब्रोमाइड के समान इसके अधिक उपयोग से किसी प्रकार की हानि की सम्भावना नहीं। इससे असीम शांति लाभ होता और तत्क्षण नींद आजाती है।

अवयव व विधि—छोटी चन्दन (यह एक बूटी है जो बिहार और बंगाल में मिलती है)

को मय पत्र व फल को छाया में शुष्क कर और बारीक पीस कर रखलें।

मात्रा व सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार २–२ मा० साधारण जल या अर्क गावज़ुबान के साथ प्रातः सायं सेवन कराएँ।

प्रभाव व उपयोग—शामक व निद्राजनक। मृगी, उन्माद और योपापस्मार में अत्यन्त लाभप्रद है।

डॉक्टरी मत से—मृगी की चिकित्सा में अब तक जितनी औषधें ज्ञात हुई हैं, उन सब में ब्रोमाइड्स् (ब्रोमाइड ऑफ़ पोटासियम्, ब्रोमाइड ऑफ़ सोडियम् और ब्रोमाइड ऑफ़ अमोनियम् इत्यादि) अपेक्षाकृत अधिक लाभदायक सिद्ध हुए हैं। इनके प्रयोग से कभी कभी तो रोगी को बिलकुल लाभ हो जाता है। किन्तु, प्रायः रोगियों को औषध सेवन काल में रोग का वेग रुक जाता है, पर औषध का सेवन बन्द कर देने के थोड़े काल पश्चात् पुनः रोग का आक्रमण होने लगता है।

सामान्य प्रकार की मृगी की अपेक्षा उग्र प्रकार में और रात्रि की अपेक्षा दिनके वेगमें यह औषध अधिक लाभदायक होती है। किसी किसी रोगी में कुछ काल के सेवन के बाद ब्रोमाइड्स् का प्रभाव अधिक काल स्थाई नहीं रहता और अल्प संज्ञक रोगियों में यह कुछ लाभ ही नहीं प्रदर्शित करता। तिस पर भी यह अन्य औषधों की अपेक्षा अवश्यमेव अधिक गुणप्रद है। इसकी मात्रा रोगी तथा रोगावस्था के अनुकूल होनी चाहिए। क्योंकि किसी किसी रोगी में इस औषध के सहन की अधिक क्षमता होती है और किसी को अल्प। युवा की अपेक्षा बालक को इसकी अधिक क्षमता होती है। परन्तु पुरुष की अपेक्षा स्त्री को कम।

ब्रोमाइड की थोड़ी मात्रा में प्रारम्भ करना उत्तम है। अस्तु एक युवा रोगी को १५ से ३० ग्रेन (७॥ से १२ रत्ती) की मात्रा में दिन में तीन बार देना प्रारम्भ करें। आवश्यकतानुसार इस मात्रा में न्यूनाधिकता कर सकते हैं। अर्थात्

यदि रोगी के वेग में कमी
मात्रा किञ्चित् कम कर दें और
तो औषध की मात्रा बढ़ा दें। पर यदि
ग्रेन दिन में तीन बार देने से रोग का
तो इस औषध से लाभ की कम आशा
उक्त औषध का लाभदायक होना
सके शुद्ध और उत्तम होनेपर निर्भर है।

खराब औषधमें साधारणतः
इसलिए इस औषध को विश्वस्त
निर्मित, एवं, विश्वसनीय दूकान से
चाहिए।

यदि रोग का वेग किसी विशेष
हो, उदाहरणतः दिन के दो बजे, ते
दशा में औषध की एक बड़ी मात्रा (
रोग के वेग से चार घंटे पूर्व देनी चाहि
वेग रात्रि को स्वप्न में किसी समय होत
उक्त औषध को ४०–६० ग्रेन की मात्रा
को सोते समय दें और यदि प्रातः
भंग होने पर वेग होता हो तो ३०
ब्रोमाइड्स रात्रि को सोते समय दें और
एक मात्रा औषध प्रातः काल रोगी
पिलाएँ।

जब ब्रोमाइड्स को दो तीन बार दैनि
हो तब भोजन के १ घंटा बाद देना अधि
है। आमाशय तथा आंत्र पर इसका
भाव न हो तथा मुख मण्डल आदि
न निकलें, इस हेतु इसके साथ थोड़ी
संखिया मिलाकर देना चाहिए। परन्तु
सका तात्कालिक एवं विश्वसनीय प्रभाव
हो तब इसे एक ही बड़ी मात्रा में
देना अधिक उत्तम होता है जिससे वह
रक्त में अभिशोषित हो जाए।

अपस्मारीमें ब्रोमाइड्सको इसके प्रयोग
प्रभाव प्राप्त होने से प्रथम ही बन्द कर
चित नहीं। इसके विरुद्ध इसको
में अधिक काल तक सेवन कराने
नहीं, प्रत्युत हानिकारक भी है।
में अब इसका पूर्ण प्रभाव हो लेता है

बड़ी मात्रा कम न की जाए तो ब्रोमिज़्म (ब्रोमाइड द्वारा विषाक्तता) के अप्रिय लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। (इसके लिए देखो— ब्रोमाइड)।

ब्रोमाइड्स के उपयोग सम्बन्धी कतिपय आवश्यकीय सूचनाएं—

(१) त्रिमूर्ति या मुहांसे प्रभृति वस्तुतः स्वयं अपस्मार के सामूहिक या सम्मिलित लक्षण होते हैं। अतः उनको ब्रोमाइड्स द्वारा विषाक्तता के लक्षण मानना भूल है।

(२) ब्रोमिज़्म (ब्रोमाइड्स द्वारा विषाक्तता) के विषैले प्रभावसे बचनेके लिए उनके साथ संखिया या बेलाडोना या ऋिक्नीन (कारस्फोंन) इत्यादि को सम्मिलितकर उपयोग में लाना लाभदायक है।

(३) जब तक ब्रोमाइड्स का पूरा पूरा प्रभाव न हो जाए अर्थात् औषध के विषैले प्रभाव प्रारम्भ न हो जाएँ, तब तक उसके उपयोग को स्थगित कर देना महान भूल है।

(४) मुखमण्डल या पृष्ठपर केवल मुँहासों अर्थात् स्फोटों के दानों का निकल आना इस बात का प्रमाण नहीं हो सकता कि शरीर में औषध का पूर्ण प्रभाव हो चुका है अथवा उसका विषैला प्रभाव प्रकट हो गया है। क्योंकि किसी किसी व्यक्ति में ब्रोमाइड्स की थोड़ी मात्रा में देने में भी मुँहासे निकल आते हैं। अतएव प्राक्कथित अन्य लक्षणोंका ध्यान रखना भी आवश्यकीय है।

(५) ब्रोमाइड्स के सेवन काल में यदि रोगी को लवण रहित आहार दिया जाए तो औषधका प्रभाव शीघ्र तर एवं श्रेष्ठतर होता है। क्योंकि आहार में लवण के न रहने से यह औषध शरीर एवं वाततन्तुओं में भली प्रकार अभिशोषित होती है। ऐसी दशा में इसकी थोड़ी मात्रा भी पूर्ण लाभ प्रदर्शित करती है। अस्तु, कतिपय डॉक्टरों के अनुभव इस बात के समर्थक हैं कि ऐसी अवस्था में ब्रोमाइड्स को या केवल सोडियम् ब्रोमाइड को ३० ग्रेन की मात्रा में प्रति दिन सेवन कराने से ८ दिनके भीतर भीतर रोग के वेग रुक गए।

(६) ब्रोमाइड्स का प्रयोग कितने काल तक जारी रखना चाहिए? रोग के वेग के रुक जाने के बाद तीन वर्ष तक ब्रोमाइड्स के प्रयोग को जारी रखना चाहिए। परन्तु तीसरे वर्ष में धीरे धीरे उसकी मात्रा घटा देनी चाहिए। अस्तु, एक वर्ष तक तो औषध को अविच्छिन्न प्रयोग में लाना चाहिए और फिर सप्ताह में एक दो दिन नागा करा देना चाहिए। डेढ़ वर्ष पश्चात् प्रति दूसरे दिन औषध देनी चाहिए और दो वर्ष पश्चात् सप्ताह में दो बार औषध देना पर्याप्त है।

(७) जब पैतृक उपदंश कलोमिस (क्षय) के कारण या अभिघात जन्य या गिर जाने से मस्तिष्क को आघात पहुँचने के कारण मृगी होती है अथवा बालकों को दन्तोद्भेद जन्य तथा युवाओंमें उपदंश जन्य मृगी होती है तब उक्त अवस्था में रोग के मूल कारण को यथोक्त उपचार द्वारा दूर करना चाहिए। उन रोगों के उचित उपचार द्वारा अपस्मार को भी लाभ हो जाता है। अस्तु, उपदंश जन्य मृगी में पुटासियम् आयोडाइड से लाभ होता है और इसी प्रकार औरों को भी। अतएव जब तक असल रोग का उचित उपाय न किया जाए तब तक ब्रोमाइड्स के उपयोग द्वारा कुछ भी लाभ नहीं होता। इसी प्रकार स्त्रियों में जब ऋतु दोष या मानसिक विकार के कारण यह रोग हो अथवा पुरुषों में जब हस्तमैथुन इसका कारण हो तो जब तक रोग के मूलभूत कारण सर्वथा दूर न हो लें तब तक केवल ब्रोमाइड्स के उपयोग से इस रोग को बिलकुल आराम नहीं होता।

(८) ब्रोमाइड्स से अभिप्राय है—(क) ब्रोमाइड ऑफ़ पुटासियम्, (ख) ब्रोमाइड ऑफ़ सोडियम्, (ग) ब्रोमाइड ऑफ़ अमोनियम्, (घ) ब्रोमाइड ऑफ़ स्ट्रॉंशियम् और (ङ) ब्रोमाइड ऑफ़ लीथियम् प्रभृति। कोई डॉक्टर तो इनमें किसी एक को अकेले ही देना अधिक उत्तम

प्रयोग करते हैं; किन्तु उनमें से अधिकांश प्रथम तीन को मिलाकर देते हैं।

(९) जिन अपस्मार रोगियों को ब्रोमाइड्स से किञ्चिन्मात्र भी लाभ नहीं होता, उनको बोरेक्स (टंकण) के उचित उपयोग से प्रायः लाभ हो जाता है। इसलिए इस औषध की अवश्य परीक्षा करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कतिपय अन्य औषध यथा ब्रोमीपीन, जिंक ऑक्साइड (यशद भस्म, यशदोष्मिद), कस्तूरी, कर्पूर, भंग, हींग और बालछड़ प्रभृति इस रोग की चिकित्सा में बरती जाती हैं और कभी कभी इनसे लाभ होता है।

(१०) अपस्मारी को यदि मलेरिया ज्वर (विषम ज्वर) हो तो ज्वर को रोकने के लिए उसे क्वीनीन सल्फेट नहीं देना चाहिए। क्योंकि मृगी में प्रायः उससे हानि होती है। अस्तु, उसके स्थान में क्वीनीन वेलेरिएनेट या क्वीनीन आर्सिनेट की उचित मात्रा में देना चाहिए।

कतिपय अन्य औषध

(१) कामवासना तथा मैथुनाधिक्य वा हस्तमैथुन आदि कारणों से हुए अपस्मार में मॉनोब्रोमेट ऑफ़ कैम्फर (Monobromate of Camphor) को २-५ ग्रेन की मात्रा में दिन में ३ बार देने से और क्रमशः इसको ५ ग्रेन के स्थान में १०-१२ ग्रेन तक बढ़ाकर देने से प्रायः लाभ होता है। इस दवा को २-२ ग्रेनकी पर्लोज़ (शुक्तिकावत् वटिका) की शकल में देना उत्तम है।

(२) रजःरोध जन्य मृगी में यह गोलियाँ लाभदायक हैं—

एक्सट्रैक्टाइ न्युसिसवामिकी	१० ग्रेन
पिल्युली एलोज़ एट मिर्ही	२ ड्राम

दोनों को मिलाकर ३६ गोलियाँ बनाएँ। १-१ गोली दिन में दो बार प्रातः सायं भोजन के बाद दें।

(३) यदि अपस्मार रोगी अनीमिक (रक्ताल्पता का मरीज़) हो तो उसको लौह के हलके योग देने चाहिए।

उदाहरणतः—फेराई एट एमोनिया या रेडच्यूस्ड आयर्न या स्टील वाइन प्रभृति लाभदायक होता है। मत्स्य तैल भी (पच जाए) साधारण मृगी में लाभदायक है।

(४) वेग के पश्चात् यदि रोगी ... तक मूर्च्छित पड़ा रहे तो उसके ... और गुद्दी (मन्या) पर ब्लिस्टर लगाना ... होता है।

(५) स्टेटस एपिलेप्टिकस (Statu[s] Epilepticus) अर्थात् अविच्छिन्न ... स्मार जिसमें रोगवेग मूर्च्छा में अंत ... तथा मूर्च्छा रोगवेग में। यह दशा ... भयावह व घातक होती है। इसमें रोगी ... सुरक्षित रूप से क्लोरोफॉर्म या ईथर सुँघा... मार्फीन (अहिफेनीन) $\frac{१}{४}$ ग्रेन और ऐट्रोपीन ... ग्रेन या हायोसीन हाइड्रोब्रोमेट $\frac{१}{१००}$ ग्रेन ... त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करना या क्लोरल हाइ... ४० ग्रेन को ४ आउंस पानी में मिलाकर ... इसकी वस्ति (एनिमा) करना लाभदायक है।

अपस्मार तथा सर्प-विष

अपस्मार में ८-८ दिवस के अन्तर से सर्प... (Cobra venom) के $\frac{१}{२००}$ ग्रेन ... मात्रा का ३-४ त्वगन्तः अन्तःक्षेप करें। फि... १४-१४ दिवस के अंतर से $\frac{१}{७५}$ ग्रेनकी मात्रा का दो अन्तःक्षेप और करें। बस यह काफी है, अन्यथा १-१ मास के अंतर से इसकी $\frac{१}{३०}$ ग्रे... की मात्रा का १ या अधिक अन्तःक्षेप और करें। इतने पर भी यदि लक्षण विद्यमान हों तो इसको $\frac{१}{२५}$ ग्रेन की मात्रा में या रोगी की अवस्था, प्र... या रोग के वेग के अनुसार इसको मात्रा ... कर अन्तःक्षेप द्वारा प्रयुक्त करें।

यह क्रोटेलस हॉरिडस (Crotalus hor-ridus) या रैट्ल स्नेक (Rattle sna-ke) जाति के साँप के विष से प्रस्तुत ...

ा है। जीवित साँप का विष निकाल कर को बेल-क्षार में रख कर धूप में शुष्क कर है। इसके ऐम्पुल्स बनाए जाते हैं जिनमें सरीन और जल का विलयन सम्मिलित होता उक्त विलयन में पचननिवारक रूप से ट्रिके- (Tricesol) भी योजित किया जाता

फुफ्फुस विकार, राजयक्ष्मा और श्वास में भी न्तः अन्तःक्षेप द्वारा प्रयुक्तकर इसकी परीक्षा गई है। आभ्यन्तर रूप से इसका क्वचित ही ग होता है। (Extra Pharmacopœa Martindale).

नोट—आयुर्वेदीय चिकित्सा में आभ्यन्तर । बहिर दोनों प्रकार से इसका प्रयोग होता देखो—सर्प।

कतिपय अन्य परीक्षित योग—

) जुन्दबेदस्तर	६ मा०
कस्तूरी	६ मा०
जटामांसी	१ तो०
नौसादर	१ तो०
उष्ट्र नासिका कीट	४ मा०

इन सम्पूर्ण औषधों का चूर्ण कर हस्ति विष्ठा रस से सप्ताह पर्यन्त खरल कर ३ रत्ती प्रमाण वटिकाएँ प्रस्तुत करें।

सेवन-विधि—पान के रस से आवश्यकता- सार १ से ३ गोली तक सेवन कराएँ।

२) वच	१ तो०
ब्राह्मी	१ तो०
लहसुन	१ तो०
हिंगु	६ मा०
कर्पूर	६ मा०
धत्तूर बीज	६ मा०
इन्द्रायन का गूदा	१ तो०
काली मरिच	१ तो०
अजमोद	१ तो०

इन सबको कूट छान कर चूर्ण प्रस्तुत करें। सार हस्तिविष्ठा के रस से सप्ताह पर्यन्त खरल र ६ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ।

अनुपान पान का रस

मात्रा—१ रत्ती से ४ रत्ती तक।

(३) धवलबरुआ का येन केन प्रकारेण उपयोग अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होता है। देखो— धवलबरुआ।

(४) डॉक्टरी योग—

अमोनिया ब्रोमाइड	५ ग्रेन
अमोनिया वेलेरिएना	१० ग्रेन
स्पिरिट कैंफर	१५ बुंद
सोडा बाइ कार्ब	१० ग्रेन
एक्वा प्योरा	१ आउंस

यह एक मात्रा है।

ऐसी ही तीन मात्रा औषध प्रातः, मध्याह्न और सायं को देनी चाहिए।

अपस्मार में प्रयुक्त होने वाली मिश्रित और अमिश्रित औषधें।

(अमिश्रित औषध)

आयुर्वेदीय—

वच, अडूसा, पलाण्डु, श्वेत कुष्माण्ड, कर्पूर, ब्राह्मी, श्वेत सर्षप, शङ्खपुष्पी, धत्तूर, छागमूत्र, काकफल (काक नासिका), तेजबल (उगरू —च०, सं०), कुसरुण्ट (कुन्दर-बम्ब०), कपास, गंधक और उसके योग, भल्लातक, रीठा, *जल ब्राह्मी, खुरासानी अजवाइन, बेदखाली* (Club Moss), शोभाञ्जन, जटामांसी, केतकी (केवड़ा), अजमोदा, सोडियम और उसके लवण।

यूनानी—

(१) टङ्कण भुना हुआ १ से २ माशे तक ६ माशे शुद्ध शहद में मिलाकर कुछ दिवस पर्यंत प्रतिदिन प्रातःकाल खिलाना इस रोग में लाभ- प्रद है।

(२) हिंगु १ से २ माशे मधु ६ माशे या *सिकञ्जबीन अन्सुली (सिकञ्जबीन वनपलाण्डु)* २ तोला में मिलाकर हर प्रातःकाल को चटाना लाभदायक है।

(३) बादरंजबूया (बिल्लीलोटन) ३ माशे ६ माशे मधु में मिलाकर प्रति दिवस प्रातःकाल चटाना गुणप्रद है।

(४) कलौंजी १ माशे पीसकर सिर्कजबीन अन्सली २ तोला या मधु ६ माशे में मिलाकर देना भी उपयोगी है।

(५) सोसन की जड़ ७ माशे का क्वाथ कर २ तोला शर्बत अयरेसन के साथ देना गुणकारक है।

(६) जंगली तितली २ माशे, अंगूर का रस २ तो० और अर्क गाव ज़ुबान ६ तो० के साथ देने से लाभ होता है।

(७) अकरकरा १ से २ माशे पीसकर सिर्कजबीन अन्सली २ तो० के साथ देने से लाभ प्रदर्शित होता है।

डॉक्टरी औषध—

ऑलियम् क्रोटनिस (जयपाल तैल), अमोनिया वेलेरियाना, ऑलियम् मर्डेइ, ऑलियम् टेरेबिन्थीनी, अर्जेण्टाई नाइट्रास, आर्टिमिसिया, अमोनिया ब्रोमाइड, अमोनिया कार्बोनास, अर्जेण्टाइ क्लोराइडम्, अर्जेंटाइ नाइट्रास, आर्सेनिक, ऐण्टिपाइरीन, ईथीलीन ब्रोमाइड, एपोमॉर्फीनि, एमाइलनाइट्राम, एसाफिटिडा (हिंगु), एक्लिटेरियम्, एलोज़ (मुसब्बर), एलेक्ट्रिसिटि, (विद्युत), कुप्राइ अमोनिया सल्फास, कुप्राइ सल्फास, कैम्फर (कपूर), कैस्टर (एरंड), क्विनाइन, क्लोरोफॉर्म, कोनियम्, क्वीन आर्सेनेट, कैलोमेल, कालोसिन्थिस, ज़िन्साई ऑक्साइडम्, ज़िन्साई सल्फास, ज़िंक लैक्टेट, ज़िन्साइ वेलेरियानम्, ज़िंक साइट्रेट, ड्राइकपिंग, नक्स वॉमिका (कारस्कर), धारा स्नान, नाइट्रोग्लीसिरीन, डिजिटेलिस, पोटाशियम ब्रोमाइडम, प्लम्बाइ नाइट्रास, फॉरफर्म, फेरि को०, बिस्मथम् एल्बस्, बेलाडोना, बोरक्स, ब्रोमाइडम, मस्क (कस्तूरी), ब्रोमीपीन (ब्रोमीनोल), मस्टर्ड (राई), ल्युमिनोल, वेलेरियन, विराट्राम एल्बम्, साम्बल, सोडिआइ ब्रोमाइडम्, स्ट्रॉन्टियम ब्रोमाइडम, सिरियाइ ऑक्ज़ालास, स्ट्रेमोनियाइ (धुस्तूर), स्टनाइ क्लोराइडम, लीथियम ब्रोमाइडम, हाइड्रोब्रोमिक एसिड, हाइड्रोब्रोमिकम और ज़िंक साइट्रेट, ज़िंक लैक्टेट,ऐण्टिपाइरीन इत्यादि।

(२) अश्व अपस्मार—

घोड़े की मृगी के लक्षण—अस्मा[illegible] अकस्मात् पृथ्वी पर गिर पड़ना है। [illegible] विसंज्ञता आदि लक्षण होते हैं [illegible] स्वस्थ हो जाता है उसको [illegible] जानना चाहिए।

चिकित्सा—कुशल वैद्य को [illegible] उन्मादोक्त क्रिया का अवलम्बन [illegible] ऐसे घोड़े को अत्यन्त पुराना [illegible] दायक है। जयदत्तः।

अपस्मार गजाङ्कुशः apasmára-ga-shah-सं० क्ली० हींग, काला [illegible] इनको सम भाग लेकर पृथक् पृथक् [illegible] गोमूत्र में घोटें। फिर उसमें १ मा० [illegible] पारा मिलाकर घोटकर रक्खें। मात्रा- [illegible] इसके सेवन से अपस्मार और उन्मा[illegible] होता है। र० यो० सा०।

अपस्मारारिः apasmárárih-सं० [illegible] थोथा, पारा, गन्धक, सम भाग लेकर [illegible] पर्यन्त गिलोय के रस में घोटें, फिर [illegible] साथ शरावों में बन्द करके, कपड़मिट्टी [illegible] जंगली कण्डों की आग दें। फिर [illegible] १ दिन केले के रस से घोटें तो यह [illegible]

मात्रा—२ रत्ती। इसे ब्राह्मी या [illegible] से देने से अपस्मार दूर होता है। इस [illegible] वर्ग या स्त्री सहवास से परहेज़ करना [illegible] र० यो० सा०।

अपस्मारी apasmárí-हिं० वि० [[illegible] अपस्मार रोग हो। (Epileptic.)

अपस्वरम् apasvaram-(अव्य० स्वाभाविक स्वर से नीचा स्वर, (Low-voice) वा० शा० शा०।

अपह apaha-हिं० वि० [सं०] वाला। विनाशक।

यह शब्द समासांत पद के [illegible] आता है। जैसे, क्लेशापह। रोगापह

apahá-अपहा (प्रत्यय) हन्ता, मारने वाला। हत्यारा, हिंसक, वधिक। (Killer, -cide).

apaksha-हि० वि० (१) पक्ष रहित, निःसहाय (helpless)। (२) पंख रहित।

...त apakshipta-हि० वि० [सं०] (१) अवक्षेपण की क्रिया द्वारा पलटाया या ...का हुआ। (२) फेंका हुआ। गिराया हुआ। ...तित।

...पण apakshepana-हि० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपक्षिप्त] फेंकना। पलटाना। (२) गिराना, च्युत करना। (३) पदार्थ ...ज्ञान के अनुसार प्रकाश (तेज) और शब्द की ...ति में किसी पदार्थ से टकर खाने से स्थानांतर ...ना, प्रकाशादि का किसी पदार्थ से टकरा कर ...लटना। (४) वैशेषिक शास्त्रानुसार उत्क्षेपण, ...क्षेपण आदि पाँच प्रकार के कर्मों में से ...क।

...कः apákah-सं० पुं० } (१)
...क apáka-हि० संज्ञा पुं० }
(Indigestion) अजीर्ण, अपच। (२) ...पाकाभाव (कच्चापन)। Immaturity (३) उदरामय। आँव, आम।

...करण apakaraṇa-हि० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपाकृत]। पृथक्करण। अलग करना।

...कशाकम् apákashákam-सं० क्लीं० }
...कशाक apákaṣháka-हि० संज्ञा पुं० }
...अदरक, आर्द्रक, आर्द्रा। आदा-बं०। आलें-मह०। (Green ginger) रा० नि० व० ६।

...ङ्गः apángah-सं० वि०
...ङ्ग apánga-हि० वि० }
(१) अंग भंग, अङ्गहीन (Crippled)। मे०। संज्ञा पुं० (२) Canthus (The outer corner of the eye) नेत्र ...प्रान्त। रा० नि० व० १८। (३) तिलक। तिल। (Sesamum Indicum) मे० गत्रिकम्। (४) ग्रीवा के ऊपर के मर्मों में से उक्त नाम के दो मर्म विशेष। सु० शा० ६ अ०। (५) आँख की कोर (या कोना), नेत्र कोण, कटाक्ष। (Corner of an eye)। (६) दोनों नेत्रों के बाहर की ओर भौंहों की पुच्छोंके नीचे उक्त नामके दो मर्म हैं। वा० शा० ४ अ०। (७ -बं० अट-कीरा, अपामार्ग, चिचिड़ा। (Achyranthes aspera).

अपाङ्गकः apángakah-सं० पुं० अपामार्ग क्षुप, चिचिड़ा-हि०। आपाङ्-बं०। (Achyranthes aspera) लैं०। श० च०।

अपाङ्गकमूलम् apángaka-múlam-सं०क्लीं० देखो—अपाङ्गमूल।

अपाङ्गमूल apángamúla-बं० अपामार्ग की जड़। Achyranthes aspera (*Root of-*).

अपाङ्गदर्शन apánga-darṣhana-हि० पुं० तिरछी नजर से देखना। (A side glance, a leer, a wink).

अपाङ्ग्या apángyá सं० स्त्री० (Zygomatico arbital)

अपाचीनम् apáchinam-सं० क्लीं० दूर करना। नष्टकरना। अथर्व०।

अपाटवम् apáṭavam-सं० क्लीं० }
अपाटव apáṭava-हि० संज्ञा पुं० }
(१) अपाटव, रोग, बीमारी। (A disease). (२) जाड्य, जड़ता, शीतलता। (Anæsthesia) रा० नि० व० २०। (३) भादा, भूख। (Hunger)। (४) मद्य, शराब। (५) पटुताका अभाव। अकुशलता अनाड़ीपन। (६) अचंचलता। मंदता सुस्ती। (७) कुरूपता। बदसूरती।

वि० (१) रोगी, बीमार। (२) जड़। (३) भूखा। (४) अपटु, अनाड़ी। (५) अचंचल। (६) कुरूप।

अपात apáta-सं० वनराज (Bauhinia racemosa, *Lam.*, *Hook. etc.*) फा० इं० १ भा० ५३७ पृ०। -हिं०वि० पत्रशून्य।

अपादान apádána–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) हटाना। अलगाव। विभाग। (२) ग्रहण। (The taking from a thing).

अपानः apánah–सं० पुं० (१) –क्ली० गुदा, मलद्वार, चूति। एनस। (Anus)–इं०। रा० नि०व० १८। वा० सू० ११ अ०। (२) अपान देशीय पवन, गुदा में रहने वाली अपान वायु। अम०। (३) अपान अर्थात् मन्या पुरुष, पृष्ठांत तथा पार्ष्णि (एणी) में जाने वाली वायु। हे० च० ४। (४) दस वा पाँच प्राणों में से एक। इन्हीं तीन वायुओं में से कोई किसी को और कोई किसी को अपान कहते हैं—(क) वायु जो नासिका द्वारा बाहर से भीतर की ओर खींची जाती है। (ख) गुदास्थ वायु जो मल मूत्र को बाहर निकालती है। (ग) वह वायु जो तालु से पीठ तक और गुदा से उपस्थ तक व्याप्त है। (५) वायु जो गुदा से निकले। देखो—वात (वायु)।

अपानम् apánam–सं० क्ली० (Anal orifice) गुदा, मलद्वार, चूति।

अपान त्वक् संकोचनी apána-tvak-sankochaní–सं० स्त्री० (Corrugator cutis ani) मलद्वार सङ्कोचनी।

अपाकेष्टाः apákeshṭáh–सं० पुं० अकेला। अथर्व०। सू० ६। १४। का० ८।

अपान-देशः apána-deṣhah–सं० पुं० गुददेश। (Anal region). वै० निघ०।

अपान नाली apána-nálí–सं० स्त्री० (Anal canal) गुदा।

अपान वायु apána-váyu–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) पांच प्रकार की वायु में एक।

अपान वायु के कर्म—रुक्ष और भारी अन्न के खाने से मल मूत्रादि के वेग रोकने से, सवारी पर अधिक बैठने से, अधिक चलने से, अगम्य स्थानों में जाने से, अपानवायु कुपित होकर मूत्र-दोष, शुक्र दोष, अर्श और गुदभ्रंश तथा अन्य कष्टसाध्य पक्वाशयगत रोगों को उत्पन्न करता है। मा० नि० अ० १६।

(२) गुदास्थ वायु। पाद। पर्द।

अपानं धातुः apándhátuh–सं० मूत्र, स्वेद, मेद, कफ, पित्त और ... भा० म० १ भा० अतिसा० चि०। "... पांधातुरयं: प्रवृद्ध:।"

अपांपित्तम् apánpittam–सं० वृक्ष, चीता। (Plumbago Z.) अम०।

अपानोन्नमनी apánonnamaní–सं० (Levator ani). देशी विशेष।

अपा-पित्तम् apá-pittam चित्रक। (Plumbago Zeyla...)

अपामार्गः apámárgah–सं० पुं०

अपामार्ग apámárga–हिं० संज्ञा पुं० चिचड़ा(–रा), चिर्चिरा, ... ऊँगा, ऊँगी, ...–हिं०। पुरुस (Achyranthes A... Linn.), अकिरैन्थीस इंडिका Achy... thes Indica. Roxb., ... ntáta, अकीरैन्थीस ऑब्ट्युसि... Achyranthes Obtusifolia, ... अकीरैन्थीस स्पिकेटा Achyra... Spicata Burm.–ले०। ... Rough Chaff tree, ... Prickly chaff Flower–इं०। ... सू० १७। ८। का० ४। सु० सू० ... शिरो चि०।

संस्कृत पर्याय—शैखरिक, ... मयूरकः, प्रत्यक्पर्णी, कीशपर्णी, किणि... सुञ्जरी (अ) अधाहकः, किणिः, कीशपर्ण... कारः, (शब्द र०), शैखरेयः, ... केशपर्णी (अ० टी०), स्वल्पमञ्जरी, ... धारमध्यः, अधोघंटा, शिखरी (१) ... (भा०), दुर्ग्रहः, ..., मर्कटी, दुरभिग्रहः, वासिरः, पराक्पुष्पी, ... कर्कटपिप्पली, कटु मञ्जरिका, ... पाण्डुकण्टकः, नाला कण्टकः, ...

टः, प्रत्यक्पुष्पी, खरमञ्जरी, पंक्तिकण्टकः, केन्दुः, अल्पपत्रकः, स्तबकः, किणिही, मणहन्ता। अपाङ्, चिर्चिरि, ओंगड्, आपाङ् । अन्कुमह्-अ०। खारे-वाज़ूगूनह्, खारे- -फ़ा०। पुःकण्ड, फुटकण्टा, कुत्री-पं०। वेरी-विहा०। अगाड़ा, अघाड़ा-द०। रित्रि, शिरु-काइलाडी-ता०। उत्त-रेणि, दा, अपामार्गमु, प्रत्युक्-पुष्पि, दुच्चीणिके ०, तै० । कटलारि, कडालादि-मल०। णि-गिडा, उत्तराणि, उत्तरेणि, उत्तरणे ना०। उत्राणिच-भाड, आघाड़ा, माघेड़ा र अघाड़ा=श्वेतापामार्ग)-मह०। अघेड़ो, लबड़ो-गु०। नस्करल-हेब्बो-सिं०। -ला-मौ, कुमे-ला-मौ-वर्मी०। सुफेद गिकाडी, औंधा-झाड़ा-मा०। अंधाहोली ज०। उत्तरणे-का०। उत्तरैणि-कों०। ा, चिचिया-सन्ध०।

तण्डुलीय वर्ग

(*N. O. Amaranthaceæ*)

उत्पत्ति-स्थान—सर्वत्र भारतवर्ष तथा एशिया भाग जो उष्ण कटिबन्ध पर स्थित हैं।

संज्ञा-निर्णय—डिमक महोदय (२ य खंड १ पृ०) "अध्वशल्य" शब्द का अर्थ "roadside rice" अर्थात् पथिपार्श्वस्थ धान (मार्ग के किनारे का चावल) करते हैं। शल्य शब्द का अर्थ तण्डुल नहीं, प्रत्युत र में जिससे कुछ भी पीड़ा उत्पन्न हो उसको कहते हैं। डल्हण मिश्र लिखते हैं :— किञ्चित् अधाधकरं शरीरे तत्सर्वमेव दन्ति शल्यम्' (सू० टी० १म अ०)। मार्ग की मञ्जरी कर्कश होती है और उसका या गात्र से स्पर्श होने से क्लेशप्रद होती है कारण उसको मार्ग का शल्य कहा गया है। खोरी महोदय (१ म० खं० । ५०४ पृ०) मार्ग का यह अर्थ करते हैं,—अप या आव= +मार्ग=रजक, धोबी (Apa or [illegible] r and márga a washerman) अर्थ अपूर्ण है। मार्ग शब्द का रजक अर्थ कहीं भी देखने में नहीं आता। उपरोल्लिखित कल्पित अर्थ के निर्देश द्वारा खोरी महोदय ने यह सुझाना चाहा है कि अपामार्गसार द्वारा रजक (धोबी) वस्त्र को परिष्कृत करता है। अमरकोष के टीकाकार भानुजी दीक्षित कृत "अपमार्ज्म्यनेन" इस अर्थ द्वारा जहाँ खोरी महोदय के उद्देश्य की सिद्धि हो जाती है, वहाँ उन्होंने उक्त कल्पित अर्थ की रचना करने का क्लेश क्यों स्वीकार किया?

वानस्पतिक-वर्णन—अपामार्ग एक प्रकार का फलपाकांत क्षुप है। यह वर्षा का प्रथम पानी पड़ते ही अंकुरित होता है, वर्षा में बढ़ता, शीत काल में पुष्प व फल से शोभित होता और ग्रीष्म ऋतु के सूर्य ताप द्वारा फल के परिपक्व होने के साथ ही सूख जाता है। इसका क्षुप १॥ या २ फुट दीर्घ और कभी कभी इससे भी अधिक उच्च होता है।

काण्ड या साधारण वृन्त सीधा, खड़ा, चिपटा, चौकोना (रक्त अपामार्ग की शाखाएँ रक्त वर्ण की होती है), धारीदार और लोमश होता है। पार्श्विक शाखाएँ (पार्श्व वृन्त,) युग्म, परिविस्तृत; पत्र अति सूक्ष्म शुभ्रवर्ण के रोम से आवृत्त, अण्डाकार, पत्र प्रान्त सामान्य, अधिक कोणीय, नोकीले आधार पर पतले (रक्तापामार्ग के पत्र पर रक्तबिन्दुवत् दाग होते हैं); पत्रवृन्त (पत्ते की डंडी) लघु; दोनों प्रकार के अपामार्ग की मञ्जरियाँ दीर्घ, कर्कश (इसी कारण इसका 'खरमञ्जरी' नाम पड़ा); पुष्प लघु, हरित वा लाल तथा बैंगनी मिले हुए रंग के जो मयूर कंठवत् होते हैं। इसीलिए इसको मयूरक नाम से अभिहित किया गया है। ब्रैक्ट्स कठोर तथा कण्टकाकीर्ण होते हैं। फल के भीतर बीज होता है। यह आयताकार, धूमर वर्ण का, $\frac{१}{१०}$ से $\frac{१}{८}$ इंच लंबा (बीज) होता है। तण्डुलवत् होने के कारण इसको अपामार्ग तण्डुल कहते हैं। इसका स्वाद तिक्त होता है।

श्वेत, कृष्ण और रक्त भेद से अपामार्ग तीन

प्रकार का होता है। ये सब गुण में भी भिन्न भिन्न होते हैं। (रा० नि०)

रासायनिक संगठन—बीज में अधिक परिमाण में क्षारीय भस्म होती है जिसमें पोटाश वर्तमान होता है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ़ इंडिया-आर० एन० खोरी, २. ५०४)।

प्रयोगांश—क्षुप (पञ्चांग) अर्थात् शाखा, पत्र, मूल, तथा बीज।

औषध-निर्माण—(१) पत्तों का स्वरस, मात्रा–१ तो०। (२) क्वाथ तथा शीत कषाय, मात्रा–१ छ० से २ छ०। (३) मूल, मात्रा–४ मा० से ६ मा० तक। (४) बीज चूर्ण, मात्रा–४ आने से ६ आने तक (वज़न में)। (५) क्षार। (६) मूल चूर्ण। (७) मूल कल्क। (८) औषधीय तैल।

इतिहास—शुक्ल यजुर्वेद के अनुसार वृत्र एवं अन्य दैत्यों को मार डालने के बाद नमुचि द्वारा पराजित हुआ और उसे किसी सान्द्र वा द्रव पदार्थ से तथा न दिन में और न रात में ही कभी न मारने का वचन देकर उससे संधि कर ली। परन्तु इन्द्र ने कुछ फेन एकत्रित किए जो न द्रव है और न सांद्र और नमुचि को प्रातः सूर्योदय और रात्रिके मध्यकाल में मार डाला। उस दैत्य के सिर से अपामार्ग का क्षुप उत्पन्न हुआ जिसकी सहायता से इन्द्र सम्पूर्ण दैत्यों के वध करने में समर्थ हुआ। अब यह पौधा अपने प्रबल जादूमय प्रभाव के लिए प्रसिद्ध है और ऐसा माना जाता है कि बिच्छू एवं सर्प को वातग्रस्त (स्तब्ध) कर यह उनके विरुद्ध उनसे हमारी रक्षा करता है। नरकचतुर्दशी वा दिवाली के त्यौहार के पहिले दिन की सुबह को अत्यन्त तड़के स्नान के समय इसको शरीर के चारों ओर घुमाते हैं। अथर्ववेद में भी अपामार्ग का विस्तृत वर्णन आया है। (देखो—अथर्व०। सू० १७। ८। का० ४।)

अपामार्ग के प्रभाव तथा प्रयोग।

आयुर्वेद की दृष्टि से—

अपामार्ग स्वाद में तिक्त और कटु, उष्ण वीर्य, कफ नाशक, ग्राही तथा वामक है और बवासीर, खुजली, उदररोग, आम हरण करने वाला है। "रक्तापामार्ग कटुक, कफ वात नाशक, वामक तथा और व्रण, खुजली और विष है। धन्वन्तरीय निघंटु। रा० नि० के सर अर्थात् विरेचक और तीक्ष्ण है। सू० १५ अ० शिरोविरेचन।

"पृश्निपर्णी त्वपामार्गः।" पात ज्य० नि०।

अपामार्ग दस्तावर, तीक्ष्ण, दीपन, चरपरा, पाचक और रोचक है तथा मेद के रोग, वायु, हृद्रोग, अफरा, खुजली, शूल, उदर रोग और अपची नष्ट करता है। रक्तापामार्ग वातकारक, कफवर्द्धक, शीतल और रूक्ष है। अपामार्ग की अपेक्षा गुण में न्यून है। के फल (चावल) खाने से अर्थ अर्थात् पचते नहीं हैं, पाक में विष्टंभी, वातकारी, रूखे और रक्तपित्त को हरने वाले हैं। भा० पू० १ भा०।

अपामार्ग अग्नि के समान तीक्ष्ण, परम स्रंसन है। राजवल्लभः।

अपामार्ग के पत्र रक्तपित्त नाशक हैं। ध० १।

श्वेत अपामार्ग स्वाद में तिक्त, ग्राहक, सर, किंचित् कटु, कांतिकारक, पाचक तथा प्रदीपक है और वमन में पूर्ण सक्षम है। कफ, कण्डू (खुजली), उदर, अत्यन्त बुरे प्रकार के रक्त रोगों, मेद रोग, रोगों तथा वात, सिध्म, अपची, वृद्धि, आम रोगों को नष्ट करनेवाला है। मार्गी किंचित् चरपरा तथा शीतल है। मन्याचष्टंभ (मन्यास्तम्भ, गर्दन का जाना), वमन, वात एवं विष्टम्भकारक, रूक्ष है तथा व्रण, विष, वात, कफ का नाश करता है।

अपामार्ग का बीज (चावल) पक्व अर्थात् यह पचता नहीं है, रस में मधुर,

...स्तोधक, रूक्ष, वान्तिकारक और रक्तपित्त दूर करने वाला है। अपामार्ग जल तिक्त, ...और कफनाशक है तथा कास, वात और ...(मूत्रा) का नाश करता। पं० निघ०।

अपामार्ग के वैद्यकीय उपयोग

चरक—शिरोविरेचक वस्तुओं में अपामार्ग ...ल (चिचड़ी का बीज) ...है। (सू० अ०)।

सुश्रुत—(१) अर्शों में अपामार्ग मूल ...ड़ी की जड़) को चावल के धोवन में ...कर मधु के साथ प्रति दिन सेवन करें। ...६ अ०)। टीकाकार डल्हण-लिखते 'अपामार्ग मूल योगः पित्त रक्तार्शसि। ...स कफानुबंध रक्तेषु।" अर्थात् पित्तज ...वा कफानुबंध रक्तार्श रोगी को इस औषध ...न करना चाहिए। (२) कृमि रोग में ...ति लेने के बाद सिरीष और अपामार्ग ...मधु के साथ सेवन करें। (उ० ५४)।

...कदत्त—(१) सद्योव्रण द्वारा रक्तस्राव की दशा में, अर्थात् शरीर के किसी भाग ...ट जाने के कारण जब वहाँ रुधिर स्राव होने तब अपामार्ग के पत्र का रस प्रचुर परिमाण कर क्षत के मुख को सेचन करने से रक्तस्रुति हो जाती है। (व्रण शोथ चि०)। (२) ...नाद तथा बधिरता में अपामार्ग क्षार—...मार्ग के भस्मधूमदग्ध क्षार के जल तथा ...में तिल के तैल को डालकर यथा विधि ...प्रस्तुत करें। इस तेल को कान में भरने ...(पूरण) से कर्णनाद तथा बधिरता रोग ...होते हैं। (कर्ण रोग चि०)। (३) नूतन ...नेत्रकोप अर्थात् अभिष्यंद वा आँख आने ...अपामार्ग मूल ताँबा के बरतन में किंचित् ...ण मिश्रित दही के तोड़ को अपामार्ग की ...से घिसकर उस जल को आँख में भरने से ...ष्यंद रोग को लाभ होता है। (नेत्र रोग ...)।

भावप्रकाश—विसूचिका में अपामार्गमूल—अपामार्ग की जड़ को जल के साथ पीस कर पान करने से विसूचिका रोग दूर होता है। (म० खं० २ भा०)।

शार्ङ्गधर—रक्तार्श में अपामार्ग के बीज को चावल के धोवन के साथ पीसकर पीने से रक्तार्श (खूनी बवासीर) नष्ट होता है, इसमें कोई संशय नहीं। (द्वि० खं० ५ म० अ०)।

वङ्गसेन—(१) उन्माद रोग में अपामार्ग श्वेत पुष्प की सरियारा की जड़ की छाल १ तो०, अपामार्ग की जड़ २ तो०। इनको एकत्र कूटकर ...॥ जल एवं ...॥ गोदुग्ध के साथ क्वाथ प्रस्तुत करें। शीतल होने पर इसे प्रातःकाल सेवन करें। इससे घोर उन्माद रोग की तत्काल शांति होती है। (उन्माद चि०)।

(२) आगन्तुक व्रण रोपणार्थ अपामार्ग मूल—सरियारा एवं अपामार्ग की जड़ के कल्क द्वारा तैल पाक करें। इसे मूल तैल कहते हैं। यह आगन्तु व्रण का रोपण करने वाला है। (आगन्तुव्रणाधिकार)।

हारीत—(१) निद्रानाश रोगमें अपामार्ग और काकजङ्घा द्वारा प्रस्तुत क्वाथ के सेवन से शीघ्र नींद आ जाती है। (चि० १६ अ०)। (२) शोथ रोग में अपामार्ग तथा कोकिलाक्ष के क्वाथ द्वारा वाष्प स्वेद वा वहाँ पर पिंड स्वेद करना शोथ रोगी के लिए हितकर है। (चि० ३६ अ०)।

वक्तव्य

चरक में सूत्रस्थान के चतुर्थ अध्याय के क्रिमिघ्न तथा वमनोपगवर्ग में अपामार्ग का पाठ दिया है। चरकोक्त अर्श चिकित्सा में अपामार्ग का नामोल्लेख नहीं है। शोथ चिकित्सा के "मयूरकं मागधिकां समूलां" पाठमें मयूरक नाम से अपामार्ग का प्रयोग आया है। सुश्रुतोक्त शोथ चिकित्सा में अपामार्ग का उल्लेख नहीं है। चक्रदत्त के लिङ्गार्श चिकित्सा में तथा भल्लातक-लौह में अपामार्ग का व्यवहार हुआ है; परन्तु शोथमें इसका उल्लेख नहीं है। चरक के विमान स्थान के आठवें अध्यायमें वर्णित वान्तिकर द्रव्यों

के अन्तर्गत अपामार्ग का पाठ आया है। विमान के प्रथम अध्याय के कृमिहर पथ्योपदेश के वर्णन में अपामार्ग के स्वरस में शालिचावल की पिट्टी तैयार कर उसके सेवन करने की व्यवस्था दी गई है।

चरकोक्त—उन्माद चिकित्सा में "पिष्ट्वा तुल्यमपामार्गम" इत्यादि पाठ में अञ्जनार्थ अपामार्ग व्यवहृत हुआ है। पर इसके सेवनकी विधि नहीं दिखाई देता। सुश्रुतोक्त उन्माद चिकित्सा में इसका नामोल्लेख नहीं है। सुश्रुत ने शिरोविरेचन वर्ग में अपामार्ग का पाठ दिया है। (सू० ३९ अ०)। सुश्रुत सूत्रस्थान के ११ वें अध्याय में जहाँ क्षारजनक समग्र उद्भिद औषधों का नाम आया है, वहाँ अपामार्ग का उल्लेख है। अपामार्ग व्रण के लिए उपयोगी है। अतएव इसका नाम "किणिही" (व्रण हन्ता) हुआ।

अपामार्ग के सम्बन्ध में यूनानी तथा नव्य मत।

प्रकृति—१ कक्षा में शीतल तथा रूक्ष।

हानिकर्त्ता—उष्ण प्रकृति को और क्षुधा को मन्द एवं नष्ट करता है। दर्पघ्न—अनार का पानी सिकंजबीन, काँजी और आबशोरह।

प्रतिनिधि—प्रायः गुणों में मेष मांस।

मुख्य प्रभाव—कामोद्दीपक, हर्षोत्पादक और शुक्र जनक। मात्रा—शक्त्यानुसार।

गुण, कर्म, प्रयोग—यदि ६ मा० इसके पत्र को काली मिर्च के साथ पिसें और उसके बाद घीप्लुत रोटी खाएँ तो रक्तार्श को लाभ हो। यह आर्त्तवरुद्धक और प्रायः त्वग्रोगों, रक्त शोथ, एवं नेत्र की धुंधता को लाभप्रद है।

अपामार्ग संकोचक, (संग्राही) मूत्रल और परिवर्तक है। रक्तस्राव, अतिसार और प्रवाहिका में इसका उपयोग किया जाता है। अपामार्ग क्षार गंभीर शोथ, जलोदर, चर्मरोग और ग्रन्थि वृद्धि तथा गलगंड आदि रोगों में प्रयोजनीय है। प्रतिच शुष्क कास में इसके सेवन से यह श्लेष्मा को तरल (द्रवीभूत) करता है। सर्प, कुक्कुर किंवा ... घर–प्राप्ति दंशन जन्य विष दंश ... लिए अपामार्ग बहुत प्रख्यात है। सेवन व लेपन उभय प्रकार से व्यवहृत है। कभी कभी अपामार्ग का स्वरस एवं इसका कल्क फूली रोग में प्रयुक्त होता है। (मेटिरिया मेडिका २ य० खं०, ४०५ पृष्ठ)

अपामार्ग के मूत्रल गुण से ... भली प्रकार परिचित हैं। यूरोपीय ... गण शोथ रोग में अपामार्ग की उपयो... कार करते हैं। मूल शाखा पत्र सहित ... अपामार्ग को पाँच छटाँक जल में ... क्वथित करें। इसमें से आध छटाँक ... छटाँक की मात्रा तक दिन में तीन बार ... (फा० इं० पृष्ठ १८४)

अपामार्ग की जड़ एक तोला रात्रि ... समय सेवन करने से गर्भाधान (...) रहती है। फा० इं० ३ भा०।

इसका शुष्क पौधा बालकों के ... में दिया जाता है। पूयमेह (...) इसका संकोचक रूप से उपयोग ... (रक्षुवर्ड)

मेजर मैडेन (Madden) लि... "अपामार्ग की पुष्पमाल ... विष से रक्षा करने वाली ख्यात ... इसकी टहनी पास रहने से यह ... है।"

भस्म में अधिक परिमाण में पोटाश ... इससे यह कला सम्बन्धी कार्यों के लिए ... ही उपयोगी सिद्ध होता है जिनमें ... के लिए। हरताल के साथ मिश्रण ... शिश्न एवं शरीर के अन्य स्थल ... भक्षक के लिए इसका क्षार उपयो... होता है।

उदय चन्द्रदत्त महोदय ... अपामार्गक्षारतैल के उपयोग ... रते हैं।

डॉक्टर बीडी (Bidie) कहते हैं—"कतिपय आंग्ल चिकित्सक गण क्वाथ रूप मे इसके ध्वक्र मूत्रल गुण को स्वीकार करते हैं।"

डॉक्टर कॉर्निश (Dr. Cornish) ने जलोदर में इसका उपयोग किया और इसे उपयोगी पाया।

सिंध के जंगली दिहाती लोग बबूर-कण्टक जन्य व्रणों में इसका उपयोग करते हैं। मुरे।

बिहार में जब किसी व्यक्ति को कुकुर काट लेता है तब उसको अपामार्ग की पुष्पमान मञ्जरियों में किञ्चित् शर्करा मिलाकर बनाई हुई गोलियों का मुख्य रक्षक औषध रूप से व्यवहार करते हैं। (बैलफोर)

यह चरपरा एवं मृदुरेचक है तथा जलोदर, अर्श, विस्फोट और त्वग्रोगों में उपयोगी ख़्याल किया जाता है। इसके बीज और पत्र वामक ख़्याल किए जाते हैं तथा जलत्रास और सर्पदंश में उपयोगी है। टी० एन० मुकर्जी।

डॉ० नदकारणी—अपामार्ग का क्वाथ (अपामार्ग २ आउंस=१ छ० तथा जल १॥ पाईंट) उत्तम मूत्रल है और वृक्कीय जलोदर में लाभदायक पाया गया है। उदरशूल तथा आन्त्र विकारों में इसके पत्ते का रस भी उपयोगी है।

अधिक मात्रा में गर्भपात वा प्रसववेदना उत्पन्न करता है। इसके ताज़े पत्तों को पीसकर गुड़ के साथ कल्क प्रस्तुत करें अथवा काली मरिच एवं लहसुन (रसोन) के साथ मिश्रित कर वटिकाएँ बनाएँ। इसके सेवन से विषम ज्वरों विशेष कर चातुर्थक ज्वरों में लाभ होता है।

इसके पत्तों का ताज़ा रस सूर्यताप द्वारा शुष्क कर इसका गाढ़ा सत्व प्रस्तुत करके इसमें थोड़ा अफ़ीम मिलाकर सेवन कराएँ। प्रारम्भिक औपदंशीय क्षतों के लिए यह उत्तम अनुलेपन है।

बीजों के सहित इसकी मंजरियाँ प्रायः श्लेष्मानिस्सारक रूप से व्यवहार की जाती है।

इसके बीज और दुग्ध द्वारा प्रस्तुत खीर (क्षीर) मस्तिष्क रोगों के लिए उत्तम औषध है।

स्नान करने के बाद रविवार के दिन एवं पुष्य नक्षत्र में लाई हुई और कोने में लटका कर रखी हुई इसकी जड़, उत्तेजना सहित प्रसव वेदना में तथा शीघ्र प्रसव कराने के लिए उपयोग की जाती है। वेदनाकाल में इसको स्त्री के केशों वा उसकी कटि मे बाँधते हैं। प्रसव होजाने के पश्चात् इसे तुरंत निकाल कर धारा प्रवाह जल में फेंक देते हैं। (इ० मे० मे० पृ० १९-२०)

अपामार्ग की पुष्पमान मञ्जरियाँ वा बीज को जल के साथ पीस एवं कल्क प्रस्तुत कर विषधर सर्प एवं सरिसृप दंश में इसका बहिर प्रयोग किया गया है। चूर्ण किए हुए पत्र का क्वाथ मधु वा मिश्री के साथ सेवन करना अतिसार तथा प्रवाहिका की प्रथमावस्था में उपयोगी है। (इं० ड्रु० इं० पृ० ५६२—आर० एन० चोपरा)

अपामार्ग की जड़को पानी मे खूब बारीक पीस कर पेड़ू के नीचे रान तथा गुह्येन्द्रिय पर प्रलेप कर दें तो शीघ्र बच्चा पैदा हो जाता है। इसको स्त्री के पाँव पर प्रलेप करने से भी यह वातहोती है। चिचड़ीके पत्र तथा बीज, प्रत्येक १-१ तो० को सुखा कर तमाकू की तरह हुक्का पर पीने से श्वास व पुरातन कास को बहुत लाभ होता है।

चिचड़ी का बीज ३ माशा कूट कर समान भाग शर्करा मिलाकर जल के साथ सेवन करने से रजःस्राव का अवरोध होता है।

इसकी जड़, बीज एवं पत्र को कूट कर चूर्ण बना और समान भाग शर्करा मिलाकर इसमें से ६ माशा की मात्रा में जल के साथ सेवन कराने से रक्तार्श नष्ट होता है। इसके ताजे पत्ते एवं जड़ को तिल तैल में मिलाकर व्यवहार करना कण्डु रोगी को अत्यंत लाभदायक है। उभय प्रकार की पुरानी से पुरानी खुजली को आराम हो जाता है।

६ माशा इसकी ताजी जड़ पानी में घोंट कर पिलाने से वृक्काश्मरी को लाभ होता है। वस्ति से पथरी को टुकड़े टुकड़े कर निकाल देता है। वृक्कशूल की यह अव्यर्थ महौषध है।

इसकी ताजी जड़ के दैनिक दन्तधावन से दाँत मोती की तरह सफ़ेद हो जाते हैं। मुँह से

कफ निर्गत होता है। यह दंतशूल की शर्तिया दवा है। दाँतों के हिलने और मसूढ़ों के कमज़ोर होने को दूर करता है। विशेषकर मुखदुर्गंधि के लिए अत्यंत लाभदायक है।

इसकी जड़ पीसकर लगाने से स्तंभन होता है। इसके बीजों को खीर पका कर खाने से कई दिन तक क्षुधा नहीं लगती और शक्ति भी यथावत बनी रहती है।

इसकी जड़ पीस कर स्तन पर प्रलेप करने से दूध बहुत उतरता है हस्तपाद पर मलनेसे वध रोग को लाभ होता है।

इसकी जड़ की भस्म लगाने और खाने से कण्ठमाला को आराम होता है।

इसके पत्तों का रस नासूर (नाड़ीव्रण) को भरता है।

इसके पुरातन वृक्ष की ग्रंथि में एक कीट निकलता है। इसको घिसकर पिलाने से बच्चों का डब्बा रोग दूर होता है।

भस्मक रोग में जिसमें तीक्ष्णाग्नि के कारण अत्यधिक क्षुधा लगती है उसमें अपामार्ग तण्डुल चूर्ण १ तो० फाँक लेने से वह जाती रहती है।

चिचड़ी की जड़ ६ मा०, कुकरौंधा के पत्र ६ मा० इनको सफेद जीरा के साथ पीसकर उसमें १मा० काले नमक का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से उदरशूल, उदर जन्य वायु के लिए अत्यंत लाभप्रद और परीक्षित है।

अपामार्गके विभिन्न अंगों द्वारा कतिपय धातुओं की भस्मों के निर्माण-क्रम—

(१) अकीक भस्म—अपामार्ग के एक पाव कल्क में एक तोला अकीक रखकर कपड़-मिट्टी कर सूखने पर निर्वात स्थान में ७-८ सेर आरने उपलों की अग्नि दें। शीतल होने पर निकालें। बस अपूर्व भस्म तैयार मिलेगी। मात्रा—२ रत्ती। सेवन-विधि—गाय के मक्खन (गो नवनीत) के साथ सेवन करें। गुण—हृदय की निर्बलता में उपयोगी है।

(२) सोमल भस्म—२ तो० संखिया को शीशी में डालकर उसमें इतना ... डालें कि वह डूब जाए। तदनन्तर ... भूमि के भीतर गाड़ रक्खें। फिर ... की कढ़ाही में एक सेर अपामार्ग की ... कर हाथ से दबा दें। उसके बीच में ... रखकर ऊपर से एक सेर उक्त भस्म और ... चारों ओर से भली प्रकार दबा दें। फिर ... ४ सेर रेत (बालू) डालकर चूल्हा पर ... नीचे आग जला दें और रेत के ऊपर ... कुछ दाने रख दें। ४ पहर अग्नि देने पर ... के दाने खिल जाएंगे। बस अग्नि देना बन्द कर दें। दूसरे दिन जब यह कढ़ाही ठंडी हो जाए तब उसको धीरे-धीरे निकाल लें। ... रंग की संखिया की भस्म प्रस्तुत होगी। मात्रा १ चावल का चतुर्थ भाग। गुण—श्वास के लिए अपूर्व औषध है। इसके अतिरिक्त बहुत अन्य रोगों में भी उपयोगी है।

(३) संखिया भस्म की सरल विधि—एक मिट्टी के बर्तन में १० तोला अपामार्ग की भस्म बिछाकर उसपर एक तोले समूचे संखिया की डली जो २१ दिन तक मदार के दूध में ... करके रक्खी हो, रख दें। ऊपर से १० तोले और उक्त भस्म को डालकर हाथ से भली प्रकार दबा दें और बर्तन का मुँह बन्द करके ऊपर से तीन कपरौटी करके सुखाएँ। सूख जाने पर इस को १० सेर घरेलू उपलों में रखकर आग दें। शीतल होने पर धीरे से खोलकर निकाल लें। गुण—कफज रोगोंके लिए अत्यन्त लाभप्रद है।

(४) हिंगुल की भस्म—हिंगरफ रूमी २ तो० खरल में डालकर १० तो० आक के दूध के साथ खरल करें। जब सम्पूर्ण दुग्ध समाप्त हो जाए तब टिकिया बनाकर छाया में शुष्क करें। फिर मिट्टी के शराव में १० तो० चिरचिटा की राख बिछाकर उसपर हिंगुल की टिकिया रखकर ऊपर से १० तो० उक्त राख डाल कर हाथ से दबा दें। फिर ढक्कन देकर तीनबार कपड़ मिट्टी करने के पश्चात् शुष्क करें और १० सेर घरेलू उपलों में रखकर आग दें। शीतल

…होने पर निकालें। हिंगुल की सर्वोत्तम भस्म …प्राप्त होगी।

… गुण—शरद् ऋतु में इसके सेवन करने से …सर्दी कम लगती है और कामशक्ति का पुनरावर्तन …होता है। कतिपय रोगों के लिए अत्युत्तम है।

… (५) हड़ताल व अभ्रक की भस्म—हड़ताल वरक़ी ५ तो०, अभ्रक ५ तो० दोनों को खरल में डालकर अपामार्ग जल २० तो० के साथ घोटकर मुखा लें। फिर मिट्टी के बर्तन में रखकर कपड़मिट्टी करके चूल्हे के भीतर डाल दें। दो घंटे के बाद निकाल कर दोबारा खरल में २० तो० उक्त जल के साथ फिर खरल करें। जब शुष्क होने पर हो तब बर्तन में डालकर बंद करके यथाविधि पहिले दो घण्टा तक चूल्हा में दबा दें। शीतल होने पर तीसरी बार पुनः वैसा ही करें। अत्युत्तम धूसर वर्ण की भस्म प्रस्तुत होगी।

मात्रा—½ रत्ती से २ रत्ती तक। सेवन-विधि—शर्बत बज़ूरी अथवा किसी अन्य उचित अनुपानके साथ सेवन करें। गुण—यह प्राचीन से प्राचीन ज्वर की अमोघ औषध है। श्वास काठिन्य एवं कास के लिये अकसीर का काम देती है। इससे आह्निक, द्व्याह्निक, तृतीयक, चातुर्थक आदि विषम ज्वर नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं।

अपामार्गजटा apámárga-jaṭa–सं० स्त्री० अपामार्ग मूल, चिर्चिटा की जड़। Achyranthes Aspera (*Root of.*)। सि० यो० तृतीयक ज्वर श्रीकण्ठः। "अपामार्ग जटा कौव्यां।" च० द० सन्निपातज्व० चि०। अपामार्ग की जड़ का धोवना तृतीयक ज्वर के लिए हितकारक है। अपामार्ग मूल को भली प्रकार धोकर बाएँ हाथ में बाँधने से सब प्रकार के ज्वरों का नाश होता है। वैद्यक।

अपामार्ग तण्डुलः apámárga-tandulah–सं० पु० अपामार्ग बीज, चिर्चिटा का बीज। Achyranthes Aspera (Seeds of-) च० सू० ५ अ०।

अपामार्गतैलम् apámárga-tailam–सं० क्ली० एक औषधीय तैल जो शिरोरोगमें काम आता है। अपामार्ग बीज, सोंठ, मिर्च, पीपल, हल्दी, हींग, वायबिड़ंग इनका कल्क कर गोमूत्र के साथ यथाविधि तैल पकाकर नस्य लेने से शिर में उत्पन्न कृमियाँ नष्ट होती हैं। इसमें तैल ४ श० और कल्क १ श० लेना चाहिए। प्र०,मा०। च० द०। व० से० सं० शिरोरो० चि०।

नोट—चक्रदत्तकदिकनी।

अपामार्ग बीजादि चूर्णः apámárga-bíjádi-chúrnah–सं० पुं० चिर्चिटाके बीज, चित्रक, सोंठ, हड़, मोथा, चिरायता, प्रत्येक सम भाग ले चूर्णकर सर्व तुल्य गुड़ मिलावें। इसे भोजनांत में १ कर्ष खाकर जब भोजन जीर्ण होजाए तो ऊपर से तक्र पीएँ। वृ० नि० र०।

अपामार्गमु apámárgamu—ते० अपामार्ग, लटजीरा-हिं०। (Achyranthes Aspera, *Linn.*) स० फा० इं०।

अपामार्गक्षारः apámárga-kshárah–सं० पुं० अपामार्ग द्वारा प्रस्तुत क्षार। आठ प्रकार के क्षारों में से एक। गुण-यह गुल्म तथा शूल नाशक है। भा० पू० १ भा० हृ० व०।

अपामार्ग क्षार तैलम् apámárga-kshára-tailam–सं० क्ली० (१) एक औषधीय तैल जो कर्णरोग में प्रयुक्त होता है। तिल के तैल में अपामार्ग (चिर्चिटा) क्षार जल और अपामार्ग (की जड़) से बनाए हुए कल्क को सिद्ध करके कान में डालने से कर्णनाद और बहिरापन दूर होता है।

नोट—तिल तैल ४ श०। अपामार्गक्षार २ श०। जल १६ श०। २१ बार परिस्रावित करके क्षारवारि (क्षार जल) प्रस्तुत करलें। (मतान्तर—क्षार परिमाण २६ प०, जल १८ श० और कल्क द्रव १ श०)।

च० द० कर्ण-रो० चि०। भैष० र० कर्ण रो० चि०।

(२) १६ श० अपामार्ग क्षार को २४ श० जलमें २१ बार परिस्रावित कर और तैल १६ श० लें। तैल जल न जाए इसलिए अपामार्ग क्षार में उसका कल्क डालें और पिण्डीभूत कल्क से

तम् appittam—सं० क्लीं० चित्रक, ीता। (Plumbago zeylanicum). प्रम०।

apunga–स्त्रीं० नाग०, संता० तुलतुली, सेद्दोरी-वम्ब०। (Holostemma rheedii) इं० मे० मे०।

च्छ apuchchha–हिं० वि० पुच्छ रहित। (Tailless).

छा apúchchhá–सं० स्त्रीं० शिंशपावृक्ष -सं०। शीशंव (-म-)-हिं०। A timber tree. (Dalbergia Sisú)

aputrä–हिं० वि० [सं०] जिसके पुत्र न हो। निःसन्तान। पुत्रहीन। निपूता।

apurusha–हिं० वि० पुं० [सं०] पुरुषत्वहीन, नपुंसक। (Impotent)

apushtah–सं० त्रि० अपरिपक्व, कच्चा। (Immature).

apushpah–सं० पुं० उदुम्बर वृक्ष, गूलर। (Ficus glomerata).

पफलदः apushpa-phaladah–सं० पुं० पनसवृक्ष, कटहल। (Artocarpus integrifolia) पणस-म०। रा० नि० व० ११। बिना पुष्प के फल लगने वाले वृक्षमात्र। (Flowerless tree) रा० नि०।

पित apushpita–हिं० वि० [सं०] पुष्प रहित, बिना फूले हुए। Without flowers (a tree or plant), not bearing flowers, not in flowers.

apúta–हिं० त्रि० [सं०] अपवित्र। अशुद्ध। -वि० [सं० अपुत्र, पा० अपुत्त] पुत्रहीन। निपूता।

पः apúpah–सं० पुं०
प apúpa–हिं० संज्ञा पुं०
(१) पिष्टक। पूरी, पूड़ी, पुआ–हिं०। पुलि पिरे-सं०। घारगे-म०। कोई कोई इसे पाव रोटी कहते हैं। पूरब में इसे रोट अथवा सुहारी कहते हैं। हला०। बारीक पिसे हुए गेहूँ के आटे में गुड़ मिलाकर जल से भली भाँति मर्दन कर गोलाकार बेलें और पीछे इसको घी में पकाएँ। इसे ही 'अपूप' प्रभृति नामों से अभिधानित करते हैं। इसे बलकारक, हृद्य, रुचिकारक भारी, वृष्य, तुष्टि देनेवाला पित्त और वायु को शमन करने वाला तथा मधुर कहा है। वै० निघ०।

(२) गोधूम, गेहूँ। (Wheat) रा० नि० व० १६। (३) इन्द्री। "इन्द्रियम् अपूपः"। पे० २। २४। अथर्व०। सू० ३। २। का० १०।

अपूप्यः apúpyah–सं० पुं० (१) गोधूम, गेहूँ (Wheat)। (२) गोधूम चूर्ण, गेहूँ का आटा, मैदा। (Wheat flour).

अपूरणी apúrani–सं० स्त्रीं० (१) शाल्मली वृक्ष। सेमल (-र)-हिं०। (Bombax Malabaricum) श० च०। (२) कार्पास वृक्ष, कपास। (Gossypium Indicum).

अपूर्ण apúrna–हिं० वि० अधूरा। (Imperfect).

अपूर्ण-मण्डलम् apúrna-mandalam–सं० क्लीं० अधूरा घेरा, अर्द्ध वृत्त। (Imperfect circle).

अपूर्वोरसः apúrvorasah–सं० पुं० कर्पूर-रसः,–उत्तम हींग १० तो० लेकर इसको २ मूषा बनाकर उनके भीतर २ तो० शुद्ध पारद डालकर दूसरी मूषा को ऊपर रखकर कपड़मिट्टी कर दें। ऊपर वाली मूषा के तल में पहले से ही एक बारीक छिद्र कर लें, फिर एक हाँडी में नीचे थोड़ा सा यवक्षार और समुद्रलवण रख कर बीच में ऊपर वाला यंत्र धरकर ऊपर वही क्षार और लवण रखकर यंत्र को तिरोहित कर दें, उसके ऊपर साफ ठीकरे ढककर दूसरी हाँड़ी ऊपर रखकर कपड़ मिटी कर दें। फिर उसको सूखने पर चूल्हेपर रखकर ८ पहर तक साधारण आँच देना और ठण्डा हो जाने पर उन खपड़ों में लगी हुई सुवर्ण के सदृश चमकीली वजन में पूरी पारद भस्म मिलेगी। उसको बारीक कपड़े में रखकर पोटली बनाकर दोपहर तक दूध में

पृथग्भूत तैल ही ग्रहण करें। उसे गारे नहीं। प्रयोगाः।

अंपामार्गादिकल्कम् apámárgádikalkam -सं० क्ली० (१) चिरचिटा की लुगदी। (२) चिरचिटे के बीज को चावल के धोवन से खाएँ तो रक्तार्श दूर हो। वृ० नि० र०।

अपाय apáya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अपायी] (१) विश्लेष। अलगाव। (२) नाश। (३) उपद्रव। -वि० [सं० अ=नहीं +पाद, प्रा० पाय=पैर] बिना पैर का। लँगड़ा। अपाहिज।

अपारदर्शक apára-darshaka-हिं० वि० (भौ० वि०) अदर्शक, अस्वच्छ। ग़ैर शफ़्फ़ाफ़-अ०। ओपेक। (Opaque)-इं०। वे पदार्थ जिनमें से प्रकाश बिलकुल न आ सके अर्थात् जिनमें से प्रकाश की रेखाएँ नहीं गुजर सकें। जैसे लकड़ी, लोहा, चमड़ा इत्यादि।

अपालापमर्म्म apálápamarmma-सं० क्ली० पृष्ठवंश (कशेरुक) और वक्ष के मध्य भाग में दोनों ओर कंधों के अधोभाग में "अपालाप" नाम के दो मर्म हैं। इनके विद्ध होने से कोष्ठ रुधिर से भर जाता है और इसी रुधिर की राध (पूय, पीब) में परिणत होनेपर रोगी मर जाता है, अन्यथा नहीं। वा० शा० ४ अ०।

अपावर्तन apávartana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) पलटाव। वापसी। (२) भागना। पीछे हटना। (३) लौटना।

अपासनम् apásanam-सं० क्ली० मारण। अम०।

अपाह(हि)ज apáha,-hi-ja-हिं० वि० [सं० अपभञ्ज, प्रा० अपहञ्ज] (१) (Lazy, cripple,) अंगभंग। खंज। लूला, लँगड़ा। (२) आलसी-बेकार।

अपि api-अव्य० [सं०] (१) निश्चयार्थक। भी। ही। (२) निश्चय ठीक।

अपिन् apin-बर० (ए० व०) वृक्षः-सं०। (Tree, shrub, or Herbaceous plant.)

अपिन्मियाआ apin-miyáá-बर० (ब० व०) वृक्षाः-सं०। (Trees, shrubs or Herbaceous plants.)

अपिंडी apindí-हिं० वि० [सं०] [पिण्डहीन] बिना शरीर का। अशरीरी।

अपिधान apidhána-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आच्छादन। आवरण। ढक्कन। [पिधान]

अपिनद्ध ápinaddha-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अपिनद्धा] बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। ढँका हुआ।

अपिहित apihita-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अपिहिता] आच्छादित। ढँका हुआ। [छिपा हुआ]

अपीन apina-हिं० वि० हल्का, क्षीण, [दुबला] (Light, Lean)। -संज्ञा पुं० [अफ़ीम] (Opium).

अपीनस apinasá-हिं० पुं०

अपीनसः apinasah-सं० पुं० नासिका रोग विशेष। पीनसरोग भेद।

लक्षण—जिस मनुष्य की नाक रुकी हुई हो, धुँवा से घुटी हुई सी, पकी हुई और [गीली] गीली सी हो और सुगंध एवं दुर्गन्ध को [न] मालूम कर सके उसे अपीनस का रोगी जानना चाहिए। यह विकार कफ वायु से होता है और प्रायः लक्षण प्रतिश्याय के से होते हैं। [सु०] चि० २२ अ०। च० चि०। (Dryness of the nose, want of the pitu secretion & Loss of smell).

अपीनस में कफ बढ़कर नासिका के स्रोतों को रोक कर घुर्घुर श्वास युक्त [पीनस] से अधिक एक प्रकार का रोग उत्पन्न करता है, जिसे अपीनस कहते हैं।

लक्षण—इसमें रोगी की नासिका भेड़ की नासिका की तरह झरा करती है। तथा [चिकना], पीला, पका हुआ और गाढ़ा गाढ़ा नासिका का मल निरंतर निकलता रहता है। भा० [म०] अ० १६।

अपीय apiya-हिं० वि०-अपेय, पान निषिद्ध (Unfit to be drunk, forbidden liquor).

म् appittam—सं० स्त्री० चित्रक, ता। (Plumbago zeylanicum). म०।

apunga—स्त्री० नाग०, संता० मुलतुली, -मेदोरी-यस्य०। (Holostemma heedii) इं० मे० मे०।

इ apuchchha—हिं० वि० पुच्छ रहित। (Tailless).

च्छा apúchchhá—सं० स्त्री० शिशपावृक्ष सं०। शीशव (-म-)-हिं०। A timber tree. (Dalbergia Sisú)

aputra—हिं० वि० [सं०] जिसके पुत्र न हो। निःसन्तान। पुत्रहीन। निपूता।

apurusha—हिं० वि० पु० [सं०] पौरुषहीन, नपुंसक। (Impotent)

apushtah—सं० त्रि० अपरिपक्व, कच्चा। (Immature).

पः apushpah—सं० पु० उदुम्बर वृक्ष, गूलर। (Ficus glomerata).

पफलदः apushpa-phaladah-सं० पु० पनसवृक्ष, कटहल। (Artocarpus integrifolia) फणस-म०। रा० नि० व० ११। बिना पुष्प के फल लगने वाले वृक्षमात्र। (Flowerless tree) रा० नि०।

पित apushpita—हिं० वि० [सं०] पुष्प रहित, बिना फूले हुए। Without flowers (a tree or plant), not bearing flowers, not in flowers.

apúta—हिं० वि० [सं०] अपवित्र। अशुद्ध। -वि० [सं० अपुत्र, प्रा० अपुत्त] पुत्र-हीन। निपूता।

पः apúpah—सं० पु०
प apúpa—हिं० संज्ञा पु०

(१) पिष्टक। पूरी, पूड़ी, पुआ—हिं०। पुलि पिटे-बं०। घारगे-म०। कोई कोई इसे पाव रोटी कहते हैं। पूरब में इसे रोट अथवा सुहारी कहते हैं। हला०। बारीक पिसे हुए गेहूँ के आटे में गुड़ मिलाकर जल से भली भाँति मर्दन कर गोलाकार बेलें और पीछे इसको घी में पकाएँ। इसे ही 'अपूप' प्रभृति नामों से अभिधानित करते हैं। इसे बलकारक, हृद्य, रुचिकारक भारी, वृष्य, तुष्टि देनेवाला पित्त और वायु को शमन करने वाला तथा मधुर कहा है। वै० निघ०।

(२) गोधूम, गेहूँ। (Wheat) रा० नि० व० १६। (३) इन्द्र। "इन्द्रियम् अपूपः"। पं० २। २४। अथर्व०। सू० ६। २। का० १०।

अपूप्यः apúpyah—सं० पु० (१) गोधूम, गेहूँ (Wheat)। (२) गोधूम चूर्ण, गेहूँ का आटा, मयदा। (Wheat flour).

अपूरणी apúrani—सं० स्त्री० (१) शाल्मली वृक्ष। सेमल (-र)-हिं०। (Bombax Malabaricum) श० च०। (२) कार्पास वृक्ष, कपास। (Gossypium Indicum).

अपूर्ण apúrna—हिं० वि० अधूरा। (Imperfect).

अपूर्ण-मण्डलम् apúrna-mandalam—सं० क्ली० अधूरा घेरा, अर्द्ध वृत्त। (Imperfect circle).

अपूर्वोरसः apúrvorasah—सं० पु० कर्पूर-रसः,—उत्तम हींग १० तो० लेकर इसको २ मूषा बनाकर उनके भीतर ४ तो० शुद्ध पारद डालकर दूसरी मूषा को ऊपर रखकर कपड़मिट्टी कर दें। ऊपर वाली मूषा के तल में पहले से ही एक बारीक छिद्र कर लें, फिर एक हाँडी में नीचे थोड़ा सा यवक्षार और समुद्रलवण रख कर बीच में ऊपर वाला यंत्र धरकर ऊपर वही क्षार और लवण रखकर यंत्र को तिरोहित कर दें, उसके ऊपर साफ ठीकरे ढककर दूसरी हाँडी ऊपर रखकर कपड़ मिट्टी कर दें। फिर उसको सूखने पर चूल्हेपर रखकर ८ पहर तक साधारण आँच देना और ठण्डा हो जाने पर उन खपड़ों में लगी हुई सुवर्ण के सदृश चमकीली वजन में पूरी पारद भस्म मिलेगी। उसको बारीक कपड़े में रखकर पोटली बनाकर दोपहर तक दूध में

स्वेदित करें। फिर निकाल कर अच्छी तरह सुखा लें। मात्रा—आधी रत्ती। गुण—यह क्षयादि रोगों को समूल नष्ट करता और जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। रस० यो० सा०।

अपृक्त aprikta-हिं० वि० [सं०] (१) बेमेल। बिना मिलावट का। असंबद्ध। बिना लगाव का। (२) खालिस। अकेला।

अपेकः apokah-सं० पुं० दुरालभा, धमासा। (Alhagi maurorum).

अपेण्डिक्स appendix-इं० उपांत्र, अन्त्र-परिशिष्ट।

अपेण्डिसाइटिस appendicitis-इं० उपान्त्र प्रदाह, अन्त्रपुच्छ प्रदाह, अन्त्रपरिशिष्ट प्रदाह।

अपेत राक्षसी apeta-ráksbasi-सं० स्त्री० (१) तुलसी क्षुप। (Ocimum Sanctum). रा० नि० व० १०। (२) कृष्ण तुलसी। काली तुलस-मह०। भा० पू० १ भा० गु० व० बर्बरी। (३) बाबुई तुलसी। (Ocimum Basilicum)। र० मा०।

अपेय apeya-हिं० वि० [सं०] न पीने योग्य, पान निषिद्ध। Unfit to be drunk, forbidden (Liquor).

अपेहिवातः apehi-vátah-सं० पुं० प्रसारणी। गंधाली-हिं०। (Pœderia Fœtida, Linn.). फा० इं०।

अपोएन् apoon-बर० (ए० व०)
अपोएन्-मियाआ apoen-miyáá-बर० (ब०व०) } पुष्प। फूल। (Flowers) स० फा० इं०।

अपोगण्डः apogandah-सं० त्रि०
अपोगंड apoganda-हिं० वि० } (१) वलिभ, वृद्ध पुरुष। (२) पंगुकाय। विकलांग। -पुं० शिशु। मे० डचतुष्कं। -वि० (१) सोलह वर्ष के ऊपर की अवस्था वाला। (२) बालिग।

अपोदक apodaka-सं० पुं० रेगिस्तानी, साँप। अथर्व०। सू० १२। ६। का० २१।

अपोदिका apodiká-सं० स्त्री०, पूतिका, शाक, पोय (-ई) का साग। अ० टी०। Bas. alba & rubra (Malabar night-shade).

अपोनोगेटन मॉनेस्टिकॉन aponogeton monastychon-ले० घेचू -हिं०। इं० गा०।

अपोनोगेटन मॉनोस्टेकिअम् aponogeton monostachyum, Linn.-ले० घे -हिं०। काकाह्वी-सं०। नमा-ते०। इसकी जड़ आहार के काम आती है। मेमो०।

अपोनोगेटन, सिम्पल स्टॉक्ड aponogeton Simple stalked-इं०. घेचू। इं० गा०।

अपोरोसा विलोसा apoiusa villosa Baill. ले० या-मेइन-बर०। इसका रंग तथा छाल प्रयोग में आती है। गोंद रंग के रूप में आता है। मेमो०।

अपोलाइसीन् apolycin-इं० यह एक पीताभ युक्त श्वेत स्फटिकीय चूर्ण है जो जल में विलेय होता है। यह फीनेसीटीनके समान प्रभाव करता है। इसे अहोरात्रि में १२० ग्रेन (६० रत्ती) तक की मात्रा में भी प्रयोग करने से यह कोई हानिकारक प्रभाव नहीं करता; किन्तु इसका वेदनाशामक प्रभाव उसकी (फीनेसीटीन) अपेक्षा निर्बल होता है। यह शोधक अर्थात् पचननिवा-रक भी है, पर इसको बहुधा ज्वरनाशक व वेदनाशामक प्रभाव के लिए ही उपयोग में लाते हैं। कभी कभी काउ बटर (गो-नवनीत) के साथ इसकी वर्तिका बनाकर भी प्रयोग में लाते हैं। मात्रा—१० से ३० ग्रेन (५ से १५ रत्ती)

अपोहन apohana-हिं० पुं० तर्क के द्वारा शंका को परिमार्जित करना।

अपौरुष apourush-हिं० पुं० साहस हीन, नपुंसक, असाहस, पुरुषार्थ हीन। (Impotent).

अपांग apánga-हिं० संज्ञा पुं० जहाँ दोनों पलकें आपस में एक दूसरे से जुड़ते हैं, उस स्थान को कोया या अपांग कहते हैं।

पात् apán-napáta-सं० पुं० विद्युत्
म्बन्धी अग्नि । अथर्व० ।

(स) apah,-s-सं० स्त्री० (१) जल, पानी
water.)। (२) जल धारा। अथ०। सू०
३।२। का० ६।

p-सं० स्त्री० } जल,पानी। (Wa-
p-हिं० संज्ञा पुं० } ter)।(उप०) निम्न,
धः. नीच,बुरा, विरुद्ध, स्याग, हर्ष। इसके वि-
द्ध अर्थ में "अधि" प्रयुक्त होता है।

(स्) apnam,-as-सं० स्त्री० जल।
Water (Aqua).

कोवय्,-कलुङ्ग appakovay,-kalung
त्तां० कुडम-दुवड ते०। रिंहन्कोकार्पा फीटीडा
Rhynchocarpa Fœtida, *Sch-
rad.*), ट्रिकोसैन्थीस नर्विफोलिया (Tricho-
santhes nervifolia, *Linn.*), ट्रि०
ायोइका (T. Dioica, *Roxb.*), ब्रायो-
नेया पिल्सा (Bryonia pilsa, *Roxb.*)
सं०।

कुष्माण्ड वर्ग
(*N. O. Cucurbitaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—गुजरात, दकन प्रायद्वीप,
ौर मालाबार की पहाड़ियाँ।

उपयोग—ऐन्सली का वर्णन है कि इसकी
ड़ का माजून में अर्श की दशा में अन्तः प्रयोग
ोता है और दोषिक श्वास में स्नेहजनक रूप
ें इसका चूर्ण व्यवहार में आता है।

इसकी जड़ लगभग मनुष्य की अँगुली के
राबर होती है तथा हलकी धूसर वर्ण की और
्वाद में मधुर एवं लुआबी होती है।

ल appel-मल० अरणी। (Premna
integrifolia). इं० मे० मे०।

appo-ब०ब० अफीम। (Opium)
फा० इं० १ भा०।

apyaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१)
अपगमन। (२) लय। नाश।

ाण्डः apıakándah-संपुं० (१) कांड-
रहित वृक्ष,(प्रकांड)धड़ रहित वृक्ष,तनारहित वृक्ष।
(Stemless tree)। (२) किलिटका आदि।
अग०। -हिं० वि० कांड (तना) रहित (Ste-
mless).

अप्रकाश apıakásha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०]
[वि० अप्रकाशित, अप्रकाश्य] प्रकाश का अ-
भाव। अंधकार।

अप्रकृत apıakrita-हिं० वि० [सं०] (१)
अस्वाभाविक। (२) बनावटी। कृत्रिम। गढ़ा
हुआ।

अप्रकृष्टः apıakrishtah सं० पुं० काक।
(A crow)। श० र०। -त्रि० अधम
(Inferior, vile)।

अप्रखर aprakhara-हिं० वि० [सं०] मृदु।
कोमल।

अप्रचङ्कशा aprachankashá-सं० पुं०
लँगड़ा लूला और आँखों से लाचार। अथर्व०।
सू० ६। १६। का० ८।

अप्रच्छन्न aprachchhanna-हिं०वि० [सं०]
(१) जो प्रच्छन्न न हो। खुला हुआ। अनावृत।
(२) स्पष्ट। प्रगट।

अप्रजाता aprajátá-हिं०वि० स्त्री० (Nulli-
para) जिस स्त्री के कभी सन्तान न हुई हो
अथवा जिसने गर्भ धारण न किया हो।

अप्रजास्त्वम् aprajástvam-सं०क्ली० संतान
न होना। अथर्व०सू० ६। २६ का० ६।

अप्रतिकार apratikára-हिं० संज्ञा पुं० [सं०]
[वि० अप्रतिकारी] उपाय का अभाव। तदबीर
न होना। -वि० जिसका उपाय या तदबीर
न हो सके। लाइलाज।

अप्रतीकार apratíkára-हिं० संज्ञा पुं० देखो-
अप्रतिकार।

अप्रतिकारी apratikári-हिं० वि० [सं०]
अप्रतिकारिन्] [अप्रतिकारिणी] उपाय या
तदबीर न करने वाला।

अप्रतिकार्य्यः apratikáryyah-सं० त्रि०
दुश्चिकित्स्य। (Incurable).

अप्रतिभ apratibha-हिं० वि० [सं०] (१)
प्रतिभा शून्य। चेष्टाहीन। उदास। (२) स्फूर्ति-
शून्य। मन्द। सुस्त।

अप्रत्यक्ष apratyaksha–हिं० वि० [सं०] (१) अलक्षित, अदृष्ट, जो देखा न जाए। (Invisible, Absent)। (२) छिपा। गुप्त।

अप्रति सारख्य अञ्जनम् apratisárákhya-anjanam–सं० क्लो० कालीमिर्च १० अदद, स्वर्ण माक्षिक आधा पिचु, नीलाथोथा आधा पल, मुलहठी एक पिचु इन सबको दूध में भिगोकर अग्नि में भस्म करलें। गुण–यह तिमिर रोग को परमोत्तम औषध है। वा० उ० अ० १३।

अप्रधान apradhána–हिं० वि० [सं०] (१) कनिष्ठ, क्षुद्र, मुख्य नहीं, जघन्य (Subordinate, secondary)। (२) जो प्रधान वा मुख्य न हो। गौण। साधारण। सामान्य।

अप्रभा aprabhá–हिं० स्त्री० प्रभाहीन, प्रकाश शून्य। (Want of splendour).

अप्रमेय aprameya–हिं० वि० [सं०] जो नापा न जा सके। अपरिमित। अपार। अनंत।

अप्रयुक्त aprayukta–हिं० वि० [सं०] जिसका प्रयोग न हुआ हो। जो काम में न लाया गया हो। अव्यवहृत।

अप्ररोहता aprarohatá–हिं०

अप्रसन्न aprasanna–हिं० वि० असंतुष्ट, दुखित, नाराज, अस्वच्छ, मैला। (Displeased).

अप्रसवधर्मी aprasava-dharmmí–सं० त्रि० अप्रसव धर्मवाला पुरुष, क्योंकि आत्मा में से कुछ उत्पन्न नहीं होता, इससे यह अप्रसवधर्मी नहीं है। प्रसवधर्मी। मध्यस्थधर्मी। सु० शा० १ अ०।

अप्रहतः aprahatah–सं० त्रि०
अप्रहत aprahata–हिं० वि०
(१) मालक्षेत्र, केदार भूमि। मालभूमि–म०।
(२) जो भूमि जोती न गई हो। खिल (अपहृत) भूमि। रा० नि० व० २।

अप्राकृत aprákarita–हिं० वि० [सं०] (१) जो प्राकृत न हो। अस्वाभाविक। असामान्य। असाधारण।

अप्राकृतिक aprákritika–हिं० वि० [सं० अस्वाभाविक, प्रकृति विरुद्ध। (Unnatural).

अप्राकृतिक संयोग aprákritika-s... –हिं० पुं० अस्वाभाविक मैथुन, गु... पशु मैथुन आदि।

अप्राजिता aprájitá–बं०, हिं० विष्णुक्रान्ता, कवाँडी। (Clitorea t...ate, Linn.) स० फा० इं०।

अप्राजितार बीज aprájitára-bija–बं०
अप्राजितेके बीज aprájite-ke-binja–हिं० अपराजिताका बीज। Clitorea terna... Linn. (Seeds of–) स० फा० इं०।

अप्राजितारमूल aprájitára-múla–बं० ...राजिता की जड़। The root of Cli...rea ternatea, Linn.

अप्राण apráná–सं० त्रि० बिना प्राण के... निर्जीव। मृत। अथर्व०...

अप्राप्तक apráptaka–सं० एक प्रकार... उत्तम जाति के सुवर्णों में से जो सोना... सा अर्थात् भुरभुरा और सफेद रङ्ग... अप्राप्तक कहलाता (यानी संशोधन... समय यह ठीक ठीक शुद्ध नहीं होता)... शोधन की विधि भी कोरिंग न हो... इससे उसे यहाँ नहीं दिया गया... अर्थ०।

अप्रिय apriya–(सं०) हिं० वि० [सं०] अप्रिय] अहित, (Disagreeable, unfriendly) अप्यारा, अनचाहा। ...हो। अरुचिकर। जो न रुचे। जो ...

अप्रिया apriyá–सं० स्त्री० (१) सिंगी मछली (Singi fish)। बोदालि मत्स्य।

अप्रीति apríti–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) अरुचि। (Indifference, dis...) (२) अप्रेम। (३) बैर। विरोध।

अप्रीतिकर apritikar–हिं० पुं० ...नि... कार।

अप्रोतरक्षी aprota-rakshisí...

तुलसी वृक्ष। (Ocimum Sanctum) र० मा०।

ढः aproḍah–स० पु० भारद्वाज पक्षी। चैं० नि०। A bird named Bhāradvāja.

ौढ़ aprourha–हिं० वि० [सं०] (१) जो पुष्ट न हो। कमज़ोर। (२) कच्ची उम्र का। नाबालिग़।

सरसः apsarasah–स० पु० (१) उत्तम स्त्रियाँ। (२) जल धाराएँ। अथर्व०। सू० १११। ४। का० ६। (३) जल में फैलने वाले रोगोत्पादक कीट। अथर्व०। सू० ३७। ३। का० ४।

प्सरा apsará–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] कंचुकम। वारवधू।

फ़ई afaāī–अ० यह अरबी संज्ञा "अफ़ेईल मक़तील" का अपभ्रंश है। काला सर्प, कृष्ण सर्प। यह लाल वा काला होता है और इसके शरीर पर सफ़ेद एवं भूरे बिन्दु होते हैं। यह लगभग १८ गिरह लम्बा होता और एक हाथ ऊँचा खड़ा हो जाता है। जिस मनुष्य को यह काट लेता है, उसकी आँखें निकल पड़ती हैं। इसका विष इतना तीव्र होता है कि इसका काटा हुआ मनुष्य कभी कभी तो केवल १० ही श्वास ले पाता है। इसके चार भेद होते हैं :—

(1) कौड़ियाला और (२) परीला। इनके अतिरिक्त इसके दो अन्य भेद हैं जिनमें बहुत थोड़ा अन्तर होता है।

अफ़्क़ह afakka–अ० निम्न हनु के दोनों भागों के मिलने का स्थान। निम्न हनु संधि।

अफ़ंजनोश afanjanosh } –अ० पञ्जनोश से
फ़ञ्जनोश fanjanoshá } अरबी बनाया हुआ शब्द है, जिसका अर्थ पञ्चपाचक (द्रव्य) है। एक मअ्जून का नाम है जिसका प्रधान अवयव मेंगड़ु है। See–Fanjanoshá.

अफ़द aafada–अ० पारावत, कबूतर या उसके समान पक्षी। (A pigeon or a bird of the same kind.)

अफ़न aafana } –अ० पचना, सड़ांध,
उफ़ूनत aufúnata } सड़ना गलना, दुर्गंध
नतानत natánata } उत्पन्न करना, तिब की परिभाषा में किसी तरल द्रव्य का शारीरोष्मा के प्रभाव से सड़ाँध में परिणत होने की ओर रुख करना (प्रवृत्त होना) है, परन्तु अभी उसके स्वरूप एवं प्रकार में कोई अन्तर न आया हो। क्योंकि स्वरूप आदि का परिवर्तित हो जाना इस्तहालह कहलाता है। प्युट्रिफ़िकेशन (Putrifaction), प्युट्रिसेन्स (Putriscence) –इं०।

अफ़ग़ज़ अंफ़िस्ट affengesict–उर० बकुल, मौलसरी। A tree (Mimusops elengi). इं० मे० मे०।

अफ़यून afayúna–हिं० संज्ञा स्त्री० देखो—अफ़ीम।

अफ़यूनी afayúni–हिं० वि० देखो–अफ़ीमची।

अफ़यूम afium } -उर० पारसीक अज-
अफ़्फ़यूम affuum } वाइन, अजवाइन, खुरासानी। (Hyocyamus) इं० मे० मे०।

अफ़यूस afayúsa–यु० जंगली मूली, अरण्यमूलक। (Wild Radish.)

अफ़र aafara–अ० मायाफल, माजू। (Galla.)

अफ़रञ्जमिश्क afaranja-mishka अ० रामतुलसी। (Ocimum Gratissimum, Linn.) देखो—तुलसी।

अफ़रग़ंज afara-ghanja–अकासबेल, अमरबेल। (Cuscuta Reflexa.)

अफरना apharaná–हिं० क्रि० अ० [सं० स्फार=प्रचुर] पेट का फूलना।

अफरा aphará–हिं० संज्ञा पु० [सं० स्फार=प्रचुर] (१) फूलना। पेट फूलना। (२) अजीर्ण वा वायुसे पेट फूलनेका रोग, आध्मान। (Flatulent).

अफ़ीमा

दियाफ़र

पेशी-

अफ़र्यून afarbyúna-यु० फ़र्यून (-फ्यू), फर्यून-अ०। सेहुँड दुग्ध, थूहर का शुष्क दुग्ध-हिं०। यूफ़ार्बियम (Euphorbium) -लें०।

अफ़र्वी afarví-तु० पेदग्याह (एक गाँठदार घास या घास)। (A knotty grass.)

अफ़ल āafala-अ० स्त्री गुह्य भागस्थ अन्त्रवृद्धि रोग, (स्त्री) गुह्येन्द्रिय वृद्धि। पुरुषके अण्डकोष में जिस प्रकार आँत उतर आती है उसी प्रकार स्त्रियों के गुह्य भाग में भी आँत उतर आती है। प्युडेण्डल हर्निया (Pudendal Hernia) -इं०। देखो—अन्त्रवृद्धिः।

अफलः aphalah-सं० पुं०
अफल aphala-हिं० पुं०
अफल, फलहीन वृक्ष, बाँझ वृक्ष। (Fruitless tree, barren)। जिसमें फल नहीं। बिना फल का। हे० च० ४ का०। त्रि०, हिं०वि० (१) जो नहीं फलता, फल रहित (ओषधि) श० च०। अथर्व०। सू०७। २७। का०८। (२) व्यर्थ, वृथा।-हिं०पुं० झाबू (-ऊ) का वृक्ष। (३) बाँझ, बन्ध्या।

अफलता aphalatá-हिं० स्त्री० फलहीनता, बाँझपन। (Barrenness, sterility)

अफला aphalá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) भूम्यामलकी, भुईं आमला (Phyllanthus niruri)। (२) काष्ठ धात्री वृक्ष। (Emblic officinalis) भा०। रा०नि० व० ११। (३) लघुकारवेल्लक। The small var. of (momordica muricata)। (४) आमलकी वृक्ष, आम(आँव-)ला। (Phyllanthus Emblica) म.० पू० १ भा०। (५) घृत कुमारी, घीकुवार (Aloe Barbadensis) श० च०।

अफलित aphalita-हिं वि० [सं०] जो फला न हो जिसमें फल न लगे। फल हीन। (Not in fruit, A fruitless tree)

अफलिनी aphaliní-सं० स्त्री० सन्तान रहित, बन्ध्या "तरुण्याः फलिनी भवेद्"। सु० के उ० अ० ३८। See-Bandhyá

अफ़संतीन afasantína-हिं० संज्ञा पुं० [यू०] देखो—अफ़्सन्तीन।

अफ़ा āafá
अफ़ाय āafáya
-अ० (१) पद्म। पक्ष। (२) ... के पर।

अफ़ाग़ियह् afághiyah-अ० हिना पुष्प, मेंहदी का फूल। (-Myrtle flower.)

अफ़ातीस afátísa-यु० मूली, मूलक। (A radish.)

अफ़ादामून āafádámúna-यु० हब्बुलक़ुल्क़ुल (See-habbul-qulqul.)।

अफ़ाफ़ह् āafáfah-अ० गुदद्वार, चूति-हिं०। एनस (Anus.)-इं०।

अफ़ायद āafáyada-सी० मग़ास, । See-Maghása.

अफ़ार āafára-अ० क़ुत्न, लब। कार्पास फल।

अफ़ारह् āafárah-अ० (ठेंट) कपास का फल। Fruit of (Gossypium Indicum)

अफ़ारहम āafáraham-अ० बलिष्ठ ऊँटनी।

अफ़ारीक़ून afáriqúna-यु० (१) चने के समान एकफल है जो हरित वर्णका होता है परन्तु बिलकुल गोल नहीं होता। इसको अरबीमें "मवेज़ुल ..." कहते हैं। (२) माज़रियून या (३) ... का फूल।

अफ़ारीन afárína-यु० तुलसकी, हशीशतुल क़ई, (बूटी है)। (A plant.)

अफ़ावियह् afáviyah-अ० (Spice) मसाला, वे सुगंधित द्रव्य जो खाने की वस्तुओं में डाले जाते हैं, जैसे—दालचीनी आदि।

अफ़ासून afásúna-यु० (१) मूली का तेल। (२) वेद का वृक्ष।

अफ़िज् āafij-अ० (ए० व०), अफ़ाज़(ब० व०) अन्त्र, आन्त्र, आँत। इन्टेस्टाइन (Intestine)-इं०।

अफ़िन āafina-अ० मैला, दुर्गंध युक्त, ... स्नेहमय द्रव्य जो शारीरोष्मा के प्रभाव से दुर्गंध

र हो गए तथा मद नम गए हों; लेकिन अभी नके स्वरूपादि में कोई अन्तर न आया हो।
फाइटिक (Mephitic)-इं०।

-aphun-पं० } अफीम (Opium).
aphun-उ०,पं० }

अमुश्क afiranja-mushka अ० नर्गिस, रामतुलसी। (Ocimum Gra-tissimum, *Linn.*)

रअfisa-अ० विकशा, कषैला। यह पद द के लिए विशेषण के तुल्य प्रयोग में आता है। ऐस्ट्रिंजेण्ट (Astringent)-इं०।

कुस afiquts } -युं०एक अप्रसिद्ध
ीकुत्स afiniquts } बूटी है। (An unimportant plant.).

न afiqúna-यु० अजवाइन खुरासानी। (Hyocyamus).

ा,-म afin,-m-यु० अफीम। (Opium)
। फा० इं०।

नु-डोडवाँ aphinanu-dodaván-यु० स्ते का डोंड। (Poppy capsules.)

aphina-मह०
म् aphinam-सं० क्ली०
aphima-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री०
afima-उ०

यु० ओपियन, अ०-अफ़्यून]. (Opium)। अफीम पोस्ते का दूध है, खसखस क्षीर। देखो-फेना।

ची afimachí-हिं० संज्ञा पुं० [अ० अफ़्यून+ची 'प्रत्य०'] अफीम खाने वाला। वह र जिसे अफीम खाने की लत हो।

मी afimí-हिं० वि० [अ० अफ़्यून] अफ़ीमची।

म पाकः aphima-pákah-सं० पुं० अकर-करा, केशर, लवङ्ग, जायफल, भंग, सिंगरफ इन्हें समभाग लेकर सबकी आधी शुद्ध अफीम डालें, प्रथम अफीम को दोलायन्त्र द्वारा दुग्ध में शुद्ध करें, तदनन्तर सब औषधों से छः गुणी मिश्री की चाशनी कर और औषधों को मिला-कर पश्चात् मधु मर्दन करें। पुनः एक एक टंक की गोलियाँ बनाएँ। रात्रि को स्त्री सहवास से दो घड़ी पूर्व इन गोलों को मुख में रक्खें या भक्षण करें। इसके सेवन से पुरुष हो मनुष्य ऊँचे अंग वाला होता है और स्त्री उसमें प्रसंग की शक्ति का संचार होता है। यो० चि०।

अफ़ीमिदून afimidúna-यु० अप्रसिद्ध बूटी है। (An unimportant plant). यह वृक्ष एवं घास के बीच होती है। इसकी एक बारीक डाली होती है।

अफीमु aphimu-कना० अफीम। (Opium).

अफ़ीमूना afimúná-यु० दालचीनी। Cinnamomum zeylanicum *Nees.* (*Bark of*-Cinnamon).

अफ़ीलन afilan } -यु० पहाड़ी जौहरी जवा-
अफ़ीलून afilúna } इन, दर्भिनह् कोही।
अफ़ील्यून afilyúna }

अफ़ीसूस afisúsa-अ०-ग़जात।

अफुल्ल aphulla-हिं० वि० [सं०] अविकसित, बेखिला।

अफू aphú } -म०, हिं० संज्ञा स्त्री० अफ़ीम।
आफू áphú } (Opium.)

अफेन aphena-हिं० वि० [सं०] बिना फेन, कफ रहित। (Foamless.) -पुं० [सं०] अफीम। (Opium).

अफेनम् aphenam-सं० क्ली० अफीम, अहि-फेन। (Opium.)

अफेनफलम् aphena-phalam-सं० क्ली० अहिफेन फल, पोस्ते की डोंड। (Poppy-capsules) भैष० स्त्री० रोग चि०।

अफेलम् aphelam सं० क्लो० आफूक, अफीम अहिफेन। (Opium)। वै० नि०।

अफ़ौत afouta-अ० (१) जिसका मुख बड़ा हो, चौड़े मुँह वाला, (२) जिसके दन्त, ओष्ट तक हों अर्थात् मुँह से बाहर निकले हुए हों।

अफ़्आल afáála-अ० (ब० व०) फ़िअ़्ल (ए० व०) क्रिया, कार्य, काम। शक्ति द्वारा जो कुछ प्रगट हो उसे क्रिया (फ़िअ़्ल) कहते

हैं। अस्तु, मनुष्य शरीर में जितनी प्रकार की शक्तियाँ हैं उतनी ही प्रकार की क्रियाएँ हैं।

अफ़्आल तब्इय्यह् afāála-tabaiyyah-अ० (१) प्राकृतिक शक्ति सम्बन्धी क्रियाएँ। (२) शरीर के सम्पूर्ण प्राकृतिक कार्य, जैसे—आहार, पान, सोना, जगना, उठना, बैठना, चलना, फिरना, देखना, सुनना, सोचना, समझना, इत्यादि।

अफ़्आल दिमाग़ियह् afāála-dimāghiyah—अ० मास्तिष्क क्रियाएँ, दिमाग़ी काम, जैसे—विवेक, विचार इत्यादि।

अफ़्आल नफ़्सानिय्यह् afāál-nafsāniyyah—अ० मानसिक क्रियाएँ, वे क्रियाएँ जो मानसिक शक्तियों द्वारा प्रगट होती हैं। अस्तु, पञ्च ज्ञानेन्द्रियों की क्रियाएँ, यथा—देखना, सुनना, स्वाद लेना, स्पर्श करना और सूँघना आदि और अन्तःकरण चतुष्टय की क्रियाएँ (हवास ख़म्सह् बातनी के अफ़्आल), जैसे—सोचना, स्मरण रखना और विचार करना आदि इसी के आधीन हैं।

अफ़्आल बसीतह् afāál-basītah-अ० अफ़्आल मुफ़्रिदह्, अमिश्रित क्रियाएँ, सामान्य क्रियाएँ।

अफ़्आल मुफ़्रिदह् afāál-mufridah-अ० साधारण क्रियाएँ जो केवल एक ही शक्ति द्वारा प्रगट हों, जैसे—चाक्षुषी, जो दृष्टि शक्ति द्वारा प्रगट होती हैं और श्रावण क्रियाएँ जो श्रवण शक्ति द्वारा उद्भूत होती हैं।

अफ़्आल मुरक्कबह् afāál-murakkābah—अ० संयुक्त क्रियाएँ जो दो अथवा अधिक शक्तियों द्वारा उद्भूत हों, जैसे—ग्रास निगलना, जो कंठ की निगलन शक्ति तथा आमाशय की आकर्षण शक्ति द्वारा सम्पादित होती है।

अफ़्आल हैवानिय्यह् afāál-haivāniyyah—अ० प्राणशक्ति सम्बन्धी क्रियाएँ जो प्राणशक्ति द्वारा प्रगट हों, जैसे—हार्दिक एवं धामनिक गति प्रभृति।

अफ़्आलुल् अद्वियह् afāālul-adviyah-अ० (१) औषध-कार्य-विज्ञान, द्रव्य-(२) प्रभाव, गुणधर्म। फ़ॉर्माकोलोजी (Pharmacology)-इं०।

अफ़्ऊमा afāúmā-अ० बहुवचन। [illegible] प्रकार का भयानक व्रत।

अफ़्क़ afq-अ० ख़त्नह् करना (मुसलमानों में यह एक धार्मिक रस्म है जिसमें [illegible] शिश्नाग्र त्वचा काटी जाती है)। [illegible] (Circumcision)-इं०।

अफ़्कल afkal-अ० कुफ़्ह, समाज। [illegible] परिभाषा में "कम्पन, कँप कँपी" को [illegible] राइगर (Rigor)-इं०।

अफ़्क़ानह् afkānah-अ० अपूर्ण शिशु [illegible] जो माता की उदर से गिर पड़े।

अफ़्तस aftas-अ० चपटी नासिका [illegible] (Flat nosed.)

अफ़्तह् aftah-अ० चौड़ी नासिका [illegible] (Broad nosed.)

अफ़्तीऊस aftiāús
अफ़्तीक़ूस aftiqūs
अक़्तीऊस aqtiāús
यू० [illegible] की परिभाषा में [illegible] यक्ष्मा (क्षयज्वर) कहते हैं। हेक्टिक फ़ीवर (Hectic Fever)-इं०।

अफ़्तीमून aftimūna-अ० [यू० एपिथिमून] हि० संज्ञा पुं० आकासबेल विलायती, [illegible] विलायती हिं०। कस्क्युटा एपिथिमम् (Cuscuta Epythymum, *Linn.*)-लें० लेसर डॉडर The Lesser Dodder [illegible] शअ्रुत्तु ज़ब्स; मवउस्तुई-अ०। [illegible] विलायती-फ़ा०। शियून-तु०।

(N. O. *Convolvulaceæ*)

उत्पत्ति-स्थान—युरोप, पश्चिम एशिया और फ़ारस। नोट—इसमें तथा [illegible]तीय आकाशबेल में सिवाय स्थान भेद के कोई अन्तर नहीं है। अतः इनके वर्णन आदि के लिए देखो-आकाश[illegible]

रासायनिक संगठन-कस्क्युटीन (Quercitin), राल; एक उड़नशील सत्व तथा [illegible]

Cuscutine)। (फा० इं० २ भा पृ० ७),

इतिहास—दीसकुरीदूस (Dioscorid-) ने इस नाम के जिस पौधे का वर्णन किया वह अस्पष्ट है। साइनी का वर्णन उससे बहुत ह स्पष्ट है। भारतवर्ष में जो ओषधि अफ़्तीमून म से बिकती है उसका आयात यहाँ फ़ारस से ता है। यह सम्भवतः कस्क्यूटा यूरोपिया Cuscuta Europea, Linn.) की एक बड़ी जाति मालूम होती है, जिसकी न्मभूमि युरोप, पश्चिम तथा मध्य एशिया ।

प्रकृति—तीसरी कक्षा में उष्ण और प्रथम रूक्ष है। हानिकर्त्ता—उष्ण व पित्त प्रकृति लों को एवं युवा पुरुषों को। यह मूर्च्छा और त्यंत तृषाजनक है। दर्पघ्न—रुब्ब (घन सत्व) व व अनार या शर्बत संदल और केशर। तीरा एवं रोग़न बादाम में मलने से इसके अव-ण दूर हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह रूक्षता त्पन्न करता है। उक्त विकार के शमनार्थ इसको र्त्ता आर्द्रताजनक द्रव्य जैसे गुलबनफ़्शह् या ावज़ुबान के साथ मिलाकर देना चाहिए। कोई ोई कहते हैं कि फुफ्फुस के लिए भी अहितकर ै। उसके दूर करने के लिए इसको समग़ अरबी (बबूर निर्यास) या कतीरा के साथ प्रयोग करना चाहिए। प्रतिनिधि—लाजवर्द, निशोथ पित्त-ापड़ा,उस्तोख़ूदूस और बिस्फ़ाइज़। मात्रा—६मा० से १ या १॥ तो० तक। क्वाथ में साधारणतः यह ६ मा० से १ तो० तक व्यवहार में आता है और इसको पोटलीमें बाँधकर डाला जाता है। एक या दो जोश देकर पोटली को निकाल लेना चाहिए।

गुण, कर्म, प्रयोग—अफ़्तीमून अपनी उष्णता व रूक्षताके कारण आध्मान को दूर करता है। अधेड़ और वृद्ध मनुष्यों के अनुकूल है। क्योंकि उनको प्रकृति को साम्यावस्था पर लाता है। सौदावी (वातज) व्याधियों को दूर करता और सौदा (वात) एवं बल्ग़म (श्लेष्मा) के दस्त लाता है। अतएव मृगी और मालीख़ौलिया के लिए उपयोगी है तथा अपनी उष्णता व रूक्षता के कारण युवाओं और उष्ण प्रकृति वालों में तृषा उत्पन्न करता है। यह उनमें मुखशोष उत्पन्न करता है। इसलिए इसके साथ मुलहठी, बनफ़्शह् और मधुरवाादि तैल के समान तरी पहुँचानेवाली वस्तुएँ मिलानी चाहिएँ। (त० न०)

यह शोथलयकर्त्ता, रोधोद्घाटक, प्रायः मास्तिष्क रोगोंको लाभप्रद, रक्तशोधक और प्रायः त्वग्‌रोगों को लाभप्रद है। प्लीहा वृद्धि में इसका प्रलेप लाभदायक है।

इसको साधारणतः माउलजुब्न के साथ या दूध में क्वथित कर उस दूधका प्रयोग कराया जाता है।

इसे वायुनिःसारक भी बतलाया जाता है तथा अङ्गमर्दप्रशमन रूप से इसका स्थानिक उपयोग होता है। मख़्ज़नुल् अद्‌वियह् में इसके गुण तथा उपयोग का सविस्तार वर्णन आया है। उसका सारांश ऊपर दे दिया गया है। विस्तार भय से उन सब को यहाँ स्थान नहीं दिया गया। नव्य चिकित्साप्रणाली में विभिन्न प्रकार के अफ़्तीमून में से सम्प्रति किसी का प्रयोग नहीं होता।

कशूस (अफ़्तीमून बीज)

कुशूस, अकशूस, कुशूस। य.ब्रुलकुशूस.	—अ० कसूस, अमरलता के बीज-हिं०, उ०।

तुख़्मे कसूस, तुख़्मे अर्श—फ़ा०। अरबी कुशूस, से ही मध्यकालीन लेखकों का लैटिन पद कस्क्यूटा (Cuscuta) व्युत्पन्न है।

नोट—यह आकाशबेल का पर्यायवाची शब्द है; परन्तु भारतीय बाज़ारों में कसूस अफ़्तीमून (फ़ारसी) के बीज के लिए प्रयोग में आता है।

वर्णन—इसके बीज में उस पौधे के क्षुद्र एवं आयताकार पत्र तथा कण्टक मिले होते हैं जिस पर कि अफ़्तीमून उत्पन्न हुआ होता है और उस पौधे के कांड के कुछ भाग एवं पुष्प भी मिले

जुले पाए जाते हैं । बीज चार, हलके,भूरे रङ्ग के, एक ओर उन्नतोदर और दूसरी ओर नतोदर, लगभग मूलक बीजाकार (मूली के बीज इतने बड़े) के गोलाकार डौंड से आवृत्त होते हैं। इसका स्वाद— तिक्त होता है।

नोट—मीरमुहम्मद हुसैन इस औषधि का भारतीय प्रकारावेल से समानता दिखलाकर लिखते हैं कि यह पीत वर्ण का होता है और कँटीले एवं अन्य प्रकार के पौधों पर उगता है। इसमें बहुत सूक्ष्म, श्वेताभायुक्त पुष्प आते हैं। बीज मूलक बीज की अपेक्षा लघु, लगभग गोल और लालिमायुक्त पीतवर्ण के होते हैं। इसके गुण अफ़्तीमून के सदृश वर्णन किए गए हैं।

रासायनिक संगठन—क्वरसेटीन (Quercetin) के अतिरिक्त ग्ल्युकोसाइडल रेज़िन, एक क्षारीय सत्व, एक कषाय पदार्थ, मोम और तैल।

प्रकृति—उष्ण व रूक्ष।

हानिकर्त्ता—प्लीहा तथा फुफ्फुस को।

दर्पघ्न—सिकंजबीन, शहद तथा कासनी के बीज।

प्रतिनिधि—अफ़्सन्तीन व बादरूज।

मात्रा—७ मा० (शर्बत)।

गुण, कर्म, प्रयोग—माद्दा से शुद्ध करता और आमाशय व आंत्र को खोलता है। दोषिक ज्वरों को लाभप्रद है। और खूब पेशाब लाता है तथा उत्तम स्वेदक व रजःप्रवर्त्तक है। दुग्धवर्द्धक तथा प्रकृति को मृदुकर्त्ता और मस्सों का प्रवर्त्तक है। निर्विषैल।

औषध-निर्माण—इत् रीफ़ल, वटिकाएँ, चूर्ण, सिकंजबीन, अर्क़, मअ्जून, क्वाथ इत्यादि की शकल में इसके बहुशः मिश्रण है।

अफ़्दश्र afdaá–अ० जिसका टखना या पहुँचा भीतर को मुड़ा हुआ हो।

अफ़्दज़ afdaz–अ० एक अप्रसिद्ध औषध है।

अफ़्न afna–अ० मास्तिष्क दौर्बल्य, बुद्धिहीनता।

अफ़्नान afnán–फ़ा० फ़रासियून। See–Farásiyún.

अफ़्नीक़ून afniqún–यु० एक बूटी ... के तथा अन्य खेतोंमें उत्पन्न होती है। ... तितली (मुश्क) के पत्तों के समान होती ...

अफ़्नीन afnín–रू० फ़र्फ़्यून-अ०। सेहुँड़ ... (Euphorbium).

अफ़्फ़िऊन affiún–मला०
अफ़्फ़ीनी affíní–कना०, कौं०
अफ़्यून afyún–अ०फ़ृ०, अ०
... सं० फ़ा० इं० । देखो—पोस्ता।
} अफ़ीम (Opium) ...

अफ़्यून आबकारी afyúna-ábkári ... की अफ़ीम। इसके वर्गाकार टुकड़े होते ... भारतवर्ष में इसकी बिक्री होती है।

अफ़्यून ईरानी afyúna-íráni–अ० ईरान ... अफ़ीम।

अफ़्यून का पलस्तर afyúna-ká-plasta... अफ़ीम का पलस्तर (Opium plaster ... अफ़ीम का बारीक चूर्ण १ आउंस (११ ... रेज़िन प्लास्टर ६ आउंस (२२॥ तो०), ... प्लास्टर को वाटरबाथ (जलकुण्ड) के द्वारा पि... कर इसमें अफ़ीम धीरे धीरे मिलाएँ। शक्ति ... भाग में १ भाग अफ़ीम। प्रभाव व प्रयोग ... वेदना शमनार्थ इसको स्थानीय रूप से उप... में लाते हैं।

अफ़्यून काहू afyúna-káhú–फ़ा० देखो ... लेक्टयुकेरिअम् (Lactucarium.)

अफ़्यून क़ुस्तुन्तुनियह् afyúna-qustun-niyah–अ० कुस्तुन्तुनिया की अफ़ीम।

अफ़्यून चीनी afyúna-chíní–अ० चीन दे... (China opium.) । देखो—अफ़ीम।

अफ़्यून ज़खीरह् afyúna zakhírah... गोले की अफ़ीम। यह भारतीय अफ़ीम का ... भेद है जो चीन देश को भेजा जाता है। देखो—अफ़ीम।

अफ़्यून तुर्की afyúna-turkí–अ० अफ़... स्मर्ना। देखो—अफ़ीम।

अफ़्यून मुहम्मस afyún muhamm... –फ़ा० भुनी हुई अफ़ीम। इसके भूनने की विधि "तह् मीस" में देखो।

मुदब्बर afyún mudabbar–फ़ा० फ़ीम को गुलाब जल में भिगोकर छानें, पुनः ना पकाएँ कि गोली बाँधने के योग्य हो जाए। युर्वैदिक विधि के लिए देखो—पोस्ता।

स्मर्ना afyúna-smarna-फ़ा० अफ़्यून र्नी, एशिया कोचक की अफ़ीम, Turkey pium, Smyrna (Levant) opium. इसके टुकड़े चौथाई आउंस से लेकर अर्ध उण्ड तक भारी होते हैं जिनपर पोस्ते के पत्ते पटे हुए और उनपर चूकाबीज छिड़के हुए ते हैं।

हिन्दी afyúna-hindí-फ़ा० सरकारी फ़ीम। यह तीन प्रकार की होती है, (१) ले की अफ़ीम, (२) अफ़्यून आबकारी र (३) औषधीय अफ़ीम। इसकी छोटी टी डलियाँ अथवा चूर्ण होता है। यह पटना बनता है। इनके अतिरिक्त अफ़्यून मिस्री, ानी, मगरेबी, जर्मनी और फ्रांसीसी भी ते हैं।

afyúr-यु० बीज। (Seed).

सफ़्साफन afyúr-safsáfan–यु म ख़ुब्बाज़ी। See-khubbázi.

स afyús–यु० जंगली मूली। (wild radish).

afiaj–अ० जिसके अग्रदन्त बाहर कले हुए हों।

ी afranjí–अ० कु० (अफ़्रंजी मे), मिस्र के लोग उपदंश रोग के लिए बोलते हैं। Syphilis.)

afram–अ० पोपला, जिसके दाँत टूट ये हों।

स्यून afrásyún–यु० विषखपरा (हिन्दी), पुनर्नवा। (Boerhavia Diffusa).

क़ afriq–अ० १०-से २० औक़ियह तक का माप या वज़न (=४७ तो० ६ मा०)।

ीकन ऐरो पॉइज़न african arrow, poison–इं० स्ट्रोफैन्थस (Strophanthus.).

अफ़्रीक़ी ज़हर पैकाँ afriqi-zahra-paikán यु०, (Strychnos Boidean).

अफ़्रीदस afrídas–यु० इज़्ख़िर। See-Izkhir.

अफ़्रीस्मूस afrísmús–अ० मसत शिश्न प्रहर्षण अर्थात् बिना कामेच्छा के भी सदा शिश्न का प्रहृष्ट (दृढ़, उत्तेजित) रहना। देखो–फ़र्रीमूस। प्रायापिज़्म (Priapism)–इं०।

अफ़्रूदीजान afrúdiján–यु० मिट्टी भेद। (A kind of earth.)।

अफ़्रूसालीस afiúsálís– } –यु० चन्द्रकान्त (हज्रुल् क़ुमर) एक प्रकार का पत्थर है। (A kind of stone.)
अफ़्रूसाल्यूस afiúsályús— }

अफ़्लज aflaj–अ० वह मनुष्य जिसका निम्न ओष्ठ फटा हुआ हो अर्थात् जिसके अधः ओष्ठ में चीरा पड़ी हो।

अफ़्लंजह aflanjah } –अ० फूल, फ़िरंगी पुष्प। ये रक्त राई के समान बीज हैं अर्थात् एक प्रकार के पीत बीज होते हैं। सर्वोत्तम वे होते हैं जिनको हाथमें मलनेसे सेब की गंध आए। इनका स्वाद तिक्त होता है। ये प्रायः इतरोंमें प्रयुक्त होते हैं। मअ्जून आदिमें भी डाले जाते हैं। उद्भवस्थान–भारतवर्ष।
फ़्लंजह flanjah }

अफ़्लातन aflátan–अ०, यु० मुक़्ल, मुक़्ले, अज़्रक़। गूगल–हिं०, द०। गुग्गुलु–सं०। (Balsamodendron agallocha, W. & A. (Resin of-Bdellium) स० फा० इं०।

अफ़्लातून aflátúna–यू० } प्लेटो Plato –इं०।
फ़्लातुन flátúna–अ० }

यूनानी भाषा में 'अफ़्लातून' का अर्थ प्रकाण्ड विद्वान् है। यह एक प्रख्यात हकीम थे। आपका जन्म ईसवी सन् से ४२७ वर्ष पूर्व एथेन्ज़ (यूनान की राजधानी) नगर में हुआ। आपके पिता यूनान के प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा हकीम अस्क़्लीबियूस (Asclepios) की संतानों में से थे। अपने कालके आप

प्रसिद्ध दार्शनिक और चिकित्साशास्त्र के प्रमुख एवं कुशल पंडित थे। आपको गणितशास्त्र से भी बहुत प्रेम था। आप सुकरात के अनुयायी और अरस्तू के गुरु थे। ईसवी सन् से ३४७ वर्ष पूर्व एकासी ८१ वर्षकी अवस्था में आपका देहांत हुआ। आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमें से कई एक आज भी उपलब्ध हैं।

अफ़्लातंस aflártasa–यु० छोटी माईं का वृक्ष, फ़रासवृक्ष। (Tamarix Orientalis, *Vahl.* (*Galls of*–Tamarix Galls.)

अफ़्लासून aflásúna–यु० मूली का तैल। (Radish oil).

अफ़्लीकान aflíkána, **अफ़ीकान** afíkána –अ० (१) चिबुक की दोनों अस्थियों के किनारे जो मिल गए हैं। (२) कंठ में कव्वे के पास जो मांस के दो लोथड़े हैं।

अफ़्लीज aflíja–अ० पक्षाघात का रोगी, फ़ालिज का रोगी। (Paralytic.)

अफ़्लूनिया aflúniyá, **फ़लूनिया** falúniyá –अ० एक मश्जून का नाम है जो अपने रूमी आविष्कर्ता हकीम अफ़्लून के नाम से प्रसिद्ध है। यह वेदनाशामक है।

अफ़्वात afváta–अ० अंगुलियों के बीच की दूरी। (Distance between fingers)

अफ़्वाफ़ afváfa–अ० (ब० व०), फ़ौफ़ (ए० व०) नखों के किनारों के श्वेत विन्दु।

अफ़्योलून afvolúna–बरब० बरमेंह (एक अप्रसिद्ध वृक्ष)। (An unimportant tree.)

अफ़्शर्नीकी afsharníkí–यु० शुकाई (भा० बाज़ा०)। The herb. (See–shukái)

अफ़्शसीकी afshasíkí–फ़ा० अज्ञात है।

अफ़्शुरज afshuraja, **अफ़्शुरूज** afshurúja –अ० अफ़्शुरह् या अफ़्शुर्दह् का अ० कृ० पद है। जिसका अर्थ ताज़ा फल अथवा वनस्पतियों का निचोड़, अर्थात् निचोड़ा हुआ रस, स्वरस अथवा अर्क होता है।

अफ़्शुरह् afshurah–फ़ा० वस्तुत "अफ़्शुर्दह्" है। पर प्रयोगाधिक्य के कारण ... हो गया है। फलों का निचोड़। juice (Succus).

अफ़्शुर्दह् afshurdah–फ़ा० रस, ... निचोड़–हिं०। juice (Succus).

अफ़्शुर्दहे बङ्ग afshurdahe-banka– ... अजवाइन खुरासानी का रस। (Juice ... Hyoscyamus).

अफ़्शुर्दहे शौकरान afshurdahe-shaukarána–फ़ा० कोनाइम अर्थात् शौकरान का ... (Juice of conium).

अफ़्स aafs–अ० माजूफल, माफल–हिं०। ... मायिका–सं०। Galls (Galla).

अफ़्सन्तीन afsantín–अ०, रू०, यु० (हिं) ...

... Absinthium Vulgare, ... आर्टिमिसिया ऑफ़िशिनल Artemisia ... cinal, *Lam.*, आर्टिमिसिया Artem... (शुष्क क्षुप) –ले०। वर्म वुड Worm Wood, मग-वर्ट Mug-wort, ... (the absinth)–इं०। ... ऐप्सिन्थियून (Apsinthion ... मूय ब लु शह्, मर्वह्–फ़ा०। ... सन्तोन–हिं०, द०। (पार्वतीय ...) ... (बुरे प्रकार का) अमीह्–मिश्र०।

मिश्र वा सेवती वर्ग

(*N. O. Compositæ.*)

उत्पत्ति स्थान—उत्तरी अफ़्रीका, अमेरिका, यूरप के कतिपय पार्वतीय, एशिया में साइबेरिया, मंगोलिया, भारतवर्ष के कतिपय पर्वतीय प्रदेश, तथा नैपाल इत्यादि।

वानस्पतिक-वर्णन—यह ... प्रकार की एक बूटी है। ... सरल एवं शाखामय होता है। ... रोमों से आवृत होता है। शाखा ...

पत्र लगे होते हैं। पत्र—दोनों ओर रेशमवत् लोमों से युक्त होने के कारण रजत वर्ण के और लगभग २ इंच दीर्घ होते हैं। पुष्प—सूक्ष्म, पीताभ श्वेत और गुले बाबूना के समान होता है, जिसके मध्य में एक प्रकार का पीलापन होता है। इसमें छोटे छोटे गोल दाने अर्थात् फल लगते हैं जिनके भीतर बारीक बीज भरे होते हैं। इसके अनेक भेद हैं जिनका वर्णन यथा स्थान होगा। गंध तीव्र एवं अप्रिय और स्वाद अत्यन्त तिक्त होता है।

प्रयोगांश—इसके पत्र एवं पुष्पमान शाखाएँ औषध कार्य में आती हैं।

रासायनिक संगठन—इसमें १॥ प्रतिशत एक उड़नशील तैल जिसका मान्द्र भाग एब्सिन्थोल (Absinthol) कहलाता है। इसके अतिरिक्त इसमें एक स्वाद्य (सत्वविशेष) सत्व जिसको एब्सिन्थीन (Absinthin) कहते हैं और $\frac{1}{5}$ प्रतिशत एक तिक्त राल और ५ प्रतिशत एक हरित राल आदि पदार्थ होते हैं।

घुलनशीलता—एब्सिन्थीन (Absinthin) अत्यन्त कटु, श्वेत वा पीताभ धूसर वर्ण का एक ग्ल्युकोसाइड है जो मद्यसार (Alcohol) वा सम्मोहनी (Chloroform) में अत्यन्त विलेय, किंतु ईथर तथा जल में अल्प विलेय होता है। अफ़सन्तीन के शीत कषाय (Infusion) को कषायीन द्वारा तलस्थायी करने से एब्सिन्थीन प्राप्त होता है।

संयोग-विरुद्ध (Incompatibles)—आयर्न सल्फास (हीरा कसीस), जिंक सल्फास (तूतिया श्वेत), प्लम्बाई एसीटास और अर्जेण्टाई नाइट्रास।

औषध-निर्माण—चौया, १० से ६० ग्रेन। शीतकषाय-(१० में १), मात्रा-$\frac{1}{2}$ से १ आउंस। तरल सत्व—५ से ६० बुंद तक (पूर्ण वयस्क मात्रा)। टिंक्चर-(८ में १), मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ ड्राम तक। तैल-मात्रा, $\frac{1}{2}$ से ३ बुंद।

सुगंधित मद्य-(एक फरासीसी मद्य जिसको वाइनम एरोमैटिकम् एब्सिन्थियम् कहते हैं। इसमें मार्जोरम् अन्जेलिका, एनिस प्रभृति सम्मिलित होते हैं)। यह अग्निदीपक उत्तेजक है इसके अधिक सेवन से एब्सिन्थिज़्म (Absinthism) अर्थात् अफ़सन्तीन द्वारा विषाक्तता उत्पन्न हो जाया करती है जिसके लक्षण निम्न हैं—

रोगी को कठिन गरमी मालूम होती है हृदय धड़कता है नाड़ी की गति तीव्र हो जाती है और श्वास जल्द आता है इत्यादि।

नोट—यूनानी चिकित्सा में यह तैल, मद्य, शर्बत, अनुलेपन, अर्क़, टिकिया, क्वाथ, तथा मअ्जून प्रभृति मिश्रण रूपों में व्यवहृत होता है। अफ़सन्तीन के एलोपैथिक (डॉक्टरी) चिकित्सा में व्यवहृत होने वाले मिश्रण—(डॉक्टरी में ये मिश्रण नॉट ऑफ़िशल हैं)

(१) पल्विस एब्सिन्थियाई, मात्रा-२० से ३० ग्रेन।
(२) एक्वा " " $\frac{1}{2}$ से १ औंस।
(३) एक्सट्रैक्टम् " " ५ से १५ ग्रेन।
(४) एक्सट्रैक्टम् एब्सिन्थियाई लिक्विडम्, मात्रा—१५ से ४५ बुंद।
(५) इन्फ्युज़न एब्सिन्थियाई " १ से २ औंस।
(६) ऑलियम् " " १ से ५ बुंद।
(७) टिंक्चूरा " " $\frac{1}{2}$ से २ ड्राम।
(८) " कम्पॉज़िटा " १ से ४ ड्राम।

नोट—यद्यपि युरोप के कतिपय प्रदेशों में इस औषधि के उपर्युक्त मिश्रण प्रयोग में लाए जाते हैं, तथापि अधिकतर इसका टिंक्चर ही व्यवहार में आता है। यह एक भाग वर्मवुड (अफ़सन्तीन) और १० भाग मद्यसार (६०%) से निर्मित किया जाता है।

अफ़सन्तीन के प्रभाव तथा उपयोग।
आयुर्वेद की दृष्टि से—

यद्यपि अफ़सन्तीन और इसकी कतिपय जातियाँ भारतवर्ष में उत्पन्न होती हैं और उनका वर्णन भी आयुर्वेदीय ग्रंथों में आया है; तथापि अफ़सन्तीन का वर्णन किसी भी आयुर्वेदीय ग्रंथ में नहीं मिलता। इसकी अन्य

जातियाँ निम्न हैं—(१) दमनक या दौना (Artemisia Scoparia or Indica), (२) नागदमनी (Artemisia Vulgaris), (३) शोह या किर्माला (Artemisia Maritima) और (४) परदेशी दौना (Artemisia Persica) इत्यादि। इनके लिए उन उन नामों के अन्तर्गत या आर्टिमिसिया देखो।

यूनानी मत से—

प्रकृति—यह प्रथम कक्षा में उष्ण और द्वितीय कक्षा में रूक्ष है। हानिकर्त्ता—मस्तिष्क व आमाशय को निर्बल करता, शिरः शूल उत्पन्न करता तथा रूक्षता की वृद्धि करता है। दर्पघ्न—अनीसून, मस्तगी, नीलोफ़र या शर्बत अनार। प्रतिनिधि—ग़ाफ़िस और असारून। मात्रा—३ मा० से ७ मा० तक। चूर्ण रूप में सामान्यतः ४–४॥ मा० और क्वाथ रूप में ६–७ मा० तक प्रयोग में ला सकते हैं।

गुण, कर्म, प्रयोग—(१) रोधोद्घाटक है। क्योंकि इसमें कटुता और चरपराहट है। (२) संकोचक है। क्योंकि इसमें कषायपन है, और कषायपन (या क़ब्ज़) पृथ्वी तत्व के कारण प्राप्त होता है और पृथ्वी तत्त्व रूक्ष होता है। इसके अतिरिक्त इसमें कटुता भी है और कटुता भी तीक्ष्ण एवं तीव्र पार्थिव तत्व ही से हुआ करती है और यह स्पष्ट है कि तीक्ष्ण पार्थिव तत्व के भीतर रूक्षता का प्राधान्य होता है। इसके अतिरिक्त इसके स्वाद में चरपराहट भी है और यह अग्नि तत्व के कारण हुआ करता है। इस कारण से भी यह रूक्ष है। अतएव इससे यह निष्पन्न हुआ कि अफ्सन्तीन दो प्रकार के सत्वों के योग द्वारा निर्मित हुआ है—(१) उष्ण सत्व-कटु, मारक और चरपरा है और (२) दूसरा सत्व पार्थिव एवं संकोचक है। (३) मूत्र एवं आर्त्तवप्रवर्त्तक है। क्योंकि इसके भीतर तह्लीफ़ (मलशोधन, द्रवजनन) और तफ़्तीह (अवरोध उद्घाटन) की शक्ति है। (४) पित्त को दस्तों के द्वारा विसर्जित करता है। क्योंकि इसमें जिला (कांतिकारिणी) शक्ति विद्यमान है जो इसके भीतर पाई जाती है। ग्राहिणी (क़ाबिज़ह) भी इसमें वर्तमान है जो अवयव को एवं बलिष्ट करती है। इसमें कुव्वत दाफ़ा (प्रक्षेपक वा उत्सर्जन शक्ति) को शक्ति [illegible] और (तृप्त या जाते हैं)। (५) आमाशय के लिए हानिकर है। क्योंकि अतः स्वरस अफ्सन्तीन के अवयव से [illegible] उष्ण एवं तीक्ष्ण होता है। इसलिए कि में पार्थिवांश जो कि शीतल होता है, [illegible] जाता। अतएव इसका स्वरस अपनी तीक्ष्णता एवं उष्णता के कारण आमाशयिक [illegible] प्रदान करता है। बल्कि इसके जिर्म (क [illegible] में शेष रह जाता है और निचोड़े हुए [illegible] नहीं निकलता। (६) हाँ ! स्वरस में अफ्सन्तीन की अपेक्षा अधिकतर लयकारिणी (विनाशक) [illegible] अवरोधोद्घाटकीय शक्ति होती है, जिसके [illegible] यह कामला (यर्क़ान) के लिए लाभदायक [illegible] इसका जिर्म और इसका शर्बत आमाशय [illegible] यकृत् को बलप्रद है। जिर्म के बलप्रद होने [illegible] कारण यह है कि उसके भीतर [illegible] (क़ाबिज़ह) शक्ति काफ़ी होती है। अतएव [illegible] प्रति दो अवयवों को शक्ति प्रदान करता [illegible] शर्बत इसलिए बलप्रद है कि इसमें [illegible] (क़ाबिज़) एवं सुगन्धित औषधियाँ सम्मिलित की जाती हैं। उसमें क्षोभ एवं तीक्ष्णता भी नहीं होती। शर्बत बनाने की कई विधि हैं। कोई इस प्रकार बनाता है [illegible] अफ्सन्तीन को अंगूर के शीरा में [illegible] देते हैं और तीन मास तक छोड़ रखते [illegible] और कोई इस तरह बनाता है कि [illegible] को सुगन्धित दवाओं के साथ दो मास [illegible] अंगूर के शीरे में भिगो रखते हैं अतः या [illegible] अपने स्तंभक एवं क्षोभ रहित सौरभ [illegible] आमाशय और यकृत् को शक्ति प्रदान करता [illegible] (७) अफ्सन्तीन अर्श के लिए उपयोगी [illegible] क्योंकि अर्श का रोग स्थल चूँकि गुद [illegible] आमाशय से दूर स्थित है और [illegible] इसकी शक्ति निर्बल होकर पहुँचती है। इस [illegible]

सकी उष्णता यहाँ ऐसी न होगी कि रूक्षता की वृद्धि कर मर्मों को कठिन बना सके; प्रत्युत उस सम उष्मा के कारण तलयिन (मृदुता), तह्लील (विलेयता) और तस्खीन (गर्मी) प्राप्त होगी। (८) और अपनी तल्तीफ़ (संशोधन या द्रवण), तहलील (विलायन) और इद्रार (प्रवर्तन, रेचन) के कारण विषमज्वरों को लाभदायक है। (९) इसके क्वाथ का वाष्प स्वेद (भफारा) देने से कर्णशूल प्रशमित होता है। क्योंकि यह वायु को लयकर्ता और श्लेष्मा को मृदु एवं लय करता है। और पैत्तिक दोषों को भी निकाल डालता है।(१०) चूँकि अफ्सन्तीन के भीतर कटु आहद है। अतः यह उदर की कृमियों को मार डालता है। (त०न०)

संक्षेप में यह बल्य, संकोचक, रोधोद्घाटक, संकोचक, प्रवर्तक वा रेचक, ज्वरघ्न, उदरकृमिनाशक, मस्तिष्कोत्तेजक और कीटाणुनाशक है। आमाशयावसाद, आध्मानजन्य पाचन विकार, आंत्रकृमि, परियाय-ज्वर निवारण हेतु, श्लेष्म स्राव, रजःरोध, रजः स्राव, शिरोरोग यथा शिरःशूल, पक्षाघात, कम्पन, अपस्मार, सिर चकराना, मालीखोलिया इत्यादि तथा कर्ण रोगों और यकृत एवं प्लीहा आदि रोगों में इसका व्यवहार होता है।

एलोपैथिक वा डॉक्टरी मतानुसार—

प्रभाव—अफ्सन्तीन (पौधा) तिक्त बल्य, सुगन्धित, आमाशय बलप्रद अर्थात् अग्निप्रदीपक, ज्वरघ्न, कृमिघ्न (आंत्रस्थ), मस्तिष्कोत्तेजक, रजः प्रवर्तक, अवरोधोद्घाटक, स्वेदक, पचननिवारक, और किञ्चित् निद्राजनक है। (तैल) अधिक काल तक सेवन करने से यह निद्राजनक विष (Narcotic poison) है।

उपयोग—आमाशय बल्य रूप से इसको आमाशय की निर्बलता के कारण उत्पन्न अजीर्ण एवं आध्मानजन्य अजीर्ण में देते हैं। कृमिघ्न रूप में इसको केचुओं (Round worms) और सूती कीड़ों (Thread worms) के निःसारण हेतु व्यवहारमें लाते हैं। ज्वरघ्न रूप से इसको विषमज्वरों (Intermittent fevers) में प्रयुक्त करते हैं। रजः प्रवर्तक रूप से इसको रजःरोध तथा कष्टरज में देते हैं। मस्तिष्कोत्तेजक रूप से इसको अपस्मार और मस्तिष्क नैर्बल्य इत्यादि रोगों में देते हैं।

नोट—आमाशय तथा आंत्र की प्रदाहावस्था में इसका उपयोग न करना चाहिए।

अफ्सन्तीन को गरम सिरका में डुबोकर मोच खाए हुए अथवा कुचल गए हुए स्थान की चारों ओर बाँधते हैं। आक्षेप निरोध के लिए भी इस पौधे के कुचल कर निकाले हुए रस को सिर में लगाते हैं। शिरोवेदना में सिर को तथा संधिवात और आमवात में संधियों को पूर्वोक्त विधि द्वारा सेंकते भी हैं। एब्सिन्थियम् तिक्त आमाशय बलप्रद है। यह क्षुधा की वृद्धि करता और पाचन शक्ति को बढ़ाता है। अजीर्ण रोग में इसका उपयोग करते हैं। यह योषापस्मार (Hysteria). आक्षेप विकार यथा अपस्मार, वात तान्त्रिक क्षोभ, वात तन्तुओं की निर्बलता (वात नैर्बल्य) में तथा मानसिक क्षति में भी व्यवहृत होता है। कृमिघ्न प्रभाव के लिए इसके शीत कषाय की वस्ति देते हैं। कृमिनिस्सारक रूप से इस पौधे का तीक्ष्ण क्वाथ प्रयुक्त होता है। बालकों की शीतला में इसका मन्द क्वाथ देते हैं। त्वग् रोगों एवं दुष्ट व्रणों में टकोर रूप से इसका बहिर प्रयोग होता है। (इं० मै० मे० पृ० ८४-डॉ० नदकारणी कृत। पी० बी० एम०).

सिंकोना के दर्याफ्त से पूर्व विषमज्वरों में इसका अत्यधिक उपयोग होता था। वातसंस्थान पर इसका सशक्त प्रभाव होता है। शिरःशूल एवं इसके अन्य वात संबन्धी विकारों को उत्पन्न करने वाली प्रवृत्ति से काश्मीर तथा लेद्दक के यात्री भली प्रकार परिचित हैं। क्योंकि जब वे देश के उस विस्तृत भाग से जो उक्त पौधे से आच्छादित है, यात्रा करते हैं, तब उनको यह महान कष्ट सहन करना पड़ता है। (वैट्स डिक्शनरी १ खं० ३२४ पृ०)

अफ़्सन्तीनुल् बह्र afsantínul-bahar-अ० (Artemisia Maritima, *Linn.*) शीह, शरीक़ून-अ०। दमनह-फ़ा०। किर्मोला -हिं०।

अफ़्सन्तीने हिन्दी afsantíne-hindí-फ़ा० (Artemisia Indica, *Willd.*) ग्रंथिपर्णी-सं०।

अफ़्सीह ăafsíh-अ० बलूत भेद। See-Balúta.

अफ़्सुल् अबैज़ ăafsul-abaiza-अ० माजूफल। (White galls.)

अफ़्सुल् अख़्ज़र ăafsul-akhzara-अ० माजूफल, मायाफल। (Green galls.)

अफ़्सुल अर्ज़क़ ăafsul-arzaq-अ० नील माजूफल। (Blue galls.)

अफ़्सुल् अस्वद ăafsul-asvada-अ० श्याम माजूफल (मायाफल)। (Black galls.)

अफ़्सुल् बलूत ăafsul·balúta-अ० माजूफल, मायाफल -हिं०। Galls (Galla.).

अबका abaká-हिं०संज्ञा पुं० [सं०अबका=सेवार] एक पौधा जिसके डंठल की छाल रेशेदार होती है और रस्सी बनाने के काम आती है। खुद्द का मैनिला पेपर बनता है। यह पौधा फिलिपाइन देश का है। अब इसकी खेती अण्डमन टापू और आराकान की पहाड़ियों में भी होती है। इसकी खेती इस प्रकार की जाती है। इसकी जड़ से पेड़ के चारों ओर पौधे भूफोड़ निकलते हैं। जब वे पौधे तीन तीन फुट के हो जाते हैं तब उन्हें उखाड़ कर खेतों में ८।६ फुट की दूरी पर लगाते हैं। तीन चार साल में इसकी फसल तैयार होती है, तब इसे एक एक फुट ऊपर से काट लेते हैं। डंठलों से इसकी छाल निकाल ली जाती है और साफ़ करके रस्सी आदि बनाने के काम में आती है। हिं० श० सा०।

अबकेशी aba-keshí-हिं०वि० अफल, फलरहित, बाँझ। Without fruit, barren (A tree).

अबखरा abakhará-हिं० संज्ञा पुं० [भाप। वाष्प। (Vapour).

अबखोरा abakhorá-हिं० संज्ञा पुं० आबखोरा।

अबज़ abaz } मायज़ mábaz } -अ० मध्यन्तर जानु घुटे पिछला या मध्य का भाग या तल। पॉप्लीज़ (Poples)

अबटन abaṭana-हिं० संज्ञा पुं० उबटन।

अबद ăabad-अ० एक सुगंधित पौधा है। (aromatic plant.)

अब-दातक abadátak-सं० लामज्जक (Andropogon laniger.)

अबद्ध abaddha-हिं० वि० [सं०] जो न हो। मुक्त।

अबनी abaní-हिं० स्त्री० धरती, पृथ्वी। (The earth, the world).

अबब ăabab-अ० काकनज भेद जिसको एलहु कहते हैं। (२) नकछा Physic nut (Jatropha glauca)। इसके से एक प्रकार का उत्तेजक तैल प्राप्त होता जो आमवात तथा पक्षाघात के लिए है। इं० हैं० गा०।

अबमकाजी abamakájí-तु० ख़ुब्बाज़ी। S khubbází.

अबयी abayee-मह० महाशिम्बी-सं०। सेम-हिं०। (Canavallia ensiformis)

अबरक abarak-हिं० संज्ञा पुं० [अभ्रकम्] (१) Talc (Mica) भोड़ल। (२) एक प्रकार का खान से निकलता है और बरतन बनाने में आता है। यह बहुत चिकना होता है। बुकनी चीज़ों के चमकाने के लिए रोग़न बनाने के काम में आती है।

अबरक भस्म abarak-bhasma-हिं० अभ्रक की भस्म। (Calcinated talc)

अबरक़लया abar-qalayá-यु० (Spinacea oleracea).

ख abarakha-हिं० संज्ञा पुं० अभ्रक, मोडल। Talc (Mica).

ञ्जमिश्क abaranjamishka-अ० फ़ा० हरञ्जमिश्क-अ०। रामतुलसी-हिं०। Ocimum (gratissimum).

abaran-हिं० वि० [सं० अवर्ण] ना रूप रंग का। वर्णशून्य।

abaram-सं० स्त्री० मन्तर्वस्त्र। मे० त्रिकं।

abarasa-हिं संज्ञा पुं० [फ़ा०] १) घोड़े का एक रंग जो सब्ज़े में कुछ खुलता हुआ सफेद होता है। (२) घोड़ा जिसका सब्ज़े में कुछ खुलता हुआ सफेद रंग हो। वि० सब्ज़े से कुछ खुलता हुआ सफेद रंग का।

ावृत्तिः abarávrittih-सं० स्त्री० एक अम्ल फल है। (An aciduous fruit).

abari-हिं० संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पीले रंग का एक पत्थर। जैसलमेरी।

abarq-अ० अबरक या शजनीन दरियाई (एक जानवर है) या कोई फ़ारसी दवा है।

ल्सा abarqalsá-यु०
अक़्लसा abra-aqalasá-यु०
भयानक मृगी। युक़्लस यूनानका एक अन्यायी तथा हिंसक राजा था। इस रोग का नाम अबर-क़ल्सा उसी के नाम पर रक्खा गया है। क्योंकि यह भी एक भयंकर रोग है। एपिलेप्सिया ग्रेविअर (Epilepsia Gravior).

abarkha-अबरक़, अभ्रक। Talc (Mica).

र्दान abardána अ० सुबह और शाम का समय। प्रातः सायंकाल। (Morning & the evening).

र्नी abarní-रू० लोफ़ (जिसे हिंदी में सुरत-कन्द कहते हैं, यह एक वनस्पति है)।

र्नेथीज़ पिल्ज़ abernethy's pills-इं० मर्करी पिल ३ ग्रेन, कम्पाउण्ड एक्सट्रैक्टऑफ़ कॉलोसिन्थ ३ ग्रेन, दोनों की एक गोली बनाले और ऐसी एक गोली रात को सोते समय दें। यह उस कृष्ण रोग में जिसमें यकृद् विकार भी हो अत्यन्त लाभदायक है।

अबर्ब्यून abarbyúna यु० फ़र्ब्यून-अ०। मेहुँड, थूहर। (Euphorbium.).

अबर्स abarsa-यु० गुले सौसन। See-Sousana.

अबलख abalakha-हिं० वि० [सं० अवलक्ष =श्वेत] कबरा। दो रंगा। सफ़ेद और काला अथवा सफ़ेद और लाल रंग का।

अबलखा abalakhá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अवलक्ष] एक पक्षी जिसका शरीर काला होता है, केवल पेट सफ़ेद होता है। इसके पैर सफ़ेदी लिए हुए होते हैं। चोंच का रंग नारंगी होता है यह संयुक्त-प्रांत, बिहार और बंगाल में होता है और पत्तियों और परों का घोंसला बनाता है। एक बार में चार पाँच अंडे देता है इसकी लंबाई ६ इंच होती है।

अबलः abalah-सं० पुं० वरुण वृक्ष, बरना। A tree (Capparis Trifoliata).

अबलह् ह् abalahh
ख़शिनुस्सौत khashinussouta
-अ० भर्राए हुए शब्द वाला, बैठे हुए शब्द वाला। स्ट्रिड्युलस (Stridulous)-इं०।

अबलासः abalásah-सं० पुं० (१) कफ-कारी (२) बलनाशक। अथर्व०। सू० २। १८। का० ८।

अबलासेन abalásena-हिं० संज्ञा पुं० कामदेव। (Cupid).

अबाख़िस abákhis-अ० पोर्वे, पर्व-सं०। डिजिट्स (Digits)-इं०।

अबाज़ीर abázira
तवाबिल tavábil
-अ० अब्ज़ार का (ब० व०) और अब्ज़ार है बहुवचन बज़्र का जिसका अर्थ बीज है। लेकिन तिब्ब की परिभाषा में अब्ज़ार या अबाज़ीर उन बीजों या तर वा शुष्क बीजों को कहते है जो आहार में मसाला

रूप से उसको स्वादिष्ट एवं सुगन्धयुक्त करने के लिए डाले जाते हैं।

उदाहरणतः—जीरा, कालीमिर्च, लौंग, दालचीनी, और धनियाँ प्रभृति। स्पाइसेज़ (Spices), सीज़निङ्ग्ज़ (Seasonings) –इं०।

अबाती abáti–हिं० वि० [सं० अ=नहीं+वात=वायु] (१) बिना वायु का। (२) जिसे वायु न हिलाती हो।

अबानस abánasa–यु० आबनूस। See–ábanús.

अबाबील abábíla–हिं० संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वालो (Swallow) इं०। काले रंग की एक चिड़िया। इसकी छाती का रंग कुछ खुलता होता है। पैर इसके बहुत छोटे छोटे होते हैं जिस कारण यह बैठ नहीं सकती और दिन भर आकाश में बहुत ऊपर झुंड के साथ उड़ती रहती है। यह पृथ्वी के सब देशों में होती है। इनके घोसले पुरानी दीवारों पर मिलते हैं। पर्याय–कृष्णा। कन्हैया। देव दिलाई, सयानी, सियाली, पित्त देवरी–हिं०। कृष्ण अबाबील, खुत्ताफ़ (खुतातीफ़–बहु०), अ.स्फ़., रुजनह, ज़नीब–अ०। परस्तक, फरूंमह; बाबुवानह–फा०। शालीतून, ख़ालीदूस–यु०। फ़रला नक़ूप्र तु०। स्वजला–देहलो०।

प्रकृति—इसका मांस तीसरी कक्षा के अव्वल मर्तबा में उष्ण व रूक्ष है। भस्म शीतल व रूक्ष होती है। विट् अत्यन्त उष्ण व रूक्ष होता है। **रंग**—स्वयं श्यामाभायुक्त धूसर और इसका मांस श्यामाभायुक्त होता है। **स्वाद**—अन्य पक्षियों के मांस के समान किंतु कुछ नमकीन। **हानिकर्त्ता**—गर्भवती तथा उष्ण अर्थात् पित्त प्रकृति को। **दर्पघ्न**—घृत व दुग्ध एवं सर्दतर वस्तुएँ। **प्रतिनिधि**—ग्रन्थों में इसकी प्रतिनिधि का वर्णन नहीं। किंतु चक्षु रोगोंमें जतुका का मांस। **मुख्य कार्य**—चक्षु रोगों के लिए अत्यन्त लाभदायक है और रक्ताल्पतानाशक है।

गुण, धर्म, प्रयोग—इसके मांस का कबाब अवरोधोद्घाटक और रक्ताल्पता एवं प्लीहा संबन्धी रोगों और वस्त्यश्मरी के लिए लाभदायक है। एक मिसक़ाल (४॥ मा०) की मात्रा में इसके शुष्क पिसे हुए चूर्ण को दंश दृष्टिशक्तिवर्द्धक है। और दो दिरम ... खुनाक़ के लिए लाभदायक है। इसकी ... का गंडूष या शहद के साथ प्रलेप करना ... जिह्वा (कौवा) और कंठगत सम्पूर्ण व्याधि को नष्ट करता है। इसके बच्चे की भस्म ... रुधिर में मिलाकर अथवा इसका मस्तिष्क मधु में मिलाकर नेत्रमें लगाना चक्षुष्य है और मोतियाबिन्दु की आरम्भिक अवस्था में लाभप्रद है। नाख़ूना, फूली और सबल के लिए लाभदायक है। इसका ताज़ा रक्त अत्यन्त कांतिदायक ... है। ... त्वचागत चिह्नोंका नाश करने वाला है। ... के साथ बालों को सफ़ेद करता है। इसके ... को जलाकर उसमें से एक मिसक़ाल (४॥ मा०) की मात्रा में पिलाने से वन्ध्यत्व का नाश ... है और इसके पित्त का नस्य बालों को ... बनाता है; परंतु मुँह में दुग्ध रक्खें जिससे ... दाँत काले न हों। इसके नेत्र को चमेली के ... में रगड़ कर पेड़ू पर लगाना वन्ध्यत्व के लिए परीक्षित है। म० अ०।

इसके शिर को जलाकर भस्म प्रस्तुत कर ... में डाल दें। इससे नशा न होगी। इसकी ... को श्वेत बालों पर लगाने से बाल काले हो ... हैं। यदि किसी के बाल असमय श्वेत हो गए ... तो इसके पित्त का नस्य देने से वे काले हो ... हैं।

अबाबीलों में मिश्री अबाबील उत्तम होती है। इनके अंडे, बल्य तथा कामोद्दीपक होते हैं। ... घोंसलों से कड़े अबाबील प्राप्त होता है। ... ख़ानहे अबाबील और अबाबील मिश्री, मुर्ग ... बील और अबाबील की मस्ती कहते हैं। ... प्रकृति उष्ण व रूक्ष है। यह अत्यंत कामोत्तेजक, शुक्रमेहघ्न, हृद्य और नाड़ियों को बल प्रदान करने वाला है। यह मुर्गे के भुने हुए अंडे के समान होता है। कोई सफ़ेद रंग का और ...

...āabīsạh अ० सत् या क़त् शुष्क।
...र्द् abu-āamárah-अ० एक शिकारी ...है जो बाज से छोटा होता है, (चर्ग)।
...abu-araka
...abu-aráka } -यु० पीलू। Salvad- ...oleoides, *Dcne.*-ले०। फा० इं० ...।
...स abu-āalasa-रू० गुलेखैरी, गुले ..., गुलेखित्मी। एक पुष्प है जो रात्रि में ...त होता है। (Althœa officinalis, ...*n.*)
...रस abu-āavárasa-अ० जंगली ...र, वन्यगज्जर। (wild carrot).
...अ abu-ashjaā
...न abu-harún
...र abu-safar
...व abu-kaāb } -अ० ऊँट उष्ट्र। केमल (Camel) -इं०।
...र abu-āumara-अ० पलंग-फ़ा०। ..., तेंदुआ। (Tiger.)
...रा abu-āumará-अ० चर्ग पक्षी। (A ...d).
...रान abu-āumarána-अ० दर्शन (एक ...ी है)। (A bird.)
...रान मूसा बिन मैमून abu-āumará-...a-músá-bin-maimún-अ० (Abu ...mran Musa Ben Maimun or ...aimunedes Rabbi Moses Bin ...aimun) सन् पैदाइश ११३५ ई० और ...न् मृत्यु १२०४ ई०। इन्होंने कई पुस्तकें, जैसे ...कताबुस्सम्मियात व तिर्याक़ात (अगदतन्त्र) आदि ...खी थीं जिनके अनुवाद हैब्रिन तथा अंग्रेजी में ...ए गए हैं।
...मारह् abu-āumárah-अ० एक शिकारी ...क्षी है।
...अ.ब abu-kaāb-अ०ऊँट। (A camel)
...हमून abu-qalmún-अ० गिर्गिट। (A chameleon.)।

अबुक़स.ीर abu-kasíra-अ० एक पक्षी है। (A bird.)

अबुक.ह्ला abu-kahlá-अ० रतनजोत। (Alkanet.)

अबुक़ानस abu-qánasa-यु० एक बूटी की जड़ हैं जिससे वस्त्र प्रक्षालन किया जाता है।

अबुक़ुस्तुस abu-qustus-यु० एक वनस्पति है, जो मिश्र तथा शाम में क़ाफ़ूलरूमी के नाम से प्रसिद्ध है। यह अर्तनीस्.की जड़ के समान होता है। इससे वस्त्र धोते हैं।

अबुख़तार abu-khatára-अ० तीतर। A partridge (Perdix Francolinus).

अबुख़लस abu-khalasa
अबुख़लसा abu-khalasá } -अ० रतन, जोत (Alkanet.)।

अबुज़न्दीक़ abu-zandíqa-अ० गिर्गिट, गिरगिट। (A chameleon.)।

अबुज़्याद abu-zabáda-अ० गर्दभ, गदहा -हिं०। ख़र-फ़ा०। (An ass.)

अबुजरादह abu-jarádah-अ० एक पक्षी है जो इराक़ और शाम में होता है।

अबुजसान abu-jasán-अ० अज़्दहा, अजगर। (The boa constrictor.)

अबुजहल abu-jahla-अ० चीता। (Tiger.)

अबुत्तिब abuttib-अ० प्रसिद्ध युनानी हकीम बुकरात का उपनाम है। फ़ादर ऑफ़ मेडिसन (Father of medicine.)-इं०।

नोट—बुक़रात शब्द वस्तुतः हिप्पुक़्रात (Hipperate.) था; किन्तु "ह" के गिर जाने से बुक़रात रह गया, पर आंग्ल भाषा में अभी तक यही नाम है। देखो – बुक़रात।

अबुदायत abu-dáyat
अबुदाल abu-dál } -अ० गीदड़, शृगाल। A jackal (Canis aureus)

अबुनमामह abu-namámah-अ० हुद्हुद (कठफोड़ा)। (A bird.)

अबुन.स्रुल् फ़ारावी abu-nasrul-fárábí-अ० अबुनस्र् कर्नीत मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन उदर-

अबिद्ध abiddha-हिं० वि० [सं० अविद्ध] अनबेधा। बिना छिदा हुआ। देखो—अविद्ध।

अबिद्धकर्णी abiddhakarní-हिं० संज्ञा स्त्री० देखो—अविद्धकर्णी।

अबिरल abirala-हिं० वि० देखो—अविरल।

अबीकूमा abiqúmá } -अ० कनीनिका के
.सूफ़ी ṣúfí }
बाह्य पटल का व्रण जो ऐसा प्रतीत होता है कि नेत्र के ऊपर एक छोटा सा सफ़ेद ऊन (पश्मे स.फ़) का टुकड़ा रक्खा है। इसी कारण इसको .सूफ़ी भी कहते हैं। अल्सर ऑफ कॉर्निया (Ulcer of cornea)-इं०।

अबीज़ एक्सेल्सा abies excelsa-ले० लालमिरम हिन्द्री, लाहुली, लाली (मारदारी) -हिं०। मेमो०। इसका गोंद औषध तुल्य काम में आता है।

अबीज़ केनाडेन्सिस abies cannadensis -ले० शूकरान। हेमलॉक (Hemlock), स्प्रूस (Spruce)-इं०। See- Shúkrána.

अबीज़डुमोसा abies dumosa, London. -ले० चड़ थासी धूप-नेपा०। तंगसिंग-भूटा०। सेमडंग-लेप०। प्रयोगांश—राल और गोंद। मेमो०।

अबीज़ खद्रो abies khatro-ले० रानियामअ राल, धूप। (Resin.).

अबीज द्राक्षा abíja-drákshá-सं० स्त्री० किशमिश। (Raisin).

अबीज़बालसेमी abies balsame-ले० बालसम।

अबीज़ वेब्बिआना abies webbiana, *Lindl.* -ले० तालीसपत्र-हिं०। (Himalayan Silver Fir) फा० इं० ३ भा०, मेमो०; इं० मे० मे०।

अबीज़ स्मिथिआना abies smithiana, *Forbes.*-ले० राग, सिरस-हिं०। रेवड़ी, बलूदर -पं०, हिं०। See- shirísha

अबीत् ãabit-अ० (१) शुद्ध ताजा रक्त। (Pure fresh blood)। पारद (Hydrargyrum.)

अबीर ãabíra-अ०, हिं० (१) अभ्रक (Talc) (२) यौगिक सुगंधित चूर्ण (Aromatic compound powder) भ्रमवश केशर को कहते हैं। स० फॉ० इ०

अबीर abíra-हिं०संज्ञा पुं० [अ०]।
(१) रंगीन बुकनी जिसे लोग होली में अपने इष्ट मित्रों पर डालते हैं। यह लाल रंगकी होती है और सिंघाड़े के आटे में और चूना मिलाकर बनती है। अब अरारोट और विलायती बुकनियों से तैयार की जाती है। गुलाल।
(२) कहीं कहीं अभ्रक के चूर्ण को भी होली में लोग अपने इष्ट मित्रों के मुख पर मलते हैं अबीर कहते हैं। बुका।
(३) श्वेत रंग की सुगंध मिली बुकनी जो वल्लभ कुल के मंदिरों में होली में उड़ाई जाती है।

अबीरी abírí-हिं० वि० [अ०] अबीर के रंग का। कुछ कुछ स्याही लिए लाल रंग का। संज्ञा पुं० अबीरी रंग।

अबीरमायह् ãabíra-máyah-अ० एक सुगंधित यौगिक औषध है जो चन्दन, गुलाब और कस्तूरी से बनाई जाती है।

अबीरी abírí-अ० हब्बुल् आस, विलायती मेंहदी, बर्ग मोरद। (Myrtus Communis) मेमो०।

अबीलस abilasa } -अ० उदरच्छद
स.र्ब sarb }
कला। ओमेण्टम (Omentum), एपिप्लून (Epiploon)-इं०।

अबीलीमिया abilimiyá-अ० एक प्रकार की मृगी जिसमें आरम्भ ही से सम्पूर्ण शरीर में तनाव उपस्थित होता है। विपरीत इसके अन्य प्रकार की मृगी रोग में तनाव मृगी के पश्चात् होता है। स्टेटस एपिलेप्टिकस (Status epilepticus)-इं०।

äabiṣah अ० मल या कल शुष्क।
रद् abu-äamárah-अ० एक शिकारी है जो चाव से पैदा होता है, (चर्ग)।
क abu-araka
क abu-aráka } -यू० पीलू। Salvad.
. oleoides, *Dene.*-लें०। फा० इं०
भा०।
स abu-äalasa-रू० गुलेखैरू, गुले, गुलेखिज़मी। एक पुष्प है जो राधि में न होता है। (Althaea officinalis, nn.)
रस abu-äavárasa-अ० जंगली र, वन्यगाजर। (wild carrot).
अम् abu-aṣhjaä
न abu-ḥarún
र abu-safar
अ़ब abu-kaäb } -अ० ऊंट उष्ट्र। केमल (Camel) -इं०।
र abu-äumara-अ० पलंग-फ़ा०। , तेंदुवा। (Tiger.)
रा abu-äumará-अ० चर्ख पक्षी। (A bird).
रान abu-äumarána-अ० दर्शन (एक पक्षी है)। (A bird.)
रान मूसा बिन मैमून abu-äumará-n-músá-bin-maimún-अ० (Abu Imran Musa Ben Maimun or Maimunedes Rabbi Moses Bin Maimun) सन् पैदाइश ११३५ ई० और मृत्यु १२०४ ई०। इन्होंने कई पुस्तकें, जैसे फ़ुसूलातुस्सम्मियात व तिर्याक़ात (अगदतन्त्र) आदि लिखी थीं जिनके अनुवाद लैटिन तथा अंग्रेज़ी में हुए गए हैं।
मारह् abu-äumárah-अ० एक शिकारी पक्षी है।
अ़ब abu-kaäb-अ० ऊँट। (A camel)
लमून abu-qalmún-अ० गिर्गिट। (A chameleon.)।

अबुकसीर abu-kasira-अ० एक पक्षी है। (A bird.)
अबुकहला abu-kahlá-अ० रतनजोत। (Alkanet.)
अबुक़ानस abu-qánasa-यू० एक बूटी की जड़ है जिससे वस्त्र रंगा किया जाता है।
अबुक़ुस्तुस abu-qustus-यू० एक वनस्पति है, जो मिश्र तथा शाम में क़ामूलस्सी के नाम से प्रसिद्ध है। यह रतनजोत की जड़ के समान होता है। इससे वस्त्र रंगे जाते हैं।
अबुख़तार abu-khatára-अ० तीतर। A partridge (Perdix Francolinus).
अबुख़लस abu-khalasa
अबुख़लसा abu-khalasá } -अ० रतन, जोत (Alkanet.)।
अबुज़न्दीक़ abu-zandiqa-अ० गिर्गिट, गिरगिट। (A chameleon.)।
अबुज़बाद abu-zabáda-अ० गर्दभ, गदहा -हिं०। ख़र-फ़ा०। (An ass.)
अबुजरादह abu-jarádah-अ० एक पक्षी है जो इराक़ और शाम में होता है।
अबुजसान abu-jasán-अ० अज़्दहा, अजगर। (The boa constrictor.)
अबुजहल abu-jahla-अ० चीता। (Tiger.)
अबुत्तिब abuttib-अ० प्रसिद्ध यूनानी हकीम बुक़रात का उपनाम है। फ़ादर ऑफ़ मेडिसिन (Father of medicine.)-इं०।
नोट—बुक़रात शब्द वस्तुतः हिप्पुक़रात (Hippocrate.) था, किन्तु "ह" के गिर जाने से बुक़रात रह गया, पर आंग्ल भाषा में अभी तक यही नाम है। देखो – बुक़रात।
अबुदायत abu-dáyat
अबुदाल abu-dál } -अ० गीदड़, शृगाल। A jackal (Canis aureus)
अबुनमामह abu-namámah-अ० दुद्दुद (कठबढ़ई)। (A bird.)
अबुन.स्रुल्.फ़ाराबी abu-naṣrul-fárábi-अ० अबुनस्र कबीर मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन उद्र-

निश्र, बिन तुर्ख़ान नाम था। यह खुरासान के फ़ाराब प्रदेश के रहने वाले थे। प्रारम्भ में यह दमिश्क के एक बगीचे में माली का काम करते थे। पर स्वभावतः इनके हृदय में विद्या से प्रेम था। अतएव रात्रि में चौकीदारों के लालटेन की प्रकाश में ये पुस्तकों का अध्ययन किया करते थे। ये अपने समय के अखंड दार्शनिक और संगीत के प्रमुख विद्वान थे। आपने १३ पुस्तकें लिखी हैं।

अबुनामून abu-námún–यू० क़फ़्रुलयहूद (A kind of stone.)। See–qa-frul yahúda.

अबुनास abu-nás–अ० पोस्ता। (Papaver Somniferum, *Roxb.*)

अबुबकर इब्नबाजह abu-bakar-ibna-bájah –अ० इब्नबाजह्। See–Ibna–bájah.

अबुबकर ज़करिया राज़ी abu-bakar-zak-riyá-rázi–अ० ज़क्रिया राज़ी। See–Zakriyá rázi.

अबुबरा abu-bará–अ० समूल (–र)। एक पक्षी है। (A bird called samúla.)

अबुबल्क़िया abu-balqiyá–यु० सार्वांगिक या व्यापक पक्षाघात। वह पक्षाघात जो मुखमंडल के सिवाय सम्पूर्ण शरीर में हो। पक्षाघात, वातप्रस्तता। जेनरल पैरेलिसिस (General Paralysis.)–इं०।

अबुमन्सूर abu-mansúr अ० अबुमन्सूर मुवफ़्फ़िक़ बिन अली हरवी (abu mansúr muwaffik bin Haravi.)। इनकी पुस्तक इब्नुल् अदवियह् अपने समय की अत्यंत विश्वसनीय एवं प्रामाणिक कृति है जिसमें बहुत सी भारतीय औषधों का भी वर्णन मौजूद है। इसमें लगभग ६०० औषधों का वर्णन विद्यमान है।

अबुमर्दान abu-mardán–अ० इब्न ज़ुहर। See–Ibn zuhr.

अबुमल्यून abumalyún–अ० सफ़ेदा, मुर्दासंग। White Lead (Plumbi carbonas)

अबुमालिक abu-málik–अ० ग्

(Eagle, a vulture.)

अबुमिस्तार abu-mistár–अ० म

(Wine).

अबुमुक़ाबिल abu-muqábil–अ०

(A carrot.)

अबुयुहा abu-yuhá–अ० (१) गि

vulture.)। (२) अ.गु.स.

(Boa Constrictor.)

अबूरस्मा abúrasmá–अ० एन्युरि

risma–इं०। इनोरस्मा, इनोरिम,

शाब्दिक अर्थ रक्तस्रुति अर्थात् रक्त का

परन्तु; प्राचीन तिब्बी परिभाषा के

प्रकार का रोग जिसमें आघात या

कारण त्वचा के नीचे किसी स्थल की

जाती है जिससे धमनीसे रक्त एवं वायु

त्वचा के नीचे एकत्रित हो जाते हैं और

उभार बन जाता है।

उक्त उभार का यह विशेष गुण है

दबाने से दबा रहता है अर्थात् जब तक

जाता है तब त्वगधरीय एकत्रित व

पुनः धमनियों में लौट जाते हैं। तब

से वे पुनः उक्त स्थान में एकत्रित हो

अन्ताकी के वचनानुसार उक्त

प्रादुर्भाव कभी तो शिरा के फटने से

धमनीके फटनेसे होता है। अतः शिरा

में उसका रंग श्यामाभायुक्त (स्याही

धामनिक में रक्ताभायुक्त होता है।

साथ ही उक्त स्थल पर शिराविधान

होता है। अस्तु, शिरा प्रसार

बढ़ जाता है और शिरा संकोच

जाता है।

डॉक्टरी नोट—एन्युरिज्म

रामा भी कहते हैं, वस्तुतः

शब्द है जिसका अर्थ धामनिक

है। जिन लोगों ने इसको

वास्तव में उनको यह

हुआ है। आधुनिक चिकित्सक (

रनीयार्बुद मानते हैं जो धमनी की दीवाल र के कारण उत्पन्न होता है। इस रोग में धमनीयार्बुद का उभार होता है वहाँ गाने से धामनिक स्पन्दन का बोध होता उरोवीक्षणयन्त्र (Stethoscope) कान लगाने से वहाँ एक प्रकार का शब्द दिया करता है।

—यूनानी के प्राचीन चिकित्सकों द्वारा अर्थ अर्थात् त्वगधः रक्तस्रुति का समा- अंगरेज़ी शब्द एक्स्ट्रावेज़ेशन ऑफ ब्लड xtravasation of Blood.) है।

abu-rumáj--अ० बाक़ला। Gar- bean (Vicia Faba.)

abu-rabiá--अ० हुदहुद (कठ्बढ़ई)। ird.)

abulaába-अ० } गीदड़, शृगाल।
abulisa-अ० } (A jackal)

अख़ज़ abul-akhz--अ० याशह्

अख़ज़र abul-akhzar--अ० दर्शान पक्षी है)। (A bird.)

अख़बार abul-akhbár--अ० हुदहुद ढ़ई)। (A bird.)

अज्साद abul-ajsád--अ० (रसा०) गन्धक। (Sulphur.)

अम्र abul-amra--अ० पलंग--फ़ा०। , तेंदुआ। (A Tiger).

अर्वाह् abul-arváh--अ० (रसा०) । (Hydrargyrum.)

अस्फ़र abul-asfar--अ० जायफल। फल (Nutmeg.)

अस्वद abul-asvad--अ० नबीज़, एक र का हलका मद्य।

क़ादिम abul-qádim--अ० गिर्गिट, । chameleon.)

क़ासिम ज़हरावी abul-qásim-zah-ví--अ० ज़हरावी। See--Zahrávi.

अबुल् क़त्ताफ़ abul-quttáf--अ० चील (प्रसिद्ध पक्षी)। (A kite.)

अबुल् ख़ज़ीब abul-khazíb-अ० मांस, गोश्त। (Flesh, meat.)

अबुल् ग़ज़ब abul-ghazab--अ० चीता, तेंदुआ। (A tiger.)

अबुल् जहीम abul-jahím--अ० रीछ, भालू भल्लूक। (A bear.)

अबुल् जेब abul-jeb--अ० नमक या नमकीन मछली।

अबुलन् नज़्ज़ारह abul-nazzárah-अ० ऐनक लगाने वाला।

अबुल फ़ज़ील abul-fazíla -अ० ममोलह (एक पक्षी है)। (A bird.)

अबुलफ़र्ज बिनुत्तैय्यब abul-farja-binutt-aiyyaba-अ० इमाम ज़मानहे फ़ैलसूफ़ अल्, अल्लामहे अह्द, अबुलफ़र्ज अब्दुल्लाह बिनुत्तैयब। ये इनके नाम थे। यह धार्मिक दृष्टि से ईसाई, और अपने काल के प्रसिद्ध एवं कुशल चिकित्सक थे। यह शेख़ुर्रईस बू अली सीना के समकालीन थे। शेख़ स्वयं भी इनके वैद्यक सम्बन्धी लेखों की प्रशंसा एवं प्रतिष्ठा करते थे। विभिन्न विषयों पर इन्होंने लगभग ५० ग्रंथ लिखे हैं।

अबुलफ़ाख़्त abul-favákhta--अ० दर्शान (एक पक्षी है)। (A bird.)

अबुल्बहर abul-bahra--अ० कर्कट, केकड़ा-हिं०। सर्तान--अ०। (Crab)

अबुलमलीह abul-malíh-अ० चिड़ियां (गौरैयां) में से एकपक्षी है। परन्तु यह उनसे बड़ा और सुन्दर एवं ताजदार होता है। ममोलह, पातर खञ्जन।

अबुलमसीह abul-masíh-अ० ताज़ी मछली। (Fresh fish)

अबुलमुसाफ़िर abul-musáfira-अ० पनीर, चीज़। (Cheese)-इं०।

अबुलवसास abul-vasása-अ० } नेवला। Mong-
अबुल हुकम abul-hukma-अ० } oose (Vivera mungo)

अबुव्वा abuvvá-अ० अज्ञात।

अबुशफ़ीक abu-shafíqa-अ० गिर्गिट। (A chameleon.).

अबुश्शिफ़ा abu-ṣhṣhifá-अ० शकर, शर्करा। Sugar (saccharum).

अबुसबअ abusabaā-अ० मकड़ी जैसा एक जानवर है, जिसके अधिक पैर होते हैं। जंगली तथा दरियाई भेद से यह दो प्रकार का होता है। सक़्लोकन्दरियस।

अबुस्समरून abu-samarúna-रू० नाज़ नाम का एक पक्षी है। देखो—नग़्ज़।

अबुसहल मसीही abu-sahla-masíhi-अ० अबुसहल ईसा बिन युहा मसीही। यह जर्जान (गोरगान) के निवासी तथा चिकित्सा कला में प्रवीण थे। आपके ग्रन्थ उच्चकोटि के हैं। कहते हैं कि मसीही चिकित्सा कला में शेखुर्रईस बूअली बिन सीना के गुरु थे और ख़ुरासान में वहाँ के राजा के मुख्य चिकित्सक रहे हैं। चालीस वर्ष की अवस्था में इनकी मृत्यु हुई। आपकी रचनाओं में "किताबुल् माइ्यह" श्रेष्ठतर रचना है।

अबुस्सिलत abu-ṣṣilata-अ० चील-हिं०। काइट (Kite)-इं०।

अबुहजाज़ब abuhajázaba-अ० गिर्गिट। (A chameleon.)।

अबुहरून abu-harúna-अ० ऊँट। केमल (Camel.)-इं०।

अबुहुमरा abu-humará-अ० रतनजोत। (Alkanet.)।

अबूक abúka-अ० पारद-सं०, हिं०। (Hydrargyrum) इं० मे० मे०।

अबूतमरून abú-ṭamarúna-रू० नग़्ज़ पक्षी (A bird.)

अबूती abúti-सं० स्त्री० भैंस के गोबर की राख।

अबूतीलून abútilúna-अ० कद्दू के समान एक फली है।

अबूनस abúnasa-अ० एक रत्ती)।

अबूस abúsa-अ० नीलाथोथा, तूतिया vitriol.).

अबूस äabúsa-अ० शेर, सिंह। (L

अबेद्यः abedyah-सं० पुं० मत्स्य, Fish (pisces.)

अबेध abedha-हिं० वि० [सं० जो छिदा न हो। बिना बेधा। अनविद्ध।

अबेर मुरदेय abermuradeya-फ़ा० मुर्दह (फ़ा०) का अपभ्रंश है। अस्फ़ञ्ज, अस्रञ्ज। Spongia off -ले०। दी स्पाञ्ज (The spong.

अबेलिआ ट्रिफ्लोरा abelia tr *Wall.* ले० कमकी। (Abelia flowered)

अबेलिया थ्रीफ्लावर्ड abelia, three ered-इं० कमकी (Abelia tri Dr. *Wall.*)

अबैज़ abaiza-अ० श्वेत, सफ़ेद, इसके २ भेद हैं, (१) अबैज़ हक़ीक़ी (२) अबैज़ मुशफ़्फ़ फ़। ह्वाइट -इं०।

अबैज़ मुशफ़्फ़फ़ abaiza-mushaffa

अबैज़ मजाज़ी abaiza-majázi --अ० स्वच्छ श्वेत, जिसमें आरपार दि जैसे जल या शीशा। ट्रैन्सपेरेन्ट (Transparent)-इं०।

अबैज़ हक़ीक़ी abaiza-haqiqi-अ० अर्ध शुद्ध श्वेत, अस्वच्छ श्वेत, दुग्ध श्वेत है। पर तिब की परिभाषा में दुग्ध श्वेत वर्ण के क़ारोरह (मूत्र) को देखो—यौल लब्नी। (१) ओपेक (२) काइलस युरिन (Chylous ur -इं०।

अबैदी abaidi-रू० नासपाती। A pear rus communis)

र abaiṣhúra--यु० रातीनज, राल, धूप। Resin.)

ी abolí--म० भिरटी, कोरण्टा, पियावाँसा। Barlaria prionitis.)

ो aboulo-अ० एक माप विशेष (=६ जौ २ रत्ती)।

ab-बालछड़ (सुम्बुलुत्तीब)। (Nardo stachys jatamansi, D. C.)

ब् äabäab-अ० नर हिरन (हरिण)।

बह् äabäabah-अ० रक्त ऊर्ण। लाल न। (Red wool.)

ादे स.लास.ह् abáde-salásah }
ारे स.लास.ह् aqtáre-salásah }
-अ० परिमाण त्रय अर्थात् लम्बाई, चौड़ाई हराई, (ऊँचाई)। डाइमेन्शन्स् (Dimentions,-sions)-इं०।

क abqa-अ० गुले निलोफ़र या भंग।

कम abkam } —अ० गुङ्गा, गूँग।
रस akhrhsa } उन्म (Dumb)-इं०।

क़र äabqara-अ० (१) सौसन श्वेत। (२) मज़ंजोश।

क़स äabqasa } -यु० एक छोटा जानवर
क़स् äabqasa } है। (A small animal).

कह् äabkah-अ० इज़ख़िर भेद। See-Izkhir

क़ार äabqára-अ० लम्बा उभाव।

क़ूस äabqúsa-यु० एक छोटा जानवर है। (A little animal.)

ख़र abkhara-अ० मुख दुर्गन्धि। मुखदौर्गन्ध्य रोगी।

ख़रह् abkharah-अ० (ए० व०), बुख़ार (ब० व०)। वाष्प। भाफ। वेपर (Vapour)-इं०।

ख़रह् फ़ासिदह् abkharah-fásidah -अ० दुर्गन्ध वाष्प। मिआस्म (Miasm) -इं०।

अब्ज abja-हिं० संज्ञा पुं०

अब्जः abjah-सं० पुं०
(१) (Barringtonia Acutangula Roxb.-लै०। इ० हिं० गा०। (निचुल वृक्ष हिज्जल वृक्ष, समुद्रफल, इज्जल, ईजड़। (२) शङ्ख। Conch-इं०। (३) धन्वन्तरि (The physicians of the gods.) सर्वत्र मे० जद्विक। (४) चन्द्रमा। सू (The moon)-इं०। (५) कपूर (Camphor)। (६) एक संख्या। सौ करोड़। अरब। (७) अरब के स्थान पर आने वाली संख्या।

अब्जम् abjam-सं० क्ली०

अब्ज abja-हिं० संज्ञा पुं०
(१) जल से उत्पन्न वस्तु। (२) पद्म, कमल (The nymphæa or lotus) प० मु०। रा० नि० व० १०।

अब्जकर्णिका abja-karnıká-सं० स्त्री० कमल बीज कोश। कमल का छाता (Lotus capsule) वै० निघ०।

अब्जकेशरः abja-kesharah-सं० पुं० पद्म केशर। कमल की तुरी। च० द०।

अब्जबाँधव abja-bándhava-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य। (The sun)

अब्जभोगः abja-bhogah-सं० पुं० कमल कन्द। श० च०।

अब्जबीजभृत् abja-víja-bhrit-सं० पुं० श्वेत करवीर वृक्ष, सफ़ेद कनेर। वै० निघ०। Nerium odorum (The white var. of-)

अब्जहस्त abja-hasta-हिं० संज्ञा पुं० सूर्य्य। (The sun).

अब्ज़ार abzára-अ० यह "बज्र" का बहुवचन है और इसका बहुवचन अबाज़ीर है। (१) "बज्र" का अर्थ बीज है। (२) एक पौधा है और (३) मसाला को भी कहते हैं।

अब्ज़ारुल्फ़ितर abzárul-fitara-अ० (१) सदाबहार या (२) सदाबहार के बीज। या

(३) कोई स्याह, तर और बारीक रेशेदार बेल (लता) है।

अब्जाह्वम् abjáhvam–सं० क्लो० बालक, ह्रीवेर, सुगन्धबाला (Pavonia odorata) बाला–चं०, मे०। वै० निघ०।

अब्जिनी abjini–सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) पद्मिनी, नीलोफ़र–हिं०। पद्मेर भाड़ चं०। Nymphæa lotus। (२) पद्म-समूह। कमल-वन। (३) पद्मलता।

अब्टना abṭaná–हिं० स्त्री० (Artimisia Elegans, Roxb.)

अब्दः abdah–सं० पुं० } (१) मुस्तक,
अब्द adda–हिं० संज्ञा पुं० } मुस्ता, मोथा -हिं०। Cyperus rotundus–लै०। सि० यो० ज्वर० किराताादि। च० द० वात ज्व० चि०। (२) नागरमुस्ता (–स्तक), भद्रमुस्तक (–स्ता)–सं०। नागरमोथा–हिं०। Cyperus Pertenuis–लै०। मद० १ व०। (३) मेघ बादल। Cloud–इं०। मे०द्विकं। –क्ली० (४) अभ्रक-हिं०,सं०। Talc–इं०। र० मा०। (५) वर्ष, साल, सम्वत्सर (A year)। (६) कपूर (Camphor)। (७) आकाश।

अब्दअ abdaa–रू० दम्मुल्अख़्वैन। किसी किसी के मत से केशर।

अब्दनादः abda-nádah–सं० पुं० (१) मेघनाद क्षुप। काँटा नटे-बं०। (See-Meghanáda)।–स्त्री०(२) शङ्खिनी। (३) भेकी। तान्दुजल–मह०। See–shankhini। वै० निघ०।

अब्दसारः abda-sárah–सं० पुं० कर्पूर भेद। (A kind of Camphor). रा० नि०।

अब्दहुल्लु abdahullu–कना० मोथा, मुस्तक –हिं०। Cyperus Rotundus–इं० Fi.

अब्दान abdána–अ० (बहु० व०) बदन (ए० व०)। शरीर–हिं०, सं०। बॉडीज़ (Bodies)–इं०।

अब्दुल् जिन्न äabdul-jinna–अ०। कावूस, रोग। See–kábúsa.

अब्धिः abdhih–सं० पुं० } अब्धि, सागर
अब्धि abdhi–हिं० संज्ञा पुं० } सिन्धु, समुद्र अर्णव। दी ओशन (The Ocean)–इं० रत्ना०। (२) सरोवर। ताल।

अब्धि कफः abdhi-kaphah–सं० पुं० }
अब्धि कफ abdhi-kapha–हिं० संज्ञा पुं० } समुद्रफेन। कटल फ़िश बोन (Cuttle fish bone)–इं०। भा० पू० १ भा०। च० । (२) समुद्रशोष (Argyreia Speciosa, Sweet.)

अब्धिजः abdhijah–सं० पुं० }
अब्धिज abdhija–हिं० संज्ञा पुं० } (१) समुद्र से पैदा हुई वस्तु। (२) समुद्रफेन (Cuttle-fish bone)। रत्ना०। (३) (–जौ), अश्विनीकुमार (Ashvini-kumára)। (४) शंख। (५) चन्द्रमा।

अब्धिजा abdhijá–सं० स्त्री० सुरा। (Spirituous liquor.) हे० च०।

अब्धिडिण्डीरः abdhi-dindírah–सं० पुं० समुद्रफेन। (Cuttle-fish bone.) वै० निघ०।

अब्धिफलम् abdhi phalam–सं० क्ली० समुद्रफल, समुद्रजात फल। (Barringtonia acutangula).

अब्धिफेनः abdhi-phenah–सं० पुं० समुद्रफेन। (Cuttle-fish bone.) रा० नि०।

अब्धिमण्डुकी abdhi-Mandukí–सं० स्त्री० }
अब्धिमण्डूकी abdhi-mandúkí–हिं० संज्ञा स्त्री० } मोती की सीपी–हिं०। झिनुक–बं०। मुक्तास्फोट, शुक्तिका–सं०। मोती सीप–मह०। (Pearl oyster) हे० च० ४ का०।

अब्धिवृक्षः abdhi-vrikshah–सं० पुं० शाखिमूल वृक्ष। काका तोंदाली।

अब्धिसारः abdhi-sárah–सं० पुं० रत्न। (A jewel.) वै० निघ०।

अब्ब äabba–अ० जल पीना, घूँट घूँट जल पीना। चख चख में जल पीना, या एकदम से पानी

पीना, पशुओं के समान मुँह लगाकर जल पीना। सिपिंग (Sipping)-इं०।

अब्बल abbal -द० हाऊबेर, अबल। (Juniperus communis.) इं० मेटमे ०।

अब्बास abbása-हिं० संज्ञा पुं० [अ० अब्बास] [वि० अब्बासी] (Mirabilis jalapa.) एक पौधा जो तीन फुट तक ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ कुत्ते के कान के तरह लम्बी और नुकीली होती हैं। कुछ लोग भूल से इसकी मोटी जड़ को चोबचीनी कहते हैं। इसके फूल प्रायः लाल होते हैं पर पीले और सफ़ेद भी मिलते हैं। फूलों के झड़ जाने पर उनके स्थान पर काले काले मिर्च के ऐसे बीज पड़ते हैं। देखो—गुल अब्बास।

अब्बास āabbás-अ० शेर, सिंह। लायन (Lion)-इं०। (२) गुले अब्बास (Mirabilis jalapa, *Linn.*)

अब्बासी abbási-हिं० संज्ञा स्त्री० [अ० अब्बासी] (१) जाली, गुले-अब्बासी (Mirabilis jalapa, *Linn.*) (२) मिश्र देश की एक प्रकार की कपास।

अब्बे abbe-सिं० राई, राजसर्षप। (Sinapis juncea.) इं० मे० मे०।

अब्भक्ष abbhaksha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पानी का साँप। डेड़हा साँप।

अब्भ्रम् abbhram-सं० क्ली० (१) अभ्रधातु, अभ्रक। Talc (Mica.)। (२) मुस्ता (-स्तक), मोथा। (Cyperus rotundus.) रा० नि०।

अब्युटिलन अविसीनी abutilon avicennœ, *Gærtn.*-ले० अबूतीलून, कद्दू। फा० इं० १ भा०। इसके तन्तु काम में आते हैं।

अब्युटिलन इण्डिकम् abutilon Indicum, *G. Don.*-ले० कंघी, अतिबला। फा० इं० १ भा०। इ० मे० मे०।

अब्युटिलन एशियाटिकम् abutilon Asiaticum-ले० कंघी, अतिबला। इं० मे०मे०।

अब्युटिलन ग्रेविओलेन्स abutilon Graveolens, *W. & A.*-ले० बड़ी कंघी -हिं०, बं०।

अब्युटिलन पॉलिएण्ड्रम् abutilon polyandrum, *Schlect.*-ले० वेलाई थूथी -ता०। मेमो०।

अब्युटिलन म्युटिकम् abutilon muticum, *G. Don.*-ले० बला भेद। इसका रेशा काम आता है। फा० इं० १ भा०। मेमो०।

अब्यून abyún-यु० अफ़्यून, अफीम। (Opium.)

अब्र abra-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा० । सं० अभ्र] मेघ, बादल। (Cloud.)

अब्रक abrak-फ़ा०अभ्रक। Talc (Mica).

अब्रक़ abraq-अ० (१) अभ्रक (Mica) (२) शक़्नीन दरियाई (एक जानवर है)। (३) कोई फ़ारसी दवा है।

अब्रक़ल्या abra-qalyá-यु० पालक। (Spinacea oleracea.)

अब्रकाकिया abra-kákiyá-यु० मकड़ी का जाला। (A web, spider's web.)

अब्रकुहना abra-kuhna-फ़ा० अस्फ़ंज, मुआबादल। (sponge.)

अब्रगी abrugi } -सिरांविश्नन० कानअब्रोंङ्ग abrong } फ़ात-हिं०। Cardiospermum Halicacabum, *Linn.* -ले०। फा० इं० १ भा०।

अब्रद abrad-अ० अत्यन्त शीतल। (प० व०) अबारिद (ब० व०)।

अब्रनी abrani-द० (१) जोंक। (२) सुरतकन्द-हिं०। (एक वनस्पति है)।

अब्रब āabrab-अ० सुमाक़ (sumac.)।

अब्रबियह् āabra-biyah-अ० सुमाक़ियह्।

अब्रब्यून abrabyún-यु० फ़रयून-अ०। सेहुँड, थूहर। (Euphorbium.)

अब्रमुर्दह् abra-murdah-फ़ा० अस्फ़ञ्ज, मुआबादल। (sponge.)

अब्रश abrash-अ० वह मनुष्य जिसकी त्वचा पर श्वेत चित्तियाँ पड़ी हों। स्पॉटेड (Spotted.) -इं०।

अब्रस् abras-अ० श्वित्र रोगी, श्वेत कुष्ठ का रोगी, चितकबरा। ल्युकोडर्मिक (Leucodermic.)–इं०।

अब्रस abras-यु० गुले सौसन। See-sousan.

अ(ए)ब्रस प्रीकेटोरिअस abrus precatorius–ले० गुञ्जा–सं०। घुँघची, रत्ती, गुञ्जा -हिं०। Indian liquorice–इं०। इं० मे० मे०। फा० इं० १ भा०।

अब्रह्मचर्य्यकम् abrahma-charyyakam –सं० क्लो० मैथुन। क्वाइशन (Coition), कप्युलेशन (copulation)--इं०। त्रिक०।

अब्राज़ abráza-शामी० मुरिआन की घास। पश्चिमी भाषा में सदावहार को कहते हैं।

अब्रिक एसिड abric-acid--इं० गुञ्जाम्ल। डाक्टर वार्डेन (Dr. warden) महोदय ने गुञ्जावीज द्वारा इसे पृथक् किया था। उनके मतानुसार इस तेजाब का फ़ॉर्म्युला (रासायनिक सूत्र) इस प्रकार है, यथा—(क^{२१} उद^{२४}नत्र^{२} ऊ^{४})। इसमें कोई प्रभाव नहीं (inert) होता है। फॉ० इं० १ भा०।

अब्रिन abrin--इं० एक प्रोटीड अवयव जो गुञ्जा बीज में वर्तमान रहता है। और गुञ्जा के समस्त इन्द्रियव्यापारिक गुणधर्म रखता है। फॉ० इं० १ भा०। यह गुञ्जा का मुख्य प्रभावात्मक अंश है।

अब्रिय्यह् abriyyah–अ० हब्रिय्यह्, क़श्रुर्रास, हज़ाज़। सबूसहे सर–फ़ा०। सर की वफ़ाश्, सर की भूसी–उ०।

सीबोरिआ (Seborrhœa), स्कर्फ़ (Scarf), डैण्ड्रफ़ (Dandruff), फ़र्फ़र (Furfur)–इं०।

अब्री ãabri–अ० बेर का वृक्ष जो नहरों के किनारे उगता है।

अब्रीमून abrímúna-रू० इंरसा, पुष्करमूल। (Oris root.)

अब्रुज abrúja–अ० रंग।

अब्रुता abrútá–सिं० दमनह्, (बोईदी बा) शीह्, अफ़सन्तीनुल बह्र। (Artemisia maritima, *Linn.*)

अब्रुद abrúda–फ़ा० सुम्बुल। (Hyacinthus Orientalis.)

अब्रुन abrúa–यु० सदावहार (हयुर्

अब्रुनास ãabrúnása–यु० अबून, (An unimportant plant).

अब्रुनी ãabrúni–सुर्यू[?] (Asphodelus fistulosus, *Linn.*)

अब्रुयून abrúyúna–यु० छड़ीला (बालछड़) (Nardostachys jatamansi).

अब्रुस ãabrúsa–यु० बरघाज़ी। (An unimportant plant.)

अब्रे अम्बर abre-ambara–हिं० संज्ञा पुं० दे० अम्बर।

अब्रेज़ abreza–अ० शुद्ध स्वर्ण, ख़ालिस सोना (Pure gold.)

अब्रेशम abresham–फ़ा०, अ० दाहिल क़ज़्, अबरेसम। कोषकारजम्, कृमि (रेशम) कोषकार, कोशकृत (रेशमकीड़ा); कीड़े (रेशमी अर्थात् कोषोत्थवस्त्र)–सं०। रेशम–हिं०। पट–बं०। बॉम्बिस मोरी (Bombys Mori)–ले०। सिल्क पॉड (Silk-pod), रॉ सिल्क कोकून (Raw silk cocoon), सिल्क वर्म-मॉथ Silk-worm moth, सिल्क Silk–इं०। सेरिकोस-अर०। रेशम की कीड़ी इं०। रेशम ना-पोटन-बम्ब०, गु०। पट्टनूल-पुची–ता०, मह०। पुट्टुपुरुगु, नर-पुट्टिओ-ते०। रेशमी हुब कृमा रेशी-चि कीड-मह०, कॉ०।

अबरेशम वस्तुतः एक कीड़े का घर है, जिसे वह अपने मुख के तार द्वारा अपने ऊपर बनाता है। यह कीट शहतूत के वृक्षों पर उनके पत्ते खाकर अपना जीवन निर्वाह करता है। वह कीड़ा बदरी (बेर) वृक्ष पर लगाया जाता है उसको हिंदी में बॉम्बिस माईलेटा (Bombys mylitta) कहते हैं। रेशम का कोषा (रेशम

गृह) वा अण्डाकार कोष एक प्रकार का रण है जिसका निर्माण कीट आकार परिव- काल में करते हैं।

द्रण—यह कोश की शकल में एवं श्वेता- पीतवर्ण का और स्वाद रहित होता है। भीतर रेशम का मृत कीट होता है। इस- इसको क़ैंची (कर्तरी) से काट कर और भीतर से मरे हुए कीड़े को निकाल कर ध कार्य में वर्तते हैं।

कृति-- प्रथम कक्षा में उष्ण एवं रूक्ष होता किसी किसी ने इसको शीतोष्ण (सम ति) लिखा है। हानिकर्त्ता–इसके बने वस्त्र प्रयोग करने में त्वचा पतली हो जाती है। प्र-इसके वस्त्र में रुई के सूत का मिश्रण। निधि-जला कर धोई हुई मुक्तिका (मोती)। ।-३॥ मा० से १०॥ मा० तक। क्वाथ एव कषाय साधारणतः ७ मा० व्यवहार किया है।

गुण, कर्म,प्रयोग—अपनी खासियत (सह- णी शक्ति) से यह आह्लादजनक है। इसकी दयकारिता अपनी उष्मा के द्वारा प्रसन्नता न्न करने में खासियत की सहायता करती है। तः रूह में प्रसार का उदय होता है। और अपनी उष्णता एवं रूक्षता के कारण उसकी त (संक्लेद)को अभिशोषित कर लेता है जिससे में कठोरता एवं शक्ति आ जाती है। इससे रूह स्वच्छता एवं प्रकाश का उदय होना आवश्यक यह बात विशेषकर अब्रेशम खाम (कच्चे म) में होती है; क्योंकि पकाते समय इसकी ल्लासकारिणी शक्ति बहुधा जल में स्थानां- त हो जाती है। इसलिये खरल की हुई सी किसी औषध को उक्त जल में भिगोकर दय धूप में रक्खा जाता है जिससे उक्त औषध पूर्ण जल को अभिशोषित करके उससे मनोल्ला- कारिणी शक्ति ग्रहण कर लेती है। तदनंतर क कर प्रयोग में लाई जाती है।

इसका वस्त्र धारण करने से परंपरागत जूओं उत्पत्ति रुक जाती है । क्योंकि अब्रेशम अंडों को खराब कर देता है जिससे जूएँ नहीं पैदा होने पातीं। चूँकि यह सरदी तथा गरमी में मुअ्तदिल (समप्रकृति) है इसलिए इसको धारण करने से शरीर उष्ण नहीं होता और इसी कारण अंडे सेए नहीं जा सकते। इसके विपरीत रूई के वस्त्र से शरीर गरम हो जाता है (और अंडे उस गरमी में भली प्रकार सेए जाते हैं)। (न० नफ़ा)

जलाया हुआ अब्रेशम प्रायः चक्षु रोगों यथा अश्रुस्राव एवं नेत्रकंडू में उपयोगी है। अब्रेशम मानस, प्राकृतिक एवं प्राणात्मा (रूह नफ़्सानी, तबीई़ व हैवानी)को प्रसन्नकर्त्ता, स्मरणशक्ति तथा मेधा को बलवानकर्त्ता है। चक्षु रोगों, मूर्च्छा, काठिन्य अर्थात् मेदा की सख्ती और फुफ्फुस को बल प्रदान करता है, चेहरे के वर्ण को निखारता और रोधों का उद्घाटन करता है। प्रकृति को मृदु करना, रतूबतों अर्थात् द्रव को अभिशोषण करता तथा (क्लेदाभिशोषक) उत्तमांगों को बलप्रदान करता है । यह तारल्यताजनक वा द्रावक (मुलत्तिफ़) एवं अभिशोषणकर्त्ता (मुनश्शिफ़) है । इसका वस्त्र धारण करने से शरीर स्थूल होता और जूएँ नहीं पड़ती। किन्तु, यह त्वचा को कोमल करता है। म० अ०। यह हृदय को बल प्रदान करताएवं भ्रम तथा मूर्च्छा रोग में विशेषकर लाभप्रद है।

अब्रेशम जलाने की विधि—रेशम को बा- रीक कतर कर मिट्टी के बरतन में आग पर रक्खें और हिलाते रहें। जब भुनकर पिसने योग्य हो जाए तब उतार लें। देखो-अह्रमीस् अब्रेशम।

यह शोणितस्थापक, बल्य तथा संकोचक रूप से अतिरज (रक्तप्रदर), श्वेत प्रदर एवं पुरातन अतिसार में स्राव को रोकने के लिए व्यवहार किया जाता है। इं० मे० मे०। इं० ड्र० इं०। यह अन्य संकोचक औषधों के साथ सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। और साधारणतः सरदी एवं चक्षु रोग में प्रयुक्त होने वाले मोदकों में पड़ता है। इं० मे० मे०।

नोट—एलोपैथिक चिकित्सा में इसका औषधीय उपयोग नहीं होता है।

औषध-निर्माण—ख़मीरा, चूर्ण, शर्बत, मद्य तथा हृद्य (मुफ़र्रिहात) अर्थात् मनोल्लासकारी औषध प्रभृति। परन्तु अधिकतर निम्नलिखित ख़मीरे और शर्बत आदि में प्रयुक्त होता है।

(१) ख़मीरा अब्रेशम सादा—योग एवं निर्माण-विधि—कतरा हुआ अबरेशम २ तो०, ऊद ग़र्की ४ मा०, बालछड़, पोस्त तुरंज, मस्तगी लौंग, एला, तेजपत्र प्रत्येक ५ मा०, श्वेतचन्दन ६ मा०, अबरेशम सहित सम्पूर्ण औषध को कपड़ा में बाँध कर अर्क़ गाव ज़ुबान, गुलाब, आब सेब शीरीं, आब बिही शीरीं, आब अनार शीरीं प्रत्येक १४ तो० तथा वर्षा जल २ सेर में क्वाथ करें। जब पानी जल जाए तब एक पाव मधु और ३ पाव श्वेत शर्करा मिलाकर ख़मीरा की चाशनी प्रस्तुत कर लें।

मात्रा व सेवन-विधि—इसमें से ५ मा०, अर्क़ गाव ज़ुबान १२ तो० वा अन्य उचित अनुपान के साथ सेवन करें। गुण—हृदय तथा मस्तिष्क को बलवान बनाता और दृष्टि शक्ति के लिए उपयोगी है। इसके प्रयोग से मूर्च्छा, दिल की धड़कन और भ्रम आदि दूर होते हैं।

(२) ख़मीरा अबरेशम हकीम इर्शादवाला।
(३) ख़मीरा अबरेशम शीरा उन्नाबवाला।
(४) ख़मीरा अबरेशम ऊद मस्तगीवाला।

इनके तथा अन्य ख़मीराओं के लिए, देखो—ख़मीरा।

(५) शर्बत अब्रेशम सादा—योग एवं निर्माण-विधि—कतरा हुआ अब्रेशम आध सेर, श्वेतचन्दन, बालछड़ प्रत्येक ६ मा०, मस्तगी, लौंग, छोटी इलायची, तेजपत्र, ऊद हिन्दी प्रत्येक ६॥ मा०, अर्क़ गाव ज़ुबान, अर्क़ बेदमुश्क, अर्क़ गुलाब प्रत्येक १-१ सेर, आब सेब, आब बिही, आब अनार, आब अमरूद, सफ़ेद चीनी, मधु १-१ सेर। यथाविधि शर्बत प्रस्तुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—इसमें से २ तो० शर्बत अर्क़ गाव ज़ुबान ७ तो० और अर्क़ बेदमुश्क ६ तो० के साथ सेवन करें। गुण—मस्तिष्क एवं हृदय को बलप्रद है तथा मूर्च्छा को दूर करता है।

अब्रेस्टोल abrastol-इं० (Asa... धूसर वर्ण का एक चूर्ण है जो अल... (alcohol) में सरलतापूर्वक वि... है। विस्तार के लिए देखो—... phthol.)।

अब्रोङ्ग abiong-यु० अब्री। ... मतानुसार कर्णस्फोटा (सं०), और डाइमॉक महोदय लेखक "... इण्डिका" के मतानुसार "चित्र... (spotted grain) अथवा लिया रीबीस (Embelia R... बीज है। फा० इं० १ भा०।

अब्रोमा ऑगस्टा abroma au... ओलक तम्बोल-यस्व०। उलट्क... कम्बल-बं०। पीवरी, कुमा... डेविल्स काटन Devil's cot... फा० इं० १ भा०। इं० मे० मे०

अब्रोमा फ़ैस्टयुओज़म् abrom... osum-ले० उलट्कम्बल-बं०। ... cotton.। इं० मे० मे०।

अब्ल abla-फ़ा० कागज़ा... (Cardamum.) इं० है० ग...

अब्ल aabl-अ० (१) मांसल पुष्... (२) वह मनुष्य जिसके हाथ पु...

अब्लम् ablam-हिं० सं० स्त्री० ... (Dolichos Gladiatus.) है० गा०।

अब्लह् aalah-अ० मूर्ख, सीधा ... भोला मनुष्य। ईडियट (Idiot)

अब्ला aablá-पथरी, श्वेत ... संग्रेज़े।

अब्शाउल्अम्राज़ abshaaul-ar... अत्यन्त बुरा एवं कठिन रोग। ... डिज़ीज़ (Malignant D... —इं०।

...s-अ० (१) कुचरित्र, दुराचरण, ...र। (२) शवानक।

... absaqyún-रू० अफ़्सन्तीन। (...sinthium.)

...absár-अ० (व० व०), बसर ...र०)। दृष्टि, निगाह, नज़र। साइट (...ht), विज़न (Vision)-इं०।

... abscess-root-इं० पॉलिमोनियम (Polemonium Reptans.)

...bhar-अ० अयरती। महाधमनी। (Aorta)-इं०।

...bhám-अ० अंगुष्ठ, अँगूठा। इसका ...न "अबाहम" है। थम (Thumb.)

...bhakta-हिं०वि० [सं०] (१) भक्ति ...शः। (२) अरुचि (Want of ...ie.)

...ःabhakta-chchhandah-सं० ...रोचक भेद। जिसमें अन्न में रुचि न ... See--Arochaka.

...bhagna-हिं० वि० [सं०] अखंड। ...डित न हो। समूचा।

...abhanjana-हिं० वि० [सं०] ...। भंजन न हो सके। अटूट। अखंड। ...ञा पुं० द्रव वा तरल पदार्थ जिनके टुकड़े ...हो सकते, जैसे जल, तैल आदि।

...abhayam-सं० क्लीं० } उशीर, ...bhaya-हिं० संज्ञा पुं० } खस, बी... ...ल (Andropogon muricatus.) ...नि० व० १२, मद० व० ३, अम, भैष० ...चि० कन्दर्पसार तैल।

...abhayadá-सं० स्त्री० (Phyllan...s Niruri, Linn.) भूम्यामलकी ...आमला। भूम आंवली-मं०। वै० ...०।

...सिंह रसः abhayanrisinh-rasah ...० पुं० यह रस अतिसार तथा ग्रहणीमें हित है। योग-(१)हिंगुल, त्रिकटु विष, जीरा, सुहागा, पारद, गन्धक, अभ्रक भस्म, शंख भस्म समभाग और अहिफेन सर्वतुल्य मिलाकर नीबू के रस से मर्दन करें। मात्रा—१ रत्ती। अनुपान—जीरा का चूर्ण और शहद। र० यो० सा०। (२) गंधक और अभ्रक इनको समभाग लेकर इन सब के बराबर अफीम शुद्ध लेवें। और इन सबको क़ागजी नीबू के रस में घोट कर गुञ्जा प्रमाण गोली बनाएँ। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जीरा का चूर्ण और मधु।

(३) शिङ्गरफ, मीठातेलिया, सोंठ, मिर्च, पीपर, जीरा, भूना सोहागा, अभ्रक भस्म इन्हें समान भाग लें, शुद्ध पारा १ भाग, सर्व तुल्य ब्राह्मी (मण्डूकपर्णी) लें, पुनः चूर्ण कर नीबू के रस में खरल कर १ या २ दो रत्ती प्रमाण गोलियाँ बनाए, जीरा शहद के साथ देने से सन्निपातातिसार, ज्वरातिसार, बिना ज्वर का अतिसार तथा सर्व प्रकार के अतिसार, संग्रहणी, का नाश होता है। भैष० र० अतिसार० चि०

अभया abhayá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) (Terminalia chebula, Retz) हरीतकीविशेष। एक प्रकारकी हरीतकी वा हड़ जिसमें पाँच रेखाएँ होती हैं। हरड़। प० मु०, रा० नि० व० ११; भा० पू० १ भा०; धा० सू० ३८ अ० वचादि व०; च० द० कफ ज्व० चि० आमलक्यादि। (२) श्वेत निर्गुण्डी। (३) मजिष्ठा। (४) जयन्ती। (५) जया, भंग। (६) मृणाल। (७) काञ्जिक। (८) काञ्चन वृक्ष द्वय। रा० नि० व० १७।

अभयावटकः abhayávatakah-सं० पुं० हड़ ४ तोला, हड़ की छाल ४ तोला, आमला ४ तोला, बहेड़ा ४ तो०, त्रिकुटा ... अजमोद, चव्य, चित्रक, वायविडंग, ... वच, सेंधालवण प्रत्येक दो दो तो०, ... इलायची १-१ तो०, दालचीनी ... चूर्ण बना इसमें १ तो० ... एक तो० की गोलियाँ बनाए, ... से प्लीहोदर, अर्श, गुल्म, ...

मन्दाग्नि इन सबका नाश होता है। वङ्ग० से० सं० प्लीहोदर चि०।

अभयादि गुग्गुलः abhayádiguggaluh —सं० पुं० हड़, आमला, मुनक्का, शतावर, बड़ी इन्द्रायण की जड़, अनन्तमूल दोनों, मजीठ, हल्दी, दारु हल्दी, बच इन्हें समान भाग ले, आठ मुट्ठी गुगुल लेकर एक वस्त्र में बांध २४ सेर पानी में पकाएँ, जब चौथाई शेष रहे उतारें, पुनः उस गुगुल को काढ़ा के जल में पकाएँ, जब सिद्ध हो ले तब उसमें नुस्ली, मुलहठी, जटामांसी, दालचीनी, इलायची, पत्रज, केशर, वायविडङ्ग, लवंग, जवासा, निसोथ, आमला, सोंठ, मिर्च, पीपर, इन सब का बारीक चूर्ण चार २ तोले उक्त गुगुल में छोड़कर अच्छी तरह मेलन कर रक्खें। इसे शहद के साथ सेवन करने से स्नायविक तथा मस्तिष्क सम्बन्धी प्रत्येक बीमारियाँ दूर होती हैं। भैष० र० परिशिष्टम्।

अभयादिगुटी abhayádigutá-सं० स्त्री० आम वात में प्रयुक्त होने वाला योग। वृ० नि० र० भा० ५ आमवा० चि०।

अभयादि चतुस्सम वटी abhayādi-chatussama-vatí-सं० स्त्री० हड़, सोंठ, मोथा, गुड़, प्रत्येक समान भाग ले गुटिका बनाएँ। यह त्रिदोष, आमातिसार, अफरा, विबन्ध, हैजा, कामला, और अरुचि को नष्ट करती तथा अग्नि को शीघ्र दीप्त करती है। वृ० यो० त०।

अभयादिचूर्ण abhayádichúrna सं० पुं० हड़, अनीस, हींग, सोंचल, त्रिकुटा, इनको समान भाग ले चूर्ण बनाएँ। गुण—कफज अतिसार नाशक है। वृ० नि० र०।

अभयादि क्वाथः abhayádi kváthah-सं० पुं० हड़, आमला, चित्रक और पीपल इनका क्वाथ पाचक भेदक और कफ ज्वर नाशक है। वृ० नि० र०।

अभयादिमोदकः abhayádi-modakah —सं० पुं० हड़, पीपल, पीपलामूल, मिर्च, सोंठ, तज, पत्रज, मोथा, विडंग, आमला, प्रत्येक १-१ कर्ष लें; दन्ती ३ कर्ष, मिश्री ६ कर्ष, निशोथ २ पल, इनका चूर्ण करके शहद से मोदक प्रस्तुत करें। मात्रा—१० मा०। शीतल जल से खाने से उत्तम और इसके प्रभाव से पांडु, विष, दुर्नाम के रोग, शिरोरोग, मूत्रकृच्छ्र, अर्श, प्रमेह, कुष्ठ, दाह, शोथ और उदर रोग हैं। यो० चि०।

यो० त० विरेचन० अ०। सु० सं० वङ्गसेन सं०। शा० ध० सं० उ०

अभयादियोग abhayádi-yogah सं० गुल्म रोग में प्रयुक्त योग। वृ० नि० र०। गु० चि०।

अभयारिष्टः abhayárishtah-सं० (१) हड़ १ तुला (५ सेर) (दाख) आधा तुला (२॥ सेर), महुआ पुष्प, चालीस चालीस तोले, द्रोण (६४ सेर) जल में पकाएँ। जब द्रोण शेष रहे तो पवित्र रस को ठंडा कर गुड़ १ तुला (५ सेर) छोड़ें। पुनः निशोथ, धनियाँ, धव पुष्प, इन्द्रायण, सौंफ, सोंठ, जमालगोटा (दन्ती), प्रत्येक आठ आठ तोला ले एक पात्र में चूर्ण कर छोड़ मुख बंद कर पर्यन्त रख छोड़ें जब रस शुद्ध हो रक्खें। इसे बल तथा अग्नि का विचार सेवन करे तो बवासीर, आठ प्रकार के उदर मूत्र तथा मल की रुकावट, इन्हें दूर कर की वृद्धि करे। (भैष० र० अर्श० चि०)

(२) हड़ ३२ तो०, आमला ६४ तो०, छाल ४० तो० गंडूभाकी जड़ (इंद्रायण मूल) तो०, वायविडंग, पीपल, लोध, मिर्च, आठ आठ तो० लेकर ४०९६ तो० जल में जब १०२४ तो० जल शेष रहे तो उसे छान लें और उसमें २०० तो० गुड़ १५ दिन तक घृत के पात्र में रक्खें। ४ तो०। प्रयोग-इसे उचित मात्रा में सेवन से गुदा के मस्से नष्ट हो जाते हैं। संग्रहणी, पांडु, तिल्ली, गुल्म, उदर सूजन, अरुचि को दूर करता है

[...] अग्निको वृद्धि करता है। इससे कामला, सुफेद [...] कुष्ठ, ग्रंथि, अर्बुद, हृद्रोग, ज्वर, राजयक्ष्मा [...] भी दूर हों। वंगसेन सं० अर्श० चि०। वा० [...] चि०।

नोट—वाग्भट्ट जी ने इसमें १ प्रस्थ आमले [...] रस गुड़ डालने के समय डालने को [...] है।

[...]लवणम् abhayá-lavaṇam-सं० क्ली० [...]रिभद्र (नीम), पलास, सफेद मदार, [...], चिचिंडा, चित्रक दोनों, वरना (वरुण), [...]ती, लाल मदार, गोखरू, छोटी कटेली, [...]ी कटेली, कांज, श्वेत अनन्तमूल, कटुई [...]ंई, पुनर्नवा, इनका जड़, पत्ते, डालियाँ, [...]मेत लेकर उखल में कूट के पुनः तिल की नाल [...] अग्नि में भस्म करें, पुनः नये पात्र में [...]२४ तोले पानी डाल उसमें भस्म डालकर [...]कावें जब चौथाई शेष रहे तब क्षार के विधि [...] क्षार तैयार करें। यही क्षार ६४ तो० नमक [...]४ तो० हड़ ३२ तो० इनके बराबर पानी और [...]मूत्र मिला के मंद मंद अग्निसे पकावें, जब कुछ [...]ढ़ा हो ले तब जीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, हींग, [...]जवाइन, पुष्कर मूल, कचूर, इन्हें दो दो तोले [...] चूर्ण कर उक्त घनीभूत औषध में मिलावें, तो [...]ह अभया लवण तैयार हो अग्नि बल को [...]विचार सेवन करने से अनेक प्रकार के उदर [...] (कोष्ठरोग), यकृत, प्लीहा, उदर रोग, अफरा, [...]गुल्म, अष्ठीला, मन्दाग्नि, शिरोरोग, हृद्रोग, शर्करा, पथरी रोग, इन्हें उचित अनुपान से दूर करता है। भैष० र० प्लीह० यकृत० चिकि० ध०० से० सं०।

[...]यादिलेहः abhayádilehah सं० पुं०, हड़, पीपल, दाख, मिश्री, धमासा, इनका मधु के साथ अवलेह बना चाटने से मूर्च्छा, कफ, अम्ल-पित्त, तथा कण्ठ और हृदयकी दाह नष्ट होती है। [...] यो० र० आम्लपि० चि०।

[...]भयावटी abhayá-vaṭí-सं० स्त्री० हड़, मिर्च, पीपल, भूना सुहागा इन्हें समान भाग लें, इन सब के चूर्ण के बराबर धतूरे का फल लें, और सेहुंड के दूध के साथ खरल कर पकी हुई मटर प्रमाण गोलियां बनावें, पश्चात् २ गोली और एक हड़ मिलाके चावलों के पानी से महीन पीस कल्क बना खावें, तो उत्तम जुलाब हो, इसके ऊपर गर्म जल पीने से तब तक दस्त आते रहेंगे जब तक कि शीतल जल न पिया जाए। इससे जीर्ण ज्वर, तिल्ली, आठ प्रकार के उदररोग, वातोदर और हर प्रकार के अजीर्ण, कामला, पाण्डुरोग, कुम्भ कामला इन रोगों को नष्ट करती है। भैर० र० उदर० रो० चि०।

अभयाविरेचन abhayá-virechana-सं० पुं० हड़, पीपल, समान भाग ले चूर्ण कर गरम पानी के साथ खाने से अल्प २ बार २ होने वाला प्रबल और शूल युक्त अतिसार नष्ट होता है। सु० सं० उ० अ० ४०।

अभयाष्टकम् abhayáshṭakam-सं० क्ली० अष्ट हरीतकी भक्षण। पहिले दो खावें फिर दो और खावें। इसी प्रकार दो दो हरड़ करके ८ हरड़ खाकर सो रहें। इसी प्रकार ३ सप्ताह रात्रि में अभयाष्टक का प्रयोग करनेसे पुनः यौवन की प्राप्ति होती है।

अभरख abharakha-म०, गु० अभ्रक, अबरख। (Mica.)।

अभल abhal-अ० हुवेर, हाऊबेर। हपुषा-सं० (Juniperus.)।

अभक्ष abhaksha-हिं० वि० देखो—अभक्ष्य।

अभक्ष्य abhakshya हिं० वि० [सं०] अखाद्य। अभोज्य। जो खाने के योग्य न हो।

अभावः abhávah-सं० (हिं०) पुं० (१) असत्व अनस्तित्व, असत्ता, अविद्यमानता (Non-existence, non-entity.)। (२) मरण, नाश, ध्वंस (Annihilation, death)। मे० वत्रिकं। एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है।

अभि abhi-हिं० [सं०] (उपसर्ग) चौफेरा, आगे, चिह्न, धर्षण, अभिलाष "अनु" के विपरीत-इसका उपयोग होता है। Before,

against, with respect to.

(१) सामने, उ०—अभ्युत्थान। अभ्यागत।
(२) बुरा, उ०—अभियुक्त।
(३) इच्छा उ०—अभिलाषा।
(४) समीप, उ०—अभिसारिका।
(५) बारंबार, अच्छी तरह, उ०—अभ्यास।
(६) दूर, उ०—अभिहरण।
(७) ऊपर, उ०—अभ्युदय।

अभिक abhika–हिं० वि० [सं०] कामुक। कामी। विषयी।

अभिगमन abhi-gamana–हिं० संज्ञा पु० [सं०] सहवास, संभोग।

अभिगामी abhi-gámi–हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अभिगामिनी] सहवास वा संभोग करने वाला उ०—ऋतुकालाभिगामी।

अभिघातः abhi-ghátah–सं० पु०

अभिघात abhi-gháta–हिं० संज्ञा पु०, (१) (Wound or blow). अभिघात हिं० पु०। आघात, चोट पहुँचना, ताड़न, दाँत से काटना। प्रहार, मार। शस्त्र, मुक्का, (घूँसा) और लाठी आदि की चोट का नाम अभिघात है। भा० म० २ आगन्तुक ज्वर लक्षण। "अभिघाताभिषङ्गाभ्याम।" (२) पुरुष की बाईं ओर और स्त्री की दाहिनी ओर का मसा।

अभिघात ज्वरः abhi-gháta-jvarah–सं० पु० (Acquired or Accidental fever.) आघात जन्य आगन्तुक ज्वर अर्थात् तलवार, छुरा, मुक्का, लाठी औ शस्त्र आदि के लगने से उत्पन्न ज्वर। "अभिघाताभिचाराभ्यां-आगन्तुर्जायते"। मा० नि० (आग०) ज्वर।

(आघात से प्रकुपित हुई वायु रक्त को दूषित कर व्यथा, शोफ वैवर्ण्य और वेदना सहित ज्वर को करती है। च०।

उक्त ज्वरों में दोष ज्वर के उत्पादक नहीं होते, अपितु वे पश्चात् को उनके परिणाम स्वरूप होते हैं। सारांश यह कि सर्व प्रथम आघात के कारण ज्वर उत्पन्न हो जाता है। फिर उस से दोषों का प्रकोप होता है।

अभिघार abhi-ghára–हिं० संज्ञा पु०

अभिघारः abhi-gháiah–सं० पु०. (१) (Ghee, clarified butter.) घृत, घी। तुप-म०। रा० नि० व० १५। (२) घी से छौंकना व, बघारना। (३) सींचना, छिड़कना।

अभिचारः abhi-cháiah–सं० पु०

अभिचार abhi-chára–हिं० संज्ञा पु०. (An incantation to destroy.) हिंसाकर्म, मारणमन्त्र-विशेष। मन्त्र आदि द्वारा मारण आदि प्रयोग करना। किसी शत्रु को दुःखदायी हुई कृत्य आदि का उत्पन्न करना, किसी मन्त्र का अपवाद; जादू से मूठ चलाने का नाम अभिचार है। भा० म० २ आगन्तुक ज्वर लक्षण। मा० नि० ज्व०। मंत्र आदि द्वारा उत्पन्न दंश। र० मा०। यन्त्र मन्त्र आदि अवपीडन, "अभिचाराभिशापोत्थे"। रत्ना०।

अभिचार abhichára–सं० पु० तंत्र के प्रयोग जो छः प्रकार के होते हैं—मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और वशीकरण।

अभिचारक abhicháraka–हिं० संज्ञा पु० [सं०] यन्त्र मन्त्र द्वारा मारण, उच्चाटन आदि कर्म. वि० यंत्र मन्त्र द्वारा मारण-उच्चाटन आदि करने वाला।

अभिचार ज्वरः abhi-chára jvarah–सं० पु० (Fever produced by incantations) विपरीत मंत्र के जपने से, लोहे के शूल से मारणार्थ सर्षपादिक होम वा कृत्य के प्रयोग करने से जो ज्वर प्रकट होता है, उसे "अभिचार ज्वर" कहते हैं।

अभिचारी abhi-chári–हिं० वि० [सं० अभिचारिन्] [स्त्री० अभिचारिणी] यंत्र मंत्र आदि का प्रयोग करने वाला।

लक्षण—इससे तथा अभिशाप से उत्पन्न ज्वर में मोह और प्यास होती है। मा० नि० ज्व०।

अभितापः abhi-tápah–सं० पु० (१) सर्वाङ्ग ताप (General heat). (२) अश्वज्वर (Horse fever)। गण० प०।

...द्रव जन abhi-drava-jana-हिं० पुं० ...द्रजन। हाइड्रोजन (Hyrodgen)-इं०।

...द्रव हरिक abhi-drava-harika-हिं० पुं० हाइड्रो-क्लोरिकाम्ल,लवणाम्ल,उदहरिकाम्ल, ...नमक का तेज़ाब। Hyorochloric Acid.

...धान abhidhána-हिं० संज्ञा पुं० ...सं०] [वि० अभिधायक, अभिधेय] (१) ...नाम, संज्ञा। (२) शब्द कोष शब्दार्थ ग्रन्थ। ... A name, a vocabulary, a dictionary.)।

...नव abhi-nava-हिं० वि० [सं०] नवीन ...या, टटका, नव्य, नूतन। रीसेंट(recent) ...यु (new) (२) ताज़ा। (Fresh)।

...नव कामदेवो रसः abhinva-káma-devo-rasah-सं० पुं० पारा, गन्धक १ तो०, ...समानभागमें लेकर रक्त कमल पुष्प रसमें तीन दिन ...के भावित करें। फिर ४ मा० गन्धक मिलाकर ...र्ववत्, उक्त कमल, और शंखिनी के रस से ...पृथक् पृथक् भावना देवें, फिर शुष्क कर 'आतशी ...शीशी में भरकर बालुका यंत्र द्वारा ३ प्रहर पकावें ...मात्रा—४ रत्ती। यह पित्त जनक प्रत्येक रोगों को दूर करता है। र० यो० सा०।

नवकामेश्वरः abhi-nava-kamehva-rah-सं० पुं० वाजीकरण औषध विशेष। देखो—अभिनव कामदेवो रसः।

...नि abhini-ते० अफीम (Opium.)। ...सं० फा० इं०। इं० मे० मे०।

...निवेश abhinivesh-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिनिवेशित, अभिनिविष्ट] (१) प्रवेश। (२) मनोयोग। लीनता। (३) प्रणिधान। मृत्यु शंका। गति। पैठ।

...नी abhini-द० अफीम (Opium.)

...न्याशयः abhinpáshayah-सं० पुं० शरीर के भीतरी कोशों का शुद्ध रूप अर्थात् जो विदीर्ण न हुए हों। वा० उत्तर० अ० २६।

अभिन्यासः,-कः abhinyásah,-kah-सं० पुं० सन्निपात ज्वर का एक भेद जिसमें वातादि तीनों दोष कुपित होकर छाती में रस के बहने वाली नाड़ियों के छिद्रों में गमन करते हुए तथा अपक रस से मिले हुए और अत्यन्त बढ़े हुए आपस में विशेष गुथे हुए चक्षु, कर्ण, नासा, जिह्वा, त्वचा तथा मन में आकर अति भयङ्कर तथा कठिन अभिन्यास ज्वर को उत्पन्न करते हैं। उक्त ज्वर में रोगी के कानों से सुनना, नेत्रों से दीखना बन्द हो जाता है और किसी प्रकार की चेष्टा (कर चरण प्रभृति चालन), रूप का दीखना, दृष्टि ज्ञान, गंध ज्ञान, शब्द ज्ञान मालूम नहीं होता तथा रोगी बार बार सिर को इधर उधर पटकता है और अन्न की इच्छा नहीं करता। अस्पष्ट शब्द का बोलना, देह में सूई बिंधने की सी पीड़ा होना और बार बार करवट लेना, बहुत कम बोलना, ये लक्षण होते हैं। यह अभिन्यास ज्वर विशेष कर असाध्य होता है और कोई एक आध रोगी यथावत चिकित्सा होने पर बच भी जाता है उसको अभिन्यास सन्निपात ज्वर कहते हैं। मा० नि० ज्व०।

जिस सन्निपात ज्वर में सब दोष अत्यन्त बलवान और तीव्र हों, अत्यन्त बेहोशी हो, निश्चेष्टता हो, अत्यन्त विकलता तथा श्वास हो, अधिकतर मूकता (गूँगापन) हो, दाह हो, मुख चिकना हो, अग्नि मन्द और बल की हानि हो उसे वैद्यों ने "अभिन्यास" कहा है। भा० म० खं० २ सन्निपा० ज्वर०। देखो—सन्निपात।

अभिन्नपुट abhinna-puaṭ-हिं० संज्ञा पुं० नया पत्ता।

अभिन्यास हरो रसः abhinyása-haro-rasah-हिं० संज्ञा पुं० शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लौह भस्म, चांदी भस्म इन्हें सम भाग लेकर, हरड़, सम्हालु, तुलसी, निर्गुण्डी...

अग्निपर्णी, अदरख, चित्रक, भांग, अरनी, मकोय इनके रसों में तीन दिन पर्यंत खरल करें, पुनः पञ्चपित्त (मोर, भैंसा, बकरी, सुअर और रोहू मछली) की भावना देवें, तदनन्तर वालुकायंत्र में अन्ध मूषा में बन्द कर एक दिन तक पकाएँ, जब स्वांग शीतल हो बारीक चूर्ण कर रक्खें। मात्रा—१ से ८ रत्ती। गुण—अदरख के रसके साथ दें और निर्गुण्डी, दशमूल और त्रिकुटा का क्वाथ काली मिर्च मिलाकर पिलाएँ तो त्रिदोषज ज्वरों को दूर करे।

पथ्य—बकरी का दूध और मूंगका यूष दें।

वृ० रस० रा० सु०।

अभिपीड़नम् abhipíḍanam–सं० क्ली० अभिचार (An incantation to destroy.)

अभिमन्थः,-मन्युः abhimanthah,-manyuh –सं० पुं० नेत्ररोग। आई डिज़ीज़ (Eye disease)। त्रिका०। देखो—अधिमन्थ।

अभिमर्दः abhimardah–सं० पुं० अवमर्द, पीड़न, पीड़ा (Pain.)।

अभिमर्दन abhimardana हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) पीसना। चूरचूर करना। (२) घस्सा। रगड़। युद्ध।

अभिमर्षणम् abhi marshaṇam–सं० क्ली० (१) यक्ष पिशाच आदि भूतकृत पीड़ा। र० मा०। (२) मनन, चिन्तन; (३) परस्त्री गमन, परदारगामी।

अभिमानितम् abhimánitam–सं० क्ली० मैथुन, स्त्री संग। काइशन (Coition.), कप्युलेशन (Copulation.)। त्रिका०।

अभिमुख ábhimukha–हिं० क्रि० वि० [सं०] सम्मुख, आगे, सामने, समक्ष (Present, facing.)

अभिरुचि abhimukha–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] अत्यन्त रुचि। पसन्द। प्रवृत्ति। तुष्टि, भलाई, आस्वाद, चाह, रसज्ञान (Taste.)

अभिरूपः abhirúpah–सं० पुं० }
अभिरूप abhirúpa हिं० वि० } (१) बुध, पंडित, विद्वान। (२) रम्य, रमणीय, (३) कामदेव। मे० पचतुष्क।

अभिरोग abhiroga–हिं० संज्ञा पुं० चौपायों का एक रोग जिसमें जीभ में ... जाते हैं।

अभिल कपित्थः abhila kapitthah पुं० आम्रातक वृक्ष, अम्बाड़ा, ... (Spondias mangifera.)

अभिलषिक रोग abhilashika roga संज्ञा पुं० [सं०] वातव्याधि के चौरासी ... में से एक।

अभिलावः abhilávah–सं० पुं० छेद (Hole, pore.)। अम०।

अभिलाषः abhiláshah–सं० पुं०
अभिलाष abhilásha–हिं० संज्ञा पुं० [वि० अभिलाषिक, अभिलाषी, ... अभिलाषित]। (१) मनोरथ, ... की इच्छा। वियोग। र० ... आकांक्षा, कामना, इच्छा, स्पृहा (Desire) मनोरथ, चाह।

अभिव्यापक abhivyapaka–हिं० वि० [स्त्री० अभिव्यापिका] पूर्ण रूप से ... (Diffusible.)

अभिशप्त abhi-shapt–हिं० वि० [...] शापित। जिसे शाप दिया गया हो।

अभिशापित abhishápita–हिं० वि० [...] देखो—अभिशप्त।

अभिशस्तिपाः abhishastipáh–सं० ... पाप भय रोगों से रक्षा करने वाला। ... सू० ७। १४। का० ८।

अभिशापः abhishápah–सं० पुं०
अभिशाप abhishápa–हिं० संज्ञा पुं० [वि० अभिशापित, अभिशप्त] शाप, ... प्रार्थना, बद दुआ, ब्राह्मण, गुरु, वृद्ध और ... आदि के शाप का नाम "अभिशाप" है। ... म० २। मा० नि० ज्व०।

अभिशोचनम् abhisho-chanam

अभिषङ्गः abhi-shangah-सं० पुं०
अभिषंग abhishanga-हिं० संज्ञा पुं०
(१) काम, शोक, भय, क्रोध, और भूतादिकों के आवेश होने का नाम अभिषंग है। भा० म० २ आगन्तुज्वर० लक्षण। (२) भूत, विष, आदि सम्बन्ध। यह पिशाच आदि द्वारा उत्पन्न पीड़ा। र० मा७। (३) दृढ़ मिलाप आलिंगन (४) आक्रोश, निन्दा, कोसना। (५) पराजय।

अभिषङ्ग ज्वरः abhishang-jvarah-सं० पुं० ज्वर विशेष जो भूत आदि के आवेश से होता है। यह काम आदि जन्य भेद से ६ प्रकार का होता है। शार्ङ्ग०। भा० म० २ आगन्तुक ज्वर०। मा० नि० ज्वर। उ० च० ज्व० नि०।

अभिषवम् abhishavam-सं० क्लीं०
अभिषव abhishava-हिं० संज्ञा पुं०
(१) काञ्जिक, काँजी (See-Kánji) रा० नि० व० १५। (२) ताड़ी (सुराभेद) सेंधी-हिं०। ताड़ाची दारू-मह०। ताँड़ी। (Toddy)-इं०। पुं० (३) यज्ञ में स्नान (४) मद्य सन्धान। मे० वचतुष्कं। (५) सोमरस पान। मद्य खींचना। शराब चुआना। (६) सोमलता को कुचल कर गारना।

अभिषिक्त abhi-shikt-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अभिषिक्ता] कर्म में नियुक्ति, कृताभिषेक (Anointed to office, enthroned.)

अभिषुकम् abhi-shukam-सं० क्लीं० (१) काबेल आदि प्रसिद्ध फल विशेष। पेस्ता-यं। च० चि० च्यवनप्राश। पुं०, (२) काबेल वृक्ष। सु०।

अभिषुतम् adhi-shutam-सं० क्लीं० पवड़ाकी। थोड़ाकी, काञ्जिक विशेष। अम०। देखो-काँजी। (Kánji)।

अभिषुविकान्तम् abhi-shuvi-krántam -सं० पुं० माधवी सुरा, माध्वी सुरा। (A kind of wine) देखो—माधवी। वै०निघ०

अभिषेकः abhi-shekah-सं० पुं०
अभिषेचनम् abhishechanam-सं० क्लीं०
(१) ऊपर से जल डाल कर स्नान करना। शान्ति स्नान। जल से सिञ्चन। छिड़काव (Bathing, sprinkling-)

अभिष्यन्द abhi-shyanda-हिं० पुं०
अभिष्यन्दः abhi-shyandah-सं० पुं०
नेत्र रोग भेद। (१) नेत्रशूल रोग। आँख आनी। चक्षु पीड़ा। Ophthalmia, conjunctivitis) आँख का एक रोग जिसमें सुई छेदने के समान पीड़ा और किरकिराहट होती है। आँखें लाल होती हैं। और उनसे पानी और कीचड़ बहता है। वात आदि भेद से यह चार प्रकार का होता है। देखो—नेत्राभिष्यन्दः। (२) अतिवृद्ध। (३) स्त्राव, स्राव, बहाव मे० दचतुष्कं।

अभिष्यन्दी abhi-shyandi-सं० त्रि० (१) दोष, धातु तथा मल आदि स्रोतों को क्लेदयुक्त करने वाला, छिद्रों को आर्द्र (नम, तर) करने वाला।

कुटुमा० टी० ज्वर। (२) स्रोतः स्रावि द्रव्य। धा० टी० हेमाद्रि०। (३) कफकारक पदार्थ। लक्षण—जो द्रव्य अपने पिच्छल और भारीपन से रस वाहिनी शिराओं को रोक कर शरीर में भारीपन करता है। उस पदार्थ को "अभिष्यन्दी" कहते हैं, जैसे—दही। भा० मि० प्र० खं० १।

अभिसरः abhisarah-सं० पुं० (१) परिचारक। (२) (An attendant) सहचर; अनुचर। (३) मददगार। संगी, साथ रहने वाला, साथी। रत्ना०। प्राणाभिसर। च० द० सू० ६ अ०।

अभिसरण,-न abhisarana,-n-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अभिसरण] आगे जाना। (२) समीप गमन।

अभिसरना abhisaraná-हिं० क्रि० अ० [सं० अभिसरण] संचरण करना। जाना। (२) किसी वांछित स्थान को जाना।

अभिसारना abhisáraná-हिं० क्रि० अ० [सं० अभिसारणम्] (१) गमन करना। जाना। घूमना।

अभिसारः abhisárah-सं० पु० अभिसार हिं० संज्ञा पुं० (१) शकुली मत्स्य [शाल माधं वं० मद० व० १२ । (२) बल (Strength) घर० मत्स्य, मछली (Fish). [वि० अभिसारिका अभिसारी] ।

अभिसोचनम् abhisochanam-सं० क्लो० कोमलता । अथर्व० सू० ६ । ७ । का० ४

अभिहिता abhihitá-सं० स्त्री० जल पिप्पली जल पीपर । वै० नि० ।

अभिज्ञः abhijnyah-सं० त्रि०
अभिज्ञ abhijnya-हिं० वि०
(१) जानकार । विज्ञ । (२) निपुण। कुशल

अभिज्ञान abhijynána-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिज्ञात] (१) स्मृति । ख्याल । (२) वह चिन्ह जिससे कोई चीज़ पहिचानी जाय । लक्षण । पहिचान । (३) निशानी । परिचायक । चिन्ह ।

अभीकः abhikah-सं० पुं०
अभीक abhíka-हिं० वि०
कामुक (Cupidinous, lustful मे० कत्रिकं । (२) निर्भय, निडर, लंपट ।

अभीरणी abhírani-सं० स्त्री० दुन्दुभ सर्प (A serpent named dundubha) वै० निघ० ।

अभीरु abhíru-सं० स्त्री० (१) शत मूली । सतावर-हिं० । (Asparagus racemosus) धा० सू० १९ अ० दूर्वादिव० सि० यो० यक्ष्म० चि० ग्रयोदशांगे । (२) महाशतावरी । रसे० चि० ८-अ० ।

अभीरुपत्री-त्रिका abhírúpatrí,-triká,-सं० स्त्री० शतावरी, सतावर, (Asparagus racemosus) अम० ।

अभीशुः,-षुः abhíshuh,-shuh-सं० पुं० प्रग्रह, लगाम, डोर, मे० ।

अभीषङ्गः abhisangah-सं० पुं० आक्रोश, अभिषङ्ग, शाप । (Curse) ।

अभीष्ट abhíshta-सं० पुं०
अभीष्टः abhíshtah-हिं० संज्ञा पुं०
(१) तिलक वृक्ष । तिल हिं० । (...ium Indicum) गु० नि० व० । वि० इच्छित, वाँछित । मनोरथ, (Wished for, Desired)

अभीष्टगन्धकः abhíshta-gandhak पुं० माधवी लता । मद० व० ११ Mádhavilatá

अभीष्टा abhíshta-सं० स्त्री० रेणु, द्रव्य, रेणुका । गु० व० । See-renu...

अभुक्तः abhuktah-सं० त्रि०
अभुक्त abhukta-हिं० वि०
न खाया हुआ । उपवास किया हुआ । (...ved, fasted) अजीर्णस्य द्वि... पाचनाणामपि जीर्यते वै० निघ० । न भोग किया हुआ ।

अभुग्नः abhugnah-सं० त्रि० नीरोग, (Healthy)

अभुलास abhulás-सिंघ० इर्दुलाबाल, ... यती मेंहदी है ।

अभेडा abhedá-गु० अमड़ा, अम्बाड़ा (S...ndias mangifera)

अभेद abheda-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [... अभेदनीय, अभेद्य] (१) भेद का अभाव ... अभिन्नता । एकत्व । (२) एक रूप ... समानता । वि० (१) शून्यभेद । एक ... (२) समान । वि० [सं० अभेद्य] ...

अभेदनीय abhedaniya-हिं० वि० [... दे० अभेद्य ।

अभेद्यम् abhedyam-सं० क्लो०
अभेद्य abhedya-हिं० संज्ञा पुं०
(१) हीरक, हीरा । Diamond ... इ० रा० नि० व० १३ । देखो—वज्रम् । ... वि० (१) अभेदनीय । जिसका भेद ... (२) छेदन न हो सके । जिसके भीतर कोई चीज़ ... न सके जिसका विभाग न हो सके । Indi...ible, Inseparable. (२) जो ... सके । अखंडनीय ।

अभेषजम् abheshajam-सं० क्लो० विप... औषध, उलटी दवा । वमन तथा ...

रे यह दो प्रकार का होता है। च० चि० ०।

abhoja-हि० वि० [सं० अभोज्य] ने योग्य।

abhojanam-सं० क्ली० (Fasting.) अभोजन-हि० पुं० । उपवास, लंघन, भोजनाभाव, अनाहार। अनशनः।

abhojya-हि० भोजन के अयोग्य (Unfit to be eaten)

abhoutika-हि० वि० [सं०]) जो पंचभूत का न बना हो। जो पृथ्वी। अग्नि आदि से उत्पन्न न हो।

abhyakta-हि० वि० [सं०] (१) हुए। लगाये हुए। (२) तैल या उबटन ए हुए।

abhyankah-सं० पुं० तैल कल्क।

abhyangah-सं० पुं०

abhyanga-हि० संज्ञा पुं०

[सं० अभ्यक्त, अभ्यंजनीय] (१) लेपन चारों पोतना। मल मल कर लगाना। उद्वर्तन। (२) तैल (आदि) मर्दन। तैल लगाना। सेवन। स्नेहन।

(१). कमल पत्र, तगर, चिरौंजी हल्दी, कदम्ब, बेर की मिंगी, इनकी मालिश से मुख कमलवत् हो जाता है। (२) लोध, तृण, रक्त चन्दन, शहद, घी, गुड़ को गोमूत्र में पकाएँ। जब कलछी से लगने तब उतार लें। इसका मर्दन करनेसे नीलका और मुख दूषिकादि रोग दूर होकर मुख कमल सदृश हो जाता है और पांव कमल के तुल्य हो जाते हैं। वा० उ० अ० ३।

अभ्यङ्गादिः-चौगुने बकरा के मूत्र में गौ के ब्र का रस मिलाय उसमें सिद्ध किया हुआ (सरसों का तैल) मालिश, पान, तथा स्यादन मे श्रेष्ठ है।

चक्र० द० अपस्मार० चि०।

अभ्यङ्गादि समान्योपायः—अभ्यङ्ग, स्नेह, निरूहवस्ति, स्वेदकर्म, उपनाह, उत्तरवस्ति, सेकं, इन्हीं को तथा वातनाशक औषधियों से सिद्ध किए रसों को वात के मूत्रकृच्छ्र में दें।

गिलोय, सोंठ, आमला, अश्वगन्ध, गोखरू, इन्हें पान रात्री तथा शूलयुक्त मूत्रकृच्छ्र वाले मनुष्य को पिलाएँ।

सेंक, गोता लगाना, शीतल लेप, ग्रीष्म ऋतु के योग्य विधान, वस्ति कर्म, दूध के पदार्थ, दाख विदारीकन्द, गन्ने का रस तथा घृत इन्हें पित्त के रोगों में बरतें।

कुश, काश, सर, डाभ, ईख ये तृण पञ्चमूल पित्त के मूत्रकृच्छ्र को हरता तथा वस्ति का शोधन करता है। इनसे सिद्ध दूध पान करने से लिङ्ग में उपजे हुए रक्त को दूर करता है।

चक्र० द० मूत्रकृच्छ्र० चि०।

गुण—जल सींचने से जिस प्रकार वृक्षमूल में अंकुर बढ़ते हैं उसी प्रकार स्नेहसिंचन (तैलाभ्यङ्ग) से धातुओं की वृद्धि होती है। शिरा, मुख, रोमकूप तथा धमनी द्वारा तर्पण होता है। सुश्रु०। मनुष्य को उचित है कि प्रति दिन अभ्यंग अर्थात् तैल मर्दन करता रहे। क्योंकि इससे बुढ़ापा, थकावट तथा वातरोग नष्ट हो जाते हैं, दृष्टि निर्मल बनी रहती है, शरीर पुष्ट रहता है, निद्रा सुखपूर्वक आती है, त्वचा सुन्दर और दृढ़ हो जाती है। वा० सू० २ अ०। परन्तु इस तैल का प्रयोग सिर, कान और पैर में विशेषता से करता रहे। र० मा०। अभ्यंग वातरोगनाशक है तथा धातुओं की समता, बल, सुख, नींद, वर्ण मृदुता करता और दृष्टि को पुष्ट करता है। शिरोऽभ्यङ्ग अर्थात् शिर में तैल लगाने से शिर का तृप्त, केशों को दृढ़ और नेत्र को पुष्ट करता है तथा केशों को साफ करता, केशों के लिए उत्तम और धूलि प्रभृति द्वारा हुई केश की मलिनता को दूर करता है। मद० व० ३। अभ्यङ्ग का निषेध—जो मनुष्य कफ से ग्रस्त है, अथवा वमन विरेचन देकर शुद्ध किया गया है या जो अजीर्ण से पीड़ित है उसको तैल मर्दन न करे। वा० सू० २ अ०। (३) शिरमें

तैल लगाना। भा०। (४) दोषयुक्त मण के दोषशमनार्थ तथा उनको कोमल करने के लिए उपाय विशेष। सु० चि० १ अ०।

अभ्यंजनीय abhyanjaníya-हिं० वि० [सं०] (१) पोतने योग्य, लगाने योग्य। (२) तेल या उबटन लगाने योग्य।

अभ्यञ्जनम् abhyanjanam-सं० क्ली०, तैल (Oil)। हे० च०। तैल मर्दन, तैल लेपन, उबटन, रा० नि० व० १५।

अभ्यन्तः abhyantah-सं० त्रि० आतुर रोगी (Diseased affected, with sickness) अम०।

अभ्यन्तर abhyantara-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) मध्यम बीच। (Inner, Internal) (२) हृदय (Heart)। क्रि० वि० भीतर। अन्दर।

अभ्यन्तरवर्ती abhyantar-vartti-सं० त्रि० मध्यवासी।

अभ्यन्तरायामः abhyantaráyámah-सं० पुं० उक्त नाम का धनुस्तम्भ रोग विशेष, अन्तरायाम। यह एक प्रकार की वात व्याधि है जिसमें बलवान वायु कुपित होकर अँगुली, वक्ष, हृदय और गलदेश आदि में प्राप्त होकर वायु समूह को खींचकर मनुष्य को कोवत (कुबड़) झुका हुआ कर देता है, जिससे नेत्र स्तब्ध हो जाते हैं और डाढ़ें बैठ जाती हैं। लक्षण—अंगुली, गुल्फ (पांव की गांठ), पेट, हृदय, वक्षःस्थल और गल में रहने वाली वायु वेगवान होकर नसों के समूह को सुखाकर बाहर निकाल दे और जब उस मनुष्य के नेत्र स्थिर हो जावें, ठोड़ी जकड़ जाय, पसलियों में पीड़ा हो मुख से कफ गिरने लगे और मनुष्य आगे की ओर को झुक जाय तो वह बलवान वायु अन्तरायाम को उत्पन्न करता है अर्थात् तब उसे "अन्तरायाम वात व्याधि" के नाम से पुकारते हैं। मा० नि० धा० व्या०। देखो—

अभ्यमितः abhyamitah-सं० त्रि० आतुर, रोगी (Diseased.)। अम०।

अभ्यवकर्षणम् abh... -सं० क्लो० शल्य आदि अपरा आदि का उखाड़ना (निकालना)। [illegible]

अभ्यवहरणम् abhyava-haranam क्लो० भोजन (Eating, Food)

अभ्यवहारः abhyavaharah-सं० पुं० (Food.) रत्ना०।

अभ्यक्ष abhyaksha सं० त्रि० [illegible]

अभ्यान्तः abhyántah-सं० त्रि० [illegible] (Diseased.)। अम०।

अभ्याहारः abhyáhárah-सं० पुं० भोजन, आहार। ईटिंग (Eating.) चर्व्य (चबाने योग्य), चोष्य (चूसने योग्य), पेय (पान योग्य) और लेह्य (चाटने योग्य) भेद से चार प्रकार का होता है। [illegible] च्युएबल (Chewable,) [illegible] (Masticatible)। (२) Capable of being sucked. (३) To be licked. (४) Drinkable। [illegible]

अभ्यु abhyu-सं० पुं० मुनक्का बीज (Seeds of dried grapes.)

अभ्युदय abhyudaya-हिं० संज्ञा पुं० [illegible] [वि० अभ्युदित, आभ्युदयिक] (१) उद्भव, उत्पत्ति।

अभ्युदित abhyudita-हिं० वि० [सं०] (१) उगा हुआ। निकला हुआ। [illegible] प्रादुर्भूत। (२) दिन चढ़े तक सोने वाला

अभ्युषः abhyush-सं० पुं० रोटी (Bread) आ० सं० इं० डि०।

अभ्युक्षण abhyukshana हिं० संज्ञा [सं०] [वि० अभ्युक्षित, अभ्युक्ष्य] छिड़काव। सिंचन।

अभ्युक्षित abhukshita-हिं० वि० [सं०] (१) छिड़का हुआ। अभिसिंचित। [illegible] जिस पर छिड़का गया हो। जिसका अभिषेक हुआ हो।

अभ्युक्ष्य abhyukshya-हिं० वि० [सं०] छिड़कने योग्य।

[ऽ]: abhyúshah-सं० पुं० भ्रम्यांप। राररर कचाय आदि। (आट्रा० गं०) अम०। टो। श्रा० सं० ई० डि०।

abhram-सं०क्ना० } (१) मुस्ता,
abhra-हि० संज्ञा पुं० } नागरनाथा
(Cyparus Rotundus.)। (२) मेघ, बादल। क्लाउड (Cloud)-इं०। रा० नि० व० ६। (३) अभ्रक धातु टैल्क (Talc.)-इं०। रा० नि० व० १३। (४) आकाश। स्काइ (Sky.) एट्मॉस्फियर (Atmosphere.)-इं०। (५) स्वर्ण। सोना। Gold ऑरम (Aurm)-लें०।

कम् abhrakam-सं० क्लो० } (१)
abhraka-हि० संज्ञा पुं० } भद्रमुस्ता
नागरमोथा (Gyperus pertenuis.)। (२) कर्पूर। कैम्फर (Camphor)-इं० (३) सुवर्ण। ऑरम (Aurum)। (४) वेत्र, वेतस्वृक्ष (Calamus rotong.)। देखो—वेत्रसः। (५) अबरक धातु विशेष। भोडर। भोडल। भुडेल।

गिरिजं, अमलं (अ), गिरिजामलं, गौर्य्यामलं, (स्वामी) गिरिजा बीजं, गरजध्वजं, (कं), निर्मलं, (मे), शुभ्रं (ज), घनं, व्योम, अभ्रं, (र), अभ्र, भृङ्गं, अम्बरं, अन्तरीक्ष, आकाशं, बहुपत्र, खं, अनन्तं, गौरीजं, गौरीजेयं, (रा)-सं०। अभ्भर यं०। अनक, तल्क, अबरीतून, इस्नराज, कूकू'न, कीकबुल, अर्जु, सुनका. सुकलिस, अकु'स्बरूम, समग्र, गगन, जना हुलू म ल्व, -अ०। तल्क-इ० सितारहे ज़मीन-फ़ा०। उ०। अबरक-उ० माइका Mica-लें०। टैल्क, Talc, मस्कोवी ग्लास Muscovy glass, ग्लीमर Glimmser-इं०। भिगा-क्ना०। कौं०। किन्-सिं०। हिंगूल-गु०, मह०।

यह एक प्रकार का स्फटिकवत खनिज है। जिसकी रचना पत्राकार होती है और जिसके अत्यन्त पतले पतले परत या पत्र किए जा सकते हैं। यह बड़े बड़े ढोंकों में तह पर तह जमा हुआ पहाड़ों पर मिलता है। साफ़ करके निकालने पर इसका तह काँचकी तरह निकलती है। यह आग में नहीं जलता एवं लचीला होता तथा धातुवत् चमकीला रहता है। इसके पत्र पारदर्शक एवं मृदु होते और सरलता पूर्वक पृथक् किए जा सकते हैं। एक धार से दूसरी धार तक फाड़ने पर टूटने की अपेक्षा फटते हुए प्रतीत होते हैं। वैद्यक ग्रंथों में इसको महारस या उपरस लिखा है। परन्तु आधुनिक रसायन वाद के अनुसार यह न धातु है न उपधातु क्योंकि न इसमें धातु के लक्षण हैं और न उपधातु के, और न यह मौलिक तत्वों में से है।

उत्पत्ति स्थान—बहुधा यह पर्वतों पर पाया जाता है। हमारे देश में अभ्रक प्रायः श्वेत भूरा तथा काला निकलता है। सांरिया और भारतवर्ष में, बंगाल, राजपूताना, 'जैपुर' मद्रास नेल्लौर और मध्य प्रदेश आदि की पहाड़ियों में इसकी बड़ी बड़ी खानें हैं। अबरक के पत्तर कंदील इत्यादि में लगाते हैं। तथा विलायत आदि में भी भेजे जाते हैं। वहाँ ये काँच की टट्टी की जगह किवाड़ के पल्लों में लगाने के काम में आते हैं।

अभ्रक भेद

रस शास्त्रों में अभ्रक की चार जाति एवं वर्णानुसार इसके चार भेदों का उल्लेख पाया जाता है, जैसे—

ब्रह्मक्षत्रिय विट् शूद्र भेदात्तस्य चतुर्विधम्।
क्रमेणैव सितं रक्तं पीतं कृष्णं च वर्णतः॥

अर्थ—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र भेद से अभ्रक चार प्रकार का है उन चारों के क्रमशः सफेद, लाल, पीत और काले वर्ण हैं।

चारों वर्णों के भेद—

प्रशस्यते सितं तारे रक्तं तत्र रसायने।
पीतं हेम निकृष्णं तु गदे शुद्ध तथापि च॥

अर्थ—चाँदी के काम में सफ़ेद अभ्रक, रसायन कर्म में लाल, सुवर्ण कर्म में पीला और औषध कार्य में शुद्ध काला अभ्रक काम में लाना चाहिए।

कृष्णाभ्रक के भेद—

पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रं चेति चतुर्विधम्।
कृष्णाभ्रकं कथितं प्राज्ञस्तेषां लक्षण मुच्यते॥

अर्थ—पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र ये चार भेद काले अभ्रक के पंडितों ने कहा है। अब इनके लक्षण का वर्णन किया जाता है।

पिनाक के लक्षण—

मुंचत्यग्नौ विनिक्षिप्तं पिनाकं दलसंचयम्।
अज्ञानाद्भक्षणं तस्य महाकुष्ठप्रदायकम्॥

अर्थ—पिनाक अभ्रक अग्नि में डालने से अर्थात् धमन करने से दलसंचय अर्थात् पत्रों को छोड़ता है। अज्ञानवश खाने से यह महाकुष्ठ करता है।

दर्दुर के लक्षण—

दर्दुरस्त्वग्नि निक्षिप्तं कुरुते दर्दुरध्वनिम्।
गोलकान् बहुशःकृत्वातस्यान्मृत्युप्रदायकम्॥

अर्थ—दर्दुर अभ्रक अग्नि में डालने से मण्डूक की तरह शब्द करता है और भक्षण करने से पेट में गोले का रोग प्रगट करता एवं मृत्युकारक होता है।

नाग के लक्षण—

नागं तु नागवद्वन्ही फूत्कारं परिमुंचति।
तद्भक्षितमवश्यन्तु विदधाति भगंदरम्॥

अर्थ—नाग अभ्रक अग्नि में डालने से साँप के समान फुफकार मारता है। इसके खाने से अवश्य भगंदर रोग होता है।

वज्राभ्रक के लक्षण—

वज्रं तु वज्रवत्तिष्ठे न चाग्नौविकृतिं व्रजेत्।
सर्वाभ्रेषुवरं वज्रं व्याधिवार्धक्य मृत्युजित्॥

अर्थ—वज्राभ्रक अग्नि में डालने से वज्र के समान जैसा का तैसा रह जाता है और विकार को नहीं प्राप्त होता। यह सब में श्रेष्ठ है और व्याधि, बुढ़ापा एवं मृत्यु को दूर करता है।

यदं जनग्निं क्षिप्त न वह्नौ विकृतिं व्रजेत्।
वज्रं संज्ञंहितद् योज्यमभ्रं सर्वत्रनेतरत्॥

अर्थ—जो अभ्रक काला होता है तथा अग्नि में तपाने से विकार को नहीं प्राप्त होता, वह वज्राभ्रक है। यह सर्वत्र हितकारक और योग्य है। इसमें भिन्न अन्य प्रकार उत्तम नहीं।

इस शास्त्रोक्त वर्णन के विपरीत आज हमें पाँच प्रकार का अभ्रक प्राप्त होता है—श्वेत, अरुण, पीत, भूरा और काला। [illegible] कारण ही भिन्न नहीं, प्रत्युत प्रकृति [illegible] रचना ही एक दूसरे से सर्वथा भिन्न [illegible]

अभ्रक कोई मौलिक पदार्थ नहीं [illegible] अनेक मौलिकों का एक यौगिक है। [illegible] रसायन शास्त्रियों ने इस यौगिक से [illegible] यौगिक बनाने का प्रयत्न नहीं किया, [illegible] ने इसे रोगों में व्यवहार किया है। [illegible] अभ्रक को किसी रूप में भी खाने [illegible] जाता। हाँ इसके पत्रों का उपयोग [illegible] रसायन 'विज्ञानी यन्त्रों' में करते हैं। [illegible] आयुर्वेदज्ञों ने इसको खाने के लिए [illegible] बताया और इन्होंने ही इसको [illegible] कर इसके उक्त यौगिक तोड़कर नए [illegible] बनाए कि जिसे प्राणियों को रोग [illegible] देने पर वह बड़े लाभदायक सिद्ध [illegible] इसका उपयोग चल पड़ा।

(१) श्वेताभ्रक—(Musc[illegible] यह पत्राकार चाँदीवत् शुभ्र वर्ण का [illegible] सुहागे के साथ मिलाकर तीव्र [illegible] इसका आधे के लगभग भाग शैलक [illegible] cate.) नाम का नया यौगिक बन [illegible] काँच सा होता है, इसको हमारे [illegible] सत्त्व कहते हैं।

(२) अरुणाभ्रक या रक्ताभ्रक [illegible] pidolite.) यह अभ्रक श्वेत [illegible] अपेक्षा कम पत्राकार होता है। इसके [illegible] पत्र होते हैं और इसके साथ और [illegible] मिश्रित होते हैं। बहुधा यह अभ्रक [illegible] की अरुण खड़िया मिट्टी के साथ [illegible] जाता है। यह समग्र अभ्रकों से [illegible] है; क्योंकि इसमें रक्तरूपम् नामक [illegible] हुआ होता है। इसका संकेत सूत्र— [स्क (ऊ उ प्ल)·२] स्क (शै ऊ। [illegible]

(३) पीताभ्रक—(Cooke[illegible] अभ्रक में पांशुजम धातु नहीं होती [illegible] स्फट शैलाम्लिद का यौगिक होता है, [illegible] के स्थान पर शैलाम्लित होता है। [illegible]

[स्फ (ऊ उ) २] ३ (शै ऊ ३) २
पत्रक र कहरवी वर्ण का होता है।

(ख) भूराभ्रक—(Lepidomelane.)
यह भारतवर्ष में बहुत पाया जाता है।
में श्यामता लिए, भूरा होता है। प्रायः
में यही अभ्रक मिलता है। इसके पांच
से सात इंच तक बड़े पत्र देखे जाते हैं।
संकेत सूत्र—(उ पां) २ लो ३ (लो
३ (शै ऊ ५) ५

(ग) श्याम अभ्रक—(Biotite.)
दो भेद हैं। एक बृहद् पत्र युक्त, दूसरा
पत्र युक्त। सूक्ष्म पत्र युक्त श्याम अभ्रकको
यहां वज्र कहते हैं।

बृहद् पत्र युक्त अभ्रक का संकेत सूत्र—
(पां) (का लो) २ स्फ २ (शै ऊ ४) ३
छोटा श्याम अभ्रक—जो छोटे पत्र का
और जिसकी रचना प्रायः डलीके आकार
की है। इसकी और प्रथम की रासायनिक
में भी अन्तर है। संकेत सूत्र—(उपां)
(का लो) ३ का ३ स्फ (शै ऊ ३)
उष्मजन की १ मात्रा कम है, किसी में दो
ती है। जिसमें उष्मजन कम होता है वह
अग्नि पर रखने से नहीं फूलता। जिसमें
होता है वह फूलता है। जो अभ्रक नहीं
उसको वज्र संज्ञक कहते हैं और रस
में इसी को श्रेष्ठ माना है। भस्म के लिए
व्यवहार में लाना चाहिए।
भी है—

कृष्ण वर्णाभं कोटि कोटि गुणाधिकम्।
पृथुदलं वर्ण संयुक्तं भारतोधिकम्॥
समांच पत्रच तदभ्रं शास्तमीरितम्।

अर्थात्—कृष्णाभ्रक अर्थात् वज्र करोड़ों गुण
। (इसके लक्षण) जो चिकना, मोटे दल
सुन्दर वर्ण युक्त और बहुत भारी हो और
पत्र सहज मे अलग हो जाएँ, वह अभ्रक
है।

टिप्पणी—इस समय वैद्य तीन प्रकार के
भस्म के लिए काममें लाते हैं। श्वेत, भूरा
काला (यूनानी हकीम इनमें से श्वेत और
श्याम दो ही का उपयोग करते हैं)। तीनों अ-
भ्रकों में से श्वेत और भूरे ये दोनों शास्त्र परीक्षा
में पूरा नहीं उतरते। काले अभ्रक में से कोई
कोई ही इस परीक्षा में ठीक उतरता है।

ज्ञात रहे कि दर्दुर, नाग और पिनाक नाम-
धारी अभ्रकों में प्रयोग करने पर उपर्युक्त कोई
शास्त्रीय दुर्गुण दिखाई नहीं देता। रही गुण की
बात, प्रत्येक प्रकार के अभ्रक एक सा गुण नहीं
कर सकते, क्योंकि आप ऊपर देख चुके हैं कि
सबके यौगिक भिन्न भिन्न हैं। जब सबों की रासा-
यनिक रचना में अन्तर है तो जब उनकी भस्में
बनेंगी, उनकी रासायनिक रचना भी एक दूसरे
से भिन्न होगी। ऐसी दशा में गुणों में अन्तर
आना स्वभाविक बात है। पर इस कथन में कोई
महत्त्व नहीं कि पिनाक, दर्दुर, नाग नामक अ-
भ्रक अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं।

अभ्रक शोधन विधि

छोटेकणा का श्याम अभ्रक प्रायः बालू रेत आदिसे
मिश्रित होता है। अतएव भस्म बनाने से पूर्व
इसकी शुद्धि आवश्यकीय है। अन्यथा इससे
नाना प्रकार के रोगों के होने की अत्यधिक सम्भा-
वना रहती है। यथा—

सत्वार्थं सेवनार्थं च योजयेच्छोधिताभ्रकम्।
अन्यथाष्ट गुणं कृत्वाविकारोत्येव निश्चितम्॥

अर्थ—सत्व के वास्ते या सेवन के वास्ते शो-
धित अभ्रक लेना चाहिए। अन्यथा अवगुण कर
निश्चय विकारों को उत्पन्न करता है।

अशोधित अभ्रक की भस्म निम्न दोषों को
करती है।

पीडां विधत्ते विविधांनराणां कुष्ठंक्षयं पांडु गदं
चशोफम्। हृत्पार्श्व पीडांच करोत्यशुद्धमभ्रं हि
तद्वद् गुरुवह्नि हन्स्यात्॥

अर्थ—यह (अशुद्ध अभ्रक) मनुष्यों को
अनेक प्रकार की पीड़ा, कोढ़, क्षय, पांडु सूजन
और हृदय एवं पार्श्वशूल आदि रोगों को करता
तथा मारी है और जठराग्नि को मन्द करने
वाला है।

अतः अभ्रक शोधन की कतिपय सरल एवं
उत्तम विधियों का यहां उल्लेख किया जाता है—

(१) अभ्रक को तपा तपा कर काँजी या गोमूत्र या त्रिफला के क्वाथ में विशेष कर गोदुग्ध में सात सात बार अथवा तीन तीन बार बुझानेसे अभ्रक शुद्ध होता है।

अभ्रक पत्रों को लेकर गाय के धारोष्ण दुग्ध में मलें और सुखाकर फिर मलकर सुखाएँ। तीन बार ऐसा करने से अभ्रक नवनीत के समान कोमल हो जाएगा।

(२) अभ्रक को तपातपा कर २१ बार काँजी में बुझाने से अभ्रक शुद्ध होता है।

(३) अभ्रक के पृथक् पृथक् पत्र कर और तपा तपा कर काँजी में बुझाएँ। बाद उन पत्रों सहित काँजी को तेज धूप में धर दें। १५–२० दिन या एक मास बाद काँजी को फेंक, दूसरे शुद्ध जल से धो लें। अभ्रक शुद्ध हो जायगा।

(४) अभ्रक को तपा तपा कर सात बार सम्भालू के रस में बुझाएँ तो अभ्रक के गिरि दोष की शांति हो।

(५) अभ्रक को तपा तपा कर बारंबार बेर के काढ़े में बुझाएँ। पीछे सुखाकर हाथों में मर्दन करें तो धान्याभ्रक से भी उत्तम हो।

इस प्रकार शुद्धि क्रिया के पश्चात् इसके सूक्ष्म चूर्ण बनाने के लिए धान्याभ्रक क्रिया करें।

धान्याभ्रक की निरुक्ति

चूर्णाभं शालि संयुक्तं वस्त्र बद्धं हि कांजिके।
निर्यातं मर्दनात्तद्धान्याभ्रमिति कथ्यते॥

अर्थ—चूर्ण किए हुए अभ्रक के साथ धानों को कपड़े में बांधकर कांजी में रख दें और उसे मर्दन करें। इससे जो रेत सा अभ्रक चूर्ण निकले उसे धान्याभ्रक कहते हैं।

धान्याभ्रक करण विधि

अभ्रक को चूर्णकर धान (चौथाई भाग) मिला दें, और कम्बल में ढीला बांधकर तीन रात तक काँजी में रखें। फिर इसे ज़ोर से मलें। इस प्रकार मलकर पानी में डुबाकर फिर मलें, फिर डुबाएँ। इस प्रकार रगड़ने से अभ्रक मुलायम होकर शीघ्र टूटता रहता है और उसके छोटे छोटे कण होकर कम्बल से निकल [illegible] उस नीचे बैठते रहते हैं। इस तरह अभ्रक [illegible] में बारीक रूप से निकाल लें। जल [illegible] जाने पर नितार दें और नीचे बैठे रेत [illegible] धान्याभ्रक को मारण के काम में लाएं।

अभ्रक को कोमल करने की विधि—

अभ्रक के पत्रों को अलग अलग करके [illegible] में रखें। इसके ऊपर से कुकरौंधे का [illegible] भरें कि वह डूब जाय और ४–५ दिन [illegible] रहने दें। तदन्तर उसके एक मोटी थैली [illegible] कर उसमें कौड़ियां डालें और थैली का [illegible] खूब रगड़ कर धोएँ। अभ्रक रेशमवत् [illegible] मुलायम हो जायगा। उपर्युक्त समा[illegible] के हो जाने के बाद इसकी भस्म प्रस्तु[illegible]

श्याम अभ्रक भस्म विधि

१—धान्याभ्रक किए हुए श्याम[illegible] कुकरौंधे के रस में थोड़ी सज्जी [illegible] मिलाकर माने, फिर टिकिया बनाकर [illegible] धरें और कपरौटी कर गजपुट की [illegible] एक बार में ही अभ्रक भस्म होगा। [illegible] १० या १६ बार करने से निश्चन्द्र [illegible] अभ्रक भस्म प्रस्तुत होगा। ३० पुट या [illegible] देने पर उत्तम प्रकार की भस्म निर्मित [illegible] गुण वृद्धि के लिए १६ पुट आक [illegible] धतूर के पत्तों के रस की, धूहर के [illegible] के काढ़े की, पीपल वृक्ष के अन्तर [illegible] की, त्रिफले के काढ़े की, पीपल [illegible] छाल के काढ़ेको, बकरे के मूत्र की, [illegible] की दें। और क्रमशः १६–१६ [illegible] टिकिया बना शराव में कपरौटी पुट [illegible] में फूंकते जाएँ १००० पुट देकर मा[illegible] लें या १०० पुटी बनाएं। यह [illegible] अचूक सिद्ध होगी।

२—शुद्ध अभ्रक को कसौंदी के [illegible] करके संपुट में रखकर गज पुट की [illegible] शीतल होने पर निकाल कर पुनः [illegible] में खरल कर टिकिया बनाकर [illegible] अग्नि दें तो उत्तम भस्म बन जाती है।

३—इसी तरह नागरमोथे के क्वाथ में छोटेछोटे टुकड़े कर अग्नि देते रहने से दस पुट में अभ्रक भस्म बन जाती है।

४—इसी तरह अभ्रक को चौलाई पंचांग के रस में घोट घोट कर दस बार अग्नि देने से उत्तम भस्म बन जाती है। प्रतिवार वनस्पति रस छोड़कर अभ्रक खूब घोटना चाहिए जितना अधिक घुटेगा उतना ही शीघ्र चन्द्रिका रहित अभ्रक हो जायगा।

५—मिट्टी रेता रहित अभ्रक के सूक्ष्म सूक्ष्म कण लेकर उनको अर्क दुग्ध में घोटकर रुपये रुपये बराबर टिकियाँ बनाएँ और धूप में सुखाकर अर्क पत्र में लपेट, सम्पुट में रखकर खूब अच्छी गजपुट की अग्नि दें। स्वांग शीतल होने पर निकाल पुनः उक्त अर्क दुग्ध में अच्छी तरह घोटकर अग्नि दें। सात पुट इसी प्रकार अर्क दुग्ध की और तीन पुट वट-जटा क्वाथ की दें। प्रत्येक बार में अग्नि की मात्रा काफ़ी होनी चाहिए। दस पुट में चंद्रिका रहित उत्तम लाल वर्ण की भस्म बन जाती है। यह भस्म अच्छी बनती है और काफ़ी गुण करती है।

६—अभ्रक को पानके रस में घोटकर टिकिया बनाकर तीन भावना अग्नि सहित दें। फिर तीन भावना हुलहुल के रस की दें, फिर तीन वट-जटा क्वाथ की, फिर तीन मूसली के काढ़े की, फिर तीन गोखरू के काढ़े की, फिर तीन कौंच के काढ़े की, फिर तीन सेमल की मूसली की, फिर तीन तालमखाने के काढ़े की, फिर तीन लोध पठानी की, इसके पश्चात एक भावना गोदुग्ध की, एक दधि की और एक घृत की, एक शहद की, एक खांड की देकर पीसकर रक्खें। यह ऊपर का उत्तम पौष्टिक अभ्रक तैयार होता है।

७—वट दुग्ध, स्नुही दुग्ध, अर्क दुग्ध, नागर मोथा, मनुष्य मूत्र, वटांकुर, बकरे का रक्त, इन सब वस्तुओं की भस्म से १२–१२ भावना दें तो उत्तम अरुण वर्ण की भस्म बनती है।

८—धान्याभ्रक में आधा भाग गंधक एवं आधा भाग मजी का देकर कुकरौंधे के रस में घोट टिकिया बनाएँ और गजपुट विधि से फूँकें तो एक बार में ही भस्म निश्चन्द्र होगी।

९—धान्याभ्रक में हरिताल, आँवले का रस और सुहागा मिलाकर घोटें पीछे टिकिया बना कर अग्नि दें। इस प्रकार ६० अग्नि देने से सिंदूर के समान लाल भस्म हो प्रस्तुत होगी। यह भस्म क्षयादि सकल रोगों का नाश करती है।

१० - सहस्र पुटी अभ्रक क्रिया—

सर्व प्रथम वज्राभ्रक खरल में डालकर कूटें। पीछे उसको अग्नि में तपाकर गोदुग्ध में बुझाएँ लोह पात्रमें घृत डाल उसमें इस अभ्रक को डाल मन्दाग्नि से पचाएँ, तदनन्तर धान से आधा अभ्रक लें दोनों को कम्बल या गाढ़ा या गजी की थैलीमें रख भिगोदें। फिर एक बड़े पात्र (कठौती, परात आदि) में उस अभ्रक को डाल थैली को खूब मसलें, दो पहर बाद जब सम्पूर्ण अभ्रक निकल कर पानी में आजाय तब पानी को नितार अभ्रक को निकाल लें। इस प्रकार करने से अभ्रक की शुद्धि एवं धान्याभ्रक होता है।

सहस्र पुट देने के लिए ६० वनस्पतियों का उल्लेख है जिनमें से प्रत्येक की १७–१७ भावना देने पर सहस्र पुटी भस्म तैयार होती है। औषधियाँ निम्न हैं—

आक दुग्ध, वट दुग्ध, थूहर का दूध, घीकुवार का रस, अपामार्ग की जड़ का रस, कुटकी, मोथा, गिलोय, भाँग, गोखरू, कटेरी, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, सफेद सरसों, खरमञ्जरी, बड़की जटा, बकरेका रुधिर, वेल, अरणी, चित्रक, तेंदू, हरड़, पाढल की जड़, गोमूत्र, आमला, बहेड़ा, जलकुम्भी, तालीसपत्र, मुसली, अडूसा, असगन्ध, अगस्तिया का रस, भाँगरा, केले का रस, सप्तपर्ण, धतूरा, लोध, देवदारु, तुलसी, दोनों दूब, (श्वेत वा हरित दूर्वा) कसौंदी, मरिच, अनार, दाना का रस, काकमाची (मकोय), शंखपुष्पी, तालखड़, पान का रस, सोंठ, मण्डूकपर्णी, (ब्राह्मी), इन्द्रायण, भारंगी, देवदाली, कैथ, शिवलिंगी, कडुवली, ढाक का रस,

तोरई, मूषकपर्णी, जवासा, मचेकी, कलौंजी, और नेत्रपर्णी। कोई कोई ये ओषधि विशेष कहते हैं—पंचांगुल का रस, टुंटक, गुड़, सुहागा, मालती, मसपर्णी (सतवन), नागवला, अतिबला, महाबला, सतावर, कौंच की जड़ का रस, गाजर (गर्जर), प्याज, लहसुन, उटंगण, अमर बेल, हिल मोचिका, तुन्दी, पाताल गरुड़ी, जटामांसी, दूध, दही, घृत, शहद, खांड, धाय और पातंकिका।

अभ्रक को खरल में डालकर उपर्युक्त ओषधियों के रस में घोटें। जब सूख जाय तब उसने उपलों की आग में फूंक दें। फिर आग में से निकाल कर घोटें और अग्नि दे। इस प्रकार प्रत्येक ओषधि के १६-१६ पुट देनी चाहिए। जो ओषधि रस योग्य हो उसका रस डालें और क्वाथ योग्य के क्वाथ की पुट दें। यह अभ्रक भस्म निश्चन्द्र (चमक रहित) लाल होगा।

गुण—यह अमृत के समान दिव्य रसायन है और अनेक अनुपानों के संयोग से देह को अजर अमर करता है। अतएव मनुष्य को इस श्रेष्ठ भस्म का सेवन करना चाहिए। सेवन करने वाले को हजारों गुण करे यह समस्त रोगों का शत्रु प्रसिद्ध है।

नोट—(१) अभ्रक भस्म के रंग के लाल करने की विधि—नागवला, नागरमोथा, वट दुग्ध, हल्दी का पानी, मजीठका पानी इन समस्त का या एक एक का या केवल वटजटा प्ररोह के काढ़े की भावना दें तो गजपुट देनेसे रक्तवर्ण की भस्म होगी।

अभ्रक में पुट देने के गुण—

अठारह पुट का अभ्रक वातनाशक, सुषीम का विनाशक और २४ का कफ, प्रमेह और सूजन का नाश करता है तथा अम्ल पित्त और आमवातादि हस्ति रूप रोगों को मारने के लिए सिंह रूप है। सौ पुट के उपरांत अभ्रक बीज संज्ञा को प्राप्त होता है। अबीज अभ्रक वीर्य, पराक्रम तथा कांति का कारण है और देह को धारण करता है। यह और स्वामी का मत है।

उक्त भस्मों के रसायनिक रूप—

सभी श्याम अभ्रक अग्नि संयोग में श्वेत ऊष्मिद होते रहते हैं। अग्नि देने पर काले, लो और स्फटिकम् धातुएं ऊष्मिद होती हैं। [illegible] वत का यौगिक भी टूटकर ऊष्मेत हो जाता और जैसे जैसे ऊष्मेत बनता जाता है वैसे अभ्रक का वर्ण लाल होता चला जाता है। यदि इसके उक्त यौगिक में अंतर न आए तो इस का वर्ण लाल नहीं होता कई बार यौगिक का यौगिक टूट जाता है और इसका उत्सर्जन हो जाता है और ऊष्म जन का स्थान कज्जल ले लेता है और ऊष्मजन का स्थान कज्जल ले लेता है उस अवस्था में अभ्रक का वर्ण श्यामतायुक्त अरुण हो जाता है। जब शैल कज्जलेत [illegible] तो इस यौगिक का विच्छेद नहीं होता। तब तक अभ्रक उसी वर्ण में बना रहता है। कभी कभी उदपांश वेत ऊष्म जन का संयोग [illegible] पांशुजम का यौगिक तीक्ष्ण क्षार में भी [illegible] हो जाता है। यह रूप कासमर्द रस में [illegible] बनाने पर ही देखा जाता है और [illegible] में बनाने पर पांशुज तीक्ष्ण क्षार नहीं [illegible] अभ्रक के उक्त लोहकांत स्फटिकादि के [illegible] कई रोगों में अत्यन्त लाभ करते हैं। और [illegible] ज्वर किसी शारीरिक अंग की विकृति [illegible] कारण स्थिर रूप से बना रहता हो उस [illegible] में यह अभ्रक आन्तरिक विकृत को दूर करते [illegible] शरीर की बड़ी सहायता करता है। (आ० वि० भा० १ सं० ७)।

श्वेत अभ्रक का सुलायक—

१—हिना सुर्ख बारह तो० को [illegible] पानी में तर करें। प्रातः उसका [illegible] ६ तो० धान्याभ्रक को उस पानी के [illegible] तक खरल करें कि उसकी चमक [illegible] फिर छोटी इलायचीका दाना, वंशलोचन, मुक्ता श्वेत प्रत्येक ३ तो० एक एक कर [illegible] करके खरल करते जाएं। पुनः [illegible] को चार पहर तक खूब घोटकर रख दें।

मात्रा—१ मा०। गुण—[illegible]

लता, प्रमेह (शुक्र), और पूयमेह (सुजाक) के लिए अतीव गुणकारी और परीक्षित है। (मुहीयह)।

२—नौसादर १ तो०, फिटकरी १॥ मा०, अभ्रक २॥ तो०, नौसादर और फिटकरी को १ छ० पानी में घोलकर इसमें अभ्रक के बारीक पत्र को तर करें और रख दें। १ घंटा बाद उसे उड़े से कूंडे में यहाँ तक रगड़ें कि दूधकी तरह सफेद हो जाए फिर उसमें बहुत सा पानी डाल दें। जब अभ्रक तलस्थायी हो जाए तब पानी को निकाल दें। और ताजा पानी डालें, इसी तरह बारंबार करें जिससे जल में नौसादर आदि का स्वाद न रहे। फिर सुखाकर रख दें।

गुण—उष्ण प्रधान ज्वर यथा पैत्तिक व आंत्रिक में १ मा० शर्बत अनार के साथ दिन में तीन बार खिलाएं। बालक को २ रत्ती से ४ रत्ती तक दें। अनेकों बार का परीक्षित और सदा से प्रयोग में आ रहा है। (रफ़ीक़)।

६—अभ्रक को कत्तरी से कतर कर रात्रि में अम्ल दधि में तर करें। प्रातः काल जल में धोकर काकजंघा बूटी के स्वरस में एक प्रहर खरल करें। धूल की तरह हो जायगा।

गुण—मूत्र प्रणाली के रोग, सूजाक, रक्त प्रमेह, रक्त निष्ठीवन, नासारक्त स्राव, पुरातन कास, श्वास कष्ट, कुकुर खांसी, विविध उष्ण प्रधान ज्वर, शोथ, जलोदर, यकृत्प्रदाह, प्लीह शोथ, शुक्र प्रमेह और सैलान के लिए अनेकों बार का परीक्षित है।

मात्रा व सेवन विधि—१ रत्ती से २ रत्ती तक मक्खनमलाई या पान के पत्र वा कोई अन्य उपयुक्त औषध के साथ सेवन करें (म.ख्ज़न)

श्वेत अभ्रक भस्म विधि

१—श्वेताभ्रक का चूर्ण करके अभ्रकके बराबर शोरा और गुड़ मिलाकर खूब कूटें और कूट कूट कर टिकिया बना सम्पुट में रखकर गजपुट की अग्नि दें। एक पुट में अभ्रक की श्वेत भस्म बन जाती है। यदि एक बार में कुछ कसर रह जाय तो इसी तरह दूसरी बार करने पर अच्छी भस्म बन जाती है।

नोट—श्वेत अभ्रक में न तो लोह होता है न कांत। पांशुजम् स्फटिकम् और शैलिका के यौगिक होते हैं इसको जब शोरे के साथ फूंका जाता है तब पांशुजम् धातु कज्जलोत्सेत् नामक यौगिक में और स्फटिकम् ऊष्मेत् में मिल तथा शैलिका कज्जलोत्सेत् में मिल जाते हैं। यह भस्म इतनी उपयोगी नहीं। यह बहुत कम लाभ करती है।

मृत भस्म की परीक्षा

अभ्रक की भस्म जब चमक रहित अर्थात् निरचन्द्र तथा काजल के समान अत्यन्त बारीक हो तब उसकी ठीक भस्म हुई जाननी चाहिए अन्यथा नहीं। निरचन्द्र भस्म को ही काम में लाना चाहिए क्योंकि यदि चमकदार हो तो वह विष के समान प्राण का हरण करने वाला और अनेक रोगों का कर्ता है। कहा भी है—

मृतं निरचन्द्रतां यातं मरणं चामृतोपमम्।
सश्चेद्रं विषवद् ज्ञेयं मृत्युकृद्धृ रोगकृत्॥

अमृतीकरण

त्रिफला का काढ़ा १६ पल, गोघृत ८ पल, मृत अभ्रक १० पल इनको एकत्र कर लोहे की कड़ाई में मन्दाग्नि से पचाएं। जब जल और घी जल जाएं केवल अभ्रक मात्र शेष रह जाए तब उतार शीतल कर रख छोड़ें और योगों में बरतें। कोई कोई आचार्य केवल घृत से ही अमृतीकरण करना लिखते हैं। यथा—

तुल्यघृतं मृताभ्रेण लोहपात्रे विपाचयेत्।
घृतं जीर्णं ततश्चूर्णं सर्व कार्येषु योजयेत्॥

अर्थ—अभ्रक की भस्म समान गोघृत लेकर लोह की कड़ाई में चढ़ा उसमें अभ्रकको पचाएं। जब घृत जलकर अभ्रक मात्र रह जाए तब उतार कर सब कार्यों में योजित करें।

अभ्रक के गुणकर्म तथा प्रयोग

अभ्रक की भस्म विभिन्न विधियों द्वारा प्रस्तुत कर अथवा उचित अनुपान भेदसे प्रायः सभी प्रकार की सर्द व गर्म बीमारियों में व्यवहृत होती है। उक्त अवसर पर यह प्रश्न उठाना व्यर्थ ही नहीं, प्रत्युत अपनी अज्ञानता का सूचक है, कि विभिन्न

अनुपान जिनके साथ ऐसी भस्में प्रयोग में लाई जाती हैं, यदि उनसे कोई लाभ होता हो तो वह उसी अनुपान का प्रभाव होता है। भस्म नाममात्र को प्रभावकारी मानी जाती है। परन्तु अनुभव इस बात का विश्वास दिलाता है कि उस अवस्था में जब भस्म संग में न हो तब, अनुपान की इतनी अल्प मात्रा का शरीर पर किसी प्रकार का प्रगट प्रभाव नहीं होता। अस्तु, यह भस्म का ही गुण है कि इतनी अल्प औषध का प्रभाव सम्पूर्ण शरीर में पहुँचा देता है। गोया किसी वस्तु की शुद्ध भस्म एक ऐसी रसायन है जो मुख में डालते ही सम्पूर्ण शरीर के नस व नाड़ियों में व्याप्त हो जाता है और अपने स्वाभाविक एवं मौलिक गुणधर्म के अतिरिक्त जो उसमें अन्तर्निहित है प्रत्येक उस औषध के प्रभाव को जिसमें वह भस्म किया गया है या जो अनुपान रूपसे प्रयोग की जा रही है, सम्पूर्ण शरीरमें विशेष कर रोगस्थलपर अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक एवं स्थायी रूपसे पहुँचा देता है। जो दवा सेरों खाने से तब कहीं जाकर शरीर में अपना प्रभाव प्रगट करती है वह एक दो मा० की मात्रा में भस्म के संग योजित करने से तत्क्षण सेरभर औषध के प्रभाव से भी अधिक प्रभाव प्रगट करती है। पुनः चाहे वह प्रभाव उक्त औषध का ही क्यों न हो, पर औषध की इतनी अल्प मात्रा और प्रभाव की उस तात्कालिक शक्ति को देखकर प्रत्येक न्यायग्राही व्यक्ति यह निर्णय कर सकता है कि यह प्रभाव भस्म का ही है। क्योंकि यदि उक्त प्रभाव उस औषध का होता तो भस्म की अनुपस्थिति में भी इतनी अल्प मात्रा में प्रगट होता। परन्तु वास्तव में ऐसा है नहीं। अतः यह सिद्ध हो गया कि उपर्युक्त सम्पूर्ण चमत्कार उक्त भस्म के ही हैं जो उक्त औषध के साथ सम्मिलित होकर उसके प्रभाव को सौगुना कर दिया।

फलतः अभ्रक की भस्म को उपर्युक्त अनुपान द्वारा प्रत्येक सर्द व गर्म वा परस्पर विरुद्ध (द्वंद व्याधियों)में तुरन्त सफलता पूर्वक बरता जासकता है। केवल योग्य एवं व्यवहार कुशल होने की आवश्यकता है। इसके विपरीत भस्मों की तरह इसके द्वारा किसी प्रभाव प्रगट होने की आशंका नहीं एक व्यक्ति में प्रत्येक ऋतु, अवस्था [illegible] लिए इसका निर्भय एवं निरापद [illegible] जा सकता है।

आयुर्वेद के मत से—

अभ्रक भारी, शीतल, बल्य है [illegible] प्रमेह और त्रिदोष नाशक है। मर्द० [illegible] रसायन, स्निग्ध है। और बल वर्धक है। राज०।

कषेला, मधुर, शीतल, [illegible] बद्धर्धक है। प्रयोग—यह त्रिदोष, [illegible] कोढ़, प्लीहोदर, गाँठ, विषविकार को दूर करता है।

मृत अभ्रक के गुण

अभ्रक की भस्म रोगों को [illegible] करती, दृढ़ करती, वीर्य बढ़ाती, और शत की संभोग की शक्ति प्रदान [illegible] दीर्घायु और सिंह के समान पराक्रम [illegible] पैदा करती है। निरन्तर मृताभ्रक का सेवन [illegible] के भय को भी दूर करता है।

श्री पार्वती जी का तेज अर्थात् [illegible] अमृत है, वात, पित्त और कफ का [illegible] है। बुद्धि को बढ़ाता, बुढ़ापे को [illegible] वृष्य (वीर्य कर्त्ता) है। आयु को [illegible] कर्त्ता एवं चिकना है। रुचिकर्त्ता, दीपन और शीत वीर्य है। [illegible] साथ सकल रोगों का दूर करता [illegible] बाँधता है।

आयुष्य का स्तम्भन करता, [illegible] को दूर करता, बल तथा आरोग्य [illegible] और महाकुष्ठ को दूर करता है। सब रोगों में बर्तना चाहिए, क्योंकि पारे के समान गुण है। [illegible] इसको २ रत्ती की मात्रा में [illegible] सिवाय बुढ़ापे और मृत्यु का [illegible] नहीं है।

…तभूक कामदेव और मन को बढ़ाता है, …, वाही, श्वास, भगंदर, प्रमेह, मूत्र, पित्त, …, खाँसी और पथ आदि रोगों में अनुपान के … इसका सेवन करें।

औषध-निर्माण—अभ्रक, कल्क, अभ्रवटिका, …शनि रसः, ज्वरारि (अभ्रम), अग्नि कुमार … कन्दर्पकुमाराभ्र, लक्ष्मीविलास रस, महा-…ी विलास रस, हरिशंकर रस, अर्जुनाभ्र, …ाभ्र, बृहत् चन्द्रामृत रस, ज्वराशनिलौह, … आमारिलौह, बृहत्कञ्चनाभ्र, मन्मथाभ्र रस, … गलित कुष्ठारि रस इत्यादि।

प्रकृति—२ कक्षा में शीतल और ३ कक्षा में …। हानिकर्त्ता—प्लीहा व वृक्क को। दर्प-…क कतीरा, शुद्ध मधु, रोगन और करफ्स के …, प्रतिनिधि—तीन कौमूलिया समान भाग … कम। मुख्य गुण—सार्वांगिक रक्तस्थापक …।

यूनानी ग्रंथकार—इसकी भस्म को सम्पूर्ण …त जन्य मस्तिष्क रोगों, वात नैर्बल्य, उत्तमांगों … निर्बलता, कामायमान, श्वास कष्ट, काम, … निष्ठीवन, रक्तपित्त, अधिक रज (प्रदर) व …न्य निर्बलता, शुक्रमेह तथा पूयमेह भेद, … मूत्रालीय विकार, समग्र प्रकार … ज्वरों एवं राजयक्ष्मा व उरःक्षत में …भदायक मानते हैं। प्रत्येक अन्तः व्रण का …रणकर्त्ता; कामशक्ति वर्द्धक, शुक्र को गाढ़कर्त्ता …। इसकी भस्म उपयुक्त अनुपान के साथ हर … रोग के लिए लाभदायक है। इसका प्रयोग …रीरिक निर्बलता और यक्ष्म रोगों में विशेष …प से होता है। मि० ख०।

…व्यमतानुसार अभ्रकके प्रभाव—यह किसी …ह कीटघ्न (संक्रमण हर माना जाता है। … रोजेनहेम (Rosenheim) और एरमन …hmann (Deut. Med. woch, …0. Jan. 1910) के मतानुसार, एलुमिनम् …सिलिकेट जब इसका मुख द्वारा प्रयोग होता है, …ब आमाशयिक रसमें लवणाम्ल की आधिक्यता …के सहयोग से उसमें प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है जिसमें सिलिसिक एसिड और एल्युमिनियम क्लोराइड बनजाता है, और जिसमें से अन्तिम अर्थात् एल्युमिनियम क्लोराइड का आमाशयिक श्लैष्मिक कला पर ठीक बिस्मथ की तरह आवरक व रक्षक प्रभाव होता है। इस बात की परीक्षा करना भी अत्यंत उचित होगी कि आया औषध गीजित अभ्र का प्रभाव भी जो कि एक सिलिकेट ही है आमाशय पर उसी प्रकार होता है; क्यों कि यह सदैव अम्लाजीर्ण और आमाशयिक क्षत में लाभ प्रद पाया गया है। उदाहरणतः विद्याधराभ्र (Jour: Ayur: july 1924.) मांसपेशी यकृत, प्लीहा, लसीका, और सेल आभ्यन्तरिक रसों में तथा विभिन्न शारीरिक मलों यथा मूत्र विष्ठा और स्वेद में भी सिलिसिलिक एसिड विभिन्न प्रतिशतों (·८१ प्रतिशत से कुछ चिन्ह तक) में पाया जाता है। आयुर्वेद में मृताभ्र परिवर्तक और सार्वांगिक बल्य कहा गया है। साधारणतः यह धातु सेलों की संवर्तक क्रियाओं का उत्तेजक भी कहा गया है यह कामोद्दीपक रूप से भी प्रयोग किया जाता है। यह त्रिदोषघ्न और उनकी साम्यस्थिति का स्थापक ख्याल किया जाता है। धान्याभ्र बल्य और कामोद्दीपक माना जाता है। अभ्रक के योग सामान्यतः स्तंभक बल्य, कामोद्दीपक और परिवर्त्तक होते हैं। अभ्रकल्क, परिवर्त्तक, और स्वास्थ्य पुनरावर्तक है।

उपयोग—अभ्रक की भस्म रक्ताल्पता, कामला पुरातन अतिसार, प्रवाहिका, स्नायविक, दुर्बलता, जीर्णज्वर, प्लीह विवर्द्धन, नपुंसकता, रक्तपित्त और मूत्र सम्बंधी रोगों में लाभप्रद है। इसके अति-रिक्त इसे शहद और पिप्पली के साथ देने से श्वास, अजीर्ण, (Hecticfe fever) यक्ष्मा, व्रण, (Cachexia) आदि को नष्ट करता है संकोचक रूप से इसे वातातिसार में अधिक तर दिया जाता है। परिवर्तक रूप से इसे ग्रंथि विवर्द्धन में उपयोग किया जाता है। साधारणतः इसे २–६ ग्रेन की मात्रा में शहद के साथ दिन में दो बार वर्ता जाता है। थाइसिस (यक्ष्मा)

में प्रतिदिन दो बार २-३ ग्रेन तक शहद या ताजे वासक स्वरस के साथ देने से लाभ होता है इं० मे० मे० -

अभ्र-कल्पः abhra-kalpah--सं० क्ली० अभ्र की निरचन्द्र भस्म, आमला, त्रिकुटा, विडंग प्रत्येक समान भाग लेकर भाङ्गरे के रस अथवा जल से दो पहर तक खरल में बारीक घोटें, गोलियां बना फिर साया में सुखा लेवें। मात्रा-१ मा० । गुण—इसकी १ गोली १ वर्ष तक रोजाना खावें, दूसरे वर्ष २ गोलियां रोजाना, इसी तरह तीसरे वर्ष ३ गोलियां रोजाना लेवें, इस प्रकार तीन वर्ष पूरे होने पर यह अभ्रक का प्रयोग पूरा हो जाता है। इस योग में ३ वर्ष में जो मनुष्य ४०० तो० अभ्रक खा जाता है वह वज्रवत् दृढ़ शरीर वाला होजाता है। इसके तीन ही महीने के प्रयोग से रक्तविकार, क्षय, असाध्य दमा, ५ प्रकार की खांसी, हृदयशूल, संग्रहणी, बवासीर, आमवात, शोथ, भयानक पांडु, वात, पित्त, कफ के रोग, और १८ प्रकार के कुष्ट दूर हो जाते हैं। रस० यो० सा०।

अभ्रक-कल्प abhraka-kalpa सं० पुं० जो अत्यन्त काला तथा अत्यन्त चिकना, काले सुरमे के तुल्य, वज्राभ्र पत्थल आदि दोषों से रहित शुद्ध हो ऐसे अभ्रक को लेकर बुद्धिमान वैद्य एक दृढ़ मिट्टी के पात्र में रख चार या पांच दिन तक कड़ा पुट देवें, इसी तरह चौलाई के रस में पीस पीस कर पांच पुट पुनः देवें। इसी तरह पूर्वोक्त क्रम से आमला, सोंठ, मिर्च, पीपल, और वायविडंग के योग से पीस पीस चन्द्रिका रहित करें। पुनः जब चन्द्रिका रहित हो जावे तो अंगूठा के अग्र भाग से पीड़ित कर गोलियां बनाय छाया में शुष्क कर रक्खें। इसमें से एक एक गोली निरन्तर वर्ष पर्यन्त खावें। दूसरे वर्ष में दो गोली निरन्तर खावें, इसी तरह एक एक गोली बढ़ाकर ४०० तोले अभ्रक सेवन करें तो शरीर बलवान हो और वज्रतुल्य दृढ़ हो इसमें संशय नहीं है। इसके तीन महीने के सेवन से रक्त रोग, क्षय, भयङ्कर पाँचो खाँसी, हृदय शूल, संग्रहणी, वात, मूत्रन, भयंकर पांडु, वात, पि[illegible] पैदा हुए मृत्यु तुल्य महा वात व्याधि, कुष्ठ इन्हें उचित पथ्य में यह [illegible] करता है। धन्व० सेन० सं०।

अभ्रक गुटिका abhraka-guṭikā-[illegible] शुद्ध पारद, शु० गंधक, शु० विष, सुहागा, कान्तिसार भस्म, अजमोद, तुल्य भाग, अभ्रक भस्म सर्व तुल्य चित्रक के क्वाथ में एक दिन खरल [illegible] प्रमाण गोलियां बनावें, इसके एक [illegible] सेवन करने से संग्रहणी दूर होती है। सा०। संग्र० चि०।

अभ्रक सन्धानम् abhraka sandh[illegible] -सं० क्लो० उत्तम शुद्ध अभ्रक लेकर वरुण त्वक, अदरख, दृढ़ोत्पल (१ -यं०) मिश्री, अपामार्ग, वच, भांगरा, [illegible] चौलाई, गिलोय, सूरण, पुनर्नवा, इनसे पृथक पृथक भावना दें। पुनः तीक्ष्ण [illegible] शुष्क करें, पुनः इसमें गिलोय सत्व [illegible] पीपल ४ तो०, और शुद्ध पारद, [illegible] सोंठ, मिर्च, पीपल, अभ्रक तुल्य लेकर को मूर्च्छा शहद, घृत से कर पुन: [illegible] त्रिकुटा के चूर्ण से मर्दन कर उत्तम [illegible] में मुँह बन्द कर रक्खें। मात्रा—[illegible] गुण—इसे एक रत्ती वृद्धि क्रम से [illegible] आदि, मध्य, और अन्त में जल तथा [illegible] से लें, और शुद्ध घृत, दधि, दूध, [illegible] शाक और प्राचीन अन्न का सेवन करें [illegible] पित्त, संग्रहणी, अर्श, कामलाको दूर करता [illegible] की वृद्धि करता है। भैष० र० [illegible]

अभ्रकहरीतकी abhraka-harītaki-[illegible] अभ्रक भस्म ८० तो०, शुद्ध गंधक [illegible] स्वर्णमाक्षिक भस्म २४० तो०, हरीतकी [illegible] तो०, आमला ८०० तो० इन सबों का [illegible] एक दिन जंभीरी नीबू के रस की भावना [illegible] पश्चात् भांगरा, सोंठ, त्रिकुटा, [illegible] कुरण्टक, हाथी शुण्डी, कलिहारी, [illegible]

, इन प्रत्येक के रस में १-१ दिन खरल । तदनन्तर चांदी आदि के उत्तम पात्र में । गुण--उचित मात्रा में प्रयोग करने से जन्य अर्श दूर होता है । वृ० रस० रा० अर्श चि० ।

वटी abhrakádi-vaṭí-सं० स्त्री० गंधक, विष, त्रिकुटा, सुहागा, लोहभस्म, ...ीत, अफीम प्रत्येक समान भाग, अभ्रक ... सर्वतुल्य । इन्हें चित्रक के क्वाथ में एक ... तक खरल करके मिर्च प्रमाण गोलियां ...ऐं । प्रति दिन १ गोली खाने से ... की संग्रहणी का नाश होता है । वृ० र०, भा० ५ सं० चि० ।

...लुः abhra-guggulaḥ-सं० पुं० ...क भस्म ४ तो०, त्रिफला ४ तो०, गुग्गुल ... ४ तो०, गुड़ ४२ तो० सब को मिलाकर ...न के प्रथम खाने से परिणाम शूल तथा हर ...र के शूल दूर होते हैं ।

...शः abhrankushaḥ-सं० पुं०, (१) ... (Air) । (२) पाणि, हाथ ...aand.) ।

...कः abhra-námakaḥ-सं० पुं०, ...ना, नागरमोथा (Cyperus rotun...us.) श० र० ।

...लः abhrapaṭalaḥ-सं० क्ली० पुं०, ...क (Talc) वै० निघ० ।

...टी abhraparpaṭí-सं० स्त्री० अभ्रक ...स्म, ताम्रभस्म, गन्धक प्रत्येक समभाग लेकर ...र्पटी बनावें । मात्रा-२ रत्ती । गुण-इसे मुली ...थवा पञ्चकोल के क्वाथ के साथ उपयोग करने ... जिह्वागत प्रत्येक व्याधियां दूर होती हैं ।

...ानुः abhrabhánuḥ-सं० पुं० कमीला ...रड, विड लवण, सहिजन के बीज, अमलबेत, ...वाखार, प्रियंगु, अथवा निसोथ, बच, सलई, ...विडंग और अजवायन इन्हें समान भाग लेकर ...चूर्ण बनावें । उसमें २ तो० अभ्रक, ताम्बा, और ...स्वर्ण की भस्म मिलावे । मात्रा-१-२ रत्ती ।

गुण—आमवात, अष्ठीला और गुल्म को नष्ट करता है । रस० यो० सा० ।

अभ्रपुष्पः abhra-pushpaḥ-सं० पुं०, (१) वेतसलता, बेंत, वेतस । केन Cane-इं० । केलेमस् Calamus-ले० । भा० पू० १ भ० गु० व० । (२) वानिवतस, जलबेंत । अम० । क्ली०, (३) जल (Water) ।

अभ्रमांसी abhra-mansí-सं० स्त्री०, आकाश मांसीलता । सूक्ष्म जटामांसी-बं० । रा० नि० See-Akashamánsí.

अभ्ररोहः abhr-rohaḥ-सं० क्ली०, वैदूर्य्यमणि See-Vadúryya-maṇih. रा० नि० व० १३ ।

अभ्र वटिका abhra-vaṭiká-सं० स्त्री० शुद्ध पारद १० मा०, शु० गन्धक १० मा० की कजली, अभ्रक भस्म १० मा०, मिर्च चूर्ण १० मा०, सुहागा भस्म ४ मा० लेकर काला भांगरा, सफेद भांगरा, निर्गुण्डी, चित्रक ग्रीष्मसुन्दरी, अरणी, मण्डूक पर्णी, कुश, विष्णुकान्ता प्रत्येक का रस १०-१० मासे लेकर पृथक् पृथक् मर्दन कर चणक प्रमाण गोलियां बनाएँ ।

गुण—इसे उचित अनुपान उचित अवस्था के अनुसार सेवन करने से कास, श्वास, क्षय, वात, कफः शूल, ज्वर अतिसार को दूर करती है तथा वशीकरण होते हुए बल, वर्ण और अग्नि की वृद्धि करती है । भैष० र० ग्रहणी चि० ।

अभ्र वटिका abhra-vaṭiká-सं० स्त्री० शु० पारद, गन्धक, और अभ्रक भस्म १-१ तो० लेकर कजली बनावें, त्रिकुटा चूर्ण, काला भांगरा, भांगरा सम्भालू, चित्रक ग्रीष्मसुन्दर, जैत, ब्रह्मी, भङ्ग, और श्वेत अपराजिता, पान के पत्ते इनके रस प्रत्येक कजली के बराबर और पारे के बराबर काली मिर्च का चूर्ण और पारे से आधा सुहागा डालकर खरल में घोटें, फिर मटर प्रमाण की गोलियां बनाएँ ।

गुण—रोगानुसार उचित अनुपान के योग से देने से खाँसी, श्वास, क्षय और वात कफ के रोग दूर होते हैं । रस० यो० सा० ।

अभ्रवटी abhra-vaṭí-सं० स्त्री०, अभ्रक भस्म को २१ बार भांगरे के रस में भावित करें, फिर गन्धक, पारद और लौहभस्म पृथक् पृथक् अभ्रक के बराबर और सोना अभ्रक से आधा मिलाकर त्रिफलाके क्वाथ में डालकर अच्छी तरह घोटें पुनः १ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ। इसके सेवन करने से औपसर्गिक मेह (सूज़ाक) दूर होता है।

अभ्रबद्ध गुटिका abhrabaddha-guṭiká -सं० स्त्री० नीलकण्ठ पक्षी (चातुर्मास गृद्ध विशेष), बैल, उल्लू, खंजन और समगीदड़ के हृदय और दोनों आँखों को निकाल कर और शु० पारा तथा अभ्रक सत्व प्रत्येक १-१ तोला मिला-कर बारीक घोटकर २ तो० की गोली बनाकर त्रिलोह में लपेट कर (सोना, चांदी, और तांबा इनके लपेटने की विधि यह है कि पहिले सोना आठ भाग फिर चांदी १२ भाग और सबके ऊपर १६ भाग तांबेके पत्र को लपेट दें अथवा सबके ऊपर कहे प्रमाणमें लेकर गलाकर पत्र बनाएँ और ऊपर से लपेटें) गले में बांधने से अदृश्य हो कर मनुष्य १ दिन में ४०० कोस जा सकता है। रस० यो० सा०।

अभ्रबद्ध रसः abhra-baddharasah -सं० पु० देखो-रसयोगसागर।

अभ्रवाटकः abhra-váṭakah-सं० पु० आम्रा-तक वृक्ष- अम्बाड़ा, अम्बाड़ा आमड़ा गाछ-बं०। Spondias mangifera. । रा० नि० व० ११।

अभ्रवाटिकः abhra-váṭikah-सं० पु० आम्रा-तक, अम्बाड़ा, अमड़ा (Spondias mangifera)-अठा०।

अभ्रसारः abhra-sárah-सं० पु० भीमसेनी क-पूर। वै० निघ० See-Bhimaseni karpúra.

अभ्रसिन्दूरम् abhrasindúram-सं० क्ली० अभ्रक का चूर्ण कर, चोरक, हुरहुर, असगन्ध, संभालु, रुद्रवन्ती, भांग, शतावरी, अड़ूसा, बला, अतिबला, सेमल, कुष्माण्ड, नागरमोथा, विदारी-कन्द, तुलसी, मैनफल, भिलावा, वनभाटा, कैथ, दाख, गूलर, आक, नम, मुसन्द्ववा, हड़ेवा, चम्पा, मकोय, गोखुरू, गुमा, केवांच, आमला, पुनर्नवा, भार्ङ्गी, चित्र, मुण्डी, सिरस और गिलोय इनके पृथक् भावना देकर पुट दें तो यह सभी रोगों को नष्ट करता है जैसे . कार को। रस० यो० सा०।

अभ्रसुन्दरोरसः abhrasundloras पु० यवक्षार, सोहागा, सज्जी, ... गन्धक, ताम्बा, और पारा समान मिलावें, फिर हस्तिशुण्डी और ... रस से एक एक दिन उसमें भावना दे गोला बनाकर लघु पुट से पकावें, फि नैपाली ताम्र भस्म मिलावे यदि किसी ... कार का ताम्बा मिलाया जायगा तो ... न होगा। उचित अनुपान के साथ कोदूर करता है। संग्रहणी, स्वामी और ... में कांजी के साथ देना चाहिए। पार्श्वशूल और परिणाम शूल में ... से देना चाहिए। अम्लपित्त तथा सभी ... पित्त रोगों को यह धारोष्ण दूध के साथ नष्ट करता है।

अभ्रातरः abhrátarah-सं० वि० जिस ... भाई न हो।

अभ्रामलक रसायनम् abhrámalakayamam-सं० क्ली०, अभ्रक भस्म, और मूर्छित पारा जो कि सबका ... साफ हो इनकी बराबर बराबर लें। त्रिकुटा, बच, विडङ्ग, दोनों जीरे, ... मुलेठी, विधारा, तज, कमल गट्टा, ... अक, मामा, सहिजन, दन्ती, निशोथ ... (बण, तृणिका) इन सब को १-१ ... और सबका चूर्ण कर कड़ी ... रक्खें। उचित मात्रा से सेवन करने से कष्ट साध्य से साध्य वात रक्त को ... च० से०।

अभ्राह्वम् abhráhvam-सं० क्ली० केशर, जाफ़रान। Saffron (Crocus sativus)। मद० व० ३।

अभ्रूष abhrúshah- सं० पुं० तालु रोग वि-शेष। जिसमें तालु में शोणित जन्य स्तब्ध लोहित वर्ण की सूजन हो और साथ ही ज्वर और तीव्र वेदना हो तो उसे 'अभ्रूष' कहते हैं। भा० म० ख० भ० मुखरोग चि०।

अम amah-सं० पुं० अमः-हिं० संज्ञा पुं० (१) रोग (Disease) बीमारी। (२) आँव (Mucus.)। (३) पक्व फल आदि (Ripe fruits etc.)। श० र०। (४) बीमारी का कारण।

अमकीरे गड्डे amakíre-gadde-कना०, अस-गंध-सं०महा०, बं०, मं०। पुनीर, अकरी-हिं० पनीर बुल काकनज-म० । काकनज-अर० । (Withania Coagulans.)-ले०।

अमघोस्, amaghos-म० टिड्डी, मलख (A locust.)

अमङ्गलः amangalah-सं० पुं०
अमङ्गल amangala-हिं० संज्ञा पुं०
एरण्ड वृक्ष, अरण्ड (Castor oil plant) रेंड का पेड़ श० च०।

अमचूर amachúra-हिं० संज्ञा पुं० [हिं० आम+चूर] सुखाये हुए कच्चे आम का चूर्ण। आम चूर्ण। आम की फकिया। खटाई। पिसी हुई अमहर Parings of the mango dried in the sun इं० मे० मे०।

अमज् amaj-म० अति उष्ण, अधिक तृषा, अत्यंत प्यासा होना (Very hot, excessive thirst)

अमड़ा amará-हिं० पुं० [सं० आम्रात, या अंबाड़] अमारी, आम्रातक, अम्बाड़ा, (Spondias mangifera) एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ शरीफे की पत्तियों से छोटी और सींकों में लगती हैं। इसमें भी आम की तरह बौर आता है। और छोटे छोटे खट्टे फल लगते हैं जो चटनी और अचार के काम में आते हैं।

अमड़ाई amadái-पं० कालीग्वार, घवना, मोरेड -हिं० Aloes Indica (The black var of-)

अमणक्कम्-चेडी amanakkam-chedí-ता० एरण्ड, अरंड। Castor oil plant-इं०। रिसिन कम्यून (Ricinn commun) फ्रां०। फा० इं० ३ भा०।

अमण्डः amandah-सं०पुं० एरण्ड वृक्ष। अरंड (Castor oil plant) प० मु० हारा०।

अमण्डीर कम्यून amandier communa -फ्रां० (१) बादाम, वाताद, आमण्ड। (Almond) (२) कड़ुवा बादाम, तिक्त बादाम, -हिं०। बिटर आमण्डस (Bitter almonds) -इं०। Amygdalus communis, *Linn.*) फॉ० इं० १ भा०

अमण्डीस-डेस-डैमीस amandes des-dames. -फ्रां०। देखो—अमण्डीस सल्टेनीस।

अमण्डीस सल्टेनीस amandes sultanes -फ्रां० मीठा बादाम। (Sweet almonds) यह दो प्रकार का होता है एक मोटे छिलके का और दूसरा पतले छिलके का अर्थात् कागजी फा० इं० १ भा०।

अमत amata-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) मत का अभाव। असम्मति। (२) रोग। (३) मृत्यु।

अमती amatí-बम्ब० बायविडंग। रोहिण गढ़वा०। (Embelia ribes.)

अमतीपण्डु amatí-pandu-ता० केला, कदली (A plantain) (Musa sapientum)

अमत्त amatta-हिं० वि० [सं०] (१) मद रहित। (२) शांत।

अमदरियान amdariyána-यु० बकरे के सदृश एक वृक्ष है, किन्तु इससे छोटा होता है। इसकी लकड़ी से तस्बीह् (सुमिरनी, मनियाँ) बनाई जाती है इस कारण इसको शज्रतुत्तस्बीह् तथा दमूम अयूब भी कहते हैं। साधारणतः यह मिश्र और शाम देश में उत्पन्न होता है।

अमद्रेस मोटापना amdesamotápaná–मो० जंगली मदनमस्त का फूल-हिं०। (Cycas circinalis or C. Inermes) –ले०। इं० मे० मे०।

अमधिआक् amdhiáka–यं० जंगली अंगूर, पञ्जीरी-हिं०, द०। Vitis indica–ले०। इं० मे० मे०।

अमधुर amadhura–हिं० वि० [सं०] कडु। अरुचिकर।

अमध्यस्थ धर्म्मिणी amadhyasthadharmmini–सं० वि० मध्यस्थ धर्मवाली नहीं, वरन् अमध्यस्थ धर्मवाली अर्थात् अनुदासीन (सुखादिक भोग भोगने वाली)। आत्मा (पुरुष) में इसके विपरीत गुण हैं अर्थात्; वह मध्यस्थ धर्मवाला है यानी वह सुख दुःखादि में उदासीन रूप मध्यस्थ की भांति है। सु० शा० १ अ०।

अमनाफ़ा ama-náfaá–अ० मुर्गी (A hen) मेमो०।

अमन् amún–ता० अजवाइन (Carum Copticum.)

अमन्तमूल amant-múl–हिं० पुं० तरलो, वन ककड़ा–पं०।

अमन्दः amandah–सं० पुं०
अमन्द amanda–हिं० संज्ञा पुं० } वृक्ष, पेड़ (Tree.)। श०। वि०।

अमम amam–ता० अजवाइन (Carum (Ptychotis) Ajowán.

अमयूलो फ़रास amyúlo-frás–रू० रामतुलसी (Ocimum gratissimum.)

अमयूस amyús–यु० नानूखाह, अजवाइन (Carum (Ptychotis) Ajowan.

अमम्रिः amamrih–अविनाशी, न मरने वाला। अथर्व० सू० २७। २६। का० ८।

अमर amara–हिं० वि० [सं०] मरण रहित, चिर स्थायी। जो मरे नहीं। चिरजीवी। हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अमरा, अमरी] (१) ...मन नामक प्रसिद्ध कोश के कर्ता (कोषकार), (२) अमरकोश। ( ) Amoora Cucullata, Lind. Andersonia cucullata, Rox. Amoora Hooded. इं० है० गा०। (४) ... एक। उनचास पवनों में से एक। (५) पारा। (६) हड़जोड़ का पेड़। अस्थि... (७) देवता। (८) थूहर वृक्ष। (९) स्वर्ण, सोना।

अमर áamar–अ० अमूबे, दांतों के मांस। अमूर (ब० व०)। गम्ज़ (Gums) –इं०।

अमरकणा amara-kaná–सं० स्त्री० (Scindapsus officinalis.)। निघ० २ भा० पांडुचि० भूनिम्बादि चूर्ण।

अमरकण्टिका amara-kantiká–सं० शतावरी (Asparagus racemosus)। रा० नि० व० ४।

अमरकन्दः amar-kandah–सं० पुं० कन्द विशेष (A sort of tuber.) वै०

अमरकलानिधि रसः amara-kalá-nidhi-rasah–सं० पुं० मोती, मूँगा, पारा, ... समान भाग लेकर बिजौरे के रस में गोला बनावें फिर उस गोले को कपड़ मिट्टी करके सुखा लेवें, फिर दो शरावों में रखकर अग्नि में पका लेवें। ठण्डा होने पर बारीक चूर्ण कर रख लेवें। मात्रा–१ ... उचित अनुपान में सेवन करने से ... नष्ट करता है। र० प्र० सु० राजयक्ष्मा।

अमरकली amarkali–हिं० स्त्री० ... कोलोरेटा Ardisia Colorata–ले०। Colored flowered–इं०। इं० है० गा०।

अमरकालिकः amarkálikah–सं० ... वृश्चिकाली (Tragia involucrata) ... मैप० घा० व्या० सिंहनाद गुग्गुल।

ाष्ठम् amarakásbṭham-सं० क्लीं० काष्ठ, देवदारु। (Pinus Deodara.)

ुसुमम् amarakusumam-सं० क्लीं० ग, लौंग। Cloves (caryophyllus romaticus.) । वै० निघ० तृयरं० ोत्य-त्रि० रस।

amarakha-हिं० पुं० कमरख। A unt (Averrhoa carambola.)

ाटा amaratgatá-आमला (Phyllanthus Emblica.)

ंधका amaragandhaká-सं० स्त्रीं० ात।

ीस amergris-इं० अम्बर-अ०, हिं० ०, मह०, दौं० अम्बर असीघा ambra grisa-लें० इं० मे० मे०।

ः amarajah-सं० पुं० (१) दुर्गन्ध , गूह बबूल। Acacia Farnesiana, Willd. रा० नि०। (२) देवदारु (Pinus Deodara (३) नदीवट। वै० नि० २ म० आदि ज्व०।

ल amarjel-शु० अज्ञात

रुः amara-taruh-सं० पुं० देवदारु Pinus deodara). अर्कादिः "किराततरुरसनः।" वै० निघ० सा० ज्व०।

āamarad-करफ़्स, अजमोदा (carum oxburghianum).

ारु amardáru-सं० पुं० क्लीं०, हिं० शा पुं० वृक्ष विशेष। देवदारु का पेड़। तैल वदारु रा० नि० व०१२। त्रि० क्र० क० ी खाँ० रोग-त्रि०। तैल तेवदारु वृक्ष। मलंगा वदारु-बं०। (Cedrus deodara).

ुः Amaradruh-सं० पुं० विट् खदिर र, दुर्गन्ध खदिर। गूह बबूल। गुजे बाबूला ०। (Acaciafarnesiana, Willd.)

्थ amaranth-इं० चौलाई। देखो—मारेन्थस।

ुष्पम् amara-pushpam-सं० पुं० क्लीं० पूगफल, सुपारी (Areca semina

(२) काश तृण, कास (-सा) (Saccharum spontaneum) (३) आम्र, आम (Mangifera Indica) । (४) केतक, केवड़ा (Padanus odoratissimus) मे० पपञ्चक।

अमरपुष्पकः amara-pushpakah-सं०पुं० देखो—अमरपुष्पक।

अमरपुष्पक amara-pushpaka-हिं० संज्ञा पुं० काश तृण, काँस का पौधा। काँसा (Saccharum spontaneum) । प० मु० (२) कास भेद। र० मा०। (३) तालमखाना। (४) गोखरू। (५) कल्पवृक्ष।

अमरपुष्पिका amara-pushpiká
अमर पुष्पी amara-pushpi
-सं० स्त्रीं० चोर पुष्पी, शंखिनी। काचकी, चोर खड़िका-बं०। See-shankhini। रमा०। (२) काशतृण, कासा (Saccharum spontaneum) । देखो—अमरपुष्पक।

अमरफलम् amara-phalam-सं० क्लीं० अमृतफल, नाशपाती The pear (tree Pyrus communis.)

अमरबेल amara-beḍ-हिं० संज्ञा० पुं०
अमरवल्ली amara balli " " स्त्रीं०।
अमरबेलि amara-beli- " " "
अमरबेल्य amara-belya-गु०,
अकासबेल, आकाश बौरें, आकाशवल्ली (cassytha Filiformis, Linn.) । [illegible] ३ भा०।

अमर (ल०) रत्नम् amara (la) ratnam -सं० क्लीं०। बिल्लौर। रा० नि०।

अमरत्न amara tna-[illegible] (अणी) फिटकिरी (Alum [illegible]) नि०। काच। देखो—[illegible]

अमरवल्ली amara-va[illegible] [सं० अंबरवल्ली] [illegible] अमरबेलिया। [illegible]

अमरतानaamarrtan
उमैर्तान aumairtán } -अ० जिह्वा मूल में दो छोटी छोटी अस्थियां हैं जिन्होंने ऊर्ध्व कंठ को भीतर की ओर से घेरा है।

नोट—चूँ कि घुमिकास्थि (Os Hyoid.) के अतिरिक्त कोई और अस्थि नहीं इसीलिए ये उसी अस्थि के दूसरे प्रवर्द्धन (निकास) हैं जिनको लघुशृङ्ग व गृहत् शृंग कहते हैं।

अमरलगड़ amarala-dda-द० अज्ञात।

अमरलता amara-latá-हिं० स्त्री० गुरुच, सोमलता (Tinospora cordifolia.)

अमरलता का बीज amara-latá-ká-bija -हिं० पुं० गुरुच बीज। Tinospora cordifolia (Seeds of-)

अमरवल्लरी amara-vallari
अमर वल्लिका amara-vallika
अमरवल्ली amara-vallí } -सं० स्त्री० अकासबेल आकाशवल्ली (Cuscuta Reflexa.) भा० पू० १भ० गु० व० मद० व० १।

अमरस amarasa-हिं० संज्ञा पुं० [हिं० आम+रस] निचोड़ कर सुखाया हुआ आम का रस जिसकी मोटी पर्त बन जाती है। अमावट।

अमर सर्षपः amara-sarshapah-सं० पुं० देवसर्षप, राई। Sinapis juncea.। वै० निघ०। See-Deva-sarshapa.

अमरसालह् amra-sáláh
अमुज्जनह् amujjanah } अ० धेनुक पक्षी, हरकीलह् (गृध्र सदृश एक मांसाहारी पक्षी है)।

अमरसी amrasí-यु०, आस वृक्ष (Myrtus comumnis)। हिं० वि० [हिं० अमरस] आम के रसकी तरह पीला। सुनहला—यह रंग एक छटांक हलदी और द मा० चूना मिलाकर बनता है।

अमरसुन्दरः amarasundarah-सं० पुं० पारद की भस्म, शिंगरफ, शुद्ध हरताल की भस्म और गन्धक इन सबको बराबर लेकर, भांगरे के रस से और काकमाची के रससे भावना देकर कुक्कुट पुट में पकाएँ, इसी प्रकार २ यह सिद्ध होता है। उचित मात्रा में अनुपान द्वारा सभी रोगों को नष्ट करता। र० प्र० स०, र० म० मा० सन्निपात।

अमरसुन्दरी amara-sundari-सं० ज्वराधिकारमें वर्णित रस, यथा-त्रिकटु, पीपलामूल, अकरकरा, रेणुका, त्रिफला, चातुर्जात, मोथा, लौहभस्म, पारा, शि गंधक इनको समान भाग लेकर एवं पुनः इससे द्विगुण गुड़ मिलाकर कोल बेरी सदृश गुटिका निर्मित [illegible] करें।

प्रयोग०। श्वास, खासी अपस्मार, [illegible] गुदरोग, वातव्याधि और उन्माद को नष्ट है। वृ० नि० र० भा० वा०।

अमरा amará-हिं० संज्ञा स्त्री० [[illegible] (१) अम्बाड़ा, आम्रातक। The [illegible] plum (Spondias man-gifera) -सं० स्त्री० (२) दूर्वा, दूब (Cynodon dactylon, Pers.)। मे० [illegible] (३) गुडूची, गुरुच, गिलोय (Tinospora cordifolia) र० मा०। (४) इन्द्रवारुणिलता, इन्द्रायन-हिं०। [illegible] -यं०। (Citrullus Colocynthis) रा० नि० व० ३। (५) नील दूर्वा, (या हरी) दूब (Cynodon Linearis) (६) गृहकन्या, घीकुवार (Aloe [illegible] bebedeis)। रा० नि० व० ५। (-नीली वृक्ष; नील (Indigofera indica) (८) मेषशृंगी। मेढ़ासिंगी (C, ema. sylvestres (९) [illegible] विधाती। (Fragia involnerata) रा० नि० व० ८। (१०) नदीवट, (Ficus bengal ensis) रा० व० ११। (११) चमड़े की झिल्ली का बच्चा लिपटा रहता है। आँवल, [illegible] (Uterus)। मे० रत्रिकं। (१२) जेरी, खेड़ी, (Placenta) (१३)

ी,फूल। भैप०ग्रो०रो० (१४) नाभिनाल ।
मे का नाल जो नव-जात बच्चे से लगा रहता
(१५) सेहुँड, थूहर।
(१६) नीली केयल। यहा नील का पेड़
७) बरियारा। (१८) बरगद की एक छोटी
ी जाति।

amarái-हिं० संज्ञा स्त्री०, [सं०
राजि] आम का बाग, बगीचा, आम की
। (A garden of mango trees.)
० पवना, मोरेट।

तिन amará-pátana-हिं० लेंड़ी गि-
।

अमरापातन-विधिः—(१) कडुई तुम्बी,
पकी काचली, सफेद सरसों, कड़ुआ तेल,
ने में इनकी धूनी देने से अमरा (लेड़ी) गिर
ी है।
(२) कलिहारी की जड़ पीसकर हाथ, पाँव
लेप करने से लेड़ी गिरती है।
(३) पीपर आदि का चूर्ण मद्य के साथ
से लेड़ी गिर जाती है।
भैष० र० स्त्री० रोग० त्रि०।

कः amarálakah-सं० पुं० अम्बाड़ा,
ातक। (Spondias mangifera.)

amaráva-[सं० आम्रराजि, हिं०
मराई] आम की बारी। आम का बगीचा।
मराई।

म् amaráhvam-सं० क्लीं० देवदारु
। Cedrus Deodara (Wood
f.-) वा० सू० १५ एलादि० अरुणः।
शक्तिर्योग्रन्थोऽमराह्वमगुरुः।"

amari-सं० स्त्री० नील दूर्वा, हरी दूब
Cynodon Linearis.)। (२) कृष्ण
नेगुंडी, नीला सँभालू (Vitex Negu-
ndo, Black var. of-)। (३)
दूर्वा (Sanseviera Roxbur-
ghiana.)। वै० निघ०। -मल०,। (४)
नील वृक्ष (Indigofera Indica.)।
-आसा०,-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (५)

आसन का पेड़ (Terminalia Tomentosa.)। मज। सग। पियासाल
एक पेड़ जिससे एक प्रकार की चमकीली गोंद
निकलती है। इस गोंद को सुगंध के लिए जलाते
हैं और संथाल लोग इसे खाते भी हैं। इसकी
छाल से रंग बनता है। और चमड़ा सिझाया
जाता है और जलाने में बर्ता जाता है। इसमें
से लाही निकलती है और इसके पत्तियों पर
रेशम का कीड़ा पाला जाता है।

अमरीके का सुमाक़ amarike-ká-sumáqa
-द०, सुमाके अमरीकइ (Cæsalpinia
Coriaria, *Willd.*) स० फा० इं०।

अमरूत amarúta-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अमृत
(फल)] अमरूद (Psidium Guyava,
Linn.) दी ग्वावा The Guava. इं०।
जामफिही (मध्यभारत और मध्य प्रदेश में)
पेरुक, पेरूफल (दक्षिण में)। लुधी (नेपाल
तराई में)। सफरी, अमरूद (अवध में)।
लताम (तिर्हुत में)। दृढ़बीजं, पेरुकं, मांसलं
अपृथक् त्वच, अमरूदं, जीवफलं, वर्तुलं, मृदु-
पीतकं, अम्रूत फलम् मधुराम्लक, तुवर, अमृत
फल-सं०। प्यारा -बं०। रक्त और श्वेत भेद से
अमरूत दो प्रकार का होता है। (ये एक ही
जाति के दो भेद हैं)

मधुरियम्-आला०। अमुक-नेपा०। अम-
रूत-पं०। पेराला-बम्ब०। जाम्ब -मह०।
सेगापु, कोय्या-ता०। जाम-ते०। सीबी
-कना०। मालकारवेंग-बर०। अम्रुद-अ०।
-फ़ा०।

(१) रक्त अमरूद, लाल अमरूत।
सीडियम पॉमिफरम् Psidium Pomiferum, *Linn.* (Fruit of- Red Guava)। रक्त अमरूद फलम्, रक्त बहुबीज
फलम्-सं०। लाल सफरी आम, लाल सफरी,
लाल जाम-द०। लाल प्यारा, लाल गो याछि
फल-बं०। अम्रूदे अह्मर, कुम्मसरा-अ०।
अम्रूदे सुर्ख-फ़ा०। (वेल्लई) शिवप्पु
-गोय्याप्-पज़म, सेगापु, कोय्यापलम्-ता०।

पूर्तजाम पण्डु, पूर्त-गोय्या-पण्डु, जाम्-कोइया –ते० । चेम्-पेर-चेम्-पेरक्क, चोवञ्च-मलाक-कप्पर, पालम-पेर-मल० । केम्पु-शिवे-इवणु–कना० । ताम्बड़-जाम्ब, ताम्बड़-तूप-केल–मह० । लाल पियार, लालपेरु, लाल आमरूद गु० । रत पेर, रत पेरगडि–सिं० । मालकी-नी, मलका येद्र –वर० । मोधरियान–आसा० । ताम्बड़-पेरु –वम्ब० ।

(२) श्वेत अमरूद, सफेद अमरूत, सीडियम् पायरिफेरम् Psidium Pyriferum, *Linn.* (Fruit of– White Guava)-ले० । सुफ़ेद सफरी आम सुफ़ेद जाम्-द० । धोप- गोस् आछि फल, सादा-पियारा –बं० । अमूरूदे अबैज़–अ० । अमूरूदे सुपेद –फ़ा० । वेल्लइ गोय्या-पज़ुम-ता० । तेल्ल जाम–पण्डु, तेल्ल-गोय्या-पण्डु–ते० । वेल्-पेरा वेड्-पेरक्क, वेल्ल-मलाक्-कप्पेर –मल० । बिलि-शिवे-इवणु–कना० । पांढर-जाम्ब, पांढर तूप-केल–मह० । उज्लोपियार, उज्लो-पेरु, सफ़ेद जमरूद–गु० सुदुपेर, सुदुपेर-गडि–सिं० । मालका-फिक–वर० । पामुर–कौं० । आमुक –नैपा० । पाण्ढर-पेरु–वम्ब० ।

जम्बू वर्ग

(*N. O. Myrtaceae.*)

उत्पत्ति स्थान—अमेरिका; यह लगभग सम्पूर्ण भारतवर्ष साधारणतः वंग प्रदेश में लगाया जाता है ।

वानस्पतिक वर्णन—एक पेड़ जिसका धड़ कमज़ोर, टहनियाँ पतली और पत्तियाँ पाँच या छः अंगुल लम्बी होती हैं । इसका फल कच्चे पर कपैला और पकने पर मीठा होता है और उसके भीतर छोटे छोटे बीज होते हैं ।

इसके ताजे धड़ की छाल का बाह्य पृष्ठ चिकना और भूरे रंगका होता है, और उसपर पर के समान सूखी हुई छाल के चिह्न होते हैं । कभी कभी वे कुछ कुछ लगे होते हैं । धूसर उपचर्म के नीचे ताजी छाल हरित वर्ण की होती है, इसके भीतरी पृष्ठ पर लम्बाई की रुख उभरी हुई रेखाएँ पड़ी होती हैं तथा यह हलके धूसर वर्ण की है । स्वाद—कषैला और [illegible] पत्र–सुगन्धि युक्त अण्डाकार [illegible] लघु डंठलयुक्त नीचे की ओर [illegible] आवृत और मुख्य पत्र शिराएँ [illegible] होती हैं ।

रासायनिक संगठन—छाल में [illegible] (टैनीन) २८·४ प्रतिशत राल और [illegible] ऑक्जेलेट के रवे होते हैं । [illegible] में कार्बोहाइड्रेट्स (काबौज) और [illegible] हैं । पत्र में राल, वसा काष्ठोज (cellu[illegible]) कषायीन (टैनीन) उड़नशील तैल, [illegible] (Chlorophyll) और [illegible] होते हैं । वसा क्लोरोफार्म में पूर्ण[illegible] ईथर या ऐलकोहल में अंशतः विलेय [illegible] किंचित् हरित उड़नशील तैल में [illegible] (Eugenol) नामक पदार्थ होता है [illegible] तैल क्लोरोफार्म ईथर या ऐलकोहल में [illegible] होता है । इस पेड़में स्फुरिक (Phosph[illegible]) [illegible] चुक (Oxalic) और सेव (Malic) (Acids) के साथ मिले हुए [illegible] मैंगानीज वर्तमान होते हैं । मूल, का[illegible] पत्र से अधिक परिमाण में टैनिक [illegible] थिनाक्ल होता है ।

प्रयोगांश—त्वक् (मूल तथा का[illegible]) और पत्र व भस्म ।

इतिहास—वि० डिमक महोदय [illegible] नुसार दोनों प्रकार के अमरूद अमेरिका [illegible] गए । सम्भवतः पुर्तगाल निवासी [illegible] लाए । पर भारतवर्ष में कई स्थानों पर [illegible] गली होता है ।

प्रभाव—कांड, त्वचा और मूल[illegible] हैं । अपक्व फल न पचने योग्य होते [illegible] तथा ज्वरोत्पादक होते हैं ।

गुणधर्म तथा उपयोग

गुण—कषैला, मधुर, खट्टा है और [illegible] रूद स्वादिष्ट होता है । यह वीर्यवर्द्धक, [illegible] चन्दन, शीतल कफ का स्थान है तथा [illegible]

...ओं को नष्ट करता तथा भारी है। अ॰ भि॰ भा॰।

यूनानी मत से—

...ति—प्रथम कक्षा में शीतल और दूसरी ... रूक्ष है। किसी किसी के मत में १ कक्षा ... तर तथा मधुर उष्ण प्रकृति युक्त।

...निकर्ता—आध्मान कारक, शीत प्रकृति ...माशय नैर्बल्य को।

...घ्न—सोंठ का मुरब्बा और सोंफ (मिर्च तथा लवण)।

...तिनिधि—सेब, बिही या नाशपाती आव-...नुसार।

...ख्य कार्य—हृद्य, हृदयबलदायक तथा ...य व पाचन शक्ति को बल देने वाला है।

...—सम्यक परिमाण में शक्त्यानुसार २-४।

...ल की मात्रा—२ से ४ तो॰ तक व ...रेक।

...ण, कर्म, प्रयोग—अपने कषायपन तथा (संकोच) के कारण संग्राही है। मवादका ...क और अपनी शीतलता तथा अम्लता के ...पा तथा पित्त को प्रशांत करता है। अ-...ग्रहण वा संकोच (क़ब्ज़) तथा कषायपन ...र और सुगंध के कारण आमाशय को बल ... करता तथा उसके परतों को स्थूल एवं ...बना देता है। (नफ़ो॰)।

... आह्लादकर्ता और शक्ति प्रदान करता है। ... तथा कोष्ठमृदुकर होने पर भी क़िब्ज़ ... है। हृदय आमाशय और पाचन शक्ति को ...न करता, प्रकृति को मृदु कर्त्ता और मूर्च्छा ...र करता है। क्षुधा को बढ़ाता और मस्तिष्क ...लित रखता है। इसका गण्डूष दन्त तथा ... और रक्तपित्तघ्न है। इसके पत्र अतिसार ...रण के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। फिट-... के साथ इसका क्वाथ दाँतों को लाभप्रद ... इसके जले हुए पत्र तूतियाकी प्रतिनिधि है। ...त्रिपैल)। म॰ मु॰।

...के पुष्प हृद्य, हृदय बलदायक, रक्तनिष्ठी-...तथा अतिसार को नष्ट करने वाले हैं।

इसका लेप पशु शोथ लयकर्त्ता है। इसके बीज आमाशयस्थ कृमिघ्न हैं। इसके पत्र अतिसार के ... और शुष्क पत्र को बारीक पीसकर छिड़कने से व्रण शोधक एवं पूरक हैं। इसका निर्यास शोथ लयकर्त्ता और बलवान मुंज़िज (मल पक्वकर्त्ता) है। इसकी लकड़ी और जले हुए पत्र तूतिया की प्रतिनिधि हैं। वस्त्रपूर्णन करने से ये स्तनों को शुष्क करते हैं। लेखक के अनुभव में मधुर अम-रूद पेचिश (प्रवाहिका) को नष्ट करता है। यु॰ मु॰।

नव्यमत

इसके फल अर्थात् अमरूद देशी लोगों को बहुत प्रिय हैं। वे इसकी सुगंधि को बहुत पसंद करते हैं। यह संग्राही है और मलावरोध जनन की प्रवृत्ति रखता है। युरोप निवासी इसको जैली रूप में अथवा पकाकर खाना अधिक उत्तम ख़्याल करते हैं। गोआ के पुर्तगाली इससे एक प्रकार की पनीर प्रस्तुत करते हैं। इसकी छाल संग्राही है और बालकों के पुरातन अतिसार की औषध रूप से यह फार्माकोपिया ऑफ इण्डिया में प्रशं-सित है। डॉक्टर वैट्ज़ (Dr. Waitz) अर्द्ध आउंस मूलत्वक् को ६ः आउंस जल में ३ आउंस रहने तक क्वथित कर उपयोग में लाने का आदेश करते हैं। इसकी मात्रा—१ वा अधिक चाय की चम्मच भर दिन में ३ या चार बार दें। वे इसको बच्चों के गुदभ्रंश रोग में बाह्य संकोचक रूप से उपयोग करने की शिफ़ारिश करते हैं। अतिसार में इसके पत्रका भी सफलता-पूर्वक उपयोग किया जा चुका है।

डिसकोर्टिल्ज़ (Discourtilz) सुगंध्य-क्षेपहारक औषधों में इस पौधे का वर्णन करते हैं। इसके कोमल पत्र एवं पल्लव का क्वाथ वेस्ट इन्डीज़ में ज्वरघ्न तथा आक्षेपहर स्नानों में प्रयुक्त होता है तथा पत्र का फांट मस्तिष्क विकारों, वृक्क प्रदाह और प्रकृति दोष (cachexia) में। आमवात में इसके पीसे हुए पत्र का स्थानिक उपयोग होता है। इसका सत्व अपस्मार तथा कम्पवात में प्रयुक्त होता है। बालकों के आक्षेप

(convulsion) में इसके टिंक्चरको उसकी रीढ़ पर मालिश करते हैं। फल तथा फल का मुरब्बा ये दोनों संग्राही हैं, और उन रोगियों के लिए जो *अतिसार और प्रवाहिका से पीड़ित हैं*, अत्यन्त उपयोगी हैं। फा० इं० २ भा०।

कांड त्वक् तथा मूलत्वक् संग्राही हैं। अपक्व फल पचने के अयोग्य है और वमन तथा ज्वरांश उत्पन्न करता है।

मनोहर फल के कारण इसके वृक्ष की बड़ी प्रतिष्ठा है, परन्तु इसके बीज हानिकारक होते हैं। इसकी जेली हृदय बलदायक और मलावरोध के लिए उत्तम है। फलत्वक् युक्त इसको खाना चाहिए। फलत्वक् रहित खाने पर यह मलावरोध करता है। अपक्व फल अतिसार में प्रयुक्त है। गैरड (Garrod) ने रक्तपात में इसके फल की बड़ी प्रशंसा की है। वह जल जिसमें इसके फल तर किए गए हों बहुलमूत्र जनित तृषा के लिए उत्तम है। विशूचिका जन्य छर्दि तथा अतिसार के निग्रहण के लिए इसका (मूलत्वक्) क्वाथ प्रयोग में आता है। इसके क्वाथ का स्कर्वी तथा दूषित व्रण में, मुख धावन रूप से सूजे हुए मसूड़ों में लाभदायक प्रयोग होता है। इसके पीले हुए पत्र की अत्युत्तम पुल्टिस तैयार होती है। इं० मे० मे०।

इसकी छाल संग्राही, ज्वरघ्न और आक्षेपहर; फल कोष्ठमृदुकर और पत्र संग्राही है। इं० ड्र० इं०।

अमरूद amarúda-हिं०, अ०. अमरूत, अमृतफल। (Psydium Pyriferum.).

अमरूदे-अबैज़, amarúde-abaza-अ०, सि० : अमरूद। See-Amarút.

अमरूदे-अह्मर amarúde-aḥmar-अ०
अमरूदे-सुर्ख़ amarúde-surkh-फा० } लाल अमरूत, सुर्ख़ अमरूद। (The Red guava.) । See-Amarúta.

अमरूदे-सुफ़ेद amarúde-sufeda-फ़ा०, हिं० श्वेत अमरूत (The white guava.). See-Amarúta.

अमरुफलम् amaruphalam हिं० देश में प्रसिद्ध फल विशेष। [illegible] शीतल मल को पतला करने वाला, दाहकारक, तथा रक्तपित्त, [illegible], तथा मूत्राश्मरी को नाश [illegible] निघ०।

अमरूल amarúla व० वृक्ष, -सं०। (Rumex Scutatus

अमरेन्द्रतरुः amarendra-tarub- देवदारु वृक्ष (Cedrus Deod [illegible] वै० निघ० २ भा० ज्व० चि[illegible]

अमरेन्द्ररसः amarendra-ras[illegible] शुद्ध गन्धक और सोहागा प्रत्येक [illegible] २ मा० इनको मिलाकर पान पत्र रस में मर्द्दन करें, फिर १ दिन तक में घोटें। मात्रा—मुद्ग प्रमाण। ज्वर, पित्तजनित दाह, अनेक प्रका[illegible] और गुल्म को नष्ट करता है। [illegible] भात। र० क० यो०।

अमरेश्वरोरसः amareshvaro-ra[illegible] पु० पारा और उससे द्विगुण [illegible] कज्जली बनाएँ, और जमीकन्द के [illegible] भावना दें, फिर शंख, थूहर, [illegible] छोटे शंख, चित्रक, भिलावाँ, अंगुलिया थूहर और सेंधा नमक [illegible] प्रत्येक गन्धक के समान मिलाकर [illegible] थूहर का खार, त्रिकुटा, जमीकन्द, भिलावाँ और चित्रक प्रत्येक को डालें और सूरण के रस की २१ [illegible] मात्रा—२ रत्ती। अनुपान-घी। [illegible] को २१ दिन में नष्ट करता सिद्ध [illegible] कौ० अर्शोधिकारे।

अमरेर amarer-पं० येन्तुल, [illegible] सिआो, शकेई। -झेल० सुस्म, [illegible] मेमो०। Bœhmeria S[illegible] *D. Don.* एक पौधा है जिस[illegible] जाता है। Debregeasia [illegible] *Wedd.*

या amaraiyá-हिं० संज्ञा स्त्री० देखो— अमराई।

ोला amarolá-हिं० चूका, चांगेरी। (Rumex Scutatus.).

र्त्य amartya-सं० वि० जिसकी मृत्यु न हो। अथर्व०। सू० ३७। १२। का० ४।

र्दित amardita हिं० वि० [सं०] जिस का मर्दन न हुआ हो। जो मला न गया हो।

र्ष amarsh-हिं० संज्ञा पुं० [वि० अमर्षित, अमर्षी] क्रोध, कोप, रिस।

र्षण amarshana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] क्रोध, रिस। (Anger.)। असहिष्णुता। अक्षमा।

र्षी amarshi-हिं० वि० [सं० अमर्षिन्] क्रोधी, रागी, कोपान्वित असहनशील। (Passionate, choleric.).

लम् amalam-सं० क्लो० } (१) अभ्रक,
ल amala-हिं० संज्ञा पुं० } अबरक Talc (Mica.)। मे० लत्रिक। (२) समुद्रफेन, समुद्रझाग। (Cuttlefish bone.) रत्मा०। (३) कर्पूर, कपूर (Camphor.)। वैं० निघ० २ भा० अपस्मा० चि०। (४) रौप्यमाक्षिक, रूपामक्खी। See-Roupyamákshika. (५) पित्त (Bile.)। See-Pitta.। (६) कनक वृक्ष, निर्मली। (Strychnos Potatorum.)। (७) गंधद्रव्य विशेष। (An Aromatic Substance.)

मल amala-हिं० संज्ञा पुं० [अ०] (१) मादक वस्तु, नशा। (Intoxication (२) अफीम (Opium)। (३) काम (Cupid)। (४) प्रभाव, असर। (५) प्रयोग (Use)।

-वि० [सं०] निर्मल। स्वच्छ।

मल ऽamala-अ० (ए० व०) अअमाल कार्य, कार्य करना।

अमल, क़िअल और मिनुअ का भेद। अमल प्रधान है तथा क़िअल सामान्य अर्थात् अमल उस क़िअल का नाम है जो प्राणियों जैसे मनुष्य-व पशु से इच्छापूर्वक सम्पादित हो। विरुद्ध इसके क़िअल में इसका बंधन नहीं। यह प्राणि एवं खनिजों में से हर एक के कार्य तथा प्रभाव के लिए बोला जाता है।

अमलकी amalakí सं० स्त्री० भुँइ आमला (Phyllanthus neruri.)

अमलक्यादिखण्ड amalakyádi-khanda -सं० पुं० आमला १ कुडव (१६ तो०) लेकर पकाएँ, पुनः टुकड़े टुकड़े करके ६४ तो० गोदुग्ध में पीस ६४ तो० गोघृत में पकाएँ, पुनः उसमें ६४ तो० मिश्री अडूसा मूल १६ तो०, जीरा, मिर्च, पीपल, दालचीनी इलायची, तेजपत्र, नागकेशर प्रत्येक १-१ तो० बारीक चूर्ण कर उक्त अवलेह में मिला कर उत्तम पात्र में स्थापित करें। उचित मात्रा में सेवन करने से भयानक दाह, मूर्च्छा, पुरानी छर्दि दूर होती है। वंगसे० सं० दाह चि०।

अमलक्यादि गणः amalakyádi-ganah आमला, हड़- पीपल, चित्रक।

गुण—प्रत्येक ज्वरनाशक, कफघ्न, भेदी, दीपन और पाचन है। वगसे० सं० गण पाठाधिकारः।

अमलक्यादि पाकः amalakyádi-pákah -सं० पुं० काकड़ासिंगी, तालीशपत्र, त्रिफला, खिरेटी, गिलोय, विदारीकन्द, [illegible] जीवन्ती, दशमूल, चन्दन, नागरमोथा, [illegible] गट्टा, इलायची, अडूसा, दाख, [illegible] मूल, पृथक् पृथक् ११-११ [illegible] १६ सेर पानी में ५०० आमला [illegible] औटा जाने पर निकाल [illegible] आमलों की भूनें तदनन्तर [illegible] चाशनी करके आमलों [illegible] होजाए तो [illegible] लोचन, चातुर्जात [illegible] २-२ पल [illegible] भी [illegible]।

गुण [illegible]

अमलगुच amalagucha-गं॰ पयकल्य पदुमकाठ। (Prunus Sylvatica.)

अमलच्छदा amalachchhadá-सं॰ स्त्री॰ भोजपत्र। (Betula Bhojpatra).

अमलज ǎamalaj-ऋ॰ मनूर्‌य भेद। See—kharnúba.

अमलतास amalatása-हिं॰ (द॰) संज्ञा पु॰ [सं॰ अम्ल] व गिरमाला, किरवरा, धन बहेरा, किरवाली, किरवारी, सियार (-ड) लाठी (-लठिया) बांदर लोरई, बांदर ककड़ी, सिर-माला, सोनहाली, आमलताम्।

केशिया फिस्टुला (Cassia fistula, *Linn.*) केथार्टोकार्पस फिस्टुला (Cathartocarpus fistula, *Linn.*)-लेo। इण्डियन लेबर्नम (Indian laburnum), पुडिंग पाइप ट्री (Pudding pipe tree), पर्जिंग केशिया Purging cassia (Pod or legume of)-इ॰। केशी कैनोफिशियर (Casse Canoficior)-फ्रा॰।

संस्कृत पर्याय - चक्रनिम्बायः (वै॰), उडरगुत (शे॰), राजवृक्षः, सम्पाकः, चतुरंगुलः, शम्पाक, आरेवतः, व्याधिघातः, कृतमालः, सुवर्णकः, (स॰), मन्थानः, रोचनः, दीर्घफलः, नृपद्रुमः, प्रग्रहः, हिमपुष्पः, राजतरुः, कुष्ठघ्नः, महाकर्णिकारः, ज्वरान्तकः, अरुजः, स्वर्णांगफलः, स्वर्णपुष्पः, स्वर्णद्रुः, कुष्ठसूदनः, कर्णाभरणकः, महाराजद्रुमः, कर्णिकारः, स्वर्णांङ्गः, आरग्वधः, आरग्वधः, आरग्वधम्, सम्पाकः कंडूघ्नः, रेचनः, स्वर्णभूषण। सोनालु, सों (सों) दाल, सोनालु, लठिया सोनाल, वड सोन्दालि। बानोर-लाठी, बाँदर-लाठी, सोनाली; आमलतास, राखालचानडी -बं॰। ख़ियार शंबर, ख़्रनूब-हिन्दी, फ़लूस-अ॰। ख़ियार-चंबर-फ़ा॰। सक्के; कायिसारा-तु॰। कोनृकैक्-काय्, शरक् कोनृकैक्-काय्, इरजिवरुट्टम, कोमरे, कोने, मम्बल कोन्नइ-ता॰। रैल-कायलु, सुवर्णम्, कायड्र -कायि, रैल-चेट्टु, रैला-काय, आरग्वधमु, रेल- राला, कोयल-पन्ना, रेयलु-ते॰, तै॰। कोन्नक्--काय, कोन्न (-न) -मल॰। कक्के -कायि, हेगाके, कक्के, कक्के-मर-कना॰।

आरग्वधो-बैद्ध, गाइना, ग्वारगादा, संदेशा, धोर-गाइना, बाय, बावा-बहिनु ... महo। गड-मानु, गरमालो, गरमालो, गरमाल, गरमाल-गु॰। चाहिन्न-सिं॰। तुरो, स्नुग्गी, स्नुगफ्‌दाका फि, कामालइवहि, यानजाडि ... कोना-माला॰। घनोंदा, घनो, काइन, कनियार, धनबा-पं॰। राजवृक्ष, किरीन कुड राजवृक्ष-नैपा॰। चिमृहनी-सि॰। गाँ हरी-(कोल॰) सोनालु-(गारो। महाराष्ट्र बहाबार-कच्छा॰। सन्दारी, सुनारी आरेग किनवाली, सिनोआी, इलांगा, किरोवो, सांम-उ॰ प॰ प्रा॰। यगौ-ब्रह्म॰। ... रैला, गिरोमाड, काकच-म॰ प्र॰। अमार, दमा, कंबार, रेरा (ड़ा)-गौं॰। गरमाल, -गरग॰। यहिलु याहया हेगके-क॰। बाहा लाठी-सा॰। सुनारि, मंदरी-मोनारी-उ॰ (सिद्धको)।

परिचय ज्ञापिका संज्ञाएँ—स्वर्णपुष्प दीर्घफल गुण ज्ञापिका संज्ञाएँ—कण्डूघ्न, ज्वरान्तक कुष्ठसूदन, रेचन।

शिम्बी या बबूर वर्ग।

(*N. O. Leguminosæ*)

उत्पत्ति-स्थान—प्रायः समस्त भारतवर्ष, पश्चिम भारतीय द्वीप समूह और वर्मा, ब्राज़ील अफ़्रीका के उष्ण प्रदेश।

वानस्पतिक-वर्णन—अमलतास के बिना यत्न के जहाँ तहाँ उत्पन्न होते हैं। प्रायः ३-६ जोड़ेमें होते हैं, अग्र भाग में पत्र नहीं होता, पत्र का पृष्ठ तथा उदर मसृण और वृन्त ह्रस्व होता है। पुष्प पीतवर्ण एवं सुदीर्घ, अवनत और अशाख पुष्प दण्ड स्थित होता है। पुष्प-बीज-कोष-एक कोण होता है जिसमें असंख्य बीजकण होते हैं। जितने ही परिपक्व होते जाते हैं, उतने ही अन्तर में पड़े हुए परदों की वृद्धिके साथ परस्पर पृथक् भूत होते जाते हैं। परिपक्व फल-नलाकृति, हस्ताधिक दीर्घ ह्रस्व, मज़बूत, काष्ठीय डंठल युक्त एवं नोकदार और लगभग १ इं॰ व्यास वृत्त मे

ढका रहता है। फल का ऊपरी भाग मसृण, पकने पर गंभीर धूमर वर्णका हो जाता है। उसमें फाइब्रो वैस्कुलर (Fibro vascular) दो चौड़े समांतर शीवनियों में विभक्त होता है, जैसे पृष्ठीय और उदरीय सीमंत जो फलीके समग्र लम्बाई भर होते हैं। ये (सीमंत) अविकण अथवा लम्बाई की तरह किंचित धारीदार होते हैं। इनमें से हर एक दो काष्ठीय ...ों द्वारा निर्मित और एक संकुचित रेखा द्वारा युक्त होता है। एक फली में पाए जाने वाले २ से १०० बीजों में से प्रत्येक अत्यन्त पतला ...ष्ठीय पर्दों से निर्मित एक कोष में स्थित होता है। बीज चक्राकार रक्ताभ धूमरवर्ण का होता है, जो चारों ओर से अहिफेनवत् कृष्णवर्ण के पदार्थ से आवृत्त होता है। यह चिपचिपा मधुर एवं दुर्गन्धियुक्त होता है।

नोट—इसका केवल यह शुद्ध गूदा ही फार्माकोपिया में प्रविष्ट है। पुष्पकालः—वैशाख और ज्येष्ठ।

रासायनिक संगठन—फल के वारीक चूर्ण के वाष्प स्रवण विधि द्वारा अर्क खींचने से मधु गन्धि युक्त एक श्याम पीत वर्ण का अस्थिर तैल प्राप्त होता। तैलीय अर्क में साधारण ब्युटिरिक एसिड होता है फल मज्जा में शर्करा ६० प्रतिशत लुआब, संग्राही पदार्थ, ग्लूटीन (सरेश), रञ्जक पदार्थ, पेक्टीन, कैल्सियम् ऑक्ज़ेलेट, भस्म, निर्यास और जल सम्मिलित होता है।

प्रयोगांश—मूल, मूल त्वक्, (वृक्ष त्वक्), पत्र, पुष्प, फल, मज्जा, बीज की गिरी। अंतः परिमार्जन हेतु फल और बहिः परिमार्जन हेतु यथा कुष्ठ आदि में पत्र लेना चाहिए। सि० यो० पित्त० ज्व० राचादौ।

इतिहास—अमलतास वृक्ष की आदि जन्मभूमि भारतवर्ष है। अतएव प्राचीन भारतियों को उक्त औषधि का ज्ञान था। किंतु प्राचीन यूनानियों को इसका ज्ञान न था। कदाचित् पश्चात्कालीन यूनानियों को अरब निवासियों द्वारा इसका ज्ञान हुआ।

औषध-निर्माण—(१) मूल त्वक् क्वाथ, मात्रा ५–१० तो० । (२) फल मज्जा, मात्रा २–४ आने भर। विरेचनार्थ आधा से १ तो०। (३) आरग्वध पञ्चक। हा० अष्टि०। (४) आरग्वधादि वा० सु०। (५) आरग्वधाद्य तैल। च० द०। (६) गुलकंद। (७) वटिका। (८) मद्य। (९) वर्तिका। (१०) अवलेह। (११) मज़्जून और (१२) फांट।

अमलतास के गुण धर्म तथा प्रयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार-अमलतास कंडूघ्न (चरक) और कफवात प्रशमन (सुश्रुत) है। अमलतास (आरग्वध) रस में तिक्त भारी उष्ण है तथा कृमि और शूल का नाश करता है और कफ, उदर रोग, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म और त्रिदोषनाशक है। धन्वन्तरीय निघण्टु।

आरग्वध अति मधुर, शीतल, शूलघ्न है तथा ज्वर, कण्डू (खुजली), कुष्ठ, प्रमेह, कफ और विष्टम्भनाशक है। रा० नि० व० ६।

आरग्वध गुरु, मधुर, शीतल और उत्तम स्रंसन, कोष्ठस्थ मलादि को ढीला करने वाला है। तथा ज्वर, हृद्रोग, रक्त पित्त, वातोदावर्त (ऊर्ध्व गत वायु) और शूलनाशक है। इसकी फली स्रंसन (कोठे के मलादिक को शिथिल करने वाली) रुचिकारी है। तथा कुष्ठ, पित्त और कफ नाशक है। अमलतास ज्वर में सर्वदा पथ्य और परम कोष्ठशोधक है। भा० पू० १ भा०।

राजवृक्ष (अमलतास) अधिक पथ्य मृदु, मधुर और शीतल है। इसका फल मधुर, वृष्य, वात पित्त नाशक और सर (दस्तावर) है। राजवल्लभः।

अमलतास पत्र रेचक और कफ तथा मेद नाशक है। पुष्प मधुर, शीतल, तिक्त और ग्राहक है। तथा कषेला...। फल मज्जा पाक में मधुर, स्निग्ध, अग्निवर्द्धक, रेचक और वात एवं पित्त का नाश करने वाली है। द्रव्य० गु० वै० निघ०।

अमलतास के वैद्यकीय व्यवहार—

चरक—ज्वर में आरग्वध फल—(१) ज्वर रोगी को कोष्ठ शुद्धि हेतु उष्ण गाय के

दूध वा किसमिस के रस (क्वाथ के साथ आरग्वध फल मज्जा सेवन करनेको दें। चि० ६ अ०।

(२) रक्तपित्त में आरग्वध फल—अमलतास की फली की मज्जा को प्रचुर परिमाण में मधु और शर्करा के साथ उर्ध्वगत रक्त पित्त रोगी को विरेचन के लिए सेवन कराएँ। (चि० ४ अ०)।

(३) पित्तोदर में।

आरग्वध का फल—क्राथ विधि से अमलतास के फल के गूदा का काढ़ा तैयार कर पित्तोदर रोगी को सेवन कराना चाहिए। (चि० १८ अ०)।

(४) कामला में आरग्वध फल—आरग्वध फल मज्जा को इक्षु, भूमिकुष्माण्ड वा कच्चे आमले के रस के साथ कामला रोगी को सेवन कराना चाहिए। इससे कामला का नाश होता है। (चि० २० अ०)।

(५) कुष्ठ में आरग्वध पत्र—अमलतास के पत्र को पीस कर कुष्ठ में प्रलेप करें। (चि० ७ अ०)।

(६) विसर्प में आरग्वध पत्र—अमलतास के पत्र को बाटकर घृत मिला कफज विसर्प में प्रलेप करें। (चि० ११ अ०)।

(७) उरुस्तम्भ रोग में अमलतास के पत्र का शाक—तिल तैल द्वारा अमलतास के पत्र का जल में लवण रहित शाक सिद्ध कर उरुस्तम्भ रोगी को सेवन कराएँ। (चि० २७ अ०)। "वेत्रारग्वध पल्लवैः"

सुश्रुत—(१) उपदंश में व्रत प्रक्षालनार्थ आरग्वध पत्र—जाति (चमेली) तथा आरग्वध इन दोनों के पत्र का काढ़ा कर उससे औपदंशीय व्रत का प्रक्षालन कराएँ। (चि० १६ अ०)

(२) हारिद्रमेह में आरग्वध—अमलतास के पत्र वा मूलत्वक् का क्राथ हरिद्रामेही को सेवन कराएँ। (चि० ११ अ०)

वाग्भट—(१) कफ विद्रधि में आरग्वध पत्र—आरग्वध पत्र के क्राथ से कफज विद्रधि के व्रत को धोएँ। (चि० १३ अ०)।

(२) कफज अरोचक में आरग्वध फल मज्जा तथा अजवाइन इन दोनों द्वारा निर्मित क्राथ को कफज अरोचक में कराएँ। (चि० ५ अ०)।

(३) राजयक्ष्मा में आरग्वध—बलवान यक्ष्मा रोगी को विरेचनार्थ मधु तथा घृत के साथ अथवा दुग्ध वा अन्य वस्तु के साथ आरग्वध फल मज्जा का सेवन कराएँ। (चि ५ अ०)।

(४) कुष्ठ में आरग्वध मूल की जड़ के काढ़े से १०० बार घृत का ... इस घृत को कुष्ठ रोगी को पान कराएं। सेवन काल में स्नान वा पानार्थ खदिर का व्यवहार कराते रहें। (चि० १६ ...

भावप्रकाश—आमवात में आरग्वध सरसों के तेल में अमलतास के पत्र को ... सायंकाल भोजन के साथ इसका सेवन ... यह आमदोषनाशक है।

चक्रदत्त—(१) पित्तज्वर में आरग्वध ... पित्तज्वरी को अमलतास के गूदा तथा ... द्वारा प्रस्तुत क्वाथ का पान कराएं। चि०।

(२) गण्डमाला में आरग्वध ... ताजे अमलतास की जड़ की ताजी ... चावल के धोवन से पीसकर नस्य देने तथा ... माला पर प्रलेप व अभ्यंग करने से गण्ड... होता है। गण्डमाला चि०।

वङ्गसेन—दद्रु व किटिभ कुष्ठ में ... पत्र—

अमलतास के पत्र को पीस कर लेप ... उक्त कुष्ठ और सिध्म आदि कुष्ठों का ... होता है।

वक्तव्य

राजनिघण्टुकार के मत से अ... का नाम कर्णिकार है। यह मालूम ... कि यह किस अंश में ठीक है। ... निघण्टुक्त कर्णिकार का एक नाम ... शिम्बी" और राजनिघंटुक दूसरा कर्णि... बीजक" है।

—लेदास लिखते हैं—
"आकृष्ट हेमद्युति कर्णिकारम्"।

यूनानी वैद्यकीय मत से

प्रकृति—गरमी और सरदी में मअ्तदिल जिसका प्रमाण यह है कि इसमें कोई ऐसा स्वाद नहीं पाया जाता है (इसका स्वाद मधुर है और ठीक अत्यन्त तीव्र होता है। अतएव इसको प्रथम वा द्वितीय का उष्ण होना चाहिये) इसी हेतु से इसको किसी बलवान कैफ़ियत से सम्बद्ध किया जाए, और तर है नफ़ी० ३। किसी किसी ने १ कक्षा में गरम तर और किसी किसी ने मअ्तदिल (शीतोष्ण) लिखा है। हानिकर्त्ता-आमाशय के लिए तथा हृल्लास, मरोड़ और पेचिश उत्पन्न करता है। दर्पघ्न-मस्तगी और अनीसूँ इसके आमाशय पर हानिकर तथा हृल्लास-कारक प्रभावकी निवृत्ति होतीहै। मरोड़ और पेचिश के लिए इसमें रोग़न बादाम मिलाकर देना चाहिए। माज़ तुर्श कद्दू और जुलाल इमली प्रतिनिधि—इससे तिगुनी द्राक्षा,, तुर्बुद (निशोथ) और तुरञ्जबीन। मात्रा—१ तो० से ५ या ८ तो० तक। साधारणतः २॥ तो० से ५ तो० तक प्रयुक्त है।

गुण कर्म, प्रयोग—अमलतास उदरीय वा आमाशयीय अन्तर अवयवों के उष्ण शोथों को लाभ पहुँचाता है। क्यों कि यह मृदुकर्ता, विलायक व द्रावक है। इन्हीं प्रभावों के कारण कण्ठस्थ शोथों के लिए मको के पानी के साथ इसका गण्डूष किया जाता है, और इन्हीं कारणों से सन्धिवात तथा वातरक्त पर इसका प्रलेप किया जाता है।

यह यर्क़ान (कामला) और यकृद्वेदना को लाभ पहुँचाता और उदर (कोष्ठ) को मृदु करता और बिना कष्ट के दूध पित्त और कफ के विरेक लाता है। गर्भवती स्त्री को भी इसका विरेचन दिया जा सकता है क्यों कि इसमें सोम (ज़ुअ्म), तीक्ष्णता, क़ब्ज़ (धारकत्व) और कषायपन जैसी कोई बुरी कैफ़ियत नहीं है जो अन्तरवयवों को हानि पहुँचाए। नफ़ी०।

मीर मुहम्मदहुसैन लिखते हैं कि उत्तम जुलाब होने के लिए अमलतास की फलियों को थोड़ा गरम कर उसका गूदा निकाल थोड़े रोग़न बादाम के साथ मिलाकर प्रयोग करें। यह मुल-य्यिन (द्रावक) वक्ष के अवरोधों तथा रक्तोष्मा को लाभप्रद है और बालक तथा स्त्री यहां तक कि गर्भिणी के लिए भी निरापद रेचक है; किन्तु इसका अत्यन्त हलका प्रभाव होता है। उपर्युक्त औषध के साथ यह सम्पूर्ण दोषों का शोधक है। उदाहरण स्वरूप एकत्र हुये पित्त को दूर करने के लिये इसको इमली के साथ पिलाना चाहिए। बल्ग़म तथा सौदा के लिये क्रमशः निशोथ तथा बसफ़ाइज (कासनी, बर्ग बेद, आब शाहतरा) के साथ और आन्त्रीयावरोधों को दूर करने के लिए इसको लुआबदार वस्तु यथा अलसी वा रोग़न बादाम (रीशा ख़ित्मी, बिहीदाना या ईसब-गोल के लुआब) के साथ अथवा कोई उपयुक्त औषध यथा कासनी के साथ सम्मिलित कर प्रयोग करने की सिफ़ारिश की जाती है। संधि-वात एवं वात रक्त आदि के लिए बाह्य रूप से इसका प्रलेप उत्तम होता है। पुष्प एवं पत्र में मुलय्यिन (द्रावक) गुण का होना बतलाया जाता है। (किसी किसी ने रेचन गुण का होना भी लिखा है)। पुष्प के गुलक़न्द बनाने का भी वर्णन आया है। ५ से ७ की मात्रा में इसके बीजों के चूर्ण के प्रयोग करने से वमन आते हैं। और यदि फली के ऊपर की छाल, केशर, मिश्री और गुलाबजल के साथ पीसकर दें तो स्त्री को तुरन्त प्रसव हो। छाल और पत्तों को तेल में पीसकर फोड़ा के ऊपर लगाने से लाभ होता है। (म० अ०)

धनिए के जल के साथ इसका गण्डूष ख़ुनाक़ को लाभप्रद है। इसके पत्र सम्पूर्ण शोथों को लय करते हैं। क्वथित करने से अमलतास के गूदे का प्रभाव नष्ट हो जाता है। म० मु०।

यह पेचिश को नष्ट करता, यकृत् के रोध का उद्घाटक और यर्क़ान (कामला) और उष्ण प्रकृति को लाभप्रद है। जिसे एक वर्ष न हुए हो

यह रक्त प्रमेह उत्पन्न करता है। पुष्प, मृदुकर्त्ता, श्याम त्वचा का प्रलेप नत्रुघ्न है। यु० मु०।

कासनी पत्र स्वरस, मको और कसूस तथा अन्य उपयुक्त औषधों के साथ इसका उपयोग करने से यह यकृद्वेदना व यकृत् के अवरोध, यर्क़ान (कामला) और उष्ण ज्वरों को लाभ दायक है। बकरी के दूध या आब अञ्जोर के साथ इसका गण्डूष करनेसे ख़ुनाक़को लाभ होता है।

नोट—चूँकि यह आंत्र के भीतर चिपट जाने के कारण क्षोभ व घर्षण उत्पन्न करने का हेतु बनता है। अत एव इसको रोग़न बादाम के साथ मलकर काम में लाना चाहिए।

डॉक्टरी मत से—

एलोपैथी चिकित्सा में केवल इसका गूदा अर्थात् आरग्वध फल मज्जा ही औषधार्थ व्यवहार होती है।

आरग्वध फल मज्जा, आरग्वध गूदिका, अमलतास का गूदा–हिं०। केशीई पल्पा Cassiae Pulpa–ले०। केशिया पल्प Cassia Pulp.–इं०। कस्से ख़ियार शंबर–अ०।

(ऑफ़िशल *Official.*)

निर्माण-विधि—यह कोमल, मधुर, लगभग श्यामवर्ण का गूदा है जो अमलतास की फली से प्राप्त होता है। उक्त फली को जल में मल छान कर यहाँ तक पकाएँ कि वह मृदु इमल्शियावत् रह जाए।

प्रभाव—मृदुरेचक। मात्रा—मृदुरेचक रूप से ६० से १२० ग्रेन तक और ३ से ४ आउंस तक विरेचक रूप से। यह कन्फेक्शियो सेना में पड़ता है।

प्रभाव तथा प्रयोग—यद्यपि यह मृदुकर्त्ता व विरेचक है। परन्तु, क्योंकि इसके प्रयोग से जी मचलाता है और उदर में मरोड़ होने लगती है। इसलिए इसको अकेला उपयोग में नहीं लाते, प्रत्युत सनाय के साथ सम्मिलित कर मअजून की शक्ल में दिया करते हैं। (मे०)

अन्यमत

फ्लेमिंग ने भारतीय रोगों के ... और पुष्प का उपयोग करते हुए ...

डॉक्टर इर्विन लिखते हैं—"मैंने ... को सबल रेचक पाया।" गुजरात ... से इसके उपयोग करने की भी सूचना ... है।

कोंकण में इसके कोमल पत्ते ... रूप में तथा मिलावे के रस के प्रयोग ... खराश के शमनार्थ इसका उपयोग ...

डम्फ़्रियस कहते हैं कि, पुष्पागम ... नव्य कलियाँ एवं पुष्प का मधुमेह ... इसके वृक्ष में छेवा देने से एक विशेष ... निर्यास निर्गत होता है, जो कतीरा के ... पानी में फूल जाता है। (डीमक) ... ब्रेज़िलियना (Cassia Brazilia...) तथा कैशिया मॉस्केटा (Cassia Mos...ta.) भी भारतवर्ष में लगाए गए हैं। ... में बिलकुल अमलतास के समान ... अधिक काल तक इसका प्रयोग करते ... धूसर वर्ण का मूत्र आने लगता है। ... पल्प में मिश्रण करने के लिए इसका गूदा ... में आता है। अजीर्ण स्वभाव के व्यक्तियों ... इसके गूदा की प्रशंसा की जाती है। ... है। मूल तीव्रविरेचक है। फल मज्जा ... प्रवण स्त्रियों के पक्ष में हितकर है। ... रूप से इसकी मात्रा ६० से ८० ... (मेटिरिया मेडिका ऑफ़ इंडिया—... एन० खोरि, भा० २, पृ० २००)

मज्जा, मूलत्वक्, बीज और पत्रमें रेचक गुण ... मूल रेचक, बल्य और ज्वरघ्न प्रभाव करता ... चूँकि अकेला प्रयोग करने पर पूर्ण प्रभाव ... इसको एक या दो आउंस अथवा इससे ... अधिक मात्रा में देना पड़ता है। इस लिए ... अन्य रेचक औषधों के साथ (सहायक ... पाक या अवलेह रूप में वर्तते हैं। (... अकेला न वर्तने का यह भी कारण है कि ... शूलवत् वेदना परिकर्त्तिका और

होता है)। आरग्वध गुटिका कॉफी के में भी प्रयुक्त होती है। इसके गूदे का मश् पाक) २ से ४ ड्राम की मात्रा में मृदु है। इससे १ या २ दस्त आजाते हैं। इसके ा पाक बहुमूत्र में प्रयुक्त है। यह गुलकन्द ों कि यह पड़ता है विशेषतः कोमल प्रकृति त्रियों के लिए एक शीतल कोष्ठ मृदुकर र है। इसकी मात्रा आधा आउंस है। ो सोते समय उष्ण दुग्ध से सेवन कराएँ। ी पकी फली के गूदे में इमली का गूदा कर सोते समय सेवन करने से आंत्र पर ा मृदु प्रभाव होकर दूसरी सुबह को १ या में विरेक हो जाते हैं। बालकों के आध्मान उदर शूल में विरेक हेतु साधारणतः इसको ा के चारों तरफ लगाते हैं। आमाशयिक ारों में इसके फूल-का काढ़ा दिया जाता है। े पत्र को पीस कर दाद पर लगाते हैं। े पत्र एवं छाल को पीस कर उसमें तैल मिश्रित कर उसका, फुंसी, दद्रु, शीत के प हस्तपाद की अंगुलियों का कण्डूयुक्त शोथ hilblains) कीटदंष्ट्र, अर्दांगवात (Fa-l paralysis) और आमवात पर प्रलेप ते हैं। मूल, ज्वर, हृद्रोग, अवरुद्ध स्राव और विकार प्रभृति में लाभदायक है। (ई० मे०)

ारग्वध के कतिपय चुने हुए उत्तम मिश्रित योग

(१) पाचकावलेह—नीबू के एक सेर रस में वसेर अमलतासको फलियों को कूटकर डाल। दो दिन भीगने के बाद धुले हुए स्वच्छ वस्त्र डालकर हाथ से हिला हिलाकर छानलें। पुनः में निम्नांकित १० वस्तुओं के चूर्ण को कपड़ न करके डाल दें। वे यह हैं—दालचीनी, ३, काली मरिच, छोटी पीपल, हींग (भुनी ई), छोटी अथवा बड़ी इलायची के दाने इन चीजों को २-२ तो० लें और सेंधा नमक, बिडलवण, कालादाना (अग्नि पर भुना हुआ) र नवीन सफेद जीरा (भुनाहुआ)

निर्माण विधि—इनमें से अन्तिम की तीन चीजों को शिल पर खूब पीस डालें। बाकी ऊपर लिखी हुई सात चीज़ों को लोहे की खरल में कूटकर कपड़ छानकर लें। सब चूर्ण को ऊपर कही हुई खटाई में मिलाने से बहुत स्वाद पाचकावलेह (पाचक चटपटी चटनी) बन जाता है। मात्रा—३ मा० से १ तो० तक।

सेवन विधि तथा गुण व प्रयोग—इसके चाटने से मन्दाग्नि व आलस्य दूर हो जाते हैं। रात्रि को चाटकर सोने से प्रातःकाल दस्त साफ हो जाता है। चित्त खूब प्रसन्न रहता है। भोजन में अरुचि होने पर दो घंटे पहिले चाट लेने से भोजन में रुचि हो जाती है। प्रायः ज्वर में मुख का स्वाद बिगड़ा रहता है, इसके चाटने से वह दोष दूर हो जाता है। यह अवलेह कुछ गरम होता है। इसलिए पांच तोले दाख को नीबू के रस के साथ शिल पर पीस छानकर अवलेह में डाल दें और पके हुए अनार के दानों का रस डाल दें तो ये सब गरमी को शान्त कर स्वाद को बढ़ा देंगे। इसको धातु के पात्र में न बनाएँ। स्वादानुसार लवण को न्यूनाधिक कर सकते हैं। (रसायनसार १ भा०)।

(२) गुलक़ंद ख़ियार शंबर (आरग्वध का गुलक़न्द)—अमलतास के उत्तम फूल आधसेर लेकर एक चीनी के हावनदस्ता में डालकर थोड़ी थोड़ी सफेद चीनी फूलों में डालें और कूटते जाएँ। जब १ सेर चीनी मिल जाए और मिश्रण गुलक़न्द के समान हो जाए तब तैयार जानना चाहिए। इसका रंग पीत होगा। (अथवा गुलकन्द की विधि से इसको तैयार करें)।

मात्रा—४ से ८ मा० तक। बालकों तथा स्त्रियों के लिए अत्युत्तम है।

(३) लऊक़ ख़ियार शंबर—यह युहन्ना (यूहन्ना) बिन मासूयह का योग है। उन्नाव २ दाना, सपिस्ताँ (श्लेष्मान्तक) १०० दाना तुख्म ख़ित्मी ३ तो०, मवेज़ मुनक्का ७॥ तो०; बनफ़्सह, अस्लुस्सूस कुट किया और छीली हुई मुलेठी प्रत्येक ४ तो०, कतीरा ४॥ तो०, अस्पगोल

(ईपद्गोल) ३ तो०, इन सम्पूर्ण औषधों को ३ सेर पानी में क्वथित करें। जब तीसरा भाग रह जाय तब उतार कर साफ करलें। फिर ३ तो० अमलतास घोलकर दुबारा साफ करें। पुनः ३॥ मा० सकरीनज और ६ तो० मिश्री मिलाकर काथ करें। गाढ़ा होनेपर रोग़न बादाम या रोग़न अनजसद् के साथ मर्दन कर आवश्यकतानुसार थोड़ी थोड़ी दिन में २-३ बार चाटें। उपयोग—कफ, शोथ ज्वर, तृषा, जिह्वा की कर्कशता और अवरस्थ व्याधियों यथा-कास, प्रतिश्याय पार्श्वशूल तथा उरफुफ्फुसौप प्रभृतिमें लाभदायक है।

(४) मुरब्बाए फ़लूस खयार चंबर—कच्चा अमलतास जिसमें गंध का प्रादुर्भाव न हुआ हो लेकर उसका छिलका दूर करके फ़लूस (लुआब) निकालें और पान में खाने वाले चूने के पानी में एक दो घंटे भिगो रखें। जब लाल हो जाए तब उक्त पानी से निकाल कर दो तीन बार निर्मल जल से धोएँ। फिर मिश्री को गुलाब जल में विलीन करके अग्नि पर रखें। जब चाशनी तैयार होने के निकट आए उस समय उक्त फ़लूस ख़यार शंबर को उसमें डालकर दो तीन उबाल और दें और उतार लें। यदि सुवासित करना चाहें तो किंचित् कस्तूरी तथा अम्बर भी उसमें सम्मिलित कर दें।

गुण—कोष्ठमृदुकर है और अविच्छिन्न बद्धकोष्ठ तथा विट् भंशक उदरशूल के लिए विशेष कर लाभदायक है।

(५) मअ्जून ख़यार शंबर—गुलाबपुष्प ७ तो०, सनाय मक्की ७ तो०, सूखी धनियाँ, रुब्बुस्सूस (सत मुलेठी) १ तो०, सैंधव १ तो० इनको बारीक करके पृथक् रखलें। निम्न औषधों को २ सेर वृष्टि जल में अहोरात्रि भिगो रखें। अंजीर १२ तो०, अनजीर ६ तो०, आलूबुखारा ५ तो०, मग्ज़ फ़लूस ख़यार शंबर २० तो०, अनज़राम के अतिरिक्त शेष औषधों को पादशेष रहने तक क्वथित कर चलनी से छान लें। तदनन्तर उक्त जल में २० तो० अमलतास भिगोकर कुछ मिनट तक मन्दाग्नि की ... लें, और पुनः चलनी से छानकर ... प्रभृति डाल दें। उस पानी में १ सेर ... मिलाकर गाढ़ा होने तक पकाएँ। फिर बारीक की हुई दवाओं को मिलाकर रोग़न बादाम मिला दें। ध्यान रखें ... पर जल न जाए।

गुण—कौलअहार तथा ... के लिए अत्युत्तम कोष्ठमृदुकर है। ... प्रत्येक प्रकृति के लिए विशेषकर ... लिए अत्यन्त लाभप्रद है। ... ८ मा० तक सोते समय पानी या ... सेवन करें।

(६) आरग्वध क्वाथ—पीली ... बकला ३ तो० ६ मा०, आलूबुखारा, विलायती प्रत्येक २०-२० दाने, इमली प्रत्येक ४ तो० ७॥ मा०, ... नीलोफ़र प्रत्येक १ तो० १॥ मा०, ... तो० सबको १ सेर ६ छ० पानी में ... जब १॥ पाव पानी शेष रहे उस समय ... साफ करें। इसमें मग्ज़ फ़लूस ख़यार ... तो० से ७ तो० तक विलीन करके ... और ६ मा० मधुर बादाम तैल सम्मिलित ... पिलाएँ। गुण—रेचक है और पैत्तिक (... दोषों को निःसरण करता है।

(७) आरग्वध फांट—मग्ज़ फ़लूस ... शंबर, इमली प्रत्येक ४॥ तो० आलूबुखारा ... दाना, उन्नाब १० दाना, सपिस्ताँ (... २० दाना सब को गरम किए हुए ... आवश्यकतानुसार में भिगो दें। ... निथार कर तुरंजबीन, शीर ख़िश्त प्रत्येक ... ६ मा० सम्मिलित कर विलीन करें और ... करके रोग़न बादाम १ तो० मिलाकर पिलाएँ।

गुण—समग्र उष्ण एवं उग्र पैत्तिक ... अन्य रोगों में लाभदायक है और ... कर्त्ता है। यदि पित्तज कामला (... और पित्त की उल्बणता हो तो कासनी ... ताजा ६ तोले से १२ तो० तक ... अधिक सम्मिलित करें।

सूचना—काम रोगी को इस योग का सेवन कराएँ।

(८) आरग्वध वटिका—मग़ज़ फ़लूस ख़ियार शंबर ७॥ तो०, मक़्मूनिया मुशव्वी (भुलभुलाया हुआ) ४॥ मा०, कतीरा ६ मा०, पीली हड़ का बकला, काबुली हड़, काबुली हड़ का बकला, सनाय मक्की, ग़ारिक़ून (साफ किया हुआ), गुलबनफ़्शा प्रत्येक ३॥ तो०। निर्माण-विधि—मग़ज़ फ़लूस ख़ियार शंबर के सिवा शेष सब औषधों को कूट छानकर १ तो० १०॥ मा० मधुर बादाम तैल में मर्दन करके चने प्रमाण वटिकाएँ प्रस्तुत करें और वर्क़ चाँदी में लपेट कर रखें। मात्रा—आवश्यकतानुसार इसमें से ७ मा० से ६ मा० तक सेवन करें।

गुण—यह सर्वोत्कृष्ट विरेचन है और मस्तिष्क रोगों में हित है।

(९) मुलय्यिन मुबारक—गुलाब १ तो० गुल नीलोफ़र १ तो०, गुलबनफ़्शा १ तो०, आलूबोख़ारा १ तो० तुरंजबीन २ तो०। निर्माण-विधि—समग्र औषधों को रात्रि भर आधसेर अर्क़ गुलाब में तर करके प्रातः काल इतना पकाएँ जिससे आधा शेष रह जाए। तदनन्तर फ़लूस ख़ियार शंबर १० तो० को उक्त तरल में डालकर थोड़ी देर तक मृदु अग्नि देकर उतार लें। इसमें १० तो० हड़ के मुरब्बे का शीरा मिलाकर १ तो० रोग़न बादाम सम्मिलित कर लें। मात्रा—अवस्थानुसार वैद्य की राय से।

गुण—यह अत्युत्तम कोष्ठमृदुकर है। यह अत्यन्त सुस्वादु और प्रत्येक प्रकृति के अनुकूल है।

(१०) आरग्वध गण्डूष—फ़ुलूस ख़ियार शंबर ६ तो०, वृष्टि जल २० तो०, शिब्ब यमानी (यमनी फिटकरी) १ मा० सबको विलीन करके गण्डूष कराएँ।

गुण—टॉन्सिल के शोथ तथा ख़ुनाक के लिए रामबाण है।

(११) शियाफ़ ख़ियार शंबर—(आरग्वध फलवर्ति)—आरग्वध फल मज्जा, लाल शकर प्रत्येक ३ तो०, सनाय मक्की १॥ तो०, लिरमी ११ मा०, लवण ३॥ मा०। निर्माण-विधि—औषधों को कूट पीस कर प्रथम दो औषधों के द्वारा वर्ति प्रस्तुत करें और यथाविधि उपयोग में लाएँ।

गुण—उदरशूल को लाभप्रद है और कोष्ठ को मृदु करता है।

(१२) आरग्वध त्वक् क्वाथ—आरग्वध की छाल, सौंफ, कुसुम्भ बीज प्रत्येक २ तो०, मजीठ ३ मा०। सब को जौकुट कर के ११ सेर पानी में १॥ पाव जल शेष रहने तक पकाएँ। फिर शर्बत बज़ूरी मिलाकर पिलाएँ।

गुण—रजः रोध एवं कष्ट रज में लाभदायक है।

अमलतासकल्प amalatása-kalpa–हिं०पुं० अमलतास को ग्रह और उदावर्त से पीड़ित रोगी को दाख के रस के साथ दें (१)–४ वर्षकी अवस्था से लेकर १२ वर्ष तक की उम्र वाले के लिए इसके गूदे की मात्रा १ प्रसृत से १ अंजली तक है। इसे सुरामण्ड, कोल शीधु, दधिमण्ड, आमले के रस या शीत कषाय बनाकर उसे सौवीरक के साथ दें। (२)–अमलतास की मज्जा (गूदे) के साथ दूध को सिद्ध करके उससे घी निकालें, फिर उस घी को आमले के रस और उसके गूदे के कल्क से सिद्ध कर सेवन करें। (३)–अथवा उसी घी को दशमूल, कुलथी, और जौ के कषाय तथा निसोथ आदि के कल्क से सिद्ध करके सेवन करें। (४)–अथवा दन्ती क्वाथ लेकर उसमें अमलतास की मज्जा (गूदा) १ अंजली और गुड़ १ अंजली मिलाकर यथा विधि सन्धान कर ४५ दिन तक रक्खा रहने दें, जब अरिष्ट सिद्ध हो जाए तो उसे सेवन करें। जिस मनुष्य को मधुर कटु या लवण जिस प्रकार का खान पान प्रिय हो उसे उसी के साथ अमलतास से विरेचन देना उचित है। च० सं० च० अ० ८।

अमलतासादि क्वाथ amalatásádi-kvátha –हिं० पुं० अमलतास गूदा, पीपलामूल, मोथा कुटकी, बड़ी हड़, इनका क्वाथ पीने से वात, कफ ज्वरका शीघ्र ही नाश होता है तथा मोथा गिराता, और आमशूल दूर करते हुए अग्नि दीपन व पाचन करता है। शार्ङ्ग० सं०।

अमल दीप्तिः amala-dīptih–सं० पुं०,कपूर कपूर (Camphor)। च० द०।

अमलपट्टी amala-patti-हिं० स्त्री०, (A kind of stit hing)।

अमल पतत्री amala-patatri–(न्) , सं० पुं०, हंस। (A gocse, a gander, a swan.)।

अमल् बिल्यद् āamal-bilyad–अ०
अम्लिय्यह् āamliyyah-
हस्त क्रिया, शस्त्र चिकित्सा, जर्राही, दस्तकारी, चीरफाड़। ऑपरेशन (Operation)-इं०।

अमलबेत amala beta-हिं० सं० पुं० [सं० अम्लवेतस्] (१) एक प्रकार की लता जो पश्चिम के पहाड़ों में होती है और जिसकी सूखी हुई टहनियाँ बाज़ार में बिकती हैं। ये खट्टी होती हैं और पाचक, चूरण में पड़ती हैं। (२) एक मध्यम आकार का पेड़ जो बागों में लगाया जाता है। इसके फूल सफ़ेद और फल गोल खरबूजे के समान पकने पर पीले और चिकने होते हैं। इस फल की खटाई बड़ी तीक्ष्ण होती है। इसमें सूई गल जाती है यह अग्नि संदीपक है। यह एक प्रकार का नीबू है।

अमलबेद amalabed–हिं० संज्ञा पुं०, उ० अमलबेत, अम्लवेतस (Rumex vesicarius)।

अमलबेद नीबू amalabeda-nibú–हिं० तुरञ्ज लीमूँ।

अमलबेल amala-bela–हिं० गिदड़द्राक,कस्मर। पं०,हिं०। अम्लपर्णी-सं०। बगदल, अम्ललता, सोनेकेशुर–बं०। वाइटिस (Vitis Carnosa, Wall; Wight.)। सीसस कार्नोसा (Cissus carnosa)–ले०। फ्लेशी वाइल्ड वाइन (Fleshy wild wine)। मेक मेकलवी-चेट्टु–ता० (फा० इं०). तिगे (फा० इं० मे० प्लां०), तीगे, मेक-मेलवी–चेट्टु, कड़-डिके, ... (इं० मे० प्लां०)-ते०। ... (इं० मे० प्लां०)–पहा०। खट-तुम्बी, ... (फा० इं०, इं० मे० प्लां०, मे० मो०), तमन्था खट्टुम्बो (इं० मे० प्लां०) दुरखबू-सिं० (इं० मे० मे०) (इं० मे० प्लां०)–आसा०। अमटवेल, गिदड़द्राक, द्रिकरी, बगुदा, ... मे० प्लां०)–पं०। चोडी, अम्बदवेल (इं० मे० प्लां०, फा० इं०)–कडमोडी-मह० ढलीरिक-लेप०।

द्राक्षा वर्ग

(*N. O. Ampelideae.*)

उत्पत्ति-स्थान—भारतवर्ष के सम्पूर्ण प्रधान देश तथा हिमालय (के उष्ण स्थान)।

प्रयोगांश—बीज तथा मूल।

प्रभाव तथा उपयोग—इसके पत्रकी ... (उत्कारिका) बैलों की ग्रीवा पर जुआ के ... हुए घावों के लिए प्रयुक्त होती है। (इलियट)

इर्विन (Irvine) के मतानुसार ... बीज एवं पत्र दोनों अभ्यन्तर रूप से प्रयु... आते हैं।

स्टयुवर्ट के कथनानुसार इसकी जड़ को ... मरिच के साथ पीसकर विस्फोटक (फोड़ा फुंसी) पर लगाते हैं।

जड़ संग्राही रूप से प्रयोग में लाई जाती है। इं० मे० मे०।

अमलमणिः amala-manih–सं० पुं०
अमलमणि amalamani–हिं० पुं०
(१) स्फटिक, फिटकरी, (Alumen)। रा० नि० व० १३। (२) कर्पूरमणि, कर्पूर मणि विशेष। (३) बिल्लौर, स्फटिक।

अमल रत्नम् amala-ratnam–सं० पुं० स्फटिक, फिटकिरी। (Alumen) रा० नि० व० १३।

लता amala-latá-सं०
बेल amala-vela
ि—अमलबेल।

ी amalasi-फ़ा० अनार भेद अर्थात्
र वेदाना। इसे अनार मीठानी भी कहते हैं।

amalá-सं० स्त्री० -हिं० संज्ञा स्त्री०
) महानीली, बड़ा नील। रा० नि० व०
(२) सेहुण्ड भेद। रा० नि०। (३)
आमलकी। पताल आँवला, भूँई आमला
Phyllanthus neruri) अम०। (४)
(५) मातला वृक्ष-हिं० संज्ञा पुं० [सं०
मलक] (६) नालिनाला, आमला
वला (Phyllanthus Emblica)
रोग० क्षुद्ररोग० चि०।

ज्झटा amalájjhatá-सं० स्त्री० भूधात्री
है आमला (Phyllanthus neruri)
० टी० म०।

amali-हिं० वि०
ि áamali-अ०
१) अमल में आने वाला। व्यवहारिक। (२)
रने वाला। (३) चिकित्सा शास्त्र का वह अंग
ि क्रिया से संबन्ध रखता है। (४) नशा
ज्ञ। (५) अमली, इमली।

ी amali-हिं० संज्ञा स्त्री०, द०
ी का बोट amali-ká-bot
सं० अम्लिका] (१) इमली, तितड़ीक
Tamarindus Indicus)। (३)
एक कांटेदार पेड़ जो हिमालय के दक्षिण
गढ़वाल से आसाम तक होता है। करमई
गोरूवटी।

लूक amalúka-हिं० संज्ञा पुं० [सं०
अम्ल] एक पेड़ जो अफ़ग़ानिस्तान, बिलूचिस्तान
हज़ारा, काश्मीर, और पंजाब के उत्तर हिमालय
की पहाड़ियों पर होता है। इसमें से बहुत सा
रस बहता है जो जम कर गोंद की तरह हो
जाता है। इसका फल ताजा और सूखा दोनों
खाया जाता है। सूखा फल काबुली लोग लाते
हैं। इसे मलूक भी कहते हैं।

अमलूल áamalúla-अ० कनावरी।

अमलैलस amalailasa-बरब० अफ़रीका के किसी किसी भाग में एक प्रसिद्ध वनस्पति का नाम है।

अमलोनी amaloni-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अम्ललोणी] नोनिया घास। नोनी। इसकी पत्तियां बहुत छोटी छोटी और मोटे दल की तथा खाने में खट्टी होती हैं। लोग इसका साग बना कर खाते हैं जो अग्नि वर्द्धक है। कहते हैं कि इसके रस में धतूरे का विष उतर जाता है। यह बड़ी पत्तियों का भी होता है जिसे कुलफ़ा कहते हैं।

अमलोरा amalorá-पं० आमला, आमी, लेमिल, लेलिमल। मेमो०।

अमलोल amalola-अ० रेत में रहने वाला एक जानवर है।

अमलोलवा amalolavá-हिं० त्रिपत्री, अम्ल-पत्री, गोधापदी-सं०। Vitis Trifolia, Cissus Carnosa। देखो—गोधापदिका (दो–)

अमवती,–टी amavati,-ti-हिं० खटकल, चाहेरी, चूका। Rumex Scutatus

अमश áamash-अ० (१) दृष्टिमांद्य, दृष्टि की निर्बलता-हिं०। ज़ोफ़ बसर, नज़र की कमज़ोरी, (२) चक्षु द्वारा जलस्राव, आँख से पानी बहना।

अमसः amasah-सं० पुं०
अमस amasa-हिं० संज्ञा पुं०
रोग (Disease)। उ०।

अमसानिया amasániyá-पं० चुतरुरन। चौरा मेमो०।

अमसुल amasula-दक्षिण० ओंट, ओट। Garcinia xanthochymus। फा० इं० १ भ०। इं० मे० मे०।

अमसूल amasúla-हिं० संज्ञा पुं० [देश०] एक पतला पेड़ जिसकी डालियाँ नीचे की ओर झुकी होती हैं और जो दक्षिण में कोकण, कनारा और कुर्ग के जंगलों में होता है। इसका फल

खाया जाता है और गोवा में विदाव के नाम से बिकता है। पर यह वृक्ष उस तेलके कारण अधिक प्रसिद्ध है जो उसके बीज से निकाला जाता है। बाज़ारों में यह तेल जमी हुई सफ़ेद लम्बी पत्तियों या टिकियों के रूप में मिलता है जो साधारण गर्मी से पिघल जाती हैं। यह वर्द्धक और संकोचक समझा जाता है तथा सूजन आदि में इसकी मालिश होती है। मरहम भी इससे बनाते हैं।

अमसूख amasúkh–फ़ारसी०, यू० एक अप्रसिद्ध बूटी है।

अमसोल
आमसोल } amasola–बं० कोकम, डासरा –हिं०। वृक्षाम्ल, अम्लवृक्षक।

अमहर amahara–हिं० संज्ञा स्त्री० [हिं० आम] आमकी सूखी फली। छिले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फ़ाँक यह दाल और तरकारी में पड़ती है इसे कूट कर अमचूर भी बनाते हैं।

अमा āamá–अ० अंधता, अंधापन हिं०। कारी, नाबीनाई, अंधा होना। Blindness.

नोट—अम्मा अर्थात् अंधा। इसका स्त्री लिंग अमया है।

अमाअदा amáadá–बं० कपूर हरिद्रा, अम्बा हलदी। (Curcuma amada) इं० मे० मे०।

अमाइरिस केम्फ़ॉरिक amyris camphoric–ले० अज्ञात।

अमाइरिस कामीफ़ोरा amyris commiphora, *Roxb.* कॉम्मिफोरा मेडागास्करेन्सिस (Commiphora madagascarensis, *Lindl.* गूगुल। इं० हैं० गा०।

अमाइरिस गाइलोडेन्सिसamyris gylodensis, *Roxb.*–ले० अज्ञात।

अमाइली ब्रो माइडम् amyli-bromidum देखो–एमाइल।

अमाइलोडेक्स्ट्रीन् amylodextrin–ले० श्वेत सार भेद। देखो–जायफल। फा० इं० ३ भा०।

अमाइलोप्सिन amylopsin–इं० विरलेपक। देखो—क्लोमरस।

अमाक़ amáq–अ० (ब० व०), अ० (ए० व०) आँख का भीतरी कोया।

अमाग़ीरून amághirún–यू०, अप्रसिद्ध है। See–kharnúbar

अमाघौत amághouta–हिं० संज्ञा पुं० एक प्रकारका धान जो अगहनमें

अमातशी amátashi–सं० स्त्री० श्वासन।

अमातीतस amátitas–यू०, जो गर्म ताम्र और लौह के कूटने से गिरते हैं।

अमात्र amátrá–हिं० वि [सं०] अ वेहद। अपरिमित।

अमाद āamád–अ०, घास की जड़। Asa.

अमान amána–ता०, अजवाइन। (Ptychotis) Ajowan. हिं० [सं०] जिसका मान या अंदाज़ न हो। मित। परिमाण रहित। इयत्ताशून्य।

अमानस्यम् amánasyam–सं० दुःख (Pain)।

अमामून amámún
अमूमन amúman } यू०, अप्र० बूटी है।

अमायरीन amayrin–इं० गोंद।

अमार amara–हिं० संज्ञा पुं० अमाड़ा।

अमारस amáras–यू०, मालार, दुसुंस।

अमाराइलीडीई amaryllidaceæ
अमाराइलिडेसीई amaryllidaceæ
ले०, सुखदर्शन वर्ग।

अमाराइलिस ज़ीलेनिका amaryllis zeylanica, *Rox.*–ले०। Crinum zeylanica.–इं०

...लिस लिनिरेटा amaryllis Lineata, Lam.-ले० सुखदर्शन । इं० हिं०...।

...लिस सिङ्गालीज़ amaryllis Cingalense-ले० सुदर्शन । इं० हिं० गा० ।

...amári-हिं० स्त्री० अम्ली, मरसोटी-हिं० । ...-बं० । पाती मिल-नैपा० । कण्टजीर-लेप० । ... गुमडु, मसुर, बडरी-गों० । किम्प-लीन-चर० । ...ntidesma Diandium, Tulasn. ...गो० । पत्र व फल खाद्य कार्य में आते हैं ।

...न amáritan-एक बूटी जो किसी किसी मत से बादनह गाव तथा किसी के मत से ...म की भेद से है ।

...फैलस कैम्पेन्युलेटस Amorphophallus Campanulatus, Blume.-ले० ...मीकन्द, सूरण । फा० इं० ३ भा० ।

...फैलस सिल्वैटेकस amorphophallus sylvatacus-ले० सूरन, ज़मीकन्द ...हिं० । ओल-बं० । इं० मे० मे० ।

...ीन amálina-रू० अंगूर का पानी ।

...एट(न्थ)स amarant(h)us, Sp.-ले० ...लाई ।

...एट(न्थ)स अङ्गस्टिफोलिया amarant(h)us angustifolia-ले० बनसपाता ...दिया-बं० । मेमो० ।

...एट(न्थ)स अनर्डना Amarant(h)us anardana, Hamilt.-ले० मुश्रा हिं० । चौलाई, गनहर, तवल, सिल (बीज) ...बं० । साग बं० । मेमो० ।

...एट(न्थ)स ऐट्रोपर्प्युरियस amarant (h) us atropurpureus-ले० ...बनसपता । (Black amaranth)इं० हिं० गा० ।

...रेएट (न्थ) स ऑलिरेशिअस amarant(h) us oleraceus-ले० मरसा, माटकी भाजी, चन्दी साग । इं० हिं० गा० ।

...रेएट (न्थ) स कैम्पेस्ट्रिस amarant(h)us campestris, Willd.-ले० मेघनाद-सं० । सिरू-किरई-ता० । सिरू-कुर-ते० । चौलाई -हिं० ।

अमारेएट(न्थ)स क्रुएएटस amarant (h)us cruentus, Miq. ले० ताजे ख़रूस, बुस्तान अफ़रोज़ । गुलकेश । Amaranth, various leaved । मेमो० । इं० हिं० गा० ।

अमारेएट(न्थ)स गैञ्जेटिकस amarant (h) us gangeticus, Linn.-ले० बानसपाता--नटिया-बं० । मेमो० ।

अमारेएट (न्थ) स ट्रिस्टिस amarant(h)us tristis-ले० माट की भाजी । Amaranth, round headed । इं० हि० गा० ।

अमारेएट (न्थ) स पैनिक्युलेटा amarant (h) us paniculata-ले० ताजे ख़रूस, बुस्तान अफ़रोज़ । मेमो० ।

अमारेएट (न्थ) स पॉलिगेमस amarant(h) us polygamous-ले० Prince's feather (Cock's comb.)-इं० । सखारा, देवकटी, चौलाई, कलगा । इं०मे०मे० । श्वेतमुर्गा -बं० ।

अमारेएट (न्थ)स फेरिनेशिअस amarant(h)us farinaceus, Roxb.-ले० चौलाई वर्ग की एक ओषधि है ।

अमारेएट(न्थ)स फ्रुमेएटेसिअस amarant(h) us frumentaceus, Buch.-ले० । किरैरी-द्र० भा० । मेमो० ।

अमारेएट(न्थ)स मैङ्गोस्टेनस amarant(h) us mangostanus-ले० चौलाई, गनहर-उत्तरी भा० । माग-बं० । मेमो० ।

अमारेएट(न्थ)स स्पाइनोसस amarant(h) us spinosus, Willd.-ले० काएटा नटिया । कएटा नटे -बं० । कांटेमाठ-द्र०, बं० । मुलुक किरई-ता० । चौलाई, तण्डुलीय-सं० । काण्टालो डम्भो--गु० । फा० इं० ३ भा० ।

अमारेएट(न्थ)स हाइपोकेरिडयकस amarant(h)us hypochandriacus-ले० ।

श्वेतमुरगा-यं० । कलगा,सरवारी,देवकठी-हिं० । सफेद मुरगा -गु० । इ० मे० मे० ।

अमारेण्टे (न्थे) शाई amarant(h)aceæ --लें० चौलाई वा ताण्डुलीय (अपामार्ग) वर्ग । देखो-अमारेन्थेशाई ।

अमारेन्थ amaranth-इं० चौलाई, तण्डुलीय ।

अमारेन्थ ईटेब्ल amaranth eatable--इं० मरसा, माट । इं० हैं० गा० ।

अमारेन्थ गैंजेटिक amaranth gangetic--इं० लालसाग । इं० हैं० गा० ।

अमारेन्थ ब्लैक amaranth black--इं० बानस्पता । इं० हैं० गा० ।

अमारेन्थ राउण्डहेडेड amaranth round headed--इं० माट की भाजी । इं० हैं० गा० ।

अमारेन्थ वेरिअस लीव्ड amaranth various leaved--इं० गुलकेश । इं० हैं० गा० ।

अमारेन्थ हर्मेफ्रोडाइट amaranth hermaphrodite--इं० चौलाई, कलगा--हिं० इं० हैं० गा० ।

अमालह् amálah--अ० इस्तिफ़ाल मर्ज़ । इसका शाब्दिक अर्थ प्रवृत्त कर देना,परिवर्तन, करना फेर देना है; किन्तु वैद्यक की परिभाषा में किसी दोष को विकारी अवयव से दूसरे अवयव की ओर प्रवृत्त कर देना अमालह् कहलाता है। मेटास्टेसिस Metastasis--इं० ।

अमालीन amálína--रू० अंगूर का पानी ।

अमावट amávaṭa--हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आम्र, हिं० आम+सं० आवर्त प्रा० आवट] (१) रोटिका रूपमें सुखाया हुआ आमका रस । आम्रावर्त-सं० । आम के सुखाए हुए रस के पर्त वा तह । इसे बनाने के लिए पके आम को निचोड़ कर उसका रस कपड़े पर फैला कर सुखाते हैं । जब रस की तह सूख जाती है। तब उसे लपेट कर रख लेते हैं । The inspissated juice of the mango.

(२) पहिना जाति की एक मछली ।

अमाह. amáha-हिं० संज्ञा पुं० [फि० अमाही] नेत्र रोग विशे... ढेले से निकला हुआ लाल मांस ।

अमाही amáhi-हिं० वि० [हिं० अमाह] रोग संबन्धी ।

अमिए amie-अ० (ए० व०), (व० व०) जड़, मूल-हिं० । Rhizome । स० फा० इं० ।

अमिका-नॉक्टर्ना ऑफ़ रम्फियस nocturna of Rumphius ... गुलचेरी हिं०, बम्ब० । ... -सं०,बं० । (Polianthus Tu... Linn.) फा० इं० ३ भा० ।

अ (पे) मिग्डला amigdala-लें० ... (Bitter almond).

अ (पे) मिग्डला अमारा amygdala amara-लें० कडु बाताद, कड़ुआ बादाम ... (Bitter almond).

अमिग्डला डल्सिस amygdala dulcis ... मधुर बाताद, मीठा बादाम । (Sweet almond)

अ (पे) मिग्डेलस कम्यूनिस amygdalus communis, Linn.-लें० ... बादाम । (The Almond). १ भा० ।

अ (पे) मिग्डेलस डल्सिस Amygdalus dulcis-लें० मधुर बाताद, मीठा ... (Sweet almond).

अ (पे) मिग्डेलीन amygdalin-... सत्व । (A glucoside contai... bitter Almonds)

अमिताशन amitáshana-हिं० वि० जो सब कुछ खाए । जिसके खाने का ... न हो ।

संज्ञा पुं० (Fire) अग्नि । ...

अमिय मूरि amiya-múri-हिं० संज्ञा ... [सं० अमृत मूरि] अमरमूर । ... संजीवनी जड़ी, जिलाने वाली बूटी ।

miyá-हिं० श्राम का कच्चा फल।

amiati-हिं० संज्ञा स्त्री० दे०
ती। मिश्रई भेद।

mila-हिं० वि० [सं० प=नहीं+हिं०
त] (१) न मिलने योग्य। (२) बेमेल।
ल।

स amilatasa-हिं० संज्ञा पुं० दे०
तास।

कम् amilátakam-सं० स्त्री० बेला
। हलाo। See-Belá

का amilátaká-सं० स्त्री० महाराज
पुष्प वृक्ष। बेला-हिं०, बं०। रा० नि०
१०।

पाट amiliyá-páta-हिं० संज्ञा पुं०
० अमिली=इमिली+पाट=रेशम] एक प्रकार
द वा पश्मन।

amili-हिं० संज्ञा स्त्री० दे० अम्लिका।

amishrana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०]
० अमिश्रित] मिलावट का अभाव।

amishrita-हिं० वि० [सं०]
न मिला हुआ। जो मिलाया न गया हो।
) जिसमें कोई वस्तु न मिलाई गई हो।
ख़ालिस। खालिस। शुद्ध। पृथक् भूत।

misha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दे०
मिष।

mí-सं० स्त्री० अमृत-हिं०। (The
ter of life, nectar.).

amí-अ० दृष्टि शक्ति का नष्ट हो जाना,
ने की शक्ति का ह्रास।

अम्ल amino-amla-हिं० पुं० (Am-
acid) प्रोटीन की अन्तिम अवस्था को
ते हैं जो शरीर द्वारा ग्रहण की जाती है।

फॉर्म aminoform-इं० युरोट्रोपीन।

ámœba-इं० आधुनिक प्राणिशास्त्र के
नुसार एक अणुवीक्ष्य एककोष युक्त जीवधारी।
नोट-वेद (अथर्व) में अमीव शब्द रोगोत्पादक
राणु अथवा रोग के लिए प्रयुक्त हुआ है।
अमीबा का शरीर एक स्वच्छ गाढ़े भली प्रकार
न बहने वाले शहद जैसी वस्तु से बना है। इसका
वास्तविक परिमाण $\frac{1}{240}$ से $\frac{1}{80}$ इंच तक (व्यास
में) होता है। इसमें चैतन्यता के प्रायः सभी
लक्षण पाए जाते हैं अर्थात् यह एक ही घटक से
उन सम्पूर्ण कार्यों को सम्पादित करता है जो
किसी एक जीवधारी का जीवन-व्यापार चलाने के
लिए करना आवश्यकीय होता है। देखो-सेल।

अमीर ज़म्बूरान amira-zambúrána-फ़ा०
शहद की मक्खियों का सरदार।

अमीरह् amirah-ले० लिसानुल् कल्ब।
See-Lisánul kalb.

अमीरुशिया amirushiya-यू० शयामर (परि-
आसिक़ या क़ैसूम भेद)।

अमीरोही áamí-rohi-अ० माउलहुमा। वस्तुतः
यह श्याम अथवा हरित वर्ण का मोतियाबिन्दु
है, जिसमें नेत्रबिंब प्रगट रूप से ठीक मालुम
होता है, परन्तु वस्तुतः उसमें दृष्टि शक्ति नहीं
होती। ग्लॉकूमा (Glaucoma)-इं०।

अमीरोसिया amirosiyá-यु० पक्कन तथा
एक माजून विशेष।

अमीलैली áamí-lailí
अशा áashá
—अ० नक्तान्ध्य, रतौंधी। हेमीरेलोपिया
(Hemeralopia)-इं०।

अमीव amíva-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] रोग।

अमीव चातनीः amiva-chátaníh-सं०
रोग नाशक, रोग उत्पन्न करने वाले जन्तुओं का
नाश करने वाला। अथर्व०। सू० ७। ४।

अमुइङ्गुरु amu-inguru-सिं० आर्द्रक, आदी,
अदरख। (Zingiber officinalis, *Roxb.*)
स० फा० इ०।

अ(ा)मुक a(-á)muk-नैपा०, अमरूद। (Gu-
ava). See-Amarúta.

अमुकी amukí-नैपा० मैनफल। (Randia
Dumetorum, *Lam.*)

अमुकिरम amukiram-मल०
अमुक्कीर amukkir-ता०
} पुनार।

Withania (Puneeria) coagulans, Dunal. इं० मे० मे० ।

अमुक्कुडा विरई amukkuḍá-viraí-ता० असगंध के बीज, पुनीर-हिं० । Withania Coagulans, *Dunal.* स० फा० इं० ।

अमुज्जनह् amujjanah-अ० धेनुक पक्षी ।

अमुत amuta-पं० बघड़ा-म० अं० । (Loranthus Longiflorus.)

अमुत्तआम amuttaáám-अ० गेहूँ, किसी किसी के विचार से आमाशय का नाम है ।

अमुद्पु चेट्टु amudpu-chettu-ते० एरण्ड, अरण्ड वृक्ष । (Ricinus Communis.) फा० इं० ३ भा० ।

अमुम amum-ता० दुद्धी, रक्तबिन्दुच्छदा (Euphorbia Pilulifera.) । इं० मे० मे० ।

अमुलटी amulaṭí-पं० आमला । (Phyllanthus Emblica.)

अमुल्का amulká-पं० जंगली अंगूर, पक्षीरी -द०, हिं० । (Vitis Indica.) इं० मे० मे० ।

अमुसा amusá-अ० अजवाइन । (Carum "Ptychotis" Ajowan.) इं० मे० मे० ।

अमूक amúka-नेपा० अमरूत (Guava.) । -हिं० वि० [सं०] (१) जो गूँगा न हो । (२) बोलने वाला । वक्ता ।

अमूद ăamúda-अ० इमाद, उम्दह् । स्तम्भ, खम्भा । इसका बहुवचन "उमूद" है । कॉलम (Column.)-इं० ।

अमूद क़ासातीर ăamúda qásátir-अ० मूत्र प्रवर्त्तक सलाई के भीतर का तार । स्टिलेट (Stillet.)-इं० ।

अमूदन्दाँ amú-dandán-पं० रसवत भेद । (Berberis Nepalensis, *Spreng.*) मेमो० ।

अमूदुल् क़ल्ब ăamúdul-qalb-अ० मध्य हृदय, हृदय का बीचों बीच ।

अमूदुल् फ़क़रात् ăamúdul-faqarát

अमूद फ़क़री ăamúda-faqari -अ० इम्द्तुल् फ़क़रात, मेरुदण्ड, सुषुम्नाकांड । (Vertebral column, Rachis, Back bone.)

अमूदुल् ब.त्न ăamúdul-batn-अ० काण्ड का वह भाग जो उदर के ... है, पृष्ठ, पीठ ।

अमूदुल् मिह्बली ăamúdul-mih... योनि के भीतर श्लैष्मिक कला ... सीवन है । कॉलम ऑफ़ दी वेजाइना (Column of the vagina.) ।

अमूमन amúman-अ० इमामा, हामामा, हमाम । मह्लिल्-फ़ा० । (Diapensiæ folia, *Bois*) २ भा० ।

अमूरा amoora-ले० तिक्तराज, हारिन ...

अमूरा कल्क्युलेटा amoora culculata

अमूरा कुक्युलेटा amoora-cuculata, Linn.-ले० उमर । (Andersonia cucullata, *Roxb.*) । इं० हैं० गा० ।

अमूरा रोहिटका amoora rohituka, W. & A.-ले० रोहितका रोहिना, ... (Andersonia Rohituka, ...) फा० इं० १ भा० । मेमो० ।

अमूरा रोटक amoora rotuk-ले० ... हारीन हारा । Amoora or Andersonia Rohituka, *Roxb.* । इं० ...

अमूरा हुडेड amoora hooded-... इं० हैं० गा० ।

अमूर्त्त amúrta-हिं० वि० [सं०] निरा... मूर्ति रहित, अवयव शून्य, निरा... Formless, Shapeless, Disembodied. । -संज्ञा पुं० (१) ... (२) वायु । (३) जीव ।

अमूर्त्ति amúrti

अमूर्त्तिमान amúrtimána

(१) मूर्त्तिहीन, आकृति रहित (Formless.) निराकार। (२) अप्रत्यक्ष। अगोचर।

त amúla
तक amúlaka } -हिं० वि० [सं०] मूल रहित, निर्मूल, जड़शून्य। (Destitute of a root or origin.)

तक amúlak-हिं० वि० मूलशून्य, निर्मूल, अप्रामाणिक।

ला amúlá-सं० स्त्री० (१) अग्निशिखा वृक्ष, लाङ्गली। ईशलांगुलिया-बं०। वै०निघ०। (२) अर्कपत्रा। क्रै०।

स amúsa-अजवाइन, नानख़ाह। (Ligusticum Ajowan). इं० हैं० गा०।

णालम् amrinálam-सं० क्लीं० (१) अमृणाल, लामज्जक, श्वेत उशीर। (Andropogon laniger) रा० नि० व० १८; भा० पू० १ भा० क० व०; मद० व० ३। (२) उशीर, खस-हिं०। वेणार मूल-बं०। (Andropogon muricatus) रत्ना, रा० नि० व० १२। च० द० अर्श चि० प्राणदागुटिका।

तः amritah सं० पुं०
त amrita-हिं० संज्ञा पुं० } (१) पारद, पारा (Mercury)। रा० नि० व० १३। (२) वन मुद्ग, वन मूँग (Phaseolus trilobus)। रा० नि० व० १६। देखो-मकुष्टकः। अत्रि २ स्थान २ अ०। (३) धन्वन्तरि "सा धन्वन्तरिर्देवयाः"। मे तत्रिकं। (४) वाराहीकंद (Tacca aspera)। रा० नि० व० ७। -क्लीं० (५) वह वस्तु जिसके पीने से मनुष्य अमर हो जाता है। पीयूष, सुधा, निर्जर, समुद्रोत्पन्न १४ द्रव्यों में से एक द्रव्य विशेष। (Ambrosia, nectar)। (६) सलिल, जल, (Water)। रा० नि० व० १४। (७) घृत, घी (Ghee)। मे०, रा० नि० व० १५, वै० निघ० वा० व्या० भुजङ्गी गुटी। "अमृतं यज्ञशेषे स्यात पीयूषे सलिल घृते"। मे०। (८) सामान्य विष (Simple poison)। (९) दुग्ध (Milk)। रा० नि० व० १५। (१०) अन्न। (Corn) हे० च०। (११) औषध (Medicine)। रा० नि० व० २०। (१२) शृंगी विष, भीगिया, वत्सनाग (Aconite)। (१३) स्वर्ण,सोना। (Gold) (१४) भक्ष्य द्रव्य (Edible thing)। हे० च०। (१५) यज्ञ के पीछे की बची हुई सामग्री। (१६) धन। (१७) हृद्य पदार्थ। (१८) सुस्वादु द्रव्य। मीठी वा मधुर वस्तु।

अमृत कन्दा amrita-kandá-सं० स्त्री० कन्द गुडूची-हिं०। कन्दगुलवेल-महा०। वै० निघ०। See-kanda-guḍúchí.

अमृत कर amrita-kar-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] चन्द्रमा, शशि, जिसकी किरणोंमें अमृत रहता है। निशाकर। (The moon)

अमृत कला निधि amritakalánidhi-सं० पुं० वत्सनाग १ मा०, कौड़ी भस्म २ मा०, कालीमिर्च १ मा०, बारीक चूर्णकर जल से मूँग प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। गुण-ज्वर, पित्त और कफज अग्निमांद्य को नष्ट करता है। वृ० नि० र० ज्वरे।

अमृतकल्प भल्लातकः amrita-kalpa-bhallátakah-सं० पुं० पका हुआ भिलावाँ तीक्ष्ण वीर्य तथा अग्निके तुल्य होता है, इसका विधि पूर्वक सेवन करना अमृत कल्प होता है। वा० उ० अ० ३६।

अमृत-कल्प रसः amrita-kalpa-rasah-सं० पुं० अजीर्णाधिकारोक्त रस। शुद्ध पारद तथा गंधक के समान भाग की कज्जली करें पुनः उक्त कज्जली का अर्ध शुद्ध विष (वत्सनाभ) तथा इतना ही सुहागा (लावा किया हुआ) लेकर इसे यत्नपूर्वक तीन दिन तक भृङ्गराज स्वरस की भावना दें। मात्रा-मुद्ग प्रमाण।

अमृत कल्प वटी amrita-kalpa-vaṭí-सं० स्त्री० पारा, गन्धक समान भाग लेकर कज्जली करें, फिर विष और सोहागा प्रत्येक पारे के बरा-

घर डालकर भाँगरे के रस में ३ दिन घोटें, और मूँग के समान गोलियाँ बनाएँ। मात्रा—२ गोली। गुण—शूल, मन्दाग्नि, अजीर्ण आदि का नाश करती तथा धातु पुष्टि करती और अनुपान भेदसे अनेक रोगों को नाश करती है। र० सा० सं० अ० चि०।

अमृतकाशः amrita-káshah-सं० पुं० (Oxygon) ओषजन, उत्प्रजन।

अमृत गर्भः amrita-garbhah-सं० पुं० आत्मा के भीतर। अथर्व०। सू० ४६। १। का० ३।

अमृत गर्भ रसः amrita-garbha-rasah -सं० पुं० शु० गन्धक, शु० पारद, १०-१० गद्याणक लेकर दोनोंको तीन दिनतक २० गद्याणक आक के दूध में घोटकर फिर ३ दिन सेंहुड़ के दूध में घोटकर सराव संपुट में रखकर भूधरयन्त्र में पुट दें। इसी तरह ८ पुट देने के पश्चात् पीसकर बारीक चूर्ण करके चंदन, हड़ और मिरचों के क्वाथ और अश्वबेल के रसकी ७-७ भावना दें। मात्रा—२ रत्ती। १ गद्याणक मिश्री के सहित ठंडे पानी से सर्व रोगों में दें। विशेषकर वात-शूल, पसली का दर्द, परिणाम शूल, वात ज्वर, मन्दाग्नि, अजीर्ण, कफ, पीनस, आमवात और कफ के रोगों का नाशक है। र० चि० ७ स्तवक।

नोट—१ गद्याणक=६४ वा ४८ रत्ती।

अमृत गुड़िका amrita-gudiká-सं० स्त्री० यह औषध अजीर्णके लिए हितकारी है। योग—पारद, गंधक, विष (सींगिया), त्रिकटु और त्रिफला। सर्व प्रथम पारद गंधक समान भाग की कजली करें। पुनः शेष औषधों के समान भाग चूर्ण को उसमें योजित कर भृंगराज स्वरस की भावना देकर शुद्ध प्रमाण मात्रा की वटिकाएँ प्रस्तुत करें। यही अमृतवटी अर्थात् अमृत गुटिका है। रसे० चि०।

अमृतघृतम् amrita-ghritam-सं० क्ली० अपामार्ग बीज, सिरस बीज, मेदा, महामेदा, काकमाची, इन्हें गोमूत्र में पीस गोघृत में मिला घृत सिद्ध कर पीने से विष शांत होता है। यह अमृत नामसे विख्यात घृत मरे हुए को [जीवित] करता है। वङ्ग० सें० स० विष चि०।

अमृतजटा amrita-jatá-सं० स्त्री०
अमृतजरा amrita-jará-हिं० स्त्री०
बालछड़। Nardostachys jatamansi. Dc.। रा०।

अमृतजा amritajá-सं० स्त्री० (१) हर्रा, हरड़। (Chebulic Myrobalan) ध० निघ०। (२) आमला (Phyllanthus Emblica.)। (३) गुड़ूची (Tinospora Cordifolia.)। (४) लहसुन, रसोन (Garlic.)।

अमृतदान amrita-dána-हिं० संज्ञा पुं० [सं० मृद्दान] भोजन की अथवा अन्य वस्तु रखने का ढकनेदार बर्तन। मिट्टी का ढक्कनदार बर्तन।

अमृतधारा amrita-dhárá-हिं० संज्ञा स्त्री० एक पेटेन्ट औषध विशेष।

अमृत नाभि amrita-nábhi-सं० स्त्री० पारा। अथर्व० ।६। ४४। ३।

अमृतनाम गुटिका amrita-náma-gutiká -सं० स्त्री० देखो—अमृत गुड़िका।

अमृत पञ्चकम् amrita-panchakam-सं० क्ली० सोंठ, गिलोय, सफेद मूसली, शतावर गोखरू इन पांच चीज़ों को अमृत पञ्चक कहते हैं। इन पाँच चीज़ों के क्वाथ की तादादि धातु की भस्म में तीन या सात भावना देकर अग्नि में फूँकने से धातुओं का अमृतीकरण संस्कार होता है जिससे धातुओं की भस्म अमृत समान गुणकारी होती है।

अमृतपाणिः amrita-pánih-सं० पुं० जिसके पाणि, वह वैद्य जिसके हाथमें अमृत का सा गुण हो। अथर्व०।

अमृतपालो रसः amrita-pálo rasah-सं० पुं० पारा, गन्धक, बच्छनाग प्रत्येक समान भाग लेकर पानी में घोटकर गोला बनाएँ, फिर इसे तांबे की कटोरी के मध्य में रखकर ऊपर से तांबे की कटोरी रख

...न्धि बन्द कर के हांडी के मुँह पर ढक्कन देकर ...पड़ मिट्टी कर सुखा लें। फिर एक दिन ...पाग्नि से पकावें, ठण्डा होने पर तांबे के पत्र ...और उसके भीतर के रस को बारीक पीसकर रख ...। मेघानादक और अदरक का रस मिलाकर ...उसम जिह्वा और मुख को अच्छी तरह चुपड़ ...। फिर इस रस को ३ रत्ती की मात्रा रोगी ...को देकर गरम करके ओढ़ा दें। एक पहर के ...बाद खूब पसीना आएगा। इसी तरह तीन दिन ...तक करने से ज्वर बिलकुल नष्ट हो जाता है। ...पथ्य—मूँग, चावलका भात।

रस० यो० सा०।

...प्रभा गुटिका amrita-prabhá-guṭiká
...प्रभा वटी amrita-prabhá-vaṭi
...-सं० स्त्री० (१) मिर्च, पीपलामूल, लवंग, हड़, अजवाइन, अम्ली, अनारदाना, सेंधालवण, सोंचर लवण, विड लवण, १–१ पल; पीपल, जवाखार, चित्रक, सुफ़ेद जीरा, स्याह जीरा, सोंठ, धनियाँ, इलायची, आमला प्रत्येक २-२ पल, इन्हें चूर्ण कर बिजौरे नीबू के रस में घोटकर तीन पुट देकर एक मा० की गोलियाँ बनाएँ। वृ० नि० र०। भा० अरु०।

(२) अकरकरा, सेंधा लवण, चित्रक, सोंठ आमला, मिर्च, लवंग, हड़, तुल्य भाग लें, बिजौरा नीबू के रस की भावना दे १–१ मा० की गोलियाँ बनाएं। गुण—इसके सेवन से खाँसी, गलरोग, स्वास, पीनस, अपस्मार, उन्माद तथा सन्निपात का नाश होता है।

...त प्राशः amrita-práshah–सं० पुं० उत्तम सुवर्ण का चूर्ण, ब्राह्मी, वच, कूट, हरीतकी इनका चूर्ण घी और शहद के साथ चाटने से बालकों की आयु, प्रसन्नता, बल की वृद्धि और अङ्ग की पुष्टि होती है। र० यो० सा०।

...तप्राशघृतम् amritaprásha ghritam –सं० क्ली० बकरे का मांस और असगन्ध १–१ तुला (८–८ सेर), एक द्रोण (१६ सेर) जल में पकाएँ, जब चौथाई रहे; तब गोघृत १ प्रस्थ (६४ तोले) और बकरी का दुग्ध ४ प्रस्थ डाल विधिवत पकाएँ, पुनः २ कर्ष (२० मा०) केशर डाल मूर्छित कर पश्चात् निम्न औषधियों का कल्क तैयार कर पुनः घृत में डाल पाक करें। यथा—मिरेठी की जड़, गेहूँ (गोधूम), असगन्ध गुरुच, गोखरू, कसेरू, सोंठ, मिर्च, पीपल, धनियाँ तालांकुर, आमला, हड़, बहेड़ा, कस्तूरी, कौंच बीज, मेदा, महामेदा, कूट, जीवक, ऋषभक, कचूर, शालपर्णी, प्रियंगु, मजीठ, तेजपत्र, तालीशपत्र, बड़ी इलाइची, पद्माख, दालचीनी, नागकेसर, पुष्प चमेली, रेणुक, सरल, जायफल, छोटी इलायची, अनन्तमूल, कस्तूरी की जड़, जीवन्ती, ऋद्धि, वृद्धि, गूलर प्रत्येक १–१ कर्ष (१०–१० मा०)। जब घृत तैयारहो पुनःस्वच्छ वस्त्रसे छानकर उसमें शरावक भर (१ सेर) उत्तम मिश्री छोड़ विधिवत रक्खें। मात्रा—१० मा०।

गुण—इसके सेवन से शिरोव्याधि, खाँसी, अर्श, आमशूल, बद्धकोष्ठ दूर होता है। तथा उष्ण दुग्ध के साथ सेवन करने से ध्वज भंग, प्रमेह नष्ट होता है और बल वीर्य की वृद्धि होती है। भैर० र० ध्वजभङ्गाधिकार। हा०अ०त्रि० ३ स्था० ६ अ०।

अमृत प्राश चूर्ण amrita-prásha chúrna –सं० पुं० मुलुवा, मुद्गपर्णीमूल, शतावरी, विदारीकन्द, वाराहीकन्द, मुलहठी, वंशलोचन, द्राक्ष प्रत्येक २ पल। सरलधूप, चन्दन, तेजपात, निलोफर, कुमुद, दोनों काकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, चीनी प्रत्येक अर्द्ध पल। इनका चूर्ण कर फिर मुलुवा, विदारीकन्द, वाराहीकंद और मुद्गपर्णी तथा शतावरी के रस की भावना दें। फिर ईख, आमला और शहद की सातसात भावना दें। यह दूध के साथ पीने से दाह, शिरोदाह, प्रबल रक्तपित्त, शिर और अक्षि कम्प तथा भ्रम आदि रोगों का नाश होता है। र० र० स० अ० २१।

अमृतप्राशावलेहः amrita-práshávaleh-ah–सं० पुं० (१) आमला, मजीठ, विदारीकन्द (काकोली, क्षीरकाकोली) ये इनका सर

समभाग निचोड़ कर गोघृत में मिलाएँ, पुनः जीवनीय गणकी समस्त औषधियाँ एक एक तो०, दाख, चन्दन, लाल चन्दन, खस, मिश्री, कमल, पद्म काठ, महुए के फूल, मारियों, कुम्भेरके फल, सुगंधरोहिष तृण १-१ तो० ले, इनका कल्क बनाकर घी में पकाएँ। जब पक कर शीतल हो जाए, तो इसमें शहद ३२ तो०, मिश्री २०० तो० दालचीनी का चूर्ण २ तो० इलायची चूर्ण २ तो०, कमल केशर चूर्ण २ तो० ले मिलादें, इस तरह यह अवलेह सिद्ध होता है।

जितेन्द्रिय होकर इसे नित्य सेवन करें। और इस पर दूध या मांस रस के साथ भोजन करें तो उरः क्षत, रक्तपित्त, तृषा, अरुचि, श्वास, खाँसी, वमन, मूर्च्छा, मूत्रकृच्छ्र, और ज्वर का नाश होता है। स्त्रियों में प्रीति उत्पन्न होती तथा बल की वृद्धि होती है।

भा० प्र० क्षय० रो० चि०।

(२) दूध में अथवा आमला, विदारीकन्द, ईख, तथा दूध वाले वृक्षों के समान भाग रस में ६४ तो० गोघृत को पकाएँ, पुनः इसमें मुलहठी, ईख, दाख, सुफेदचन्दन, लाल चन्दन, खस, मिश्री, कमल, पद्मकाठ, महुए का फूल, गुरुच, कम्भारी, रोहिष तृण, इनका कल्क मिला सिद्ध करें, पुनः शीतल होने पर इसमें ३२ तो० शहद, २०० तो० मिश्री, दालचीनी, और इलायची डाल सेवन करें।

अमृत प्राश्यावलेहः amrita-práshyávaleh -सं० पुं० दूध, आमले का रस, विदारीकन्द का रस, गन्ने का रस, पञ्च क्षीरी वृक्षों का रस, और घी प्रत्येक १ प्रस्थ मिलाकर पकाएँ, फिर इसमें मधुरादि गण, दाख, दोनों चन्दन, खस, चीनी, निलोफर, पद्माख, महुए का फूल, अनन्त मूल, खम्भारी, कतृण का कल्क १-१ कर्ष डाल कर अवलेह बनाएँ, शीतल होने पर अर्ध प्रस्थ मधु, १ तुला चीनी और दारचीनी, इलायची, पद्मकेशर प्रत्येक आधा आधा पल डाल कर भली प्रकार मिलाएँ। यथोचित सेवन करने से रक्त पित्त, क्षत, क्षय, तृष्णा, अरुचि, श्वास, खाँसी, वमन, हिचकी, मूत्रकृच्छ्र, नाश होता है।

अमृतफल amritaphal-कुमा० (Sweet lime)।

अमृतफलम् amrita phalam-सं

अमृतफल amrita phala-हिं० संज्ञा (१) नासपाती-हिं०। नाक-पं०।... communis (The pear tree ... मद० व० ६ भा०। (२) अमरूद (Guava ... -पुं० (३) पारद (Mercury)। ... पटोल, परवल (Sespadula Tri... santhes cucumerina)। (... वृद्धि नामक औषध (See vriddh... रा० नि० व० ३। (६) धात्री वृक्ष, ... (Phyllanthus emblica) ...

अमृतफला amrita-phalá-सं० स्त्री०, संज्ञा स्त्री० (१) अंगूर, द्राक्षा, दाख। किस-हिं०। Raisin। (२) आम... आमला। (Phyllanthus embli... रा० नि० व० ११। (३) लघु खर्जूरी ... छोटा खजूर वृक्ष (Small date p... tree)। (४) श्वेत द्राक्षा-हिं०। ... उत्तरी-कौं०। (५) मुनक्का।

अमृतबन्धुः amrita-bandhuh-सं० (१) अश्व, घोड़ा (A horse)। (२) चन्द्रमा।

अमृतबान amrita-bána-हिं० संज्ञा [सं० अमृद्वान्] अमृतवान। रोगनी मिट्टी का रोगनी पात्र। लाह रोगन किया मिट्टी का बरतन जिसमें अचार, मुरब्बा, ... रखते हैं।

अमृत भल्लातकम् amrita-bhallátak... --सं० क्ली० पवन से टूटे तथा नकुओं से ... हुए भिलावें २५६ तो० ईंट के चूर्ण से ... पानी से प्रक्षालन कर हवा में खुश्क कर... दल करके १०२४ तो० जल में उबा... चौथाई शेष रहे तो वस्त्र से छानकर ... पुनः २५६ तो० दुग्ध में पकाएँ जब ... रह जाए तब बराबर भाग गोघृत मिला...

र्पें, पश्चात् अर्ध भाग मिश्री मिलाकर दही के भी तरह मथें। ७ दिन तक रखने के बाद यह अमृत तुल्य हो जाता है। प्रातः नादि से शुद्ध हो मात्रा पूर्वक सेवन करने से , कृमि, कास, नाक, उँगली का गलकर ना तथा केशों का श्वेत होना, दाँतों का ना इत्यादि दूर हो स्मृति की वृद्धि होती भैष० र० कुष्ठ० चि०।

[भल्]लातकावलेहः amrita-bhallátaká-[va]lehah-सं० पुं० १२८ तो०, शुद्ध भिलावें १०२४ तो० जल में पकाएँ। पुनः १२८ [तो०] गुरुच का क्वाथ डाल पकाएँ। जब पक कर [चौथ]ाई शेष रह जाए तब वस्त्र से छान कर उसमें [... तो]० गो घृत, २५६ तो० गो दुग्ध, ६४ तो० [मिश्र]ी, ३२ तो० शहद डाल मन्द मन्द अग्नि से [पका]एँ। जब पककर गाढ़ा होजाए अग्नि से पृथक् [कर] निम्न औषधों का उत्तम चूर्ण डालें यथा— [चित्रक, ...]गिरी, अतीस, गुरुच, सोमराजी, पमाड़, नीमछाल, [हड़], बहेड़ा, आमला, मजीठ, सोंठ, मिर्च, पीपल, [अज]वाइन, सेंधा लवण, मोथा, दालचीनी, छो० [इला]यची, नागकेशर, पित्तपापड़ा, तेजपत्र, [ग]न्धबाला, खस, चन्दन, गोखरू, कचूर और रक्त [चन्द]न प्रत्येक २-२ तो०। मात्रा—१-४ तो०। इसके [सेव]न से कुष्ठ, वातरक्त, तथा अर्श दूर होता है। पथ्य—मांस, अम्ल, धूप, अग्नितापं, मैथुन, [...]ी, तैल तथा अधिक मार्ग चलना निषेध है। [भै]० र० मध्य० ख० २ कुष्ठ० चि०।

[अमृत]भल्लातकी amrita-bhallátaki-सं० [स्त्र]ी० उत्तम सुन्दर पके हुए भिलावें २५६ तो० [लेकर उन्]हें दो फाँक कर चौगुने जल में पकाएँ, जब [चौथ]ाई जल शेष रहे तब उन्हें पुनः चौगुने गोदुग्ध [में] पकाएँ। जब अच्छी तरह गाढ़ा होजाए तब ६४ [तो]० मिश्री मिला कर सात दिन तक रख छोड़ें। [प]श्चात् अग्नि और बल का पूर्ण अनुमान कर [उ]चित मात्रासे सेवन करनेसे गुदा के सम्पूर्ण विकार दूर होते और अग्र भाग के केश सुन्दर कृष्ण वर्ण के हो जाते हैं। इसके लिए पथ्यापथ्य का कोई [नि]यम नहीं।

अमृत भस्म सूतः amrita-bhasma-sútah-सं० पुं० पारा और गन्धक समान लेकर त्रिफला के साथ ३ दिन तक लोह के खल में घोट कर तांबे की डिब्बी में रखकर बाहर से कपड़मिट्टी करके उसमें पुट दें। फिर त्रिफला, भाँगरा, चित्रक, सोंठ, वच, बकुची, शतावरी, भिलावाँ, गन्धक, नागरमोथा, और वत्सनाग सबको समान भाग लेकर पीसकर चूर्ण करें और उपर्युक्त पुट दिया हुआ पारा, $\frac{1}{6}$ भाग मिला कर इसको कान्तलोह के बर्तन में त्रिफला का क्वाथ करके उसके साथ खाने से ६ महीने में कुष्ठ नष्ट होता है। नीम का पञ्चांग, शहद, घी और शक्कर के साथ ६ महीने तक इसका प्रयोग करने से कोढ़ी की नासिका इत्यादि का गिरना बन्द हो जाता है। भिलावाँ का तेल और हरताल भस्मके साथ इसका प्रयोग करने से श्वित्र कुष्ठ दूर होता है।

अमृतमञ्जरी amrita-manjari-सं० स्त्री० (१) गोरख दुद्धी क्षुप। रा० नि० व० ५। (२) सामान्य ज्वर में प्रयुक्त रस विशेष, यथा— हिंगुल, मरिच, सुहागा, पीपल विष, जायफल इनको सम भाग ले जम्बीरीके रसकी भावना दें। मात्रा—२ वा ३ गुञ्जा। किसी किसी ग्रंथमें यह रस कासाधिकार में वर्णित है। र० सा० सं०।

अमृतमञ्जरीरसः amrita-manjari-rasah-सं० पुं० सिंगरफ, मीठातेलिया, पीपल, कालीमिर्च, सुहागा, जावित्री, प्रत्येक समान भाग लेकर जम्बीरी के रसमें खरल करके १ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना सेवन करने से दारुण सन्निपात, मन्दाग्नि, अजीर्ण और आमवात रोग नष्ट होते हैं। गर्म जल के साथ सेवन करने से हर प्रकार के रोग शमन होते हैं। इससे पाँच प्रकार की खाँसी, श्वास, सर्वाङ्ग पीड़ा जीर्ण ज्वर और कफज खाँसी दूर होती है। र० सा० सं० कासे।

अमृत मण्डुरः amrita-mandurah-सं० पुं० देखो— अमृत मण्डूरम्।

अमृत मरडूरम् amrita-manduram-सं० क्ली० शुद्ध मरडूर ८ पल, शतावरीका रस ८ पल, दूध, घी और दही प्रत्येक ४-४ पल लेकर एकत्र पीस एकाकर गाढ़ा करें। इसको प्रातःकाल और सन्ध्या समय १-१ निष्क खाने से वातज, पित्तज और सन्निपातज परिणाम शूल का नाश होता है। र० र० शूले।

अमृत मन्थः amrita-manthah-सं० पुं० दुग्धादिपरिप्लावित मन्थ। प० मु० १। २०, व०।

अमृत महल amrita-mahala-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] मैसूर प्रदेश की एक प्रकार की भैंस।

अमृतमूरि amrita-múri-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] संजीवनी बूटी। अमरमूर।

अमृत योगः amrita-yogah-सं० पुं० फलित ज्योतिष में एक नक्षत्र योग विशेष। शुभ फल दायक योग। अत्रि० २ स्था० ७ अ०।

अमृत रसः amritarasah-सं० पुं० शु० गन्धक २ कर्ष, शु० पारद १ कर्ष, त्रिफला, त्रिकुटा, नागरमोथा, विडङ्ग, चित्रक, प्रत्येक का चूर्ण १-१ पल सबको मिश्रित कर रक्खें। १ कर्ष शहद और घी के योग से चाटे और ऊपर शीतल जल तथा गोदुग्ध यथा क्रम पान करें तो अम्लपित्त, मन्दाग्नि, परिणामशूल, कामला, और पाण्डु रोग का नाश होता है। र० चि० ११ स्तबक।

अमृत रसतुल्यपाकः amrita-rasatulya-pákah-सं० स्त्री० देखो—अमृतभल्लातकम् तथा वाग्भ० उत्तर. स्थान० अ० ३६ श्लो० ७५।

अमृतरसा amrita-rasá-सं० स्त्री० कपिल द्राक्षा, अंगूर। काले द्राक्ष-म०। (Vitis Vinifera.) रा० नि० व० ११।

अमृत रसायनम् amrita-rasáyanam-सं० क्ली० लोह चूर्ण ३ भा०, त्रिफला ३ भा०, अभ्रक १ भा०, पारद भस्म १ भा०, इनको सोलह गुने पानी में उपर्युक्त चीज़ों में ■ आधी डालकर उबालें। जब चतुर्थांश शेष रहे तो उसमें समान भाग घी मिलाकर और घी के ... रस और उससे द्विगुण दूध मिलाकर ... अथवा मिट्टी के बर्तन में उसे डाल ... फिर उपरोक्त बचा हुआ आधा लोह ... दिव्य औषधियों से और मंडूर आदि से ... हुआ है और उपरोक्त रौ भृताभ्रक, पार... और त्रिफला, दन्ती, विडंग, दोनों जीरे (... अखगन्ध), ढाक के बीज, सोंठ, ... विधारा, हस्तिकर्ण पलाश की जड़ (... भूमिकुष्माण्ड), कमाल, तज, त्रिवृत्त, पीपल ... गिलोय, तालमूली, सहिजन के बीज ... जवासा, नागदौन, सोनापाठा की ... इन्द्रजौ, प्रियङ्गु, नीम और अड़ूसा ... का पृथक् पृथक् चूर्ण करके अभ्रक और ... बराबर मिलाएँ।

गुण—वात कफ प्रधान से सोंठ और ... के साथ दें। उचित मात्रा में सेवन करने ... तत्काल ही जठराग्नि, बल और पुष्टि ... है। र० यो० सा०।

अमृतलता amritalatá-सं० स्त्री०, हिं० स्त्री० गुरुच, गिलोय। रा० नि० व० ... (Tinospora Cordifolia.)

अमृतलतादि घृतम् amrita latádi ghritam-सं० क्ली० गिलोयरस और उसका ... तथा भैंस का घृत डालकर पकाएँ। पुनः ... चौगुना दुग्ध डालकर पकाएँ। इसके ... हलीमक रोग समूल नष्ट होता है। ... भैष० खं० २ श्लोक ४६।

अमृतवटकः amrita-vatakah-सं० ... सान्निपातिक अतिसार में हितकारक ... देखो—हा० अत्रि० स्था० ३। अ० ८ ... त्रि०।

अमृतवटी amrita-vati-सं० स्त्री० ... प्रयुक्त रस विशेष। विष २ भाग, ... मिर्च ६ भाग, इनको जल में घोटकर ... गोलियाँ बनाएँ। भैष० र०। रस० ...

अमृतवर्तिका amrita-vartiká-सं० ... मृत्युञ्जयनमोक्त रसायनवटी। ...

यथा-त्रिफला, त्रिकुटा, ब्राह्मी, गिलोय, चित्रक, नागकेशर, सोंठ, मोंगरा, अम्लान्, हल्दी, दारुहल्दी, शक्राशन (भाँग, सिद्धि), तज, इलायची, गम्भारी की छाल, वच, वायविडंग प्रत्येक का चूर्ण २ पल, कामरूपदेशीय गुड़ २० पल एकत्र मर्दन कर ३६० वटिका प्रस्तुत करें। इसे भोजन के पूर्व प्रति दिवस शीतल जलमें १-१ सेवन करे। भैष०।

अमृतवल्लरी amritavallarí-सं० स्त्री० (१) गुड़ूची, गिलोय। (Tinospora Cordifolia) भा० पू० १ भा० गु० व०। (२) उपोदकी, बड़ी पोई।

अमृतवल्लिका amrita-vallika }
अमृतवल्ली amrita-valli }
-सं० स्त्री० चित्रकूट प्रसिद्ध गुड़ूची। र० मा०। रा० नि० व० ३। श्रत्रि० २ स्था० २ अ०। इसे विषनाशक, किञ्चित् तिक्त, ज्वर, व्याधि, कुष्ठ, कामला, शोथ, व्रणनाशक ऋषियों ने कहा है। वै० निघ० जीर्णज्व० हरीतकी पाक।

अमृत षट्फल घृतम् amrita-shatphala-ghritam-सं० क्ली० सोंठ, चव्य, चित्रक, जवाखार, पीपल, पीपलामूल प्रत्येक ४-४ तो०, गोघृत ६४ तो०, अदरख का स्वरस ६४ तो०, दही का पानी ६४ तो० उक्त औषधियों का कल्क प्रस्तुत कर यथाविधि घृत सिद्ध कर सेवन करने से ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक और चातुर्थिक ज्वर दूर होते हैं। यह खाँसी, श्वास तथा अर्श में भी हितकारी है। वृ० सं० ज्वर० चि०।

अमृताष्टकः amritashtakah-सं० पुं० गुरुच, चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, सोंठ, खस, पाठा, नेत्रबाला इन्हें अमृताष्टक कहते हैं। इसके सेवन करने से ज्वर दूर होता है। चक्र० द० यो० त० वं० से० सं०।

अमृतसङ्गमः amrita-sangamah-सं० पुं० खपरिया, मंगवसरी-हिं०। खापर-बं०। कलखापरी-म०। वै० निघ०। See-khapariyá.

अमृत सञ्जीवनी amrita-sanjívaní-सं० स्त्री०, हिं० वि० स्त्री० (१) गोरचदुग्धी नामक क्षुप विशेष। रा० नि० व० ५। See-Gorakshadugdhi. (२) मृतसञ्जीवनी।

अमृतसम्भवा amrita-sambhavá-सं० स्त्री० गुरुची, गिलोय, गुलवेल, गुलञ्च। (Tinospora Cordifolia.)। रा० नि० व० ३।

अमृतसहोदरः amrita-sahodarah-सं० पुं० (A Horse) घोटक, घोड़ा, अश्व। जयद०।

अमृतसार amritasára-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) नवनीत। मक्खन। (२) घी।

अमृतसार गुटिका amrita-sára-gutiká-सं० स्त्री० त्रिफला, गिलोय, मोथा, विधारा, वायविडंग, वच २-२ पल, त्रिकुटा, पीपलामूल, बाला, चीता, दालचीनी, इलायची, नागकेशर, इनका चूर्ण १-१ पल। यह चूर्ण २४ पल लेकर ४० पल गुड़ के द्वारा ३६० मोदक बनाएँ। गुण—अग्निवर्धक है। र० र० रसायने०।

अमृतसारजः amrita-sárajah-सं० पुं० गुड़ (Jaggery.)। काकवी-म०। रा० नि० व० १४। (२) तवराजखण्ड। नबात-बं०। रा० नि० व० १४। गुण-यह श्वास, ज्वर, दाह और रक्त पित्त को दूर करता है।

अमृत-सारजा amrita-sárajá-सं० स्त्री० चीनी, शर्करा। म०-खड़े साकर। (Sugar.)

अमृतसार ताम्रम् amrita-sárat-ámram-सं० क्ली० रसायन अधिकारोक्त।

अमृत सुन्दरो रसः amrita-sundaro-rasah-सं० पुं० मैनसिल, सोनामाखी, हरताल, गन्धक, पारा, खपरिया प्रत्येक समान भाग लेकर अदरख, वासा और तुलसी के रस में खरल करके ताँबे के पात्र में भर कर सम्पुट करके ३ दिन पकाएँ, फिर ठण्डा होने पर निकाल कर रक्खें। मात्रा—३ रत्ती। यह वातज और कफज रोगों का नाशक है।

अमृतसोदरः amrita-sodarah-सं० पुं० घोड़ा, अश्व, घोटक (A horse.)। रा० नि० व० ६।

अमृतस्रवा amrita-sravá-सं० स्त्री० (१) चित्रकूट में प्रसिद्धलता। अमृतवल्ली। रुदवन्ती-बं०।

तत्पर्य्याय–दृस्ररहा, उपवल्लिका, घनवल्ली, मित-लता। गुण–किञ्चित् तिक्त, रसायन, विषघ्न, मद्य, कुष्ठ, घाम, कामला, और शोथनाशक है। रा० नि० व० ३।

(२) घावमाता। रा० नि० व० ५। मात्रा–३ मा०।

अमृत हरीतकी amrita-haritaki–सं० स्त्री० धनियाँ, जीरा, मोथा, पञ्चलवण, अजवायन, हिंगु, तेजपत्र, लवंग, त्रिकुटा प्रत्येक समभाग ले उत्तम चूर्ण करें। इस चूर्ण के बराबर शुद्ध हड़का चूर्ण मिलावें। हड़ शोधन विधि–१०० हड़ोंको लेकर तक्रमें भिगोएं। जब हड़ मुलायम हो जाएँ तब उनके बीज अलग अलग कर छिलकों को लेकर चूर्ण करले। यही चूर्ण उक्त योग में मिलाया जाता है। पुनः इसमें षड्पल,पंचलवण, भूनी हींग, जवाक्षार, जीरा, अजमोद ले चूर्ण कर चुक्र की भावना दें और उक्त समस्त चूर्ण में मिला रक्खें। उचित मात्रा में सेवन करने से घोर अजीर्ण का नाश होता है।

अमृतक्षार: amrita-ksháraha–सं० पुं० नवसादर,नृ(नर)सार i(Ammonium chloridum.) वै० निघ०।

अमृता amritá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) गुडूची, गिलोय। (Tinospora cordifolia) रा० नि० व० ३। २ मा०। (२) (Phyllanthus emblica.) आमला। रा० नि० ११। (३) हड़ हरीतकी। (Terminalia chebula) प० मु० "स्थूलमांसामृता स्मृता।" इयं चम्पा जाता। रा० नि० व० ११। (४) तुलसी (Ocimum Sanctum.)। (५) काकमाची वृक्ष। मा०। (६) मदिरा, मद्य (Wine)। रा० नि० व० १४। (७) इन्द्रायण (Citrullus colocynthes.) रा० नि० व० ३। (८) पारावतपदी, लताफटकी। रा० नि० व० ३ (९) गोरचदुग्धा। (१०) काली अतीस, कृष्ण अतिविषा। (११) रक्त निसोथ,तुर्बुद सुर्ख़, रक्त त्रिवृत्ता। रा० नि० व० ६। (१२) दूर्वा, दूर्वा,दूब। (१३) पिप्पली।मे०।(... रा० नि० व० ३। (१४) नील दूर्वा। रा० नि० व० ८। (१६) श्वेत दूर्वा, दूब। (१७) नागवल्ली, पान। (१८) (१९) गरुडवल्ली। वै० निघ० ... (२०) सूर्यप्रभा। (२१) ... (२२) कन्दगुडूची, कन्द गिलोय। (... स्फटिकारिका। (Alumen) व० ४। प्रयोगा०। गिलोय। (... वा० सू० १५ आरग्वधादि:। "... मधुरसा ध्रुवहृदयाह्वा" पद्य काशी ... मृता दश जीवन संज्ञा। चि० १ ... किरातत्तिक्तममृता। च० द० ... किरानाख्यामृतोदीच्य–। च० द० ... चि० लोधादि:। च० सु० ४ अ०। (२४) मल्लकाँगनी। (२५) ...

अमृताख्यगुग्गुलु: amritákhya-gug... –सं० पुं० वातरक्तरोग में प्रयुक्त योग ... २ श०, गुग्गुलु १ श०, त्रिफला प्रत्येक ... १४ श० में कूट कर पकाएँ, जब चौथाई जानकर पुनः इतना पकाएँ कि गाढ़ा होजा... दन्तीमूल ४ तो०, निशोथ १ तो० मिलाएँ। इसका बलाबल विचार कर ... चक्र० द० वात० रो० चि०।

अमृताख्य घृतम् amritákhya-g... –सं० क्ली० अपामार्ग बीज और ति... दोनों प्रकार की श्वेता (कटभी भी) और काकमाची (मकोय) इनमें पीसें। इनसे सिद्ध किया हुआ घृत परम शमन करता कहा गया है। ... विख्यात घृत है। सुश्रुत० सं० ... स्था० ११।

अमृताख्य तैलम् amritákhya-ta... क्ली० गिलोय, मुलहठी, बड़ुपञ्चमूल, ... रास्ना, एरण्डमूल, जीवनीयगण, ... पल। वजा २०० पल, बेर, बेल, ... प्रत्येक एक-एक आढ़क, शुष्क ... १ द्रोण, इनको कूट धोकर १०० ... पकाएँ। जब ४ द्रोण जल शेष रहे ...

[औ]र इसमें ४ गुना दूध डालकर तथा चन्दन, [ख]स, नागकेशर, तेजपात, इलायची, अगर, [कू]ठ, नगर, मुलहठी, प्रत्येक ३-३ पल और [ज]ीरा ८ पल का कल्क बनाकर उसके साथ [एक] द्रोण तेल का पाक सिद्ध करें। यह वातरक्त, [शुक्र]न क्षीण, वीर्य की पतलाना, थकान, योनिदोष, [अ]पस्मार और उन्माद को दूर करता है। [भै]० सं०।

[अमृताख्]य लोह रसायनम् amritákh[y]a loha-[r]asáyanam-सं० क्लो० देखो-अमृताख्य [ल]ोहः।

[अमृता]ख्य लोहः amritákhya-louhah-सं० [पु]ं०, क्लो० रक्त पित्त में प्रयुक्त रसायन यथा—[गिलो]य, निसोथ, दन्तीमूल, मुण्डी, खदिर, अडूसा, [त्रिफ]ला, भाँगरा, तालमखाना, पुष्करमूल, पुन-[र्न]वा, चिरेटो, कास, सहिंजन, देवदारु, कुटकी, [शा]क रस, दाभ (कुशा) का रस, शतावरी, [इ]न्द्रायण, बरना, जमीकन्द, चव्य, तालमूली, [चि]त्रक, पीपलामूल, कूट, भारंगी प्रत्येक ४-४ [त]ोला, जल १०२४ तो० में पकाएँ। जब आठवाँ [भा]ग शेष रहे क्वाथ छानकर रक्खें; पुनः त्रिफला [१] प्रस्थ (६४ तो०), ८ प्रस्थ जल में पकाएँ। [ज]ब जल आठवाँ भाग शेष रहे क्वाथ छानकर [र]क्खें; पुनः शहद से पुट देकर मृत लौह चूर्ण ६४ [त]ो०, अभ्रक १६ तो०, गन्धक १६ तो० विधिवत् [शु]० पारद ८ तो०, गुड़ ३२ तो०, मिश्री [३]२ तो०, गुग्गुल शु० ८ तो०, घृत ३२ [त]ो०, उक्त क्वाथ में विधिवत् इस लौह को [प]काएँ। शीतल होनेपर शहद ३२ तो० मिलाएँ। [पु]नः शुद्ध सोनामक्खी का चूर्ण ८ तो० शिलाजीत [शु]० २ तो०, सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला, [गो]खरू, [र]मालगोटे की जड़ शुद्ध, निशोथ, दोनों जीरा, [ख]दिरसार, तालीसपत्र, धनियाँ, मुलहठी, वंश-[ल]ोचन, रसवत, काकड़ाशृंगी, चित्रक, चव्य, [ना]गरमोथा, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नाग-[के]शर, कङ्कोल, लवंग, जायफल, मुनक्का, छोहारा प्रत्येक का चूर्ण २-२ तो० उक्त अवलेह में मिलाएँ। इसके सेवन से रक्तपित्त, अम्लपित्त, [क्ष]य, कुष्ठ, ज्वर, अरुचि, अर्श, उदरशूल, संग्रहणी, आमवात, वातरक्त, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, शर्करा रोग दूर होता है।

मात्रा—१ रत्ती से ८ मा०।

अनुपान—शहद, घृत।

अपथ्य—अनूपदेशज मांस और जिनके आदि का अक्षर 'क' हो उसे न खाना चाहिए। वंग० सं० रक्त पित्त चि०।

अमृताख्य हरीतकी amritákhya-harita-ki-सं० स्त्री० पाण्डु रोग में प्रयुक्त योग—सतावर, भाँगरा, पुनर्नवा, पियाबाँसा, प्रत्येक को कूटकर चौगुने जलमें क्वाथ करें। जब चौथाई शेष रहे, कपड़े में छान उसमें १६० बड़ी और स्थूल हड़ डालकर पकाएँ। पुनः सुखाकर ३० पल दुग्ध में औटाएँ। पश्चात् गुठली निकालकर ये औषध डालें—पारद, गन्धक प्रत्येक ६ पल दोनों को किसी पात्र में रख थोड़ी देर तक अग्नि से पचाएँ, पुनः उतार कर जब तक गाढ़ा न हो चलाते रहें, फिर इसमें गिलोय का सत्व मिला कर शहद से १६० गोलियाँ बनाएँ और १-१ गोली पूर्वोक्त हड़ों में भर दें और ऊपर सूत लपेटें। पुनः एक पात्रमें शहद भरकर उसमें हड़ों को डाल दें। इनमें से प्रति दिन एक हड़ भक्षण करें। इसके सेवनसे शुष्क पांडु रोगका नाश होता है। वृ० रस० रा० सु०। पांडु० रो०अधि०।

अमृतागुग्गुलुः amritá-gugguluh-सं० पुं० गिलोय, परवल की जड़, त्रिफला, त्रिकुटा, वाय-विडंग सर्व तुल्य भाग ले चूर्ण कर समान भाग शुद्ध गुग्गुल चूर्ण के साथ मर्दन कर १-१ तो० की गोलियाँ बनाएँ।

इसके सेवन से व्रण, वातरक्त, गुल्म, उदर-व्याधि, शोथ इत्यादि दूर होते हैं। वङ्ग० सं० व्रण० चि० श्लो० ५०। अन्य योग के लिए देखो-भाव० प्र० मध्य० ख० २७ श्लो०। प्रारम्भ १७०, श्लो० १७८ वातरक्त० चि०॥ भैष० र० वातरक्त० चि०। चक्र० द० वात० र० चि०।

अमृताघृतम् amritághritam-सं० क्लो० वात-रक्ताधिकारोक्त योग विशेष। चक्र० द० वा० र० चि०।

अमृताङ्करसः amritánkarasah–सं० पुं० पारा, गन्धक, त्रिकुटा, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, वत्सनाग, सैंधव प्रत्येक समान भाग लेकर भाँगरे के रससे भावना दें। मात्रा—२ रत्ती। गुण—यह पाँचों प्रकार की खाँसी को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

अमृताङ्कुरलौहः amritánkura-louhah–सं० पुं०,क्ली० चित्रक मूल प्रभृतिमें शुद्ध पारा, लौह चूर्ण, ताम्रभस्म, शिलाजीत, गन्धक, गूगुल और अभ्रक भस्म प्रत्येक ४-४ तो०, हड़, बहेड़ा १-१ तो०, आमला ६ तो० और ८ मा०, लोहसे अष्टगुण घी, त्रिफला का क्वाथ १२८ तो० इन सब को लोहे की कड़ाही में पकाएं और लोहे की कड़छीसे चलाते रहें। मात्रा—आवश्यकतानुसार।

गुण—प्रत्येक कुष्ठ, पांडु, प्रमेह, आमवात, वातरक्त, कृमि, शोथ, पथरी, शूल, वातरोग, क्षय, दमा और वलि व पलित को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

नोट—इसी नाम के दूसरे योग में बहेड़ा ६ पल, आमला २८ तोले, गोघृत १८ तोले और १ प्रस्थ त्रिफला के क्वाथ के साथ उक्त विधि से पकाने को कहा है। उ० द० चि०। र० स० सं० रसे०। र० र० स० सं० टी०।

अमृताङ्कुर वटी amritánkura-vatí–सं० स्त्री० पारद, गन्धक, लौह, अभ्रक,शुद्ध शिलाजीत, इन्हें गिलोय के स्वरससे मर्दन कर गुञ्जा प्रमाण गोली बनाएं। इसके सेवन से क्षुद्ररोग, रक्तपित्त, जीर्णज्वर, प्रमेह, कृशता, अग्नि क्षय आदि आमला के स्वरस के साथ सेवन करने से दूर होते हैं तथा यह पुष्टि, कान्ति, मेधा और शुभ मति को उत्पन्न करती है। भैष० र० क्षुद्ररोग चि०।

अमृताञ्जन amritánjana–सं० पुं० पारा, सीसा समान-भाग इनसे द्विगुण शु० सुर्मा और थोड़े से कपूर मिलाकर बनाया हुआ सुर्मा तिमिर को नष्ट करता है।

अमृतादिः amritádih–सं० पुं० विसर्प रोग में प्रयुक्त क्वाथ। यथा—गिलोय, अडूसा, परवल नागरमोथा, सप्तपर्णी, खैर, कालावेत, नीम के पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी, इनका क्वाथ विसर्प, विस्फोटक, कण्डु, मसूरिका, और ज्वर को दूर करता है। भैष० र० चि०।

गिलोय, सोंठ, पीयाबाँसा, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, नागरमोथा, नेत्रबाला इन्हें पीस कर खाने से गर्भ शूल नष्ट होता है। भैष० र० गर्भिणी

अमृतादि क्वाथः amritádikvátha गिलोय, सोंठ, कटेरैया, नागरमोथा, कमोथा, सुगन्धबाला इनके क्वाथ के पीने से अमृत की पीड़ा दूर होती। र० रस० चि०। इस नाम के बीस योग अनेक ग्रंथों में आए हैं।

अमृतादिगुग्गुलुः amritádiguggu– पुं० देखो—अमृताद्यगुग्गुलः।

अमृतादिगुग्गुलुघृतः amritádiguggulughritah–सं० पुं० गिलोय, वासा, पटोल, मोथा, कुटकी, कुड़ा की छाल, इन्द्र जौ, चिरायता, कलिहारी, अनन्तमूल, आमला, खम्भारी, सोंठ, प्रत्येक १ इनके क्वाथ तथा ८ पल शु० गुग्गुल १ प्रस्थ घी का विधिवत पाक करें। यह के नेत्र व्याधि अर्बुद, मोतियाबिन्द पिल्ल, कण्डु, आँसुओं का अधिकता आदि को दूर करता है। र० र०।

अमृतादिघृतम् amritádighritam वात रक्त में प्रयुक्त घृत योग—गिलोय अथवा कल्क द्वारा सोंठ युक्त सिद्ध रक्त, आमवात, कुष्ठ, व्रण, अर्श, और को दूर करता है। चा० सं० वा० चि०।

अमृतादि चूर्ण amritádichúrnah– (१) गिलोय, गोखरू, सोंठ, मुसली, इनका चूर्ण मस्तु आरनाल के साथ आमवात नष्ट होता है। भा० प्र० आ० वा०

(२) गिलोय, कुटकी, सोंठ, मुलेठी, इनका शहद के साथ चाटकर ऊपर गोमूत्र पीने से वात नष्ट होता है। वृ० नि० र०।

...तैलम् amritáditailam–सं० पुं०—अमृताद्यतैलम्। उक्त योग में देवदारु ...त्वा में तुल्य पाठ रक्खा है। अमृत० सा० गण्ड चि०।

...तैलम् amritádi-tailam–सं० क्ली० ...य का रस, नीमकी छाल, हींग, हड़, कुड़े की, बला, अतिबला, देवदारु और पीपल के ...से सिद्ध किया हुआ तेल गलगण्ड में हित वृ० नि० र०।

...दि वटी amritádi-vatí–सं० स्त्री० ... २ भा०, कपर्द भस्म ४ भा०, मिर्च ६ भा० ... से मर्दन कर मुद्ग प्रमाण गोलियाँ बनाएं। अग्निमान्द्य, त्रिदोष, और कफ के रोगों में ... है। भा० प्र० १ भा० ज्वर चि०।

...दिस्वरसः amritádisvarasah–सं० ... गिलोय हरी ले कुचल कर रस निकाल कर ... वस्त्र से छाने। यह रस २ तो० और शहद ... तो० डालकर पीने से प्रमेह दूर होता है।

यो० तर० स्वरसादि सा०।

...देहिम amritádihima–सं० क्ली० गिलोय ... हिम बनाकर प्रातः काल पीने से पित्त ज्वर ... होता है। वृ० नि० र०।

...द्यगुग्गुलुः amritádya-gugguluh–सं० पुं० गिलोय १ भा०, इलायची २ भा०, वायविडंग ३ भा०, इंद्रजौ ४ भा०, बहेड़ा ५ भा०, हड़ ६ भा०, आमला ७ भा० और शु० ...गुल ८ भा०। इनको शहद में मिलाकर खाने ... स्थूलता भगन्दर और पिडकाएँ दूर होती हैं। भा० प्र० मध्य० खं० २।

...द्यघृतम् amritádyaghritam–सं० ...क्ली० (१) आमवात में प्रयुक्त योग-गिलोय ४०० तो०, को १०२४ तो० जल में पकाएं, जब चौथाई ...प रहे तब उस क्वाथमें ६४ तो० घृत तथा चौगुना ...दुग्ध, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक ...तावर, विदारीकन्द, मुलहठी, नीलकमल, प्रस-गन्धमूल, पृष्टपर्णी, कुटकी, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, गोखरू, कटेरी, बड़ी कटेरी, गिलोय, पीपल, रास्ना और अडूसा सर्व तुल्य भाग ले कल्क बनाकर उसमें डाल मन्द मन्द अग्नि से पकाएँ तो यह घृत सिद्ध हो। धन्वन्तरि जी का कथन है कि इसके सेवन से (पान, अभ्यंग, नस्य) शोथ, दाह, वात रक्त, क्रोष्टुशीर्ष, खञ्जवात, उरुस्तम्भ, दारुण वातरक्त, वातकष्ट, गृध्रसी और वातकण्टक दूर होता है। उक्त नाम के छः प्रकार के योग भावमिश्र जी ने अपने ग्रन्थ में वर्णन किए हैं।

गिलोय, शारिवों, लघुपंचमूल, अडूसा, खिरेटी इनका पञ्चांग पृथक् पृथक् ४० चालीस तो०, को १०२४ तो० जल में पकाएँ। जब चौथाई शेष रहे तब उसमें पीपल, चंदन, हाऊबेर, खस, पित्तपापड़ा, सोनापाठा, मुलहठी, चिरायता, नीलकमल, इन्द्रजौ, नागरमोथा, सोंठ, कुटकी, धमासा, दुरालभा, तेजपात, अडूसामूल, त्रायमाण, (अभाव में बनफ्सा) प्रत्येक २-२ तो०। इनका कल्क और इस कल्क के समान भाग बकरी का दुग्ध, ६४ तो० गोघृत मिलाकर सिद्ध करें। इसके सेवन से भयानक राजयक्ष्मा, सन्निपात, रक्तपित्त, श्वास, कास, उरःक्षत, दाह और शोथ दूर होता है। वंग० से० सं० २ श्लो० ६५, ६६ प्र०। राज यक्ष्मा० चि०।

अमृताद्यचूर्णम् amritádya-chúrnam–सं० क्ली० आमवात में प्रयुक्त योग—गिलोय, सोंठ, गोखरू, मुण्डी, वरुणछाल, प्रत्येक तुल्य भाग ले चूर्ण प्रस्तुत कर सेवन करने से आमवात दूर होता है। भा० म० २ भा०।

अमृताद्य तैलम् amritádya-tailam–सं० क्ली० गलगण्ड रोग में प्रयुक्त योग—गिलोय, नीम की छाल, अम्लवेतस, पीपल, देवदारु, दोनों बला इनसे सिद्ध तैल गलगण्ड रोग को दूर करता है। च० सं० गलगण्ड चि०।

अमृताद्यवलेहिका amritádyavalehiká –सं० स्त्री० हड़, कुटकी, सोंठ, मुलहठी शहद में

मिलाकर ऊपर से गोमूत्र पान करने से वातरक्त नष्ट होता है। यो० र० धा० र०।

अमृताद्योगुग्गुलुः amritádyougugguluh -सं० पुं० देखो—अमृताद्य गुग्गुलुः।

अमृता नाम गुटिका amritá-náma-guṭiká -सं० स्त्री० चित्रक, हड़ १–१ पल, पारद, त्रिकुटा, पीपलामूल, मोथा, जायफल, विधारा, प्रत्येक १–१ पल, इलायची, वंशलोचन, कूठ, गन्धक, हिंगुल, मैनफल, मालकांगनी, दालचीनी अभ्रक, लोह प्रत्येक आधा पल, हलाहल विष २–३ रत्ती, गुड़ ८ पल, भांगरे के रस में मर्दन कर छोटी बेर बराबर गोलियाँ बनाएँ। गुण—सम्पूर्ण वात व्याधियोंको दूर करता है। र० र० सु०।

अमृताफलः amritáphalah-सं० पुं०,क्री० (१) पटोल, परवर (Trichosanthes dioica.)। (२) नाशपाती। (Pyrus Communis)

अमृतारिष्टम् amritárishṭam-सं० क्री० विषम ज्वर में प्रयुक्त अरिष्ट। योग –गिलोय १०० पल, दशमूल १०० पल, ४ द्रोण (१६ सेर=१ द्रोण) जल में क्वाथ करें। जब चौथाई शेष रहे तब उसमें शीतल होजाने पर ३ तुला पुराना गुड़ मिलाएँ। पुनः इसमें जीरा १६ पल, पित्तपापड़ा २ पल, सप्तपर्ण, सोंठ, मिर्च, पीपल, नागरमोथा, नागकेशर, कुटकी अतीस, इन्द्रजौ इन्हें एक एक पल मिला मिट्टी के पात्र में रख एक मास पर्यन्त रख अरिष्ट प्रस्तुत करें। इसके सेवन से समस्त ज्वर दूर होते हैं। भै० र० ज्व० चि०।

अमृतार्णवः amritárṇavah-सं० पुं० मीठा विष, पारद, गंधक लौहभस्म, और अभ्रकभस्म, तुल्य भाग ले चित्रक के रस से सात भावना दें। मात्रा – १–२ रत्ती इसे दोषानुसार अनुपान के साथ खाने से आमाशय के सम्पूर्ण रोग और विषमज्वर का नाश होता है।

भैष र० आमाशय रो० चि०।

अमृतार्णवरसः amritárṇavarasah-सं० पुं० हिंगुलोत्थ पारद, लौहभस्म, गन्धक, सोहागा, कपूर, धनियाँ, [illegible] पाठ, जीरा और अतीस प्रत्येक [illegible] चूर्ण कर बकरी के दूध से पीस का १-[illegible] की गोलियाँ बनाएँ।

अनुपान—धनिया, जीरा, भंग, [illegible] मधु, बकरी का दूध, मण्ड, शीतल जल, [illegible] की जड़ का रस, मोचरस अथवा कटेरी [illegible] इनमें से किसी एक के साथ खाने से [illegible] सार दूर होता है। संग्रहणी, अर्श, [illegible] खाँसी, गुल्म और एक दोषज, द्विदोषज, [illegible] तथा उपद्रव युक्त प्रत्येक अतिसारों को [illegible] नष्ट करता है। बृ० रस० रा० सु० [illegible] चि०।

अमृतार्णवलौहम् amritárṇava-louh[illegible] -सं० क्ली० कुष्ठ रोग में प्रयुक्त योग—[illegible] त्रिफला, लौहभस्म तुल्य भाग ले चूर्ण [illegible] सर्व तुल्य शुद्ध शिलाजीत मिला गिलो[illegible] रस से भावना दें और सूर्य के ताप में शुष्[illegible] इसी तरह तीन भावना दें और सुखाएँ और [illegible] घृत से मर्दन कर रखें। मात्रा—१ मा० [illegible] साथ सेवन करें। रस० र०। इसे प्रमेह [illegible] दिया जाता है।

अमृतार्णव लौहः amritárṇava-lou[illegible] -सं० पुं० त्रिकुटा, त्रिफला, लौह भस्म [illegible] समान भाग ले चूर्ण करें, सर्व तुल्य [illegible] मिलाकर धूप में गिलोय के रस से ३ बार [illegible] दें। फिर घी में घोटें। मात्रा-१ [illegible] गुण—शहद के साथ खाने से १८ [illegible] वातरक्त, बवासीर, प्रत्येक प्रमेह और [illegible] नष्ट होते हैं। रस० यो० सा०।

अमृता वटिका (गुग्गुलुः) amrita-[illegible] (gugguluh)-सं० स्त्री० (१) व्रण नाशक योग। गिलोय, पटोलमूल, त्रिकुटा, और वायविडङ्ग इन्हें तुल्य भाग [illegible] कर सर्व तुल्य शुद्ध गुग्गुल मिश्रित कर [illegible] मासेकी गोलियाँ प्रस्तुत करें। एक एक [illegible] दिन सेवन करने से व्रण विकार दूर हो[illegible] रस० र०।

(२) घृत पिष्टित गुग्गुल १६ प०, क्वाथार्थ गुडूची १०० प०, दशमूल १०० प०, पाठा, मूर्वा, बड़ियाला, श्वेत बड़ियाला-मूल, एरण्डमूल,प्रत्येक १० प०, सास्थि (गुठली युक्त) हरीतकी १००, बहेड़ा १००, आमला ४००, पाकार्थ जल ३ द्रोण (४८ सेर) इसमें गुग्गुल का एक पोटली में बाँध दोलायंत्र की विधि से पकाएँ। जब ४८ शराव शेष रहे तब इसी क्वाथ में त्रिफला, निसोथमूल, त्रिकुटा, दंतीमूल, गिलोय, असगन्ध, वायबिडङ्ग, तेजपत्र, दारचीनी, छोटी इलायची, नागकेशर, गुग्गुलतुल्य प्रत्येक १-१ प० का चूर्ण मिला स्निग्ध पात्र में रक्खें। मात्रा—८ मा०। इसे उष्ण जल से सेवन करना चाहिए। रस० र० व्रण शोथ चि०।

ृताष्टकः amritáshṭakah-सं० पुं०, क्ली० पित्तज्वर में प्रयुक्त कषाय। गिलोय, इन्द्रजौ, नीम की छाल, पटोलपत्र, कुटकी, सोंठ, चन्दन और मोथा इनके द्वारा निर्मित कषाय को पिप्पली चूर्ण युक्त सेवन करने से पित्त तथा कफ ज्वर का नाश होता है। चक्र० द० चि०।

ृतासङ्गम् amritásangam-सं० क्ली० खर्परिका तुत्थ, खपरिया, खर्पर। तत्पर्याय-कर्परिका तुत्थं, अञ्जन (हे)। मद०।

ृतासङ्गमः amritásangamah-सं० पुं० खर्परी तुत्थ। तूँते-बं०। तुतिया-हिं०। मोरचूत -म०। वै० निघ०।

ृताह्वम् amritáhvam-सं० क्ली० (१) अमृतफल, नासपाती। (Pyrus communis) मद० व० ६। (२) खर्बूजा। मद० व० ६।

ृताह्वयतैलम् amritáhvaya-tailam-सं० क्ली० वातरक्त में प्रयुक्त तैल। जैसे—गिलोय, मधुक, लघु पञ्चमूल, पुनर्नवा, रास्ना, एरण्डमूल, जीवनीयगण की औषधें, इन्हें १-१ सौ पल लें, बला २०० पल, कोल (बदरी), बेल, उड़द, जौ, कुलथी १-१ आढ़क (४-४ सेर), छोटा गम्भारीमूल-छाल शुष्क १ द्रोण (१६ सेर), १०० द्रोण जलमें विधिवत पचाएँ। जब ४ द्रोण जल शेष रहे तब इसमें १ द्रोण तिल तैल और ४ द्रोण गो दुग्ध मिलाएँ। पुनः त्रिफला, चंदन, केशर, खस, तेजपात, इलायची, कुष्ठ, अगर, तगर, मुलेठी, मजीठ इन्हें आधा आधा पल लेकर कल्क बना सविधि तैल पकाले। भा० म० २ भा० वातरो० चि०।

अमृतिः amritih-सं० स्त्री० जलपात्र विशेष।

अमृतिकरणम् amriti-karanam -सं० क्ली० विधि—अभ्रक के बराबर घी लेकर दोनों को लोहे के पात्र में पकाएँ। जब घी सूख जाए तब उतार कर अभ्रक को सब काम में बर्तें। यो० चि०।

अमृतेन्द्ररसः amritendra-rasah-सं० पुं० सिद्ध पारद १ पल, त्रिफला १ पल, शुद्ध गंधक १२ तो०, ताम्रभस्म ४ तो०, लोह भस्म ४ तो०, बच्छनाग ४ तो० सबको मिलाकर गुडूची, काला धतूरा, भाँग, त्रिकुटा, महाराष्ट्री (मरेठी), भांगरा, अदरख, ब्राह्मी, हुलहुल, जैन, काली तुलसी, धतूरा, (दूसरीवार), भांगरा, (दूसरी बार) और बच्छनाग इनके रस से क्रम से पृथक् पृथक् एक एक दिन भावना दें। पुनः मूँग प्रमाण गोलियाँ बना कर रक्खें।

गुण—सन्निपात, भयानक ज्वर और मन्दाग्नि में चित्रक और अदरख के साथ दें। यह उचित अनुपानों के साथ देने से रोग मात्र को एवं वलि और पलित को नष्ट करता है। र० यो० सा०।

अमृतेशरसः amritesha-rasah-स० पुं० पारद भस्म, अभ्रक भस्म, कान्तलोह भस्म, बच्छनाग, सोनामाखी और शिलाजीत प्रत्येक समान भाग लेकर बारीक चूर्ण करें। मात्रा—१ रत्ती। गुण—इसके सेवनसे वृद्धता दूर होकर आयु की वृद्धि होती और शरीर की पुष्टि होती है। इसके ऊपर असगंध-मूल-चूर्ण १ भा०, घी ७ भा०, गुड़ ८ भा० और पीपल १ भा० इन सबको मिलाकर मन्द मन्द अग्नि से पकाकर लड्डू बनाकर खाना उचित है। रस० यो० सा०।

अमृतेश्वररसः amriteshvara-rasah-सं० पुं० (१) सोहागा १६ भा०, कालीमिर्च १२ भा०,

सोनामाखी, वच्छनाग, अकरकरा, प्रत्येक २ भा० मिलाकर चूर्ण करें। मात्रा—१-२ रत्ती। गुण—कफ, अजीर्ण, सन्निपात, शूल और अनेक रोगों को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

(२) रससिन्दूर, सतगिलोय, लौहभस्म समान भाग लेकर शहद और घृत में मिलाकर रक्खें। मात्रा—६ रत्ती। गुण—यह राजयक्ष्मा को नष्ट करता है। रसे० चि०, अ० ६। -भा० म० २ भा०। प्रयोगा०।

अमृतोत्था amritótthá-सं० स्त्री० (Orchis laxiflora *Linn.*) सुधामूली, सालव मिश्री, सालम (ब) मिसरी। अत्रि०।

अमृतोत्पन्नम् amritotpannam-सं० क्ली० (१) तुत्थ (Vitrioli)। (२) खर्परी तुत्थ, तुत्थाञ्जन, खापर। कालखापरी-मह०। रा० नि० व० १३।

अमृतोत्पन्ना amritotpanná-सं० स्त्री० गृहमक्षिका। रा० नि० व०।

अमृतोद्भवः amritodbhavah-सं० पु० (१) धन्वन्तरि। रत्ना०। -क्ली० (२) तुत्थ, तूतिया (Blue Vitriol)। रा० नि० व० १३। (३) खर्परी तुत्थ, तुत्थाञ्जन, खापर। रा० नि०। (४) आमलकी, आमला। (Phyllanthus Emblica).

अमृतोपमम् amritopamam-सं० क्लो० (१) खर्परी तुत्थ। तूते-बं०। मोरचूत-मह०। वै० निघ०। (२) द्रव्य। वै० निघ०।

अमृतोपहिता amritopahitá-सं० स्त्री० तो (चो)प(ब) चीनी।

अमृध्रम् amridhram-सं० क्लो० शिश्न, मेढ़, उपस्थ। इसके तीन भेद हैं। यथा—(१) वर्षिष्ठम्, (२) अवान्यम् और (३) अमृध्रम्।

अमेड़ी amedí-बिहा० कच्चा आम। (Green mango.)

अमेध्यम् amedhyam-सं० क्ली० } (१) पुरीष
अमेध्य amedhya-हिं० संज्ञा पु० } (Fæces, excrement.)। श० र०। (२) अपवित्र वस्तु। विष्ठा, मल, मूत्र आदि। -वि० अपवित्र।

अमेनिया बैक्सिफेरा ammannia ba[...]fora, *Linn.* -ले० दादमारी, दद्रुन[...] फा० इं० २ भा०।

अमेनिया वेसिकेटरी ammania, [...]tory -ले० देखो—अमेनिया वेसि[...]रिया।

अमेनिया वेसिकेटोरिया ammania [...]catoria, *Roxb.*-ले० दादमारी। (...)गा०। अग्निगर्भ—सं०। जंगली मेंहदी, [...] -हिं०, बं०। दादरबूटी-द०। बन मिरि[...] बूटी, भूर जम्बोल-बम्ब०, द०।

अमेरिकन वेलेरियन american valer[...] -इं० बालछड़ अमरीका, सुम्बुल [...] (Cypripedium.)

अमेरिकन वर्मसीड american wor[...]seed-इं० (Chenopodium Anthelminticum.)

अमेरिकन आइवी american ivy[...] (Vitis Quinquefolia.)

अमेरिकन कुटकी american katki[...] इचवीड (Itch weed.)-इं०।

अमेरिकन कोलम्बो american colum[...] -इं० (Frasera carolinensis[...])

अमेरिकन मेपल american, may ap[...] -इं० पॉडोफिलाइ, रहाइज़ोमा (Podophylli Rhizoma.)-ले० [...] फल अमरीकी-अ०। म०, अ० डॉ०।

अमेरिकन मेन्ना american manna[...] शीरख़िश्त-फ़ा०। आकाश मधु-सं०[...] फ्राइनस अम्बरशियानी वृक्ष से, म[...] देखो—शीरख़िश्त। म०, अ० डॉ०।

अमेरिकन रोग़न तारपीन american t[...]tarpin-फ़ा० देखो—रोग़न तारपीन।

अमेरिकन सेण्टॉरी american c[...] -इं० (Sabbatia Angulari[...])

रिकन सारसा पैरिल्ला american sarsaparilla-इं० अरेलिया न्युडिकोलिस (Aralia Nudicaulis.)

रिकन सैफ्रन american saffron-इं० कुसुम, कड़। (Safflower.)

रिकन हेलीबार american helibore -इं० अमरीकी कुटकी। इच वीड (Itch weed.)-इं०।

रिका का जङ्गली तम्बाकू america-ká-jangali tambákú-हिं० पु० ताम्रकूट विशेष।

रिका का लोबान america-ká-lobána हिं० पु० लोबान विशेष।

... amesá-बर० शरीफ़ा, सीताफल। (Anona Squamosa.)

...थुनी विधि amaithuní-vidhi-हिं० स्त्री० ...द वृद्धि जो बिना मैथुन के उत्पन्न होती है। (Asexual reproduction.)

...खा amokhá-सं० स्त्री० हड़, हरीतकी। (Terminalia Chébula.)

...घ amogha-हिं० वि० [सं०] निष्फल न ...ना। वृथा या अन्यथा न होने वाला। अव्यर्थ। ...फल। सत्य। मोघा। फलदाता। अचूक। ...क्ष्य पर पहुँचने वाला। खाली न जाने वाला। (Productive, Fruitful, Infallible, Effectual.)

...घा amoghá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) पाड़ला वृक्ष, पाढ़ल (-र) का पेड़ और ...फूल। (Stereospermum Suaveolens, Dc.) मा०। (२) श्वेत पाड़ला। (३) हरीतकी, हड़ (Terminalia Chebula.)। (४) विड़ंग, वायविड़ंग। (Embelia Ribes.) मे० श्वेत पाड़ला। (५) पद्मभेद, कमलभेद। (Lotus Var.) ...० नि० व० २३।

...घास्त्र रसः amoghástra rasah-सं० पु० तांबा, गंधक, वत्सनाम, मक्खिया प्रत्येक समान भाग लें। तांबे से तीन गुना पारा और कस्तूरी लें। फिर सब को सम्भालू और तुलसी के रस में बारीक घोटकर तिलोंके बराबर गोलियाँ बना छायामें सुखाएँ। गुण—यह १३ सन्निपात, ८ प्रकार के ज्वरों को और विषम, शीत दोष तथा साधारणतया सभी रोगों को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

अमोघौषध amoghoushadha-हिं० स्त्री० (Specific Medicine.) ऐसी औषध जो कभी निःफल न हो अर्थात् अवश्यमेव फल देने वाली दवा, अव्यर्थ, सत्य औषध। वे औषधें जो रक्त में पहुँच कर रोगाणुओं को मार डालती हैं। यदि औषध का यथा विधि प्रयोग किया जाए तो जन्तु मर जाते हैं और रोग घट जाता है या जाता रहता है और रोगी फिर धीरे धीरे अपने पहले स्वास्थ्य को प्राप्त करता है।

अमोड़ी amodí-बिहा० अमिया-हिं०।

अमोद amoda-हिं० संज्ञा पु० देखो—आमोद।

अमोनम कर्क्यूमा amonum curcuma -ले० हलदी, हरिद्रा, पीतरस। (Turmeric) इं० हैं० गा०।

अ(ए)मोनिएक ammoniac-इं० }
अ(ए)मोनिएकम् ammoniacum-ले० } उशक, कान्दर।

अ(ए)मोनिएकम् ऐण्ड मर्करी प्लास्टर ammoniacum and mercury plaster-इं० उशक व पारद प्रस्तर या प्रलेप। देखो—उशक।

अ(ए)मोनिएकम् मिक्श्चर ammoniacum mixture-इं० उशक मिश्रण। देखो—उशक।

अमोनिएटेड आर्सिनियो साइट्रेट ऑफ आयर्न ammoniated arsenio-citrate of iron-इं० यह एक प्रकार का यौगिक लवण है। देखो—लौह।

अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ अर्गट ammoniated tincture of ergot-इं० अमूनित अर्गट आसव। देखो—अर्गट।

ोनियम Ammonium-ले०। गाहुधो-
दर, गैस नौशादर-नि०।

रासायनिक संकेत सूत्र

(न उ$_3$) NH_3

लक्षण—यह एक उग्रगन्धि अदृश्य वायव्य (गैस) है, जो नवसादर (अमोनियम हरिद) र चूर्ण के मिश्रण से उत्पन्न होता है।

प्रयोग—नवसादर १ भाग और चूर्ण २ भाग कर खरल में डालकर चूर्ण करें। दोनों के स्पर घृष्ट होने पर एक उग्रगंधि गैस निकलने लता है। यही अमोनिया है।

यदि शृंग, खुर, केश, त्वचा और मांस आदि प्रायो लेवरों के पश्च दग्ध किए जाएँ तो जो शेष दुर्गंध प्राप्त होती है, वह अमोनिया गैस कारण ही है, क्योंकि यह उनका एक प्रधान ग है। इस विधि से बहुलता से अमोनिया पन्न होता है। प्राचीन काल में मृगशृंग प्रभृति मोनिया बनाने के काम आते थे। यह गैस कई क वानस्पतिक रसों यथा इक्षु रस आदि में और सी भाँति वायु में भी विद्यमान होता है।

यद्यपि अमोनियम कोई धातु विशेष नहीं है, वल नत्रजन और उद्जन के परमाणुओं का मूह है, तथापि इसका अणु (न उ$_4$) धातु-त् काम करता है, और अम्लोंसे मिलकर लवण नाता है। उसका सुप्रसिद्ध लवण नवसादर (अमोनियम हरिद) है। यह अमोनियम और लवणाम्ल के सयोग से बनता है। अमोनियम के कर्बनित आदि लवण भी होते हैं, जो बहुत उप-योगी हैं।

गुण—(क) अमोनिया एक अदृश्य, उग्र, परन्तु रोचक गंधयुक्त गैस है जो वर्णरहित, स्वच्छ तथा नमनीय होता है। स्वाद तीव्र-दाहक है।

(ख) यह अत्यन्त जल विलेय है (मद्य-सार में भी विलीन हो जाता है।); परन्तु जल-विलीन होकर यह स्थिर नहीं रहता। अस्तु, जल-विलीन अमोनिया उबालने पर या बोतल खुली रखने पर जल से निकल जाता है।

(ग) खरल, जिसमें नवसादर और चूर्ण को मिलाया गया हो, उसके समीप यदि आर्द्र रक्त लिटमस पत्र लाएँ, तो वह नीला हो जाता है। अतः यह गैस क्षारीय है।

(घ) उसी खरल के पास यदि उदहरि-काम्ल में डुबोकर एक कानदण्डी लाएँ, तो श्वेत धूम्र निकलते हैं।

(ङ) इस गैस का जलविलयन क्षारों के समान गुण रखता है। रक्त लिटमस को नीला और अम्लों को उदासीन कर देता है। यह क्षार ऐसा तीव्र और दाहक नहीं है, जैसा कि दाहक सोडा या पोटास। अतः इसको संज्ञा मृदुक्षार है।

(च) इसका आपेक्षिक गुरुत्व ·५८६ है।

यदि इस गैस को बहुत सी हवा के साथ मिलाकर सुँघाया जाए तो भी यह बहुत क्षोभक प्रभाव करता है और यदि इसको शुद्ध रूप में सूँघा जाए तब तो तत्काल दम घुटने लगता है।

संज्ञा-निर्णय—प्राचीन मिश्र, यूनान तथा रोम देशनिवासियों के एमन नामक देवता का मन्दिर, जिसका वर्णन एमोनाइकम (उशक) के संज्ञा-निर्णायक-नोट शीर्षक के अन्तर्गत होगा, लेबिया (शाम) के जिस ज़िला में था, उस ज़िला का नाम उक्त देवता के नाम पर रखा गया था। उस ज़िलाका नाम अ(ए)मोनिया था। चूँकि कृत्रिम नवसादर सर्व प्रथम उसी जगह बनाया गया था। अतएव नवसादर का नाम सल एमो-निएक (Sal ammoniac.) अमोनीयिक लवण या एमोनिया (स्थान) का नमक है, और चूँकि यह गैस सल एमोनिएक अर्थात् नवसादर से बनता है। अस्तु, इसी सम्बन्ध से उसका नाम भी अ(ए)मोनिया रखा गया।

औषध-निर्माण—(१) लाइकर अमोनी फॉर्टिस Liquor Ammoniæ Fortis -ले०। स्ट्रॉङ्ग सोल्युशन ऑफ अमोनिया Strong Solution of Ammonia-इं०। सबल अमोनिया द्रव, तीव्र अमोनिया विलयन -हिं०। क़वी साइल अमोनिया -उ०।

अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ इण्डियन वेलेरियन। ammoniated tincture of indian valerian-इं० देखो जटामांसी।

अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ ओपियम् ammoniated tincture of opium-इं० अमूनित अहिफेन आसव। देखो-पोस्ता।

अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ क्विनीन ammoniated tincture of quinine-इं० अमोनित क्वीनीन आसव। देखो-सिन्कोना।

अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ वेलेरियन ammoniated tincture of valerian-इं० अमूनित ह्रीवेर आसव। देखो-सुगन्धवाला।

अमोनिएटेड क्लोरोफ़ॉर्म ammoniated chloroform-इं० क्लोरोफ़ॉर्म अमोनिएटा।

अमोनिएटेड फेनाइल एसेटअमाइड ammoniated phenyl acetamide-इं० अमोनोल। देखो-एसेट एनिलाइडम्।

अमोनिएटेड मर्करी ammoniated mercury-इं० अमूनित पारद। देखो-पारद।

अमोनिएटेड मर्करी ऑइण्टमेण्ट ammoniated mercury ointment-इं० अमूनित पारदानुलेपन। देखो-पारद।

अमोनिएटेड लिनिमेंट ऑफ केम्फर ammoniated liniment of camphor-इं० अमोनित कर्पूर अभ्यञ्जन। देखो-अमोनियम्।

अमोनियम ammonium-ले० नरसार वायव्य। देखो—अमोनिया।

अमोनियम आयर्न एलम ammonium iron alum-ले० एल्युमोन अमोनियो।

अमोनियम आयोडाइड ammonium iodide-ले० अमोनियम नैलिद। देखो-आयोडम्।

अमोनियम इक्थियॉल ammonium ichthyol-ले०। देखो—सरेशममाही।

अमोनियम इक्थियॉल सल्फोनेट ammonium ichthyol sulphonate-ले० इक्थो सल्फोल। देखो—सरेशममाही।

अमोनियम एरोमेटिकम ammonium aromaticum-ले० सुवासित अमोनिया। एला, इलायची। (Cardamum)

अमोनियम एलम ammonium alum-फिटकिरी भेद। एक प्रकार की फिटकिरी।

अमोनियम कार्बनित ammonium carbonit-हिं० पुं० देखो-अमोनियाई

अमोनियम कार्बोनेट ammonium carbonate-ले० देखो—अमोनियाई का

अमोनियम क्लोराइड ammonium chloride-ले० नु(नर)सार, नौसादर (sal ammoniac.)

अमोनियम फॉस्फेट ammonium phosphate-इं० नुसार स्फुरेत। देखो—फ फोस्फोरस।

अमोनियम बेंजोएट ammonium benzoate-इं० खोरासानी अजवायन? देखो— बेंज़ोइकम।

अमोनियम बोरेट ammonium borate देखो—अमोनियाई बोरास।

अमोनियम ब्रोमाइडम् ammonium bromidum-ले० अमोनियम ब्रह्मिकम् ब्रोमीन।

अमोनियम सक्सीकार्बोनेट ammonium succi carbonate-ले० देखो- याई कार्बोनास।

अमोनियम सक्सीनेट ammonium succinate-ले० अमोनियम अम्बर। अम्बर।

अमोनियम सल्फो इक्थियोलेट ammonium sulphoichthyolate-ले० देखो- निया।

अमोनियम सस्की कार्बोनेट ammonium sesqui carbonate-इं० देखो-अ कार्बोनास।

अमोनियम हरिद ammonium chloride-हिं० पुं० नौसादर, नुसार। देखो-अम क्लोराइड।

अमोनिया ammonia-इं० नरसार

ोनियम Ammonium-लें०। गामूर्चा-
दर, गैस नौशादर-नि०।

रासायनिक संकेत सूत्र
(न उ$_3$) NH_3

लक्षण—यह एक उग्रगंधि अदृश्य वाष्प
गैस) है, जो नवसादर (अमोनियम हरिद)
र चूर्ण के मिश्रण से उत्पन्न होता है।

प्रयोग—नवसादर १ भाग और चूर्ण २ भाग
र खरल में डालकर चूर्ण करें। दोनों के
स्पर चूर्ण होने पर एक उग्रगंधि गैस निकलने
ता है। यही अमोनिया है।

यदि शृंग, खुर, केश, त्वचा और मांस आदि
श्व पिंजरों के पड़ दग्ध किए जाएँ तो जो
शेष दुर्गंध प्राप्त होती है, वह अमोनिया गैस
कारण ही है, क्योंकि वह उनका एक प्रधान
ग है। इस विधि से बहुलता से अमोनिया
प्त होता है। प्राचीन काल में मृगश्रृंग प्रभृति
मोनिया बनाने के काम आते थे। यह गैस कई
क वानस्पतिक रसों यथा इक्षु रस आदि में और
सी भाँति वायु में भी विद्यमान होता है।

यद्यपि अमोनियम कोई धातु विशेष नहीं है,
वल नत्रजन और उद्जन के परमाणुओं का
मूह है, तथापि इसका अणु (न उ३) धातु-
त् काम करता है, और अम्लोंमें मिलकर लवण
नाता है। उसका सुप्रसिद्ध लवण नवसादर
(अमोनियम हरिद) है। यह अमोनियम और
उदहराम्ल के संयोग से बनता है। अमोनियम के
कर्बनित आदि लवण भी होते हैं, जो बहुत उप-
योगी हैं।

गुण—(क) अमोनिया एक अदृश्य, उग्र,
परन्तु रोचक गंधयुक्त गैस है जो वर्णरहित,
स्वच्छ तथा नमनीय होता है। स्वाद तीव-
दाहक है।

(ख) यह अत्यन्त जल विलेय है (मद्य-
सार में भी विलीन हो जाता है।); परन्तु जल-
विलीन होकर यह स्थिर नहीं रहता। अस्तु, जल-
विलीन अमोनिया उबालने पर वा बोतल खुली
रखने पर जल से निकल जाता है।

(ग) खरल, जिसमें नवसादर और चूर्ण
को मिलाया गया हो, उसके समीप यदि आर्द्र
रक्त लिटमस पत्र लाएँ, तो वह नीला हो जाता
है। अतः यह गैस क्षारीय है।

(घ) उसी खरल के पास यदि उदहरि-
काम्ल में डुबोकर एक काचदण्डी लाएँ, तो श्वेत
धूम्र निकलते हैं।

(ङ) इस गैस का जलविलयन क्षारों के
समान गुण रखता है। रक्त लिटमस को नीला
और अम्लों को उदासीन कर देता है। यह क्षार
ऐसा तीव्र और दाहक नहीं है, जैसा कि दाहक
सोडा या पोटास। अतः इसकी संज्ञा मृदुक्षार
है।

(च) इसका आपेक्षिक गुरुत्व ·५८६ है।

यदि इस गैस को बहुत सी हवा के साथ
मिलाकर सुँघाया जाए तो भी यह बहुत क्षोभक
प्रभाव करता है और यदि इसको शुद्ध रूप में
सुँघा जाए तब तो तत्काल दम घुटने लगता है।

संज्ञा-निर्णय—प्राचीन मिश्र, यूनान तथा
रोम देशनिवासियों के एमन नामक देवता का
मन्दिर, जिसका वर्णन एमोनाइकम (उशक) के
संज्ञा-निर्णायक-नोट शीर्षक के अन्तर्गत होगा,
लेबिया (शाम) के जिस ज़िला में था, उस
ज़िला का नाम उक्त देवता के नाम पर रखा गया
था। उस ज़िलाका नाम अ(ए)मोनिया था। चूँकि
कृत्रिम नवसादर सर्व प्रथम उसी जगह बनाया
गया था। अतएव नवसादर का नाम सल एमो-
निएक (Sal ammoniac.) अमोनीयिक
लवण या एमोनिया (स्थान) का नमक है, और
चूँकि यह गैस सल एमोनिएक अर्थात् नवसादर
से बनता है। अस्तु, इसी सम्बन्ध से उसका नाम
भी अ(ए)मोनिया रखा गया।

औषध-निर्माण—(१) लाइकर अमोनी
फॉर्टिस Liquor Ammoniæ Fortis
—ले०। स्ट्रॉङ्ग सोल्युशन ऑफ अमोनिया Strong Solution of Ammonia-इं०।
सबल अमोनिया द्रव, तीव्र अमोनिया विलयन
—हिं०। क़वी साइल अमोनिया —उ०।

(ऑफिशल *Official*)

सङ्केत सूत्र (नउ$_3$) NH_3

निर्माण-विधि—अमोनियम क्लोराइड (अमोनियम हरिद, नवसादर) को शांत चूर्ण में मिला कर उत्ताप देने से जो अमोनिया गैस प्रादुर्भूत हो उसको परिस्रुत जल में विलीन करलें।

गुण—यह एक अत्यन्त उग्रगंधि, वर्ण रहित एवं अति क्षारीय द्रव होता है जिसका आपेक्षिक गुरुत्व ·८९१ होता है। इसमें ३२·५% (भार में) अमोनिया वाष्प पाया जाता है।

प्रभाव—वेसिकेण्ट (फोस्काजनक)। इसका आभ्यन्तर प्रयोग न करना चाहिए।

यह पड़ता है—लिनिमेण्टम कैम्फोरी अमोनिएटम, लाइकर एमोनी, स्पिरिटस एमोनी ऐरोमेटिकस, स्पिरिटस एमोनी फेटिडस और टिंक्चर व्लेरियानाई एमोनिएटा में तथा अमोनियाई बेञ्जोआस, एमोनियाई ब्रोमाइडम, एमोनियाई फारमॉस और निम्नांकित ऑफिशल योगों के निर्माण में काम आता है।

ऑफिशल प्रिपेरेशंज

(*Official Preparations.*)

(१) लाइकर एमोनी Liquor Ammoniæ-लै०। सोल्युशन ऑफ अमोनिया Solution of Ammonia-इं०। अमोनिया घोल-हिं०। सय्याल एमोनिया-उ०।

सङ्केत सूत्र (नउ$_3$) NH_3

निर्माण-विधि—स्ट्रांग सोल्युशन ऑफ अमोनिया १ भाग, परिस्रुत जल २ भाग, दोनों को मिला लें।

गुण—स्ट्रांग सोल्युशन ऑफ अमोनिया के सदृश, परन्तु तीक्ष्णता में यह उससे हीन होता है। इसका आपेक्षिक गुरुत्व ·९९९ होता है और इसमें १०% (भार में) एमोनिया गैस पाया जाता है। मात्रा—१० से २० बूंद।

नोट—इसको खूब डायल्यूट करके अर्थात् जल मिश्रित कर देना चाहिए।

प्रभाव—स्टिम्युलेण्ट (उत्तेजक) और रूबीफेशेण्ट (वपर्ण वा आरक्तकर)।

यह काम आता है—

लिनिमेण्टम हाइड्रार्जिराई, टिंक्चर एमोनिएटा, टिंक्चर अर्गोटी अमोनिएटा वेलेरियानी, अमोनिएटा और अमोनिएटा तथा निम्नांकित योग।

(२) लिनिमेण्टम अमोनि Linimentum Ammoniæ-लै०। लिनिमेंट ऑफ अमोनिया Liniment of Ammonia, 'हार्टशार्न' लिनिमेंट Hartshorn Liniment -इं०। अमोनिया अमोनिया उद्वर्तन-हिं०। तमरीख अमोनिया तमरीख क़रनुस्सईल-ति०।

नोट—प्राचीन काल में हार्टशार्न (बारहसिंगा) अमोनिया बनाने के काम आता। अस्तु, लिनिमेंट ऑफ अमोनिया की अंगरेजी संज्ञा हार्टशार्न लिनिमेंट मृगशृंगाभ्यंग भी है।

निर्माण-विधि—लाइकर (सोल्युशन ऑफ अमोनिया १ आउंस, आमंड (बादाम तैल) १ आउंस और आलिव (ज़ैतून तैल) २ भाग इनको भली प्रकार मिला लें। प्रभाव—रूबीफेशेण्ट (वपर्ण वा आरक्त कारक)।

लिनिमेण्टम कैम्फोरी एमोनिएटम Linimentum camphoræ ammoniatum-लै०। एमोनिएटेड लिनिमेंट ऑफ कैम्फर Ammoniated liniment of camphor-इं०। अमोनिया कर्पूराभ्यंग। तमरीख काफ़ूरी अमोनियाई, रोग़न काफ़ूरी एमोनियाई-ति०।

निर्माण-विधि—स्ट्रांग सोल्युशन आफ अमोनिया २½ फ्लुइड आउंस, कैम्फर १½ आउंस, आइल ऑफ लेवेण्डर १ फ्लुइड ड्राम, ऐल्कोहल (९०%) आवश्यकतानुसार। कैम्फर और आइल ऑफ लेवेण्डर को १२ फ्लुइड आउंस ऐल्कुहॉल (मद्यसार) में विलीन करें। उसमें थोड़ा थोड़ा स्ट्रांग सोल्युशन मिलाते और हिलाते जाएँ। पुनः इसको

सार) मिलादें जिसमें कुल द्रव्य पूरा २० फ्लुइड आउंस होजाए।

(२) लिनिमेण्टम हाइड्रार्जिराई Linimentum Hydrargyri-लै० । लिनिमेंट मर्करी Liniment of mercury -इं० । पारदाभ्यंग-हिं० । तम्रीख वा मालिश पारा-ति० । देखो—पारद।

(६) स्पिरिटस अमोनी एरोमैटिकस Spiritus ammoniæ aromaticus -लै०। एरोमैटिक स्पिरिट ऑफ़ अमोनिया Aromatic spirit of ammonia -इं०। सुवासित अमोनिया सुरा । देखो—अमोनिया कार्बोनास के योग।

(७) स्पिरिटस अमोनी फ़ेटिडस Spiritus ammoniæ fœtidus-लै०। फेटिड स्पिरिट ऑफ़ अमोनिया Fœtid spirit of ammonia-इं०। पूतिगंध अमोनिया सुरा -हिं०। रूह नवशादर मुन्तिन, रूह नवशादर ...-ति०।

निर्माण-विधि-स्ट्रांग सोल्युशन आफ अमोनिया २ फ़्लुइड आउंस, ऐसाफेटिडा (हिंगु) १॥ आउंस और ऐलकुहॉल (६०%) आवश्यकतानुसार। ऐसाफेटिडा (हिंगु) के टुकड़े करके १५ फ़्लुइड आउंस ऐलकुहाल में २४ घंटे तक भिगोकर इसका स्रवण करें। पुनः इसमें स्ट्रांग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया और ऐलकुहाल और योजित करें, जिसमें सम्पूर्ण औषध एक पाइंट हो जाए।

मात्रा—२० से ४० बुंद (=१·२ से १·८ क्युबिक सेंटीमीटर) जब एक बार देना हो और ६० से ६० बुंद (३·६ से ४·८६ घन शतांश मीटर) जब एक ही बार देना हो। इसको अच्छी तरह जल मिश्रित कर सेवन कराएँ।

प्रभाव—उत्तेजक (Stimulant) और आक्षेपहर (Antispasmodic).

नॉट ऑफ़िशल योग

(Not official preparations).

(१) लोशियो क्रिनेलिस Lotio crinalis-लै०। लोमजनक विलयन-हिं०। अर्क़ मू अफ़ज़ा-नि०। योग—ऑलियम एमिग्डली (बादाम तैल) १ भाग, लाइकर अमोनी फॉर्टिस १ भाग, स्पिरिटस रोज़ मेराइनी ४ भाग, एक्वामैलिस २ भाग। सब औषधों को मिला लें। बालों को बढ़ाने के लिए इस अर्क का प्रयोग करते हैं।

(२) टिंक्चूरा अमोनी कम्पॉज़िटा Tinctura ammoniæ composita, यांडीलूस Eau-de-Luce—डा० । यौगिक अमोनियासव, सर्पागदार्क-हिं०। तध्फ़ीन अमोनिया मुरक्कब, अर्क़ दाफ़िअ् ज़ह्र मार–नि०। योग—मस्टिक (मस्तगी) २ ड्राम, एल्कुहॉल (६०%) ६ ड्राम, ऑलियम लेवण्डयुली १४ बूंद, लाइकर अमोनी फॉर्टिस २० फ़्लुइड आउंस। समग्र औषध को परस्पर मिलाकर साँप के काटे पर लगाया करते हैं।

अमोनिया की फार्माकॉलोजी

अर्थात् प्रभाव

(वाह्य प्रभाव)

सोल्यूशन ऑफ़ अमोनिया (अमोनिया विलयन) को जब त्वचा पर लगाया जाता है तब वह उसमें अंत होने वाले तन्तुओं एवं रक्त वाहिनियों को उत्तेजना प्रदान करता है, जिससे उक्त स्थल पर उष्मा एवं राग का अनुभव होता है। यदि अमोनिया के तीक्ष्ण विलयन को त्वचा के किसी भाग पर लगाकर उसको वाष्पीभूत न होने दें तो वहाँ पर फोस्का उत्पन्न हो जाता है। अतएव अमोनिया रूबीफेशेण्ट (आरक्तकारक) और वेसिकेण्ट (फोस्काजनक) है।

नासिका और वायुप्रणाली—नासिका तथा वायु प्रणाली की श्लैष्मिक कला पर अमोनिया वाष्प का सबल क्षोभक एवं उत्तेजक प्रभाव होता है, जिससे छींकें आने लगती हैं। कञ्जङ्टाइवा (चक्षु के ऊपरी परत) पर भी इसका क्षोभक प्रभाव होता है, जिससे नेत्र द्वारा अश्रुस्राव होने लगता है। नासिका की संज्ञावहा नाड़ियों को

उत्तेजित करने के कारण अमोनिया परावर्तित रूप से रुधिराभिसरण को उत्तेजना प्रदान करता और नाड़ी की गति को तीव्र करता है। यदि अमोनिया को देर तक सूंघा जाए अथवा वाष्प अधिक तीव्र हो तो नासिका एवं वायु प्रणालियों में क्षोभ उत्पन्न हो जाता है। परावर्तित क्रिया द्वारा यह नाड़ीगत रक्तभार की वृद्धि करता और आघात जन्य मूर्च्छा के लिए हितकारक है।

आन्तरिक प्रभाव

आमाशय—आमाशयमें पहुँच कर अमोनिया तत्क्षण परावर्तित रूप से रक्ताभिसरण तथा हृदय को उत्तेजित करता है अर्थात् शोणित-सञ्चालन और हृदय की गति को चपल करता है। क्योंकि उनको तीव्र करने वाले सौषुम्न वातकेन्द्रों पर इसका प्रभाव पड़ता है। रक्त में अभिशोषित होने के पश्चात् इसका यह प्रभाव जारी रहता है, और श्वासोच्छ्वास भी तीव्र हो जाता है।

अन्य क्षारीय औषधों के समान यदि आहार से पूर्व अमोनिया का प्रयोग किया जाए तो यह आमाशयिक रस के स्राव की वृद्धि करता है; और यदि आहार पश्चात् दिया जाए तो यह आमाशयिक रस की अम्लता को उदासीन कर देता है। अर्थात् उसके प्रभाव को नष्ट कर देता है। यह आंत्रस्थ कृमिवत् आकुञ्चन को भी तीव्र करता है और इससे आमाशय में उष्मा का बोध होता है। अतएव अमोनिया पित्तघ्न (पेप्टेसिड), आमाशयोत्तेजक और वायु निस्सारक (आध्मानहर) है। अधिक मात्रा में देने से यह आमाशयांत्र क्षोभक है।

शोणित—अमोनिया रक्तवारि (प्लाज़्मा) के तारल्य को किसी प्रकार अधिक करता है। अनुमान किया जाता है कि थ्रोम्बोसिस (रक्तवाहिनियों में रक्त का थक्का बन जाना) रोग में यह रक्त के थक्का बनाने की शक्ति को हीन करता है और जो क्लॉट (खून का थक्का) पूर्व से बन चुका है उसको विलीन कर देता है।

हृदय—अमोनिया के प्रभाव से हृदय एवं नाड़ी की गति तीव्र हो जाती है और रक्तभार बढ़ जाता है। कदाचित् यह [illegible] कुछ तो परावर्तित रूप से होता है [illegible] तर इस हेतु कि अमोनिया रक्त में [illegible] होने के पश्चात् हृदय की गति [illegible] वाले सौषुम्न-वातकेन्द्रों को [illegible] करता है।

फुफ्फुस—रक्त में अभिशोषित [illegible] पश्चात् श्वासोच्छ्वासकेन्द्र पर [illegible] सरलोत्तेजक प्रभाव पड़ने से [illegible] गति तीव्र हो जाती है। अमोनिया [illegible] वायु प्रणालीस्थ ग्रंथियों के मार्ग [illegible] र्जित होता है। अस्तु, इसके [illegible] ग्रन्थियों का स्राव अधिक हो जाता है। रॉसबैक (Rossbach) ने कतिपय [illegible] प्राणियों की वायुप्रणालीय श्लैष्मिक [illegible] अमोनिया का मन्द विलयन लगाकर [illegible] की परीक्षा की है कि इसके लगाने [illegible] पर रक्त घनीभूत होकर रक्तस्राव [illegible]

वात-मंडल—अमोनिया सार्वांगिक [illegible] क्योंकि यह श्वासोच्छ्वासकेन्द्र और [illegible] सौषुम्न-वातकेन्द्रों को उत्तेजित कर [illegible] परन्तु, मस्तिष्क पर इसका कुछ प्रभाव [illegible] और न वात तन्तुओं पर कोई असर [illegible] जब इसको स्थानिक रूप से लगाते हैं [illegible] स्थल पर झुनझुनाहट और दाह प्रतीत [illegible]

जीवधारियों को जब विषैली अर्थात् [illegible] मात्रा में अमोनिया दिया जाता है, [illegible] आक्षेप (Convulsion) होने [illegible] इसका कारण यह है कि अमोनिया [illegible] गत्युत्पादक सेलों पर उत्तेजक प्रभाव [illegible]

वृक्क—अमोनिया और इसके लवण [illegible] तथा शारीरिक धातुओं (तन्तुओं) में [illegible] होकर वियुक्त व पाचित होजाते (सम्भवतः [illegible] कदाचित् यकृत में इससे भी अधिकतर [illegible] उपस्थित होते हैं, जिनका अवश्यम्भावी [illegible] यह होता है कि मूत्र (क्षारोद) में [illegible] युरिकाम्ल और शोरकाम्ल की मात्रा [illegible] है। अस्तु, इस बात को भली [illegible]

ानी चाहिए कि अमोनिया मूत्र की अम्लता को ाता है।

उत्सर्ग—शरीर से श्वासोच्छ्वास, वायु-ालीस्थ स्राव, मूत्र व स्वेद द्वारा अमोनिया ःसर्जित होता है।

अमोनिया द्वारा विषाक्तता

यदि अमोनिया के तीव्र विलयन की एक बड़ी त्रा पान करली जाए तो स्वरयंत्र (Glottis) आक्षेपग्रस्त होने से श्वासावरोध होकर किंचित् ल में ही मृत्यु उपस्थित होसकती है। अन्यथा हक या दाहक क्षारीय विषों यथा दाहक सोडा (Caustic soda) या पोटास प्रभृति के ीन लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

अगद-जो अन्य ऐलकेलीज़ अर्थात् क्षारीय ों के अगद हैं, वे ही इसके भी हैं। देखो—दासा कॉस्टिका।

अमोनिया के थेराप्युटिक्स
अर्थात्
औषधीय उपयोग
(बहिःप्रयोग)

स्थानिक वाततन्तु एवं रक्तवाहिन्योत्तेजक प से स्टिफ़ जॉइण्ट्स (विकृत कठोर संधियाँ) और क्रॉनिक र्युमैटिज़्म (पुरातन संधिवात) विभिन्न दशाओं में लिनिमेण्ट ऑफ़ अमो-या का अभ्यंग करते हैं। ब्रोंकाइटिस (कास), ोनिया (फुफ्फुसौष) और प्ल्युरिसी (पार्श्व-ल) में स्थानिक उग्रतासाधक (Counter ritant) रूप से भी इसका उद्वर्तन करें।

जिन रोगों में फोस्काजनन के लिए कैन्थेरिडीज़ तेलिनी मक्खी) का उपयोग वर्जित एवं अनु-त है, उनमें उक्त अभिप्राय के लिए अमोनिया प्रयोग करते हैं। अस्तु, जितना बड़ा फोला लाना हो उससे किंचित् बड़ा लिंट का एक कड़ा काट कर और उसको स्ट्रांग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया में क्लेदित कर जिस स्थल पर ोस्का उठाना हो उसे वहाँ पर रख कर ऊपर से च ग्लास (जेबघड़ीके शीशे) से आवरित कर । किञ्चित् काल में वहाँ पर फोला पड़ जाएगा।

अमोनिया प्रायः विषैले कीटों के विष को प्रभाव-शून्य कर देता है। अस्तु, वृश्चिक, भिड़, ततैया और मुहाल इत्यादि के दंश-स्थल पर (दंश अर्थात् डङ्कको निकाल कर), कनखजूरे (गोजर) प्रभृति के काटे हुए स्थान पर और रतेल (मकड़, मारवय मकड़) या मकड़ी मले हुए स्थान पर अमोनिया का निर्बल सोल्यूशन लगाने से वेदना एवं शोथ कम हो जाता है। अल्पविष सर्प के दंशित स्थानपर कम्पाउंड टिंकचर ऑफ अमोनिया (ओ-डी-लूम) का त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करना लाभदायक सिद्ध होता है। लोमवर्द्धन हेतु लोशियो क्रिनेलिस (रोमवर्द्धनार्क) एक अत्युत्तम औषध है।

मूर्च्छित व्यक्ति को अमोनिया सुँघानेसे तत्क्षण होश आ जाता है। क्योंकि इसके घ्राण करने से परावर्तित रूप से श्वासोच्छ्वास तथा हृदय की गति तीव्र हो जाती है। अस्तु मूर्च्छा, आघात वा क्षोभ, निद्रा (जन्य विसंज्ञता) और निद्राजनक (या अवसन्नताजनक) विषों यथा अहिफेन प्रभृति में रोगी की मूर्च्छा निवारणार्थ अमोनिया सुँघाया करते हैं।

नोट—विभिन्न प्रकार के सूँघने के चूर्ण या लखलखे (Smelling salts) जिनका प्रधान अवयव अमोनिया होता है, बने बनाए खुले मुख के हरित वर्ण आदि की बंद शीशियों में अँगरेज़ी औषध-विक्रेताओं की दूकानों में बिका करते हैं।

आन्तरिक प्रयोग

अन्य क्षारीय औषधों के समान अमोनिया को भी अम्लाजीर्ण (एसिड डिस्पेप्सिया) में दे सकते हैं। गैस्ट्रिक इन्टेस्टाइनल क्रैम्प्स (आमा-शयांत्र के प्रावाहकीय आक्षेपक वेदनाओं) में स्पिरिट एमोनिया ऐरोमैटिक एक अत्युत्तम औषध है। बालकके उदराध्मानमें सोडा और डिल वाटर (सोआ के अर्क) के साथ इसके कुछ बुंद देने से सामान्यतः लाभ हो जाता है। जेनरल डिफ्युज़िब्ल स्टिम्युलेण्ट (सर्वांग व्यापोत्तेजक) रूप से सिङ्कोपी (मूर्च्छा), शॉक (क्षोभ),

फेचिटङ्ग (विसंज्ञता) में तथा फ़ेब्राइल डिज़ीज़ेज (ज्वरयुक्त व्याधियाँ), न्युमोनिया (फुप्फुसौप) और थाइसिस (उरःक्षत) इत्यादि में जब रोगी की शक्तियाँ निर्बल हो जाती हैं, उस समय अमोनिया के उपयोग से बहुत लाभ होता है।

कास तथा प्रातिश्यायिक फुप्फुसौप (कैटारल न्युमोनिया) में अमोनिया सान्द्र एवं पिच्छिल श्लेष्मा को द्रवीभूत एवं मृदु करता है। पर इस हेतु अमोनियम कार्बोनेट का उपयोग श्रेष्ठतर होता है। नैलिका द्वारा विषाक्तता अर्थात् आयोडिज़्म (नैलिका या उसके यौगिकों से पुरातन विषाक्तता के हो जाने) को अमोनिया रोकता है। अस्तु, जब आयोडाइड्ज़ को अधिक मात्रा में देना होता है तब इसको उनके साथ मिलाकर देते हैं।

अमोनिया असारुनी ammonia asáruní –हिं० पुं० देखो—जटामांसी।

अमोनियाई आयोडाइडम् ammonii iodidum–ले०, नैलिद अमोनिया। देखो—आयोडम्।

अमोनियाई एम्बेलास ammonii embelas –ले० देखो वायविडङ्ग।

अमोनियाई कार्बज़ोटास ammonii carbojotas–ले० देखो—अमोनियाई पिकास।

अमोनियाई कार्बोनास ammonii carbonas –ले० अमोनियम कार्बनित, कज्जलित नरसार –हिं०। अमोनियम कार्बोनेट Ammonium carbonate., अमोनियम सस्की कार्बोनेट Ammonium Sesqui carbonate. –इं०। कर्बूनातुन्नौसादर, अमोनिया मुरक्कब ब (सेइचम्ब) कार्बन।

आफिशल (*Official.*)

निर्माण-विधि—क्रोराइड ऑफ अमोनियम (नवसादर) या सल्फेट ऑफ अमोनियम और कार्बोनेट ऑफ कैल्सियम (चूर्ण कज्जलेत अर्थात् शुद्ध खटिका) को परस्पर संयोजित कर बारबार ऊर्ध्वपातित करने से कार्बोनेट ऑफ अमोनियम प्राप्त होता है। इसमें अमोनियम हाइड्रोजन कार्बोनेट ($NH_4 NCO_3$) और अमोनियम कार्बेमेट ($NH_4 NH_2 CO$) सम्मिलित पाए जाते हैं। संकेत सूत्र $N_3 H_{..} C_2 O_5$ ($NH_4 HCO_3 + NH_4 NH_2 CO_2$).

नोट—उम्दतुलमुहताज के लेखक के मत हार्टशॉर्न अर्थात् मृगशृंग ■ उड़नशील भी कज्जलित नरसार (कर्बूनातुन्नौशादर) होता है। किन्तु, उसमें गन्धमय तैल मिलित होते हैं।

लक्षण—अमोनियम कार्बनित एक पार्थिव द्रव्य है, जो वायु में खुला रखने से सूँघने ■ अमोनिया और कार्बन डाइ (कर्बन द्विओषित) गैस देता हुआ जाता है। इसके अर्द्ध स्वच्छ स्फटिकीय उग्रगंधि बड़े बड़े टुकड़े होते हैं। वायु में रखने पर उनपर श्वेत चूर्ण जम जाता है। की प्रतिक्रिया क्षारीय होती है।

परीक्षा—अमोनियम की परीक्षा के संदिग्ध लवण को चूर्ण (*Lime.*) मिलाकर उष्ण करें और सूँघें। यदि उग्रगंध निकले, तो समझें, कि यह अमोनिया का कोई योग है।

विलेयता—यह १ भाग ४ भाग जल ■ विलीन हो जाता है।

मिश्रण—इसमें सल्फेट्स (गंधित) क्लोराइड्स (हरिद) का मिश्रण हुआ करता।

उदासीनजनक मात्रा—२० ग्रेन कार्बोनेट, २६॥। ग्रेन साइट्रिक एसिड तथा ११ ग्रेन २८॥। ग्रेन टार्टारिक एसिड तथा ... आउंस निम्बुस्वरस को न्यूट्रल अर्थात् उदासीन कर देता है।

संयोग-विरुद्ध—अम्ल, अम्लांश (एसिड साल्ट्स), चूर्णोदक (लाइम वाटर), लौह के लवण (आयर्न साल्ट्स), मृत्तिकाएँ (अलकलाइन अर्थ्स) और अलकलाइड्स) को अमोनियम कार्बोनेट के साथ नहीं मिलाना चाहिए।

औषध-निर्माण-संकेत— ...

रने से पूर्व अमोनिया कार्ब के टुकड़े पर जो बेत चूर्ण लगा होता है उसको सुरच डालना चाहिए।

प्रभाव—व्याप्तोत्तेजक, श्लेष्मानिस्मारक, मक और अम्लहर (ऐण्टेसिड)।

मात्रा—३ से १० ग्रेन ('२० से '६४ ग्राम) तेजक व कफनिस्मारक रूप से और ३० ग्रेन २ ग्राम) वामक रूप में।

यह लाइकर अमोनियाई एसिटेटिस, लाइकर मोनियाई साइट्रेटिस, स्पिरिटस अमोनी ऐरो-टेकस और बिस्मथ कार्ब तथा निम्नांकित योगों निर्माण में काम आता है:—

ऑफिशल प्रिपेरेशन्स (योग)
(*Official preparations.*)

(१) लाइकर अमोनियाई एसिटेटिस Liquor ammonii acetatis-लै०। ल्युशन ऑफ अमोनियम एसिटेट Solution f ammonium acetate, स्पिरिट ऑफ मंडीरर Spirit of Mindereri—इं०। क्रित अमोनियम द्रव-हिं०। मव्वाल खुल्लानु-नौशादर, अर्क अमोनिया सिर्कादार, शराब मिंड-रर।

रासायनिक सूत्र
(न उ४ क२ उ३ ओ२)

$NH_4 C_2 H_3 O_2$

नोट—सन् १६२२ ई० में सर्व प्रथम मिण्डीरर महोदय ने, जो ड्यूक ऑफ बेवारिया के सर्वोत्कृष्ट चिकित्सक थे, इस औषध का निर्माण किया था। अस्तु, इसे उन्हीं के नाम से अभिहित किया गया।

निर्माण-विधि—अमोनियम कार्बोनेट १ आउंस, एसिटिक एसिड (शुक्राम्ल) और परि-स्रुत वारि प्रत्येक आवश्यकतानुसार। अमोनियम कार्बोनेट को दसगुने परिस्रुत जल में विलीन कर के फिर उसमें एसिटिक एसिड (शुक्राम्ल) सम्मिलित कर उसे न्युट्रल (उदासीन) कर लें। बाद को उसमें इतना परिस्रुत जल और मिलाएँ जिसमें सम्पूर्ण द्रवका द्रव्यमान पूरा एक पाइंट हो जाए। इसमें लगभग ६½% अमोनिया होता है।

मात्रा—२ से ६ फ्लुइड ड्राम=(७'१ से २१'३ घन शतांश मीटर)।

प्रभाव—मूत्रल और स्वेदक।

(२) लाइकर अमोनिया साइट्रेटिस Liquor ammonia citratis.-लै०। सोल्युशन ऑफ अमोनिम साइट्रेट Solution of ammonium citrate.-इं०। निम्बु-किन अमोनिया द्रव-हिं०। मव्वाल सत्रातुनौ-शादर, अर्क अमोनिया लेमूनी-ति०।

निर्माण-विधि—अमोनियम कार्बोनेट २॥ आउंस या आवश्यकतानुसार, साइट्रिक एसिड (निम्बुकाम्ल) २॥ आउंस, परिस्रुत जल आवश्यकतानुसार। साइट्रिक एसिड (निम्बु-काम्ल) को पाँच गुने परिस्रुत जल में विलीन करके फिर उसमें अमोनियम कार्बोनेट मिलाकर उसको उदासीन (न्युट्रल) करलें और फिर उसमें इतना और परिस्रुत जल मिलादें जिसमें कुल द्रव एक पाइंट होजाए। इसमें लगभग १६% अमोनिया होता है।

रासायनिक सूत्र
(न उ४)३ क६ उ५ ओ७

$(NH_4)_3 C_6 H_5 O_7$

प्रभाव—मूत्रल। मात्रा—२ से ६ फ्लुइड ड्राम (७ १ से २१'३ घन शतांशमीटर)।

नोट—इसको सदा हरित वर्ण के बोतलों में रखना चाहिए।

(३) स्पिरिटस अमोनी ऐरोमैटिकस Spiritus ammoniæ aromaticus-लै०। ऐरोमैटिक स्पिरिट ऑफ़ अमोनिया Aromatic spirit of ammonia, स्पिरिट ऑफ़ सैल वालेटाइल Spirit of Sal Volatile-इं०। सुवासित अमोनिया सुरा-हिं०। रूह नौशादर मुत्तय्यब, रूह नौशादर मुअत्तर, रूह मिलहुत्तय्यार-ति०।

रासायनिक सूत्र (न उ$_3$) NH_3

निर्माण-विधि—अमोनियम कार्बोनेट ४ आउंस, स्ट्रॉग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया ८ आउंस, ऑइल ऑफ़ नटमेग (जातीफल तैल) ४॥ फ़्लुइड ड्राम, ऑइल ऑफ़ लेमन (निम्बुक तैल) ६॥ फ़्लुइड ड्राम, ऐल्कुहॉल वा मद्यसार (९०%) ६ पाइंट, परिस्नुत जल ३ पाइंट। प्रथम ऑइल ऑफ़ नटमेग और ऑइल ऑफ़ लेमन को ऐल्कुहॉल और परिस्नुत जल के साथ योजित कर सात पाइंट द्रव स्रावित करके पृथक् करलें। फिर ६ आउंस द्रव और स्रावित करें। तथा इसमें स्ट्रॉग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया और अमोनियम कार्बोनेट को योजित कर इतना उत्ताप दें जिसमें वे विलीन हो जाएँ। अब इसमें पूर्व स्रावित सात पाइंट अर्क मिला लें। इसका आपेक्षिक भार '८३ होना चाहिए। यह लगभग वर्ण रहित होता है।

मात्रा—जब बारबार देना हो तब २० से ४० बूंद और जब एक ही बार देना हो तब ६० से ९० बुंद तक।

नोट—योग में स्पिरिट अमोनी ऐरोमैटिक के साथ सिरूपस सिल्ली (वनपलाण्डु प्रपानक अर्थात् शर्बत) कदापि नहीं मिलना चाहिए।

यह मिस्चूरा (मिश्र) सेवा के० में पड़ता है।

नॉट ऑफ़िशल योग

(*Not official preparations*).

(१) लिङ्क्टस अमोनी कम्पॉजिटस Linctus ammonii compositus-लें०। यौगिक अमोनियावलेह-हिं०। लऊक़ अमोनिया मुरक्कब-ति०।

योग—अमोनियम कार्बोनेट $\frac{१}{६}$ ग्रेन, इपिके-काइना वाइन २ बुंद, टिंक्चर ऑफ़ स्क्वील २ बुंद, एसेंस ऑफ़ एनिसाई १ बुंद, म्युसिलेज (लुआब) एकेशिया २० बुंद, जल एक आउंस पर्यन्त। यह एक मात्रा है। (रायल चेस्ट)

(२) अमोनियाई बाइकार्बोनास ammonii bicarbonas-लें०। ...नेट की अपेक्षा इसका स्वाद उत्तम होता है। यह कम दाहक (कॉस्टिक) होता है। ड्राफ़्टस (उफानयुक्त घूंट) हेतु यह उपयोगी है।

(३) अमोनियाई फ्लोराइडम् ammonii fluoridum-लें०। इसके १ से ... आउंस वाले विलयन को १ से १०॥ मात्रा में विवर्द्धित प्लीहा एवं गलगण्ड में दिया करते हैं।

(४) अमोनियाई पिक्रास ammonii picras-लें०। इसके पीतवर्ण के ... पत्र होते हैं जो जलमें विलीन हो जाते हैं। शीतज्वर और मलेरिया ज्वरों में देते हैं। $\frac{१}{८}$ से. १$\frac{१}{२}$ ग्रेन तक दिन रात में।

(५) अमोनियाई टार्ट्रास ammonii tartras-लें०। कफनिस्सारक ... २ से ३० ग्रेन तक की मात्रा में देते हैं।

(६) स्मेलिंग साल्ट Smelling ...-लें०। आघ्राय लवण, सूँघने का ...-लें०। मिल्हुरशाम, सल्ख़ल्स-अ०। ये कई ... होते हैं। इसका एक बेहतर योग लिखते हैं।

योग—अमोनियम क्लोराइड (... १॥ आउंस, पोटासियम कार्बोनेट १ ... ड्राम, कैम्फर (कपूर) १ ड्राम, अमोनिया ... नेट ३ ड्राम, ऑइल ऑफ़ ... १० बूंद, ऑइल ऑफ़ बर्गामॉट १० बूंद ... ऑफ़ स्पियरमिंट ४ बूंद। इन्हें ... बारीक चूर्ण कर उसमें तैल मिला दें।

(७) पिक-मी-अप Pick me up ...

योग—स्पिरिटस अमोनी ऐरोमैटिकस ... ड्राम, स्पिरिटस ग्रोरोफार्माई ... चूरा जञ्जिबराई कम्पॉजिटम १ ड्राम, ... कार्डिमोमाई कम्पॉजिटम १ ड्राम, ... २ ड्राम, जल २ आउंस पर्यन्त। ... मिला लें। यह एक मात्रा औषध है।

प्रभाव तथा उपयोग—

(बाह्य) यद्यपि बाइकार्बोनेट ...

समान ही इसके प्रभाव होते हैं, तथापि अमोनिया कार्बोनेट का बाहिर प्रयोग नहीं होता। परावर्तित क्रिया के लिए स्पिरिटस अमोनिया एरोमैटिक सुँघाई जाती है।

(आन्तरिक) अमोनियम कार्बोनेट में वे सभी प्रभाव वर्तमान होते हैं जो लाइकर अमोनिया में हैं। इसके अतिरिक्त यह सशक्त मोत्तेय कफनिस्सारक (लगभग ८ ग्रेन की मात्रा में भली प्रकार जल मिश्रित कर देने से) है। अतएव कास, प्रातिश्यायिक फुफ्फुसोष में यह एक अत्युत्तम औषध है। अमोनियम कार्बोनेट ३० ग्रेन की मात्रा में वामक है, किन्तु इस प्रयोजन हेतु क्वचित ही उपयोग में आता है। अधिक मात्रा, उदाहरणतः १० से ३० ग्रेन में देने से यह रेचक प्रभाव करता है अर्थात् इससे विरेक आने लग जाते हैं। कभी कभी छोटी मात्रा में अधिक समय तक निरन्तर देते रहने से भी यह आन्त्र में क्षोभ उत्पन्न करता है। अस्तु, ऐसे कास रोगीको जिसको विरेक भी आते हैं, अमोनियम कार्बोनेट नहीं देना चाहिए।

कार्बोनेट ऑफ अमोनिया स्वतंत्र गैसों (वायव्य) की तरह प्रभाव करता है। लगभग ८ ग्रेन की मात्रा में भली प्रकार जल मिश्रित कर देने से यह सार्वांगिक स्वायूत्तेजक है और समग्र ज्वरजन्य कायदौर्बल्य की दशाओं में इसका अत्युत्तम प्रभाव होता है। मसूरिका (मीज़िल्स) और रक्तज्वर (स्कारलेटिना) में इसका प्रयोग करने से कभी कभी अत्यन्त संतोषप्रदायक परिणाम निष्पन्न हुए हैं। इससे तापक्रम भी कम हो जाता है। स्थानिक उपयोग से जिस प्रकार ततैया के दंश और कीट दष्ट में यह विषघ्न प्रभाव करता है। सम्भवतः उक्त दशाओं में यह दूषित विषों को नष्ट कर अपना प्रभाव करता है। अमोनिएकल मेध सहित टाइफॉइड (आंत्रसन्निपात ज्वर) की दशा में यह निष्प्रयोजनीय है। सर्प दष्ट में इसके अन्तःक्षेप की उपयोगिता सन्दिग्ध है। (डि० मे० मे०)।

लाइकर अमोनियाई एसिटेटिस और लाइकर अमोनियाई साइट्रेटिस दोनों स्वेदक हैं (बालकोंके ज्वर की सम्पूर्ण दशाओं में यह विशेष कर लाभप्रद है)। सम्भवतः स्वेदोत्पादक ग्रंथियों की सेलों पर अथवा उन ग्रंथियों में अंत होने वाले वाततन्तुओं पर उनका प्रभाव पड़ने से स्वेद आता है। परन्तु ज्ञात होता है कि लाइकर अमोनिया एसिटेटिस का अधिक शक्तिशाली प्रभाव होता है। यदि रोगी को शीतल स्थान में रखा जाए अर्थात् उसके शरीर को शीतल रखा जाए तो फिर वृक्क पर एकत्र हो कर (संगठित रूप से) उनका प्रभाव होता है, जिससे अधिक मूत्र आने लगता है। अस्तु, उपयुक्त प्रभावों के अनुसार उनको ज्वरों में ऐसे अल्पस्वेदक रूप से, जिनसे निर्बलता न हो, प्रयोग करते हैं। अधिक मद्यपान जनित प्रभावों को व्यर्थ करने के लिए भी उनको वर्तते हैं। अस्तु, सुरा की शीशी (wine glassful) की मात्रा में सेवन करने से मद्यात्यय के प्रभाव को नष्ट करने में यह (एसिटेट ऑफ अमोनिया सोल्युशन) विलक्षण प्रभाव करता है अथवा आरम्भ में कार्बोनेट को एक चाय की चम्मच भर एक शीशी सिरके में मिलाकर देने से भी वैसा ही प्रभाव होता है। यह यूरिया की शकल में मूत्र द्वारा, बिना उसके क्षारत्व के घटाए, उत्सर्जित होता है।

अमोनिया के प्रयोग की सर्वोत्तम विधि, उसको एरोमैटिक स्पिरिट ऑफ अमोनिया और लाइकर अमोनी की शकल विशेषतः प्रथम रूप में देना है। उनमें सदा स्वतंत्रतापूर्वक जलमिश्रित करलें। कुश्ना के विचारानुसार इन योगों का आमाशय के धरातलपर उत्तेजक प्रभाव होकर परावर्तित रूप से हृदय पर प्रभाव होता है।

नोट—कार्बोनेट ऑफ अमोनिया को दुग्ध, शर्बत (प्रपानक) या पानी में भली प्रकार विलीन करके वर्तना चाहिए।

युरोप तथा अमेरिका के डाक्टरों के परीक्षित प्रयोग

(१) डायफोरेटिक मिक्स्चर
(स्वेदक मिश्रण) :-

एसिटेट ऑफ़ अमोनिया सोल्युशन	२ आउंस
एसिटेट ऑफ़ पोटासियम	२ ड्राम
स्पिरिट ऑफ़ नाइटर	४ ड्राम
कैम्फर वाटर	८ आउंस पर्यन्त
सिरप	१ आउंस

इसमें से १ आउंस की मात्रा में प्रति ३-३ घंटे पश्चात् दें। यह एक निरापद अत्यन्त संतोषप्रदायक स्वेदक मिश्रण है, जिसका उपयोग प्रत्येक प्रकार के ज्वर में किया जा सकता है।

साइट्रेट सोल्युशन का भी ऐसा ही प्रभाव होता है। (See-B. on p. 318)

(२) न्युमोनिया मिक्स्चर
(फुफ्फुसप्रदाहहर मिश्रण) :—

लाइकर अमोनिया एसिटेटिस	२ आउंस
अमोनियाई कार्बोनास	४० ग्रेन
पोटासियम आयोडाइड	१६ ग्रेन
वाइनम ऐरिटमोनियाई	४० बुंद
सिरुपस	१ आउंस
एका	८ आउंस पर्यन्त

इसमें से १-१ आउंस की मात्रा में दिन रात में तीन-चार बार दें।

प्रयोग—यह मिश्रण प्रातिश्यायिक फुफ्फुसौप (कैटारल न्युमोनिया) में सामान्य रूप से प्रयुक्त होता है।

(३) योगः—

सिरुपस अमोनी ऐरोमैटिकस	२० बुंद
वाइनम ऐरिटमोनियलिस	२ बुंद
टिंक्चूरा एकोनाइटाई	२ बुंद
इन्फ्युज़म डिजिटेलिस	१ ड्राम
एका एनिसाई	१ आउंस पर्यन्त

ऐसी एक-एक मात्रा औषध प्रति ३-३ घंटे पश्चात् दें।

नोट—रक्तप्रकृति के न्युमोनिया-रोगी में रोग के आरम्भमें जब तक नाड़ी फुल्ल (पूर्ण, भरी हुई) चलती हो तब तक इस औषध को देते रहें। परन्तु जब रक्तभार कम और नाड़ी हो जाए तब इसको बन्द करके निम्नांकित औषध का उपयोग करें। निम्न लिखित योग लाभदायक है:—

(४) योग—

अमोनियाई कार्बोनास	१
स्पिरिटस अमोनियाई ऐरोमैटिकस	२०
स्पिरिटस कैजेप्युटाई	१२
टिंक्चर सिलली	१
इन्फ्युज़म सिनेगी	१ आउंस

ऐसी १-१ मात्रा औषध प्रति ४-४ घंटे पश्चात् दें। परन्तु, दिन रात में १- अधिक न दें।

अमोनियाई क्लोराइडम् ammonii chloridum-ले० नवसादर, नरसार, (Sal ammoniac.).

अमोनियाई ग्लाइसिर्हाइज़ास ammonii glycyrrhizas.-ले० अमोनियाई ग्लीसिर्हाइज़ास

अमोनियाई ग्लाइसिर्हाइज़ेट ammonii glycyrrhizate-ले० अमोनिया मधुर का सुस्वादु सत्व। यह क्वीनीन की तिक्तता अन्य ह्रासजनक औषधों के दोषशमनार्थ होता है। मात्रा—चौथाई ग्रेन से १ ग्रेन

-पी० बी० एम०।

अमोनियाई टार्ट्रास ammonii tartras

देखो-अमोनियाई कार्बनास।

अमोनियाई पिक्रास ammonii picras

देखो-अमोनियाई कार्बनास।

अमोनियाई फोस्फास ammonii phosphas -ले०। अमोनियम फॉस्फेट (ammonium phosphate)-इं०। अमोनियम फॉस्फेट ऑफ़िशल (*Official*).

रासायनिक सूत्र $(NH_4)_2 HPO_4$

निर्माण-विधि—स्ट्रांग सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया (तीव्र अमोनिया द्राव) फॉस्फोरिक एसिड (अमिश्रित शुष्क) मिलानेसे अमोनियम फॉस्फेट (अमोनियम फॉस्फेट) प्रस्तुत होता है।

लक्षण—इसके स्वच्छ वर्णरहित रवे होते हैं।
विलेयता—यह १ भाग चार भाग जल में लीन हो जाता है, परन्तु ऐल्कुहॉल (६०%) विलीन नहीं होता।

प्रभाव—डायरेक्ट कोलेगाग (सरल पित्त-क) और डायोरेटिक (मूत्रल) है। मात्रा–५ २० ग्रेन ('३२ से १'३० ग्राम)।

प्रभाव तथा उपयोग

चूँकि अमोनियम फास्फेट सीधा यकृत को उत्तेजना प्रदान करता है एवं मूत्रल है, और कि यह अविलेय युरेट ऑफ़ सोडियम को ट ऑफ़ अमोनियम और फास्फेट ऑफ सोडि-न में परिणत कर देता है; अतएव इसको नक्रस (गाउट) तथा युरिक एसिड डायथेसिस अर्थात् उन सभी दशाओं में जब युरिकाम्ल की करी बनने की आशंका हो) में देने से लाभ ता है।

नेयाई फ्लोराइडम् ammonii fluori-um लें०. देखो–अमोनियाई कार्बोनास।

नेयाई बाई कार्बोनास ammonii bicar-onas-लें० नुमारद्विकजलेत। देखो—अमो-नियाई कार्बोनास।

नेयाई बेञ्ज़ोआस ammonii-benzoas लें० लोबान अम्ल। देखो–एसिडम बेञ्ज़ो-इकम्।

नयाई बोरास ammonii boras—लें० ङ्कण अमोनिया। अमोनिया तिनकारी।

नॉट ऑफ़िशल (*Not Official.*)

लक्षण—यह एक स्फटिकीय लवण है, जिसकी प्रतिक्रिया क्षारीय होती है। विलेयता–यह १ भाग १५ भाग जल में विलीन हो जाता है।

प्रभाव तथा उपयोग—रेनल और वेसिकल केल्क्युलाई (वृक्क व .वस्त्यश्मरी) में इसका उपयोग अत्यन्त लाभदायक प्रमाणित हुआ है। अस्तु, रेनल कॉलिक (वृक्कशूल) में २० ग्रेन (१० रत्ती) की मात्रा में इसको २-२ घंटे पश्चात् उस समय तक देते हैं, जब तक कि खूब खुलकर पेशाब नहीं आ जाता। पुनः १५ ग्रेन की मात्रा में दिन में तीन बार देते हैं।

अमोनियाई ब्रोमाइडम् ammonii bromid-um-लें० देखो-ब्रामीन (ब्रह्मणिका)।

अमोनियाई वेलेरियनास ammonii vale-rianas—लें० देखो-वैलेरियन, सुगन्ध-वाला।

अमोनियाई सेलिसीलास ammonii salicy-las-लें० वेतस अमोनिया। देखो–एसिडम् सैलिसीलिकम् (वेतसाम्ल)।

अमोनियाकुन ammoniakon-यु० (Ammo-niacum) देखो-उशक़।

अमोनियातुज़्ज़ैबक़ amoniyátuzzaibaq –अ० नुमारेत पारद। (Hydrargyrum ammoniatum) देखो–पारद।

अमोनियाते ज़ीवह amoniyáto-jívah-अ० नुमारेत पारद। (Ammoniated mercury) देखो—पारद।

अमोनिया बैक्सिफेरा ammonia baccife-ra–लें० दारमारी। इं० मे० मे०।

अमोनिया मर्क्युरिक क्लोराइड ammonia mercuric chloride—इं० अमोनिया पारद हरिद। देखो–पारद।

अमोनिया लोबानी amoniyá lobání–अ० देखो–एसिडम् बेञ्ज़ोइकम् (लोबानाम्ल)।

अमोनिया वेसिकेटोरिया ammonia vesi-catoria-लें० दारमारी। इं० मे० मे०।

अमोनिया वैलेरियाना ammonia valeriana –इं० तूर्तिर अमोनिया। देखो–वैलेरियन।

अमोनिया सैलिसीलास ammonia salicy-las—इ० वेतस अमोनिया। देखो—एसिडम् सैलिसीलिकम् (वेतसाम्ल)।

अमोनिया क्लोराइड ऑफ मर्करी ammonio chloride of mercury–इं० अमोनियात सीमाब। देखो—पारद।

अमोनी-लाइकार फ़ार्टिस ammoniæ liquor fortis–लें० सशक्त ए(अ)मोनिया द्रव। देखो–अ(ए)मोनिया।

अं(ए)मोनोल amonol-इं० यह एक श्वेत वर्ण का चूर्ण है। देखो-एसेटअनालाइडम्।
अमोमम् amomum, Sp. of. 'capsules of'-ले० (१) हमामा। फा० इं० २ भा०। (२) बड़ी इलायची। स० फा० इं०।
अमोमम् एरोमैटिकम् amomum aromaticum, Roxb.-ले० बड़ी इलायची, बृहदेला। इलायची, मोरंग-बं०। इं० मे० मे०। मेमो०। देखो एला।
अमोमम् ग्रेना amomum grana-ले० अज्ञात।
अमोमम् ज़िंजिबेरिना amomum zingiberina-ले० बड़ा कुलिंजन। फा० इं० ३ भा०।
अमोमम् ज़ैन्थिआइडिस amomum zanthioidis-ले० छोटी इलायची, छुद्रैला। फा० इं० ३ भा०। देखो—एला।
अमोमम् डीएलबेटम् amomum dealbatum, Roxb.-ले० यह खाद्य कार्य में आता है। मेमो०।
अमोमम् मेलेग्वेटा amomum meleguota, Roscoe.-ले० इसका फल औषध कार्यमें आता है। मेमो०।
अमोमम् मैक्सिमम् amomum maximum, Roxb.-ले० यह एक खाद्य है। मेमो०।
अमोमम् रिपेन्स amomum repens, Roxb.-ले० छोटी इलायची, छुद्रैला। देखो—एला।
अमोमम् वाइल्ड amomum wild इं० हमामा।
अमोमम् सब्युलेटम् amomum subulatum, Roxb.-ले० बड़ी इलायची, बृहदेला -बं०, हिं०। क़ाक़िलहे कबीर-अ०। मेमो०। फा० इं० ३ भा०। देखो—एला।
अमोमम् सिलवेस्ट्रिस amomum sylvestris-ले० हमामा। (Amomum wild) इं० हैं० गा०।
अमोमिस amomis-यु० हमामा। (Amomum.) फा० इं० २ भा०।

अमोरई amorai-कु० जैतून वैतकि।
अमोरा अमारी amorá-amári-... रोहितक, रोहिनी, रोहेरा-सं०। (Amoora rohituka, W.&A.) फा० इं० १ ...
अमोरी amori-हिं० संज्ञा स्त्री० [हिं० ... औरी (प्रत्य०)] (१) आमड़ी ... अँबिया। (२) आमड़ा, आम्राती।
अमोला amolá-हिं० संज्ञा पुं० [हिं० ... आम का नया निकलता हुआ पौधा।
अमोलीकून amoliqon-रू० सीसभस्म, भस्म। (Lead oxide) देखो-सीस(...)।
अ(ऽ)मोलुका amoluká-बं० अम्लुक, -हिं०। (Vitis indica, Linn.) इं० १ भा०।
अमोलूनस amolúnas-यूनानी निशास्ता। स्टार्च (Starch.)-इं०।
अमौआ amouá-हिं० संज्ञा पुं० [हिं० ... औआ (प्रत्य०)]। आम के रस का सा रंग। यह कई प्रकार का होता है। जैसे पीला, सुनहरी, मायी, किशमिशी, मूँगिया इत्यादि। (२) अमौआ रंग का कपड़ा। वि० आम के रस के रंग का।
अमौलिक amoulika-हिं० वि० [सं०] (१) बिना जड़ का। निर्मूल। (२) निराधार का। (३) अयथार्थ, मिथ्या।
अमांसम् amánsam-सं० क्ली० मांस रहित।
अम्अदालिया ama-dáliyá-यु० बादाम। (Amygdala.)
अम्आर amáar-अ० कम बालों वाला। जिसके बाल गिरते हों।
अम्आऽ amáa-अ० (ब० व०) मिआ का ब० व०। मअ्‌मारीन-अ०। ग़ाद मिआ (ए० व०)। आँतें-फ़ा०, उ०। आंत्र, अन्त्री-सं०, हिं०। (Intestines, Bowels.)
नोट—आँतें सूक्ष्म व वृहत् भेद से दो प्रकार की होती हैं, जिनमें से प्रत्येक के पुनः अंश हैं

र होते हैं। अस्तु, ये संख्या में कुल पः हुई।
ती-अम्आऽ दिक़ाक़ व ग़िलाज़।
उलअर्ज़ amāaul-arza-अ० ख़रातीन, ड्ग। (Earthworm.)
ऽउल्या amāaa.aulyá-अ० अम्आ ़क़ाक़।
ऽग़िलाज़ amāaa-ghiláza-अ० अम्आऽ मृता। मोटी या बड़ी आँतें, ज़ोरीं आँतें–उ०। ड्रांत्र, स्थूलांत्र-हिं०। (Large intestines.)
ऽदिक़ाक़ amāaa-diqáqa-अ० छोटी तें, ऊपर की आँतें–उ०। लघु आंत्र, सूक्ष्मांत्र, ांत्र-हिं०। (Small intestines.)
ऽसीन amāaa-sina-अ० ग़ोरहे (अपक्व) ग़ूर का पानी।
amki-नैपा० सम्यी-लेपचा०। (Pyrunia edulis).
ुल ऐ.न amqul āain-अ० मा़क़ अक्बर। ख का बड़ा कोया जो नासिका की ओर स्थित। इनर कैन्थस (Inner canthus)-इं०।
amkhat-अ० वह व्यक्ति जिसकी नासिका ा बहती रहे। नासा(परि)स्राव रोगी।
amghar-अ० रक्त रोमों वाला।
amzar-अ० नर, पुरुष, मनुष्य, आदमी, ं। मैन (Man)–इं०।
ह् amzah-अ० (१) चलते समय जिस दोनों पैर परस्पर मिलें। (२) गन्दह्‌ दुह्‌न, प दुर्गन्धि। जिसके मुख से दुर्गन्धि आती हो।
ज़िजह् amzijah-अ० मिज़ाज (प्रकृति) । बहुवचन है।
amtash-अ० निर्बलदृष्टि वाला मनुष्य, मज़ोर नज़र का आदमी।
पएडु amti-pandu-लें० केला, कदली। Musa paradisiaca, *Linn.*)
amdash-अ० निर्बल तथा अल्प बुद्धि ाला मनुष्य। दुर्बल तथा कम अक़्ल वाला मर्द।
तजामोटाफाना amdes samotapana -गोआ० वजर बट्टु, जगलो मदनमस्त-हिं०। (Cycas circinalis) इं० मे० मे०।
ा amdhuka-वं० देखो-अन्धुक।

अम्न amna-अ० चैन, आराम, शांति, सुरक्षितता, निडर होना (Peace)।
अम्नाऽ amnáa-अ० (ब० व०) मनाऽ (ए० व०) माप विशेष। लगभग पक्का १ सेर का वज़न।
अम्नान amnán-अ० (ब० व०), मन्न (ए० व०) एक माप विशेष। लगभग २ पौंड अर्थात् एक सेर का वज़न।
अम्नियत् amniyyat-अ० } शाब्दिक
इस्त्‌फ़ाऽ iáfáa- " } अर्थ स्वास्थ्य एवं सुरक्षितता प्राप्त करना, रोगनाशकता, रोगक्षमता (Immunity.)।
अम्फर ampfer-जर० चाङ्गेरी, चूका। (Rumex Scutatus) इं० मे० मे०।
अम्पार ampár-थाकला, वेलहर।
अम्पिलाप्सिस क्विन् क्वि फोलिया ampelopsis quin-quefolia-लें० अमेरिकन आइवी-इं०। वाइटिस क्विन्क्वि फोलिया (Vitis quinquefolia.)-लें०।
अम्पुट्टई ampuṭṭai-ता० अम्बाड़ा, अमड़ा, आम्रातक। (Spondias Mangifera) इं० मे० मे०।
अम्पेलोसिक्योस स्कैण्डेन्स ampelosicyos scandens, (Thou. Bot. Mag. 268-1, 275-1,-2.)-लें० इसका बीज कृमिहर है। बीज चिपटा, क़रीब करीब गोलाकार लगभग १॥ इंच मोटा, वाह्यावरण कोमल टोकरी की रचना से समानता रखता है और बहुत कठोर एवं मज़बूत होता है। गिरी में मृदुतैल की कुछ मात्रा पाई जाती है। समग्र फल २-३ इंच लम्बा और ८-१० इंच मोटा होता है। इसपर लम्बाई की रूक्ष गहरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। इसका भीतरी भाग ३ से ६ कोषों में विभाजित होता है; इसमें प्रायः २५० बीज होते हैं।
अम्फी amphi-नैपा० सम्यी-लेपचा०।
अम्ब amba-हिं० पुं० } आम, आम्र। (A mango, a mango tree).
अम्बह् ambah-फ़ा० }
अम्बकः ambakah-सं० पुं० (१) प(व)कुल

वृक्ष, मौलसरी। (Mimusops Elengi) जटा०। –क्लो० (२) नेत्र, चक्षु, आँख। (Eye) इं० च०। (३) ताम्र, ताम्बा। (Copper) रा० नि० व० १३। (४) पिता।

अम्बकरञ्ज amba-karanja–बं० करञ्ज-भेद, डहरकरञ्ज। (Pongamia glabra.) इं० मे० मे०।

अम्बकुड़ा amba-kuḍá–हिं० संज्ञा पुं०
अम्बकोड़ा amba-koḍá "
अम्बकोल amba-kola "
अङ्कोल, ढेरा। (Alangium decapetalum.)

अम्बग़ोल ambaghoul–अ० महाकाल, लाल इन्द्रायन। (Trichosanthus palmata.) स० फा० इं०।

अम्बज ambaja–अ० आम। (Mango tree.)

अम्बजात ambajáta–अ० मुरब्बा। (Preserve.)

अम्बट ambaṭa–बम्ब० वायविडंग, विड़ंग। (Embelia ribes.)

अम्बट वेल ambaṭa-bel
अम्बट वेल ambaṭa-vel
–हिं०, म० अम्लवेल, गिदड़द्राक–पं०। अम्ललता–बं०। अम्लपर्णी –सं०। (Vitis trifolia.)। मेमो०। इं० मे० मे०।

अम्बटा ambaṭá–बम्ब० वायविडंग, विड़ंग। (Embelia ribes.)

अम्बटी मद्दू ambaṭi-maddú–तै० अज्ञात।

अम्बटे ambaṭe–कना०
अम्बटेमरा ambae-mará कना०
–अमड़ा, आम्रातक, अम्बाड़ा। (Spondias mangifera.)

अम्बटे हुल्लु ambaṭe-hullú कना० सफ़ेद दूब, श्वेत दूर्वा। (Cynodon dactylon.)

अम्बड़े ambaḍe–गारो० यारी, रीम–प०। मेमो०।

अम्बत ambata–हिं० वि० अम्ल, खट्टा, [illegible] चूक। (Sour,)

अम्बताना ambatáná–हिं० क्रि०, अ० [illegible] होना। (To grow sour.)

अम्ब-पाली ambapoli–मद० अमावट। Amávaṭa.

अम्बरम् ambaram–सं० क्ली०
अम्बर ambar–हिं० संज्ञा पुं०
(१) [illegible] (Gossypium Indicum.) (२) अभ्रक। Talc. (Mica.)। नि० व० १३; भैप०। वसन्त कुसु० (३) तद्यामक गन्धद्रव्य, एक सुगन्धित [illegible] अम्बर। विश्वः। (४) वस्त्र विशेष ([illegible] thos; Apparel.)। (५) वस्त्र। [illegible] पट। (६) आकाश। आसमान। (७) [illegible] इत्र। (८) अमृत। अने०। (९) [illegible] मेघ। (कप०)

अम्बर ambar–फ़ा० संदंश, चिमटा, [illegible] दस्तपनाह। फ़ौसैप्स (Forceps.)–[illegible]

अम्बर aambar–अ० अम्बर–हिं०, बं०, [illegible] बम्ब०, मद०, कों०, गुज०। अग्निजार, [illegible] जारः, अम्बरसुगंधः, अम्बरम्–सं०। [illegible] –फ़ा०। अम्बाग्रसया Ambra G. –ले०। अंबरग्रीस Ambergris–ले०। [illegible] अमर ग्रीस Amergris–इं०। [illegible] –ता०। सुसम्बर–सिं०। पयेन-भम्बट [illegible]

अम्बर एक प्रसिद्ध सुगन्धिपूर्ण [illegible] औषध है। इसके विषय में विभिन्न [illegible] विरोधी वचन प्राचीन तिब्बी ग्रंथों में [illegible] हैं, यथा—

अम्बर को किसी किसी ने एक समुद्री [illegible] प्राणी का गोबर (लीद) वर्णन किया है। [illegible] किसी किसी ने लिखा है, कि यह एक [illegible] समुद्रतल में उत्पन्न होती है। इसको [illegible] समुद्री जीव खाते हैं। जब उनका [illegible] है तब वे इसको उगल देते हैं और [illegible] ही अम्बर कहलाता है।

शेख़ का अनुमान है कि अंबर समुद्र [illegible]

शेत का गोरा (या रतूबत) है। उनके विचार [illegible] जिन लोगों ने इसको समुद्रफेन या किसी समुद्री पशुप्रद जन्तु का गोबर लिखा है, वह [illegible]ष्पा है।

शेख के सिवा कतिपय अन्य इतिहासज्ञ भी [illegible] विचार के समर्थक हैं और इसे ही सत्य एवं अधिक प्रामाणिक मानते हैं। अस्तु, उनका वर्णन है [illegible] अम्बर एक रतूबत है जो समुद्रतलस्थ स्रोतों [illegible] समुद्र के आभ्यन्तरीय भाग या द्वीप से [illegible], मोमियाई तथा क्षीर के समान निकलता है [illegible] अम्बर कहलाता है। यह सामुद्र तरंग के [illegible] के कारण ऊपर पहुँचने से समुद्र के [illegible] पर तह पर एकत्रित होकर सान्द्र(गाढ़) [illegible] जाता है।..और शमामह्‌ के समान गोल या अन्य [illegible] रूप ग्रहण कर समुद्र तट पर आ पड़ता है। [illegible] कहते हैं कि समुद्री जीवों को अम्बर अत्यन्त प्रिय [illegible]। जब यह उनको मिलता है तब वे इसको [illegible] निगल जाते हैं। किन्तु न पचने के कारण [illegible] उनको मार डालता है अथवा उनके उदर में [illegible] आध्मान उत्पन्न कर देता है और वे जन्तु पानी [illegible] ऊपर आ जाते हैं। जो लोग इस बात का [illegible] रखते हैं वे तत्काल उक्त जीव के उदर को [illegible] विदीर्ण करके अम्बर निकाल लेते हैं। इस प्रकार [illegible] अम्बर श्याम वर्ण का और मगंधि युक्त (पूति [illegible]मय) होता है। इसको अम्बर बलई कहते [illegible]। यह अम्बर ज़र्जी (ज़गी) नामसे भी प्रसिद्ध है। [illegible] ही कारण है कि किसी किसी ने इसको समुद्री [illegible] का गोबर माना है।

अम्बर के सम्बन्ध में मुल्ला नफ़ीस के ये [illegible] वचन हैं—

"किसी किसीके कथनानुसार यह बात सत्य है कि भारतवर्ष में यह मधु से प्राप्त होता है। [illegible] इसको इस प्रकार प्राप्त किया जाता है। मधु [illegible] मक्षिकाएँ सुगंधित पुष्प और पत्र से रस चूस [illegible] चूस कर भारतवर्ष के पर्वतों पर मधु का निर्माण करती हैं। इसी कारण यह मधु अत्यन्त सुगंध-युक्त होता है। फिर जब वर्षाधिक्य के कारण उन मक्षिकाओं के छत्तों पर जल का संयोग आता है तब मधु तो पानी में घुल जाता है और केवल मोम का भाग अवशिष्ट रह जाता है। यह अत्यंत सुगंधित होते और नदियों में बहते हुए समुद्र तक जा पहुँचते हैं। फिर यह समुद्र के पानी में सूर्यताप द्वारा द्रवीभूत होते हैं एवं स्वच्छ हो जाते हैं। समुद्र तरंग इनको तट पर ला डालता है। यहाँ अम्बर होता है।" इसके ज्ञाता इसे उठा कर ले जाते और बहुमूल्य लेकर बेचते हैं।

मुल्ला सदीद गाज़रानी ने मुफ़रदात क़ानून की टीका में उपर्युक्त कथन का समर्थन किया है और उसी वचन को सत्य माना है। क्योंकि अम्बर में मोम के लक्षण व्यक्त हैं। कारण यह है कि उष्ण जल में घोलने से यह घुल जाता है एवं शीतल होने पर मोम के समान जम जाता है। कतिपय इतिहज्ञ ने लिखा है कि प्रतिष्ठित व्यक्तियों की ज़बानी सुना गया है कि कभी सौभाग्यवश ताजा अम्बर हस्तगत होजाता है। यह मधुर, दसमीरयत, सुस्वादु, मृदु और अत्यन्त सुगंधित होता है और यमन सागर, मालदीप तथा प्रशांत महासागर और समुद्र तरंग द्वारा उनके समीपके तटों पर आ लगता है तथा वहाँ के निवासी उसको उठा लाते हैं।

हकीम उलवीखाँ लिखते हैं कि मैंने अम्बर शमामह्‌ (सर्वोत्कृष्ट प्रकारका अम्बर जिसके टुकड़े गोल होते हैं) देखा है। उसमें मधु मक्षिका के समान बहुत से जन्तु लगभग शत की संख्या में थे।

मीर मुहम्मद हुसैन लेखक मख़ज़नुल् अद्‌वियह लिखते हैं कि मैंने भी अम्बर का एक टुकड़ा देखा है जिसमें किसी रक्तजौज़ी वर्णके सदृशी (चौकिक) जन्तुके सिर व ग्रीवा और चंचुवत् कोई वस्तु दृष्टिगोचर होती थी। परन्तु तो भी हमारे समीप वे ही वचन अधिक यथार्थ एवं विश्वस्त ज्ञात होते हैं जिन्हें शेख़ तथा प्रायः इतिहज्ञ ने वर्णन किए हैं। (अर्थात् अम्बर एक रतूबत है जो समुद्र तल के कतिपय सहायक तथा द्वीप से मोमियाई और क्षीर प्रभृति के समान निकलती है।)

परन्तु अर्वाचीन गवेषणात्मक शोधों से यह ज्ञात हुआ है कि अम्बर ह्वेल मछली की एक विशेष जाति स्पर्म ह्वेल (Sperm whale.) के उदर से निकलता है। यह एक प्रकार का दूषित मल है जो उसके आंत्र वा अंत्रपुटमें रहता है। स्पर्म ह्वेल ८० फुट तक लम्बी होती है। इसका सिर इतना बड़ा होता है कि समग्र शरीर का तिहाई भाग सिर में सम्मिलित होता है। इसके सिर में एक विशेष प्रकार का तैल भरा होता है जो हवा खाकर जम जाता है। इसके उदर से अम्बर निकलता है। इसकी वास्तविकता से अनभिज्ञ होने के कारण, यह जान पड़ता है कि अम्बर समुद्र में बहता हुआ तरंगों के कारण समुद्र तट से आ लगता था। वहाँ से लोग इसे उठा लाते थे या नाविकों को समुद्र में ही प्राप्त हो जाता था। और इसके सम्बन्ध में विभिन्न विचार व अनुमान स्थिर कर लिए गए थे। इसमें दूसरी चीजों यथा विविध प्रकारके मृत जन्तु सम्मिलित हो जाते होंगे जिनको कतिपय इतिव्या ने अवलोकन किया होगा जैसा कि स्वर्गवासी हकीम उल्वी खाँ के वचन में इसका उल्लेख है।

अधुना भी अम्बर समुद्र में बहता हुआ या समुद्र तटपर पड़ा हुआ मिल जाता है। परन्तु स्पर्म ह्वेल के उदर से प्राप्त होने पर इसकी मान्यता स्पष्ट रूप से स्थापित हो गई है।

स्पर्म ह्वेल का शिकार अधिकतर उसके शिरके तैल और अम्बर के लिए ही किया जाता है। इसका शिकार बड़ी जानजोखूँ का काम होता है। क्योंकि इसका यह एक विशेष स्वभाव वर्णन किया जाता है कि यह दौड़-दौड़ कर जहाज़ों को टक्करें मारती है जिससे कभी कभी वे छिन्न-भिन्न हो जाते हैं।

अम्बर के सम्बन्ध में आयुर्वेदीय मत—

बहुत से आधुनिक लेखक अग्निजार को अम्बर मानकर लिखते हैं। परन्तु वास्तविक बात तो यहहै कि अष्टवर्ग की ओषधियोंके समान यह भी एक संदिग्ध एवं अन्वेषणीय औषध है। अष्टवर्ग की दवाओं के सम्बन्ध में [illegible] से कम इतना निश्चिततया ज्ञात है कि वे वानस्पतिक द्रव्य परन्तु अग्निजार के सम्बन्ध में [illegible] सन्देहपूर्ण है।

अस्तु, कोई तो इसको समुद्रफल और कोई इसको एक समुद्री पौधा [illegible] क्षार बतलाते हैं। कई कोषों में जितने भी पर्याय आए हैं इसके मानके लिखा है। अतः उनके मत से अग्निजार वानस्पतिक द्रव्य है।

इसके विपरीत रसरत्नसमुच्चयकार मतानुसार यह एक प्राणिज द्रव्य सिद्ध होता यथा वे लिखते हैं—

समुद्रेणाग्निनक्रस्य जरायुर्बहिरुज्झितः।
संशुष्को भानुतापेन सोऽग्निजार इतीरितः

अर्थ—अग्निनक्र नामक जीव का [illegible] (जेर) बाहर आकर समुद्र के किनारे [illegible] द्वारा सूख जाता है उसी को अग्निजार कहते

अम्बर भी एक सामुद्री प्राणिज द्रव्य है, [illegible] आधार पर किसी किसी ने अग्निजार को [illegible] का पर्याय मान लिया है, ऐसा प्रतीत होता है।

आज अब यह बात भली प्रकार सिद्ध हो [illegible] है कि अम्बर स्पर्म ह्वेल नामक मत्स्य द्वारा [illegible] होने वाला एक प्राणिजद्रव्य है। फिर भी [illegible] बात का पता लगाना अत्यन्त कठिन है कि [illegible] हमारे पूर्वाचार्य उक्त मत्स्य को [illegible] अभिहित करते थे वा नहीं।

चाहे कुछ भी हो, पर इतना तो [illegible] से ज्ञात होता है कि अग्निजार के [illegible] हमारे प्राचीन शास्त्रों में वर्णित हैं, प्रायः [illegible] मिलता जुलता ही वर्णन यूनानी ग्र[illegible] है जैसा कि आगे के वर्णन से ज्ञात होगा।

अग्निजार नाम से आज उक्त औषध [illegible] करना उतना ही दुरूह है जितना कि वस्तु [illegible] निकालना। अस्तु, यह उचित जान पड़ता [illegible] जहाँ जहाँ अग्निजार का प्रयोग आया है [illegible] पर अम्बर का ही उपयोग किया जाए।

प्राप्ति-स्थान तथा इतिहास—स्पर्म

रीका के दक्षिण में प्रायः मिलती है । हिन्द-महासागर यहाँ तक कि बंगाल की खाड़ी में भी यह मिलती है किन्तु अत्यन्त थोड़ी होती है। अम्बर कालसागर, ब्रेजिल और अफ्रीका के समुद्र तट पर तैरता हुआ पाया जाता है, केवल स्पर्म व्हेल मछली के उदर से ७२० पौं० तक अम्बर निकाला जा चुका है। व्हेल का शिकार भी इसके लिए होता है। इसका व्यवहार औषधियों में होने के कारण यह नीकोबार (कालेपानी का एक द्वीप) तथा भारत समुद्र के और और टापुओं में मिलता है। प्राचीन काल में अरब, यूनानी लोग इसे भारतवर्ष में ले जाते थे। जहाँगीर ने इससे सिंहासन को सुगंधित किया जाना लिखा है।

लक्षण—यह अपारदर्शक कभी कभी श्वेत तथा श्यामाभायुक्त धूसर या गुलाबी या श्याम वर्ण का होता है।

नोट (१) साफ पीताभ अम्बर को अम्बर अशहब कहते हैं। यह सर्वोत्कृष्ट श्रेष्ठतर अम्बर होता है। इससे निम्न कोटि का अम्बर अज़रक़ (फिरोज़ी) और इसके बाद श्याम है। जो अम्बर श्वेताभ होता है उसपर छोटे छोटे श्वेत बिन्दु होते हैं। यह अम्बर ख़श्ख़ाशी कहलाता है और जो अम्बर गोल टुकड़ोंकी शकल में होता है उसका नाम अम्बर शमामह रखते हैं।

(२) जो अम्बर समुद्र के तरंगों द्वारा समुद्र तट पर आ पड़ता है और उसमें धूल आदि के कण मिल जाते हैं उसको तिब में अम्बर रमली कहते हैं। उसको बिना शोधन किए व्यवहार न करना चाहिए। मोमवत् उसकी शुद्धि करनी चाहिए। अथवा उसमें समान भाग मिश्री मिलाकर खरल कर लेने से उसकी शुद्धि होती है।

परन्तु रसरत्नसमुच्चयकार अग्निजार की शुद्धि न करने में निम्न कारण बतलाते हैं—
'तद्व्यभिचार संशुद्धं' तस्माच्छुद्धि न हीष्यते।"
(र० र० स० ३ अ०)

अर्थात्—समुद्रके क्षारमय जलसे शुद्ध ही रहता है। अतः इसके शोधन की आवश्यकता नहीं।

गंध—कस्तूरीवत् विशेष सुगंधि। इसमें से सौंधी मिट्टी जैसी गंध आती है जो अत्यन्त मनमोहक होती है। सर्व प्रथम जब स्पर्मव्हेल से यह बाहर आता है, तब भूरे रंग का नर्म और दुर्गन्धयुक्त होता है, पर शीघ्र ही वायु लगने पर यह कठिन और नील वर्ण का हो जाता है। ज्यों ज्यों सूखता जाता है त्यों त्यों उत्तम गंध उत्पन्न होती जाती है। और धीरे धीरे यह गंध इतनी बढ़ जाती है, कि दूर से ही अम्बर का बोध करा देती है।

स्वाद—यह लगभग स्वादरहित होता है।

परीक्षा—(१) इसको एक शीशी में डालकर कोयले की आग पर रखें। यदि यह सब पिघल जाए और शीशी में तैल की भाँति बहने लगे तो शुद्ध अन्यथा अशुद्ध जानना चाहिए।

(२) अम्बर को लेकर जरा सा आग में डालें यदि धूम्र सुगन्धियुक्त हो तो उत्तम अन्यथा नकली समझना चाहिए।

(३) जरा सा अम्बर लेकर चबाएँ यदि मुख सुगंध से पूर्ण हो जाए और चबाते समय वह दाँतों में मोम सा लगे तो उत्तम अन्यथा नकली है।

(४) तोड़ने से यदि अम्बर ठोस हो तो उत्तम और पोला हो तो नकली है।

(५) यह लघु और कम चिकना होता है और इसकी गंध कस्तूरी की गंध पर ग़ालिब नहीं होती। यह बहुत शीघ्र जलने वाला होता है तथा आँच दिखाते रहने से बिलकुल भाप होकर उड़ जाता है।

यह उष्ण जल में द्रवीभूत हो जाता है, परन्तु शीतल जल में नहीं होता। यह ईथर, वसा, उड़नशील (अस्थिर) तैल और उष्ण मद्यसार में विलेय होता है। इसपर अम्लों का कुछ भी प्रभाव नहीं होता। सूखने पर अम्बर का विशिष्ट गुरुत्व ·७८० से ·९२६ तक होता है। १४५° फारनहाइट की उत्ताप पर यह पिघल कर पीले रंग के वसामय तरल में परिणत हो जाता है। २१२° फारनहाइट पर श्वेत वाष्प बनकर यह जल जाता है।

रासायनिक संगठन—

इसमें अम्ब्रीन (ambrein) ८४% प्रतिशत और किञ्चित् भस्म प्रभृति पदार्थ होते हैं।

औषध-निर्माण—अर्क अम्बर, अर्क गज़र, अर्क बहार, अर्क हराभरा, अर्क ग़ाज़िन, खमीरह् गावज़ुबाँ अम्बरी (जवाहर वाला या जदीद), जवारिश ज़रऊनी अम्बरी मुसक़ा कलाँ, जवाहर मुहरा अम्बरी, मअ़जून कलाँ, मअ़जून नुक़रा, मअ़जून फ़लकसेर, मअ़जून हुब्ब अम्बरी ज़ुह्रीखाँ, मुफ़र्रिह् अम्बरी, रोग़न अम्बर, हुब्बे अम्बर, हुब्बे कीमियाये इश्रत, हुब्बे ताऊन अम्बरी।

आयुर्वेदीय मत से अम्बर के गुणधर्म तथा उपयोग—

अग्निजार त्रिदोषघ्न, धनुर्वातादि वातरोगनाशक और पारद का बल बढ़ाने वाला, दीपन एवं जारणकर्म कारक है। यथा—

अग्निजारस्त्रिदोषघ्नो धनुर्वातादि वातनुत्।
वर्धनो रसवीर्यस्य दीपनो जारणस्तथा ॥
(र० र०स० ३ अ० १)

नोट शेष गुणधर्म के लिए देखो—अग्निजार।

यह पक्षाघात, कम्पवात आदि वातरोगनाशक, हृदय रोग, नपुंसकता, फुफ्फुस रोग, शिरोरोग, यकृतरोग, उदररोग, प्लीहरोग, वृक्कीय आदि अनेक रोगनाशक माना ग ा है। कामाग्निवर्द्धक जितना इसे बताया गया है उतना अन्य किसी औषध को नहीं। प्रायः ऐसी कोई व्याधि नहीं, जिसके लिए आयुर्वेद शास्त्र में यह न कहा गया हो कि अम्बर से उत्तम अन्य औषध नहीं है।

यूनानी एवं नव्यमतानुसार—

प्रकृति—प्रथम कक्षा में उष्ण व रूक्ष हैं। किसी किसी के मत से २ कक्षा में उष्ण व १कक्षा में रूक्ष अथवा १ कक्षा में उष्ण और २कक्षा में रूक्ष है। स्वाद—किंचित् कटु। गंध—अत्यंत सुगंधिमय। हानिकर्त्ता—आँतोंको और उदरंजनक (किसी उछाल देता है)। दर्पघ्न—धनिया, समग़ अरबी, तबाशीर और कपूर। कपूर अंबरकी तेजी को कम कर इसलिए उसे इसके साथ न रखना चाहिए।

प्रतिनिधि—कस्तूरी तथा केशर ...

मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती तक (२ से ... ग्रेन) ई० मे० मे०।

आयुर्वेद में इसकी मात्रा १ रत्ती से ... तक बताई गई है।

नोट—आज कल के मनुष्यों की ... विचार करते हुए उपर्युक्त ये सभी मात्राएं ... अधिक प्रतीत होती हैं।

प्रधान गुण—रूह शक्ति तथा ... करण को बलप्रदायक, उत्तेजक तथा ...

गुण, कर्म, प्रयोग—

यह हृदय को शक्ति प्रदान करता ... ज्ञानेन्द्रिय (पञ्च ज्ञानेन्द्रिय) तथा ... मस्तिष्क को लाभ पहुँचाता है। क्योंकि ... हृदय व हृदय को बल प्रदान करने का ... गुण है। इस बात में तीव्रगन्ध इसको मदद ... होती है। इसके सिवा इसमें द्रवीकरण शक्ति ... (वहेम) और मतानत पाई जाती है। ... अंबर अपने इन गुणों के समवाय के ... सम्पूर्ण अवयव के जौहर को शक्ति देता ... उनको बढ़ाता है। (नफ़ी०)

अम्बर रूहों का रक्षक और हैवानी (... नफ़्सानी (मानसिक) और शारीरिक (... तीनों शक्तियों को बल प्रदान करता है। ... प्रसन्न करता, शीतल प्र[illegible]तियों के लिए ... हृदय और वास्तविक उष्मा तथा ... द्रियों को शक्ति देता है। वृद्ध पुरुष ... अत्युपयोगी, मास्तिष्क, हार्दिक और ... को अत्यन्त लाभदायक है। मूर्च्छा व ... मारी) को दूर करता है। ... कामोद्दीपक है। शिश्न पर इसका प्रलेप ... से कामोद्दीपन करता और आनन्द प्रद ... है।

प्रायः विषोंका अगद और शीत रोगों ... दायक है। पक्षाघात, अर्द्दितवात, कम्पवात, ...

म, अवसन्नता, शिरःशूल तथा अर्द्धावभेदक दि वात रोगों को लाभप्रद, वेदना तथा वायु परिहारक और कास, फुफ्फुसस्थ क्षत, हृदय निर्बलता, मूर्च्छा, आमाशय तथा यकृत की लता एवं कामला, जलोदर, आमाशय शूल, वेदना और नंबि शूल को लाभ पहुँचाता म० मु० । बु० मु० ।

सार्वांगिक निर्बलता, अपस्मार, आक्षेप वातनैर्बल्य (Nervous debility.) इसका प्रयोग किया जाता है। विसंज्ञता एवं माद युक्त तीव्र ज्वर, विसूचिका के कोलैप्स की वस्था, प्लेग तथा अन्य संक्रामक व्याधियों में इसका उपयोग किया जाता है। यह पाक व माजून रूप में व्यवहृत होता है। इं०मे०मे०। मुलोपैथी चिकित्सा में अम्बर का विशेष व्यव-र रोग निवारणार्थ नहीं होता (वहां यह केवल गन्धियों में प्रयुक्त होता है)। हाँ! होमियो-थी में उक्त हेतु इसका प्रचुर उपयोग होता है। अस्तु, वे स्त्री रोगों यथा योषापस्मार (Hysteria) या उससे मिलते जुलते रोगों में म्बर का विशेष उपयोग करते हैं। उनका कहना कि उक्त अवस्थाओं में अम्बर शीघ्र ही प्रभाव गट करता है। खिन्नता, बुरे विचार, अनिद्रा, मानसिक अवस्था के कारण दर्शन तथा श्रवण-शक्ति का ह्रास आदि योषापस्मार या तत्सम त्पन्न होने वाली व्याधियों में दृष्टिगत होने वाले लक्षणों में अम्बर का बड़ा ही उत्तम प्रभाव प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

विशेष वर्णन के लिए देखिए होमियोपैथिक निघण्टु प्रभृति।

ɪर amber-इं० एक प्रकारका निर्यास, कहरुबा -फ़ा०, हिं०। देखो—सक्सीनम (Succinum.)

बर अशहब ãambar-ashhab-अ० (A kind of amber) एक प्रकार का धूसराभ श्वेत अम्बर। देखो—अम्बर।

म्बर ग्रीस amber-gris-इं० }
म्बरग्रीसिया ambra grisea-लै० } अम्बर।

अम्बरतुश्शिता ãambaratushshitá-अ० शीताधिक्य, कठिन शीत, सख़्त जाड़ा।

अम्बरदः ambaradah-सं० पुं० कपास, कार्पास। (Gossypium Indicum) वै० निघ०।

अम्बरबारी ambara-bári-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] एक क्षुप है। दारुहरिद्रा, दारुहल्द, चित्रा। (Berberis Asiatica.)

अम्बर बारीस ambar-bárísa-यु०, अ० ज़रिश्क,दारुहल्दी दारुहरिद्रा। (Berberis.)

अम्बर बारीसियह् ambar barísiyah-अ० एक प्रकार का आहार जिसे ज़रिश्कियह् भी कहते हैं।

अम्बरबेद ãambar-bed-फ़ा० गुले अम्बर, जुअ्दह् (जादह)-अ०। फुलियुन (Fuliyun) -यु०। पोली जर्मेण्डर (व्युक्रियम् पालियम) Poley Germander (Teucrium Polium, Linn.)-लै०। (फा० इं० ३ भा०)

तुलसी वर्ग

(*N. O. Labiatæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—अरब (जदा)।

वानस्पतिक-वर्णन—(भंगरा या कोई और बूटी है)। जुअ्दह् वस्तुतः सेह् (दरमनह्, औहरी अजवायन) की एक जाति है जिसमें शा-खाएँ होती हैं। इसके पुष्प पीताभ श्वेत और पत्ते श्वेत पतले तथा लोमश होते हैं। यह लग-भग एक बित्ता ऊँचा होता है। इसके सिरों पर बालों का गुच्छा होता है जिनमें बीज भरे होते हैं यह दो प्रकार का होता है—(१) छोटा और (२) बड़ा।

नोट—यद्यपि जुअ्दह् का वर्णन मूजिज़ुल् क़ानून एवं अक्सराई में विद्यमान है, तो भी वर्तमान नफ़ीसी में इसका वर्णन न था। कदाचित् प्रकाशकीय भूल से रह गया हो।

प्रकृति—छोटा ३ कक्षा में उष्ण और २ कक्षा में रूक्ष है; बड़ा २ कक्षा में उष्ण व रूक्ष है। परन्तु दोनों मूत्र और आर्त्तवप्रवर्त्तक हैं एवं

रोधोद्घाटक तथा उदरीय कृमिघ्न व कृमिनिःसारक हैं। यक्रॉन स्याह (Black jaundice) तथा जलोदर के लिए गुणदायक हैं; परन्तु आमाशय तथा शिर के लिए हानिकर हैं। (नफ़ा०)

रोध उद्घाटक, मूत्रल, कृमिघ्न और बल्य है। (Diosc. iii., 115; Pliny., 21, 60, 84)

अरब निवासी इसको ज्वर-विकारों में प्रयुक्त करते हैं। २॥ तो० उक्त ओषधि को रात्रिभर ठंडे जल में भिगोकर प्रातः काल उसको छानकर सेवन करते हैं। वाल ज्वर में उक्त ओषधि को शरीर में धूनी देते हैं। फा० इं० ३ भा०।

स्वाद – तिक्त। गंध—तीव्र।

हानिकर्त्ता—शिर: शूलोत्पादक तथा आमाशय हानिकर है। दर्पघ्न—इमामा आवश्यकतानुसार और सर्द तर वस्तु। किसी किसी के मतसे करनीज़ (धान्यक)। प्रतिनिधि—पार्वती पुदीना, शेह, अनार मूलत्वक् और तज। शर्बत की मात्रा—४ मा० से १०॥ मा० तक।

प्रधानगुण—बुद्धि वर्द्धक, रोधोद्घाटक और मूत्र एवं आर्त्तवप्रवर्त्तक।

गुण, कर्म, प्रयोग—इसमें रेचन तथा तिर्यांक की शक्ति है। यह सम्पूर्ण अवयव के रोध का उद्घाटक, अख़्लात (दोषों) को द्रवीभूत-कर्त्ता और मूत्र तथा आर्त्तव का प्रवर्त्तक है। इसका क्वाथ बुद्धिको तीव्र करता है और विस्मृति को दूर करता है तथा इस्तिस्क़ाय् बारिद (शीत जलोदर), यक्रॉन स्याह (Black Jaundice.) एवं श्लेष्मा व वातजन्य ज्वरों को लाभप्रद है। उदरस्थ कृमि निःसारक वायुलयकर्त्ता, मूत्ररोध तथा संधिशूल को लाभप्रद एवं गर्भाशयशोधक और प्लीहा के शोथ का लय कर्त्ता है। इसका अवचूर्णन व्रणपूरक है। नवीन पत्तों का प्रलेप व्रण को स्वच्छकर्त्ता एवं पूरणकर्त्ता है। इसकी धूनी विषैले जानवरों को भगाती है। मधु के साथ इसका अंजन करने से दृष्टि तीव्र होती है। म० अ०। तुह् फ़ा।

यह-रक्त शोधक और विच्छू के [illegible] करने वाला है। म० मु०।

अम्बरवेल ambarbel-पं० अर्कपुष्पी, -हिं०। सिगरोटा-पं०, बम्ब०। (Pe[illegible] tropis spiralis.) मेमो०।

आम्बर माइश āambar-máiá-फ़ा०

आम्बर साइल āambar-sáil-अ० शिलारसः, सिह्लकः-सं०। मिहो -फ़ा०। Liquidamber (Sty[illegible] præparatus.)

अम्बर सुगन्धः ambar-sugandh[illegible] पुं० मश्क अम्बर, अम्बर। (Am[illegible] Grsea.)

अम्बरहा ambarhá-माल्लवल्ली। गु०

अम्बरा ambará-सं० स्त्री० कपास, (Gossypium Indicum.)

अम्बरा ambará-सं० स्त्री० आम। ([illegible] ngo.)

अम्बराक्षी-चो ambarákshí,-chí-सं[illegible] अज्ञात।

अम्बरातकः,-तीयः ambarátakah,-ti[illegible] -सं० पुं० अमड़ा, आम्रातक। (Spon[illegible] Mangifera.) जटा०।

अम्बरि,-रीषः ambari,-ríshah-सं० पुं०

अम्बरीष ambarísha-हिं० संज्ञा पुं० (१) अमड़ा, आम्रातक। (Spon[illegible] Mangifera.)। (२) भाड़ [illegible] वह मिट्टी का बर्तन जिसमें भड़भूँजा दा[illegible] डालकर दाना भूनते हैं। अम०। (३) [illegible] (४) सूर्यका नाम। (५) कि[illegible] ग्यारह वर्ष से छोटा बालक। (६) पश्चात्ताप।

अम्बरी ambari-मारा० आमला। (Phy[illegible] nthus Emblica.)

अम्बरीसक ambarisak-हिं० संज्ञा पुं० [अम्बरीष] भाड़। भरसायँ। -ड०।

अम्बल ambal-हिं० स्त्री० (१) [illegible] (Intoxication.)। (२) [illegible]

अम्बल ambal-हिं० पुं० रामतुलसी। (Ocimum gratissimum.) देखो-तुलसी।

अम्बल ambal-ता० कमल। (Nelumbium speciosum, *Wight.*) फा० इं०।

अम्बलह् ambalah-फ़ा० अम्लिका, अमली, इमली। (Tamarindus Indicus.)

अम्बलपिष्ट ambal-pishṭa-सं० चाङ्गेरी, चूका, खटकल। (Rumex scutatus.)

अम्बली ambalí-हिं० स्त्री० अम्लिका, इमली, अमली। (Tamarindus Indicus.)

अम्बली ambalí-पं० } आमला। (Phyllanthus emblica.)
अम्बलीय ambalíya-अ० }

अम्बलु ambalu-पं० मोवा, थकलवा। मे० मो०।

अम्बलोना ambaloná-हिं० स्त्री० खटकल, चाङ्गेरी। (Rumex scutatus.)

अम्बलोनान ambalonána-हिं० पुं० एक भारतीय वृक्ष का फल है जिसका स्वाद खट्टा होता है।

अम्बलोलवा ambalolavá-हिं० पुं० गिदड़-द्राक-पं०। (Vitis trifolia.)

अम्बलोवान ambalováná-हिं० अज्ञात।

अम्बवटी ambavaṭí-हिं० स्त्री० खटकल, चूका, चाङ्गेरी। (Rumex scutatus.)

अम्बष्ठः,-ष्ठः ambashṭah,-ṭhah-सं० पुं० (१) देश विशेष। पंजाब के मध्य भाग का पुराना नाम। (२) वैश्य स्त्री व ब्राह्मण पुरुषसे उत्पन्न एक जाति। इस जाति के लोग चिकित्सक होते थे। (३) अम्बष्ठ देशमें बसने वाला मनुष्य। (४) महावत। हाथीवान। फ़ीलवान।

अम्बष्ठ(ष्ठ)का,-की ambashṭaká,-kí }
अम्बष्ठा (ष्ठा),-ष्ठि(ष्ठि)का ambashṭá,-shṭiká }
-सं० स्त्री० (१) एक लता का नाम। पाढ़ा। पाढ़ली लता। पाठा। (Cissampelas pareira, *Linn.*) रा० नि० व० ६। पहाड़ -हिमा०। (२) भाङ्गी, भार्गी। (Clerodendron siphonanthus) र० मा०। (३) लत(त्म)णा मूल, श्वेत कण्टकारी। भैप० स्त्रीरोग-चि० पुष्यानुग चूर्ण। (४) अम्ल लोणी, आमरूल, चांगेरी। (Rumex scutatus) रा० नि० व० ४। भा० पू० १ भा०। (५) यूथिका, जुही। (Jasminum auriculatum) प० मु०। (६) मयूर-शिखा। (Actinopteris dichotoma.) वा०सू० प्रियंग्वादि। "अम्बष्ठामधुकं नमस्कारी"। (७) आम्रातक, अमड़ा। (Spondias mangifera.) क्षुद्र क्षुप विशेष। मोइया, मोड़ुया-हिं० माचिका और साकुरुण्ड-पश्चिम०। अम्बाड़ा, अम्बरी-द०। पुदिना-पं०।

पर्य्याय—बालिका, बाला, शठाम्बा, अम्बालिका, अम्बिका, अम्बा, माचिका, दृढवल्का, मयूरिका, गंधपत्री, चित्रपुष्पी, श्रेयसी, सुखवाचिका, छिन्नपत्री, भूरिमल्ली-सं०। सु० सू० ३८ अ०। रस० र० पुष्यानुग चूर्ण।

गुण—कसेली, अम्ल, कफघ्न, रुचिकारी तथा दीपन है और कंठ रोग एवं वात रोगनाशक है। रा० नि० व० ४।

अम्बष्ठादिः ambashṭhádih-सं० पुं० पाठादि गण विशेष यथा—अम्बष्ठा, धातकी पुष्प, समंगा, कट्वंग, मधुक, बिल्वपेशी, रोध्र, सावररोध्र, पलाश, नन्दी वृक्ष और पद्मकेशर। गुण-संधानीय, पित्त में हितकारक, व्रण (रोपण) पूरक और पक्वातिसार नाशक है। सु० सू० ३८ अ०।

अम्बष्ठी ambashṭhí-सं० स्त्री० (१) कुटकी भेद, कटुकी। A kind of (Picrorrhiza kurroa)। यथा-"रक्तकाण्डेरुहाम्बष्ठी कटुका चापरा स्मृता।" द्रव्याभि०। (२) इन्द्रायण। (Citrullus colocynthis.)

अम्बह् ambah-फ़ा० आम। (Mangifera Indica.)

अम्बह हल्दी ambah-haldí-हिं० स्त्री० अम्बाहल्दी। आम्रहरिद्रा। (Curcuma amada.)

अम्बहे हिन्दी ambahe-hindí-फ़ा०, अ० अम्बहन्दुँ जा, पपैया। (Carica papaya.)

अम्बा ambá-हिं० संज्ञा पु० आम। (Mángifera indica.)

अम्बा (लिका) ambá,-liká-सं० स्त्री० (१) अम्बष्ठा, पाठा, निर्बिषी। (Stéphania hernandifolia) रा० नि० व० ५। (२) मोइया, माचिका (Solanum nigrum)। (३) आम्रातक, अम्बाड़ा। (Spondias mangifera).

अम्बाड़म् ambádam-सं० क्लीं० अमड़ा, अम्बाड़ा, आम्रातक। (Spondias mangifera.)

अम्बाड़ा ambádá, अम्बाड़ी ambádí -हिं० पु०, स्त्री० (१) अमड़ा, आम्रातक। (२) -वम्ब० पटसन -द०, म०। (Hibiscus cannabinus, Linn.) फॉ० इं०।-हिं० चुक्र, शतवेधी।

अम्बाड़ी की भाजी ambádí-kí-bhájí मेस्ता-बं०। (Hibiscus sabdariffa) पाश्वो साग-हिं०। इं० हैं० गा०।

अम्बानुझाड़ ambánu-jháda-गु० आम का पेड़। (Mango tree)

अम्बापुरी ambá-purí-वम्ब० आम का पेड़। (Mangifera Indica.) मे० मो०।

अम्बापोली ambápolí-मह०, हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आम्र=आम, प्रा० अब+सं० पौलि=पोतला, रोटी] आम्रावर्त-सं०। अमरस, अमावट-हिं०। फा० इं०। See-Amávata.

अम्बारी ambárí-हिं० स्त्री० अमड़ा, आम्रातक। (Spondias Mangifera.)

अम्बारी ambárí-द० (Hibiscus cannabinus.) पटसन, मेष्टपात-बं०। सन-हिं०। गोगु कुरु-ते०। पलङ्गु-ता०। डांडे कुद्रम-सन्ता०। कनरिया-उड़ीसा। कुद्रम-विहार। पिण्डिक मिडा -कना०। नील-सं०। इं० मे० मो०।

अम्बारीक़न ambáriqan-ख़ुन्सा। लु० क०। See-Khunsá.

अम्बाल ambála-गु० (१) आमला।-फ़ा० (२) इमली। अम्लिका।

अम्बालम ambálam-मल०, अम्बालमु ambálamu-ते० } आम्र... अम्बाड़ा। (Spondias mangifera) इं० मे० मे०।

अम्बालस ambálasa-यू० अंगूरलता।

अम्बालस अग्रिया ambálasa-aghriyá जंगली शलगम या जंगली अंगूर का ...

अम्बालस मालिया ambálasa-máliyá फ़ाशरस्तीन। See-Fáshárastína.

अम्बालस लूक़ा ambálasá-lúqá-यू० ...सारा। (Bryonia scabrella.)

अम्बालिका ambáliká-सं० स्त्री० (१) देखो—अम्बा।-हिं० स्त्री० (२) ... जननी। (३) पाण्डुराज की माता।

अम्बासीस ambásísa-यू० ... प्रभावशाली एक औषधि है।

अम्बाहलद ambáhalada-कों०

अम्बा(बे)हल्दी ambá(be)haldí हिं०, म० कर्पूर हरिद्रा, वनहरिद्रा। (Curcuma aromatica, Salisb.)

अम्बा हिन्दी ambá-hindí-अ०, फ़ा० ख़रबूज़ा, पपीता, बिलायती रेंड़। (Carica papaya.) इं० मे० मे०।

अम्बिका ambiká-सं० स्त्री० } अम्बिका ambiká-हिं० संज्ञा स्त्री० } पाठा। (Cissampelos hexandra) आ० पू० १ भा०। (२) मायाफल इ... मयनफल-हिं०। (Randia dumetorum, Lam.) मद० व० ४। (३) कुटकी। (Picrorhiza kurroa) शु० च०।-हिं० स्त्री० (४) माता, माँ (५) भगवती, भवानी, देवी। (A name of Bhavání wife of shiva.)

अम्बिया ambiyá-हिं० स्त्री० अँबिया, टिकोरा, छोटा आम। (A small unripe mango.)

अम्बिल ambilá-हिं० पु० एक आहार है। धोए हुए चावल या छिलका उतारे हुए ...

लेकर उसमें मट्ठा धान्य मिलाकर धूप में रखते हैं कि मट्ठा हो जाए। फिर स्वाद यांत्रिक कर और धान्य डालकर तैयार करते हैं। यह शीतल आहार है।

तून ambitúna-यू० शतपुष्पा, सोया, सेवा। (Peucedanum graveolens, Benth.)

बूटी ambi-búṭi-हि० स्त्री० तिनपतिया, चाङ्गेरी। (Rumex scutatus.)

ambu-सं० क्ली०
anbu-हि० संज्ञा पुं० } (१) जल। (Water.)
रा० नि० व० १४। (२) बालक, सुगन्धबाला। (Pavonia odorata.) च० द० ज्वरातिसार-चि०। 'किरातान्बु यवामकम्।" भैष० शोथ-चि० पुनर्नवा तैल।

क ambuka-सं० मलूक, विस्मादो। (Diospyros lotus, Linn.) मे० मो०।

कः ambukah-सं० पुं० (१) श्वेतार्क मन्दार। (२) रक्तैरण्ड।

कण ambukaṇa-हि० पुं० ओस, तुषार, शीत। (Dew.)

कणा ambu-kaṇá सं० स्त्री० जलपिप्पली। (Lippia nodiflora).

कण्टकः ambu-kaṇṭakah-सं० पुं० जल जन्तु विशेष, नक्र, ग्राह, मगर। (An alligator.) त्रिका०।

कन्दः ambu-kandah-सं० पुं० श्रृङ्गाटक, सिंघाड़ा। (Trapa bispinosa.) वै० निघ०।

म्बुकिरातः,-टः ambu-kirátah,-ṭah-सं० पुं० नक्र, ग्राह। (An alligator.) त्रिका०।

म्बुकोशः ambu-kíṣhah-सं० पुं० (१) गोधा। गोह (-ही)। (A lizard, a guana.)। (२) शिशुमार, मेकची। त्रिका०। See-ṣhiṣhumára.

म्बुकुक्कुटी,-टिका ambu-kukkuṭí,-ṭiká -सं० स्त्री० जल कुक्कुटी, जल मुर्गी, मुर्गाबी -हि०। पान कउड़ी-बं०। पान कोंबड़ी-म०। (A water-hen, diver)। देखो—मद्गुः।

अम्बुकूर्मः ambu-kúrmmah-सं० पुं० गोधा। (A guana.) वै० निघ०।

अम्बुकृष्णा ambu-kṛishṇá-सं० स्त्री० जलपिप्पली, जल पीपल-हि०। काँचड़ा दाम्-बं०। वै० निघ०। See-Jala-pippali.

अम्बुकेशरः ambu-keṣharah-सं० पुं० बीजपूर, मातुलुङ्ग, बिजौरा नीबू-हि०, सं०। लेबू-बं०। (Citrus limonum.) र० सा० सं०।

अम्बुचरः ambu-charah-सं० पुं० (१) जलचर (Aquatic.)। (२) कमठ, गजपीपल, गजपिप्पली। (Scindapsus officinalis.) वै० निघ०।

अम्बुचामरम् ambu-chámaram-सं० क्ली० शैवाल-सं०। सेवार-हि०। (Sea-weed.) जटा०।

अम्बुचारिणी ambu-chárinṇí-सं० स्त्री० स्थल पद्मिनी, थल पद्म। (See-Sthala padmini.) वै० निघ०।

अम्बुजः ambujah सं० पुं०
अम्बुज ambuja-हि० संज्ञा पुं० }
(१) पानी के किनारे होने वाला एक पेड़। हिज्जल, समुद्रफल, ईजड़, पनिहा। (Eugenia acutangula.) अम०। (२) मत्स्य आदि। (Piscis.) भा०। (३) जलवेतस, जलबेंत। (४) कमठ, गजपीपल, गजपिप्पली। (Scindapsus officinalis) वै० निघ०। -त्रि० (५) जलजातमात्र, सम्पूर्ण जलोद्भूत पदार्थ, जल से उत्पन्न वस्तु (Aquatic.)। -क्ली०, हिं० पुं० (६) कमल, पद्म, अम्भोज। The lotus (Nymphæa nelumbo) मे० जत्रिकं। (७) बेंत। (८) वज्र। (९) शंख। (१०) ब्रह्मा।

अम्बुजन्म ambujanma-हि० पुं० पद्म, कमल, पंकज। (The lotus.).

अम्बुजा ambujá-सं० स्त्री० आम्रगंधक। कुत्त-हिं०। अम्बुली-म०। कर्पूर-ग्रं०। माङ्ग-नारी-मल०। (Limnophila gratioloides. Br.) फा० इं० ३ भा०।

अम्बुजामलकी ambujá-malakí-सं० स्त्री० पानीयामलक। (Flacourtia cataphracta.)

अम्बुटः ambuṭah-सं० पुं० अश्मन्तक वृक्ष। आपुटा। अ(-ा)पटा-महा०। रा० नि० व० ६। See-Ashmantakah.

अम्बुटी ambutí-बम्ब० चाङ्गेरी, चूका। (Oxalis corniculata, Linn.) फा० इं० १ भा०।

अम्बुतालः ambutálah-सं० पुं० शैवाल। सेवार-हिं०। (Sea-weed.) त्रिका०।

अम्बुदः ambu-dah-सं० पुं० मुस्ता, मुस्तक, मोथा। (Cyperus rotundus, Linn.) सि० यो० कामला चि० मूर्च्छांयतं वृन्द। "पटोलाम्बुददारुभिः।"

अम्बुधरः ambudharah-सं० पुं० नागर-मुस्ता, भद्रमुस्ता, नागरमोथा। (Cyperus pertenuis.) वै० निघ०।

अम्बुधिः ambudhih-सं० पुं० सागर, समुद्र, सिन्धु, जलधि। (A sea.)

अम्बुधिफेनः ambudhi-phenah-सं० पुं० समुद्रफेन। Os sepie (Cuttle fish bone.) भा०।

अम्बुधिश्रवा: ambudhi-shraváh-सं० स्त्री० ग्वारपाठा, घीकुँआर, घृतकुमारी। (Aloe barbadensis.)। कोड़फल-म०। रा० नि० व० ५।

अम्बुनाम ambunáma-सं० क्ली० ह्रीवेर, सुगंधबाला। (Pavonia odorata, Willd.) भा०। बालक।

अम्बुनाली ambunálí-सं० स्त्री० (Cerebral aqueduct.)

अम्बुनियामिका ambu-niyámiká-सं० स्त्री० (Amnion.) गर्भकला, भ्रूणमध्यावरण।

अम्बुपः ambupah-सं० पुं०
अम्बुप anbupa-हिं० संज्ञा पुं० } चकौंड़ का पौधा। (Cassia tora) (चाँ) श०। (२) कबर, (Scindapsus officinalis)

अम्बुपटलम् ambupatalam-सं० (Aqueous humour.)

अम्बुपत्रा (पत्रिका), पत्री ambupatriká,-patri सं० स्त्री० उच्चटा, घुँघची। (Abrus precat...) र० मा०।

अम्बुपिप्पली ambu-pippalí-सं० जलपिप्पली। काँचरा घास बं०। ... (Lippia nodiflora.)

अम्बुप्रसादः ambuprasádah
अम्बुप्रसादकः ambu-prasádakah
अम्बुप्रसादनः ambu-prasádanah
सं० पुं० निर्मली-फल वृक्ष, निर्मली का ... (Strychnos potatorum, Linn.) रा० नि० व० ११। देखो-कतकः।

अम्बुप्रसादन फलम् ambu-prasádana-phalam-सं० क्ली० कतक, निर्मली। Strychnos potatorum (fruit) वै० निघ०।

अम्बुफलम् ambu-phalam-सं० श्रृङ्गाटक, सिंघाड़ा। (Trapa bispinosa.)

अम्बुबाह ambubáha-हिं० पुं० मेघ, बादल। (Cloud.)

अम्बुबैया ambubaia-सिरि०(१) ... Endive seeds (Cichorium intybus, Linn.) साइ०।

नोट—अम्बुबया सिरिया भाषा का ... किन्तु फ़ारसी ग्रन्थों में इसके भिन्न ... जाते हैं, यथा—अम्बुई (Ambui) ... गंध व बया अर्थात् पुर्ष यानी गंधर्व (A... rements.)। देखो-कासनी। ... भा०।

-इया ambu-boiyá-फ़ा० कासनो । (Endive seeds.) इं० मे० मे० ।

[ambu-bhrit-सं० पुं० (१) मेघ, ल (Cloud.)। (२) मुस्तक, मोथा। Cyperus rotundus) अ०। (३) र, समुद्र। (Sea.) के० ।

[रकः ambu-mayúrakah-सं० पुं० जलमर्ग, जल चिर्चिटा। वै० निघ० ।

त्रः ambu-mátrah -सं० पुं० त्रजः ambu-mátrajah अम्बूक, । A snail (Cochlea helix).

क्,-च् ambu-muk,-much- सं० ० (१) मुस्तक, मोथा (Cyperus tundus.)। (२) मेघ. बादल। (clo-.) के० ।

ष्टिका ambuyashtiká-सं० स्त्री० गी, भारंगी। (Clerodendron sipho-nthus.) र० मा०। बामन हाटी-बं०।

: amburah-सं० पुं० द्वाराधः काष्ठ। बराद् (का)।

(रो) हः ambu-ru,-ro-hah-सं० ०, क्लो० पद्म, कमल। (Nymphæa elumbo.) रा० ।

रुहा amburuhá-सं० स्त्री० पद्मिनी, स्थल द्मिनी । वै० निघ०। (See-sthala-admini.)

ल ambula-पं० आमला। (Phyll-nthus emblica.) मेमो० ।

ली ambulí-महा० अम्बुजा, आम्रगन्धक। Limnophila gratioloides, Br.) फा० इं० ३ भा० ।

वल्लिका ambu-valliká-सं० स्त्री० कार-ल्ली, करेली। (Momordica chara-tia.) वै० निघ० ।

वल्ली ambu-vallí-सं० स्त्री० (१) वृद कारवेल्ली, छोटी करेला (Momordica charantia.)। (२) जल पिप्पली। (Lippia nodiflora.) वै० निघ० ।

अम्बुवारिणी ambu-váriní-सं० स्त्री० स्थल कमलिनी, स्थल पद्मिनी। वै० निघ० ।

अम्बुवासिनी ambu-vásini
अम्बुवासी ambu-vási
-सं० स्त्री० रक्त पाटला, पाढल ।

अम्बुवाहः ambu-váhah-सं० पुं० मुस्तक, मोथा, नागरमोथा। (Cyperus rotund-us) त्रि० क० फ० वही प्रदर-चि०। (२) बादल। मेघ।

अम्बुवेतसः ambu-vetasah—सं० पुं० जलवेतस। एक प्रकारकी बेंत जो पानी में होती है। वही बेंत। लद्दाला-महा०। पर्याय—परिव्याधः, निचुल, नादेयी (अ०)।

अम्बुशिरीषिका ambu-shirishiká
अम्बुशिरीषी ambu-shirishí
-सं० स्त्री० जल शिरीष, डाटोन, ढिढिनी। वै० निघ० ।

अम्बुशुक्तिः ambu-shuktih-सं० स्त्री० जलशुक्ति, जल सीपी। जलशिपी-महा०। झिनुक-बं०। (A snail.) वै० निघ० ।

अम्बुसर्पिणी ambu-sarpiní—सं० स्त्री० जलायुका, जलौकस। जोंक -हिं०, बं०। Leech (Hirudo).

अम्बुसादनम् ambu-sádanam-सं० क्लो० निर्मली बीज, कतक। (Strychnos potatorum.) वै० निघ।

अम्बुसारा ambu-sárá-सं० स्त्री० कदली वृक्ष। (Musa sapientum.) भा० पू० १ भा० फ० व० ।

अम्बुसाह्वः ambu-sáhvah-सं० पुं० कुन्द पुष्प क्षुप। (Jasminum multiflorum.) वै० निघ० ।

अम्बसीमा ambu-símá-अ० पलकहारी, घेरो, गई रद। स्याह (Stye), ब्लीफेराइटिस (Blepharitis)-इं०।

अम्बूकृत् ambú-krit-सं० त्रि० ऐसा वचन जिसमें थूक निकले। निष्ठीवन युक्त वचन।

अम्बूकः ambúkah-सं० पुं० लकुच वृक्ष।

यड़हर-हिं० । (Artocarpus lakoocha.)-के० ।

अम्बूब मक्की ambúba-makki-ग्र० बुस्तान अफ़रोज़ ।

अम्बूबुर्राई ambúburráái-ग्र० सदाबहार, हयुलआलम ।

अम्बूबुल् मलिक ambú bul-malik—ग्र० इसके लक्षण में मतभेद है। कोई कोई हयुल्-आलम को तथा कोई कस्तर या महुरा को कहते हैं।

अम्बूरस्मा ambúrasmá-यू० सफ़ेद कुटकी। Picrorrhiza kurroa (The white var.)

अम्बूस ambús—यू० नान्ख़ाह, अजवाइन। (Ptychotis ajowan)

अम्बूस मारीस ambúsa-márísa—यू० काली कुटकी । Picrorrhiza kurroa (The black variety of-).

अम्बेलिफ़री umbelliferæ-ले० छत्र या छत्री (-त्रिका) वर्ग।

अम्बेलो उघ्रिया ambelo-ughriyá -ग्र० अज्ञात ।

अम्बे हल्दी ambe haldí-इं० अम्बा-हलदी, वनहरिद्रा । (Curcuma aromatica, Salisb.) स० फा० इं० ।

अम्बो ambo-गु० आम, आम्र । (Mangifera Indica.) फा० इं० १ भा० ।

अम्बोलटी ambolaṭí-बं० आमला । (Phyllanthus emblica.)

अम्ब्लोगिना पॉलिगोनॉइडीस amblogina polygonoides, Rafin.)-ले० बन-तण्डुलीय, जंगली चौलाई । मेमो० ।

अम्ब्लोगिना सॅनीगेलेन्सिस amblogina senogalensis, Lamk.)-ले० जंगली मेंहदी । दादमारी । मेमो० ।

अम्बोसी ambosí-बम्ब० (१) आम्रपेशी, आम की गुठली । (Phyllanthus emblicá) फा० इं० १ भा० । -बं० (२)चा(च)मचूर ।

-बम्ब० (३) आम । (Mangifera [indi]ca.) मेमो० । फा० इं० १ भा० [...] मे० ।

अम्बौटी ambouṭí-हिं० स्त्री० [...] आमरूल-बं० । (Rumex [...]

अम्ब्री ambrí-मह० [...] (Dragea volubilis, Benth [...] इं० २ भा० ।

अम्भः ambhah-सं०, हिं० पुं० ([...] जल, पानी । (Water.) [...] १४ । (२) बाल, सुगंधबाला । (P[...] odorata.) अम० ।

अम्भः पा ambhah-pá-सं० पुं० [...] A kind of cuckoo ([...] melano-leucus.)

अम्भः सार: ambhah-sárah-सं० [...] मोती । (Pearl.) वै० निघ० ।

अम्भः सूः ambhah,-súh-सं० [...] शम्बूक, घोंघा (A snail.) । ([...] धुँआ । धुके-मह० । (smoke.) भाप, वाष्प । (Vapour.)

अम्भसोज ambha-soja-हिं० पुं० [...] कमल, पद्म, अम्बुज (A lotus.) [...] चन्द्र (Moon.) । (३) सारस [...] stork.)

अम्भसोद ambhasoda-हिं० पुं० [...] मेघ ।(Cloud)

अम्भसोधर ambhaso-dhara-हिं० [...] (१) जलधर, मेघ (Cloud.) । [...] समुद्र । (A sea.)

अम्भसोधि ambhasodhi }
अम्भसोनिधि ambhasonidhi }
सागर, जलधि । (A sea.)

अम्भेडो ambhedo -गु० अम्बाड़ा । तक: । (Spondias mangifera [...]

अम्भोजम् ambhojam-सं० क्ली० }
अंभोज anbhoja-हिं० संज्ञा पुं० }
कमल । (Nymphœa nelu[mbo] [...]

(८) वारिवेतस, जलवेतस। (See-Jalavetas) -पुं० (३) पुष्कराह्वय, पुष्करमूल The root of Ipotaxis auricu-[illegible]a.)। (४) सारस पक्षी। (A stork.) [illegible] (५) कपूर। (६) शंख। (७) [illegible]द्रमा।
[illegible] वि० जल से उत्पन्न।

[illegible] नालः ambhoja-nálah-सं० पुं० [illegible] नाल, कमलनाल, कमलकी डण्डी। (Root [illegible]ock of nymphœa lotus.) [illegible] निघ०।

[illegible]नी ambhojaní
[illegible]नी ambhojiní
-सं० स्त्री० (१) पद्म-[illegible], कमल का पौधा। कमलिनी। पद्मिनी। [illegible]) कमलों का समूह। (३) वह स्थान [illegible] पर बहुत से कमल हों।

[illegible]ा ambhojá-सं० स्त्री० यष्टिमधु वल्ली, [illegible]ठी। (Glycyrrhiza Glabra.) [illegible] निघ०।

[illegible]: ambhodah-सं० पुं०
[illegible] anbhoda हिं०संज्ञा पुं०
(१) भद्र-[illegible]ला, नागरमोथा। (Cyperus Rotundus.) रा० नि० व० ६। च० द० यक्ष्म चि० एलादिमन्थ। (२) प्रपौण्डरीक। Root stock of nymphœa lotus.) प० मु०। (३) बादल। -क्ली० (४) कांस्य, काँसा। (Bronze.) [illegible] वि० जो पानी दे।

[illegible]रः ambho-dharah-सं० पुं० (१) [illegible]त्तक, मोथा। (Cyperus Rotundus.) (२) मेघ (Cloud.)। (३) समुद्र। (A sea.) शब्द० र०।

[illegible]धिपल्लवः ambhodhi-pallavah
[illegible]धिवल्लभः ambhodhi-vallabhah
-सं० पुं० प्रवाल, मूँगा। (Coral.) रा० नि० व० १३।

[illegible]मुक् ambhomuk-सं०पुं० प्रवाल,मूँगा। (Coral.)

अम्भोरुहम् ambho-ruham-सं० क्ली० (१) पद्म, कमल। (Nymphœa nelumbo.) च० द० र० पि० चि०। -पु० (२) सारस पक्षी। (The Crane.) अ०।

अम्भोरुहकेशरम् ambhoruha-kesharam -सं० क्ली० पद्मकेशर। (See-Padma-keshar.) च० द० र० पि० चि०।

अम्मअह् ammaáah
अम्मअ ammaá
-अ० शिथिल विचार, निर्बुद्धि, जो प्रत्येक के आधीन हो जाए।

अम्मरस ammarasa-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अमरसर] अमृतसर का कबूतर। एक कबूतर जिसका सारा शरीर सफेद और कण्ठ काला होता है।

अम्मा ammá-हिं० स्त्री० माता, माँ। (Mother.)

अम्मी ammi-यू०, इं०
अम्मी कॉप्टिकम् ammi copticum-लें०
अम्मी डी' इण्डी ammi d' inde-फ्रां०
अम्मी पर्प्युसीलम ammi perpusillum, *Lobd.*-लें०

अजवाइन। (Carum copticum, Benth.) फा० इं० २ भा०।

अम्मुग़ीलाँ ammughilán
मुग़ीलाँ mughilan
-अ० कीकर, बबूल, बबूर। Acacia Arabica, *Willd.* (Babool tree) स० फा० इं०। मु० आ०। म० अ०।

अम्मेनिया सिनेगेलेंसिस ammania senegelensis, *Lamb.*-लें० दादमारी वर्ग।

उत्पत्ति स्थान—पञ्जाब के मैदान तथा उत्तर-पश्चिम हिन्दुस्तान।

उपयोग—फोस्काजनक प्रभाव हेतु। इं० मे० प्लां०।

अम्या áamyá-अ० अंधी स्त्री। यह अअ्मा का स्त्री लिंग है।

अम्युल् अल्वान áamyul-alván-अ० रंगों का अंधापन। यह एक प्रकारका विकार है जिसमें

रोगी रंगों का, विशेष कर जब कि उनको दूरी से देखे तो, एक दूसरे में भेद नहीं कर सकता। क्रोमैटाप्सिया (Chromatopsia), कलर ब्लाइण्डनेस (Colour Blindness.)

अम्यूलु फ़ारास amyúlú-fárás-रू० रामतुलसी। (Ocimum gratissimum.)

अम्यूस amyúsa-यू० अजवाइन, नान्खाह। (Carum copticum.)

अम्रः amrah-सं० पुं० (१) आम्रवृक्ष, आम। (Mangifera indica) रा० नि०। (२) माचिका, मोइ(हु)या। पुदिना-बं०। (३) अम्लवेतस। (Rumex vesicarius) रा० नि०।

अम्रम् amram-सं० क्लीं० आम का फल। Mangifera indica (The fruit of-)

अम्रगन्ध हरिद्रा amragandha haridrá-सं० स्त्री० आम्रहरिद्रा, अम्बा हल्दी, आम हल्दी। आमहलुद-बं०। (Curcuma reclinata).

अम्रत् amrata-अ० वह मनुष्य जिसके भौंव (भ्रू) के रोम गिर गए हों। जिसकी डाढ़ी घनी न हो अर्थात् छतरी डाढ़ी वाला।

अम्रत amrat-मल० गुडूची, गुरुच, गिलोय। (Tinospora cordifolia)

अम्रत amrat-हिंपुं० लाल सफ़री आम, लाल अमरूद। (Psidium Guava, Var. P.) इं० मे० मे०।

अम्रतवल्ली amrata-valli-कना० गुडूची, गुरुच, गिलोय, अमृतवल्ली। (Tinospora cordifolia).

अम्रद amrad-अ० श्मश्रुहीन, डाढ़ी रहित, जिसके अभी डाढ़ी मूँछ न निकले हों। बियर्डलेस (Beardless.)-इं०।

अम्रदपरस्त amrad-parast-अ० लूती, बच्चा बाज़। पेडरेस्ट (Pederest.)-इं०।

अम्रवेतसः amra-vetasah-सं० पुं० अम्लवेतस। (Rumex vesicarius.)

अम्रसारः amra-sárah-सं० पुं० अम्लवेतस। (Rumex vesicarius.) रा० नि०।

अम्रा amrá-हिं० पुं० आम्रातक, (Hogplum).

अम्राक़ amráq-यू० मांस रस, शोरबा। (... up.)।

अम्राज़ा amráz-अ० (ब० व०) मर्ज़ (... व०) नाखुशी, दुःख, दर्द, बीमारियाँ, व्याधि, विकार-हिं०। डिज़ीज़ (D... -इं०। देखो—मर्ज़।

अम्राज़ अस्लिय्यह् amráz-aasliy... वे रोग जिनमें शीत के कारण मवाद ... ठिर जाए।

अम्राज़ अस्लियह् amráz-asliyah

अम्राज़ ज़ातियह् amráz-zátiyah अ० असली बीमारियाँ, ज़ाती बीमा... रोग जो स्वतः उत्पन्न हों अर्थात् अन्य ... आधीन न हों या उनकी उपस्थिति ... न उत्पन्न हों। इडिओपैथिक डिज़ीज़ेज़ (... pathic diseases)—इं०।

अम्राज़ आम्मह् amráz-áamm... व्यापक रोग, सार्वांगिक रोग, वे रोग जो ... शरीर में एक समान उत्पन्न हों, जैसे- रक्ताल्पता आदि। जेनरल डिज़ीज़ेज़ (... ral Diseases)—इं०।

अम्राज़ इन्हिलाल फ़र्द amráz-inhilá... -अ० देखो—अम्राज़ तफ़र्रुक़ु इ...

अम्राज़ औइयह् amráz-ouaiyah अम्राज़ तजावीफ़, वे रोग जिनमें धमनि... संकुचित अथवा विस्तृत हो जाते हैं। ... डिज़ीज़ेज़ (Vascular Dise... -इं०।

अम्राज़ क़ल्ब amráz-qalb-अ० हृद्... हृद्रोग। हार्ट डिज़ीज़ेज़ (Heart ... ases)-इं०।

अम्राज़ कुल्लिय्यह् amráz-kulliyy... कष्टसाध्य, दुःसाध्य। (Difficult to...

अम्राज़ खनाज़ीरिय्यह् amráz-khaná... riyyah-अ० कण्ठमाला, गण्डमाला। स्क्राफ़ुलस डिज़ीज़ (Scro... Diseases)-इं०।

अम्राज़ खास्सह amráz-kháṣṣah–अ० खास खास रोग, स्थानिक रोग, वे रोग जो खास खास अवयवों में ही उत्पन्न हुआ करते हैं, जैसे–बधिरता कान तथा अंधता आँख में ही उत्पन्न होती है। लोकल डिज़ीज़ेज़ (Local Diseases.)–इं०।

अम्राज़ ख़िल्क़त amráz-khilqat–अ० वे रोग जिनमें विकृतावयव की रूपाकृति परिवर्तित हो जाए।

अम्राज़ ग़ैर मुसल्लमह् amráz-ghair-musallamah–अ० वे रोग जिनके उचित तथा उपयुक्त उपाय में कोई बात रोधक हो।

नोट–यह शब्द अम्राज़ मुसल्लमह् का विपरीतार्थक है।

अम्राज़ जुज़्इय्यह amráz-juziyyah–अ० सुखसाध्य, वे रोग जिनकी चिकित्सा आसान हो। (Easy to cure.)

अम्राज़ ज़ुह्रिय्यह् amráz-zuhriyyah –अ० अम्राज़ ज़ुह्रह्, ज़ुह्रह् की बीमारियाँ। इसका संकेत उपदंश व सूज़ाक की ओर है। काम व्याधि, जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग, गुप्तरोग। वेनरियल डिज़ीज़ेज़ (Venerial Diseases)–इं०।

नोट–चूँकि प्राचीन यूनानियों का यह विश्वास था, कि जब सीतानी लोगों ने उनके ऊपर चढ़ाई की, तो उनकी मुहब्बतकी देवी वीनस (शुक्र) यानी ज़ुह्रह् ने उन आक्रमणकारियों में दण्ड स्वरूप उपदंश व सूज़ाक की व्याधि उत्पन्न करदी। इस कारण उक्त दोनों व्याधियां अम्राज़ ज़ुह्रह् के नाम से अभिहित हो गईं।

सूचना–विशेष विवरण हेतु देखो–उपदंश व सूज़ाक।

अम्राज़ तजावीफ़ amráz-tajávíf–अ० वे रोग जिनमें तजावीफ़ अर्थात् शारीरिक स्रोत अपनी प्राकृतिक अवस्था से छोटे, बड़े या अवरुद्ध हो जाएँ, जैसे–आमाशय का सिकुड़ना या फैल जाना।

अम्राज़ तफ़र्रुक़ इत्तिसाल amráz-tafarru-q-ittiṣál–अ० अम्राज़ इन्फ़िलालुल् फ़र्द। वह साधारण बीमारियाँ जो प्रत्येक अवयव (मिश्रित व अमिश्रित) में उत्पन्न हो सकें, जैसे–किसी अवयव में विच्छेद अर्थात् विश्लेष या पार्थक्य का उपस्थित हो जाना। विस्तार के लिए देखो–तफ़र्रुक़ इत्तिसाल या मर्ज़ तफ़र्रुक़ इत्तिसाल।

अम्राज़ तर्कीब amráz-tarkib–अ० देखो–मर्ज़ तर्कीब।

अम्राज़ तारिय्यह् amráz-táriyyah–अ० ये वस्तुतः छूतदार (संक्रामक) बीमारियाँ हैं जो दो प्रकार की होती हैं–(१) वह जो किसी एक कुटुम्ब या स्थान में सीमित हों, उनको अम्राज़ वाफ़िदह् और अंग्रेज़ी में एन्डेमिक डिज़ीज़ेज़ (Endemic-diseases) कहते हैं और (२) वह जो किसी जाति अथवा स्थान में न हों, वरन् सामान्य तौर पर व्याप्त हो जाएँ, उनको अम्राज़ तवइय्यह् तथा अंग्रेज़ी में एपिडेमिक डिज़ीज़ेज़ (Epidemic diseases) कहते हैं।

अम्राज़ फ़स्लिय्यह् amráz-fasliyyah–अ० वे व्याधियाँ जो किसी विशेष ऋतु या फ़सल में होती हैं, जैसे–मौसमी ज्वर।

अम्राज़ बलदिय्यह् amráz-baladiyyah –अ० वह बीमारियाँ जिनका सम्बन्ध किसी विशेष स्थान या देश से हो। एन्डेमिक डिज़ीज़ेज़ (Endemic Diseases)–इं०।

अम्राज़ बसीतह् amráz-basítah–अ० देखो–अम्राज़ मुफ़्रिदह्।

अम्राज़ बुह्रानिय्यह् amráz-buhrániyyah–अ० वह बीमारियाँ जो बुह्रान में दुन्तिक्राल मर्ज़ के तौर पर पैदा हों, जैसे–आंत्रिक ज्वर के पश्चात् फुफ्फुस प्रदाह या वृक्कप्रदाह अथवा उन्माद प्रभृति का हो जाना। क्रिटिकल डिज़ीज़ेज़ (Critical Diseases)–इं०।

अम्राज़ मजारी amráz-majárí–अ० शारीरिक अर्थात् शरीर की रग एवं नालियों की बीमारियाँ, वह बीमारियाँ जिनमें शारीरिक प्रणालियाँ संकुचित अथवा प्रसारित या अवरुद्ध हो जाएँ।

अम्राज़ मादिय्यह् amráz-mádiyyah–अ० वे रोग जो दोषाधिक्य अथवा उनके विकृत होने के कारण उत्पन्न हों।

अम्राज़ माबिय्यह् amráz-mábiyyah–अ० वबाई मर्ज़, महामारी।

अम्राज़ मिक्दार amráz-miqdár–अ० वह रोग जिसमें विकारी अवयव के आयतनमें अन्तर आ जाए अर्थात् वह स्थूल या क्षीण हो जाए।

अम्राज़ मिज़ाजिय्यह् amráz-mizájiyyah–अ० प्रकृति विकार जन्य रोग।

अम्राज़ मुख़्तस्सह् amráz-mukhtassah–अ० वे रोग जो विशेष अवयवों से सम्बन्ध रखते हों।

अम्राज़ मुज़्मिनह् amráz-muzminah–अ० जीर्ण या पुरातन (चिरकारी) रोग। पुरानी बीमारियाँ, मुज़्मिन बीमारियाँ। ऐसी व्याधियाँ जो ४० दिन अथवा इससे अधिक कालकी होगईहों। समय की कोई सीमा नहीं, चाहे रोग सम्पूर्ण आयु भर रहे। क्रॉनिक डिज़ीज़ेज़ (Chronic Diseases)–इं०।

अम्राज़ मुतअद्दियह् amráz-mutaaad-diyah–अ० अम्राज़ मुस्रियह्, अम्राज़ सारियह्। छूतदार रोग, संक्रामक व्याधि, मुतअद्दी बीमारियाँ, वे रोग जो रोगीसे स्वस्थ व्यक्तिको लग जाएँ। इन्फ़ेक्शस डिज़ीज़ेज़ (Infectious Diseases), कॉण्टेजियस डिज़ीज़ेज़ (Contagious diseases)–इं०।

नोट—प्राचीन इतिब्बा (यूनानी चिकित्सक) छः से लेकर दस रोग तक को मुतअद्दी अर्थात् छूतदार (संक्रामक) जानते रहेहैं। उनका उल्लेख निम्न पंक्तियों में किया गया है, यथा—

–(१) जज़ाम (कुष्ठ, कोढ़), (२) जर्ब (तर कण्डु या खुजली), (३) जुद्री (चेचक, शीतला), (४) हस्बह् (खसरा), (५) सिल व क़ुरूह् अफ़िनह् (यक्ष्मा व सड़ाँधयुक्त व्रण) और (६) हुम्मा वबाइयह् (वबाई बुख़ार, महामारी का ज्वर) जो सामान्य रूप से प्रसार पाते हैं एवं जिनमें प्लेग (ताऊन) भी सम्मिलित है। किन्तु अर्वाचीन शोधों, गवेषणों द्वारा लगभग ६० रोग मुतअद्दी (छूत सिद्ध हुए हैं। इन सबके लिए देखो-संक्र

अम्राज़ मुतग़य्यरह् amráz-mutaghayrah–अ० वे रोग जो क्रमानुसार उत्प तथा धीरे धीरे बदलें।

अम्राज़ मुतवस्सितह् amráz-mutawasitah–अ० वे रोग जो हादह् तथा मुज़ि के मध्य हों और जिनकी अवधि २० से ४ के भीतर हो।

अम्राज़ मुतवारिसह् amráz-mutawarisah–अ० पैतृक व्याधियाँ, वे रोग जो माता से सन्तति में हों, मौरूसी बीमारि इन्हेरिटेड डिज़ीज़ेज़ (Inherited Diseases)–इं०।

नोट—कोई कोई इतिब्बा (यूनानी चिकित्सक) इनकी संख्या ८ लिखते हैं। वे निम्न यथा–(१) जज़ाम (कुष्ठ, कोढ़), (२) बरस (श्वित्र, श्वेत दाग़), (३) दिक़ (ज्वर), (४) सिल (यक्ष्मा), (५) माल्ख़ोलिया (Melancholia), (६) दा मुस्फ़ह (गञ्ज, इन्द्रलुप्त), (७) नि (छोटी संधियों की वेदना), और (८) ज (उन्माद भेद)। किन्तु किसी किसी हकीम ने संख्या १७ पर्यन्त लिखी है अर्थात् आठ उक्त एवं (९) सरअ (अपस्मार), (१०) उम्म (११) जरब (तर खुजली), (१२) जुदरी (शी चेचक), (१३) बख़्र (मुखदुर्गन्धि), (१ रमद (नेत्र आना या दुखना, नेत्राभिष्यन्द (१५) क़ुरूह् मुतअफ़्फ़िनह् (विकृत व्रण), (१६) हस्बह् (खसरा) और (१७) वबा (महामारी)। इनके अतिरिक्त शेख़ ने वृक्क एवं वस्तिस्थ अश्मरियों को भी पैतृक रोगों में समावेशित की है। कतिपय चिकित्सक उपदंश व सूज़ाक को भी पैतृक रोगों की सूची में अंकित करते हैं।

अम्राज़ मुफ़्रिदह् amráz-mufridah–अ० साधारण रोग, अमिश्रित व्याधियाँ। वे जो कतिपय रोगों के योग द्वारा न उत्पन्न हैं

...सुत स्वयं बनते हों। सिम्पल डिज़ीज़ेज़ (Simple Diseases)-इं०।

...ज़ मुरक्कबह् amráz-murakkabah -अ० मुरक्कब बीमारियाँ। यौगिक वा मिश्रित व्याधियाँ, इस प्रकार की व्याधियाँ कतिपय रोगों के योग द्वारा उत्पन्न होती हैं और इनका नाम व चिकित्सा विशेष होती है।

उदाहरणतः—शोथ प्रकृति विकार, सधि... ...ति और म...नर्जीव के पारस्परिक योग द्वारा ...पन्न होता और एक ही नाम (शोथ) से ...कारा जाता है। विपरीत इसके यदि समग्र देह ...किसी विशेष अवयव में कतिपय बीमारियाँ ...कत्रित हो जाएँ, पर उनके समस्त का नाम व ...किसा विशेष न हो तो उन्हें मर्ज़ेमुरक्कब ...मिश्रित रोग) नहीं कहते, प्रत्युत अम्राज़ ...जतमअह् (सामूहिक) नाम से अभिहित करते ...। जैसे—ज्वर, कास और जलोदर।

...कम्प्लिकेटेड डिज़ीज़ेज़ (Complicated ...iseases)-इं०।

...मुशारिकह् amráz-musbárikah ...अ० वह रोग जो किसी अवयवके समीप अथवा ...होने के लिहाज़ से उत्पन्न हो।

उदाहरणतः—एक अंगुली का अपनी ...कटस्थ दूसरी अंगुली से कठिनतापूर्वक मिलना ...न मिल सकना। देखो—अम्राज़ वज़अ।

...मुश्तर्कह् amráz-mushtarkah ...अ० अम्राज़ आम्मह, वह रोग जो साधारण ...व मिश्रित प्रत्येक अवयव में उत्पन्न हो।

...मुसल्लमह् amráz-musallamah ...अ० अम्राज़ सलीमह, वे रोग जिनके उचित ...था उपयुक्त उपाय में कोई बात अवरोधक न ...।

...ज़ मुस्तअसियह् amráz-mustaäsi-...ah-अ० असाध्य रोग। इन्क्योरेबल डिज़ी-...ज़ (Incurable Diseases)-इं०।

...ज़ मुस्रिय्यह् amráz-musriyyah ...अ० देखो 'अम्राज़ मुतअद्दियह्'।

...ज़ मुमनह् amráz-múmanah-अ० ...रोग जो अन्य रोगों से मुक्ति दिलाएँ।

अम्राज़ व अअ्राज़ मुन्ज़िरह् amráz-va aäráz-munzirah-अ० वे रोग व लक्षण जो किसी अन्य रोगका भय दिलाएँ, उदाहरणतः स्थाई मूर्च्छा तात्कालिक मृत्यु का मुन्ज़िरह् (पूर्वरूप) होती है या काबूस जो अपस्मार व अर्द्धांग प्रभृति के उत्पन्न होने का भय दिलाता है।

अम्राज़ वज़अ amráz-vazaä-अ० वे रोग जिन में विकृतावयवकी स्थितिमें अन्तर उपस्थित होजाए इसके २ भेद हैं-(१) मौज़ई (स्थिति संबन्धी) और (२) मुशारिकी (सहचारी, संबंधीय)।

पुनः मौज़ई के चार रूप हैं—(१) किसी अवयव का निज स्थान से उखड़ जाना, (२) अवयव का अपनी संधि में गति करना, (३) स्थिर अवयव का गतिशील होना, जैसे—कम्पन वायु (रैशा) में सिर हिलना, (४) गतिशील अवयव का स्थिर होजाना, जैसे—सह्ज़ुर मुफ़ासिल (संधि काठिन्य) में संधियों का गति न कर सकना।

मुशारकी के दो रूप हैं—(१) एक अवयव का अपने निकटस्थ अवयव से दूर हो जाना। उदाहरण स्वरूप—एक अंगुली का टेढ़ा होकर दूसरी अंगुली से न मिल सकना या कठिनता-पूर्वक मिलना और (२) एक अवयव का दूसरे अवयव से जुड़ जाना या मिलजाना। उदाहरणतः—दो अंगुलियों का जुड़ जाना या मर्ज़ शिनाक़ में नेत्र का कठिनाई से खुलना।

अम्राज़ वबाइय्यह् amráz-vabáiyyah -अ० महामारी, वबाई बीमारियाँ, वे रोग जिनमें एक ही काल में बहुत से मनुष्य रोगाक्रान्त हो जाएँ, जैसे—प्लेग, विसूचिका प्रभृति। एपिडेमिक डिज़ीज़ेज़ (Epidemic diseases)

अम्राज़ वाफ़िज़ह् amráz-váfizah-अ० वे छूतदार (संक्रामक) रोग जो किसी विशेष स्थान या जाति से संबंध न रखते हों। देखो—अम्राज़ तारियह्।

एन्डेमिक डिज़ीज़ेज़ (Endemic Diseases) इं०।

अम्राज़ शक्लिय्यह amráz-shakliyyah–अ० वे व्याधियाँ जिनमें विकृतावयव का प्राकृतिक स्वरूप परिवर्तित हो जाए, जैसे – इस्तिस्क़ाउर्रास (मास्तिष्कीय जलन्धर अर्थात् जल संचय या शोथ) में सिरका चिपटा हो जाना या पृष्ठ आदि में कूबड़ निकल आना।

अम्राज़ शिर्किय्यह amráz-shirkiyyah–अ० वे व्याधियाँ जो अन्य रोगों के सहयोग द्वारा उत्पन्न हों। सहचारी रोग।

अम्राज़ सफ़ायह् अअ्ज़ाऽ amráz-safáyah-aázáa–अ० वे रोग जिनमें अवयवों के धरातल की प्राकृतिक दशा बदल जाए। उदाहरणतः—जो धरातल प्राकृतिक एवं स्वाभाविक रूप से चिकना था वह खुरदरा हो जाए और जो प्राकृतिक तौर पर खुरदरा था वह चिकना हो जाए, जैसे—आमाशय के भीतरी धरातल का चिकना हो जाना या फुप्फुस के चिकने धरातल का खुरदरा हो जाना।

अम्राज़ सलीमह amráz-salimah–अ० सुखसाध्य रोग जिनमें कोई बात उचित उपचार की विरोधी न हो।

अम्राज़ साज़िजह् amráz-sázijah–अ० साधारण रोग जो किसी दोषके कुपित होने से न हों।

अम्राज़ सारिय्यह् amráz-sáriyyah–अ० देखो-अम्राज़ मुतअद्दियह्। (Infectious Diseases.)

अम्राज़ सूउत्तर्कीब amráz-súuttarkib–अ० वे साधारण रोग जो प्रथम मिश्रितावयवों में उत्पन्न हों, जैसे—संधिभ्रंश।

अम्राज़ सूय मिज़ाज amráz-súya-mizáj–अ० वह साधारण रोग जो प्रथम साधारण अवयवों में उत्पन्न हों, जैसे—वाततन्तु का उष्ण या शीतल होजाना। देखो-मर्ज़ सूयमिज़ाज।

अम्राज़ हाद्दह् amráz-háddah–अ० (उग्र) व्याधियाँ, कठिन रोग, वे तीक्ष्ण व्याधियाँ जिनकी अवधि थोड़ी होतीहै अर्थात् ४० दिवसके भीतर भीतर या तो रोग दूर हो जाता है अथवा रोगी की मृत्यु हो जाती है या रोग चिरकारी (पुरातन) रूप में परिणत हो जाता है। ये ... के होते हैं, यथा—(१) हाद्द ... फ़िल्ग़ायत अर्थात् अत्यन्त उग्र व्याधि ... अवधि अधिकसे अधिक चौथे दिन तक ... (२) हाद्द मुत्वस्सित या हाद्द ... उग्र व्याधि जिसकी अवधि सातवें ... है। (३) हाद्द मुत्लक़ वह तीव्र व्याधि ... अवधि चौदहवें से बीसवें दिन तक ... (४) हाद्द मुन्तक़िल या हाद्द मुज़्मिन ... उग्र व्याधि जिसकी अवधि इक्कीसवें दिन ... उन्तालीसवें दिवस पर्यन्त होती है। हाद्द ... (उग्र व्याधियाँ) के मुक़ाबिले में ... मुज़्मिनह (पुरातन व्याधियाँ) हैं, ... अवधि चालीस दिवस अथवा इससे अधिक ... है। एक्यूट डिज़ीज़ेज़ (Acute diseases.)–इं०।

नोट–(१) म.अ. हाद्द कामिल व हाद्द ... व हाद्द मुत्लक़ को डॉक्टरी में एक्यूट डि... (Acute diseases.) और हाद्द ... को सब एक्यूट (Sub acute.) और ... मुज़्मिन को क्रॉनिक डिज़ीज़ेज़ (Chronic diseases.) कहते हैं।

(२) डॉक्टरी में हाद्द मुज़्मिन रोगों की ... अवधि की कोई सीमा नहीं, प्रत्युत रोग के ... की उग्रता व सूक्ष्मता से ही उनको ... मुज़्मिन कहा जाता है। देखो—मर्ज़ ... मर्ज़ मुज़्मिन।

अम्राज़ हाद्दह् जद्दन amráz-háddah-jaddan–अ० अत्यन्त उग्र व्याधि। अम्राज़ हाद्दह्।

अम्राज़ हाद्दतुल् मुज़्मिनात amráz-háddatul-muzminát–अ० ... जिनकी अवधि २१ दिन से ३९ दिन ... करती है। देखो—अम्राज़ हाद्दह्।

अम्रातः,-कः amrátah,-kah–सं० पुं० Hogplum (Spondias mangifera.) श्र० मा०। ... आम्रातकः।

अम्र: amrálakah-सं० पुं० अम्बाड़ा, आम्रातक। (Spondias mangifera.)

आम्रावर्त्त: amrávarttah-सं० पुं० अमावट, आम्रावर्त। (The inspissated juice of the mango.) फा० इं०।

अम्रयात amriyyát-अ०

अम्रयात बत्न ahshául-batn-अ०

उदर आशय, जैसे—यकृत, आमाशय तथा आंत्र आदि। (Abdominal Viscerae.)

अम्रूच: amrúchah-फा० अमरूद, अमरुक (Pyrus Communis, Linn.)। यह अमरूद का पर्यायवाचक प्रयोग है। देखो—अमरूद। फा० इं० १ भा०।

अमरूद amrúta-हिं० पुं० अमरूद। A guava (Psydium Pyriferum.)

अम्रोई-झेलम, पं० (Debregeasia bicolor.) मेमो०।

अम्रोदा amroda-हिं० पुं० पथरचूर। पाषाण भेदी-सं०। पथरकुची-बं०। पान-ओवा-म०। (Coleus Aromaticus.)

अम्रोला amrolá-हिं० चूका या चांगेरी, आमरूल। (Rumex Acetosa.)

अम्रोला का सत्त amrolá-ká-satta
अम्रोला सत्व amrolá satva

हिं० पुं० काष्ठाम्ल, चूका का सत, चुक्र सत्त, अम्लाम्ल। Oxalic Acid (Acidum Oxalicum.) देखो—चुक।

अम्ल: amlah-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० खट्टा। मे अनुभूत होने वाले छः रसों में से एक। खटाई। जैसे—अम्बीर मातुलुङ्ग तथा निम्बुक प्रभृति।

गुण—लघु, उष्ण, रुचिकर, दीपन, हृदय को तर्पण करता, वातानुलोमक, बलकारी, कण्ठ में दाह उत्पन्न करता है। रा० नि० व० २०। इसका विपाक अम्ल तथा गुण में पित्तकारक और वात कफ के रोग को दूर करने वाला है। सु० सू०। प्रीतिकारक, पाचन, आर्द्रताकारक, इसके अधिक सेवन से भ्रान्ति, तृष, कफ, पाण्डु, कृशता और काम उत्पन्न होता है। रा० नि० व० १२। पाचन, रुचिकारक, पित्तजनक, कफ उत्पन्न कर्ता, दाहजनक, लघु, लेखन, उष्णवीर्य, स्पर्श में शीतल, मलभेदक, क्लेदकारक, वातनाशक, स्निग्ध, तीक्ष्ण, सारक तथा शुक्र, विबंधनाशक तथा दृष्टिनाशक और हर्षकारक है। अतिसेवन-से भ्रम, तृषा, दाह, तिमिर, शोथ, विस्फोटक, कुष्ठ, पाण्डु उत्पन्नकर्ता रक्तज और ज्वरनाशक है। भा० पू० १ भ०। लघु, पाचक, पित्त, कफ, वृद्धि, क्लेद, उष्ण तथा वातनाशक है। राज०।

नि० इसका शाब्दिक अर्थ खट्टा है। हामिज़, हम्ज़, हिम्ज़-अ०। तुर्श-फ़ा०। अम्बल-बं०। साउर (Sour), एसिड (Acid) -इं०। किन्तु अर्वाचीन परिभाषा में तेजाब अर्थात् एसिड (Acid) द्रव या अद्रव के लिए व्यवहार में आता है। देखो—एसिड।

अम्लम् amlam-सं० क्ली० (१) अम्लवेतस फल। (२) कांजी। (३) घोल। रा०नि०। (४) वृक्षफल। नि० शि० अरोचक चि०। (५) श्वेत चन्दन। रा० नि० व० १२।

अम्लक: amlakah-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० बड़हर। लकुच वृक्ष। (Artocarpus Lakoocha)

अम्ल-कन्द: amla-kandah-सं० पुं० एक जंगली बूटी की जड़ है, जिसके पत्ते पान के समान और पुष्प मकरंद तथा फल लाल मिर्च के तुल्य लम्बे और बीज नींबू के बीज के सदृश होते हैं।

अम्ल-करञ्ज: amla-karanjah-सं० पुं० करञ्जभेद। टक् करञ्जा-बं०। इसका फल—तृष्णानाशक, गुरु, रुचिकारक और पित्तकारक है। राज०। (A kind of karanja)

अम्लका amlaká-सं० स्त्री० (१) पालंकशाक प० मु०। (२) पलाशीलता। रा० नि० व० ४।

अम्लका amlikā–वं० (Vitis Indica.) अम्भुका। अन्नुक।

अम्ल-काञ्जिकम् amla-kánjikam–सं० क्लो० (Sour gruel.) काञ्जिक, कांजी। च० द० ग्रहणी–चि० महाषट्पल घृत। See–Kánji

अम्ल-काण्डः amla-kándah–सं० पु० मकेद लहसुन, शुक्र रसोन। (White garlic.) वै० निघ०। क्ली० (२) लोणी, लवण तृण। लोणा घास–व०। रा० नि० व० ८।

अम्लकादि चूर्ण amlakádi chúrna–सं० क्ली० चनुराम्ल १ तोला, त्रिकुटा ३ पल, लवण ४ पल, चीनी ८ पल इनका चूर्ण दाल और चावलादि में डालकर सेवन करने से खांसी, अजीर्ण अरुचि, श्वास, हृद्रोग, पांडु और गुल्म का नाश होता है। च० सं०।

अम्ल-कुचाई amla-kucháí–वं०, हि० स्त्री० (१) एक भारतीय जंगली कण्टकयुक्त वृक्ष है जिसके पत्ते इमली के पत्तों के समान, किन्तु उनसे छोटे होते हैं। (२) सुरा।

अम्ल-कुचि amla-kuchi–व० पथरचूर, पाषाणभेदी, अश्मन्तक, हिमसागर। (Coleus Aromaticus.) इ० मे० मे०।

अम्ल-कुचिः amla-kúchih–सं० पु० वृक्ष विशेष। (A tree.)

अम्ल-केशरः amla-kesharah–सं० पु० (१) बिजौरा नींबू, मातुलुङ्ग। (Citrus medica.) प० मु०। (२) दाड़िम्ब वृक्ष, अनार।

अम्ल केशरी amla-keshari–सं० पु० अम्ल-रस निम्बुक वृक्ष। गोड़ा नींबू, गोड़ा लेबू–वं०। वै० नि०।

अम्लकोशः (शाकः) amla-koshah,-shá-kah–सं० पु० तिन्तिड़ी वृक्ष। अम्लिका, अ(इ)मली (Tamarindus Indicus.) मद० व० ६।

अम्ल गोरसः amla-gorasah–सं० पु० माठा, तक्र, घोल। अम्ल तक्र, खट्टी छाछ। टक् घोल –वं०। बटरमिल्क (Buttermilk.) –इं०।

अम्ल चाङ्गेरी amla-chángeri–सं० (१) चांगेरी भेद। टक् आमरुल–वं०। चि० ३ अ० अगु० तैल। (२)–हि० दक्खिनमें इसे चौंगर कहते हैं। एक भांति का क्षुप है, जो अम्ल रसयुक्त तथा रहने के बराबर होता है। मु० र०।

अम्ल चुक्रिका amla-chukriká–सं० चिञ्चाम्ल, चिञ्चासार, अम्लसार। अम्लम –वं०। रा० नि० व० ११। chinchásárah.

अम्ल चूड़ः amla chúdah–सं० पु० (१) शाकाम्ल, चुक्राम्ल। (२) तेंतुलेर अम्बल–व०। इमली के रस से किया हुआ एक प्रसिद्ध गाढ़ा पदार्थ है। नि० व० ११। (२) अम्लशाक। चुक रा० नि०।

अम्लच्छदा amlachchhadá–सं० पु० भोज वृक्ष। See--Bhojapatra.

अम्लज amláj–अ० (१) आंमला। (Phyllanthus emblica.)

अम्लज áamlaj–अ० खर्नूबभेद। S... kharnúb.

अम्लजन amlajana–हिं० पु० ... ऊष्मजन। (Oxygen.)

अम्लजन मिश्रण amlajána mishrana–हिं० पु० ऑक्सिजन मिश्रण। (Oxygen mixture.)

अम्लजनीकरण amlajani-karana–पु० ऑक्सिजनीकरण। (Oxidation)

अम्लजम्बीरः amla-jambírah–सं० (Citrus medica) बड़ा नींबू, ... निम्बुक वृक्ष। टकलेबू गाछ –वं०। ... –मद०। रा०नि०व० ११। ...

अम्लजिद amlajida–हिं० पु० ... उज्जिद। (Oxide.)

अम्लटकः amla-takah–सं० पु० ... वृक्ष। अम्ल कुचाई–वं०,हि०। See–... antakah.

...mlat-अ० वह मनुष्य जिसके शिर दाढ़ी के अतिरिक्त और कहीं बाल न हों।

...amlatá-हिं० स्त्री० अम्लत्व, खट्टापन। ...ता-अ०। तुर्शी-फ़ा०। (Acidity, ...uness).

... amla-janak-हिं० पुं०(Antacid) ...जनक।

... amla-túta-सं० पुं० खट्टातूत। ...-túta

... amla-trinah-सं० पुं० ... ...।

... amla-tvak-सं० पुं० चार वृक्ष। ...ज। पियाल या चिरौंजी का पेड़। चारोली ...हिं०। (Buchanania latifolia, ...ironjia sapida.)

...कः amla-dolakah-सं० पुं० चुक्र। पालङ्-बं०। अम्बोटी(ली)-म०। बैं० ...। See-chukra

...: amladravah-सं० पुं० बीजपूर ...। भा० म० १ भा० जिह्वा० उत्त० चि०। ...म्लद्रवः संशमयेद्रसज्ञां।"

...: amla-dadhih-सं० क्ली० खट्टा दही। ...गुण—जिस दही में ... मिठास जाता रहा हो ...खट्टा तथा अव्यक्त रसयुक्त हो गया हो उसे ...दधि कहते हैं। गुण—यह अग्नि प्रदीपक ...पित्तवर्द्धक, रक्तवर्द्धक तथा कफवर्द्धक है। सु० ...२०।

...द्रव्यम् amla-dravyam } --सं० ...नायकम् amla-náyakam } क्ली० ...ल वेतस। चैकल-बं०। रा० नि० व० ६। ...म्लवेतस-मह०। See--amlavetasah-

...निम्बूकः amla-nimbúkah-सं० पुं० ...म्ल निम्बुक। गोड़ा लेबू-बं०। मीठे इरनिम्बू ...हिं०। वै० निघ०।

...शा amla-nishá-सं० स्त्री० शटी, ...चूर। शटी-बं०। (Curcuma zedo-...ria) रा० नि०।

...ञ्चकम् amla-panchakam-सं० क्ली० (१) मुख्य पाँच प्रकार के खट्टे फल जैसे अमार ... चूका, विषांविल, और अम्लवेत इन्हें अम्ल-पञ्चक कहते हैं। गुण—ये खट्टे रुचिकारी कफ और खाँसी को उत्पन्न करने वाले, कड़वे और जड़ताकारक हैं, तथा विष्टम्भ, शूल, वात, शुक्र, गुल्म और बवासीर को दूर करते हैं।

(२) फलाम्लपञ्चकम्, बिजौरा नीबू, जम्भीरी नीबू, नारंगी, अम्लवेत और इमली ये दूसरे फलाम्लपञ्चक हैं। गुण—शोफकारक मदजनक तथा विष्टंभ, शूल, गुल्म, बवासीर, शुक्र और वातनाशक हैं। रा० नि० व० २१। देखो—पञ्चाम्ल (फल)म्।

अम्ल पञ्च फलम् amla-pancha-phalam --सं० क्ली० देखो--अम्लपञ्चकम्।

अम्लपत्रः amlapatrah--सं० पुं० (१) दण्डालु (क)। म्यास धालु-बं०। वै० निघ०। See-Dandáluh. (२) अश्मन्तक वृक्ष। (See-Ashmantak) रा० नि० व० ६। (३) वृद्धपत्र तुलसी वृक्ष। र० मा०।

अम्लपत्रम् amla-patram--सं० क्ली० चुक्र शाक, चूका। (Rumex Scutatus) रा० नि० व० ७।

अम्लपत्रकः amla-patrakah--सं० पुं० (१) भेण्डा, भिण्डी (Hibiscus Esculentus)। (२) अश्मन्तक वृक्ष-सं०। अम्तकुचाई, आकुरा-बं०। (Coleus Aromaticus) रा० नि० व० ६। मद० व० १। अम्ल-लोणिका चूका। आमरूल-बं०। (Rumex Scutatus.) भा० पू० १ व०।

अम्लपत्रा amlapatrá--सं० स्त्री० शुक्तला। थोकरा-बं०। See-shuklalá। प० मु०।

अम्ल पत्रिका amla-patriká--सं० स्त्री० चांगेरी, चूका। तुर्ती, आंबेता-हिं०। चुके तुर्श-बं०। (Rumex Scutatus.) रा० नि० व० ५।

अम्लपत्री amla-patri--सं० स्त्री० (१) पलाशी लता। See-Paláshi। रा० नि०

च० ४। (२) चांगेरी, चूका। (Rumex Scutatus) रा० नि० व० ५। (३) चुद्राम्लिका-सं०। सुदे गुनी-बं०।

अम्लपनसः amla-panasah--सं० पुं० लिकुच वृक्ष, बड़हर। देखो, मान्दार गाछ-बं०। थोरीचे झाड़-म०। वै० निघ०। (Artocarpus Lakoocha.)

अम्लपर्णिका amla-parnika }
अम्लपर्णी amlaparni } -सं०
स्त्री० वृक्ष विशेष। सुरपर्णी। भा०। गुण—अम्लपर्णी वात, कफ तथा शूल विनाशिनी है। वै० निघ०। See-Surapaini.

अम्लपादपः amla-pádapah—सं० पुं० वृक्षाम्ल, अमली। तेंतुल गाछ-बं०। कोकंबी-म०। वै० निघ०।

अम्लपित्तम् amla-pittam—सं० क्लीं० }
अम्लपित्त amla-pitta--हिं० संज्ञा पुं० }
(Hyper-acidity), सावर बाइल (Sour-bile)-- इं०। हुमूज़ अन--अ०। रोग विशेष। इसमें जो कुछ भोजन किया जाता है, सब पित्त के दोष से खट्टा हो जाता है।

निदान

पूर्व सञ्चित पित्त, पित्तकर आहार विहार से जलकर अम्लपित्त रोग पैदाकरता है। पित्त विदग्ध होने पर भोजन अच्छी तरह पचता नहीं है, जो पचता है वह भी अम्लरस में परिणत हो जाता है, इसी से अम्ल आस्वाद होता है और खट्टी डकार आदि उपद्रव उपस्थित होते हैं। अजीर्ण होने पर भोजन, गुरु पदार्थ और देरसे पचने वाली वस्तुओं का भोजन, अधिक खट्टे और भुने द्रव्यों का खाना इत्यादि कारणों से अम्लपित्त रोग उत्पन्न होता है। कहा भी है—

विरुद्ध दुष्टाम्ल विदाहि पित्तप्रकोपि पानान्नभुजो विदग्धम्। पित्तं स्वहेतूपचितं पुरा यत्तदम्लपित्तं प्रवदन्ति सन्तः॥ (मा० नि०)

अर्थ—विरुद्ध (चीर, मत्स्यादि), दुष्ट(बासीअन्न), खट्टा विदाहि तथा पित्त को प्रकुपित करने वाले अन्नपान (तक्रसुरादि)के सेवन से विदग्ध (अम्लपाक) हुआ और पहिले औषधों में स्थित विदाह आदि कारणों से पित्त सञ्चित हुआ है, उसके दूषित अम्लपित्त कहते हैं।

लक्षण

आहार का न पचना, ग्लानि (... श्रमित होना), वमन आना या ... तिक्त तथा खट्टी डकार आना, देह ... हृदय और कंठ में दाह होना और ... लक्षण अम्लपित्त के वैद्यों ने कहे हैं। ... अधः भेद से यह दो प्रकार का कहा ...

ऊर्ध्वगत अम्लपित्त के लक्षण

ऊर्ध्वगत अम्लपित्त में हरे, पीले, ... किंचित् लाल, अतिपिच्छिल, निर्मल, ... मांस के धोवन के जल के समान कड़ुआ ... कटु, तिक्त इत्यादि अनेक रसयुक्त ... द्वारा गिरते हैं। कभी भोजन के विदग्ध ... अथवा भोजन के न करने पर तिक्त ... कड़ुआ वमन होता है और ऐसी ही ... है, गला हृदय तथा कोख में दाह और ... पीड़ा होती है। कफ पित्त से उत्पन्न ... में हाथ पैरों में दाह होता है शरीर ... अन्न में अरुचि, ज्वर, खुजली और ... तथा सैकड़ों फुन्सियों और अन्न न ... अनेक रोगों के समूह से युक्त होता है।

अधोगत अम्लपित्त के लक्षण

प्यास, दाह मूर्च्छा भ्रम, मोह (... इन्द्रियों कामोह) इनको करनेवाला विविध प्रकार का होके गुदा के द्वारा निकलना, हृल्लास (जी का मचलाना), कोठ होना, मन्द होना, हर्ष,स्वेद अंग का ... आदि लक्षणों से जो युक्त होता है उसे अधो-गत अम्लपित्त कहते हैं।

दोष संसर्ग से अम्लपित्त के ल...

वात युक्त, वात कफ युक्त और ... दोषानुसार, अम्लपित्त के ... कहे हैं। कारण यह है कि ...

अधोगतमें अतिसार के लक्षण से इसके भेदों निर्णय करना कठिन है। अस्तु, वैद्य को ारपूर्वक इस रोग की परीक्षा करनी चाहिए। वे इनमें से प्रत्येक का पृथक् पृथक् वर्णन किया ा है—

वात प्रकोप जनित अम्लपित्तमें कम्प, प्रलाप र्शों, चिउँटी काटने की सी चिमचिमाहट झनझिनाहट), शरीरकी शिथिलता और शूल, ों के आगे अँधेरा, भ्रान्ति, इन्द्रिय तथा मन मोह और हर्ष (रोमाञ्च) ये लक्षण होते हैं।

कफ युक्त अम्लपित्त में कफ का थूकना, ीर का भारी रहना और जड़ता, अरुचि, शी- ता, साद (अंग की ग्लानि, अवसाद), न, मुख का कफ से लिप्त रहना, मन्दाग्नि, ा का नाश, खुजली और निद्रा ये लक्षण होते ।

वात कफ युक्त अम्लपित्त में ऊपर कहे हुए नों के चिह्न होते हैं।

कफ पित्त के अम्लपित्त में ये लक्षण होते —भ्रम (तम), मूर्च्छा, अरुचि, वमन, आल- , शिर में पीड़ा, मुख से पानी का गिरना प्रसेक) और मुख का मीठा रहना।

अम्लपित्त की साध्यासाध्यता

अम्लपित्त रोग नया होने पर तो साध्य ाता है, पर बहुत दिन का अर्थात् पुरातन याप्य चिकित्सा करने पर अच्छा हो जाता है, परन्तु ब चिकित्सा करना बन्द कर दिया जाता है तब सका पुनरावर्तन होता है।) और अहित आहार था अहित आचार वाले पुरुष का अम्लपित्त कष्टसाध्य होता है।

इस रोग के एक बार उत्पन्न होने पर फिर सका दूर होना बहुत कठिन है। अतएव रोग के उत्पन्न होते ही चिकित्सा करना उचित है। अन्यथा रोग पुराना होकर पुनः प्रायः छूटता नहीं।

चिकित्सा

अम्लपित्त में पटोल, अरिष्ट (रीठा), अडूसा, मैनफल, मधु तथा लवण (सैंधव) प्रभृति द्वारा वमन कराएँ और निशोथ के चूर्ण को आमले के रस और शहद में मिलाकर विरेचन दें। ऊर्ध्व-गत अम्लपित्त को वमन द्वारा और अधोगत को रेचन द्वारा शमन करें। यथा—

अम्लपित्ते तु वमनं पटोलारिष्ट वासकैः।
कारयेन् मदनैः क्षौद्रैः सैन्धवैश्च तथा भिषक्॥
विरेचनं त्रिवृच्चूर्णं मधुधात्री फलद्रवैः।
ऊर्ध्वगं वमनैर्विद्वानधोगं रेचनैर्हरेत्॥

भा० म० खं०।

अस्तु, वमन हेतु जल में सेंधानमक (जरा सा) डालकर एक पाव या आधसेर की मात्रा में गरम करके पीने के बाद गले में उंगली डालनेसे वमन होगा। इससे ऊर्ध्वगामी अम्लपित्त बहुत कुछ अच्छा होजाता है। अधोगामी अम्ल पित्त में सप्ताह में एक दिन या दो दिन चौअन्नी भर "अविपत्तिकर चूर्ण" चौअन्नी भर चीनी के साथ विरेचन के लिए सेवन करना चाहिए। अविपत्तिकर चूर्ण इस रोग की एक उत्तम औषध है। जिस दिन इसका सेवन करे उस दिन अन्य औषध सेवन नहीं करनी चाहिए, स्नान-आहार भी निषिद्ध है। शाम को मानूदाना या बारली का सेवन करें।

तीक्ष्ण मसाला वर्जित जौ या गेहूँ की बनी चीजें, लाजयुक्त (लावा या धान की खील का सत्तू) शर्करा या मधु में मिलाकर पिलाने या भूसी से साफ किए हुए जौ, गेहूँ तथा आमला द्वारा पकाया हुआ जल, दालचीनी, इलायची और तेजपत्र के चूर्ण मिलाकर पिलाने से अम्ल-पित्त जन्य वमन तत्काल दूर होता है।

अम्लपित्तहर औषधें
(अमिश्रित औषधें)

अडूसा, पर्पटक (पित्तपापड़ा), कुलथी, पाठा, यव, चन्दन, धान्य आमला (रस), नागकेशर, जीरा, करञ्ज, जम्बीर, पाटला, कदली (फल), (Pyrosis) पीतशाल, सोडियम के लवण और योग, गंधक और उसके योग, प्रातः काल त्रिफला या हरीतकी के शीत कषायों का रेचन तथा अन्य तिक्त पित्तहर द्रव्य जैसे गुडूची,

पटोलपत्र, किराततिक्त (चिरायता), कटुकी, धान्यक, द्राक्षा, मधुयष्टी के कषाय या योग, कूष्माण्ड, आमलकी, मण्डूर, लोह भस्म और अभ्रक आदि के योग एवं भोजन के दो तीन घंटे बाद चार शीतल जल से दिए जाते हैं।

मिश्रित औषधें

अविपत्तिकर चूर्ण, पञ्च निम्बादि चूर्ण, पिप्पली-खंड, बृहत् पिप्पली खंड, शुण्ठि खंड, सौभाग्य शुण्ठि मोदक, खंड कूष्मांड अवलेह, अभयादि अवलेह, अम्ल पित्तान्तक मोदक या सुधा, त्रिफला मण्डूर, सित मण्डूर, पानीय भक्त वटी, सुधावती गुटिका, बृहत् सुधावती गुटिका, पञ्चानन गुटिका, भास्करामृताभ्र, अम्ल पित्तान्तकलौह, सर्वतोभद्र लौह, लीलाविलास रस, द्रक्षांग, पिप्पली घृत, पटोल शुण्ठि घृत, शतावरि घृत, नारायण घृत, दार्व्याद्य घृत, जीरकाद्य घृत, श्री विल्व तैल, नारिकेल खंड, बृहन्नारिकेल खंड, बृहत् अग्निकुमार रस, भास्कर लवण, शुण्ठी खंड, और अम्ल पित्तारि चूर्ण।

पथ्यादि—अम्लपित्त और शूल रोग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन भर आहार सुख से वञ्चित रहना पड़ता है। उनको कडुए पदार्थों को छोड़ अन्य कोई द्रव्य हितकर नहीं। दूध, अधिक नमक, खट्टा, भूना और पीसा हुआ द्रव्य और मद्य सर्वदा निषिद्ध है।

अम्लपित्त हर amlapitta-hara-हिं० पुं० अम्लपित्तनाशक। देखो—अम्लपित्त।

अम्लपित्तहारक पाकः amlapittahárakapákah-सं० पुं० त्रिकुटा, त्रिफला, भांगरा, दोनों जीरा, धनियाँ, कूट, अजमोद, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, काकडासिंगी, कायफल, मोथा, इलायची, जायफल, जटामांसी, पत्रज, तालीशपत्र, केशर, बन कचूर, कचूर, मुलहठी, लवंग, लाल चन्दन, प्रत्येक समान भाग ले। सर्व तुल्य सोंठ का चूर्ण, सब से द्विगुण मिश्री, गाय का दूध चार गुना मिलाकर विधिवत् पाक बनाएँ।

मात्रा—१ तो०, पानी या दूध के साथ।

गुण—अम्लपित्त, अरुचि, शूल, हृद्रोग, वमन, कण्ठदाह, हृदय की जलन, शिरोशूल, मन्दाग्नि तथा हृदय, पार्श्व, एवं बस्ति विशेष कर अम्लपित्त, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर का नाशक है। वै० श० द०।

अम्लपित्तान्तक मोदकः amlapittántakamodakah-सं० पुं० सोंठ, पीपरा... बत्तीस बत्तीस तोले लें। इन्हें चूर्ण कर... मिलाकर इसमें घृत ६४ तो०, गोदुग्ध... मिलाकर पकाएँ। पुनः लवंग, नागकेशर, अजवाइन, मेथी, वच, चन्दन, मुलहठी, देवदारु, हड़, बहेड़ा, आमला, तेजपात, ... दालचीनी, सेंधा नमक, हाऊबेर, कपूर, ... फल, कायफल, जटामांसी तथा अभ्रक, ... चाँदी की भस्म तालीसपत्र, पद्माख, मजीठ, वंसलोचन, पीपलामूल, शतावर, कुरण्टा, जायफल, जावित्री, ... पीपर, नागरमोथा, कपूर, वायविडंग, ... खिरेटी, गुरुच, केवाँच के बीज, ... चन्दन, देवताड़, चतुर्थांश विधि से ... लोहा और काँसा की भस्में प्रत्येक एक ... स्वर्ण की भस्म ६ मासे, इन सबको मिलाकर तैयार करें।

गुण—यह छर्दि, मूर्च्छा, दाह, खाँसी, श्रम, वातज, पित्तज, कफज, और सन्निपातज ... २० प्रमेह, सूतिका रोग, शूल, मन्दाग्नि, ... कृच्छ्र, गलग्रह और प्रत्येक रोगों को ... है। भैष० अम्लपित्त० चि०।

अम्लपित्तान्तक रसः amlapittántakarasah-सं० पुं० पारद भस्म, ... अभ्रक भस्म प्रत्येक समान भाग ले ... इसमें से १ मा० शहद के साथ चाटने से ... पित्त नष्ट होता है। रस० यो० सा०।

अम्लपित्तान्तक लौहः amlapittántakalouhah-सं० पुं० (१) पारा, ... लोहे की भस्म और इन सब भस्मों के ... हड़ को पीस शहद मिलाकर एक मास ... चाटने से अम्लपित्त शान्त होता है। भैष० अम्ल० ...

(२) यह रस अम्लपित्त नाशक है। ... चि०। र० सा० सं०।

...पित्तान्तको रसः amlapittántako-sah-सं० पुं० रसमिन्दूर, अभ्रभस्म, ... भस्म, समान भाग लेकर मन के समान इद ... जाकर चूर्ण करें। मात्रा—१ मा०। शरदके ... उपयोग करने से अम्लपित्त का नाश होता ... रस० रा० सु० अम्ल० पि० चि०।

...ष्टा amla-pishṭá-सं० पुं० चांगेरी। (Rumex Scutatus.)

...रम् amlapúram-सं० क्ली० (१) ...लेका। कोकमफल। तिन्तिड़ी। तेंतुल-बं०। ...म्भी-मं०। (२) वृक्षाम्ल रा० नि० व० ६।

...ष्पिका amla-pushpiká-सं० स्त्री० ...पाषाण वृक्ष। जंगली सन का पेड़-हिं०। ...शण-बं०। रानताग-म०। A wild Indian Hemp (Crotalaria juncea.) वै० निघ०।

...लः amla-phalah-सं० पुं० आम्रवृक्ष, ...म। The mango tree (Mangifera Indica) रा० नि० व० ११। ...नैतड़ीक। नीबू भेद।

...लम् amla-phalam-सं० क्ली० वृक्षा-...। विषाविल-हिं०। तेंतुल-बं०। रा० नि० ...६।

...ला amla-phalá-सं० स्त्री० कन्था-...। लघु कन्थारी-म० हिं०। वै० निघ०।

...दरः amla-badarah-सं० पुं० अम्ल-...लिका, खट्टा बेर। टक कुल-पं०। च० सू० अ०।.

...ल amla-bela-हिं० पुं० अम्ललता। ...दराक-पं०। अमलोलवा-सं० प्रां०। (Vitis trifolia.)

...दनः amla-bhedanah-सं० पुं० (१) ...म्लवेतस। (See--Amlavetasa.) ...० नि०। (२) चुक्र (Rumex Acetosella.)

...रीषः amla-márishah-सं० पुं० ...म्लशाक विशेष। अम्बल नटिया-बं०। सारा ...हिं०। गुण—अम्लमारीष दोष कोपकारक, ...रु तथा पटु है। वै० निघ०।

अम्लमूलकम् amla-múlakam-सं० क्ली० व्युषित अर्थात् बासी (धरी हुई) काँजी में पकाई हुई मूली। प० प० ३ ख०। च० द० संग्रहणी गूढ़चुक्र। "व्युषितं काञ्जिकं पक्वं मूलकं स्वम्लमूलकम्।"

अम्लमेहः amla-mehah-सं० पुं० पित्तजन्य मेहरोग भेद। पित्त प्रमेह। इसमें रोगी अम्लरस-गंधयुक्त पेशाब करता है। सु० नि० ६ अ०। "अम्लरस गन्धमम्ल मेही।"

अम्लरङ्गेच्छु श्वेताणु amla-rangechchhu-shvetáṇu-हिं० संज्ञा पुं० इयोसिनोफाइल ल्युकोसाइट (Eosinophile leucocyte) —इं०। रक्त में पाए जाने वाला एक प्रकार का श्वेताणु। ये कण बहुरूपी मींगी वालों से कुछ बड़े होते हैं। इन कणों की मींगी या तो गोल होती है या नाल की भाँति मुड़ी हुई। कभी कभी इसके कई टुकड़े होते हैं जो एक दूसरे से तारों द्वारा जुड़े रहते हैं। इनके प्रोटोप्लाज़्म (जीवोज) में बहुत मोटे मोटे दाने होते हैं जिनमें यह गुण है कि जब कण इयोसीन (एक प्रकार का रंग है। इसकी प्रतिक्रिया अम्ल होती है) आदि अम्ल रंगों में रंगे जाते हैं तो ये खूब गहरा रंग पकड़ते हैं। इन कणों के लिए अम्ल-रंगेच्छु शब्द का प्रयोग इसी कारण होता है। इन कणों की संख्या प्रति सैकड़ा २ से ४ तक होती है। इ० शा० र०।

अम्लरुहा amla-ruhá-सं० स्त्री० मालव देश प्रसिद्ध नागवल्ली भेद, ताम्बूल भेद। गुण—यह रुचिकारी, दाहघ्नी, गुल्महरी, मदकरी, अग्निबल-वर्द्धिनी और आध्मान नाशिनी है। रा० नि०।

अम्ललता amla-latá } —सं० स्त्री०
अमललता amala-latá } अम्लबेल, अमलोलवा-हिं०। गिदड़दाक-पं०। (Vitis Carnosa. *Wall.*) फा० इं० १ भा०।

अम्ललोणिका amla-loṇiká } सं० स्त्री०
अम्ललोणी amla-loṇí } (१) लोणी विशेष। पर्याय—चाङ्गेरी, चुक्रिका, दन्तशठा,

अम्लष्ठा (ष्ठ्र)। चांगेरी। आमरुल शाक-बं०। चुका-म०। (Oxalis Corniculata.)

गुण—दीपन, रुचिकारी, कफवात नाशक, पित्त कारक और खट्टी है तथा ग्रहणी, अर्श, कुष्ठ और अतिसार का नाश करने वाली है। भा० पू० १ भा०।

मात्रा—२-३ मा०। देखो—चाङ्गेरी।

(२) चुक्र, पालङ्क विशेष। चुका पालङ्-बं०। (Rumex monadelpha) र० मा०।

(३) अमलोनी-हिं०। खुर्फा, कुल्फा-अ०। (Portulaca oleracea, *Linn.*) देखो—लोणी।

अम्लराज amla-rája—हिं० पुं० (Aqua rigia.) लवणाम्ल और नैत्रिकाम्लका मिश्रण, जो *अत्यन्त बलवान् धातुद्रावक है, अम्लराज* कहलाता है।

अम्लवती amla-vati-सं० स्त्री० (१) चाङ्गेरी। आमरुल-बं०। (Oxalis corniculata) रा० नि० व० ५। (२) क्षुद्राम्लिका। क्षुदेगुनी-बं०।

अम्लवर्गः amla-vargah-सं० पुं० अम्लवर्ग की ओषधियाँ निम्न हैं, यथा (१) चांगेरी, (२) लकुचा, (३) अम्लवेतस, (४) जम्बीरक, (५) बीजपूरक (बिजौरा नीबू), (६) नागरंग (*नारंगी*), (७) दाड़िम (*अनार*), (८) कपित्थ (कैथ), (९) अम्लबीज (१०) अम्लका, (११) अम्बष्ठा, (१२) करमर्दक, (१३) तिन्दुक, (१४) कोल (बेर) और (१५) तिन्तिड़ी। देखो—रा० नि० व० २२। "अम्बष्ठ सहितं द्विरेतदुदितं पञ्चाम्लकं तद्द्वयं, निर्ज्ञेयं करमर्दनिम्बुकयुतं स्यादम्लवर्गाह्वयम्।" रसेन्द्रसारसंग्रह के लेखक के मतानुसार अम्लवर्ग की ओषधियाँ निम्न हैं, यथा—(१) अम्लवेत, (२) जम्बीर, (३) लुंगाम्ल (मातुलुंग), (४) चणक, (५) अम्लका, (६) नारंगी, (७) अमली, (८) चिंचाफल, (९) निम्बुक, (१०) चांगेरी, (११) दाड़िम और (१२) करमर्द। र० सं०।

अम्लवल्ली,-ल्लिका amla-valli, lliká-सं० स्त्री० त्रिपर्णीकन्द। See-Triparnikanda.

अम्लवाटकः amla-váṭakah-सं० पुं० आम्रातक, अम्बाड़ा। आंबाड़ा-मह०। (Spondias mangifera) वै० निघ०।

अम्लवाटा amla-váṭá
अम्लवाटिका amla-váṭiká } -सं०
अम्लवाटी amla-váṭi

अम्लरस युक्त नागवल्ली भेद, खट्टा रस युक्त पान। अंबोडे पर्ण-मह०। अम्लरस विशिष्ट पर्ण-बं०। रा० नि० व० ११। गुण—तिक्त, कटुरस युक्त, रूक्ष व उष्ण वीर्य, दाह करने वाली, निद्राहिनी, रक्त पित्त कुपित करने वाली, विष्टम्भ करने वाली, और वायु नाशक है। रा०। देखो—नागवल्ली।

अम्लवातकः,-वाड़कः amla-vátakah, -váḍakah-सं० पुं० आम्रातक, अम्बाड़ा। (Spondias mangifera)

अम्लवाष्पः amla-váshpah-सं० पुं० चांगेरी, चूका। (Oxalis corniculata) वै० निघ०।

अम्लवास्तु (स्तू) कम् amla-vástukam-सं० क्ली० चुक नामक शाक, अम्लवेतुया, टोवा चनो-बं०। रा० नि० व०।

अम्लविदुलः amla-vidulah-सं० पुं० अम्लवेतस। (Rumex vesicarius) निघ०।

अम्लविवेक amla-viveka-हिं० पुं० (Tests of acids.) अम्लपरीक्षा। एसिड।

अम्लवीजम् amla-vijam-सं० क्ली० वृक्षाम्ल, तिन्तिड़ी। रा० नि० व० ६।

अम्लवृक्षं,-क्षम् amla-vrikshah, -ksham-सं० क्ली०, पुं० वृक्षाम्ल, तिन्तिड़ी। भा० पू० १ भा०।

तसः(कः) amlavetasah,-kah पुं०, क्लीं०
amlaveta-हिं० संज्ञा पुं०

लवेत, अम्लबेत। यह एक प्रकार की लता जो पश्चिम के पहाड़ों में होती है और जिसकी सूखी हुई टहनियाँ बाजार में बिकती हैं। ये खट्टी होती हैं और चूरणमें पड़ती हैं। (२) चुक। का शाक, चुक पालक। चुकापालङ्-बं०। (Rumex acetosella) प०नु०। (३) चांगेरी। (Oxalis corniculata.) हिं० काट्टाम० गु०। (४) वृक्षाम्ल। एक वृक्ष विशेष। एक मध्यम आकारका पेड़ जो बागों में लगाया जाता है। च० द०। च० द० त्रि०। "सिन्धूत्थपथ्यैः साम्लवेतसैः"। सू० २ अ०।

संस्कृतपर्याय—अम्लः, चोरिः, रसाम्लः, अम्लवेतसः, वेतसाम्लः, शतवेधी, भीमः, भेदनः, अम्लांकुशः, भेदी, राजाम्लः, लभेदनः, रक्तसारः, फलाम्लः, अम्लनायकः, सहस्रवेधी, वीराम्लः, गुल्मकेतुः, द्राविः, शंख द्रावी(वि), मांसद्रावी (रा), वरांगी (र), कः (अ), गुल्महा, रक्तनाशि, महाम्लतुन्।

अमलवेद, अमलबे (बे) त (स), थैकल हिं०। थैकल (ड)-बं०। चूका-मह०। अमलवेत-गु०। तुर्श-फा०। रयुमेक्स वेसिकेरियस (Rumex vesicarius, *Linn.*), रयुमेक्स क्रिस्पस (Rumex crispus) लें०। कण्ट्री या कॉमन सॉरेल (Country or Common sorrel)-इं०।

अम्लवेतसवर्ग

(*N. O. Polygonaceæ*).

उत्पत्ति-स्थान—भारतवर्ष (कोच विहार)।

वानस्पतिक-वर्णन—एक मध्यम आकार का पेड़ जो फल के लिए बागों में लगाया जाता है। पत्र बड़ा, चौड़ा और कर्कश होता है। आषाढ़ में इसमें पुष्प लगते हैं। पुष्प सफेद होता है। शरत् काल में फल पकते हैं। फल गोल नाशपाती के आकार के, किन्तु उसकी अपेक्षा दुगुने या तिगुने बड़े कच्चे पर हरिद्वर्ण के और पकने पर पीले और चिकने होते हैं। इसको थैकल कहते हैं। इस फल की खटाई बड़ी तीक्ष्ण होती है। इसमें सूई गल जाती है। यह अग्निसंदीपक और पाचक है, इस कारण यह चूरण में पड़ता है। यह एक प्रकार का नींबू है।

कोचविहार राज्य में सर्वत्र अम्लवेतस के वृक्ष प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होते हैं। राजनिघण्टुकार ने यथार्थ ही लिखा है, "भोट देशे प्रसिद्धम्"। हमारे देश में जिस प्रकार आम को काट सुखाकर रखते हैं उसी प्रकार कोचविहारमें वहाँ के निवासी अमलवेत के पके फल (थैकल) को काट सुखा कर रखते हैं। कोई कोई इस प्रकार सुखाए हुए थैकल को औषधार्थ तक सर्षप तैल में भिगो कर रखते हैं। और इस तैल को वायु प्रशमनार्थ प्रयोगमें लाते हैं। शुष्क थैकल बहुत खिमटा होता है और सहज में चूर्ण नहीं होता।

प्रयोगांश—फल।

प्रभाव तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार –

अमलवेत कसैला, कटु, रूक्ष, उष्ण है तथा श्वास, कफ, वात, जन्तु, अर्श, हृद्रोग, अश्मरी और गुल्म को जीतता है। (धन्वन्तरीय निघण्टु)

अम्लवेत अत्यम्ल, कसैला एवं उष्ण है और वात, कफ, अर्श, श्रम, गुल्म तथा अरोचक का हरण करने वाला है तथा भोट देश में प्रसिद्ध है। (रा० नि० व० ६)

अत्यन्त खट्टा, भेदक, हलका, अग्निवर्द्धक, पित्तजनक, रोमांचकारक और रूक्ष है। इसके सेवन करने से हृद्रोग, शूल, गुल्म रोग, मूत्रदोष, मलदोष, प्लीहा, उदावर्त, हिचकी, अफरा, अरुचि, श्वास, खाँसी, अजीर्ण, वमन, कफजन्य रोग और वातव्याधि दूर होती है। इससे बकरे का माँस पानी हो जाता है (अर्थात् यह छाग-मांस द्रावक है), और जिस प्रकार चणकाम्ल (चने के तेजाब या खार) में लोहे की सूई गल

जाती है उसी प्रकार इसमें भी सूई डालने से सूई गल जाती है। (भा० पू० १ भा०)

अत्यन्त खट्टा, अफरा और कफ तथा वात नाशक है। यही पका हुआ (पकफल) दोषघ्न, श्रमघ्न, ग्राही और भारी है। (राज०)

अम्लवेतस के वैद्यकीय व्यवहार

चरक— भेदनीय, दीपनीय, अनुलोमक एवं वातश्लेष्मप्रशमक द्रव्यों में अम्लवेत श्रेष्ठ है। (सू० २५ अ०)। वङ्गसेन—प्लीहा में अम्लवेतस-सहिंजन की जड़ की छाल का सैंधवयुक्त क्वाथ प्रस्तुत कर उसमें बहु यैकल चूर्ण एवं अल्प पीपल व मरिच का चूर्ण मिश्रित कर प्लीहोदरी को सेवन कराएं। (उदर चि०)

वक्तव्य

चरकमें अम्लवेतस का पाठ हरितवर्ग के अन्तर्गत आया है (सू० २७ अ०)। चरक के गुल्म चिकित्साधिकार में द्रव्यान्तर से अम्लवेतस का बहुशः प्रयोग आया है। यथा—(१) "पुष्कर व्योष धान्याम्लवेतस"—। (२) "तिन्तिडीकाम्लवेतसैः" । (३) "शटी पुष्कर हिंग्वम्लवेतस"—(चि० ५ अ०)। सुश्रुतोक्त गुल्म चिकित्साधिकार में अम्लवेतस का बारम्बार उल्लेख दिखाई देता है। यथा—(१) "हिंगु सौवर्चलं * * अम्लवेतसैः। (२) "हिंग्वम्लवेतसाजाजी"— (उ० ४२ अ०)। अग्निमान्द्याधिकार के प्रसिद्ध "भास्करलवण" में अम्लवेतसका पाठ आया है।चक्रदत्तोक्त गुल्माधिकार में "हिंग्वाद्य चूर्ण", "काङ्कायन गुटिका" तथा "रसोनाद्यघृत" आदि योगों में अम्लवेतस व्यवहार में आया है।

नोट—जिन प्रयोगों में अम्लवेतस व्यवहृत हुआ है उनमें आजकल प्रायः वैद्य उपर्युक्त नं०१ में वर्णित लकड़ीका ही व्यवहार करते हैं; क्योंकि बाज़ारों में अमलवेत के नाम से प्रायः यही औषधि उपलब्ध होती है। यह शास्त्रोक्त अम्लवेतस नहीं, अपितु कोई और ही पदार्थ है। अस्तु, उपर्युक्त न० ४ में वर्णित अम्लवेतस (अर्थात् उसका शुष्क फल) ही औषध कार्य में लाना उचित है।

अन्यमत समालोचना

अम्लवेतस, चांगेरी, अम्ललोणी, स... और चुक्र ये पाँचों अम्ल द्रव्य हैं। प्राचीन व अर्वाचीन दोनों प्रकार के लेखकों ने इनको एक दूसरे के स्थान में उपयोग करने योग्य बना दिए हैं। प्रायः सभी जगह ... गया है। जहाँ अम्ललोणी का वर्णन ... वहीं उसके परियाय स्वरूप "चांगेरी" "चुक्र" आदि संज्ञाएं भी व्यवहार में ... हैं। उसी प्रकार जहाँ अम्लवेतस का वर्णन है वहाँ पर शेष तीन संज्ञाएं भी ... हैं। इसी प्रकार शेष भी जानना चाहिए ... अवसर पर उक्त संज्ञाओंको अपने अपने ... मुख्य और शेष को गौण समझना चाहिए।

डॉक्टर उदयचाँद एवं रॉक्सबर्ग ... ने अम्लवेतस का बंगला नाम "चुका" लिखा है। परन्तु ध्यानपूर्वक विचार करने से ... होता है कि उदयचाँद ने अम्लवेतस का ... ही नहीं किया है। अम्लवेतस के अर्थ में ... किया हुआ चुक्र का प्रयोग गौण है। ... मुख्य अर्थ चुकापालङ्क है। यदि ... संस्कृत नाम चुक्र एवं बंगला नाम चुका को ठीक मान लिया जाए तो उसका ... अशुद्ध रह जाता है और यदि ... ठीक रक्खा जाए तो संस्कृत आदि नाम ... रह जाते हैं। अतः उसको अम्लवेतस ... उचित है; किन्तु बंगला नाम ... लिखना चाहिए।

यूनानी मत से—प्रकृति-सर्द व ...। हानिकर्त्ता—वायुवर्द्धक तथा कफकारक। ... काली मरिच, लवण और अदरक। ... खट्टा तुरञ्ज आवश्यकतानुसार। ... अदद। मुख्य प्रभाव—रक्त व पैत्तिक ... को लाभदायक है।

गुण, कर्म, प्रयोग—(१) ... को लाभप्रद है, (२) पित्त का ... (३) पाचनकर्त्ता, (४) ... करता, (५) प्रदाहकर्त्ता, (६) ...

मन करता, (७) वातगोला की वायु को नकरता और (८) उदरशूल को लाभप्रदान ता है, (९) यदि यवक्षायन सुरामानी को नमक के साथ सात बार इसके अर्क में तर के सुखा लें तो प्रायः वातज तथा उदरीय धियों को लाभप्रद है और इसका चूरन मलित करना और भी गुणदायक है, (१०) ग, काली मरिच, लवण, यवक्षायन और क को कूटकर इसमें छिड़कर भर दें और तापमें रखें। दो चार दिन तक उसे लकड़ी से ते रहें। सूख जाने पर इसको चूर्ण कर रखें। के सेवन से यह क्षुधा की वृद्धिकर्त्ता, आहार पाचनकर्त्ता और प्लीहा को लाभ करता है। मु० । बु० मु० ।

ै amlaveda-हिं० पु० अम्लवेत। e-amlaveta

[सः amla-vedasah-सं० पुं० चुक्र। '-हिं०, बं०, द०। See--chukra

कम् amla-ṣhákam-सं० क्लो० (१) ाम्ल, तिन्तिड़ी -हिं०। तेंतुल-बं०। रा० ० व० ६। -पुं० (२) चुक नामक पत्र , चूका -हिं०। अम्लकुवाह, कट पालङ्, । पालङ्-बं० ।

संस्कृत पर्य्याय—शाकाम्लं, शुक्राम्लः, लघुम्लिका, चिक्काम्लं, अम्लचूडः, चिक्कामारः। गुण—अत्यंत खट्टा, वातनाशक, दाह तथा नाशक है। शर्करा के साथ मिलाकर सेवन ने से यह दाह, पित्त, तथा कफनाशक है। ० नि० व० ७।

ाकाख्यम् amla-ṣhákákhyam-सं० ० चुक नामक पत्र शाक, चूका। थोर चुका हिं०। (Rumex Acetosella). रा० ० व० ७।

ा amlashṭá-सं० स्त्री० चांगेरी। आंबोती हिं०। (Oxalis corniculata).

ा amlas-अ० समधरातल, सादा, हमवार, कना, वह वस्तु जिसका धरातल सम तथा कण हो। सॉफ़् (Soft)-इं०

अम्लस amlas-गन्धोक-बं०। गंधक आमलासार। See--gandhaka.

अम्लसरा amla-sará-सं० स्त्री० नागवल्ली भेद, पान। (A sort of betel-leaf) रा० नि० व० ९।

अम्लसारः amla-sárah-सं० पुं०
अम्लसार amla-sára-हिं० संज्ञा पुं०
अम्लवेतस, अमलवेत। (Rumex vesicarius) रा० नि० व० ६। (२) निम्बुक, नीबू। (Citrus medica) रा० नि० व० ११। (३) हिन्ताल (Hintála) रा० नि० व० ६। (४) चूक, चुक। (५) आमलासार गंधक।

अम्लसारं,-कम् amla-sáram,-kam-सं० क्लो०
अम्लसार amla-sára-हिं० संज्ञा पुं०
काँजी। काञ्जिक। चुक नामक काञ्जिक भेद। रा० नि० व० ५। See-kánjika.

अम्लस्कन्धः amla-skandhah-सं० पुं० अम्लरसान्वित द्रव्य समूह अर्थात् अम्लवर्ग की औषधियाँ। वे निम्न हैं—(१) आमला, (२) इमली, (३) बिजौरा, (४) अम्लवेत, (५) अनार, (६) चाँगेरी, (७) तक्र, (८) चूका, (९) पारेवत, (१०) दही, (११) आम, (१२) अम्बाड़ा, (१३) भव्य, (१४) कैथ और (१५) करौंदा। इनके सिवा कोशाम्र, लकुच, कुवल, झाड़ी बेर, बड़ा बेर, दही का तोड़ आदि द्रव्य अन्य ग्रन्थकारों के मतानुसार अम्लवर्ग की औषधियों के साथ वर्णित हैं। वा० सू० १० अ० श्लो० २६।

अम्ल स्तम्भनिका amla-stambhaniká-सं० स्त्री० तिन्तिड़ी, अमली, अम्लिका। (Tamarindus Indica.) वै० निघ०।

अम्लहरिद्रा amla-haridrá सं० स्त्री० (१) शठी, कचूर। (Curcuma zedoaria) रा० नि० व० ६। (२) अम्बाहलदी, आँबाहलदी, आम्रहरिद्रा। (Curcuma amada).

अम्ला amlá-सं० स्त्री० (१) चांगेरी। आमरूल-बं०। (Oxalis Corniculata.)

रा॰ नि॰ व॰ ५। (२) वनमातुलुङ्ग (Citrus medica)। (३) अम्लवेतस। (Rumex vesicarius.) रा॰ नि॰ व॰ ६। (४) श्रीवल्ली वृत्त। वर्षा मल्लिका-वं॰। रा॰ नि॰ व॰ ८। (५) तिन्तिडी, अमली, अम्लिका। (Tamarindus Indica.) रा॰ नि॰ व॰ ११। भा॰ पू॰ १ भा॰ फल व॰।

अम्लाङ्कुशः amlánkuṣbah-सं॰ पुं॰ अम्लवेतस। (Rumex vesicarius.) रा॰ नि॰ व॰ ६।

अम्लाटनः amlátanah-सं॰ पुं॰ महासहा वृत्त। कटसरय्या, लालगुलमखमल-हिं॰। झाँटी विशेष-वं॰। आयनाद्-द्र॰। वाणपुष्प- गौड़। भाषा में आयना कहते हैं। (Barleria Prionitis, *Linn.*).

गुण—कसेला, मधुर, तिक्त, उष्णवीर्य, तथा स्निग्ध है। भा॰ पू॰ १ भा॰ पु॰ व॰। ४ ख॰ म॰ भा॰ योनिरो॰ चि॰। चि॰ क्र॰ क॰ वर्षा॰ गर्भवेदनाहर योगान्तर्गत।

अम्लाढ्यः amláḍhyah-सं॰ पुं॰ करुण निम्बुक, नारंगी। नारांगा लेबुर-गाछ-वं॰। प॰ मु॰।

अम्लातः,-कः amlátah;-kah-सं॰ पुं॰ अम्लाटन वृत्त। See-amlátanah. भा॰ पू॰ १ भा॰ पु॰ व॰।

अम्लातकी amlátakí-सं॰ स्त्री॰ पलाशीलता। रा॰ नि॰। See-Paláshí.

अम्लादानः amládánah-सं॰ पुं॰ कुरण्टक वृत्त। कटसरय्या, पीयाबाँसा। वाणपुष्प- गौड़। (Barleria prionitis, *Linn.*)

अम्लादिः amládih-सं॰ पुं॰ (१) तिन्तिडी, अमली, अम्लिका। (Tamarindus Indica.) रा॰ नि॰ व॰ ६। (२) चुक्र नामक पत्र शाक। (Country sorrel.) रा॰ नि॰ व॰ ७।

अम्लाध्युषितः amládhyushitah-[illegible] पुं॰, क्ली॰

अम्लाध्युषित (रोग) amládhyu[illegible] हिं॰ संज्ञा पुं॰

(१.) सर्वगताक्षि रोग।

लक्षण—इस रोग में आँखों के भाग नीला और किनारे लाल हो जाते। कभी आँखें पक भी जाती हैं; इनमें [illegible] और पीड़ा होती है और पानी [illegible] अम्ल अर्थात् खटाई आदि के अधिक [illegible] होने के कारण इसको अम्लाध्युषित [illegible] मा॰ नि॰।

(२) करुण निम्बुक, मीठा [illegible] Citrus decumana. ([illegible] Linne.)

अम्लानः amlánah-सं॰ पुं॰ (१) [illegible] वृत्त। वाम्धुली वृत्त-वं॰। (Gomphrena globosa.) त्रिका॰। (२) [illegible] कटसरय्या। (Barleria pr[illegible] *Linn.*) त्रिरव॰। (३) अम्ल[illegible] आयना-वं॰। See-amlátana। [illegible] ४ भा॰ योनिरो॰ चि॰। (४) [illegible] मे॰ नत्रिक। (५) महाराज तरणी [illegible] नि॰ व॰ १०।

अम्लानम् amlánam-सं॰ क्ली॰ प[illegible] (Nymphaea nelumbo.) [illegible]

अम्लानक amlánaka } सं॰ पुं॰ [illegible]
अम्लान्तक amlántaka }

वाणपुष्प। (Barleria pr[illegible] *Linn.*)

अम्लाना amláná-सं॰ स्त्री॰ महाराज[illegible] वृत्त। यह वन सेवती-वं॰। [illegible] -महा॰। वै॰ निघ॰।

अम्लानिनी amlánini-सं॰ स्त्री॰ [illegible] पद्मिनी। (Nymphaea [illegible]) त्रिका॰।

अम्लाम्नी amlámni-सं॰ स्त्री॰ [illegible] (Oxalis monadelpha.)

ते amláyani-सं० स्त्री० मल्लिका। नेवारी हिं०। नेवाली-मह०। बं० ०।

त amlávala-सं० अमली, चिञ्चा, लका। (Tamarindus indica).

amliká-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री०) आम्र, आम। (Mangifera Ind-) रा० नि० व० ३। (२) पलाशी (Paláshi)। (३) माचिका, वा। रा० नि० व० २३। (४) अम्लो-, खट्टा डकार। मे०। (५) अमला 'hyllanthus emblica)। (७) अम्लिका। (८) चाङ्गेरी। (Rumex rniculata) रा० नि० व० २३।) भर्श रोग में तिन्तिड़ी अर्थ में और सर्वत्र र और पुरीषसंग्रहणादि योगों में अम्लिका मण्घ्र एवं वृद्दारक के अर्थोंमें प्रयुक्त है। सि० यो० अग्निमुख चूर्ण वृन्द। यो० अरोच० चि०। (१०) अमली, ली, इमली, कटारे-हिं०। अम्ली, अम्ली बांद, अम्ब्ली-द०। चिञ्चा, अम्लिका १०), तिन्तिड़ीकः, तिन्तिड़ीका, तिन्तिड़िकं, ीका, आम्लिका, आम्लीका, तिन्ति- (अ० टी०), वृक्षाम्लं, तिन्तिड़ि: ०), तिन्तिली, तिन्तिड़िका, आम्ब्रिका, , चुका, चुक, अम्ला, अत्यम्ला, , चुक्रिका, चारित्रा, गुरुपत्रा, पिच्छिला, तिका, चरित्रा (शब्दर०), शाक चुक्रिका, क्रिका, सुतिन्तिड़ी, चुक्रिका, अम्ली, दंतशठा, चिका-सं०। तेंतुल, तंतुल गाछ (बं० श०), री, आम्ली, तेतै (स० फा० इं०)-बं०। (म)रे हिंदी, हुमर, हूमर, सुबारा (स० ० इं०), हवारा, जोम-अ०। अम्बलह, तरहिंदी प्रमुर्माये-हिन्दी—फ़ा०। टैमेरिण्डस amarindus, टैमेरिण्डस इण्डिका (Ta- arindus Indica. Linn.)-ले०। मरिण्ड Tamarind-इं०। टैमेरिनिएर दी' इण्डी (Tamarinier de l' nde.)-फ्रा०। टैमेरिण्डी (Tama- rindi)-जर०। पुलि, पुलियम-पज़म-ता०। चिण्ट-पण्डु, चिण्ट-चेट्टु-ते०। पुलियम-पज़म (स० फा० इं०), पुलि, पजम (इं० मे० मॉ०)-मल०। हुणिसे, हुणिसिनयले, हुणशे- हण्णु-कना०। चिंच, चिचोक, चिञ्चा, चिण्टज, इमुली-मह०। आम्बली, आम्वलीनु, चिचोर -गु०। सियम्बुल-सिं०। मगि-बर्मी०। भासामजय (बीज)-मल०। कैयाँ-उत्०, उड़ि०। करही-मैसू०। इमली-पं०। टिण्टम यम०। तेंतुलि-उड़ि०।

शिम्बी वर्ग

(N. O. Leguminosæ)

उद्भव-स्थान—एशिया के बहुत से भाग, भारतवर्ष, बर्मा तथा अफरीका (मिश्र), अमेरिका और पूर्वीय भारतीय द्वीप।

संज्ञा-निर्णय—इसकी अंगरेज़ी वा लेटिन संज्ञा टैमरिण्डस इसकी अरबी संज्ञा तमरहिंदी से, जिसका अर्थ हिन्दी खजूर है, व्युत्पन्न है।

वानस्पतिक-वर्णन—इसके वृक्ष से प्रायः सभी लोग परिचित हैं। इसके वृक्ष बहुवर्षीय, विशाल एवं सशाख होते हैं। देखो—इमली।

नोट—वृक्षाम्ल और तिन्तिड़ी पृथक् पृथक् वृक्ष हैं। वैद्यक में इनके गुण-पर्याय पृथक् लिखे हैं। वृक्षाम्ल का पर्याय तिन्तिड़ी लिखा है, और तिन्तिड़ी के पर्यायों में वृक्षाम्ल शब्द का उल्लेख है। वृक्षाम्ल के वृक्ष उत्तर पश्चिमाञ्चल में विषाम्बिल (वृक्ष) नामसे प्रसिद्ध हैं। ये देखने में अत्यन्त शोभायमान होते हैं। पत्र दीर्घ एवं चिक्कण होते हैं। ये वसन्त ऋतु में फलते हैं। फल निम्बुक फलवत् होता है। वृक्षाम्ल नाम इसकी सर्वथा अन्वर्थ संज्ञा है। इस हेतु इसको "शाकाम्लं", "चूड़ाम्ल", "फलाम्ल" और "अम्लबाजं" कहते हैं। यह चुक्राम्ल तथा पञ्चाम्ल का एक अवयव है। इसका वानस्पतिक वर्ग भी यही अर्थात् वृक्षाम्ल वर्ग (Gutti- feræ) है।

इसके पर्याय निम्न हैं—

वृक्षाम्लं—सं०। विषा(पां)बिल—हिं०। अमसूल, कोकम-बम्ब०। (Garcinia

purpurea, *Roxb.* or Garcinia indica, *Chois.*)। विस्तारहेतु देखो-वृक्षाम्ल (अमसूल)।

रासायनिक-संगठन—तिन्तिड़ी-फल-मज्जा में तिन्तिडिकाम्ल (टार्टारिक एसिड) ९%, निम्बुकाम्ल (साइट्रिक एसिड), सेवाम्ल (मैलिक एसिड), तथा शुक्राम्ल (एसेटिक एसिड), पांशु तिन्तिडित (टार्ट्रेट ऑफ़ पोटासियम) ८%, शर्करा २१% से ४०%, निर्यास और पेक्टिन प्रभृति होते हैं। बीजत्वक् (Testa) में कषायीन (टैनिकाम्ल), एक स्थिर तैल तथा अविलेय पदार्थ होते हैं।' बीज में ऐल्ब्युमिनॉइड्स, वसा, कर्बोज ६३.२२ %, तन्तु और भस्म जिसमें स्फुर एवं नत्रजन होते हैं।

प्रयोगांश—फल (पक्व व अपक्व), मज्जा, बीज, पत्र, पुष्प, त्वक्, त्वक्भस्म क्षार।

औषध-निर्माण—अम्लिकापान, अम्लिकावटक (भा०), पत्रक्वाथ-मात्रा-५ से १० तो०, त्वक्क्षार-मात्रा-आध आना से एक आना भर।

इमली के गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—अमली अत्यन्त खट्टी, पित्तकारक, लघु, रक्तजनक, वात प्रशामक और परम वस्तिशोधक है। पकी अमली मधुराम्ल, भेदक, विष्टम्भी और वातनाशक है। त्वक् भस्म कसैली, उष्ण, कफघ्न और वातनाशक है। (धन्वन्तरीय निघण्टु)

आम तिन्तिड़ी (कच्ची इमली) अत्यन्त खट्टी और पकी इमली मधुराम्ल (खटमिट्ठी), वातघ्न पित्त, दाह, रक्त तथा कफ प्रकोपक है। इमली की कच्ची फली अत्यन्त खट्टी, लघु और पित्तकारक है। पक्व फल स्वाद्वम्ल, भेदक तथा विष्टम्भ और वातनाशक है। अम्ल, कटु, कषाय, उष्ण तथा कफ व अर्श का नाश करने वाली है और वात, उदररोग, तृष्णा, हृद्रोग, यक्ष्मा, अतिसार तथा व्रण की नाशक है। रा० नि० व० ६।

पक्व तिन्तिड़ीफल रस (पक्व रस)—मधुराम्ल (खटमिट्ठा), शोफ पाककर (सूजन को पकाने वाला), इसका प्रलेप व्रणदोष विनाशक है। के पत्र शोफघ्न, रक्तदोष तथा इसके शुष्क त्वक् का क्षार शूल व नाशक है। रा० नि० व० ११।

अपक्व अमली गुरु, वातहर, पित्त नाशक है। पक्व रेचक, रुचिकारक, और वस्तिशोधक है। शुष्क हृद्य, भ्रान्ति, और पिपासाहर है। मद०

आम खट्टी, गुरु, वातनाशक, पित्त वर्द्धक और रक्तदोषनिवारक है। पकी अग्निप्रदीप्त कर्ता, रूक्ष, सर (दस्तावर) और वातश्लेष्मनाशक है। भा० पू०।

आम (कच्चीइमली) वातनाशक, अत्यन्त भारी है। पक्व लघु, ग्राही और कफवातनाशक है। मद०

अमली के पक्व फल के गुण में इस से थोड़ा अन्तर है। (चरक सू० २७)

इमली का फूल (चिञ्चा पुष्प) स्वाद्वम्ल और रुचिकारक, विशद, लघु तथा वातश्लेष्मनाशक और है। पत्र शोथहर है। नूतन इमली कारक और वही वार्षिकी अर्थात् (पुरानी) वातपित्तनाशक है। (रत्नाकर)

तिन्तिड़ी के वैद्यकीय व्यवहार

हारीत—शोथ पर तिन्तिड़ी पत्र द्वारा सिद्ध किए हुए धारोष्ण जल में भिगोकर किंवा पिसे हुए तिन्तिड़ी पिण्ड द्वारा शोथ को स्वेदन करें। "संस्वेदन क्रिया कार्यासा कार्या… * अथवा तिन्तिड़ीच्छदैः" । (हि० …

चक्रदत्त—अरोचक में … इमली के शर्बत में गुड़ मिलाकर, … चीनी, इलायची तथा मरिच चूर्ण … कर मुख में इसका कवल धारण करें।

...दि नामक अरोचक रोग प्रशान्त होता है। ...श—"अम्लिका गुडतोयञ्च त्वगेला मरिचा-न्वितम्। अभक्तच्छन्द रोगेषु शस्तं कवड़ धारणम्।" (अरोचक-चि०)

(२) मसूरिका में तिन्तिड़ी पत्र-हलदी और इमली के पत्र को शीतल जल में पीसकर ...न करें। यह वसन्त के पत्र में हितकर है। ...श—"निशा चिञ्चाच्छदे शीतवारिपीते तथैव ...।" (मसूरिका-चि०)

(३) नव प्रतिश्याय में तिन्तिड़ी पत्र—...न कफ रोग में इमली के पत्रों का यूषपान ...ष्ट है। कफ परिपक्व हो गया ऐसा जानकर ...के नस्य द्वारा शिरोविरेचन कराएँ। यथा—"नवे प्रतिश्याये। शस्तो यूषश्चिञ्चादलोद्भवः। ...ततः पक्वं ज्ञात्वा हरेच्छीर्षं विरेचनैः।" (नासारोग-चि०)

...भावप्रकाश—गुल्म में चिञ्चाक्षार (१) ...तिड़ी वृक्ष के काण्ड के स्वयं शुष्क हुए त्वक् ...अन्तर्धूम अग्नि द्वारा दग्ध करें। पुनः उससे ...विधि क्षार प्रस्तुत कर उचित मात्रा में सेवन ...ाएँ। यह गुल्म तथा अजीर्ण में प्रशस्त है। ...था—"पलाश वज्रिशिखरी चिञ्चार्क तिलनालजाः। ...यवजः स्वर्जिका चेति क्षारा अष्टौ प्रकीर्तिताः। ...ते गुल्महराः क्षारा अजीर्णस्य च पाचकाः।" (गुल्म-चि०)

(२) अस्थि भग्न या अभिघातमें अम्लिका—...ची इमली को पीसकर कल्क प्रस्तुत करें, फिर ...सको काँजी और तिल तैल में पकाकर प्रलेप ...रें। किसी अंग में आघातजन्य वेदना होने, ...था अस्थिच्युत होने पर यह प्रलेप विशेष रूप ...से फलप्रद है। यथा—"अम्लिका फल कल्कैः सौवीर तैल मिश्रितैः स्वेदात्। भग्नाभिहत ...शमनैः।" (भग्न-चि०)

वङ्गसेन—वातव्याधिमें तिन्तिड़ी पत्र-तालवृक्ष द्वारा उद्भिन्न तालरस में इमली के पत्र कोपीसकर सुहाता सुहाता उष्ण प्रलेप करने से वात रोगका नाश होता है। यथा—"तिन्तिड़ीक दलैः सिद्ध तालमपिडकया सह। विद्ध्यात् सुखोष्णमालेपं ...दाहानलापहम्।" (वातव्याधि-चि०)

अम्लीकाफल—इमली के शुष्क फल संदीपक, भेदक, तृषाहर, लघु और कफ वात में पथ्य हैं एवं थकावट और क्लांति को दूर करते हैं। (वा० सू० अ० ६)। कच्ची इमली रक्तपित्त तथा आमकारक और विदाही है एवं वात व शूल रोग में प्रशस्त है। पक्व शीतगुणयुक्त है। (अत्रि० १७ अ०)

युनानी मतानुसार—

प्रकृति—द्वितीय कक्षा में शीतल व रूक्ष है; क्योंकि किञ्चित् संकोच के साथ इसमें अम्लत्व अत्यन्त अधिक है (नफ़ी)। किसी किसी के मत से १ कक्षा में शीतल और २ कक्षा में रूक्ष एवं किसी के मत से तीसरे में शीतल व रूक्ष है। कोई कोई इस को मअ़तदिल लिखते हैं। हानिकर्त्ता—स्वर, कास, प्रतिश्याय और प्लीहा को एवं यह अव-रोधजनक है। दर्पघ्न—उसतखास, बनफ़्शा, उन्नाव और कुछ मधुर द्रव्य। प्रतिनिधि—आलूबोख़ारा(आरुक)। मात्रा शर्बत—४ से २ वा ८ तो० तक। मुख्य प्रभाव—पित्त एवं रक्त की उग्रता का शमन करने वाला और प्रकृति को मृदुकर्त्ता है।

गुण,कर्म,प्रयोग—अपनी लज़ूजत (पिच्छिलता) और अम्लता के कारण इमली रतूबतों (क्लेद) को छेदन करती है, पित्त के विरेक लाती और अपने शोधक व संग्राही गुण के कारण आमाशय को बल प्रदान करती है। इसमें संशोधक शक्ति विरेचक शक्ति के कारण आती है। अपनी शीतलता के कारण पिपासाहर है और अपनी संग्राही शक्ति से वमन का निरोध करती है; विशेषतः जब इसका प्रपानक या हिम उपयोग में लाया जाता है। परन्तु, भिगोकर बिना मले छान कर इसका पानक प्रस्तुत करना श्रेष्ठतर है या वैसे ही जुलाल लेकर शर्करा योजित कर पान करें। क्योंकि मलने पर यह पेया विस्वाद हो जाता है कि वमन आने लगते हैं। (त० न०)

मीर मुहम्मद हुसेन—स्वरचित मख़ज़नुल्-अद्वियह् नामक ग्रंथ में लिखते हैं—इमली

दो प्रकार की होती है—(१) लाल और (२) भूरे रंग की। इन दोनों में लाल जाति को उत्तम होती है। इसलामी हकीम इमली के गूदे को हृद्य, संग्राही, जुलाब दस्त लाने वाला, पैत्तिक वमनावरोधक, रेचन द्वारा पित्त एवं विदग्ध दोषों से शरीर को शुद्ध करने वाला मानते हैं। जुलाब लाने को जब इसका उपयोग करना हो तब इसके साथ अन्य प्रवाही बहुत थोड़े देने चाहिए। कंठगत में इमली के पानी के कुल्ले करने से लाभ होता है। बीज को उत्तम संग्राही बतलाया जाता है तथा उबाल कर विस्फोटक पर इसका उत्कारिका (Poultice) रूप में उपयोग किया जाता है। जल में पीस कर कास तथा काग लटक आने में इसको शिर की चँदिया पर लगाते हैं। इसके पत्र को जल के साथ कुचल कर दबाकर रस निकालने से एक प्रकार का अम्ल द्रव प्रस्तुत होता है। इसको पैत्तिक ज्वर एवं मूत्रदाह में लाभप्रद बतलाया जाता है। प्रादाहिक शोथों तथा वेदनाके निवारणार्थ इसकी उत्कारिका उपयोग में आती है। नेत्राभिष्यन्द में आँख पर इसके पुष्प की पुल्टिस बाँधते हैं। पुष्पके रस का रक्तार्श में आन्तरिक उपयोग होता है। इसके वृक्ष की छाल ग्राही और पाचक ख्याल की जाती है। (मख्ज़नुल् अद्विया)

देशी लोग इसके वृक्ष का पवन स्वास्थ्य को हानिप्रद मानते हैं। कहते हैं कि इमली के वृक्ष के नीचे तंबू बहुत दिन रखने से उसका कपड़ा सड़ जाता है। यह भी कहा जाता है कि उसके वृक्ष के नीचे अन्य पौधे भी नहीं उगते। परंतु यह सर्वव्यापक नियम नहीं। क्योंकि हम लोगों ने उसके नीचे चिरायता एवं अन्य छाया प्रेमी पौधों को प्रायः उत्पन्न होते हुए देखे हैं। (डीमक—फा० इं० १ भा०)

हृदय और आमाशय को बल प्रदान करता, उच्छ्वास को शमन करता, मूर्च्छाहर, शिरोशूल को लाभप्रद और संक्रामक वायु के विष को दूर करता है। इसके बीज संग्राही और वीर्यस्तम्भक हैं। पूयनाक में इसके पत्र के क्वाथ का गण्डूष कराना लाभप्रद है। शुक्रमांद्यकर्ता और योनिसंकोचक है। इसकी छाल पीस कर छिड़कने से ... होता है। (मु० मु०, बु० मु०)

एलोपैथिक मेटीरिया मेडिका तथा तिन्तिड़ीफलमज्जा

एलोपैथी चिकित्सा में एक ... औषधार्थ व्यवहारमें आती है। यह ... इस हेतु, इसमें शर्करा मिलाकर रखते ... अम्लिका द्वारा प्राप्त अम्ल (तिन्तिडिक ... अर्थात् टार्टारिक एसिड (Tartaric ... भी डॉक्टरी चिकित्सा में व्यवहृत है। ... देखो—एसिडम टार्टारिकम्। यह ... चिकित्सा प्रणाली में ऑफ़िशल है। ... प्रथम अर्थात् इमली के फलके गूदे का ... किया जाता है।

मिश्रण—यूरोप में कभी कभी ... चूर्ण का मिश्रण कर देते हैं।

यह पड़ती है—कन्फेक्शियो ... ७९ भाग में ६ भाग।

प्रभाव—लैक्जेटिव (कोष्ठमृदुकर) ... रेफ्रिजेरंट (शैत्यकारक)। मात्रा— १ आउंस वा अधिक।

प्रभाव तथा उपयोग

अकेले इसका क्वचित ही उपयोग हो ... एक आउंस की मात्रा में यह कोष्ठमृदुकर ... इससे आन्त्रीय कृमिवत् आकुंचन भी ... है। इसको शैत्यकारक बतलाया जाता है ... टैमरिण्ड ह्वे (Tamarind whey) ... अम्लिकावारि रूप में कभी कभी ज्वरों में ... उपयोग किया जाता है। विधि—पौने ... पानी में २॥ तो० इमली का गूदा मिलाकर ... प्रस्तुत कर उसमें चौथाई दुग्ध मिलाई। ... स्पतिक, सेब और निम्बुक प्रभृति ... विद्यमानता के कारण इसका शैत्यकारक ... होता है।

अन्य मत

ज्वर में इमली का पत्ता (... देने से तृषा कम हो जाती है और ... चित्त को शांति लाभ होता है। बालकों के ... वरोध में इसका मुरब्बा विशेष रूपसे ... होता है। (म० अ० डॉ० २ भा०)

...दाग्रय एवं धुस्तुरजन्य उन्मत्तता में इमली
...फल का गूदा हितकारक है। फलत्वक्भस्म
...उक्त प्रकार की अन्य औषधों के साथ क्षारीय
... रूप से औषधीय उपयोग होता है। (दत्त
...ई मेटीरिया मेडिका)।

...ज्वर प्रभृति के वेग उतारने के लिए खजूर,
..., इमली का गूदा, अनारदाना, फालसे और
... के सबको सम भाग लें तथा बारीक पीस
... इसमें चवगुना पानी मिला औटाकर काढ़ा
... कर उपयोग करना चाहिए।

...मात्रा—१ छ० (२ आउंस) व्या० द०।
...जिस औषध के साथ यह दी जाती है उसके
...व को बढ़ा देती है। परन्तु शीरा रेवन्दचीनी
...थ इसके मिलाने से उसका प्रभाव कम हो
...ा है।

...कभी कभी इमली के वृक्ष से एक प्रकार का
...स्राव होता है, जिसको नोर कहते हैं।
...भग इसका सर्वांश कार्बिम खटिक (Oxal-
...e of calcium) होता है। ये श्वेत स्फटि-
... पिण्ड रूप में शुष्क होजाते हैं। (फा० इ०
...०)

...विरूायन लोग—पेट के मरोड़ के रोग में
... पाचनशक्ति बढ़ाने को इमली के बीज को
...य औषध के साथ मिला कर बर्त्तते हैं।

...सीलोन (लङ्का) द्वीप में यकृत और प्लीहा
...गाँठ होने में इमली के फूल की एक प्रकार
... मिठाई बनाकर रोगी को देते हैं। पत्तों को
...लकर उनका सेक करने में प्रयुक्त करते हैं।
...ली के वृक्ष के नीचे सोने से रोग होना है,
...न्तु नीम के पेड़ के नीचे सोने से सर्व रोग दूर
...ते हैं। इमलीके गोंदका चूर्ण करके नासूर (नाड़ी
...)के घाव पर बुरकते हैं, इससे क्षत शीघ्रपूरित
...जाता है। पत्तों को शीतल जल में भिगा के
...मिष्यंद में आँखों पर तथा नासूर के घाव पर
...धते हैं। बीज को पीस जल में मिला गाँठ पर
...गड़ने से उसके भीतर तत्काल राध पड़कर वह
...दोष होजाता है।

के० एम० नदकारणी—प्रभाव—अपक्वफल,
अत्यम्ल । पक्वफलमज्जा—शैत्यकारक,
आध्मानहर, पाचक, कोष्ठमृदुकर, मूल्यवान
स्कर्वीहर (Antiscorbutic) और पित्त-
नाशक है। बीज— संग्राहक, कोमल पत्र तथा
पुष्प शैत्यकारक तथा पित्तघ्न है। बीज का रक्त
वर्णीय बहिर त्वक् मृदु संग्राहक और वृक्ष-
त्वक् संग्राहक व बल्य है।

उपयोग—एक या दो वर्ष की पुरानी पकी
इमली यकृत, आमाशय तथा आंत्रदौर्बल्य में
हितकर है। प्रथम पक्वफल मलावरोध में
लाभदायक है। भारतीय आहारमें इमली चटनी,
कढ़ी तथा शर्बत रूप से बहुत उपयोग में आती
है। कोष्ठ मृदुकर रूप से यह बालकों के ज्वर में
भी हितकर है। इस हेतु इमली, अञ्जीर और
आलुबोखारा इनका शर्बत प्रस्तुत कर १ से
२ड्राम की मात्रा में उपयोग किया जाता है।

१ आउंस (२॥ तो०) इमली का फल और
१ आउंस खजूर इनको पाव सेर दुग्ध में परिपक्व
कर छान लें। इसमें किञ्चित् लवंग तथा इला-
यची और रत्ती आध रत्ती कपूर सम्मिलित करने
से उत्तम कोष्ठमृदुकर पानक प्रस्तुत होता है।
यह ज्वर अंशुघात और प्रदाहिक [illegible]
लाभदायक है।

स्कर्वी (Scurvy) के [illegible]
हेतु इमली उत्तम है।

प्रवाहिका में इसके बीज का चूर्ण [illegible]
आता है।

गुल्फ तथा [illegible]
को कम करने के लिए [illegible]
साथ [illegible]

[illegible]
बनाया हुआ [illegible]
[illegible]

[illegible]

प्रवाहिका में बीजके रक्त बाह्यत्वक् के चूर्ण को $\frac{1}{2}$ ड्राम की मात्रा में मोदक रूप से उपयोग में लाते हैं। स्वाद हेतु इसमें तिगुना जीरा का चूर्ण और पर्याप्त परिमाण में खजूर खंड डालते हैं।

इसकी छाल को भस्म का पाचक रूप में आन्तरिक उपयोग होता है। छाल को सैन्धव के साथ एक मृत्तिका पात्र में रखकर जला लें। जब श्वेत भस्म हो जाए तब चूर्णकर रखें। १ से २ ग्रेन की मात्रा में अजीर्ण तथा उदरशूल की यह एक उत्तम औषध है। मुख एवं कण्ठक्षत के निवारणार्थ इसकी भस्म को जल में घोलकर इसका गण्डूष कराते हैं। (इं० मे० मे०)

आर० एन० चोपरा—

इमली के बीज (चियाँ) की बाहरी लाल त्वचा प्रवाहिका एवं अतिसार की उत्तम औषध ख्याल की जाती है। अतएव १० ग्रेन (५ रत्ती) की मात्रा में इसके बीज का चूर्ण सम भाग जीरा व शर्करा के साथ दिन में दो तीन बार उपयोग किया जाता है। आदती क़ब्ज़ा में इसके पक्व फल का गूदा अत्यन्त प्रभावात्मक कोष्ठ-मृदुकर गिना जाता है। नीबू के अभाव में एंटिस्कॉर्ब्युटिक (Antiscorbutic) गुण के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है। (इं० ड्रू० इं० पृ० ५६७)

हिन्दुस्तानी वैद्य—इमली को शीतल पाचक; साफ़ दस्त लानेवाली; दस्त की क़ब्ज़ियत और ज्वर में अत्यंत उपयोगी गणना करते हैं। इमली की फली के ऊपर की छाल की राख को खारके सदृश दवा में डालते हैं। पत्तोंको सूजन पर बाँधने से सूजन उतर जाती है।

पक्व तिन्तिडी-फल-मज्जा स्कर्वी रोग प्रतिषेधक, श्रमहर एवं मृदुरेचक है। यह ज्वर, तृष्णा, अंशुघात (सर्दी गर्मी) एवं पित्तप्रधान वान्ति रोग में व्यवहृत होती है। रेचन हेतु, यह चिरकारी कोष्ठबद्ध रोग में हितकर है। चोट लगने के कारण यदि किसी अंग में सूजन हो तो कच्ची इमली और इमली पत्र को पीसकर उष्णकर लें और शोथयुक्त अंग पर इसका प्रलेप करें। मुख-पाक में इसका कवल हितकर है। आम वा रक्तातिसारमें व्यवहृत होते हैं।

भूत इमली की छाल का क्षार मूत्रमा[illegible] पूयमेह में क्षारीय औषध रूप से [illegible] (आर० एन० खोरी, भा० २ प्र० [illegible])

अम्लिका वृक्ष के बाह्योपरि त्वक् द्वारा [illegible] वङ्गभस्म-निर्माण-क्रम

सर्व प्रथम इमली वृक्ष की ऊपरी छाल [illegible] को एकत्रित कर उसके छोटे छोटे टुकड़े [illegible] किंतु बारीक चूर्ण न करें। फिर टाट [illegible] टुकड़े की एक लम्बी थैली बनाएँ। [illegible] एक अंगुल मोटा उक्त इमली के टुकड़ों [illegible] दें और ऊपर से शुद्धवंग (Tin) [illegible] वेधी पत्र के छोटे छोटे टुकड़े काटकर [illegible] दूरी पर रख दें और ऊपर से फिर उक्त [illegible] टुकड़ों को बिछा दें। इसी भाँति थैली [illegible] कर उसकी संधियों को भली प्रकार [illegible] दें। पुनः कपरौटी कर सुखा लें। [illegible] गजपुट में रख अग्नि दें। स्वांग शीतल [illegible] आहिस्ते से फूल हुए वंग के टुकड़ों को [illegible] करलें। यह सर्वोत्तम श्वेत वंग की भस्म होगी।

उपयोग—सम्पूर्ण वीर्यरोगों [illegible] शुक्रमेह, शीघ्रपतन और स्वप्नदोष [illegible] लिए रामबाण औषध है। यह [illegible] परीक्षा में आचुकी है।

मात्रा व सेवन-विधि—१ रत्ती से [illegible] उपयुक्त औषध या अनुपान के साथ प्रा[illegible] सेवन करें।

अम्लिकाकन्दः amlikā-kandah-सं० [illegible]
अम्लनालिका—म०, वै० निघ०।

अम्लिका(प्र)पान(क) amlikāpānaka-[illegible]
अम्लिकापानम् amlikā-pāna[illegible]
तिन्तिडीपानक, अम्लिकाफल-प्रपानक, [illegible] का पना। तेंतुल पाना-बं०।

विधि—पकी अमली को जल में [illegible] मललें; उसमें सफ़ेद बूरा, मरिच, और कपूर आदि डालकर सुवासित करें। [illegible]

ी का प्रपानक (पना) कहते हैं। यह
ी का पना वातविनाशक, पित्त तथा कफ-
, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक है। भा० पू०
वर्गः।

ावटकः amliká-vaṭakah-सं०
वटक विशेष, अमली का वड़ा (पात्र)।
पड़ा-पं०।
विधि-पकी अमली को कतर कर जल में
ार्दे और जलके साथ ही मललें, परचात्
बनाए हुए पानी में बड़े छोड़ दें और नमक
जा आदि डाल दें, तो अमली के बड़े बन
हैं।
गुण-यह बड़े रुचिकारक और अग्निदीपक हैं।
पूर्वोक्त बड़ों के भी सब गुण हैं। भा०
ख० १।
ासार amliká-sára-हिं० संज्ञा पुं०
ी का सत्त। (Acidum Tartari-
m.)
mlí-सं० स्त्री० (१) जलवेतस। वै०
० २ भा० मद्दात्यय चि० खर्जूरादि मन्थ।
) शुक्रिका-सं०। टकपालङ्-च०। See-
ukriká. (३) तिन्तिड़ी, इमली,
लका। (Tamarindus Indica.)
निं०च० ११। भा०पू० १ भा० फल-व०।
चांगेरी। (Oxalis monadelpha.)
लद्रिकं। -हिं० स्त्री०, (५) अमारी
Antidesma Diandrium.) (६)
खोसा। (Bauhinia Malabarica,
rb.) मेमो०।
ी amliká-सं० स्त्री० (१) तिन्तिड़ी,
ली, अम्लिका। (Tamarindus
dica.) अ० टी०। (२) अम्लोद्गार,
ी डकार। सु० नि० ६ अ०।
ाफलम् amliká phalam-सं० क्लो०
तिड़ी फल, अमली। Tamarindus
dica. (Fruit of-)। देखो-अम्लिका।
ा सत amliká-sat-हिं० संज्ञा पुं०
म्लिकाम्ल। देखो-एसिडम् टार्टारिकम्
Acidum Tartaricum.)

अम्लीन चिंचोर amlína-chinchor-गु०
अमली, अम्लिका। Tamarind (Tamarindus Indica.) इं० मे० मे०।
अम्लीयः amliyah-सं० पुं० अम्लवेतस। (Rumex vesicarius.) वै० निघ०।
अम्लीय-अम्लजिद् amlíya-amlajida-हिं० पुं० (Acidic Oxide.) अम्लीय ओषिद या उत्सिद। यह जल में घुलकर अम्ल बनाते हैं, और ओषजन तथा अधातुओं के संयोग से बनते हैं। देखो-ओषिद।
अम्लुकी amlukí-बं० मामसुन्दर, सिरस, शिरीष। (Albizzia Stipulata.)
अम्लुकी amlukí-बम्ब० आमला। (Phyllanthus Emblica.) मेमो०।
अम्लू amlú-पं० चोह। इक। ऑक्जीरिया डाइगाइना (Oxyria Digyna, *Hill.*), ऑ० इलेटियर (O. Elatior.), ऑ० रेनिफॉर्मिस (O. Reniformis, *Hook.*) -ले०।
प्रयोगांश—फल।
उत्पत्ति-स्थान—शीतोष्ण हिमालय, सिक्किम से काश्मीर पर्यन्त।
उपयोग—चम्बा में यह कच्चा ही और चटनी बनाकर खाया जाता है तथा शीतल प्रयाल किया जाता है। कनावार में यह औषध रूप से प्रसिद्ध है। स्टयुवर्ट।
अम्लोटकः amloṭakah-सं० पुं० अश्मन्तक वृक्ष। आमोटा-हिं०। अम्लकुचाइ-पं०। रत्ना०। See-Ashmantak.
अम्लोटजः amloṭajah-सं० पुं० चांगेरी। (Oxalis corniculata.) यह आमरूल पाता-वं०। च० द० चातुर्थ-ज्व० चि०। "अम्लोटजसहस्रेण दलेन।"
अम्लोत्तमम् amlottamam-सं० क्लो० दाड़िम, अनार। Pomegranate (Punica granatum.) प० मु०।
अम्लोत्पादक सेल amlotpádak-sela-हिं० स्त्री० (Oxytic cell.) अम्लजनक सेल।

अम्लोद्गार amlodgára-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] खट्टा डकार।

अम्लोषित amloshita-सं० पु० सर्वाक्षिगत रोग विशेष।

लक्षण - पित्त और रक्त की अधिकता वाले दोषों के कारण अन्न का सार भाग खट्टा होकर शिराओं में होता हुआ नेत्र को श्याव लोहितवर्ण का कर देता है तथा सूजन, दाह, पाक, अश्रुपूर्ण और धुंधलापन पैदा कर देता है। यथा—

"अम्लोषितोऽयम् इत्युक्ता गदाः षोडश-सर्वगाः।" वा० उत्तर० अ० १६।

अम्लोसा amlosá-हिं० (१) अमली (Phyllanthus emblica)। (२) (Bauhinia Malabarica. Roxb.) इसका निर्यास तथा पत्र खाद्य कार्य में आता है। मेमो०।

अम्ल्युलाज amlyuláj-अ० दुग्ध दन्तोद्भव। दूध के दाँत निकलना।

अम्वात् amvát-अ० (ब० व०), मौत, मय्यत (ए० व०)। मृत्यु, मरण। (Death.)

अम्शाज amsháj-अ० शारीरिक धातुएँ। स्त्री तथा पुरुष वीर्य का एकत्रीभवन जो अमिश्रित अवयव का आधार बनता है। स्त्री तथा पुरुष के वीर्य का सम्मेलन। स्त्री व पुरुष वीर्य के पारस्परिक सम्मेलन से जो नुत्फ़ा में इख़्तिलात होता है।

अम्सानिया amsániyá-पं० अस्मानिया (मेमो०) बुदशुर, फे(-चे) वा, बुरशुर,, खमा। एफिड्रा पेकिक्लेडा (Ephedra Pachyclada, *Boiss.*), ए० जिरार्डिएना (E. Gerardiana, *Wall.*)-लेo। फोक -सन०। हुम, हुमा (फ़ा०, बम्ब०)। म०-मोद्-जापा०। खगड, सम-कुनचर।

एफिड्रा वर्ग

(*N. O. Gnetaceae*)

उत्पत्ति-स्थान-पश्चिमी हिमालय, अफ़ग़ानिस्तान और पूर्वी फ़ारस।

नोट—इसका द्वितीय भेद, एफिड्रा वल्गेरिस (Ephedra vulgaris, Rich.) है।

उत्पत्ति-स्थान—शीतोष्ण तथा हिमालय, युरूप, पश्चिमतथा मध्य जापान।

इतिहास—उपरोक्त दोनों पौधे भिन्न है। इनमें से अम्सानिया (E. pa- olada), एफिड्रा वल्गेरिस (E. Vulg- की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली एवं (स्वुग्दुरा) होता है। इनमें से प्रथम जे० डी० हुकर महोदय लिखते "इसके बालियों तथा पुष्प में बात नहीं होती, सिवा इसके न्यूनाधिक हाशियायुक्त ब्रैक्टस (होते हैं।" अम्सानिया (हुम) शाखाएँ अब भी फ़ारस से लाई जाती हैं। इसमें औषधीय का निश्चय किया जाता है। उक्त पौधे को आर्य (एरियन) उपयोगमें लाते थे और वेद वर्णित सोम यही है। (डीमक)

वानस्पतिक-वर्णन-ए० वल्गेरिस भूमि में उत्पन्न होने वाला, कठिन, पौधा है, जिसकी जड़ें परस्पर लिपटी शाखाएँ (उत्थित,खड़ी) हरितवर्णकी जिन पर धारियाँ पड़ी रहती हैं लगभग समतल (चिकना) पौष्पिकपत्र मध्यविद्ध, शुण्डाकार, वर्जित, लोमश, क्वचित् कुछ रेखाकार पुष्पाच्छादनक (Spikelets)। इंच, अवृन्तक, प्रायः आवर्तयुग्म, मांसल, रक्तवर्ण, रसपूर्ण, पौष्पिकयुक्त एक या दो बीजयुक्त होता है। बीज दर या समोन्नतोदर होते हैं। स्वाद- निशोथवत् और कषाय। इसके पत्ते काट कर अणुदर्शक से देखने पर एक प्रकार के रक्तरस से पूर्ण

रासायनिक संगठन-(वा संबंधी इसके प्रकाण्डमें एफोड्रीन (Ephedrine) नक एक क्षारीय सत्व पाया जाता है जिसका सूत्र क[10]उद[15]नत्र, उ. है।

[illegible] उक्त सत्व बेन्ज़ोयाम्ल (Benzoic-[illegible]id), मोनोमीथिलअमीन (Monome-[illegible]ylamino) और शुक्तिकाम्ल अर्थात् काष्टाम्ल [illegible]Oxalic acid) में विश्लेषित हो[illegible]ा है। एफीड्रीन (घुलन बिन्दु या द्रवणाङ्क [illegible] अतांश) को उत्ताप पहुँचाने पर आइसो-[illegible]ड्रीन Isoophedrine (द्रवणांक ११४° [illegible]श) प्राप्त होता है। डॉ० एन० नेगी। [illegible]ए० वल्गेरिस की टहनियों में १ प्रतिशत [illegible]फिन होता है। मिस्टर जे० जॉ० ग्रेवल [illegible]८८८).

[illegible]प्योगांश—जड़ और शुष्क शाखाएँ।

[illegible]औषध-निर्माण—जड़ का क्वाथ (४० में १)

[illegible]मात्रा—आधा से १ आउंस।

[illegible]भाव तथा उपयोग—यह परिवर्तक (रसायन), [illegible]ज, आमाशय बलप्रद और वक्ष्य है (इं० मे० [illegible])। सर्व प्रथम डॉ० एन० नेगी (टोकियो) ने [illegible]बात की ओर ध्यान आकृष्ट की, कि ए० वल्गे-[illegible] में एफीड्रीन नामक एक क्षारीय सत्व होता [illegible] जिसमें नेत्रकनीनिका-प्रसारक गुण है, [illegible] ऐट्रोपीन (धत्तूरीन) के स्थान में इसका [illegible]योग किया जा सकता है। डॉक्टर टी० ओ० [illegible]फ्टॉन ने ध्यान दिलाया कि ए० वल्गेरिस [illegible] जड़ तथा प्रकाण्ड द्वारा निर्मित क्वाथ रूस [illegible] में आमवात, गठिया एवं उपदंश रोग की और [illegible]के फल का स्वरस श्वासपथ सम्बन्धी रोगों की [illegible]यात औषध है।

[illegible]ग्र तथा पुरातन आमवात (Rheumati-[illegible]m) के अनेक रोगियों को उक्त क्वाथ [illegible] स्वयं व्यवहार कराने के पश्चात् अन्ततः वे [illegible] परिणाम पर पहुँचे कि उक्त पौधा पेशी एवं [illegible]थि सम्बन्धी उग्र रोगों की प्रधान अमूल्य [illegible]षध है। इससे व्यथा कम हो जाती है; नाड़ी [illegible]दि तथा कोमल और श्वासोच्छ्वास सरल [illegible] जाता है। ३–६ दिनमें तापक्रम स्वस्थ दशा की [illegible]द हो जाता और संधिशोथ लुप्तप्राय हो जाता [illegible] और लगभग १२ दिवस के बाद रोगी [illegible]ग मुक्त हो जाता है। कतिपय रोगियों में उस समय के समीप या उससे प्रथम, जबकि तापक्रम घटने लगा हो, मूत्रस्राव होते देखा गया। इससे पाचन एवं आन्त्रिक क्रिया भी बढ़ती हुई देखी गई। पुरातन रोगियों में एफीड्रा का प्रभाव कम प्रदर्शित होता है। आमवात संबन्धी गृध्रसी तथा अस्थिमोपुम्नकांड प्रदाह के दो रोगियों में तो मुश्किल से कोई प्रभाव उत्पन्न हुआ। परन्तु, यहाँ पर यह विचारणीय बात है कि उक्त दोनों अवस्थाओं में ऐस्पिरिन, सैलिसिलेट ऑफ़ सोडा, ऐण्टिफेब्रीन तथा सैलोल इत्यादि औषधें भी लाभ प्रदान करने में असफल रहीं। डॉ० टॉफ्टॉन द्वारा निर्मित क्वाथ की मात्रा यह है :—औषध ३·८८ ग्राम और जल १८० ग्राम।

डॉ० कोवर्ट बतलाते हैं कि एफीड्रीन ०·२० ग्राम की मात्रा में कुक्कुर एवं बिल्ली की सिरा में अन्तःक्षेप द्वारा प्रविष्ट किया गया और इनसे तीव्र उत्तेजना, सार्वांगिक आक्षेप, बाह्यचक्षु शोथ तथा नेत्रकनीनिकाप्रसार उत्पन्न होते देखा गया।

अम्सुल amsul-पश्चिम घाट० कोकम, भिरण्ड। Mangosteen (Garcinia xanthoxymus, *Hook.*) फा० इं० १ भा०। देखो–इम्पिल।

अम्सेल amsel-गों० कोकम, भिरण्ड-हिं०। See-Kokam.

अम्सेल रताम्बिसाल amsel-ratámbisál –गों० कोकम की छाल (Garcinia purpuria, bark of-) इं० मे० मे०। फा० इं० १ भा०।

अम्हक् amhaq-अ० शुद्ध श्वेत बिना चमक के जैसे चूने का रंग, गोराचिट्टा।

अम्हदन्दी amha-dandí-पं० ओड, चूची-पं०। मेमो०।

अम्हर्ष्टिया नोब्ल amherstia noble }
अम्हर्ष्टिया नोबिलिस amherstia nobilis, *Dr. Wall.* }
इं०, ले० यौका। इं० हिं० गा०।

अम्हौरी amhourí–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अम्भस्=जल, अर्थात् पसीना+औरी (प्रत्य०)] बहुत छोटी छोटी फुन्सियाँ जो गरमी के दिनों में पसीने के कारण लोगों के शरीर में निकल आती हैं। अँधोरी।

अयः ayah–सं० पुं०
अय aya–हिं० संज्ञा पुं० } (१) लौह, लोहा Iron (Ferrum)। (२) अग्नि। (Fire)। (३) अस्त्र शस्त्र। हथियार।

अय aya–ता० पपड़ी–हिं०। रसबीज–कना०। नविली–तै०। वावल–म०। (Holoptelea Integrifolia, *Planch.*) फा० इं० भा० ३।

अयङ्गोलम् ayangoulam–मल० अङ्कोल, ढेरा। (Alangium decapetalum, *Lam.*) स० फा० इं०।

अयच्चेण्डूरम् ayachchendúram–ता० मण्डूर, लौहकिट्ट। (Ferri peroxide.) स० फा० इं०।

अयत्ला ayatlá–पं० एहलत, एरखाल, चारूड, धरवान।

अयनम् ayanam–सं० क्लीं०
अयन ayan–हिं० संज्ञा पुं० } (१) गति चाल। (२) A path, the half year, i.e. the sun's course north or south of the equator.

सूर्य या चन्द्रमा की दक्षिण से उत्तर या उत्तर से दक्षिण की गति या प्रवृत्ति जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। मे० नत्रिकं।

नोट—बारह राशि चक्र का आधा। मकर से मिथुन तक की ६ राशियों को उत्तरायण कहते हैं; क्योंकि इनमें स्थित सूर्य या चन्द्र पूर्व से पश्चिम को जाते हुए भी क्रम से कुछ कुछ उत्तर को झुकते जाते हैं। ऐसे ही कर्क से धन की संक्रांति तक जब सूर्य या चन्द्र की गति दक्षिण की ओर झुकी दिखाई देती है तब दक्षिणायन होता है।

आयुर्वेद के अनुसार शिशिर, व[सन्त,] ग्रीष्म इन तीन ऋतुओं का उत्तराय[ण] है। यह पुरुष के बल का आदान का[रक] उत्तरायण में सूर्य प्रति दिन मनुष्य[के बल का] हरण करता है। उत्तरायण में सूर्य[और पवन] का मार्ग बदलनेके कारण सूर्य और [पवन] प्रचण्ड, गर्म और रूक्ष हो जाते हैं [और] सौम्य गुणों को नष्ट कर देते हैं। [इन] ऋतुओं में तिक्त, कषाय और कटु र[स] बलवान हो जाते हैं अर्थात् शिशिरमें ति[क्त, वसन्त] में कषाय और ग्रीष्म में कटु रस बल[वान होते] हैं। इस कहे हुए हेतुसे बलका आद[ान होता] है तथा इसके विपरीत वर्षा, शरद [और हेमन्त] ये तीन ऋतु दक्षिणायन कहलाती हैं। [इन] ऋतुओं में पुरुष के बल की वृ[द्धि होती है।] इसको विसर्ग काल कहते हैं। मेघ [...] ठंडे पवन के चलने से पृथ्वी पुष्ट [...] हो जाती है और इस शीतलता के कार[ण चन्द्रमा] बलवान हो जाता है और सूर्य हीन[बल] होता है। इस ऋतुमें उत्तरोत्तर खट्टे, ख[ारे] और मधुर रस बलवान हो जाते हैं, [वर्षा में] खट्टा, शरद में लवण और हेमन्त में [मधुर रस] बलवान हो जाते हैं। वा० सू० ३ [...] सू० ।

(३) मार्ग, राह। (४) [...] स्थान। (५) घर। (७) काल, [...] ग्रंथ। (६) गाय या भैंस के [...] वह भाग जिसमें दूध भरा रहता है।

अयनकाल ayana-kála–हिं० [...] [सं०] (१) वह काल जो [...] लगे। (२) छः महीने का [...]

अयनी ayaní–ता० कटहल। [...] पूनो, अन्सजेनी–मल०। [...] (Artocarpus Hirsuta [...] मेमो०।

अयपान ayapán–हिं० [...]
अयपानी ayapáni–ता० [...]
अयप्पनई ayappanai–ता० [...]

-पान-हिं०, म०, बं० । (Eupatorium Ayapana, *Vent*) स० फा० इं० । फा० २ भा० । देखो—अयापना ।

...yam-ता० सुवी, कुम्बी-हिं० । (Careya Arborea, *Roxb.*) मेमो० ।

...कम् aya-modakam-मल० अजवाइन-हिं० । Carum (Ptychotis) ajowan, *D. C.* । स० फा० इं० ।

...चे ayalúracho-फ़ा० अगर-हिं० । (Aloe wood.)

...ayava-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पुरीष ... एक कीड़ा जो यव से छोटा होता है । (२) ...इ ।

...दूरम् aya-shindúramu-ता० मण्डूर । (Ferri peroxide.) स० फा० इं० ।

...ayam-सं० क्ली०
...ayas "
...ayasam "
...ayasa-हिं० संज्ञा पुं०
(१) लौह-मात्र । लोहा । Iron (Ferrum.)
... २० पाण्डु-चि० । रत्ना० । (२) कान्त-लौह । (Load-Stone.) प० मु० । (३) मुण्डलौह । See-mundalouhah. ... नि० घ० १३ । देखो—लौह ।

...न्त ayas-kanta-हिं० पुं०
...कान्त ayaskánta-हिं०संज्ञा पुं०
...कान्तः ayas-kántah-सं० पुं०
(१) कान्तलौह । रा० नि० व० १२ । लौह-...म्बुक, चुंबक । (२) कान्त पाषाण । चुम्बक ...त्थर । गुण—लेखन, शीतल, मेदकारक व विषघ्न ...। मद० व० ४ । Load stone (Ferri Oxidum magneticum.)

...कान्त शिला ayaskánta-shilá-सं० स्त्री० कान्तलौह, लोहचुम्बक, चुम्बक । (Magnet, loadstone.) वै० निघ० ।

...स्कान्तिम् ayas-kántim-सं० क्ली० एक धातुतत्व विशेष । मैङ्गनीज़ (Manganese.) ...-इं० । देखो—मैङ्गेनीज़ या मैङ्गेनेसियम् ।

अयस्कारः ayas-kárah-सं० पुं०
अयस्कार ayaskára हिं० संज्ञा पुं०
(१) जङ्घाग्र भाग । (Foreleg.) त्रिका० । (२) लोहार ।

अयस्कृतिः ayaskrutih-सं० स्त्री० (१) फ़ौलाद के बारीक पत्र बनाकर लवण वर्ग से उन पर लेप करके जंगली कंडोंमें १६ बार खूब तपाकर त्रिफला और सालसारादिगणके क्वाथ में उनको बुझाएँ । फिर इसी तरह १६ बार खैर के कोयलों में तपा कर बुझाएँ, ठण्डा होने पर उनका बहुत बारीक चूर्ण कर लें, फिर गाढ़े कपड़े से छानकर रक्खें । बलानुसार इसकी मात्रा घी और शहद के साथ खाएँ । इसके पच जाने पर खटाई और नमक को छोड़कर व्याधिशामक आहार करें । इसके ४०० तो० खाने से कुष्ठ, प्रमेह, मेदवृद्धि, शोथ, पाण्डु, उन्माद और अपस्मार नष्ट होते हैं । रस० यो० सा० । (२) प्रमेह विषयक योग विशेष । वा० चि० अ० १२ प्रमेह ।

अयस्कीटः ayaskotah-सं० पुं० मण्डूर, लौह-किट्ट । (Ferri peroxide.) वै० निघ० ।

अयस्तम्भिनी ayastambhiní-सं० स्त्री० शिवलिङ्गी । (Bryonia Laciniosa.)

अयस्मयी ayasmayí-सं० त्रि० लोहे की बनी हुई । अथर्व० । सू० ३७ । ८ । का० ४ ।

अयक्ष्मं ayakshmam-सं० त्रि०
अयक्ष्म ayakshma-हिं० वि०
(१) नीरोग, रोग रहित । (२) निरुपद्रव । बाधा शून्य । अथर्व० । सू० २६ । १२ । का० ५ ।

आयाश् áayáa-अ० असाध्य या कष्टसाध्य रोग ।

नोट—अयाश् तथा दाश् का भेद देखो—"दाश्" में ।

अयाउल्बह् ayául-bahra
मर्ज़ुल् बह् marzul-bahra
ग़स्यान बह्री ghasyán-bahri
–अ० सामुद्रिक रोग, समुद्रीय व्याधियाँ, दरियाई बीमारी, जहाज़ी बीमारी, जहाज़ी क़ै, समुद्र यात्रा करते हुए जहाज़ में किसी किसी को मतली तथा वमन की व्याधि हो जाती है; विशेषकर वे लोग इस व्याधि से

अधिक प्रमित होते हैं जो प्रथम बार जहाज़ यात्रा करते हैं। सी सिक्नेस (Sea Sickness.), नॉपेथिया (Naupathia)-इं०।

अयाचित ayáchita-सं क्लो० अमृत नामक आहार, बिना माँगी मिली वस्तु। "अमृतं स्याद याचितम्" इति मनुः।

अयात अस्ल ayát-asl-अज्ञात।

अयादि लेप ayádi-lepa-सं० क्लो॰ लोहे का बुरादा, भांगरा, त्रिफला, और काली मिट्टी को ईख के रस में १ मास तक रख कर लेप करने से बालों का श्वेत होना बन्द होता है। वृ० नि० र०।

अयातयाम ayátayáma-हिं० वि० [सं०] (१) जिसको एक पहर न बीता हो। (२) जो बासी न हो। ताजा। (३) विगत दोष। शुद्ध। (४) अनतिक्रांत काल का। ठीक समय का।

आयादत āayádat-अ० बीमार पुर्सी, रोगी से उसकी हालत पूछना।

अयानम् ayánam-सं० क्लो० } स्वभाव,
अयान ayána-हिं० संज्ञा पुं० } प्रकृति, निसर्ग। नेचर (Nature)-इं०। हारा०। (२) अचंचलता। स्थिरता। -वि० [सं०] बिना सवारी का। पैदल।

आयान āayán-(रसा० परि०), पारद, पारा। (Mercury).

अयाना ayáná-मह० खाजा-हिं०। कर्गनेलिया -हिं०। (Briedelia montana) मेमा०।

अयापनम् ayápanam-फो० } —हिं०, मह०
अयापान ayápána } बं०। अयपानि
अयापना ayápaná } -ता०,ते०। मर-
आयापान áyápána } कल, तत्री-प०।

अग(या)पा(प)नम्-फो०। अल्लाप, एल्लिपा, अज्ञापा-गु०। युपेटोरियम् अयापना (Eupatorium Ayapana, *Vent.*)-ले०। बोनसेट (Bonesot), थॉरोवर्ट (Thorough wort)-इं०। अयप्पने-ता०। निर्विषा -थं०। रामागणम्, विशल्यकरणी-सं० शु० सिं०).

मिश्र वर्ग

(*N. O. Compositce.*)

नॉट ऑफिशल (*Not official.*)

उत्पत्ति-स्थान-अमरीका इ... मूल निवासस्थान है, परन्तु अ... भारतवर्षमें भी लगाया गया है। चरागाहों तथा झील एवं नदी त...

इतिहास—वेण्टीनाट ने इसे अमे... (दक्षिण अमरीका की एक नदी) तट प... हुआ पाया। इसका एक अन्य भेद ... पर्फोलिएटम् (E. Perfoliat... अमरीका में उत्तम ख्याल किया ज... पेन्सली इसके विषय में वर्णन करते... एक लघु क्षुप है जो सर्व प्रथम मॉरी... भारतवर्षमें लाया गया। देशी चिकित्स... भी इसके विषय में बहुत कम ज्ञात है... इसके प्रिय, किञ्चित् सुगन्धिमय, किन्तु ... के कारण इसमें औषधीय गुण होने... विश्वास है। मॉरीशियस में यह बहुत ... और वहाँ इसे परिवर्तक तथा स्कर्वीनाश... किया जाता है। इसने अन्ततः इस... उपयोग के लिए युरूपीय चिकित्सकों ... तक सर्वथा निराश रक्खा है। इसके ... शीतकषाय का स्वाद प्राय एवं कुछ ... वत् होता है और यह एक उत्तम ... ताज़ा होने पर कुचल कर मुख मण्डल... के परिमार्जनार्थ प्रयुक्त करने के ... व्रणशोधक है"। डायर महोद... पेन्सली को सूचित करते हैं कि इसे ... फ्रांस जहाँ कि चीनी चाय की प्रतिनिधि... एक प्रकार की चाय बनाने में इस... होता है, भोजन के लिए बोर्बन (Bo... द्वीप में उक्त पौधे की कृषि की जाती... (Guibourt) के अनुमार इस... करीब विस्मृत सा होगया है। फार्माको... इण्डिया' से इसके विषय में लि...

ाती है।-"यह दक्षिणी अमरीकाका एक पौधा ो अब भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों तथा जावा ा प्रभृति द्वीपों में उत्पन्न होता है और साधा-तः अपने ब्राजील संज्ञा अयापान नाम से यात है। सम्पूर्ण पौधा सुगंधित किंचित् कटु या ाय स्वादयुक्त होता है। यह एक उत्तम उत्ते-, पथ्य तथा स्वेदक है। बॉटन (Bouton) कथनानुसार मॉरीशियस (Mauritius) औषधीय पौधों में यह सर्वश्रेष्ठ प्रतीत होता । अजीर्ण तथा आन्त्र या फुप्फुस के अन्य कारों में शीतकषाय रूप से यह वहाँ दैनिक योग की वस्तु है। उक्त द्वीप की सन् १८५४ ६ की विशूचिका महामारी में शरीर के बाह्य ग की उष्मा के पुनरावर्तन तथा रक्तसंग्रमण प्रिक्य को दूर करने के लिए इसका अधिकता साथ उपयोग किया गया है। सर्पदंश के ैविध स्वरूप इसका अन्तः या बहिः प्रयोग लता के साथ किया जा चुका है। यद्यपि ामान्य रूप से यह अज्ञात है, तथापि पार्सी म्बई) में प्रायः होता है और जो इसे जानते वे इसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। डाइमॉक

वानस्पतिक विवरण—एक लघु भूलुण्ठित ायन पौधा, २ से ६ फीट ऊँचा, शाखाएँ सरल ाभ (सुर्खी मायल), कतिपय साधारण बिखरे प (विरल) लोमों से व्याप्त, नूतन अंकुर एक कारके श्वेत पाठसमीय क्षार के सूक्ष्म अणुओंकी परिस्थिति के कारण कुछ कुछ भुर भुरे स्वरूप के ते हैं। पत्र सम्मुखवर्ती, युग्म जिनके आधार कांडके चारों ओर संलग्न होते हैं तथा ४-५ इंच म्बे और ½ इंच चौड़े, भालापूर्ण, ऊर्ध्व पृष्ठ विषम खुरदरा), अधः पृष्ठ लोमश तथा राजीव िन्दु युक्त (पी० वॉ० एम०), चिकने (सम ल), भालाकार (शराकार कचित्), आरीवत्, ाधारपर पतले शिराभ्यास होते हैं, माध्यमिक ास (शिरा) मोटी, सुर्खी मायल, इसके मलने े अच्छी गंध आती है। पुष्प ग्राउण्डसेलवत्, ासनी; गंध निर्बल तथा सुगंधिमय कुछ कुछ, रक्तपेचा (Ivy) के समान, किन्तु अधिक ाद्य; स्वाद सुगंधित, कटु तथा कषाय (विशेष प्रकार का) होता है। डाइमॉक। पी० वॉ० एम०।

रासायनिक संगठन-(या संयोगी अवयव) डा० डाइमॉक महोदय के विश्लेषणानुसार इसमें दो सत्त्व पाए गए। इनमें से (१) एक वर्णरहित उड़नशील तैल जो ताजे पौधा को जल के साथ परिस्रुत करनेसे प्राप्त हुआ और (२) एक स्फटिकवत् (रवादार) न्युट्रल (उदासीन) सत्व जिसका नाम उन्होंने अयपानीन या अयापनीन (Ayapanin) रक्खा। जल में यह अविलेय तथा ईथर या मद्यसार में विलेय होता है। इसके सूचीवत् शीर्ष रवे (स्फटिक) होते हैं। यह १५१° १६०° के उत्ताप पर सरलतापूर्वक ऊर्ध्वपातित हो जाता है।

प्रयोगांश—सम्पूर्ण पौधा (शुष्क पत्र, पुष्पान्वित शाखाएँ तथा कलिकाएँ या कोंपल) औषध कार्य में आता है।

औषध-निर्माण—पत्र-स्वरस, मात्रा-½ से १ तो०। शुष्कचूर्ण-२० से ६० ग्रेन (१०-३० रत्ती) तरल सत्व-१ से २ फ्लु० ड्रा०। घन सत्व-१० से २५ ग्रेन (५-१२॥ रत्ती) शीत कषाय-(२० में १)-½ से २ फ्लु० आउंस (प्रभावावश्यकतानुसार)।

युपेटोरीन (घन)-१ से ३ ग्रेन (½ से १॥ रत्ती)।

इन्फ्युजम युपेटोरियाई (Infusum Eupatorii)-लै०। इन्फ्युजन ऑफ़ बोनसेट (Infusion of Boneset.)-इं०। अयपान शीत कषाय-हिं०। खिसाँदा अयापना-फ़ा०, अ०।

निर्माण-विधि—एक भाग युपेटोरियम् को १० भाग उष्ण जल में ३० मिनट तक भिगोकर छान लें। मात्रा-आधा से १ फ्लु० आउंस।

(२) फ्लुइड एक्सट्रैक्टम् युपेटोरियम् (Fluid Extractum Eupatorium)-लै०। फ्लुइड एक्सट्रैक्ट ऑफ युपेटोरियम् (Fluid Extract of Eupatorium)-इं०। अयपान तरल सत्व-हिं०।

मुलामहे अयापना सत्वात्-उ० । मात्रा-२० से ६० मिनिम (बूंद)।

प्रभाव तथा उपयोग

अयापान के शुष्क पत्र तथा पुष्प कैजुय्या के समान अमृदुत्व तिक्त बल्य रूप से प्रभाव करते हैं; किन्तु इसमें स्वेदक गुण भी है। उष्ण कषाय (१ आउंस से १ पाइंट पर्यन्त) मद्यग्लास पूर्ण अर्थात् मद्य की शीशी की मात्रा में प्रति दो दो घंटे पश्चात देने से अत्यन्त स्वेद स्राव होता है। गुले बाबूना (Chamomile) के उष्ण कषाय के समान प्रयुक्त परिमाण से चतुर्गुण मात्रा में यह वामक है और विरेचक भी। वायुप्रणालीय कास, संक्रामक प्रतिश्याय तथा मांसपेशीय आमवात में सर्वोपरि प्रभाव हेतु इसका उपयोग किया जा चुका है और कद्दूदाना तथा केंचुओं को निकालने में इसके विरेचक गुण से लाभ प्राप्त किया गया है।।

(मे० मे० हिटला)

प्रभाव में गुले बाबूना से अयपान की तुलना की जासकती है। सूक्ष्म मात्रा में यह उत्तेजक एवं बल्य और पूर्ण मात्रा में कोष्ठमृदुकर है। उष्ण कषाय वामक तथा स्वेदक है। शीत पूर्व ज्वर (Ague) की शैत्यावस्था में तथा उग्र प्रदाह जन्य विकारों से पूर्व होने वाली निर्बलता (depression) में इसका लाभदायक उपयोग किया जा सकता है। इसका शीत कषाय, १ आउंस (अयपान पंचांग) को १ पाइंट पर्यन्त जल में निर्मित किया जा सकता है तथा तीन तीन घंटे पर दो आउंस की मात्रा में इसका उपयोग किया जा सकता है। —डाइमॉक।

कहा जाता है कि इसमें स्कर्वीनाशक तथा परिवर्तक (रसायन)गुण भी है। अमरीकाके पीत ज्वर (yellow fever) में इसके उष्ण कषाय की बड़ी प्रशंसा की जाती है (डॉ० होजेक)। इसके तरल सत्व की मात्रा १० से ३० मिनिम (बूंद) है। पूर्ण मात्रा में यह कोष्ठशुद्धिकारक है तथा इसे आमाशय वा आन्त्रविकार, अजीर्ण, कास तथा शीत ज्वर में देते हैं। इं० मे० मे०।

यह पौधा अमूल्य उत्तेजक, परिवर्तक, अन्तश्छर्मचनाप्रद (या ...) वामक, ज्वरघ्न, मूत्रल और मृदु ... से पूर्ण है। स्वेदक प्रभाव में यह ... से श्रेष्ठतर है। पाचकावयवों पर ... प्रदर्शित करता है। इसमें तिक्त ... है। अजीर्ण तथा उन दशाओं में, ... उत्तेजक की आवश्यकता होती ... सविराम, स्वल्प विराम, आन्त्रिक ... भाँति के ज्वरों, कास, शीत, ... प्रतिश्याय और निर्बलता में भी ... कहा गया है। सर्प तथा विषैले ... पर इसका प्रलेप (पुल्टिस) रूप से ... है। पी० वी० एम०।

तिक्त बल्य रूप से इसको ... आंत्र विकार जैसे—अजीर्ण में ... श्लेष्मनिस्सारक रूप से कास और ... प्रतिश्याय में इसका उपयोग करते हैं। ... यह एक अत्युत्तम औषध है। परि... रूप से शीत ज्वर तथा स्वेदक रूप से ... रोग में इसे प्रयुक्त करते हैं। ... डॉ०।

रक्तपित्त, क्षय, प्रदर, अर्श, रक्तातिसार ... रक्तस्राव एवं किसी अंग के कट ... जाने पर रक्तस्राव होने में इसके ... आभ्यन्तर एवं बाह्य प्रयोग उपयोगी ...

(व० द०) प्रतिनिधि—पाठा।

अयापनाह ayápanah-हिं० (Eupa... Repandum) इं० हैं० गा०।

अयापनी ayápani-ता०, ते० ... रसेज-उ० प० सू०। (Ayapana) ...

अयापनीन ayapanin-इं० सत्व ...

देखो—अयापना।

अयापान ayápan-हिं० संज्ञा पुं० ...

अयापानी ayápáni-ता० ...

(Eupatorium ayapana) ...

अयामीनून aayáminúna-यू० ... (Opium)।

…प्र āayáyáa–अ० अपाहिज, पंगु, व्यर्थ, …म, निर्बल, असमर्थ, शक्तिहीन, जो किसी … के योग्य न हो।

…ayála–हिं० पीरिस ओवेलिफ़ोलिया (Pieris Ovalifolia, D. Don.), …ड्रोमेडा ओवेलिफोलिया (Andromeda Ovalifolia, Wall.)–लें०। …ला, एइलन, एअज, अहर, अयांन–पं०। …ार, अंगिअर, जगाल–नेपा०। पिआज़य …टि०। कंगशिओर–लेप०।

उत्पत्ति-स्थान–शीतोष्ण हिमालय, काश्मीर …भूटान पर्यन्त तथा खसिया पर्वत।

प्रयोगांश—पत्र, कलिका।

उपयोग—सूक्ष्मपत्र एवं कलिकाएँ बकरों के … विष हैं। कीड़ों के मारने के लिए इनका …योग होता है। इनका शीत कषाय त्वग्रोगों … उपयोग किया जाता है। (गेम्बल)

…नुतानी ayáránutáni–यू० एक अप्रसिद्ध … है। लु० क०।

…फ़स ayárúfas–यू० ज़र्द सोसन। (Iris).

ayála–हिं० पुं०, स्त्री० [तु० याल] …े और सिंह आदि के गर्दन के बाल। केसर। …०] लड़के बाले। बालबच्चे।

… ayáhvam–सं० क्ली० कांस्य धातु, …। (Bronze). वै० निघ०।

…ज ayárij–अ० इसका शाब्दिक अर्थ ईश्वर… औषध (दवाए-इलाही) है, किन्तु …की परिभाषा में रेचक औषध को कहते हैं …र इसकी क्रिया-शक्ति (प्रभाव) के कारण इसे …श्वर (अल्लाह्) से सम्बन्धित करते हैं। …भी किसी के मतानुसार प्रत्येक वह औषध, जो …ने ईश्वरदत्त प्रभाव के कारण रेचन लाती है, … 'ईश्वरीय औषध' कहते हैं। किसी किसी ग्रंथ … इयारज का अर्थ रेचक (वा दर्पघ्न) किया गया … क्योंकि इस योग में रेचक औषधें दर्पघ्न …षधों के साथ हैं। किसी किसी ने इसका …र्थ इसकी शिष्टता के कारण … औषध (दवाए शरीफ़) किया है। यह प्राचीन चिकित्सकों द्वारा योजित किया हुआ प्रथम रेचन है। तदनन्तर इसके अवयवों में समय समय पर परिवर्तन होता रहा है।

नोट—इसका उच्चारण अयारिज या इयारज दोनों होता है।

अयारिज फ़ैक़रा ayárij-faiqrá–अ० तल्ख़ अर्थात् कड़ुआ अयारिज। यह एक तिक्त मिश्रित रेचक औषध है। म० ज०। किसी किसीने इसका अर्थ 'तिक्तता को लाभप्रद' किया है। जब इसमें शह्म हञ्ज़ल (इन्द्रायन का गूदा) सम्मिलित किया जाता है तब इसको मुशह्ह म कहते हैं। यह शिर:शूल के प्रायः भेदोंके लिए लाभदायक है एवं आमाशय को सान्द्र दोषों (अख़्लात् ग़लीज़ह) से शुद्ध करता है। मेरे आचार्य प्रायः इसे इत्रीफ़ल सग़ीर या इत्रीफ़ल कश्नीज़ या गुलकंदमें मिलाकर उपयोगमें लाते थे। योग निम्न है—

बालछड़, दालचीनी, ऊदबलसाँ, हब्बबलसाँ, तज, मस्तगी, तगर, केशर प्रत्येक १–१ भाग तथा एलुआ २ भाग सबको कूट छान कर तैयार करें। मात्रा–७ मा० शहद तथा उष्ण जल के साथ।

नोट—कोई कोई चिकित्सक एलुआ को शेष औषधों के समान भाग लेकर अयारिज फ़ैक़रा प्रस्तुत करते हैं। (इ० अ०)

अयारिज लुग़ाज़ियाayárij-lúgháziyá–अ० 'लुग़ाज़िया' एक हकीमका नाम है। यह अयारिज शिरःशूल, आधाशीशी (अर्द्धावभेदक), बैज़ह, ख़ूज़ह, कर्णशूल, सिर चकराना, (शिरोघूर्णन) बधिरता, अर्द्धांग (फालिज), कम्पवायु, लक़्वा, मृगी, श्वित्र तथा कुष्ठ और अन्य सर्दमादी (श्लेष्मज) रोगों के लिए लाभप्रद है। योग यह है—

इंद्रायनका गूदा १७॥ मा०, प्याज अन्सल भूना हुआ (मुशव्वी), ग़ारीक़ून, सक़्मूनिया, कुटकीस्याम, उश्शक़, हरक़्रदयून प्रत्येक १ तो० ३॥ मा०, अफ़्तीमून, कमाज़ारियूस, एलुआ, गूगल प्रत्येक १०॥ मा०, हाशा, ग़ारीक़ून, अनीसूँ,

तेजपात, फ़रासियून, जुम्बद (नागरमोथा), तज, सफ़ेदमिर्च, मुर्मकी, जावशीर, जुन्दबेदस्तर, बालछड़, फ़िग्रासालियून, फ़रावन्द तवील,फ़र्फ़्यून हमामा, सोंठ, उसारहे अफ़सन्तीन प्रत्येक ७ मा०, ज़िन्तियाना, उस्तोख़ूदूस प्रत्येक ५ मा०। इन्हें कूट छान कर यथोचित श्वेत शहद में गूँधें।

मात्रा–१४ मा० शहद तथा उष्ण जल के साथ। इसको प्रस्तुत करने के ६ मास पश्चात् उपयोग में लाना चाहिए। (इ० अ०)

अयारिज हूफ़क़्रातीस ayárij-húfaqrátis अ० "हूफ़क़्रातीस" बक़रात का नाम है। यह अयारिज शिरःशूल जो अशुद्ध धात्वों (पाचन विकार सम्बन्धी दोष) से हो, उसे नष्ट करता है तथा आमाशयिक रतूबतों को दूर करता है। योग इस प्रकार है—

जिन्तियाना, बालछड़, इन्द्रायन का गूदा, फ़रावन्द मदहर्ज, दारचीनी, तज प्रत्येक ३॥ मा०, फ़ित्रासालियून, कमाफ़ारियूस, उस्तोख़ुदूस, पीपलामूल, मस्तगी प्रत्येक २। मा०, एलुआ ५ तो० ३॥। मा० कूट छान कर तिगुने शहद में, जिसके झाग उतारे गए हों, प्रस्तुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—६ मा० से १३॥ मा० तक उष्ण जल या किसी यथोचित क्वाथ के साथ सेवन करें। (इ० अ०)

अयास्य ayásya-हिं० संज्ञा पुं०[सं०] (१) प्राणवायु। (२) शत्रु। विरोधी।–वि० [सं०] निश्चल। अटल।

अयिम्परत्ति ayimpa-rattı-मल० जपा पुष्प, अड़उल-हिं०। Shoeflower (Hibiscu-s rosasinensis, *Linn.*) स० फा० इं०।

अयु ayu-बर० अस्थि, हड्डी। Bones (Ossa) स० फा० इं०।

अयुक्छदः ayuk-chhadah-सं० पुं०
अयुक्छद ayukchhada-हिं०संज्ञा पुं०
(१) सप्तपर्ण वृक्ष, छातिम वृक्ष, छतिवन, सतवन। (Alstonia scholaris *R. Br.*)

हिं० च०। (२) वह वृक्ष जिसकी ... हों। जैसे बेल, अरहर इत्यादि।

अयुक्त ayukta हिं० वि०
अयुत ayut-[सं०] (१)
अमिलित, असंयुक्त, अलग। (२) असंम्मिलन, संयोगविरुद्ध। ... (Incompatible).

अयुग ayuga-हिं० वि० [सं०]

अयुत ayut-हिं० संज्ञा पुं० दस ह... संख्या का स्थान। दस सहस्र। ... (Ten thousand)-हिं० (१) ... स्थान की संख्या।

अयुग्म ayugma-हिं० वि० [सं०] विषम, ताक। (२) अकेला। एकाकी।

अयुग्मकः ayugmakah-सं० पुं० ... वृक्ष, छातिम, छतिवन। (Alstonia scholaris. *R. Br.*) वै० निघ०।

अयुग्मच्छदः ayugmachchhadah ... पुं० (Alstonia scholaris, *R. Br.*) देखो—अयुग्मच्छद।

अयुग्मच्छद ayugmachchhada-हिं० पुं० सप्तपर्ण,छातिम, छतिवन। (Alstonia Scholaris, *R. Br.*) अ० टी०। (... वह वृक्ष जिसकी अयुग्म पत्तियाँ हों, जैसे ... अरहर इत्यादि।

अयुग्मपत्रः ayugma-patrah-सं० पुं०
अयुग्मपर्णः ayugma-parnah "
सप्तपर्ण, छातिम, छतिवन। (Alstonia Scholaris, *R. Br.*) वै० निघ०।

अयुग्मबाण ayugma-bána-हिं० संज्ञा [सं०] कामदेव। (Cupid).

अयुग्मवाह ayugma-váha-हिं० संज्ञा [सं०] सूर्य्य। (Sun).

अयू ayú-तु० रीछ,भल्लूक। बीअर (Bear)...

अयूक ayúka-तु० फ़ाक़्स जो एक ... खाता है।

अयूचा ayúchá-सं० भूताङ्कुश। See—Bhútánkusha.

yusha-हिं० संज्ञा स्त्री० देखो-आयुष।
ुप ayúmi-suo-वर०, अस्थि अङ्गार,
िका कोयला। Animal-charcoal
Carbo-Animalis.) स०-फा० इं०।
ayús-यू०, रू० ज़ङ्गार। यह खनिज तथा
ाम दोनों तरहका होता है।
ु-वर० (ए० व०) सुरा, मद्य, दारू,
ब। Spirit; Arrack. (Indian
irituous Liquor.) स० फा० इं०।
ि० संज्ञा पुं० [अनु०] स्लोथ की जाति का
जन्तु। यह जन्तु अये अये शब्द करता है
लिए इसको अये कहते हैं।
ाआ ayo-miyáá-वर० (व० व०)
ं सुरा। (Spirit.) स० फा० इं०।
ayoe-वर० (ए० व०) पत्रम्-सं०।
, पर्ण, पत्ता, पत्ती, पात-हिं०। (Leaf.)
फा० इं०।
मियाआ ayoe-miyáá-वर० (व० व०)
र्ण, पत्र, पर्णः। (Leaves.) स०
० इं०।
ayogah-सं० पुं० } (१) योग
ayoga-हिं० संज्ञा पुं० } का अभाव।
िवेच। विच्छेद। अनैक्यः। (Analysis.)
२) कठिनोद्यम। (३) कूट (Kúta.)
) गर्भिक।
ः ayo-gudah-सं० पुं० लौह गुटिका,
हे की गोली। (Ball of iron.) यथा—
समाशी विषविषं कथितं ताम्रमेव वा। पीत-
यसि सन्तप्तो भक्षितो वाऽप्ययोगुड॥" स०।
ayogya-हिं० वि० [सं०] जो योग्य
हो। अयुक्त। अनुपयुक्त। (Incompa-
ible, Incompetent.)
म् ayogram-सं० क्ली० (१) मूषल।
२) वाण आदि (An Arrow.)।
३) मन्त्र। (A weapon.)
नः ayoghanah-सं० पुं० (१) एकी-
त-लौहपुञ्ज, लौहकूटम्, हथौड़ी। (२) निहाई।
च्छिष्टम् ayochchhishtam-सं० क्ली०
लौहकिट्ट, मण्डूर। (Ferri Peroxide.)
वै० निघ०।

अयोनि ayoni-हिं० वि० [सं०] अनुत्पन्न।
अजन्मा।

अयोनिज ayonij-हिं० वि० [सं०] जो योनि
से उत्पन्न न हो। जीव विशेष। योनि जातभिन्न,
वृक्ष आदि। (२) अदेह।

अयोभस्म योगः ayobhasma yogah-सं०
पुं० लोह भस्म में नागरमोथे का चूर्ण मिलाकर
खैर के क्वाथ के साथ पीने से श्लीपद दूर होता
है। नि० र०।

अयोमलम् ayomalam-सं० क्ली० लोह मल,
लौह किट्ट, मण्डूर। (Ferri Peroxide.)
लोहारगु वा मण्डूर-बं०। प० मु०। "अयो-
मलन्तु सन्तप्तं।" सि० यो० पाण्डु-चि०
वृन्द। च० द० पाण्डु-चि०।

अयोमोदकः ayomodakah-सं० पुं० लोह
भस्म, तिल, त्रिकुटा समान भाग लेकर तथा सर्व
तुल्य सोनामाखी भस्म मिलाकर शहद के साथ
लड्डू बनाकर खाने से असाध्य पाण्डु का नाश
होता है। नि० र०, वै० वि०।

अयोरजः ayorajah-सं० क्ली० (१) लौहकिट्ट,
मण्डूर (Ferri Peroxide.)। (२)
लोहचूर्ण (Iron Powder.)। च० द०
पाण्डु-चि० नवायस चूर्ण।

अयोरजः प्रभृति चूर्णम् ayorajah prabh-
riti chúrnam-सं० क्ली० सोंठ, मिर्च,
पीपल, विडंग इनके चूर्ण के साथ अथवा हल्दी,
त्रिफला चूर्ण के साथ समभाग लोह भस्म मिला
कर मधु के साथ खाएँ। रस० यो० सा०।

अयोरजादि चूर्णः ayorajádi chúrnah-सं०
पुं० लोह चूर्ण, त्रिकुटा, विडंग, हल्दी, त्रिफला
अथवा निसोथ और मिश्री वा इन्द्रायण की गूदी
गुड़ और सोंठ मिलाकर खाने से कामला दूर
होता है।

अयोरजादियोगः ayorajádiyogah-सं० पुं०
लोह चूर्ण, हड़, हल्दी इनका चूर्ण शहद और
घी के साथ अथवा हड़ का चूर्ण गुड़ और शहद

के साथ चाटने से कामला दूर होता है। वृ० नि० र० ।

अयोरजादि लेपः ayorajádilepah–सं० पुं० (१) लोह चूर्ण, कसीस, त्रिफला, लवंग और दारु हल्दी का लेप करने से नवीन त्वचा का रंग पूर्ववत् हो जाता है। (२) लोहचूर्ण, काला तिल, सुरमा, वकुची, आमला इनको जलाकर भांगरे के रस में पीसकर लेप करने से किलास कुष्ठ (तांबे के समान रंग वाले कोढ़, श्वेत कुष्ठ का भेद) का नाश होता है। इसे जिस स्थानपर लगाना हो पहले खुजलाकर लेप करना चाहिए।

अयः पान ayah-pána–सं० स्त्री० द्रवीभूत तप्त लोहे का पान, अयस्पान। नर्कमें तप्त लोहे का पान करने को कहा है।

अयःपिण्ड ayah pinda–हिं० पुं० लौह पिंड, लोहे का गोला।

अयः शूल ayah-shúla–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) एक अस्त्र। (२) तीव्र उपताप।

अयोवस्तिः ayo-vastih–सं० पुं०, स्त्री० वस्तिकर्म विशेष (A kind of enemata.)। यथा—"एरण्डमूलं निःक्वाथ्य मधुतैलं ससैन्धवम्। एष युक्त अयोवस्तिः सवचापिप्पली फलः॥" भा०।

अयम ayma–ता० देखो—अयम्।

अय्याम् अव्वल ayyám.avval–अ० रोगारम्भ काल अर्थात् आरम्भ रोग से तीन दिवस।

अय्याम् इन्ज़ार ayyám-inzár–अ० बुह्रान की सूचना देने वाले दिन। इन दिनों में विशेष प्रकार के परिवर्तन पाए जाते हैं जिनसे यह सूचित होता है कि उक्त रोग का अमुक दिवस बुह्रान होने वाला है, यथा—नवीन रोगों में प्रथम दिवस परिपक्वता (नुज़ुज) के प्रभाव का प्रगट होना चतुर्थ दिवस बुह्रान उपस्थित होने की सूचना देता है।

अय्याम् ग़ैर या ह़ुरिय्यह ayyám-ghair-báhúriyyáh–अ० वह दिवस जिनमें बुह्रान उपस्थित नहीं होता। वे निम्न तेरह दिवस हैं—२२ वाँ, २३ वाँ, २५ वाँ, २६ वाँ, २८ वाँ, २९ वाँ, ३० वाँ, ३२ वाँ, ३३ वाँ, ३५ वाँ, ३६ वाँ, ३८ वाँ, तथा ३९ वाँ। किन्तु निम्नलिखित रोगों को अय्याम ग़ैर ... माना है—पहिला, दूसरा, दसवाँ, ... पन्द्रहवाँ, सोलहवाँ, तथा बीसवाँ।

अय्याम् या ह़ुरिय्यह ayyám-báhúriyyah

अय्याम् बुह्रान ayyám-buhrán–अ० ... दिवस जिनमें बुह्रान ताम उपस्थित हो। ... निम्नांकित ११ दिवस हैं। इनमें नवीन रोगों का बुह्रान उपस्थित होता है—

चौथा, सातवाँ, चौदहवाँ, बीसवाँ, इक्कीसवाँ, चौबीसवाँ, सत्ताईसवाँ, इकतीसवाँ, चौंतीसवाँ, सैंतीसवाँ, तथा चालीसवाँ। किसी किसी ने प्रथम व द्वितीय दिवस की भी अय्याम बुह्रान में गणना की है। पुरातन रोगों का सर्व ... बुह्रान चालीसवें दिन उपस्थित होता है।

अय्याम् वाक़ अ फ़िरवस्त ayyám-váqaat-vast–अ० मध्यकाल जो न बा ह़ुरी (बुह्रान) काल) हो और न इन्ज़ारी (बुह्रान सूचक दिन) किंतु किसी घटना या प्रतिद्वन्द्विता के ... इनमें बुह्रान ग़ैर ताम उपस्थित हो। वे ... दिन हैं, यथा—३ रा, ५ वाँ, ६ वाँ, ११ वाँ, १३ वाँ, और १७ वाँ, इन दिनों में कभी बुह्रान उपस्थित होता है और कभी नहीं। जिन दिनों में बुह्रान नाक़िस (अपूर्ण) होता तथा ... व चिन्ता होती है, वे निम्न ८ दिवस हैं, यथा—६ वाँ, ८ वाँ, १० वाँ, १२ वाँ, १५ वाँ, १६ वाँ, १८ वाँ, और १९ वाँ।

अय्यिम् ayyim–अ० विधवा या ... अथवा रँडुआ पुरुष; अविवाहिता स्त्री या पुरुष। इसका बहुवचन अयामा है। नन् (Nun) —ई।

अय्यी aayyi–अ० रुक रुक कर बात करना, बातचीत में रुकावट होना, आजिज़ हो जाना, किसी वस्तु को न जानते हुए उसको बतलाने में अवाक् रहना, अय्यी तथा सिह्त का भेद ... सिहत में।

[arauga-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अर्घ्य=द्रव्य] सुगंध । महक ।

; aranda -हिं० संज्ञा पुं० रेंड़ (Ricinus Communis.) देखो—एरंड ।

ara हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) कोण । कोना (Corner, angle) (२) सेवार, शैवाल । (Sea-weed)

[āarab-अ० ख़रगोश, खरहा, शशक । हेयर (A hare), रैबिट (Rabbit)-इं० ।

अर āarāar-अ० (१) सरोकोही —फ़ा० । हाऊबेर, हपु(षु)षा-हिं० । (Juniperi fructus. यह दो प्रकार का होता है—(क) बृहत् जिसका फल फ़िन्दक़ के समान होता है और (ख) लघु जिसका फल बाक़ला के बराबर गोल होता है । (२) खजूर (Date) । (३) अभल ।

ल araila-हिं० संज्ञा पुं० [देश] एक रुई का नाम ।

araí-हिं० स्त्री० आलुकी, घुइयाँ, अरुई । (The root of Arum colocasia.)

न araún-हिं० पुं० अहरयो, अहरन ।

: arakah-सं० पुं०, स्त्री०
; araka-हिं० संज्ञा पुं० } (१)शैवाल, सेवार । (Sea weed) हारा० । बै० निघ० । (२.) पित्तपापड़ा, खेतपापड़ा । (Oldenlandia corymbosa.) रा० ।

; araka-हिं० संज्ञा पुं०
क āaraq-अ० } (१) स्वेद, घर्म, पसीना । पर्स्पाइरेशन(Perspiration), स्वेट (Sweat)-इं० । (२)परिस्रुत जल, टपकाया हुआ पानी, भभके से खींचा हुआ औषधीय जल । किसी पदार्थ का रस जो भभके से खींचने से निकले । एक्वा (Aqua), वॉटर (Water) । देखो–अर्क़ । (३) रस ।

कुद्रुमी arak-kudrumí-सन्ता० लाल पटुआ, लाल अम्बाड़ी । (Hibiscus sabdariffa) इं० मे० मे० ।

: जुज़ई āaraq-juzí
क मौज़ई. āaraq-mouzaāí } —अ० स्थानिक स्वेद, आंशिकघर्म, वह स्वेद जो किसी विशेष अवयव में प्रादुर्भूत हो । मेरिड्रोसिस (meridiosis)-इं० ।

अरक़ दम्वी āaraq-damví-अ० रक्तमय स्वेद-स्राव होना, पसीने में शोणित आना, रक्त मिश्रित स्वेद स्राव होना, स्वेद में रक्त मिला हुआ निकलना । हेमिड्रोसिस (Hemidrosis)-इं० ।

अरक नाना araka-náná-हिं० संज्ञा पुं० [अ० अर्क़ नअ्नअ्] एक अरक जो पुदीना और सिरका मिलाकर खींचने से निकाला जाता है ।

अरक़ब āraqab-अ० पर्वतीय अर्थात् पहाड़ी बकरा, गाय या बारहसिंगा ।

अरक बादियान araka-bádiyán--हिं० संज्ञा पुं० [अ०] सौंफ का अरक़ ।

अरक़ बौली āaraq-boulí-अ० मूत्रीयघर्म, पेशाबमय स्वेद, वह स्वेद जिसमें मूत्रद्रव्य विसर्जित हो । ऐसे स्वेद में से मूत्र की सी गंध आती है । यूरिड्रोसिस (Uridrosis) -इं० ।

अरक़ मुतलव्वन āaraq-mutalavvan-अ० वर्णयुक्त स्वेद, रंगीन पसीना, रंगीन पसीना आना । क्रोमिड्रोसिस (Chromidrosis) -इं० ।

अरक़ मुन्तिन āaraq-muntin-
अरक़ मन्तिन āaraq-mantin } -अ० दुर्गन्धित स्वेद, दुर्गन्धमय पसीना । ब्रोमिड्रोसिस (Bromidrosis)-इं० ।

अरक़ मुफ़्रित āaraq-mufrit-अ० स्वेदाधिक्य, पसीने की अधिकता, अधिकता के साथ स्वेदस्राव होना । एफिड्रोसिस (Ephidrosis) हाइपरिड्रोसिस (Hyperidrosis), सुडोरोसिस (Sudorosis)-इं० ।

अरकला arakalá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अर्गल=अगरी या बेंड़ा] रोक । मर्यादा ।

अरक़लियान araqliyán-यू० [illegible]

अरक़ लैली āaraq-laili-अ० रात्रि [illegible]

रात में दर्शाना आना, जैसा कि राजयक्ष्मा में प्रायः होता है। नाइट स्वेट (Night sweat)-इं०।

अरकाकिया arakákiyá-यू० मकड़ी का जाला। (The Spider's web).

अरक़ान araqán-यू० } मेंहदी। (Myrtus communis).
अरक़न araqún- }

अरकान arakán-बारहसिंगा। A stag (Cervus elaphus).

अर क़ुद्दम् ăaraquddam-अ० रक्तमय स्वेद स्राव, स्वेद के स्थान में रक्त निकलना, यह एक रोग है जिसमें स्वेद के स्थान में शुद्ध शोणित निकलता है। हेमेटीड्रोसिस (Hematidrosis)-इं०।

अरकुल arakul-पं० दखमिला, दर्मविला-उ० प० सू०।

अरक़ून araqún-यू० मेंहदी। (Myrtus communis.)

अरक़ूलस araqúlas-यू० फ़ाराव, हाउबेर, हपु(षु)षा। (Juniperi fructus.).

अरक्टियम्-लेप्पा arctium lappa-लेप्पा। (Burdock.)-इं०।

अरक्टोस्टेफिलोस ग्लॉका arctostaphylos glauca-ले० (Manzanita leaves)-इं०।

अरक्टोस्टेफिलोस यूवा अर्साई arctostaphylos uva ursi-ले० भल्लूक द्राक्षा, ऋक्ष द्राक्षा-सं०। इनबुद्दुब, ऑविसे-अ०।

अरक्तः araktah-सं० पु० लाक्षा, लाख, लाही। ला-बं०। (Lac) रा० नि० व० ६। देखो-अलक्तः।

अरक्रक् ăarakrak-अ० मांसल तथा उभरा हुआ पेड़।

अरखर arakhar-पं० गड़ुम्बल, अकोरिया, भलियून। उ० प० सू०। मेमो०।

अरख़र arakhar-पं० दखमिला, दसविला। उ० प० सू०। मेमो०।

अरकोल arakola-हिं० संज्ञा पुं० [हिं० कोलीला] एक वृक्ष जो ... है। इसका पेड़ झेलम से आसाम ... से ८००० फुट की ऊँचाई तक ...।

अरकासार arakására-हिं० [?] तालाब। बावली।-हिं०।

अरग araga-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अगुरु चन्दन] अरगजा। पीले रंग का एक द्रव्य जो सुगंधित होता है।

अरगजा aragajá-हिं० संज्ञा पुं० [अरग+जा] एक सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाता है। यह केशर चन्दन कपूर को मिलाने से बनता है। (A perfume of a yellowish colour and composed of several scented ingredients.)

अरगजी aragají-हिं० संज्ञा पुं० [अरगजा] एक रंग जो अरगजे का सा होता है। वि० [हिं० अरगजा] (१) अरगजे के रंग का। (२) अरगजा की सुगंधि का।

अरगट aragata-हिं० संज्ञा पुं० देखो-अर्गट। (Ergota).

अरगवाँ araghaván-फ़ा०
अरगवानी araghaváni-हिं० ... [फ़ा०] रक्तवर्ण, लाल रंग। वि० (१) ... गहरे लाल रंग का। लाल। (२) ...

अरगल aragala-हिं० संज्ञा पुं० [अर्गल] वह लकड़ी जो किवाड़ ... इस लिए आड़ी लगाई जाती है कि ... खुले नहीं। ब्योंड़ा। गज।

अरगामूनी araghámúní-यू० ... मामीसाँ मुत्र (जंगली ख़सख़ास के ... बूटी है)।

अरगू aragú-फ़ा० लाख, लाक्षा। (Laccifer lacca.)

अरघट्ट araghatta } -हिं० संज्ञा पुं०
अरघट्टक araghattaká } [सं०] रहट। देखो-"अरहट" ...

: aragvadhah-सं० पुं० अमल-
[तास], आरग्वध, धन बहेड़ा। (Cassia
fistula.) रा० नि० व० ६। भा० पू० १
। द्रव्य० गु० वै० निघ०।

म् aragvadham-सं० क्लीं० अमल-
[तास], स्वर्णालुकन। (Cassia fistula.)
[ग]यो० बृहद् अग्निमुख चूर्ण।

araghána-हिं० संज्ञा पुं० [सं०
आघ्र=सूँघना] गंध। महक। आघ्राण।

[अरङ्गः],-गी arangah,-gá,-gí-सं० पुं०,
० (१) एरङ्गीमत्स्य, मछली भेद, मछली
[भे]प (Pisces.) वै० निघ०।

(२) मधु शिग्रुः, मीठा सहिंजन। रत्ना०।
Guilandina Moringa, Sweat
[v]ar. of-)

[अ]ranga-उराट० कुटकी, भोवडर, गोएडा।
-बोडकु-तै०। (Eriolæna Hookeri-
a,W&A; Syn. Ereolœna spe-
abilis Planch.) इसके तन्तु एवं रुई
[व्य]वहार में आती है। मेमो०।

arangakah-सं० पुं० डिकंर्ज़िग, कडु
[ख]र, काला खजूर-हिं०। मौलिया दयुबिया
Melia dubia, Cav.), मी. सुपर्बा
Melia superba.), मी. रोबस्टा (Me-
robusta.)-ले०। कडु खजुर-गुज०,
बम्बई। निम्बर-महा०। काड-बेवु,
-बेवु-कना०।

निम्ब वर्ग

(N. O. meliaceae)

उत्पत्ति-स्थान—पूर्वी व पश्चिमी प्रायद्वीप
[त]था लंका।

वानस्पतिक-विवरण—डिकंर्ज़िग वृक्ष
के फल को संस्कृत में अरङ्कक ख्याल
[कि]या जाता है। आकार, रूप तथा वर्ण में यह
[फ]ल कुछ खजूरके समान होताहै, परन्तु ध्यानपूर्वक
[दे]खा करने पर मज्जा एक अत्यन्त कठिन अस्थि
(गुठली) से भली भाँति संश्लिष्ट पाई
[जा]ती है। फल डंडी का अवशिष्ट भाग भी खजूर की डण्डी से भिन्न दीख पड़ता है। जलमें भिगोने पर फल शीघ्र अपनी सिकुड़न को छोड़कर अंडाकार पीताभहरित वर्ण के बेर के समान हो जाता है। अब छिलका मोटा दीख पड़ता है तथा सरलतापूर्वक गूदा से भिन्न किया जा सकता है।

फलशीर्ष मुड़ा हुआ होता है और उस पर सूक्ष्म अंकुर होते हैं। आधार पर पञ्चभाग युक्त पुष्पाभ्यंतर कोष दल तथा फलडण्डी का एक छोटा भाग लगा होता है। *गुठली १ इञ्च लम्बी, अप्रशस्त रूप से पञ्च परिखायुक्त, प्रलम्बित, दोनों सिरों पर छिद्र युक्त होती है; शीर्ष, छिद्र की चारों ओर पञ्च दंष्ट्रयुक्त, पञ्चकोषयुक्त (या पतन के कारण इससे न्यून) होता है; बीज अकेला, भालाकार, शीर्ष से लगा रहता है; बीजावरण* सूक्ष्म परिमाण में; गर्भ सरल, विलोम; दौल भालाकार; आदि मूल अंडाकार एवं ऊर्द्ध होता है।

—बीज $\frac{3}{4}$ इञ्च लम्बा तथा $\frac{1}{6}$ इञ्च चौड़ा होता है।

बीज त्वक् (Testa) गम्भीर धूसर या श्याम वर्ण का परिमार्जित; गिरी अत्यन्त तैलीय एवं मधुर स्वाद युक्त होती है।

उपयोगांश—फल।

रासायनिक संगठन—(या संयोगी द्रव्य) फलस्थ तिक्त तत्व एक प्रकार के राल में परिणति-शील ग्लूकोसाइड है जो ईथर, मद्यसार तथा जलमें विलेय होता है। इसमें किञ्चित् अम्ल प्रतिक्रिया होती है। इसके अतिरिक्त इसमें सेव की तेजाब (Malic acid) ग्लूकोज, लुआब, तथा पेक्टीन नामक पदार्थ पाए जाते हैं।

डाइमॉक।

प्रभाव तथा उपयोग—फल मज्जा में एक प्रकार का तिक्त एवं मतलीजनक स्वाद होता है। श्रमजीवियों में उदरशूल की यह एक उत्तम औषध है। इस हेतु युवापुरुष की मात्रा अर्द्ध फल है। इसमें किसी रेचक गुण की विद्यमानता मुश्किल से प्रतीत होती है; सो भी कहा जाता है कि यह कृमिघ्न प्रभाव करता है तथा व्यथाको तत्काल शमन करता है। कोंकनमें कच्चे फल का

स्वरस १ भाग, गंधक ½ भाग, और दही १ भाग, इन तीनों को ताम्र पात्र में अग्नि पर गरम कर तरखुजली (Scabies) एवं (Maggots) द्वारा जनित घतों में लगाते हैं। डाइमॉक।

फल कटु, संकोचक और और वायुनिस्सारक (आध्मानहर) है। इ० मे० मे०।

अरङ्गरः arangarah-सं० पु० कृत्रिम विष। (Artificial Poision.) वै० निघ०।

अरङ्गुदी arangudí-सं० स्त्री० माधवीलता। (See-mádbavílatá.) वै० निघ०।

अरचरू aracharrú-शिमला० मसुरी,मकोला -हिं०। रसेलवा, पजेरी-शिमला०। भोजिन्सी -नैपा०। (Coriaria nepalensis.) मेमो०।

अरचि arachi-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अर्चि] ज्योति। दीप्ति। आभा। प्रकाश। तेज।

अरची arachí-ता० काञ्चनार, कचनाल, अरता -हिं०। (Bauhinia variegata.) मेमो०।

अरचु arachu-गढ़वाल हिन्दी रेवतचीनी। मेमो०।

अरज़ ããraz-अ० / मुज़ाअफ़ह muzáàafah } तिब की परिभाषा में उस अस्वाभाविक दशा या व्याधि का नाम है जो अन्य रोगोंके कारण अर्थात् उसके आधीन होकर उत्पन्न होती है। उदाहरणतः वह शिरःशूल जो किसी ज्वर के आधीन होकर जनित होता है अर्-ज़ (उपसर्ग, उपद्रव) कहलाता है। कम्प्लिकेशन (Complication.), सिम्प्टम् (Symptom.)-इं०।

अलामत और अरज़ का भेद—

इन दोनों में मुख्य और गौण का अन्तर है अर्थात् अर्-ज़ अलामत की अपेक्षा मुख्य वा प्रधान है। क्योंकि अलामत (लक्षण) स्वास्थ्य तथा रोग प्रत्येक दशा के लिए प्रयोग में आता है और फिर कभी यह स्वास्थ्य एवं रोग से पूर्व और कभी पश्चात् होता है। इसके विपरीत अर्-ज़ (उपसर्ग) रोगाक्रमण के पाया जाता है और उसके अस्तु, निम्नोष्ठ-स्फुरण वमन होने के (रूप) कहा जाता है, किन्तु कहा जा सकता। क्योंकि वह पश्चात् नहीं, प्रत्युत पूर्व में पाया

अलामत और दलील में भेद मत में।

डॉक्टरी नोट—कम्प्लीकेशन परस्पर संश्लिष्ट (चिपटना) डॉक्टरी की परिभाषा में दो का एक ही काल में उपस्थित हो एक ही रोगके वेग पथमें अन्य रोग का उत्पन्न हो जाना है, जिनका रोग पर निर्भर होता है। दूसरे शब्दों व्याधि के आधीन होते हैं।

अर्वाचीन मिश्रदेशीय चिकित्सा की रचना तथा उसके मौलिक में रखकर मुज़ाअफ़ह् संज्ञा को रूप से प्रयोग में लाते हैं। परन्तु भाषा में उसका वास्तविक प्राचीन अर्-ज़ शब्द से प्रकट हो जाता है। ही यहाँ ग्रहण किया गया है।

सिम्प्टम् का शाब्दिक अर्थ है। किन्तु डॉक्टरी परिभाषा में कहते हैं, जो रोगकाल में उपस्थित जिससे उक्त व्याधि की उपस्थिति है। अस्तु, इस विचार से सिम्प्टम (रूप वा लक्षण) का पर्याय है। चीन मिश्रदेशीय तबीब मुज़ाअफ़ह अर्-ज़ को इसका पर्याय मानते हैं।

अरज araja-हिं० संज्ञा पुं० चौरा।

अरज ããraja-अ० पंगु या लुंज, पंगुत्व, लंगड़ापन। लेमनेस (L... ss.)-इं०।

अरजल arajala-हिं० संज्ञा पुं० (१) वह घोड़ा जिसके दोनों पिछले अगला दाहिना पैर सफ़ेद वा एक रंग

…रा ऐसी माना जाता है। (२) नीच …र पुरुष। (३) वर्ण संकर।
(अ०) नीच।

…rjá-अ० घर, आकाश, आस्मान।
…)

…ajána-फारस० बरबरी बादाम का
…

…rajálún-फारस० फ़ाशरा, फिज़-
(Bryonia laciniosa).

…rjá-सं० स्त्री० घृतकुमारी, घीकुवार।
…s Barbadensis.)

…rjuna-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दे०
…(Terminalia Arjuna).

…ṭí-सं० स्त्री०
…araṭí paṇḍu-ते०
…raṭí-cheṭṭu-ते०
} केला, कदली

… अन्टचेट्टु, अरिट चेट्टु-ते०।
…sa sapientum, *Linn.*) स०
…।

…aṭuh-सं० पुं० अरलुवृक्ष, सोनापाठा,
…)नाक। श्योणा गाछ-बं० (Oroxy-
…indicum, *Vent.*) अ० टी०।

…araṭu-parṇah-सं० पुं० यह
…णी वृक्ष है। अरटुपर्ण नामक वृक्ष।
…। सू० १३। १५। का० २०।

…adí-नैपा० कचेटा-हिं०। अग्लागल,
…। (Mimosa rubicaulis.)
…

…araḍúsí-गु० अडूसा, वासक।
…hatoda vasica, *Nees.*).

…aṇah-सं० पुं० (१) चित्रक वृक्ष,
…। (Plumbago zeylanica.)
…वे०। (२) गंदा, मलिन। अथर्व० सू०
१२। का० ५।

…दिग भूकस araṇa-tandig-bh-
…-बम्ब० भूतफल-सं०। बकरा-यू० पी०
मिरन्दुप-अव०। मेमो०।

…araṇa-maraṇa-मह० जुरूम-
हयात्, हेमसागर हिं०, बं०। (Kalnchœ laciniata, *D. C.*) फा० इं० १ भा०।

अरण मरम् araṇ-maram-मल० तून। (Cedrola toona, *Roxb.*) इं० मे० मे०। स० फा० इं०। इ० मे० प्लां०।

अरणा araná-हिं० पुं०, स्त्री० (१) जंगली भैंसा। (A wild buffalo.)। (२) कण्डा, जंगली कण्डा, अरना। (Cowdung found dried in the forest.).

अरणिः araṇih-सं० पुं०
अरणि araṇi-हिं० संज्ञा स्त्री०
} (१) एक प्रकार का वृक्ष

गनियार। गंगेथू। क्षुद्राग्निमंथ वृक्ष। छोटी अरणी का वृक्ष, कुबड्ली, अरणी-हिं०, सं०। छोट गणिर-बं०। (Clerodendron Inerme.) वा० टी० १५ अ०; हेमा०। धीरतर्व्यादि। अरणिर्वह्निमन्थेना द्युयोनिर्मध्यदारुणि। मे० णत्रिकं। (२) श्योणाक, सोनापाठा, अरलु (Oroxylum Indicum, *Vent.*)। (३) चित्रक वृक्ष, चीता (Plumbago Zeylanica.)। (४) सूर्य (The sun.)। (५) अग्न्युत्पादक-काष्ठयन्त्र। काठ का बना हुआ एक यन्त्र जो यज्ञों में आग निकालने के लिए काम आता है। इसके दो भाग होते हैं—अरणि वा अधरारणि और उत्तरारणि। यह शमीगर्भ अश्वत्थसे बनाया जाता है। अधरारणी नीचे होती है और उसमें एक छेद होता है। इस छेद पर उत्तरारणी खड़ी करके रस्सी से मथानी के समान मथी जाती है। छेद के नीचे कुश वा कपास रख देते हैं जिसमें आग लग जाती है। इसके मथने के समय वैदिक मंत्र पढ़ते हैं और ऋत्विक लोग ही इसके मथने आदि का काम करते हैं। यज्ञ में प्रायः अरणी से निकली हुई आग ही काम में लाई जाती है। अग्निमंथ।

अरणिका araniká-सं० स्त्री० अग्निमंथ वृक्ष, अरणी। (Clerodendron Inerme.) वा० सू० १५ अ० वेहन्तरादि व०। "वेहन्तरारणिरुबूक वृषाश्व भेद……।"

अरणी arani–सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) जंगली मादा भैंस, भैंस (A female wild buffalo.)। (२) क्षुद्राग्निमन्थ। रा० नि० व० ६। (३) अरनी (बो०), अगेथु, (बु), गणि (नि) आरि, टेकार–हिं०।

संस्कृत पर्याय–गणिकारिका, अग्निमन्थः, श्रीपर्णी, कर्णिका, जया, तेजोमन्थः, हविर्मन्थः, ज्योतिष्कः, पावकः, अरणिः, वह्निमंथः, मथनः (र), जयः (भा०), गिरिकर्णिका (द्रव्याभि०), पावकारणिः (शब्द मा०), अग्निनयनः, तर्कारी, वैजयन्तिका, वैजयन्ती, अरणीकेतुः, श्रीपर्णी, नादेयी, विजया, अनन्ता, नदीजा, हरिमन्थः।

अन्वर्थ–संज्ञा—"मधुरया", "गन्धपुष्पा" और "गन्धपत्रा"। गनियारी, अ(आ)ग्नमान्त, मूतभैरवी, गणियारी–पं०। प्रेम्ना इण्टेग्रिफोलिया (Premna integrifolia, *Linn.*) प्रेम्ना स्पाइनोसा (Premna spinosa, *Roxb.*) मुजय (बी), नेलीचेट्टु–ता०। पेबु-नेल्लि, चिन्न-नेल्लि, चिरिनेल्लु-चेट्टु, पिनुग्ना-नेल्लि, नेल्लि-चेट्टु–ते०, तै०। अप्पेल–मल०। तक्किले, तग्गी, नरुवल, मेरया–कना०, कर०। गनेन्यारी, गैंयदारी–कों०। ऐरण, नरवेल, टाकला, चामारी, (थोर ऐरण=क्षुद्राग्निमंथ)–मह०। अरणी, मोठी अरणी, ऐरणमूल–गु०। अगथायास–उड़ि०। गनियारी–आव०। बकर्च–गा०। अगिवथ–उत्०। गिनेरी–नैपा०। गणियरी–आसा०। सिहिनमिवि, कर्णिका–सिं०। अरनी, ऐरणमूल–बम्ब०। डांगथैंग्-वी–बर०।

निर्गुण्डी वर्ग
(*N. O. Verbenaceæ*)

उत्पत्ति–स्थान—यह भारतवर्ष के अनेक प्रांतों विशेषतः समुद्रतट पर होती है। उत्तरी भारत, तिब्बत, काशमीर, बम्बई से मलक्का पर्यन्त, सिलहट और लंका।

नोट—क्षुद्र, बृहत् भेद से अग्निमंथ दो प्रकार का होता है। दोनों प्रकारके अग्निमंथ गुण में समान होते हैं।

क्षुद्राग्निमन्थ के पर्याय—ह्रस्वगणिकारिका, तपनः, विजया, अरणिः, लघुमन्थः, तेजोवृक्षः (रा० नि० व० ६)। छोटी गणियारी–बं०। टाकली, नरवेल–मह०। तमी–क०। फ्लोमिडिस (Premna phlomoides, Linn.), क्लेरोडेण्ड्रोन फ्लोमाइडिस (Clerodendron phlomoides) [illegible] क्षुद्राग्निमन्थ।

किसी किसीने संगकुप्पी (Clerodendron Inerme, *Gærtn.*) को [illegible] छोटी अरणी लिखा है। देखो–संगकुप्पी (कुण्डली–सं०। बनजोई–बं०। [illegible] द०)।

वानस्पतिक–वर्णन—इसके [illegible] वा क्षुद्रवृक्ष होते हैं। वृक्ष १०-१२ [illegible] बहुशाख होते हैं। कांड, वृक्ष, [illegible] शाखाएँ प्रायः भूमिसंपतित (भूमि [illegible] से निकली हुई), प्रसरित होती हैं [illegible] उत्पन्न होते हैं। कांड–त्वक् ऊपर से [illegible] एवं सचिक्कण, भीतर से हरिद्वर्ण [illegible] लघु, अल्पाघात से टूट जाने वाले होते हैं। [illegible] सम्मुखवर्ती, वृन्तयुक्त, हृदयाकार, [illegible] (अनीदार न्यूनकोणीय), पत्रप्रांत [illegible] कार सखंड (दाँतेदार), पत्रोदर [illegible] पत्रपृष्ठ शिरान्वित एवं चिकना। [illegible] और १-३ इंच चौड़ा, पत्र में एक प्रकार [illegible] गंध होती है, पत्रवृन्त पत्र की [illegible] चौथाई दीर्घ। पुष्प सशाख, पुष्पदंड [illegible] पुष्पदंडकी प्रत्येक शाखा, १-३ पुष्प [illegible] है, सविन्यास, सीमान्तिक वा कक्षीय, [illegible] विभाग सम्मुखवर्ती और द्विशाख, पुष्प [illegible] बहुसंख्यक, पीत वा हरिताभश्वेत, [illegible] दल–भाग प्रधानतः २ भाग युक्त जिनमें [illegible] तीनखंडोंमें ईषत् खंडित व दीर्घ, [illegible] ह्रस्व। पुंकेशर ४, जिनमें २ ह्रस्व [illegible] युक्त, श्वेताभ, पुष्पोपरि। दीर्घ पुंकेशर [illegible] वर्ण के। परागकोष–स्पष्टतया [illegible]

…ग्निमन्थ का वृक्ष पुष्टतर होता है। इसलिए …गुल्म कहते हैं। गणियारी के कांड तथा …ओं में वृहत्, दृढ़ और तीक्ष्णाग्र शाखाएँ …एक दूसरे के विपरीत दिक् विस्तृत भाव …त होती हैं। वह (अरणी) ऐसी नहीं होती। …प्रकार के अग्निमन्थ में यही भेदक चिह्न है।

…रासायनिक संगठन—एक राल (A re…), एक तिक्त क्षारीय सत्व अर्थात् क्षारोद (Alkaloid) और कषायिन (Tannin).

…योगांश—पत्र, मूल, कांडत्वक्।

…षध-निर्माण—क्वाथ, मात्रा—२ से १० … यह दशमूल की दस ओषधियों में से एक …और इसकी जड़ दशमूल में पड़ती है।

…नाम-निर्णय तथा इतिहास—मन्थन वा …द्वारा जिससे अग्नि उत्पन्न हो उसको …"अग्निमन्थ" या "वह्निमन्थ" कहते हैं। अरणि का …अग्नि है और यहाँ इससे अभिप्राय अग्न्यु…के यंत्र है। चूँकि यज्ञ के लिए पवित्राग्नि …करने के लिए इसका काष्ठ काम में आता …इसलिए इसके वृक्ष को उक्त नामों से अभि…किया गया। गैम्बल (Gamble) …के मतानुसार सिक्किम की पहाड़ी जातियाँ अग्नि …हेतु स्वभावतः अब भी इसके काष्ठ का उप…करती हैं। इसके दो भाग होते हैं—(१) …भाग जिसका काष्ठ कोमल होता है उसे …में अधरारणी और (२) ऊर्ध्व भाग को …का काष्ठ कठोर होता है और जिससे मन्थन …सम्पन्न होती है, प्रमन्थ कहते हैं। ये योनि …उपस्थ के संकेत माने जाते हैं।

अरणी के गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—तर्कारी (गणि…का) कटु, उष्ण, तिक्त तथा वातकफनाशक …और सूजन, श्लेष्मा, अग्निमांद्य, अर्श, मल के …न्ध तथा आध्मान को हरण करने वाली है। …। अरनी वीर्य में और रसादि में तुल्य हैं। …लिए जहाँ जैसा प्रयोग हो उसी के अनुसार …का उपयोग करना चाहिए। यथा—"अग्निमन्थ …द्वयैव तुल्यं वीर्यं रसादिषु। तत्प्रयोगा…नुसारेण योजयेत् स्वमनीषया॥" (रा० नि०)

तर्कारी कटुक (चरपरी), तिक्त तथा उष्ण है और वात, पांडु, शोथ, कफ, अग्निमांद्य, आम एवं विबन्ध (मलरोध) को नष्ट करने वाली है। (धन्वन्तरीय निघण्टु)

गुण—अग्निमन्थ, उष्णवीर्य तथा कफ, वात को नष्ट करने वाला, कटुक (चरपरा), तिक्त, तुवर (कषैला), मधुर और अग्निवर्द्धक है। प्रयोग—सूजन और पांडु रोग को दूर करता है। भा० पू० १ भा० गु० व०।

गणिकारी शोथहर और वातरोगों के लिए हितकारी है। राज०।

लघु अग्निमन्थ के गुण वृद्धाग्निमन्थ के समान हैं। यथा—"लघ्वग्निमन्थस्य गुणाः प्रोक्ता वृद्धाग्निमन्थवत्। विशेषाल्लेपने चोपनाहे शोफे च पूजितः॥" परन्तु लेपन, उपनाह और सूजन में इसका विशेष उपयोग होता है। (निघण्टु-रत्नाकर).

यह विष आम और मेद रोग नाशक है।

अरणी के वैद्यकीय व्यवहार

चरक—अर्श में अग्निमन्थ-पत्र—अर्श जन्य वेदना से पीड़ित रोगीको तैलाभ्यंग कराके अरणी पत्र के कोष्ण क्वाथ में अवगाहन कराएँ। (चि० ६ अ०)

सुश्रुत—इक्षुमेह में गणिकारिका मूल वा काण्डत्वक्—(१) इक्षुमेही को अरणी मूल वा कांडत्वक् द्वारा प्रस्तुत क्वाथ पान कराएँ। 'इक्षुमेहिनं वैजयन्तीकषायम्।' (चि० ११ अ०)

(२) चक्षुःकामित्व में गणिकारिका मूलत्वक्—(देखो—असन)।

हारीत—वातव्रण में गणिकारिका मूल—मातुलुंग और अग्निमन्थ मूल को काँजी में पीस कर वातव्रण पर प्रलेप करना हितकारक है। (चि० ३५ अ०)

चक्रदत्त—वसामेह में गणिकारिका मूलत्वक्—(१) वसामेह में अग्निमन्थ की जड़ की छाल का क्वाथ प्रयोग में लाएँ। (प्रमेह-चि०)

(२) शीतपित्त में गणिकारिका मूल—अग्नि-मन्थ की जड़ की छाल को पीसकर (कल्क) गोघृत के साथ एक सप्ताह पर्यंत पीने से शीत-पित्त, उदर्द और कोठ का नाश होता है। (शीतपित्तोदर्द-चि०)। (३) स्थूलता में गणिकारिका मूलत्वक्—अग्निमन्थ की जड़ की छाल द्वारा निर्मित क्वाथ में शिलाजीत का प्रक्षेप देकर पान करने से स्थूलता नष्ट होती है। (स्थौल्य-चि०)

वक्तव्य

चरक, अनुवासनोपग, शोथहर एवं शीत-प्रशमन वर्ग में तथा सुश्रुत, वरुणादि व वीर-तर्वादि गण में गणिकारिका का पाठ आया है। किसी किसी देश में वातरोगी को गणिकारिका के पत्र का शाक व्यवहार कराया जाता है।

नव्यमत

प्रभाव—अरणी पाचक, आध्मानहर, परिव-र्तक (रसायन) और बल्य है।

प्रयोग—इसके पत्र का फांट (१० में १) विस्फोटादि कृत ज्वर, शूल, उदराध्मान में १ से २ आउंस की मात्रा में व्यवहृत होता है और मूलत्वक् क्वाथ (१० में १) ज्वरावसानज दुर्बलावस्था, पूयमेह, आमवात तथा वातवेदना (Neuralgia.) रोग में सेवनीय है। (मेटिरिया मेडिका ऑफ़ इण्डिया— आर० एन० खोरी, भा० २, पृ० ४७२)

एन्स्ली (Ainslie.) लिखते हैं—गणि-कारिका मूलत्वक् क्वाथ हृद्य, पाचक एवं ज्वर में लाभदायक है। इसकी जड़ तिक्त एवं प्रिय-गंधि है तथा क्वाथ रूप में प्रयुक्त होती है।

र्हीडो (Rheede.) इसको अप्पेल नाम से अभिहित करते हैं और इसके पत्र के क्वाथ को उदराध्मान में सेवनीय बतलाते हैं। लंका में यह महामिदिया मिदि-गस्स नाम से प्रसिद्ध है।

एट्किन्सन (Atkinson.) लिखते हैं—शैत्यप्रभव रोग एवं ज्वर में गणिकारिका पत्र को काली मरिच के साथ पीसकर [देते] हैं। शाखा-पत्र सहित अर्थात् पञ्चांग को कूटकर क्वाथ प्रस्तुत करें। तथा वातवेदना (Neuralgia.) के अंग को उक्त क्वाथ से सेवन करें। (... ३ य खंड ६७ पृ०)

आर० एन० चोपरा महोदय के म[त से] यह एक साधारण क्षुप है जो भारतवर्ष के [अधिकांश भाग] से भाग विशेषकर समुद्रतटों में पाया ज[ाता है।] प्राचीन चिकित्सकों ने इसके पत्र एवं [मूल के] प्रभावात्मक औषधीय गुण के वर्तमान [होने का] उल्लेख किया है। इसकी जड़का क्वाथ ([...] ४ आउंस १ पाइंट जल में १२ मिन[ट...] कर) २ से ४ आउंस की मात्रा में [...] तिक्तबल्य रूप से दिन में २ बार प्रयो[ग किया] जाता है। इसी हेतु पत्र भी व्यवहार में [आता] है। (इं० ड्र० इं० पृ० ५६२)

अरणीकेतुः arani-ketuh-सं० पुं० [...] मन्थ वृक्ष, बड़ी अरणी। यह गणिरि-मं[...] ऐरण-महा०। (Premna longifo[lia ...]) रा० नि० व० ६।

अरण्ड aranda-हिं० पुं० (१) रेंडी [...] अंडीवृक्ष, एरण्ड। (Ricinus vulg[aris] or Palma christi.) । (२) [...] हिं०, सिंध ठलटा, करटा-कुमा०। (Ca[...] harrida.) इं० मे० प्ला०।

अरण्डककड़ी aranda-kakari-हिं० [...]

अरण्ड खर्बूज़ा aranda-kharbuja-हि[ं० ...] पुं०

अरण्ड पपय्या aranda-papayya हिं० [...] पपीता, विलायती रेंड, पपय्या-हिं०। [...] खरबूज़ा (Carica papaya.) [...] अ० डॉ०। म० अ०। मु० अ०।

अरण्ड तैल aranda-taila }
अरण्डीकातेल arandi-ka-taila } -हिं० [...]
एरण्ड तैल, रेंडी का तैल। Castor [oil] (Oleum Ricini.)

ीज aranda-bija-सं०, हिं० पुं० ी का बीज, रेंडी। (Castor oil d.) देखो--एरण्ड।

aiandi-हिं०स्त्री० रेंडी, अरण्डी। (The nt of Palma christa.)। देखो ण्ड।

का पेड़ arandi-ká-pera-हिं० पुं० वृक्ष, रेंड़, अरण्डी का पेड़। (Castor plant.)। (Ricinus communis, Linn.) स०फा०इं०। देखो-एरण्ड।

के बीज arandi-ke-bija-हिं० अरण्डी के बीज, रेंड के बीज, रेंडी। Ricinus communis, Linn. (Seeds Castor oil seeds.)। स०फा०इं०।

ी arandolí-जय० एरण्ड बीज, रेंडी, डी के बीज। (Castor-oil seeds.) -एरण्ड।

aranyah सं० पुं० } (१) कट्- aranya-हिं० संज्ञा पुं० } वृक्ष, कायफल। कट्फलेर गाछ-बं०। Myrica sapida.) श० च०। (२) भेद, साखू। (Shorea robusta.) निघ०।

aranyam-सं० क्लीo } (१) aranya-हिं० संज्ञा पुं० } ी-सं०। वन, जंगल, विपिन, कानन--हिं०। -महo। अटवि--क०। वर्, मड़्रा-अ०। -फ़ा०। जंगल-हिं०; द०। काड़्-ता०। वि-तै०। काड़्-मल०। काडु,अडवि-कना०। बनेर, जंगलेर,जंगली-बं०। जंगलो-गु०। -सिं०। तो-बर०। फॉरेस्ट (A forest.), विल्डरनेस (Wilderness.), ल्ड (Wild.)-इं०।

उद्यान, महावन, उपवन और प्रमदवन भेद से चार प्रकारका होता है। इनमें से राजी ों के क्रीड़ास्थल को उद्यान (फुलवारी), ारी राजमहल के सामने के बाग को प्रमदवन नगर से बाहर स्थित बाग को उपवन कहते रा० नि० घ० २।

-सं०पुं० (२) कट्फल वृक्ष,कायफल। (Myrica sapida.).

अरण्यकः aranyakah-सं० पुं० महानिम्ब, बकाइन। महानिमू-बं०। बकान निम्ब-मह०। (Ailantus excelsa, Roxb.)। वै० निघ०।

अरण्यकणा aranya kaná-सं० स्त्री० (१) कटुजीरक, जीरक, जीरा विशेष। Cumin Seed (Cuminum Cyminum) वै० निघ०। (२) वनपिप्पली। (Wild piper.)

अरण्य-कदली aranya-kadali-सं० स्त्री० गिरिकदली, वनकदली, जंगली केला-हिं०। बीचेकला, बुनो कला, दयाकला-बं०। रायकेला -मह०। Musa Sapientum, Linn. (Wild var. of-) रा० नि० व० ११।

गुण—शीतल, मधुर, बलकारक, वीर्यवद्धक रुचिकारक, दुर्जर और भारी तथा दाह, शोष,पित्त-नाशक है। इसका फल कषैला, मधुर तथा भारी है। वै० निघ०।

अरण्य-कर्कटी aranya-karkatí-सं० स्त्री० वनजात कर्कटी, जङ्गली ककड़ी। बुनो काँकुड़ -बं०। रानतवसे-मह०।

गुण—जंगली ककड़ी, उष्ण, तिक्त, रसयुक्त, पाक में कटु और भेदक है तथा कफ, कृमी, पित्त, कण्डू और ज्वर का नाश करने वाली है। वै० निघ०।

अरण्य-कर्पासः aranya-karpásah-सं० पुं० पीवरी। Devil's cotton (Abroma Augusta.) देखो-ओलट् कम्बल।

अरण्य-कलद aranya-kalad-सं० पुं० चाकसू। (Cassia absus).

अरण्यकाकः aranya-kákah-सं० पुं० वनकाक,वनकौआ। (A wild crow.) दाँड़ काक -बं०। राण कावळा-मह०। द्रव्य० गु० वै० निघ०।

अरण्य-कार्पासी aranya-kárpásí-सं०स्त्री० (१) वन कार्पास, जंगली कपास। वन कपासी

-नें० । राग कापासी-मह० । पत्ति-तें० । (The wild cotton) गुण—त्रणनाशक, शस्त्र-त्रतघ्न घोर रूक्ष है। रा० नि० व० ११ । (२) ग्रोलट कम्बल, पीवरी । (Abroma Augusta.)

अरण्यकासनी aranya kásani-हिं० स्त्री० दुधल, बरन, कानफूल, रदम, शमुकंद, दुध बथल -पं०, हिं० । पथरी-इ० । दुदुर-सिंध० । टैरेक्ज़ेकम् ऑफ़िसिनेली (Taraxacum Officinale *Wigg.*),-इ० डेण्डेलिश्रॉनिस (T. Dendelionis.)-ले० । डेण्डेलिऑन (Dandelion.)-इ० । पिस्सेन-लिट (Pissenlit.)-फ्रां० । उन्नवेकन-कॉ० ।

मिश्र वा तुलसी वर्ग

(*N. O. Compositae.*)

उत्पत्ति स्थान—सर्वत्र हिमालय (शीतोष्ण -इं० मे० मे०) तथा नीलगिरी पर्वतों, उत्तरी पश्चिमी सूबों में यह बोई जाती है, तिब्बत में साधारण रूप से होती है, युरुप (इङ्गलैण्ड) तथा उत्तरी अमरीका ।

नोट—डॉ० डाइमॉक महोदय के कथनानुसार सहारनपुर के सरकारी वनस्पत्योद्यान में प्रतिवर्ष इसकी कृषि की जाती है ।

नाम-विवरण—युग्गरकीनामा के सम्पादक माज़िसुल्हतिब्बा महोदय के कथनानुसार टैरेक्सेकम युनानी भाषा का शब्द है, जो तारा-क्सुवसे जिसका साङ्केतिक अर्थ तलयिन (मृदुता जनक), है, व्युत्पन्न शब्द है; परन्तु डा० डाइमॉक महोदय के कथनानुसार इस शब्दकी वास्तविकता अनिश्चित है, कदाचित् यह तुर्ख़श्कून (फ़ारसी शब्द) का अपभ्रंश है ।

उक्त वनस्पति के गंभीर दनदाने क्योंकि दुग्ध-दन्त के समान होते हैं, इस कारण आंग्ल भाषा में इसे डेण्डिलॉन (, दुग्धदन्त) नाम से अभिहित करते हैं ।

इतिहास—यद्यपि प्राचीन युनानी व रूमी चिकित्सकों ने कई भाँति की कासनी का वर्णन किया है; तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने इस भाँति की कासनी का वर्णन नहीं इब्नसीना ने तर्ख़श्कून नाम से किया है तथा अन्य मुसल्मान ... इसका वर्णन किया है । युरुप में सोलहवीं ... मसीही में फूशियस Fuchsius (... ने हेडिप्नॉइस (Hedyp ois) ... ट्रैगस Tragus (सन् १५४६ई० में ... हियरेसियम (Hieracium ... मैथियॉलस Matthiolus (१५८...) ... डिन्सलिऑनिस (Densleonis) और ... Linnœus (१७६२) ने लिऑन्टो-डन टैरेक्सेकम् (Leonto don Tarax... इत्यादि नामों से (जिसको वह ... तर्ख़श्कून का पर्याय समझते थे) ... किया है । सत्रहवीं शताब्दि के अन्त ... में अरण्यकासनी (Dandelion ... उपयोग बहुतायत के साथ होने ... (आयुर्वेदिक) चिकित्सकों को ... ज्ञात न थी ।

नोट—मख़ज़नुल् अद्विया, ... कबीर तथा मुहीत‌आज़म में कासनी ... से उक्त ओषधि का वर्णन किया गया ...

प्रयोगांश—युनानी वा भारतीय ... तो इसकी जड़, पत्र एवं नव्य पौधा ... कार्य में लाते हैं; किंतु डॉक्टरी में केवल ... जड़-ओषध मुख्य व्यवहार में आती है ... ब्रि० फा० में ऑफ़िशल है ।

अरण्यकासनी मूल

पर्याय—टैरेक्सेसाई रैडिक्स (Tar... Radix.)-ले० । टैरेक्ज़ेकम् रूट (Tara-xacum Root.), डैण्डेलियन रूट (Dan-delion Root.), व्हाइट वाइल्ड ... (White wild endive.) ... दन्तीमूल-सं० । जंगली कासनी की ... उ० । अरुलुल् हिन्द बाउलटी-... तुर्ख़श्कून, बीख़ कासनी दश्ती-फ़ा० ।

ऑफ़िशल

(*Official.*)

वानस्पतिक-विवरण—...

य) ६ से १२ या १६ इंच लम्बी, करीब व बेलनाकार, ¼ से १ इंच चौड़ी (व्यास), भाग अनेक सूक्ष्म कुछ कुछ घने शिरकों से आच्छादित रहता है तथा निम्न भाग में कम होती हैं। ताज़ी दशा में यह हल्के पीत-वर्णकी एवं गूदादार और शुष्क दशामें गंभीर या श्याम धूसर वर्ण की, जिन पर लम्बाई अधिक झुर्रियाँ पड़ी रहती हैं। भीतरसे

श्वेत वर्णकी जिसका मध्य भाग ज़र्दीमायल ताम) होता है। यह गंधरहित एवं कटु स्वाद-होती है। यह स्रोतपूर्ण तथा आर्द्र ऋतु में एक लचीली होती है; परन्तु शुष्क होने पर चटचटाहट के साथ टूट जाती है। टूटने बीच की लकड़ी पीतवर्ण की, स्रोतपूर्ण के चारों ओर गंभीरश्याम वर्ण की कैम्बि- रेखा तथा घनी श्वेत त्वचा होती है, जिसके धूसरित वर्ण की दुग्ध की नालियों के वृत्त हैं। ये पतली दीवाल की (Parench-ma)से भिन्न किए गए होते हैं।

शीत काल के पश्चात् एवं वसन्त ऋतु के रम्भ में इसकी जड़ मधुर स्वादयुक्त रहती है। शरद और ग्रीष्म के बीच दुग्ध-रस गाढ़ा हो ता है;तथा कटु रस बढ़ जाता है; इस कारण इसकी जड़ को शरद् (Autumn) के समय में एकत्रित करना चाहिए। वसन्त ऋतुकी में तिक्त मधुरसत्व निकलता है।

समानता—अकरकरा की जड़ (Pellitory root) इसके समान होती है; किन्तु खाने पर उसका स्वाद चरपरा होता है।

रासायनिक संगठन—दुग्ध रस में एक कटु वेदनाकार (अस्फटिकीय) सत्व-(१) टैरेक्सेसीन (Taraxacin) अर्थात् अरण्यकासनीन वा तिक्तीन, (२) एक स्फटिकवत् (कटु) सत्व टैरेक्सेसीरीन, (Taraxacerin) और (३) इन्वैरेगीन (लिसी सत्व, चरफ़ार्गीन), पोटाशियम् कैल्शियम के लवण, रालदार और सरेशदार पदार्थ होते हैं। इसकी जड़ में आइन्युलीन २५ प्रतिशत, पेक्टीन, शर्करा, लीव्युलीन, भस्म ५ से७ प्रतिशत पाए जाते हैं। प्रभाव—मूत्रल, बल्य, निर्बल पित्तनिस्सारक, और कोष्ठ मृदुकारी।

औषध-निर्माण—ऑफ़िशल योग (Official preparations :—

(१) अरण्य कासनी सत्व एक्सट्रैक्टम टैरेक्सेसाई (Extractum Taraxaci) —ले०। एक्सट्रैक्ट ऑफ़ टैरेक्ज़ेकम (Extract of Taraxacum)-इं०। खुलासहे कासनी बर्री, उसारहे तल्ख़क़न।

निर्माण-क्रम—टैरेक्ज़ेकम की ताज़ा जड़ को कुचलकर दबाने से जो रस प्राप्त हो, उसे स्थूल भाग के अन्तः क्षेपित हो जाने पर निथार लें। तदनन्तर १० मिनट तक १ से २१२° फारनहाइट के उत्ताप पर रख कर छान कर द्रव को इतने ताप पर उड़ाएँ जिसमें वह गाढ़ा होजाए।

मात्रा—२ से १२ ग्रेन (३ से १० डेकिग्राम)।

(२) अरण्यकासनी तरल-सत्व—एक्सट्रैक्टम् टैरेक्सेसाई लिक्विडम (Extractum Taraxaci Liquidum)-ले०। लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ़ टैरेक्ज़ेकम (Liquid Extract of Taraxacum)-इं०। खुलासहे कासनी बर्री सय्याल, उसारहे तल्ख़-क़न सय्याल-अ०, फ़ा०।

निर्माण-क्रम—टैरेक्ज़ेकम् की शुष्क जड़ का २० नं० का चूर्ण २० आउंस मद्यसार (६०%) २ पाइंट, परिस्रुत वारि आवश्यकतानुसार। टैरेक्ज़ेकम् को ४८ घंटा पर्यन्त मद्यसार में भिगोएँ। पुनः इसमें से १० फ़्लुइड आउंस द्रव निचोड़ कर पृथक् करलें। अवशिष्ट स्थूल भाग को २ पाइंट परिस्रुत जल में ४८ घंटा तक भिगोएँ और दबाने से जो तरल प्राप्त हो उसे छान कर अग्नि पर यहाँ तक रखें, कि उसका द्रव्यमान १० फ़्लुइड आउंस बच रहे। पुनः प्रति तरल द्रव को परस्पर मिला लें और आवश्यकतानुसार इतना परिस्रुत जल और योजित करें कि तरल सत्व का द्रव्यमान पूर्ण २० फ़्लुइड आउंस होजाए।

माश्रा—आधा से २ फ़्लुइड ड्राम=(१·८ से ७·१ घनशतांश मीटर)।

(३) अरण्य कासनी स्वरस—सक्कस टैरेक्सेसाई (Succus taraxaci)–ले०। जूस ऑफ़ टैरेक्सेकम् (Juice of Taraxacum)–इं०। अमीर कासनी वर्री, असीर तर्ख़श्क़ून-अ०, फ़ा०।

निर्माण-क्रम—टैरेक्सेकम् की ताज़ी जड़ को कुचल कर दबाने से जो रस प्राप्त हो उसमें तिगुना मद्यसार मिलाएँ और सात दिवस पश्चात् फ़िल्टर करलें (पोतन करलें)।

माश्रा—१ से २ फ़्लुइड ड्राम=(३·६ से ७·१ घन शतांश मीटर)।

प्रतिनिधि—बन्नमिराव (Launcea Pinnatifida, *Cass.*) लैक्टुचुक हेनिएना, (Lactuca Heyneana *D. C.*), हिरनखुरी (Emilia sonchifolia, *D. C.*) और सोंकुस ओलिरेसियस (Sonchus Oleraceus, *Linn.*) विस्तार के लिए उन उन नामों के अन्तर्गत अवलोकन करिए।

प्रभाव तथा उपयोग—टैरेक्सेसाई रैडिक्स (अरण्यकासनी-मूल) चिरकाल से बल्य, पित्तरेचक, मूत्रल और कोष्ठमृदुकारी रूप से प्रसिद्ध रहा है। ताजे स्वरस का बल्य प्रभाव, जो प्रयोग से ठीक प्रथम प्रस्तुत किया गया हो अथवा जो जड़ को एकत्रित करने के ठीक पश्चात् अभी जब कि वह कटु हो, निर्मित किया गया हो, निश्चित रूप से उत्तम होता है। वह बहुशः प्रभावकारी बल्य औषधों का लाभदायक अनुपान है। इसके सत्व प्रायोगिक रूपमें प्रभावहीन होते हैं और इसकी जड़ द्वारा निर्मित औषध व्यर्थ। -मि० फा० व्हिट्लॉ।

ताज़ी जड़ का रस या इसका शीतकषाय कैलम्बा के समान आमाशयबलप्रद प्रभाव करता है तथा यह किसी प्रकार कोष्ठमृदुकारी भी है। परन्तु इसके वे प्रयोग जो अंग्रेज़ी औषध विक्रेताओं से उपलब्ध होते हैं, उनका प्रभावात्मक होना सन्देहपूर्ण विचार किया जाता है।

पहिले बहुधा पित्तरेचक वा मूत्र... यकृद्रोगों जैसे—पांडु तथा जलोदर... अधिकतया व्यवहार में लाते थे। किन्तु... इसका उपयोग बहुत कम हो गया है।

अरण्य-कुक्कुटः aranya-kukkuṭa... पुं० वन मुर्गा, कोम्हड़ा, वनमोर्गी-हिं०।... -सं०। वन कुक्कुट-बं०। राय कोंबे-म... (Wild Cock or hen.)

गुण इसका मांस ह्रद्य, लघु, और... है। रा० नि० व० १७। हृद्य, स्निग्ध,... वीर्य, गुरु और वातनाशक है। मद० व...

अरण्य-कुलित्थिका aranya-kulitth...
अरण्य-कुलित्था,-त्थी aranya-kulitth...

-सं० स्त्री०(१)वन कुलथी, कुलत्था।... कलाय-बं०। रा० नि० व० ६।(२)(A... stone used as a collyrium.)... वन, कृत्रिम अञ्जन विशेष। रा० नि०... कालशुर्मा-हिं०। देखो—कुलत्थाञ्जन।

अरण्य-कुसुम्भः aranya-kusumbha... पुं० वन कुसुम, वन कुसुम्भ क्षुप।... (बर्रे)। राण कर्डई, राण कुसुम्भ-म०... (कुसुम-बं०। गुण—कटुपाकी, कफनाशक... दीपन। रा० नि० व० ४।

अरण्य-कोलिः aranya-kolih-सं० स्त्री... कोलि, बन बदरी। बन कुल-बं०। (Zi... hus jujuba.)

अरण्य-गवयः aranya-gavayah-सं०... जंगली गाय, वन गवय, वन गाऊ। ... जाति की है। सु० सू० ४६ अ०।... कूलेचर।

अरण्य घोली,-लिका aranya-gholi,-... -सं० स्त्री०(१)वनघोली नामक प्रसिद्ध... विशेष, घोली शाक। रा० नि० व०।... मन्थनदण्ड।

अरण्यचटकः aranya-chaṭakah-सं०...

चक पत्रों। धूसर, सूचिका –मं० [illegible]
, गुड़ई, नगर अड्ई, सुनार–बं०।
[illegible]— इसका सोम चबु, तिक्त, [illegible]
[illegible], चत्व्द और चटक के समान
वाला होता है। वै० नि० द्रव्य गु०।

[illegible] aranya-champaka –सं०
वनचम्पक, वन चम्पा। Michelia
mpaca (The wild var. of-)
[illegible]-बं०।

[illegible]—शीतल, लघु, शुक्रदायक और मूत्र-
क है। रा० नि० व० १०।

[illegible] aranya-chhágah–सं० पुं०
[illegible], जंगली बकरा। बुनो छागल–बं०।
wild goat).

[illegible] aranyajah–सं० पुं० (Sesam-
indicum) तिलक क्षुप, तिल का
[illegible] का क्षुप। See–Tilakah (तिलकः)
–बं०।

[illegible]पालः aranya-jayapálah–सं०
जंगली जमालगोटा–हिं०। (Croton po
ndrum, Roxb.) हाकूर, दन्ति–बं०।
[illegible]-दन्ती।

[illegible] aranyajá–सं० स्त्री० पेऊँ।

[illegible]र्द्रका aranyajárdrakà–सं० स्त्री०
[illegible]र्द्रक, वनार्द्रका, वनजार्द्रकः (रा० नि०
७)। वाइल्ड जिञ्जर (Wild ginger)
० ज़िञ्जिबर कैस्सुमनार (Zingiber cas-
munar, Roxb.)। फा० इं० ३ भा०।
मैं० प्लां०। ज़ि० पर्प्युरियम् (Z. Pu-
reum), ज़ि० क्लिफ़ोर्डियाई (Z.cliff-
dii)-ले०। इं० मे० मे०। वन आद्रक,
आदी,जंगली आदी–हिं०। वन आदा–बं०।
[illegible], करपुशुपु –ते०। रान आले, निसा,
[illegible], माळावारी हळद्–मह०। ज़ञ्जबील
[illegible]–फ़ा०,अ०।

आर्द्रक वा हरिद्रा वर्ग

(N. O. Scitamineæ or Zingiberaceæ.)

उत्पत्ति-स्थान—भारतवर्ष (हिमालय से
[illegible] पर्यन्त)

वानस्पतिक-विवरण—इसका ताज़ा पत्रहीन
पद (Rhizome) १ से २ इंच मोटा
(स्थूल), जुदा जुदा, दबा हुआ (संकुचित),
अनेक शीर्ष वृत्ताकार अकुरों से युक्त होता है,
जिनमें से कुछ में शीर्ष कन्द (Tuber) लगे
होते हैं। पद को प्रत्येक संधि पर युक्त होता है।
बहिर त्वक् चिक्कणयुक्त तथा हलका धूसर
होता है। अन्तः भाग पूर्ण सुवर्ण-पीतवर्ण का,
गंध अति तीव्र तथा बहुत प्रिय नहीं (आर्द्रक,
कर्पूर तथा हरिद्रा के सम्मिलित गंधवत्)
होती है। स्वाद उष्ण और कर्पूरवत् होता है।

वन आर्द्रक की सूक्ष्म रचना—त्वचा का
ऊर्ध्व भाग पिचित (संकुचित) एवं अस्पष्ट
कोषोंके बहुतसे स्तरों द्वारा बनता है। पैरेनकाइमा
में बृहत्चतुर्भुज कोष होते हैं पताली पद के
समीप अत्यल्प कोष करीब करीब श्वेतसाररहित
होते हैं; परन्तु उसके मध्य भागमें पाए जानेवाले
कोष बृहत्, अंडाकार, श्वेतसारीय कणों से पूरित
होते हैं। उक्त पद के सम्पूर्ण भाग के बृहत् कोष
सुवर्ण-पीत वर्ण के स्थायी तैल से पूर्ण होते हैं।
वैस्क्युलर सिस्टम (ओंगजाल) हरिद्रावत् होता है।

रासायनिक संगठन—इसमें निम्न पदार्थ
पाए जाते हैं:—

ईथर एक्सट्रैक्ट (१) स्थायी तैल, (२) वसा, और (३) सुगंधि)	६. ६६
ऐल्कुहॉलिक एक्सट्रैक्ट(४)शर्करा,शर्करा	७. २६
वाटर एक्सट्रैक्ट(५) निर्यास, (६) अम्ल आदि	१३. ७२
(७) श्वेतसार	१२. ०८
(८) क्रूड फाइबर	१२. ६१
(९) भस्म	६. ८०
(१०) आर्द्रता	७. ६६
(११) अल्व्युमिनॉइड्स और (१२) Modifications of arabin etc.)	३०. १८
	१००. ००

जड़ कर्पूर तथा आम्रफल की मिश्रित गंध
संयुक्त चरपरी होती है। मृदु साथ उष्णतायुक्त
स्वाद रखता है। जड़ में कर्पूरशीलता (C

cuma aromatica) की अपेक्षा अधिक शर्करा या लुआव होते हैं।

प्रयोगांश—पानाली धड़ (Rhizome) तथा जड़।

इतिहास—यद्यपि रॉक्सबर्ग ने उक्त पौधे को कस्सुमुनार (Cassumunar) लिखा है, तथापि इस बातमें अत्यंत सन्देह प्रतीत होता है कि आया इसकी जड़ कभी यूरूप भेजी गई है या यह कभी भारत वर्ष में व्यापार की वस्तु रही है। कद्दुमञ्जल वनहरिद्रा का मालावारी नाम है और इसीसे औषध-विक्रेताओं को कस्सुमुनार (Cassumunar root) नामक जड़ की प्राप्ति होती है। गंध एवं स्वाद में दोनों जड़ें बहुत समान होती हैं। महराठी नाम निमा संस्कृत भाषा का शब्द है। निशा संस्कृत में हरिद्रा को कहते हैं। इससे यह प्रगट होता है कि देहाती लोग इसकी जड़ को वनार्द्रक मूल की प्रतिनिधि रूप से व्यवहार में लाते हैं।

गुणधर्म तथा उपयोग—यह कटु, अम्ल, रुचिकारक, वश्य तथा अग्निवर्द्धक है। रा० नि० व० ६।

इसके प्रभाव तथा उपयोग आर्द्रक के समान हैं। कोंकण में इसे वायुनिःसारक, उत्तेजक रूप से अतिसार एवं उदरशूल में वर्तते हैं। डाइमॉक।

इसके अन्य उपयोग हरिद्रावत् हैं। ई० मे० मे०।

अरण्यजीरम्,-कम् aranyajíram,-kam -सं० क्ली० वनजीरक, कटुजीरक, जंगली जीरा। बनजीरा-ब०। कडुजीरें-मह०। जीरकन-ते०। (Wild cumin Seed.) देखो—जीरा।

गुण-जंगली जीरा, उष्ण वीर्य, कसैला, कटु, वात कफ स्तंभक तथा व्रणविनाशक है। वै० निघ० द्रव्य० गु०।

अरण्य-तमाल aranya-tamála } -हिं० पुं०
अरण्य-तम्बाकू aranya-tambákú }

कुल, बन तम्बाकू, गीदड़ तम्बाकू, वनतमाल,वनज ताम्रकूट। ग्रेट मुलीन (Great mul- मुलीन (Mullein)-इं०। (Verbascum Thapsus, Linn. -लै०। बांइलॉन ब्लैड (Bouillon blad- मोलीनी (Molene)-फ्रां०। बुला- भूम के धूम, बन तम्बाकू, क्राप् लैक, ... कडयल, फूँटर, ख़गॉस, खर्सहबार, ... आर, गुरगद्धा, करथी, रावन्द्चीनी, किर्... मद्रानुद्दुब्ब (रीछ कर्ण), माहीशह्.रज़ (... त्रिष), सिक़ानुल् हुत (मत्स्य शूकरान), ... दतुल्.बैदा (श्वेत धूप) और बुसीर-... माहीशह् रह, बुसीर-फ़ा० (इक्लि०)।

कटुकी वर्ग

(*N. O. Scrophularineæ*).

उत्पत्ति-स्थान—शीतोष्ण हिमालय, ... से भूटान पर्यन्त; यूरूप (ब्रिटेन से पश्चि... संयुक्त राज्य (United states).

इतिहास—ऐसा प्रतीत होता है कि ... रसायशास्त्र के संस्कृत लेखकों ने उक्त ... वर्णन नहीं किया है। अरब निवासी ... माहीशह्.रज तथा सीकरानुल्-हुत आदि ... उक्त पौधे का वर्णन करते हैं। ... (भाषा) में इसे लबीदतुल्बैदा ... कहते हैं।

मुलीन (Mullein) का फ़ारसी ... माहीशह् रह तथा बुसीर है। इब्न... हाजी ज़ैन ने इसका स्पष्ट वर्णन किया है।

वानस्पतिक-विवरण—पत्र, मूल ... १८ इंच लम्बे, प्रकाण्ड (धड़) पत्र ... ऊर्ध्वपत्र छोटे नुकीले, डंठल रहित (... न्यूनाधिक दंष्ट्राकार (लहरदार) तथा ... मायल चमकीले (श्वेताभ) एवं कोमल ... घनाच्छादित होते हैं। स्वाद-लुआबी ... तिक्त, गंध ताजा होनेपर य... बात दूर होकर ...

इसके पुष्प ... से १० इंच लम्बी ... लगे होते हैं। केवल पुष्पाभ्यन्तर कोष (... दल) एकत्रित किए जाते हैं। इसकी ... (व्यास) ½ से ¾ इंच तथा लम्बाई। ...

...ल चमकीले, पीत वर्ण के (अथवा से मुक्रेशी मायल पीत और अंतरमें मक्रेशी नीले), पत्र खण्ड युक्त, ऊर्ध्व भाग चिकना अधः भाग खोमश होता है। परन्तु गर्भ- को नली से लगे होते हैं। इनमें से ऊपर ...ा ऊर्णीय तथा नीचे के दो लम्बे और ... होते हैं। स्वाद-लुआबी और कुछ कुछ ...ता है। हार्री ग्रीन इसके पुष्प को नीलगूँ ...ते हैं जो वर्बस्कम् ब्लेटेरिया (V. Bla- ...ia) प्रतीत होता है। पुष्करमूल (Orris- ...) के साथ इसके पुष्प की गंधकी तुलनाकी

...बीज $\frac{1}{24}$ इंच लम्बे, गावदुमी (शुंडाकार), ...उ कड़े जिनका चूर्ण करना अति कठिन है, ...करीब गंध रहित होते हैं। स्वाद कुछ कुछ ...ा होता है।

...सायनिक संगठन-पुष्प में एक प्रकार का ...उड़नशील तैल, वसामय अम्ल, स्वतन्त्र ... एकुरिकाम्ल, चूर्ण स्फुरेत तथा चूर्ण मलेत ...ato of lime), पेर्मीटेट ऑफ पोटास, ... बनने योग्य शर्करा, निर्यास, हरिन्मूरि ...वाली) और एक पीत रालीय रञ्जक ... पदार्थ होते हैं। (मोरिन)

... में रासायनिक विश्लेषण द्वारा ०.८०% ...हित् मोम, उड़नशील तैल के कुछ चिह्न, ...लेय राल ०.७८%, ईथर में अविलेय ...विशुद्ध मद्यसार (ऐलकोहल) में विलेय ...००%, सूक्ष्म मात्रा में कषायीन, एक तिक्त ... शर्करा, लुआब इत्यादि, आर्द्रता९'६०% और ...१२'६० प्रतिशत तक होता है। (पडॉल्फ) ...षध (drug) में लुआब १६'७६% ...न (अंगूरी शक्कर) के समान कार्बोज ...arbohydrate) ११'७६%, ...ज़ (मध्वोज) ४'४८%, सैकरोज ...करोज)१'२१%, आर्द्रता १६'७६%, ...१४'११%, सेल्युलोज (कार्पोज) ३२'७२ ...राख और लिग्नीन (काष्ठीन) आदि पदार्थ ...ते हैं।

...योगांश-क्षुप (अर्थात् मूल, पत्र, पुष्प एवं ...)

औषध-निर्माण-पत्र—१ से ४ ड्राम। तरल सत्व—(पत्र या पुष्प द्वारा प्रस्तुत) १ से ४ फ्लु० ड्रा०।

प्रभाव—पत्र वेदनाशामक, आक्षेपहर, स्निग्धताजनक, मूत्रल, मृदुताजनक, लुआबी और सूक्ष्म निद्राजनक हैं।

उपयोग—मुसलमान चिकित्सक इसे द्वितीय कक्षामें उष्ण व रूक्ष मानते हैं, और विरेचन के साथ इसे आमवात तथा संधिवात में देते हैं। दीसकूरीदूस ने इसके कई भेदोंका वर्णन किया है। वे इसे कास तथा अतिसार में लाभदायक और बाह्य रूप से मृदुताजनक बतलाते हैं। इसकी एक जाति से लैम्प की बत्ती बनाई जाती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि अरब तथा फ़ारस निवासी मुलीन के निद्राजनक (मत्स्य के लिए) प्रभाव से भली भाँति परिचित थे।

डॉक्टर स्टयुवर्ट के मतानुसार इसकी जड़ उत्तर भारत में ज्वरघ्न रूप से उपयोग में आती है।

युरूप में मुलीन चिरकालसे पशुओं के फुफ्फुस रोगों के लिए प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। इसी हेतु इसे काउज़ लङ्गवर्ट (Cow's lungwort) अर्थात् गो-फुफ्फुस-तृण कहते हैं। जर्मनी में चूहों को भगाने के लिए इस पौधे को अन्न की कोठियों (खातों) में रखते हैं। प्रारम्भ में इसके डंठल को मशाल रूप से व्यवहार में लाते थे। इस कारण उक्त पौधे का, फ्रांस में सिअर्जी डी नाट्री डेमी (Ciergo de not-re-Damo) तथा फ्लोर डी ग्रांड शैण्डेलियर (Fleur de grand chandelier) और इङ्गलैंड में हाई टेपर (High taper) नाम पड़ गया।

इसके पत्र तथा पुष्प स्निग्धताजनक, मूत्रल, अङ्गमर्दप्रशमन और आक्षेपहर हैं तथा चिरकाल से अतिसार एवं फुफ्फुस रोगों में व्यवहृत होते आ रहे हैं। फ्रांस में इसके पुष्प का शीत कषाय मूत्रल रूप से तथा पत्र का प्रलेप स्नेह-जनक रूप से व्यवहार में आता है। बीज को निद्राजनक बतलाया जाता है और कहा जाता है

कि श्वास तथा शिशुआक्षेप (Infantilo convulsions) में इसका उपयोग किया गया है । डाक्टर एफ० जे० वी० फिनलेन (१८८३) ने आयरलैंड में इसके पत्र को दुग्ध में उबाल कर क्षयजन्य कास तथा अतिसार के मुख्य औषधीय उपयोग की ओर ध्यान दी। उन्होंने बतलाया कि बागों में उक्त पौधे की विस्तृत कृषि की जातीहै । उनका दावा है कि इसमें कॉडलिवर ऑइल (कॉड मत्स्य यकृतैल) समान शरीरभारवर्द्धक तथा रोगनिवारक गुण है ।

इसकी जड़ ज्वरघ्न रूप से दी जाती है । इसके बीज कामोत्तेजक हैं । इसके पत्तेको रगड़कर उसमें तैल सम्मिलित कर तथा उसे गर्म करके शोथ-युक्त स्थानों पर लगाते हैं । मुट्ठी भर इसके पत्र को १ पाइंट (१० छटांक) गोदुग्ध में यहाँ तक उबालें कि अर्द्ध पाइंट (५ छटांक) दुग्ध शेष रहजाए । तदनन्तर इसे छानकर शर्करा सम्मिलित कर सोते समय सेवन करें । इससे कास कम होती है तथा वेदना और क्षोभ दूर होते हैं । इं० मे० मे० ।

डॉक्टर स्टयुवर्ट के कथनानुसार इसको रेवन्दचीनी भी कहते हैं । यह इस कारण है कि कभी रेवन्दचीनीमें इसका मिश्रण करते थे ।

गेरॉड-डिजिटेलिस मे कभी कभी इसका तथा अन्य पौधोंका मिश्रण करते हैं । दत्त महोदय वर्णन करते है कि देशी लोग इसे श्वास तथा फुप्फुस रोगों में वर्तते है और यह कि इसमें तमालवत् (नागकूट अर्थात् तम्बाकूवत्) निद्राजनक गुण है । बीज कामोद्दीपक ख्याल किए जाते हैं ।

यूरुप तथा अमरीका के संयुक्तराज्य में एक समय स्निग्धताजनक वा मृदुताकारक रूप से इसके घने ऊर्णीय पत्र का केवल गृह औषध में ही नहीं, अपितु चिकित्सकगणों में भी बहुत मान्य था । प्रतिश्याय तथा अतिसार की चिकित्सा में इसका अन्तः और अर्श में वाह्य (प्रलेप रूप से) उपयोग किया जाता था । (वैट)

यह यक्ष्मा की मूत्रवत् [illegible] राात्रिस्वेद को रोकती, कास को [illegible] आंत्र शैथिल्य को ठीक करती है। [illegible] (२॥ तो०) इसके पत्र को एक [illegible] छटांक) दुग्ध में उबाल [illegible] दिन में [illegible] उपयोग करने से यह श्वासावरोध को [illegible] है । (वैट)

यह मूत्रावयवस्थ क्षोभ तथा प्रदाह, [illegible] और अतिसार में लाभदायक है। [illegible] में इसके शुष्क पत्र को हुक्का पर पीते [illegible] इसका सिगरेट उपयोग में लाते हैं।

डॉक्टरफ़िन लैण्ड के चिकित्सा[illegible] प्रयोगों द्वारा निम्न परिणाम स्थिर कि[illegible] (१) यक्ष्माकी प्रारम्भिक तथा उ[illegible] से पूर्व प्रयोग करने से मुल्तान में [illegible] ऑइल (कॉड मत्स्य यकृत्तैल) की अपे[illegible] तथा रशन कौमिस (Russian ko[illegible] के तुल्य शरीरभारवर्द्धक एवं रोगनि[illegible] है। (२) उरःक्षतावस्था में यह [illegible] बहुत कम करता है। (३) यक्ष[illegible] पूर्णतः प्रतिबन्धित हो जाता है। (४[illegible] यक्ष्मा के रात्रिस्वेद पर कोई सशक्त प्र[illegible] होता । अस्तु उसका धत्तूरीन (ऐट्रो[illegible] सामना करना चाहिए । फॉ० वॉ० ए[illegible]

अरण्य-तुलसी aranya-tulasi-[illegible] वनतुलसी, कृष्ण तुलसी ।' (O[illegible] Gratissimum) कालातुल[illegible] रामतुलस-मह० । वैजयन्ती तुलसी [illegible] प्रकार की होती है:—(१) [illegible] तुलसी और (२) दीर्घ (बड़ी) [illegible] गुण—जंगली तुलसी सुगंधयुक्त, [illegible] है तथा वात, चर्मदोष, विसर्प और [illegible] है । छोटी जंगली तुलसी कटु, उ[illegible] रुचिकारक, दीपन, हृदय को हितक[illegible] विदाही, पित्तकारक एवं रूक्ष है तथा [illegible] छर्दि, कुष्ठ और ज्वरनाशक है एवं [illegible] दद्रु तथा रक्तदोष नाशक है । [illegible] शोफनाशक है । वै० निघ० द्र० गु० ।

[अरण्य त्र]पुसकः aranya-trapusakah-सं० [पुं०] वन्य त्रपुष, जंगली खीरा (Wild [cuc]umber)। वनशशा, वनकॉकुर-बं०। [जंगली खी]रनी-मह०। वै० निघ०।

[अरण्य त्र]पुसी aranya-trapusí-सं० स्त्री० । इन्द्रवारुणी, इन्द्रायन। रायाल शशा (Citrullus Colocynthis.)। । महाकालसता, लाल (बड़ा) इन्द्रायन। [मा]कल-बं०। (Trichosanthes [pal]mata.)। वै० निघ० अपस्मा० चि०।

[अरण्य दम]नः aranya damanah-सं० पुं० [वन]दमन वृक्ष, वनदौना, अफ़सन्तीन भेद। [(Ar]temesia Siversiana.) के०।

[अरण्य]द्राक्षा aranya,-ja-dráksha-सं० [स्त्री०] जंगली दाख। मवेतज, ज़बीबुज्जबल-अ०। [(D]elphinium staphesagria.) । स्टैफिसैग्रीई सेमिना (Staphesa[gri]a semina.)-लै०।

[अरण्य धा]न्यम् aranya-dhányam-सं० [क्ली०] नीवार्। उड़िधान-बं०। देवभात-मह०। [(Wi]ld variety of Oryza sativa.) [रा०] नि० व० १६।

[अरण्य ध]ेनुः aranya-dhenuh-सं० पुं० [वन्यगा]य, जंगली गाय। (Wild cow.)

[अरण्य नी]ल सत्व aranya nila satva [-सं०] पुं० जंगली नील का सत। वैप्टिसीनम् [(B]aptisinum.)-लै०। वैप्टिसीन [(B]aptisin.)-इं०। जौहर नीले सह्राई [-अ]० उ०।

नॉट ऑफ़िशल
(*Not Official:*)

[उ]त्पत्ति-स्थान—संयुक्त राज्य अमरीका में [इस] भाँति के जंगली नील के पौधे उत्पन्न होते [हैं जि]नका वानस्पतिक नाम बैप्टीसिया टिंक[टोरि]या (Baptisia Tinctoria.) है; [इसे] आंग्ल भाषा में वाइल्ड इण्डिगो (Wi[ld] Indigo.) अर्थात् वन्य (अरण्य) नील कहते हैं। उनमें (जड़) में दो सत्व प्राप्त होते हैं, जिनमें से एक वह है जिसका यहाँ वर्णन हो रहा है।

लक्षण—यह एक प्रकार का धूसर वर्ण का चूर्ण है जो जल में तो अविलेय, परन्तु मद्यसार में विलेय होता है।

मात्रा—१ से ५ ग्रेन ('०६ से '३ ग्राम) वटिका (या चूर्ण) रूप में बरतें।

टिंक्चूरा बैप्टिसीई (Tinctura Baptisiæ.), टिंकचर ऑफ बैप्टिसीन (Tincture of Baptisin.)-तक्राह् नीलज बर्री-अ०। तअ्फ़ीन नील स्हराई-फ़ा०। मात्रा—५ से ३० मिनिम=('३ से २ घन शतांशमीटर)।

प्रभाव तथा उपयोग—थोड़ी मात्रा में कोष्ठ मृदुकारी रूप से पुरातन विष्टम्भ (मलावरोध) में देते हैं। अधिक मात्रा में विरेचक और वामक है। यह यकृदोत्तेजक एवं आमाशय विकार करने वाला है।

अरण्य पलाण्डुः aranya-palánduh-सं० पुं० वन जात पलांडु, जंगली प्याज़, काँदा। वन पेयाज-बं०। (Scilla Indica.) अत्रि०।

गुण—मूत्र विरेचक, श्लेष्मघ्न, अति उग्र, अधिक मात्रा में देने पर वान्तिकारक तथा मलभेदक है और विष के समान मनुष्य को मार डालता है। शोथ, श्वास, कास तथा मूत्रसंग (मूत्रावरोध) की दशा में यह प्रयुक्त होता है। अत्रि०। देखो—वन पलाण्डुः।

अरण्य पिप्पली aranya-pippalí-सं० स्त्री० वन पिप्पली नामक क्षुप, वन पीपल। वन पिपुल-बं०। (See-Vanapippalí.) रा० नि० व० ६।

अरण्य पु (पो) दीना aranya-pudíná-हिं० पुं० जंगली पुदीना (रोचनी)। हाशा-अ०। पुदीना कोही-फ़ा०। Wild thyme (Thymus Vulgaris or Serpyllum, *Linn.*)

अरण्य मदनमस्त पुष्प aranya-madan-masta-pushpa-हिं० पुं० मिकास सर्सिनेलिस (Cycas Circinalis, *Linn. Syn. C. Inermes.*) । जंगली मदनमस्त का फूल । बजर बट्टु-बम्ब० । पहाड़ी मदनमस्त का फूल-द० । थाम्बेसामोटपन-गो० । मदन कामेश्वरप्पू, मदन-काममूर, कामप्पू, चनंग काय-ता० । मदन मम्नु, रान गुवा, मदन-कामाची-ते० । मालाबारी-सुपारी-महा० । रिन पदम, टोडुपन, एन्थकाय-मलय० । सुदंग-यर० । मदू-गस्स-सिं० ।

(*N. O. Cycadaceoe.*)

उत्पत्ति-स्थान—मालाबार तट, पश्चिम मदरास की शुष्क पहाड़ियाँ ।

प्रयोगांश—पौष्पिक पत्र (ब्रैक्ट्स), गुठली तथा काण्ड ।

वानस्पतिक-विवरण—बाजार में बिकने वाले पौष्पिकपत्र भाला के शिर के शकल के, दो इञ्च लम्बे तथा आध इञ्च चौड़े और पृष्ठ की ओर धूसरपीत वर्ण के कोमल सूक्ष्म रोमोंसे आच्छादित होते हैं । प्रत्येक छिलके के बाह्य ऊर्ध्वकोण में एक सूत्राकार अन्तः प्रक्ष बिन्दु निकलता है । जब कि कोष प्रथम प्रथम प्रगट होता है तो वे अनन्नास के अङ्कुर के समान बहुत निकट निकट चापित रहते हैं, परन्तु ज्यों ज्यों उनकी अवस्था अधिक होती है त्यों त्यों वे एक दूसरे से भिन्न होते जाते हैं । इनमें कोई तन्तु नहीं होता; जिसके का अन्तस्तल पराग-कोष (एन्थर) द्वारा पूर्ण रूप से आच्छादित होता है; पराग-कोष (एन्थर) एक-सेलीय द्विकपाट युक्त; शिखरके इर्द गिर्द खुला हुआ होता है, जिससे पराग विसर्जित हुआ करता है । मज्जा में पाए जाने वाले स्वेतसार की अणु-वीक्षण द्वारा परीक्षा करने पर यह सागू के समान होता है ।

रासायनिक-संगठन(या संयोगी अवयव)—पौष्पिकपत्र तथा त्वचा में अधिक परिमाण में अल्ब्युमेनीय या लुआबदार पदार्थ, जो जल में लयशील होते हैं, शुष्क रूप में पाए जाते हैं । परन्तु, इनमें कोई क्षारीय या अन्य ऐसे सत्व नहीं पाए जाते जो इनके प्रसिद्ध मदका[रक] हेतु सिद्ध हों । इससे कतीरा के [सदृश] निर्यास तथा एक प्रकार का सा[गू] तथा अस्थि द्वारा निर्मित आटा जि[से तामिल] में "इन्दुम पोदी" कहते हैं, पाए [जाते हैं ।]

प्रभाव तथा उपयोग—नर पौष्पि[क पत्र] दक्षिण भारतवर्ष में मादक रूप से [उपयोग में] आते हैं । इनमें उनपर रहने वाले [जीवों] को मदान्वित करने का गुण है । [ये मादक] तथा कामोद्दीपक भी हैं । इसका [गन्ध] पाटला (पादल) पुष्प के समान [होता] जाता है । इसी कारण इन दोनों [को] तामिल भाषा में मदन-काम-पु [प्पू] शब्द से अभिहित करते हैं । अरण्य [मदनमस्त] पुष्प के पौष्पिकपत्र (ब्रैक्ट्स) को [...] साथ चूर्णित कर इससे कामोद्दीपक [...] किए जाते हैं । इस वृक्षके कोड तथा [...] आटा प्रस्तुत किया जाता है । मालाबा[र ...] की गुठलियों को एकत्रित कर मास [...] सुखाते हैं; तदनन्तर इसे जल में [...] बनाते हैं जिसको "इंदुम पोदी" कहते [हैं ...] (Caryota.) के आटे से श्रेष्ठ, कि[न्तु ...] से निम्नकोटि का होता है और इसे [...] नियाँ तथा निर्धन लोग खाते हैं, विशेष[कर ...] से सितम्बर मास तक जब कि चावल [...] है और उनके नाश होने का भय रहता [है ।] सागू में इसका मिश्रण किया जाता है । [...] (Rhoede) के वर्णनानुसार फलाधि[...] (Cone) की पुल्टिस कटि पर [...] वृक्कशोथ विषयक शूल दूर होता है । [...] भा० । इ० मे० मे० ।

नोट—"मदनमस्त" (Artabotr[ys od]oratissima, *R. Br.*) तथा "[...] का झाड़" नाम की दो और वनस्पतियाँ [...] पूर्व कथित वनस्पतियों से नाम सादृश्य [होने] पर भी दो सर्वथा भिन्न भिन्न बूटियाँ [...] फा० इ० । इनके लिए यथास्थान देखो ।

अरण्य मक्षिका aranya-makshi[ka] मक्खी-हिं० [...] क्ली० वन मक्षिका, दंश, [...]

...ई-बं०। गैड फ्लाई (Gad fly)-इं०। ...र०।

...मुद्गः aranya-mudgah-सं० पुं० ...द्ग, वनमूँग, मुद्गपर्णी। घोड़ा मुग-बं०। Phaseolus Trilobus, *Ait.*) रा० ...व० १६। देखो—मकुष्ठकः।

...मुद्गा aranya-mudgá सं० स्त्री० ...पर्णी, वनमूँग-हिं०। मुगानि-बं०। (Phaseolus Trilobus *Ait.*)रा० नि० व ३।

...मेथी aranya-methi-सं० स्त्री० वन...मेथिका, वनमेथा, जंगली मेथी। वन मेति-बं०। ...पमेथि-मह०। (See- Vanamethi) ...निघ०।

...रजनी aranya-rajani-सं० स्त्री० ...महरिद्रा, जंगली हलदी। वन हलुद-बं०। ...य हलद-मह०। (Curcuma Aromatica.) वै० निघ०।

...लक्ष्मी aranya-lakshmi-सं० स्त्री० ...न लक्ष्मी, रम्भा फल, अरण्य कदली, जंगली ...ला। Wild Plantain (Musa Paradisiaca).

...वाताद् aranya-vátád-सं० पुं० (१) बीज—जंगली बादाम-हिं०, द०। ...तुर्ती कार्पस बाइटियना (Hydnocarpus Wightiana, *Blume.*), हिं० आइनेब्रिअंस (H. inebrians, *Wall.*)-ले०। जंगल आमण्ड (Jungle Almond) इं०। नीरडि-मुत्तु, पट्टी-ता०। नीरडि-वित्तुलु तै०। कडु-कवथ, कौटी-मह०। तमन, मरवेत्ति मल०। ... केकुन, मक्कूल्-सिं०। कोष्टी-गों०। ...टी -बम्ब०। तैल—जंगली बादाम का तेल द०। नीरडि -मुत्तु -एएणेय-ता०। नीरडि-वित्तुलु-नूने-तै०।

कुष्ठवैरी वा चौलमूगरा वर्ग
(*N. O. Bixineoe.*)

उत्पत्ति-स्थान—पश्चिम प्रायद्वीप, दक्षिण कोंकणसे ट्रावनकोर पर्यन्त, मालाबार और दक्षिण भारत के कुछ अन्य भाग।

इतिहास—उक्त वृक्ष के इतिहास के विषय में जो कुछ हमे ज्ञात है, वह यह है कि पश्चिम समुद्र तट पर यह कतिपय हठीले स्वर्गोगों में गृह औषध रूप मे चिरकाल से उपयोग में आ रहा है। तथा निर्धन जाति के लोग जलाने तथा औषधीय उपयोग हेतु इसका तैल निकालते हैं। (डाइमाक)

वानस्पतिक-विवरण—इसका फल गोलाकार सेव के आकार का होता है; जिसके ऊपर एक खुरदरा मोटा धूसर रंग का छिलका होता है, जो बाहर की ओर काँकैवत् और भीतर से काष्ठीय होता है, जिस पर बृहदार्बुद जटित होते हैं; पर किसी किसी वृक्ष में अर्बुदशून्य फल भी होते हैं। इसके भीतर १० से २० अधिक कोणाकार बीज जो करीब करीब $\frac{3}{4}$ इं० लम्बे, $\frac{1}{2}$ इं० चौड़े और ३ से ४ इं० मोटे, सामान्यतः विषम अंडाकार कभी कभी अंडाकार या आयताकार होते हैं और जिनके ऊपर का सिरा नीचे की अपेक्षा अधिक नोकीला होता है।

बीज अल्प श्वेतमज्जा में रखे रहते और श्याम पतले बाह्यत्वक् से मज्जतुली के साथ चिपके रहते हैं। मज्जा को खुरच कर पृथक् करने पर बीजबहिः त्वक् का बाह्य पृष्ठ खुरदरा और लम्बाई की रुख छिछली नलिकाकार धारियों से युक्त दीख पड़ता है। उभार स्पष्ट व्यक्त नहीं होते छिलके के भीतर भरपूर तैलीय अल्ब्युमेन होता है, जिसमें चालमूगरा के समान दो बृहद्, स्पष्ट हृदाकार तीन नसों से युक्त पत्रीय दौल होते हैं। ताजी अवस्था में अल्ब्युमेन का वर्ण श्वेत, किन्तु शुष्क होने पर गम्भीर धूसर वर्ण का हो जाता है। इसकी गंध चालमूगरा के समान होती है। मोहीद्दीन शरीफ़ के मतानुसार, यह गन्धरहित तथा कुछ कुछ,बातादवत, निर्बल मधुर स्वादयुक्त होता है। पारस्परिक दबाव के कारण प्रायः ये विषम हो जाते हैं। इसके बीज चालमूगरा के समान होते हैं; परन्तु ये आकार में छोटे तथा खुरदरे होते हैं जिनकी लम्बाई की रुख धारियाँ होती हैं। चॉलमूगरा में यह बात नहीं होती।

उसके बीज चिकने और आकार में इससे दुगुने बड़े होते हैं।

सूक्ष्म रचना—बीज बाह्य त्वक् तथा अलब्युमेन को सूक्ष्मदर्शक द्वारा परीक्षा करने पर ये चावलमूगरा बीजवत् पाए जाते हैं।

रासायनिक संगठन—बीज में लगभग ४४% स्थिर तैल होता है, जो गंध या स्वाद में चालमूगरा तैल के समान होता है। तैल में चालमूग्रिकाम्ल तथा हिड्नोकार्पिकाम्ल और किंचित् मात्रा में पामिटिक एसिड होता है। उपर्युक्त दोनों अम्ल स्फटिकीय होते हैं।

प्रयोगांश—बीज तथा तैल।

इन्द्रियव्यापारिक कार्य—परिवर्तक, वल्य, स्थानिक उत्तेजक (मो० शु०), पराश्रयी कीटघ्न, बीज शोधक है।

औषध-निर्माण—औषधीय उपयोग और इसकी प्रतिनिधि स्वरूप यूरूपीय द्रव्य—चालमूगराके बीज और तैल।

मात्रा—तैल—१५ बुंद से २ ड्राम पर्यन्त (१-२ फ्लुइड ड्राम) अथवा आमाशयपूर्ति पर्यन्त। बीज—क्रमशः इन्हें १५ ग्रेन (७॥ रत्ती) से ३ ड्राम तक बढ़ाएँ। अन्तः रूप से बीज को चबाकर केवल रस को निगलें; पर सम्पूर्ण वस्तु को नहीं। बीज की अपेक्षा तैल अधिक लाभदायक, संतोषजनक तथा उत्तम है। तैल चालमूगरा तैल की उत्तम प्रतिनिधि है। पूर्ण लाभ हेतु इसका पूर्ण औषधीय मात्रा में उपयोग करना चाहिए।

नोट—क्योंकि यह बहुत स्वल्प मूल्य की वस्तु है, अस्तु अकेले ही बिना किसी अन्य तैलके सम्मेलन के इसका बहिरप्रयोग करना चाहिए।

उपयोग—खजूं (तरखुजली) तथा विस्फोटक आदि त्वग्रोगोंमें इसके बराबर कानन एरण्ड तैल (Jatropha curcas oil) मिश्रित कर उसमें गंधक २ भाग, कर्पूर आधा भाग, तथा नीबू का रस १० भाग योजित कर इसका अभ्यंग करते हैं। प्रलेप वा इमलशन रूप में इसका बाह्य उपयोग होता है।

शिरोदग्ध व्रण में इस का तैल तथा ... पानी समान भाग में प्रलेप रूप से लगाये जाते हैं। (डाइमॉक)

यह आमवात विषयक वेदना को शमन ... है और इसे त्वग्रोगोंमें बर्तते हैं। अम्ल (...) के साथ मिलाकर इसे विद्रधि, ... तथा अन्य व्रणों पर लगाते हैं। (ड्रां...)

ट्रावनकोर में आधे चाय के चम्मच ... मात्रा में इसे कुछ रोगों में देते हैं, और ... गिरी तथा छिलके के साथ कुचल कर ... इसे औषध रूप में उपयोग में लाते हैं। (डायमॉ...)

यद्यपि १५ बुंद से २ ड्राम की मात्रा ... विभिन्न प्रकार के त्वग्रोग, उपदंश की ... कथा और पुरातन आमवात में इसका प्रयोग होता है; तथापि इसके उपयोग में सावधानीकी आवश्यकता होती है क्योंकि यह आमाशय तथा आन्त्र क्षोभक है क्योंकि ... एवं दशाओं में इसके उपयोग से वमन ... आने लगते हैं। (वैट)

इसका तैल कुष्ठ के लिए ...ग्यारा तथा मूगरा से श्रेष्ठतर अनुमान किया जाता है। मात्रा ५ बुन्द से क्रमशः बढ़ाकर ३० बुं... है। कुष्ठ में मांसांतरीय वा शिरान्तः ... द्वारा भी इसे प्रयुक्त करते हैं। ... मांसांतरीय वा इसके लवण (... हाइड्नोकार्पिकाम्ल) के शिरान्तरीय ... के सर्वोत्तम परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं ... लेप्रा बेसिलाई (कुष्ठ के जीवाणु) और (Nodules) का अन्त हो जाता है। (...)

डॉक्टर एम०सी०कामन देशी औषध मद्रास समाचारमें जो अभी हाल ही में ... हुआ है। एक पुरातन कुष्ठ रोगी का ... करते हैं, कि उसे उक्त तैल के अन्तः ... द्वारा) एवं त्वक्रूप (अन्तःक्षेप) ... (रोग की विभिन्न अवस्थाओं ... स्पर्शाज्ञता, मिश्र, ग्रंथि युक्त तथा ...

लाभ हुआ। २ बुंद उक्त तैल तथा ही पिथांस वसा (Pythons fat) दोनों को मिलाकर तथा एक एक बूंद दैनिक की मात्रा बढ़ाते हुए उक्त मिश्रण का उस पर्यन्त मांसांतर अन्तःक्षेप करें, में मात्रा ३० या ४० बूंद हो जाए। किसी रोगी को बीज की गिरी पिसी हुई, नारि- तैल, सोंठ तथा गुड़ (Jaggery) द्वारा त लड्डू भी दिया गया। इसका तैल बूंद की मात्रा में कलेवा से १ घंटा पूर्व तथा २० ग्रेन (१० रत्ती) की मात्रा में संध्या में दिया गया। इस प्रागुक्त चिकित्सा से विशुद्ध विचूर्णित जयपाल बीज का ८ से १० स पर्यन्त रेचन दिया गया। उपर्युक्त त्साके अतिरिक्त किसी किसी रोगीको सप्ताह २ बार सोडियमहाइड्नोकार्पेट–घोल घन शतांश मीटर) का त्वक्स्थ अन्तःक्षेप गया।

परिणाम निम्न हुआ –"जो कुछ मैं ने देखा में सन्देह नहीं कि अरण्यवातादं (H. nobrinus) कुष्ठ की घृणायुक्त दशाओं के करने के लिए एक शक्तिमान औषध है।"

कलकत्ता के वैज्ञानिक अन्वेषक डॉक्टर मय घोष अक्टूबर मास सन् १९२० ई० इण्डियन जर्नल ऑफ मेडिकल रीसर्च में खते हैं कि कुष्ठ की चिकित्सा में हाइड्नो- पिकाम्ल का सोडियम साल्ट अत्यन्त गुणदायक उपयुक्त पाया गया। उनका कथन है कि ण्यवातादं (Hydnocarpus Wigh- ana) तथा लघु कवटी (H. Veneata) रा प्राप्त तैल, चॉलमूगरा तैल की अपेक्षा धिक सुलभ है। चॉलमूगरा तैलसे तुलना करने २–२ प्रतिशत के स्थान में उनमें अधिक १० प्रतिशत) हाइड्नोकार्पिकाम्ल वर्तमान ता है। अस्तु, मितव्ययता के विचार से कुष्ठ चिकित्सा में उनका उपयोग योग्य प्रतीत होता । यक्ष्मा, छिलका युक्त विस्फोटक, कंठमाला के धिकार, हठीले त्वग्रोगों यथा कंडू, रक्तभायुक्त विस्फोटक (Lichen), रकसा (Prurigo) तथा उपदंश मूलक त्वग्रोगों पर उक्त तैल का अभ्यंग करते हैं। दुर्गन्धित (पूतिगंध युक्त) स्रावोंमें विशेषतया प्रसवके पश्चात् योनि शोधन रूप से योनि में तथा पूयमेह में इसके बीज के शीत कषाय का मूत्रमार्ग में पिचकारी करते हैं।

सुश्रुत महाराज स्वरचित सुश्रुत संहिता नामक प्रामाणिक संस्कृत ग्रंथ में लिखते हैं कि कुष्ठ रोग में खदिर क्वाथ के साथ चावलमूगरा तैलके सेवन करने से इसकी गुणदायक शक्ति अधिक हो जाती है। यदि यह सत्य है तो चॉलमूग्रिकाम्ल खदिरोल (Catechol) के साथ, जो उसका प्रभावात्मक सत्व है, सम्मिलित कर परीक्षा की जा सकती है। कहा जाता है कि डॉक्टर उन्ना (Unna) ने पाइरोगयलोल का, जो खदि- रोल के बहुत समान है, ओषिद (Oxide) रूप में कुष्ठ रोग में सफलतापूर्ण उपयोग किया।

कुष्ठरोग की आयुर्वेदिक चिकित्सा में चॉलमूगरा तैल तथा गोमूत्र दोनों अन्तः एवं बहिर रूप से उपयोग में आते हैं। इसके विषय में आधुनिक सर्वश्रेष्ठ भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र घोष महोदय लिखते हैं कि सम्भवतः तैल के अम्लों का मूत्र के सैन्धवम् (Sodium) तथा अमोनियम आदि लवणों से सम्पर्क होने पर कुछ क्षारीय लवण बनजाते हैं और विलेय होने के कारण ये रोगी के रक्त द्वारा समस्त शरीर में व्याप्त हो जाते हैं तथा चॉलमूगराम्ल के विलेय लवणों की तरह प्रभाव करते हैं। (ई० मे० मे०)

अश्व के वर्षाती नामक रोग में यह तैल औषध रूप से प्रयुक्त होता है।

(२) जंगली बादाम–हिं०, बम्ब० मह०। वाइल्ड आमण्ड (Wild almond), पून ट्री (Poon tree.)–इं०।

स्टरक्युलिया फीटिडा (Sterculia Foetida, *Linn.*)–ले०। पून–बम्ब०। कुड़प दुक्कु, पिनारी, कुदुदुई- पुडुकी, कुद फुक्कु, पिनारी(?) मरम्–ता०। गुरप् बादाम–ते०। पिनारी मर, भाटला–कना०। पांट–कवलम–

मल० । हलियम् पियू. लेट् कोप्-यर० । कुम्ोमद, विरोही-गो० । नर्क्य ऊद्-गु०, मह० ।

आवर्त्तनी वा मरोड़फली वर्ग

(*N. O. Sterculiaceae*).

उत्पत्ति स्थान—पश्चिमी घाट (वा प्रायद्वीप), दक्षिण भारत, कोंकण, मालावार, ब्रह्मा और लंका ।

वानस्पतिक-विवरण—इसके विशाल वृक्ष होते हैं । स्टर्क्युलिया की अनेक जातियों से वृहत् तैलीय बीज प्राप्त होते हैं, जिन्हें देहाती लोग खाते हैं । बीज अद्ध अंडाकार १ इंच लंबे और आध इंच चौड़े (व्यास), एक ढीले श्यामवर्ण की झिल्ली से आच्छादित होते हैं । आधार पर एक पीतवर्ण का अर्बुद होता है । कठिन श्यामत्वचा एक ऊर्ण जटित स्तर से आच्छादित होती है । यह भीतर से धूसर एवं मखमली होती, और इसके भीतर बीज के आकार की एक तैलीय श्वेत गिरी सम्पुटित होती है । प्रत्येक बीज का भार लगभग २ ग्रामके होता है । छिलका कठिनतापूर्वक चूर्ण किया जा सकता है । ऊर्णवत् त्वचा जलमें बैसोरीन (Bassorin) की तरह मृदु हो जाती है । गिरी में लगभग ४० प्रतिशत स्थिर तैल और अधिक परिमाण में श्वेतसार विद्यमान होते हैं ।

रासायनिक संगठन—तैल गाढ़ा, फीका पीतवर्ण का, कोमल और शुष्क नहीं होने वाला है ।

प्रयोगांश—पत्र, पुष्प, बीज, त्वक् ।

प्रभाव तथा उपयोग—लोरीरो (Loureiro)के कथनानुसार उक्त वृक्ष की त्वचा (वा पत्र) रेचक, स्वेदक तथा मूत्रल है । चीनी लोग इसे जलोदर तथा आमवात में देते हैं । पुष्प विडालवत् गंध के लिए प्रसिद्ध है । (डाइमॉक)

इसके बीज तैलीय होते हैं और जब इसे असावधानी से निगल लिया जाता है तो उत्क्लेश जनित होता तथा शिर चकराने लगता है । इं० मे० प्लां० ।

हॉर्सफ़ील्डके कथनानुसार इसकी छाल मूत्रल तथा सङ्कोचक होती है । (एंस्ली)

धूपन रूप से इसका मुख्य उपयोग होता है । कंडू एवम् अन्य त्वग्रोगों में इसका अन्तः प्रस्तर (उत्कारिका) रूप में बहिःप्रयोग होता है । इसके बीजको भूनकर खाते हैं । (इं० मे०)

(३) जंगली बादाम-हिं०, कच्छ, बं० । जावा आमण्ड (Java almond)-, एलीमाइ ट्री (Elemi tree),-अं० । कनेरियम कम्यून (Canarium commune *Linn.*)-ले० । बाइम डी कोलोफेन (Baume de colophane)-फ्रां० । एलेमि-आ० । कानारि-मल० । बदामी-जावा-मर, कग्गली बीज, ... जावा-यौनी-कना० । बादाम जावी-हिं० । ... -अ० ।

महारुख वर्ग

नॉट ऑफ़िशल

(*Not official*)

(*N. O. Burseraceæ,* or *am...daceæ & simarubaceæ*).

उत्पत्ति-स्थान—मलया आर्चीपेलेगो, भारतीय द्वीपसमुदाय, दनैल, मलया, ... दक्षिणी भारत में इसकी कृषि की जाती है ।

इतिहास—रम्फियस (Rumphius) के वर्णनानुसार यह सीराम और उसके आस के महाद्वीपों में होनेवाला एक विशाल वृक्ष जिससे इतनी अधिकता के साथ राल उत्पन्न है कि यह वृहत् टुकड़ों अथवा शंखाकार ... में धड़ तथा मुख्य शाखाओं से लटके रहते प्रारम्भ में यह श्वेत, तरल एवं चिपचिपा; पश्चात् को यह पीताभायुक्त और मोमवत् ... जाते हैं । वह आमण्ड(बादाम)का भी वर्णन है और कहते हैं कि उसे कच्चा खाने से रेचक है तथा अजीर्ण हो जाता है ।

स्प्रेङ्गेल के विचारानुसार आमण्ड इसका वर्णित मन्शियम है जो उनके वर्णनानुसार ...

(Pistacia terebinthus) के समान ... पमय बीज होते हैं। परन्तु अरबी कोषकार ... बालसम फल (Carpobalsamum) ... करते हैं। पेन्सली कहते हैं कि अपनी जावा ... यूरोपीय वनस्पतियों की सूची में हांसफोल्ड ... लिखते हैं कि उक्त निर्यासमें कोपाइवी बाल- ... (Balsam of copaiba) के ... ही गुणधर्म हैं। इसकी त्रिकोणयुक्त गिरी ... देहाती लोग कच्चे ही एवं पका कर खाते ... र तैल ताज़ी दशा में खाने तथा बासी होने ... जलाने के काम आता है। राल भी जलाने के ... आता है।

... था में बीज के लिए इसके वृक्ष लगाए ... हैं। भारतवर्ष में ट्रावनकोर के पास यह ... ल सफलतापूर्वक उत्पन्न किया गया है।

... ० जुर्रहेस ने मग्शिम (हब्बुल् मग्शिम) के ... मे इस वृक्ष के फल का वर्णन किया है। ... ल् मग्शिम के नाम से मख़ज़नुल् अद्वियह् ... मुहीत् आज़म में भी इसका वर्णन आया है। ... न तथा हजाज़ निवासी इसके तैल को ... मग्शिम कहते हैं।

वानस्पतिक-विवरण—राल वृहत्, शुष्क, ... हीमायल श्वेतवर्ण के समूहों में पाया जाता ... उत्ताप पहुँचाने पर यह शीघ्र मृदु हो जाता ... और तब उसकी गंध एलेमीवत् (मग्शिम ...) होती है।

... फल $\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ इंच लम्बा, अंडाकार, त्रिकोण- ... , सिरे की ओर नुकीला (तीक्ष्णाग्र), चिकना, ... भिन्न फीके बैंगनी पतले गूदादार बाह्यत्वक्युक्त; ... गुठली अत्यन्त कठोर, त्रिकोणीय, अस्फुटनीय (Indehiscent), अन्य दो के पतन होने के ... रण एककोषीय होती है; आमण्ड (बादाम ... गिरी) का बहिरावरण झिल्लीमय होता है, जिसके ... भीतर तीन खण्डोंमें विभाजित और परस्पर लिपटे ... या बल खाए हुए तैलीय दौल होते हैं। ... गिरी से ४०.प्रतिशत अर्द्ध ठोस, प्राह्य एवं मधुर- ... स्वादमय वसा प्राप्त होती है जो बहुत काल ... पर्यन्त दुर्गन्धरहित बनी रहती है। (मैंट)

रासायनिक संगठन—ब्रीन (Brein) ६० प्रतिशत, एमाइरीन (राल) २५ प्रतिशत, ब्रायोआइडीन (Bryoidin), ब्रीडीन (Breidin) तथा एलेमिक अम्ल। लयशीलता—यह ईथर में तो बिलकुल लय हो जाता है, पर मद्यसार (९०%) में भी इसका बहुत सा भाग लयशील होता है।

प्रयोगांश—गुठली अर्थात् बीज तथा तैल, जमा हुआ चांशियां-रेज़िन जो काटने से टपकने लगता है (एलेमी)।

औषध-निर्माण—प्रलेप (४ में १); गिरी अर्थात् बीज तथा तेलका इमल्शन। मात्रा-आधा आउंस से १ आउंस।

एलिमाई प्रलेप (Unguentum elemi)। मरहम रातीनजुल् मग्शिम्-अ०।

निर्माण—एलेमाई १ भाग, स्परमेसीटाई आइंटमेंट ४ भाग दोनों को परस्पर पिघला कर छान लें और शीतल होने तक हिलाते जाएँ।

प्रभाव-स्निग्धताजनक, उत्तेजक और श्लेष्म-निस्सारक। निर्यास उत्तेजक तथा व्रणलेपन है। तैल स्नेहकारक है।

गुणधर्म तथा उपयोग—पेन्सली के मता-नुसार इसका गोंद् बालसम ऑफ कोपाइवा के समान गुणधर्म युक्त है। शिथिल (व्यथा रहित) व्रणों में इसे प्रलेप रूप से प्रयोग में लाते हैं। इसकी गिरी द्वारा प्राप्त तैल बादाद-तैल की प्रतिनिधि है। ई० मे० सां।

डॉक्टर वेट्ज़ (Waitz) लिखते हैं कि इसकी गिरी द्वारा निर्मित इमल्शन बादाद मिश्रण (Mistura amygdalœ) की उत्तम प्रतिनिधि है तथा वह इसके कोष्ठमृदुकारक गुण के कारण इसे बादाद मिश्रण से उत्तम ख़याल करते हैं।

गिबर्ट (Guibourt) एलेमी गंधयुक्त न्युगीनिया रेज़िन (New Guinea Resin.) के अन्तर्गत उक्त रालका वर्णन करते हैं।

यह राल (Manilla elemi) जो उप-युक्त वृक्षसे प्राप्त होता है, प्रधानतः वार्निश बनाने

के काम आता है। यह रसोई बनाने के भी काम आता है तथा वाताद् तेजवन् स्नेहकारक व सुस्वादु और अणुदगायों तथा पूयमेह आदिमें लाभदायक प्रयोग किया जाता है। उक्त वृक्ष की त्वचा में अधिकता के साथ स्वच्छ तैल प्राप्त होता है जो नवनीतीय कर्पूरवत् समूहों में जम जाता है। इं० मे० मे०।

(४) जंगली बादाम, हिन्दी बादाम-हिं०, द०, बम्ब०। इङ्गुदी फलम्, देश-वातामिसे-सं०। बादामे हिन्दी—फा०। इण्डियन आमण्ड (Indian Almond, nut of-), आमण्ड ट्री (Almond tree)-इं०। टर्मिनेलिया कैटेप्पा (Terminalia catappa, Linn.)-ले०। बदामीर डी मलाबार (Badamier d' malabar)-फ्रां०। अच्टेर कैट्टा-पेन बॉम (Achter Cattapen baum)-जर०। जंगला बदाम, बदाम -बं०। नाट्टु-वादम्-मौढ़े, नाट-वादम्, आमयडी मरम् ता०। इंगुदी, तपस तरुवु, नाट्टु-वादम्, नाट्टु-बादम-चित्तुलु, या (वे) द्रम-ते०। नाट्टु-बादम, कोट्ट-कुरु, बादम-मरम, कटप्पा-मल०। नाट-बादाभि, तरू, बादमीमर-कना०। नाट बादाम, देसी-बदाम, हात बदाम, बंगाली-बदाम, जंगली-बादाम-मह०, बम्ब०। कोटम्ब -सिं०। नाट-नि-बदाम-गु०।

हिमज वर्ग

(N. O. Combretaceæ.)

उत्पत्ति-स्थान—मलाया (अब सम्पूर्ण भारतवर्ष में लगाया गया है)।

नोट—बी० डी० बसु तथा मोहीदीन शरीफ़ आदि लेखकों ने इसका संस्कृत व तेलगु नाम इंगुदी लिखा है; परन्तु आयुर्वेदोय-ग्रंथ-लेखकों का इंगुदी, हिंगोट वा हिंगुआ (Balanites Roxburghii, Planch.) इससे भिन्न ही वस्तु है।

वानस्पतिक-विवरण-यह एक वृक्ष है। इसका फल अण्डाकार, पिच्चित (भिंचा हुआ, संकुचित), चिकना, गुठलीयुक्त, जिसके उभरे हुए नाली युक्त दो किनारे होते हैं, यह दो इंच लम्बा ... पर मन्द बैंगनी रंग का होता है। ... बैंगनी रंग की होती है। गुठली सुदृढ़, ... और मोटी होती है। गिरी बादाम के ... आकारकी और करीब करीब ... अन्तर्देशीय युरूप निवासियों में "... " में सामान्यतया व्यवहार में आती है।

रासायनिक संगठन-ब्रैण्ड (Bran... के मतानुसार इसमें २८ प्रतिशत तैल ... जो स्वाद एवं मृदुता में बादाम तैल से ... होता है। यह पीताभायुक्त एवं विकृत... रहित होता है। इसमें मुख्यतः ... (Stearin) तथा ऑलीईन (Ol... विद्यमान होते हैं। इस वृक्ष में बैसोरा (B... ora) की तरह का एक निर्यास होता है ... और त्वचा में कषायीन होता है। त्वचा ... प्रकार का काला रंग होता है, जिसमें ... दाँत रंगने का काम लेते हैं। ... तथा कषायीन होते हैं।

प्रभाव तथा उपयोग-इसकी त्वचा ... (संग्राही) है। अस्तु, पूयमेह तथा श्वेतप्रदर ... रूपमें इसके अन्तः प्रयोगकी प्रशंसा की ...

इसके कोमल-पत्र-स्वरस द्वारा एक प्र... प्रलेप निर्मित किया जाता है जो कण्डू, कु... अन्य प्रकार के त्वग्रोगों और शिरोऽर्ति ... उदरशूल में अन्तः रूप से लाभदायक ... किया जाता है।

इसका फल प्रभाव में बादाम के ... होता है।

अरण्य वायसः aranya-vāyasaḥ-सं० ... अरण्य काक, वन कौआ, डोम कौआ, ... कौआ-हिं०। डोम काक-बं०। डोम ... -मह०। रैवेन (Raven)-इं०। रा० ... व० १६।

अरण्य वासिनी aranya-vāsini-सं० ... अत्यम्लपर्णी लता, अमरबेल, अमलबेल ... रा० नि० व० ३। (Vitis Trifolia.)

अरण्य वास्तुकः aranya-vāstukaḥ-...

[अरण्य]कुणखर पुष, वन बथुआ । वनवेतो... । (A kind of [Cher]opodium) रा० नि० व० ५ ।

[अरण्य]शालिः aranya-shálih-सं० पुं० [अ]रण्यधान्य । उड़िधान-बं० । देवभात-महा० । [(W]ild rice) रा० नि० व० २२ ।

[अरण्य]शुनः aranya-shunah-सं० पुं० [(W]ild dog.)वन कुक्कुर-सं० । नेकड़ेबाघ... । वैं० निघ० ।

[अरण्य]सूरणः aranya-shúranah-सं० पुं० [अरण्य]सूरण, जंगली सूरन । बुना ओल-बं० । [वन]सूरण-महा० । (Amorphophallus [ca]mpanulatus.) रा० नि० व० ७ । [प]—वनय.(सू) रण. ।

[अरण्य]श्वा aranya-shvá-सं० पुं० (१) [कपि], वानर । (A Monkey.) हे० च० । (२) चित्र(क) व्याघ्र । चीता । (A tiger)

[अरण्य]सम्भूतः aranya sambhútah-सं० [पुं०] A crab (Scilla serrata.) [क]र्कटक, केकड़ा । काँकरोल-बं० । See-Kaaṭak.

[अरण्य]हल्दी कन्दः aranya-haldí-kandah-सं० पुं०
[अरण्य]हरिद्रा aranya-haridrá -सं० स्त्री०

[वन]हरिद्रा, वनहर्दी, जंगली हल्दी-हिं० । वन [हल]द-बं० । (Curcuma Aromatica.)

[गुण]—कुष्ठघ्न तथा वातरक्त नाशक है । भा० [पू० १] भा० ह० व० । कटु, मधुर, रुचिकारी, [अग्नि]दीपक,कडुई,कुष्ठ एवं वातहर हैं,तथा रक्तदोष, [श्वा]स, खास, कास और हिक्का का नाश करनेवाली [है ।] वैं० निघ० ।

[अरण्या] aranyá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] एक [औ]षधि ।

[अरण्याक्षो]ट aranyáksbota-हिं० संज्ञा [पुं०] (Indian walnut) जंगली [अ]खरोट ।

अरण्यू aranyú-जय० अरणी,अरनी,अग्निमंथ । (Premna Serratifolia.)

अरण्येन्द्रवारुणिका,-णी aranyendravárunika,-ní-सं०, हिं० स्त्री०
अरण्येन्द्रायन aranyendráyan-हिं० पुं०

विशाला-सं० । विषलम्बी (र्भा), जंगली इन्द्रायन,विषलोम्बी-हिं० । Bitter gourd (Cucumis trigonus, *Roxb.*, Syn. Pseudo colocynthis, *Roy*)

नोट—इन्द्रायन का साधारण संस्कृत नाम इन्द्रवारुणिका,-णी (Citrullus colocynthis, *sch ad.*) है । क्षुद्र तथा वृहत् भेद से यह दो प्रकार का होता है । इसके वृहत् भेद को ही लाल इन्द्रायन और संस्कृत में महाकाल अर्थात् महेन्द्रवारुणी या विशाला (Trichosanthes palmata, *Roxb.*) कहते हैं । इन सब का वर्णन यथा स्थान होगा ।

अरताल aratál-गु० हरताल, हरिताल । (Haritála.) इं० मे० मे० ।

अरतिः aratih-सं० स्त्री० अनिच्छा, विराग, चित्त का न लगना । (Absence of desire.) "अस्वास्थ्यं चिंतयात्यर्थमरतिः कथ्यते बुधैः ।" भा० । (२) औदासीन्य (Sadness.) । (३) पित्त के रोग । (Biliary disease.)

अरत्निः aratnih-सं० पुं०
अरत्नि aratni-हिं० संज्ञा पुं० } (१) निष्कनिष्ठ मुष्टी, मुट्ठी-बँधा हाथ । वा० सं० २० । ८ । रा० नि० व० १८ । (२) कर्पूर (Camphor.) । (३) कुहनी (Elbow) । (४) बाहु, हाथ ।

अरत्नीय प्रसारणी aratníya-prasáraní-सं० स्त्री० मणिबन्ध प्रसारणी अन्तःस्था । (Extensor Carpi Ulnaris.)

अरत्नीया aratníya-सं० स्त्री० अन्तःप्रकोष्ठिका (Ulnar nerve.)

अरत्नीयाकुञ्चनी aratníyákunchaní-सं० स्त्री० करसङ्कोचनी अन्तःस्था । (Flexor carpi Ulnaris.)

अरद äarad-अ० गर्दभ, गदहा, ख़र। (An ass.)

अरदट aradaṭa-कना० होल । वर्गेरस । (Garcinia Cambogia, *Dess.*)

अरदंड aradaṇḍa-हिं० संज्ञा पु'० [देश०] एक प्रकार का करील जो गंगा के किनारे होता है।

अरदन aradan-हिं० वि० [सं० अ+रदन] बे दाँत का। बे दाँत वाला।

अरदना aradaná-हिं० क्रि० सं० [सं० अर्दन] (१) रौंदना। कुचलना। (२) वध करना। मार डालना।

अरदल aradala-हिं० संज्ञा पु'० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जो पश्चिमी घाट और लंका द्वीप में होता है। इससे पीले रंग की गोंद निकलती है जो पानी में नहीं घुलती, शराब में घुलती है। इससे अच्छा पीले रंग का वार्निश बनता है। इसका फल खट्टा होता है और खटाई के काम में आता है। इसके बीज से तेल निकलता है जो औषधि के काम में आता है। इसकी लकड़ी भूरे रंग की होती है जिसमें नीली धारियाँ होती हैं। गोरका। घोट। मध्य। चालने। हिं०श०सा०।

अरदा aradá-सिं० सुदाब, सितली। (Ruta Graveolens, *Linn.*)

अरदार äaradár-अ० हस्ति, हाथी। (An elephant.)

अरदाल aradál-कना०,कों० हरिताल, हरताल See-Haritál

अरदावल aradával-हिमा० मास, चीऊ, -हिं०।

अरदावा aradává-हिं० संज्ञा पु'० [सं० अर्द। फ़ा० आरद] (१) दला हुआ अन्न। कुचला हुआ अन्न। (२) भरता।

अरदीग aradíg गुवाक, सुपारी। (Areca nut.)

अरदैवक aradaivák-एरण्ड, अरण्ड, रेंड़। (Ricinus communis.)

अरध áradha-हिं० वि० (Half) अर्द्ध, समाप। दे० अर्द्ध।

अरधंग aradhanga-हिं० संज्ञा पु'० (Hemiplegia) अर्द्धांग। दे०—पक्षाघात।

अरधंगी aradhangí-हिं० संज्ञा पु'० ... रोगी। दे० अर्द्धांगी। (One afflicted with the hemiplegia)

अरधाँगी aradhángí-हिं० संज्ञा ... (Hemiplegic) दे० अर्द्धांगी।

अरन äaran-अ० पर जो घोड़े व गदहे के ... ऊपर होते हैं।

अरन arana-हिं० संज्ञा पु'० [सं० ...] (A forest) वन।

अरपा arapá-रोग रहित नीरोग, स्वस्थ ... सू० २२। ३। का० १।

अरनब बर्री aranab-barri-अ० ... ख़रगोश, ख़रहा। (A hare, a rabbit)

अरनब बह्‌री aránab-bahri-अ० ... ख़रगोश। (Sea-rabbit.)

अरनबी árandbi-अ० एक बूटी है जो ... के सदृश होती है। और खारे ... स्थलों में होती है।

अरन मरम् aran-maram-मह० (... ज़ख़्म हयात, घावपत्ता (Kalanchoe la... atá; *D. C.*) (२) तून (Cedrela toona, *Roxb.*) इं० मे० मे० ...

अरनसुन aranásut-हिं० संज्ञा पु'० ... बंस; अरबयोलय, बाँस। (Bambusa arundinacea *Relz.*) सू० ...

अरना araná-हिं० संज्ञा पु'० (१) अरु... बकाइन। (Ailanthus excelsa ...) संज्ञा पु'० [सं० अरण्य] (२) ... भैंसा। (Wild buffalo) ... इसके झुंड के झुंड मिलते हैं। ... साधारण भैंसे से बड़ा और ... होता है। इसके सुडौल और ... पर बड़े बड़े बाल होते हैं। इसका ... मोटा और पैना होता है। यह ... होता और शेर तक का सामना करता है।

अरना उपला araná-upalá-हिं० संज्ञा ...

...ली कएडा, गोहरा। (Cow-dung ...und dried in the forest.)

...arani-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अरणी] ...) अरणी, अग्निमंथ (Premna ...riatifolia.)। (२) एक छोटा ... जो हिमालय पर होता है। इसका फल लोग ...ते हैं। इसकी गुठली भी काम आती है। ...मोरी और काबुली अरनी बहुत अच्छी होती ...कड़ीसे चरखेकी चरख और डोई आदि बनती ... यह माघ, फागुन में फूलता फलता है और ...मास में पकता है। (३) यज्ञ का अग्नि-मंथन काष्ठ जो शमी के पेड़ में लगे हुए ...ल से लिया जाता है। दे० अरणि।

...या aranabia, *Sp.* ले० इसकी जड़ ...के काम आती है। मेमो०।

... aranya-हिं० संज्ञा पुं० (Forest) ...। अरण्य।

... arapá-यु० जौ, यव। Barley ...Hordeum vulgare.)

...āaraf-अ० वश, बाँस, वंस। Bamboo Bambusa arundinacea.)

...ā āarafaj-अ० एक प्रकार की तीक्ष्ण ...धमय बूटी है।

...यह āarfiyah-अ० आफ्ता।

... arab यू० लोफ़ुउसूर, लोफ़कबीर से ...सके पत्र कांटे होने हैं।

... हिं० संज्ञा० पुं० [सं० अर्बुद] (१) ...ी करोड़। संख्या में दसवाँ स्थान। (२) इस ...थान की संख्या। संज्ञा पुं० [सं० अर्वन्] ...घोड़ा। संज्ञा पुं० [अ०] (१) एक देश। (२) अरब देश का उत्पन्न घोड़ा। (३) अरब का निवासी।

...म् arabam-हिं० पुं० एक धातु तत्व विशेष। इर्बिअम् (Erbium.)-ले०।

...हर āarbahará-सिरि० मुक्क सँभालू, मेउड़ी के बीज। Vitex negundo (Seeds of-)

अरबा अर्बऐन arbáäarbaain-अ० (१) हज़ार पायह, सहस्रपद, कनखजूरा, गोजर। (Centipede)। (२) पुदीना (menthus arvensis.)। (३) मकड़ी के समान एक जानवर है यह दो प्रकारका होता है— (१) दरियाई और (२) जंगली।

अरबायस arabáyas-यू० चना, चणक। (Gram.)

अरबिक एसिड arabic acid-इं० अरबिकाम्ल, गुआयीज अथवा निर्यास में पाए जाने वाला एक सत्व विशेष। म० अ० डा०। इं० मे० मे०।

अरबिन्द arabind-हिं० पुं० कमल, उत्पल, पङ्कज। The lotus (Nymphœa nelumbo.).

अरबियान arabiyán-बहार या बाबूना भेद।

अरबिस्तान arabistán-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०] अरबदेश। (Arabia).

अरबी arabí-हिं० वि० [फ़ा०] अरब देश का।

संज्ञा पुं० (१) अरबी घोड़ा। अरब देश का उत्पन्न या अरबी नस्ल का घोड़ा। ताज़ी, ऐराक़ी। (२) अरबी ऊँट। अरब देश का ऊँट। (३) अरब देश की भाषा।

अरबी āarabí-अ० (१) श्वेत यव (White barley.)। (२) सुजन, छिला हुआ जौ। (Husked barley.)

अरबी arabí-अव०, हिं० आलुकी, अरुई, घुइयाँ, अरवी-हिं०। कच्चु-बं०। A species of Arum (Arum colocasia).

अरबीसा arabísa-यू० अरञ्जु, उञ्जयक।

अरबेवु arabevu-कना० अरड़ूक। (Melia dubia, Cav.) फा० इं० १ भा०।

अरब्बी arabbí-हिं० वि० दे० अरबी।

अरभक arabhak-हिं० वि० दे० अर्भक।

अरमः aramah-सं० पुं० नेत्ररोग विशेष। (A kind of eye disease.) वै० निघ०। देखो-अर्म।

अरम āaram–अ० एक प्रकार की मछली, मत्स्य भेद। (A kind of fish.).

अरमङ्क aramanka–सं० कुरङ्ग। (Indian antilope.).

अरमनी aramani–हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०] आरमेनिया देश का निवासी।

अरमनीन aramanina–यू० एक बूटी है जो प्रतिवर्ष उगती है। बागी तथा जंगली दो प्रकार की होती है। इनमें से जंगली उपयोग में नहीं आती। बागी के पत्ते भाऊ के समान होते हैं।

अरमह āaramah–अ० जंगली चूहा। (A wild rat.)

अरमा āaramá–अ० सुर्ख़ स्याह साँप, रक्त श्याम सर्प। (A red black serpent.)

अरमा aımá–गोण्डा० बकली।

अरमाक aıamák–कद् की बेल या केवड़ा वृक्ष की छाल।

अरमात aramát–यू० केवड़ा, गुले-केवड़ा। ('Pandanus odoratissimus.)

अरमानियाँ āramániyán–यू० लाजवर्द। See–lájavarda.

अरमानूस aramánúsa–सिरि० अजवाइन ख़ुरासानी, पारसीक यमानी। (Hyocyamus.)

अरमाल aramála
अरमालक aramálak } एक वृक्ष की छाल है जो तज के समान एवं सुगन्धित होती है।

अरम्म् aramm–अ० मध्य शिर, पार्श्विकास्थियों के ऊपर मिलने का स्थान।

अरय अङ्गेली araya-angeli–मल० चान्दल, चाँदकुड़ सापसुण्ड़ी–महा०। (Antiaris toxicaria, *Lesch.*)। फ़ा० इं० ३ भा०। देखो–सापसुण्डी।

अरयावल arayával–मल० अर्निका (Arnica.)

अरयिली aıaylli–तैना० कवटा। (Bed-worthia gaıdneri, *Meisn.*) ...

अरर āarar–यू० कन्तूरियून। Santúriyún.

अरर arar–हिं० पुं० (१) मैनफल, ... फल। Randia dumetorum, ... (Emetic nut.)। (२) तुम्... (Xanthoxylon alatum.) ...

–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अरर] ... किवाड़। कपाट। (२) पिधान, ढक...

अरर ट्री ara.-tree। इं० मग्दरब।

अररूट किज़ङ्गु ararúṭ kizhangu–... क्षीर, तीखुर, तिखुर–हिं०। See–Ti... स० फ़ा० इं०।

अररूट गड्डलु araúṭ-gaddalu–तै० ... तीखुर, तिखुर–हिं०। Curcuma a... stifolia, Roxb. (root of-) स०...

अर्रा aırá–हिं० स्त्री० अरहर, आढ़की ... janus indicus,)

अरलः aralah–सं० पुं० श्योणाक वृ... पाठा, अरलु। (Oroxylum Ind... अम०।

अरल arala–हिं० पुं० मशाल।

अरला aılá–सं० स्त्री० हंसपदी।

अरलि arali–का० अश्वत्थ, पीपलवृक्ष। (F... religiosa.)

अरलु aralu–सिंगा० हरीतकी, ह... (Ter... minalia, chebula.) स० फ़ा०...

अरलुः,–कः aralub, -kah–सं० पुं०

अरलु aralu–हिं० संज्ञा पुं० (१) श्योणाक वृक्ष, सोनापाठा, (Oroxylum Indicum) शोनापाठ... टेंटु, टिंडा–महा०। टट्या–बिं० गड़... म० १ भा० अतिसा० चि० गंगाधर... "नागर पाठारलु धातकी कुसुमैः"। च... गर्भ ज्वर। चै० निघ० अतिसा० चि० ... प्यादि। (२) वेतस वृक्ष, बेंत (Cala... rotong.) । (३) अजांड़। ...

ग्रंथी। (१) महानिम्ब, महारुखा, (Aila-
us excelsa) इ० मे० मे०।
alu-पुं० वर्चय, किंगल्नी, अगलामन्व।
alu-सिं०, मल० हरीतकी पुष्प, हड़
।
पाक aralu-putpáka-सं० पुं०
ह्य की छाल द्वारा प्रस्तुत किया हुआ पुट-
इसे कुटज पुटपाकवत् प्रस्तुत करते हैं।
टज।
—अरलु त्वक् द्वारा निर्मित पुटपाक
धिक है। इसे मधु तथा मोचरस के साथ
कर उपयोग करने से यह समस्त प्रकार के
र को दूर करता है। शाङ्ग० म० ख०
।

aralu-mal-सिंगा० हरीतकी, हड़।
erminalia chebula.) स०
ं०।

क्वाथः aralvádi-kváthah-सं०
अरलु, अतीस, मोथा, सोंठ, वेलगिरी,
द्वारा इनका क्वाथ प्रत्येक ज्वरों और अति-
ो शमन करता है। वृ० नि० र०।

avad-ता० } सतनी, सुदाब।
aravadá " } (Ruta graveolens, Linn.)

avá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अ=नहीं
+ लावना=जलाना, भूनना] वह चावल जो
अर्थात् बिना उबाले या भूने धान से
ला जाए।

aravan-पं० अयार, अस छाल—नेपा०।
aravánah-फ़ा० ऐसी मह्‌राई। एक
ी बूटी है जो रात को पुष्पित होती है।
म् aravindam-सं० क्ली०
aravinda-हिं० संज्ञा पुं०
) पद्म, कमल, उत्पल, पङ्कज। The
us (Nymphœa nelumbo.)
मु०। रा० नि० व० १०। (२) ताम्र,
बा। Copper (Cuprum) रा० नि०
१३। (३) कोकनद, रक्तपद्म (Nelumbium speciosum)। रक्तकमल-बं०।
(४) नीलोत्पल, नील कमल, नीलोफ़र।
(Nymphœa stelata) रा० नि० व०
१०। -पुं०। (५) सारस पक्षी। (The
crane.) अम०।

अरविन्ददल प्रभम् aravinda-dala-prabham-सं० क्ली० ताम्र, ताम्बा। तामा-बं०।
Copper (Cuprum) वै० निघ०।

अरविन्द बंधु aravinda-banddu-हिं० संज्ञा
पुं० [सं०] सूर्य। (The sun).

अरविन्दासवः aravindásavah सं० पुं०
कमल, खस, गम्भारी के फल, मजीठ,
नीलोफर, इलायची, बला, जटामांसी, मोथा,
अनन्तमूल, हड़, बहेड़ा, बच, आमला, कचूर,
काला सारिवाँ, नीली, पटोल, पित्तपापड़ा, अर्जुन,
महुआ, मुलेठी, मुरामांसी। प्रत्येक 1-1 पल
मुनक्का २० पल, धवपुष्प १६ प०, पानी
२ द्रोण, मिश्री १०० प०, शहद २० प०, सबको
मिलाकर यथा विधि मिट्टी के बर्तन में संधान
करके एक मास तक रक्खा रहने दें। यह बालकों
के समस्त रोगों को दूर करता है। भा० भै०
सं० भै० र०।

अरविन्दिनी aravindini-सं० स्त्री० पद्माकर।
र० मा०।

अरवी araví-हिं० स्त्री०, द० अरुई, घुइयाँ,
घुइयाँ में कच्चु-बं०। A species of
Arum (Arum colocasia.)

अरवी âaraví—अ० [illegible]
See-Asrásha.

अरवीनीम aravi-nim [illegible]
-मह०। (Atalantia [illegible]
Corr.) [illegible]

अरवीरेडानोड़ी [illegible]
शोफलिका, [illegible]
nthes [illegible])

अरशद [illegible]
[illegible] (Ferri
sulphuras)

अरशमरम् arasha-maram-ता० अश्वत्थ, पीपल वृक्ष। (Ficus religiosa.) इं० मे० मे०।

अरशा arashá-एक हिन्दी बूटी है जिसकी उँचाई मनुष्य के बराबर होती है। शाखाएँ घास की तरह ग्रंथियुक्त होती हैं। पत्तियाँ भी तृण समान तथा पुष्प धनफ्शा के सदृश किंतु, उससे भिन्न वर्ण का होता है। फल इलायची के समान त्रिपार्श्वाकार होता है। लु० क०।

अरस arasa-हपु(षु)षा, अवंज, भमज, हाऊबेर। (Juniperus chinensis.). इं०हैं०गा०।

अरस aras ता० पीपलवृक्ष, अश्वत्थ। (Ficus religiosa.)। -हिं वि० [सं० अरस] नीरस, फीका। (Insipid).

अरस aras-काली सम्भाली, वाकस। (Justicia gendarusssa.) इं० हैं० गा०।

आरस áaras-प्रा० बर्'स, घूँस, घूहम। A bandicote rat (Mus giganteus).

अरसः arasah-सं० पुं०
अरसम् arasam-सं० क्ली० } (१) रस रहित। (२) विष रहित। अथर्व०। सू० ६। ६। का० ४। अथर्व०। सू० २२। २। का० ५।

अरसमरम् arasa-maram-ता० अश्वत्थ, पीपलवृक्ष। (Ficus religiosa).

अरसा arasá-ता० पीपलवृक्ष, अश्वत्थ। (Ficus religiosa.)

अरसाः arasáh-प्राण रहित। अथर्व०। सू० ३१। ३। का० २।

अरसास arasás-सं० निर्बल। अथर्व०। सू० ४। का० १०।

अरा

अरसी arasí-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अतसी] अलसी, तीसी। देखो-अतसी।

अरसीन arasína-कना० जहरीसोनतक -मह०। (Allamanda cathartica, Linn.) फा० इं० २ भा०।

अरसीना arasíná-कना० हरिद्रा (Curcuma longa).

अरसीना उन्मत्त arasíná-unmatta-... पीला धतूरा, पीत धुस्तूर। (Yel... variety of Datura.)

अरसूसा arasúsá-यू० कलौंजा भेद, ... जंगली गाजर को कहते हैं।

अरस्तन arastan-फा० यूनानी संज्ञा ... (Iris) इसीसे व्युत्पन्न है। देखो-... मूल। फा० इं० ३ भा०।

अरस्ता तालीस arastá-tális-प्रा०

अरस्तू arastú-प्रा०

अरिस्टॉटल(Aristotle) अरस्तू का ... ईस्वीसे ३८४ वर्ष पूर्व ग्रीस के ... नामक स्थानमें हुआ था। मतरह वर्षकी ... यह हकीम अफ़लातून के शिष्यत्व में ... लित हुए और पूरे २० वर्ष तक दर्शन... अध्ययन किए और उनका पारंगत ... ४२ वर्ष की अवस्था में अरस्तू सिकन्दर ... के गुरु हुए। इनमें भौतिक वस्तुओं के ... पत्ताकी प्रबल इच्छा थी। इन्होंने ... में एक महाविद्यालय की स्थापनाकी ... सिद्ध एवं प्रकांड विद्वान् उत्पन्न हुए। ... शास्त्र के तो प्रमुख पंडित थे, परन्तु ... में इनका पद बुक़रात (Hippocra... से अत्यन्त निम्न कोटि का है। ... इन्द्रियव्यापारशास्त्र सम्बन्धी इनके ... असत्य सिद्धान्तों का जालीनूस ने ... है।

इनके मुख्य मुख्य सिद्धांत निम्न थे—

(१) यह हृदय को प्राकृतिक उष्मा का ... और रूह हैवानी का स्रोत मानते हैं। (... इनके मतानुसार फुफ्फुस हृदय को वायु ... करता है। (३) धमनियाँ हृदय से रक्त ... को सम्पूर्ण शरीर में पहुँचाती हैं और (... सिराएँ यकृदीय शोणित से सम्पूर्ण ... को आहार प्रदान करती हैं इत्यादि।

परन्तु आश्चर्य तो यह है कि आज ... वर्ष पश्चात् भी उनके ये असत्य सिद्धांत ...

तिन्वा में सत्य माने जाते हैं। शेख भी अरस्तू अनुयायी थे।
भिन्न भिन्न विषयों में अरस्तू के बहुमूल्यक थ हैं। पर उनमें से लगभग १०० से कुछ ही चिक प्रसिद्ध हैं, जिनका वर्णन हकीम बत्लो-स (Ptolemy) ने किया है। सन् ईस्वी ३२२ वर्ष पूर्व ६२ वर्ष की अवस्था में निज न्मभूमि में ही आपका स्वर्गवास हुआ।
arastú-फ़ा॰ छागलपाती, कजियान्नला ०। Swallow-wort (Asclepias anicata, Roxb.) ई॰ हिं॰ गा॰।
न arastún-यू॰ एक प्रकार का तीक्ष्ण ध।
नास arastú-násá-यू॰ खटिका, खरि-डि)या मिट्टी, सेतखरी। (Chalk.)
र arastúra-यू॰ भंगबूटी, भाँग। (Cannabis indica.)
लोखिया arastúlokhiyá-यू॰ अरावंद, यरमूल। (Aristolochia Indica.)
मीन arasmína-फ़ा॰ एक बूटी का फल जिसे घास के स्थान में घोड़ों को बृंहित करने के लिए खिलाते हैं।
áarah-अ॰ शशक, खरगोश, खरहा। Hare.)
ज़ान arahazána-अ॰ हिन्दकूकी।
ट arahaṭ-हिं॰ संज्ञा पुं॰ [सं॰ अर-घट्ट] अरघट्ट, रैंटा, रहँट। पानी का चरखा, एक यंत्र जिसमें तीन चक्कर या पहिए होते हैं। इन पहियों पर घड़ों की माला लगी होती है, जिससे कूएँ से पानी निकाला जाता है। (An engine for raising water.)
ड arahaḍa-जय॰ आढ़की, तुवर, अरहर। A kind of pulse (Cytisus cajan.)
द्दार्जुन áarahadárjúna-- सर्जूर वृक्ष। Phoenix dactylifera, Linn.(Dried fruits of-Dates.)
न arahana-हिं॰ संज्ञा पुं॰ [सं॰ रन्धन] वह आटा या बेसन जो तर्कारी साग आदि पकाते समय उसमें मिला दिया जाता है। रेहन।

अरहर arahara-हिं॰ संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ आढकी, प्रा॰ अड्ढकी] (१) आढ़की, रहर। (Cytisus cajan.) । (२) इसका बीज। तुवरी ; तूअर। पर्य्या॰-तुवरी। वीर्य्या। करवीर-भुजा। वृत्तबीजा। पीतपुष्पा। काक्षीमृत्स्ना, मृतालका। सुराष्ट्र-जंभा।
अरहवी arahaví-हिं॰ स्त्री॰ आरी, उरि, उरु।
अरहा arahá-सं॰ आमला। (Phyllanthus emblica.)
अरहिरे arahire-का॰ मेनुआ, घोषालता।
अरहून áarahún--अ॰ वर्ग नील, वस्मह्। (The leaf of Indigo plant.)
अरहूम áarahúm--अरजून।
अरहेड़ arahera-हिं॰ संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ हेड़] चौपायों का झुण्ड, लेहड़ी। -डिं।
अरा ará-हिं॰ संज्ञा पुं॰ दे॰ आरा।
अरा áará-अ॰ (१) शीत की तीव्रता, जाड़े का कड़ाका, शीताधिक्य।
- सिरि॰। (२) तुर्फ़ह्, गज़, भाऊ। (Tamarix gallica, Linn.)
अराक् arák-यू॰ पीलू (जालवृक्ष), मिस्वाक। झाल-राजपु॰। (Salvadora oleoides, Dcne.)
-हिं॰ संज्ञा पुं॰ [अ॰] (१) एक देश जो अरब में है। (२) वहाँ का घोड़ा।
अराक़ू aráqú-यू॰ करौंदा। (A tree.)
अराज़ áaráza-अ॰ देखो-इराज़। (Cautery.)
अराज़म् áarázam- } -अ॰सिंह, शेर, व्याघ्र।
अराज़म् áarázam } (A lion.)
अराजिः arájih-सं॰ स्त्री॰ धारीविहीन मांस-पेशी। (Unstriped muscle.)
अराजिकेसरः aráji-kesarah-सं॰ पुं॰

धारीविहीन मांसतन्तु । (Unstriped muscle fibres)

अराड़ जाना aráṛa jána-हिं० क्रि० अ० (१) गर्भपात हो जाना, बच्चा फेंक देना । गर्भ का गिर जाना । लंगाना ।

नोट—इस शब्द का व्यवहार प्रायः पशुओं ही के लिए होता है, जैसे—गाय अराड़गई ।

अराति aráti-सं० पु० शत्रु, दुश्मन ।

अरातिम् arátim-सं० स्त्री० जीवन को नाश करने वाले रोग । अथर्व० ।

अरादीस aarádísa-अ० अस्थि-संधि, हड्डियों के जोड़ । मुफ़ासिल उस्तख़्वाँ अ० । बोन जॉइण्ट (Bone joint.)-इं० ।

अराब aarába-अ० सन, शण । (Crotalaria juncea.)

अरायसुन्नील aaráyasunníla-अ० बिरनील, नीलोफ़र के समान एक बूटी है ।

अरार aarára-अ० (१) उकह वान, बाबूनह गाव (Parthenium.) (२) अ० रूर । See-zaarúra.

अरारह् aarárah-अ० वह स्त्री जो केवल लड़के प्रसव करे अर्थात् वह जिसके केवल लड़के उत्पन्न हों ।

अरारा arára-हिं० पु० ददोड़ा, ददरा ।

अरारि,-री arári,-rí-हिं० स्त्री० करंजिया । संस्कृत पर्याय—उदकीर्य, पड़ग्रंथा, हस्तिवारुणी, मर्कटी, वायसी, करंजी और करभंजिका । थोर करंज-मह० ।

विवरण—यह उदकीर्य नामक करंज का ही एक भेद है । इसके बड़े बड़े वृक्ष वन में होते हैं । पत्ते पाकर पत्र के समान गोल होते और ऊपर का भाग चमकदार होता है । फल भी चौंजे चौंजे झुमकदार लगते हैं; पत्तों में दुर्गन्ध आती है ।

गुणधर्म—यह करंज वीर्यस्तम्भक, कड़वा, कसैला, पाक में चरपरा, उष्णवीर्य और वमन, पित्त, बवासीर, कृमि, कोढ़ तथा प्रमेह को नष्ट करता है । भा० प्र० खं० ।

अरारी arárí-हिं० स्त्री० करंज । (Pongamia glabra)

अरारूट arárúta-हिं० संज्ञा पुं०, बं०, [अं० ऐरोरूट] (१) आरारोट । मैरान्टा (Maranta) -ले० । ऐरो रूट (Arrow root), वेस्ट इण्डियन ऐरोरूट (West Indian arrowroot) -इं० । [illegible] तीखुर-हिं० । कुअमड-ता० । कुवे [illegible] कुवा-[illegible]-ल० । पेन-ववा-बर० । [illegible]

आर्द्रक या हरिद्रा वर्ग

(N. O. Scitamineæ)

नॉट ऑफ़िशल (Not official)

उत्पत्ति-स्थान—यह एक भाँति का [illegible] है जो मेरण्टा अरुण्डीनेसिया (Maranta Arundinacia) नामक वनस्पति की जड़ से प्राप्त होता है । (यह वनस्पति पश्चिमीय द्वीप, बर्मियोडा और आस्ट्रेलिया में उत्पन्न होती है) । अब पूर्वी बंगाल, संयुक्तप्रांत और [illegible] में इसकी कृषि होती है ।

वानस्पतिक-वर्णन व इतिहास—एक पौधा जो अमेरिका से हिंदुस्तान में [illegible] है । गरमी के दिनों में दो दो फुट की [illegible] इसके कंद गाड़े जाते हैं । इसके लिए [illegible] दोमट और बलुई ज़मीन चाहिए । [illegible] फूलने लगता है और जनवरी फ़रवरी में [illegible] जाता है । जब इसके पत्ते झड़ने लगते हैं [illegible] पक्का समझा जाता है और इसकी [illegible] जाती है । खोदने पर भी इसकी [illegible] इससे जहाँ यह एक बार लगाया गया, [illegible] इसका उच्छिन्न करना कठिन होता है ।

निर्माण-क्रम—इस वनस्पति की [illegible] में खूब धोकर और स्वच्छ करके [illegible] पुनः उसे मलकर छानते और [illegible] छोड़ते हैं । इस प्रकार आरारूट [illegible] जाता है ।

लक्षण—यह एक हलका सफ़ेद [illegible] है । जिसमें किसी प्रकार की [illegible]

हीं होता। यह अमेरिका का सीसुर है। इसका
न देशी तीसुर के रंग से सफ़ेद होता है।

टिप्पणी इसके अतिरिक्त करयुमा के
विषय अन्य भेदोंसे भी अरारूट प्रस्तुत होताहै।
न्हें अरारूट हिन्दी कहना अधिक उपयुक्त प्रतीत
ताहै। संस्कृतमें उनको तवृक्षीरम् और हिन्दीमें
सुर कहते हैं। विस्तार हेतु देखो—तवक्षीरम्
(Curcuma Angustifolia).

प्रभाव तथा उपयोग—यह पोषणकर्त्ता और
ाहनक है। इसको प्रायः दुग्ध में पकाकर
बकों, निर्बल रोगियों, मुख्यतः आन्त्र या मूत्र
स्थान विषयक रोगों के पश्चात् की निर्बलता
दिया करते हैं।

पाक-विधि—पहिले शीतल जल में इसकी
ई सी बना लें। तदनन्तर उसमें खोलता हुआ
प डाल कर उसको गाढ़ा सा लुआब बनालें।
ज़ार में जो अरारूट प्राप्त होता है उसमें प्रायः
लू के श्वेतसार का मिश्रण किया हुआ रहता
।

परीक्षा—सूक्ष्मदर्शक से इसकी भली भाँति
रीक्षा की जा सकती है। उसमें देखने से आलू
श्वेतसार के कण अरारूट श्वेतसारीय कण से
ड़े दीख पड़ते हैं। इं० मे० मे०। मे० आ०
०।

(२) अरारूट का आटा।

करकमी arárúta-karkami-हिं०
०० (Curcuma Arrowroot) अरा-
भेद। देखो—अरारूट।

हिन्दी arárúta-hindí-हिं० स्त्री०
Indian Arrowroot.) अरारूटभेद।
खो—अरारूट।

बा araroba-लें०, ई० गोआ पाउडर
Goa Powder.), अर्थात् गोआ चूर्ण,
ड क्राइसारोबीन (Crude Chrysaro-
in.), अर्थात् अपूर्ण, वा कच्चा क्राइसारोबीन।

ऑफ़िशल *Official*.

(*N. O. Leguminosæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—यह औषधि ब्राज़ील देशके
बाहिया नामक स्थान में उत्पन्न होती है।

इतिहास—पुर्तगाली भारत (गोआ) के
देशी ईसाई इसको एक प्रकार के त्वग्रोग में जिसे
मराठी भाषा में गजकरन कहते हैं, लगाया करते
थे और उक्त औषधि उनके गुप्त रोगों में
से थी। अस्तु, सर्व प्रथम यह बम्बई में
१२) से ३०) प्रति टिन के भाव से जिसमें एक
पौंड (अर्द्ध सेर) औषधि होती थी, विक्रय हेतु
अकस्मात् आया करती थी और दद्रुघ्न चूर्ण
(Ringworm Powder), गोआ चूर्ण
(Goa Powder), ब्राज़ील चूर्ण (Bra-
zil Powder) प्रभृति नामों से विख्यात
थी। माननीय डॉ० एस० केम्प महोदय ने सर्व
प्रथम सन् १८६४ ई० में इसकी ओर ध्यान दी।
तदनन्तर क्रमशः अन्य डॉक्टरों ने इस ओर
ध्यान दिया।

भारतवर्ष में इसके प्रथम प्रवेश की ठीक तिथि
अज्ञात है। नई दुनियाँ के अन्य पैदावारों के
समान सम्भवतः १८ वीं शताब्दि के पश्चातकाल
में ईसाई यात्री इसे यहाँ ले आए। केम्प महा-
शय ने इसकी परीक्षाकी और वे इस परिणाम पर
पहुँचे कि इसमें माननीय पेलोज़ (Polouze)
तथा फ्रेमी (Fremy) वर्णित ऑर्केला वीड
(Orchella weed) में होने वाले सत्व
के समान ही एक प्रकार का सत्व विद्यमान है।
ऐटफ़ील्ड (Attfield) ने सन् १८७५
ई० में इसकी ओर सर्वांगपूर्ण परीक्षा की और
क्राइसारोबीन (Chrysarobin) नामक
पदार्थ जो उनकी कल्पना में मुख्यकर क्राइसो-
फेनिक एसिड (Chrysophanic Acid)
था, पाया। उसी वर्ष ब्राज़ील डॉक्टर जे० एफ़०
डा सिल्वा लाइमा ने सूचित की भारतवर्ष में जो
पदार्थ गोआपाउडर के नाम से प्रख्यात है,
वह सम्भवतः ब्राज़ील देश निवासियों का अरा-
रोबा या अरारीबा (धूसर वर्ण का चूर्ण) ही
है जिसे पुर्तगाल निवासी उक्त प्रान्त में होने
के कारण पोडी बाहिया (Pode Bahia)
या बाहिया पाउडर कहते थे। उक्त डॉक्टर महो-
दय ने यह भी बतलाया कि वह एक वृक्ष

जातीय वृक्ष से प्राप्त होता है और ब्राज़ील में चिरकाल से कतिपय त्वग्रोगों में प्रयुक्त होता रहा है। इसके कुछ ही समय पहिले कलकत्ता के डॉक्टर फेयरर ने सिरका या नीबू स्वरस संयुक्त गोआ पाउडर कल्क के प्राक्कथित औपधीय उपयोग विषयक गुण की ओर चिकित्सकों का ध्यान आकृष्ट किया। ऐसा प्रगट होता है कि उनके लेख ने डॉ० डा० सिल्वा लाइमा महाशय का भी ध्यान उक्त विषय की ओर आकृष्ट किया।

माननीय ई० एम० होम्स ने बतलाया कि वह काष्ठ जो गोआ पाउडर से प्राप्त होता है वह (Cœsalpinia echinata, *Lam.*) के बहुत समान है; परन्तु जे० एल० मेकमिलन ने बतलाया कि उक्त काष्ठ से जल रञ्जित होजाता है और यह बात अरारोबा में नहीं है।

सन् १८७८ ई० में सी० लीबरमैन तथा पी० सीडलर ने प्रगट किया कि क्राइसारोबीन ($क_{३०}$ $उद_{२६}$ $ऊ_{७}$) अभीतक एक अज्ञात यौगिक है तथा ऐटफील्ड द्वारा निवेदित नाम को ही आपने स्थिर रक्खा।

सन् १८७९ ई०में अरारोबा का प्राप्ति-स्थान एण्डीरा अरारोबा (Andira Araroba, *Aguiar.*) स्थिर किया गया। यह बाहिया के आर्द्र वनों में सामान्य रूप से होने वाला एक वृहत् वृक्ष है जिसे वहाँ के लोग ऐञ्जेलीम अमरगोसो (Angelim amargoso) कहते हैं। अरारोबा तने के छिद्रयुक्त खोखले भागों में रहता है। ये तने में चौड़ाई (व्यास) की रुख आर-पार तक रहते और सम्पूर्ण तने के बीच प्रसरित होते हैं। प्राप्ति-विधि—वृक्ष को काटकर तथा तने को चीर फाड़ कर खोखलों से अरारोबा चूर्ण को खुरच लेते हैं। इसे लकड़ी के टुकड़ों या रेशों आदि से स्वच्छ करके तथा शुष्क कर चूर्ण कर लेते हैं।

लक्षण—यह एक खुरदरा चूर्ण अथवा सूक्ष्म विषम कण है जो आरम्भ में हलका पीतवर्ण का, परन्तु प्रकाश एवं नमी में खुला रहने पर साधारणतः गम्भीर वर्ण से मन्द पीत, पीत-धूसर

या अम्बरी-धूसर अथवा गम्भीर-बैंगनी
हो जाता है। स्वाद—तिक्त। (डाइमॉ

यह क्राइसारोबीन के निर्माण में प्रयुक्त
है। यदि इसको उष्ण क्लोरोफार्म में
जाए तो क्लोरोफार्म द्वारा वाष्प उड़ जाने
उक्त चूर्ण में से न्यूनातिन्यून ५०% क्रा
बीन प्राप्त होना चाहिए।

क्राइसारोबीन (Chrysarobin)
क्राइसारोबीनम् Chrysarobinum

निर्माण विधि—अरारोबा (गोआ
को उष्ण क्लोरोफॉर्म या उष्णबेंज़ीन
एक्सट्रैक्ट करके शुष्क होने तक वाष्पीभ
कर इसे चूर्ण कर लें।

रासायनिक संगठन (या संयोगी

इसमें (1) क्राइसारोबीन ($क^{१५}उद^{१२}$
जिसको रुहीईन या क्राइसोफ्रीन भी
(२.) क्राइसोफेनिक एसिड, अथवा
नुसार यह न्यूनाधिक होता है;
क्रिया द्वारा, अधिक क्राइसोफेनिक एसि
होता है।

एलेन (Allen) के मतानुसार
फेनिक एसिड, एसिड और क्राइसारोबीन
अनिश्चित मिश्रण है। इसमें रिकरिक एसि
अन्य पीत रञ्जक पदार्थ का मिश्रण किया
है।

नोट—अरारोबा या गोआपाउडर से
८० प्रतिशत और औसतन ७१ प्रतिशत
सारोबीन प्राप्त किया जाता है।

लक्षण—क्राइसारोबीन एक रवाविहीन
वर्ण का चूर्ण है जो गंधरहित और जल में
लेय होने के कारण स्वाद रहित होता है।

घुलनशीलता—यह जल में अघुल
लेय, मद्यसारमें कुछ कुछ विलेय तथा
अलकोहल, ईथर, क्लोरोफॉर्म तथा
में पूर्णतः विलेय होता है।

३२३·६ * फ़ारनहाइट उत्ताप
जाता है और आंशिक ऊर्ध्वपातित भी

गंधकाम्ल में यह घुल जाता है तथा घोल
र्ग का होता है। अधिक जलमिश्रित पोटाश-
में यह लगभग अविलेय होता है। इसके
त क्राइमोफेनिक एसिड बन गंधकाम्ल में
जाता है तथा अधिक जलमिश्रित पोटास
में भी घुल जाता है तथा घोल का रंग
हो जाता है।

रीक्षा–यदि क्राइसारोबीन को २००० भाग
में उबाला जाए तो यह पूर्णतः नहीं घुलता
धाला हुआ पदार्थ सुर्तीमायल धूसर वर्ण
स्वादरहित टेस्टपेपर (लुटमस) तथा लोह-
से अरंजित रहता है। क्राइसारोबीन १६०
उष्ण मद्यसार में पूर्णतः विलेय होता है।

यापार—अरारोबा अधिक परिमाण में
ज़ार में आता है और क्राइसारोबीन, अरा-
न तथा गोआपाउडर नाम से बिक्रीत होता
मात्रा–⅙ से ½ ग्रेन, (पा० घी० एम०)।
ार्य—त्वग्रोगों में कीटघ्न (Antiparasitic) है।

ऑफ़िशल योग

(*Official preparations.*)

मौरव-निर्माण–क्राइसारोबीन प्रलेप। अङ्गुएन्टम् क्राइसारोबीनाई (Unguentum Chrysarobini)-ले०। क्राइसारोबीन ऑएन्टमेण्ट (Chrysarobin Ointment.)-इं०। मर्हम क्राइसारोबीन-उ०।

निर्माण-विधि—क्राईसारोबीन २० ग्रेन, सॉफ्टेड लार्ड या सॉफ्टपैराफीन ४८० ग्रेन। र्ड को पिघलाकर उसमें क्राईसारोबीन सम्मिलित करलें।

प्रभाव या उपयोग—चम्बल या विचर्चिका (Psoriasis) के लिए यह पराश्रयी कीटघ्न उत्तेजक प्रयोग है।

नॉट ऑफ़िशल योग और पेटेन्ट औषधें

(*Not official preparations.*)

(१) अङ्गुएन्टम् क्राईसारोबीनी कम्पॉज़िटम् Unguentum Chrysarobini compositum)-ले०। कम्पाउण्ड ऑइंटमेंट ऑफ क्राईसारोबीन (Compound ointment of Chrysarobin)-इं०। मिश्रित क्राईसारोबीन प्रलेप-हिं०। मर्हम क्राईसारोबीन मुरक्कब, मुरक्कब मर्हम क्राईसारोबीन-उ०।

निर्माण-विधि—क्राईसारोबीन ४ भाग, सैलीसिलिक एसिड २ भाग, इक्थियॉल ४ भाग, वैसलीन ८८ भाग सबको परस्पर पीसकर मरहम बनालें।

उपयोग—चम्बल या विचर्चिका (Psoriasis) के लिए लाभप्रद है।

(२) पिग्मेण्टम् क्राईसारोबीनी (Pigmentum Chrysarobini)-ले०। तिलाए क्राइसारोबीन-फ़ा०।

निर्माण-विधि—क्राईसारोबीन १ भाग, क्लोरोफॉर्म १० भाग, मस्टापार्चा टिंचर १ भाग दोनों औषधों को क्लोरोफार्म में हल करलें (इससे कपड़े पर चिह्न नहीं पड़ता)।

उपयोग–चम्बल (Psoriasis) पर ब्रुश के द्वारा १० दिवस पर्यन्त प्रति दिन दो बार लगाते रहने से, बशर्ते कि उस जगह पर पानी न लगने पाए, रोग निवृत्ति हो जाती है। (एक्स्ट्रा फार्माकोपिया)

(३) पिग्मेण्टम् क्राइसारोबीनी एट पाइरोगैलोल (Pigmentum Chrysarobini et Pyrogallol)-ले०। तिलाए क्राईसारोबीन व पाइरोगैलोल-फ़ा०।

निर्माण-विधि—क्राईसारोबीन १ भाग, पाइरोगैलोल १ भाग, ईथर और क्लोरोफार्म में प्रत्येक १० भाग, क्लोडीन १२० भाग, प्रथम दो औषधों को ईथर और क्लोरोफार्ममें घोलकर उसमें क्लोडीन सम्मिलित करें।

उपयोग - चम्बल (Psoriasis) और दद्रु पर उसे धोकर प्रति तीसरे दिन इसे लगाने से बहुत लाभ होता है। (एक्सट्रा फार्माकोपिया)

(४) सपॉज़िटोरियम् क्राईसारोबीनी (Su-

(Suppositorium Chrysarobini)-ले०। क्राइसारोबीन वर्तिका-हि०। शियाक्र क्राइसारो-बीन।

निर्माण-विधि—क्राइसारोबीन $1\frac{1}{4}$ ग्रेन आयोडोफॉर्म $\frac{3}{10}$ ग्रेन; बिलाडोना एक्सट्रैक्ट $\frac{1}{6}$ ग्रेन, ग्लीसरीन आवश्यकतानुसार जिससे कि उचित वर्ति प्रस्तुत हो जाए और कोकाउबटर ३० ग्रेन पर्यन्त।

उपयोग—इस वर्ति के प्रयोग से बवासीर में बहुत लाभ होता है। (एक्स्ट्रा फार्माकोपिया)

(५) एन्थ्रारोबीन (Anthrarobin) इसका प्रलेप रूप से क्राइसारोबीन के स्थान में प्रयोग करते हैं।

(६) लेनीरोबीन (Lenirobin)-यह भी क्राइसारोबीन का एक यौगिक है जिसको पुरातन नार क्रासी या अर्द्धनवार विस्फोटक (Chronic Eczema) और पुरातन चम्बल (विचर्चिका) पर लगाते हैं।

(७) यूरोबीन (Eurobin)-यह एक धूसर वर्ण का चूर्ण है जिसको क्राइसारोबीन के स्थान में बर्तते हैं।

उपयोग—इसका २ या ३ प्रतिशत का घोल चम्बल (Psoriasis) और दद्रु (Ringworm) के लिए लाभदायक है। इससे न तो त्वचा पर खराश (क्षोभ) होती है और न कपड़े पर चिह्न पड़ते हैं।

क्राइसारोबीन की फार्माकालाजी अर्थात् औषधीय प्रभाव

बहिः प्रभाव—त्वचा पर क्राइसारोबीन का प्रबल क्षोभक (Powerful irritant) प्रभाव होता है। अस्तु, इसके प्रयोग से त्वचा पर ददोड़े निकल आते हैं, मुख्यतः स्वस्थ त्वचा पर; क्योंकि विकारी त्वचा पर इससे उतना क्षोभ नहीं उत्पन्न होता। वानस्पत्य जीवाणु विषयक त्वग्रोग को उक्त औषध नष्ट करती है। अस्तु, यह प्रबल पराश्रयी कीटघ्न भी है। इसका स्थानिक वा सार्वांगिक दोनों प्रभाव होता है। यह त्वचा द्वारा शोषित होजाता है और इससे त्वचा पर पीताभायुक्त धूमरवर्ण के चिह्न पड़ वस्त्र पर भी इससे उसी प्रकार के चिह्न पड़ जाते हैं।

अन्तः प्रभाव—अति स्वल्प मात्रा (...) में देने से भी यह आमाशय व ... अत्यन्त क्षुभित करता है जिससे ... आती है, वमन आते हैं और ... में ... मल आते हैं अर्थात् प्रवाहिका के ... उपस्थित होते हैं। अस्तु, यह ... आमाशय वा आन्त्र क्षोभक (Po... gastro-intestinal irritan...)

विसर्जन—यह किसी भाँति ... किन्तु अधिकतर वृक्क द्वारा शरीर से ... होता है और इससे मूत्र का रंग पांड... हो जाता है।

क्राइसारोबीन के उपयोग अर्थात् थेराप्युटिक्स

बहिः उपयोग—प्रायः इसको दद्रु (Ringworm) तथा ... पुरातन रूक्ष त्वग्रोगों जैसे ... विचर्चिका (Psoriasis), ... फुन्सियाँ (Eczema), ... (Acne) पर लगाते हैं। यद्यपि ... प्रमाणित करना कि जीवाणु ही ... उत्पादक कारण हैं, अभी शेष रह जाता है ... विचर्चिका (Psoriasis) रोग में ... मुख्य उपयोग होता है। अस्तु ... लीन को तप्त कर ... से ... का ... सारोबीन मिलाकर ऐसा प्रलेप ... लगाने से उक्त रोग शीघ्र दूर हो जाता है। इसी भाँति उपयोग करने से ... शोषित होकर विचर्चिका (Psoria...) के ऐसे धब्बों को भी दूर कर ... जिनमें इसका बहिर्प्रयोग नहीं किया ... इसमें प्रायः ... पास ... व्यथापूर्ण विसर्पीय ... जाते हैं, जिससे किसी किसी ... योग नहीं किया जा सकता।

र्थात् लेखक (Sir. W. whitla) इस बात से सन्तुष्ट हुई, कि यदि उक्त प्रलेप केवल रोग स्थल तक ही सीमित रक्खा एवं स्वस्थ त्वचा को उसका स्पर्श न होने जाए तो इसको आवश्यकता हीन हो। आपका ... है कि यह थोड़ी सी बात इसकी चिकि- ... की सफलता का गूढ़ तत्व है।

... डाक्टर फॉक्स ने क्राइसारोबीन को जल के ... पीस कर इसका कल्क प्रस्तुत कर इसे धब्बों ... उसके ऊपर कोलोडियन से आवरित करने की ... ति दी है। (Tramaticine) अर्थात् ... भी इसमें भी श्रेष्ठतर सिद्ध होगा। ... वर्तिकाएँ Brooke's salve sticks ... भी उत्तम होती हैं। परन्तु पूर्वोक्त सम्पूर्ण ... में से सर्वोत्तम विधि लेखक व्हिटलॉ की ... में धब्बे को औषध के तीव्र कठिन प्रलेप था ... द्वारा आवरित कर रखना और उसके सिरे ... मर्द प्रस्तर का एक बड़ा टुकड़ा स्थापित ... है।

... विचर्चिका (Psoriasis) रोग में पीड़ित प्राणी ... शरीर को एक ओर के विकारी स्थल पर ... के मर्दन से उसका स्थानिक प्रभाव देखा ... सकता है। सप्ताह अथवा दस दिवस में उक्त ... की त्वचा के सुधार का निश्चित चिह्न दिखाई ... है। इसकी दूसरी ओर की त्वचा पर भी यह ... से कम स्पष्ट नहीं होता। और उक्त औषध ... यथोक्त विधि द्वारा उपयोग करने से विकृत ... शे लुप्तप्राय होने लगते हैं; तब उस ओर की ... वा भी जिस ओर औषध नहीं लगाई गई है। ... परिणामस्वरूप सुधार के चिह्न प्रगट करने ... लगी है। लेखक ने उक्त औषध को निरन्तर ... स्थल पर लगाने से जिसपर सर्व प्रथम औ- ... लगाई गई हो शरीर के सम्पूर्ण पृष्ठतल ... रोग मुक्त होते हुए पाया। सम्भवतः ऐसा ... औषध के शरीर में शोषित हो जाने और विकारी ... तक पहुँचाए जाने के कारण होता है। ... मे० हिट्लॉ)।

... विस्फोटक, विचर्चिका (Psoriasis) एवं दद्रु प्रभृति त्वग्रोगों में शीघ्र एवं निश्चय प्रभावकारी जो औषध मुझे मालूम हुई है वह गोआ पाउडर तथा नीबू स्वरस या सिरका है। इसको दिन में २ या ३ बार निरन्तर लगाने से पूर्ण लाभ होता है। प्रलेप-विधि—थोड़ी सी दवा को सिरका या नीबू के रस में घोलकर जब वह मलाई की भाँति होजाए तब उसे विस्फोटक पर कुछ दूर तक प्रलेपित कर दें। (डाइमॉक)

अन्तःप्रयोग—क्राइसारोबीन के अन्तःप्रयोग से विचर्चिका (Psoriasis), ज्वलनशील विस्फोटक (Eczema) तथा यौवनपीड़िका अर्थात् मुँहासा प्रभृति में लाभ होता है। परंतु अति न्यून मात्रा (½ ग्रेन) में भी इससे प्रायः उदर में ऐंठन, रेचन व वमन होते हैं, क्षुधा कम हो जाती है और व्यग्रता प्रतीत होती है। अस्तु, इसका अन्तःप्रयोग न करना चाहिए।

योग-निर्माण विषयक आदेश—क्राइसारोबीन को मुख मण्डल पर नहीं लगाना चाहिए; क्योंकि इसके क्षोभ से नेत्राभिष्यन्द होने का भय रहता है। परन्तु शिर पर १९ ग्रेन प्रति आउंस वाला प्रलेप लगा सकते हैं।

क्राइसारोबीन को एकही समय शरीर के अधिक भाग पर नहीं लगाना चाहिए; क्योंकि इसके शोषित हो जाने से बुरे लक्षण उपस्थित होने का भय रहता है। अस्तु, यदि शरीर पर बहुत विस्तीर्ण दद्रु हो तो उसके थोड़े थोड़े भाग पर दवा लगाते रहें। जब एक ओर से वह अच्छा हो जाए तब दूसरी ओर दवा लगाएँ।

वस्त्र पर जो क्राइसारोबीन प्रलेप का चिह्न पड़ जाता है वह वानस्पतिकाम्ल, पोटाश या क्लोरिनेटेड लाइम के हलके घोल से दूर हो जाता है। अथवा उस पर प्रथम बेन्ज़ीन लगाकर उसकी चिकनाई को दूर करें और फिर उस पर क्लोरीनेटेड लाइम का घोल लगाएँ। कभी कभी किञ्चित् कॉस्टिक सोडा का घोल भी लगाना पड़ता है।

अरालः arālah-सं० पुं० }
अराल arāla-हिं० संज्ञा पुं० } (१) एक

धुना, राल, सर्जरस-हिं०। धुना-बं०। राल -महा०। (Resin)। (२) शाल वृक्ष (A saltree)। (३) मत्तहस्ति (An intoxicated elephant)। मे०। वि० कुटिल। टेढ़ा।

अरालिपसीई araliaceoe-लै०, तापमारी वर्ग।

अरावह aaravah-ग्र० मादा टिड्डी। (A female locust.)

अराह arah-मस्तगी, मस्तकी। (Mastiche.)

अरिः arih-सं० स्त्री० अरि नामक खदिर, खदिर विशेष, कत्था। खदिर विशेष-बं० अरि-महा०। शीगुरि-कं०। (Catechu.) पर्याय-सन्धालिका, दाली, खदिरपत्रिका। गुण-कसैला, कटुक, तिक्त और रक्तपित्तनाशक है। रा० नि० व० ८। देखो-खदिर।

अरि ari-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) रिपु, शत्रु (An enemy.)। (२) विट् खदिर। दुर्गन्ध खैर। अरिमेद। (Acacia Farnesiana, *Willd.*) (३) चक्र। -मल० (४) चावल। Rice-Seeds or grains without husk (Coryza sativa, Linn.) स० फा० इं०।

अरिआलु arealu of rheede-पीपल, अश्वत्थ। (Ficus religiosa.) फा० इं० ३ भा०।

अरि-इकन ari-ikan-मल० मछली का सरेस, सिरेशमे माही। Icthyocolla (Isingglass)

अरिक arik-ग्र० मद्य का ठीक होना, पुरित होना। इन्द्रिमाल और तकर कुश के भेद के लिए देखो-हस्स।

अरिङ्ग aringa-राजपु० श्वेत बबूर वृक्ष, सफ़ेद कीकर। (Acacia leucophloea, *Willd.*)

अरिचारायम् aricharayam-मल० चावल मद्य, चावल की शराब या अर्क। (Liquor of rice) स० फा० इं०।

अरिजन arijana-हिं० संज्ञा पुं० एक वायव्य विशेष। आरगन (Argon)

अरिञ्ज arinja-हिं संज्ञा पुं० [...] (Acacia leucophlæa, Willd.) प्रकार का बबूल। यह पंजाब, राजपूताना और दक्षिण भारत तथा बरमा में पाया जाता है। इसका छिलका रेशेदार होता है और इससे पकड़ने का जाल बनाया जाता है। इससे एक प्रकार की गोंद भी निकलती है जो थोड़ी आने पर पीला रंग पैदा करती है। अमृतसरी गोंद कहलाती है। इसे बबूल के साथ मिलाकर भी बेचते हैं। इसके बीज को पीसकर गरीब लोग अकाल में आटे के साथ खाने के लिए मिलाते हैं। एक प्रकार का नशा भी होता है और शराब में भी मिलाई जाती है। इसीलिए शराब को कीकर कहते हैं। सफ़ेद अरिञ्ज। श्वेत बबूर वृक्ष।

अरितमञ्जरी arita-manjari-सं० कुरण्डली, हरितमञ्जरी। (Clerodendron Inerme.)

अरितारम aritaram-ता० }
अरिदला aridala-कना० } हरिताल। Orpiment (...)
अरिन्ताल arintala-सं० }
sulphuret of Arsenic.)

अरिपूरिमः aripurimah-सं० पुं० अरिमेदः, दुर्गन्धि खैर, गूहकीकर। (Acacia Farnesiana.) बं०। गंधी हिंवार-महा०। वै० निघ०।

अरिप्र aripra-वै० दुःख रहित। अथर्व०। सू० ५। २४। का० १०।

अरिमः arimah-सं० पुं० विट्खदिर, गूहकीकर। (Acacia Farnesiana.) रत्ना०, भैष० मुखरोग चि०।

अरिमत्स्य ... (Arius arius, *Ham.* ...)

गुण—इसका मांस कठिनता से पचने वाला, …वृष्य, हृदयोत्तेजक, स्मृतिवर्धक तथा वात-कफवर्धक है। (इं० ड्र० इं०)

…arimarddah-सं० पु० कासमर्द, …कसौंदी। काल कासन्दा-बं०। कासविंदा …। (Cassia Sophora.) रा० … व० ४।

गुण—इसका पत्र रुचिकारक, बलकारक, …, कास तथा रक्तनाशक है और मधुर, वात…नाशक, पाचक, कण्ठशोधक तथा विशेष रूप… कासहर, विषघ्न, धारक और हलका है। … पृ० १ भा०।

…त arimáṣhata-सं० पु० खदिर, …वृक्ष। Catechu tree (Acacia …techu, *Willd.*)

…,कः arimedah,-kah-सं० पु०
… arimeda-हिं० संज्ञा पुं०

(१) एक वृक्ष। (A kind of tree.)
(२) एक बदबूदार कीड़ा। गैंधिया। गंधी। (A green bug.)। (३) विट्खदिर। …बबूल, गन्धबबूल, दुर्गन्ध खैर, विलायती …ब (कीकर)-हिं०। गू-कीकर-द०। …विदः, इरिमेदः, कालमदः, इरिमेदः किमि-…वरः, मरुद्रुमः कालस्कंधः (रा० नि०), …स्त्रोभी, मरुजः, बहुसारः, गोरदः, अमराज, …तक, मारखदिरः, महासारः, क्षुद्रखदिरः, …खदिरः (रा० नि०), इरिमेदः, …मेदः, गोधास्कन्धः, अरिमेदकः, अहि-…रः, पूतिमेदः, अहिमेदः, विट्खदिरः-सं०। गू-…बूल, गुया-बाबूला, विट् खयेर, गुयेबाबला, दुर्गंध …दिर, कॉटानागेश्वर-बं०। अकेशिया फार्ने-…याना या माइमोसा फार्नेसियना (Acacia …rnesiana, *Willd.*, syn. mimosa …rnesiana, *Linn.*)-ले०। पियू वेलम्, …यू वेल, वेड्वला, पिकरु-विल-ता०। पिथि-तुम्म, …गु-तुम्म, नाग-तुम्म-ते०। पी-वेलम्, करी-…विम्-मल०। करी-जली, करयंवेलु, जाली …कना०। गु-बावला-गु०। मन्ची-हिम्बर, गुह बवल-मह०। नन्लूँ-मैं-बर्मा०। कुप-बवल-सिंध०। कुमरी-म्हार-कों०।

शिम्बी वर्ग

(*N. O. Leguminosae*)

उत्पत्ति-स्थान—सम्पूर्ण भारतवर्ष, हिमालय में लेकर लंका पर्यन्त।

संज्ञा-निर्णायक-नोट—अरिमेदकी ताजी छाल और काष्ठ की गंध मानुषी विष्ठा के तद्वत् होती है। अस्तु, उपर्युक्त प्रायः इसके सभी पर्याय विट्-गंधि बोधक हैं। तेलगु नाम कस्तुरि-तुम्म जो किसी किसी ग्रंथ में इसके पर्याय स्वरूप लिखा गया है और जिसका अर्थ कस्तूरी-गंध बबूर होता है इसके लिए प्रयुक्त नहीं किया जाना चाहिए। कारण स्पष्ट है। मेसर्स नेचरल ग्रोडक्ट्स्स ऑफ बर्मा नामक ग्रंथ में इसके दो पर्याय और लिखे गए हैं। यथा-(१) नान्लूँ-सैन् जिसका अर्थ उत्तम गंध और (२) जिसका अर्थ दुर्गंध है। इनमें से प्रथम शब्द का इसका पर्याय होना संदेहपूर्ण है। कारण वही है जैसा तेलगु शब्द कस्तूरी-तुम्म के लिए वर्णन किया है। इसीकारण इन संज्ञाओं को उपर्युक्त तालिका में नहीं लिखा गया।

दक्खिनी संज्ञा गू-कीकर कभी कभी पार्किन-सोनिया एक्युलिएटा (Parkinsonia aculeata) के लिए भी प्रयुक्त होता है, परंतु इसको जंगली कीकर कहना अधिक उपयुक्त होगा।

वानस्पतिक-वर्णन—इसके वृक्ष सर्वथा (बबूल, कीकर) वृक्ष के समान होते हैं, केवल भेद यह है कि इसके काँटे छोटे होते हैं और इसके पत्र आदि में विष्ठावत् गंध आती है। (पूर्ण विवेचन हेतु देखो-बब्बूर वा खदिर।)

इससे एक प्रकारका निर्यास निर्गत होता है जो गोलाकार अश्रुरूप में प्राप्त होता है। इनमें क्रमशः पांडु, पीत तथा गंभीर रक्ताभधूसरवर्णों की श्रेणियाँ होती हैं। देकन में बम्बई और पूना के आस पास जो गोंद एकत्रित की जाती है वह अल्प विलेय होती है।

रासायनिक-संगठन—इसके पुष्प द्वारा प्रस्तुत तैलमें बेञ्जल्डीहाइड,सैलिसिलिक एसिड, मीथिल सैलीसिलेट, बेञ्जिल एल्कोहल, अन-एल्डीहाइड प्रभृति होते हैं।

प्रयोगांश—कांड तथा मूलवल्कल, पत्र, निर्यास, फली और पुष्प।

औषध-निर्माण—क्वाथ, लुआब, तैल (अरिमेदादि तैल–च० द०)।

मात्रा—वल्कल, काष्ठ तथा पुष्प चूर्ण १–४ आना भर। सार (खैर)–½–२ आना भर। काष्ठ तथा वल्कल क्वाथ–५–१० तो०।

गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—

अरिमेद कषैला, उष्ण, तिक्त, भूतघ्न है और शोफ (सूजन), अतिसार, कास तथा विसर्प का नाश करनेवाला है।

विट्खदिर कटु, उष्ण, तिक्त, रक्त के दोष तथा व्रणदोष नाशक है तथा कण्डू (खुजली), विष, विसर्प नाशक और ज्वर, कुष्ठ, उन्माद तथा भूत-बाधा हरण करने वाला है। रा० नि० व० ८।

मुख एवं दन्त के रोग नाश-करनेवाला तथा कण्डू, (खुजली), विष, श्लेष्म, कृमि, कुष्ठ और व्रण नाशक है। मद० व० ४।

कषैला, उष्ण, तिक्त, भूत विनाशक है तथा मुख रोग और दन्त रोग नाशक, रक्तदोष, रुधिर विकार, कण्डू (खुजली), कृमि, कफ, शोथ, (सूजन), अतिसार, कास, विसर्प, विष, कुष्ठ और व्रण का नाश करने वाला है। भा० पू० १ भा० वटादि। भैष० मुखरो० चि०। च० सू० ४ अ०।

नव्यमत

प्रभाव—संग्राही (संकोचक), स्निग्धताकारक और परिवर्त्तक। वल्कल संकोचक अर्थात् ग्राही और पुष्प उत्तेजक है।

उपयोग—इसकी छाल का काढ़ा (२० में १) संकोचक मुखधावन है। इस हेतु मसूढ़ों से रक्त आने प्रभृति में यह लाभदायक है। इसकी गोंद अरबी बब्बूर-निर्यास (Gum arabic) की उत्तम प्रतिनिधि है; परन्तु यह ... यह मरोरावत ... जाती है। इसकी ... त्तियों को किञ्चित् जल में घोलकर ... सूजाक रोगी को पिलाते हैं। ... स्रवण करने पर इससे एक प्रकार ... द्रव प्राप्त होता है जो परिवर्तक प्रभाव ... प्रसिद्ध है। इसमें एक प्रकार का तैल ... शुक्रमेह में, कामोद्दीपक औषधों के साथ ... से इसका उपयोग करते हैं।

अरिमेदाद्यतैलम् arimedádyatailam ... क्री० यह तैल मुख रोगमें हितकारक है। ... मूर्च्छित तिल तैल ८ श०, क्वाथार्थ ... (गुड़ बबूल) १२॥ श०, जल ... पकावें, जब १६ श० शेष रहे तब इसमें ... २ तो० कल्क डालकर विधिवत् तैल ... कार्य में लावें। च० द० मुख रो० चि०।

अरियवेप्प ariya-veppa–मल० नाम, ... (Azadirachta Indica, ...) स० फा० इं०।

अरिया पोरियम् ariyá poriyam ... ऐण्टिडेस्मा बुनियास (Antidesma bu-nias, Spreng.), हिस्सेलो बु० (... bunias, Linn., Roxb.)-ले०।

उत्पत्ति-स्थान—भारत के समस्त ... प्रधान प्रदेश।

उपयोग—अम्ल एवं स्वेदक। पत्र ... प्रयुक्त होते हैं। नए रहने पर इसे उपदंश ... औपदंशिक शरीर विकार में उपयोग ... (लिण्डले)

अरिशि arishi–ता० चावल। (Rice) ... फा० इं०।

अरिशिना arishiná–कना० हरिद्रा, ... (Curcuma Longa, Linn. (... of–) स० फा० इं०।

अरिशि शाडायाम arishi shádáyam ... चावल की दारू, चावल की शराब। (L... of rice.) स० फा० इं०।

arishtah-सं० पुं० } (१) रीठा
arishta-हिं० संज्ञा पुं० }
का पेड़, फेनिल, निर्मली, रीठा वृक्ष, रीठा
-हिं०। रिटे गाछ-बं०। Soapberry
ant (Sapindus trifoliatus.)
निं० व० ६। मे०। गुण-रीठा पाक में
(चरपरा), तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, लेखन,
तक, स्निग्ध तथा त्रिदोषघ्न है और गृह-
, दाह तथा शूलनाशक है। वै० निघ०।
) रसोन, लसुन, लहसुन। Garlic
llium Sativum.) प० मु०।
निं० व० २३। वा० सू० १ अ०। (३)
वृक्ष, नीम। The neemb tree
elia azad-dirachta.)। रा० निं०
२३। प० मु०। वा० सू० १५ अ०।
यादि। "गुडूची पद्मकारिष्ट—।" च०
पित्तश्लेष्म ज्व० अमृताष्टक—। "गुडूची-
यारिष्ट—।" सु० सू० ४३ अ० संशोधन।
) काक, कौआ। (A crow.) हारा०।
) कङ्क पक्षी, मांस भक्षी पक्षी, गिद्ध। (A
lture or heron (Ardea lorra
d putea.) (६) सुरा विशेष। औषध
जल में क्वथित करके पुनः उसमें मीठा आदि
संधान करने से सिद्ध किए हुए मद्य की
ष्ट संज्ञा है। कहा भी है—

अरिष्टः क्वाथ सिद्धः स्यात्।
(प० मु०)

स मद्य क्वथितौषधैररिष्टः। (मा० टी०)

द्रिः।

क्वाथ सिद्धो वारिष्टः। शार्ङ्ग०।

इक्षुविकार सहिताभया-चित्रक-दन्ती-
लक्यादि-भूरि भेषज क्वाथादि संस्कार-
तरिष्टोऽभिधीयते। राज०।

पक्वौषधाम्बुसिद्ध यत् मद्यं तत्स्यादृ-
रिष्टकम्। भा० पू० मद्य० व०।

विविध प्रकार की औषधियों को भली प्रकार
ा या मद्य में डुबो कर सप्ताह बाद रस को
परिस्रावितकर उसे वस्त्रसे छानले। इसको भिषक्
गण अरिष्ट नाम से अभिहित करते हैं। यथा—

"आप्लाव्य सुरया सम्यक् द्रव्याणि
विविधानि च। सप्ताहान्ते परिस्राव्य रसं
वस्त्रेण गालयेत्। एषोऽरिष्टोऽभिधानेन
भिषग्भिः परिकीर्तितः।" (अत्रि०)

नोट—इसी विधान से एलोपैथी चिकित्सा
में वर्णित सम्पूर्ण टिंक्चर प्रस्तुत किए जाते हैं।
अस्तु, आसवारिष्ट का टिंकचर के पर्याय रूप से
प्रयोग करना यथार्थ है।

अरिष्ट निर्माण-विधि-(प्राचीन) यह साधा-
रणतः मिट्टी के पात्र में ही प्रस्तुत किया जाता है,
यद्यपि किसी किसी स्थान पर स्वर्ण पात्र में भी
सधान करने का नियम है। जिस पात्र में अरिष्ट
(आसव) तैयार करना हो, प्रथम उस पात्र की
भीतरी दीवारों में अच्छी तरह घी लगा देना
चाहिए। और साथ ही धव पुष्प तथा लोध्र के
कल्क का लेप करके सुखा लेना चाहिए। एवं
उपयुक्त विधिसे पात्र तैयार करके उसमें क्वाथ
या कच्चा जल में मिश्रित गुड़, मधु और औष-
धों का चूर्ण, आदि डालकर उसके मुख को
शरावे से अच्छी तरह बन्द करके उसके
ऊपर कपड़मिट्टी कर देनी चाहिए। जिसमें
किसी स्थान से वायु उसके अन्दर न आ सके
अब इस बर्तन को भूमि के अन्दर गड़े में या
किसी अन्य गरम स्थान में १५ दिन या १ महीने
जैसा आज्ञा हो रक्खे रहने देना चाहिए।

इसके बाद अरिष्ट या आसव को निकाल
कर अच्छी तरह छानकर बोतलों में भर
कर डाट लगादें, जिसमें उस बोतल के
अन्दर वायु न जा सके, क्योंकि हवा जाने से शुक्र
बन जाता है। जिस बोतल में रक्खे उसे थोड़ा
खाली रक्खें; क्योंकि मुह तक भर देने से अरिष्ट
जोश खाकर बोतल को तोड़ सकता है। यह
जितना ही पुराना हो उतना ही अच्छा है।
प्रत्येक मद्यों से श्रेष्ठ अरिष्ट ही होता है। अरिष्ट के
नव्य निर्माण-क्रम एवं आसवारिष्ट अर्थात् मद्य
की विस्तृत व्याख्या के लिए देखिए—आसव।

गुण—प्रायः नवीन मद्य गुरु, और वायु कारक होते हैं और पुरान होने पर स्रोतशोधक, दीपन और रुचिवर्द्धक होते हैं।

(च० सू० अ०-२)

जिस द्रव्य से अरिष्ट बनाया जाता है उस द्रव्यका गुण उसमें रहता है। मद्यके सम्पूर्ण गुण इसमें विशेष रूप में रहते हैं। ग्रहणी, पांडु, कुष्ठ, अर्श, सूजन, शोष रोग, उदर रोग, ज्वर, गुल्म, कृमि और तिल्ली इन सब रोगोंको दूर करता है एवं यह कषाय, तिक्त तथा वातकारक है। यथा—

"यथाद्रव्य गुणोऽरिष्टः सर्व मद्य गुणाधिकः। ग्रहणी पांडु कुष्ठार्शः शोष शोफोदर ज्वरान्। हन्ति गुल्म कृमिप्लीहान् कषाय कटुवातलश्च।" वा० सू० ५ अ० मद्य० व०।

अर्श, शोथ, ग्रहणी तथा श्लेष्मरोग नाशक है। यथा— "अर्श शोथ ग्रहणी श्लेष्म हरत्वम्।" राज०।

मात्रा—१ तो० से २ तो पर्यन्त।

सेवन-काल—प्रायः सभी अरिष्टासव भोजन के पश्चात् पिए जाते हैं। परन्तु रोग और रोगी की परिस्थिति के अनुसार समय में फेर फार भी किया जा सकता है।

सेवन-विधि—अरिष्ट या आसव में समान भाग जल मिलाकर सेवन करना उचित है; क्योंकि पानीके साथ सेवन करने से इसका प्रभाव शीघ्र होता है एवं जल रहित सेवन करने से गले और सीने में दाह उत्पन्न होने लगती है।

नोट—जो औषधों के क्वाथ और मधुर वस्तु तथा तरल पदार्थों से सिद्ध किया जाए वह अरिष्ट है और जो अपक्व औषधों और जल के योग से सिद्ध किया जाए वह आसव कहलाता है।

-क्ली० (७) सूतिकागार। सूतिकागृह। सौरी। (Lying-in chamber) रत्ना०। (८) आसव। (९) मरणचिह्न, मृत्यु चिह्न, अशुभचिह्न, अपशकुन (Sign or symptom or prognostication of death.) देखो—अरिष्ट लक्षणम्।

(१०) तीन भाग दधि और एक भाग जल [illegible] प्रस्तुत तक्र, मट्ठा। घोल-बं०। रा० [illegible] व० १५। (११) मरणकारक [illegible] (१२) काढ़ा, क्वाथ (Decoction [illegible] (१३) क्लेश, दुःख, पीड़ा। ([illegible] उपद्रव, आपत्ति।

त्रि०, हिं० वि० (१) अशुभ, [illegible] सर्वत्र मे०। (२) सामान्य मद्य। [illegible] नि० व० १४। (३) शुभ। (४)दृढ़, [illegible]

अरिष्टकः arishtakah-सं० पुं०

अरिष्टक arishtaka-हिं० संज्ञा० पुं० (१) फेनिल वृक्ष, रीठे का पेड़, री[illegible] Soapnut tree (Sapindus tri[illegible]atus.) सि० यो० दाह ज्वर, [illegible] "फेनेनारिष्टकस्य च"। (२) निम्ब [illegible] नीम। The neemb tree (M[illegible]azad-dirachta.)। उक्त स्थान में [illegible] के कोमल पल्लव व्यवहार में आते [illegible] च० द० पित्त० ज्व० शिरोष [illegible] करञ्ज। रीठा। निर्मली। म६० व० २। [illegible] सरल द्रुम, सरल, धूप सरल। (Pinus [illegible]gifolia.) रत्ना०। –क्ली० (१) [illegible] सुरा। Wine (Spirituous liq[illegible] भ०।

अरिष्टत्रयम् arishta-trayam-सं० [illegible] मरण के अरिष्ट (अशुभ) लक्षण [illegible] तीन हैं यथा—(१) स्वस्थारिष्ट, (२) [illegible] और (३) क्षीरारिष्ट। इनमें से [illegible] पाँच भेद हैं, यथा—भोजनारिष्ट, [illegible] दर्शनेन्द्रिय आदि अरिष्ट, [illegible] और रसनेन्द्रिय अरिष्ट। अम० [illegible] अ०।

अरिष्ट फलः arishta-phalah-सं० [illegible] कटुनिम्ब वृक्ष। रा० नि० व० ६।

अरिष्टफलम् arishta-phalam-सं० [illegible] फेनिल, रीठा। Soapnut tree ([illegible]ndus emarginatus. Vahl.)

अरिष्टलक्षणम् arishta-laksh[illegible]

ज्ञो०, (Prognostication of death) मृत्युकारक चिह्न, मृत्युलक्षण, जिस लक्षण (चिह्न) से रोगी की मृत्यु जानी जाए उस चिह्न को अरिष्ट कहते हैं। भा०।

अरिष्टा arishṭá -सं० स्त्री० } (१) कटुकी,
 -हिं० संज्ञा स्त्री० } कुटकी। (Picrorrhiza kurroa.) रा० नि० व० ६।
ध० नि० सु० ४ अ०। प० मु०। र० मा०। वै० निघ० २ भा०, विषमज्वर० पटोलादि। (२) गंगेरन, गुलशकरी। (Sida alba.) रा० नि० व० ४। (३) मद्य, शराब। Wine (Spirituous liquor.)

अरिष्टादि चूर्ण arishṭádi-chúrna-सं० पुं० नीम के पत्र १० पल, त्रिकुटा ३ प०, त्रिफला ३ प०, सेंधा, सोंचर और साम्भर तीनों १-१ प०, दोनों खार २ प०, अजवाइन २ प०। इनका चूर्ण करके प्रातःकाल खाने से दैनिक ज्वर, तिजारी, चौथिया आदि का नाश होता है। वै० चि०।

अरिष्टाह्वः arishṭáhvah-सं० पुं० फेनिल, रीठा करञ्ज, रीठा। रीठे-बं०। Soapnut tree (Sapindus trifoliatus.) वै० निघ० २ भा० उन्मा० चि०।

अरिष्टिका arishṭiká-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) फेनिल, रीठा। (Soapnut tree) (२) कुटकी। कटुकी। (Picrorrhiza Kurroa.)

अरिसिना arisiná-कना० हरिद्रा, हलदी। (Curcuma longa.)

अरिसीना बुर्गा arisiná-burgá-कना० कम्बी, गलगल, कपटपलास। गनियार-उड़ि०। गम्दी, गंगल-हिं०। (Cochlospermum gossypium, *D. C.*) इं० मे० सां०।

अरिस्टिडा डिप्रेसा aristida depressa, Retz -ले० शिरन-खलक, शिरन-वेगी, जन्दर-बाबा-पं०। नलि-पुटिकि-ते०। यह पौधा खाद्य कार्य में आता है। मेमो०।

अरिस्टिडा सिटेसिआ aristida setacea, Retz.-ले० शिरन-गडि-ते०। घोड़ग-पुल-ता०। यह भी खाने के काम में आता है। मेमो०।

अरिस्टॉट्ल aristotle-इं० अरस्तू, अरस्तातालीस।

अरिस्टीन aristine-इं० देखो—अरिस्टोलकीन।

अरिस्टोकीन aristochin-इं० यह एक स्वादरहित श्वेत चूर्ण होता है जिसमें ९६.१ प्रतिशत क्वीनीन होता है। यह जल में लय नहीं होता। इसे विषमज्वर (मलेरिया), आंत्रिकज्वर (टाइफॉइड), संक्रामक प्रतिश्याय (इन्फ्लुएञ्जा) तथा थोड़ी मात्रा में कुकरखाँसी (पर्टूस्सिस) में बरतते हैं। मात्रा—१ से १० ग्रेन (½ से ४ रत्ती) विस्तार के लिए देखो—सिन्कोना।

अरिस्टो क्विनाइन aristo-quinine-देखो—सिन्कोना।

अरिस्टोल aristol-इं० यह डाइ थाइमोल आयोडाइड (Di-thymol-Iodide.), पोटाश आयोडाइड (Potassium iodide.) तथा थायमोल (Thymol.) घोल को सम्मिश्रित करने से बनाया जाता है। यह रक्ताभ धूसर वर्ण का चूर्ण है जो जल तथा ग्लीसरीन में अविलेय होता; किन्तु कोलोडीन, ईथर और तैल (Oils) में लयशील होता है।

गुण—यह (ल्युपस एरीमेटोसस), ददु (Tænea.), नारफ़ारसी (एक्ज़ीमा) और विचर्चिका (सोराइसिस) में लाभदायक है। इसका १० प्रतिशत का मलहम (प्रलेप) उपयोग में आता है अथवा इसे व्रण पर छिड़कते या कोलोडीन में मिलाकर लगाते हैं। देखो—आयोडोफ़ॉर्म।

अरिस्टोलोकिएसीई aristolochiaceæ-ले० अरिस्टोलोकिई (Aristolochiæ.) ईश्वरमूल वर्ग।

अरिस्टोलोकिया aristolochia-ले० ज़रावन्द -फ़ा०। ईश्वरमूल-हिं०।

नाम-विवरण—ज़रावन्द वस्तुतः फ़ारसी

नाम है जिसका शाब्दिक अर्थ स्वर्णपात्र (ज़र्फ़े तिला) है। चूँकि उक्त औषध का वर्ण सुनहला होता है इसलिए उसका यह नाम पड़ा।

इसका वर्तमान डॉक्टरी लेटिन नाम अरिस्टोलोकिया वस्तुतः इसका यूनानी (Greeck.) नाम है जिसे तिब्बी ग्रंथों में अरिस्तोलोख़िया लिखा है। अरिस्टोलोकिया या अरिस्तोलोख़िया दो यूनानी शब्दों अरिस्टो (लाभप्रद)- तथा लोकिया (प्रसव पश्चात्कालीन रक्तस्राव, निफ़ास) का यौगिक है जिसका अर्थ "निफ़ास अर्थात् प्रसव पश्चात्कालीन रक्तस्राव के लिए लाभप्रद" हुआ। किन्तु इब्नबैतार ने अरिस्तो (अरिस्टो) का अर्थ औषध तथा लोख़िया (लोकिया) का अर्थ नफ़साऽ अर्थात् निफ़ासवाली औरत (वह स्त्री जिसे प्रसव के बाद रक्तस्राव जारी हो) किया है और इससे उनका अभिप्राय उस औषध से है जो उक्त प्रसूता के लिए लाभप्रद हो।

नोट—विस्तार के लिए देखो—ज़रावन्द।

अरिस्टोलोकिया इण्डिका aristolochia indica, Linn.–ले० ज़रावन्द हिन्दी –अ०, फ़ा०। रुद्रजटा, ईश्वरमूल, सुनन्दा, अर्कमूलहरि, ज्वारि-सं०। ईशरमूल, ओरवेल –हिं०। ईसरमूल–प०। सारसन–धन्व०, गु०। पेरु-मरियड्डु, इश्वर-मुलिवेर–ता०। सफ़र्स, सापस-गोआ।– मेमो०। इश्वरी, सापसन्द–मह०। इश्वरी–गु०। इश्वर-बेरु, गोविला–ते०। इश्वरी वेरु, तजिन-वेरु कना०। करल-वेकम, ईश्वर-मुरि–मल०।–मेमो०, फ़ा० इं० ३ भा०। इं० मे० प्लां०। देखो—रुद्रजटा।

अरिस्टोलोकिया ब्रेक्टिएटा aristolochia bracteata, Retz.–ले० कीड़ामार, गंधानी –हिं०। कीड़ामार–गु०। गन्धान-पवत, गंधानी –मह०। पत्र-बन्ध–फ़ा०। धूम्रपत्रा–सं०। देखो—धूम्रपत्रा। फ़ा० इं० ३ भा०, मेमो०। इं० मे० मे०, इं० मे० प्लां०।

अरिस्टोलोकिया रेटिक्युलेटा aristolochia reticulata–ले०। ज़रावन्द अमरीकी, ज़रावन्द दराज़ अहमर। (Aristolochia Serpentaria, L.) मेमो०, फ़ा० इं० ३ भा०। डॉ०।

अरिस्टोलोकिया रोटण्डा aristolochia rotunda, Linn.–ले० ज़रावन्द मु०–अ०। ज़रावन्द गिर्द–फ़ा०। ज़रावन्द। मेमो०। फ़ा० इं० ३ भा०।

अरिस्टोलोकिया लॉङ्गा aristolochia longa, Linn.–ले० ज़रावन्द तवील, लूंगोया–अ०। ज़रावन्द दराज़ फ़ा०। ज़रावन्द। मेमो०, फ़ा० इं० ३ भा०।

अरिस्टोलोकिया सर्पेण्टेरिया aristolochia serpentaria, L.–ले० ज़रावन्द अमरीकी, ज़रावन्द दराज़ मार, ज़रावन्द मुदहरज–अ०। सर्पेण्टेरी (Serpentaria) म० अ० डॉ०। मेमो०।

अरिस्टोलोकिया सिटेसिया aristolochia setacea, Retz.–ले० सिप्पसाकि–तो० ओडपर–ता०। इसका पौधा मेमो०।

अरिस्टोलोकिया सैकेटा aristolochia saccata, Wall.–ले० मतिया, चीना–हिं० (Pouched birthwort.) इं० गा०।

अरिष्टोलोकीन aristolochine–इं०।

अरिहन arihana–हिं० संज्ञा पुं० [सं० रन्धन] रेहन। अरहन।

अरी ari–जय० (१) आलुकी, अर्ई, घुइयाँ species of Arum (Arum colocasia) –सं० स्त्री० (२) खस, उशीर (Andropogon muricatus.)

अरीकह arikah,

अरीकतुल् जुरद arikatul-jurad अरबी का अंगूर, टिड्डी का मांस ... Granulation

अरीकह aarikah–अ० आदत, प्रकृति, स्वभाव नेचर (Nature.)–इं०।

ई् äarikah-अ० कोहान शुतुर।

...साश्र äariqasáa } -अ० हिन्द-
...सानह् äariqasánah
...डी, विषखपरा।

...लूसिया ariqálúsiyá-यू० माऊ। Tamarix gallica, Linn.)

...त्यह् äariqitaäah-अ० एक जान-...है।

äariza-अ० मृग शिशु, बकरीका बच्चा। A kid.)

arizá-यू० बूटीका मूल, जड़। (Root.)

...यम -इं० कुमंथनह् एक ...है जो कांटों से युक्त होती तथा भूमिपर ...ती है।

arithá-हिं० संज्ञा पु० [सं० अरिष्ट, ० अरिट्ठ] रीठा, अरिष्ट फल। Soapnut ...ee (Sapindus trifoliatus)

ह् äaritah-अ० • वृश्चिक, बिच्छू। A scorpion.)

स aritasa-यू० चूर्ण, चूना। (Calx.)

arida-निर्गुण्डा, सेंभालू, मेउडी। (Vitex ...egundo.)

...ल aridál-सिं०, कना०, कॉ० } हरिताल।
...रम aridáram-ता०
...piment (Trisulphate of ...rsenic.)

äarina-अ० गोश्त, मांस। (Flesh, ...eat.)

...स arífisa-यू० एक प्रकार का तैल है ...जल के समान कूओं से निकाला जाता है।

äarira-कन्तरियून। See-qantúri-...úna.

äarirá-(१) नानूख़ाह, अजवाइन। (२) ...ह्।

arisa-फ़ा० } लोबान, कलङ्गूरा, कम-
...ह् arisah-अ०
...म-फ़ा० (Styrax Benzoin, dryander) देखो-लोबान। फा० इं० ३ भा०।

अरीसन arisan-फ़ा० हलदी, हरिद्रा। (Curcuma longa.)

अरीसारम arisárum-इं० लांफ़ुल् जुम्द, एक बूटी है जो एक बालिश्त के बराबर एवं विभिन्न वर्ण युक्त होती है।

अरीसीन aricine-इं० सिनकोना सत्व विशेष। फा० इं० २ भा०।

अरीसीमा टार्टोसम् arisœma tortuosum, Schott. }
अरीसीमा कर्वेटम् arisœma curvatum, Kunht, Roxb. }

--ले० बीरबङ्गा-नैपा०। गुरिन, डोर, किर्किंयाल् किरकल, जंगुश पं०।

उद्भव-स्थान—पंजाब तथा हिमालय।

उपयोग—कहते हैं कि यह विषाक्त गुणमय औषधि है और कुलू में भेड़ों के उदरशूल होने पर इसके बीज लवण के साथ मिलाकर उपयोग में आते हैं। वर्षाऋतु में मवेशियों को कीड़ों से सुरक्षित रखने के लिए इसकी जड़ काम में लाई जाती है। इसके उपयोग से वे मृतप्राय हो जाते हैं। (स्टूवर्ट) इं० मे० प्लां०।

अरीसीमा ट्रिफॉलियम् arisœma trifolium-ले० शलजम। (Turnip)

अरीसीमा लेस्कोनेन्थिस arisœma leschenanthes, Blume.-ले० यातकेदारम सिं०।

उत्पत्ति-स्थान—हिमालय, खसिया की पहाड़ी, नीलगिरि और लंका।

उपयोग—सिंगाली लोग इसकी जड़ औषध तुल्य व्यवहार में लाते हैं। (ड्वेंड्रीज) इं० मे० प्लां०।

अरीसीमा स्पेसिओसम arisœma speciosum, Mart. }
एरम स्पेसिओसम arum speciosum. Wall. }

-ले० साँप की सुम्बी, किरिकी कुकरी, किरलु -पं०। उत्पत्ति-स्थान-शीतोष्ण हिमालय, कुमायूँ से सिक्किम तथा भूटान पर्यन्त।

उपयोग—हजारा में इसे विष ख़याल

किया जाता है। चम्पा में सर्पदंश स्थान पर इसे पीसकर लगाते हैं। कूलू में इसकी जड़ भेड़ों को उदरशूल होनेपर व्यवहार में आती है। जब बच्चे इसे खाते हैं तो उनके मुखपर इसका हानिकारक प्रभाव होता है। (स्टूवर्ट) इं० मे० प्लां०।

अरीसुस्सीन âarisussina—अ० विश्नीन। नीलोफ़र के सदृश एक बूटी है।

अरू arú-म०, सफ़ताल्, आड़ू।

अरुंतुद aruntuda-हिं० वि० [सं०] (१) मर्मस्थान को तोड़ने वाला। मर्मस्पृक्। (२) दुःखदायी।—संज्ञा पुं० शत्रु, वैरी।

अरुः,-स् aruh, s-सं० पुं० (१) आरग्वध वृक्ष, अमलतास। सोन्दाल गाछ-बं०। (Cassia fistula.)। (२) रक्त खदिर (Red Catechu.)। (३) व्रण, घाव। अथर्व०। (४) मर्म। (५) संधिस्थान। उ०।

अरुआ aruá-मेवा० महानीम, महानिम्ब। (Ailanthus Excelsa.)

अरुआर aruára-हिं० पुं० कचनार के सदृश एक वृक्ष है। पत्ते कचनार के समान किन्तु उससे बड़े सम्मुखवर्ती डंठलयुक्त होते हैं (डंठल लगभग १ अंगुल दीर्घ); पुष्प डंठलयुक्त, डंठल १–१॥ अंगुल लम्बे होते हैं। पुष्प-वाह्य-कोष (कुण्ड), सूक्ष्म, दंष्ट्राकार, बीजकोषोर्ध्व, हरिताभ पीतवर्ण के होते हैं। पुष्पाभ्यन्तर-कोष (दल) पञ्चकंगूरेयुक्त तथा पीताभ होता है। नरतन्तु ५, जिनमें २ बड़े तथा ३ छोटे होते हैं। पराग-कोष इस प्रकार का होता है। गर्भकेशर पुंकेशर से बड़ा तथा द्वयोष्ठीय होता है। फाल्गुन मास में इसमें पुष्प आते हैं और उस समय यह पुष्पों से आच्छादित होने के कारण अत्यन्त मनोहर प्रतीत होता है। इसकी छाल किञ्चित् कड़ुई तथा पुष्प तिक्त व मधुर होता है। लकड़ी भीतर से धूसर वर्ण की शीशमके समान अत्यन्त चिकनी होती है। इसके वृक्ष अधिकतर कंकरीली पथरीली भूमि पर उत्पन्न होते हैं।

उत्पत्ति-स्थान—संयुक्त प्रांत।

अरुई arui-हिं० संज्ञा स्त्री० आलुकी, अरवी, घुइयाँ। (Arum colocasia.)

अरुकामलक arukámalak-ता०
आम्रहरिद्रा। (Curcuma amad
मे० मे०।

अरुक् aruk-सं० त्रि० सुस्थ, नीरोग।

अरुगम-पट्ट arugam-patta-ना०
अरुगम-पुल्लु arugam-pullu-ता०
दूर्वा, दूब। (Cynodon dactylo
मेमो०।

अरुगु árugu-ते० (१) कोदों, कोद्रव। (
spalum-scrobiculatum)।
—ता० (२) सुफेद दूब।

अरुग्णः arugnah-सं० त्रि०
अरुग्ण arugna-हिं० वि०
सुस्थ, निरोग, रोग रहित। (Healthy

अरुङ्गमेषः arungni-meshah-सं०
नेत्र रोग विशेष। (An eye-disease

अरुच arucha-हिं० स्त्री० गर्भवती
अरुचि।

अरुचिः aruchih-सं० स्त्री०
अरुचि aruchi-हिं० संज्ञा स्त्री०
अग्निमांद्य रोग। अरोचक रोग। भूख होने
भोजन करने का सामर्थ्य न होना, भोजन
अनिच्छा, वितृष्णा, जी मचलाना। (Ano
xia) भा० म० १ भा० रोचक
देखो—अरोचकः। (२) रुचि का
अनिच्छा। (३) घृणा। नफ़रत।

अरुचिकर aruchikara-हिं० वि० [सं०
जिससे अरुचि हो जाए, जो रुचिकारक
जो भला न लगे।

अरुजः arujah-सं० पुं० (१) आरग्वध
अमलतास। (Cassia fistula)
सोनालु-बं०। रा० नि० व० ६।
स्त्री० (२) कुंकुम, केशर। (Saffron
(३) सिन्दूर। (Redlead, minium)

अरुज aruja-हिं० वि० [सं०] रोग
रहित। (Healthy)

…aruṇah-सं० पुं०
…ruṇa हिं० संज्ञा पुं० } (१) कोकि- …भेद, तालमखाना (Hygrophila …nosa.) । (२) अतिविषा, अतीस …Aconitum heterophyllum.) । …) स्योणाक वृक्ष, सोनापाठा (Oro- …lum Indicum.) प० मु० । …) मजिष्ठा, मंजीठ (Rubia cordi- …a.) । (५) अर्क वृक्ष, मदार, आक । …Calotropis gigantea.) मे० । …) पुन्नागवृक्ष । (Calophyllum …phyllum.) रा० नि० व० १० । …) गुड़ । (Jaggery.) रा० नि० व० …। (८) चित्रक क्षुप, चीता । (Plumbago …ylanica.) मद० व० २ । (९) …पामार्ग, लालचिचिंटा (Achyranthes …brum.) देखो-अपामार्ग । (१०) रक्त …र, लाल कनेर । (Nerium odorum, …aud.) वै० निघ० । (११) एक प्रकार …कुष्ठ रोग, लालकोढ़ । (A kind of …prosy.)

…क्षण—जिसमें लालवर्ण की छोटी छोटी …ने वाली फुन्सियाँ होती हैं तथा चोस, (भेदन की सी पीड़ा) और स्वाप …र्शज्ञता) होता है उसे अरुण कुष्ठ कहते हैं । …वातज होता है अर्थात् वायु से (वायु की …नता से) उत्पन्न होता है । सु० नि० ५ …।

…(१२) सूर्य्य । (The sun),
…(१३) गहरा लालरंग । (Deep red),
…(१४) कुङ्कुम, केशर । (Saffron),
…(१५) सिन्दूर । Red lead (Plu- …m Oxidum Rubrum) –त्रि०,
…वि० पुं० [स्त्री० अरुणा] (Red.) …र्ण । लालरंग । लाल । रक्त ।

…aruṇam-सं० क्लो० (१) अहिफेन, …ीम । (Opium.) वै० निघ० । (२) …त्पल, लाल कमल (Nymphæa nelumbo, the red var.) । (३) रक्तत्रिवृता, लाल निसोथ । (Ipomœa turpethum, R. Br., the red var.) वा० टी० हेमाद्रि । (४) कुंकुम, केशर । Saffron (Crocus sativus.) रा० नि० व० १२ । (५) सिन्दूर (Red oxide of lead.) रा० नि० व० १२ । (६) माणिक्यभेद । (A kind of ruby.) वं० निघ० २ भा० । उपरोग, त्रैलोक्य चिन्तामणिरस ।

अरुणकपिशः aruṇa-kapishah-सं० पुं० द्राक्षाभेद, किसमिस विशेष । फकीगे द्राक्ष –मह० । वै० निघ० । (A kind of dry-grape.)

अरुणकम् aruṇakam-सं० क्लो० प्लाटिनम समूह का कठोर श्वेत धातुतत्व विशेष । रोडियम् (Rhodium.)-ले० । नोट—रहोडियम् युनानी शब्द रोडोन (Rhodon.) अर्थात् गुलाब से व्युत्पन्न है । चूंकि इस धातु के लवणों के घोल गुलाबी रंग के होते हैं, अस्तु इसे उक्त नाम से अभिधानित किया गया । दे० रहोडियम् ।

अरुणकमलम् aruṇa-kamalam—सं० क्लो०
अरुणकमल aruṇa kamal–हिं० पुं० } कोकनद, लाल कमल । रक्त कम्बल–बं० । (Nelumbium speciosum.) रा० नि० व० १० ।

अरुणचूड़ aruṇachúra-हिं० संज्ञा पुं०
अरुण चूड़ः aruṇa-chúrah-सं० पुं० } कुक्कुट । अरुण-शिखा । ताम्रचूड़ पक्षी । कुकुड़ा । मुर्गा । (Cock.) वै० निघ० ।

अरुण तण्डुलीयम् aruṇa-tanduliyam-सं० क्लो० रक्ततण्डुलीय शाक, लाल चौलाई । राङ्गा नटे-बं० । Amarantus (Thus) Spinosus (The red var. or-) च० द० ।

अरुणनागः aruṇa-nágah-सं० पुं० मुद्रा-

शङ्ख, पंतिका। अत्रि०। See-mudrá-shankhah.

अरुणनेत्रः aruna-netrah-सं० पुं० (१) पारावत, कपोत, कबूतर। (Pigeon.) पायरा -बं०। (२) कोकिल, कोइ(य)ल। The black or Indian cuckoo (Cuculus) वै० निघ०।

अरुणपुष्पी arunapushpí-सं० स्त्री० बन्धुजीवक वृक्ष, बन्धूक, दुपहरिया, गेजुलिया। बान्धुलि फुल-बं०। रक्तदुपारी-म०। (Pentapetes phœnicea, *Wil.*) वै० निघ०।

अरुणमक्षिका aruna-makshiká-सं० स्त्री० रक्तमक्षिका। लाल माछि-बं०। वै० निघ०। See-Rakta-makshiká.

अरुणलोचनः aruna-lochanah-सं० पुं० (१) पारावत, कपोत, कबूतर। (Pigeon.) रा० नि० व० १६। (२) कोकिल, कोइ(य)ल। The black or Indian cuckoo (Cuculus) वै० निघ०। (३) लालनेत्र। (Red eye.)

अरुणशिखा aruna-shikhá-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कुक्कुट, मुर्गा। (Cock)

अरुण सर्पः aruna-sarpah-सं० पुं० तक्षक सर्प, सर्प विशेष। (A snake of a middle size and of a red colour.) वै० निघ०। See-Takshak.

अरुणसारः aruna-sárah-सं० पुं० हिङ्गुल, सिंगरफ। Cinnabar (Hydrargyri-Bisulphuretum.) वै० निघ०।

अरुणा aruná-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) अतीस, अतिविषा। (Aconitum heterophyllum.) मे०। रा० नि० व० ६। भा०। उन्मा० बाल० ज्व० चि० महाभल्ला० गुड़। "घन, कृष्णारुणाशृङ्गी"। भैष० प्रदरारि रस। कुष्ठ० चि०। (२) मजिष्ठा, मजीठ। (Rubia cordifolia.) मे०। रा० नि० व० ६। भा०-म० ...

ज्व० चि० लाक्षादितैल। "लाक्षा। स्वरुणा पद्मका। (३) मधुरहरिद्रा, कमलनाल। (Root stock of nymphœa lotus.) प० मु०। (४) निशो(सो)थ। (Ipomoea turpethum *R. Br.*) मे०। (५) जवा, ओडपुष्प, ... (Hibiscus rosa-sinensis.) च० द०। "अरुणातिविषा श्यामा मञ्जिष्ठा... च"। (६) श्यामालता, कृष्णसारिवा, ... लता। (Ichnocarpus frutescens.)

... (८) गुञ्जालता, घुंघची। (Abrus precatorius) रा० नि० व० ३। ... पुनर्नवा, गदहपुर्ना (Boerhavia diffusa.) (१०) मुण्डी। (Sphæranthus Indicus.) ... (११) ... (१२) लाल रंग की गाय। (१३) ...

अरुणाई arunái-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] ललाई। रक्तता। (Redness)

अरुणात्मिका arunátmiká-सं० स्त्री० रिच, मरचा, लाल मरचा। (Capsicum) ... लङ्का मरिच -बं०। लाक-म०। वै० नि०।

अरुणाभम् arunábham-सं० क्ली० कान्तलौह। See-kántalouha.

अरुणार arunára-हिं० वि० दे०-अरुण।

अरुणार्कः arunárkah-सं० पुं० रक्तार्क, मदार। मन्दार-महा०। मन्दार ... Calotropis gigantea (The ... var. of-) रा० नि० व० १० आक।

अरुणाक्षः arunákshah-सं० पुं० कपोत। (Pigeon.)

अरुणित arunita-हिं० वि० [सं०] ... किया हुआ।

अरुणिमा arunimá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अरुण] ललाई, लालिमा, सुर्खी।

arunī-सं० स्त्री० । सुरसरनी-हिं० ।
-श्र२० । ब्रेनिया रहैमूनॉइडीस (Breynia rhamnoides, Mull-Arg.),
न्थस रहैमूनॉइडीस (Phyllanthus rhamnoides, Willd.)-लें० ।
एरण्ड वा सेहुण्ड वर्ग
(N. O. Euphorbiaceæ).
उत्पत्ति-स्थान—समग्र उष्ण कटिबन्धस्थ वर्ष, पूर्वीय प्रबंध से लेकर ऊपरी आसाम दक्षिण की ओर ट्रावेनकोर पर्यन्त ।
वानस्पतिक-विवरण—क्षुप (या छोटा) नध्याङ्कुर कोणाकार; पत्र-एकान्तर मेरवर्ती); लघु डंठलयुक्त, प्रसरित, चौड़ाकार, बहिः पत्र सबमें बड़े, अग्रः भाग मायल, अखण्ड (किनारा), अर्ध से ... ग्रंथ; नरपुष्प निम्न कक्षों में गुच्छाकार, पुष्प ऊर्ध्व कक्षों में होते हैं, अकेले, हृस्व ... युक्त, नत; फलो मटराकार होती हैं।
गुण तथा उपयोग—गलशुण्डी शोथ में पत्र तमाकू रूपमें (हुक्का पर)पिया जाता है। त्वचा संकोचक है । [डाइमोक]

arunodaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] काल । प्रभात । विहान । उषा काल । ब्राह्म ... तड़का । भोर । यह काल जब पूर्व दिशा में ... हुए सूर्य की लाली दिखाई पड़ती है। ... सूर्योदय से दो मुहूर्त वा चार दंड होता है । अरुणोदय ।

arunopalah-सं० पुं० अरुणवर्ण विशेष, चुनि, पद्मराग, मणि, लाल । (A y.) हें० च० ।

...रिया फेलकेटा arundinaria falcata, Nees.-लें० निगाल, नीगल-हिं० । ... -रिङ्गाल । प्रोन्न-उ० प० सू० । प्रांगनोक ... । इसका तना रस्सी के काम आता है ।

...रिया रेसीमोसा arundinaria racemosa, Munro.-लें० पम्यून-लेप० । ... -नैपा० । इसका तना रस्सी या स्वाद्य में आता है । मेमो० ।

अरुण्डिनेरिया हूकेरियना arundinaria Hookeriana, Munro.-लें० प्रांग, प्राम्रांग-लेप० । सिंघनी-नैपा० । तना तथा बीज खाद्य एवं रस्सी के काम आते हैं । मेमो० ।

अरुण्डिनेसी arundinaceæ—लें० वंश वर्ग ।

अरुण्डोकार्का arundo karka, Roxb.-लें० कार्का, नल-बं० । नरकट, नर, नल, नद्नार -हिं० । नर्रा, बाग-पं० । इसका तना व रीशा रस्सी के काम आती है । मेमो० ।

अरुण्डो बेङ्गालेन्सिस arundo Bengalensis, Linn.-लें० गावनल, नल विशेष । (Bengal reed.) इं० हैं० गा० ।

अरुण्डो बैम्बॉस arundo bambos-लें० वंश बॉम बंस । (Bambusa arundinacea.) इं० मे० मे० ।

अरुता arutá-मल० } तितली, सुदाब । (Euphorbia lathyris,
अरुद arud-सिं० } Linn.)

अरुन aruna-हिं० वि० दे० अरुण ।

अरुनई arunai-हिं० संज्ञा स्त्री० दे०-अरुणाई ।

अरुनचूड़ aruna-chúra-हिं० संज्ञा पुं० दे० अरुणचूड़ ।

अरुनता arunatá-हिं० संज्ञा स्त्री० दे० अरुणता ।

अरुनशिखा aruna-shikhá-हिं० संज्ञा पुं० दे०-अरुणशिखा ।

अरुना aruná हिं० संज्ञा स्त्री० मजिष्ठा, मजीठ । (Rubia cordifolia.)

अरुनाई arunái-हिं० संज्ञा स्त्री० दे०-अरुणाई ।

अरुनाना arunáná-हिं० क्रि० अ० [सं० अरुण] लाल होना । क्रि० स० [सं० अरुण] लाल करना ।

अरुनारा arunárá-हिं० वि० [सं० अरुण+ आरा (प्रत्य०)] लाल रंग का, लाल ।

अरुनी aruní-सं० स्त्री० सुरसरनी, टिकारी-मय० । मेमो० । देखो-अरुणि ।

अनेरल्ली arunelli–ना० हरफा रेवड़ी, लयली।
अरुनोदय arunodaya–हिं० संज्ञा पुं० दे०–अरुणोदय।

अरुन्धती arundhati–सं० स्त्री० जिह्वाग्र। जिह्वा की नोक या नोंक। (The foretongue.) वै० निघ०। दे०–अरुंधती।

अरुंधती arundhati–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अरुन्धती] (१) बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षि मंडलस्थ वशिष्ठ के पास उगता है। सुश्रुत के के अनुसार, जिनकी मृत्यु समीप होती है, वह इस तारे को नहीं देख सकते।
(२) तंत्र के अनुसार जिह्वा।
(३) घाव को पूरने वाली ओषधि, व्रणपूरक औषध, अरुष। अथर्व०। सू० २। २। का० ४।

अरुंषिका arunshiká–सं० स्त्री०,हिं० संज्ञा स्त्री० एक क्षुद्र रोग जिसमें कफ और रक्त के विकार या कृमि के प्रकोप से माथे पर अनेक मुँह वाले फोड़े हो जाते हैं। शिरोव्रण। क्षुद्ररोगान्यतम कपाल रोग भेद। मा० नि०।

अरुवा aruvá–हिं० संज्ञा पुं० [सं० अरु] (१) एक लता जिसके पत्ते पान के पत्ते के सदृश होते हैं। इसकी जड़ में कन्द पड़ता है, और लता की गाँठों से भी एक सूत निकलता है जो चार पाँच अंगुल बढ़कर मोटा होने लगता है और कन्द बनता आता है। इसके कन्द की तरकारी बनती है। यह खाने पर कनकनाहट पैदा करता है। बरई लोग इसे पान के भीटे पर बोते हैं।
संज्ञा पुं० [हिं० रुरुआ] (An owl.) उल्लू, उलूक पक्षी। हिं० श० सा०।

अरुषः arushah–सं० पुं० (१) व्रण, क्षत (Vranah.)। (२) घोटक, अश्व। (Horse.) वै० निघ०। (३) व्रणपूरक औषध, अरुन्धती। अथर्व०। सू० १२। का० ४।

अरुषा,–टा arushá-tá–सं० स्त्री० भूम्यामलकी, भुँई आमला। (Phyllanthus neruri.) रा० नि० व० ५।

अरुषासः arushásah–सं० पुं० रोग। अथ०। सू० ३। ३। का० १।

अरुष्कः arushkah–सं० पुं०
अरुष्क arushka–हिं० संज्ञा पुं० भल्लातक वृक्ष, भिलावाँ। भेला या बिब्बा–म०। (Semecarpus anacardium.) भा० पू० १ भा० । व० ११।

अरुष्करः arushkarah–सं० पुं० भल्लातक वृक्ष, भिलावाँ। (Semecarpus anacardium.) प० मु०। व० ११। भा० पू० १ भा०। (२) अरुंषिका। –त्रि० (१) व्रणजनक। मे० रचतुष्क।

अरुष्करम् arushkaram–सं० क्ली० फल, भिलावाँ (Semecarpus anacardium.) च० द० अर्श चि० कुष्ठचि० पञ्चतिक्त घृत। "समाराष्करम्।" सि०यो० चतुः सम लौह। ४ अ० कुष्ठमव०।

अरुस arusa–हिं० पुं० अडूसा, (Adhatoda vasika.)

अरुसिमन arusiman–यू० ब,ब,लम, ब,जुल–हवह, कसीम–अ०। कदूम–ह मारदरख्त। किरमान। दर्मना। तमीड़। (Iberis, dium iberis, Linn.)–ले०। (Pepper grass, pepperwort)-ई०। (Passerage iberide)-फ्रां०। देखो— फा० इं० १ भा०।

अरुस्राणम् ausránam–सं० क्ली० (१) दोषों को शीघ्र पकाने वाली औषध। (२) फोड़ा। अथर्व०। सू० ३। ४। का० १

अरुहा aruhá–सं० स्त्री०, –हिं० संज्ञा भूधात्री, भुँई आमला, भूम्यामलकी। (Phyllanthus neruri.)

अरूक़ āarúqa–अ० स्वेदक औषध। (Diaphoretic.)

.rúqa-तु० ग़र्दालू। एक फल है जो
! अलीय होता है। खूबानी इसीका भेद है।
स arúqalas-रु० उश्नान, एक घास है
सि कपड़े धोए जाते हैं। See-ushnán.
arúkul-फ़ा० हरिद्रा, हल्दी। (Curma longa, Linn.) स० फा० इं० ।
सब्बाग़ीन arúqussabbághin
सफ़्र āarúqussafra } ० (Healthy) नीरोग, स्वस्थ।
rúza-अ० चावल, धान। (Rice.) इं० मा०।
arúzá-सिरि० मुर्गाबी, जल मुर्गी। Water-hen.)
arúdha-हिं० वि० दे० आरूढ़।
वपाटिका arúdha-avapátiká-सं० ० देखो—"निरुद्धप्रकाश"। सु० सं०।
rúda-हिं०पुं० उर्द,माष। (Phaseolus diatus.)
arúnasa-यू०मटर,कलाय विशेष। Pea isum sativum).
arúniyá-क़बाकद् भेद। यह मेवे मे आहार प्राप्त होता है। वस्तुतः जंगली को कहते हैं।
arúnisa-यू० कनौचा भेद। सु० ।
arúpa-हिं० वि० [सं०] (१) रूप रहित। आकार। (२) कुरूप, कुत्सित रूप, कुश्री। Deformed, ugly.)
arúpál-मह० अशोक वृक्ष। (Saraca dica, Linn.)
āarúbá-सिरि० गर्जगबीन, झाऊ निर्यास, क वृक्ष से मवा हुआ गोंद।
arúmachak-तु० मकड़ी, ऊर्णनाभि। A spider.)
arúsa-हिं० संज्ञा पुं० दे० अडूसा।
āarúsa-अ० (१) एक प्रकार की री वा गुराजनी। (२) दुलहिन, दुलहा A bride; a bridegroom.)।

(३) नीलोफ़र, नीलोत्पल (Nymphæa stelata.)। (४) गंधक पीत (Sulphur.)। (५) शीराज़ निवासी कुसुम्भ (कड़) द्वारा परिस्रुत पीत जल को कहते हैं जो प्रथम निकलता है।

अरूसक āarúsak-अ० (१) खद्योत, जुग्नू (a firefly.)। (२) तम्बम-फ़ा०। (३) उल्लू, उलूक (An owl)। (४) बीरबहूटी, इन्द्रगोप कीट। (Scarletfly).

अरूसक दर पर्दह āarúsak-dar-pardah
अरूसक पसे पर्दह āarúsak-pase.pardah } -फ़ा० -काकनज, राजपुत्रिका। (Physalis alkekenji, *Linn.*) देखो-काकनज।

अरूसा arúsá-हिं० पुं० अड़ूसा। (Adhatoda vasika.)

अरूसा ग़ारस āarúsá-ghárasa-अ० कञ्चुक, साँप की केंचुली।

अरेआलु areáluá-अश्वत्थ, पीपलवृक्ष। (Ficus religiosa.) फॉ० इं० ३ भा०।

अरेक गोल areka-gol-कों० काम रूप-हिं०, बं०। (Ficus benjamina.)

अरेकिक एसिड arachic acid-इं०
अरेकिडिक एसिड arachidic acid, *Allen.* } मूँगफल्यम्ल, मूँगफली का तेजाब। फॉ० इं० १ भा०।

अरेकिस हाइपोजिया arachis hypogæa, *Lam.*-ले० मूँगफली, चिनिया-बदाम, विलायती-मूँग। (Ground nut, Peanut, Monkey nut.) फा० इं० १ भा०

अरेकू arekú-ता० काञ्चनार, कचनाल, घरता। (Bauhinia racemosa, *Lam.*) मेमो०।

अरेकोलीनी हाइड्रोब्रोमास arecolinæ hydrobromas-ले० दे० मूँगफली।

अरेङ्गा सैकेरिफेरा arenga saccharifera, *Labill.*-ले० तीतौक्-बर० । इसका साग,

शर्करा तथा तंतु खाद्य और व्यवहार कार्य में आते हैं। मेमो०।

अरेबिक एसिड arabic acid-इं० अरबिकाम्ल। फा० इं० १ भा०।

अरेबियन कॉस्टस arabian costus-इं० कूठ, कुष्ठ-हिं०। पाचक-बं०। (Saussurea lappa, *Clarke.*)। फा० इं० २ भा०।

अरेबियन जस्मिन arabian jasmine-इं० बेला-हिं०। वार्षिकी-सं०। (Jasminum sambac.)

अरेबियन मिर्ह arabian myrrh-इं० बो(बो)ल-हिं०, बं०, गु०। (Balsamodendron, *Sp.*) फा० इं० १ भा०।

अरेबियन लेवेण्डर arabian lavender-इं० धारू-हिं०। उस्तुखुद्दूस (Lavandula stœchas, *Linn.*)

अरेबियन सेना arabian senna-इं० सनाय जबली, सनाय मक्की। (Cassia angustifolia, *Vahl.*) फा० इं० १ भा०। सनाय विशेष।

अरेबीस चाइनेन्सिस arabis chinensis-ले० एक पौधा विशेष।

अरेयल, areyal-मल० पीपल वृक्ष, अश्वत्थ। (Ficus religiosa.) इं० मे० मे०।

अरेलिया aralia-इं० तापमारी। गिन-सेङ्ग-चो०। फा० इं० २ भा०।

अरेलिया एकीमाइरिका aralia achemirica, *Dcne.*-ले० बनखोर, चुरियल-पं०। मेमो०।

अरेलिया गिल फॉयलिया aralia guilfoylia-ले० तापमारी-हिं०। गिन्-सेङ्ग-चो०। फा० इं० २ भा०।

अरेलिया स्युडोगिन्सिङ्ग aralia pseudoginseng, *Benth.*, Wall., Pl. As., *Rar.*, t., 137-ले० तापमारी-हिं०। गिन्सेंग-चो०। फा० इं० २ भा०।

अरेलिएसाई araliaceæ-ले० तापमारी वर्ग।

अरोकदन्तः aroka-dantah-सं० त्रि० कृष्ण-दन्त, काले दाँत वाला। वै० निघ०।

अरोग aroga-हिं० वि० [सं०] रोग रहित, नीरोग।

अरोगी arogi-हिं० वि० [सं०] जो रोगी न हो। नीरोग। चंगा।

अरोच arocha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अरुचि] रुचि का अभाव। अनिच्छा।

अरोचकः arochakah-सं० पुं०

अरोचक arochaka-हिं० संज्ञा पुं०

जो रुचे नहीं। अरुचिकर। (Disagreeable)। ना मर्गूब-अ०।] एक रोग जिसमें अन्न आदि का स्वाद मुँह में नहीं मिलता। अरुचिरोग।

संस्कृत पर्याय—अरुचिः, अभक्तच्छन्दः (?)। रा०।

डिसलाइक ऑफ फॉर-फूड Dislike for food, डिसगस्ट फॉर फूड Disgust for food, डिसरेलिश Disrelish, avertion-इं०।

निदान

यह दुर्गन्धयुक्त और घिनौनी चीजें खाने, घिनौना रूप देखने तथा त्रिदोष के प्रकोप से होता है। लिखा है—

"वातादिभिः शोक भयाति लोभ (क्रोधैर्मनोघ्नाशनरूपगन्धैः। अरोचकाः स्युः) परिहृष्ट दन्तः कषाय वक्त्रश्च मतोऽनिलेन" (मा० नि०। भा० प्र०)

अर्थ—वात, कफ, शोक, भय (अपराध), लोभ, क्रोध, अप्रिय भोजन तथा बुरे रूप का और दुर्गन्ध इन सब कारणों से मनुष्यों के रोग उत्पन्न होता है। वात की प्रकृति में दन्तहर्ष होता और मुख कसैला रहता है। अरोचक के प्रधान पाँच भेद हैं—

(१) वातज, (२) पित्तज, (३) कफज, (४) सन्निपातज और (५) शोकादि से अर्थात् आगन्तुज।

लक्षण

(१) वातारोचक—मात्र पदार्थ के

स प्रकार दंतदर्प होता है उसी प्रकार दंत ना और मुख का कसैला रहना । ये लक्षण रोचक में होते हैं।

२) पैत्तिकारोचक–जिसकी अरुचि में रोगी मुख तिक्त, खट्टा, बेरस (बेस्वाद) और युक्त होता है।

३) श्लैष्मिकारोचक–कफ की अरुचि से मीठा, पिच्छिल, भारी तथा शीतल) और बंधा सा रहता है जिसमें खाया जाता और मुख कफ से लिपा रहता है। नि०। (दुर्गन्धयुक्त और कफ से स्निग्ध है-भा०)

४) शोकादिजन्य (या आगन्तुज) अरो- — शोक, भय, अत्यंत लोभ और क्रोध, गंधसे उत्पन्न हुई अरुचिमें मुख स्वाभाविक (जैसा का तैसा रहता है।)

५) सान्निपातिकारोचक (त्रिदोषज)- रुचि में रोगी का मुख वातादि जनित तिक्त, और लवण आदि अनेक रस युक्त जान है।

तादि भेद से अरोचक के अन्य लक्षण

तज अरुचि में वक्षःस्थल में शूल के समान होती है। पित्तजन्य अरुचि में शरीर में, चापने की सी पीड़ा, दाह, मोह और होती है। कफज अरुचि में कफस्राव होता त्रिदोषज अरुचि में अनेक प्रकार की पीड़ा मन में विकलता, मोह, जड़ता तथा शोक भयादि जन्य आगन्तुक अरुचि में सब लक्षण है।

भूख होने पर भी जब आहार का सामर्थ्य न व उसको अरुचि कहते हैं। अन्न खाने की होने पर भी जब खाया हुआ अन्न बाहर ल आए अर्थात् मेदा उसको स्वीकार न करे अन्नके श्रवण, स्मरण, दर्शन, गंध एवं स्पर्शन से घृणा होजाए उसे भक्तद्वेष कहते हैं। क तथा सुश्रुत के मत में इन तीनों प्रकार के रोगों का समावेश अरोचक शब्द के अन्तर्गत होता है, यथा—

प्रक्षिप्तन्तु मुखे चान्नं यत्र नास्वादते नरः।
अरोचकः स विज्ञेयो भक्तद्वेषमतः शृणु ॥
चिन्तयित्वा तु मनसा दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा ऽपि भोजनम्।
द्वेषमायाति यो जन्तुर्भक्तद्वेषः स उच्यते ॥
कुपितस्य भयार्त्तस्य तथा भक्त विरोधिनः।
यत्र नान्ने भवेच्छ्रद्धा स भक्ताच्छन्द उच्यते ॥
॥ वृद्ध भोज॥

अर्थ—मनुष्य को जब मुख में डाले हुए अर्थात् खाए हुए अन्न का स्वाद नहीं मिलता, वह मीठा नहीं लगता, तब उसको अरोचक जानना चाहिए। अब भक्तद्वेष के सम्बन्ध में कहते हैं; सुनो—भोजन के मनमें चिन्तन करने से, देखने तथा छूने से, जिस मनुष्य को घृणा हो जाती है उसको "भक्तद्वेष" कहते हैं। क्रोधित भय से पीड़ित तथा जिसको अन्न से द्वेष हो वह और जिसकी अन्न से श्रद्धा न हो उन्हें 'भक्तच्छंद' कहते हैं।

चिकित्सा (सामान्य)

भोजन से पहिले लवण और अदरक मिलाकर भक्षण करना सदा पथ्य है। यह रुचिकारक, अग्नि-दीपक तथा जिह्वा एवं कंठ की शुद्धि करता है। यथा—

भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रक भक्षणम्।
रोचनं दीपनं वह्नेर्जिह्वा कण्ठ विशोधनम् ॥
॥ भा० म० खं० ॥

अथवा अदरक के रस को मधु के साथ मिला कर योजित करें। यह अरुचि, श्वास, कास, प्रतिश्याय और कफ नाशक है। यथा—

शृंगवेर रसं वापि मधुना सह योजयेत्।
अरुचि श्वासकासघ्नं प्रतिश्याय कफापहम् ॥
॥ भा० ॥

अथवा पकी इमली और श्वेत शर्करा को शीतल जल में मल कर कपड़े से छान ले, फिर उसमें इलायची, लवंग, कपूर और मरिच के बारीक चूर्ण को बुरक कर पानक प्रस्तुत करें। इसके मुख में धारण करने से यह अरुचि का नाश करता और पित्त को प्रशमित करता है।

दोषानुसार चिकित्सा

वातज अरोचक में मटर, पीपल, वायविडंग द्राक्षा, सेंधानमक और सोंठ इनके चूर्ण के साथ प्रसन्ना नाम वाली मदिरा का पान करें अथवा इलायची भार्गी, जवाखार, हींग डालकर घृत के साथ पान करें। अथवा वच का क्वाथ पिलाकर वमन कराएँ।

पैत्तिक अरोचक में गुड़ का पानी मिलाकर वमन कराएँ अथवा खांड, घृत, सेंधानमक और मधु मिलाकर चाटें।

कफज अरोचक में नीम का क्वाथ मिलाकर वमन कराएँ। इसके अतिरिक्त अजवाइन और अमलतास का काढ़ा पिलाएँ अथवा मधु के साथ तीक्ष्ण अरिष्ट और मधु के साथ माध्वीक नामक मद्य पिलाएँ और उपर्युक्त मटर आदि के चूर्ण को गरम जल के साथ सेवन कराएँ अथवा निम्न चूर्ण का प्रयोग करें।

इलायची	१ भाग
दालचीनी	२ भाग
नागकेशर	३ भाग
चव्य	४ भाग
पीपल	५ भाग
सोंठ	६ भाग

निर्माण-विधि—इन सब का चूर्ण कर सबके बराबर शर्करा मिलाकर सेवन करें।

गुण—इससे मुखमें थूक भरना, अरुचि, हृच्छूल, पार्श्ववेदना, खाँसी, श्वास, और कंठ के रोग नष्ट होते हैं।

(२) अजवाइन, इमली, अम्लवेत, सोंठ, अनार और बेर इनको १-१ तो० लेकर चूर्ण कर इसमें ४ पल मिश्री मिलाएँ। धनियाँ, संचल-नमक, कालाजीरा और दालचीनी प्रत्येक १-१ तो०, पीपल सौ और काली मरिच दो सौ, इन सब का चूर्ण उक्त चूर्ण में मिलाएँ।

उपयोग—अत्यंत रुचिकर, ग्राही, हृदय को हितकारी होता है तथा विबंध खाँसी और हृदय तथा पसली का दर्द, प्लीहा, अर्श और ग्रहणी रोग को नष्ट करता है। (वा० चि० अ० ५)

अरोचक रोग में प्रयुक्त होने वाली अमिश्रित औषधें

अनार, इमली, तालीसपत्र, आमला, (कैथ), तक्र, कमल फूल; (Gent kurroo; Royle.), कोशिया (Qu excelsa) और मोडियम के लवण तथ

मिश्रित औषधें

यमा(वा)नी षा(खा)ड(एड)व, अम्लीकापान (तिन्तिडिपानक), रसाला, मातुलुङ्गावलेह, सुधानिधिरस, सु दाडिमादिचूर्ण और लवंगादिचूर्ण, (भीमसेनकृत), द्राक्षासव, कपित्था पिप्पल्यरिष्ट, वडवानल चूर्ण और ताल चूर्ण।

अरोचक में पथ्यापथ्य

पथ्य—वातजारोचक में वस्ति, पित्त (जुलाब) तथा कफज अरोचक में वमन दोषों से उत्पन्न अर्थात् सान्निपातिक अ सब कामों की सिद्धि के लिए हर्षण क्रिय हित हैं। भा०।

यथानुसार वस्ति, विरेचन, वमन, तथा कवल धारण और तिक्त या कषैले दातुन से दंतघर्षण करना एवं भाँति भाँ पान का सेवन हितकारक है। गोधूम (मूँग, लाल शालि व साठी का चावल, बकरा तथा खरगोश का मांस, बैंग, अपा शालिका, इल्लिश (हीलसा), प्रोष्ठी (खलेश, कवयी (सुरभा) और रोहित आदि का मांस, कुष्मांड, नाड़ी शाक, नवीन शाक। वार्ताकु (भंटा), शोभाञ्जन, (मोचा (कदली), अनार, भव्य (कमरख पटोल, रुचक (बीजपूर), घृत, दुग्ध (ह्रीवेर), ताल (तालीशपत्र), रसोन (सुन), सूरण, द्राक्षा, रसाल (आम), (लवंग), निम्ब, काँजी, मद्य, चिरचिरा तक्र, आर्द्रक, शीतलचीनी, मधु, (चिरौंजी), तिन्दुक, विकङ्कत, कपित्थ ताल, अस्थिमज्जा, कपूर, मिश्री, हरीतकी

मरिच, रामठम् (हींग), मधुर, अम्ल, तिक्त पदार्थ, देहमार्जनी अरुचि रोगीके लिए हितकारक अर्थात् पथ्य हैं। अपथ्य-उद्गार (डकार), क्षुधा, नेत्राम्बु तथा का रोकना, अहृद्य अन्न सेवन, रक्तमोक्षण, लोभ, भय, दुर्गन्ध रूप का सेवन अरुचि के लिए अपथ्य हैं।

...ariodis-अरड्ड विकरम्मी-यं०। बांता, -भासा०।

...arohana-हिं० संज्ञा पुं० दे०— ...हण।

...arohana-हिं० क्रि० अ० [सं० ...ण] चढ़ना, सवार होना।

...arohi-हिं० वि० [सं० आरोही] सवार वाला।

संज्ञा पुं० [सं० आरोही] आरोही, ...।

...aranghushah-सं० पुं० तुम्बा ...ही तुम्बी)। अथर्व० । सू० ४।४। १०।

...rkah-सं० पुं०
...aka हिं० संज्ञा पुं० } (१) आक, ...द, मन्द(द)ार-हिं०। आकन्द गाछ-बं०। -म्हइ०। अक्के-फ़ा०। जिल्लेड्डु-चेट्टु-ते०। Calotropis gigantea, syn. ...clepias gigantea.) रा० नि० व० ...। भा० पू० १ भा०। मद० व० १। (२) ..., ताम्र, तांबा। Copper (Cuprum.) ... कल्किकं०। त्रैलोक्यडम्बर रस। वै० निघ० ... दया० चि० चिन्तामणि रस। (३) स्फ ..., फिटकिरी। Alum (Alumen.) ... कल्कके०। (४) अरुणार्क, लालमन्दार। Calotropis gigantea, the red ...ar. of.) प० मु०। भा० पू० १ भा०। ...) आदित्य पत्र पुष्प, आदित्यभक्ता, हुलहुल। Cleome viscosa, Linn.) । रा० नि० ...।४। "अर्को रक्तपुष्पः प्रसिद्धः"। सु० सू० ...) म० अर्कादिव० । ३६ अ० शिरो० ...

चि०। (६) यन्त्र द्वारा परिस्रुत किया हुआ द्रव्य सारांश।

देखो—अर्क़ या अरक़। आरक-यं०। (Aqua)। (७) सूर्य्य (The sun)। (८) किसी चीज का निचोड़ा हुआ रस। रॉग स्वरस। Juice (Succus) देखो-अरक़।

वि० [सं०] पूजनीय।

अर्क़ arqa
सह्र sahra } -अ० अनिद्रा, निद्रानाश, नींद न आने का रोग-हिं०। पर्विजिलियम (Pervigilium), इन्सोम्निया (Insomnia) -इं०। देखो-सह्र।

अर्क aark-अ० आर्तवमती, ऋतुमती होना, स्त्री का मासिकधर्म होना, ऋतु स्नान करना। (Menstruation)

अर्क़ aarq-नज्द० (१) शुष्क वा अर्धपक्व छुहारा (Dried or half matured date)। -अ० (२) भपका (वारुणीयन्त्र) द्वारा परिस्रुत वारि। निर्मल परिस्रुत वारि जो औषधों से स्रवण क्रिया द्वारा प्राप्त होता है। वह पानी जो बीज, मूल, पुष्प और पत्र आदि से विशेष विधि द्वारा प्राप्त किया जाता है। अर्कः-सं०। अर्क -हिं०। डिस्टिल्ड वाटर Distilled water.-इं०। एका डिस्टिलेटा Aqua distillata.-लै०। अरक-अ०।

नोट—अर्क खींचने में जिस क्रिया का अवलम्बन किया जाता है उसको स्रवण (चुआना) विधि कहते हैं। इसी विधान द्वारा शुद्धासव एवं अत्तर भी प्राप्त किए जाते हैं। और जिस यन्त्र द्वारा उक्त क्रिया सम्पन्न होती है उसे नाडीयंत्र वा वारुणी निर्माण में प्रयुक्त होने के कारण वारुणीयंत्र कहते हैं। पूर्ण परिचय हेतु क्रम में उन शब्दों के सम्मुख अवलोकन करें।

अर्क खींचने का संक्षेप इतिहास—

आर्यों के उन्नति काल में सन्धान विधि द्वारा फलों और कतिपय वनस्पतियों के आसव प्रस्तुत किए जाते थे। परन्तु, क्रमशः बिना सन्धानके ही वारुणीयंत्र द्वारा बीज, पत्र एवं काष्ठ का प्रभाव

जल में परिणत होने लगा। आर्यों का यह ज्ञान अत्यन्त प्राचीन है। अस्तु, इस विषय में कईएक स्वतन्त्र ग्रंथ भी आज हमें उपलब्ध होते हैं।

इसका बड़ा रसम ईरानी हकीमों और सबसे अधिक पश्चात् कालीन वैद्यों तथा भारतीय हकीमों में पाया जाता है।

हेतु (१) औषधियों के सूक्ष्म प्रभावकारी अंश का पृथक् करना। (२) औषधियों के बड़े परिमाण के प्रभाव को दोहरा तिबारा स्रवण करने से संक्षेप मात्रा में लाना और (३) उपयोग की सुविधा के लिए। ये ही कारण अर्क स्रवण करने के मूलाधार कहे जा सकते हैं; गोया अर्क एक प्रकारका सार है।

नोट—अर्क खींचते समय सौंफ, अजवायन आदि के उड़नशील तैल जलके उष्ण (१०० ° श) वाष्पों के साथ वाष्पीभूत हो जाते हैं।

यह एक अत्यन्त गवेषणात्मक विषय है कि आया जो द्रव्य अर्क चुआने में व्यवहृत होते हैं, उन सबके प्रभावात्मक अंश परिस्रुत द्रव में आ जाते हैं, या नहीं? आयुर्वेदीय अर्कग्रंथों एवं यूनानी क़राबादीनों में अर्क के बहुसंख्यक योग मिलेंगे, जिनमें अमूल्य प्रभाव का होना बतलाया गया है। परन्तु परीक्षा काल में प्रत्येक अर्क से अभीष्ट लाभ नहीं प्राप्त होता। बहुत से तो ऐसे हैं। जिनमें सिवा समय नष्ट करने के और कोई परिणाम नहीं, अस्तु, इस विषय में अभी काफ़ी अनुसंधान करने की आवश्यकता है। आवश्यकता होने एवं अवसर मिलने पर गवेषणापूर्ण तथा अपने अनुभवात्मक लेख द्वारा कभी इस विषय पर उचित प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जाएगा।

अवयव—अर्क के योगों को ध्यानपूर्वक देखने से यह ज्ञात होता है कि उनमेंप्रायः निम्न लिखित अवयवही मिश्रित रूप से पाए जाते हैं, यथा—

(१) बीज, (२) पत्र, (३) गिरी (मींगी), (४) खनिज (पाषाण आदि), (६) कस्तूरी तथा अम्बर, (७) पुष्प, (८) त्वक् (९) काष्ठ, (१०) जड़, (११) मांसर... रस (यख़नी), (१२) माउज्जुब्न (फाड़ा हुआ पानी), (१३) फल तथा (... निर्यासवत् पदार्थ।

औषध एवं जल की मात्रा—... बाजारू प्रचार छटाँक भर औषध में ... अर्क प्रस्तुत कर लेते हैं। यह अत्यन्त ... होता है। अस्तु दस पंद्रह तोले से ... निकालना श्रेष्ठतर है।

यदि पाव भर औषध हो और दो से... निकालना हो, तो लगभग ४ सेर पानी में ... भिगोएँ, तब दो सेर अर्क निकलेगा।

यदि अर्क में दुग्ध भी सम्मिलित ... उसको प्रातःकाल अर्क निकालने के ... मिलाना चाहिए।

यदि अर्क के योग में कस्तूरी, केशर ... आदि के समान सुगंधित द्रव्य हों; ... पोटली में बाँध कर (वारुणी यन्त्र ... चुआने की दशा में) टोंटी के नीचे ... लटकाएँ कि अर्क उस पर बूँद बूँद ... फिर उससे टपककर बर्तन में एकत्रित हो। ... यदि भभका द्वारा अर्क चुआना हो तो ... मुख में रखना चाहिए।

यदि अर्क में गिरियाँ पड़ी हों तो ... निकाल कर अर्थात् उनको पानी में ... कर डालना चाहिए।

अर्क के समाप्त होने के लक्षण—

इस बात का जानना अत्यन्त ... अर्क समाप्त हो गया या नहीं। ... के जानने के लिए कुछ कौड़ियाँ (... डेगमें डाल देनी चाहिएँ। जिस समय ... होने के समीप होगा, ध्यान देकर ... कौड़ियों का शब्द ज्ञात होगा। ... अग्नि देना बन्द करें।

इसकी एक परीक्षा यह भी है कि ... समाप्त होने को होता है तब वह ... विलम्ब से आता और ... ... है।

... अर्क स्रवण विधान के लिए ...

र विविध यंत्र विधान अर्थात् तत्साधनोपकरण, निर्माण-क्रम, इतिहास एवं उपयोग प्रभृति हेतु देखिए—तारुणी (नाड़िका) यन्त्र। आयुर्वेदीय अर्कों के लिए देखिए अर्कप्रकाश।

(१) अर्क़—उस्तोख़ूद्दूस १२ तो०, गाव २ तो०, मुनक्का, गाउज़ुबान प्रत्येक १० तो०, हेला स्याह पावभर, धनियाँ शुष्क तीनपाव ३॥) और पोस्त हलेलाज़र्द १ सेर। सम्पूर्ण षधियों को तीन दिन-रात जल में भिगोकर सेर अर्क़ खींचें।

गुण—वातरोग तथा शिरोरोग को नष्ट ता है, हृदय तथा आमाशय को बल प्रदान ता और शिर की ओर वाष्पारोहण को रोकता। इ० अ०।

(२) अर्क़—उपर्युक्त गुणधर्म युक्त है। योग—गुलगावज़ुबान २ तोला, गावज़ुबान, गाव, कासनी बीज प्रत्येक २ तो०, शाहतरा तो०, उस्तोख़ूद्दूस, अफ़्तीमून (पोटली में बद्ध) प्रत्येक ६ मा०, बिल्लीलोटन, बसफ़ाइज पिस्ती, दरूनज-अक़्रबी, इज़ख़र्ममक्की, गिले-र्नी, गुलसेवती प्रत्येक ७ मा०, पोस्त हलेला ज़र्दी, धनियाँ शुष्क, गुल नीलोफ़र प्रत्येक ॥ मा०। इनको दो रात-दिन जल में भिगोए और तदनन्तर २ सेर अर्क़ खींचें।

(३) अर्क़—गुलकेसकी १ तो०, गुलसेवती, गावज़ुबान प्रत्येक २ तो०, गुलेनीलोफ़र, धनियाँ क प्रत्येक १० तो०। २ रात-दिन जल में भिगो-१० सेर अर्क़ खींचें। उष्ण प्रकृति वाले के ए इसमें कपूर की वृद्धि करें, इससे बहुत लाभ ता है। कभी कभी कपूर के साथ वंशलोचन दि भी यथोचित मात्रा में सम्मिलित किया ता है अथवा उक्त अर्क़ का "क़ुर्स काफ़ूर" या "तबाशीर" के साथ उपयोग किया जाता है।

गुण—हृदय एवं मस्तिष्क को बल प्रदान ता है।

(४) अर्क़—हकीम काज़मअलीख़ाँ सदा अर्क तैयार करते थे। दो बार लेखक के अनुभव में भी आचुका है और मालीख़ौलिया (Molancholia) के सम्पूर्ण भेदोंमें लाभप्रद है। उक्त क़राबादीन (अम म ह म) से उद्धृत है।

योग—कीकर त्वक् धोकर साफ किया हुआ १० सेर, गुड़ १ मन (शाहजहानी), पानी ४ मशक। इन सबको मटके में डालकर भूमि में गाड़ दें और उसके नीचे किञ्चित् घोड़े की लीद डाल दें। जब लाहन उठ आए अर्थात् सन्धानित हो जाए तब ३० सेर एकाग्नीय अर्क खींचें। पुनः लौंग ६ मा०, जायफल, जावित्री, दारचीनी सुर्ख व शीरीं, इलायची छोटी और त्वम प्रत्येक १ तो०, चन्दन चूर्ण २ तो०, गुलाब २ तो०। इन ओषधियों को एक रात-दिन उक्त अर्क़ में भिगो रक्खें। दूसरे दिन २० सेर द्वयाग्निकार्क खींचें। पुनः उक्त लौंग, जावित्री प्रभृति ओषधियों को अर्ध मात्रा में लेकर द्वयाग्निकार्क में एक रात दिन भिगोएँ और दूसरे रोज १२ सेर त्र्याग्निकार्क खींचें। यदि ३ मा० गुलाब का इत्र भपके में डाल दें तो उत्तम होता है। कुछ दिन बाद उपयोग में लाएँ।

गुण—हकीम मुहम्मद जाफ़र अक्बराबादी उक्त अर्क़ को प्रस्तुत कर ४० दिवस पश्चात् ख़फ़क़ान (मूर्च्छा रोग), हृदय की निर्बलता, मालीख़ौलियाए मराक़ी और शारीरिक निर्बलता की दशा में गुलाब और मिश्री के साथ अग्नि लगाकर शीतल होने पर पिलाते थे। इसकी विधि निम्न है—

मद्य १० तो० को चीनी के प्याले में डालकर मिश्री और गुलाब प्रत्येक ४ तो० को परस्पर मिलाएँ और शराब को आग लगा कर गुलाब मे घोली हुई मिश्री उसमें डाल दे, और चमचा से चलाएँ जिसमें अग्नि बुझ जाए। शीतल होने पर पीएँ और ४-५ घड़ी बाद भोजन करें। इ० अ०।

अर्क़ अजवाइन 3arq-ajavain-अ०, फ़ा० अजवाइन का अर्क, यमान्यर्क।

निर्माण-विधि—तुख़्म अजवाइन १॥ पौंड, जल ३ क्वार्ट०। अर्क की विधि में ४ घंटे तक अर्क खींचें।

माात्रा व उपयोग विधि—एक एक आउंस (२॥ तो०) की मात्रा में थोड़ी थोड़ी देर पश्चात् उपयोग करें।

गुणधर्म—आक्षेपयुक्त उदरशूल में लाभदायक तथा परीक्षित है।

अर्क़ अजवाइन मुरक्कब (जदीद) āarq-ajaváin murakkab 'jadid'–अ० नूतन मिश्रित यमान्यर्क।

निर्माण-विधि—दारचीनी, अजवाइन देशी प्रत्येक २० तो०, गावज़ुबान १ सेर। सबको २४ घंटे तर रखकर अर्क खींचें और पुनः इस अर्क में उपर्युक्त औषध २४ घंटे तर करके दुबारा अर्क खींचें।

मात्रा एवं उपयोग-विधि—एक एक तो० यह अर्क सिकञ्जबीन सादा १ तो० मिलाकर सवेरे-शाम दिन में तीनबार या यथा आवश्यक चार चार घंटे के अन्तर से पिलाते रहें।

गुणधर्म—विशूचिका में लाभदायक है। वमन तथा अतिसार को लाभ करता है। हर्षजनक एवं हृद्य है।

अर्क़ अजवाइन सादह 'जदीद' āarq-ajaváin sádah 'jadid'–अ०, फ़ा० नूतन सामान्य यमान्यर्क।

निर्माण-विधि—अजवाइन ऽ२॥ सेर रात को भिगोकर सवेरे १० बोतल अर्क खींचें। पुनः इसमें २॥ सेर अजवाइन डालकर रात को तर कर दें, और सवेरे १० बोतल अर्क खींच लें।

मात्रा व उपयोग-विधि आमाशय तथा आंत्ररोग में जवारिश बस्बासह् (जावित्री) २ मा० के साथ और यकृद्रोग में माजून दबीदुल्वर्द के साथ यह अर्क १॥ तो० की मात्रा में पी लें।

गुण-धर्म—आमाशय शूल, अजीर्ण, उदराध्मान, जलोदर तथा यकृत की शीतलता के लिए यह अर्क अत्यन्त लाभदायक एवं शीघ्र प्रभावकारी है।

अर्क़ अजीब āarq-āajib–अ० विलक्षणार्क।

निर्माण-विधि—सत अजवाइन, सत्पुदीना, कपूर प्रत्येक एक तो० सम्पूर्ण औषधों को शीशी में डालकर धूप में रक्खें, अर्क तैयार हो जाएगा।

मात्रा व सेवन-विधि—४-५ बूंद, विशूचिका, उदरशूल तथा ज्वर में अर्क सौंफ १२ तो० के साथ या बताशा या शर्करा में मिला कर बरतें। विशूचिका में एक-एक घंटे बाद ऐसी खुराक दी जाए। जब वमन व अतिसार बन्द हो जाएँ तब औषध देना बन्द कर दें। यदि एक-दो मात्रा से आराम न हो तो स्थानीय चिकित्सक को बुलाएँ। किन्तु विशूचिका के दिनों में स्वास्थ्यरक्षा हेतु एक बूंद प्रयोग में लाया जाए। शिरःशूल में कनपटी (शंख) पर लेप करें और चार बूंद पानी के साथ पी लें। दाढ़ या दंतशूल में रुई का फाया इसमें तर करके वेदना स्थान पर लगाएँ। वृश्चिक एवं ततैया के काटने पर इसे दंश स्थान पर लगाएँ।

गुणधर्म—कई रोगों पर तात्कालिक लाभ प्रदर्शित करता है। संक्रामक तथा आहारजन्य विशूचिका के लिए बहुत गुणकारी है। प्रत्येक भाँति की वेदना चाहे वह कान में, चाहे दांत में या आमाशय में हो, सिर में अथवा किसी भी स्थानमें हो तुरंत नष्ट होती है। आमाशयिक विकार या आहार अजीर्ण के कारण जो ज्वर हो जाता है उसको दूर करता है। लि० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ अञ्जबार āarq-anjabár–अ० (मूल, अञ्जबार की जड़–हिं०। (Pyr... Radix.)

अर्क़ अनन्नास जदीद āarq-ananás-jadid–अ० नूतन अनन्नासार्क।

निर्माण-विधि—रुब्बायुक्त अनन्नास ... सौंफ १ सेर, प्याज़ श्वेत २ सेर ... माष्ठ देग में डालकर ऊपर इतना ... कि चार अंगुल ऊपर रहे। तदनन्तर ... विधि से अर्क खींचें। मात्रा व सेवन-वि...

ग़ो० अर्क़ में मिश्री ८१ शर्बत बज़ूरी २ तो० मिलित करें।

गुण-धर्म—अश्मरी के लिए अत्यन्त सहायक है।

अर्क़ अनीसूँ ३arq-anisún–अ० अर्क़ बादि-यान रूमी, रूमी सौंफ का अर्क़। एक्वा एनिसाई (Aqua Anisi.)-ले०। देखो–अनीसूँ।

अर्क़ अफ़ीम ३arq-afim } –अ०
अर्क़ अफ़्यून ३arq-afyún } अफ़ीम का अर्क़। एक्वा ओपियाई (Aqua Opii.) ले०। देखो—अफ़ीम (या पोस्ता)।

अर्क़ अफ़्सन्तीन ३arq-afsantín–अ० अफ़्-सन्तीन रूमी पाव सेर को अर्क़ गुलाब ३ सेर में रात को भिगो दें। सवेरे २ सेर पानी और डाल कर ४ बोतल अर्क़ खींचें। पुनः उक्त अर्क़ में अफ़्सन्तीन रूमी पाव सेर तथा अर्क़ गुलाब सेर और पानी दो सेर डालकर दोबारा ४ बोतल अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—डेढ़ तोला यह अर्क़, अर्क़ सौंफ ६ तो० और शर्बत कसूस २ तो० सम्मिलित कर पिलाएँ।

गुण-धर्म—यकृद्विकार (शोथ व काठिन्य) के कारण जो ज्वर होता है उसमें यह अर्क़ बहुत गुणदायक सिद्ध होता है। यकृत् का शोधनकर्ता तथा (मांद्र) स्थूल दोषों से शुद्ध कर उसे स्वा-भाविक दशा में ले आता है। सामान्य अर्क़ अफ़्-सन्तीन से यह कहीं अधिक लाभप्रद एवं शीघ्र प्रभावकारक है। यह अति तीव्र प्रभावकारक है। इस की मात्रा अति न्यून है।

अपथ्य—घृत, तैल और अन्य तैलीय पदार्थ तथा लाल मिर्चों से परहेज करें।

अर्क़ अम्बर ३arq-३ambar–अ० मजमूआ में उद्धृत है। हृदय व मस्तिष्क एवं उत्तमांगों को बल प्रदान करने के लिए अनुपमेय है। मूर्च्छा को नष्ट करने और शक्ति को पुनरुज्जीवित करने के लिए शीघ्र प्रभावकारक है। अस्तु, कई स्त्रियाँ आर्तवाधिक्य के कारण तथा कई पुरुष अर्शं में अत्यधिक रक्तस्राव के कारण अन्तिम दशा को पहुँच चुके थे; किन्तु इस अर्क़ के पीने ही अपनी पूर्वावस्था पर लौट आए। इस अर्क़ के अत्यन्त विस्मयकारक प्रभाव अनुभव में आ रहे हैं।

योग—मिश्क ख़ालिस ४॥ मा०, अम्बर अशहब, मस्तगी रूमी प्रत्येक ६ मा०, बर्ग रेहाँ नवीन, नागरमोथा, तज, खुरक धनियाँ, गुले गाव ज़ुबान गीलानी, अनीसूँ, दरूनज अक़्रबी, पिस्ता वाह्यत्वक् प्रत्येक १ तो० १०॥ मा०, ज़रंबाद, अगर, कबाबह, ऊदग़र्क़ी, छड़ीला, बालछड़, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, शक़ाक़ुल मिश्री, तेजपात, दारचीनी, ज़ाफ़रान, लौंग, बुज़ीदान, गुलाब, वंशलोचन सफ़ेद, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, सूत, पोस्त उत्रज, अब्रेशम कतरा हुआ, श्वेत चन्दन प्रत्येक २ तो०, ताजे विला-यती सेब का पानी ऽ॥ (आध सेर आलमगीरी), तुर्श अनार का पानी १ सेर, अर्क़ बेदमुश्क, अर्क़ गाव ज़ुबान, अर्क़ बादरंजबूयह् (बिल्ली-लोटन) प्रत्येक २॥ सेर, गुलाब क़िस्म अव्वल। कूटने योग्य औषधियों को कूटें और सब को अर्क़ों के साथ एकत्रित कर रात को सुरक्षित रखें। सवेरे सेब और अनार का पानी सम्मिलित कर देग में डालें तथा अम्बर व मिश्क को नीचे के मुँह में रखकर अर्क़ खींचें।

मात्रा—क़हवे की एक प्याली से ४ प्याली तक।

नोट—चिकित्सक को रोगी की प्रकृति के अनुसार इस अर्क़ में परिवर्तन करना योग्य है। अस्तु, आमाशय पुष्टि हेतु मधुर बिही का पानी १ सेर, तथा उसे उष्णता पहुँचाने एवं बलप्रदान करने के लिए बहारनारंज १ तो० १०॥ मा० और अतिसार को रोकने के लिए गुल सिअ़्द या सिअ़्द समावेशित करें। इ० अ०।

अर्क़ अम्बर जदीद ३arq-३ambar-jadid –अ० नूतन अम्बरार्क़।

निर्माण-विधि—मिश्क ५ मा०, अम्बर ६ मा०, मस्तगी १८ मा०, बर्ग रेहाँ ताज़ा, नागर-मोथा (सुअ़्द कोफ़ी), धनियाँ शुष्क, गुले-गाव ज़ुबान, अनीसूँ, दरूनज अक़्रबी, ज़रंबाद, पिस्ता वाह्यत्वक्, ऊदग़र्क़ी, कबाबचीनी, छड़ीला,

बालछड़, बहमन सुर्ख, बहमन सफ़ेद, शक़ाक़ुल, दारचीनी, तेजपात, लौंग, बूज़ीदान, गुले सुर्ख, बंसलोचन, इलायची छोटी तथा बड़ी, अस्फ हिन्दी, पोस्त उत्रज, अबरेशम कतरा हुआ, सफ़ेद चंदन प्रत्येक ४५ मा०, केशर १ तो० ६ मा०, सेब का पानी १ सेर, खट्टे अनार का पानी २ सेर, अर्क गावज़ुबान, अर्क बेदमिश्क, अर्क बादरंजबूया प्रत्येक ५ सेर, अर्क गुलाब १० सेर। जो औषध कूटने योग्य हैं उन्हें कूटकर रात को अर्कों में भिगोएँ। सवेरे सेबका जल, खट्टे अनार का जल सम्मिलित कर अम्बर व मिश्क पोटली में बाँधकर नीचे के मुँह के भीतर रखें और अर्क खींचें। पुनः उपर्युक्त अर्कों के स्थान में उक्त अर्क में उतनी ही औषधियाँ रात को भिगोकर दोबारा अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—दो तोला यह अर्क अन्य उपयुक्त औषध के साथ।

गुण-धर्म—उत्तमांगों को बलप्रद तथा मूर्च्छा में लाभप्रद है। अर्श तथा मासिक स्रावाधिक्य के कारण हुई अशक्तता को दूर कर पुनः शक्ति का सञ्चार करता है और कामोद्दीपक भी है। तिο फ़ा० १ भा०।

नोट—इसी नाम के कुछ अवयव तथा मात्रा की न्यूनाधिकता के सहित कई एक और योग भी हैं जो विस्तार भय से यहाँ नहीं दिए गए।

अर्क अम्बर बारीस aarq-ambar-baris —अ० यह अर्क आमाशय एवं यकृत को पुष्टि प्रदान करता है, पित्तकी तीक्ष्णता को नष्ट करता तथा क्षुधा की वृद्धि करता है।

निर्माण-विधि—ज़रिश्क गुठली निकाला हुआ ६७५ तो० को २४ घण्टे पानी में भिगो रक्खें। पुनः उसमें ६ तो० ४॥ मा० लौंग पीसकर समावेशित करें और थोड़ा सिर्कए अंगूरी (अंगूरी सिर्का) जो ज़रिश्क की चौथाई से अधिक न हो सम्मिलित कर विधि अनुसार अर्क खींचें। यदि इसमें थोड़ी सी चना की भस्म मिलालें तो स्वादिष्ट हो जाएगा।

इ० अ०।

अर्क अस्वद बारिद aarq-asvad-barid उष्ण प्रकृति वालों के लिए उपयुक्त एवं प्रफुल्लताकारक है। मालीख़ौलिया तथा [illegible] रोगियों के लिए और जले [illegible] वायु [illegible] लाभदायक है।

निर्माण-क्रम—गुड़ ६७॥ सेर, [illegible] छाल ६७५ तो० दोनों को मटके में डालकर जल में भिगोएँ कि तिहाई मटका [illegible] तदनन्तर मटके को घोड़े की लीद में [illegible] और रख छोड़ें। यहाँतक कि उसमें जोश [illegible] आने के बाद स्थिरता आजाए। इसके [illegible] खींचें और पुनः उक्त अर्क को [illegible] डालें तथा चन्दन का बुरादा, [illegible] प्रत्येक ७॥ तो०, गुलनीलोफ़र १२ [illegible] की छाल, आमला गुठली निकाला हुआ ३७॥ तो०, गुलगावज़ुबान, तुख्मक [illegible] ४५ तो०, मग़ज़ तुख्म क[illegible] अधकुटा [illegible] तुख्म कासनी अधकुटा, तुख्म ख़ुर्फ़ा [illegible] मग़ज़ तुख्म खीरा अधकुटा प्रत्येक [illegible] पोस्त [illegible] हलेला काबुली, [illegible] (जंगली बेर के फल और [illegible] बेहार प्रत्येक ११२ तो० ६ मा०, [illegible] ११। सेर। सम्पूर्ण औषधों को उक्त [illegible] घंटे भिगो रक्खें। तदनन्तर अर्क खींचें। [illegible] चते समय अम्बर अशहब १ मा० [illegible] में रक्खें। इ० अ०।

अर्क आशोब चश्म aarq ashob chashm —अ० चक्षु शूल नाशक योग।

निर्माण-क्रम—अर्क गुलाब [illegible] सिल्वर नाइट्रेट (रजताम्ल, चाँदी [illegible] रजतनत्रेत) २ ग्रेन (१ रत्ती) दोनों को [illegible] नीलवर्ण की शीशी में रखें।

मात्रा तथा सेवन-विधि—दो [illegible] दुखते हुए नेत्र में टपकाएँ।

गुणधर्म—हर प्रकार के [illegible] (अभिष्यन्द, नेत्र दुखने) में [illegible] है। विशेषतः रोहों (कुकरों) के लिए [illegible] दशा में जब कि नेत्र से कीचड़ [illegible]

...थ निकलता है तब यह अत्यन्त लाभ पहुँचाता है।

आसफ़ âarq-âsaf-अ० कबर। (The root of Capparis spinosa.)

आसव âarq-âsava-अ०

निर्माण-क्रम – गुड़ १ सेर, कीकर की छाल २ सेर, मटके में डालकर अग्नि पर रखें। जब ...आजाए तब येसगिरी २० तो०, सोंध, ...रेशम प्रत्येक ४ तो० ८ मा०, पिस्ता ...क, नागरमोथा, बालछड़, पोस्त तुरंज, ...प्रत्येक २ तो० ४ मा०, चंदन का बुरादा, गुलाब, ...प्रत्येक १० तो०, आमला आधसेर, साफ़ किया हुआ १ तो० २ मा०। सम्पूर्ण औषधों को मिलाकर विधि अनुसार अर्क़ खींच ...।

नोट—द्विआग्नेय बनाना हो तो उक्त औषधों ...२४ घंटे मद्य में भिगोकर डालें।

कभी कभी कीकर की छाल ८ सेर, जामुन की छाल २ सेर और मैंभल की छाल २ सेर डाली जाती है।

मात्रा और सेवन-विधि—६ तो०, शर्बत ...ल् आस २ तो० के साथ व्यवहार में लाएँ।

गुणधर्म—आमाशय-पुष्टिकर तथा आह्लादजनक है एवं आमाशयिक अतिसार के लिए लाभदायक है।

इलायची âarq-iláyachí-अ० बृहदेला.की निर्माण-विधि—सवासेर बड़ी इलायची को रात ...पानी में भिगोएँ और सबेरे २५ बोतल अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—१०-१२ तो० उपयोग करें।

गुणधर्म—उल्लासकारक तथा हृद्य, विशूचिका वान्ति एवं अतिसार की दशा में लाभदायक और वायुलयकर्ता है।

इलायची,-जदीद âarq-iláyachí-,jadíd -नूतनैलार्क। २॥ सेर इलायची को रात को जल में भिगो दें और सबेरे २५ सेर अर्क़ खींचें। पुनः उतनी ही इलायची उक्त अर्क़ में डालकर रात्रि को भिगो रखें और दूसरे सबेरे दोबारा अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—३ तो० आवश्यकतानुसार अनुपान रूप में उपयोग में लाएँ।

गुणधर्म—अर्क़ इलायची के सदृश।

अर्क़ उश्बह् âarq-âushbah-अ० उश्बा का अर्क़। निर्माण-विधि—उश्बह् मग़रबी सवासेर और चोबचीनी सवासेर को रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर सबेरे ४० तो० अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—७ तो० अनुपान रूप में व्यवहार में लाएँ।

गुणधर्म—वायुजन्य रोगों में गुणदायक है। संधिवात, उपदंश और सूज़ाक के लिए लाभदायक है, रक्त की शुद्धि करता एवं फोड़े फुन्सी की शिकायत को दूर करता है।

अर्क़ उश्बह् मुरक्कब âarq-âushbah-murakkab-अ०, मिश्रित उश्बार्क। निर्माण-विधि-उश्बह् ३० तो०, बुरादा चोबचीनी, शीशम का बुरादा प्रत्येक एक पाव, गुलबनफ़्सा, गुल नीलोफ़र, गुलनीम, गुलसुर्ख़, गावज़ुबान, शाहतरा, चिरायता, मुंडी, सरफ़ोंका, गोखुरू, श्वेतचन्दन का बुरादा, लाल चन्दन का बुरादा प्रत्येक आध पाव, पीली हड़का बक्कल, काबुली हड़ का बक्कल, बर्ग सना, बर्ग हिना प्रत्येक ८ तो० सबको १२ गुने जल में २४ घंटे तर करके जल का दो-तिहाई भाग अर्क़ प्रस्तुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—सवेरे शाम दोनों समय ७-७ तो० उक्त अर्क़ में शर्बत उश्बह् या शर्बत चोपचीनी २ तो० सम्मिलित कर पिलाएँ।

गुणधर्म—इसमें आश्चर्यजनक रक्तशोधक प्रभाव अन्तर्निहित है। उपदंश, रक्तविकार तथा अन्य वात रोगों में लाभदायक है।

अर्क़ क़ुतरान âarq-qatrán-अ० Tar Water (Aqua picis) देखो-क़ुतरान।

अर्क़ कुन्दी âarq-qandí-अ० उल्लास एवं प्रफुल्लताजनक प्रभाव में इससे उत्तम तथा स्वादिष्ट कोई दूसरा अर्क़ नहीं। यह हृदय एवं

मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करता है, खुमार बिलकुल नहीं लाता और नहीं कोई गंध रखता है, कामोद्दीपन करता एवं आहार का पाचन करता है।

योग व निर्माण-क्रम—गुड़ एक मन जहाँगीरी, कीकर की छाल ८ सेर जहाँगीरी, आवश्यकतानुसार शुद्ध स्वच्छ जल के साथ एक मटके में डाल रखें। संधानित होने पर ३० सेर एकाग्निक अर्क़ खींचें।

अर्क़ करावियह āarq-karáviyah—अ० कृष्णजीरकार्क। (Caraway water) देखो—स्याहज़ीरा।

अर्ककान्ता arka-kántá—सं० स्त्री० आदित्यभक्ता हुलहुल। (Cleome viscosa, *Linn.*)—ले०। रा० नि० व० ४। मद० व० १।

अर्क़ काफ़ूर āarq káfúr अ०
अर्क कपूर arka-kapúr—हिं० संज्ञा पुं०

निर्माण-क्रम—(१) कपूर १ ड्राम, जल एक पाइण्ट। कपूर को जल में मिश्रित कर रक्खें।

मात्रा व सेवन-विधि—आवश्यकतानुसार यह अर्क एक-एक आउंस की मात्रा में दिन में दो या तीन बार।

गुण धर्म—पाचक और वायुनिस्सारक।

(२) २० ग्रेन (१० रत्ती) शुद्ध कपूर को इतने मद्यसार (रेक्टिफाइड स्पिरिट) में घोलें कि आधा आउंस (१ तोला) हो जाए। पुनः इस घोल में एक ग्रेन परिस्रुत जल क्रमशः मिलाएँ।

मात्रा व सेवन-विधि—१ से २ औंस तक पिलाएँ।

गुण धर्म—विशूचिका एवं उदराध्मान के लिए गुणदायक है।

अर्क़ कासनी āarq-kásaní—अ० कासनी का अर्क।

निर्माण-विधि—तुख्म कासनी सवासेर ऽ१।, रात को जल में भिगोएँ तथा सवेरे २० [illegible] अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—१२ [illegible] औषध के साथ सेवन करें।

गुणधर्म—रक्त तथा पित्त की तीक्ष्णता [illegible] दूर करता है तथा तृष्णाशामक व पित्त [illegible] शूल को लाभ करता है।

अपथ्य—उष्ण वस्तुएँ।

नोट—यदि उपर्युक्त अर्क में उतनी [illegible] और डालकर दुबारा अर्क खींच लें, तो [illegible] भी तीव्र होगा तथा इसकी मात्रा तोन-तोन [illegible] सवेरे शाम दोनों समय सिकञ्जबीन [illegible] शर्बत नीलोफ़र एक तो० सम्मिलित कर [illegible] इसको अर्क़ कासनी जदीद कहते हैं। [illegible] फ़ा १ घ० २ भा०।

अर्क़ किब्रीत āarq-kibrít—अ०
अर्क गंधक arka-gandhak—हिं० संज्ञा पुं०

मिट्टी के बर्तन में एक छोटा सा लौह त्रिपाद [illegible] कर उसकी चारों ओर आमलासार गंधक का [illegible] फैलाएँ और त्रिपाद के ऊपर एक छोटा सा [illegible] का प्याला रख दें। तदनन्तर बर्तन के मुख [illegible] चीनी अथवा एलीमिनियम का एक इतना [illegible] कटोरा रक्खें कि वह बर्तनके मुख पर भली प्रकार बैठ जाए। पुनः किनारों को गूँधे हुए आटे [illegible] भली प्रकार बन्द करदें जिसमें अर्क वाष्प रूप [illegible] बाहर न निकल सके। ऊपर वाले कटोरा [illegible] में ठंडा पानी भर दें और नीचे मन्दी मन्दी अग्नि दें। गरम होने पर ऊपर का पानी बदलते रहे। इसी प्रकार घण्टा दो घण्टा तक करें। [illegible] को अग्नि नरम होने पर बर्तन का मुँह खोलकर प्याली निकालें। उसमें अर्क एकत्रित होगा। [illegible] शीशी में सुरक्षित रखें।

गुण-धर्म—उचित मात्रा एवं उपयुक्त अनुपान के साथ विविध रोगों में इसका [illegible] व लाभदायक बाह्य तथा आन्तरिक उपयोग होता है। जिन सब का वर्णन यहाँ विस्तारभय से नहीं किया गया।

...ãarq-kevará—अ० केतक्यर्क।

निर्माण-विधि—केवड़ा की बालें १० अदद ... में भिगोएँ और विधिअनुसार अर्क खींचें।

...ा व सेवन-विधि—२ तो० में मेही उपयोग ...त्य है।

...पथ्य – उष्ण पदार्थ।

...ण-धर्म—हृद्य तथा प्रमोदजनक और ...शामक है। वेकल्य एवं भ्रमनिवारक तथा ...गों को शक्तिप्रद है।

...ज़ूट ãarq-kriyázúṭ-अ०(Aqua ...osoti)। देखो—क्रियाज़ूट।

...फ़ॉर्म ãarq-kloroform-अ०स्मो-...के। Chloroform water(Aqua-...oroformi)। देखो—क्लोरोफ़ॉर्म।

...सुल् ह़दीद ãarq-khabsulhadid ...मण्डूरार्क, मण्डूर का अर्क।

...र्माण-विधि—(१) पुरातन मण्डूर ...कि किया हुआ १ छं०, पीपल, सुहागा, सोंठ, ...र कूटा हुआ प्रत्येक १॥ तो०, पुराना गुड़ ...सेर, मवेज़ मुनक्का १ सेर, घृतकुमारी स्वरस ...। सम्पूर्ण औषधों को मर्तबान में डालकर ...मुँह बन्द कर दें और गेहूँ की रास ...भूसा में गाड़ दें। ग्रीष्म ऋतु में ...स के पश्चात् तथा शरद ऋतुमें २१ दिनके ...निकाल कर ऊपरी जलीय घोल धीरे धीरे ...लें और बोतल में रखें।

...ण—यकृत नैर्बल्य, प्लीहावृद्धि, पाण्डु तथा ...के लिए परीक्षित है।

...त्रा – सवेरे-शाम १ छं० की मात्रा में ...दें। (सदूरियह्)

(२) अजवाइन, पीले हड़ का बक्कल प्रत्येक ...०, मण्डूर १०॥ छं०, औषध द्रव्य को यव-...कर्के ऐसे बर्तन में जिसमें प्रथम घृत प्रभृति ...नो वस्तु रखी गई रही हो रक्खें और उसमें ...सेर गुड़ १० सेर मीठे पानी में घोलकर ...शामिल करें। फिर घीकुवारका स्वरस आधसेर ...कर बर्तन का मुँह बन्द करके किसी गढ़े में ...का लीद के बीच स्थापित करें। तीन सप्ताह ...त् निकाल सुरक्षित बोतल में रक्खें।

गुण-धर्म—प्लीह काठिन्य व आध्मान, उदर-शूल, क्षुधा की कमी तथा यकृद्दौर्बल्य के लिए लाभदायक है।

मात्रा—२-३ तो० या अधिक प्रकृत्यनुकूल। (अक्सी० अ०)

अर्क खम्मान ãarq-khammán—अ० खम्मान का अर्क। Elder flower water (Aqua sambuci)। देखो—खम्मान।

अर्क खुश्बू ãarqkhushbú-अ० पक्षाघात, अर्दांग तथा सम्पूर्ण शीतजन्य मास्तिष्क रोगों के लिए लाभदायक है।

योग व निर्माण-विधि—दालचीनी, गुल-सेवती प्रत्येक ४ सेर, जायफल, जावित्री प्रत्येक २ सेर, छालिया, अगर प्रत्येक आधसेर, केशर ४ तो० और श्वेत तथा सुगन्धित पान के पत्र १०० अदद। सबको थोड़ा कूटकर ७ सुराही अर्क लौंग (जो कि अर्क गुलाब में लौंगों को भिगोकर खींचा गया हो) में भिगोकर दो रातदिन रख छोड़ें। तदनन्तर अर्क खींचें और उसका इत्र लेकर पृथक् सुरक्षित रक्खें तथा उसके अर्क को बोतल में डालकर पृथक् सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—सवेरे शाम दो-दो तो० पिलाएँ। यदि मदकारक बनाना चाहें तो अर्क लौंग के स्थान में अर्क कन्दी या अर्क ख़ुर्मा (छुहारा) में भिगोकर बनाएँ। (इ० अ०)

अर्क गज़र अम्बरी व नुस्खहे कलाँ ãarq-gazar-ãambarí ba-nuskhabe-kalán—अ० गाजरार्क विशेष।

निर्माण-विधि—गाजर २ सेर, किशमिश, मवेज़ मुनक्का प्रत्येक २॥ सेर, बिही, सेब प्रत्येक आधसेर, मीठा अनार एक सेर, गुलेसुर्ख, इला-यची छोटी व बड़ी, लाल व सफेद चन्दन, अबरे-शम (कतरा हुआ), बर्गे रैहाँ, शुष्क धनियाँ, गावज़ुबान, तुख़्म [illegible], तुख़्म ख़ुरफ़ा प्रत्येक २ तो०, अर्क गुलाब, अर्क केवड़ा, अर्क गावज़ुबाँ प्रत्येक २ सेर। केशर १ तो०, मिश्क (कस्तूरी) तथा अम्बर प्रत्येक ३ मा० को पोटलीमें

बाँधकर निम्न मुख पर रख कर विधि अनुसार अर्क़ खींचें। पुनः उक्त अर्क़ में उपर्युक्त अर्कों के सिवा शेष सम्पूर्ण ओषधियाँ डालकर दोबारा अर्क़ खींचे।

मात्रा व सेवन-विधि—तीन तो० उक्त अर्क़ को १ मा० शर्बत अनार के साथ पान करें।

गुण-धर्म—हृद्य, मेधाजनक, कामोद्दीपक, शुद्ध रक्त, उत्पन्न करता तथा प्रमोदकारक है और इसके उपयोग से मुख मण्डल पर रक्ताभा झलकने लगती है।

अर्क़ गज़र 'जदीद' āarq-gazar-'jadíd' -अ० नूतन गर्जरार्क।

निर्माण-क्रम—गाजर २ सेर, गावज़ुबान ४ तो०, गुलगावज़ुबान २ तो०, सफ़ेद चन्दन ३ तो० ६ मा०, तोदरी सुर्ख़, बहमन सुर्ख़, बहमन सुफ़ेद प्रत्येक २ तो० ३ मा० सबको पानी में भिगोकर २० बोतल अर्क़ प्रस्तुत करें। पुनः उतनी ही औषध उक्त जल में भिगोकर अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तो० अनुपान रूप से उपयोग करें।

गुण-धर्म—प्रमोदजनक, बलकारक एवं उत्ताप-शामक है और मूर्च्छा तथा विभ्रम को दूर करता है।

अर्क़ गज़र मुरक्कब 'जदीद' āarq-gazar-murakkab 'jadíd'-अ० नूतन मिश्रित गर्जरार्क।

निर्माण-विधि—छिला हुआ गाजर १ सेर, बर्ग गावज़ुबान २ तो०, गुलेगावज़ुबान १॥ तो०, सफ़ेद चन्दन १॥। तो०, बहमन सफ़ेद, तोदरी सुर्ख़ प्रत्येक १ तो०, सबको मिश्रित कर एक दिन-रात यथोचित जल में भिगोकर विधि अनुसार अर्क़ प्रस्तुत करें। तत्पश्चात् प्रति बोतल के हिसाब से टिंक्चर बिलाडोना ८ मा०, स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक १६ मा० और स्पिरिट ग्लोरोफ़ोर्म २ तो० भली प्रकार मिश्रित कर रख लें।

निर्माण-क्रम—२-२ तो० दिन में ३ बार उपयोग करें।

गुणधर्म—हृदय तथा मस्तिष्क को बल प्रदान करता और मूर्च्छानाशक है।

अर्क़ गन्धक āarq-gandhaka-देखो—अर्क़ किब्रीत।

अर्क़ गन्धिका arka-gandhiká-सं० [illegible] (Ipomœa digitata.) पताल [illegible] भूमि कुष्माण्ड। प० मु०।

अर्क़ ग़ार कर्ज़ी āarq-ghár-karzí-[illegible] देखो—चेरी लॉरेल वाटर (Cherry laurel water)

अर्क़ गावज़ुबाँ āarq-gávazubán-अ० [illegible] ज़ुबाँ का अर्क़।

निर्माण-क्रम—गावज़ुबाँ १। सेर रात [illegible] में भिगोकर सवेरे २० बोतल अर्क़ निकालें।

मात्रा व सेवन-विधि—१२ तो० [illegible] उपर्युक्त औषध के साथ सेवन करें।

गुणधर्म—उत्तमांगों को बल प्रदायक [illegible] शारीरोष्मानाशक है और हृदय प्रफुल्ल [illegible] तृष्णा शामक तथा वात रोगों में लाभप्रद है।

अर्क़ गावज़ुबाँ "जदीद" āarq-gávazu[illegible] "jadíd"-अ० नूतन गावज़ुबाँ का अर्क़।

निर्माण-विधि—गावज़ुबाँ २॥ सेर [illegible] जल में भिगोएँ और सवेरे यथा विधि [illegible] करें। फिर २॥ सेर गावज़ुबाँ उक्त अर्क़ [illegible] भिगोकर दूसरे दिन दोबारा अर्क़ [illegible]

मात्रा व सेवन-विधि—३ तोला।

गुणधर्म—उत्तमांगों तथा शारीरिक [illegible] बलप्रद है। हृदय प्रमोदकारक, तृषा [illegible] तथा वात रोगों में लाभ पहुँचाता है।

अर्क़ गुल सेंभल āarq-gulo-sembhal-[illegible] शाल्मली पुष्पार्क। अत्यन्त बलवर्द्धक, [illegible] जनक, कामोद्दीपक तथा [illegible] कारक है।

निर्माण-क्रम—सेंभल पुष्प [illegible] किए हुए, इनके समान भाग [illegible] उतनी ही गुलं मुण्डी और [illegible] चमेली को परस्पर मिश्रित कर [illegible] परिस्रुत करें।

अर्क़ गुलाब āarq-gulāb—फ़ा० गुलाबजल, गुलाबार्क।

निर्माण-विधि—गुलाब के फूल ११ सेर का यथाविधि अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—१ तो० अनुपान रूप से उपयुक्त औषध के साथ सेवन करें।

गुण धर्म—हृदय, मस्तिष्क तथा आमाशय को बलप्रदान करता है। मस्तिष्कवेदना, आमाशय तथा प्लीहा के लिए गुणदायक और उष्णताजन्य मूर्च्छा एवं तृषा को लाभ पहुँचाता और गर्मी तथा पाचन विकार का सुधार करता है।

अर्क़ गुले नीम āarq-gule-nīm—फ़ा० निम्ब, पुष्पार्क।

निर्माण-क्रम—नीम पुष्प नवीन, गिलोय हरी, मकोय, मुण्डी, पित्तपापड़ा प्रत्येक ४ तो०, नमक २ तो०, गुलाब, काहू, तुख्म कासनी, गुल-नीलोफ़र प्रत्येक १ तो०। औषधों को यथा विधि रात को जल में भिगोएँ और सबेरे अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—बच्चों को ३ से ४ तो० पर्यन्त और युवावस्था वालों को चार चार पर्यन्त यह अर्क सायंत उपाय एक दो तो० मिला कर ताकमी छिड़क कर पिलाएँ।

गुणधर्म—रक्तविकार, वात और पैत्तिक ज्वर, चेचक, कुष्ठ और कण्डु प्रभृति के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

सूचना—कण्डु आदि में न्यूनातिन्यून २० रोज़ तक उक्त अर्क को पिलाएँ।

अर्क़ गोगिर्द āarq-gogirda—अ० गंधकाम्ल, गन्धक का अर्क, गन्धक का तेज़ाब। देखो—अर्क़ किब्रीत। इ० अ०, मि० मु०।

अर्क़ गोलार्ड āarq-golārd—गोलार्ड का अर्क। गोलार्डस वाटर (Goulard's water.) —इं०। देखो—नाग (सीसक)।

अर्कचंदनम् arka-chandanam—सं० क्ली०
अर्कचन्दन arka-chandana—हिं० संज्ञा पुं०
रक्त चन्दन, लाल चन्दन (Pterocarpus Santalum, *Linn.*) रा० नि० व० १२।

अर्क़ चोबचीनी āarq-choba-chīnī—फ़ा० चोबचीनी का अर्क। इ० अ०।

अर्क़ चोबचीनी जदीद āarq-chobachīnī-jadīd—फ़ा० नवीन चोबचीनी का अर्क।

निर्माण क्रम—दालचीनी, गुलेसुर्ख़, तुख्म रैहाँ प्रत्येक ११ तो० २ मा०, लवंग, बालछड़, तेजपात, इलायची, कबाबचीनी, बादरञ्जबूया, गुले-गावज़बाँ, अबरेशम कतरा हुआ प्रत्येक ५ तो० ६ मा०, बहमन सुर्ख़ व सफ़ेद, सफ़ेद चन्दन, ऊद हिन्दी, तुलसी प्रत्येक १ तो० २॥ मा०, चोबचीनी १ सेर ४॥ छटांक, सेब मीठा १०० अदद, अर्क गुलाब १ सेर ११ छटांक, मिश्री ११ तो० २ मा०। चोबचीनी को टुकड़ा टुकड़ा करें और सेब को भी टुकड़े टुकड़े करें, कूटने योग्य औषधों का अधकुट करें और सम्पूर्ण द्रव्य को रात्रि में अर्क गुलाब में भिगोएँ और सबेरे ८० तोला जल सम्मिलित कर अर्क परिस्रुत करें। अर्क परिस्रुति काल में केशर १ तो० ६ मा०, अम्बरी तथा कस्तूरी विशुद्ध हर एक ३॥ मा०, कपूर भीमसेनी ३ मा० इन सब की पोटली बना कर नैचा के मुँह पर भभके के भीतर लगाएँ। द्वितीय बार पुनः उतनी ही औषध लेकर उक्त अर्क में भिगोएँ और उपर्युक्त विधि अनुसार पुनः अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तो० भोजनोपरांत थोड़ा थोड़ा पान करें।

गुण-धर्म—उत्तमांगों को बलप्रदान करता, आमाशय को बलवान बनाता तथा कामोद्दीपक, हृदयप्रफुल्लकारी एवं आहार पाचक है। बुद्धि एवं चेतना को तीव्रकर्त्ता तथा हृदय को प्रसन्न रखता है। उच्च कक्षा में रक्तशोधक है। इसके उपयोग से सम्पूर्ण रक्तविकारों की शान्ति होती है। नि० फ़ॉ० ? भा०।

अर्कच्छदनम् arkachchhadanam—सं० क्ली० अर्कमूल, मदार की जड़। The root of (Calotropis gigantea.)

अर्क़ जज़्र āarq-jazra—गाजर का अर्क। इ० अ०।

अर्क़ जज्म सादह् âarq-jazra-sádah-सादह् अर्क़ गाजर । दे० अ० ।

अर्क़ जदीद âarq- jadid-अ० नूतनार्क ।

निर्माण-विधि—अर्क़ पुदीना, अर्क़ इलायची, अर्क़ बादियान प्रत्येक ३ तो०, स्पिरिट एमोनिया एरोमैटिक ३० बूँद (मिनिम) । सब को शीशीमें डालकर भली भाँति हिलाएँ जिसमें वे परस्पर मिश्रित होजाएँ ।

मात्रा व सेवन-विधि—३ तो० अर्क़ अल्पवर्षीय बालक को पिलाएँ । दिन में ऐसी ३ मात्राएँ उपयोग में लाएँ ।

गुण-धर्म—शिशुओं के उदराध्मान एवं अजीर्ण के लिए अत्यन्त लाभदायक है ।

अर्क़ जावेदानी âarq-jávidání-अ० ।

निर्माण-क्रम—जायफल, लौंग, बड़ी इलायची, आमला, बालछड़, धवपुष्प प्रत्येक १० तो०, दालचीनी २० तो०, बबूल की छाल सम्पूर्ण औषधों से द्विगुण, गुड़ सम्पूर्ण औषधों से चतुर्गुण । सब को एक मटके पानी में भिगो रखें-जब लाहन उठ आए तो अर्क़ परिस्रुत करें और काम में लाएँ ।

गुण-धर्म—मूर्च्छा तथा आमाशय शुद्धि के लिए अत्यन्त गुणदायक है ।

अर्क़ ज़ियाबेतुस âarq-ziyábetus-अ० मूत्रमेहार्क ।

निर्माण-विधि—गिलोय सब्ज़, बर्गमदमादा, बर्ग जामुन प्रत्येक एक पाव, गुलनार, तुख़्मकाहू, तुख़्म ख़ुर्फ़ा, मीठे कद्दू के बीज की गिरी, मग़ज़ तुख़्म पे.।, मग़ज़ तुख़्म तर्बूज़, तुख़्म कासनी, गुल नीलोफ़र, सफ़ेद चंदन का बुरादा, रक्तचंदन का बुरादा, खस गुजराती, आमला शुष्क, झाऊ प्रत्येक ४ तो० । रात्रि में संपूर्ण औषधोंको जल में भिगोकर सवेरे इसमें भलभलाए हुए कद्दू का पानी; भलभलाए हुए खीरा का पानी, बकरी का दोग़ प्रत्येक २ सेर, हरी कासनी के पत्तेका फाड़ा हुआ पानी १ सेर, शुद्ध जल ७ सेर अधिक डाल कर तबाशीर और सफ़ेद चंदन प्रत्येक ६ मा० नैचा के मुँह में लटकाकर अर्क़ परिस्रुत करें ।

मात्रा व सेवन-विधि—६ तो० की मा[त्रा] में उक्त अर्क़ को सवेरे शाम पीएँ ।

गुण-धर्म—ज़ियाबेतुस (बहुमूत्र रोग) [के] लिए लाभदायक है ।

अर्क़ ज़ीरहे विलायती âarq zírahe vi[lá]yati-फ़ा०, उ० अर्क़ कराविया, स्या[ह] [जीर]कार्क, स्याह ज़ीरा का अर्क़-हिं० । (Cara[way] water (Aqua carui) । देखो-[अर्क़] ज़ीरक या स्याह ज़ीरा ।

अर्क़ नर्गिस ख़ा.सुलख़ा.स âarq-tap[...] kháṣul-kháṣ-यक्ष्मध्नार्क, राजयक्ष्म[ा] [...] मुख्य अर्क़ ।

निर्माण-क्रम—बर्ग बेद मादा आधा सेर, [...] हुई मुलेठी ¼ सेर (१ पाव), दोनोंको [...] हुए (मुलह्ठी) कद्दू जल, भलभलाए [...] तर्बूज़ जल तथा भलभलाए हुए खीरे [...] प्रत्येक २ सेर, ताज़े कसेरू का पानी, ह[री] [...] के पत्ते का पानी प्रत्येक १ सेर में [...] सवेरे सब मुलेठी विलायती, सब [...] बसंची प्रत्येक १ तो० नैचे के मुँह में [...] यथा विधि अर्क़ परिस्रुत करें ।

मात्रा व सेवन-विधि—६ तो० [...] शर्बत उन्नाब २ तो० मिश्रित [...] प्रति [...] पिलाएँ ।

गुणधर्म—राजयक्ष्मा तथा उरःक्षत [के] लिए अत्यन्त लाभप्रद है । ताप चाहे [...] उरःक्षत के साथ हो यह दोनों [...] लाभदायक है ।

अर्क़ तम्बाकू âarq-tambákú-अ० [...] ताम्रकूटार्क । वातग्रस्तता, पक्षाघात, [...] दर, वायुजन्य उदरशूलके वायुका [...] तथा मासारीक़ के अवरोध का उद्घाटन, [...] युस्थ विकृत दोषों का वमनकर्ता एवं [...] दन के लिए उत्तम है । श्लेष्मज शिर:[...] आमवात के लिए भी गुणदायक है । [...] चिकित्सकों के अन्वेषित पदार्थों में से है ।

योग तथा निर्माण-क्रम—तमाकू [...] शुष्क २ सेर ११ छटांक (यदि तमाकू [...]

-३ सेर तम्बाकू लें) और अजवायन तथा मालर प्रत्येक १ तो० १०॥ मासा, दालचीनी, लौंग, इम, इलायची प्रत्येक ६ मा० । सबको ११। सेर जल में एक रात दिन भिगोएँ । तदनन्तर अर्क परिस्रुत करें ।

मात्रा व सेवन-विधि—सवेरे शाम २-२ तो० पिलाएँ ।

तम्बूल ãarq-tambúl-अ० पानका अर्क।

निर्माण-विधि—गुले सुर्ख, गाव ज़ुबान, गुदीना ख़ुश्क, पका हुआ पान का पत्ता प्रत्येक १ पाव, बालंगू (अजवाइन), मालर फ़ारसी, दाल-चीनी, लौंग, कुलिंजन, सोंठ, छोटी इलायची, प्रत्येक आध पाव, अर्क गुलाब ४ शीशा, अर्क बेदमिश्क, वर्षाजल प्रत्येक २ शीशा । सम्पूर्ण औषधों को अर्क तथा वर्षा जल में रात्रि को भिगो दें । प्रातः यथा विधि ८ सेर अर्क परि-स्रुत करें ।

मात्रा व सेवन-विधि—१ तो० अर्क यथोचित [illegible] पान करें ।

गुणधर्म-उदरशूल, वायुजन्य उदर पीड़ा तथा अन्य वातज वेदनाओंके लिए अत्यन्त लाभ-कर है ।

तिला मुरक्कब व सम्मुलफ़ार ब्रोमीनी ãarq-tilá murakkab ba sammu-lfár bromíní-नि० Liquor auri-et Arsenii Bromidi) देखो-संखिया ।

तिहाल ãarq-tihál-अ० प्लीहार्क, प्लीहा-नाशक अर्क ।

निर्माण-विधि—(१) झाऊ पत्र १ सेर और बादावर्द २ तो०को अधकुट करके १२ सेर जल में क्वथित कर छान लें । पुनः इसमें गुड़ १ सेर मिश्रित कर दोबारा क्वथित करें । जब ३ सेर जल शेष रह जाए तब इसको एक सप्ताह धूप में रखकर छानकर बोतलों में रख लें ।

मात्रा व सेवन-विधि —प्रति दिन प्रातःकाल निराहार मुख ६ तो० से १२ तो० पर्यन्त उक्त अर्क पान करें ।

गुण-धर्म—प्लीहा शोथ को अति शीघ्र लय-करता है । ति० फ़ा० २ भा० ।

(२) नौसादर, सुहागा, कालीमिर्च प्रत्येक ३ तो०, खाने का नमक, (सेंधा नमक), काला नोन, नमक तल्ख़ सुलेमानी नमक, थारी का रस, घीकुवार का रस, कागज़ी नीबू का रस, शुद्ध सिरका प्रत्येक ६ तो० मिश्रित कर शीशा के बर्तन में डालकर इस दिवस पर्यन्त धूप में रक्खें ।

मात्रा व सेवन-विधि—एक तो० इस अर्क को १२ तो० सौंफ के अर्क और १ तो० सिकन्ज-बीन लेमूँ में मिलाकर प्रातःकाल पान करें ।

गुण-धर्म—प्लीहा के लिए लाभदायक एवं आशु-प्रभावकारी है । थोड़े ही दिनों में तिल्ली जाती रहती है । ति० फ़ा० २ भा० ।

(३) माल्ट (जवरस) १४ तो०, तेज़ाब शोरा (शोरकाम्ल), हरित काई ३ तो०, लोह क्वीनीन ६ मा० । तेज़ाब के अतिरिक्त तीनों औष-धों को पीसकर बोतल में रक्खें और आधा बोतल पानी डाल कर खूब हिलाएँ । तदनन्तर शोरकाम्ल डालकर अच्छी तरह हिलाएँ और रक्खें । अगले दिन बोतल को जल से पूरित कर दें । बस ! अर्क तय्यार है ।

मात्रा व सेवन-विधि—सम्पूर्ण औषध को १४ मात्राओं में विभाजित करें और एक मात्रा प्रति दिवस प्रयोग में लाएँ ।

गुण-धर्म—यह अर्क वातज तथा श्लेष्मज ज्वरों को दूर करता है ।

विशेष-गुण—प्लीहावृद्धि के लिए यह अर्क अत्यन्त लाभदायक तथा सशक्त प्रभाव-कारक है । थोड़े ही दिनों में प्लीहा के शोथ का निवारण करता है । ति० फ़ा० १ भा० ।

(४) नवसादर, सफ़ेद फिटकरी, सुहागा, कल्मी शोरा प्रत्येक एक तो० । इन सबको पीसकर घृतकुमारी के पत्र का भीतरी गूदा निकाल कर उक्त पत्र में उपर्युक्त औषधों को भर दें । परन्तु, ध्यान रहे कि उक्त पत्र का निम्न भाग संलग्न रहे । पुनः ऊपर की ओर धागा बाँधकर धूप में लटका दें और उसके नीचे मिट्टी का पात्र रक्खें । उक्त पात्र में जो अर्क टपक कर एकत्रित हो जाए उसे सुरक्षित रक्खें ।

मात्रा व सेवन-विधि—तीन बूंद बतासे में डालकर सेवन करें।

गुण-धर्म—ग्रीहा वृद्धि के लिए अत्यन्त लाभदायक है। ति० फा० १ भा०।

अर्क़ तेज़ाब ăaiq-tezáb-अ० तेज़ाब का अर्क।
(१) श्वित्र को नष्ट कर्ता, रोग स्थल से चर्म को पृथक् करता तथा देह के समान नवीन त्वचा को उत्पन्न करता है।

योग—ज़ाज सफ़ेद (कसीस सफ़ेद) १२ भाग, ज़ाज ज़र्द (कसीस पीत) २४ भाग, शोरा ४४ भाग। सबको परस्पर मिश्रित करें यथा विधि अर्क परिस्रुत करें। श्वित्र स्थल को गाय के शुष्क गोबर से रगड़ने के पश्चात् उक्त तेज़ाब को लगाएँ।

(२) हकीम अली का परीक्षित है। श्वित्र को जलाकर तथा उसमें व्रण संजनित कर उसको अच्छा कर देता है।

योग—मरदूकूनिया (कफ आबगीना, काँच का झाग), शोरा, कसीस स्याह। इन्हें यथाविधि परिस्रुत करें। तीक्ष्ण तेज़ाब परिस्रुत होता है। मुर्गी के डैने से श्वित्र-स्थल पर लगाएँ।

अर्क तैलम् arka-tailam-सं० क्ली० यह तैल कुष्ठाधिकार में वर्णित है।

योग—कड़ुआ तैल (सरसों का तेल) ८ पल, मदार के पत्ते का रस ८ पल, हल्दी एक पल और मैनसिल १ पल। इनका यथाविधि तैल प्रस्तुत करें। च० द० कुष्ठ०-चि०। रस० कौ०।

अर्क दलः arka-dalah-सं० पु० (१) आदित्य-पत्र क्षुप, हुलहुल। (Cleome Viscosa.) रा० नि० व० ४। (२) अर्क वृक्ष, आक, मन्दार। (Calotropis gigantea.)

अर्क़ दार(ल)चीनी ăaiq-dara,-la,-chini दालचीनी का अर्क। Cinnamon water (Aqua Cinnamomi.), देखो—दालचीनी।

अर्क़ दो आतशह् ăarq-do-átashah-फ़ा० द्वयाग्नीय अर्क, दो बार परिस्रुत किया हुआ अ... इ० अ०।

अर्क़ नअ़्नअ़् ăarq-naănaă-अ०

अर्क़ नअ़्नअ़् फ़िल्फ़िली ăarq naănaă filfilí-अ०

अर्क नाना arka-náná-हिं०, उ० अर्क पुदीना, पुदीना का अर्क। Peppermint water (Aqua Menthæ Piperatæ.) देखो—पुदीना (...)

अर्क़ नअ़्नअ़् सब्ज़ ăarq naănaă sabz

अर्क़ नअ़्नअ़् सुम्बुली ăarq naănaă sumbali -अ० Spearmint water (Aqua menthæ viridis.) देखो—पुदीना।

अर्क़ नअ़्नोल ăarq-naănol-अ० मेन्थोल (Aqua menthol.) देखो—पुदीना।

अर्क नामा arka-námá-सं० पु० रक्त मन्दार। Calotropis gigantea (red var. of-)

अर्क़ नुक़रा ăarq-nuqrá-अ० रजत। देखो—रजत।

अर्क-पलः arka-palah-सं० पु० (१) आदित्य-पत्र क्षुप, हुलहुल। (Cleome Viscosa.) रा० नि० व० ४ च० द०। (२) अर्क, मदार, आक। (Calotropis gigantea.)

अर्कपत्र रस तैलम् arkapatra rasatailam -सं० क्ली० हिं० आक के पत्तों का रस और ... के कल्क से सिद्ध किया हुआ सरसों का ... पामा, कच्छु और विचर्चिका को दूर करता ... शार्ङ्ग० सं०।

अर्कपत्र स्वरसः arkapatra-svarasah-सं० पु० आक के पके हुए पीले पत्तों से ... आग पर सेककर निकाला हुआ स्वरस ... करके कान में डालने से कान का दर्द दूर ... है। वृ० नि०।

अर्क पत्रा,-त्रो,-त्रिका arka-patrá,-...

स्त्री० ईश्वरमूल वृक्ष, इशारमूल, न्दे-हिन्दी, रुद्रजटा, साप्सन्द। (Aristolochia Indica) प० मु०। र० मा०।) एक लता जो विष की औषधि है। अर्क-।

दियोगः arkapatrádiyogah–सं० आक के पत्ते और लवण को मिट्टी के बर्तन द करके मुखपर कपड़-मिट्टी करके अग्नि में हर रक्खें। इसे मस्तु के साथ पीने से तिल्ली ती है। च० द० उ० चि०।

arka-parnah–सं० पु० }
arka-parna–हिं० संज्ञा पु० }
) रक्तार्क, लालमदार, सूर्य मन्दार–मह०। पू० १ भा०। Calotropis gigantea (the red var. of–)। (२) मदार । (३) मदार का पत्ता।

का,–र्णी arka-parniká.-ní–सं० माषपर्णी, हयपुच्छा। मापानी–यं०। (Teramnus Labialis.)

arka-pádah–सं० पु० (१) सूर्य-मणि। (२) निम्ब वृक्ष। (Melia Azadirachta, Linn.)

ः arka-pádapah–सं० पु० (१) वृक्ष (Melia Azadirachta, n.)। (२) अर्क क्षुप, मदार, आक। lotropis gigantea.)

áarq-pán–अ० पान का अर्क।
र्माण-विधि--(१)गुलेसुर्ख, गाव जुबान, , पान पत्र प्रत्येक एक पाव, अजवाइन, , दालचीनी, लौंग, कुलिञ्जन, सोंठ, इला-छोटी हर एक १० तोला, अर्क गुलाब ४ , अर्क बेदमिश्क, वर्षा जल हर एक सेर। सब औषधों को रात्रि भर भिगोकर काल ७-८ सेर अर्क परिस्रुत करें।

णधर्म–उदर शूल तथा आमाशयस्थ वेदना-क, वायु जन्य शूल तथा अन्य पीडाओं की हेतु परीक्षित है। व्या_त अम्म में ह_म से न। इ० अ०।

(२) पान १८ तो० ४ मा०, दालचीनी नं०१ पौने नौ तो०,बहमन सफ़ेद ६तो० १०मा०, इलायची का दाना, जायफल, जावित्री हर एक २॥ तो०, वर्षा जल २० सेर। इससे यथा विधि १० सेर अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा—चिकित्सक की राय पर निर्भर है।

गुणधर्म—पाचनशक्ति को बढ़ाने, कपोलों के वर्ण को निखारने तथा कामोद्दीपनके लिए अनुभूत है। अन्य योगों की अपेक्षा कम उष्ण है। इ० अ०।

अर्क पान जदीद áarq-pán-jadíd–अ०
निर्माण-विधि—योग "अर्क पान नं० १" को द्विगुण मात्रा में लेकर उक्त विधि अनुसार ७ सेर अर्क परिस्रुत करें। पुनः उतनी ही औषध और रात्रि भर भिगोकर दोबारा ७ सेर अर्क परिस्रुत करलें।

मात्रा व सेवन-विधि—पौने २ तो० इस अर्कको उपयुक्त शर्बतके साथ मिलाकर सवेरे शाम दोनों समय पिलाएँ। यथा—

हृद्रोग में शर्बत सेब या गुड़हल अथवा केवड़ा मिलाएँ, आमाशयिक शूल, एवं वातज वेदनाओं में सिकञ्जबीन सादा या नीबू मिलाएँ।

गुणधर्म – आमाशय तथा हृद्रोग को लाभ पहुँचाता है। उदर तथा आमाशयिक वेदना में लाभदायक है और वातज वेदनाओं को शमन करता है। हृद्योल्लासकारक तथा हृदय शामक है। ति० फ़ा० २ भा०।

अर्क पियाराङ्गा मुरक्कब áarq-piyáráńgá-murakkab–अ० पियारांगाका मिश्रित अर्क। देखो–पियारांगा। ति० फ़ा० २ भा०।

अर्क पुदीना áarq-pudiná }
अर्क पुदीना जदीद áarq-pudiná-jadíd }
–अ० पुदीना का अर्क, नव्य पुदीनार्क। देखो—पुदीना।

अर्क पुष्प योगः arka-pushpayogah–सं० पु० आक के फूल तेल में पका कर सेवन करने में स्त्रियों का मासिक धर्म खुलकर होता है। यो० र०।

अर्क पुष्पा arka-pushpá सं० स्त्री० क्षीर-काकोली। क्षीर काँकल-ता०। देखो—क्षीर-काकोली (Kshira kákoli)

अर्क पुष्पिका arka-pushpiká
अर्क पुष्पी arka-pushpí
—सं० स्त्री० (१) सूर्यवल्ली। अन्धाहुली, अर्क सदृश पुष्पी लता, अर्कहुली, क्षीरखुम्, दधियार-हिं०। श्वेत हुड़हुड़िया-बं०। (Gyga-ndropsis Contahylla, Syn. Cleome pentaphylla.) शिरदोली-मह०। पर्याय-पयस्या, सूर्यवल्ली, मितपर्णी, शीतपर्णी। र०। भा० ४ म० बाल रो० चि०।

गुण—यह कृमि, श्लेष्म, प्रमेह तथा पित्तनाशक है। मद० व० ६। यह कृमि, कफ, प्रमेह तथा मनोविकार नाशक है। भा० पू० १ भा०। (२) रक्त अपराजिता। रत्ना०। (३) क्षीर काकोली। (See-kshira kákoli.) र०, मा०। (४) सूर्यमुखी।

अर्क पुष्पी कल्कम् arka pushpi kalkam —सं० क्लो० आकके फूल गाय के दूध में पीस कर ३ दिन तक रोज प्रातः पीनेसे दाह युक्त मसूद पथरी का नाश होता है। वृ० नि० र० भा० ५ अर्श०।

अर्क प्रभा गुटि(ड़ि)का arka-prabhá-guṭi-(ḍi)ká-सं० स्त्री० रसायनाधिकार में वर्णित रस विशेष। प्रयोगा० रसायना०।

अर्क प्रकाश arka-prakásh-सं० पुं० रावण कृत ग्रन्थ जिसमें अर्क के अनेक उत्तम से उत्तम योग एवं उनके खुचाने की विधियाँ भी गई हैं।

अर्क प्रिया arka-priyá-सं० स्त्री० (१) आदित्यभक्ता, हुरहुर। हुड़हुड़िया-बं०। (Oleome viscosa.)। (२) जवा। जवा। अड़हुल। गुड़हर। ओड़ पुष्प वृक्ष। अड़-उल। (Hibiscus Rosa=Sinonsis.) रा० नि० व० १०।

अर्क फ़वाकह् जदीद áarq-faváka‌h-jadid —अ० निर्माण विधि-अनार अम्ल व मधुर, सेब, बिही ■■ एक डेढ़ (ऽ१॥) सेर, इन सब अमरूद हरएक एक सेर, [illegible] तो०, सफ़ेद चन्दनका बुरादा आधासेर, एवं विधि अर्क परिस्रुत करें। पुनः उतनी ही [illegible] उक्त अर्क में डालकर दोबारा अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—१ तोला पान करें।

गुणधर्म—उत्तमांगों को बलप्रद। मालीख़ोलिया (Melancholia), भ्रम तथा भय दूर करने के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है।

अर्क़ फ़ौलाद áarq-fouláḍ-अ० लौह लोहासव। देखो—लौह।

अर्कबंधु arka-bandhu-हिं० संज्ञा पुं० पद्म। कमल। The lotus

अर्क़ बनफ़्शह् 'जदीद' áarq- banafsh 'jadid'-अ० नूतन बनफ़्शार्क।

निर्माण-विधि—बनफ़्शा ऽ॥ मदभेर उष्ण जल में भिगो कर सवेरे ४० तोला परिस्रुत करें और उक्त अर्क में दोबारा [illegible] बनफ़्शा तर करके पुनः दोबारा ४० तोला परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन विधि—१-१ तोला सायं शर्बत नीलोफ़र या बनफ़्शा [illegible] मिलाकर पान करें।

गुणधर्म—प्रतिश्याय, बाला नव [illegible] में अत्यन्त लाभदायक है। नि० फ़ा० [illegible]

अर्क़ बरिआसिफ़ 'जदीद' áarq-bariásif jadid-अ० नूतन बरिआसिफ़ार्क।

निर्माण-विधि—बरिआसिफ़, [illegible] वर्द, मकोय शुष्क, सौंफ, [illegible] ४० तो०, गुले [illegible] औषधों को रात्रि में उष्ण जल [illegible] प्रातः क्वाथ हरी मकोय [illegible] कर २० तोला अर्क परिस्रुत [illegible] अर्क में पुनः उपर्युक्त [illegible]

मात्रा व सेवन-विधि—३ तो० प्रातः सायं मातदिल शर्बत बज़ूरी या शर्बतदीनार आवश्यकतानुसार मिलाकर पिलाएँ।

गुणधर्म—आमाशय तथा यकृत् को बल प्रदान करता है। शोथ क्षयकर्त्ता एवं श्लैष्मिक ज्वरों में लाभदायक है।

वल्लभा arka-ballabhá-हिं॰संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] गुड़हर। जोद् पुष्पी। (Hibiscus Rosa-sinensis.)

बहार áarq bahár-अ॰

निर्माण-विधि—गुलतरशावह् २ सेर, अर्क गुलाब १ सेर, सौंफ, मवेज़ मुनक्का, किशमिश हरएक १२ तो०, ऊ.द, तर्नंज, बहमन सुर्ख़, बहमन सफ़ेद, शक़ाकुल हरएक १ तो०, अम्बर पौने दो (१॥।) तो०। सबको १४ सेर जल में रात को भिगोकर प्रातःकाल ४ सेर अर्क परिस्रुत करें। कभी पान पत्र १०० अदद, इलायची, दारचीनी, लौंग हरएक १४ मा० और डालते हैं।

मात्रा व सेवन-विधि—१० तो०, अनुपान रूप से सेवन करें।

गुण-धर्म—मूर्च्छा व विभ्रम में लाभप्रद है। तृषानाशक तथा उत्ताप शामक है और हृदय एवं मस्तिष्क को प्रमोद प्रदान करता है।

बहार जदीद áarq-bahár-jadíd-अ॰

निर्माण-क्रम—गुलतुरअ सादा १० सेर, अर्क गुलाब २ सेर, सौंफ, मवेज़ मुनक्का, किशमिश प्रत्येक ३० तो०, ऊ.द, तर्नंज, बहमन सुर्ख़ या सफ़ेद, शक़ाकुल हरएक २ तो०,अम्बर ३॥ मा०। सब को बीस सेर पानी में रात को भिगोकर प्रातःकाल अर्क परिस्रुत करें। उक्त अर्क़में उतनी ही औषध और भिगोकर दूसरे दिन पुनः दोबारा अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—३-३ तो० प्रातः सायं व्यवहार में लाएँ।

गुण-धर्म—मूर्च्छा में लाभप्रद है। तृषा को मारा कर्ता एवं उत्ताप को शमन कर्ता है। हृदय तथा मस्तिष्क को उल्लास प्रदान करता है।

सूचना—कभी पान पत्र २०० अदद, इलायची, दारचीनी, लौंग हरएक २ तो० ४ मा० अधिक डालते हैं। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ बादियान áarq badiyán-अ॰ सौंफ का अर्क।

निर्माण-विधि—सौंफ २॥ सेर, रात को पानी में भिगोकर प्रातःकाल ४० बोतल अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व निर्माण-विधि—१२ तो० अनुपान रूप से सेवन करें।

गुण-धर्म—उष्ण यकृद्वेदना व आमाशय तथा वृक्क की पीड़ा में जो शीतलता के कारण हुई हो, लाभदायक है। यकृद्वोधोद्धाटक और वायु लयकर्ता है। नि० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ बादियान मुरक्कब "जदीद" áarq-bádiyán murakkab,-jadíd-अ॰ देखो–अर्क़ बरिंजासिफ़ जदीद।

अर्क़-बेदमुश्क áarq-bedomushka-फ़ा॰ माउल् खिलाफ़-अ॰। बेदमुश्क का अर्क-इं०। Salix caprea, *Linn.* (water of-) देखो–बेदमुश्क।

अर्क़ बेद सादह् áarq bed sádah-अ॰

निर्माण विधि—बर्गबेदसादा १। सेरको रात्रि भर जल में भिगोकर प्रातःकाल दस बोतल अर्क परिस्रुत करें। पुनः उतना ही बेद सादा उसमें तर करें और दोबारा दश बोतल अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—तीन-तीन तो० प्रातः साय यह अर्क शर्बत उन्नाव २ तो० में मिलाकर पिलाएँ।

गुण-धर्म—हृदय की ऊष्मा, भय एवं मूर्च्छा को दूर करता है। उन्मादजन्य रोगों में लाभदायक है। राजयक्ष्मा में विशेषकर गुणदायक है। साधारण अर्कों की अपेक्षा यह अर्क अधिकतर लाभदायक है। नि० फा० २ भा०।

अर्क भक्ता arka-bhaktá-सं॰ स्त्री॰, हिं॰ संज्ञा स्त्री॰ ब्राह्मी, ब्राह्मी शाक (Hydroco-

tylo asiatica.) । (२) हुरहुरे । हुल-हुल । हुरहुर का वृत्र-हिं० । सूर्य फुल्लवल्ली-म० । (Cleome viscosa.) ग० न० च० ४ । र० मा० ।

अर्क भूतिः arka bhútih-सं० स्त्री० ताम्र भस्म । (Copper oxide.) वै० निघ० २ भा० चोर ताम्ररस० संग्रहणी० चि० ।

अर्क़ मको âaiq-mako-अ० मकोय का अर्क़ ।

निर्माण-विधि—मको शुष्क सवासेर को भिगो कर २० बोतल अर्क़ परिस्रुत करें ।

मात्रा व सेवन-विधि —१२ तो० अर्क़ यथाविधि व्यवहार करें ।

गुण-धर्म —उत्तमांगों तथा प्रकृतोष्मा को शक्ति प्रदान करता है । ऊष्मा को शमन करता तथा पिपासाको तृप्ति प्रदान करता है । वायु रोगों, मूर्च्छा तथा भ्रम में विशेषकर लाभदायी है । ति० फ़ा० १ भा० ।

अर्क़ मको जदीद âaiq mako jadíd-अ०

निर्माण-विधि—मको शुष्क २॥ सेर को जल में भिगोकर बीस बोतल अर्क़ परिस्रुत करें । पुनः उतना ही मको शुष्क उक्त अर्क़ में भिगोकर दुबारा अर्क़ खींचें ।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तो० अर्क़ अनुपान रूप से व्यवहार में लाएँ ।

गुण-धर्म —अर्क़ मको के समान ।

अर्क़ माउज्जुब्न âaiq-máujjubna—अ०

निर्माण-क्रम—पीले हड़ का बक्कल, काबुली हड़ का बक्कल, काले हड़ का बक्कल, हरी गिलोय, बकायन के पत्र, बकायन की छाल, निम्बछाल, निम्बबीज, विजयसार पुष्प, गाव-ज़ुबान, कासनी के बीज, कासनी की जड़, हिरन-खुरी, इमली की गिरी, आमला की गिरी, हड़ का बक्कल, धनियाँ शुष्क, मौलसरी वृक्ष की छाल हरएक १० तो०, शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मेंहदी के पत्र, अबरेशम, रक्तचन्दन का बुरादा, श्वेत चन्दन का बुरादा, शीशम का बुरादा, इनबुर्‌ स्‌अलब ख़ुश्क (सूखी मकोय), गुलेसुर्ख़, झाड़ी बेरकी मूल-त्वचा, अंगमूल, बहेड़ा मूल त्वचा, चमेली पत्र, आबनूस का बु[रादा] उन्नाब, इक्षुमूल प्रत्येक ५ तो०, मक्ख[न] आबमेर, माउज्जुब्न एकपात्र, सबको एक पात्र को मिलाकर प्रातः काल ५० बोतल [परि]मार अर्क़ परिस्रुत करें ।

मात्रा व सेवन-विधि -१० तो० उपयुक्त औषधों के साथ उपयोग में ला[एँ]

गुण-धर्म —आह्लादजनक, शामक [...] शोधक है । वातज रोगों में अत्यन्त [...] जनक सिद्ध हुआ है । ति० फ़ा० १ भा० ।

अर्क़ माउल्लह़म कासनी मकोवाला âarq[-máu]ullahma, kásaní-makoyálá-[अ०] तथा मकोवाला मांसरसार्क ।

निर्माण-विधि—शरिआसिफ़, गुलाब, [...] वर्द, बिल्लोलोटन, सौंफ (कूटा छना [...] मवेज़ मुनक़्क़ा, कबर की जड़, इज़ख़िर [...] मुलेठी, हरी गिलोय, मको हरएक १० [तो०] गावज़ुबान, गुले गावज़ुबान हरएक [...] सम्पूर्ण औषधों को रात्रिभर उष्ण [...] भिगोएँ । प्रातः हरी कासनी का पानी, [...] का पानी जिनमें उक्त दोनों औषधें [...] डाली हों, डालकर युवा बकरे के ४ सेर म[ांस] यत्न् से निकालें और उपयुक्त औष[ध] डाल कर विधि अनुसार २० बोतल [...] खींचें ।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तो० उक्त [...] को उपयुक्त औषध के साथ व्यवहार करें ।

गुण-धर्म—शरीर को पुष्ट करनेवाला, लयकारक तथा आमाशय और यकृ[त की] दशा को सुधारने वाला है । ति० फ़ा० [१] भा० ।

अर्क़ माउल्लह़म खास âarq máullah[ma] khás-अ० मुख्य मांसरसार्क ।

निर्माण-विधि—बालछड़, तेजपात, [...] इलायची, बड़ी इलायची, बहमन [...] लौंग, दालचीनी, ऊदग़ाम पोस्त तुरंज, [...] ज़ुबान, बुज़ीदान, छड़ीला, श्वेतचन्दन, [...] बूया, राम तुलसी के बीज, गुलगाव[ज़ुबान] [...]

...ो पनिरों, ज़र्नबाद, गौंक्र, दरूनज, मस्तगी, ...द कोफी (नागरमोथा) हरएक ४॥ तो०, ...कुल निर्फ़ी, बालबगिरा, गुलेसुर्ख, अब्र्- ...न (कतरा हुआ) प्रत्येक ६ तो०, गैज़ का ...हन ३ तो०, गोश्त हलवान (बकरी के एक ... तक के बच्चे को हलवान कहते हैं, इसका ...स) २४ सेर, बटेर २४ अदद, अर्क बेदमुश्क ...सेर, अर्क गावज़ुबान ६ सेर। अंगूर, सेब, ...ी, रेगमाही, माही रोबियाँ (झींगा मछली) ...एक तीन सेर, झींगा मछली शुष्क या ताज़ा ...सेर, अम्बर २। तो०, मिश्क २। तो०, चांदहे- ...ँ १४ अदद, सोंठा १० माशा। सम्पूर्ण मांसों ... यख़नी प्रस्तुत करके ऊपरोल्लिखित औषधें ...म्मिलित करें और ८० बोतल अर्क परिस्रुत ...रें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तो० अर्क ...युक्त औषध के साथ व्यवहार में लाएँ।

गुण-धर्म—उत्तमांगों और अवयव की शक्ति ...लिए मुख्य पदार्थ है। यह सामूहिक शारीर ...क्ति की वृद्धि करता है। कामोद्दीपक, स्तम्भक, ...था प्रफुल्लता कारक है। हृदय को प्रफुल्ल और ...ष्क को प्रसन्न रखता है। शुद्ध शोणित उत्पन्न ...रता एवं मुख की कांति को निखारता है। ...०फा० १ भा०।

माउल्लहम जदीद aarq-maullahma-jadid—अ० नूतन मांसरसार्क।

निर्माण-विधि—बकरे का मांस १२ सेर ... या हलवान शेर मस्त, मस्त सिंह के बच्चे का ...मांस), नर गौरैया (नर कुलिंक) १०० मात्रा, ...कबूतर, लवा, बटेर प्रत्येक ४० मात्रा, मुर्गी का ...बच्चा ३० मात्रा, तीतर २० मात्रा। सम्पूर्ण मांस ...को शुद्ध स्वच्छ कर यख़नी पकाएँ। तदनन्तर ...इसमें मोमियायी, जुन्दबेदस्तर, सुअद कोफी (नागरमोथा), जदवार, केशर, कस्तूरी, अम्बर हरएक एक तो०, गुलगावज़ुबान, कबाबचीनी, ...बालछड़, तबाशीर, बसफ़ाइज, दरूनज, सीमा- ...लिपूस, ऊदसलीब, सातर फ़ारसी, फ़िनरा सालि- गून, चोबा, फराशियून, जावित्री, जायफल, तुख्म जर्जीर, नागरहे तनुर पेरावी, रेगमाही, फ़लफ़ुल क़ुल्क़ुल प्रत्येक २ तो०, अजवाइन, ज़ूफ़ा शुष्क, अजनुर्की हरएक ३ तो० ४॥ मा०, दालचीनी, तुन्द बेला, अबरेशम (कतरा हुआ) प्रत्येक ७ तो० १॥ मा०, तुख्म हलियून, मूली के बीज, दम्रस्त, तुख्म बालंगा, तुख्म शर्बती, तुख्म रेहाँ, तुख्म फरञ्जमिश्क, बर्ग फ़रञ्जमिश्क, बांदर मोगन, आममानूनी, गुले बाबूना, सताम (मेदा), चूजीदान, क़ुर्फा, गज, मस्तगी, नागे- सर, छुहीचा, तेजपात, रक्तचन्दन, उस्तोख़ुद्दूस, ज़रावन्द मदहर्ज, माहीराबियाँ(झींगा मछली), फ़ुलंज, असारून, कोकनार हरएक ५। तो०, बह- मन सुर्ख व सफ़ेद, तोदरी सुर्ख या सफ़ेद, ऊदग़र्की, शक़ाक़ुल मिश्री, मरिज़ान शीरी, गावज़ुबान, इन्द्रजौ मधुर, बादियान ख़ताई, गुलेसुर्ख, इलायची छोटी व बड़ी, बादरञ्जबूया, परसियावशान (हंसराज), पुदीना, जिन्तियाना, कुलिञ्जन, तुख्म ख़र्बूज़ा, तुख्म गाजर, तुख्म ख़िरनी सफ़ेद, तुख्म ख़ुब्बाज़ी, हब्बुस्सनोबर, हब्बुस्समनह, हब्बुल्कुर्तम, हब्बुल क़ुरत, सपिस्ताँ, माहीराबियाँ (झींगा मछली) प्रत्येक ८॥ तो०, चोबचीनी, अञ्जीर ज़र्द, मवेज़ मुनक्का, किशमिश हरएक २४ तो०, ख़ार ख़समक (गुखरू), सेबमधुर का पानी, बिही मधुर का पानी, मीठे अनार का रस, हर एक ६८ तो०, मिश्री २ सेर ८ छ० ४ तो०, बर्ग रेहाँ ताज़ा आध सेर, उन्नाब विला- यती १०० मात्रा। अम्बर, कस्तूरी, केशर के सिवा जो औषधें कूटने की हैं उनको कूटकर मांसों में डालकर एक रात दिन रहने दें दूसरे दिन अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क हर एक २बोतल, अर्क गावज़ुबान, अर्क ख़्यार शम्बर (अमल- तास) प्रत्येक २ सेर, ताज़े गाजर का रस, इंद्रजल हर एक २० सेर सम्मिलित करके प्रथम बार १२–१४ सेर अर्क प्राप्त करें। इसे पृथक् रखें। पुनः उतना ही और अर्क परिस्रुत करें यह दूसरी कक्षा का अर्क प्रस्तुत होगा। अम्बर, कस्तूरी, केशर की पोटली बाँधकर नैचा के मुख में रखें।

मात्रा व सेवन-विधि—१ तो० अर्कमें २ तो०

मिश्री मिला कर प्रयोग करें। कोई विशेष परहेज़ नहीं। हाँ! अम्ल वस्तुओं से बचना आवश्यकीय है।

गुण-धर्म पुरुष शक्ति को विवर्द्धित करनेवाला शरीर में बल का संचार कर्ता, वृक्क को शक्ति देता, वायु लयकर्ता, संधिवात और नज़लाके विकार को लाभ पहुँचाता है। शीतल रोगोंके नष्ट करने में अक्सीर है। तिο फ़ाο १ भाο।

अर्क़ मुख़्तरिअ़ aarq-mukhtaria-अο एक अर्क विशेष। इο अο।

अर्क़ मुण्डी aarq-mundi-अο मुण्डी का अर्क।

निर्माण विधि मुण्डी सवा सेर को पानी में भिगोकर सवेरे २० बोतल अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—७ तोला यह अर्क अनुपान रूप से व्यवहार में लाएँ।

गुणधर्म—रक्तशोधक और उल्लासकारक है। दृष्टि को शक्ति प्रदान करता, उत्तमांगों को बलवान बनाता और रोध उद्घाटक है। तिο फ़ाο १ भाο।

अर्क़ मुण्डी जदीद aarq-mundi-jadid-अο नूतन मुण्डी का अर्क।

निर्माण-क्रम—मुंडी २॥ सेर को पानी में भिगोकर प्रातः २० बोतल अर्क परिस्रुत करें। पुनः उतनी ही मुंडी उक्त अर्क में भिगोकर दोबारा अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तोο अनुपान रूप से सेवन करें।

गुणधर्म—अर्क मुंडी के समान। तिο फ़ाο १ भाο।

अर्क़ मुब्ही व मुक़व्वी aarq-mubhi-va-muqavvi-अο बल्य व कामोद्दीपक अर्क।

निर्माण-विधि—जावित्री, लौंग, मालबमिश्री दालचीनी हर एक १४ माο, गुल गुड़हल, किशमिश, मिश्री प्रत्येक १० तोο, वर्षा जल २ सेर। औषधों को अधकुट करके बोतल में डाल कर तीन-चार दिन तक धूप में सुरक्षित रक्खें जिससे उसमें ख़ूब जोश आजाए। तदनन्तर सवेरे [illegible] लाएँ। इο अο।

अर्क़ मुरक्कब मुसफ़्फ़ी ख़ून aarq-murakkab-musaffikhún-अο रक्तशोधक [illegible] अर्क विशेष।

निर्माण-विधि—वर्ग शाहतरा, गुल [illegible] तरा, चिरायता, मरफोका, मुण्डी, नीलकण्ठ [illegible] महाड्यर्डा, आबनूस का बुरादा, शीशम का बुरादा [illegible] रक्त व श्वेत चन्दन का बुरादा, अफ़्तीमून ([illegible] में बाँध कर), अमलताश, उन्नाब [illegible] एक [illegible] वर्ग हिना, गुलहिना, वर्ग नीम, गुलनीम [illegible] ७ तोο, नीमकी छाल, बकाइन की छाल, [illegible] की छाल, कचनील की छाल हर एक पाव [illegible] उन्नाब, धमासा हर एक आध पाव, सबको [illegible] सेर पानी में यहाँ तक क्वथित करें कि [illegible] पानी शेष रह जाए। पुनः साफ़ करके [illegible] खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—५ तोο इस अर्क [illegible] २ तोο शर्बत गुलाब के साथ प्रातः सायं [illegible] करें।

गुणधर्म—रक्तशुद्धि के लिए अनुपम है [illegible] फोड़े, फुन्सी, तथा खुजली को दूर करता है [illegible] उपदंश तथा अन्य वातरोगों में लाभप्रद है। [illegible]

अर्क़ मुसक्किन जदीद aarq-musakkin-jadid-अο नवीन शामक अर्क।

निर्माण-क्रम—अर्क़ अजीब (कपूर, [illegible] अजवाइन, सत पुदीना समभाग को लेकर निर्मित) १२ बूंद में, १ बूँद कार्बोलिक एसिड [illegible] कर रक्खें।

मात्रा व सेवन-विधि—ज़रा सी रुई [illegible] फुरेरी इस अर्क में तर करके मसूढ़ों पर [illegible] और यदि छिद्र हो तो उसमें भरें।

गुणधर्म—दन्तपीड़ा को तत्काल बन्द करता है। तिο फ़ाο १ भाο।

अर्क़ मुसफ़्फ़ी aarq musaffi-अο [illegible] रक्तशोधक, शोधक अर्क।

(१) निर्माण-विधि—शाहतरा ३ [illegible] शाहतरा का पत्ता, मरफोका, मेंहदी की [illegible]

...ऊ की हरी पत्ती, मुण्डी, मजीठ, हल्दी, नीलकण्ठी ...द्रुकल्क, पवांमूल, चिरायता, गुल न काह, ...म कामनी, रक्त व सफेद चन्दन का बुरादा, ...शम की लकड़ी का बुरादा, आबनूस का ...दा, नीम पुष्प, पीत कारवी। समस्त औषधें ...समान भाग लेकर रात को कलईदार देगचा ...गों के प्रातः काल यथा विधि अर्क खींचें।

...मात्रा व सेवन-विधि—प्रकृति तथा अवस्था- ...सार ६ से १२ तो० तक उक्त अर्क को शर्बत ...व या शर्बत शीशम प्रभृति में मिलाकर ...लाएँ।

...गुणधर्म—रक्त शुद्धि के लिए अत्युत्तम है। ...म एवं निर्बल प्रकृति वालों के लिए विशिष्ट ...ट है। अति शीघ्र लाभ करता है।

(२) निम्ब पुष्प, निम्ब फल, निम्ब वृक्ष की ...ल, निम्ब पत्र, मेंहदी की हरी पत्ती, मेंहदी का ...व, शीशम वृक्ष की छाल, कचनार की छाल ...येक एक पाव। सब को ८ सेर जल में क्वथित ...र शुद्ध करें। तदनन्तर अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—६ तो० से ५ तो० ...र्यन्त प्रति दिवस प्रातः सायं पिलाएँ।

गुणधर्म—यह अत्यन्त सरल योग है; किन्तु ...अनुभूत कथा का रक्तशोधक तथा अनुभूत है। ...वै० फ़ा १ भा०।

(३) अर्क़ मुसफ़्फ़ी जदीद—नीम पत्र, ...नीम की छाल, बकाइन की छाल, बकाइन का ...पत्ता, कचनार की छाल, मौलसिरी की छाल, ...छोटी दुद्धी, श्याम भृङ्गराज पत्र, जवासा के पत्ते ...की शाख, गूलर की छाल, मेंहदी पत्र, मुण्डी, शाहतरा, सरफोका, धमासा, चोब, विजयसार, गुल नीलोफ़र, गुले सुर्ख, शुष्क धनियाँ, श्वेत चन्दन, तुख्म कासनी, कासनी की जड़, मजीठ, बर्ग बेद सादा, शीशम की लकड़ी का बुरादा प्रत्येक २० तो०। सब को एक दिन रात जल में भिगोकर १२ सेर अर्क खींचें और इस अर्क में दोबारा उपर्युक्त औषधों को भिगोकर १२ सेर अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—तीन-तीन तोला इस अर्क में शर्बत उन्नाब या शर्बत शीशम १ तो० मिलाकर प्रातः सायं पिलाएँ।

गुणधर्म—उत्तम रक्तशोधक है। फोड़े फुन्सी का विकार इसके उपयोग से जाता रहता है। शरीर तथा चेहरे का रंग साफ़ हो जाता है। उपदंश तथा सूज़ाक में भी लाभ पहुँचाता है। सत्याहार तथा प्रयत्न प्रभावकारक है। नि० फ़ा० २ भा०।

अर्क़ मुसफ़्फ़ी ख़ून बनुस्ख़ा कलाँ ʿaarq-musaffi-khun-ba-nuskhá-kalán—अ०

निर्माण-विधि—नीम पत्र, नीम की छाल, बकाइन की छाल, कचनार की छाल, मौलसरी की छाल, दुद्धी ज़र्द, काली भंगरैया का पत्ता, जवासा के पत्ते की शाख, गूलर की छाल, मेंहदी का पत्ता, मुण्डी, शाहतरा, सरफोका, धमासा, विजयसार की लकड़ी, गुलनीलोफ़र, गुले सुर्ख, शुष्क धनियाँ, श्वेत चन्दन, तुख्मकासनी, कासनी की जड़, मजीठ, बर्ग बेदसादा, शीशम की लकड़ी का बुरादा प्रत्येक १० तो०। इन सब औषधों को २४ सेर जल में रात दिन तर करें। तदनन्तर १२ सेर अर्क परिस्रुत करें। कभी नीम का बीज बकाइन का बीज, तुख्म शाहतरा, तगर, अफ़्सन्तीन, तेजपात, हरी गिलोय, उन्नाब, लवंग, चिरायता प्रत्येक १० तो० और समावेशित करते हैं।

मात्रा व सेवन-विधि—१२ तोला यह अर्क शर्बत उन्नाब २ तोला के साथ पीएँ।

गुणधर्म—इस अर्क से रक्त शुद्ध होता है। फोड़े फुन्सियों की शिकायत दूर होती है तथा चेहरेका रंग चमकदार और साफ़ निकल आता है। यह उपदंश व सूज़ाकमें भी लाभदायक सिद्ध हुआ है। ति० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ मुहल्लिल ʿaarq-muhallil—अ० लयकारक अर्क।

निर्माण-विधि—कलमी शोरा ४ तो०, गंधक आमलासार, गोखरू हर एक १तो०। सबको पानी में भिगोकर अर्क परिस्रुत करें और उक्त अर्क में आऊ का पत्ता ८ तो०, गुले ग़ाफ़िस, अफ़्सन्तीन

रूमी, बालछड़, तुख्म खर्बूजा, तुख्म कासनी सौंफ की जड़, कासनी की जड़, करफ़स (अजमोदा) की जड़, इज़खिर की जड़ प्रत्येक ८ तो०, मकोय की हरी पत्ती का फाड़ा हुआ पानी, कासनी की हरी पत्ती का फाड़ा पानी प्रत्येक २ सेर, शुद्ध सिरका १ सेर सम्मिलित कर यथाविधि अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तोला अर्क प्रति दिवस प्रातः काल सेवन करें।

गुणधर्म—यह अर्क समस्त उदरीयावयवों के शोथ का लयकर्त्ता है।

विशिष्ट गुण—यकृद् शोथ तथा प्लीहा शोथ के लिए विशेष कर लाभप्रद है। नि० फा० १ भा०।

अर्क मूर्ति रसः arka murti-rasah- सं० पु० यह रस सन्निपात ज्वर में प्रयुक्त है। भै० ज्व० चि०।

अर्कमूर्ती रसः arkamúrtírasah-सं० पु० ताम्बे के पत्र के दोनों तरफ बराबर पारा और गन्धक लपेटकर हांडी में रखकर ऊपर से हांडी का मुख बन्द करके दो पहर तक तीव्र अग्नि में पकाएँ, फिर स्वांग शीतल होने पर ताम्बे के पत्र के बराबर बच्छनाग और उतना ही गन्धक मिलाकर चित्रक के क्वाथ और अद्रख के रससे भावना दें। मात्रा—१ रत्ती।

गुण—यह सूजन पांडु, कफ और वातरोगों को नष्ट करता है। इसपर लघु पथ्य खाना उचित है। रस० यो० सा०।

अर्कमूल arkamúla-हिं० संज्ञा पु० [सं०] ईसरमूल लता। रुद्रिमूल। अहिगंध।

इसकी जड़ साँप के काटने में दी जाती है। बिच्छू के डंक मारने में भी उपयोगी होती है। यह पिलाई और ऊपर लगाई जाती है। स्त्रियों के मासिक धर्म को खोलने के लिए भी यह दी जाती है। कालीमिर्च के साथ, हैज़ा, अतिसार आदि पेट के रोगों में पिलाई जाती है। पत्ते का रस कुछ मादक होता है। जिसका पेट की बीमारियों में दिया जाता है। रस की मात्रा-३० से १०० बूंद तक है।

अर्क मूलम् arka-múlam-सं० क्ली० ... नाम से प्रसिद्ध है। एक वृक्ष विशेष। ... अग्निमा० चि० शार्ङ्गगुड़।

अर्क मूला arka-múlá-सं० स्त्री० ईसर ... ईशर मूल-बं०। जरावन्दे हिन्दी-फ़ा०, ... (Aristolochia Indica.) ...

अर्क मूलादि धूम्र arkamúládi dhúmra ... -सं० क्ली० आक की जड़, मैनसिल ... भाग, त्रिकुटा अर्ध भाग इसका चूर्ण ... करके ऊपर से ताम्बूल खाने से अथवा ... से ५ प्रकार की खाँसी का नाश होता है। ... नि० र०।

अर्क याबिस arq-yábis-अ० ... (जुहवारी)

अर्क लवणम् arka-lavanam-सं० ... अर्कखार, मन्दारखार। (An alkaline ... Calotropis gigantea.) वै० निघ० ...

अर्क लेप arka-lepa सं० पुं० ... दालचीनी, चित्रक, गुड़, दन्तीबीज, ... कसीस को आक के दूध में पीसकर ... कर्णमूल का नाश होता है। वृ० नि० र० ...

अर्क लोकेश्वरो रसः arka-lokeshvaro-rasah-सं० पु० ४ तो० शुद्ध पारामें आक के ... की बार बार भावना दें, फिर ८ तो० शुद्ध गन्धक ... और ३२ तो० शंख चूर्ण इन दोनों को ... दूध से तीन दिन तक कई बार भावना दें। ... पर उपयुक्त पारे में मिला दें। फिर ... से आधा सोहागा मिलाकर आक के दूध से ... पहर भावना दें। जब वह सूख जाय ... हांडी में चूना पीसकर औषध को रखकर ... पोते हुए ढक्कन से ढक कर बारीक मिट्टी ... ढक्कन के चारों तरफ कर दें, फिर लघु पुट ... मात्रा—४ रत्ती। अनुपान—घी, मिर्च ... पथ्य—दही, भात। रात को इस पर ... और गुड़ सेवन करना चाहिए।

गुण—संग्रहणी के लिए यह अद्भुत है। रस० यो० सा०।

अर्क लोहाभ्रकम् arka-lohábhrakam-सं० क्ली० विदारीकन्द, पिण्ड खजूर, जवासा, ...

[पार]द, पीपल और दाख इनका चूर्ण समान भाग [ले]। विदारीकन्द के बराबर प्रत्येक तांबा, लोह [भ]स्म और अभ्रक मिलाएं।

मात्रा—१-२ रत्ती। घी और शहद के साथ [ख]ाने से छः लक्षणों से युक्त राजयक्ष्मा, उरःक्षत, [र]क्त पित्त, रक्तार्श और अग्निमांद्य का नाश होता [है]। रस० यो०.सा०।

[अर्क]लोकेश्वर रसः arka-lokeṣhvara-ra-[s]ah–सं० पुं० शुद्ध पारद ४ तो०, आक के [दू]ध में खरल करें, पुनः शुद्ध गंधक ८ तो० [औ]र बड़े शंख की भस्म १२ तो०, दोनों को चित्रक [के] रस में १ दिन खरल करें, पश्चात् उक्त पारद [को] इसी चूर्ण में मिला दें, और १ तो० सोहागा [इस]में और मिलाएँ, सब को मिलाकर १ प्रहर [आ]क के दूध में खरल करें, पीछे उसको १ हंडी [के] भीतर लेप कर सुखा लें, पीछे सम्पुट में रख [क]र पुट दें। जब शीतल हो जाए, तब निकाल [क]र रक्खें।

मात्रा—१-४ रत्ती।

अनुपान—मक्खन।

पथ्य—दही, भात। रात में गुड़ मिश्रित [अ]न्न खाना चाहिए। इसके सेवन से घोर संग्रहणी [दू]र होती है। बृ० रस० रा० सु०। गृह० [नि]०।

[अर्क]वल्लभः arka-vallabhah–सं० पुं० बन्धु [जी]व वृक्ष। बन्धूक पुष्प, दुपहरिया–हिं०। गुल [दु]पहरिया–फ०, हिं०। बान्धुलि वृक्ष, दुपुरे [च]ण्डी–बं०, दुपारी-मह०। (Pentapetes phœnicea, *Linn.*, *Roxb.*) रा० नि० [व]० १०।

[अर्]क वल्ली arka-vallí–सं० स्त्री० आदित्य-[भ]क्त। हुलहुल–हिं०। हुरहुरे-ब०। (Cleome Viscora.) वै० निघ०।

[अर्]कवेदम्,-धम् arka-vedam,-dham–सं० [क]्ली० तालीशपत्र। (Abies webbiana.) प० मु०। रा० नि० व० ६।

अर्क शाहतरा āarq-shāhtará
अर्क शाहतरा जदीद āarq-shāhtará-jadíd

नवीन शाहतरा का अर्क।

निर्माण-क्रम—२॥ सेर शाहतरा को जल में भिगोकर २० बोतल अर्क परिस्रुत करें। पुनः उक्त अर्क में उतना ही और शाहतरा भिगोकर दोबारा अर्क खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तो० अर्क अनुपान रूप से व्यवहार करें।

गुणधर्म—रक्तशोधक है। चेहरे का वर्ण निखारता और फोड़े फुन्सी की शिकायत को दूर करता है।

अर्क शीर āarq-shír–अ० दुग्धार्क।

निर्माण-क्रम—कासनी का बीज, गुलें गावज़ुबान, खीरा का बीज, वंशलोचन, ज़हरमोहरा हर एक एक तो०, गुलें सुर्ख़, मकोय शुष्क, गावज़ुबान, मग़ज़ कद्दू, तुख़्म काहू प्रत्येक २ तो०, तुख़्म खुर्फ़ा ३ तो०, शुष्क धनियाँ, श्वेत चन्दन रक्त चन्दन हर एक ४ तो०, कद्दू सब्ज़, कासनी की हरी पत्ती, काहू की पत्ती हर एक ४ तो० ८ मा०, गुले कँवल २ तो०, कसेरू, गुलेबेद, गुले नीलोफ़र हर एक १० तो०, अर्क बेदमुश्क, अर्क शाहतरा, अर्क मको हर एक १ सेर, अर्क गुलाब २ सेर, अर्क बेद सादा ४ सेर, बकरी का दूध १० सेर, वर्षा जल आवश्यकतानुसार विधि अनुसार अर्क परिस्रुत करें।

गुणधर्म—राजयक्ष्मा तथा वातज्वर के लिए लाभदायक है। इ० अ०।

अर्क शीर जदीद āarq-shír-jadíd–अ०

निर्माण-क्रम—हरा गुर्च (छिला हुआ) १८ तो०, गुल नीलोफ़र, गुल मुंडी, ब्रह्मदण्डी, गुल मासफ़र, (कुसुम्भ पुष्प), मेंहदी पुष्प, निम्ब पुष्प, गुल सेवती, गुलें सुर्ख़, पीली हड़ का बक्कल, हलेला स्याह, आमला छिला हुआ हर एक १० तो०, सरफोंका चिरायता, बादरअबूया हर एक १४ तो०, कासनी का बीज, खीरा का बीज, खुर्फ़ा का बीज, खर्बूज़ा का बीज, हर एक

१८ तो०, शाहतरा की पत्ती, झाऊकी पत्ती, नगुन्द-बावरी, नीलकण्ठी, मेंहदी की हरी पत्ती हर एक आधसेर, सफ़ेद चन्दन का बुरादा, लाल चंदन का बुरादा, शीशम का बुरादा, आबनूस का बुरादा, निम्ब की लकड़ी का बुरादा, हर एक १ पाव केवड़ा की जड़ २ सेर। सम्पूर्ण औषधों को रात्रि भर उष्ण जल में भिगोकर। प्रातः काल बकरी का दूध १० सेर, कासनी की पत्ती का फाड़ा हुआ पानी ४ सेर, अफ़्सीमून विलायती, बसफ़ाइज पिस्ती प्रत्येक १० तो० और सम्मिलित कर अर्क़ परिस्रुत करें और दोबारा उक्त अर्क़ में उपर्युक्त औषध डालकर पुनः अर्क़ परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तो० से ४ तो० पर्यन्त यह अर्क़ प्रति दिवस प्रातः सायं दोनों काल शर्बत उन्नाब या कोई अन्य उपयुक्त शर्बत मिलाकर पिलाएँ।

गुणधर्म—उपदंश, कुष्ठ तथा अन्य वात रोगों में अत्यन्त लाभप्रद है। ति० फ़ा० २ भा०।

अर्क़ शीर बसीत् āarq-shír-basít-अ०।

योग निर्माण-विधि—छाग दुग्ध २ सेर, अर्क़ बेद सादा २ सेर, अर्क़ बेदे मुश्क, अर्क़ शाहतरा हर एक १ सेर, मिश्री आध पाव यथा विधि अर्क़ परिस्रुत करें।

गुणधर्म—राजयक्ष्मा और वात ज्वर के लिए लाभदायक है। इ० अ०।

अर्क़ शीर मुरक्कब जदीद āarq shír murakkab-jadíd-अ० नूतन मिश्रित दुग्धार्क़।

निर्माण-विधि—तुख़्म कासनी, गुल गावज़ुबान, खीरा के बीज, तबशीर, ज़हर मोहरा प्रत्येक १ तो० गुले सुर्ख़, मकोय, गावज़ुबान, मग़ज़कदू, तुख़्म काहू प्रत्येक २ तो०, तुख़्मखुर्फ़ा ३ तो०, शुष्क धनियाँ, रक्त व श्वेत चन्दन, प्रत्येक ४ तो०, हरी कासनी की पत्ती, हरा कदू, काहू पत्र प्रत्येक ४ तो० ८ माशा, कमलपुष्प २ तोला, कसेरू, गुलबेद, गुलनीलोफ़र हर एक १० तो०, अर्क़ बेदमुश्क, अर्क़ शाहतरा, अर्क़ मको हर एक एक सेर, अर्क़ गुलाब २ सेर, अर्क़ बेद सादा ४ सेर, छागदुग्ध १० सेर। इनमें यथावश्यक जल मिश्रित करके ८० बोतल अर्क़ परिस्रुत करें। पुनः इस अर्क़ में उपर्युक्त औषधों को मिश्रित कर दोबारा अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—१ तोला ... प्रातः सायं तथा मध्याह्न तीनों काल ... करें।

गुण-धर्म—रक्तशोधक, बल्य, उष्मा... तथा तर है। वायु रोगों तथा राजयक्ष्मा में ... सिद्ध हुआ है। ति० फ़ा० १ भा०।

अर्क़ सम्मुलफ़ार āarq-sammulfár-... संखिया का घोल, फ़ूलर महाशय का ... Fowler's solution (Liquor Arsenicalis) देखो–संखिया।

अर्क़ सम्मुलफ़ार मुरक्कब व ब्रोमीन āarq-sammulfár murakkab ba ... min–अ० (Liquor Arsenici ... miatus) देखो–संखिया।

अर्क़ सम्मुलफ़ार मुरक्कब व सीमाब व आयोडीन āarq-sammulfar murakkab ... símáb va áyodín–अ० डूनोवन ... का घोल। Donovan's solution (Liquor Arsenii et Hydrargyri Iodidi) देखो--संखिया।

अर्क सुता arka-sutá–सं० स्त्री० कृष्ण ... जिता। Clitorea Ternatea (The black var. of-) वै० निघ०।

अर्क सुधा arka-sudhá–सं० स्त्री० मदार ... -हिं०। सक्‌रुल् अश्र, शकर मदार अ०। ... मदार सुधा-बं०। गुण—गुल्मरोग नाशक है। ... निघ०।

अर्क़ सूज़ाक āarq súzák–अ० पूयमेह ...

निर्माण-विधि—सूखी धनियाँ १ तोला ... रात्रि भर आधपाव जल में भिगोएँ और प्रातः काल इसका क्वाथ विधि द्वारा काढ़ा प्रस्तुत ... शीतल होने पर इसमें २ तो० मिश्री और १ ... रोग़न सन्दल सम्मिलित कर अर्क़ तैयार कर लें।

मात्रा व सेवन-विधि—प्रातः सायं व त्याह १-१ तो०।

गुण-धर्म—सूज़ाक के लिए यह अत्यन्त लाभ-दायक सिद्ध हुआ है। इसे व्यवहार में लाने से सूज़ाक, वेदना, रक्त, पीव तथा मूत्र सम्बन्धी सम्पूर्ण शिकायतें दूर हो जाती हैं।

नोट—हिन्दुस्तानी दवाखाना देहली का नाम नुसख़ा है जिसे जनाब मसीहुल्मुल्क हकीम अजमलख़ाँ साहब ने अपनी असीम कृपा से अपने गुप्त योगों में से प्रदान किया था।

सोडा मुरक्कब व सम्मुल्फ़ार ãarq-sodá murakkab ba sammulfar–अ० (Liquor sodii arsenatis) देखो—संखिया।

सोय ãarq-soy
शिब्बित ãarq-shibbit
शविद,-त ãarq shavid,-t
—अ० सोया (फा) का अर्क़। Dill water (Aqua anothi)। देखो–शतपुष्प।

सौंफ ãarq-sounf–उ० सौंफ का अर्क़। Anise water (Aqua anisi) देखो–सौंफ।

संखिया तुर्श ãarq-sankhiyá tursha –अ० (Liquor arsenici hydrochloricus). देखो–संखिया।

हड़ताल ãarq-haratál–अ० हड़ताल का अर्क़। देखो–हरिताल।

हराभरा जदीद ãarq-harábhará-jadid–अ०

योग निर्माण-क्रम—लाल व सफ़ेद चन्दन, ख़स, पद्माख, नागरमोथा, हरी गिलोय, शाहतरा, नीम की छाल, गुल नीलोफ़र, तुख़्म कासनी, सौंफ, कद्दू के बीज, नेत्रबाला, धनियाँ, तुलसी के बीज, बहेड़े की जड़, इक्षुमूल, जवासा की जड़, काम्नी की जड़, धमासा, मुलेठी, मुण्डी, इलायची छोटी, कोकनार (पोस्त का डोंडा) हरएक एक तो०, रात को जल में भिगोकर यथा विधि अर्क़ परिस्रुत करें। पुनः इस अर्क़ में उपर्युक्त औषध भिगोकर दूसरे दिन दोबारा अर्क़ परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि–१॥ तो० उपयुक्त औषध के साथ।

गुणधर्म—राजयक्ष्मा में अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है। मूत्र दाह, सूज़ाक और मूर्च्छा के लिए भी गुणदायक है तथा उसमांगों को बल प्रदान करता है। प्रधान गुण-राजयक्ष्मा के लिए विशेषकर लाभप्रद है।

अपथ्य—उष्ण एवं शुष्क वस्तु।

नोट—यक्ष्मा के लिए जनाब मसीहुल्मुल्क हकीम अजमलख़ाँ साहब का मुख्य नुसख़ा है।

हाज़िम ãarq házim
हाज़िम जदीद ãarq házim jadid
–अ० पाचकार्क़।

निर्माण-विधि—बबूल की छाल १० सेर, किशमिश हरा, तथा मिश्री प्रत्येक २ सेर, लहसुन, लौंग प्रत्येक १ तो०, ऊद ग़र्क़ी २ तो०, सफ़ेद चन्दन २२ मा०, बीज बनफ़्सा १८ मा०, सुअदकोफ़ी (नागरमोथा) १० मा०, पोस्त तुरंज ४ तो०, बहमन सफ़ेद व लाल, क़ाक़ुला, सालबमिश्री, तेजपात, दालचीनी, गुलगावज़ुबान हरएक २ तो०, ख़स ४ तो०, बड़ी इलायची का दाना २ तो०, जायफल, जावित्री, हरएक २ तो०, केशर १ तो०, अम्बर ६ मा०, अम्बर व केशर के सिवा शेष सम्पूर्ण औषधों को रात्रि भर उष्ण जल में भिगोकर प्रातःकाल १० बोतल अर्क़ परिस्रुत करें। केशर व अम्बर की पोटली अर्क़ खींचते समय नीचे के मुँह में रख दें। इस अर्क़ में समग्र औषधों को पुनः तर करके फिर दस बोतल अर्क़ खींचें।

मात्रा व सेवन-विधि—सवा तो० यह अर्क़ किसी उपयुक्त शर्बत के साथ या वैसे ही पिलाएँ।

गुण-धर्म—आमाशय के सम्पूर्ण दोषों को दूर करता है। पाचक, क्षुधावर्द्धक, शरीर में

चुस्ती व चालाकी लाता एवं बल तथा ओजको बढ़ाता है। ति० फा० १ व २ भा०

र्क हिता arka-hitá-सं० स्त्री० आदित्यभक्ता, हुलहुल, हुरहुर-हिं०। हुड़हुड़िया-बं०। (Oleome viscosa) सूर्य फुलवल्ली -मह०। रा० नि० व० ४।

र्क हेमाम्बुदम् arka-hemámbudam-सं० क्ली० खस, पतंग, कमलकेशर, चन्दन, एर्वारुक (ककड़ी भेद), नागकेशर, दारुहल्दी, नागरमोथा, तृणमणि (कैरवा) और श्वेत कमल इन सबको बराबर लेकर बहुत बारीक चूर्ण बनाएँ। फिर खस के बराबर ताम्बा, लोहा, और अभ्रक भस्म पृथक् पृथक् मिलाकर शहद के साथ खाने से मुख, नेत्र, कर्ण, गुदा, और रोम कूपों से निकलता हुआ रक्त बन्द होता है। र० यो० सा०।

अर्क़ हैज़ा ãarq-haizá-अ० वैशूचिकार्क।

निर्माण-विधि—(१) ज़रिश्क, अनारदाना खट्टा प्रत्येक एक पाव, रक्त चन्दन का बुरादा, आलूबोखारा, सौंफ प्रत्येक अर्धसेर, पुदीना हरा, दालचीनी प्रत्येक १ सेर, तबाशीर ७ तो०, कपूर ४ मा०, बड़ी इलायची आधपाव, शुद्ध जल १० सेर, औषधों को पानी में भिगोकर यथाविधि ५ सेर अर्क़ परिस्रुत करें। अर्क खींचते समय दो माशा कपूर नीचे के मुँह में रख दें।

मात्रा व सेवन-विधि—२ तो० यह अर्क दो-दो घंटे के अन्तर से पिलाते रहें।

गुण-धर्म—हैज़ा वबाई के लिए अत्यन्त लाभदायक है। तीव्र तृषा को तत्काल शमन करता है और पित्त को समूल नष्ट करता है। ति० फा० ५ भा०।

(२) दरियाई नारियल, तुरञ्ज की पीली छाल, गुलाब की कली, पपीता, कागज़ी नीबू के बीज, पियारांगा, नीम वृक्ष की छाल, सौंफ हरएक ६ तो०। सबको यवकुट करके अर्क गुलाब में तर करें। प्रातः शुद्ध सिरका १ सेर, आबतुरञ्ज, कागज़ी नीबू का रस, हरे कुकरौंधा का रस, हरे पुदीना का फाड़ा हुआ रस प्रत्येक १ पाव सम्मिलित कर अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा व सेवन-विधि—दो-दो तो० प्रातः सायं नींबू का सिकञ्जबीन मिलाकर या यूँ ही पिलाएँ। ति० फा० २ भा०।

अर्क़ हैज़ा वबाई ãarq-haizá-vabái-अ० संक्रामक वैशूचिकार्क।

निर्माण-क्रम—प्याज़, लहसुन हरएक ... सेर, आकाशबेल २ सेर, ज़ीरा स्याह आध... इलायची श्वेत, सोंठ, पीपल प्रत्येक ८ ... पुदीना शुष्क १६ तो०, दालचीनी १४ तो०। ... को कूटकर रात को पानी में भिगो दें और ... यथाविधि ५ सेर अर्क परिस्रुत करें तथा ... में रखें।

मात्रा व सेवन-विधि—१ तो० से १ ... तक प्रातःकाल पान करें।

गुण-धर्म—वबाई हैज़ा के दिनों में ... संरक्षणार्थ हेतु इसका उपयोग अत्यन्त लाभ... है। हैज़ा के रोगी के लिए भी इसका प्रयोग ... ही लाभदायी है। ति० फा० २ भा०।

अर्क क्षारः arka-ksharah-सं० पुं० आक... कोमल पत्तों को तेल और पाँचो नमक तथा ... के साथ विधिवत् भस्म करके क्षार बनाएँ। ... उष्ण जल या मद्य के साथ सेवन करने से ... बवासीर का नाश होता है। वृ० नि० ... वातार्श।

अर्क क्षीरम् arka-kshíram-सं० क्ली० ... वृक्ष निर्यास। आकन्देर, थाटा-बं०।

गुण-कृमिहर, व्रणघ्न, कुष्ठ, उदररोग तथा अर्श... हित है। राज०। तिक्त व लवण रसयुक्त, उष्ण... वीर्य, लघु, स्निग्ध, गुल्म एवं कुष्ठ हर और उद... विकार तथा विरेचन में हित है। भा० पू० १ भा०। च० द० अर्श-चि०।

अर्काकिया arkákiyá-अ० मकड़ी का जाला। (Spider's web.)

अर्काङ्कुरादि स्वरसः-arkánkurádisvarasah-सं० पुं० आक के अंकुरों को कांजी या ... रस में पीसकर और नमक तथा तेल मिलाकर ... थूहर के डंडे में भरकर उसपर कपड़मिट्टी करें।

फिर पुटपाक विधि से पकाकर उसका रस निकालें, फिर उस रस को गुनगुना करके कान में डालने से कान के दर्द का नाश होता है। वृ० नि०।

दि क्वाथः arkádikváthah-सं० पुं० आक की जड़, पीपलामूल, सहिजन की छाल, दारुहल्दी, चव्य, मरहालू, पीपल, रास्ना, भांगरा, नवा, चित्रक, वच, मोर, चिरायता। इनका ध्य सन्निपात, तन्द्रा, वायु, सूतिका रोग, शीत और अपस्मार का नाशक है। वृ० नि० र०।

दिगणः arkádiganah-सं० पुं० मन्दारके गों की ओषधियां।

(१) आक, (२) सफेद आक, (३) नागदन्ती, (४) विशल्या (लांगली), (५) भार्गी (भार्गी), (६) रास्ना, (७) वृश्चिकाली, (८) कंजा, (९) ओंगा, (१०) काकनी, (११) श्वेता, (१२) महाश्वेता (ये दोनों कोइल के भेद हैं) और (१३) हिंगोट इन इंगुदी यह अर्कादिगण है। सु० सू० ३८ अ०।

गुण—कफ, मेद दोष, विष, कृमिरोग, कुष्ठ इनको नष्ट करता है और विशेष करके को शुद्ध करता है। वा० सू० १५ अ०।

तैलम् arkáditailam-सं० क्ली० आक रस, धतूरे का रस, सफेद थूहर का रस, सहिजन का रस, कांजी प्रत्येक १ प्रस्थ कूट और सानक प्रत्येक २-२ पल। इनके साथ एक थ तैल का पाक सिद्ध करें। यह खञ्जी, शूल, पक्षाघात और गृध्रसी का नाशक है। नि० र०।

लेपः arkádilepah-सं० पुं० आक का , थूहर का दूध, गोमूत्र, कड़वी तरोई के , कंज की गिरी इन सबको बकरे के में पीसकर लेप करने से मस्सों का नाश है। यो० र०।

arkán-फ़ा० मेंहदी, हिना। (Lawsonia inermis) इं० हैं० गा०।

arqán-अ० यक़ीन, कॉवर, कामला।

देखो—कामला। जॉण्डिस (Jaundice.) इं०।

अर्क़ान arqan } -यू० मेंहदी। (Myrtle, Henna plant..)
अर्क़ुन arqún }

अर्कान arkán } -अ० रुक्न का बहुवचन है। अग्नि, वायु, जल तथा पृथ्वी प्रभृति चार भूत (तत्व) विशेष जिनसे सृष्टि की सम्पूर्ण वस्तुएँ उद्भूत हुई हैं। (Elements.)
उस्तुकुस्सात ustuqussát }

देखो—तत्त्व।

अर्कानलेश्वरः arkánaleshvarah-सं० पुं० पारा १ भाग, सुवर्ण पत्र १ भाग दोनों को मिलाएँ। जब पारे में सुवर्ण अच्छी तरह मिल जाए तब पारेके समान सोना मालो और आधे प्रमाण में गन्धक मिलाकर अग्नि पर पिघलाकर पर्पटी बनाएँ। फिर पर्पटी का चूर्ण करके एक दिन बालुकायन्त्र में पकाएं। यदि इसकी शक्ति बढ़ानी हो तो गन्धक दे दे कर ६ लघुपुट दें। नोट—इसमें स्वर्ण के स्थान में चाँदीपत्र और सोनामाखी के स्थान में किसी किसी के मत से वैद्यक हरिताल डालते हैं। रस० यो० सा०।

अर्कावली arkávalí-सं० स्त्री० गुर्जा (एक हिन्दी दवाई)।

अर्काश्मन arkáshman-हिं० पुं० } (१)
अर्काश्मा arkáshmá-सं० पुं० }

(A crystal lens.), सूर्य कान्तमणि। (२) (A ruby.), चुन्नी। पन्ना। एक प्रकार का छोटा नगीना। धुनि, पाया-सं०। अरु० यांपल। हला०।

अर्काह्ली arkáhulí-सं० (१) सूर्य कान्तमणि (The sun stone.)। (२) हुरहुर, सूर्यावर्त। (Gynandropsis Pentaphylla.) अन्धाहुली-हिं०।

अर्काह्वः arkáhvah-सं० पुं० (१) तालीशपत्र (Tálíshapatra.)। (२) सूर्यकांतमणि (A crystal lens; a rubby.)। (३) अर्क वृक्ष। (Calotropis gigantea.) अम०।

अर्क़ियात āarqiyát-अ० (ब० व०), अर्क़ (ए० व०) Waters (Aquae.) देखो—अर्क़ ।

अर्की arkí-सं० पुं० मयूर, मोर पक्षी । मयूर -बं० । मोरी-मह० । (A peacock.) वै० निघ० ।

अर्क़ील āarqíl-अ० अण्डे की ज़र्दी, अण्डपीत भाग । (Yolk of an egg.)

अर्क़ुज्जबाल āarqujjabála-अ० मोमियाई । See-Momiyái

अर्क़ुज़्ज़बीब āarquzzabíba-अ० मुनक्का या दाख का पानी जो विशेष विधि द्वारा निकाला गया हो ।

अर्क़ुत्तीब āarquttíba-अ० (१) अमरार (A tree.) । (२) ज़र्नबाद, नरकचूर, कचूर।(Curcuma zedoaria, *Roscoe.*)

अर्क़ुल् अरूस āarqul-āarúsa-अ० अभ्रक, मोडर(ल) । Talc (mica).

अर्क़ुल् क़दीद arqul-qadída-अ० भुना हुआ नमकीन मांस जिसे यात्रा में साथ ले जाते हैं ।

अर्क़ुल्काफ़ूर āarqulkáfúra-अ० (१) कपूर का अर्क, कर्पूरासिद्द । (The spirit o Liquor of Camphor.) । (२) ज़र्नबाद, नरकचूर, कचूर । (Curcuma zedoaria, *Roscoe.*)

अ.क़ुश्शज्र āarqusbshajra-अ० गोंद निर्यास। (Gum.)

अ.क़ून āarqúna-अ० एक पौधा है जिसकी पत्तियाँ शक़ायक़ुन्नुअ्मान (गुले लाला) जैसी होती हैं ।

अर्क़े गुले सुर्ख़ āarqe-gule-surkha-फ़ा० गुलाब, गुलाब जल, गुलाब का अर्क । (Rose water.) स० फा० इं० ।

अर्क़े गोगिर्द āarqe-gogirda-फ़ा० गंधकाम्ल, गंधक का तेजाब (Sulphuric Acid.) स० फा० इं० ।

अर्क़े बेदमुश्क āarqe-bedemushka-फ़ा० बेदमुश्क का अर्क-द० । माउन् ख़िलाफ़ अ० । Salix caprea, *Linn.* (Water of-) स० फा० इं० ।

अर्क़े नमक āarqe-namak-फ़ा० लवणाम्ल, उदजहरिकाम्ल, नमक का तेजाब । (Hydrochloric or Muriatic Acid.) स० फा० इं० ।

अर्क़े शोरह् āarqe-shorah-फ़ा० शोरकाम्ल, शोरे का तेजाब, (Nitric acid.) स० फा० इं० ।

अर्केश्वररसः arkeshvara-rasah-सं० पुं० चन्द्रोदय, ताम्रभस्म, लौहभस्म, शुद्ध गु... खपरिया (शुद्ध), त्रिकुटा, हरताल इनको ... के दूध में खरल करें यह एक दिन में ... होता है । इसे नस्य द्वारा प्रयोग करने से ... दूर होता है ।

अर्केश्वरोरसः arkeshvarorasah-सं० हरिताल, सोनामाखी, मैनसिल, शुद्ध ... सुहागा, सेंधानमक, चित्रक और ... सबको बराबर लेकर बारीक चूर्ण करके ... मात्रा—४ रत्ती । गुण—शहद के साथ ... करने से सुप्त मण्डल वाला कुष्ठ नष्ट होता ... रस० यो० सा० ।

अर्केश्वरः arkeshvarah-सं० पुं० ... भस्म, बंगभस्म, अभ्रक भस्म, सोनामाखी भस्म ... समभाग लेकर गिलोय और मुण्डी ... की २१ पुट देकर शराव सम्पुट में रखकर ... दें । फिर अडूसा, शहद और मिश्री ... में चार चार रत्ती की गोलियाँ बनाएँ । ... शहद के साथ खाने से रक्तपित्त नाश ... जाता है । रस० रा० सु० रक्तपित्त।

अर्कोत्तमा arkottamá-सं० स्त्री० ... तुलसी । (Ocimum basilicum.)

अर्कोपलः arkopalah-सं० पुं०

अर्कोपल arkopala-हिं० संज्ञा पुं० सूर्यकान्तमणि, आतशी शीशा, ... (The sun-stone, a ruby; a ... lens.)

...aikol } -पं० तम्रक, तम्री, तेश्री,
...aikhar } चेचर, करशी, दूदल, चांग,
...शिङ्ग। रहस सेमि-अलेटा (Rhus Semi-alata, Murry.), रहस बकियामेला (R. Buckia mola, Roxb.)-लें०। रस्‌न्‌ ...सन०। इम्बमिल, इसविल-उ० प० सू०। ...छियामेल, भगमिली-नैरा०। मुम्रिल-लेप०।

भल्लातक वर्ग

(N. O. Anacardiaceæ.)

उत्पत्ति-स्थान—शीतोष्ण हिमालय, यमहस्त ... मिछिम पर्वन्त तथा ग्वमिया पर्वत।

प्रयोगांश—फल (Berries.)। तैल-औषध तथा आहार के काम आता है।

उपयोग—उदरशूल में इसका फल व्यवहार में आता है। स्टयुवर्ट।

...ज़ा āarqzá
...ज़ान āarqzána
...ज़ान āarhzána
—अ० (१) हिन्द कुर्ज़ी, विसुपरा (बूटी), (२) ...बरतुरह। कोई कोई बसूदल अक्राद को कहते हैं।

...के दोस्टैफिलास ग्लोका arctostaphylos glauca-लें० मेन्ज़ानीटा लीव्ज़ (Manzanita leaves.)-इं०।

...के दोस्टैफलॉस यूवा अर्साई arctostaphylos uva, ursi, Spreng.-लें० इनबुदुब, ...महूक (रीछ) भाचा-हिं०। इसकी पत्तियाँ औषध कार्य में आती हैं। मेमो०। देखो—युवा अर्साई। (Uvæ ursi.)

...र्कफ़न arkfan-यु० चणकः, चना। (gram or chick pea).

...ख़ामून arkhámúna-अ० चतु श्याम वृत्त। नेत्र का काला भाग अर्थात् पुतली।

अर्गजा argajá-हिं० संज्ञा पुं० अरगजा। सुगन्धि विशेष। (A perfume of a yellowish colour and compounded of several scented ingredients).

...र्गटब argatab-रो० पुं० आर्चेगल नामक कण्टक वृक्ष विशेष। नील झायटी-इं०। परवयी-मह०। कटसरैया-हिं०। (Barleria coerulea).

गुण—शीतल, व्रणशोधक तथा रोपक है। मद० व० ४। अर्गट कसैला, शीतल वीर्य, व्रण-विशोधक, व्रण रोपण करने वाला तथा पुष्प मधुर है। यह तिक्त है ज्वर, पित्त, कफ तथा रक्त रोग नाशक है। वै० निघ०।

अर्गट ergot
अर्गट ऑफ़ राई ergot of rye
—इं० गन्दुम दीवाना, शैलम, अर्गटा। (Ergota.)

अर्गनीन arghanoun-यु० ऑर्गन बाद्य जिसको हकीम अफ़लातून ने अन्वेषित किया था। ऑर्गन Organ-इं०।

नोट—ऑर्गन का अर्थ अवयव, इन्द्रिय अथवा शस्त्र भी है।

अर्गल argal-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) अरगल। अगरी। ब्योंड़ा। (२) किवाड़। (३) अवरोध। (४) कल्लोल।

अर्गलम् argalam-सं० क्लीं० मांस, गोश्त। (Muscle; Flesh.) वै० निघ०।

अर्गल arghala-अ० वह मनुष्य जिसका ख़तना न हुआ हो। (Uncircumcised.)

अर्गला argalá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) अरगल। अगरी। (२) ब्योंड़ा। (३) अवरोध। (४) बाधक। अवरोधक। रुकावट डालने वाला।

अर्गलाधरा argaládhará-सं० स्त्री० (Infra-spinatus) कशेरु कण्टकाधरा।

अर्गली argali-हिं० संज्ञा स्त्री० [देश०] भेड़ की एक जाति जो मिश्र शाम आदि देशों में होती है।

अर्गलोत्तरा argalottará-सं० स्त्री० (Supra spinatus) कशेरुकण्टकोर्ध्व।

अर्गवाँ arghaván-फ़ा० (१) अर्जवाँ अ०। एक वृक्ष है जो फ़ारस देश में उत्पन्न होता है। इसके

पुष्प अत्यन्त नीलाभरक्त वर्ण के तथा सुन्दर होते हैं। स्वाद मधुर होता है।

प्रकृति—१ कक्षा में उष्ण व रूक्ष, मादल व द्रवविलायक। स्वाद—किञ्चित् मधुर, किसी किसी ने कटु एवं किञ्चित् तिक्त लिखा है। हानिकर्त्ता—इसकी जड़ वमनकारक है। आमाशय के लिए अहितकर। दर्पघ्न—वर्ग उन्नाव और नमाम। प्रतिनिधि—मंदल व गुले सुर्ख। मात्रा—जड़ २ दिरम (७ मा०) और पुष्प ३ दिरम (१०॥ मा०)। प्रधान कर्म—श्वासोच्छ्वासावयव का विशोधक।

गुण, कर्म, प्रयोग—पिच्छिल या सान्द्र दोषों को विसर्जित करता तथा आमाशय एवं वृक्क की शीतलताको नष्ट करता है। श्वासोच्छ्वास सम्बन्धी अवयवों (फुप्फुस) को शुद्ध करता है। जलाकर इसके प्रयोग करने से मुख द्वारा रक्त स्राव होने को लाभदायक है और इसका बीज नेत्र सम्बन्धी औषधों में चाकसू के समान उष्ण नेत्राभिष्यन्द को दूर करता है। म० मु०। अश्मरी को नष्ट करता एवं स्वर को साफ करता है। इसके फूलों का क्वाथ आमाशय एवं फुप्फुस को शुद्ध करता और अत्यन्त वमन लाता है। जलाकर अवचूर्णन करनेसेयह रक्तरुद्धक और उत्तम स्निग्धार्थ है तथा भर्मों के रोग ..ाता है। बु० मु०। (२) बैंगनी रक्त वर्ण (Red & bluish)।

अर्गुवानी arghaváni-अ० श्यामाभायुक्त रक्त वर्ण। (Blackish red colour.)।

अर्गाइरोल argyrol-इं० वाइटेलीन (Vitellin.) देखो—रजत।

अर्गामूनी arghámúní-अ० वन पोस्ता, मामीसा सुर्ख (वन्य पोस्त सदृश एक बूटी।) (Wild poppy.)

अर्गीमोन मेक्सिकेना argemone mexicana, *Linn.*-ले० सत्यानासी, भड़भाँड़। (Gamboge thistle; mexican poppy.) फा० इं० १ भा०।

अर्गीरिया स्पेसिओज़ा argyreia speciosa -ले० समुद्रशोष। (Elephant creeper.) इं० मे० मे०।

अर्गीलम arghílam-अ० मुर्ग़। See khurfá.

अर्गीस arghis-यू० ज़रिश्क मूल त्वक्। See zarishka.

अर्गेनिया सिडरॉक्सिलॉन argania sideroxylon, *R. S.*-ले० इसका बीज तैल प्रयोग में आता है। मेमो०।

अर्गेमीन orgamine-इं० देखो—अर्गोटा।

अर्गेग्राफ ergograph-इं० इटली के एक वैज्ञानिक ने इस नाम का एक यन्त्र तैयार किया। इसके द्वारा अंगुलियों की पेशियों की शक्ति जाती है।

अर्गोएपिओल ergoapiol-इं० यह अजमोद (Apiol.) तथा अर्गटका एक मिश्रण है। इसे कैप्स्यूल रूप में रजोरोध में देते हैं। हिं० मे०। देखो—अजमोदा।

अर्गोटा ergota-ले० अर्गट Ergot, अर्गट राई Ergot of Rye, मोकेज कॉर्न राई Secale Carnutum, स्पर्ड राई Spurred rye, स्मट राई Smut rye-इं०। क्लेवस सिकेलिनम Clavus secalinus, ब्लो कॉर्न Ble cornu-फ्रॉ०। मटर कॉर्न Muttercorn-जर०। शैलम, मरसैलम, सुकरान, ज़बेवान (मिश्र०)। अलनुमुर्रा, अस्वद, इन्तुसौदा-अ०। गन्दुम सीयाह-फ़ा०।

छत्रिका वा तृणवर्ग

(*N. O. Fungi and Gramineæ.*)

संज्ञा-निर्णय—फ़रासीसी भाषा में अर्गट का अर्थ कुक्कुटकण्टक (तारे मुर्ग़) है। अर्गट इसको उसके समान होता है। इसलिए इसको इस नाम से अभिहित किया गया।

उत्पत्ति—यह फ़ंगस अर्थात् छत्रिका के प्रकार की एक फफूँदी या काई है, जिसको परिभाषा में क्लेवीसेप्स पर्प्युरिया (Claviceps purpurea, *Tulasne.*) कहते हैं।

इ फफूँदी सीकेली सिरिएली (Secale cereale) नामक धान्य में जिसको आंग्ल भाषा में कॉमन राई (Common Rye) और अरबी में शैलम या जवेदार कहते हैं, लग जाती है (अर्थात् उक्त फफूँदी छत्रकीय जीवाणु या वानस्पतिक कीट राई के दाने के भीतर प्रविष्ट होकर उसकी रचना में परिवर्तन उपस्थित कर देते हैं ।) तब उक्त विकृत राई को जो वास्तव में उक्त फफूँदी से पूर्ण होती है, अर्गट या अर्गट की राई कहते हैं ।

वर्णन—इसके किसी भाँति नोकीले त्रिकोणाकार साधारणतः वक्र दाने होते हैं जिनकी नोक कुंठित होती है । ये ¼ से ½ या एक इंच लम्बे और ⅛ इंच चौड़े होते हैं । इसके दोनों पृष्ठ पर नतोदर पृष्ठ तीन परिखायुक्त होते हैं और दाने स्फुटित (विदृचिदाए या चटखे) होते हैं । बाहर से ये नील लोहित (बनफ़शई रंग) और भीतर से प्याजी श्वेत वर्ण के और [illegible] होते हैं अर्थात् इनको जहाँ से तोड़ वहीं टूट जाते हैं । गंध विशेष प्रकार की अप्रिय और स्वाद मरावा (फ़ुस्वाद) तथा हृल्लासकारक होता है ।

रासायनिक संगठन—रासायनिक विधि अनुसार अर्गट का विश्लेषण करने पर इसमें अनेक पदार्थ पाए जाते हैं । उनमें से इसके केवल प्रभावात्मक सत्वों का ही यहाँ उल्लेख किया जाता है । वे निम्न हैं—

(१) स्फेसीलिनिक एसिड (Sphacelinic acid.) - (जिसका प्रभाव स्फेसीलोटॉक्सीन के कारण होता है) गर्भाशयिक मांसपेशियों के संकोचनके अतिरिक्त यह रक्तवाहिनियों में भी संकोच करता है । यह जल में अविलेय और [illegible] (मद्यसार) में विलेय होता है । (२) कॉर्न्युटीन (Cornutine.)—यह एक क्षारोद (क्षारोद) है जिसका मुख्य प्रभाव सम्बन्धी मांसपेशियों का संकोचन है, पर जल में अविलेय होता है । (३) अर्गोटिनिक एसिड (Ergotinic acid). एक ग्लूकोसाइड । (४) अर्गोटॉक्सीन (Ergotoxine.)—एक गैंग्रीनोत्पादक सत्व जो प्रयोग करने पर व्यर्थ सिद्ध होता है । कहते हैं कि यह इसका प्रभावात्मक अंश है । अर्गोटीनीन इसका अनहाइड्राइड है । (५) अर्गेमीन (Ergamine.) तथा (६) टायरेमीन (Tyramine.) । (७) एक स्थिर तैल ३०%, (८) ट्राइमीथल अमाइन जो इसकी गंध का मूल है और (९) टैनीन तथा रञ्जक पदार्थ प्रभृति अवयव इसमें विद्यमान होते हैं ।

संयोग-विरुद्ध (Incompatibles.)—ग्राही (Astringent.) औषध और मेटैलिक साल्ट्स (धातुज लवण) ।

प्रतिनिधि—कार्पास मूलत्वक । नोट-स्त्री रोगों की चिकित्सा में कार्पास अर्गट से श्रेष्ठतर एवं निरापद है । देखो—कार्पास ।

सूचना—अर्गट के समूचे दानों को सुरक्षित तथा शुष्क करके (अग्नि पर नहीं, प्रत्युत प्रशांत चूर्ण के उत्ताप पर शुष्क करें) सर्वथा शुष्क एयर टाइट अर्थात् वायुरोधक शीशी में डालकर और उसमें किञ्चित् कपूर डालकर रखें जिससे वह विकृत न हो एवं उसमें कीड़े न लग जाएँ । इस औषधि का चूर्ण बहुत शीघ्र विकृत हो जाता है ।

संयुक्त राज्य अमेरिका की फार्माकोपिया में लिखा है कि एक वर्ष पश्चात् यह अप्रयोजनीय हो जाता है ।

प्रभाव—गर्भाशयप्रवर्तक, गर्भशातक और आर्तवजनक रक्तस्थापक ।

औषध-निर्माण तथा मात्रा—

चूर्णित अर्गट, १० से २० ग्रेन, प्रसव हेतु, ३० से ६० ग्रेन ।

तरल एसट्रेक्ट (सार), १० से ६० मिनिम ।

घन सत्व (एक्स्ट्रैक्ट), १ से २ ग्रेन ।

क्वाथ (४० में १), ½ से २ फ़्लु० आउंस ।

तैल, १० से २० या ३० मिनिम प्रसवार्थ ।

टिंक्चर या आसव (१ में ४ शुक्त स्पिरिट), १० से ६० मिनिम ।

मात्रा—१५ से ६० ग्रेन (१ से ४ ग्राम)। प्रायः चूर्ण रूप में प्रयुक्त होता है।

ऑफिशल योग

(*Official preparations.*)

(१) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी (Extractum Ergotæ.)-ले०। एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट (Extract of Ergot.) अर्गोटीन, अर्गट रसक्रिया, अर्गट सत्व वा सार -हिं०। ख़ुलासहे शैलम, शैल्मीन-अ०। रुब्ब गन्दुम दीवानह्-फ़ा०। नोट—अर्गोटीन (Ergotin) ब्रिटिश फार्माकोपिया (B. P.) में सॉफ्ट एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट का ऑफ़िशल पर्याय था। पर इस नाम से भ्रम उत्पन्न होने की आशंका है, अस्तु इस नाम का परित्याग कर देना ही उत्तम है।

निर्माण-विधि—अर्गट का ४० नं० का चूर्ण २० आउंस, ऐलकोहाल (६० %) और परिस्रुत वारि आवश्यकतानुसार, डायल्युटेड हाइड्रोक्लोरिक एसिड (जल मिश्रित उज्जहरिकाम्ल) ७॥ फ़्लुइड ड्राम और सोडियम कार्बोनेट-१७६ ग्रेन।

अर्गट के चूर्ण को १० फ़्लुइड आउंस ऐलकोहाल से क्लेदित कर परकोलेटर (चरण यन्त्र) में स्थापित करें और पर्याप्त ऐलकोहल डालकर इतना चरण करें कि वह एकुसास्त होजाए (ख़तम होजाए)। पुनः प्राप्त द्रव को जलकुण्ड (वाटर बाथ) पर इतना उड़ाएँ वा शुष्क करें कि उसका द्रव्यमान ४ फ़्लुइड आउंस शेष रह जाए। फिर उसमें ५ फ़्लुइड आउंस परिस्रुत वारि मिलाएँ और शीतल होने पर पोतन कर उसमें जलमिश्रित उज्जहरिकाम्ल सम्मिलित करदें। २४ घंटे पश्चात् पुनः उक्त द्रव का पोतन करें और जो मल अवशेष रह जाए उसको जल से इतना धोएँ कि उसकी अम्लता सर्वथा दूर हो जाए। फिर अवशिष्टांश को धोने से शेष रहे हुए द्रव को पूर्व प्राप्त द्रव में मिलाकर और सोडियम कार्बोनेट को उसमें विलीन करके उसे जल कुण्ड (वाटर बाथ) पर वाष्पीभूत कर मृदु रसक्रिया रूप में शुष्क करलें।

मात्रा—२ से ८ ग्रेन (.१३ से .५ वा १३ से ५० शतांश ग्राम)।

(२) एक्स्ट्रैक्टम अर्गोटी लि[illegible] Extractum Ergotæ Liq[illegible] -ले०। लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट ऑफ अर्गट। Extract of Ergot-इं०। अ[illegible] सत्व, अर्गट द्रव रसक्रिया-हिं०। शैलम सय्याल-अ०। रुब्बे गन्दुम सय्याल-फ़ा०।

निर्माण-विधि—कुट्टित अर्गट १० [illegible] परिस्रुत वारि ७॥ पाइंट, ऐलकोहल ([illegible] ७॥ फ़्लुइड आउंस। अर्गट को ५ पाइं[illegible] वारि में १२ घंटे तक भिगोकर नि[illegible] और अवशेष को अवशिष्ट परिस्रुत वारि[illegible] काल तक भिगोकर पोतन करें। पुनः प्रा[illegible] द्रव को परस्पर योजित कर इतने [illegible] वाष्पीभूत करें जिसमें तरल का [illegible] ४ फ़्लुइड आउंस शेष रह जाए फिर [illegible] सम्मिलितकर १ घंटा पश्चात् पोतन करलें[illegible] रसक्रिया का परिमाण पूरा २० फ़्लु[illegible] होना चाहिए।

मात्रा—१० से ३० मिनिम ([illegible] घन शतांश मीटर वा ६ से १८ [illegible] जल में।

(३) इन्फ्युज़म अर्गोटी Inf[illegible] Ergotæ-ले०। इन्फ्युजन ऑफ़ [illegible] Infusion of Ergot-इं०। [illegible] -हिं०। ख़िसाँदहे शैलम-अ०। [illegible] गन्दुम दीवानह्-फ़ा०।

निर्माण-विधि—सद्यः कुट्टित अर्गट [illegible] खौलता हुआ परिस्रुत जल २० [illegible] पात्र में १५ मिनट तक अर्गट को [illegible] दित कर पोतन करलें।

मात्रा—१ से २ फ़्लुइड आउंस ([illegible] से ५६.८ घन शतांश मीटर वा १० [illegible] मिलिग्राम)।

इञ्जेक्शियो अर्गोटी हाईपोडर्मि[illegible] Injectio ergotæ hypoder[illegible] -ले०। Hypodermic-inject[illegible]

...rgotor Ergotin हाइपोडर्मिक इन्जेक्शन ... ऑफ़ अर्गट ऑर अर्गोटीन–इं०। अर्गट त्वक्‌ ... अन्तःक्षेप–हिं०। ज़राक़्हे शैलमीन तह्‌ मुजिल्द ... ज़ेरेजिल्द–अ०। शैल्मीन की ज़ेरे जिल्द ... पिचकारी–उ०।

निर्माण-विधि—एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट १०० ...न, फेनोल ३ ग्रेन, परिस्नुत वारि २२० मिनिम ... आवश्यकतानुसार। फेनोल को परिस्नुत ...रि में मिलाकर थोड़े काल तक क्वथित करें। ...तिल होने पर उसमें एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट ...म्मिलित करके इतना परिस्नुत जल और ...ंयें कि इन्जेक्शन का द्रव्यमान ३३० मिनिम ...जाए।

...शक्ति ३३ ग्रेन अर्गट ११० मिनिम में या ...में १ (३.३ मिनिम=१ ग्रेन एक्सट्रैक्ट ...फ़ अर्गट)।

मात्रा—३ से १० मिनिम (.१८ से .६ घन ...शांशमीटर) गम्भीर त्वक्‌धःस्थ अन्तःक्षेप ...।

सूचना—समय पर इसको सदा सद्यः प्रस्तुत ...र प्रयोग करना चाहिए।

...टिंक्चूरा अर्गोटी अमोनिएटा

Tinctura ergotæ ammoniata– ...०। अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ़ अर्गट (ammoniated tincture of ergot–इं०। ...मोनित अर्गटासव–हिं०। सियूक़्हे शैलम ...सूनी–अ०। तबख़ीन गन्दुम दीवानह् अमूनी ...उ०।

निर्माण-विधि—अर्गट का २० नं० का चूर्ण ...आउंस, सोल्युशन ऑफ़ अमोनिया २ फ्लुइड ...उंस, ऐल्कोहल (६०%) आवश्यकतानुसार। ...ल्युशन ऑफ़ अमोनिया में १८ फ्लुइड आउंस ...कोहल सम्मिलित कर उसमें से २ फ्लुइड ...उंस लेकर उससे चूर्ण को प्रक्लेदित कर स्रवण–... (पर्कोलेटर) में स्थापित कर दें तथा ...शिष्ट द्रव को उस पर धीरे धीरे डाल कर उसे ...लेट (स्रवण) करलें। पुनः अवशेष को ...नेकने से प्राप्त अर्क को स्रवणकृत तरल में सम्मिलित कर उसमें इतना ऐल्कोहल और योजित करें कि प्रस्तुत टिंक्चर का द्रव्यमान पूरा १ पाइंट हो जाए। फिर २४ घंटे पश्चात् टिंक्चर का पोनन करलें।

मात्रा—आधे से १ ड्राम या ३० से ६० मिनिम (१.८ से ३.६ घन शतांशमीटर=२ से ४ मिलिग्राम)।

नॉट ऑफ़िशल योग तथा पेटेन्ट औषधें

(*Not official preparations.*)

(१) डिस्कस ऑफ़ अर्गोटीन Discs of ergotin अर्थात् अर्गोटीन पट्टिकायें। मुफ़र्त्हात रक़ीक़ह् शैलमीन–अ०।

प्रत्येक टिकिया में ¼ या ½ ग्रेन अर्गोटीन होता है। त्वगीय पिचकारी द्वारा त्वगधः प्रविष्ट करने के लिए इसका निर्माण किया गया है।

समय पर एक टिकिया को १० मिनिम कीट-रहित (क्वथित कर साफ़ व स्वच्छ किए हुए) परिस्नुत वारि में मिलाकर प्रयुक्त करें।

(२) पिल्युला अर्गोटीनी Pilula ergotini अर्गोटीन वटिका। हब्ब शैल्मीन।

अर्गोटीन २ ग्रेन, लिकोरिस पाउडर (यष्टि-मधु चूर्ण) ३ ग्रेन। दोनों को परस्पर योजित कर वटी प्रस्तुत करें।

(३) लाइकर अर्गोटी अमोनिएटस

Liquor ergotæ ammoniatus–अमोनित अर्गोटीन द्रव। मय्याल शैल्मीन अमूनी।

यह एक प्रकार का लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट अर्थात् अर्गट तरल सत्व है जो अमोनिया वाले विलीन एलकोहल से प्रस्तुत किया जाता है।

(शक्ति १ में १) यह एक प्रभावात्मक और विश्वस्त योग है।

मात्रा—१० से ६० मिनिम=(.६ से ३.६ घन शतांशमीटर).

(४) मिस्चूरा अर्गोटी Mistura ergotæ –अर्गट मिश्रण। मज़ीज शैलम्।

लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट ३० मिनिम, डायल्युटेड सल्फ्युरिक एसिड १० मिनिम, क्लोरोफ़ॉर्म वाटर १ आउंस पर्यन्त। (ग्रो० पी० सी०)

(५) मिसच्यूरा अर्गोटी अमोनियटा— Mistura ergotæ ammoniata—अमोनित अर्गट मिश्रण। मर्ज़ोज शैलम अमोनी।

लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट २० मिनिम, अमोनियम कार्बोनेट ३ ग्रेन, इमल्शन ऑफ़ क्लोरोफ़ॉर्म १५ मिनिम, कैम्फर वाटर १ आउंस पर्यन्त। (युनिवर्सिटी हास्पिटल).

(६) मिसच्यूरा अर्गोटी एट फेराई Mistura ergotæ et ferri—लौहार्गट मिश्रण। मर्ज़ोज शैलम व आइन।

लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट ३० मिनिम, मोल्युशन ऑफ़ फेरिक क्लोराइड १५ मिनिम, साइट्रिक एसिड ५ग्रेन, क्लोरोफार्म वॉटर १आउंस पर्यन्त। (गाईज़ हॉस्पिटल लण्डन)

(७) वाइनम अर्गोटी Vinum ergotæ—अर्गट सुरा। शराब शैलम।

फ्लुइड एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट २० भाग, डीटलेटेड शेरी ८० भाग। (बी० पी० सी०)

(८) एसिडम स्क्लेरोटिकम् Acidum Scleroticum—लै०। स्क्लेरोटिनिक एसिड Sclerotinic acid—इं०। यह अर्गट द्वारा प्राप्त एक महान प्रभावकारी सत्व है। परीक्षा—एक निर्बल अम्लीय ग्रार जो धूसर स्फटिकीय चूर्ण रूप में पाया जाता है। यह आर्द्रताशोषक और जलविलेय होता है।

गुण-तथा उपयोग—१ ग्रेन स्क्लेरोटिनिक एसिड प्रभाव में २० ग्रेन अर्गट के बराबर होता है। यह सूक्ष्म रक्तवाहिनी संकोचक है। अस्तु यह रक्तस्थापक रूप से तथा रक्तसंचय जनित शिराशूलहर रूप से लाभदायक है।

मात्रा—$\frac{1}{8}$ से $\frac{1}{4}$ ग्रेन, त्वक्स्थ अन्तःक्षेप द्वारा (वा ५ से १५ मिनिम मुख तथा अन्तःक्षेप द्वारा–हि० मे० मे०)।

(९) कॉर्न्युटीन साइट्रेट Con citrate–यह अर्गट के एक ऐ (घातांद्) का विशेष लक्षण है जो क मतानुसार अर्गट का क्रियाशील सत्व आमकांश है। यह एक धूसर वर्ण का प्रसव [illegible] जिसका, अधिक उपयोग, ि अस्तु $\frac{1}{12}$ से $\frac{1}{6}$ ग्रेन की मात्रा में मुख $\frac{1}{32}$ से $\frac{1}{8}$ ग्रेन की मात्रा में त्वक्स्थ सूची इसका प्रयोग करते हैं।

(१०) अर्गोटीन Ergotin)–अ का केवल एक विशुद्ध सत्व है। अर्गोटीन (gotine), बॉन्जियम्स अर्गोटीन (Bo an's Ergotine)–इं०।

उपयोग

इसका प्रायः उन सभी दशाओं मे होता है, जिनमें कि अर्गट प्रयुक्त है। लिखित कतिपय अन्य ऐसे विकार भी हैं इसका उपयोग होता है।

(१) नपुंसकत्व ("क्लीवता")– पृष्ठस्थ शिराओंके फूल जाने के कारण ज प्रहर्षणाभावसे मैथुन शक्ति कम हो जाती अर्गोटीन के त्वक्स्थ अन्तःक्षेपसे प्रायः होता है।

(२) अर्गोटीन और कोनीन—य गर्भाशय एवं प्लीहा को संकुचित करते हैं, विशेष कर उस अवस्था में जब विषम प्लीहा कोमल हो या वह बढ़ गई हो, त प्रत्येक एक दूसरे को प्रतिनिधि हो सक विषम ज्वरों में इन दोनों का मिश्रण उपयोगी होता है और इस प्रकार उपचार से क्वीनीन के अधिक परिमाण की बचत है। क्योंकि मिश्रित रूप में व्यवहार आधा ही कोनीन प्रयुक्त होता है।

(३) यक्ष्मा जन्य रात्रि स्वेद य रोगियों के रात्रिस्वेद में हितकर है। मात्र ग्रेन तीन वा चार बार दैनिक। कभी की मात्रा घटाकर देनी चाहिए।

इंजेक्शियो अर्गोटीनी हाइपोडर्मिका (Inj. Ergotini. Hypod.)—अर्गोटीन त्वक्स्थ अन्तःक्षेप।

शक्ति अर्गोटीन १०० ग्रेन, कैम्फर वाटर ...० फ्लुइड ग्रे०। मात्रा—३ से १० मिनिम।

(११) अर्गोटीनीन Ergotinine-यह ... ऐल्कलाइड (क्षारोद) है जो अर्गट में प्राप्त ... है। इसके सूक्ष्म श्वेत स्फटिक (रवे) ... हैं जो वायु एवं प्रकाश के प्रभाव से कृष्ण ... के हो जाया करते हैं।

...नोट—अधुना यह अर्गोटॉक्सीन का अनहाइ-... माना जाता है।

...विलेयता—यह एक भाग (माप में) ...भाग (मापमें) शुद्धासव (Absolute ...cohol.)में, तथा२०° फ़ारनहाइटके उत्ताप ...विलीन होजाता है। और एकभाग २२० भाग ...ईथर (Absolute Æther.) में, ...भाग ६१ भाग ईथिल ऐसीटेट में, १ भाग ...भाग एसीटोन में, १ भाग ७७ भाग खौलते ...बेन्ज़ीन में, १ भाग २२ भाग खौलते हुए ... ऐलकोहल में और १ भाग २६ भाग ... ऐलकोहल में विलीन हो जाता है।

...नोट—अर्गोटीनीन और सम्पूर्ण विलायक ...के भाग द्रव्यमान (आयतन) के अनुसार ...अपितु माप के अनुसार हैं।

...गुणधर्म तथा उपयोग—प्रभाव में यह ...टीन की अपेक्षा अधिकतर शक्तिशाली है। ...इसका तन्तुत्पादक वात तन्तु-विकार, विशेषतः ...इसि, अक्षिविभेदक, (Basedow's ...sease) और वस्तिकी वातप्रसनताकी दशा ...इसका प्रयोग करते हैं। अर्गट सत्व (Extract of ergot) के अन्तःक्षेप की अपेक्षा ...टीनीनी का $\frac{१}{३००}$ से $\frac{१}{६०}$ ग्रेन की मात्रा का ...अन्तःक्षेप अधिकतर लाभ प्रदर्शित करता ...। मॉर्फीन इंजेक्शन (अहिफेनीन अन्तःक्षेप) ...अपेक्षा यह अधिक वेदना नहीं उत्पन्न करते ...अपितु अपेक्षाकृत वेदना रहित है) और चोभ था किसी अन्य प्रकार के कुलक्षण नहीं उपस्थित करते। (प्रोफ़ेसर युलेनबर्ग)।

डॉक्टर मरेल (Dr. Murrel) को यक्ष्मा-जन्य फुफ्फुसीय रक्तनिष्ठीवन में कई दिन तक रक्तस्राव अवरुद्ध रखनेके लिए साधारणतः इसका एक अन्तःक्षेप ही पर्याप्त सिद्ध हुआ है। प्रसव के पश्चात् की चिकित्सा एवं रक्तस्रुति के कतिपय अन्य भेदों में इसका सफलतापूर्वक त्वक्स्थ अन्तःक्षेप किया जा सकता है।

मात्रा—$\frac{१}{२००}$ से $\frac{१}{४०}$ ग्रेन।इसकोसाधारणतःत्वक्स्थ सूचीवेध द्वारा प्रयुक्त करते हैं। अतः अर्गोटीनीन १ ग्रेन, लैक्टिक एसिड २ मिनिम, क्लोरोफॉर्म १००० मिनिम को मिलाकर इसमें से ५ से १० मिनिम, लेकर त्वक्स्थ सूचीवेध द्वारा प्रयुक्त करते हैं।

(१२) अर्गोटीनी साइट्रास (Ergotinæ Citras.) और (१३) अर्गोटीनी हाइड्रोक्लोराइड (Ergotinæ Hydrochloride)-यह दोनों अर्गोटीनीन द्वारा निर्मित धूसर वर्ण के चूर्ण हैं जो जलविलेय होते हैं।

मात्रा—$\frac{१}{१५०}$ से $\frac{१}{३०}$ ग्रेन। इनमेंसे प्रथम का अन्तःक्षेप किया जा सकता है।

(१४) अर्गोटॉक्सीन (Ergotoxine)-यह एक लघु श्वेत वर्ण का चूर्ण होता है जो शीतल ऐलकोहल तथा सोडियम हाइड्रोक्साइड के विलयन में विलीन हो जाता है।

इससे हाइड्रोक्लोराइड (उज्जहरिद), ऑक्ज़ेलेट (काष्ठेत) और स्फुरेत् लवणों का निर्माण ...ता है।

मात्रा—$\frac{१}{१००}$ से $\frac{१}{५०}$ ग्रेन। यह कॉन्युटीन, एक्बोलीन और हाइड्रो-अर्गोटीनीन नाम से भी प्रख्यात है।

नोट—अर्गोटीन यद्यपि ब्रिटिश फार्माकोपियाके एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट का पर्याय है, तथापि उसके अतिरिक्त इसके कई एक व्यावारिक भेद हैं जिनमें से कतिपय निम्न हैं :—

(क) अर्गोटीनम् बोंजियन् (Ergotinum Bonjean)—यह एक जलीय रक्ताभधूसर एक्सट्रैक्ट है जो ऐल्कोहल से शुद्ध किया जाता है। इसका १ भाग ५ या ६ भाग अर्गट के बराबर होता है। मात्रा—१½ से ४½ ग्रेन।

(ख) अर्गोटीनम् बॉम्बेलोन फ्लुइडम् (Ergotinum Bombelon Fluidum)—यह एक धूसराभकृष्ण वर्णीय द्रव है जिसको ३० मिनिम की मात्रा में त्वक्स्थ सूचीवेध द्वारा प्रयुक्त किया करते हैं।

(ग) अर्गोटीनम् डेंजेल फ्लुइडम् (Ergotinum Denzel Fluidum)—यह एक स्वच्छ किया हुआ रसक्रिया (खुलासा, रुब्ब) है जिसको ३ से १० ग्रेन की मात्रा में देते हैं।

(घ) अर्गोटीनम् कोलमैन फ्लुइडम् (Ergotinum Kohlman Fluidum)—यह भी श्यामाभधूसर द्रव है जो जल के साथ संयुक्त हो जाता है। मात्रा—६० से ७२ ग्रेन।

(१५) टायरेमीन (Tyramine), हाइड्रॉक्सीफेनिलीथिलामीन (P-Hydroxyphenylethylamine)—यह अर्गट फांट में वर्तमान होता है और इसे सन्धानक्रिया विधि (Synthetically) द्वारा भी प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रभाव एड्रीनेलीन (उप वृक्कसार) के समान होता है। त्वगधोऽन्तःक्षेप द्वारा ($\frac{1}{12}$ ग्रेन की मात्रा में) भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। यह सिस्टोजन (Systogen) और युटेरामीन (Uteramine) नाम से भी प्रसिद्ध है।

(१६) इर्न्युटीन (Ernutin)—यह एक तरल है, जिसमें टायरेमीन और अर्गोटॉक्सीन दोनों मम्मिलित होते हैं। त्वगधोऽन्तःक्षेप रूप से (१० मिनिम की मात्रा में और आन्तरिक रूप से ३० से ६० बूंद 'मिनिम' की मात्रा में) इसका उपयोग होता है।

अर्गट की फार्माकालाजी

अर्थात्

अर्गट के प्रभाव

(आन्तरिक प्रभाव)

डॉक्टर डिक्सन (Daxon) ए[illegible] डेल (Dale) ने अर्गट स्थित मुख्य [illegible] कारी सत्वों की ध्यानपूर्वक परीक्षा की [illegible] कच्ची औषध (Crude drug) के [illegible] यथेष्ट प्रकाश डालती है। जैसा कि डिजि[illegible] सम्बन्ध में कहा जाता है, इसका [illegible] प्रभाव इसके विभिन्न सत्वों के [illegible] प्रभाव का परिणाम माना जा सकता [illegible] (डिजिटेलिस के समान, अर्गट से नि[illegible] हुए किसी भी सत्व का ऐसा विरला [illegible] नहीं होता जैसा कि कच्ची औषध के फांट [illegible] या लिक्विड एक्सट्रैक्ट अर्थात् तरल सत्व [illegible]

(१) अर्गोटॉक्सीन (Ergotox[illegible] वे पदार्थ जो प्रथम स्फेसीलिनिक एसिड ([illegible] celinic Acid) और स्फेसे[illegible] (Sphacelotoxin) नाम से [illegible] होते थे, उक्त ऐल्कलाइड ([illegible] के अशुद्ध रूप थे। डिक्सन [illegible] इसका प्रभाव-स्थल प्रान्तस्थ नाड़ी म[illegible] को मानते हैं। उनके मतानुसार य[illegible] नियों को बलपूर्वक आकुंचित करता [illegible] शरीरावयव एवं हस्तपाद में हिमांग [illegible] और कुक्कुट की मस्तकशिखा श्यामवर्ण [illegible] होकर पतित हो जाती है एवं यह [illegible] जरायु के तन्तुओं का सबल आकुंचन [illegible] करता है। शय्यागत रूप से अर्गट [illegible] यद्यपि इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं [illegible] भी यही इसका एक ऐसा प्रभावकारी [illegible] जिससे वास्तव में अर्गट को अमोघ [illegible] सकता है।

(२) टायरेमीन (Tyramine) [illegible] प्राणिज पदार्थ के पचनकाल में [illegible] द्वारा भी यह निर्मित किया जाता है। [illegible]

(Tyrosine.) से कर्बनद्वित्रोषिद (CO_2) का विच्छेद कर भी यह प्रस्तुत किया जा सकता है और उसकी भाँति प्रभाव करता है। संयोजित मांसपेशी तन्तुओं के अंतिम भाग पर प्रभाव करके यह संकोचन शीरायों का आकुंचन उत्पन्न करता है और गर्भित जरायु की पेशियों का भी संकोच उत्पन्न करता है।

(३) अर्गेमीन (Ergamine.)—इसी प्रकार पचनकारक कीटाणुओं की क्रिया द्वारा यह हिस्टिडीन (Histidine.) से भी भिन्न किया जा सकता है। यह धमनिकाओं का सरल विस्तार उत्पन्न करता है और इससे गर्भाशय में तथा अन्य अनैच्छिक मांसतन्तुओं का सशक्त आकुंचन उपस्थित होता है। अन-विशेष न होने के कारण चूँकि अर्गोटोक्सीन और अन्य सार में विद्यमान नहीं रहता, अतएव इन अंशों की पूर्ण मात्रा द्वारा उत्पन्न प्रभाव, अर्गेमीन के धमनिका-संकोचक (Vaso-constrictor) प्रभाव के कारण होना अल्पस्थायी है, जो कि अर्गेमीन की धमनिका प्रसारक (Vaso-dilator) शक्ति की अपेक्षा अधिक है।

मुख-आमाशय तथा आंत्र—अर्गट का स्वाद तिक्त है। यह लालाप्रसावर्द्धक है अर्थात् इससे अधिक लाला (थूक) उत्पन्न होती है। मध्यम मात्रा में प्रयुक्त करने से यह आंत्रीय स्वाधीन या अनैच्छिक मांसपेशियोंको गति प्रदान करता है। अस्तु, आंत्रस्थ कृमिवत् आकुंचन तीव्र हो जाता है। कभी कभी तो यह प्रभाव इतना बढ़ जाता है कि विरेक आने आरम्भ हो जाते हैं। अधिक मात्रा में उपयोग करने से यह आमाशय तथा आंत्र में क्षोभ उत्पन्न कर देता है।

शोणित—इसके प्रभावात्मक अंश तत्काल रक्त में प्रविष्ट हो जाते हैं, परन्तु रक्त पर उनका कुछ भी प्रभाव नहीं होता।

हृदय—अर्गट हार्दिक मांसपेशियों पर अव-सादक या नैर्बल्योत्पादक (Depressant) प्रभाव करता है अर्थात् इससे हार्दीय मांसपेशियों की शक्ति घट जाती है। अस्तु यह नाड़ी की गति को भी शिथिल करता है। नाड़ी की गति का उक्त शैथिल्य फुप्फुस या आमाशय नाड़ी प्रांत के क्षोभ के कारण होता है। क्योंकि अर्गट से पूर्व यदि एट्रोपीन (धत्तूरीन) दी जाए तो फिर ऐसा नहीं होता। अतः इससे प्रथम रक्त भार घट जाता है अर्थात् अर्गटसे हृदय निर्बल होजाता और नाड़ी शिथिल हो जाती है।

रक्त वाहिनी—(रक्त भार) अधिकतर धामनिक मांसतंतुओं पर अर्गट का सरल प्रभाव होने से और किसी भाँति इससे संयुक्त धामनिक गत्युत्पादक केन्द्रों (Vaso-motor centre) को गति प्राप्त होने के कारण सम्पूर्ण शरीर की धमनियों के सबल रूप से आकुंचित होने से रक्तभार जो आरम्भ में कम होगया है। अब वह शीघ्र बढ़ जाती है। यही नहीं प्रत्युत शिराएँ भी किसी प्रकार संकुचित हो जाती हैं। सारांश यह कि अर्गट से सम्पूर्ण शरीर की रक्त वाहिनियाँ विशेषतः छोटी २ धमनियों के संकुचित होजाने और स्फेसेलिनिक एसिड के प्रभाव से उनकी दीवारों के स्थूल हो जाने के कारण यह एक सार्वांगिक रक्तस्थापक (General Haemos-tatic) है। अस्तु यदि अर्गट को अधिक काल तक सेवन किया जाए तो शारीरिक धमनियों के संकुचित होजाने के कारण शरीरके विभिन्न भागमें गैंग्रीन (Gangrene) हो सकता है, जिससे गैंग्रीनस अर्गोटिज़्म (Gangrenous-ergotism) होजाया करता है। इसको अत्यधिक मात्रा या विषैली मात्रा में प्रयुक्त करने से वैसोमोटर सेण्टर्ज़ (धामनिक गत्युत्पादक केन्द्र) वातग्रस्त हो जाते हैं। हृदय के निर्बल होजाने और धमनियों के प्रसारित हो जाने के कारण रक्तभार बहुत घट जाता है।

श्वासोच्छ्वास—अर्गट श्वासोच्छ्वास को कम करता है। अस्तु, श्वासोच्छ्वास सम्बन्धी मांसपेशियों की निर्बलता तथा आक्षेप के कारण श्वासावरोध होकर मृत्यु उपस्थित होती है।

वात या नाड़ीमण्डल—मस्तिष्क पर इसका अत्यल्प प्रभाव होता है। औषधीय मात्रा अथवा एक ही बड़ी मात्रा में इसका उपयोग करने से मर्वोत्कृष्ट वातकेन्द्र प्रभावित नहीं होते। पर यदि चिरकाल तक इसका निरंतर उपयोग किया जाए तो विशेष प्रकार के लक्षण उपस्थित हो जाते हैं, जिनको आक्षेपयुक्त अर्गटजन्य विषाक्तता (Spasmodic ergotism) कहते हैं।

गर्भाशय—गर्भवती स्त्रियों तथा क्षुद्र जीवों में गर्भावस्था विशेषकर प्रसवकाल में अर्गट के प्रयोग से जरायु इतनी तीव्र गति से आकुंचित होता है कि तदाभ्यन्तरस्थित सभी वस्तुएँ बहिर निर्गत हो जाती हैं। अतएव यह एक सबल गर्भशातक (आशुप्रसवकारी) औषध है। इसको बड़ी मात्रा में प्रयुक्त करने से टेटेनिक स्पैज़्म (धानुस्तम्भीय आक्षेप) होने लगता है। यह बात अभी सन्देहपूर्ण है कि आया यह गर्भशातक भी है ? क्योंकि जब तक दरविज़ह् आरंभ न हो इससे जरायु संकुचित नहीं होता। गर्भविहीन वा शून्य जरायु पर इसका बहुत साधारण प्रभाव होता है, बल्कि कुछ प्रभाव नहीं होता अर्थात् इससे गर्भाशयिक तन्तु संकुचित नहीं होते। सम्भवतः इसका यह प्रभाव गर्भाशय के धारीविहीन मांस-पेशियों पर सरलोत्तेजक असर होने से और किसी भाँति सौषुम्न गर्भाशयिक वातकेन्द्रों को गति प्रदान करने के कारण हुआ करता है।

प्रस्राव (रसोद्रेक)—अर्गट के प्रयोग से लाला, घर्म, दुग्ध तथा मूत्रोत्पत्ति व प्रस्राव घट जाता है। जिसका कारण यह होता है कि समग्र शरीर की रक्तवाहिनियों के संकुचित हो जाने से उक्त द्रवों की उत्पन्न करनेवाली ग्रंथियों में रक्त यथेष्ट परिमाण में नहीं पहुँचता।

अर्गट-अगदतन्त्र

(अर्गट के विषाक्त प्रभाव वा लक्षण)

क्रॉनिक अर्गोटिज़्म (अर्गट द्वारा चिरकारी विषाक्तता)—औषधीय मात्रा में इसका उपयोग करने से तो कदाचित् विरलाही तज्जन्य विषाक्तता दृष्टिगोचर होती है। परन्तु ऐसे निर्धन प्राणी जो दूषित राई के धान्य (जिसमें अर्गट ऑफ राई वर्तमान होती है) भक्षण करते हैं, प्रायः वे क्रॉनिक अर्गोटिज़्म (पुरातन प्रकार के अर्गट विष) में आक्रांत पाए जाते हैं। निम्नलिखित इसके दो स्वरूप होते हैं—

(१) गैंग्रीनस अर्गोटिज़्म—

धमनियों के संकुचित हो जाने से चूँकि रक्त समग्र अवयवों में यथेष्ट परिमाण में नहीं पहुँच पाता, अतएव पोषण विकार के कारण शरीर के विभिन्न अवयवों में विशेषकर हस्तपाद में गैंग्रीन (Gangrene) की दशा उपस्थित हो जाती है जिसका पेलैग्रा (Pellagra) से निर्णय करने में भ्रम न करना चाहिए।

(२) स्पैज़्मोडिक अर्गोटिज़्म (आक्षेपयुक्त अर्गट विष) इस प्रकार के रोगी को प्रथम कण्डू या गुद-गुदी का बोध होता है अथवा सम्पूर्ण शरीर पर चिउँटियाँ रेंगती हुई प्रतीत होती हैं। तदनन्तर सनसनाहट और स्थानिक संज्ञाशून्यता का अनुभव होता है। अस्तु साधारणतः पहिले हस्तपाद आक्षेपग्रस्त एवं अवसन्न हो जाते हैं। पुनः सम्पूर्ण [illegible]

पेशियों की निर्बलता के कारण गति अस्थिर हो जाती अर्थात् चाल लड़खड़ाने लगती है। नाड़ी की गति अत्यन्त मंद हो जाती है, वमन व विरेक आरम्भ हो जाते हैं। अन्ततः मावांगावेष होकर ऐस्फिक्सिया (श्वासावरोध) की दशा में मृत्यु उपस्थित होती है।

अगद

अर्गट द्वारा विषाक्त होने पर निम्न मिश्रण व्यवहार करें—

ईथरिस प्योर	३० मिनिम
टिंक्चर ओपियाई	१० मिनिम
सिरूपाई	४ ड्राम
एक्वी डिस्टिलेटा	४ ड्राम

इसमेंसे एक मात्रा के परिमाण और औषध प्रति आध आध घंटे के अन्तर से प्रयुक्त करें।

नोट नाइट्रोग्लोसरीन की बड़ी मात्रा में देने से जो विशदता उत्पन्न होती है उसका तथा अधिक परिमाण में वर्नालीन के प्रयुक्त करने से हुई अतिरक्तीय विकार का अर्गट एक उत्तम अगद है।

अर्गट के थेराप्युटिक्स अर्थात् उपयोग

(बहिर प्रयोग)

कभी कभी गलगण्ड (गोइटर) और धामनीयाबुर्द (एन्युरिज्म) के समीप अर्गोटीन का त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करने से लाभ होता है। गुदभ्रंश (Prolapsus of the rectum) में यदि प्रति दूसरे या तीसरे दिवस गुदसंकोचनी पेशी या स्वयं गुदा में ३ ग्रेन अर्गोटीन का त्वक्स्थ अन्तःक्षेप किया जाए तो कहते हैं कि उक्त व्याधि की निवृत्ति होती है।

आन्तर प्रयोग

सार्वांगिक रक्तस्थापक रूप से अर्गट अब तक विख्यात है और सम्प्रति इसको आभ्यन्तरिक शोणित स्राव यथा नासार्श, द्वारा रक्तस्राव होने अर्थात् नकसीर (Epistaxis), रक्तनिष्ठीवन (Hæmoptysis), रक्तवमन (Hæmatemesis) और रक्तमूत्रता (Hæmaturia) प्रभृति रोगों में वर्तते हैं। व्याधियोंकी ऐसी उग्रावस्था एवं भयानक रोगियों में प्रति १५ या ३० मिनट के अन्तर से अर्गट का त्वक्स्थ या गम्भीर अन्तःक्षेप करना उपयोगी है। आन्तरिक अवयवों की रक्तस्रुति में रक्तस्थापक रूप से अर्गट का उपयोग युक्त्यात्मक नहीं, प्रत्युत आनुभविक है। इस बात का ध्यान में आना अत्यन्त दुस्तर है कि जो औषध धमनियों को संकुचित कर रक्तभार की वृद्धि करती हो वह किस भाँति रक्तस्थापक (हीमोस्टेटिक) हो सकती है?

परन्तु गर्भाशय जन्य रक्तस्रुति पर जो इसका रक्तस्थापक प्रभाव होता है, वह अधिकतया जरायुस्थ मांस पेशियों के संकोच के कारण होता है। अतएव प्रसवानन्तर होने वाले रक्तस्राव में अर्गट एक अत्यन्त चमत्कारिक औषध है। उन बहुप्रसूता नारियों को जिनमें प्रसव के पश्चात् प्रायः रक्तस्राव हुआ करता है, प्रसव के बाद तत्क्षण अर्गट का उपयोग आवश्यक होता है। और यदि इसके प्रयोग में कोई बात रोधक न हो तो प्रसवमें पूर्व भी इसे दे सकते हैं। कतिपय प्रधान रोगियों" को अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ अर्गट या लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ अर्गट १ से २ ड्राम की मात्रा में दिन में ३-४ बार देते हैं या हाइपोडर्मिक इन्जेक्शन ऑफ अर्गट को १० मिनिम की मात्रामें २-३ बार प्रयुक्त करते हैं। रक्तप्रदर एवं कई प्रकार के गर्भाशयिक अर्बुदों की रक्तस्रुति में भी उक्त औषधि के प्रयोग से उत्तम परिणाम प्राप्त हुए हैं। ऐसी दशा में गर्भाशयिक द्वार में अर्गोटीन की पिचकारी करनी चाहिए।

अर्गट चूँकि रक्तवाहिनियों को संकुचित करता है; अस्तु कभी कभी इसको पर्प्युरा (रक्त विकार जन्य विस्फोटक), प्रवाहिका, प्लीहवृद्धि, सौषुम्न काठिन्य (स्पाइनल स्क्लेरोसिस) एवं सौषुम्नस्थ रक्तसंचय (Spinal congestion), बहुमूत्र और मधुमेह (डायाबेटीज इन्सिपिडस) प्रभृति रोगों में भी वर्तते हैं। अतः यक्ष्माजन्य रात्रिस्वेदके रोकनेके लिए इसका प्रयोग करते हैं।

अर्गट को अधिकतर शिशु प्रसवानन्तर प्रयोग में लाते हैं। क्योंकि प्रसव के पश्चात् इसको देने से गर्भाशय भलीभाँति संकुचित हो जाता है, एवं अपरापातन में सहायता मिलती है और जरायु द्वारा रक्तस्राव नहीं होने पाता। परन्तु प्रसव से पूर्व इसका उपयोग अत्यन्त चतुरतापूर्वक करना चाहिए। अन्यथा जरायु संकोच के कारण गर्भ के नष्ट हो जाने की आशंका होती है, या गर्भाशय के विदीर्ण हो जाने का भय होता है। क्योंकि इसके प्रयोग द्वारा जरायु न केवल क्रमशः बल पूर्वक आकुंचित होने लगता है, बल्कि वह अधिक काल तक संकुचित रहता है और यही

भ्रूण के पक्ष में भयावह होता है। अपरञ्च यदि भ्रूण जरायु द्वारा विसर्जित न हो तो जरायु के बलपूर्वक आकुञ्चित होने पर स्वयं गर्भाशय के विदीर्ण हो जाने की आशंका होती है। अस्तु यदि वस्तिगह्वर में कोई विकार न हो और भ्रूण उदर के भीतर आड़ा या किसी विकृत रूप में न हो एवं कोई अन्य कारण प्रसव के लिए रोधक वा अहितकर न हो तथा गर्भाशयिक द्वार भली प्रकार खुल गया हो और गर्भाशय की शिथिलता के कारण प्रसव में विलम्ब हो रहा हो तो अर्गट को प्रसव की दूसरी वा तीसरी श्रेणी में भी वर्तना उपयोगी है।

योग-निर्माण विषयक आदेश—

(१) अर्गट एक मनाशुकारी विष है। अस्तु कथित काल इसके एक आउंस लिक्विड एक्सट्रैक्ट को एक ही मात्रा में देने से विपाक्त लक्षण नहीं उपस्थित हुए।

(२) इसके सद्यः निर्मित फांट और इसके अमोनित यौगिक उदाहरणतः अमोनिएटेड टिंक्चर ऑफ़ अर्गट अपेक्षाकृत अधिक विश्वस्त योग है।

(३) क्लोरोफॉर्म वॉटर और टिंक्चर ऑफ़ ऑरेंज के योजित करने से अर्गट के कुस्वाद का निवारण हो जाता है।

(४) लिक्विड एक्सट्रैक्ट ऑफ़ अर्गट को परक्लोराइड ऑफ़ आयर्न के साथ मिश्रित करने से जब मिश्रण श्यामवर्ण का हो जाता है, तब उसमें किञ्चित् निम्बुकाम्ल (Citric acid) के मिलाने से उसका शुभ्र वर्ण होजाता है।

(५) अर्गोटीन को वटिका रूप में वा कैपशूल में डालकर दें। इसके त्वक्स्थ अन्तःक्षेप करने के लिए नितम्ब स्थल की गम्भीर पेशी श्रेष्ठतर है। उदर की दीवार में इसका त्वगीय अन्तःक्षेप नहीं करना चाहिए। त्वक्स्थ अन्तःक्षेप के पश्चात् उक्त स्थल प्रायः शोथयुक्त हो जाता और वहाँ पर फोड़ा बन जाया करता है।

परीक्षित प्रयोग

(१) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी लिक्विडम ½ ड्राम
लाइकर स्ट्रिक्नीनी २ मिनिम
लाइक्वार आर्सेनिकैलिस ३ मिनिम
क्वीनीन सल्फ २ ग्रेन
एसिडम सल्फ्युरिकम डिल ५ मिनिम
एक्वा एनिसाई १ आउंस

यह एक मात्रा है। आवश्यकतानुसार ऐसी ही एक एक मात्रा औषध दिन में दो-तीन बार दें।

प्रयोग—प्रसव के पश्चात् ज्वर होने की दशा में अथवा ज्वर के न रहने पर भी इसका उपयोग लाभदायक है।

(२) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी लिक्विडम् १० मिनिम
लाइकार स्ट्रिक्नीनी ३ मिनिम
एक्वापाइमेण्टी (या मेन्थी) ½ आउंस पर्यंत

ऐसी एक एक मात्रा औषध प्रति तीन-चार घंटे पश्चात् दें।

प्रयोग—रुकी हुई आर्तव के निकालने अर्थात् आर्तवप्रवर्तन [illegible] गुणप्रद है।

(३) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी लिक्विडम ४० मिनिम
एसिड गैलिक १० ग्रेन
एक्वासिनेमोमाई १ आउंस पर्यंत

ऐसी एक मात्रा औषध तत्क्षण पिलावें। आवश्यकता होने पर कुछ घंटे पश्चात् एक मात्रा और दें।

प्रयोग—जरायु द्वारा रक्तस्राव होने (Uterine hæmorrhage) में लाभप्रद है।

(४) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी १ ग्रेन
एक्सट्रैक्टम गॉसीपियाई ½ ग्रेन
फेराई सल्फास एक्सीकेटा १ ग्रेन
एक्सट्रैक्टम एलोज सोकोट्राइनी १ ग्रेन

सब की एक वटिका प्रस्तुत करें और ऐसी एक एक वटी दिन में दो बार दें। प्रयोग—रजःप्रवर्तक है।

(५) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी लिक्विडम ३० मिनिम
पोटासियाई आयोडाइडाई ३ ग्रेन
अमोनियाई कार्ब २ ग्रेन
एक्वा-मेन्थी पेप० १ आउंस पर्यंत

ऐसी एक एक मात्रा औषध दिन में दो बार दें। प्रयोग—यूटराइन फ्राइब्रॉइड (गर्भाशय तन्त्वर्बुद) में उपयोगी है।

(६) एक्सट्रैक्टम अर्गोटी लिक्विडम १४ मिनिम
दिक्चुरा बेलाडोनी ५ मिनिम
सिरूपस ऑरन्शियाई ½ ड्राम
इन्फ्युज़म करकेरी ½ आउंस पर्यंत

ऐसी एक एक मात्रा औषध दिन में तीन बार दें। प्रयोग—यह स्तन्यह्रासकारक (Anti-galactagogue.) है।

अर्गोटॉक्सिन ergotoxin-इं० अर्गट का एक प्रभावकारी सत्व। देखो-अर्गोटा।

अर्गोटिज़्म ergotism-इं० अर्गट द्वारा विषाक्तता। देखो—अर्गोटा।

अर्गोटीन ergotin-इं० अर्गट सत्व। यह अर्गोटॉक्सिन का प्रन्हाइड्राइड है। देखो - अर्गोटा।

अर्गोटीनीन ergotinin-इं० अर्गट से निर्मित किया हुआ एक अल्कलॉइड (क्षारीय सत्व) विशेष। देखो—अर्गोटा।

अर्गोटीनम् कॉलमैन फ्ल्युइडम्-ergotinum kohlman fluidum-लें० अर्गोटीन भेद। देखो—अर्गोटा।

अर्गोटीनम डेन्ज़ील फ्ल्युइडम ergotinum denzel fluidum-लें० अर्गोटीन भेद। देखो—अर्गोटा।

अर्गोटीनम् बांम्बेलोन फ्ल्युइडम् ergotinum bombelon fluidum-लें० अर्गोटीन भेद। देखो—अर्गोटा।

अर्गोटीनम् बॉन्जियन ergotinum bonjean -लें० अर्गोटीन भेद। देखो—अर्गोटा।

अर्गोटैनिक एसिड ergotannic acid-लें० एक ग्ल्युकोसाइड विशेष। देखो—अर्गोटा।

अर्गोनीन argonin-इं० यह चाँदी का एक यौगिक है। देखो—रजत।

अर्घोल arghol-काफ़ूर मोती (कपूर का एक भेद है जो गदला नीला सा होता है)।

अर्घ argha-हिं० पुं० (१) Mode of worship, act of pouring-out water in honour of a deity (The sun, moon, *etc.*) while performing worship, पूजाकी एक विधि। जलदान, सामने जल गिराना। तर्पण करना। (२) मूल्य।(price, value.)

अर्घटम् arghatam-सं० क्ली० भस्म। (Oxide.) क्षारा०। see-Bhasman.।

अर्घा arghá-हिं०पुं०, स्त्री०(१)अर्घ्य देनेका शंख की आकृति का एक ताम्र पात्र। जलहरी, तर्पण का पात्र (A vessel shaped like a boat.)। (२)जिस वनमें जरत्कारु मुनि तप करते थे, वहाँ का मधु।

अर्घ्यम् arghyam-सं० क्लो०
अर्घ्य arghya-हिं० संज्ञा पुं०
आर्घ्य मधु, मधु। A sort of honey (Mel.)। वि० (१) पूजनीय (२) बहुमूल्य।

अर्घ्यत arghyata-देखो—मधु।

अर्घ्याटः,-लः arghyáṭah,-lah-सं० पुं० शुक्ला, उश्टा। चाकसू, चँचूका-वं०। पर्याय -शुक्ला, चालुपत्रः, अर्घ्यतः, अर्घ्याटलः। द्रव्याभि०।

अर्घ्यातः arghyátah-सं० पुं० अर्घ्याट, उश्टा, चोकसा। (Abrus precatorius) द्रव्याभि०।

अर्घ्यार्हः arghyárhah-सं० पुं० मुचकुन्द वृक्ष। (Pterospermum suberifolium.) रा० नि० व० १०। देखो-मुच (चु) कुन्दः।

अर्चा कामी archá-kámí-सं०,हिं० स्त्री० बलि कामी-सं०।

लक्षण-जब ग्रह अपनी पूजा कराने के निमित्त आक्रमण करते हैं तब बालक दीन होकर अपने हाथों से मुख को मलता है; उसके ओष्ठ, तालु और कंठ सूख जाते हैं। शंकित चित्त होकर वह चारों ओर देखने लगता है, रोता है, ध्यान में बैठ जाता है, दीनता प्राप्त कर लेता है, भोजन की

इच्छा होने पर भी नहीं खाता, ऐसा रोगी सुख साध्य होता है।

चिकित्सा—हिंसात्मक ग्रहों को वेदोक्त मन्त्रों द्वारा धूप होमादि से जय करें। अर्चाकामी ग्रहोंको यथाभिलाषित बलिप्रदानादि से जय करने का उपाय करें। वा० उ० अ० ३।

र्चि archih-सं० स्त्री०, क्ली०
र्चि archi-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री०
(१) अग्निशिखा, लांगलिक, करिहारी। (Gloriosa superba.)। (२) अग्निउवाला, गज पिप्पली (Pothos officinalis)। (३) चमक, आँच, ज्योति, दीप्ति, तेज (Light, splendour.)। (४) अग्नि आदि की शिखा। (५) किरण।

र्चिमान archimána-हिं० वि० [सं०]
र्चिष्मान् archishmán-हिं० संज्ञा पुं०
[सं०] [स्त्री० अर्चिष्मती] (१) अग्नि (Fire) (२) सूर्य (The sun.) -वि० [सं०] दीप्त। प्रकाशमान। चमकता हुआ। (Lighted.)

र्ची archí-ता० काञ्चनार, कचनाल (२)। (Bauhinia racemosa, Lam.) मेमो०।

र्ज़ áarza-अ०(१) पीलु,-लु (Salvadora persica.)। (२) दर्शनशास्त्र (हिक्मत) की परिभाषा में उस वस्तु को कहते हैं जो दूसरे के आधार से स्थित हो अर्थात जिसका अस्तित्व दूसरे के आधार पर हो। उदाहरणतः रंगीन कपड़े में जो रक्तता, श्यामता या श्वेतता प्रभृति वर्ण पाए जाते हैं वे "अ्रज़" हैं और स्वयं कपड़ा उनका मूलाधार है। और पदार्थत्व अर्थात मृदु, लघु, सूक्ष्म प्रभृति गुण पदार्थ के अस्तित्व को प्रगट करते हैं अर्थात् वे पदार्थाश्रित हैं तथा "अ्रज़" या गुण कहलाते हैं। क्रियात्मक, लक्षण, धर्म, स्वाभाविक गुण, लक्षण प्रभृति इसके पर्यायवाची शब्द हैं। क्वालिटी (Quality.) ई०।

अर्ज arja,
अरीज arija
-अ० महकना, सुगन्ध फैलना। पर्फ्यूम (Perfume.)

अ्रज़ arza-अ० (१) पृथ्वी, भू, एक तत्व विशेष। (Earth) देखो—तत्व। (२) चौड़ाई। आयत। अर्ज़-हिं०।

अ्रज़ह् arzah-अ० दीमक। (White ant.)

अर्जकः arjakah-सं० पुं०
अर्जक arjak-हिं० पुं०
(१) वनतुलसी भेद, बावरी-हिं०। बाबुइतुलसी-बं०। मरुवक-... -मह-फा०। तेल्लगगेरचेट्टु-तै०। (Ocimum Basilicum.)। पर्याय—वर्बरिकाख्य: खरपुष्पः, गन्धपत्रः, पाता, कुठेरकः। "वर्बरिकाभेद लघुमञ्जरीकः सूक्ष्मपत्रः निर्गन्धः, श्वेत कुठेरक (बाबुई)।" सु० सू० ३८ अ० सुरसादि ड०। श्वेत बर्बरी। सादा बाबुई-बं०। भा० पू० १ भा०। श्वेत पर्णासः, श्वेत तुलसी, शो... मारी। सि० यो० विसूची-चि० वमन शान्ति। अर्जक अर्थात बाबरी श्वेत, कृष्ण तथा रक्त भेद से तीन प्रकार की और तीनों गुण में समान होती हैं।

गुण—कटु, उष्ण, वात कफ रोगनाशक, नेत्र रोगहर, रुचिकारक तथा सुखप्रसवकारक है। रा० नि० व० १०। वैद्यो-बर्बरी (वनतुलसी, विश्वतुलसी)। (२) श्वेतपलाश वृक्ष। (The white Butea frondosa, (... var.)

अर्जकजः arjakarjoh-सं० पुं० असन वृक्ष, आसन (-ना), पियाशाल। (Terminalia tomentosa.) देखो—आसन।

अर्जकादिवटिका arjakádi-vatiká-सं० स्त्री० सफेद तुलसी मूल, शंखाहुली मूल, निर्गुण्डी, भांगरे की जड़, जायफल, लवंग, विडंग, गजपीपल, चातुर्जात, वंशलोचन, अनन्तमूल, मूसली, शतावरी, विदारीकन्द, गोखरू सब को कीकर की छाल के रस में खरल करके १-१ मा० की गोलियाँ बनाएँ। अनुपान-सुरामण्ड। यह गोलियाँ स्तम्भक और वृष्य हैं। भै० र० वी० स्तं०।

र्जत arjati-भूम्यामलकी, महाकन्न मनी। (Phyllanthus niruri.) ई० हैं० गा०।

र्जन arjan-ब्रह्मा० मकड़ी। (Spider.)

र्ज़न arzan-फ़ा० कंगुनी या चीना। (Millet.)

र्ज़रा arzará-बरब० आस।

र्ज़लब्नान arza-labnán-अ० देवदार, चीड़। (Pinus Cedrus.) म० अ० डा०।

र्जवा arjavá-कु० चाँदी, रजत। Silver (Argentum.) देखो—रजत।

र्जवाँ arjaván-अ० अर्गचा।

र्जा áarjá-अ० चर्ख़। See charkha.

र्जान arján बरब० बरबरी या दाज का वृक्ष।

र्ज़ानी arzáni -अ० मुहम्मद अकबर अर्ज़ानी शाह नाम था। आप औरंगज़ेब के समकालीन तथा उच्चकोटि के हकीम थे। मीज़ानुत्तिब्ब, तिब्ब अकबर, मुफ़र्रिदुल्क़ुलूब प्रभृति आपके लिखे हुए प्रसिद्ध ग्रंथों में से हैं।

र्जाब arjáb
ज्याम् amáán } -अ० आन्त्र। नोट—यह शब्द एकवचन में नहीं आता। (Intestines.)

र्जालून arjálún-बरब० फ़ाशरा, शिवलिंगी। (Bryonia.)

र्ज़ीज़ arziz
र्ज़ीर arzir } -फ़ा० यशद, राँगा। Tin (Stannum.) म० फ़ा० इं०।

र्जीक़नह arjiqanah-यू० इक्लीलुल्मलिक (नाख़ूना)। (Melilotus officinalis.)

र्जीनिया urginea-लै० अरण्यपलाण्डु, काँदा, जंगली प्याज़। उन्सूल, इस्क़ील-अ०। (Indian squill.) देखो—वन पलाण्डु।

र्जीनिया इण्डिका urginea Indica, Kunth.
र्जीनिया सिल्ला urginea scilla, Steinheil. } -लै० काँदा, जंगली प्याज़, अरण्यपलाण्डु। (Scilla indica.) देखो—वन पलाण्डु।

र्जुनः arjunah-सं० त्रि०
र्जुन arjuna-हिं० त्रि० } -सं०, हिं० पुं० (१) श्वेत वर्ण, सफ़ेद। उज्ज्वल (White colour.)। (२) शुभ्र। स्वच्छ। (३) सफ़ेद कनैल।

(१) नेत्र शुक्लगत रोग विशेष। आँख का एक रोग जिसमें आँख के सफ़ेद भागमें लाल छींटे पड़ जाते हैं।

लक्षण—नेत्रों के सफेद भाग में खरगोश के रुधिर के समान जो एकही बिन्दु उत्पन्न हो उसको "अर्जुन" कहते हैं। मा० नि०।

(२) मयूर, मोर पक्षी (The peacock.)। मे० नत्रिकं।

(३) एक वृक्ष विशेष।

पर्याय—नदीसर्जः, वीरतरु, इन्द्रद्रुः, ककुभः (अ), इन्द्रद्रुमः (शब्दर०), शम्बरः, पार्थः, चित्रयोधी, धनञ्जयः, वैरान्तकः, किरीटी, गाण्डीवी, कर्णारिः, करवीरकः, कौन्तेयः, इन्द्रसूनुः, गंडीरी, शिवमल्लकः, सव्यसाची वीरद्रुः, कृष्णसारथिः, पृथाजः, फाल्गुनः, धन्वी, वीर-वृक्षः-सं०। कहू, कहुआ, काह (हू), कोह, कौह, अर्जुन का पेड़, अञ्जन-हिं०। अज्जुनः, अज्जुन, गाछ—बं०। टर्मिनेलिया अर्जुना (Terminalia arjuna, Bedd., टर्मिनेलिया ग्लेब्रा Terminalia glabra, W. & A., पेण्टाप्टेरा अर्जुना Pentaptera arjuna, Roxb., पेण्टाप्टेरा ग्लेब्रा Pentaptera glabra., पेण्टाप्टेरा ऐंगस्टिफोलिया Pentaptera angustifolia., बौहीनीया टोमेण्टोसा Bauhenia tomentosa -लै०। अर्जुना Arjuna दी अर्जुना माइरोबेलन The Arjuna myrobalan-इं०। वेल्लइ-मरुद-मरम्, वेल्लमरुद, नेल्ल मट्टी-ता०। तेल्ल-मद्दि-चेट्टु, मद्दि (द्दि) चेट्टु, येम्मद्दि-ते०, तै०। वेल्ल-मरुत, पुल्ल-मरुत-मल०। होले-मद्दि, बिलि-मद्दि, तोर-बिलि-मद्दि, तोर-मद्दि, बिलि मद्दि-कना०। मारुदोल, परमर-कु०। अर्जुन साद (द) ड़ा, आपटा, सारडोल, अर्जुन वृष, शादूंल, पिञ्जल, सन्मदड-मह०। सादड़ो, अर्जुन, साजड़ान, आमोदरो गु०। तारेमतो -का०। दञ्जल-उड़ि०। श्वेतवर्ण वृष, सारडोल

–कों० । मद्दिविल्लि–मद्दि, मद्दि–मैसू० । तीक्ष्यान–बर० । अर्जुन–बम्ब० । कुम्बुक –सिंहल० ।

हिमज या हरीतकी वर्ग

(N. O. Combretaceæ.)

उत्पत्ति-स्थान यह वृक्ष दक्खिन से अवध तक नदियों के किनारे होता है। यह बरमा और लङ्का में भी होता है। उत्तरी, पश्चिमी प्रांत, हिमवतो पर्वत मूल, संयुक्त प्रांत, बंगप्रदेश तथा मध्य भारत, दक्षिण बिहार और छोटा नागपुर।

वानस्पतिक-वर्णन—इसके वृक्ष अत्यन्त विशाल ३०–३२ हाथ अर्थात् ६० से ८० फीट उच्च तथा पतनशील (पत्र) होते हैं। इसका काण्ड अत्यन्त स्थूल होता है। बंगदेश में वीर-भूम्यञ्चल में यह प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होता है। यह एक आरण्य वृक्ष है। पत्र नरजिह्वाकार, पत्रपृष्ट में वृन्त के सन्निकट दो अर्बुदाकार ग्रंथियाँ इस प्रकार लगी होती हैं जिनको पत्र के ऊपर की ओर से देखने से वे दिखाई देती हैं, ऐसा बोध नहीं होता। वैशाख तथा ज्येष्ठ में इसमें पुष्प लगते हैं। पुष्प अत्यन्त सूक्ष्म, हरिताभ श्वेतवर्ण के और पुष्प दण्ड के चतुर्दिक स्थित होते हैं। केशर केशवत् सूक्ष्म एवं उच्च होते हैं। फल अगहन और पौष में परिपक्व होते हैं। फल देखने में कर्म्मरंग के समान लम्बाई की रुख उच्च तीरणिकाओं एवं तन्मध्य गंभीर परिखाओं से युक्त फाँकदार होते, किंतु तदपेक्षा खर्वाकार एवं तादृश मांसल नहीं होते हैं। नवीन त्वक् आमलक वल्कवत् बाहर से रक्ताभ धूसर तथा भीतर में अरुणवर्ण का होता है। स्वाद ग्राह्य कषाय होता है।

रासायनिक-संगठन—अन्य संकेतों से यह प्रगट होता है कि बहुतः पूर्व अन्वेषकों को उक्त औषधि यथेष्ठ अभिरुचि प्रदान करचुकी है। हूपर (१८९१) के अनुसार इसकी छाल में ३४ प्रतिशत भस्म प्राप्त होती है जिसमें लगभग सम्पूर्ण शुद्ध खटिक कार्बनित अर्थात् चूर्णोपल या खड़िया मिट्टी (Calcium carbonate) होता है। जलीय रसक्रियामें २३ प्रतिशत खटिक लवण और १६ प्रतिशत कषायीन (Tannin) यह दो द्रव्य वर्तमान होते हैं। ऐलकोहल युक्त रसक्रिया प्रस्तुत करने पर कषायीन के मिश्र अत्यल्प मात्रा में रञ्जक पदार्थ प्राप्त हुआ।

घं.शाल (१९०६) ने इसकी छाल का विस्तृत रासायनिक एवं प्रभाव विषयक अध्ययन किया। उनके अनुसार इसमें निम्न लि[खित] द्रव्य पाए गए—

(१) शर्करा, (२) कषायीन, (...) रञ्जक पदार्थ, (४) ग्लूकोसाइड के समान एक ... और (५) कैल्सियम तथा सोडियम के ... नेट्स और किञ्चित् क्षारीय धातुओं के ... (Chlorides)। उन्हें यह भी ज्ञात हुआ ... सम्पूर्ण कषायीन १२ प्रतिशत और भस्म ... प्रतिशत हुई।

परन्तु, आर० एन० चोपरा महोदय ... उनके सहयोगियों ने उत्तम शुद्ध वल्कल ... एकत्रित कर, इसके उन प्रभावात्मक द्रव्य ... प्राप्ति हेतु, जिनको उक्त औषधि के हृदय ... प्रभाव का मूल बतलाया जाता है, इसका ... चतुरतापूर्वक विश्लेषण किए। कहा जाता ... इसमें ग्लूकोसाइड्स वर्तमान होते हैं। ... उनकी विद्यमानता का ज्ञान प्राप्त करने के ... अत्यन्त ध्यानपूर्ण शोध की गई। परन्तु ... वल्कल में न ऐल्कलाइड (क्षारोद्) और ... ग्लूकोसाइड ही प्राप्त हुए और न सुगन्धि ... अस्थिर तैल के स्वभाव का ही कोई द्रव्य ... गया। आपके अनुसार वल्कल में निम्न ... वर्तमान पाए गए—

(१) अल्प मात्रा में एल्युमिनियम (... कम) तथा मग्नेशियम (मगनम) लवणों ... सहित असाधारणतः बहुल परिमाण में ... (Calcium) के लवण।

(२) लगभग १२ प्रतिशत कषायीन ... प्रधानतः पाइरोकैटेकोल टैनिन्स (Pyro-techol tannins) वर्तमान ...

(३) उच्च द्रवणांकयुक्त एक सैन्द्रियकाम्ल और फाइटोस्टेरोल (Phytosterol)।

(४) एक सैन्द्रियक एस्टर (Ester) जो पचरसों द्वारा सहज में ही हाइड्रोलाइज्ड (Hydrolysed) हो जाता है।

(५) कतिपय रञ्जक द्रव्य, शर्करा प्रभृति। उपर्युक्त विश्लेषण द्वारा यह बात स्पष्ट होगई कि इसमें कोई ऐसा प्रभावात्मक सत्त्व, जो इसके हृदय बलकारक प्रभावका कारण सिद्ध हो, जिसमें पुरस्तीय जनता की महान श्रद्धा है, नहीं पाया जाता। पृथक्करण काल में पेट्रोलियम, ईथर, मद्यसारीय और जलीय सारों से प्राप्त विभिन्न अंशों की ध्यानपूर्वक परीक्षा की गई; परन्तु स्फटिक यौगिकों के सिवा कोई अन्य द्रव्य जो हृदय या किसी अन्य धातु पर प्रभाव उत्पन्न करें, नहीं पाए गए। रञ्जक पदार्थ को वियोजित कर उसकी परीक्षा की गई, पर परिणाम पूर्ववत् रहा। अभी हाल में केइयस (Caius), म्हैसकर (Mhaskar) तथा आइजक (Isaac) (१९३०) ने टर्मिनेलिया अर्थात् हरीतकी जाति के सामान्य भारतीय भेदों के द्रव्यगुण का विस्तृत अध्ययन किया, परंतु क्षारोद (alkaloid) वा मधुरीन (Glucoside) अथवा सुगन्धित वा उड़नशील तैल (Essential oil) के स्वभाव के किसी प्रभावात्मक द्रव्य के प्राप्त करने में वे असमर्थ रहे। सम्पूर्ण १२ प्रकार की छालों को भस्म कर परीक्षा करने पर उनमें एक श्वेत, मृदु, निर्गन्ध और निःस्वाद भस्म वर्तमान पाई गई। (इं० ड्र० इं०)

प्रयोगांश—त्वक्, पत्र (तथा अर्जुन सुधा)।

मात्रा—त्वक् चूर्ण—२-६ आना भर।

साधारण मात्रा—२ तो०।

औषध-निर्माण—अर्जुनघृतम्, अर्जुनाद्य घृतम्, अर्जुन त्वक् क्वाथ, (१० में १)

मात्रा—आधा से १ आउंस; और त्वक् चूर्ण।

अर्जुन के गुणधर्म तथा प्रयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—अर्जुन कषेला, उष्ण वीर्य, कफघ्न तथा व्रणशोधक है और पित्त, श्रम तथा तृषानाशक एवं वातरोग प्रकोपक है। धन्वन्तरीयनिघण्टु। रा० नि० व० ९।

ककुभ अर्थात् अर्जुन शीतल, कषेला, हृदय को प्रिय (हृद्य), क्षत, क्षय, विष और रुधिर विकार को दूर करता है तथा मेद रोग, प्रमेह, व्रणरोग एवं कफ पित्त को नष्ट करता है। भा० पू० १ भा० वटादि व०। चा० सू० १५ अ०-न्यग्रोधादि। "जम्बू द्वयार्जुनकपीतन सोम वल्क।"

पार्थ (अर्जुन) क्षत तथा भग्न में पथ्य और रक्तस्तम्भक तथा मूत्रकृच्छ्र में हितकर है। (राजवल्लभ)।

अर्जुन के वैद्यकीय व्यवहार

चरक-रक्तपित्त में अर्जुन त्वक्—(१) अर्जुन की छाल को रात्रिभर जल में भिगो रक्खें प्रातः उक्त जल (हिम) को या अर्जुन की छाल के रस या छाल को जल में पीसकर किम्वा अर्जुन की छाल द्वारा प्रस्तुत क्वाथ के पान करने से रक्तपित्त प्रशमित होता है। (चि० ४ अ०) "धन्वनयोदुम्बरक० निशिस्थिता वा स्वरसीकृता वा कल्कीकृता वा मृदिता शृता वा। एते समस्ता गणशः पृथग्वा रक्तं सपित्तं शमयन्ति योगाः"।

(२) व्रणाच्छादनार्थ अर्जुनपत्र—अर्जुन पत्र द्वारा व्रण (क्षत) को आच्छादित करें। यथा—"कदम्बार्जुन ×। व्रण प्रच्छादने विद्वान् ×।" (चि० १३ अ०)।

सुश्रुत—शुक्रमेह में अर्जुनत्वक्-शुक्रमेही को अर्जुन की छाल वा श्वेत चन्दन का क्वाथ पान करायें। यथा—"शुक्रमेहिनं ककुभ चन्दन कषायं वा।" (चि० ११ अ०)।

वाग्भट—मूत्राघात में अर्जुन त्वक्—मूत्ररोध होने पर अर्जुन की छाल का क्वाथ पान करायें। यथा—

"कषायं ककुभस्य वा" (चि० ११ अ०)

(२) व्यङ्ग में अर्जुन त्वक्—व्यंग (यौवन पिड़का वा मुहांसा) रोग के प्रतीकारार्थ अर्जुन त्वक् को पेषण कर मधु के साथ प्रलेप करें। यथा—

"व्यङ्गेषु चार्जुन त्वचा" (उ० ३२ अ०)

(२) अर्जुन और सिरिसकी छालके क्वाथमें रूई की बत्ती भिगोकर योनि में रखने से मूढगर्भ के निकलने के पश्चात् की व्यथा दूर होती है।

चक्रदत्त—रक्तातिसार में अर्जुन त्वक् अर्जुन की छाल को बकरी के दूध में पीसकर बकरी का दूध तथा मधु मिला कर पीने से रक्तातिसार निवृत्त होता है। यथा—

"× अर्जुन त्वचः। पीताः क्षीरेण मध्वाढ्याः पृथक् शोणित नाशनाः।" (अतिसार चि०)

(२) हृद्रोग में अर्जुन त्वक्—कुट्टित अर्जुन छाल २तो०, गव्य दुग्ध आध पाव, जल डेढ़ पाव, इनको दुग्धावशेष रहने तक क्वथित करें। यह क्वाथ हृद्रोग में सेवनीय है। यथा—

"अर्जुनस्य त्वचा सिद्धं क्षीरं योज्यं हृदामये।" (हृद्रोग चि०)

(३) बलसञ्जननार्थ अर्जुन त्वक्—अर्जुन की छाल को दुग्ध में पीसकर दूध के साथ पीने से बल की वृद्धि होती है अर्थात् यह परं बल्य व रसायन है। यथा—

"ककुभस्य च वल्कलम्।
रसायनं परं बल्यं ॥" (हृद्रोग चि०)

(४) अस्थिभग्न में अर्जुन त्वक्—सन्धियुक्त अस्थि भग्न में दुग्ध तथा घृत के साथ अर्जुन त्वक् चूर्ण को पान कराएँ। यथा—

"सघृतेन ॥ अर्जुनम्। सन्धियुक्तोऽस्थि भग्ने च पिबेत् क्षीरेण मानवः।" (भग्न चि०)

भावप्रकाश—क्षयकास में अर्जुन त्वक्—अर्जुन की छाल को चूर्ण कर अडूसा पत्र स्वरस की सात भावना देकर मिश्री, मधु तथा गोघृत के साथ चाटें। यह सरक्त क्षयकास हर है। यथा—

"चूर्ण काकुभमिष्ट वासक रस भावित बहुवारान। मधु घृत सितोपलाभिर्लिहं क्षय कासरक्तहरम्।" (म० ख० द्वि भा०)

(२) मूत्ररोधज उदावर्त्त में अर्जुन त्वक्—मूत्ररोध जन्य उदावर्त में अर्जुन छाल का क्वाथ पान कराएँ। यथा—

"मूत्ररोध जनिते ॥ कषायं ककुभस्य च" (म० ख० तृ० भा०)

हारीत—पूयमेह में अर्जुन त्वक्—मेंही की घन तथा अर्जुन की छाल का क्वाथ पान कराएँ। यथा—"॥ पूयमेहे कषायः अर्जुनस्य।" (त्रि० २८ अ०)

चक्रसेन—ग्रहणी में अर्जुनक्षार—... एवं अर्जुन की छाल के अन्तर्धूम दग्ध ... प्रातः काल तक्र (मट्ठा) के साथ पान करें। वेदना बहुल आमग्रहणी के लिए हितकर। यथा—

केयाप्रेऽर्जुनक्षारं प्रातः पीत... निहन्ति साममत्यर्थमचिराद् ग्रहणीगदम्। (ग्रहण्यधि...)

वक्तव्य

चरक के उदर्दप्रशमनवर्ग में अर्जुन का उल्लेख है (सू० ४ अ०) तथा ... "निग्रोधार्जुनाम्रात निशोत पत्राणां," "... सर्जार्जुन केशराणां" व कफमेह "... धन्वनाश्च" एवं कफ वातज मेह "... अर्जुन" विषयक पाठों के अन्तर्गत ... प्रमेह रोगों में अर्जुन का व्यवहार ... होता है। चक्रदत्त की हृद्रोग चिकित्सा अन्तर्गत इसका पाठ है और उन्होंने ... द्रव्यों में इसे श्रेष्ठ माना है। किन्तु ... सुश्रुतोक्त हृद्रोग चिकित्सामें इसका नामोल्लेख भी नहीं हुआ है।

चरक-सुश्रुतोक्त क्षयकास चिकित्सान्तर्गत अर्जुन का प्रयोग दिखाई नहीं देता। चक्रदत्तोक्त रक्तातिसारान्तर्गत अर्जुन का प्रयोग, सुश्रुत की अविकल प्रतिलिपि है। (सु० उ० ४० अ०)

उपर्युक्त वर्णन से यह ज्ञात होता है कि संस्कृत ग्रन्थकार अर्जुन को अति प्राचीन काल से हृद्य बलदायक औषध मानते आए हैं। ...

प्रथम वाग्भट महोदय ने इस ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया। वे लिखते हैं—

"क्वाथे रोहीतकाश्वत्थ खदिरोदुम्बराजुर्ने * * * ।" (चि० अ० ६)

इस पाठ में वे कफज हृद्रोगी को प्रत्यांतर सहित अर्जुन के उपयोग का आदेश करते हैं। इसके बाद के परवात्कालीन लेखकों में चक्रदत्त ने इसे कषाय एवं वल्य लिखा और प्रयोग में इसके प्रयोग का उल्लेख किया।

इसकी छाल एवं तन्निर्मित औषध अपने प्रत्यक्ष हृदयोत्तेजक प्रभाव के लिए इस देश में आजतक विख्यात है। आयुर्वेदीय चिकित्सक हृद्दौर्बल्य तथा हृद्रोग की सभी दशाओं में इसका उपयोग करते हैं। कतिपय पाश्चात्य चिकित्सकों की भी इसके हृद्योत्तेजक प्रभाव में आस्था है और वे इस को हृद्य (हृदय बल्य) रूप से व्यवहार करते हैं। अस्तु इसकी छाल द्वारा निर्मित एक तरल सार डाक्टरी औषध-विक्रेताओं द्वारा उपलब्ध होता है।

परन्तु कोमन Koman (१९१९-२०) महोदय ने हृदय-कपाट जन्य व्याधि विषयक १० रोगियों पर इसके त्वग्‌द्वारा निर्मित क्वाथका उपयोग किया, पर परिणाम लाभ के विरुद्ध में रहा। उष्णकटिबन्धीयौषधि परीक्षणालय (School of Tropical Medicine) में जलोदरयुक्त वा तद्रहित हृद्दौर्बल्य (Failure of cardiac compensation), पीड़ित बहुशः रोगियोंमें इसके त्वक् द्वारा निर्मित एल्कोहलिक एक्सट्रैक्ट की भली भाँति परीक्षा की गई। किन्तु डिजिटेलिस वा कैफ्रीन समूह की औषधों के समान किसी रोगी पर इसका प्रगट प्रभाव न हुआ। रक्तभार एवं हृदय स्पन्दन की शक्ति पूर्ववत् ही रही। उक्त रोगियों के मूत्रोद्रेक पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं हुआ। जो प्रभाव इस औषध का बतलाया जाता है वह इसमें अधिक परिमाणमें पाए जाने वाले खटिक यौगिकों का हो सकता है जिसका संकेत प्रथम किया जा चुका है।

केइयस (Caius), म्हेसकर (Mhaskar) तथा आइज़क (Isaac) १९३० ने टर्मिनेलिया जाति के भारतीय भेदों के बहुशः भिन्न भिन्न स्वरूपाकार के होने का उल्लेख किया है। इसके भिन्न भिन्न १५ भेद हैं। इस प्रकार के टर्मिनेलिया की छालों की रूपाकृति में परस्पर इतनी सादृश्यता है कि इसके भेद निर्णय करने में भूल हो जाने की बहुत सम्भावना है। भारतवर्षीय औषध-विक्रेता (वणिक्) क्रियात्मक रूप से इनमें कोई भेद नहीं करते और वे सदा अर्जुन की अभेद संज्ञा द्वारा इन सब का विक्रय करते हैं। उक्त विद्वानों ने इनकी शुष्क निर्मल छालों को उष्ण फांट, क्वाथ एवं एल्कोहलिक एक्सट्रैक्ट रूपमें प्रयोग कर इनके प्रभावका पृथक् पृथक् अध्ययन किया और परिणाम निम्न रहा—

टर्मिनिलिया (हरीतकी) की सामान्य भारतीय जातियों की छालों को स्वास्थ्यावस्था में प्रयुक्त करने पर वे या तो (१) मृदु मूत्रल, यथा अर्जुन (Terminalia Arjuna), बिभीतकी (T. belerica), (T. pallida) वा(२) उत्तम सबल हृद्योत्तेजक यथा टर्मिनेलिया बाइअलेटा (T. bialata), टर्मिनेलिया कोरिएसिया (T. coriacea), टर्मिनेलिया पाइरिफोलिया (T. pyrifolia) वा (३) उभय मूत्रल तथा हृदयोत्तेजक होते हैं, यथा अरण्य बादाम (T. catappa), हरीतकी (T. chebula), हरीतकी भेद (T. citrina), टर्मिनेलिया मायरियोकार्पा (T. myriocarpa), ट० ओलिवेराई (T. oliveri), किञ्जल वा किंजल (T. paniculata) और आसन (T. tomentosa).

(School of Tropical Medicine Calcutta) द्वारा घोषित परिणामों से ये भिन्न हैं। परन्तु चूँकि अभीतक कोई प्रभावात्मक द्रव्य पृथक् नहीं किया गया और केइयस (Caius) तथा उनके सहकारियों ने क्रियात्मक रूप से विभिन्न प्रकार की छालों की रासायनिक-संगठन में कोई परिवर्तन न पाया।

अस्तु इस बात का समझना अत्यन्त कठिन है कि इसकी अलग अलग जातियोंके इन्द्रियव्यापारिक एवं औपयोगिक प्रभाव पृथक् पृथक् हैं। अस्तु मागुक्त बातों की पुष्टि हेतु विशेष अध्ययन अपेक्षित है।

यूनानी मत—

प्राचीन यूनानी ग्रंथों में अर्जुन का वर्णन नहीं मिलता। हाँ! वर्तमानकालीन लेखकों ने इसका कुछ सामान्य वर्णन किया है। उनके मतानुसार यह—

प्रकृति—उष्ण व रूक्ष २ कक्षा में, किसी किसी के मतसे ३ कक्षा में। रंग-श्वेताभधूसर। स्वाद-विकश। हानिकर्ता-उष्ण प्रकृति को तथा आध्मानजनक है। दर्पघ्न-मधु,घृत व तैल। प्रतिनिधि-रजारा त्वक्। प्रधान कार्य—काम शक्तिवर्द्धक तथा शुक्रमेहघ्न। मात्रा-३ मा० से ५ मा०।

गुण, कर्म, प्रयोग—कफविकारनाशक, है और पित्तदोष में लाभप्रद है। उत में इसका पान व प्रलेप हितकर है। इसकी छाल कामोद्दीपक है एवं शुक्रमेहघ्न है। (लगभगचिपेल) मं० मु०।

इसके अतिरिक्त इसकी छाल शुक्रतारल्य एवं मज्जी व वदी के पतलेपन तथा कामशक्ति के लिए हितकर है। यह मूत्रप्रस्रावाधिक्यको नष्ट करता है। कामशक्ति के बढ़ाने के लिए कतिपय बल्य औषध में योजित कर इसका हलुवा लाभदायक होता है। भारतीय इसका अधिकता के साथ उपयोग करते और इसको परीक्षित बतलाते हैं, परन्तु यह उतना सत्य नहीं। यु० मु०।

नव्यमत

अर्जुन त्वक् कषाय तथा बल्य है। यह हृद्रोगी के लिए उपयोगी है। क्षत, व्रण तथा पिष्ट अंग के प्रक्षालन हेतु इसकी छाल के क्वाथ का स्थानिक उपयोग होता है। अस्थिभग्न किम्वा नेत्र शुक्र गत रक्तफूली अर्थात् अर्जुन (Ecchymosis) में अर्जुन त्वक् को पीस कर प्रलेप करें। एतद्देशीय लोग रक्तस्रुति किम्वा अन्यान्य प्रस्रावों (यथा प्रावाहिकीय श्लेष्मस्राव तथा प्रदर संबन्धी रक्त स्राव इत्यादि) में अर्जुन त्वक् का प्रयोग करते हैं। वे अश्मरी व शर्करादि प्रतिषेधक रूप में भी इसका व्यवहार करते हैं। (मे० मे० ऑफ इं०—आर० एन० खोरी, २ य खं० २५८ पृ०। फा० इं० २ मा० ११ पृ० दत्त०)

यह पैत्तिक विकारों में लाभप्रद तथा विष का अगद है। त्वक् कषाय और उत्तम फल बल्य तथा रोधोद्घाटक एवं नवीन स्वरस कर्णशूल में हितकर है।

(बैडेन पॉवेल पंजाब प्रॉडक्ट्स)

काँगड़ा में त्वक् क्षत प्रभृति में प्रयुक्त है। (स्टयुवर्ट)

अर्जुनम् arjunam-सं० क्लो० तृणभाव (Grasses.)। हला०। (२) सुवर्ण। Gold (Aurum) मे० नत्रिकं। (३) काश (Saccharum spontaneum.) मा०। (४) दर्भ भेद, कुश (Poa cynosuroides.)। (५) श्वेत वर्ण के कुटिल गति से जाने वाले कीट। अथर्व० ३२। ३। का० २।

अर्जुन arjuna-हिं० संज्ञा पुं० पुन्यन (Ehretia acuminata.) मेमो०। (२) बड़ा गाछ-बं०। भूताङ्कुशम्-ते०। मस्ती मo। गोटे-सम्ता। (Croton oblongifolius) फा० इं०। देखो—अर्जुन।

अर्जुन गाछ arjuna-gāchh-बं० अर्जुन कहू, कोह। (Terminalia arjuna).

अर्जुन घृतम् arjuna-ghritam-सं० क्ली० (१) अर्जुन की छाल के रस और क्वाथ से सिद्ध किया घृत समस्त हृद्रोग के लिए लाभदायक है। भै० र०।

(२) अर्जुनकी छाल के रस और क्वाथसे तथा स्वरस से पकाया हुआ घी सम्पूर्ण हृदय रोगों में हितकर है। योग तथा निर्माण-विधि—घृत १ श०, अर्जुन स्वरस ४ श०, कल्कार्थ अर्जुन त्वक् १ श०। सा० कौ०। भै०।

अर्जेण्टम् कोलोइडेल argentum Colloidale-इं० (Collargol.)। देखो—रजत।

अर्जेण्टम् लिक्विडम् argentum liquidum
अर्जेण्टम् वीवम argentum vivum
-ले० देखो—पारद (Hydrargyrum.)

अर्जेण्टाई ऐल्ब्युमिनास argenti albuminas-इं० (Silver albuminate)। देखो—लार्जीन (Largin.)

अर्जेण्टाई ऑक्साइडम् argenti oxidum -ले० रजतौषिद, रौप्यभस्म-हिं०। (Silver-oxide) देखो—रजत।

अर्जेण्टाई आयोडाइडाई argenti iodidi-ले० रजतैलिद। देखो—रजत।

अर्जेण्टाई एसीटास argenti acetas-ले० (Acetate of silver.) शुक्लीय रजत। देखो—रजत या इटोल्।

अर्जेण्टाई क्लोराइडम्-argenti chloridum -ले० रौप्यहरिद। देखो—रजत।

अर्जेण्टाइड argentide-इं० यह सिल्वर आयोडाइड (रजत् नैलिद) का एक तीक्ष्ण घोल है जिसमें किञ्चित् जल मिश्रित कर स्थानिक पचननिवारक रूप से प्रयोग करते हैं। देखो—आर्गीरोल। हिट० मे० मे०।

अर्जेण्टाई नाइट्रास argenti nitras-ले० रजतत्रास। (Silver nitrate, Lunar caustic.) देखो—रजत।

अर्जेण्टाई नाइट्रास इण्डयोरेटस argenti nitras induratus-ले० कठिन रजतत्रास। देखो रजत।

अर्जेण्टाई नाइट्रास मिटिगेटस argenti nitras mitigatus-ले० (Mitigated caustic.) हलका कियाहुआ कॉष्टिक। देखो—रजत।

अर्जेण्टाई न्युक्लिआस argenti nucleas -ले० नार्गोल (Nargol.)-इं०। देखो—न्यूक्लीन या न्यूक्लीओल।

अर्जेण्टाई फॉस्फास argenti phosphas (Tribasic.)-ले० रजत स्फुरेत। यह अपस्मार तथा अन्य वातरोगों में व्यवहृत है। मात्रा—½ से ⅓ ग्रेन वटिका रूप में। चो० एम०।

अर्जेण्टाई फ्लोराइडम्-argenti fluorum-ले० देखो—रजत, एसिडम् हाइड्रोफ्लोरिकम्।

अर्जेण्टाई लैक्टास argenti lactas पुक्तोल (Actol.)। देखो—रजत।

अर्जेण्टाई साइनाइडम् argenti cyanidum -ले० सिल्वर साइनाइड (Silver cyanide)-इं०। देखो—रजत। (It...) आर्गीरोल।

अर्जेण्टाई साइट्रास argenti citras देखो—रजत।

अर्जेण्टार्सील argentarsyl-इं० या ...आइलेट ऑफ आयर्न (Cacodylate of iron) तथा कोलॉइड सिल्वर (Colloid Silver) का एक संमिश्रण है।

यारकैवोविच ने मलेरिया ज्वर में ... १० घन शतांशमीटर (c. c.) की ... अन्तःक्षेप रूप से इसका ... सफलता... योग किया। उनका यह दावा है कि ... अन्तःक्षेप मात्र से रक्त स्थाईरूप से मनुष्य... के पराश्रयी कीटों से शून्य हो जाता है। मे० मे०।

अर्जेण्टेमीन argentamin-ले० ... रजत।

अर्जेण्टोल argentol-इं० यह रजत ... यौगिक है। देखो—रजत।

अर्जोवा arjová-रू० चाँदी, रौप्य। S... (Argentum.)

अर्टिका पिल्युलिफेरा urtica pilulifera Li...

अर्टिका प्राइमा urtica prima, Hall...

-ले० अञ्जरह, उतञ्जन। (Blepharis edulis, Pers.) फा० इं० ३ भा०।

अर्टीका मोर्चुआ urtica mortua-इं० (Dead nettle, white nettle, blind nettle, white archangel.) लेमिनम् एल्बम् (Laminum album.) -लै०। पी० वी० एम०।

अर्टीसीई urticaceae-लै० वट या अश्वत्थ-वर्ग।

arti-सं० स्त्री० केला, कदली। (Musa Sapientum.)

arnah-सं० पुं० शाक वृक्ष। सेगुन-म०। (A potherb in general.) श० च०।

अर्णस् arnah,-s-सं०क्लीo } जल, पानी। arna-हिं० संज्ञा पुं० } (Water.) ० नि० व० १४।

...भवः arna-bhavah-सं० पुं० शंख (Conchsholl.) वै० निघ०।

arnavah-सं० पुं० } (१) arnava-हिं० संज्ञा पुं० } समुद्र, ..र, जलनिधि। (The ocean.) रत्ना०। (२) सूर्य्य। (The sun.)

...वजः arnavajah } -सं०
...जमलः arnava ja-malah } पुं०
...फेनः arnava-phenah } समुद्र-
...मलः arnava-malah } फेन,
समुद्र कफ-हिं०। इस्ताम्री-अ०। क्रोदरिया ...फ़ा०। The dorsal scale or Cuttle fish bone (Sepia officinalis.) रत्ना०।

...वोद्भवः arnavodhavah-सं० पुं० अग्निजार वृक्ष। (See-Agnijára.) रा० नि० व० ६।

...र्णा arná-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। (River.)

...दः arnodah-सं० पुं० मुस्तक, मोथा। (Cyperus rotundus., Syn. Hexastachyos. *Roxb.*) रा० नि० व० ६।

...भवः arnobbhavah-सं० पुं० शंख। (The conch shell.) रा० नि० व० १३।

अर्तक़ी artaqi-यू० एक पहाड़ी वृक्ष जो अत्यन्त विशाल तथा भारतवर्ष में अधिकता के साथ होता है।

अर्तनीथा artanitha-यू० बखूरमरियम्। (Cyclamen Persicum, *Miller.*) फा० इ० २ भा०।

अर्तनामा áartanísá-अत्तार्य् (चोयक उश्नान) एक जड़ है जिससे ऊन धोया जाता है।

अर्तब áartaba-अ० खारखसक। गोखरू। (Tribulus terrestris.)

अर्तबह áartabah } -अ० (१) नासा
अज़्क़मह áazqamah } मध्य, नासावंश, बांसा (Bridge of nose.)। (२) ऊर्ध्व ओष्ठ का मध्यस्थ गढ़ा।

अर्तल artala-रूमा० अन्तल। रीठा-हिं०। (Sapindus trifoliatus, *Linn.*) फा० इं० १ भा०।

अर्तब artaba-अ० अधिक तर, ज़्यादा तर, स्निग्ध तर।

अर्तानियाये हिन्दी artániyáye-hindi अ० वल्लारी, वल्लारी का पत्ता-द०। थोलकुरि-तै०। ब्राह्मी-सं०, हिं०। Hydrocotyle Asiatica, *Linn.* (Indian Hydrocotyle or Penny-wort.) स० फा० इं०।

अर्तामासिया artámásiyá } -रू०
अर्तियह्‌ मासिया artiyah-másiyá } या मि० बरिंजासिफ़, क़ैसूम। (Artemosia Indica.)

अर्ति arti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अर्तित] पीड़ा। ३ था।

अर्तिया artiyá-यू० एक छोटी बूटी है, जिसकी पत्तियाँ अत्यन्त लघु और बहुसंख्यक शाखाओं से युक्त होती है। बीज खुर्फा के सदृश होते हैं।

अर्ती arti-यू० या रू० वृक्ष दीरक। कोई कोई हालों व कद् और बूयेमादरान को कहते हैं।

अर्तीक़ह artiqah-रांगा, बँग। Tin (Tannum.)

अर्तीमव् artímavú-ता० तीखुर, तवचीर। (Curcuma angustifolia, Roxb.)

अर्तीरस artíras-नैपा० कुरटी-भूटा०। (Caragana crassicaulis.) इसकी जड़ ज्वरघ्नी है। फा० इं० ३ भा०।

अर्तूनास artúnása-यू० खटिका, खरिया मिट्टी। (Chalk.)

अर्तूबास artúbása-यू० मिश्र देशोत्पन्न एक प्रकार की मृत्तिका है जो श्वेत या धूसरित वर्ण की और उष्ण स्थलों में उत्पन्न होती है।

अर्त्तगलः arttagalah-सं० पुं० नील झिण्टी, कटसरैया। (Barleria longifolia.) नीलझाण्टी-यं०। सु० द्रव्यसं०, अ०। श्रागह नामक फल वृक्ष। रत्ना०।

अर्त्तगाँ arttagán-फ़ा० यह एक प्रकार का प्रस्तर है। स्वाद—फीका। वर्ण—रक्त एवं पीत। प्रकृति—१ कक्षा में शीतल व रूक्ष।

गुण, कर्म, प्रयोग- व्रणपूरक (क्षतों के मांस को भर लाता) और अवयवों के बाह्य शोथों को लयकर्त्ता एवं क्षतों को निर्मल करता (व्रणशोधक) है। सुदिरीत (प्रवर्तक वा रेचक) के साथ प्रयोग करने से यह वृक्क एवं वस्त्यश्मरी एवं सिकता आदि को नष्ट करता है। म० मु०।

अर्त्तिः arttih-सं० स्त्री० रोग। (Disease.) रा० नि० व० २०।

अर्थः arthah-सं० पुं०] [वि० अर्थी]
अर्थ artha-हिं० संज्ञा पुं०] (१) इंद्रियों के विषय (Object)। (२) धन, संपत्ति (Wealth, riches.)। (३) याचन (Begging, request.)। (४) कारण, हेतु, निमित्त (Cause, sake.)। (५) वस्तु (Substance, goods.)। (६) अभिधेय, अभिप्राय, प्रयोजन, मतलब (Intention, purpose.)। (७) निवृत्ति (Rest.) मे० यद्विकं।

अर्थ चम्पिका artha-champiká-सं० स्त्री० कर्कट शृङ्गी, काकड़ासिंगी (Rhus succedanea, Linn.) वै० निघ०।

अर्थनट earth-nut-इं० मूँगफली, भूचणक (Arachis Hypogœa.) इं० मे० [illegible]

अर्थनट ऑइल earth-nut oil-इं० मूँगफली का तैल, रोग़न मूँगफली। (Arachis Oleum.).

अर्थ प्रसादनी artha-prasádaní-सं० [illegible] धामन वृक्ष। (See-Dhámana.) [illegible] निघ०।

अर्थ वर्म earth-worm-इं० केंचुआ। [illegible] -ख०।

अर्थ साधकः artha-sádhakah-सं० [illegible] पुत्रजीव वृक्ष, पुत्रजीवा। (Putranjiva Roxburghii.) मद० व० १ भा०।

अर्थ साधनः artha-sádhanah-सं० [illegible] (१) पुत्रजीव वृक्ष, पुत्रजीवा। (Putranjiva Roxburghii.) मद० व० ११। [illegible] रीठा करंज। (Sapindus trifoliatus.) मद० व० ५।

अर्थ सिद्धः,-कः artha-siddhah,-kah-[illegible] पुं० (१) पुत्रजीव वृक्ष (Putranjiva Roxburghii.)। (२) श्वेत निर्गुण्डी, सफेद मेउडी। (Vitex negundo album.)। (३) कृष्ण निर्गुण्डी। (Vitex negundo nigrum.) रा० नि० [illegible] ४।

अर्थापत्तिः arthápattih-सं० स्त्री०
अर्थापत्ति arthápatti-हिं० संज्ञा पुं० जो बिना ही कहा हुआ अर्थ से आ जाय [illegible] "अर्थापत्ति" कहते हैं। जैसे-किसी ने कहा [illegible] भात खाऊँगा तो इस कथन से आ गया [illegible] वह यवागू पीने का इच्छुक नहीं है। सु० [illegible] ६५ अ०। "यदकीर्तितमर्थादापद्यते।"

मीमांसा के अनुसार एक प्रकार का [illegible] जिसमें एक बात कहने से दूसरी बात की सिद्धि आप से आप हो जाए। नतीजा। [illegible] बादलों के होने से वृष्टि होती है। [illegible]

सिद्ध हुआ कि बिना याद्‌स्ल पृष्टि नहीं होती। न्यायशास्त्र में इसे पृथक् प्रमाण न मानकर अनुमान के अंतर्गत माना है।

र्थेनाइट arthenite-फ़ा० यत्नुरमरियम-इं० बाज़ा०। Sow-bread (Cyclamen Persicum, *Miller.*) फा० इं० २ भा०।

र्थ्यम् arthyam-सं० क्लो० शिलाजतु। (Bitumen.) मे० यद्विकं।

र्थ्रोक्नीमम् Arthrocnemum-ले० उश्नान, सर्जि। Soda Plants (Caroxylon.) फा० इं० ३ भा०।

र्थ्रोक्नीमम् इण्डिकम् arthrocnemum Indicum, *Moq.*-ले० सर्जि। फा० इं० ३ भा०।

र्द ãarda-अ० गदहा, गर्दभ (An ass.)

र्दह् ardah फ़ा० तिलकचरी।

र्दक ardaka-फ़ा० बत्तख़। (A Duck.) (२) आलूबोख़ारा। (Prunum.)

र्दज ardaja-फ़ा० हाऊबेर, अर्म, अरर, अभल, हपुषा। (Juniperus chinensis)

र्दन ardana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) पीड़न, दलन, हिंसा। (२) जाना, गमन।

र्दना ardaná-हिं० क्रि० स० [सं० अर्दन पीड़न] पीड़ित करना।

र्दनिः ardanih-सं० पुं० अग्निरोग। अ० टी०।

र्दम ardam-रू० सूर्यमुखी। (Helianthus Annuses.)

र्दमा ardamá-(१) कमोचा (२) गाव जुबान। (Caccina glauca, *Savi.*)

र्द हालियह् ãrda-háliyyah }
र्दहे मुख़ातियह् salãahe-mukhátiyah }
अ० (१) सादा हरीरा जो आटे को मक्खन में भून कर पुनः घी में पकाया जाता है। (२) एक प्रकार की श्यामायुक्त रसौली है जिसके माद्दे की चाशनी गाढ़े हरीरे के सदृश होती है। देखो-सल्‌अहे मुख़ातियह् (Myxoma).

नोट—अर्दहालियह् फ़ारसी भाषा का शब्द है। जो आर्द=आटा और हालह्=तैल का यौगिक है। पर उक्त संयुक्त शब्द का उपयोग उस हरीरे के लिए होता है जो आटा और घी के संयोग द्वारा निर्मित होता है। चूँकि इस रसौली के माद्दे का क़वाम उक्त हरीरे के समान होता है। इसलिए इसे इस नाम से अभिहित किया गया है।

अर्दार ardára-अ० हाथी, हस्ति। (An elephant.)

अर्दाल ardál }
अर्दाली ardáli } -हना० स्त्री०, हरिताल। (Orpiment.)

अर्दावा ardavá-हिं० पु० मोटा आटा, दलिया, सूजी।

अर्दित ardita-हिं० वि० } पीड़ित।
अर्द्दितम् ardditam-सं० त्रि० } दलित।
यन्त्रणायुक्त।

संज्ञा०, हिं० सज्ञा पुं० एक रोग जिसमें वायु के प्रकोप से मुँह और गर्दन टेढ़ी हो जाती है, सिर हिलता है नेत्र आदि विकृत हो जाते हैं, बोला नहीं जाता और गर्दन तथा दाढ़ी में दर्द होता है। पक्षाघात विशेष। लकवा।

फेशल् पैरालिसिस (Facial Paralysis), पैरालिसिस ऑफ दी पोर्टियो ड्यूरा (Paralysis of the portio dura), बेल्स पैरालिसिस Bell's paralysis-इं०। लक़्वह्-अ०। कजी दहन-फ़ा०। मुँह का टेढ़ा हो जाना-उ०।

निदान संप्राप्ति तथा लक्षण

गर्भिणी सूतिका बालवृद्ध क्षीणेष्वसृक् क्षये। (सु०)

उच्चैर्व्याहरतोऽत्यर्थं खादतः कठिनानि वा॥
हसतोजृम्भतोवापि भाराद्विषमशायिनः।
(श्वसनात्-सु०)

शिरोनासौष्ठ चिबुक ललाटेक्षण सन्धिगः॥
अर्दयत्यनिलो वक्त्रमर्दितं जनयत्यतः।
वक्रीभवति वक्त्रार्धं ग्रीवाचाप्यपवर्तते॥
शिरश्चलति वाक्सङ्गो नेत्रादीनांच वैकृतम्।
ग्रीवाचिबुक दन्तानां तस्मिन् पार्श्वेच वेदना॥

यस्याग्रजो रोमहर्षो वेपथुर्नेत्रमाविलम्।
वायुरूर्ध्वं त्वचि स्वापस्तोदोमन्या हनुग्रहः॥
तमर्दितमिति प्राहुर्व्याधिं व्याधिविचक्षणा॥
(मा० नि० । सु० नि०)

अर्थ-निदान—गर्भवती, प्रसूता स्त्री, बालक, वृद्ध, दुर्बल तथा शोणित क्षय वाले की (सु०) और ऊँचे स्वर से बोलने से, कठिन वस्तु खाने से, बहुत हँसने से, जम्हाई लेने से, बोझ ढोने से, ऊँचे नीचे स्थान में सोने (विषम भारवहन तथा विषम श्वास प्रश्वास के कारण -सु०) आदि कारणों से (वाग्भट्ट में ये कारण विशेष लिखे हैं यथा शिर पर बोझ ढोना, उग्र मुख होना, यत्नपूर्वक छींक लेना, कठोर धनुष को खींचना, ऊँचे नीचे तकिए पर शिर धरना तथा अन्य वात प्रकोपक हेतु) 'सम्प्राप्ति'—वायु प्रकुपित होकर शिर, नाक, ओष्ठ, ठोढ़ी, ललाट तथा नेत्रों की संधियों अर्थात् शरीर के ऊर्ध्व भाग में प्राप्त होकर एक ओरके मुख (वाग्भट्टके अनुसार हँसने और देखने को भी) को टेढ़ा कर (क्वचित् पार्श्वद्वय की पेशियाँ वातग्रस्त हो जाती हैं) अर्दित रोग को उत्पन्न करता है।

लक्षण—इसमें आधा मुख टेढ़ा होजाता है। गर्दन नहीं मुड़ती, शिर हिलने लगता है, बोला नहीं जाता, नेत्रादि बिगड़ जाते हैं और जिस अंग की ओर वह टेढ़ा होता है उसी ओर की गर्दन, ठोढ़ी और दाँतोंमें पीड़ा होती है। वाग्भट्ट ने ये विशेष लिखे हैं—

दंतचाल, स्वरभ्रंश, श्रवण शक्ति का नाश, छींक का बन्द हो जाना, घ्राणाज्ञता, स्मृतिका मोह, स्वप्नावस्था में त्रास, दोनों ओर से थूक निकलना, एक आँख का बन्द होना, जत्रु के ऊपर के भाग में वा शरीर के आधे भाग में वा नीचे के भाग में तीव्र वेदना आदि उपद्रव उपस्थित होते हैं। पूर्व रूप—जिस रोग के पूर्व रोमाञ्च हो, शरीर काँपे, नेत्र मलयुक्त हों और वायु ऊपर को गमन करे, त्वचा शून्य हो जाए, सुई चुभने की सी पीड़ा हो, मन्या नाड़ी तथा ठोढ़ी जकड़ जाए, इसको रोगों के जानने वाले अर्दित (लक़वा) कहते हैं। वाग्भट्ट के अनुसार कोई कोई इसको एकायाम भी कहते हैं।

अन्य तन्त्रों में आधे मुख को तरह आधे शरीर में व्याप्त वातग्रस्तता को भी अर्दित नाम से ही लिया है। यथा—

'अर्धे तस्मिन् मुखार्धे वा केवलस्यात्तदर्दितम्'
(हृद्वल:)

यदि ऐसा है तो अर्दित और अर्द्धांगवात में अन्तर क्या रहा? उत्तर में कहते हैं कि इन दोनों में भेद यह है कि अर्दित में कदाचित् ही वेदना होती है, किंतु अर्द्धांगवात में सर्वदा ही वेदना बनी रहती है। अथवा पूर्वोक्त अर्दित के सभी लक्षणों के विपरीत लक्षण अर्द्धांगवात में होते हैं।

परन्तु चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट तथा माधव आदि ग्रंथ निर्माताओं ने केवल मुखमात्र की वातग्रस्तता को ही अर्दित नाम से अभिहित किया है और अर्द्धांगवात को एकांगवात, पक्षवध तथा पक्षाघात आदि नामों से। अस्तु ऐसा ही मानकर उक्त शब्द का व्यवहार करना शास्त्र सम्मत है।

डॉक्टर लोग शीत लगना, कनफेड़, उपदंश, कतिपय मस्तिष्क रोग, कर्णास्थि क्षत, किसी दाँत का ख़राब हो जाना तथा निर्बलता इत्यादि इसके उत्पादक कारण मानते हैं। इनके अनुसार भी अर्दित के प्रायः वे ही लक्षण हैं जिनका वर्णन ऊपर किया गया है। जैसे—

विकृत मुखमण्डल का स्वस्थ की ओर आकृष्ट हो जाना (मुखमण्डल जिस ओर को आकुञ्चित होता है वास्तव में वह पार्श्व मुक्त होता है), मुख के एक कोने का नीचे की ओर लटक पड़ना, मुख प्रसेक, जलपान करते समय उसका बाहर बह चलना, कफ निष्ठीवन की असमर्थता, सीटी न बजा सकना और न फूक मार सकना इत्यादि लक्षण होते हैं। रोगी पवर्ग के अक्षरों का उच्चारण नहीं कर सकता अर्थात् उसके ओष्ठ परस्पर नहीं मिल सकते हैं। विकृत पार्श्व का नेत्र खुला रहता है और उससे अश्रुस्राव होता रहता है।

और वह किसी चीज को मुँह से खींचने वा चूसने के अयोग्य होता है।

असाध्यता

जो मनुष्य अत्यन्त क्षीण होगया हो जो स्पष्ट रूप से नहीं बोल सके, जिसकी आँखों के पलक न लगें और रोग को उत्पन्न हुए तीन वर्ष व्यतीत हो गए हों अथवा जिसकी नासिका, मुख तथा नेत्र से जल स्राव होता हो एवं काँपता हो वह अर्दित रोगी असाध्य है। यथा—

क्षीणस्यानिमिषाक्षस्य प्रसक्ताव्यक्तभाषिणः।
न सिध्यत्यर्दितं गाढ़ं (वाढ़ं--सु०) त्रिवर्षं वेपनस्य च ॥ मा० नि०।

चिकित्सा
(आयुर्वेदीय)

अर्दित रोग मे नस्य देना, शिर मे तेल लगाना तथा कान और आँख का तर्पण करना हित है। यदि अर्दित शोथ युक्त हो तो वमन कराना तथा दाह और राग से युक्त होने पर फस्द खोलना चाहिए। यथा—

अर्दिते नावनं मूर्ध्नि तैलं श्रोत्राक्षि तर्पणम्।
सशोके वमनं दाहरागयुक्ते सिरा व्यधः ॥
(चा० चि० २१ अ०)

सुश्रुताचार्य के मत से अर्दित रोगी की वातव्याधि विधानोक्त चिकित्सा करें और मस्तिष्क एवं सिर की वस्ति, नस्य, धूमपान, स्नेहन, स्वेदन तथा नाड़ी स्वेद इतना विशेष करें इस हेतु निम्न लिखित औषध प्रयोग में लाएँ—

मध्य (कुश, काश, नल, दर्भ और इक्षुकांड), महापञ्चमूल (बिल्व, अग्निमन्थ, अरलु, गाम्भारी और क्षुद्राग्निमन्थ), काकोल्यादि अष्ट वर्ग की औषधियाँ, विदारिगन्धा आदि, औदकमांस अर्थात् जलीय जीवों का मांस यथा कर्कट, शिशुमार, प्रभृति, अनूपदेशीय जीवों का मांस यथा वराह आदि और कशेरु, सिंघाड़ा प्रभृति औदक कन्द इनको समान भाग लेकर १ द्रोण (३२ सेर) दुग्ध और २ द्रोण (६४ सेर) जलमें क्वाथ करें। चौथाई अथवा दुग्ध मात्र अवशेष रहने पर उतार कर छान लें। इसमें १ प्रस्थ (३२ पल) तैल मिलाकर फिर अग्नि पर रक्खें। दूध के भली प्रकार मिलजाने पर उतार कर शीतल होने पर मथकर घी प्रस्तुत करें। फिर इसको तथा मधुर औषध यथा काकोल्यादि और सहा अर्थात् माषपर्णी (कोई कोई इनके स्थान में पूर्वोक्त क्वाथ्य द्रव्यों के चतुर्थांश कल्क का प्रक्षेप देते हैं) के कल्क को चतुर्गुण दुग्ध में पकाकर तैल प्रस्तुत करें। इस क्षीरतैल को अर्दित रोगी के पिलाने एवं अभ्यंग आदि में प्रयुक्त करें। तैल रहित सिद्ध कर प्रयुक्त करने से यह अग्नि तर्पक है। सु० चि०।

डाक्टरी

चूंकि यह रोग प्रायः कठिन शीत के कारण से ही हो जाया करता है। अस्तु, विकृतपार्श्व के कान के पीछे ब्लिस्टर लगाएँ या चन्द जोंकें लगवाएँ और फिर एक लोटे या पतेली में खौलता हुआ पानी डाल कर उसकी टोंटी विकृत कर्ण के छिद्र में प्रविष्ट करदें अथवा इसके बहुत समीप रखें जिसमें उष्ण जलवाष्प से कान के भीतर गर्मी पहुंचे दस मिनट तक इस प्रकार करें फिर गरम रुई से कान को सेंकें, पश्चात् वही गरम रूई कान पर बांध दें। ४ ग्रेन कैलोमेल और एक ड्राम कम्पाउंड पाउडर ऑफ जैलप मिलाकर खिला दें जिसमें दो तीन दस्त आजाएँ।

आहार—शोरबा या यख़नी (मांस रस) प्रभृति दें।

यदि रोगी निर्बल हो तो ईस्टन्स सिरप् या आधे से १ ड्राम फेलोज़ सिरप् को किञ्चित् जल में मिलाकर दिन में दो चार भोजनोपरांत दें। और यदि रोग उपदंश के कारण हो तो पोटासी आयोडाइड का प्रयोग करें यदि कान में क्षत प्रभृति हो तो उसका उचित उपाय करें और यदि कोई दाँत खोखला होगया हो तो उसको निकलवा दें।

नोट—यदि यह रोग शीत, निर्बलता या उपदंश के कारण हो तो उचित उपचार से एक से अढ़ाई मास में अच्छा हो जाया करता है और

किसी मास्तिष्कीय व्याधि के कारण हो तो कठिनतापूर्वक अच्छा हुआ करता है।

यूनानी वैद्यकीय अर्थात् तिब्बी चिकित्सा

रोगारम्भ में पक्षाघात के अन्तर्गत वर्णित तिब्बी चिकित्सा से काम लें अर्थात् जब तक चौथा या सातवाँ दिन न व्यतीत हो जाए तब तक माउल्‌उसूल और माउल्‌असल (मधुवारि) के सिवा और कोई वस्तु खाने पीने को न दें और न उक्त काल में वाह्य या आन्तर स ऊष्माजनक एवं दोषप्रकोपक उपाय का अवलम्बन करें। तदनन्तर पाँचवें या सातवें दिन पक्षाघातोक्त मुञ्ज़िज कराके विरेचन दें। आहार में कपोत, तीतर, बटेर प्रभृति जीवों का शोरवा दें या चने का पानी पिलाएँ। मास्तिष्कीय आर्द्रता के रेचन हेतु कवावचीनी अकरकरा, लवङ्ग जायफल और दालचीनी प्रभृति चबाएँ। कलौंजी पीसकर सिरका में मिलाकर नाक में टपकाएँ और राई को जैतून तैल या तिल तैल में पीस कर मुखमण्डलके विकृत एवं रोगाक्रांत पार्श्व पर लेप करें। यदि आवश्यकता हो तो चन्द जोंकें कानके पीछे लगवाएँ और सेंक करें तथा कुछ तैल, रोग़न सुर्ख़ वा रोग़न शोनीज़ का विकृत पार्श्व पर अभ्यंग करें अथवा हिंगु २ तो० पीसकर और रोग़न पान में मिलाकर उक्त स्थल पर प्रलेप करें या निम्न तैल प्रस्तुत कर प्रयोग करें।

रोग़न लक़्वा—मोम १ तो० को एरण्डतैल तो० में मिलाकर फ़र्फ़्यूँन, जुन्दबेदस्तर, मस्तगी, रिआन सत्त्व प्रत्येक ३ मा० को वारीक पीसकर लावें और आवश्यकता होने पर इसका अभ्यंग करें। यदि ज़रूरत हो तो मर्ज़ंजोश, सातर रसी, अकरकरा, राई, कनीर मूल त्वक्, अनार दाना तुर्श और सोंठ इन सबको समभाग कूट कर जल में क्वाथ करें और सिकञ्जबीन सली ४ तो० मिलाकर गण्डूष कराएँ। छिका को वारीक पीस कर नस्य दें जिसमें वो छींकें आजाएँ और (१) जायफल २ मा० र १ मा० को वारीक पीसकर माजून योगगूगल ४ मा० सम्मिलित कर अर्क़ गाव-ज़ुबान के साथ दें या (२) ख़मीरह गा अम्बरी ऊदसलीब वाला ४ मा० की अर्क़ गावज़ुबान के साथ दें या (३) मिरक हार जवाहरवाला ४ मा० अर्क़ गा व अर्क़ अम्बर के साथ देना हितक कलौंजी २ मा० पीस कर मधुमें मि खिलाएँ या बीरबहूटी एक-दो पैंव पान के बीड़े में रख थोड़े दिन खिलाएँ

शुद्धि के पश्चात् पक्षाघातोक्त योगों का कराएँ और पक्षाघात के समान शुद्धि के माजून फ़िलासफ़ा, माजून कुचला, जवारूश राज गूगल या दवाउल् मिरक हार प्रभृति भी लाभदायक हैं।

अर्दित में प्रयुक्त होनेवाली अमिश्रित औषधें

आयुर्वेदीय तथा यूनानी—वन पक्ष एवं सभी वातहर औषध एवं उपचार यथा कल्क युक्त रसोन कल्क तथा स्नेह पान, स्निग्ध पदार्थोंका भोजन, लेपन और स्वेदन इस रोग में हितकर हैं। देखो—पक्षाघात।

डॉक्टरी—अर्जेंण्टाई नाइट्रास, आर्नि बेलाडोना, ऑलियम केजेपुटी, केडेब ऑ फेरिपर ऑक्साइड, ऑलियम साइनेपि ऑलियम पाइनाइ सिलेवेस्ट्रिस, फॉस्फो (स्फुर), नक्सवॉमिका (कुचिला), पोटासियम आयोडाइडम्, पोटाशियाई ब्रोमाइडम्, मिर्च कान्थु ड्रम्, सल्फर, सल्फ्युरिक एसिड, इलेक्ट्रि सिटि (विद्युत), स्ट्रिक्निया (कुचिला सत्व) और उत्ताप इत्यादि।

मिश्रित औषध

आयुर्वेदीय—वातव्याधि में प्रयुक्त औषध

यूनानी—हब्ब फ़ालिज व लक़्वा, हब्ब हज़ाराकी, रोग़न लक़्वा व फ़ालिज, रोग़न हफ़्त वर्ग, मअ्जून हज़ाराकी, मअ्जून हज़ाराकी(अराई) मअ्जून जोगराज गूगल, मअ्जून क्वा, हबूब फल ज़मानी, हब्ब लक़्वा, दवाए शूरिंज, इत्रउल् किमील, रोग़न सुर्ख़, बरमन पाक, हब्ब राहत, और हब्ब स्याह कशीदह, अफ़ावह

(२) घोड़े का एक रोग विशेष।

लक्षण—दोनों हनुओं का विक्षेप, नासिका एवं नेत्र के मध्य भाग में भेदनवत् वेदनाका होना और नासापुट आदि विकार से बुद्धिमान् लोग इसे अर्दित कहते हैं।

...ग ardhanga-हिं० संज्ञा पुं० देखो—अद्धांग।

...गी ardhangí-हिं० संज्ञा पुं० देखो—अद्धांगी।

...र्ध arddha-हिं० वि० } (१) ...र्धम् arddham-सं० क्लो० } किसी वस्तु के दो समभागोंमें से एक, अर्द्ध, समांश, अद्धांश, ... विभाग, आधा, मध्य। (Half.)-हिं० पुं० खण्ड। (Region, section.) मे०।

...कः arddhakah-सं० पुं० जल सर्प। (An aquatic serpent.) वै० निघ०।

...कण्टक arddha-kantaka-सं० पुं० ...रा सतावर, क्षुद्र शतावरी। Asparagus racemosus (the small var. ...).

...कण्डरामयी arddha-kandarámayi ...० स्त्री० (Semitendinosus)

...कपाट सन्धिकः arddha-kapáta-sandhikah-सं० पुं०

...कलामयी arddha-kalámayá-सं० ...० (Semimembranosus.)

...कैशिकी arddha-kaishikí-सं० स्त्री० ...नार्थ शस्त्रधारा विशेष। सु० सू० ८ अ०।

...खारी arddha-khárí-सं० स्त्री० खारी-...र्ध, आधा खारी। देखो—खारिः(री)।

...गोलम् arddha-golam-सं० क्लो० (Hemisphere) अर्ध वृत्त, अर्ध चन्द्र, ...ा गोल।

... arddhanga-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] ...पाघात, अद्धांग। (Hemiplegia..)

...चक्रम् arddha-chakram-सं० क्लो० ...र्ध वृत्त। (An arch.)

अद्धंचक्राकारनाली arddha-chakrákára-nálí-सं० स्त्री० मुड़ी हुई नाली, अद्धंचन्द्राकार नलिका। (Semicircular canal.)

अद्धंचन्द्रः arddha-chandrah-सं० पुं० (१) मयूर पुच्छ, चन्द्रिका, मोर-पंख पर की आँख। हे० च०। (२) आधा चन्द्र, अद्धेंन्दु (A crescent, a half moon)। (३) नख क्षत।

अद्धंचन्द्रम् arddha-chandram-सं० क्लो० अंगुली तोरण। हारा०।

अद्धंचन्द्र कवाटम् arddha-chandra-kavátam-सं० क्लो० (Semilunar valve) अर्ध गोलाकार कपाट (किवाड़ी)।

अद्धंचन्द्रगण्डः arddha-chandra-gandah-सं० पुं० (Semilunar ganglion) अर्ध गोलाकार वातगण्ड।

अद्धंचन्द्र छिद्रम् arddhachandra-chhidram-सं० क्लो० (Semilunar notch) अर्ध गोलाकार छिद्र।

अद्धंचन्द्र तलम् arddha-chandra-talam-सं० क्लो० (Lunate surface.) अर्ध गोलाकार पृष्ठ।

अद्धंचन्द्र तान्तव कीकसम् arddha-chandra-tántava-kíkasam-सं० क्लो० (Semilunar fibro-cartilage.) अर्ध गोलाकार तान्तवोपास्थि।

अद्धंचन्द्र धमनी arddha chandra-dhamaní-सं०, हिं० स्त्री० (Semilunar artery) अर्ध गोलाकार धमनी।

अर्द्धचन्द्राकार कपाट arddha-chandrákára-kapáta-हिं० संज्ञा पुं० (Semilunar valves.) अद्धं चक्राकार कवाट।

अर्द्धचन्द्राकार कार्टिलेज arddha-chandrákár-kártileja-हिं० संज्ञा० पुं० (Semilunar cartilage) अर्ध गोलाकार कुर्री।

अर्द्धचन्द्राकार पिंड arddha-chandrákára-pinda-हिं० पुं० (Plica semilunaris.)

र्धचन्द्राकार नलिका arddha-chandrákára-naliká-हिं० संज्ञा स्त्री० (Semi-lunar canal.) अर्ध गोलाकार नली ।

र्धचन्द्राननः arddha-chandrananah -सं० पुं० अन्तर्मुख नामक विस्रावण अस्त्र । अ०म० ।

र्धचन्द्रास्थि arddha-chandrásthi-सं०, हिं० स्त्री० (Lunate-bone.) अर्द्ध-गोलाकार हड्डी ।

र्धचन्द्रिका arddha-chandriká-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) कर्णस्फोटा-नाम की लता । कनफोड़ा । रा० नि० व० ३ । (२) कृष्ण त्रिवृता, काली निशोथ । मद० व० १ ।

र्धचोलकः arddha-cholakah-सं० पुं० चोली, कुर्त्ती । काँचुली-बं० । (A bodice, a waist coat.) हारा० ।

र्द्ध ज्योतिका arddha jyotiká-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] ताल का एक भेद ।

र्धझिल्लीकृत पेशी arddha-jhillíkriti-peshí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (Semi-membranosus muscle.) वह पेशी जो अर्ध झिल्लीदार हो ।

र्धतरल arddha-taral-हिं० वि० [सं०] (Semi-liquid) अर्ध द्रव ।

र्ध तिक्तः arddha-tiktah-सं० पुं० (१) किरात तिक्त, चिरायता (Andrographis paniculata.) । (२) नैपाल देशज निम्ब विशेष, एक प्रकार की नीम जो नैपाल में होती है । रा० । भा० पू० १ भा० ।

र्द्धधारकम् arddha-dhárakam-सं० क्लीं० अस्त्र विशेष । यह छेदन भेदन कार्य में आता है । सु० सू० = अ० ।

र्द्ध नाराच arddha-nárácha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बाण ।

र्द्ध नारी नटेश्वर रसः arddha-nárina-teshvara rasah-सं० पुं० जमालगोटा, तज, अङ्कोलपत्र, पटोलपत्र, हुर्हुर, अजमोद, प्रत्येक तुल्य भाग लें, चूर्णकर अर्द्ध भाग शुद्ध नीलाथोथा मिश्रित करें । इसका नस्य देनेसे संज्ञा होती है और यह सन्निपात, अत्यन्त निद्रा, तन्द्रा, मस्तक शूल, श्वास, खाँसी, प्रलाप, उग्र कफ इन्हें तत्क्षण दूर करता है । वृ० रसरा० सु० ।

अर्द्ध नारी नटेश्वरः arddha-nárinateshvarah-सं० पुं० त्रिकुटा, त्रिफला, शाग, गन्धक, ताम्रभस्म, लोहभस्म, कुटकी, भांग, मोथा, और बच्छनाग प्रत्येक समान भाग और पारद से द्विगुण कुचला मिलाकर बकरे के पित्त से भावित करें । इसे पुत्र वाली स्त्री के दूध में मिलाकर दाहिनी आँख में अञ्जन करें तो तत्काल ज्वर नष्ट होता है । यह परम आश्चर्यकारी रस है । इस नाम के १० योग रसयोगसागर में प्राप्त हैं ।

अर्द्ध नारीश्वर रसः arddha-nárishvara-rasah-सं० पुं० पारद, गन्धक, विष और सुहागा भस्म तुल्य भाग ले खरल करें जब कज्जल सा हो जाए तब इसको काले साँप के मुख में रख कपरमिट्टी कर एक मिट्टी के पात्र में प्रथम नमक बिछाकर उसमें पूर्वोक्त सम्पुट रख कर ऊपर पुनः नमक भर दें, पश्चात् उस पात्र का मुख सराव से दृढ़ बन्द कर चूल्हे पर रख ४ प्रहर की तीव्र अग्नि दें । जब स्वाङ्ग शीतल हो जाए तब निकाल कर खरल में डाल पीस लें ।

मात्रा—१ रत्ती ।

प्रयोग—इसको बाएँ नथुने में नास देने से बाएँ तरफ का ज्वर दूर होता है और पुनः दाहिने नथुने में नस्य देने से दाहिने अंग का ज्वर शीघ्र उतर आता है । यह योग गुप्त रखना उचित है । वृ० रसरा० सु० ।

अर्द्ध नाली arddha-náli-हिं० स्त्री० (Groove.) परिखा ।

अर्द्धपलम् arddha palam-सं० क्लीं० दो कर्ष, कर्ष द्वय (=२ तो०) । "द्वाभ्यां कर्षाभ्यां मद्धपलम्" । प० प्र० १ ख० ।

अर्द्धपादा arddha-pádá-सं० स्त्री० भूम्यामलकी, भुँई आमला । (Phyllanthus niruri.) । वै० निघ० ।

अर्द्धपारावतः arddha-párávatah-सं० पुं० (१) वन कुक्कुट (Wild cock.) (२) चित्रकण्ठ पारावत। (३) तित्तिरपक्षी, तीतर। A partridge (Perdix francolinus.) अत्रि०।

अर्द्धपुष्पा arddha-pushpá-सं० स्त्री० महाबला। (See Mahábalá) वै० निघ०।

अर्द्धपोहल arddha-pohala-हिं० संज्ञा पुं० (देश) एक पौदा जिसकी पत्तियाँ मोटी होती हैं।

अर्द्धप्रसादनः arddha-prasádanah-सं० पुं० सहदेवी, सहदेई।

अर्द्धभाग arddha-bhága-हिं० पुं० आधा। (A half.)

अर्द्धभोजनम् arddha-bhojanam-सं० क्लीं० अर्द्धाशन, आधा पेट खाना।

अर्द्धमात्रा arddha-mátrá हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] आधी मात्रा।

अर्द्धमात्रिकः arddha-mátrikah-सं० पुं० एक प्रकार की निरूहण वस्ति विशेष। निर्माण विधि, तथा योग—दशमूल के क्वाथ में ४ तोले सौंफ पीसकर उसमें २ तोले सेंधानमक, मधु १ पल, तैल २ पल और एक मैनफल का योजित करे इसको अर्द्ध मात्रिक वस्ति कहते हैं। निरूहवत् इसका प्रयोग करें। च० द०।

अर्द्धमसूरी arddha-másúrí-सं० स्त्री० शस्त्रार्थ अस्त्रधारा विशेष। सु० सू० ८ अ०।

अर्द्धरन्ध्रम् arddha-randhram-सं० क्लीं० (Notch.) भंग।

अर्द्धरात्रः arddha-rátrah-सं० पुं० रात्रि का अर्द्धभाग, आधीरात, महानिशा। मिडनाइट (Midnight.)-इं०।

अर्द्धवंश्या arddha-vanshyá-सं० स्त्री० (Semispinalis.)

अर्द्धवलयम् arddha valáyam-सं० पुं० (Arch.)।

अर्द्धवीरच्छा arddha-virachchhá-सं० स्त्री० कृष्ण दूर्वा।

अर्द्धवृत्तम् arddha vrittam-सं० क्लीं०
अर्द्धवृत्त arddha vritta-हिं० संज्ञा पुं० (Semicircle.) अर्द्धगोल। वृत्त का आधा भाग। वृत्त का वह भाग जो व्यास और परिधि के आधे भाग से घिरा हो।

(२) पूरे वृत्त की परिधि का आधा भाग।

अर्द्ध वृत्तप्रणाली arddha-vritta-pranáli-सं० स्त्री० (Semicircular duct.) अर्धगोलाकार प्रणाली।

अर्द्धश (स) फरः arddha-sha- (sa) pharah-सं० पुं० दण्डपाल नामक क्षुद्र मत्स्य विशेष। ढाँढिका वा डानकोना-माछ -बं०।

अर्द्ध शरावः,-कः arddha-sharávah,-kah-सं० पुं० शं प्रसृति, प्रसृतिद्वय (=३२ तो०)। प० प्र० १ ख०। भा०।

अर्द्धसहः arddha-sahah-सं० पुं० पेचक, उलूक पक्षी। प्याँचा-बं०। घुवड़-मह०। (An owl.)

अर्द्ध स्वच्छ arddha-svachchha-हिं०वि० अस्फुट दर्शक,वे पदार्थ जिनमेंसे प्रकाश अच्छी तरह न आ सके, जैसे—तेल, पतला कागज, धुँधला काँच इत्यादि। (Translucent, semitransparent.)

अर्द्धांग arddhánga-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) आधा अंग (Half the body.) (२) एक रोग जिसमें आधा अंग चेष्टाहीन और बेकाम हो जाता है। फ़ालिज, पक्षाघात। पक्ष वध। एकांगवात। अर्द्धांगवात। (Hemiplegia.) देखो—पक्षवध (वात) या एकाङ्गवात।

अर्द्धाङ्ग वातारि रसः arddhánga-vátári-rasah-सं० पुं० पारा २० तो०, शुद्ध ताम्र चूर्ण ४ तो० लेकर जम्बीर के रस में घोटें, और उसमें गन्धक २० तो० पान के रस में घोट कर मिलाएँ फिर सम्पुट में बन्द कर भूधरयन्त्र

में २ पहर तक हलकी आँचमें पकाएँ और इसके बराबर त्रिकटु का चूर्ण मिलाकर बारीक पीस रख लें।

मात्रा—२ रत्ती।

गुण—यह अर्द्धांग वात और एकांग वात को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

[अर्]द्धांगी arddhángi-हिं० वि० [सं०] (१) पक्षाघाती अर्द्धांग-रोग-ग्रस्त। (One afflicted with the hemiplogia.)

[अर्]द्धांशोनजलम् arddhánshonajalam -सं० क्ली० अर्द्धांश हीन पक्व जल, आधा भाग से कम पकाया हुआ जल। यह वात पित्त नाशक है। रा० नि० व० १४।

[अ]र्द्धालिगः arddhálıgah-सं० पुं० जल सर्प। (Aquatic serpent.) वै० निघ०।

[अ]र्द्धावभेदकः arddháva·bhedakah -सं० पुं०

[अ]र्द्धावभेदक ardháva-bhedaka -हिं० संज्ञा पुं०

एक प्रकार का परियाय से होने वाला शिरःशूल जो सामान्यतः आधे शिर में, कभी कभी सम्पूर्ण शिर में हुआ करता है। इसमें जी मचलाता और उबकाइयाँ आती हैं और आँखों के सामने चिनगारियाँ सी उड़ती दृष्टिगोचर होती हैं इत्यादि। आधासीसी। अर्धभेदक, अधकपारी (ली)। हेमिक्रेनिया (Hemicrania), माइग्रेन Migraine, सिकहेडेक Sick headache, मेग्रिम Megrim, नर्वस हेडेक Nervous headache-इं०। माइग्रीन Migraine-फ्रां०। माइग्रेन Migrane -जर०। शक़ीक़ः, सुदाअ् निस्फ़ी, सुदाअ् ग़म्‌यानी-अ०। दर्दे नीम सर, दर्दे शक़ीक़ः, दर्दे सर ग़म्‌यानी-फ़ा०, उ०। आधासीसी, सर का दर्द-उ०। आध् कपालेर धरा-बं०।

आयुर्वेद के मत से मस्तक के आधे भाग में होने वाले शिरोविकार को अर्द्धावभेदक कहते हैं। उनको इसका परियाय रूप से होना भी स्वीकार है। यथा—

अर्धे तु मूर्ध्नः सोर्धावभेदकः।
पक्षात्कुप्यति मासाद्वा स्वमेव च शाम्य[ति]
अति वृद्धस्तु नयन श्रवणं वा विनाशये[त्]
(वा० उ० २३ [अ०])

अर्थ—मस्तक के आधे भाग में जो [शिरो]विकार होता है, उसे अर्धावभेदक कहते हैं। [यह] रोग पन्द्रहवें दिन या मास भाग में कुपित [होता] है और औषध के बिना अपने आप शान्[त हो] जाता है। अर्द्धावभेदक प्रबल हो जाने [पर नेत्रों] या कानों को मार देता है।

सुश्रुताचार्य भी ऐसा ही मानते हैं। [किन्तु] माधव के विरुद्ध केवल एक या दो दोषों [से] कुपित हुआ न मानकर तीनों दोषोंसे कुपित मानते हैं। यथा—

यस्योत्तमाङ्गार्धमतीव जन्तोः
संभेद तोद भ्रम शूल जुष्टम्।
पक्षाद्दशाहादथवाप्यकस्मा-
त्तस्यार्धभेदं त्रितयाद् व्यवस्येत्
(सु० उ० २५ [अ०])

माधवाचार्य के मत से—

रूक्षाशनात्यध्यशन प्राग्वातावश्याय मै[थुनैः]
वेगसंधारणायास व्यायामैः कुपितोऽ[निलः]
केवलः सकफोवार्धं गृहीत्वा शिरसो[बली]
मन्या भ्रूशङ्ख कर्णाक्षि ललाटार्धेऽतिवेद[नाम्]
शस्त्रारणिनिभां कुर्यात् तीव्रांसोऽर्धावभे[दकः]
नयनं वाथवा श्रोत्रमतिवृद्धो विनाशये[त्]
(मा० [नि०])

अर्थ—अत्यन्त रूखे पदार्थ खाने से, [अधिक] भोजन करने से, भोजन पर भोजन कर[ने से], पूर्व की वायु एवं बर्फ का सेवन [करने] से, अति मैथुन करने तथा मल मूत्रादि के वेगों को रोकने से, अधिक श्रम तथा व्यायाम करने आदि कारणों से केवल वायु अथवा [कफ] संयुक्त वायु कुपित होकर आधे शिर को [पकड़] कर मन्या नाड़ी, भौंह, कनपटी, कान, नेत्र और ललाट एक ओर के इन सभी अवयवोंमें [कुल्हाड़ी] के काटने कीसी अथवा अरणी (जो [लकड़ी] अग्नि निकालने की लकड़ी है) के समान [तीव्र] पीड़ा उत्पन्न करता है उसको अर्धावभेदक कहते हैं।

यह रोग जब अधिक बढ़ जाता है तब एक ओर के कान और नेत्र को नष्ट कर देता है।

यूनानी वैद्यक के मत से शक़ीक़ह् एक प्रकार का शिरोशूल है जो साधारणतः आधे सिर में अर्थात् सिर को वाम या दक्षिण पार्श्व में होता है, किन्तु कभी सम्पूर्ण सिर में होता है।

जैसा मुहम्मद अकबर ने इसकी व्याख्या की है। ऐसी दशा में इसको शक़ीक़ह् नाम कहते हैं। तिब्बेमिस्र डॉक्टरी जोट से भी इसकी समता स्थापित होती है। इस वेदना की विशेषता यह है कि यह साधारणतः परिपाय रूप में अर्थात् दौरे के साथ हुआ करती है। इसके साथ सामान्यतः हृल्लास एवं वमन विकार होते हैं। जिस समय यह वेदना सम्पूर्ण सिर में होती है उस समय इसको सुदाए बैज़ह् (सम्पूर्ण सिर के दर्द) से पहिचानने में भ्रम हो जाया करता है। इन दोनोंमें मुख्य भेद यह है—शक़ीक़ह् में शाखिकी धमनियों में स्पन्दन अधिक होती है और उनको दबा देने से वेदना शान्त हो जाती है; किन्तु सुदाए बैज़ह् में ऐसा नहीं होता।

टिक डोलरो (Tic Douloureux) अर्थात् इसाबह् (भौंहों के दर्द) को भी किसी किसी डॉक्टरी उर्दू ग्रंथों में दर्दे शक़ीक़ह् लिखा है। परन्तु यह ठीक नहीं।

डॉक्टरी मत

डॉक्टरों के मत से माइग्रेन एक प्रकार का नौबती शिरःशूल है जो सामान्यतः आधे सिर में हुआ करता है। निदान—उनके मतानुसार यह प्रायः पैतृक होता और अधिकतर स्त्रियों को होता है। विशेषतः अधिक रजःस्राव होने या अधिक काल तक स्तन्यदान से यह हो जाता है। कभी कभी वायगोला भी इसका कारण होता है। मनोविकार, थकावट व श्रम, उपवास एवं निर्बलता, अजीर्ण, अनिद्रा, तीव्र प्रकाश, उग्र गंध, मलेरिया द्वारा उग्र विषाक्तता, अति मैथुन, वृक्क व्याधि और मुख्यकर दृष्टि दोष इत्यादि इसके उत्पादक एवं उत्पादक कारण हैं।

लक्षण—साधारणतः वेदनारम्भ से पूर्व बधिरपन आलस्यपूर्ण एवं शिथिल होती है, सिर घूमता है, नेत्र के सामने चिनगारियाँ प्रभृति उड़ती दृष्टिगोचर होती हैं। ये लक्षण पूर्वरूप में होते हैं।

फिर इस प्रकार वेदना आरम्भ होती है—प्रथम कनपटी और भौंहों में मन्द मन्द वेदना आरम्भ होकर उग्र रूप धारण करती जाती है। यहाँ तक कि कुछ काल पश्चात् अत्यन्त तीव्र वेदना होने लगती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो सिर विदीर्ण हुआ जाता हो। गति करने से वेदना की वृद्धि होती है। प्रायः तो सिर के एक ही पार्श्व में वेदना होती है; किन्तु किसी किसी समय सम्पूर्ण सिर में वेदना होती है। तो भी एक ओर तीव्र होती है। रोगी के लिए शब्द तथा प्रकाश असह्य होते हैं। उसकी आँखों के सामने जुगनू या चिनगारियाँ उड़ती सी प्रतीत होती हैं। कर्णनाद होता, मुखमण्डल की विवर्णता, शरीर का काँपना, नाड़ी की निर्बलता, हृल्लास (मचली), उबकाइयाँ आना आदि लक्षण होकर अन्ततः एक ओर की कनपटी या भौंह में व्यथा टिक जाती है। दो-तीन घंटे से लेकर साधारणतः २४ घंटे तक और यदि उग्र हो तो कभी २-३ दिवस पर्यन्त रहकर जब शमन होने लगती है तब रोगी को नींद आ जाती है। जागृत होने पर वह सर्वथा स्वस्थ होता है और फिर कुछ दिवस पश्चात्, पर सामान्यतः ३ या ४ सप्ताह बाद दर्द का वेग होता है।

अर्धावभेदक की चिकित्सा

अर्धावभेदक में दोषों का सम्बन्ध विचार कर शिरोरोगान्तर्गत चिकित्सा का अवलम्बन करे। कहा है—

अर्धावभेदके प्येषा यथा दोषान्वयात्क्रिया।
(वा० उ० २४ अ०)

अस्तु सिरस के बीज, सोंआ की जड़ तथा विडनमक इनका नस्य अथवा शालपर्णी के काढ़े का नस्य अथवा काँजी के साथ पिसे हुए पँवाड़ के बीजों का लेप हितकारी है। यथा—

शिरीष बीजापामार्गमूल नस्यं विडान्वितम्।
स्थिरारसो वा लेपेतु मधुयष्टोऽम्लकल्कितः॥
(वा० उ० २४ अ०)

सुश्रुताचार्य के मत से नस्य कर्म आदि रूप औषध, जांगलमांस भोजन और दुग्ध एवं अन्न के बने पदार्थ तथा घृत आदि केवल सूर्यावर्त्त में ही नहीं, प्रत्युत, अर्धभेदक में भी प्रयोजनीय हैं। और स्नेह, स्वेद, शिराव्यधन (फसद खोलना) तथा अवपीड़नस्य और कर्णशूलोक्त दीपिकातैल आदि में से जो उपयुक्त हो उसका व्यवहार करें।

शिरीष, मूलक (मूली), तथा मदनफल इनका अवपीड़ नस्य देना अर्धावभेदक तथा सूर्यावर्त्त दोनों में हितकारक है। वच और पिप्पली का अवपीडन करना इसमें लाभदायक है। अथवा मुलेठी का बारीक चूर्ण कर उसमें मधु मिलाकर इसका अवपीड़ करें। मैंसिल अथवा चन्दन के चूर्ण में शहद योजित कर इस का अवपीड़न करें। (सु० उ० २६ अ०)

परीक्षित नस्य

काश्मीरी पत्र, कायौर पत्र, छोटी इलायची, कायफल, नकछिकनी, जौहर नवशादर और सफेद चन्दन। सबको समान भाग लेकर खूब बारीक चूर्ण कर रखें। इसका नस्य लेने से आधासीसी को लाभ होता है।

डॉक्टरी चिकित्सा

रोग के मूल कारण का पता लगाकर उसको दूर करने का प्रयत्न करें और यदि प्रधान कारण ज्ञात न हो सके तो निम्न लिखित उपाय काम में लाएँ।

रोगी को आदेश करदें कि वह स्वास्थ्य-संरक्षण सम्बन्धी नियमों का पालन करे और मध्य मार्गी बन कर जीवन निर्वाह करे। स्वच्छ एवं खुली हुई वायु में रहे। दैनिक वायु सेवनार्थ भ्रमण किया करे। अधिक श्रम एवं वैकल्यकारक कार्यों तथा चिंता आदि से अपने को दूर रक्खें। यथासम्भव अपने को प्रसन्न रखने का यत्न करें। उष्ण व उत्तेजक आहार यथा पोलाव, कुर्मा, शराब या कबाब, चाय तथा कहवा और मिष्ठान (मिठाई) आदि सेवन न करे। क्यों कि मांस तथा मिठाई के सेवन से वेग की वृ[illegible] है। जिस पदार्थ के सेवन से वेगारम्भ [illegible] आशंका हो उसका कदापि व्यवहार न क[illegible] प्रत्येक प्रकार के भारी तथा [illegible] आहार में परहेज करें। रोगी को [illegible] भोजन करने से पूर्व एक घंटा तक सर्वथा [illegible] लेटने की आदत डालें। इस बात का ध्यान रक्खें कि मलावरोध न हो। पाखा[illegible] हो जाया करे। इसलिए किसी मृदुरेचक का व्यवहार करें और कभी कभी (स[illegible] एक बार) ६–७ दिवस पर्यन्त निम्न[illegible] व्यवहार करें।

मैग्नेसियाई सल्फास — २० ग्रे[illegible]
क्वीनीनी सल्फास — २० ग्रे[illegible]
एसिड सल्फ डिल — ६ मिनि[illegible]
लाइकवार स्ट्रिक्नीनी — २ मिनि[illegible]
इन्फ्युजम ऑरैंशियाई (एड) १ आउ[illegible]

ऐसी एक–एक मात्रा औषध दिन में [illegible] दें।

जब वेदना के वेग से पूर्व आँखों [illegible] चिनगारियाँ सी उड़ती दिखाई दें या कनप[illegible] सुरसुराहट बोध हो या शिरोघूर्णन या शि[illegible] एक पार्श्व पर सूक्ष्म सी वेदना हो तब [illegible] दिवस पर्यन्त १० ग्रेन अमोनियम ब्रोमाइड किञ्चित् जल के साथ दिन में ३ बार व्यव[illegible] करें। अथवा ३–४ दिन तक १५ ग्रेन बै[illegible] लैक्टेट थोड़े सोडावाटर में मिलाकर ऐसी एक मात्रा दिन में तीन चार बार दें।

वेग कालीन चिकित्सा

जब शिर में दर्द होने लगे तब रोगी को [illegible] अँधेरे कमरे में सुखपूर्वक लिटाए रक्खें [illegible] पर किसी प्रकार का शोर व गुल न होने [illegible] रोगी को कोई आहार न दें। यदि आमाश[illegible] आ[illegible]र से पूर्ण हो तो कोई वामक यथा ½ ड्राम वाइनेम् इपिकेक्वानी ½ आउंस जल में मिला कर पिलाएँ जिसमें १–२ वमन आकर [illegible] शुद्धि हो जाए और यदि आमाशय रिक्त हो तब

या या इरक्यूर्या वाली हो तो वर्क घुमाएँ पुरा कोलडवरने वर्क डालकर पूँछ पूँ छनिनाएँ ... द्वारा १५-२० मिनट तक ... बनाएँ । मलावरोध होने की दशा में ...२ ग्रेन मिलाकर रखके घंटे परचात् ...इ मरक्यम या मैगनेशियाई मरफास ४ ...ग्रेन ४ घाउंस (२ चं०) पानी में मिला कर पिलाएँ । शिरःशूल निवारणार्थ निम्न योगों में से किसी एक का व्यवहार करें । ये सब ... लाभप्रद और परीक्षित हैं ।

...फेन म.ड्राम	10 ग्रेन
फेनासिटीन	10 ग्रेन

यह एक मात्रा है । ऐसी एक मात्रा औषध प्रातः काल अथवा किसी भी समय वेदना काल में जल या दुग्ध के साथ सेवन करें ।

(२) ऐसटीनायरीन	५ ग्रेन
सोडियम सैलीसिलेट	५ ग्रेन
कैफीनी साइट्रेट	१ ग्रेन
मोरस एरोमैटियाई	२० मिनिम
एक्वा क्लोरोफॉर्माई (एड)	½ आउंस

ऐसी एक-एक मात्रा औषध १५-१५ मिनट पश्चात् तीन-चार बार दें । वेदना आरम्भ होते ही इसका प्रयोग करने से प्रायः व्यथा दूर होती है ।

(३) ब्युटल क्लोरल हाइड्रेट	५ ग्रेन
टिंक्चूरा जलसीमियाई	८ मिनिम
टिंक्चूरा कैनाबिस इण्डिका	५ मिनिम
ग्लिसरीन	१ ड्राम
एक्वा (एड)	१ आउंस

ऐसी १-१ मात्रा औषध आध-आध घंटे पश्चात् दो-तीन बार दें । इस प्रकार के शिरःशूल में यह औषध अत्यन्त लाभप्रद है ।

(४) ऐण्टिपायरीन	१६० ग्रेन
पोटासियाई ब्रोमाइडाई	२४० ग्रेन
स्पिरिटस क्लोरोफॉर्माई	२ ड्राम
एक्वा कैम्फोरी (एड)	८ आउंस

इसमें से आध आउंस (४ ड्राम) औषध वेदना आरम्भ होते ही दें । आवश्यकता होने पर आध घंटे पश्चात् १-२ मात्रा और दें । वेगान्तर काल में कुछ दिन तक २ ड्राम की मात्रा में प्रातः सायं इसका सेवन किया करें ।

प्रत्येक योनि के शिरःशूल में लाभदायक है ।

(५) ऐण्टिपायरीन	५ ग्रेन
फेनासिटीन	३ ग्रेन
डोवर्स पाउडर	३ ग्रेन

ऐसी एक-एक पुड़िया एक-एक घंटे पश्चात् तीन-चार पुड़िया तक दें ।

(६) अदुर्धावभेदक के लिए अत्यन्त लाभदायक है ।

क्लोरल हाइड्रेट	१० ग्रेन
पोटासियम ब्रोमाइड	१५ ग्रेन
स्पाइरिट ग्लाइ नाइट्रीन	१ मिनिम
एक्वा क्लोरोफार्म (एड)	१ आउंस

ऐसी एक-एक मात्रा दिन में तीन बार तक दें ।

(७) हर प्रकार के शिरःशूल के लिए गुणदायक है ।

ऐण्टिपायरीन	५ ग्रेन
क्विनीन सल्फेट	३ ग्रेन
फेनासिटीन	३ ग्रेन
कैफीन	२ ग्रेन

ऐसी एक-एक पुड़िया २-२ घंटे के अन्तर से ३ पुड़िया तक दें ।

(८) यह अदुर्धावभेदक के वेग रोकने के लिए अत्युपयोगी है । दो तीन मास इसका निरन्तर उपयोग करना चाहिए ।

सोडियम ब्रोमाइड	१० ग्रेन
टिंक्चर जेल्समीमियाई	१० मिनिम
लिकर ट्राइ नाइट्राइनी	१ मिनिम
लाइकार स्ट्रिक्नीनी	५ मिनिम
एक्वा मेन्थी पेप(एड)	१ आउंस

ऐसी एक-एक मात्रा दिन में २-३ बार दें ।

नोट—प्रत्येक सप्ताह में एक दिन का नागा देना चाहिए । इस प्रकार के हठीले शिरो वेदना में दोनों स्कंधों के बीच में और कानों के पीछे और नीचे सुश्क गिलास लगाने से तथा गुद्दी पर

रुपये के बराबर ब्लिस्टर लगाने और फिर ब्लिस्टर जनित क्षत पर मरहम सियून लगाकर उसको दस दिवस पर्यन्त शुष्क न होने देने से और विकारी पार्श्व अर्थात् जिस ओर तीव्र वेदना होती है उस ओर के कान के पीछे के अस्थ्यर्बुद पर राई के पलस्तर लगाने से प्रायः लाभ होता है।

यूनानी वैद्यकीय चिकित्सा

रोगी को एक अंधेरे कमरे में सुखपूर्वक लिटाए रखें और उसके प्राकृतिक शैत्य व ऊष्मा को ध्यान में रखकर बाह्य तथा आन्तर उपचार काम में लाएँ तथा रोग के मूल कारण का परिहार करें। अस्तु उदर के आहार से पूर्ण होने से वाष्पोत्प्लुत होकर इस प्रकार का शूल हुआ हो तो (१) तीन पाव उष्ण जल में सिकञ्जबीन सर्का ४ तो० और सैंधव १ तो० को विलीन कर पिलाकर वमन कराएँ। यदि मलावरोध की भी शिकायत हो तो किसी उपयुक्त वस्तिदान द्वारा उसको शीघ्रातिशीघ्र निवारण करें। प्रकृतोष्मा की दशा में रोगी को (२) कपूर तथा श्वेत चन्दन सुँघाएँ तथा (३) २ रत्ती अफीम, ४ रत्ती कपूर को पानी या स्त्री दुग्ध में घोलकर नस्य दें या (४) केवल रोगन बनफ्शा या स्त्री दुग्ध का उक्त विधि से सेवन कराएँ या (५) सिन्दूर ४ रत्ती को एक कागज़ पर मल कर उसकी बत्ती बनाकर उसका एक सिरा वेदना होने वाली नासिका के विपरीत दूसरी ओर की नाक में रखें और दूसरे सिरे की ओर से जलाकर धूनी लें। माद्दा के विनाश हेतु पिण्डलियों पर मज़बूत बंधन लगाएँ और पाशोया कराएँ। (६) चन्दन और कपूर को गुलाब में घिसकर शिर और शंख स्थल पर प्रलेप करें। (७) परीक्षित प्रलेप—सेंठ, चन्दन श्वेत, एरण्ड मूल, त्वक् सब को सम भाग लेकर साठी चावल के धोवन में पीस कर मस्तक और कनपटी पर लगाएँ। इससे हर प्रकार के अर्द्धावभेदक में लाभ होता है। (८) उग्र वेदना की दशा में कुर्स मुसल्लस का व्यवहार करें। (९) बर्ग मोरिद सब्ज़, मुरमकी

सिब्र सक्रोतरी, रसवत मक्की, रसवत हिन्दी... समग़ अरबी, निशास्ता, अञ्ज़रूत, कतीरा... पोस्त कुंदुर, गुलनार फारसी, अकाकिया... दम्मुल् अख़्वैन, शियाफ़ मामीसा प्रत्येक ३ मा०... अफीम १ मा०, जाफ़रान २ मा०। समस्त औषधों को कूट कर मोरिद के हरे पत्तों के पानी में गूँध कर टिकिया प्रस्तुत करें। आवश्यकता होने पर एक टिकिया को अण्डे की सफ़ेदी में घोल... गोल और छिद्रयुक्त काग़ज़पर लगाकर शंख... धमनी पर चिपका दें। इससे बहुत शीघ्र वेदना शान्त हो जाएगी। (१०) अनिद्रा की दशा में रोग़न बनफ़्शा, रोग़न कद्दू, या रोग़न... प्रभृति का शिर पर अभ्यंग करें। इससे... आ जाती है। प्रकृति के शैत्य की दशा में... के पत्तों को पीसकर इसका प्रलेप करें या... ५ को सर्षप तैल में पीसकर मस्तक पर... और रीठा को पानी में घिसकर दो तीन... नाक में टपकाएँ। इससे लाभ न होनेकी दशा... यह प्रलेप लगाएँ।

एक जमालगोटा को पानी में घिसकर वेदना... पार्श्व की दूसरी ओर की कनपटी पर रुपया... बराबर प्रलेप करें। यदि इससे अधिक जलन... और फोस्का उत्पन्न हो जाएँ तो उनपर मक्खन... लगाएँ।

पुरातन आधासीसी पर निम्न प्रलेप का प्र... योग करें।

मेंहदी के पत्र इन्द्रायण का गूदा, उश्... इक्लीलुल मलिक, कबाबचीनी, एलुआ सब... समान भाग लेकर बारीक पीस लें और सिरका... में मिलाकर प्रलेप करें या यह प्रलेप लगाएँ—... मुरमकी २ मा० को किञ्चित् सिरका में पीसकर... लेप करें।

नस्य—यह साधारणतः उस कफज अर्द्धावभेदक में जिससे शिर में गर्मी और वेदना की शिकायत एवं टीस नहीं होता, लाभदायक है। समुद्र फल १ और नवसादर १ मा० इनको बारीक पीसकर सूर्य की ओर मुखकर अस... लें। इससे प्रायः छींकें आकर वेदना दूर हो जाती है। दिन में कई बार प्रयोग करें।

(४) अर्बुद रोग। (Tumour)
(५) गल रोग (Pharyngeal diseases)
(६) तालु रोग (Diseases of the palate)
(७) कर्ण रोग। (Diseases of the ear.) वै० निघ०।

अर्द्धोदक क्षीरम् arddhodaka-kshiram -सं० क्लीο अर्द्धोदक श्रृत दुग्ध, आधा जल मिलाकर पकाया हुआ दुग्ध यह श्रेष्ठ एवं लघु होता है।
'अर्द्धोदकं पयः शिष्टमामाल्लघुतरं श्रृतम्'। हेमाद्रिक्षारपाणि।

अर्ध ardha-हिं० वि० दे०—अर्द्ध।

अर्न arna-चीड़ वृक्ष भेद। (Chira)

अर्नक़ी arnaqi-यू० एक विशाल वृक्ष है जो चीन तथा भारतवर्ष में पाया जाता है। इसकापुष्प लाल, पीला, अथवा श्वेत होता है।

अर्नब बर्री arnaba-barri-अ० खरगोश। (A hare.)

अर्नब बह्री arnaba-bahri-अ०दरियाई खरगोश। (Sea-rabbit.)

अर्नबी arnabi-अ० एक बूटी है जो खरगोश के पैर के समान होती है। यह इराक़ और शीतल स्थानों में होती है।

अर्नबिय्यह arna-biyyah
ऐन अर्नबिय्यह āain-arnabiyyah
-अ० एक रोग है शतरह (shatarh) जिसमें ऊर्ध्व पलक सङ्कुचित होकर कोड़े हो जाते हैं और नीचेको लौट जाते हैं। इस कारण दोनों पलकें परस्पर नहीं मिल सकतीं और रोगी के नेत्र सुप्तावस्था में शशा चक्षु सदृश आधे खुले रहते हैं। लैग ऑफ्थैल्मास (Lag ophthalmas.)-इं०।

अर्ना arná-हिं० जंगली भैंस (Wild buffalo.)।

अर्ना arná-हिं० महानिम्ब (Ailantus excelsa, *Roxb.*) फा० इं० १ भा०।

अर्नाबः arnábah-सं० पु० जंगली अंजीर। (Wild fig)

अर्निका arnica-इं०।

अर्निका मॉण्टेना arnica montana, *L.*-ले०
एक पौधा है जो औषध के काम में आता है। मेमो०। देखो-आर्निका मॉण्टेना।

अर्निका फ्लोरिस arnica floris-ले० अर्नी फ्लावर्स (arnica flowers.)-इं०।

अर्निया कल्दः arniyá-kaldáhah सं० पु० चाकसू। (Cassia absus.)

अर्नियाती arniyáti-सं० स्त्री० थल पद्म, स्थल कमल।

अर्नियूक़ून arniyúqúna-यू० चिरायता। (Andrographis paniculata.)

अर्नीसीन arnicin-इं०, अर्नीका सत्व। M. M.

अर्नुक़्सान āarnuqsán-अ० हिन्दकी, खपरा।

अर्नेबिया arnabia, *Sp.*-ले० रतनजोत, बादशाह। देखो-रतनजोत। (Alkanet) फा० इं० २ भा०। मेमो०।

अर्नैट arnat } -इं० कन, बतक
अर्नैट्स डाई arnatt's dye }
(Bixa orellana, *Linn.*) इं० मै० म्रां०।

अर्नोटाप्लाण्ट arnotta plant-इं० सेन्दुरिया, लटकन, वटकन। Arnatto (Bixa orellana.) इं० मे० मे०।

अर्फ़ह āarfah-अ० हथेली का घाव।

अर्फ़ āarfa-अ० (१) शाब्दिक अर्थ "उच्च स्थान परन्तु परिभाषा में अस्थि की उभरी हुई रेखा। कहते हैं।
क्रेस्ट (Crest.)-इं०। (२) कैश।

अर्फ़ आनी āarfa-āáni-अ० पेड़ू की अस्थि की उभरी हुई रेखा। प्युबिकक्रेस्ट (Pubic crest.)-इं०।

अर्फ़ज āarfaj-अ०तीक्ष्ण दुग्ध मय बूटी भेद।

अर्फ़ हर्क़फ़ी āarfa-harqafí-अ० बड़े अस्थिकी उभरी हुई रेखा। इलियक क्रेस्ट (Iliac crest.)-इं०

अर्फ़ियह् aarfiyah-अ० फ़ाख़ता।

अर्बतह् arbatah-अ० (व० व०), रबात (ए० व०) बंधनी। लिगेमेण्ट्स Ligaments)-इं०।

अर्बहा aarbahrá-सिरि० मँभालूबीज। Vitex negundo (Seeds of-)

अर्बितुर्रिहम arbitaturrihm-अ० जरायु बंधनियां, गर्भाशय के बंधन जो उसको एक दूसरे से संलग्न रखते हैं। लिगेमेण्ट्स ऑफ दी यूटरस (Ligaments of the Uterus.)-इं०।

अर्बितुल् मसानह् arbitatul masánah-अ०, वस्तिबंधन, मूत्राशय के बंधन। लिगेमेण्ट्स ऑफ दी ब्लैडर (Ligaments of the bladder.)-इं०।

अर्बियानुस arbiyánus-यू० बाबूनहे गावचश्म ...। क़र्तानियून-यू०। पार्थीनिअम (Parthenium), मैट्रिकेरिया Matricaria-लेo। म० अ०डॉ०।

...arbi-अ० सफ़ेद यव (White barley)। (२) सुल्त।

...(वु)दः arbu(vu)dah-सं० पुं०, क्ली० arbuda-हिं० संज्ञा पुं० (१) गणित में नवें स्थान की संख्या। दश ... दस करोड़।

(२) कद्रु का पुत्र, एक सर्प विशेष।

(३) मेघ। बादल।

(४) दो मास का गर्भ।

(५) एक रोग जिसमें शरीरमें एकप्रकारकी गाँठ ... है। इसमें पीड़ा तो नहीं होती, पर ... कभी यह पक भी जातीहै। इसके कई भेद हैं ... में मुख्य रक्तार्बुद और मांसार्बुद हैं। ...। रसौली। (Tumour) ... नि० ११ अ०। मा० नि०। दे० अव्वुद।

(६) नेत्र वर्त्म गत रोग विशेष। यह मांस ... के समान एक गाँठदार सूजन है जो वर्त्म ... होती है। यह रक्त तथा आदि दोषों के कारण उत्पन्न होती है। इसमें दर्द नहीं होता, इसे अर्बुद कहते हैं। जब यह वर्त्म के बाहर होती है तब यह चलायमान और विषम आकृति वाली होती है। जैसे—

वर्त्मान्तर्मांसपिण्डाभः श्वयथुर्ग्रथितो रुजः।
सास्रैःस्यादर्बुदो दोषैर्विषमोबाह्यतश्चलः॥
वा० उ० अ० ८।

(७) अस्थि का उभरा हुआ भाग। (Protuberance.)

(८) रक्त के प्रकोप से तालु के बीच में पद्म के आकार के समान जो सूजन होती है उसे "अर्बुद" कहते हैं। वा० भ० सं० अ० २१।

अर्बुदम् arbudam-सं० क्ली० (१) (Tubercle) उभार। (२) अर्बुद फोड़ा विशेष (Tumour)

अर्बुद फलम् arbuda.phalam-सं० क्ली० मलूक का फल। यह एक भारतीय वृक्ष है।

अर्बुदहरो रसः arbuda-haro-rasah-सं० पुं० दे०-अर्बुद हरो रसः।

अर्बुदान्तर सरिका arbudántara-sariká-सं० स्त्री० (Intertubercular.)

अर्बुतानून arbútánúna-न० एक बूटी है जो पृथ्वी पर फैलती है। यह जंगली तुलसी के समान किन्तु उससे छोटी और नर, मादा दो प्रकार की होती है।

अर्बोर कॉन्सिलिओरम् arbor conciliorum, *Rum.*-ले० पीपल, अश्वत्थ। (Ficus religiosa.) फा० इं० ३ भा०।

अर्बोर टॉक्सिकेरिया फेमिना arbor toxicaria femina & *Mas*-ले० सापसुण्डी -महo। फा० इं० ३ भा०।

अर्बोर वाइटी arbor vitæ-इं० (Thuya occidentalis)-ले० सन्दच।

अर्ब्युटीन arbutin-इं० रीछदाख सत्व, भल्लूक द्राक्षासार।

मात्रा—५ से ३० ग्रेन। देखो—भल्लूक (रीछ)द्राक्षा (Arctostaphylos uva-

अर्मी अवांग्लेएट arbre aveuglant–फ्रां० गेरिया, गङ्गवा, अगुरु–पुं० । Blinding tree, Tiger's milk tree (Excoecaria agallocha, Linn.) फा० इं० ३ भा० ।

अर्मी अ–सोई arbre a soie–फ्रां० आक, मदार । Gigantic swallow wort (Calotropis gigantea, R. Br.) फा० इं० २ भा० ।

अर्मी वची arbre vache–फ्रां० तगर । Ceylon jasmine (Tabernæ montana coronaria Br.) फा० इं० २ भा० ।

अर्मोस डी' एन्सेन्स arbres d' encens –फ्रां० लुबान, कुन्दर । Frankincense tree (Boswellia.) फा० इं० १ भा० ।

अर्भः,–कः arbhah,–kah–सं० पुं०
अर्भ,–क arbha,–ka–हिं० संज्ञा पुं०
(१) बालक, शिशु, पुत्र । (A child, a pupil) रा० नि० व० १८ । (२) कुश (Poa cynosuroides.) मे० कत्रिक । (३) पञ्चजात शिशु, १२ दिवस का पैदा हुआ बच्चा । रा० नि० व० १८ ।

हिं०वि० (१) मलिन । धुँधली । (२) शिशिर ऋतु । (३) साग पात ।

अर्भः arbhah–सं० पुं० बाल सर्प । सँपर का बच्चा । अथर्व० । सू० २६ । ३ । का० ७ ।

अर्भकम् arbhakam–सं० क्लो० छोटा विषैला काँटा या विष । अथर्व० । सू० ५६ । ६ । का० ७ ।

अर्भा arbhá–सं० स्त्री० गुग्गुल । (Burseraceæ) "अर्भाचूर्ण सहयुतम् । "प्रयोगा० भग्नचि० ।

अर्म arama-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आँख का एक रोग । टेंटर । ढेंढर ।

अर्मह् āarmah–अ० जंगली चूहा । (A wild rat.)

अर्म āarm–अ० मत्स्य भेद । (A kind of fish.)

अर्मज़ āarmaz–अ० हरी काई जो जल के ऊपर आजाती है (Green moss.) । (२) हुरहुलगार । (३) जंगली बेर । (४) छोटे पीलू का वृक्ष ।

अर्मज़ान āarmazána–अ० (१) हिन्दबई । (२) यव हब्बु मकूरार ।

अर्मणः armanah–सं० पुं० द्रोणपरिमाण (=३३ सेर) । प० प्र० १ ख० । च० द० अ० सा० चि० कुटजाद्य लेह ।

अर्मद armada–अ० रमद अर्थात् आँख दुखने का रोगी, वह व्यक्ति जिसके नेत्र दुखते हों (आँख आई हो) । अभिष्यंदी । ऑफ्थेल्मिक (Ophthalmiac.)-इं० ।

अर्मनी armani–हिं० संज्ञा पुं० [अं०] अरमनी ।

अर्मनीन armanina–यू० एक बूटी है जो प्रतिवर्ष उगती और आरी व वन्य दो प्रकार की होती है । इसमें बारी के पत्र भाऊ पत्र तुल्य होते हैं तथा जंगली अप्रयुज्य है ।

अर्मल armal–अ० बे तोशा, कुँवारा पुरुष । (Bachelor.)

अर्मा āarmá–एक श्याम सर्प । (A red black serpent.)

अर्माक armáka–कड़ की बेल का नाम अथवा केवड़ा वृक्ष की छाल ।

अ (इ) र्माज़ āa-ai-rmáza–अ० काई । (Moss.)

अर्मात armáta–यू० केवड़ा या गुले केवड़ा ।

अर्मानियाँ armániyán–यू० लाजवर्द । See Lájavard.

अर्मानूस armánúsa–मिस्र० अजवाइन ख़ुरासानी । (Hyocyamus.)

अर्माल armála
अर्मालक armálaka } एक वृक्ष की वृक्ष जो तज के समान तथा सुगन्धित होता है ।

अर्मीना arminá-अ०, यू० नौसादर। Sal-ammoniac (Ammoniac hydrochloras.) स० फा० इं०।

अर्मीनाक़न arminaqan-यू० ज़र्दालू, एक फल है जो पीतवर्ण का और गोल व मधुराम्लता युक्त होता है। ख़ूबानी इसका एक भेद है। यह शीत प्रदेशों में अधिक होता है।

अर्मूनिया armúniyá-यू० अक़ाक़िया। See-Akákiá.

अर्म्मन् armman-सं० क्लो० नेत्र रोग विशेष यह पांच प्रकार का होता है—

(१) प्रस्तारर्य्मर्म्म, (२) शुक्लार्म्म, (३) रक्तार्म्म, (४) मांसार्म्म और (५) स्नाय्वर्म्म। इनके लक्षण यथा स्थान देखो—।

अर्य्यमा aryyamá-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) अर्क वृक्ष, आक (Calotropis gigantea.)। रा० नि० व० १०। (२) सूर्य। She Sun)।

अर्र् ãarr-अ० (१) कण्डू, खाज, खुजली। (The-itch)। (२) जड़ से वाल उखाड़ना।

अर्रक़ araqq-अ० रक़ीक़तर अर्थात् बहुत पतली चीज़।

अर्रा arrá-हिं० संज्ञा पुं० [?] एक जंगली पेड़ जो अर्जुन वृक्ष से मिलता जुलता होता है। इसकी लकड़ी बहुत मज़बूत होती है घन पाटने आदि के काम में आती है।

(२) अरहर। आढ़की।

अर्रुज़ aruza } -अ० तण्डुल, चावल। Rice
उर्ज़ uaza }
(Oryza sativa, Linn.) स० फा० इं०।

अर्र्हीनाल arrhenal-इं० आर्सिनिल Arsynil (Disodium methyl arsenate.) यह काकोदाइल का एक नवीन यौगिक है। देखो—संखिया।

अ(र)लु ar(ra)lu-सिं० पीली हड़, हर्रा, हरीतकी फल (Terminalia chebula, Retz.) स० फा० इं०।

अर्लू arlú-पं० कबैरा, किंगड़ी, धगड़ाग्ल। (Mimosa rubicaulis, Lam.) मेमा०। फा० इं० ३ भा०। (२) अरलू।

अर्व ãarva-अ० कम्पन लगकर ज्वर चढ़ना, जाड़े से ज्वर आना, शीत पूर्व ज्वर, जूड़ी ज्वर।

अर्वती arvatí-सं० स्त्री० अज्ञात औषधि अथर्व। सू० ४। २१। का० १०।

अर्वन् arvan-सं० पुं० गतिशील, चलनेवाला अथर्व०।

अर्वाक arvaka- अव्य० [सं०] (१) पीछे, इधर।

अर्वाक स्रोता arváka-srotá-हिं० संज्ञा पुं० जिसके वीर्यपात हुआ हो। ऊर्द्ध्वरेता का उलटा।

अर्वाह् arváh-(ब० व०), रूह् (ए० व०) अ० ये तीन हैं—(१) रूह् हैवानी (प्राणी शक्ति) जो हृदय में उत्पन्न होती है और धमनियों के द्वारा सम्पूर्ण अवयवों में विभाजित होकर उनको प्राण शक्ति प्रदान करती है, (२) रूह् नफ़्सानी (मानसिक शक्ति) जो मस्तिष्क में संजनित होती है और बोध तन्तुओं (नाड़ियों) द्वारा शरीर मे फैलकर उनको बोध व गति प्रदान करती है, (३) रूह् तबई (प्राकृतिक शक्ति) जो यकृत में पैदा होती है और शिराओं द्वारा अवयवों में वितरित होकर उनको पाचन शक्ति एवं पोषण प्रदान करती है। रूह् के लक्षण एवम् वास्तविक के लिए देखो—रूह्।

स्पिरिट्स Sqirits, सोल्स Souls, न्यूमाज़ Pneumas। ये मुख्य पारिभाषिक शब्द है जो अर्वाह के उपयुक्त पर्याय हैं।

अर्वाह् कुञ्जद arváh-kunjada-अज्ञात।

अर्व्वणः arvvanah } सं० पुं० अश्व घोड़ा।
अर्व्वा,-न् arvvá,-n }
(A horse.) सा० पू०।

अर्ब्री अवांग्लेयट arbre avouglant-फ्रां० गेरिया, गङ्गवा, अगुरु-चं० । Blinding tree, Tiger's milk tree (Excæcaria agallocha, *Linn.*) फा० इं० ३ भा० ।

अर्ब्री अ-सांई arbre a soie-फ्रां० आक, मदार । Gigantic swallow wort (Calotropis gigantea, *R. Br.*) फा० इं० २ भा० ।

अर्ब्री वचो arbre vache-फ्रां० तगर । Ceylon jasmine (Tabernæ montana coronaria *Br.*) फा० इं० २ भा० ।

अर्ब्रास डी' एन्सेन्स arbres d' encens -फ्रां० लुबान, कुन्दर । Frankincense tree (Boswellia.) फा० इं० १ भा० ।

अर्भः,-कः arbhah,-kah-सं० पुं०
अर्भ,-क arbha,-ka-हिं० संज्ञा पुं०
(१) बालक, शिशु, पुत्र । (A child, a pupil) रा० नि० व० १८ । (२) कुश (Poa cynosuroides.) मे० कत्रिकं । (३) नवजात शिशु, १२ दिवस का पैदा हुआ बच्चा । रा० नि० व० १८ ।

हिं०वि० (१) मलिन । धुँधला । (२) शिशिर ऋतु । (३) साग पात ।

अर्भः arbhah-सं० पुं० बाल सर्प । साँप का बच्चा । अथर्व० । सू० २६ । ३ । का० ७ ।

अर्भकम् arbhakam-सं० क्ली० छोटा विषैला कीड़ा या विष । अथर्व० । सू० २६ । ६ । का० ७ ।

अर्भा arbhá-सं० स्त्री० गुग्गुल । (Burseraceæ) "अर्भाचूर्णं सहयुतम् ।" प्रयोगा० मग्नचि० ।

अर्म arama-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आँख का एक रोग । टेंटर । ढेंढर ।

अर्मह् ãarmah-अ० जंगली चूहा । (A wild rat.)

armám-अ० मत्स्य भेद । (A kind of fish.)

ãarmaz-अ० हरी काई जो जल के ऊपर जाती है (Green moss.) । (२) गुलनार । (३) जंगली बेर । (४) कुबेर का वृक्ष ।

ãarmazána-अ० (१) हिन्दुस्तानी । (२) सुम्बुल अकुराद ।

armanah-सं० पुं० द्रोणपरिमाण (३२ सेर) । प० प्र० १ ख० । वृ० नि० सा० नि० कुटनावलेह ।

armada-अ० रम्द अर्थात् आँख दुखने का रोगी, वह व्यक्ति जिसके नेत्र दुखते हों (आँख आई हो) । अभिष्यंदी । ऑफ्थैल्मिएक (Ophthalmiac.)-इं० ।

armaní-हिं० संज्ञा पुं० रमनी ।

armaníina-यू० एक बूटी है जो वर्ष उगती और बाड़ी व वन्य दो प्रकार की होती है । इसमें बाड़ी के पत्र झाऊ पत्र सदृश होते हैं तथा जंगली अप्रयुज्य है ।

armal-अ० वे तांड़ा, कुँवारा पुरुष (A Bachelor.)

ãarmá-रक़ श्याम सर्प । (A black serpent.)

armáka-कबू० की बेल का ग्राम नाम बेहड़ा वृक्ष की छाल ।

माज़ ãa-ãrmáza-अ० काई (Moss.)

armáta-यू० केवड़ा या पुले केवड़ा ।

armániyán-फ़ा० लाजवर्द । See lájavard.

armápúsa-ति० अजवाइन खुरासानी । (Hyocyamus.)

armála
armálaka } एक वृक्ष की छाल तज के समान तथा सुगन्धित होती है ।

अर्मीना armíná–अ०, यू० नौशादर। Sal-ammoniac (Ammoniae hydrochloras.) स० फा० इं०।

अर्मीनाक़न armináqan–यू० ज़र्दालू, एक फल है जो पीतवर्ण का और गोल व मधुराम्लता युक्त होता है। ख़ूबानी इसका एक भेद है। यह शीत प्रदेशों में अधिक होता है।

अर्मूनिया armúniyá–यू० अक़ाक़िया। See–Akákiá.

अर्म्मन् armman–सं० स्त्री० नेत्र रोग विशेष यह पांच प्रकार का होता है—

(१) प्रस्तार्य्यर्म्म, (२) शुक्लार्म्म, (३) रक्तार्म्म, (४) मांसार्म्म और (५) स्नाय्वर्म्म। इनके लक्षण यथा स्थान देखो—।

अर्य्यमा aryyamá–सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) अर्क वृक्ष, आक (Calotropis gigantea.) । रा० नि० व० १०। (२) सूर्य। She Sum) ।

अर्र áarı–अ० (१) कण्डु, खुज्ली, खुजली। (The-itch)। (२) जड़ से वाल उखाड़ना।

अरक़ araqq–अ० रक़ीक़तर अर्थात् बहुत पतली चीज़।

अर्रा arrá–हिं० संज्ञा पुं० [?] एक जंगली पेड़ जो अर्जुन वृक्ष से मिलता जुलता होता है। इसकी लकड़ी बहुत मज़बूत होती है घर पाटने आदि के काम में आती है।

(२) आढ़र। आढकी।

अरुज aruza
उज़्ज़ uaza } –अ० तण्डुल, चावल। Rice (Oryza sativa, Linn.) स० फा० इं०।

अर्हीनाल arrhenal–इं० आर्सिनिल Arsynil (Disodium methyl arsenate.) यह काकोडाइल का एक नवीन यौगिक है। देखो—संखिया।

अ(र)लू ar(ra)lu–सिं० पीली हड़, हर्रा, हरीतकी फल (Terminalia chebula, Retz.) स० फा० इं०।

अलू arlú–प० कवेट, किगजी, अमताम्ल। (Mimosa rubicaulis, Lam.) मेमा०। फा० इं० ३ भा०। (२) अरलू।

अर्व áarva–अ० कम्पन लगकर ज्वर चढ़ना, जाड़े से ज्वर आना, शीत पूर्व ज्वर, जूड़ी ज्वर।

अर्वती arvati–स० स्त्री० अज्ञात औषधि अथर्व। सू० ४। २१। का० १०।

अर्वन् arvan–सं० पुं० गतिशील, चलनेवाला अथर्व०।

अर्वाक arváka–अव्य० [सं०] (१) पीछे, इधर।

अर्वाक् स्रोता arváka-srotá–हिं० संज्ञा पुं० जिसके वीर्यपात हुआ हो। ऊर्द्धरेता का उलटा।

अर्वाह् arváh–(ब० व०), रूह्, (ए० व०) अ० ये तीन हैं—(१) रूह् हैवानी (प्राणी शक्ति) जो हृदय में उत्पन्न होती है और धमनियों के द्वारा सम्पूर्ण अवयवों में विभाजित होकर उनको प्राण शक्ति प्रदान करती है, (२) रूह् नफ़्सानी (मानसिक शक्ति) जो मस्तिष्क में संजनित होती है और बोध तन्तुओं (नाड़ियों) द्वारा शरीर में फैलकर उनको बोध व गति प्रदान करती है, (३) रूह् तबई (प्राकृतिक शक्ति) जो यकृत में पैदा होती है और शिराओं द्वारा अवयवों में वितरित होकर उनको पाचन शक्ति एवं पोषण प्रदान करती है। रूह् के लक्षण एवम् वास्तविक के लिए देखो—रूह्।

स्पिरिट्स Spirits, सोल्स Souls, न्यूमाज़ Pneumas। ये मुख्य पारिभाषिक शब्द हैं जो अर्वाह के उपयुक्त पर्याय हैं।

अर्वाह् कुञ्जद् arváh-kunjada–अज्ञात।

अर्व्वणः arvvanah
अर्व्वा,-न् arvvá,-n } सं० पुं० अश्व घोड़ा। (A horse.) आ० पू०।

अर्व्वती arvvatí-सं० स्त्री० वड़वा। कुम्भ दासी। मे० तत्रिक।

अर्व्वा,-न् arvvá,-n-सं० पुं० अश्व (A horse.)। भा० पू०।

अर्व्वुदः arvvudah
अर्बुदः arbudah -सं० पुं० क्ली० (१) पुरुष। (२) दशकोटि परिमाण। मे० दत्रिकं। (३) मांसकोलकाकार रोग विशेष। देखो—अर्बुद। रसौली, बतौरी (री), अर्बु (बु) द-हिं०। ट्यूमर (Tumour.)-इं०। अदरह्, सल्अह् वर्म-अ०। आत्-यं०।

आयुर्वेद के मत से अर्बुद एक प्रकार की मांस की गाँठ है जो वातादि दोषों के कुपित होकर मांस और रक्त को दूषित करने से शरीर के किसी भाग में हो जाया करता है। यह गोल स्थिर, मंद, पीड़ायुक्त, अति स्थूल (यह ग्रंथि से बड़ी होती है), विस्तृत मूलयुक्त, बहुत काल में बढ़ने वाली और नहीं पकने वाली होती है। वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, मांसज और मेदज भेद से ये छः प्रकार के होते हैं। इनके लक्षण सदा ग्रंथि के समान होते हैं। (किसी किसी ने द्विरर्बुद और अध्यर्बुद इन दोनों को सम्मिलित कर इसके आठ भेद माने हैं)।

गात्र प्रदेशे क्वचिदेव दोषाः
संमूर्च्छिता मांसमभि प्रदूष्य।
वृत्तं स्थिरं मन्दरुजं महान्त
मनल्पमूलं चिरवृद्ध्यपाकम्॥
कुर्वन्ति मांसोच्छ्रयमत्यगाधं
तदर्बुदं शास्त्रविदो वदन्ति।
वातेन पित्तेन कफेन चापि
रक्तेन,मांसेन च मेदसा च॥
तज्जायते,तस्य च लक्षणानि
ग्रंथेः समानानि सदाभवन्ति॥

मा० नि०। सु० नि० ११ अ०।

अर्बुद के उपर्युक्त भेदों में से रक्तार्बुद और मांसार्बुद मुख्य हैं। इनमेंसे प्रत्येकका यहाँ पृथक् पृथक् वर्णन किया जाता है।

रक्तार्बुद

दोषः प्रदुष्टो रुधिर शिरास्तु
संपीड्य संकोच्य गतस्तु पाकम्।
सास्रावमुन्नह्यति मांसपिण्ड
मांसाङ्कुरैराचितमाशु वृद्धिम्॥
स्रवत्यजस्रं रुधिरं प्रदुष्ट
मसाध्यमे तद्रुधिरात्मकं स्यात्।
रक्तक्षयोपद्रव पीडितत्वात्
पाण्डुर्भवेदर्बुद पीडितस्तु॥

मा० नि०। सु० नि० ११ अ०।

अर्थ—दूषित हुआ दोष रुधिर की शिराओं को संकुचित कर उनको इकट्ठा कर मांस के गोला को प्रकट कर देता है। यह कुछ पकनेवाला तथा कुछ बढ़ने वाले मांस के अंकुरों से व्याप्त एवं शीघ्र बढ़ने वाला होता है। उसमें से सदा रुधिर बहा करता है यह रक्तार्बुद असाध्य है। यह रक्तार्बुद रोगी रक्तक्षय के उपद्रवों से पीड़ित होने के कारण पीला हो जाता है। ये रक्तार्बुद के लक्षण हैं।

मांसार्बुद (Cancer)

मुष्टि प्रहारादिभिरर्दितेऽङ्ग
मांसं प्रदुष्टं प्रकराति शोफम्।
अवेदनं स्निग्धमनन्यवर्ण
मपाकमश्मोपममप्रचाल्यम्॥
प्रदुष्ट मांसस्य नरस्यबाढ
मेतद्भवेन्मांस परायणस्य।
मांसार्बुदं त्वेतदसाध्यमुक्तं
साध्येष्वपीमानि तु वर्जयेत्॥

मा० नि०। सु० नि० ११ अ०।

अर्थ—मुक्का या घूँसा आदि के लगने से शरीर में जो पीड़ा होती है उस पीड़ा से मांस दूषित होकर सूजन को उत्पन्न करता है। वह सूजन पीड़ा रहित, चिकनी देह के रंग के समान होती है, इसका पाक नहीं होता और यह पत्थर के समान स्थिर होती है। जिस मनुष्य का मांस

दूषित हो जाता है अथवा जो सदैव मांस खाते हैं उनको यह अर्बुद रोग उत्पन्न होता है। यह मांसार्बुद असाध्य है। साध्य अर्बुदों में भी निम्नलिखित अर्बुद त्याज्य हैं। यथा—

संस्रुतं मर्म्मणि यच्च जातं
स्रोतः सुवायच्च भवेद्रच्याम्यम्।
यज्जायतेऽन्यत् खलु पूर्वजाते
ज्ञेयं तदध्यर्बुदमर्बुदज्ञैः॥
यद् द्वन्द्वजातं युगपत् क्रमाद्वा
द्विरर्बुदं तच्च भवेदसाध्यम्।
मा० नि०। सु० नि० ११ अ०।

अर्थ—स्रावयुक्त, मर्मस्थान तथा नासिका आदि छिद्रों में उत्पन्न होने वाले एवं अचल अर्बुद असाध्य होते हैं (प्रथम जिस स्थान में अर्बुद उत्पन्न हुआ हो उसी के ऊपर जो एक दूसरा अर्बुद उत्पन्न हो जाता है उसको अध्यर्बुद कहते हैं। एक साथ दो अर्बुद अथवा जो क्रमशः एक के पश्चात् दूसरा अर्बुद उत्पन्न हो जाता है उसको द्विरर्बुद कहते हैं, यह असाध्य है)।

अर्बुदों के न पकने के कारण

न पाकमायान्ति कफाधिकत्वान्मेदोऽधिकत्वाच्च विशेषतस्तु।
दोष स्थिरत्वाद् ग्रथनाच्चतेषां सर्वार्बुदान्येव निसर्गतस्तु॥
मा० नि०। सु० नि० ११ अ०।

अर्थ—कफ की अधिकता से वा विशेषकर मेद की अधिकता से एवं दोषों की स्थिरता से अथवा दोषों के ग्रंथि रूप होने से सब प्रकार के अर्बुद स्वभाव से ही नहीं पकते।

नोट—यूनानी वैद्यक के मतानुसार अर्बुद के लक्षण आदि विषयक पूर्ण विवेचन के लिए अरबी शब्द सलअह संज्ञा के अन्तर्गत देखें। मेदोर्बुद को अंगरेजी में फैटी ट्यूमर (Fatty tumour) और अरबी में सल्अह्, दुह्नियह्, वा शह्मियह् कहते हैं।

आयुर्वेदीय चिकित्सा के लिए इनके अपने अपने भेदों के अन्तर्गत अवलोकन करें।

अर्ब्बुद हरो रसः arvvuda-haro-rasah—सं० पुं० पारा (रस सिंदूर) को चौलाई, विषखपरा, पान, घीकुआर, खिरेंटी और गोमूत्र की भावना देकर पान में लपेट कर उसके ऊपर मिट्टी का २ अंगुल मोटा लेप करके सुखाकर एक लघु पुट दें। इसके सेवन से अर्ब्बुद नष्ट होता है। र० र० स० २३ अ०।

अर्ब्बुदाकारः arvvudákárah-सं० पुं० बहुवार वृक्ष, लसोरा। चालिता गाछ-बं०। (Cordia myxa. or C. Latifolia.) वै० निघ०।

अर्ब्बुदाद्रिजः arvvudádrijah-सं० पुं० मेषशृंगी, मेढासिंगी। मेढ़ासिङ्गी-बं०। मुरदारशिंग-मह०। (Asclepias geminata) वै० निघ०।

अर्ब्बुदान्तरिक रेखा arvvudántarik-rekhá-सं० स्त्री० (Intertubercular plane.) वह पड़ी रेखा जो नितम्बास्थियों के ऊपर के किनारों (जघन चूड़ा) के उभारों में से गुजरती है।

अर्ब्बुदान्तरिका रेखा arvvudántariká-rekhá-सं० स्त्री० (Intertubercular plane.)

अर्ब्बूरम् arvvúram-सं० क्ली० ग्राहुवय नामक क्षुप। तड़वड़-काश०। तरवड़-मह०। वै० निघ० २ भा० संग्रहणी० चि० तालीशादिचूर्ण।

अर्शः (स्) arshah,-s-सं० क्लीं०
अर्श arsha-हिं० संज्ञा पुं०
स्वनामाख्यात गुदरोग विशेष, एक रोग जिसमें वातादि दोषों के दूषित होने के कारण गुदा में अनेक प्रकार के मांस के अंकुर उग आते हैं जिनको अर्श अथवा बवासीर कहते हैं। ये नाक एवं नेत्रादि में भी उत्पन्न होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार इनके निम्न भेद हैं—

(१) वातज, (२) पित्तज, (३) कफज, (४) सान्निपातिक, (५) रक्तज और (६) सहज। विस्तार के लिए देखिए—बवासीर।

पर्याय—दुर्नामकं (अ), दुर्नाम, गुदकील:, गुदाङ्कुरः (रा), अनामकं (शब्द र०), गुदकीलकः, गुदामयः, दुर्नामम्, दुर्नामा, दुर्नाम्नी सं० ।

पायेह्., बवासीर (मक्ऱअद)-उ० । हिमोरी. हूस, अमूरूदिस, एमोरीदूस-यू० । बवासीर (व० व०), बामूर (ए० व०), अमोरीदूस –अ० । पाइल (Pile) (ए० व०), पाइल्ज़ (Piles) (व० व०); हीमोराइड (Hæmorrhoid) (ए० व०), हीमोरॉइड्स (Hæmorrhoids) (व० व०)-इं० । हीमोराइडीज (Hæmorrhoides) -फ्रां० । हीमोरॉइडेन (Hœmorrhoiden) –जर० ।

अर्श ârsh-अ० ललाट, घृस, तख़्त, पैलेटबोन्ज़ (Palate bones.)-इं० । हिं० संज्ञा पुं० (१) आकाश (२) स्वर्ग ।

अर्शकर्म arsha-karm-सं० भिलावां । (Semicarpus Onacardium.)

अर्श कुठारः arsha-kuthárah-सं० पुं० वंगनाग अर्थात् ६४ पुटित सीसा भस्म, अभ्रक सत्व, ताम्र और लोह भस्म प्रत्येक समान भाग लेकर थोड़ी थोड़ी हरताल को छिड़की दे देकर लोह की कड़ाई में पिघलाएँ और लोहको कड़छी से चलाते रहें । जब हरताल की हुगनी भूकी खप जाए तब सब अलग निकाल कर पारा मिला पिष्टी बनाएँ और उस पिष्टी को भिलावें के वृक्ष की जड़ के पास १ महीने तक गाड़ रक्खें । फिर निकाल कर गाय के दूध में डालें और इसमें पातालयंत्र से निकाला हुआ भिलावे का तैल एक चिकनी कड़ाही में डालकर उसमें पिष्टी डाल कर एक सेर तेल जारित करें । फिर भिलावें के तेल में गन्धक को भावित करके उस गन्धक की पुट देकर उपरोक्त पिष्टी के बराबर पारा लेकर कट सरैया के रस में कई भावना देकर धूप में रख भस्म कर डालें । फिर उस भस्म को उपरोक्त पिष्टी भस्म में मिलाएँ । फिर क्रम से वन सूरन, निर्गुण्डी, मुरेठी, गोखुरू, हड़जोड़, तिधारी और चित्रक इनके क्वाथ में भावना दें फिर भांगरे के रस की भावना दे सुखाकर रक्खें ।

मात्रा—१ रत्ती ।

गुण—अर्श, मुख और आँख के मस्से, प्लीहा, पाण्डु, गुल्म, यकृत, मन्दाग्नि और कुष्ट को नष्ट करता है ।

अर्श कुठार रसः arsha-kuthár-rasah –सं० पुं० शुद्ध पारद ४ तो०, गन्धक ८ पल, ताम्रभस्म, लोहभस्म, प्रत्येक १२ तो० त्रिकुटा, कलिहारी, दन्ती, पीलू, चित्रक प्रत्येक ८ तो० जवाखार, भुना सुहागा प्रत्येक ५-५ पल, सेंधा नमक ५ पल, गोमूत्र ३२ पल, थूहर का दूध ३२ पल, सब एकत्र कर पात्र में रख मन्दाग्नि से पचाएँ । जब गाढ़ा हो जाए तो २ माशे की गोलियां बनाएँ ।

गुण—एक गोली नित्य सेवन करने से यह अर्श कुठार रस बवासीर को दूर करता है । वृ० रसरा० सु० अर्श० चि० ।

अर्शद arshad-अ० सोनामक्खी, ताराम‍क्खी Iron pyrites (Ferri Sulphuretum.)

अर्शन-कर्म arshan-karmm-सं० क्लीं० अर्शों के सुखाने की विधि ।

अर्श नाशक योग arsha-náshakayoga –सं० क्लीं० पुं० जवासा, बेल की छाल, अजवाइन और सोंठ इनमें से एक एक के साथ पाठे के क्वाथ का पान करने से अर्श की पीड़ा शान्त होती है । च० सं० अ० चि० १४ ।

अर्शपातनम् arshapátanam-सं० क्लीं० कंटकरंज, हड़, नागरमोथा, चिरायता, कत्था, कुड़ा की छाल, सूरन, चित्रक, संधानक, देवदाली (वन्दाल) तुल्य भाग ले चूर्ण प्रस्तुत करें ।

मात्रा—१० मा० । अनुपान-तक्र ।

गुण—इसको एक मास पर्यन्त भक्षण करने से बवासीर के मस्से गिर पड़ते हैं । वंगसे० सं० अर्श चि० ।

अर्श में तक्र प्रयोग arsha-mon-takra-prayoga-सं० पुं० चीते की जड़ की छाल को पीसकर घड़े में लेप करके उसमें दही जमा दें, उस दही को या उससे प्रस्तुत तक्र को पीने से अर्श का नाश होता है। च० सं० चि० अ० १४।

अर्शम् arsham-सं० क्ली० अर्श रोग, बवासीर। (The piles or hoemorrhoids.) अ० टी०।

अर्श वर्त्म arsha-vartma-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की बवासीर जिसमें गुदा के किनारे ककड़ी के बीज के समान चिकिनी और किंचित् पीड़ायुक्त फुन्सियाँ होती हैं।

अर्श सूदनः arsha-súdanah-सं० पुं० सूरण,सूरन। कुल-यं०। (Amorphophallus Campanulatus, Blume.)

अर्शसः arshasah-सं० त्रि० अर्शयुक्त, अर्शरोगी।

अर्शहर arsha hara-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Amorphophallus Campanulatus, Blume.) सूरन। ओल। ज़मींकंद। देखो-शूरण।

अर्शा arshá-स्त्री० देखो—अरणा।

अर्शी arshí-सं० त्रि० अर्शयुक्त, अर्शरोगी। अ० टी०।

अर्शोऽरि रसः arshorirasah-सं० पुं० पारा १ भाग, अभ्रक भस्म २ भाग, ताम्रभस्म ३ भाग, लोहभस्म ४ भा० और गन्धक २ भाग चमार दूधी (धवल कुसुम वल्ली) के रस में लोह की कड़ाही में १ दिन पकाएँ। ठंडी होने पर १ पहर वत्सनाग के स्वरस अथवा क्वाथसे भावना दें। फिर सफेद पुनर्नवा, पुनर्नवा, त्रिकुटा, त्रिफला इनके रस अथवा क्वाथ से भावना दें।

मात्रा—३ रत्ती। इसके सेवन से बवासीर के सभी उपद्रव नष्ट होते हैं। रस० यो० सा०।

अर्शोघ्न arshoghna-हिं० संज्ञा पुं०
अर्शोघ्नः arshoghnah-सं० पुं०
(१) सूरण, सूरन, ओल,ज़मींकन्द। (Amorphophallus Campanulatus, Blume.) रा० नि० व० ७। (२) भल्लातक, भिलावाँ (Semicarpus anacardium.)। (३) सर्जिक्षार, स्वर्जिकाक्षार। (४) तेजबल (Zanthoxylum alatum.)। (५) श्वेत सर्षप (Brassica juncea.)। (६) कटु सूरण। वै० निघ०। (७) अर्श नाशक द्रव्य मात्र।

अर्शोघ्न महाकषायः arshoghna-mahákasháyah-सं० पुं० कूड़े की छाल, बेल, चित्रक, सोंठ, अतीस, हड़, धमासा, दारुहल्दी, चव्य, वच, इनका कषाय बनाकर पीने से अर्श दूर होता है। च० सं०।

अर्शोघ्न वटकः arshoghna vaṭakah-सं० पुं० पीपल, पीपलामूल, ज़मींकंद, मिर्च, चित्रक, कटेली, गुड़ल के फूल प्रत्येक १-१ पल, इनके कल्क को हाथी और बकरी के मूत्र में मिट्टी के बर्तन में पकाएँ। जब मूत्र जल जाए, तब इसका चूर्ण करके इसमें सैंधव, सोंचर, सांभर नमक १-१ पल मिलाकर १-१ कर्ष प्रमाण के वटक बनाएँ। पथ्य—तक्र व घृत का भोजन करें। १ मास के प्रयोग से अर्श नष्ट हो जाता है।

अर्शोघ्न वर्गः arshoghna vargah-सं० पुं० कुटज, बिल्व, चित्रक, नागर, अतिविषा, अभया, दुरालभा, दारुहरिद्रा, वच और चव्य ये दस वस्तु अर्शोघ्न प्रभाव युक्त हैं। च० सू० ४। विशेष देखो-बवासीर।

अर्शोघ्न वल्कला arshoghna-valkalá-सं० स्त्री० तेजबल। (Zanthoxylum alatum.) वै० निघ०।

अर्शोघ्नी arshoghní-सं० स्त्री० (१) तालमूली, काली मूसली (Curculigo orchides.)। रत्ना०। सं० नि०क। (२) भल्लातक, भिलावाँ (Semicarpus anacardium.)। वै० निघ०।

अर्शोजः arshojah-सं० पुं० भगन्दर रोग। (See-Bhagandara)

अर्शो दावानलो रसः arshodávánalo-rasah–सं० पु० मण्डूर को तेज़ अग्नि में तपा तपा कर त्रिफला के क्राथ में कई बार बुझाएँ फिर *घीक्वार के रस में भावना देते हुए* २१ पुट दें। फिर गन्धक और पारे की कज्जली और उतनी ही लोहभस्म, त्रिकुटा, त्रिफला, भांगरा, चीता और मोचरस मिलाकर गिलोय के क्राथ की भावना दें तो यह सिद्ध होता है। इसे चार मासे ज़मीकन्द के चूर्ण और हींग के साथ खाने से अथवा भिलावें के तेल और शहद के साथ खाने से इस प्रकारके बवासीर नष्ट होते हैं। रस० यो० सा०।

अर्शोयन्त्रम् arshoyantram–सं० क्लो० अर्शोयन्त्र (बवासीर का यन्त्र) गौ के स्तनों के सदृश चार अंगुल लम्बा और पाँच अंगुल गोलाई में होता है। स्त्रियों के लिए इसी यन्त्र की गोलाई छः अंगुल की होती है क्योंकि उनकी गुदा स्वाभाविक ही बड़ी होती है। व्याधि के देखने के लिए दोनों ओर दो छिद्र वाला यंत्र होता है तथा शस्त्र और क्षारादि प्रयोग के निमित्त एक छिद्र वाला यंत्र होता है। इस यन्त्रके बीचका भाग तीन अंगुल का और परिधि अंगूठे के समान होती है। इस यन्त्र के ऊपर आध आध अंगुल ऊँची एक कर्णिका होती है जिससे यन्त्र बहुत गहराईमें नहीं जा सकता है। अर्श के पीडन के निमित्त एक और प्रकारका यन्त्र होता है, इसे शमी कहते हैं। यह भी ऐसा ही होता है। किंतु छिद्र रहित होता है। वा० सू० २५ अ०। अग्नि० जयद० ५३ अ०।

अर्शोरिमण्डूरम् arshorimandúram-सं० पु०. पुराने मण्डूर को लेकर गोमूत्र में, पकाएँ जिससे वह चूर्ण सा होजाए। फिर इसमें त्रिकुटा त्रिफला और आधी मिश्री मिलाकर ३ दिन तक धरा रहने दें, पश्चात् रोगी को दें तो गुदा द्वारा आने वाला रुधिर बन्द होता है।

पथ्य—दूध, चावल, मसूर एवं ब्रह्मचर्य प्रसंग निषिद्ध है। वृ० नि० र० अर्श चि०।

अर्शोवर्त्मन् arsho-vartman-सं० क्लो० नेत्रवर्त्मगत रोग विशेष।

लक्षण—ककड़ी खीरा के बीजों के समा[न] मन्द पीड़ा वाली चिकनी और कठोर फुन्सी [जो] नेत्रव-र्म (नेत्र के पलक) में उत्पन्न हो उ[से] "अर्शोवर्त्म" कहते हैं। यह सन्निपातज होती [है।] मा० नि०।

अर्शोहररसः arshohar-rasah-सं० पु० य[ह] रस अर्श के लिए हितकारक है। योग इस प्रक[ार] है—पारद, वैक्रान्त, शुद्ध अभ्रक भस्म, कान्तलौ[ह] भस्म, गंधक शुद्ध, सबके तुल्य भाग कोले भ[ां]- स्वरस से भली प्रकार मर्दित कर रख छोड़ें।

मात्रा व गुण—इसमें से १ मासा खाने [से] अर्श नष्ट होता है। रस० र०।

अर्शोहर रसः arshohara-rasah-सं० पु[०] गन्धक, चाँदी, और ताम्बा एक एक भाग ले[कर] बारीक पीस लें। फिर तीनों के बराबर अभ्र[क] भस्म और गन्धक से $\frac{१}{५}$ भाग लोहभस्म और [...] भाग वत्सनाग और गन्धक से द्विगुण पारा सबको मिला जंभीर के रस में घोटकर मिट्टी [के] बर्तन मे रखकर त्रिफला के क्राथ की भावना दें [।] फिर क्रम से दशमूल और शतावरी के क्वाथ [में] पकाएँ।

मात्रा—२ रत्ती गोली रूप में।

गुण—यह अर्श, गुदा रोग और शूल को न[ष्ट] करता है। रस० यो० सा०।

अर्शोहरलेप arshoharalep-सं० क्लो० [...] की लीद, घी, राल, पारा, हल्दी इन्हें थूह[र के] दूध में पीस कर लेप करने से अर्श नष्ट होता है। च० सं०।

अर्शोहितः arshohitah-सं० पु० भल्लात[क] वृक्ष, भिलावाँ। (Semicarpus anaca[r]dium.) त्रिका०।

अर्षणी arshani-सं० स्त्री० (१) गति शील की[ट] विशेष। अथर्व०। का० ६। १३। २२। (२) तीव्र पीड़ाजनक रोग। अथर्व०। सू० ८। १३। का० ६।

अर्सह् āarsah-अ० मदन,मैदान,दूरी, फ़ासर। फ़ासिल, फ़ासप् (व० व०)।

अर्स āars-अ० (A bandicote rat.) पर्वत (घूँस)।

अर्सफ़ āarsafa-क्मारीतुस, कुकौंधा। (Blumea densiflora, D. C.)

अर्सम् arsam-सं० क्ली० निर्यास। अथर्व०। सू० २६। ३। का० ७।

अर्सह् arsah-उ० (Solanum pubescens.) Night shadedowny.-ई०। ई० हैं० गा०।

अर्सह् āarsah-अ० नकुल, नेवला। Mongoose (Vivera mungo.)

अर्सातून arsátúna -अ० फ़रीस्मूस farisinúsa मैथुनेच्छा आक़ूना āáqúná बिना इन्द्री का सदैव प्रहर्षित रहना। एक रोग है जिसमें इन्द्री (शिश्न) हर समय उत्तेजित रहती है, किन्तु काम या मैथुनेच्छा नहीं होती। देखो—फ़रीस्मूस। प्रायापिज़्म (Priapism.) इं०

अर्सानीक़ून arsániqúna-अ०, यू० हड़ताल, हरिताल। Yellow orpiment (Arsenicum tersulphuretum.) रा० फा० ई०।

आर्सेनाइट ऑफ़ कॉपर arsenite of copper-इं० ताम्र मल्लेद। (Cupri arsenis.) देखो—संखिया।

अर्सेनातेगा arsená-tegá-मयसू० कदम्ब। (Nauclea kadamba.)

आर्सेनिआई आयोडाइडम् arseni iodidum -ले० मल्लनैलिद । (Arsenious Iodide.) देखो—संखिया।

अर्ह arha-हिं० [सं०] (१) पूज्य। (२) योग्य। उपयुक्त।

नोट—इस शब्द का प्रयोग अधिकतर यौगिक शब्द बनाने में होता है। जैसे पूजार्ह।

अर्हम् arham-सं० क्ली० सुवर्ण, सोना। Gold (Aurum.) वैं निघ०।

अर्हा arhá-सं० स्त्री० आग्नमाणलता। (Delphinium zalil, Aitch.) वैं० निघ०।

अर्हाय् arháa-अ० (ब० व०), रहा (ए० व०) चक्की, जिसको परिभाषा में डाढ़ें; क्योंकि आहार चर्वण में यह चक्की का काम देता है। मोलर्ज़ (Molars.)-इं०।

आर्बियोल arbeol-इं० देखो सैण्टेलोल (Santalol.)

अलम् (कम्) alam,-kam-सं० क्ली० अल ala-हिं० संज्ञा पुं०
(१) हरिताल, हड़ताल। Yellow orpiment (Arsenicum tersulphuretum.) रा० नि० व० १३। सि० यो० श्वास० चि० मनःशिलादि धूमपानवृन्द। "मनःशिलाले मरिच" इति। (२) वृश्चिक पुच्छ कण्टक, बिच्छू का डंक। हे० च०। (३) कङ्कोल, शीतलचीनी। (Cubeb.) वैं० निघ० २ भा० वा० व्या० प्रत्यष्ठीला० चि०। (४) अंगीयुक्त केश। (५) विष। ज़हर।

अल ala-सं० (१) सफ़ेद मदार (Calotropis gigantea, the white var. of-) I-मह० (२) आदी, अदरक Zingiber officinalis, Roxb. (Fresh root of-Green ginger.)। -सिं० (३) कन्द (Tuber.)।-ता० (४) वट, बरगद। (Ficus Bengalensis.)

अलकः alakah-सं० पुं० (१) विष कुक्कुर, पागल कुत्ता,-हिं०। पागल कुकर-बं०। मैड डाग (Mad dog)-इं०। (२) चूर्ण कुन्तल।

अलक़ह् āalaqah-अ० (१) तासीकूल या सिव। (२) नुत्फ़ा के बाद की अवस्था, खून की फटकी, जमा हुआ शोणित। (Clotted blood).

अलक āalak--अ० (ए० व०) उलूक (व० व०), गोंद, निर्यास। (Gum or resin.)

अलक़ āalaq--अ० (१) जलायुका, जलौका, जोंक। Leech (Hirudo.) स० फा० इं०। म० ज़०। (२) जमा हुआ, बँधा हुआ या गाढ़ा रक्त।

अलक alaka--हिं० संज्ञा पुं० [सं०] मस्तक के इधर उधर लटकते हुए मरोड़दार बाल। बाल। केश। लटा। छल्लेदार बाल। घूँघर वाले बाल। यौ० अलकावलि।

अलकतरा alakatará--हिं० संज्ञा पुं० [अ०] पत्थर के कोयले को आग पर गलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा पदार्थ। कोयले को बिना पानी दिए भभके पर चढ़ाकर जब गैस निकाल लेते हैं, तब उसमें दो प्रकार के पदार्थ रह जाते हैं—

एक पानी की तरह पतला, दूसरा गाढ़ा। वही गाढ़ा काला पदार्थ अलकतरा है जो रँगने के काम में आता है। यह कृमिनाशक है। अतः इससे रँगी हुई लकड़ी घुन और दीमक से बहुत दिनों तक बची रहती है। इससे कृमिनाशक ओषधियाँ, जैसे—नेपथलीन, कारबोलिक, एसिड, फिनाइल, आदि तैय्यार होती हैं। इससे कई प्रकार के रंग भी बनते हैं।

अलकप्रियः alaka-priyah-सं० पुं० (१) कृष्णभल्लातक, काला भिलावाँ-हिं०। कालभेला -बं०। बिबेला, उरा-महा०। (Semecarpus anacardium.)। (२) बीजक वृक्ष, विजयसार। (Pterocarpus marsupium.) मद० व० ५।

अलक बग़दादी āalaka baghdádí-फ़ा० मस्तगी वृक्ष (Mastich tree.)। इं० हैं० गा०।

अलक़म alaqama-अ० इन्द्रायन का फल। (Citrullus colocynthes, fruit of-)

अलक़म āalaqama-अ० (१) कड़ुआ पौधा (A bitter plant.)। (२) इन्द्रायन (Citrullus colocynthes, *Schrad.*)। (३) क़साउल्‌ हुम्मार, बिन्दाल। (Ecballium elatarium.)

अलक़मह् āalaqamah-अ० फ़रासियून। See-Farásiyúna.

अलका alaká-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) वसा, चर्बी। (Fat.) वै० निघ०। (२) आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की।

अलकावलि alakávali-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] केशों का समूह, बालों की लटें।

अलकाह्वयः alakáhvayah-सं० पुं० कड़ु निम्ब। (The bitter nimb tree.) वै० निघ०।

अलक़िय्यह् āalakiyyah-अ० वह वस्तु जिसमें चिपचिपापन के साथ किसी भाँति कठोरता भी हो।

अलक़ी āalaqí-एक प्रसिद्ध पौधा है। (An unknown plant.)

अलकुरूमी āalakurúmí-अ० मस्तगी। (Mastiche.)

अलकुल् अम्बात āalakul-ambáta-अ० बतम अथवा उसके समान एक वृक्ष का गोंद।

अलकुल् जाफ़ āalakul-jáfa-अ० राळीनज आक।

अलकुल्ब (ब)तम āalakul-butam-अ० बतम का गोंद।

अलकुल् याबिस āalakul-yábis-अ० राळीनज भेद। (A sort of resin.)

अलकुशी,-सी alakushi,-si-बं० केवाँच, आत्मगुप्ता। (Mucuna pruriens, *D.C.*) फा० इं० १ भा०।

अलकुस्सनोबर āalakussanobar-अ० चीर की गोंद, सरल निर्यास, सनोबर की गोंद, गंधा-बिरोज़ा। (Pinus longifolia, resin of-) स० फा० इं०।

अलक़ूलीस alqúlísa- यू०शहद,मधु। Honey (Mel.)

अलकन्ना टिङ्क्टोरिया alkanna tinctoria, *Tausch.*) ले० रतनजोत-हिं०। अलक्कना -अ०। (Alkanet.) फा० इं० २ भा०।

अलकेयाबिस ãalake-yábis-अ० रातीनज भेद। (A kind of resin.)

अलकेरूमी ãalake-rúmi-अ०, रूमी मस्तगी, मस्तिकी-अ०, फ़ा०। धूनराज, गन्धिनी-सं०। (Mastiche.)।

अलकोहाल (Alcohol)-इं० मद्यसार। देखो-ऐलकोहाल्

अलक्तः,-क्तः alaktah,-kah-सं० पुं०, क्लो०
अलक्त alakta-हिं० संज्ञा पुं०
अलक्तक alaktaka-हिं० संज्ञा पु०

(१) लाखा, लाख, लाही जो पेड़ों में लगती है। चपड़ा, आलता,लाहा, जौ, गाला-बं०। अलिता -मह०। अलतगे-कं०। (Lac, the red animal dye so called.)

पर्याय-राक्षा, यावः द्रुमामयः, रक्ता, अरक्तः, जतुक, यावकः, प्रलक्तकः, रक्तः (शब्द र०), पलङ्कषा, क्रिमिः, वरवर्णिनी।

गुण—तिक्त, उष्ण, कफ वात रोगनाशक, रुचिकारक और व्रणघ्न। रा० नि० व० ६। वर्ण्य, हिम, बल्य, स्निग्ध, लघु, कषैला, उष्ण नहीं, कफ, रक्त, हिक्का, कास, ज्वरनाशक, व्रण, उरःक्षत, विसर्प, कृमि, कुष्ठनाशक। अलक्तक अर्थात् लाखा विशेष रूप से व्रणघ्न है। भा० पू० १ भा०। लाही रजोरोधक, रक्त पित्त तथा क्षय नाशक है और प्रदर तथा रक्तातिसार को शीघ्र लाभ पहुँचाती है। अत्रि०। विस्तार हेतु देखो-लाखा।

(२) लाह का बना हुआ रंग जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं। महावर।

अलख़न्ना alkhanná-अ० रतनजोत। (Alkanet.) फा० इं०।

अलख़्स alakhs-अ० जिसका ऊपरी पलक मोटा तथा कठिन हो।

अलगणः alaganah-सं० पुं० नेत्ररोग विशेष। (An eye disease.) वै० निघ०।

अलगर्द्दः alagardah-सं० पुं० सर्प विशेष, डेड़हा। जल ढोंढ़ा, जल बोड़ा-बं०। (A serpent.)

अलगर्दा alagardá-सं० स्त्री० सविष जलौका, विषाक्त जोंक (A poisonous Leech.)। यह महापार्श्व, रोमयुक्त और कृष्णमुखी होती है। सु० सू० १३ अ०। देखो—जलायुका।

अलगर्धः alagardhah-सं० पुं० अलगर्द। जल का साँप। (A serpent.) अम०।

अलगो algœ-इं० चीनी घास, अगर-अगर। (Chinigrass.)

अलगी alagi-ते० मैदालकड़ी। (Litsœa Sebifera, *Pers.*)

अलग़ुराब alghuráb-फ़ा० अकाशबेल।

अलगुसी alagusi-बं० अमरबेल, अकाशबेल (Cuscuta Reflexa.)

अलग़ोल alaghoul-अ० ख़ारेशुतर, ख़ारेबुज़ -फ़ा०। (Alhagi Camelorum, *Tisch.*) फा० इं० १ भा०।

अलङ्कार सुवर्णम् alankár-suvarnam -सं० क्लो० अंगीकनक। हारा०।

अलङ्गी alangi-ता० अंकोल। (Alangium Decapetalum.)

अलङ्गीन alangine-इं० अंकोलीन, ढेरा सत्व। फा० इं० २ भा०।

अलज alaja-अ० तरुलता, इश्कपेचा (Ipomœa quamoclit.)। -सं० पक्षी। (A bird.)

अलजान ãalajána-अ० क़ज़ाह्। See-Qazáh.

अलजी alají-सं० स्त्री० -हिं० संज्ञा स्त्री० (१) (Carbuncle.)

प्रमेहपिड़का रोग। एक प्रकार की लाल या काली फुन्सी जो बहुत पीड़ा देती है।

लक्षण—वह पिड़िका जो लाल श्वेत बारीक फोड़ों से व्याप्त एवं भयंकर होती है उसे 'अलजी'

कहते हैं। सु० नि० प्रमेह नि० ६ अ०। मा० नि०। (२) क्षुद्र रोग विशेष। लक्षण—जो अलजी प्रमेह पिडकाओं में वर्णन हो चुकी है यदि उसके लक्षणों से युक्त फुन्सी हो तो उसे "अलजी" जानना चाहिए। सु० नि० क्षु० रो० नि० १४ अ०। (३) नेत्र-संधि रोग विशेष।

लक्षण—नेत्रों की सफ़ेद और काली संधियों में जो पूर्वोक्त (प्रमेह पीडका के) लक्षणों वाली फुंसी उत्पन्न हो जाती है उसे "अलजी कहते हैं। पर्वणी और अलजी में केवल इतना ही भेद है कि पर्वणी छोटी फुंसी है और अलजी बड़ी है। मा० नि०। अथर्व०। सू० ८। २०। का० ८।

(४) वर्त्म के बाहर की ओर कनीनिका में एक कठोर और ऊँची गाँठ होती है। उसका रंग तांबे के सदृश होता और पकने पर वह राध एवं रुधिर बहाने वाली होती है, उसे "अलजी" कहते हैं। यह बारबार फूल जाती है। वा० सं० अ० ८। (५) कनीन के बीच में वेदना, तोद और दाहयुक्त जो सूजन होती है उसको "अलजी" कहते हैं। वा० सं० अ० १०।

(६) वाग्भट्ट के अनुसार इसके निम्न लक्षण हैं—अलजी नाम की पिटिका उत्पन्न होते समय त्वचा में जलन पैदा करती है। ये अत्यंत कष्ट देती और फैलती हुई चली जाती हैं। इनका वर्ण काला या लाल होता है और इनमें तृषा, स्फोट, दाह, मोह और ज्वर ये उपद्रव होते हैं। (वा० नि० १०। अ०।

अलञ्ज alanja अ० इसके स्वरूप में मतभेद है।

अलञ्जरः alanjarah-सं० पुं० बहु जलधर—मृण्मयपात्र। जाला-बं०। सुराही-हिं०। संस्कृत पर्याय—अलिञ्जरः ...

अलता alatá } -हिं० पुं०, बं० आलता, लाक्षा का रंग, महावर।
आलता álatá }

(Cotton strongly impregnated with the dye of lac ready to be used for dyeing etc.)

अलताई का रस alatái-ká-rasa-हिं० }
अलता को रस alatá-ko-rasa-ब्रज० }
महावर, अलता का रस। See-alatá.

अलतून alatúna-तु० शेर का नाम, सिंह। (A lion.).

अलन्नता alannatá } -हिं० स्त्री० नीलपद्म,
अलन्नदा alannadá } इन्द्रवल्ली-सं०।

एक वृक्ष है जिसकी शाखाओं पर बड़े श्यामवर्ण के कण्टक लगे होते हैं। पत्र मोतिया पत्र सदृश किन्तु उनसे लघु तथा पुष्प और फल फालसा के बराबर होते हैं। अपक्वावस्था में हरितवर्ण और अम्ल स्वादयुक्त किन्तु पकने पर रक्ताभायुक्त श्यामवर्ण के और मधुर हो जाते हैं। इनके भीतर त्रिकोणाकार बीज होते हैं। जड़ टेढ़ी होती है।

अलफ़ áalaf-अ० अफ़्लाफ़ (ब० व०) चारा, पशुओं का चारा। (Fodder.)

अलफ़क़ दाग़ áalafak-dágha-अ०, फ़ा० उक़्फ़ुर्द। एक घास है। (A grass.)

अलफ़क़ हिन्दी áalafak-hindi-अ० घास (एक सुगन्धित तृण है। इसके सम्बन्ध में और बातें नहीं मालूम हो सकीं)।

अलफ़ गोरखर áalafa-gorkhara-अ०, फ़ा० इज़ख़िर। रोहिष तृण। (Andropogon schœranthus.).

... [illegible]

अलब alab-अ० एक जंगली कण्टकमय वृक्ष है। यह विषाक्त होता है।

अलबतुत alabatúta-आवर्तनी, मरोड़फली या मरोड़ सींग। (Helicteres isora.)

अलबदा alabadá-अएड० मेलोशिया वेलुटीना। (Melochia velutina, *Beddome.*) इसके तन्तु व्यवहार में आते हैं। मेमो०।

अलबरूना al-barúna-यु० सुमाक़, प्रसिद्ध है। (Sumac.)

अलबाई alabái-यु० खित्मी, प्रसिद्ध है। See-Khitmi.

अलबानीस alabánísa-यु० चौलाई का साग। (Amaranth.)

अलबोरस alaborasa-मिश्र० कबूतर के बराबर श्वेत रंगका एक पक्षी है जो मत्स्य का आहार करता है।

अलब्नी alabní-यु० (१) नान्खाह, अजवाइन (Ptychotis ajowan.)। (२) जङ्गली गाजर। (३) एक और बूटी है जो गाजर के समान होती है।

अलब्यूमेन albumen-इं० अण्डश्वेतक, अण्डजाल। (The white of anegg.)

अलमक alamak-तु० मज्जा या भेजा (मग़्ज़) जो अस्थि या शिर में होता है।

अलमर alamar-हिं० संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पौधा।

अलमरम् alamaram-ता०, कना० वट, बर्गद, बड़। (Ficus bengalensis) इं० मे० मे०।

अलमास alamás-हिं० संज्ञा पुं० [फ़ा०] हीरा। (Diamond.)

अलमिराव alamirávo-गोआ
अलमिरास alamirás ”
पथरी-बम्ब०। (Launœa Pinnatifida) इं० मे० मे०।

अलमीकह् alamíkah-फ़ा० मस्तगी। (Anisomeles malabarica) इं० मे० मे०।

अलमुल् फ़ुवाद alamul-fuvád
वज्उल् फ़ुवाद vajaul-fuvád
-अ० (१) हृच्छूल, हृद्वेदना, हृदय की पीड़ा। दर्दे दिल, दिल का दर्द। (२) आमाशय द्वारशूल, कौड़ी का दर्द। कार्डिएल्जिया (Cardialgia)-इं०।

नोट—फ़ुवाद का शाब्दिक अर्थ "हृदय" है। इस कारण वज्उल्फ़ुवाद का अर्थ वज्उल्क़ल्ब या दर्देदिल अर्थात् हृच्छूल हुआ। फ़म मिऽदह् अर्थात् आमाशयिक द्वार को भी हृदय के समीप होने के कारण अल्फ़ुवाद कहते हैं।

वज्उल् क़ल्ब तथा वज्उल् फ़ुवाद का भेद—वज्उल्क़ल्ब (हृच्छूल) में एकाएक हृदय में तीव्र वेदना का उदय होता है, जिसकी टीसें वाम बाहु की ओर जाती हैं। रोगी का रंग फक़ हो जाता है। हाथ पाँव शीतल होजाते हैं। कभी साथ ही वमन भी हो जाता है और रोगी को मृत्यु का भय होता है। किसी किसी अर्वाचीन मिश्रदेशीय वैद्यक ग्रंथों में वज्उल्क़ल्ब को ज़ुबहह् सद्रियह्, तथा किसी किसी में अलम् फ़ुवादी लिखा है।

आंग्ल भाषा में वज्उल् क़ल्ब को अञ्जाइना पेक्टोरिस (Angina pectoris) कहते हैं और ज़ुबहह् सद्रिय्यह् इसका ठीक पर्यायवाची शब्द है।

वज्उल् फ़ुवाद (आमाशयद्वार-शूल)—तिब्बी ग्रंथों यथा—क़ानून व अक्सीर आज़म प्रभृति में वज्उल् फ़ुवाद के सम्बन्ध में लिखा है कि वह एक तीव्र वेदना है जो आमाशयिक-द्वार पर प्रगट होती है। इससे रोगी को कठिन अस्थिरता व व्यग्रता होती है। हस्त पाद शीतल हो जाते हैं। चैतन्यता का सर्वथा लोप होता है और बहुधा यह शीघ्र मृत्यु उपस्थित कर देती है। यह एक अत्यन्त कठोर व्याधि है।

डॉक्टरी ग्रंथों में—उक्त रोग के निम्नोल्लिखित लक्षण लिखे हैं, यथा—आमाशयिक द्वार पर रुक रुक कर शूल चला करता है। इसका दौरा प्रायः रात के समय हुआ करता है।

साधारणतः खाली पेट में वेदना हुआ करती और आहार भक्षण करने पर वह कम हो जाती है। परन्तु, कभी इसके विपरीत होता है। उदराध्मान, आटोप तथा दाह होता है। डकारें आती हैं, जी मचलाता है और प्रायः वमन हो जाता है। अर्वाचीन मिश्र देशीय चिकित्सक इस रोग को हुर्क़तुल्-क़ल्ब लिखते हैं जिसका सही अंगरेज़ी पर्याय हार्टबर्न (Heartburn) है। और जिसको उर्दू में कलेजा जलना तथा हिन्दी में हृदाह कहते हैं। अंगरेज़ी (आंग्ल भाषा) में इसे कार्डिएल्जिया (Cardialgia) भी कहते हैं जो अपने अर्थ के अनुसार वजउ़ल्फ़ुआद का बिलकुल सही पर्याय है।

वजउ़ल्मिअ़्दह् (आमाशय शूल)—इसमें आमाशयिक स्थल पर कठिन वेदना होती है जिसकी टीसें याम स्कन्ध पर्यन्त जाती हैं। वेदनाधिक्य के कारण रोगी बेचैन हो जाता है और जलशून्य मत्स्यवत् लोटता है तथा आमाशय के स्थान पर दबाता है।

सूचना—तिब्बी ग्रंथों में वजउ़ल्फ़ुआद के जो लक्षण लिखे हैं वे वस्तुतः वजउ़ल्क़ल्ब के लक्षण हैं। किन्तु, वजउ़ल्मिअ़्दह् (आमाशय शूल) के लक्षण भी इसके बहुत समान होते हैं। इसलिए रोगविनिश्चय में दिक़्क़त होती है। परन्तु वजउ़ल्मिअ़्दह् में तीव्र अचेतता नहीं होती और न तात्कालिक प्राणनाश का भय होता है।

अलमूल alamúl–सं० गावज़ुबाँ–वस्त्र०।

अलमोसः alamosah–सं० पुं० मत्स्यभेद (A sort of fish) वै० निघ०।

अलमोसा alamosá–हिं० अ(इ)मली। (Tamarindus Indicus.)

अलम् alam–अव्य [सं०] यथेष्ट। पर्याप्त। पूर्ण। काफ़ी। (Enough, sufficient.)

अलम alam–फ़ा० (१) अदरक, आर्द्री (Zingiber officinalis) देखो—आर्द्रक। (२) कंगुनी, चीना। (Panicum verticillatum.)

अलम् áalam–रसा० हड़ताल, हरिताल। (Yellow orpiment).

अलम alam–मल० कुम्बी-सं०,पुं०, हिं०। वक्रुम –ते०। (Careya arborea) इं० मे० मे०।

अलम् alam–अ० } (पु० म०).
अलम alama–हिं० संज्ञा पुं० } आलाम (ब० व०)। रंज,दुःख दर्द, कष्ट,वेदना, व्यथा, पीड़ा। पेन (Pain), एक (Ache)–इं०।

हकीम जालीनूस के वचनानुसार मनुष्य का प्रकृतावस्था से अप्रकृतावस्था की ओर चला जाना "अलम" कहलाता है। फिर चाहे उक्त अवस्था का बोध या ज्ञान हो अथवा। यथा—व्यथित व अचेत होना। किन्तु शेख़ वचन है कि विरुद्ध वस्तु का बोध होना ही अ कहलाता है। यथा—किसी बुरे समाचारके सु ने अथवा किसी तिक्त या स्वाद रहित वस्तु चखने से कष्ट प्रतीत होता है। अस्तु, दोनों भाषाओं के पारस्परिक भेद का परिणाम यह कि जालीनूस अचेत व मूर्छित व्यक्ति को दुःखान्वित "मुब्तलाए अलम्" कहता किन्तु शेख़ चूँकि "अलम्" की परिभा में बोध व ज्ञान की सीमा निर्धारित [illegible] हैं। अतः वे अचेत व मूर्छित व्यक्ति [illegible] दुःखान्वित नहीं कहते। वास्तव में यदि ध्यान पूर्वक देखा जाए तो दुःख वही है जिसका बोध हो अस्तु शेख़ की उक्त परिभाषा अधिक सही और अनुमेय प्रतीत होती है।

नोट—प्राचीन फ़ारसी व अरबी तिब्बी ग्रंथों में व्यथा के लिए वजअ़् शब्द व्यवहृत हुआ है। किन्तु अर्वाचीन मिश्र देशीय हकीम अब वजअ़् (वेदना) के लिए प्रायः अलम् शब्द को व्यवहार में लाते हैं। अस्तु, निम्न शब्द उन्हीं के ग्रंथों से उद्धृत किए गए हैं।

अलम् और वजअ़् का भेद—

उम्मामह् क़ुर्शी के वचनानुसार जिस दर्द का बोध विशेष स्पर्श शक्ति द्वारा हो उसे वजअ़् और जिसका बोध सामान्य अर्थात् सार्वांगिक वा सामूहिक बोध शक्ति द्वारा हो उसको अलम् कह,

से अभिहित करते हैं। अस्तु वज्‌अ विशेष है और अलम् सामान्य।

म् अज़्म alam-äazm
वज्‌अ अज़्म vajäa-äazm
–अ० अस्थि वेदना, हड्डी का दर्द। ऑस्टिओडीनिया (Osteodynia)–इं०।

लम् अज़ुद् alam-äazud–अ० बाज़ू की पीड़ा, भुज वेदना। ब्रैकिऐल्जिया (Brachialgia.)–इं०।

म् अन्फ़ alam-anfa–अ० नासिका की वेदना, नाक का दर्द। राइनैल्जिया (Rhinalgia.)–इं०।

लम् अम्आअ alam amääa–अ० उदर शूल, आंत्र वेदना, आँतों का दर्द। एण्टरेल्जिया (Enteralgia.) –इं०।

लम् अर्बतह् alam-arbatah–अ० बंधनी वेदना। डेसमोडीनिया (Desmodynia.) –इं०।

लम् अस्नान alam-asnána–अ० दन्त पीड़ा, दन्त शूल, दाँत का दर्द। ओडोण्टैल्जिया (Odontalgia)–इं०।

लम् अस्बी alam-äaṣbí–अ० नाड़ी शूल, वात वेदना, वायु का दर्द (रेही दर्द)। न्युरैल्जिया (Neuralgia.)–इं०।

लम् उज़्न alam-uzna–अ० कर्ण शूल, कान का दर्द। ऑटैल्जिया (Otalgia.) ईयरएक (Earache.)–इं०।

लम् उज़्ली alam-äuzlí–अ० मांस पीड़ा, मांसपेशी शूल। माइऐल्जिया (Myalgia) –इं०।

अलम् उस्उस् alam-äuṣäuṣ–अ० चञ्चुपीड़ा। कॉक्सियोडीनिया (Coccyo dynia.) –इं०।

अलम् ऐन alam-äain–अ० चक्षुपीड़ा, आँख का दर्द, नेत्र शूल। ऑफ्थैल्मैल्जिया (Ophthalmalgia.), ऑफ्थैल्मोडीनिया (Ophthalmodynia...

अलम् क़ज़ीब alam-qazíba–अ० शिश्नशूल, लिंग की पीड़ा। फलैल्जिया (Phallalgia.)–इं०।

अलम् क़ज़्हिय्यह् alam-qazhiyyah–अ० आँख के अंगूरी पर्दा का दर्द। आइरैल्जिया (Iralgia.)–इं०।

अलमक़त्न alam-qatn–अ० कटिशूल, कमर का दर्द। लम्बेगो (Lumagbo.)–इं०।

अलम् क़दम alam-qadam–अ० पादशूल, पाँव का दर्द। पोडैल्जिया (Podalgia.) –इं०।

अलम् क़स्स alam-qaṣṣa–अ० वक्षोऽस्थि वेदना, उरोऽस्थि शूल, सीने की हड्डी का दर्द। स्टर्नैल्जिया (Sternalgia.)–इं०।

अलम् कबिद alam-kabida–अ० यकृद्वेदना, कलेजे का दर्द। हिपैटैल्जिया (Hepatalgia.)–इं०।

अलम् कुल्यह् alam-kulyah–अ० वृक्कशूल, वृक्क वेदना, गुर्दा का दर्द। नेफ्रैल्जिया (Nephralgia.)–इं०।

अलम् ख़ुस्यह alam-khuṣyah–अ० आण्डशूल, मुष्क वेदना, आँडी या ख़ुसिया का दर्द। डिडिमैल्जिया (Dedymalgia) ऑर्किऐल्जिया (Orchialgia.), ऑर्किओडीनिया (Orchiodynia.)–इं०।

अलम् ग़ुज़्रूफ़ alam-ghuzrúf–अ० उपास्थि शूल, कुर्री का दर्द। कॉण्ड्रैल्जिया (Chondralgia)–इं०।

अलम् ग़ुदद़ी alam-ghudadí–अ० ग्रंथिशूल, ग्रंथिस्थ वेदना, ग़ुद्द का दर्द। एडीनैल्जिया (Adenalgia.), एडीनोडीनिया (Adenodynia.)–इं०।

अलम् जन्ब alam-janba–अ० पार्श्वशूल, पसली का दर्द। प्लुरोडीनिया (Pleurodynia), स्टिच (Stitch.)–इं०।

अलम् ज़ह्र alam-zahra–अ० पृष्ठशूल, पीठ का दर्द। नूटैल्जिया (Nutalgia.)–इं०।

वेदना, त्वचा का दर्द। डर्मोटैल्जिया (Dermatalgia.)-इं०।

अलम् ज़ौ alam-zou-अ० रश्मिशूल, प्रकाशमान् या चमकदार वस्तु के देखने का दर्द। फोटैल्जिया (Photalgia.)-इं०।

अलम् नुख़ाअ alam-nukháá-अ० सुषुम्ना शूल, सौषुम्नस्थ वेदना। माइऐल्जिया (Myalgia.)-इं०।

अलम् फ़क़रात alam-faqaráta-अ० कशेरुका शूल, काशेरुकीय वेदना। स्पॉण्डिऐल्जिया (spondialgia.)-इं०।

अलम् बत्न alam-batna-अ० उदरशूल, पेट का दर्द। सेलिऐल्जिया (Celialgia.) -इं०।

अलम् बलऊ़म alam-balaúma-अ० कंठ शूल, हलक़ का दर्द। फेरिंगऐल्जिया (Pharyngalgia)-इं०।

अलम्ब मुष्ककः alamba-mushkakah-सं० पुं० मुष्कक वृक्ष। मोया-हिं०। घण्टापारुल -बं०। (Schrebera swietenioides.)

अलम्बा alambá-सं० स्त्री० तिक्तालाबु, स्थावर विषान्तर्गत पत्रविष तितलौकी। तितलाउ-बं०। सु० कल्प० २ अ०। देखो—पत्रविषम्।

अलम्बुजा alambujá-सं० स्त्री० गोरखमुण्डी, गोरख मुण्डी। (Sphœranthus Indicus, Linn.) बं० नि०।

अलम्बुदम् alambudam-सं० क्लो० बालक, ह्रीवेर (Pavonia odorata.)। बाला -बं०। वै० निघ० वाय० चि० शिवगुटी०।

अलम्बुषः alambushah-सं० पुं० (१) वान्ति रोग, वमन, उलटी, छर्दि, क़ै। (Vomiting.) मे० षचतुष्क। (२) भूकदम्ब। कुकशिया गाछ-बं०। र० मा०। रत्ना०।

अलम्बुषा,-सा alambushá,-sá-सं० स्त्री० (१) लज्जालुका भेद। (A sort of sensitive plant.)। कुल शोभा-बं०। लज्जावती, छुईमुई, लजालू पौधा।

पर्याय—खरत्वक्, मेदः, गला।

गुण—मधुर, लघु, कृमि तथा कफ पित्त नाश करने वाली है। भा० पू०, १ भा० गु० व०। अलम्बुषा स्वरस को २ पल की मात्रा में पीने से अपची, गण्डमाला तथा कामला नष्ट होता है। (२) भूकदम्ब। कुकशिमे-बं०। See-bhúkadamba. (३) महा श्रावणी, गोरखमुण्डी, गोरखमुण्डी, मुण्डी, बड़ मुण्डी -बं०। (Sphœranthus Indica) नि० व० ५। मै० निघ०२ भा० वा० षड्शीति-गुग्गुलु और व्यूषणादि लौह। (लौह मल, मण्डूर। (Ferri perox um.) च० द० १ भा० आमवात अलम्बुषादि चूर्ण।

अलम्बुषादिचूर्णम् alambushádi-chúrnam-सं० क्ली० हड़ १ भा०, बहेड़ा २ भा० आमला ३ भा०, गोरखमुण्डी १ भा०, वरुण १ भा०, गिलोय १ भा०, सोंठ १ भा०, इन लेकर चूर्ण करें।

गुण—आमवातको दूर करता है।

मात्रा-१ कर्ष (२ तो०)। भै० र० आ० वा० चि०।

अलम्बुषाद्यचूर्णम् alambushádyachúrnam-सं० क्ली०(१)अलम्बुषा (पानीका लजाऊ) १ भाग, गोखरू २ भाग, त्रिफला ३ भाग, ... ४ भाग, गिलोय ५ भाग, निसोथ सर्व तुल्य ग्रहण कर उत्तम चूर्ण प्रस्तुत करें।

मात्रा—४-१० मा०।

अनुपान-दही का पानी, तक्र, मद्य, कांजी, उष्ण जल।

गुण-आमवात, रक्तपित्त, त्रिकवेदना, जानुगत वात, उरुगत वात, सन्धिवात, ज्वर, अरोचक इसके सेवन से दूर होते हैं। च० से० सं० आमवा० चि०।

(२) अलम्बुषा, गोखरू, गिलोय, विधारा, पीपल, निसोथ, नागरमोथा, वरना की छाल, पुनर्नवा, त्रिफला, सोंठ तुल्य भाग। इनका चूर्ण कर सेवन करने से उक्त व्याधियाँ दूर होती हैं।

मात्रा–४-१० मा० । अनुपान–पूर्वोक्त । गुण–पूर्वोक्त । यं०ग०से०सं० आमवात चि० ।

अलम्बोर्द्धस्तनी alamborddhastaní–सं० स्त्रि० जिसके स्तन न लम्बे और न ऊर्ध्वमुखी अर्थात् ऊँचे हों । सु० शा० १० अ० ।

अलम्बौष्ठी alamboushṭhí–सं० स्त्रि० जिसके ओष्ठ लम्बे न हों । सु० शा० १० अ० ।

अलम् मज्री बौल–alam-majri-boul–अ० मूत्रप्रणालीस्थ वेदना, मूत्र नाली का दर्द । दर्देनाइज़ह्–फ़ा० । यूरेथ्रैल्जिया (Urethralgia.)–इं० ।

अलम् मफ़्सल alam-mafsal–अ० संधि-शूल, जोड़ का दर्द । आर्थ्रैल्जिया (Arthralgia.)–इं० ।

अलम मबैज़ alam mabaiza–अ० डिम्बाशयिक शूल, डिम्बाशय सम्बन्धी पीड़ा । ओवेरैल्जिया (Ovaralgia.)–इं० ।

अलम् मरी alam-marí–अ० अन्नप्रणालीस्थ वेदना, आहार पथका दर्द । ईसोफैगैल्जिया (Œsophagalgia.)–इं० ।

अलम् मस़ानह् alam-masánah–अ० बस्ति शूल, मूत्राशयिक वेदना । सिस्टैल्जिया (Cystalgia.)–इं० ।

अलम् मिअ़्दह् alam-miádah–अ० आमाशय शूल, आमाशयिक वेदना, मेदे का दर्द । गैस्ट्रैल्जिया (Gastralgia)–इं० ।

अलम् रहि़म,-रिह् alam-rahim,-rih–अ० जरायुस्थ पीड़ा, गर्भाशयिक वेदना । मेट्रैल्जिया (Metralgia), हिस्टिरैल्जिया (Hysteralgia)–इं० ।

अलम् रास alam-rás–अ० शिरःशूल, शिरोव्यथा, शिर का दर्द । सिफेलैल्जिया (Cephalalgia), हेडेक (Headache)–इं० ।

अलम् रुक्बह् alam-rukbah–अ० घुटने का दर्द । गोनैल्जिया (Gonalgia)–इं० ।

अलम् लि़स्सान alam-lissán–अ० जिह्वाशूल, ज़बान का दर्द । ग्लॉसैल्जिया (Glossalgia) –इं० ।

अलम् वज्ह alam-vajha–अ० मुखमंडलीय वेदना, चेहरे का दर्द । प्रोसोपैल्जिया (Prosopalgia)–इं० ।

अलम् वरिक alam-varik–अ० नितम्ब शूल, चूतड़ का दर्द । इस्किऐल्जिया (Ischialgia)–इं० ।

अलम् शरासीफ़ alam-sharásif–अ० आमाशयिक द्वार के पास पास की पीड़ा । एपिगैस्ट्रैल्जिया (Epigastralgia)–इं० ।

अलम् शर्ज alam-sharja अ० गुदशूल, गुदाकी वेदना । रेक्टैल्जिया (Rectalgia)–इं० ।

अलम् स़दी alam-sadí–अ० चूचुक शूल । दर्दे पिस्तान, चूचीका दर्द–उ० । मस्टैल्जिया (Mastalgia)–इं० ।

अलम् हालिब alam-hálib–अ० गविन्यु शूल । दर्दे हालिब–फ़ा० । यूरेटरैल्जिया (Ureteralgia)–इं० ।

अलयाऽ alayáa–यू०, रू० सिब्र, मुसब्बर, कुमारीसारोद्भवा । (Aloes.)

अलयून alayúna–यू० शेर, सिंह । (A lion.)

अलयूह alayúh–यू० ज़ैतून । (Olive.)

अलरा alarí–ता०, मल० कर्वीर, कनेर । (Nerium odorum.) इं० मे० मे० ।

अलर्कः alarkah–सं० पुं० अर्क, सफ़ेद, मदार, मन्दार, श्वेत आकन्द–बं० । (Calotropis gigantea or procera, अर्क of white flowers.) भा० पू० १ भा० । मे० कत्रिक० । मन्दार । हेमा० अलर्कादि च० । मन्दारार्क । रा० नि० व० १० । "अलर्को मन्दारार्कः यस्य घोरं न विनश्यति" । सु० सू० ३८ अ० अर्कादि, ड० । श्वेत पुष्पीय मन्दार । वा० सू० १५ अ० अर्कादिव. अरुणः । "अर्कालर्कौ नागदन्ती विशल्या ।" योगोन्मादित कुक्कुर । मे० कत्रिकं० । (२) कुक्कुर ज्वर । (Hydrophobia) हा० अत्रि० २ स्था० २ अ० । (३) पागल कुत्ता ।

अलर्क alarka–सं० सोलेनम् ट्रिलोबेटम् (Sola-

num trilobatum, *Linn.*)-लें० । टूड वुल्ले-ता०। मूँ-डल-मुस्तह ऊचिन्त-फ़ुर-लें०। मोट-रिंगनी मूल-मह० । नामि-अङ्गुरी-उड़ि०। इं० मे० मां० ।

वार्त्ताकी वर्ग
(*N. O. Solanaceæ.*)

उत्पत्तिस्थान—पश्चिमी डेकन प्रायद्वीप, कोंकण से दक्षिण की ओर । प्रयोगांश—मूल, पुष्प, पत्र तथा फल (Berries.) और कोमल अङ्कुर । यह एक प्रकार की बेल है ।

प्रभाव तथा उपयोग—इसके पत्र तथा मूल स्वाद में कटु होते हैं और क्षय रोगियों में इन्हें अवलेह क्वाथ वा चूर्ण रूप में वर्तते हैं अवलेह चायके चम्मचमें १॥ चम्मच भर दिन में दो बार देते हैं । कासमें पुष्प तथा फल (Berries) उपयुक्त होते हैं । ऐन्सली ।

यह क्षुद्रकण्टकारी की प्रतिनिधि रूप से प्रयुक्त होता है । डाइमाक ।

अलर्नैन्थरा सिसीलिस alarnanthera sessilis-लें० मोकनु-वन्ना-सिगा० ।

अलल बछेड़ा alala-bachherá-हिं० संज्ञा पुं० [हिं०अल्हड़+बछेड़ा] घोड़े का जवान बच्चा ।

अलले alale-मैसू०

अलले कायि alale-káyi-कना० हड़, पीली हड़, हरीतकी । (Terminalia chebula, *Retz.*) स० फा० इं० ।

अललेपिन्द alale-pinda-कना० बाल हड़, जंगली हड़ । (The young dried fruits of Terminalia chebula, *Retz.*) स० फा० इं० ।

अलले हुव्वु alale-huvvu-कना० हड़ पुष्प, हड़ का फूल । हरीतकी पुष्पम्-सं० । (The gall-like excrescenses found on the leaves & young branches of T. Chebula)

अलल्लाँ alallán हिं० संज्ञा पुं० [?] घोड़ा । -डिं० ।

अलवणा alavaná-सं० स्त्री० (१) ज्योतिष्मती । मालकांगुनी-हिं० । लताफटकी-बं० । (Cardiospermum halicacabum). "वस्त्वलवणरक्तफलापीन तैला काकमर्दिका" सु० सू० ३८ अर्कादिव० ड० । अलवणा अर्थात् मालकांगुनी तीक्ष्ण, कफ, मेद तथा कृमि विनाशिनी है । अत्रि० । (२) हरीतकी हड़। (Terminalia chebula, *Retz.*) च० १ ।

अलवाँती alavánti-हिं० वि० स्त्री० [बालवती] (स्त्री) जिसे बच्चा हुआ हो । प्रसूता । जच्चा ।

अलवाई alavái -हिं० वि० स्त्री० [सं० वत्सी, हिं० अलवाँती] (गाय वा भैंस) जिसे बच्चा जने एक वा दो महीने हुए हों । बाखड़ी का उलटा ।

अलविन्द alavinda-सिंध तेन, तिन्दुक, -उ०प०सू० । (Diospyros cordifolia)

अलश alash-पं० अमलतास । (Cassia fistula)

अलशी यरणे alashi-yanne-कना० अलसी का तेल । (Linseed oil) स० फा० इं० । देखो—अतसी ।

अलशी alashi-हिं०, गु० आवा, म०, द०, कना० अलसी । (Linseed)

अलशी विरई alashi-virai-ता० अलसी, तीसी-हिं० । Linseed (Linum usitatissimum) इं० मे० मे०

अलसः,-कः alasah,-kah-सं०पुं०

अलस alasa-हिं० संज्ञा पुं०

(१) पाद रोग विशेष । पैर का एक रोग जिसमें पानी से भींगे रहने वा गंदे कीचड़ में रहने के कारण उँगलियों के बीच का चमड़ा सड़ कर सफ़ेद हो जाता है और उसमें खाज, जलन और पीड़ा युक्त पीड़ा होती है । खरवात । खार । सु० नि० १३ अ० ।

(२) विसूचिकाकी एक अवस्था है । अजीर्ण रोग का एक भेद । विषाजीर्ण, रसाजीर्ण, दोषाजीर्ण भेद से यह तीन प्रकार का होता

शार्ङ्ग०। जो आहार ऊपर के मार्ग अर्थात् मुख द्वारा नहीं निकलता, अधोमार्ग (गुदा द्वारा) भी नहीं निकलता और न पचता ही है। प्रत्युत केवल नाभि और स्तनों के मध्यवर्ती आमाशय नामक स्थान में अलसीभूत अर्थात् स्तब्ध भाव में रहता है उसे अलसक रोग कहते हैं। जैसे अनुद्यमशील मनुष्य आलसी कहलाता है। वा० सू० ८।

लक्षण—जिस रोग में कूख और पेट में अत्यन्त अफारा हो, बेहोशी हो, पीड़ा युक्त शब्द करे और वायु चलने से रुक कर ऊर्ध्व गति हो, कोख के ऊपर कण्ठ आदि स्थानों में गमन करे, मल मूत्र और गुदा की पवन रुक जाए, प्यास और डकारों से पीड़ित हो तो उसको "अलसक" कहते हैं। देखो—मन्दाग्नि।-पक्री० (३) क्षुद्र कुष्ठ रोग भेद।

लक्षण—जिसमें अत्यन्त खुजली चले, लाली युक्त तथा छोटी फुन्सी अधिक हों उसको "अलसक" कुष्ठ कहते हैं। मा० नि०। (४) श्वान जाति ज्वर। गज-वै०। (५) जिह्वा रोग। मे० निघ०। (६) वृक्ष भेद। (A kind of tree.)

अलस ãalas-अ० भेड़िया (A wolf.)। -फ़ा० (१) गन्दुम मक्का (मक्का का गेहूं, गेहूं के सदृश अनाज है)। (२) सुलत, भात जौ, जौ बिरहना।

अलस् ãalas-यु० छन्दरीलो, कासनी भेद। (A kind of Kásani)

अलसकः alasakah-सं० पुं०
अलसक alasaka-हिं० संज्ञा पुं० } अजीर्ण रोग का एक भेद, अजीर्ण जन्य रोग (Dyspeptic disease)। देखो—अलसः।

अलसन alasan-यु० एक वनस्पति है।

अलसनतुल् अ़साफ़ीर alasanatul-ãasáfira-अ० इन्द्रयव। Wrightia Tinctoria, R. Br. (Seeds of-)

अलसन्दह् alasandah-हिं० मोठ। (Vetches, Lentils)

अलसन्द्रा alasandrá-ने०
अलसन्द्री alasandri-कना० } लोबिया। (Dolichos catiang, D. sinensis) इं० मे० मे०।

अलसफ़ाफ़न alasafáfan-(१) लिसानुल् हमल। (२) हाइयुल्‌आलम। इसके लक्षण में मत-भेद है।

अलसा alasá-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) हंसपदी लता। गोधापदी (Vitis pedato)। गोयाले लता-बं०। मे० मत्रिक। (२) लजालू। लाल फूल की लजावन्ती।

अलसा alasá-फ़ा० (१) मरोड़फली, आवर्तकी। (Helicteres Isora) (२) खित्मी (See-khitmi)। (३) नानख़ाह, अजवाइन। (Carum ptychotis Ajowan)

अलसी alasi-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० अलसी। तीसी-हिं० बं०।

अलसी ãalasi अ० घृतकुमारी, ग्वारपाठा, घीकुवार। (Aloe Indica.)

अलसी का तेल alasi-ká-tel-हिं०, द०, तीसी का तेल। अतसी(-तः)तैलम्-सं०। तिसि तैल, मोसिनार तैल-बं०। दुह्‌नुल् कत्तान-अ०। रोग़ने ज़गीर, रोग़ने कतां-फ़ा०। लिन्सीड ऑइल (Linseed oil)-इं०। लिनम युसितेटिसिमम् Linum Usitatissimum, Linn. (oil of-)-ले०। अलिशि-विरै-येण्णेय् -ता०। अविसगिञ्जल-नूने-ते०। चेरुचाण-विलिन्ने -एण्णा-मलया०। अलशी-यण्णे-कना०। स० फा० इं०। देखो-अलसी।

अलसी विरई alasi-virai-ता० अलसी, तीसी, अतसी। Linseed (Linum Usitatissimum) इं० मे० मे०।

अलसेलुका alaseluká-सं० स्त्री० रक्तजालुका। फुल सोला-बं०। वै० निघ०।

अलस्तीन alastin-यु० नमक, लवण। Salt (Sodium chloride.)

अलस्तून alastún-रू० अफ़सन्तीन। (Artemosia Indica, *Willd.*)

अलहैरी alhairi-हिं० संज्ञा पुं० [अ०] एक जाति का अरबी ऊँट जिसे एक ही कूबड़ होता है और जो चलने में बहुत तेज होता है।

अलाई alái-हिं० पुं० [?] घोड़े की एक जाति।

अलाउठा aláuṭhá-सं० क्षिप्त रोग। देखो-क्षिप्त। अथर्व। सू० ६। ३। का० ६।

अलाक़ह् ãaláqah-अ० (१) इच्छा, लगाव। (२) वह तन्तु या सूत्र जो किसी अवयव को लटकाए या निज स्थान पर स्थिर रखे।

अलाक़तुल् बैज़ह् ãaláqatul-baizah-अ० अण्डधारक रज्जु। स्पर्मेटिक कॉर्ड (Spormatic Cord)—इं०।

अलाचारह् ãalácharah-यसफ़हा० अक्रक्र। See-ãaqãaq.

अलाग़ alágh-तु० गदहा, गधा, गर्दभ। (An ass.)

अलाकलङ्ग alákalanga-तु० तेलनी मक्खी (एक प्रसिद्ध परदार पक्षी है)। (Cantheridis.)

अलातम् alátam-सं० क्ली० } अँगारा, अ-
अलात aláta-हिं० संज्ञा पुं० } लात (A firebrand, embers.)। कयला-बं०। रक्षा०। (२) जलती हुई लकड़ी। लुआठी।

अलातन alátan-यु० जाविती। (Mace.)

अलातरी alátari } अमरबेल, आकाशबेल।
अलाटरी alaṭari } (Cuscuta Reflexa.)

अलाती aláti-रू० एक वृक्ष है, जिसकी गोंद चीड़ की गोंद के समान होती है। किसी किसी के मतानुसार यह चीड़ का एक भेद है।

अलातीनी alátíní-रू० लबलाब, इश्क़ पेचा, एक बेल है। (Ipomoea Quamoclit.)

अलाद् aláda-यु० जैतून तैल। (Olive oil.)

अलानीतून alánitún-रू० रवासन, किसी किसी के मत में एक दूसरी ओषधि है।

अलाबष्टर alábaster-इं० सफ़ेद पत्थर, गोदन्ती (Calcium Sulphate.) सज़िराहत-सं० इं० मे० मे०।

अलाबाद alábád-अरब०

अलाबु alábu-सं० पुं० यंत्र विशेष। वा० सू० अ० २६।

अलाबु alábu-सं० क्ली० }
अलाबुः,-बूः aláb b,-búh-सं० स्त्री० }
अलाबू alábú-हिं० संज्ञा स्त्री० }
(१) स्वनामाख्यात फल शाकलता, कैका, मिठीतुम्बी, लौवा, कद्दू-हिं०। लाउ ला -बं०। दुध्या भोपला-मह०। (Cucurbita lagenaria.) कद्दौ०। शब्दर०। भा० पू० १ भा०। द्रव्यगु०। राज०। (२) कदुतुम्बी, तितलौकी, तितलाउ-बं०। Wild variety of legenaria vulgaris ... अ० र०। (३) तूँबा। (४) सर्प विष थैली। (Serpent venom sac.) अथर्व०। सू० १०। ४। का० ८।

अलाबुकः alábukah-सं० पुं० अश्व मुखरोग इसमें मुख दुर्गन्धि, तालुशोथ तथा ग्रास ग्रहण में द्वेष प्रभृति लक्षण होते हैं। (Mouth disease of the horse.) ज० अ०

अलाबुका alábuká-सं० स्त्री० कटु तुम्बी अलाबु, तितलौकी, कटुतुम्बी। भा०। See-Kaṭu-tumbi.

अलाबुनी alábuní-सं० स्त्री० (१) कटु दुग्धालाबु, कटुतुम्बी, तितलौकी। तितलाउ -बं०। Wild variety of legenaria vulgaris. (२) मिष्ट तुम्बीलता, मीठी तुम्बी, लौकी, कद्दू-हिं०। मिष्टलाउ -बं०। (Cucurbita lagenaria.) मद० व० ७।

अलाबु-विधिः alábu-vidhih-सं० पुं० तुम्बी लगाने की विधि।

अलाबु सुहृत् alábu-suhrit-सं० पुं० अम्ल-वेतस। (Rumex vesicarius.) वै० निघ०।

अलाबू यन्त्रम् alábú-yantram-सं० क्ली० यन्त्र विशेष। तुंबी।

लक्षण—तुम्बी यंत्र १२ अंगुल मोटा होता है। इसका मुख गोलाकार तीन या चार अंगुल चौड़ा होता है। इसके बीच में जलती हुई बत्ती रखकर रोग की जगह लगा देने से दूषित श्लेष्मा और रक्त खिंच आता है। अग्नि०। वा० सू० अ० २३।

अलाम aalám-अ० मेंहदी (हिना)। Myrtus Communis.

अलामत aalámat-अ० (हिं० संज्ञा पुं०) (ए० व०), अलामात (ब० व०)। इसका शाब्दिक अर्थ लक्षण, चिह्न, लिंग आदि है (विस्तार के लिए देखो—लक्षण)। तिब की परिभाषा में वह वस्तु जिसके द्वारा किसी शारीरिक दशा अर्थात् स्वास्थ्य वा रोगमें से किसी अवस्था पर दलील पकड़ी जाए अर्थात् जिसके द्वारा स्वास्थ्य वा रोग लक्षित हो। सिम्प्टम् (Symptom), साइन (Sign), इण्डिकेशन (Indication)-इं०।

तिब्बी नोट—अलामत अर्थात् लक्षण से कभी भूतकालीन (भूतकाल में उपस्थित हुई) दशा का पता चलता है, जैसे-नदायतुल् बदन (शरीर की तरी) तथा नाड़ी की निर्बलता एवं शिथिलता से वैद्य को इस बात का बोध होता है कि रोगी को इससे पूर्व स्वेद आ चुका है। ऐसी अलामत या लक्षण को अलामत मुज़क्किरह अर्थात् किसी गत घटना की द्योतक अलामत कहा जाता है। इससे वैद्य को बहुत लाभ होता है अर्थात् उक्त अलामत के द्वारा रोगी के गत शारीरावस्था के बतलाने से उसकी श्रेष्ठ विद्वता एवं क्रिया कुशलता लक्षित होती है। (२) कभी अलामत से वर्तमान कालीन अवस्था का पता चलता है, जैसे—उष्ण स्पर्श द्वारा ज्वर की उपस्थिति का पता चलता है। ऐसे लक्षण को तिबमें "दाल्ल" या 'अलामत दाल्लह' कहते हैं। और चूँकि रत्नोष्मा रोगोंको वर्तमान ज्वरावस्था का पता देकर उसका ध्यान चिकित्सा की ओर आकर्षित करती है, इसलिए ऐसे लक्षण से अधिकतर रोगी लाभ उठाता है। (३) और कभी अलामत भविष्यकालीन घटना की परिचायक होती है। उदाहरणतः—निम्न ओष्ठ का स्पन्दित होना इस बात का सूचक है कि वमन होगा। ऐसे लक्षण को तिब में तक़द्दुमुल्मअ्रफ़ह् या साबिकुलइल्म अर्थात् पूर्वरूप के नाम से अभिहित करते हैं। ऐसे लक्षण से चिकित्सक व रोगी दोनों को लाभ होता है। वैद्य का ऐसे लक्षण को देखकर भविष्य में आने वाली घटना से रोगी को सूचित करना उसके हृदय में वैद्यकी उच्चकोटि की योग्यता व चिकित्सा-कौशलका स्थान पाता है। और स्वयं रोगी चूँकि वैद्य के आदेशानुसार उक्त रोग की चिकित्सा व उपाय से परिचित हो जाता है। इस कारण रोगी भी ऐसे लक्षण से लाभान्वित होता है।

अलामत और अ़र्ज़ का भेद—(देखो अ़र्ज़)

अलामत और दलील का भेद—अलामत अर्थात् लक्षण कभी मालहुल् अलामत (जिसका वह लक्षण है) के साथ पाया जाता है और कभी नहीं। इसके विरुद्ध दलील (लक्षण) अपने मद्लूल (लक्ष्य) के साथ अवश्य हुआ करता है। इनमें से प्रथम का उदाहरण मेघ व वृष्टि है। यह बात स्पष्ट है कि मेघ कभी बिना वृष्टि के भी होता है। और द्वितीय का उदाहरण अग्नि व धूम है। क्योंकि धूम सदा अग्निके साथ पाया जाता है। तिब के दृष्टिकोण से दलील तथा अलामत में मुख्यभेद यह है कि दलील केवल रोग के लक्षण के लिए प्रयोग में आता है और अलामत साधारण है जो रोग एवं स्वास्थ्य प्रति दो लक्षणों के लिए बोली जाती है।

डॉक्टरी नोट—सिम्प्टम् का शाब्दिक अर्थ "परस्पर घटित होना" है। डॉक्टरी परिभाषा में उस परिवर्तन के लिए बोला जाता है जो रोग क्रम में उपस्थित होता है जिससे उक्त रोग के विद्यमान होने की सूचना मिलती है। इस विचार से सिम्प्टम् अलामत का पर्याय है। परन्तु अर्वा-

चीन-मिश्र-देशीय वैद्य अलामत के स्थान में इसका पर्याय "अ़र्ज़" निर्धारित करते हैं।

साइन उस अलामत का नाम है जो केवल रोग में प्रगट होता है और सिम्प्टम् रोग व स्वास्थ्य दोनों लक्षणों के लिए बोला जाता है। अस्तु, जो अन्तर दलील व अलामत में वर्णित हुआ वही भेद सिम्प्टम् व साइन में है। इण्डिकेशन भी साइन और दलील का पर्याय है।

अलामत अर्ज़िय्यह् āalámat-āarziyyah —अ० वह लक्षण जो किसी अवयव के अ़वारिज़ अर्थात् उसकी सुन्दरता व कुरूपता से सम्बन्ध रखता हो, उसके शरीर या जौहर या उसकी क्रिया से सम्बन्ध न रखता हो। देखो—अलामत जौहरिय्यह्।

अलामत आमह् āalámat-āámah }
अलामत मिज़ाजियह् āalámat-mizájiyah }
—अ० सामान्य लक्षण, मिज़ाजी अलामत, वह लक्षण जिसका सम्बन्ध समग्र शरीर से हो या जो समग्र शरीर में प्रगट हो। जैसे ज्वर में सम्पूर्ण देह का गर्म होजाना।

अलामत जौहरिय्यह् āalámat-jouhariyyah-अ० (१) वह लक्षण जो अवयव के शरीर व सत्ता से अर्थात् उनकी सृष्टि व उत्पत्ति से सम्बन्ध रखता है। (२) जो लक्षण अवयव के अ़वारिज़ (कुरूपता वा सौंदर्य) से संबंध रखते हों उन्हें "अलामात अर्ज़िय्यह्" कहते हैं। और (३) उन लक्षणों को जो अवयवों के कार्य से सम्बन्ध रखते हों उन्हें "अलामात तमामिय्यह्" कहते हैं।

अलामत तमामिय्यह् āalámat-tamámiyyah-अ० वह लक्षण जो किसी अवयव की क्रिया से सम्बन्ध रखता हो, उसके शरीर वा रूप से उसका कोई भी सम्बन्ध न हो। देखो—अलामत जौहरिय्यह्।

अलामत मक़ामिय्यह् āalámat-maqámiyyah-अ० स्थानीय लक्षण, वह लक्षण जिसका सम्बन्ध शरीर के किसी विशेष भाग से हो जैसे—स्थानीय शोथ। लोकल सिम्प्टम् (Local Symptom)-इं०।

अलामत मबय्यिनह् āalámata-mabayyinah |
दलील dalíl |
दलालत dalálata |
—अ० वह लक्षण जिससे वैद्य को रोग का पता लगे। उदाहरणतः नाड़ी व क़ारोरा (मूत्र) प्रभृति। इण्डिकेशन (Indication) साइन (Sign)-इं०।

अलामत मुख़्तलितह् āalámata-mukhtalitah-अलामत मुरक्कबह्-अ०। संयुक्त मिश्रित लक्षण। वह लक्षण जो अन्य लक्षणों से संयुक्त या मिश्रित होकर व्यक्त होता है अर्थात् एक रोग के विभिन्न लक्षणों का परस्पर मिश्रण प्रगट होना।

उदाहरणतः—ज्वर में शिरःशूल, इन्द्रियों का टूटना व मतली प्रभृति का परस्पर मिश्रण प्रदर्शित होना। कम्प्लेक्स सिम्प्टम् (Complex symptom), सिण्ड्रोम (Syndrome)-इं०।

अलामत मुज़क्किरह् āalámata-muzakkirah-अ० स्मरण कराने वाला लक्षण, स्मारक चिन्ह, वह लक्षण जो किसी रोग द्वारा उत्पन्न निर्बलता में व्यक्त होकर उस गत रोग को स्मरण कराए, परन्तु उस रोग से उसका कोई विशेष सम्बन्ध न हो। कन्सीक्युटिव सिम्प्टम (Consecutive symptom)-इं।

अलामत मुन्अ़किसह् āalámat-munāakisah-अ० परावर्तित लक्षण, वह लक्षण जो रोग से दूर किसी अवयव में प्रगट हो।

उदाहरण—वृक्कशूल में वमन होना या कतिपय मास्तिष्क रोगों और गर्भावस्था में वान्ति व उबकाई का आना। रिफ्लेक्स सिम्प्टम (Reflex symptom)

अलामत मुन्ज़िरह् āalámat-munzirah-अ० भयभीत करने वाला लक्षण, पूर्वरूप, वह लक्षण जो किसी रोगसे पूर्व उसके उत्पन्न होने का

भय दिखाए। उदाहरणतः—अपस्मार के दौरा से प्रथम देह के किसी भाग में सुरसुराहट प्रतीत होना मृगी होने का भय दिखाता है और वृद्धावस्था में सिर चकराना सिक्तह् (Apoplexy) के होने का भय उत्पन्न करता है। प्रीमॉनिटरी सिम्प्टम (Premonitary symptom), प्रोड्रोम (Prodrome) -इं०

अलामत मुश्तर्कह् āalámat-mushtarkah-अ० सम्मिलित लक्षण, वह लक्षण जो कतिपय विभिन्न रोगों में सम्मिलित रूप से पाया जाए।

उदाहरण—वमन एक ऐसा लक्षण है जो आमाशय, मस्तिष्क, वृक्क तथा गर्भाशय प्रभृति रोगों में सम्मिलित रूप से प्रगट होता है। इक्विवोकल सिम्प्टम (Equivocal symptom)-इं०।

अलामत मुस्तक़ीमह् āalámat-mustaqimah-अ० अलामत ज़ातियह्। जातीय लक्षण, वह लक्षण जो बिना किसी लगाव के स्वयं रोग से उत्पन्न हो। जैसे शोथ में वेदना एवं दाह। डाइरेक्ट सिम्प्टम (Direct symptom), ईडियोपैथिक सिम्प्टम (Idiopathic symptom)-इं०।

अलामत शिर्किय्यह् āalámat-shirkiyyah-अ० अलामत अर्ज़ियह्, मानुबंधिक लक्षण, अर्थात् अलामत जो विकारी अवयव के सिवा किसी अन्य अवयव में केवल पारस्परिक सम्बन्ध के कारण प्रगट हो। जैसे हस्तपादस्थ क्षत प्रभृति में कक्ष या चढ्ढे की ग्रंथियों का शोथयुक्त हो जाना या वृक्क शोथ वा जरायु शोथ में वमन होना। सिम्पैथेटिक सिम्प्टम (Sympathetic symptom)-इं०।

अलामत हालिय्यह् āalámat-háliyyah-अ० वह लक्षण जो अवयव की किसी विशेष अवस्था को प्रगट करे। स्टेटिक सिम्प्टम् (Static symptom), पैसिव सिम्प्टम (Passive symptom)-इं०।

अलामलक alámalak-(तिनकाबिन व तबरिस्तानी) अंगूर वृक्षके समान एक लता है जिसको 'फ़ाशरा' या "शिवलिङ्गी" कहते हैं। (Bryonia.)

अलामात āalámáta-अ० (ब० व०) देखो—अलामत (Symptoms)।

अलार alára-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कपाट, किवाड़। [सं० अलात] अलाव। आग का ढेर। आँवाँ। भट्ठी।

अलाव aláva-हिं०संज्ञा पुं० [सं० अलात=अंगार] आग का ढेर। धूनी। ग़ल्लौरा। कौड़ा। बॉनफायर (Bonfire)-इं०।

अलावु alávu-गु० आलू। (Potato.)

अलावुद्दीन āalávuddina-अबुल्हसन बिन हाशिमुल् मुल्कीयुल् क़र्शी। देखो—क़र्शी। See—Qarsí.

अलासः alásah-सं० पुं० जिह्वा स्फोट। जिह्वागत मुख रोग। एक रोग जिसमें जीभ के नीचे का भाग सूजकर पक जाता है और दाह तन जाती है।

लक्षण—जिह्वा के नीचे जो प्रगाढ़ शोथ हो तो उसे कफ और रक्त की मूर्ति अलास नामक जिह्वा रोग कहते हैं। यह रोग बढ़कर जिह्वा को स्तम्भित कर देता है और जड़ में से जिह्वा पाक को प्राप्त हो जाती है। यह कफ दोष के कारण होता है। उक्त कंटक रोग से जिह्वा भारी, मोटी और सेमल के काँटों जैसे मांसांकुरों से व्याप्त होती है। सु० नि० १६ अ०।

अलासफ़ास alásafása-यु० लिसानुल् अबल्, वृक्ष और घास के एक बीच बूटी है।

अलासि alási-बम्ब० अलसी, तीसी। Linseed (Linum usitatissimum.)

अलिः alih-सं० पुं० } [स्त्री० अलिनी]
अलि ali-हिं० संज्ञा पुं० } (१) भ्रमर, भँवरा। लार्ज ब्लैक बी (Large black bee)-इं०। रत्ना०। (२) मद्य, मदिरा। स्पिरिचुअस लाइकर (Spirituous liquor.)-इं०। मे० लद्विक। (३) वृश्चिक, बिच्छू। स्कॉर्पियन (A scorpion.)-इं०।

हाराo । (४) काक, कौआ । क्रो (A crow) -इं० । (२) कोकिल, कोयल । इण्डियन कुक्कु An Indian cuckoo (Cuculus Indicus.) श० र० । (६) सखी (A woman's female friend or companion.) । (७) पंक्ति (A line, a row) । (८) कुत्ता (A dog) । (९) दे०-अली ।

अलिआर aliára-सं० ग्रम्मी, यन्द्री-यम्ब० । मद० । (Dodonaea viscosa) इं० मे० मे० ।

अलिंजर alinjara-हिं० संज्ञा पुं० देखो-अलिंजरम् ।

अलिकः alikah-सं० पुं०, क्ली०
अलिक alika-हिं० संज्ञा पुं०
(१) कपाल, गण्डस्थल, गाल । चीक (Cheek)-इं० । रा० नि० व० १८ । (२) ललाट । कपाल । मस्तक । पेशानी । फॉरहेड (Forehead)-इं० । रत्ना० । (३) दे० अलि ।

अलिक ãalik-अ० प्रत्येक गोंद जो चबाई जा सके । (Resin) देखो—अलक ।

अलिका aliká-सं० स्त्री०पाटली । (Bignonia Suaveolens.)

अलिक मत्स्यः alika-matsyah-सं० पुं० (१) अंगारा (Embers.) । (२) भिन्न तिल । (३) तैल भृष्ट मांस, तेल में भूना हुआ मांस । (४) पिष्टक विशेष ।

अलिकुल् अम्बात ãalikul ambát-अ० बतम या उसके समान एक वृक्ष की गोंद है ।

अलिकुल् प्रिया alikul-priyá-सं० स्त्री० काष्ठ शेवती, काठ गुलाब । काठ गोलाप-बं० । (Wild rose.) वै० निघ० ।

अलि (इल) कुल् बुतम ãalikul-butam-अ० बुतमका गोंद, इलकुल् अम्बात । इसकी शुष्क गोंद को कलफून कहते हैं । प्रकृति—कक्षा द्वितीयके अन्त में उष्ण व रूक्ष । स्वरूप—सुर्ख, स्याह रंग का होता है । हानिकारक—उष्ण प्रकृति व वात तन्तुओं को । दर्पघ्न—सिकञ्जबीन व [illegible] शहद । प्रतिनिधि—मस्तगी, रातीनज उचित मात्रा में । मुख्य गुण—आमाशय को बलप्रद, मूत्रल व कासघ्न । मु० मु० ।

गुण, कर्म, प्रयोग—दोषोंको परिपक्व करता एवं उनके क्वाम (चाशनी को) माम्यावस्था लाता, शोथ एवं वायु का लयकर्ता तथा कठव कास को लाभप्रद है । शुष्क एवं तर कंडू को लाभ पहुँचाता और प्रकृति को मृदु कर्ता है । निर्विषैल । (म० मु०)

विलायक, द्रावक, पाचन शक्ति को बल प्रदान कर्ता, मूत्र प्रवर्त्तक व शोधक और समग्र यूनानी हकीमों के निकट मस्तगी से श्रेष्ठतर है । इसका चबाना मस्तिष्क की आर्द्रता एवं श्लेष्मा का अभिशोषक और आमाशय बलप्रद है । यदि २॥ तो० इसकी गोंद को १ छटाँक बकरी के गुर्दे की चरबी के साथ पिघलाएँ और सबको तीन दिवस में खाएँ तो आम्र कास तथा सूर्खी के लिए अनुपम है । मधु के साथ आन्तर्वृति के घावों और वसा में पिघलाया हुआ अवयवों की पीड़ा का दूर करने वाला है ।

अलिकुल सङ्कुला alikul-sankulá-सं० स्त्री० कंटक शेवती, काँटा शेवती । कुब्जका वृक्ष, कांकर देशीय पुष्प वृक्ष । (Trapa bispinosa.) रा० नि० व० १० । भ० पू०-१ भा०. देखो—कुब्जकः ।

अलिगर्द्दः aligarddah सं० पुं० जलसर्प । (A naquatic serpent.) श० र० ।

अलिज़रान alizarin-इं० नारंगी सुर्ख रंग का एक तत्व जो मञ्जिष्ठा में पाया जाता है । (An orange-red principle found in "Rubia cordifolia") इं० मे० मे० ।

अलिजिह्वा,-ह्विका alijihvá,-hviká-सं० स्त्री० (Uvula) शुद्रजिह्विका, काकलिक, गले की घाँटी । गले के भीतर का कौआ । घुंडिका, काक, कौव्वा, अलिजिह्वा, मुख में एक कोमल 'तालु' के पिछले भाग में एक खूँटी सी दिखाई देने वाली चीज़ । श० र० ।

अलिञ्जरम् alinjaram-सं० क्ली० (१) फल विशेष। फुटी विशेष-बं०। दिरफाटी-मह०।

गुण—अलिञ्जर रूत शीतल तथा भेदक है और कसेला, मधुर, वारीथ, तिक्त तथा पाक में कटु और स्वादिष्ट वातकारक तथा श्वास, काम और श्लेष्म विनाशक है। वै० निघ० (२) बहुजलधर-मृण्मय पात्र विशेष। सुराही। पानी रखने के लिए मिट्टी का बरतन। झज्झर। घड़ा।

अलिता alitá-सं० स्त्री० अलक्तक। आलता -बं०। (Lac, the red animal dye so-called.)

गुण—अलिता उष्ण, तिक्त कफ वात तथा व्रण नाशक है। व्यंग, अरुची, कंठ रोग और व्रणदोष नाशक है। पूर्व महर्षियों ने इसके अन्य गुण लाक्षा के सदृश वर्णन किए हैं। वै० निघ०।

अलिदूर्वा alidúrvvá-सं० स्त्री० मालादूर्वा, माला दूब। रा० नि० व० ८। See-Málá-dúrvvá

अलिन्थः alinthah-सं० पुं० (Allantois) भ्रूण का वह आवरण जिसमें उसका मूत्र एकत्रित रहता है। कीसतुल बौल्-अ०।

अलिन्द alinda-हिं० संज्ञा पुं० (१) (Auricle)। (२) [सं० अलीन्द्र] भौंरा। (A wasp)

अलिपकः alipakah सं० पुं०
अलिपक alipaka-हिं० संज्ञा पुं०
(१) भ्रमर, भौंरा (A large black bee)। (२) कोकिल, कोयल। An Indian cuckoo (Cuculus Indicus.)। (३) कुक्कुर, कुत्ता (A dog.)। मध्वैत्र मे० कचतुष्क।

अलिपत्रिका alipatriká-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० वृश्चिकाली, बिछाती, बिछुआ घास। (Fragia involucrata.) रा० नि० व० ५।

अलिपर्णिका,-र्णी alipamiká,-rní-सं० स्त्री० वृश्चिकाली। बिछाति, बिछुटी-बं०। (Fragia involucrata.) रा० नि० व० ६।

अलिप्रियम् alipriyam-सं० क्ली० (१) रक्तोत्पल, लाल कमल। (Nelumbium speciosum.) त्रिका०। -पुं० (२) धारा कदम्ब (Adina cordifolia.)। (३) आम्र वृक्ष, आम। A mango tree (Mangifera Indica.) श० र०। (४) कदम्ब वृक्ष। (Anthocephalus kadamba.) भा० पू० १ भा०।

अलिप्रिया alipriyá-सं० स्त्री० (१) पाटला। पारुल गाछ-बं०। (Bignonia suaveolens.) प० मु०। (२) भूजम्बू वृक्ष, काक जम्बू। (Ardisia solanacea) वै० निघ०।

अलिप्सा alipsá-सं० स्त्री० अनिच्छा। (Indifference)

अलिफ़ान alifán-अ० बाजू के अन्दर की दो रगें।

अलिबौफ़ोर डी बेञ्जाइन aliboufier de benjoin-फ्रां० लुबान, ऊद-भा० बाजा०। Gum benjamin tree (Styrax benzoin, Dryander.) फा० इं० २ भा०।

अलिमकः alimakah-सं० पुं० (१) भेक (A frog)। (२) कोकिल, कोयल (An Indian cuckoo)। (३) भ्रमर, भँवरा (A large black bee)। (४) पद्म केशर (See-padmakeshar.)। (५) मधूक वृक्ष, महुआ। (Bassia latifolia) मे० चतुष्क।

अलिमोदा alimodá-सं० स्त्री० गणिकारिका। गणिरी-बं०। (Premna spinosa.) रा० नि० व० ६। देखो—अरणी।

अलिमोहिनी ailmohiní-सं० स्त्री० केविका पुष्प वृक्ष, केवार। रा० नि० व० १०। देखो-केविका (Keviká)।

अलिम्पकः,-म्बकः alimpakah,-mbakah -सं० पुं० (१) कोकिल, कोयल (An Indian cuckoo)। (२) ...

मधु मक्खी, शहदकी मक्खी (A bee)। (३) कुक्कुर कुत्ता (A dog)। (४) पद्म केशर। (See-padamkeshar) वै० निघ०।

अलिया aliyá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आलय] एक प्रकार की खारी।

अलिवल्लभा alivalladhá-सं० स्त्री० रक्त पाटला। (See-páṭalá) भा० पू० १ भा०।

अलिवाहिनी aliváhiní-सं० स्त्री० कोकण देश प्रसिद्ध केविका वृक्ष। केवेर-हिं०। रा० नि० व० १०। See-keviká.

अलिविरई alivirai-ता० } चन्द्रसूर, अहलीव।
अलिवेरी aliveri-कं० } (Lepidium sativum.)

अलिशा alisha-काश०
अलिशि विरई alishi-virai-ता० } अलसी, तीसी। Linseed (Linum usitatissimum, Linn.) फा० इं० १ भा०। देखो—अतसी।

अलिसमाकुलः alisamákulah-सं० पुं० पुष्प वृक्ष विशेष। दवणा सेवन्ती -महं०। वै० निघं०।

अली (इन्) ali "in"-सं० पुं०
अली alí-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अलि] } (१) वृश्चिक, बिच्छू (A scorpion.)। (२) भ्रमर; भँवरा। (A large black bee) मे०। -हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आली] (१) सखी; सहेली; सहचरी। (A female friend.)। (२) श्रेणी; पंक्ति; क़तार।

अली ali-पं० अमलतास। (Cassia Fistula.)

अलीकः alikh-सं० पुं० एक प्रकार का सर्प। अथर्व०। सू० १३। ५। का० ५।

अलीक़ aaliq-अ० इश्क़पेचाँ, इश्क पेचा। (Ipomoea quamoclit.)

अलीकम् alikam-सं० क्ली० ललाट, मस्तक, पेशानी। (Forehead) हे० च०।

अलीकः alikah-सं० पुं० काकोली पुष्प, फल व पत्र।

अलीक मत्स्यः alika-matsyah-सं० पुं० अङ्गार पर पकाकर तिल तैल में भूनी हुई उड़द की पिट्ठी। बड़े नागरबेल पानको उड़द की पिट्ठी में लपेटकर युक्ति से कड़ाई में पकाएँ, फिर छोटे छोटे कतर के तेलमें भून लें तो "अलीक मत्स्य" तैयार होते हैं। इनको बैंगन के भुरते के साथ अथवा बथुए के साग से या रायते से भक्षण करें। भा० पू० २ भा०।

अलीकोचक alikochak-हिं० तेलनी मक्खी ज़रारीह-अ०। (Cantharidis.)

अलीगड्ड aligadda-द० प्याज, पलाण्डु। (Allium cepa, Linn.)

अलीनकम् alinakam-सं० क्ली० वङ्ग। (Tin.) हे० च०

अलीफ़ीन alifína-फ़ि० हाथी, हस्ति। (An elephant.)

अलीफूल aalíphúla-द० नीलोफ़र, छोटा कमल। (Nymphæa edulis, D. C.) फा० इं०।

अली बिन अब्बास aali-bin-aabbása-अली अब्बास मजूसी -अ०। Ali bin alabbas almajusi, Alli Abbas. यह प्रसिद्ध ईरानी हकीम, गबर अर्थात् आतश परस्त (अग्निपूजक) था। इसी कारण यह मजूसी अर्थात् आतशपरस्त (अग्निपूजक) की उपाधि से विभूषित है। यह ईसवी सन की १० वीं शताब्दि के उत्तरार्ध में, अहवाज़ (ईरान देश) नामक स्थानमें उत्पन्न हुआ, और इसने अबी माहिर मूसा बिन सय्यार से वैद्यक विद्या की शिक्षा प्राप्त की। यह अपने समय का अत्यन्त महान् एवं और श्रेष्ठ हकीम हो चुका है। यह सुल्तान अज़दुद्दौला बिन बूयह देल्मी का दरबारी चिकित्सक था। प्रसिद्ध तिब्बी ग्रंथ "कामिलुस्सनाअह" जिसको अंग्रेज़ी में लिबर रेजिस (Liber Regis Kingly-

book") अर्थात् राजकीय ग्रंथ लिखा है, यह अपाही के लिखे हुए ग्रंथ रत्नों में से है। इन्होंने यह ग्रंथ उल्लिखित राजा के लिए ही लिखा था। इस कारण इसे उसी के नामसे अभिहित किया। यह अपने काल का अनुपम ग्रंथ लिखा हुआ था। असको दो भागों में विभाजित है और प्रत्येक भाग के कतिपय खण्ड हैं। असली अर्थात् प्रायोगिक भाग में व्यवच्छेद, इन्द्रियव्यापार, सामान्य विकृति विज्ञान, गुह्येन्द्रिय संबंधी रोग, त्वक् विकार, व्रण तथा क्षत प्रभृति का वर्णन है। और इसी में स्वास्थ्य रक्षण, आहार, निघण्टु (औषधनिर्माण), विशेष विकृति विज्ञान और चिकित्सा का सविस्तार वर्णन है। क़ानून शेख़ के प्रकाशित होने से पूर्व अरब व अजम में यह वैद्यक की एक अत्यन्त प्रशस्त व प्रामाणिक पुस्तक मानी जाती थी। कई बार लेटिन भाषा में इसका अनुवाद किया गया। यह पुस्तक मिस्र के मुद्रणालय से अब भी मिलती है।

अलीबिन ईसा āali-bin-āisá–अ० ईसा बिन अली (Ali bin Isa, Jesus Haly).

यह इराक़ अरब के प्रसिद्ध नेत्रचिकित्सक पाँचवीं शताब्दि हिजरी या ग्यारहवीं शताब्दि मसीही के पूर्वार्द्ध में हुए। यह नेत्ररोगों की चिकित्सा में अत्यन्त सिद्ध हस्त थे। यही नहीं, प्रत्युत यह अपने काल के इमाम माने गए हैं। और समकालीन और पश्चात् कालीन सम्पूर्ण चिकित्सकों ने इस विषय अर्थात् चक्षुरोग की चिकित्सा एवं रोग विनिश्चीकरण में अली बिन ईसा का ही अनुकरण किया है।

अली बिन ईसा के ग्रन्थों में केवल एक ग्रंथ "तज़्किरतुल् कुह्हालीन" (Book of Memoranda for Eye Doctor.) प्राप्त होता है। चक्षुरोगों के निदान व चिकित्सा पर इस ढंग का अपने समय का यह एक अनुपम ग्रंथ है। यूनानी चिकित्सा में चक्षुरोगों में यह आज पर्यन्त भी एक उत्तम ग्रंथ माना जाता है।

अली बिन रिज़्वान āali-bin-rizván–अ० (āli bin Rudhwan Rodoam). अबुल् हसन अली बिन रिज़्वान बिन अली बिन जाफ़र। इनकी उत्पत्ति मिस्र देश के जीज़ा स्थान में हुई थी। किसी २ अंग्रेज़ी ग्रंथ में लिखा है कि यह ख़लीफ़तुल् हाकिम के काल में सन् १०६८ ई० में मिस्र में एक उच्चकोटि के हकीम प्रसिद्ध थे। इनके पिता रिज़्वान बिन अली तनूर बनाने वाले थे। अली बिन रिज़्वान ने एक साधारण पेशावर की सन्तान के सदृश पालन पोषण व शिक्षा पाई और क्योंकि स्वभावतः इनका ध्यान योग्यता व विद्या प्राप्ति की ओर था; इसलिए किसी पेशा में तल्लीन होने की अपेक्षा उन्हें विद्या-विलास अधिक प्रिय व रुचिकर था। ३२ वर्ष की अवस्था में यह एक उच्चकोटि के और नामवर तबीब प्रसिद्ध हो गए और ६०, ६५ वर्ष की अवस्था तक अत्यन्त सफलतापूर्वक चिकित्सा कार्य करते रहे। परन्तु यह कुछ तुन्द प्रकृति के मशहूर थे। यह अपने समकालीन और कोई कोई पूर्वकालीन चिकित्सकों, यथा—शेख़ुर्रईस व ज़करिया राज़ी प्रभृति के वचनों का खंडन किया करते थे। किसी किसी समय अनुचित वचन कह जाते थे।

अली बिन रिज़्वान चिकित्सा में यह केवल उस्ताद ख़ुद के शिष्य थे। पुस्तकों के सिवा इन्होंने यह विद्या किसी से नहीं पढ़ी। इनका वचन है कि विद्या जितना अध्ययन से बढ़ती है उतना पाठ पाठ पढ़ने से कदापि नहीं बढ़ सकती। सन् ४५३ ई० में ख़लीफ़ा मुस्तनसर बिल्ला के काल में आपका स्वर्गवास हुआ। आपने एक सौ से अधिक ग्रंथ लिखे हैं।

अली(ले)मड़ी alí (le) mari–हिं० वरुण, बरनावृक्ष। (Cratœva tapia.)

अलील alíla–हिं० वि० [अ०] बीमार, रुग्ण।

अलीवन alívan–यु० शेर। (A lion.)

अलीवह alívah–यु० ज़ैतून। (Olive.)

अली(ले)वा alí,-le-vá–रू० जंगली अंजीर। (Wild fig.)

अलीष्टः alíshṭah–सं० पुं० तिलक वृक्ष, तिल, तिल्ली। तिल गाछ–बं०। (Sesamum Indicum.) वै० निघं०।

अलीस alísa–एक बड़ी मछली जिसका शिकार करना बहुत दुस्तर है।

अलुः aluh–सं० पुं०,स्त्री० (१)मल्लिका (Seegalantiká)। (२) आलु (Potato.)। (३)तुलसी वृक्ष(Ocimum sanctum)। –क्री० (४) मूल (Root) मे० फद्विक०।

अलुई aluí–बं० कालमेघ, यवतिक्त, किरात–हिं०। (Andrographis paniculata, Nees.) फा० इं० ३ भा०।

अलुकम् alukam–सं० क्री० (१) आलुक साधारण, आलू। An esculent root (Arum campanulatum.)· (२) आलूबोखारा (Prunus communis.)। (३) आमिष, मांस। (Flesh.)

अलुचा aluchá–म० आलूचा-हिं०। आलूक -सं०।

अलुदेल aludel–हिं० देव। (Artocarpus nobilis.) इसका बीज खाद्य है। मेमो०।

अलुबियूम alu-beeyúm–मल० जुन्दबेदस्तर। (Castoreum.) इं० मे० मे०।

अलुमीनम aluminamn–हिं० संज्ञा. पुं० [अं० एलुमीनियम] Aluminium.

अलुवह aluvah–फा० (१) कद, पर्वदह। (२) उकाब। (An eagle).

अलूक alúka–हिं० आलू। Potato (Arum campanulatum.).

अलूक़ alúqa–अ० पारद। Mercury (Hydrargyrum.)

अलूक़ी aalúqí–मुलेठी, यष्टिमधु। (Glycyrrhizæ.)

अलूचा alúchá–आलूचा।

अलूज alúja–अ० मुख़्लसह भेद। फ़ारसी में काज़रीसक कहते हैं।

अलूनी alúni–बरब० लोफ़ुज़ुद्द नामक एक अप्रसिद्ध बूटी है।

अलूफ़न aalúfan–यु० मद्यभेद जिसको मैफ़्रूतज (खटमिट्ठा) कहते हैं।

अलूफ़स aalúfas ख़ुब्बाज़ी। (Malva Sylvestris, Linn.)

अलूयन alúyan–यु० एक बूटी है जो यूनान में उत्पन्न होती है। एक गज़ के बराबर ऊँची होती है। शाखाएँ स्याम पतली और कठिन होती हैं। छिलका मृदु और मूल चुकन्दर के समान होता है।

अलूयास alúyas–लें० मिश्र सक़ोतरी, सक़ोतरी एलुआ। (Aloe socotrine.)

अलूया alúyá–फ़ा० लोबिया। (Dolichos sinensis.)

अलूसन alúsana
अलूसून alúsúna } –यु० अयमून (करफ़ के पौधे के समान एक पौधा है)।

अलूह aalúh–सिरि० एलुआ, सिब्र। (Aloes.)

अलें alon–मह० अदरक, आदी। (Zingiber officinalis.) इं० मे० मे०।

अलेई alei–मह० (Dalbergia volubilis, Roxb.) फा० इं० १ भा०।

अलेक्सीन ulexine–इं०

यह एक वर्णरहित, पीताभश्वेत, स्फटिकीय क्षारोद है जो कॉमन, गोर्स (Common gorse) या फर्ज़ (Furze) या ह्विन (Whin) नामक वृक्ष से, जिसका वानस्पतिक नाम यूलेक्स युरोपियस (Ulex Europæus) है, प्राप्त होता है। यह सायटिसस लेबर्नम (Cytisus laburnum) द्वारा पाए जाने वाले सायटीसीन (Cytisine) नामक सत्व के समान होता है। अधिक मात्रा में यह सबल श्वासोच्छ्वास विषयक विष तथा चेष्टावह नाड़ियों को वातग्रस्त करने वाला है। इसमें निश्चित मूत्रल प्रभाव विद्यमान है तथा हृद्रोग जन्य जलोदर में इसका उपयोग होता है। इसको २ ग्रेन से अधिक मात्रा में नहीं प्रयुक्त करना चाहिए। जल में सुविलेय, हाइड्रोब्रोमाइड नामक लवण प्रयोजनीय है। इसको स्टिक्नीन

कुचलीन का अगद बतलाया जाता है। (हि० मे० मे०)।

अलेथो alethí-पं० कुकपाल कुड़ा-ते०।

अलेन alen--मह० सोंठ, शुंठि। (Dry ginger.)

अलैकः alaikah-सं० पुं० काकोली पुष्प। See-kákolí pushpa.

अलैग्ज़ेण्ड्रियल लॉरेल alexandrial laurel -इं० सुल्तान चम्पा-हिं०। पुन्नाग-सं०। (Calophyllum Inophyllum, *Linn.*) फा० इं० १ भा०।

अलोणा aloná } -हिं० वि० [सं० अ-लवण] [स्त्री० अलोनी]
अलोना aloná }

अलुना, बिना नमक का, जिसमें नमक न पड़ा हो। स्वादरहित। (Not salt, fresh, saltless, insipid.)

अलोपा alopá-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अलोप] एक पेड़ जो सदा हरा रहता है। इसके हीर की लाल और चिकनी लकड़ी बहुत मज़बूत होती है, नाव और गाड़ी बनाने में काम आती है तथा घरों में लगती है। इसकी लकड़ी पानी में ख़राब नहीं होती।

अलोमशः alomashah--सं० पुं० मत्स्य विशेष, मछली। (A kind of fish.)

गुण—मत्स्य मांस बलकर, शुक्रवर्द्धक और पुष्टिकर है। रा० नि० व० १०।

अलोमशा alomashá--सं० स्त्री० वृक्ष विशेष। कांचझाड़--मह०। (A kind of tree.) वै० निघं०।

अलोम्बे alombe-बम्ब० मांन्सेल-बाम्ब०। मोकसा, चम्पा, सुम्बह्।

अलोहितम् alohitam--सं० क्लो० (१) रक्त पद्म, लाल कमल (Red lotus.)। (२) ईषद्रक्त पद्म।

अलोहित alohita--हिं० संज्ञा पुं० श्वेत।

अलोहितसत्वम् alohita-satvam-सं० क्लो० (White carpuscle.) श्वेताणु।

अलौह शस्त्र alouha-shastra--सं० पुं० घनशस्त्र। वह शस्त्र जो लोहे द्वारा निर्मित न हो। वा० सू० अ० २६।

अल alam--अव्य० देखो--अलम्।

अलंबुष alambusha--हिं० संज्ञा पुं० [सं० अलम्बुषः]

अलंबुषा alambushá--हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अलम्बुषा]

अल्अफ़्स alāafsa-अ० अफ़्स, अफ़्स सुल् बलूत। माजूफल, मायिका-हिं०। Galls (Galla.) देखो— मायाफल।

अल्आबह् al-āabah-अ० (ब० व०), लुआब (ए० व०) Mucilage।

अल्आल āalāal }
उल्उल āulāul } -अ० (१) अस्थिवत्
अल्आल āalāala }

उपास्थि जो आमाशयिक द्वार या कौड़ी के स्थान पर होती है।

(२) शिश्न, शिथिलावस्था का शिश्न। (Flaccid ponis-)

अल्आ alāá-अ० अंगुली की अस्थियाँ।

अल् इत् रियून al-itriyúna-यु० क़िस्साउल्-हिमार, चिन्दाल, देवदाली। (Ecbollium elaterium.)

अल्ऊनह् al-āúnah-अ० ग़ाज़ह्, गुलाबी उबटन।

अल्उश्बतुल् हब्शियह् alāushbatul-habshiyah-अ० जदो०, कसू, कौसू-उ०,फ़ा०। Cusso (Kousso).

अल्कः alkah-सं० पुं० (१) वृक्ष विशेष (A tree.)। (२) शरीरावयव। (An organ of the body.) वै० निघ०।

अल्क़ह् āalqah-अ० वह कपड़ा जो बालक उत्पन्न होने के पश्चात् आरम्भ में उस पर लपेटा जाता है।

अल्क़म् alqam--अ० इन्द्रायन का फल।

अल्क़म् āalqam--अ० हन्ज़ल। इन्द्रायन-हिं०। (Citrullus colocynthes)। (२) कड़ुआ पौधा। (३) चिन्दाल।

अल्क alka–अज्ञात।

अल्कत्तानुल् मुस्हिल alkattánul-mushil–अ० कत्तान मुस्हिल।–सारक अतसी। Purging flax (Linum catharticum.)

अल्कन alkan–अ० लुकनतवाला, वह जो अटक अटक कर बोले। लिस्पर (Lisper)-इं०। (२) गुंग, गुंगा, गूँगा। डम्ब (Dumb)-इं०।

अल्क़म् alqam–अ० इन्द्रायण। (Citrullus colocynthes)

अल्क़ुम्बीत alqumbita-अ० फूलकोबी। (Brassica botrytis) इं० हिं० गा०।

अल्काकनज alkákanaja–अ० राजपुत्रिका, वन पुत्रिका–सं०। पपोटन–हिं०। Alkekengi (Solanum vesecareum.) देखो—काकनज।

अल्कादुल्हिन्दी alkádul-hindí–अ० कृष्ण खदिरसार, काला कत्था। Black catechu (Catechu nigrum).

अल्किल्सुल् माई alkilsulmái,
अल्किल्सुल् मुतफ़्फ़ा alkilsul-mutaffá
–अ० शांतचूर्ण, बुझाया हुआ चूना। आहक आब दीदह्–फ़ा०। Slaked lime (Calcii hydros.)

अल्क़ी áalqí-कब्नज़,नब्नज़। हीथ(Heath)-इं०। Erica–लै०। (Portugal broom.) इं० हिं० गा०।

अल्कीना alkíná-अ० कीना कीना। ज्वरहर त्वक्, सिन्कोना। Cinchona Bark (Cinchonœ Cortex.)

अल्कीनाउल् हुम्रा alkínául-humrá–अ० –लाल सिङ्कोना-हिं०। –बर्क सुर्ख–फ़ा०। Red Cinchona bark (Cinchonœ rubrae cortex.)

अल्क़ुमिहुल् अस्वद alqumihul-asyad –अ० शैलम। गन्दुम-दीवाना-फ़ा०। Ergot (Ergota.) देखो—अर्गोट।

अल्कुसा alkusá,
अल्कुसी alkusí
–सं० (१) प्रकाशवेल। (Cuscuta reflexa.)। (२) केवाँच। (Mucuna pruriens)

अल्कुहॉल alcohol

अल्कुहा(हो)ल मुत्लक़ alkuhá-o-l mutlaq –अ० मद्यसार, एलकोहल। Alcohol (Alcohol absolutum.)

अल्केनाइट alkanite-इं०

अल्केनेट alkanet
रतनजोत। (Ratanajota.)

अल्केना टिङ्क्टोरिया alkanna tinctoria, *Tausch.*)-लै० रतनजोत। अखनना-अ०। (Alkanet) फा० इं० २ भा०।

अल्केली alkali-इं० क्षार।

अल्केकनज alkekengi-इं० काकनज, पपोटन। (Solanum vesecareum.)

अल्कोहॉल alcohol-इं० मद्यसार। देखो—एलकोहल।

अल्ख़न्ना alkhanná-अ० रतनजोत। (Alkanet.) फा० इं० २ भा०।

अल्ख़र्बक़ुल् अस्वद alkharbaqul-asvada –अ० कुटकी कटुकी। (Helleborus)

अल्ख़श्बुल् मुर्र alkhashbul-murra-अ० चोब कासिया-फ़ा०। Quassia wood (Quassiœ lignum.)

अल्ख़स्सुज़्ज़ह्म alkhassuzzahm-अ० काहू का दरख़्त, काहू वृक्ष। (Lactuca virosa.)

अल्गुसी algusí
अल्गुसी लता algusí-latá
–सं० अमरवेल, प्रकाशवेल। (Cuscuta reflexa) मेमो०।

अल्गण्डु algandú
अल्गण्डून् algandún
–सं० कीट विशेष जो कान्ने से सात पैदा हो। अथ०। सू० ३१। ३। का० २।

अल्जज़्ज़ार aljazzár–अ० अबु जाफ़र अहमद बिन इब्राहीमुल्जज़्ज़ार क़ैरवाँ का निवासी और हकीम इस्हाक़ बिन सुलेमान यहूदी के शिष्य थे। आपके लिखित ग्रंथ हिदायतुल् गुर्बा और १६

और वैद्यक ग्रंथ यूनानी व लेटिन तथा इबरानी भाषाओं में अनूदित हुए हैं। मिश्र में आपने प्लेग के सम्बन्ध में अत्युत्तम अनुसंधान किए थे। (१) अल्जिज़्ज़ारह् (Algizar)। (२) अल्ग़ाज़िरह्। (Algazirah)

अल्जमरह aljamarah-अ० (Anthrax) देखो—एँन्थ्रैक्स।

अल्जावी aljávi-अ० जावी। देवधूप, लोबान, राजराल। Benzoin (Benzoinum) मे० मे० इं०।

अल्जौज़ुल्मुक़ई aljouzul-muqai-अ० क्रज़ा-राक़ी, क़ातिलुल्कल्ब। कुचिला, विष मुष्टि-हिं०। (Nux vomica)

अल्टर्कम् altercum-लेट अजवाइन ख़ुरासानी, पारसीक यमानी। (Hyocyamus niger) फा० इं० २ भा०।

अल्ट्रा वायलेटरेज़ ultra-violet-rays-इं० प्रकाश जिसकी लहरें हमको दृष्टिगोचर नहीं होतीं। इनके त्वचा पर असर पड़ने से हमारे शरीर में ग्लायोज ४ बनता है। देखो—ग्लायोज।

अल्तमाक़ुन altamáqun—यु० जावित्री। (Mace)

अल्तुअ altaá-अ० जिसके दाँत गिर कर केवल जड़ें शेष रह गई हों।

अल्तुस्त altusta—मीअहे साइलह् प्रसिद्ध। सि(सि)लारस। (Styrax præparatus).

अल्द áalda-अ० (१) ग्रीवा की नाड़ी, ग्रैव बोध सन्तु (Cervical nerve.)। (२) कठोरता। सख्ती। (Hardness)

अल्नग़्ल alnaghla-एक बूटी जो विषखपरा के समान होती है।

अल्नीयून alníyún-यु० रासन। (Inula helenium) इं० हैं० गा०।

अल्प alpa-हिं० वि० [सं०] थोड़ा, किञ्चित्, कुछ कम, न्यून (Little, few)। (२) छोटा। (small, short.)

अल्पम् alpam-मला० (Bragantia wallichii.)

अल्पकः alpakah-सं० पुं०
अल्पक alpaka-हिं० संज्ञा पुं० } यास क्षुप।
जवास का पौधा। दुरालभा। (Alhagi maurorum.) रा०।
—वि० [सं०] थोड़ा, कम।

अल्पकेशिका alpakeshiká
अल्प केशी alpakeshí } -सं० स्त्री०
भूतकेशी, भूतकेश (Corydalis govoniana.)। चामर कषा-यं०। प० मु०। र० मा०। रत्ना०।

अल्पगन्धम् alpa-gandham-सं० क्लीo
अल्पगंध alpa-gandha-हिं० संज्ञा पुं०
(१) रक्त कमल। (The red lotus.) वै० निघ०। (२) रक्त कैरव, रक्त कुमुदनी, लालकूँई।

अल्पगोधूमः alpa-godhúmah-सं० पुं० तृण गोधूम। प० मु०। मद० व० १०। (Trina godhúma.)

अल्प घण्टिका alpa-ghantiká-सं० स्त्री० क्षुद्र शण पुष्पी, लघु शण वृक्ष। मन-हिं०। लघु शण गाछ-बं०। लघुताग-मह०। (Crotalaria juncea.)

अल्पजीवी alpa-jivi-हिं० वि० [सं० अल्पजीविन्] थोड़ा जीने वाला। जिसकी आयु कम हो। अल्पायु।

अल्प ज्वराङ्कुशोरसः alpa-jvaránkushorasah-सं० पुं० पारा, सीसा हिंगुल, गन्धक प्रत्येक १-१ भा०, धतूरबीज १ भा०, त्रिकुटा १२ भा० सबको महीन चूर्ण कर रक्खें। जम्भीरी या अदरख के रस के साथ इसके सेवन करने से हर प्रकार के ज्वरों का नाश होता है। वै० र० ज्वरे।

अल्पचेष्टावन्त alpa-cheshtá-vanta-सं० पुं० (Amphiarthrodial.) वह जिसमें थोड़ी सी गति संभव हो।

अल्पतनुः alpa-tanuh-सं० त्रि० खर्व। वाम०। कुब्जक।

अल्पतर पार्ष्टकी alpatara-párshṭakí -सं० स्त्री० (Smaller occipital) पृष्ट की क्षुद्रतर पेशी।

अल्पदाहः alpa dáhah-सं० पुं०
अल्प दाहेष्ट alpa-dáheshṭa
अल्पदाहेष्टका पथ alpa-dáheshṭaká-patha
खस, उशीर। (Andropogon muricatus.)

अल्पतम प्रौथी alpatam-prouthí-सं० स्त्री० (Gluteus minimus.) नैतम्बिका लघ्वी, नितम्बकी सबसे छोटी पेशी।

अल्प चेष्टायन्त सन्धिः alpa-cheshṭáyanta-sandhih-सं० पुं० (हिं० स्त्री०) (Partially movable joint, amphiarthrosis) वह चल या चेष्टायन्त संधियाँ जिनमें थोड़ी ही गति संभव है जैसे कशेरुकाओं के गात्रों की संधि, विटप संधि अचक और स्कंधास्थि की सन्धि, अचक और वक्षोऽस्थि की संधि आदि। मक़्सिल़ क़लिर, मक़्सिल़ इतंक़ाक़ी-अ०।

अल्पनायिकाचूर्णम् alpa-náyiká-chúrnam -सं० क्लीं० ग्रहणी में प्रयुक्त एक रस विशेष। पञ्च लवण और त्रिकुटा प्रत्येक ३-३ शाण गंधक ८ मा०, पारद ४ मा०, भंग १ पल १ शाण। निर्माण—सर्व प्रथम गंधक और पारद की कज्जली कर फिर शेष औषधियों का चूर्ण डाल कर भली प्रकार घोट कर रखें।

मात्रा—१ शाण।

अनुपान—कांजी।

अल्पनिद्रता alpa-nidratá-सं० स्त्री० पित्त। जन्य निद्राल्पता रोग। (Biliary Insomnia.) वं० नि०।

अल्पनैतवी alpa-naitaví-सं० स्त्री० (Psoas minor.) कटिलम्बिनी लघ्वी।

अल्प पत्रः alpa-patrah-सं० पुं० (-१) चुद्रपत्र तुलसी चुप। (Ocimum.) र० मा० ।-क्लीं० (२) कमल। (The red lotus)

अल्प पत्रकः alpa-patrakah-सं० पुं० गिरिज मधूक वृत्त, पर्वतीय महुआ का पेड़। पहाड़ी मौल गाछ-बं०। Bassia látifolia (the wild var. of-) रत्ना०।

अल्प पत्रिका alpa-patriká-सं० स्त्री० अपामार्ग चुप, लाल चिर्चिटा। (Achyranthus aspera rubrum.) रा० नि० व० ४।

अल्प पत्री alpa-patrí-सं० स्त्री० (१) मिश्रेया, सोया (Fœniculum panmorium)। (२) मुषली-सं०, हिं०। ताल मूली-बं०। (Hypoxis orchioides.) वै० निघ०।

अल्प पद्मम् alpa-padmam-सं० क्लीं० रक्त पद्म, रक्तोत्पल। (The red lotus.) वै० निघ० द्रव्य गु०।

अल्प पर्णिका alpa-parniká
अल्प पर्णी alpa-parni
-सं० स्त्री० मुद्गपर्णी, वनमूँग। मुगानी-बं०। (Phaseolus trilobus.) वै० निघ०।

अल्प पीना alpa-píná-सं० स्त्री० (Small saphenous.) पिंडली की छोटी शिरा।

अल्प पुष्पिका alpa-pushpiká-सं० स्त्री० पीत करवीर, पीतपुष्प करवीर, पीले फूल का कनेर। Nerium odorum (The yellow var. of-) वै० निघ०।

अल्प प्रभाव alpa-prabháva-हिं० पुं० मामूली असर।

अल्प प्रमाणकः alpa-pramánakah -सं० पुं०
अल्प प्रमाणक alpa-[illegible]ka हिं० संज्ञा पुं०
[illegible]

अल्प मक्षिका alpa-makshiká-सं० स्त्री० मक्षिका विशेष, छोटी (मधु) मक्खी। (A little bee.) वै० निघ०।

अल्प मानकः alpa-mánakah-सं० पुं० विश्व गंध तुलसी। (A kind of Basil.) र०।

अल्प मारिषः alpa-márishah-सं० पुं० क्षुद्र मारिष। चलाइ मरसा, छोटा मर्सा, चौलाई -हिं०। काँटा नटिया या चाँपा नटिया-बं०। घोल तांडुलजा-महा०। (Prickly amaranth.) अम०। इसके शाक के गुण-यह लघु, शीतवीर्य, रूक्ष, पित्त नाशक, कफ नाशक, मलमूत्र निस्सारक, रुचिकारक, दीपन और विष नाशक है। भा० पू० १ भा०। देखो—तण्डु-लीय (चौलाई)।

अल्पम् alpam-मल० ब्रेगेण्टिया वैलिचियाई (Bragantia wallichii, *R. Br.*) -ले०।

कद्रजटा या ईश्वरमूल वर्ग

(*N. O. Aristolochiaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—डेकन प्रायद्वीप, पश्चिमी घाट दक्षिण कोंकणसे दक्षिणको ओर। प्रयोगांश—पत्र।

उपयोग—इस वर्ग की बहुशः वनस्पतियों के समान इसको पत्तियों का स्वरस विषाक्त सर्प दंश मुख्यतः कोबरा विष का अगद है। क्रा-बातर्किामिन्नो (यात्रा पृ० ४२६) मालाबार की एक उक्ति का वर्णन करता है। उसका कहना है कि ज्यों ही अल्पम् शरीर में प्रविष्ट होता है त्योंही विष उसे छोड़कर पृथक् हो जाता है। फा० इं०। पश्चिमी किनारे पर यह सर्व श्रेष्ठ सर्पघ्न औषधों में से है। वैट०।

अल्परसा alpa-rasá-सं० स्त्री० हैमवती। रा० नि० व० २३। See-Haimavati.

अल्पवयस्क alpa-vayaska-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अल्पवयस्का] छोटी अवस्था का। थोड़ी उम्र का। कमसिन।

अल्पवर्त्तकः alpa-varttakah-सं० पुं० तित्तिर पक्षी, तीतर। A partridge (Perdix francolinus.) मद० व० १२।

अल्प-शाष्कुली alpa-sháshkulí-सं० स्त्री० (Helicis minor.)

अल्पशुक्र alpa-shukra-सं० वि० अल्प वीर्य।

अल्पशुक्रता alpa-shukratá-सं० स्त्री० पित्त जन्य शुक्राल्पता रोग, वीर्य की कमी। वै० निघ०।

अल्पवर्त्तुला alpa-vartulá-सं० स्त्री० (Teres minor.) वेलना लघ्वी।

अल्पशोफः alpa-shophah-सं० पुं० सर्पादि रोग। वै० निघ०।

अल्पस्फैची alpa-sphaichí—सं० स्त्री० (small sciatic nerve.) गृध्रस्या ह्रस्वा नाड़ी।

अल्पहार्दी alpa-hárdí-सं० स्त्री० हार्दीया ह्रस्वा। (Small cardiac.)

अल्पक्षुपा alpa-kshupá-सं० स्त्री० ह्रस्व, लजालुका। वै० निघ०। सही लजालू। रा० नि०। वृहल्ता।

अल्पाख्यः alpákhyah-सं० पुं० नेत्र रोगान्तर्गत एक प्रकार का विद्रधि विशेष। वा० उ० अ० १६।

अल्पायुः alpáyuh-सं० पुं०, त्रि०

अल्पायु alpáyu-हिं० संज्ञा पुं०

(१) छाग, छागल, बकरा (Goat.)। -वि० [सं०]। थोड़ी आयु वाला। जो थोड़े दिन जिए। जो छोटी अवस्था में मरे। अल्प जीवी, शीघ्र मृत्यु, शीघ्र मरने वाला। (Shortlived, young, of a few years.)

अल्पायुषी alpáyushí-सं० स्त्री० कदुकली, तालो। कोरिफा अम्ब्रेक्युलिफेरा (Corypha umbraculifera, *Linn.*)-ले०। टाली-पॉट (Tali pot) या फैन-पाम (Fan-palm) -इं०। बजर-बट्टू-हिं०। ताली-बं०। कौंड-पाणी,

शेर्दुलम्-ता० । श्री-तलसुन्-ते० । चिने, श्री ताली –फना० । कुद-पाम, ताली-पान-मल० । तालट-मड्डी-को० । ताल-सिं० । पेबेड्ग-ब० ।

ताल वर्ग

(*N. O.-Palmaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान – दक्षिण भारत । प्रयोगांश—पत्र वा मागू ।

उपयोग—उक्त वृक्ष के गूदे से एक भाँति का सागू प्राप्त होता है । लोग इसे ओखली में कूट कर आटा बनाते हैं और इसकी रोटी बनाकर फसल पकनेसे प्रथम इसे अनाजके स्थान में व्यवहार करते हैं । इसका स्वाद श्वेत रोटिका के समान होता है । साधारणतः इसे निर्धन व्यक्ति व्यवहार में लाते हैं । इसकी काँजी भी तैयार की जाती है जो सागू, आरारूट, यव वा जई के समान एवं लगभग उतनी ही पोषक होती है । इं० मे० मे० ।

अल्पास्थि alpásthi–सं० क्ली० परुषक फल, फ(फा)लसा । (Grewia Asiatica.) रा० नि० व० ११ । भा० पू० १ भा० ।

अल्पाहार alpáhára–हिं० पुं० थोड़ा खाना, लघुआहार । (Moderation, Abstinence.)

अल्पिका alpiká–सं० स्त्री० (१) वन मक्षिका जाति, डाँस । (A large mosquito, a gadfly) है० च० ४ । (२) मुद्गपर्णी । (Phaseolus trilobus.) भा० पू० १ भा० ।

अल्पोरसी alpourasi–सं० स्त्री० (Pectoralis minor.) उरस्छदनी लघवी ।

अल्फ़ alfa–करकली, माको–सं० । बजरबट्–हिं० । (Corypha umbraculifora.) देखो—अलगायुगी ।

अल्फ़ alfa–अ० इ(अ)सरन-फ़ुत० । Sooi(a)spasta (Trifolium pratensis.)

अल्फ़क़ alfaq–अ० (१) बाँए हाथ, बाएं हाथ से काम करने वाला । (२) मूर्ख ।

अल्फ़जन alfajan–हिं०
अल्फ़ाज़ेमा alfazema–पु०तंग० } धारोहिं०

उस्तुखुद्दूस–भा० बाज़ा० । Arabian or French lavender (Lavandula stœchas, *Linn.*) फा० इ भा० ।

अल्फा नेफ्थोल alpha-naphthol }
आर्थोनेफ्थोल arthо-naphthol }

यह ब्रिटिश फार्माकोपिया में नहीं परिगणित । देखो—नेफ्थाल (Naphthol) वा विलायती कपूर ।

अल्फ़ियह् alfiyah–फ़ा० ज़कर, आलते ना सुल–अ० । शिश्न, लिंग, उपस्थ । (Penis.)

अल्फ़िल्फ़िलुल् अस्वद् alfilfilul-aswad–अ० श्याम मरिच, स्याह मिर्च, काली मिर्च । Black pepper (Piper nigrum.)

अल्फोज़ून alphozone–इं० यह एक श्वेत रवावत (स्फटिकीय) चूर्ण है जो सक्सीनिक एसिड और हाइड्रोजन पर ऑक्साइड के पारस्परिक क्रिया व प्रतिक्रिया द्वारा प्राप्त होता है ।

स्वाद—सूक्ष्माम्ल और तिक्त जिससे पश्चात् को धातुवत् स्वाद का बोध होता है ।

घुलनशीलता—यह एक भाग १० भाग जल में लय हो जाता है ।

प्रभाव—इसको निर्विषैल कीटाणुघ्न रूप से व्यवहार करते हैं ।

मात्रा—१ रत्ती (घोल रूप में) ।

देखो—हाइड्रोजिनियाई पर ऑक्साइड लाइकर ।

अल्ब alba–यू० ज्वालिका, प्रदर्शन । (१) घोड़े पुष्पों का पक्का होने वाला । (२) एक जंगली औषधि वृक्ष है । यह शिलेट होता है ।

al... lver

पैदा होती है। यह एक भाग २ भाग जल में घुल जाता है। इसके ·२ प्रतिशत का घोल मूत्राशय में और आधे से ३ प्रतिशत का घोल नेत्र रोगों में लाभदायक है।

अल्बान albána-अ० (व० व०) लब्न (ए० व०), दुग्ध (Milk.)।

अल्बूतासुल् कावी albútásulkáví-अ० दाहक पोटाश । Caustic Potash (Potassa caustica.) । देखो—पोटाशियम्।

अल्बूतासुल् किल्सी albútásul kilsí-अ० पोटासा कुमकेल्स। देखो—पोटाशियम्। Viena pasto (Potassa cum calce.)

अल्बूतास्यूम albútásyúma-अ० पोटाशि-अम। देखो—पोटाशियम्। (Potassium.)

अ(ऐ)ल्ब्यूमेन albumen-इं० अण्डलाल, अण्डश्वेतक। (White of egg.)

अल्मक्तरून almaqtarúna-यु० कहरुबा। Succinum (Amber.)

अल्मग्नीसियाउल्खफ़ीफ़ह almaghnisiyá-ul-Khafifah-अ० हलका मग्नेशिया, सूक्ष्म मग्न। (Magnesia levis.) मैग्नेसियम्—देखो।

अल्मग्नीसियाउस्सक़ीलह almaghnisiyá-ussaqilah-अ० भारी मग्नेशिया। (Magnesia ponderosa.) देखो—मैग्नेसियम्।

अल्मनाज़ियहुस्सक़ीलह almanáziyahus-saqilah-अ० भारी मग्नेशिया (Magnesia ponderosa.)। देखो—मैग्नेसियम्।

अल्मनाज़ियहुल्मक्लसह almanáziyah-ul-m..kallasah-अ० हलका मग्नेशिया, सूक्ष्म मग्न। (Magnesia levis.) देखो—मैग्नेसियम्।

अल्मस इण्टेग्रिफोलिआ ulmus integrifolia, *Roxb.*-ले० पपरी, भाम्ना, कुञ्ज, करञ्जी-हिं०। पपरी, सुजेत, प्रजेन-पं०। श्रय-ना०। नल्ली-ते०। रसबीज-क्ना०। ग्यौक सेहूत-बर०।

प्रयोगांश—बीज व पत्र।

उपयोग—तैल, औषध, खाद्य। मेमो०।

अल्मस केम्पेस्ट्रिस ulmus campestris, *Linn.* युम्बोक-ले० । आन, माही, काइ-पं०।

प्रयोगांश—त्वक्, पत्र।

उपयोग—औषध, खाद्य। मेमो०।

अल्मस वालिक्याना ulmus wallichiana, *Planch.*-ले० कैन, मेन, श्रमूराइ, मराली-पं०। मोरेद, चबुन-हिं०। प्रयोगांश—त्वक् तन्तु, पुष्प डंडी, (पुष्प वृन्त)तन्तु और पत्र। उपयोग—तन्तु और खाद्य। मेमो०।

अल्मामून almámúna-अ० जङ्गली पुदीना, पहाड़ी पुदीना, हाशा। (Thymus-Vulgaris.)

अल्मास almása-अ० हीरक, वज्रम्-सं०। हीरा-हिं०। Diamond (Admas.)

अलिमराय almirao-गो० पथरी-बम्ब०। लॉनिआ पाइनेटिफिडा (Launœa pinnatifida, *Cass.*)-ले०। खोखोमा, वनकाहू-सिन्ध०।

मिश्र वा तुलसी वर्ग

(*N. O. Compositæ.*)

उत्पत्ति स्थान—भारतवर्ष के रेतीले किनारे, बंगदेश से लङ्का पर्यन्त, तथा मद्रासमें मालाबार पर्यन्त।

प्रयोगांश—पञ्चांग (सम्पूर्ण पौधा), स्वरस।

वानस्पतिक विवरण—क्षुप (Filiform) तथा भूलुण्ठित होता है। इसमें इतस्ततः पत्र एवं मूल लगे होते हैं। पत्र—एकत्रीभूत, शिखरयुक्त; खण्ड बहुकोणीय वा न्यूनकोणीय; वृन्त (Peduncles) पत्र की अपेक्षा ह्रस्वतर, होता है। इसके शिखर पर छिलकायुक्त पौष्पिक पत्र होते हैं जिनके किनारे

चिह्न युक्त होते हैं। मूल मांसल, ६ से ८ इञ्च लम्बे, नवीन होने पर पीताभश्वेत होते हैं।

उपयोग—गोत्रा में अम्बिरायह नाम से यह अरण्य-कासनी (Taraxacum) की प्रतिनिधि रूप से अधिक व्यवहार में आता है। बम्बई में पथरी नाम से भैंसा (महिषी) को दूध बढ़ानेके लिए दिया जाता है। मुरे उक्त पौधे को सिंध का बनकाहू बतलाते हैं, किन्तु उक्त वर्णन उचित रूप में भसल वा बत्थरा (Launœa nudicaulis, Less.) का है। उनका यह भी कहना है कि बनकाहू स्वरस को स्त्री-खांवा (सिंध में) कहते हैं तथा यह बालकों के लिए मन्द मात्रा की मात्रा में निद्राजनक है और आमवात विषयक व्याधियों में करञ्ज तैल तथा वाइटेक्स ल्युकॉक्ज़िलोन (Vitex leucoxylon) के स्वरस के साथ इसका बहिर प्रयोग होता है। डाइमॉक।

अमिमह,दुल् इन्क़लीज़ी almilhul-inqālizi }
अमिमह,दुलमुरु'ल् मुस्हिल almilhulmurulmushil }
-अ० नमक मुसहिल-फ़ा०। मग्नेशिया-उ०। मलगन्धेत, विरेचक लवण। (Magnesii sulphas.)

अल्मीअतुस्साइलह् alliātussāilah-अ० मीअहे साइलह-फ़ा०। सिल्हक, शिलारस। (Styrax præparatus)

अल्यह alyah-अ०(१) नितम्ब, चूतड़, चूतड़ का मांस। तरि, नयंह, अल्यतैन। (२) बड़े चूतड़ों वाली स्त्री। इसका बहुवचन "अलाया" है। नेट (Nate), बटक (Buttock) -इं०।

अल्याफ़ alyáfa-अ० (अ० व०), लीफ़ (ए० व०) तन्तु, रेशे, शरीर तन्तु। फ़ाइबर्स (Fibers.)-इं०।

अल्याफ़ अज़्लियह alyáfa-aazliyah-अ० मांस तन्तु, मांस धातु। मस्क्युलर फ़ाइबर्ज़ (Muscular fibers.)-इं०।

अल्यास्मीनुल् अस्फ़र alyásminul-asfara -अ० स्वर्ण जाती, पीली चमेली। (Gelsemium nitidum.)

अल्युमिनियम् aluminium-इं० फटकिम्। देखो-एल्युमिनियम।

अल्ल allá-हिं० पु० = बिछुआ। (Girardinia heterophylla)

अल्लकः allakah-सं० पु० (१) कङ्कोल (कंकोल) विशेष, शीतल चीनी। (The fruit of Cocculus Indicus.) कनफल-मं०। (२) धान्यक, धनियाँ। (Coriander) धने-मं०। वै० निघ०।

अल्लका allaká-सं० स्त्री० धान्यक, धनियाँ। धने-बं०। (Coriandrum sativum.) वै० निघ०।

अल्लबत्सलता alla-batsa-latá-ते० पोय -हिं०। कुकती पुई-बं०। (Basella cordifolia, Lam.) मेमो०।

अल्लम allam-ते० अदरख, सोंठ। (Zingiber officinalis.) देखो-आर्द्रक।

अल्लमण्डा कैथार्टिका allamanda cathartica-ले० पीत करवीर, पीला कनेर-हिं०। मेमो०।

अल्लाहलाह् allahláh-अ० सूरिञ्जान। (Colchicum.)

अल्ला allá-सं० स्त्री० (१) माता, हृमि। (२) धान्यक, धनियाँ। धने-बं०। (Coriandrum sativum.) -पुं० (१) कचेटा, अगलावाल, किंगली-हिं०। (Mimosa rubicaulis, Lam.) मेमो०।

अल्लाई allái-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अ‍ालर्क] चौपायों के गले की एक बीमारी। हटि-यार।

अल्लाप alláp-गु० अयापना-हिं०, बं०, मद०। (Eupatorium ayapana, Vent.) फा० इं० २ भा०।

अल्लामह् aallámah-अ० महान् विद्वान्।

अल्लिस,या allisyá-अ० ग्रयन्। देखो-लिथियम् (Lithium).

अल्ली alli-मह० मंगनवेल । यदर्हा गर्जन-ते० रंगी-मल०। (Dalbergia volubilis.)

शिम्बी या वब्बूर वर्ग

(N. O. Leguminosæ)

उत्पत्ति-स्थान—हिमालय के निम्न भाग, ड्यूं से-पूरब, मध्य और दक्षिण भारत।

प्रभाव तथा उपयोग—इसके पत्ते का रस कंठव्रत में गंडूष रूप से व्यवहार में आता है। मुखाक में इसकी जड़ का रस जीरा और शर्करा के साथ प्रयोग किया जाता है। इं० मे० मे०।

अल्ली alli-ते० (१) प्रजन, कर्ण-पस्य०। कमाउ पेही-ता०। (Memecylon edule, Roxb.)। प्रयोगांश-पुष्प, पत्र व फल। उपयोग-रंग, औषध और खाद्य। मेमो०। (२) -ता० नइ बिल.। ; स्था-तोक-न०। भ्रामुन्द, रूवा, चान्दल, चाँदकुड़ा, चार वास-माडा-बम्ब०। पुेविरएरिस टॉक्सिकेरिया (Antiaris toxicaria. Leesch.) प्रयोगांश-राल, तन्तु, बीज। उपयोग—निर्यास, तन्तु और औषध। मेमो०।

अल्लीआन alliána-हिं० कचूर। (Cornus macrophylla.) मेमो०।

अल्लीकाड allikáḍ-ते० निलोफर। (Nymphæa lotus.) इं० मे० मे०।

अल्लीचेट्टु allichettu-ते० किड़गली-हिं०। अजनी सं०। Iron-wood tree (Memecylon edule.). इं० मे० मे०।

अल्लीचेड्डु allicheddu-ते०, अञ्जन, कोलपदी -मह०। (Memecylon edule, Roxb.) फा० इं० २भा०।

अल्लीतामर alli-támar-ते० }
अल्लीतामरई alli-támaraí-ता० } निलोफर।
(Nymphæa lotus). इं० मे० मे०।

अल्ली पल्ली alli-pallí-प० साउन्सपाउर, सेन्स-रपाल, सतजर्र-प०। ...पेरेगस, फिलिसिनस (Asparágus filicinus, Ham.)-ले०।

शतमूली वर्ग

(N. O. Asparagaceæ)

उत्पत्ति स्थान--पंजाब, हिमालय, २००० फो०

उपयोग—इसकी जड़ पथ्य एवं मज्जाचक प्रयोग की जाती है। कनावार में इसकी टहनी मसूरिका या शीतला के रोगी के हाथ में रोग-मुक्ति हेतु दी जाती है। स्टयुवट।

अल्लीपा allipá-गु० अयापना। (Eupatorium ayapana) इं० मे० मे०।

अल्लीफूल alliphúla-द० निलोफर। (Nymphaea lotus.) इं० मे० मे०।

अल्लीबीज allibija-फना०, खान द० पन्द्रसुर। (Lepidium sativum.) इं० मे० मे०।

अल्लु allu-सं० क्ली० आलूक, आलुबोखारा। (Prunus Communis)। म० द० व० १।

अल्लुपु allupu-ते० मज्जनी-हिं०। गुच्छ-सं०। (Andropogon nardus) इं० मे० मे०।

अल्वान alvána-अ० (ब० व०), लौन (ए० व०), रंग, वर्ण। (Colour).

अल्शी विरई alshí-virai-ता० अलसी, अतसी, तीसी। Linseed (Linum usitatissimum.)

अल्स alsa-अ० उन्मत्त, पागल, दीवाना, ख़व्ती, बावला, मज्नून। (Insane, frantic).

अल्सग alsagha }
अल्कन alkan } -अ० तोतला, तुतला कर
बोलने वाला। वह जो "श" को 'स' और "र" को "ल" कहे। लिस्पर (Lisper)-इं०।

अल्शोनीज़ alshíníza }
अल्शूनीज़ alshúníza } -अ० काला-जीरा, मंगरेल।
(Nigella sativa, Sibthorp).

अल्सतून alsatúna-रू० अफ़सन्तीन। (Absinthium).

अल्सन alsan-यु० एक वनस्पति है।

अल्सन्दा alsandá-ते० सेम-हिं०। शिम्बी-सं०। (Dolichos lablab, Linn.)

अल्संध alsandha-हिं० मोठ। (Vetches, lentils.)

अल्सा alsá–फ़ा० (१) मरोड़फली, आवर्तनी (Helicteras isora)। (२) ख़िरमी (Khitmi)। (३) अजवाइन। Carum Copticum

अल्सी का तेल alsi-ká-tela-हिं० पुं० अलसी तैल, तीसीका तेल, अलसी तैल। (Linseed oil).

अल्हम्ज़ुल जावी alhamzul-jávi–अ० तेज़ाब लुबान, लोबान का फूल, लोबानिकाम्ल। (Acidumi benzoicum).

अल्हलो वल्मुर्र alhalo-valmurra–अ० काकमाची–सं०। मकोय–हिं०। (Dulcamára)

अल्हाज alhája–फ़ा० य(ज)वासा –हिं०। दुरालभा, गिरिकर्णिका, यवास–सं०। (Alhagi maurorum, Desv.) मेमो०।

अलहब्बातुल खिज़्रा al-habbátul-khizrá
अलहब्बतिस्सौदा al-habbatissoudá
–अ० कालाजीरा, मँगरैल–हिं०, बं०। कलौंजी –बम्ब०। (Nigella sativa, Sibthorp.)

अवंश avansha–हिं० वि० [सं०] वंशहीन, निपूता, अपुत्र, निःसंतान।

अव ava–उप० [सं०] एक उपसर्ग है। यह जिस शब्द में लगता है उसमें निम्न लिखित अर्थों की योजना करता है—(१) निश्चय; जैसे—अवधारण। (२) अनादर; जैसे—अवज्ञा, अवमान। (३) ईषत्, न्यूनता वा कमी; जैसे—अवहुनन। अवघात। (४) निचाई वा गहराई; जैसे—अवतार। अवक्षेप। (५) व्याप्ति; जैसे—अवकाश। अवगाहन।

अव्य० [सं० अपि, प्रा० अवि] और।

अवकरः avakarah–सं० पुं० सम्मार्जनादि-निक्षिप्त धूल्यादि।

पर्याय—सङ्करः (अ०), अवस्करः, (अटी०); सङ्कारः (शब्द र०)।

अवकर्षण avakarshana–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] उद्धार, निष्कर्षण, बाहर खींचना। बलपूर्वक किसी पदार्थ को एक स्थान से स्थान में ले जाना। खींच ले जाना।

अवकादन् avakádan–काई (Moss) (२) फंगस। अथर्व०। सू० ३७। १० काo ४।

अवकाश avakásh–हिं० संज्ञा पुं० [सं० (१) अवसर, समय, सुभीता। (opportunity,) विश्रामकाल, खाली वक़्त, छुट्टी, फुर्सत (Leisure)। (३) स्थान, जगह (space,)। (४) आकाश, अंतरिक्ष शून्य स्थान। (५) दूरी, अंतर। फासिला।

अवकिरण avakirana–हिं० संज्ञा पुं० [सं० [वि० अवकीर्ण, अवकृष्ट] बिखेरना। फैलाना। छितराना।

अवकीर्ण avakírna–हिं० वि० [सं०] (१) फैलाया हुआ। छितराया हुआ। बिखेरा हुआ। (२) ध्वस्त। नष्ट किया हुआ। नष्ट। (३) चूर्ण, चूर चूर किया हुआ।

संज्ञा पुं० ब्रह्मचर्य का नाश। ब्रह्मचारी का स्त्री-संसर्ग द्वारा व्रतभंग।

अवकीर्ण avakírna–हिं० वि० [सं०] वह ब्रह्मचारी जिसका ब्रह्मचर्य व्रत भंग होगया हो। नष्ट-ब्रह्मचर्य।

अवकुञ्चन avakunchan–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] समेटना। बटोरना। टेढ़ा करना।

अवकुण्ठन avakunthan–हिं० पुं० सारा परित्याग, भीरु होना।

अवकुन्थनम् avakunthanam–सं० क्ली० आलिंगन।

अवकुशः avakushah–सं० पुं० गोलाङ्गूल वानर। यह पर्णमृग की जाति से है। सु० सू० ४६ अ०।

अवकूलनम् avakúlanam–सं० क्ली० अग्नि द्वारा गरम करना, आंच पर गरमाना। अ० १० द्वारा गरम करना, आग पर गरमाना। अ० १० प्रतिसा–चि०। "अङ्गारेष्ववकूलयेद।" सु० प्रतिसा–चि०।

अवकृष्ट avakrishta–हिं० वि० [सं०] (१) दूर किया हुआ। निकाला हुआ। (२) निम्न। नीचे उतारा हुआ।

अवकेशी avakeshi-सं॰ त्रि॰ (१) अफल वृक्ष (Fruitless tree) हे॰ च॰। (२) बांझ, वन्ध्या (Sterile)।

अवकृत avakrita-सं॰ पुं॰ मद्य भेद। वा॰ उ॰ अ॰ २६।

अवक्रः avakrah-सं॰पुं॰ सरल वृक्ष, चीड़, धूप सरल। (Pinus longifolia.) सरल गाछ-बं॰।

अवक्रांति avakranti-हिं॰ संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] (१) अधोगमन। उतार। गिराव। (२) झुकाव।

अवक्लिन्न avaklinna-हिं॰ वि॰ [सं॰] आर्द्र, गीला, तर, भीगा हुआ।

अवक्वाथ avakvatha-हिं॰ पुं॰ मजीठ का क्वाथ, अपक क्वाथ।

अवखात avakhata-हिं॰ संज्ञा पुं॰ [सं॰] गहरा गड्ढा।

अवगण्डः avagandah-सं॰ पुं॰ गण्ड देशर मध्य। वयेस फोंड़ा-बं॰। मुंहकुली-महा॰। त्रिका॰।

अवगथः avagathah-सं॰ पुं॰ प्रातः स्नान। (Morning bath.)

अवगाढ़ avagarha-हिं॰ वि॰ [सं॰ (१) निविड़। छिपा हुआ। (२) प्रविष्ट। डूबा हुआ। निमग्न।

अवगाढः avagarhah }
अवघृष्टः avaghrishtah } -सं॰पुं॰ विघृष्ट मद्य। वा॰ उ॰ अ॰ २६।

अवगाहः avagahah-सं॰ त्रि॰, पुं॰
अवगाह avagaha-हिं॰ वि॰ [सं॰ अवगाध] अथाह, बहुत गहरा, अत्यन्त गम्भीर।

संज्ञा पुं॰ गहरा स्थान। स्नानगृह। गुसल खाना। स्नानागार।

संज्ञा पुं॰ [सं॰](१)भीतर प्रवेश। हलना। (२) जल में हल कर स्नान करना। निमज्जन। (Bathing, ablution)

अवगाहनम् avagahanam-सं॰ क्ली॰ }
अवगाहन avagahana-हिं॰ संज्ञा पुं॰ }
[वि॰ अवगाहित] स्नान करण, नहाना, पानी में हलकर स्नान करना, मज्जनपूर्वक स्नान, निमज्जन, डुबकी लगाना।

संस्कृत पर्याय—अवगाहः, वगाहः, निमज्जनं, शिरः स्नानम्, अभ्यगि मज्जन (हे॰)। (Bathing, ablution.)। (२) मथन। विलोडन। (३) खोज। पैठ।

अवगाह(न)स्वेदः avagaha-(na)svedah-सं॰ पुं॰ अवगाहन द्वारा स्वेद कर्म करना।

विधि—द्रवस्वेदान्तर्गत कहे हुए द्रव्यों को एक कुंडमें अथवा एक बड़े पात्रमें भरकर रोगीको उस में बैठादें। यह रोगी ऐसा हो जिसके सर्वांग में वात वेदना होती हो अथवा अर्श और मूत्रकृच्छ्रादि रोगों में इस तरह किया जाता है। बर्तन कोई हो पर इतना बड़ा होना चाहिए जिसमें रोगी कंठ तक बैठ जाए। खाट के नीचे एक गढ़ा खोदकर उसमें वातनाशक लकड़ी उपले भरकर आग लगाकर निर्धूम अंगार कर लिए जायें, फिर रोगी को उस खाट पर शयन कराया जाए। इसका नाम कूप स्वेद है। इसी तरह कुटी स्वेदादि के लक्षण अन्य ग्रंथों से जानना चाहिए। वा॰ सू॰ १७ अ॰।

अवगाहना avagahana-हिं॰ क्रि॰ अ॰ [सं॰ अवगाहन] (१) हलकर नहाना। निमज्जन करना। (२) डूबना। पैठना। धँसना। मग्न होना।

अवगाहित avagahita-हिं॰ वि॰ [सं॰] नहाया हुआ।

अवगीर्णः avagirnah-सं॰ पुं॰ अपान द्वारा निकला हुआ द्रव्य।

अवगुण्ठनम् avagunthanam-सं॰ क्ली॰ }
अवगुंठन avagunthana-हिं॰ संज्ञा पुं॰ }
[वि॰ अवगुंठित] योषित शिरः प्रावरण, स्त्री मुखाच्छादन, घूँघट, बुर्क़ा (A veil.)। (२) ढँकना। छिपाना। (३) पर्दा।

अवगुण्ठितम् avagunthitam-सं॰ क्ली॰ }
अवगुंठित avagunthita-हिं॰ वि॰ }

चूर्णित, चूर्ण किया हुआ। (Powdered.) त्रिका०। (२) ढँका हुआ। छिपा हुआ।

अवगुण avaguna-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दोष। दूषण। ऐब।

अवगुंठन avagunthana-हिं० संज्ञा पुं० देखो—अवगुण्ठनम्।

अवगुंठनवती avagunthanavati—हिं० वि० स्त्री० [सं०] घूँघटवाली।

अवगुंठिका avagunthika-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) घूँघट। (२) जवनिका। पर्दा। (३) चिक।

अवगुंठित avagunthita-हिं० वि० [सं०] ढँका हुआ। छिपा हुआ। देखो—अवगुण्ठितम्।

अवगुद avaguda-ते०
अवगुदे avagude-कना०
अवगुदे हण्णु avagude-hannu-कना० } रक्त (लाल) इन्द्रायन, महाकाल-हिं०। Trichosanthes palmata, *Roxb.*। स० फा० इं०।

अवगुफन avaguphana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] गूँथन। गुहन। ग्रंथन।

अवगुंफित avagumphita-हिं० वि० [सं०] गूथा हुआ। गुहा हुआ।

अवगूहन avagúhana-सं० पुं० आलिंगन, आश्लेष, प्रेम से परस्पर अंग स्पर्श, करना। प्रेम से मिलना।

अवग्रहः avagrahah-सं० पुं०
अवग्रह avagraha-हिं० संज्ञा पुं० } (१) गज ललाट देश। हाथीका ललाट। हाथी का मस्तक। हस्ति मस्तक। हारा०। (२) अनावृष्टि। वर्षा का अभाव। (३) रुकावट। अटकाव। बाधा। (४) प्रकृति। स्वभाव। (५) गजसमूह। गज यूथ। अनुग्रह का उलटा।

अवग्राहः avagráhah-सं० पुं० अवहारक, ग्राह।

अवघातः avaghátah-सं० पुं०
अवघात avaghata-हिं० संज्ञा पुं० } (१) आघात विशेष, अपघात, ताडन, घन प्रहार, चोट। (२) तण्डुलादि कण्डन (कूँड़ना, कूटना)। हिं०। (३) अपमृत्यु।

अवचारः avachárah-सं० पुं० प्रयोग, सहायता।

अवचूर्णन ava-chúrnana-सं० क्ली० औषध के बारीक चूर्ण को व्रण आदि पर बुरकना। अवचूर्णन, भुरा(ला)करना।

अवचूर्णम् avachúrnam-सं० क्ली० स्थूल चूर्ण, मोटा चूर्ण (Coarse powder)। वह शुष्क बारीक पिसी हुई औषध जिसको व्रण आदि पर छिड़का जाए (Dusting powder.)। म्रूर, कमूम, नसूर-अ०। धूरा-हिं०, उ०।

अवचूर्णितः avachúrnitah-सं० त्रि० चूर्णित, चूर्ण किया हुआ। पाउडर्ड (Powdered.)-इं०।

पर्याय—प्रध्वंसः, अपध्वस्तः। अ० टी०।

अवचूलकम् avachúlakam-सं० क्ली० चामर। (See-chámara.) त्रि०।

अवच्छद avachchhada-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] ढकना। सरपोश।

अवच्छिन्न avachchhinna—हिं० वि० [सं०] सीमाबद्ध। अवधि सहित। जिसका किसी अवच्छेदक पदार्थ से अवच्छेद किया गया हो। अलग किया हुआ। पृथक्।

अवच्छेद avachchheda-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवच्छेद्य, अवच्छिन्न] (१) अलगाव। भेद। (२) सीमा। (३) परिच्छेद। विभाग।

अवच्छेदक avachchhedaka—हिं० वि० [सं०] (१) भेदक। भेदकारी। अलग करने वाला। (२) हद बाँधने वाला।

अवच्छेदकता avachchhedakata—हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) अवच्छेद करने का भाव। पृथक् करने का धर्म। अलग करने का धर्म। (२) हद या सीमा बाँधने का भाव। परिमिति।

अवच्छेद्य avachchhedya-हिं० वि० [सं०] अलगाने के योग्य।

अवच्छंग avachhanga-हिं० संज्ञा पुं० देखो-उछंग।

अवज aavaja-अ० वक्र या टेढ़ा होना। कुकुड़ (Crooked.)-इं०।

अवञ्चकः avanchakah-सं० पुं० अक्र रोगी, धन्वालु रोगी, वैधरद विश्राम रखने वाला रोगी। बं० निघ०।

अवटना avatana-हिं० क्रि० स० [सं० आवर्त्तन, प्रा० आवट्टन] (१) मथना। आलोड़न करना। (२) किसी द्रव पदार्थ को आग पर रखकर चलाकर गाढ़ा करना।

अवटः,-टी avatah,-ti-सं० पुं० (१) नाड़ी व्रण। नासूर। (nadivrana-)। (२) कूप, कुआँ (Well.) मे०। (३) छिद्र। (A hole. a perforation.)

अवट avata-हिं० संज्ञा पुं० (१) चौटाकर, खोलाकर। (२) गर्त, गड्ढा। गड्ढा। कुंड। (३) गले के नीचे कंधे और काँख आदि का गड्ढा।

अवटीटः avatitah-सं० त्रि०
अवटीट avatita-हिं० वि०
नतनासिक, चिपटी नाकवाला। खान्दा-बं०। आम०।
पर्याय—अवनाटः, अवभ्रटः। अ०।

अवटुः avatuh-सं० स्त्री० (१) ग्रीवा पश्चाद्भाग, ग्रीवाके पीछे भाग, घुटी, मन्या। (Nape of the neck.) रत्ना०। रा० नि० व० १०। -पुं० (२) वृक्ष विशेष (A tree.)। हे०। (३) रन्ध्र (A hole.)। (४) कूप। (A well.) हे०।

अवटुका ग्रंथि avatuka-granthi-सं० स्त्री० (Thyroid gland) चुल्लिका ग्रन्थि।

अवडः avadah-सं० पुं० मन्या पृष्ठ भाग, गर्दन के पीछे का भाग। (Nape of the neck.) वै० निघ०।

अवतमसम् avatamasam-सं० क्ली० अल्पान्धकार। (Slight darkness.) अम०।

अवतानम् avatanam-सं० क्ली० चन्द्रातप, चाँदनी (Moon-light)। (२) टखना। (Ankle.)

अवतापः avatapah-सं० पुं० अजादि ज्वर। गज० वै०।

अवतारणम् avataranam-सं० क्ली० भूतादि ग्रह। (२) वस्त्राञ्चल (The end or hem of a garment.) मे० णपञ्चक। (३) उतारना। नीचे लाना।

अवतारणिका avataranika-सं० स्त्री० नौका। (A boat.)

अवतोका,-दा avatoka,-da-सं० स्त्री० वह गाय जिसका गर्भस्राव (गर्भपात) हो चुका हो। हला०।

अवतोकाम् avatokam सं० क्ली० पतित गर्भ-वाली। वह जिसका गर्भ गिर गया हो। अथर्व। सू० ६। ६। का० ८।

अवतंसः avatansah-सं० पुं०, क्ली०
अवतंस avatansa-हिं० संज्ञा पुं०
[वि० अवतंसित] कर्णभूषण कर्णालंकार, कर्णाभरण, कर्णफूल, कर्णपूर, कनफूल (An ornament of the ear.)। (२) मुरकी, बाली। (३) माला। हार। (४) भूषण।

अवथोली avatholi-मल० एक प्रकार के वृक्ष की छाल जो अनिश्चित है। फा० इं० ३ भा०।

अवदन्तः avadantah-सं० पुं० बालक, सुगन्धबाला। बाला-बं०। (Pavonia odorata) बै० निघ०।

अवदलनम् avadalanam-सं० क्ली० मर्दन क्रिया, गात्र मर्दन, देह का मलना। (Rubbing, massage.) देखो—मर्दन।

अवदाघ avadagha-सं० गर्मी, उष्णता। (Heat.)

अवदातः avadatah-सं० पुं०
अवदात avadata-हिं० वि०
(१) शुक्र वर्ण का,

गौर (White.)। (२) पीत वर्ण का, पीला (Yellow)। अ०। (३) शुभ्र, उज्वल। श्वेत। (४) शुद्ध। स्वच्छ। विमल। निर्मल।

अवदानम् avadánam--सं० क्लीo
अवदान avadána--हिं० संज्ञा पुं० — (१) उशीर। खस। गाँडरे की जड़। वीरण मूल। (Andropogon muricatus.) अ० टी०। (२) खनित्र, अस्त्र विशेष, कुदाल (A hoe or a kind of spade, a pick axe or mattock.) (४) खंडन। तोड़ना। (५) शक्ति, बल।

अवदान्तः avadántah-सं० पुं० शिग्रु, सहिजन। (Hyperanthera moringa.) वै० निघ०।

अवदारक avadáraka -हिं० वि० [सं०] विदारण करने वाला। विभाग करने वाला। संज्ञा पुं० [सं०] मिट्टी खोदने के लिए लोहे का एक डंडा। खंता। रंभा।

अवदारणम् avadáranam--सं० क्लीo
अवदारण avadárana--हिं० संज्ञा पुं० — (१) मिट्टी खोदने का औज़ार। खनित्र। कुदार (अ)। खंता। (A hoe or kind of spade) (२) विदारण करना। विभाग करना। तोड़ना। फोड़ना।

अवदारित avadárita--हिं० वि० [सं०] विदारण किया हुआ। विदीर्ण। दूटा हुआ।

अवदाहेष्टकापथम् avadáheshtaká-patham
अवदाहेष्टम avadáheshtam
--सं० क्ली० वीरणमूल, खस। (Andropogon muricatus.) अ० टी० भ०।

अवदाहं-कम् avadáham,-kam-सं० क्ली० (१)लामज्जक तृण। (Andropogon lanigor.) भा० पू० १ व०। (२)वीरणमूल, उशीर, खस। गन्धवेना-सं०। चिवला, वाला -मह०। (Andropogon muricatus.) वै० निघ०।

अवदीर्णम् avadírnam--सं० त्रि० (१) द्रवीभूत घृतादि। (२) फटा हुआ, विदारित।

अवदोहः avadohah-सं० पुं०
अवदोह avadoha-हिं० संज्ञा पुं० — (१) दूध। दुग्ध। (Milk) त्रिका०। (२) दूध दुहना। दोहन।

अवदंशः avadanshah-सं० पुं०
अवदंस avadansa-हिं० संज्ञा पुं० — (१) सुरापान में रुचिजनक भक्ष्य द्रव्य, मद्यपान के समय जो कबाब, बड़े आदि खाए जाते हैं। गज़क। चाट। चटनी आदि। उत्तेजक भक्ष्य। हला०। (२) शिग्रु अर्थात् सहिजन वृक्ष (Moringa pterigosperma.)। (३) कृष्ण शिग्रु (काला सहिजन)। काली सजिना गाछ-बं०। Moringa pterigosperma (The black var. of-) वै० निघ०।

अवदंशक्षयः avadansha-kshayah-सं० पुं० काला सहिजन। कृष्ण शिग्रु।

अवद्योतन् avadyotan-सं० पुं० प्रकाश। (Light.)

अवध-धतूरा avadha-dhatúrá-हिं० पुं० अवध में उत्पन्न होने वाला प्रसिद्ध धतूरा।

अवधान avadhána-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) मन का योग। चित्त का लगाव। मनोयोग। (२) चित्त की वृत्ति का निरोध करके उसे एक ओर लगाना। समाधि। (३) ध्यान। सावधानी। चौकसी।
संज्ञा पुं० [सं० आधान] गर्भ। गर्भाशय। पेट।

अवधान तन्त्री avadhána-tantrí-सं० स्त्री० (Auditory or acoustic nerve.) श्रावणीनाड़ी।

अवधारण avadhárana- सं० पुं० [वि० अवधारित, अवधारणीय] निश्चय, विचार पूर्वक निर्धारण करना।

अवधि avadhi- हिं० पुं० पर्यन्त, सीमा से तक लौं।

अवध्वंसः avadhvansah-सं० पुं०
अवध्वंस avadhvansa-हिं० संज्ञा पुं०
[वि० अवध्वस्त] (१) अवचूर्णन, चूर्ण करना (To powder, Powdering.) मे०। (२) चूर्णन। चूर चूर करना। नाश। (३) परित्याग। छोड़ना। (४) देह को जलाकर नष्ट करने वाला। अथर्व०। सू० २२। ३। का० ५।

अवध्वस्तः avadhvastah-सं० त्रि० अवचूर्णित, चूर्ण किया हुआ। (Powdered).

अवनत कर्णीया avanata-karniyá-सं० स्त्री० (Obliquus auriculae)। अवनत्कर्णीया पेशी।

अवनत पादांगुष्ठाकर्षणी avanata-pádángushthákarshaṇi-सं०स्त्री० (Adductor hallucis obliquus.) पादांगुष्ठ अंतरनायिनी पेशी।

अवनम् avanam-सं० क्लीं०
अवन avana-हिं० संज्ञा पुं०
(१) प्रीणन। तृप्तिकरण। प्रसन्न करना। (Satisfying.) अ०। (२) प्रीति।
[सं० अवनि] ज़मीन। भूमि।

अवनत मान्दिरः avanata-mándirah-सं० पुं० (Oblique popliteal.)

अवनम्र avanamra-सं० झुका हुआ। (Bent).

अवनत-सूत्रम् avanata-sútram-सं० क्लीं० (Oblique cord.)। झुका हुआ या वक्र तन्तु।

अवनताङ्गुष्ठाकर्षणी avanatángushthákarshaṇi-सं० स्त्री० (Adductor pollicis obliquus.)।

अवनति avanati-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] झुकाव, झुकाना।

अवनत avanata-हिं० वि० [सं०] (१) नीचा, झुका हुआ। (oblique.)। (२) गिरा हुआ। पतित। अधोगत।

अवनाटः avanáṭah-सं० त्रि० नतनासिका, झुकी नाक वाला, चद्दनासा पुरु। अम०।

अवनि avani
अवनी avani
-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०]
पृथ्वी, ज़मीन, अवनितल।

अवना avaná
अवनी avaní
-सं० स्त्री० (१) त्रायमाणा (See-Tráyamáná.) रा० नि० व० ५।

अवनीसारा avanisárá-सं० स्त्री० (Musa sapientum.) कदली, केला। वै० निघ०।

अवनेजन avanojana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] धोना, प्रक्षालन।

अवन्ति(न्ती) सोमम् avanti,-nti,-somam-सं० क्लीं० काँजी, काञ्जिक। प० मु०। हारा०। रा० नि० व० १५ (See-Kánjika)

अवपतन avapatana-सं० क्लीं० ऊपर से आना, गिराव, नीचे गिरना। वा० सू० १२ अ०।

अवपाटिका avapáṭiká-सं० स्त्री० क्षुद्र रोगान्तर्गत शूक रोग। लक्षण—लिंग के चर्म को बहुत मलने अथवा दब जाने या वीर्य का वेग रुक जाने आदि कारणोंसे यदि लिंग के ऊपर का चर्म फट जाए तो उसे "अवपाटिका" कहते हैं। यथा—'यस्यावपाट्यते चर्मतांविद्यादवपाटिकाम्'। सु० नि० अ० १३। यह एक रोग है जो लघुछिद्र योनिवाली और रजस्वला-धर्म रहित स्त्री से मैथुन करने से, हस्त-क्रिया से, लिंगेन्द्रिय के बन्द मुँह को बलात्कार खोलने से अथवा निकलते हुए वीर्य को रोकने से हो जाता है। इस रोग में लिंग को आच्छादित करने वाला चमड़ा प्रायः फट जाता है। मा० नि०।

अवपात avapáta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) गिराव। पतन। अधःपतन। (२) गड्ढा। कुण्ड।

अवपीड avapíḍa-हिं० पुं०
अवपीडः avapíḍah-सं० पुं०
पाँच प्रकार

के नस्य कर्मों में से एक । शोधन और स्तम्भन भेद से यह दो प्रकार का होता है। निचोड़ कर अर्थात् रस निकाल कर प्रयुक्त होने के कारण अथवा रोगी के नकुओं में टपकाए जाने के कारण इसको अवपीड कहते हैं । यथा—"यनपीड्य दीयते यस्मात् अवपीडस्ततः स्मृतः अथवा अवपीड्यते यस्मात् स अवपीड ।" तीक्ष्ण औषधियों का कल्क कर उसे निचोड़ कर रस निकालें । इसे अवपीड कहते हैं। यह गले की बीमारियोंमें प्रशस्त है। प० प्र० ४ ख० । जो छींक लाने वाली औषध कल्कादि से बनाई जाती है परन्तु उसमें स्नेह नहीं मिलाया जाता है, उसे अवपीड़ वा शिरोविरेचन कहते हैं । यथा—"कल्काद्यैरवपीडस्तु तीक्ष्णैर्मूर्धविरेचनः ।" वा० सू० २६ अ०। गले के रोग, सन्निपात, निद्रा, विषमज्वर, मनोविकार (मद, मूर्च्छा, अपस्मार, अन्यास, उन्माद और भूतोन्माद आदि)और कृमि अर्थात् नाक में कीड़े पड़जाने (वा कृमि जन्य रोगों) में अवपीडन,नस्य का प्रयोग किया जाता है। मै० निघ०.नस्य चि०। विशेष देखो—नस्य ।

अवपीडन avapidana-हिं० पुं० } अव-
अवपीडनम् avapidanam-सं० क्लो० } पीड नामक नस्य विशेष ।

अववाहुक avabāhuka-हिं० संज्ञा पुं० } एक
अववाहुकः avabāhukah-सं० पुं० } रोग जिससे हाथ की गति रुक जाती है। भुज स्तंभ । देखो-अपबाहुकः (Apabāhukah)

अवभासिका,-नी avabhāsikā,-nī-सं० स्त्री० सात त्वचाओं में से एक त्वचा विशेष । यह प्रथम अर्थात् सबसे ऊपर (शरीर के बाहर) की त्वचा है और समस्त वर्णों (कृष्णता, गौरतादि) को प्रकाश करती है तथा वहीं पाँच प्रकार की पाँच भौतिक छाया तथा चकार के ग्रहण से प्रभा को प्रकाश करती है। यह त्वचा व्रीहि अर्थात् जौ के (जो बीस भाग हैं उनमें)अठारह भाग के समान मोटी है यही सीप और पद्मकण्टक नामक चर्म रोगों के होने का स्थान है अर्थात् सीप, पद्मकण्टक इसी ऊपर की त्वचा में होते हैं। सु० शा० ४ अ० ।

अवभ्रटः avabhraṭah-सं० त्रि० नतनासिका वाला, चिकिन । (Flat-nosed.) अम० ।

अवम् avam-हिं० वि० [सं०] (१) नीच, निंदित (Low, vile, inferior.) (२) अधम । अंतिम । (३) रक्षक ।

[illegible]

... एक रोग जिसमें लिंग में बड़ी बड़ी और फुंसियाँ हो जाती हैं ।

लक्षण-जिसमें बड़ी बड़ी बहुत सी फुंसियाँ से फटी सी हो जाएँ उसे "अवमंथ" कहते यह रोग कफ और रक्त के विकार से होता वेदना तथा रोम हर्ष करने वाला होता सु० नि० १४ अ० ।

(२) कर्णपाली रोग भेद । सु० सू० अ० ।

अवमनीय avamaniya-हिं० वि० जो, न हो अथवा जो वमन को रोके ।

अवमर्द्दः,-नम् avamarddah,-nam-सं० पुं०, क्लो० [illegible]
अवमर्दन avamardana-हिं० संज्ञा पुं० पीड़न । वेदना । दुःख देना । दलन । (See Pidanam.) पीड़ा पहुँचाना ।

अवमोटनम् avamoṭanam-सं० क्ली० आमोटन । मा० नि० वा० व्या० ।

अवम्भिसोम ayambhiso ... कांजिक । (See-kānjika.)

अवयवः avayavah-सं० पुं० } शरीर
अवयव avayava-हिं० संज्ञा पुं० } सावय अंग, देह, शरीर, हस्तपाद आदि भाग, शरीर एक देश । (A limb, a member.) (२) अंश । भाग । हिस्सा ।

अवयव स्थानम् avayava-sthānam-सं० क्लो० शरीर (The body) । वै० निघ० ।

अवयवी avayavi-सं० पुं० पक्षी । (A bird.) वै० निघ० ।

...हिं० पुं० (१) वह वस्तु जिसके बहुत से अवयव हों। (२) देह। शरीर।

...-वि० [सं०] (१) जिसके और बहुत से अवयव हों, अंगी।

(२) कुल। संपूर्ण। समष्टि। समूचा।

...म् avaram- सं० क्लीo } हाथी की जाँघ
... avara-हिं० वि० } का पिछला भाग, अमo।

... javar-अ० काना होना, एक नेत्र से हीन होना। (To be Blind.) काने मनुष्य को तिब (वैद्यक) में अअवर कहते हैं।

...गिड़ा avar-gidá-कना० तरवड़-हिं०। (Cassia Auriculata, *Linn.*) फा० इं० १ भा०।

...ज avaraja-हिं० संज्ञा पुं० [सं०][स्त्री० अवरजा] कनिष्ठ भ्राता, अनुज, लहुरा भाई, छोटा भाई (A younger brother.)। (२) नीच कुलोत्पन्न। नीच।

...जा avarajá-हिं० संज्ञा स्त्री० कनिष्ठा भगिनी, छोटी बहिन। (A younger sister.)

...ण avaranı-हिं० संज्ञा पुं० (१) दे० अवर्ण। (२) देखो आवरण।

...र दारुकम् avara-dárukam-सं० क्लीo मलात्मक स्थावर विषान्तर्गत पत्रविष। सु० कल्प० २ अ०। देखो—पत्रविषम्।

...रव्रत avara-vrata-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) सूर्य। (२) आक। मदार।

...राई avaraí-ता० तरवड़-हिं० संज्ञा स्त्री० (Cassia auriculata, *Linn.*) इं० मे० मे०।

...रम् avará n-अ० (व० व०), वर्म (ए० व०) आमास-फ़ा०। सूजन, शोथ, श्वयथु -हिं०। स्वेलिंग (Swelling.)-इं०।

...राम् मग़ाबिन avarám-maghábin -अ० मग़ाबिन अर्थात् बगल, जंघासा और ... का शोथ जो प्लेग के अतिरिक्त होता है। ब्युबोज़ (Bubos.)-इं०। देखो—खैज़ील

...रिका avariká-सं० स्त्री० धन्याक, धनियाँ। धने-बं०। (Coriandrum sativum.) रा० नि० व० ६।

अवरी avarí-गु० (१) शिम्बी, सेम। (The flat bean.) फा० इं० १ भा०।

-मल०, सिंगा० नील-हिं०। (Indigofera Indica.) इं० मे० मे०।

अवरीकी avaríkí-कना० तरवड़-हिं०। (Cassia auriculata, *Linn.*)

अवरुद्ध avaruddha-हिं० वि० [सं०] रुँधा हुआ। रुका हुआ। अटकाया गया, रुका (Obstructed)। (२) आच्छादित। गुप्त। छिपा।

अवरुद्धा avaruddhá -हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसे कोई रखले। उढ़री। रखुई। रखनी।

अवरूढ़ avarúrha-हिं० वि० [सं०] ऊपर से नीचे आया हुआ। उतरा हुआ। आरूढ़ का उलटा।

अवरोध avarodha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] सुद्दा, रुकावट, रोक, अटकाव। हिंडरन्स (Hindrance), ऑब्स्ट्रक्शन (Obstruction.)-इं०। (२) निरोध। बंद करना।

अवरोध उद्घाटक avarodha-udghátak -हिं० पुं० देह के छिद्रों को खोलने वाली औषध। वह औषध जो अपनी उष्मा के कारण स्रोतावरोध को खोले, और सुद्दा (अवरोध) प्रभृति को दूर करे। मुफ़त्तिह, मुफ़त्तिहुस्सुदद, मुफ़ाथिलुस्सुदद-अ०। अभिष्यन्द रोकने वाला। डीऑब्स्ट्रुएन्ट (Deobstruent.)-इं०।

अवरोधक avarodhak-हिं० वि० [सं०] देह के छिद्रों को रोकने वाली औषध, सुद्दा डालने वाली औषध, वह औषध जो अपनी शुष्कता वा स्थूलता के कारण नालियों में रुक जाए और उनको बन्द करदे। मुसद्दिद (ए० व०), मुसद्दिदात (व० व०)-अ०। ऑब्स्ट्रुएन्ट (Obstruent.)-इं०।

(२) (Insulator.) रोधक, अपरिचालक।

अवरोधन avarodhana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोधक, अवरोधित, अवरोधी, अवरोध, अवरुद्ध] रोकना, छेकना।

अवरोधना avarodhaná-हिं० क्रि० स० [सं० अवरोधन] [वि० अवरोधक] रोकना।

अवरोधित avarodhita-हिं० वि० [सं०] रोका हुआ। रुका।

अवरोधी avarodhí-हिं० पुं० [सं० अवरोध] [स्त्री० अवरोधिनी] अवरोध करने वाला। रोकने वाला।

अवरोपण avaropana-हिं० संज्ञा पुं० [वि० अवरोपित, अवरोपणीय] उखाड़ना। उत्पाटन।

अवरोपणीय avaropaníya-हिं० वि० [सं०] उखाड़ने योग्य।

अवरोपित avaropita-हिं० वि० [सं०] उखाड़ा हुआ। उन्मूलित।

अवरोहः avarohah-सं० पुं०
अवरोह avaroha-हिं० संज्ञा पुं०
(१) वटादि वृक्षका अधो विलम्ब-काण्डाकार अवयव विशेष, बरोह, बरकी जटा। वटादिर-नामाल-यं०। (२) अश्वगन्ध। द्रव्य० र०। (३) उतार। गिराव। अधः पतन।

अवरोहकः avarohakah-सं० पुं०
अवरोहक avarohaka-हिं० पुं०
अश्वगन्धा (Withania Somnifera.) मद० व० १।-वि० [सं०] गिरने वाला।

अवरोहण avarohana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोहक, अवरोहित, अवरोही] नीचे की ओर जाना। पतन। उतार। गिराव।

अवरोहना avarohaná-हिं० क्रि० अ० [सं० अवरोहण] उतरना। नीचे आना। क्रि० अ० [सं० आरोहण] चढ़ना। ऊपर जाना। क्रि० स० [सं० अवरोधन, प्रा० अवरोहन] रोकना। रूँधना। छेंकना।

अवरोह शाखी avaroha-shákhí-सं० पुं० प्रप वृक्ष, पाकर(ख)र, पकरी (-ड़ी०)-हिं०। (Ficus infectoria.)। पाकुड़ गाछ-बं०। रा० नि० व० ११।

अवरोह सायिनः avaroha sáyinah-सं० पुं० वट, बर्गद। (Ficus Bengalensis.) फा० इं० ३ भा०।

अवरोह स्थल avaroha-sthal-हिं० संज्ञा पुं० (Antinode.)

अवरोहि avarohi-सं० स्त्री० नीचे आना, उतरना। (Descending.)

अवरोहिका avarohiká-सं० स्त्री० अश्वगन्ध (Withania Somnifera.) नि०।

अवरोहि ग्रैवी avarohi-graiví-सं० स्त्री० (-Ramus descendeus.)

अवरोहित avarohita-हिं० वि० [सं०] (१) गिरनेवाला। (२) अवनत, हीन।

अवरोहितातालव्या avarohitálavyá-सं० स्त्री० (Descending palatinic)

अवरोहिस्थूलान्त्र avarohisthúlántra-सं० स्त्री०(Descending colon) अधोगा बृहदन्त्र।

अवरोही,-इन् avarohi,-in-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० वट वृक्ष, बर्गद। बट गाछ बं० (Ficus Bengalensis.)। रा० नि० व० ११।

अवरोह्यावर्ता avarohyávartá-सं० स्त्री० (Descending portion of Aorta) अधोगा महा धमनी।

अवर्ण avarna-सं० पुं० अवर, पाकर, बिना परिवार। -हिं० वि० [सं०] वर्ण रहित, बिना रंग का। (२) बदरंग। बुरे रंग का।

अवर्त्त avartta-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० जल का चक्कर, भँवर, नाँद (Whirlpool.)। (२) घुमाव। चक्कर। [सं०] (३) स्फटिक पदार्थ। वह पदार्थ जिसके आर पार प्रकाश दृष्टि न जा सके। (४) देखो—आवर्त्त।

अवर्त्तिः avarttih-सं० पुं० वैद्य०।

अवर्षण avarshana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] वृष्टि का अभाव। वर्षा का अभाव। वर्षा न होना। अवग्रह। अनावृष्टि।

अवलग्नः avalagnah-सं० पुं०
अवलग्न avalagna-हिं० संज्ञा पुं०
मध्य प्रदेश। शरीरका मध्य भाग। पेड़। मान्झ। -हिं० वि० [सं०] लगा हुआ, मिला हुआ, सम्बन्ध रखने वाला।

अवलम्बनः,-कः avalambanah,-kah-सं० पुं० अवलंबन कफ। पाँच प्रकार के कफों में से एक। श्लेष्मा विशेष। स्थान-हृदय। कर्म-रस-युक्त वीर्य से हृदय के भाग का अवलम्बन और त्रिक (मस्तक और दोनों भुजाओं की संधि) को धारण करता है। भा०। देखो-कफ।

अवलम्बित avalambita-हिं० वि० (Suspended) मुअल्लिक।

अवलक्षः avalakshah-सं० पुं० (१) श्वेत वर्ण, सफेद (White.)। (२) स्वामी। (Mercury)

अवला avalá-सं० स्त्री० नारी, स्त्री। (A woman.) रत्ना०। (२) प्रियंगु (Aglaia roxburghiana.)। प्रयोगा०-गलगण्ड। "मधुलोधावलासर्ज"।"-मद०। (३) आमला, आँवला। (Phyllanthus emblica, *Linn.*) स० फा० इं०।

अवला गंधक avalá-gandhaka-मह० आमलासार गन्धक-हिं०। आँवलासार गंधक-द०। (A sort of sulphur.) स० फा० इं०। देखो—गंधक।

अवला avalá-गु० (१) तरवड़-हिं०। (Cassia Auriculata, *Linn.*) फा० इं० १ भा०। -हिं० पुं० (२) वरुण वृक्ष, बरना। (Crataeva tapia.)

अवलिप्त avalipta-हिं० वि० [सं०] (१) लगा हुआ। पोता हुआ। (२) सना हुआ। आसक्त।

अवली,-लि avalí,-li-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आवलि] पाँती, लकीर, पंक्ति (A line, a row.)। (२) समूह। झुंड। (३) वह अन्न की डाँठ जो नवान्न करने के लिए खेत से पहिले पहिले काटी जाती है। (४) रोयाँ वा ऊन जो गँड़रिया एक बार भेंड़ पर से काटता है।

अवलीकन्द avali-kanda-मालाकन्द। कन्द लता। रा० नि०।

अवलीढ़ avalírha-हिं० वि० [सं०] (१) भक्षित। खाया हुआ। प्राशित। (२) चाटा हुआ।

अवलुञ्चनम् avalunchanam-सं० क्लीं०
अवलुञ्चन avalunchana-हिं० संज्ञा पुं०
(१) मुण्डन (Shaving)। (२) शैथिल्य(Laxity; flaccidity.)मुंडन। सु० सू० २५ अ०। (३) छेदना। काटना। (४) उखाड़ना। नोचना।

अवलुंचित avalunchita हिं० वि० [सं०] मुण्डित। (१) दूरीकृत। हटाया हुआ। अपनीत। (२) खुला या खोला हुआ। (३) कटा हुआ। छेदित। (४) उखाड़ा हुआ। नोचा हुआ।

अवलुंठन avalunthana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] लोटना।

अवलेखना avalekhaná-हिं० क्रि० स० [सं० अवलेखन] (१) खोदना। खुरचना।

अवलेपः avalepah -सं० पुं०
अवलेप avalepa-हिं० संज्ञा पुं०
(१) गर्व, घमण्ड (Vanity, Pride.)। (२) उबटन, लेपन, लेप, मलहम (Plaster, ointment.)। (३) भूषण। (Ornament-) मे० पचतुष्क।

अवलेपनम् avalepanam-सं० क्लीं०
अवलेपन avalepana-हिं० संज्ञा पुं०
(१) उबटन। लेपन। लेप। वह वस्तु जो लगाई वा थोपी जाए (Plaster, ointment.)। (२) अवण, तैल घृत आदि का लेपन या मर्दन। तैलादि की मालिश। लगाना। पोतना। थोपना। (३) अहंकार। (४) दूषण।

अवलेहः avalehah -सं० (हिं०
अवलेह avaleha संज्ञा) पुं०,
अवलेहिका avalehiká स्त्री० [वि०

अवरोधन avarodhana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोधक, अवरोधित, अवरोधी, अवरोध, अवरुद्ध] रोकना, छेकना।

अवरोधना avarodhaná-हिं० क्रि० स० [सं० अवरोधन] [वि० अवरोधक] रोकना।

अवरोधित avarodhita-हिं० वि० [सं०] रोका हुआ। रुका।

अवरोधी avarodhí-हिं० पुं० [सं० अवरोध] [स्त्री० अवरोधिनी] अवरोध करने वाला। रोकने वाला।

अवरोपण avaropana-हिं० संज्ञा पुं० [वि० अवरोपित, अवरोपणीय] उखाड़ना। उत्पाटन।

अवरोपणीय avaropaníya-हिं० वि० [सं०] उखाड़ने योग्य।

अवरोपित avaropita-हिं० वि० [सं०] उखाड़ा हुआ। उन्मूलित।

अवरोहः avarohah-सं० पुं०
अवरोह avaroha-हिं० संज्ञा पुं०
(१) वटादि वृक्षका अधो विलम्ब-काष्ठाकार अवयव विशेष, बरोंह, बरकी जटा। वटादिर-नामाल-यं०। (२) अश्वगन्ध। द्रव्य० र०। (३) उतार। गिराव। अधः पतन।

अवरोहकः avarohakah-सं० पुं०
अवरोहक avarohaka-हिं० पुं०
अश्वगन्धा (Withania Somnifera.) मद० व० १।-वि० [सं०] गिरने वाला।

अवरोहण avarohana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोहक, अवरोहित, अवरोही] नीचे की ओर जाना। पतन। उतार। गिराव।

अवरोहना avarohaná-हिं० क्रि० अ० [सं० अवरोहण] उतरना। नीचे आना। क्रि० अ० [सं० आरोहण] चढ़ना। ऊपर जाना। क्रि० स० [सं० अवरोधन, प्रा० अवरोहन] रोकना। रूँधना। छेंकना।

अवरोह शाखी avaroha-shákhí-सं० पुं० प्रक्ष वृक्ष, पाक(ख)र, पकरी (-ड़ी)-हिं०। (Ficus infectoria.)। पाकुड़ गाछ-बं०।

अवरोह सायिनः avaroha sáyinah-सं० पुं० वट, बरगद। (Ficus Bengalensis.) फा० इं० ३ भा०।

अवरोह स्थल avaroha-sthal-हिं० संज्ञा पुं० (Antinode.)

अवरोहि avarohi-सं० स्त्री० नीचे आना उतरना। (Descending.)

अवरोहिका avarohiká-सं० स्त्री० अश्वगन्धा। (Withania Somnifera.), रा० नि०।

अवरोहि ग्रैवी avarohi-graiví—सं० स्त्री० (-Ramus descendeus.)

अवरोहित avarohita-हिं० वि० [सं०] (१) गिरनेवाला। (२) अवनत, हीन।

अवरोहितालव्या avarohitálavyá-सं० स्त्री० (Descending palatinio)

[illegible] वृहद्‌यन्त्र।

अवरोही,-इन् avarohi,-in-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० वट वृक्ष, बरगद। वट गाछ-बं० (Ficus Bengalensis.)। रा० नि० व० ११।

अवरोह्यावर्ता avarohyávartá-सं० स्त्री० (Descending portion of Aorta) अधोगा महा धमनी।

अवर्ण avarna-सं० पुं० अपर, आकार, निंदा, परिवाद। -हिं० वि० [सं०] वर्ण रहित, बिना रंग का। (२) बदरंग। बुरे रंग का।

अवर्त्त avartta-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० जल का चक्कर, भँवर, नाँद (Whirlpool.) (२) घुमाव। चक्कर। [सं०] (१) ... पदार्थ। वह पदार्थ जिसके आर पार प्रकाश ... दृष्टि न जा सके। (४) देखो—आवर्त।

अवर्त्तिः avarttih-सं० पुं० ...।

अवर्षण avarshana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] वृष्टि का अभाव। वर्षा का अभाव। वर्षा न होना। अवग्रह। अनावृष्टि।

अवलग्नः avalagnah–सं० पुं०
अवलग्न avalagna–हिं० संज्ञा पुं०
मध्य प्रदेश। शरीरका मध्य भाग। धड़। मध्य। –हिं० वि० [सं०] लगा हुआ, मिला हुआ, सम्बन्ध रखने वाला।

अवलम्बनः,-कः avalambanah,-kah-सं० पुं० अवलंबन कफ। पाँच प्रकार के कफों में से एक। श्लेष्मा विशेष। स्थान–हृदय। कर्म-रस-युक्त वीर्य से हृदय के भाग का अवलम्बन और त्रिक (मस्तक और दोनों भुजाओं की संधि) को धारण करता है। भा०। देखो–कफ।

अवलम्बित avalambita–हिं० वि० (Suspended) सुप्रथित।

अवलक्षः avalakshah–सं० पुं० (१) श्वेत वर्ण, सफेद (White.)। (२) स्वामी। (Mercury)

अवला avalá–सं० स्त्री० नारी, स्त्री। (A woman.) रत्ना०। (२) प्रियंगु (Aglaia roxburghiana.)। प्रयोगा०–गलगण्ड। "मधुलोध्राबलासर्ज"।"–मद० (३) आमला, आँवरा। (Phyllanthus emblica, *Linn.*) स० फा० इं०।

अवला गंधक avalá-gandhaka–मद० आमलासार गन्धक–हिं०। आँवलासार गंधक–द०। (A sort of sulphur) स० फा० इं०। देखो—गंधक।

अवला avalá–गु० (१) तरवड़-हिं०। (Cassia Auriculata, *Linn.*) फा० इं० १ भा०। –हिं० पुं० (२) वरुण वृक्ष, बरना। (Crataeva tapia.)

अवलिप्त avalipta–हिं० वि० [सं०] (१) लगा हुआ। पोता हुआ। (२) सना हुआ। आसक्त।

अवली,-लि avalí,-li–सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आवलि] पाँती, लकीर, पंक्ति (A line, a row.)। (२) समूह। झुंड। (३) वह अन्न की डाँठ जो नवान्न करने के लिए खेत से पहिले पहिले काटी जाती है। (४) रोआँ वा ऊन जो गँडरिया एक बार भेड़ पर से काटता है।

अवलीकन्द avalí-kanda–माजाकन्द। कन्द जता। रा० नि०।

अवलीढ़ avalírha–हिं० वि० [सं०] (१) भक्षित। खाया हुआ। प्राशित। (२) चाटा हुआ।

अवलुञ्चनम् avalunchanam–सं० क्लीं०
अवलुञ्चन avalunchana–हिं० संज्ञा पुं०
(१) मुण्डन (Shaving)। (२) शैथिल्य(Laxity; flaccidity.)मुडन। सु० सू० २५ अ०। (३) छेदना। काटना। (४) उखाड़ना। नोचना।

अवलुंचित avalunchita-हिं० वि० [सं०] मुण्डित। (१) दूरीकृत। हटाया हुआ। अपनीत। (२) खुला या खोला हुआ। (३) कटा हुआ। छेदित। (४) उखाड़ा हुआ। नोचा हुआ।

अवलुंठन avalunṭhana–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] लोटना।

अवलेखना avalekhaná–हिं० क्रि० स० [सं० अवलेखन] (१) खोदना। खुरचना।

अवलेपः avalepah–सं० पुं०
अवलेप avalepa–हिं० संज्ञा पुं० } (१) गर्व्व, घमण्ड (Vanity, Pride.)। (२) उबटन, लेपन, लेप, मलहम (Plaster, ointment.)। (३) भूषण। (Ornament.) मे० पचतुष्क।

अवलेपनम् avalepanam–सं० क्लीं०
अवलेपन avalepana–हिं० संज्ञा पुं०
(१) उबटन। लेपन। लेप। वह वस्तु जो लगाई या थोपी जाए (Plaster, ointment.)। (२) अञ्जन, तैल घृत आदि का लेपन या मर्दन। तैलादि की मालिश। लगाना। पोतना। थोपना। (३) अहंकार। (४) दूषण।

अवलेहः avalehah
अवलेह avaleha
अवलेहिका avalehiká } –सं० (हिं० संज्ञा) पुं०, स्त्री० [वि०

[अवलेह्य] (१) चटनी, चाटने वाली कोई वस्तु, भोज्य विशेष। लेई जो न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली हो और चाटी जाए। (२) औषध जो चाटा जाए। लेह्यौषध। प्राश। जिह्वा द्वारा जिसका आस्वादन किया जाए उसे अवलेहिका कहते हैं। च० द० ज्व० चि०। लऊक-अ०। लॉक Loch, लिंक्टस Linctus, लिंक्चर Lincture, इलेक्टुअरी Electuary-इं०।

नोट:—यूनानी-वैद्यक एवं डॉक्टरी अवलेह निर्माण क्रमादि के विशेष विवरणके लिए क्रमशः लऊक़ तथा लिंक्टस शब्द के अन्तर्गत और आयुर्वेदीय वर्णन के लिए लेहः शब्द के अन्तर्गत देखें।

क्वाथ आदि अर्थात् स्वरस, फाण्ट एवं कल्क प्रभृति को छानकर पुनः इतना पकाएँ कि वे गाढ़े हो जाएँ। इसे रसक्रिया कहते हैं और यही अवलेह वा लेह कहलाता है। इसकी मात्रा एक पल (४ तोले) की है। यथा—

क्वाथादीनां पुनः पाकाद्घनत्वसा रसक्रिया।
सोऽवलेहश्चलेहः स्यात्तन्मात्रा स्यात्पलोन्मिताः॥

यदि अवलेह में शक्कर प्रभृति डालने का परिमाण न दिया हो तो औषधों के चूर्ण से चौगुनी मिश्री और गुड़ डालना हो तो चूर्ण से दूना डालें। जल या दूध आदि द्रव डालना हो तो चौगुना मिलाना चाहिए। यथा—

सिता चतुर्गुणा कार्या चूर्णाच्च द्विगुणोगुड़ः।
द्रवं चतुर्गुणं दद्यादिति सर्वत्र निश्चयः।

अवलेह सिद्ध होने की परीक्षा।

दर्वी से उठाने पर यदि वह तंतु संयुक्त दिखाई दे, जलमें डालने पर डूब जाए, द्रव रहित अर्थात् खर हो, दबाने पर उसमें उँगलियों के निशान पड़ जाएँ और वह सुगंध युक्त और सुरस हो तो उसे सुपक्व जानना चाहिए। यथा—

सुपक्वे तन्तुमत्त्वं स्यादवलेहोऽप्सु मज्जति।
खरत्वं पीडिते मुद्रा गन्धवर्णरसोद्भवः॥

जहाँ पर अवलेह के अनुपान की व्यवस्था न दी गई हो वहाँ पर दोष और व्याधि के अनुसार दूध, ईख का रस, पञ्चमूल के क्वाथ द्वारा सिद्ध किया हुआ यूष और अडूसे के क्वाथ में से किसी एक का यथा योग्य अनुपान देना हितकारी है।

दोषानुसार अनुपानों की मात्रा

कफ व्याधि में १ पल, पित्त में २ पल और वात में ३ पल की मात्रा प्रयोग में लाएँ।

मुख्य-मुख्य आयुर्वेदोक्त अवलेह निम्न हैं—कण्टकार्यवलेह, च्यवनप्राशावलेह, कूष्माण्डावलेह, खण्डकूष्माण्डावलेह, अगस्त्यहरीतक्यवलेह, कुटजावलेह, कुटजाष्टकावलेह, इत्यादि।

अवलेहनम् avalehanam-सं० क्ली०।
अवलेहन avalehana-हिं० संज्ञा पुं०
लेहन, आस्वादन, चाटना, जीभ की नोक लगाकर खाना। (Licking, tasting with the tongue.)। (२) चटनी।

अवलेह्य avalehya-हिं० वि० [सं०] आस्वा(द्य) चाटने योग्य।

अवलो avalo-ते० घोर राई, काली राई, राई असल राई, मकरा राई-हिं०। राजिका-सं०। (Brassica nigra, Koch.) मेमो०।

अवलोकन avalokana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवलोकित, अवलोकनीय] दर्शन, ईक्षण, दृष्टि देना, देखना (View, sight, the looking at any object.)। (२) निरीक्षण।

अवल्कः avalkah-सं० पुं० मेषशृङ्गी, मेढ़ासिंगी। (Pistacia Integerrima, Stewart.) वै० निघ०।

अवल्गजा avalgajā-सं० स्त्री० कृष्ण सोमराजी, बाकुची। Vernonia anthelmintica (The black var. of-)। इण्डु-वं०। भैष० अजा० घृत।

अवल्गुजः,-जा avalgujah,-jā-सं० पुं०, स्त्री० (१) कृष्ण सोमराजी। (The black var. of Vernonia anthelmintica.) सु० चि० २५ अ०। (२) सोमराजी,

बकुची-हिं०। हाकुच-बं०। (Vernonia anthelmintica.) आ० पू० १ भा०। भैष० कुष्ठ० चि०।

अवल्गुज बीजम् avalguja-víjam }
अवल्गुजीजम् avalguji-jam }
-सं० क्लो० सोमराजी बीज, बकुची। Vernonia anthelmintica. (The seeds of-)

अवल्गुजादि लेपम् avalgujádilepam-सं० क्लो० बकुची, कसौंदी, पमाड़, हल्दी, सैन्धव और मोथा इन्हें समान भाग ले काँजी में पीस कर लेप करने से उग्र कण्डू (खुजली) का नाश होता है। च० सं०।

अवश(स)क्थिका avaṣhakthiká-सं० स्त्री० (१) जानु देश। (२) पद बन्धन वस्त्र विशेष।

अवशिष्ट avaṣhishṭa-हिं० वि० [सं०] बचा हुआ। बचाखुचा। शेष। बाकी। उच्छिष्ट। बचा बचाया। (Left, remaining.)।

अवशेष avaṣhesha-सं० पुं०, हिं० संज्ञा पुं० [वि० अवशेष, अवशिष्ट] (१) अन्त, समाप्ति। (२) बची हुई वस्तु। तलछट। (A residue, remnant.)

हिं० वि० [सं०] बचा हुआ। शेष। बाक़ी।

अवशेषित avasheshita-हिं० वि० [सं०] बचा हुआ। शेष। बाक़ी।

अवश्यः avaṣhyah }
अवश्या avaṣhyá }
-सं० पुं०, स्त्री० तुषार, शीत, पाला, हिम, वर्फ। (Frost, cold, ice or snow.)। भा० म० ४ भा० शिरोरोग, अ-वबन्ध भेदक। "मारुतातवश्याय मैथुनैः।" मद्या० गुड़।

अवश्यायः avaṣhyáyah-सं० पुं० }
अवश्याय avaṣhyáya-हिं० संज्ञा पुं० }
उत्त०
(२)
तुषार, हिम, पाला (Frost, cold.)। भा० म० ४ भा० नासारो०। "अवश्यायकर्मैथुन-... से..."। (३) झींसी। -झड़ी।

अवश्रयण avashrayaṇa-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] चूल्हे पर से पके हुए खाने को उतार कर नीचे रखना।

अवश्याया avaṣhyáyá-सं० स्त्री० कुज्झटिका। See—Kujjhaṭiká.

अवष्टम्भः avashṭambhah-सं० पुं० }
अवष्टम्भ avashṭambha हिं० संज्ञा पुं० }
[वि० अवष्टब्ध] स्वर्ण, सोना। Gold (Aurum.) मे०। (२) आश्रय, सहारा।

अवष्टब्ध avashṭabdha-हिं० वि० [सं०] जिसे सहारा मिला हो। आश्रित।

अवष्वाणम् avashváṇam-सं० क्लो० भक्षण। (Eating.) हे० च०।

अवसक्थिका ava-sakthiká-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० खटिया, खट्टिका, खट्टा, खाट। पर्याय—पर्यस्तिका, परिकरः पर्यङ्कः। हे०।

अवस्था avasthá-हिं० स्त्री० प्रकृति की हालत जैसे ठोस, तरल या वायवीय। (State.)

अवस्था परिवर्त्तन avasthá-parivrttana-हिं० पुं० (Change of state.) पदार्थ की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परि-णति। इसका मुख्य कारण ताप है। अस्तु जब हिम, मोम वा जमे हुए घी को उष्ण किया जाता है, तब वे द्रवीभूत हो जाते हैं। यदि उन्हें तपाना जारी रखें, तो उनके वाष्प बन कर उड़ जाते हैं। और वाष्पों को यदि शीतल करें तो वे पुनः पूर्वावस्था को यथाक्रम प्राप्त हो सकते हैं। आधु-निक रसायनशास्त्र के अनुसार इसे ही "अवस्था परिवर्तन" कहते हैं।

अवसन्न avasanna-हिं० वि० [सं०] (१) शान्त, क्लान्त, थका हुआ, उदास। (२) जड़ी-भूत, स्वकार्याक्षम, सुन्न, स्पर्श शून्य, निःसंज्ञ।

अवसन्नता avasannatá-हिं० संज्ञा स्त्री० सुन्न हो जाना; निश्चेष्ट होना, काय सुप्तता, स्पर्शाज्ञता, त्वक् शून्यता, त्वक्स्वाप, संज्ञानाश, कार्याक्षमता, जाड्य। यह स्पर्शशक्ति के विकार

से पैदा होती है। यदि कारण बलवान हो तो स्पर्श शक्ति सदा के लिए विदा हो जाती है, अन्यथा यह विकृत वा कम हो जाती है।

अनस्थेसिया (Anæsthesia), नार्कोटिज़्म (Narcotism), नम्बनेस (Numbness)-इं०। ख़द्र, ख़द्र, फ़क़्दुल् इह्सास, कलालुल् हिस-अ०। ज़वाल हिस-फ़ा०। हिस का जाते रहना-उ०।

नोट—नार्कोटिज़्म अवसन्नता की उस कृत्रिम अवस्था को कहते हैं जो किसी अवसन्नताजनक औषध के प्रयोग से कृत्रिम रूप से उपस्थित हो जाती है।

अवसन्नता जनक avasannatájanak-हिं० सुन्न करनेवाली औषध, वह औषध जो अपने शैत्य, रूक्षता और स्तम्भक गुण के कारण शारीरिक धातुओं तथा आर्द्रता को सांद्रीभूत कर दे और आवयविक स्रोतों को अवरुद्ध कर प्राण वायु के आवागमनको रोके और इस प्रकार उक्त अंगको जड़ीभूत करदे। यथा-अहिफेन, कोकीन प्रभृति। संज्ञाहर, स्पर्श हारक, स्पर्शाज्ञताजनक, स्पर्शघ्न। -हिं०।

अनस्थेटिक (Anæsthetic), नार्कोटिक (Narcotic)-इं। मुख़द्दिर, मुफ़क़्क़िदुल् इह्सास, ख़दिर-अ०।

नोट—डॉक्टरी की परिभाषा में अनस्थेटिक्स उन औषधों को कहते हैं जो मस्तिष्क एवं सौषुम्न केन्द्रों पर प्रभाव कर अचेतता एवं निःसंज्ञता उत्पन्न करती हैं।

परन्तु यह शब्द अब साधारणतः सुगन्धित व अस्थिर पदार्थों यथा क्लोरोफॉर्म, ईथर, मीथिलीन, नाइट्रस ऑक्साइड गैस (हास्यजनक वायव्य) प्रभृति के लिए ही प्रयुक्त होता है। इसमें ऐल-कोहल (मद्यसार) तथा अहिफेन जैसी मादक (Narcotic) औषधें सम्मिलित नहीं, यद्यपि वे भी स्पर्शाज्ञताजनक हैं।

इनके दो भेद हैं—

(१) स्थानिक संज्ञाहर— इस प्रकार की औषध शरीर के जिस अंग पर लगाई जाती है, वह उस स्थल को बोध शक्ति को नष्ट कर देती है अर्थात् उक्त भाग को अवसन्न कर देती है।

लोकल अनस्थेटिक्स (Local anæsthetics)-इं०। मुक़ामी मुख़द्दिर, मुक़ामी मुफ़क़्क़िदुल् इह्सास-अ०। मुक़ामी हिस को ज़ायल करने वाली या सुन्न करने वाली [illegible] -उ०।

वे निम्न हैं—

डॉक्टरी—कार्बोलिक एसिड, युकीन, कोकीन का स्वकस्थ अन्तःक्षेप, ईथर (स्प्रे), बेटाप्रो[illegible] ईथल क्लोराइड, मीथल क्लोराइड (स्प्रे द्वारा,) शा[illegible] शीत (बर्फ़), आर्थोफ़ार्म, आर्थोफ़ार्म न्यु, [illegible] क्लोफ़ॉर्म, ईथर मीथीलेटम, ईथर मैथीलिक[illegible] ईथल ब्रोमाइडम्, ऐरोमैटिक वाइन्स (सुगन्धि[illegible] तैल), ऐकोईन, एलीपोन, अनस्थेसीन ([illegible] थीन), अनस्थिल, थाइमोल (सत अजवाइन) ट्रोपाकोकीन, सबक्युटीन, स्टॉवेइन, [illegible] कैम्फर (फेनोल तथा कपूर), क्लोरेटोन, क्लोरा[illegible] कोकीन हाइड्रो क्लोराइडम्, कोकीनी फेनीला[illegible] कैनीन, ग्वाएकोल, मेथीलाल और मेन्थो[illegible] (सत पुदीना) एवं नर्वसाइडीन, नर्वेनी[illegible] नोवोकीन, हालोकेन, हाइड्रोक्लोराइड, युकी[illegible] हाइड्रोक्लोराइडम्, युरुफ़ार्म, युहिमबीन, लो[illegible] कार्पीन।

आयुर्वेदीय तथा यूनानी—

अहिफेन, तम्बाकू, शूकरान (कोनायम [illegible] धत्तूर फल, अजवाइन ख़ुरासानी, यब्रूहुस्सन[illegible] (बिलाडोना), बीज़ लुफ़ाह, उक़्हुवान (बा[illegible] भेद), पार्वतीय अजवाइन, भंग, केशर, इसा[illegible] काकनज, बीज़ जर्द, कुचिला, इस्बंद, श्वेत कडु[illegible] काहू, तुलसी, गुलेलाला, पित्तपापड़ा, सोप[illegible] कुन्दुर, लवंग, शाहसफ़्रम, शक़ायक़, बच्छना[illegible] विट्खदिर, वच, कोका, हिंगु, मेषशृंगी (गुड़मार[illegible] काली कडुकी, जलब्राह्मी, निम्ब, जटामांसी, कडु[illegible] और अशोक।

(२) सार्वांगिक संज्ञाहर—

जेनरल अनस्थेटिक्स (General anæs[illegible]

thetics)-इं०। मुख़द्दिरात कुली-अ०। बेहोशी पैदा करने वाली दवा-उ०।

ये औषधें इस प्रकार संज्ञाशून्यता उपस्थित कर देती हैं कि फिर किसी भाँति की वेदना का बोध नहीं होता अर्थात् सार्वदैहिक स्पर्शाज्ञताजनक औषधों के उपयोग से मनुष्य पर पूर्ण अचेतता व्याप्त हो जाती है। दुःख एवं वेदना का सर्वथा लोप हो जाता है तथा परावर्तित चेष्टाएँ विनष्ट हो जाती हैं। यह औषध "विकास सिद्धांत" (इस नियम के अनुसार वातकेन्द्रों पर औषध का प्रभाव उनके विकास-क्रम के विरुद्ध होता है) तथा "पूर्वोत्तेजन एवं नैर्बल्योत्तर नियम" (इस नियम के अनुसार अल्प मात्रा में अथवा प्रारम्भ में औषध का उत्तेजक एवं अधिक मात्रा में अथवा पश्चात् को उसका नैर्बल्यजनक प्रभाव होता है) के उत्तम उदाहरण हैं। अस्तु इनके आघ्राण कराने अर्थात् सुँघाने से भावना शक्ति प्रबल हो जाती है। पुनः मस्तिष्क गत्युत्पादक केन्द्रों में गति होती है और रोगी चित्त वृत्ति की अस्थिरता एवं विभिन्न केन्द्रों की असाधारण तथा अनियमित गतिके कारण अनाप शनाप मूर्खतापूर्ण बातें करने लगता है और हाथ पाँव मारता है। थोड़े काल पश्चात् मास्तिष्कीय ग्रंथियों में निर्बलता के लक्षण प्रगट हो जाते हैं, बुद्धिभ्रंश होता तथा मस्तिष्क के उच्च केन्द्रों में और अधिक गति होती है। अतएव हृदय स्पंदित होता, श्वासोच्छ्वास तीव्र हो जाता और रक्तभार बढ़ जाता है। क्षण भर बाद ये लक्षण भी अदृश्य हो जाते और रोगी पूर्णतः अचेत हो जाता है। सम्पूर्ण शरीर की बोध शक्ति लुप्तप्राय हो जाती, मांस पेशियाँ शिथिल हो जातीं एवं किसी प्रकार की चेष्टा से भी ये गतिशील नहीं होती हैं। नेत्रकनीनिका संकुचित हो जाती, नाड़ी एवं श्वासोच्छ्वासकी गति कम हो जाती है, इत्यादि। प्रायः ऐसी ही दशा में शल्यकर्म सम्पादित होता है।

पर यदि जेनरल अनस्थेटिक्स (सार्वांगिक संज्ञाहर) का प्रयोग असावधानतापूर्वक किया जाए तो फिर भयानक लक्षण प्रगट होने लगते हैं। अस्तु, अनैच्छिक मांस पेशियों के वातग्रस्त हो जाने से प्रायः मल-मूत्रका प्रवर्तन हो जाया करता है, श्वासोच्छ्वास एवं हार्दिक गतियाँ अत्यन्त निर्बल और अन्ततः अनियमित हो जाती हैं। प्रायः श्वासोच्छ्वास या हृदय केन्द्र के वातग्रस्त हो जाने से मृत्यु उपस्थित होती है।

मूर्च्छा दूर होने के पश्चात् जब चैतन्यता का उदय होने लगता है तब जिस क्रम से मनुष्य की शारीरिक क्रियाएँ अवसित हुई थीं, ठीक उसके विपरीत उत्तरोत्तर वे उपस्थित होने लगती हैं। किन्तु औषध का प्रभाव कई घंटे तक शेष रहता है और चैतन्यता लाभ करनेके पश्चात् भी अधिक काल तक शारीरिक पेशियाँ भली प्रकार कार्य सम्पादन करने के अयोग्य रहती हैं।

पूर्ण अचेतन्यता प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष दोनों कारणों से उत्पन्न की जा सकती है। अस्तु अप्रत्यक्ष (Indirect) रूप से संज्ञाशून्यता उपस्थित करने की निम्न लिखित तीन विधियाँ हैं :—

(१) शिरोग्रीवा धमनी (Carotids) या गर्दन की रग को दबा कर या उन्हें बाँधकर या दोनों पार्श्व के वेगस-नर्व तथा शिरोग्रीवा धमनी को दबा कर और इस प्रकार मास्तिष्क रक्तसञ्चार को अवरुद्ध कर, जिससे वातसैलीय संवर्तन क्रिया-शून्य हो जाता है, पूर्ण विसंज्ञता उपस्थित की जा सकती है।

(२) रक्त की वेनासिटी (शिरा सम्बन्धी प्रतिक्रिया) को बढ़ाकर और इस प्रकार वातसेलों की ओषजनीकरण क्रिया को घटा कर भी बेहोशी उत्पन्न की जा सकती है।

(३) मस्तिष्क से शोणित को शरीर के अन्य भागों में पहुँचा कर जैसे पृथ्वी पर उत्तान लेटे हुए रोगी को सहसा उठाकर खड़ा कर देने से भी बेहोशी उत्पन्न की जा सकती है।

अवसन्नीन avasannina-हिं० पुं० अवलज्जीन। अवसन्नीन।

अवसादक avasádak-हिं०,संज्ञा पुं० [सं०] वह औषध जो बढ़े हुए दोषों की ऊष्मा एवं क्षोभ को शमन करे अथवा वह जो धात्ववयविक क्रिया को अवसित करे। उदाहरणतः—(१) वात-केन्द्रिक क्रिया, यथा ताम्रकूट (तम्बाकू), लोबेलिया (अरण्य तम्बाकू), ब्रोमाइड ऑफ पोटासियम प्रभृति, (२) रक्तसञ्चालन-संस्थानिक क्रिया, यथा वत्सनाभ, वेराट्रम्, टार्टर एमेटिक, प्रूसिक एसिड प्रभृति; (३) सौपुम्न—काण्ड क्रिया, यथा—कालावार बीन, इत्यादि।

पर्याय—शामक, क्षोभहर, संशमन, निर्बलताजनक-हिं०। सिडेटिव्ज़ Sedatives, डिप्रेसेण्ट्स Depressants-इं०। मुसक्किन, मुज़इफ़-अ०।

अवसादक औषधों को निम्न लिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है। यथा—

(१) सार्वांगिक वा व्याप्त अवसादक-(General sedatives) मुसक्किनात उमूमी-अ०।

ये निम्न हैं—

पूर्ण मादक (Narcotics—), तथा अवसन्नताजनक (Anæsthetics) औषधें, यथा ओपियम (अहिफेन), मॉर्फिया (त्वक्क्षेप द्वारा), क्लोरल, हायोसायमस (अजवाइन खुरासानी), जल तथा रक्तमोक्षण।

(२) स्थानिक अवसादक (Sedatives)-मुसक्किनात मुक़ामी-अ०।

ये निम्न हैं—

ओपियम् (अहिफेन), ऐट्रोपीन, एसिड कार्बोलिक, एसिडम हाइड्रोस्यानिकम् डायल्युटम्, बोरेक्स (टंकण), बिलाडोना, प्लम्बाई एसीटास, प्लम्बाई कार्बोनास, क्रियोज़ूटम्, क्लोरल, लाईकार प्लम्बाई सबएसिटेटिस डायल्युटस, मॉर्फीन (अहिफेनीन) और अनस्थेटिक्स (अवसन्नताजनक औषध) तथा ऐनोडाइन्स (अङ्गमर्दप्रशमन)।

(३) मस्तिष्क अवसादक—(Cerebral Sedatives or depressants) मुज़इफ़ात दिमाग़-अ०।

इसके उपयोग से मास्तिष्कीय रक्तसंक्रमण शिथिल हो जाता है एवं मास्तिष्कीय शक्तियाँ निर्बल हो जाती हैं अर्थात् उनकी क्रियाओं में शिथिलता उपस्थित हो जाती है। ऐसी औषधों को निम्नलिखित चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, यथा—

(१) निद्राजनक (Hypnotics),

(२) मादक वा संज्ञाहर (Narcotics),

(३) सार्वांगिक अंगमर्दप्रशमन (General anodynes) और सार्वांगिक अवसन्नताजनक (General anæsthetics)।

नोट—इनके पूर्ण विवेचन के लिए यथा स्थान देखो।

(४) सौपुम्न अवसादक (कशेरुका मज्जा अवसादक) Spinal sedatives or depressants)-मुज़इफ़ात नुख़ाअ-अ०।

ऐसी औषधें सुषुम्नाकांड के पूर्वदेरी भागों के व्यापार को शिथिल करती हैं अर्थात् उनकी तीव्रता (activity) को घटाती हैं। इनका सरल प्रभाव होता है अथवा परावर्तित रूप से और इनका यह प्रभाव सौपुम्नोत्तेजक औषधों के विपरीत होता है।

वह औषध जो सुषुम्ना की परावर्तित गति को शिथिल करती है।

(क) क्लोरल हाइड्रेट#, ब्रोमाइड्स, फाइसोस्टिग्मीन, क्लोरोफार्म#, ईथर#, कैनाबिस इंडिका (भंग)#, ओपियम (अहिफेन)#, एपोमॉर्फीन#, वेरेट्रीन#, एमेटीन, ऐकोनाइट (वत्सनाभ)#, अर्गट, नैं(जे)बरांडियम, सेपोनीन, एमाइल नाइट्रेट, सोडियम नाइट्रेट, कैम्फर (कर्पूर)#, मर्करी (पारद), ऐन्टिमनी (अञ्जन), सोडियम, पोटासियम, लीथियम, सिल्वर (रजत), आर्सेनिक (संखिया)#, ज़िंक (यशद), कार्बोलिक एसिड#, टर्पेन्टाइन (तारपीन का तेल), कोलचिकम (सुरिंजान) और कावास्ट।

नोट—जिन औषधों पर ये (#) चिह्न लगे हैं उनका पूर्व प्रभाव सुषुम्नोत्तेजक और अवसादकोत्तर प्रभाव होता है।

उपयोग—क्लोरल हाइड्रेट, ब्रोमाइड्स, फाइसाष्टिग्मीन, केलेबार बीन, ओपियम्, कैनाबिस इण्डिका और क्लोरोफार्म या ईथर (आघ्राण द्वारा) टेटेनस प्रभृति आक्षेप युक्त रोगों में सामान्यतः प्रयुक्त होते हैं।

(ख) वे औषधें जो सुषुम्ना की परावर्तित गति को परोक्ष रूप से शिथिल करती हैं।

ऐसी दवाएँ मौषुम्नीय रक्तसंक्रमण को अवरुद्ध कर स्वप्रभाव प्रदर्शित करती हैं। ये निम्न हैं—

एकोनाइट (वत्सनाभ), डिजिटेलिस और क्वीनीन, अधिक परिमाण में इनका अत्यन्त प्रबल प्रभाव होता है।

(५) नासिकावसादक—(Nasal sedatives) मुसक्किनात अन्फ-अ० । वह औषध जो नासिका की श्लैष्मिक कला के क्षोभ को निवारण कर उस पर शामक प्रभाव करें। जैसे विस्मथ साल्ट्स अकेले या मॉर्फीन एवं कोकीन प्रभृतिके साथ और अन्य व्याप्तावसन्नता-जनक औषध जैसे इपीकेक्वाना कर्पाजिटा तथा एकोनाइट (वत्सनाभ) प्रभृति।

(६) हृदयावसादक—(Cardiac sedatives or depressants) मुसक्किनात क़ल्ब-अ० वह औषध जो हृदय की गति को या उसकी शक्ति या उन दोनों को निर्बल करती हैं। निम्न लिखित औषधें हृदय की आकुंचन शक्ति को घटाती हैं। फलतः वह प्रसार की दशामें ही गति करने से रह जाता है। वे यह हैं—

डायल्यूट एसिड्स, मस्केरीन, एपोमार्फीन, पाइलोकार्पीन, सेपोनीन, ओरल, सैलीसिलिक एसिड, पेलकलाइन साल्ट्स, डबल कॉपर साल्ट्स और डबल ज़िंक साल्ट्स अधिक मात्रा में प्रयुक्त करने से।

निम्नलिखित औषधें हृदय की गति एवं शक्ति दोनों को घटाती हैं—

एकोनाइट (वत्सनाभ), हाइड्रोस्यानिक एसिड डाइल्यूट, ऐण्टिमनी साल्ट्स (अञ्जन के लवण), वेरेट्रीन, और अर्गट प्रभृति।

उपयोग—प्रादाहिक रोगों में मुख्यतः नाड़ी की गति को मन्द करने के लिए एकोनाइट का प्रयोग करते हैं। ऐण्टिमनी साल्ट्स फुफ्फुस एवं वायुप्रणाली के उग्र प्रदाह की दशा में हितकर होते हैं। जब अजीर्ण के कारण पैल्पिटेशन ऑफ़ दी हार्ट (हृदय का धड़कना) विकार होता है। तब हाइड्रोस्यानिक एसिड के प्रयोग से विशेष लाभ होता है।

हृदयावसादक औषध—ओपियम् (अहिफेन), एपोकाइनम् (अमरीकीय भंग), एक्वा लारोसेरेसाई, एमाइल नाइट्रिस, ऐण्टिमोनियम् टार्टरेटम्, बेलाडोना, डिजिटेलिस, स्पिरिटस ईथरिस नाइट्रोसाई, स्ट्रेमोनियम (धत्तूर), सिला (वन-पलांडु), सोडियाई नाइट्रिस, कोनायम (शूकरान), गाइट्रोग्लीसरीन, वेरेट्रम् वरीडी, हायोसाइमस (अजवाइन खुरासानी), उशीर, गुडूची, एसिड ऐसीटिकम् (सिरकाम्ल), एसिडम् साइट्रिकम् (जम्बीराम्ल), एसिडम् आक्ज़ेलिकम् (चुकाम्ल), एसिडम् टार्टारिकम् (अम्लिकाम्ल), लिमनिस सक्स (निम्बुक स्वरस), ऐण्टिमोनियाई ऑक्साइडम् (अञ्जन ऑक्साइड वा भस्म), ऐण्टिमोनियम् सल्फ्युरेटम्, ऐण्टिमोनियाई क्लोराइड लाइक्वार, ऐण्टिमोनियम् नाइग्रम्, ऐण्टिमोनियम् प्योरिफिकेटम्, एकोनाइटीन (वत्सनाभीन), सिमिसिफ्युगा रिज़ोमा, डिजिटेलिनम्, लोबेलिया (अरण्य तम्बाकू), स्टेफीसेग्राई सेमिना, टैक्साई फोलिया, विरेट्राई विरिडिस रैडिक्स, विरेट्रम् एल्बम्।

(७) फुफ्फुसीय वा श्वासोच्छ्वास अवसादक—(Pulmonary or respiratory sedatives) इसके निम्न लिखित कतिपय भेद हैं—

(क) अवसादक लख्लख़े (Sedative Inhalations)-लख्लख़ात मुसक्किनह्, लख्लख़हे मुसक्किन-अ० । इन औषधों के वाष्प वायुप्रणालीस्थ श्लैष्मिक कला के

क्षोभ को शमन करते हैं अर्थात् उस पर शामक प्रभाव करते हैं जैसे हाइड्रोस्यानिक एसिड डाइल्यूट, कोनायम (शूकरान) और क्लोरोफ़ार्म प्रभृति।

(ख) नासावसादक–यथा स्थान देखो।

(ग) सरल श्वासोच्छ्वासकेन्द्र अवसादक–वह औषधजो श्वासोच्छ्वास केन्द्र को स्पष्टतया शिथिल करती हैं। यथा—

ओपियम् (अहिफेन), कोडाइन (अहिफेन का एक सत्व), कोनाइम (शूकरान), एकोनाइट (वत्सनाभ), वैरेट्रीन, जैलसीमीन, सेपोनीन, फाइसाष्टिग्मीन (जौहर लोबिया कालाबार), वर्जिनियन प्रून, हिरोइन, हाइड्रोस्यानिक एसिड डायल्यूट, क्लोरल, ऐण्टिमनी साल्ट्स (अञ्जन के लवण)*, एलको-हल (मद्यसार)*, ईथर*, क्लोरोफार्म*, क्वीनीन*, केफीन*, इपीकेक्वाना*।

इनमें से अंतिम की सात औषधें जिनपर यह चिह्न (*) लगा है, श्वासोच्छ्वास केन्द्र को शिथिल करने से पूर्व उसे आंशिक उत्तेजना प्रदान करती हैं।

फाइसाष्टिग्मीनका अत्यन्त प्रबल प्रभाव होता है अर्थात् यह श्वासोच्छ्वास-केन्द्रको अत्यंत शिथिल कर देता है। किंतु इस अभिप्राय हेतु इसका कदापि प्रयोग नहीं होता। ओपियम्, कोडाइन, हाइड्रोस्यानिक एसिड डायल्यूट और वर्जिनियन प्रून इस हेतु विशेष रूप से प्रयुक्त होते हैं।

उपयोग—फुप्फुस, आमाशय, यकृत, प्लीहा, फुप्फुसावरककला, वायुप्रणाली एवं प्रणालिकाओं, स्वरयंत्र, नासिका, कण्ठ और अन्नमार्ग के क्षोभ के कारण परावर्तित रूप से उत्पन्न हुई कास में ऐसी औषधें उपयोग में आती हैं। इस प्रकार की कास प्रायः शुष्क हुआ करती है अर्थात् इसमें अत्यल्प श्लेष्मस्राव हुआ करता है।

परावर्तित-गति जन्य कास-चिकित्सा में इन औषधोंके उपयोग से पूर्व रोग के मूल कारण का पता लगा उसके निवारण का यत्न करना चाहिए।

(घ) संवेदनिक वाततन्तुओं को शिथिल वा निर्बल करनेवाली औषधें। ये श्वासोच्छ्वास-केन्द्र अवसादक औषध हैं। अस्तु वहाँ देखो—

(ङ)अवसादकीय श्लेष्मानिस्सारक–देखो-श्लेष्मानिस्सारक।

श्वासोच्छ्वासावसादक औषधें—

ऑलियम् टेरीबिन्थीनी (तारपीन का तेल), ईथर एमीटिक्स, ईथिल आयोडाइडम्, एका लारो-सेरेसाई, एमाइल नाइट्रम, ऐपिमोनियम् टार्ट्रस, बेलाडोना, पेरोनीन, टिंक्चुरा प्रूनी-वर्जिनियनी, जेलसीमियम्, हायोनीन, स्ट्रैमोनियम् (धुस्तूर) सिरूपस प्रूनी-वर्जिनियनी, क्लोरल, क्लोरोफार्म कोडाइन (कोडीन), कोडीनी सैलीसिलास कोडीनी फॉस्फॉस, कोडीनी हाइड्रोक्लोराइड कोनायम् (शूकरान), कोनाईन (शूकरानसार) कोनाइनी हाइड्रोब्रोमाइडम्, कोनाइनी हाइड्रोक्लोराइडम्, लोबेलिया (अरण्य ताम्रकूट), लैक्टु केरियम् (अफ़ीम काहू), मॉर्फीन और उसके लवण, हायोसायमस (अजवाइन खुरासानी), हीरोईन, हीरोईन हाइड्रोक्लोराइड, कूठ, कटेरी, आमला, भूँई आमला, कर्कटशृङ्गी, कंटकारी, बृहती, हरीतकी, बहेड़ा, उन्नाब।

(८)यकृत् अवसादक—(Hepatic depressants)–मुसक्किन कबिद-अ०। देखो—पित्तस्राव अवरोधक।

(९) संवर्तनशक्त्यवसादक—(Metabolic depressants)–मुसक्किनात कुव्वत मुग़ैयरह्–अ०। वे औषध जो संवर्तन क्रिया को मंद करती हैं। ऐसी औषधें या तो शीघ्र ऑक्सि-डाइज़ (उप्मिद) हो जाती हैं या ऑक्सीहीमो-ग्लोबीन को एक ऐसा मज़बूत यौगिक बना देती है जिसमें वह अपने ओषजन वायव्य को पृथक् नहीं कर सकता। ये निम्न हैं—

क्वीनीन, बेन्ज़ीन, एसिड एलीजाइक, सेलीसीन, ग्लीसरीन, रीसार्सीन इत्यादि।

(१०) आमाशयावसादक–(Gastric sedatives–) मुसक्किनात मिअ्दह-अ०। देखो–आमाशय अवसादक।

(११) नाड्यवसादक (Nervine sedatives.)। मुसक्किनात अअ्साब-अ०। वे औषध जो वातवहानाड़ियों के क्षोभ को घटाकर उन्हें शांति प्रदान करें। वे निम्न हैं—

एसिडम् हाइड्रोब्रोमिकम्, एक्वा लारोसेरेसाई, एलाइन वेलेरियनास, एमोनियाई ब्रोमाइडम्, एमोनियाई-वेलेरियनास, ऐण्टिस्पेरीन, ऐण्टिमोनियम टार्टरेटम्, परारा (पेरेरा), पोटासियाई ब्रोमाइडम्, ट्रायोनाल, जेल्सीमियम (पीत चमेली), लिथियाई ब्रोमाइडम्, सोडियाई ब्रोमाइडम्, सेलिक्स नाइग्रा, काईमाफिला, फ्रेनेजूलम्, फेनेसेटीन, ग्रेरेलांज़, ऑम्फर (कर्पूर), कैम्फोरा मोनो ब्रोमेटा, नैफ्थोमोल, क्लाइफार मिम्नोमियाई ब्रोमाइडम्, स्ट्रोंशियाई ब्रोमाइडम्, लेक्टयूका, क्युप्युलस, क्युप्युलीन, मेन्थोल, ग्लीरिसुनेट, निकोली ब्रोमाइडम्, स्युरोनाल, डाइयनम्, वेरोनाल, वेर्देम विरीडी।

आयुर्वेदीय तथा यूनानी अवसादक औषध—

अपामार्ग, बड़ी इलायची, दारुहरिद्रा, अपराजिता, हरिद्रा, तुलसी, वनतुलसी, राम तुलसी, चन्दन श्वेत, चन्दन रक्त, उशीर, कमल, निलोफ़र, अनार, नीबू, शर्बती नीबू, अमरूद, मकोय, ग्वार की गुद्दी, सिरका, आमला, हरीतकी, गुलाबजल, बर्फ़, शीतल जल, नासपाती, ककड़ी के बीज, कद्दू के बीज, पालक के बीज, काहू, नारियल दरियाई, शैवाल, अहिफेन, यबरूज (बिलाडोना), सफेदा, अखरोट की चर्बी, कुक्कुटाण्ड श्वेतक (मुर्गी के अंडे की सुफ़ेदी), कनीर, निशाहरा, धतूरा, शूकरान, स्वानिकुचग्र, अजवाइन खुरासानी, खसखास, धनियाँ, कासनी, रसवत, बदरी (बेर), इंसबगोल, टेसू के फूल, अकाक्रिया, बीज अञ्जबार, मुर्का, तम्बाकू, जदवार, आलूबोखारा, रजत भस्म, प्रवाल भस्म वा कच्चा, सीप भस्म, बिहीदाना, तुख्म खुब्बाजी, ख़ित्मी, पारद, श्वेत कुष्माण्ड (पेठा) काकनज, कुन्दुर, इस्बंद, बीज जर्व, पित्तपापड़ा, जदवार, वत्सनाभ, गुडूची, मुलेठी, गम्भारी, कपूरी (शारिवा), श्यामलता, सुगंधबाला, पोटासियम् नाइट्रास, उशाव, बृहती, कंटकारी, कर्कटशृंगी, भूम्यामलकी, कपूर, हड़ और विडंग।

अवसादन avasádana-हिं० संज्ञा पुं०
अवसादनम् avasádanam-सं० क्लो० }
नीचा करना। बिठाना। वैद्यक में व्रण चिकित्सा का एक भेद। मरहम पट्टी। जिसमें कोमल और उठा हुआ मांस हो उन व्रणों को पूर्वोक्त कासीसादि द्रव्यों के चूर्ण को शहद में मिलाकर लगाने आदि से अवसादन कर्म करना (अर्थात् उनका मांस नीचा करना) चाहिए। यथा—

"उत्सन्न मृदु मांसानां व्रणानामवसादनम्।
कुर्य्याद्द्रव्यैर्यथोद्दिष्टश्चूर्णितैर्मधुनासह॥"
सु० चि० १ अ०।

अवसादनी avasádaní-सं० स्त्री० महाकरञ्ज। (Pongamia glabra.)

अवसान avasána-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) मरण। (२) सायंकाल। (३) समाप्ति अन्त। (४) सीमा। (५) विराम। ठहराव।

अवसितम् avasitam सं० क्लो०
अवसित avasita-हिं० वि० }
(१) मर्दित धान्य। (२) परिपक्व। (३) समाप्त।

अवसी avasí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० आवसित, प्रा० आवसिअ=पका धान्य] वह धान्य वा शस्य जो कच्चा नवान्न आदि के लिए काटा जाए। अवली। अरवन। गदर।

अवसृष्ट avasrishta-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अवसृष्टा] (१) त्यागा हुआ। त्यक्त। (२) निकाला हुआ। (३) दिया हुआ। दत्त।

अवसेकः avasekah-सं० पुं० रक्तमोक्षण, रक्त विस्रावण, शोणित निकालना व्यधन, फ़स्द देकर रक्त निकालना। (Venesection, phlebotomy, Bloodletting.)

अवसेकिमः avasekimah-सं० पुं० वटक, बड़ा। (See-vaṭakah.) वै० निघ०।

अवसेचनम् avasechanam-सं० क्ली०
अवसेचन avasechana-हिं० संज्ञा पु०
(१) जलसेचन। सींचना। पानी देना। सु०।(२) पसीजना। पसीना निकलना। (३) वह क्रिया जिसके द्वारा रोगी के शरीर से पसीना निकाला जाए। (४) जोंक, सींगी, तूँबी या फ़स्द देकर रक्त निकालना।

अवस्कन्दः avaskandah-सं० पु० अवगाहन स्नान, मज्जनपूर्वक स्नान करना, डुबकी लगाना। (Bathing, Ablution.)

अवस्कयनी avaskayani-सं० स्त्री० बहुदिनानन्तर प्रसूता गाय, अधिक समय में वा बड़ी उम्र की ब्याई गाय।

अवस्करः avaskarah-सं० पु०
अवस्कर avaskara-हिं० संज्ञा पु०
(१) विष्ठा, मल, विट् (Excrement, Fœces.)। (२) गुह्य देश। (Privy-parts, Pudendum.) मे० रचतुष्क। (३) सम्मार्जनादि-निक्षिप्त धूल्यादि, आवर्जना, झाड़ना फूँकना। (४) मलमूत्र।

अवस्करकः avaskarakah-सं० पु० सम्मार्जनी, मार्जनी, झाड़ू।

अवस्कव avaskavam-सं० क्ली० त्वचा के भीतर घुस जाने वाले दद्रु आदि के कीड़े। अथर्व०। सू० ३१। ५। का० २।

अवस्था avasthá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०]
(१) दशा। हालत। (state, condition.)। (२) समय। काल। (३) आयु। उम्र। (४) स्थिति। (५) वेदांत दर्शन के अनुसार मनुष्य की चार अवस्थाएँ होती हैं—जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। (६) स्मृति के अनुसार मनुष्य जीवन की आठ अवस्थाएँ हैं—कौमार, पौगंड, कैशोर, यौवन, बाल, तरुण, वृद्ध और वर्षीयान्। (७) कामशास्त्रानुसार १० अवस्थाएँ हैं–अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, संलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण। (८) निरुक्त के अनुसार छः प्रकार की अवस्थाएँ–जन्म, स्थिति, वर्धन, विपरिणमन, अपचय और नाश। (९) सांख्य के अनुसार पदार्थों की तीन अवस्थाएँ हैं—अनागतावस्था, व्यक्ताभिव्यक्तावस्था और तिरोभाव।

अवस्थांतर avasthántara-हिं० संज्ञा पु० [सं०] (Change of st[ate]) एक अवस्था से दूसरी अवस्था [में आ]ना। हालत का बदलना। दशापरिवर्त[न]।

अवस्थान avasthána-हिं० संज्ञा पु० (१) स्थिति। सत्ता। (२) स्थान। वास।

अवस्थापन avasthápana-हिं० संज्ञा [सं०] निवेशन। रखना। स्थापन करना।

अवस्थात्रय avasthátraya-हिं० पु० दर्शन के अनुसार जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्थाएँ हैं।

अवस्था विचार avasthá-vichára पु० दशा विचार, अवस्था का निश्चय कर[ना]।

अवस्यंदन avasyandana-हिं० संज्ञा [सं०] टपकना। चूना। गिरना।

अवह avaha-हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) वह वायु जो आकाश के तृतीय स्कंध पर [है।] ईथर (Æther)। (२) वह दिशा जि[समें] नदी नाले न हों।

अवहस्तः avahastah-सं० पु०
अवहस्त avahasta-हिं० संज्ञा पु० हस्त पृष्ठ, हाथ या हथेली का पिछला(पृष्ठ)भाग, उलटा हाथ (Back of hand.)। है[म]च०।

अवहारः,-कः avahárah,-kah-सं० पु०
अवहार,-कः avahára,-kah-हिं० संज्ञा पु० (१) ग्राहाख्य जल जन्तु, नाक। (Alligator) मे० रचतुष्क। (२) जलहस्ती। सूँस।

अवहालिका avahálika-सं० स्त्री० प्राचीर, बाहर का कोट, प्राकार, चार दीवारी। (A wall.)

अवहित avahita-हिं० वि० [सं०] सावधान। एकाग्र चित्त।

अवही avahi-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अवह=बिना पानी का देश] एक प्रकार का वृक्ष जो कांगड़े के ज़िले में होता है। इसकी अपेट और फोट की होती है। यह मैदानों में पैदा होता है और इसकी लकड़ी खेती के औजार बनाने तथा पत्तों के तबकों में काम आती है। हिं० श० सा०।

अवहीरा avahírá-हिं० काम वृक्ष। See-ása.

अवक्षिप्त avakshipta-हिं० वि० [सं०] गिरा हुआ।

अवक्षिप्त सन्धिः avakshipta-sandhih -सं० पुं० सन्धि विश्लेष, सन्धिभ्रंश, संधि च्युति (Dislocation.)। "अवक्षिप्त" में सन्धि दूर हट जाती है और तीव्र वेदना होती है। सु० नि० १५ अ०।

अवक्षुत avakshuta-हिं० वि० [सं०] जिस पर छींक पड़ गई हो।

अवक्षेपण avakshepana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवक्षिप्त] (१) गिराव। अधः पात। नीचे फेंकना। (२) आधुनिक विज्ञान के अनुसार प्रकाश, तेज या शब्द की गति में उसके किसी पदार्थ में होकर जाने से वक्रता का होना।

अवक्षेपः avakshepah-सं० क्लो० (१) (Astorion.)। (२) (Art of depressing.)

अवक्षेपणी avakshepaní-सं० स्त्री० वल्गा, लगाम। हे० च०।

अवक्षेपित avakshepita-हिं० वि० निम्नस्थित, वक्रस्थित, अधःक्षेपित। तलस्थाई, तहनशीं।

अवाँ aváń-हिं० संज्ञा पुं० दे० आवाँ।

अवा avá-हिं० त्रिकुश्रा घास। (Girardinia-heterophylla.)

अवाइद रदिय्यह् aaváida-radiyyah -अ० कुस्वभाव, ख़राब, आदत। बैड हैबिट्स (Bad habits.)-इं०।

अवाक़ी aváqi-अ० (ब० व०), औक़िय्यह् (ए० व०) देखो—ओक़ियह्।

अवाक् avák-हिं० वि० [सं० अवाक्] (१) वाक्य रहित, चुप, मौन, चुपचाप (Speechless)। (२) स्तब्ध। जड़। स्तंभित। चकित। विस्मित।

अवाक् पुष्पी avak-pushpi-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) हेमपुष्पी। (Hemapushpi.) र० मा०। (२) सौंफ। मधुरिका। (Madhuriká.) शतद्वया। रत्ना०। रा० नि० व० ४। (३) शतपुष्पी। सोया-हिं०। शुल्फा बं०। बड़ी सौंफ म०। (Soo-shatapushpah) रा० नि० व० ४। च० द० अर्श-चि० सुनिषण-चांगेरी घृत। (४) चोर पुष्पी। वह पौधा जिसके फूल अधोमुख हों। (Soo-chorapushpi) रत्ना०।

अवाक् पुष्पी घृतम् avákpushpi-ghritam
अवाक पुष्पादि घृतम् avák-pushpádi-ghritam
अवाक् पुष्प्यादि घृतम् avák-pushpyádi-ghritam

-सं० क्लो० अवाक पुष्पी (सौंफ), मधुरी, बला, दारुहल्दी, पृश्नपर्णी, गोखरू, बगंद, गूलर और पीपल वृक्ष की कोंपल प्रत्येक २-२ पल, इनका क्वाथ, पीपर, पीपरामूल, मिर्च, देवदारु, कुटज, सेमल का फूल, चंदन, ब्राह्मी, केशर, कायफल, चित्रक, नागरमोथा, फूलप्रियंगू, अतीस, शालपर्णी, कमल केशर, मजीठ, अमलतास, बेलगिरी, मोचरस, सोनापाठा, प्रत्येक १-१ तो० इन्हें ४ प्रस्थ जल में क्वाथ करे जब १ प्रस्थ शेष रहे तो सुनिषण्णक (कुरड़ू) और चांगेरी का रस २-२ प्रस्थ, गोघृत १ प्रस्थ मिश्रित कर पकाएँ।

गुण—इसके सेवन से सन्निपातातिसार, प्रवाहिका, गुदभ्रंश, आमजन्य रोग, शोथ, शूल, गुदारोग, मूत्रावरोध, मूढ़वात, मन्दाग्नि, तथा अरुचि का नाश होता है।

नोट—पहले कहे हुए आठों द्रव्यों का सोलह गुने पानी में क्वाथ करें। जब १ प्रस्थ शेष रहे तब उसे ग्रहण करना चाहिए। वंग से० सं० अर्श चि०। च० सं०।

अवाक् शीराः,-स् avák-shiráh,-s-सं०पुं० निम्न शिरस्क।

अवाक् संदेस avák-sandesa-हिं० संज्ञा पुं० [बंग० देश०] एक प्रकार की बँगला मिठाई।

अवागी avágí-हिं० वि० [सं० अवाग्विन्= अपटु] मौन। चुप।

अवाग्र avágra-सं० पुं० वक्र। (Oblique.)

अवाङ् मुख aváng-mukha-हिं० वि० [सं०] (१) अधोमुख, उलटा। नीचे मुँह का। मुँह लटकाए हुए। नत। (२) लज्जित।

अवाची aváchí-हिं० स्त्री० दक्षिण दिशा। (South.)

अवाचीनः aváchính-सं० त्रि०
अवाचीन aváchína-हिं० वि० } (१) विपर्यस्त, विपरीत। (Reverse.) मे० नचतुष्क। (२) दे० अवाङ्मुख।

अवाच्यदेशः aváchya-deshah-सं० पुं० योनि। (Vagina) त्रिका०।

अवाज़िम avázim-अ० (ब० व०), आज़िमह् (ए० व०) दाढ़ें।

अवाजिम áavájim-अ० दष्ट्, दंत, दाँत। टीथ (Teeth)-इं०।

अवात aváta-हिं० वि० [सं०] वातशून्य। जहाँ वायु न लगे। निर्वात।

अवातिब avátiba-अ०(ब० व०), वतब (ए० व०) दूध की शीशी। बच्चे को दूध पिलाने की शीशी।

अवान áaván-अ०(१)वह स्त्री जिसके पती मौजूद हों (Mistress.)। (२) वृद्धावस्था। अधेड़ उमर।

अवानम् avánam-सं० क्ली० शुष्क फल आदि। (Dry fruits,etc.) श० र०।

अवानी बूटी avání-búṭí-पं० यह पुदकच्छा, जखटी, करिडयारी, अरान, लान। बै० लिम्बेटा (Ballota limbata, Benth.) ऑटोस्टेजिया लिम्बेटा (Otostegia limbata, Benth.)-ले०। इं० मे० प्लां०।

उत्पत्तिस्थान—पञ्जाब, झेलम से प... की पथरीली भूमि की निम्नस्थ पहाड़ि... माल्ट रेञ्ज पर्यंत।

प्रयोगांश—पौधा, पत्र, (औषध... चारा)।

उपयोग—इसकी पत्तियों के स्व... बालकोंके मसूड़ों पर लगाते हैं। (स्टयुवर्ट)

अवान्यम् aványam-सं० क्ली० देखो- भ्रन।

अवाप्त avápta-हिं० वि० [सं०] ... लब्ध।

अवार áavár-अ० दोष, कबाहत, बुराई।

अवारम् avárام-सं० क्ली०
अवार avára-हिं० संज्ञा पुं० नदी आदि का पूर्व पार। नदी के इस ... किनारा। सामने का किनारा। पार का ...

अवारण avárana-हिं० वि० [सं०] ... जिसका निषेध न हो सके। ... (२) जिसकी रोक न हो सके। ... अनिवार्य।

अवारणीय aváraniya-हिं० वि० [... (१) जो रोका न जा सके। बे रोक। अनि... (२) जिसका अवरोध न हो सके। ... हो सके। (३) जो आराम न हो। ... संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसा... का वह भेद जो अच्छा न हो। असाध्य ... यह आठ प्रकार है वात, प्रमेह, कुष्ठ, ... भगंदर, अश्मरी, मूढ़गर्भ और उदर रोग।

अवारपारः avárapárah सं० पुं०
अवारपार avárapára-हिं० संज्ञा पुं० समुद्र। (A sea)

अवारिक़ áaváriqa-अ० भेदक दन्त ... केनाइन (Canine.)-इं०।

अवारिका avárika-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० धनियाँ। (Coriandrum sativum.)

अवारिके avárike-कना० तरवड़-हिं०। (Cassia auriculata, Linn.) मेमो०।

अवारिज़ ávárizá-अ० (ब० व०), आरिज़ (ए० व०) दशा व कैफ़ियत, वह दशा एवं कैफ़ियत जो किसी अन्य दशा के आधीन हो।

अवारिज़ नफ़्सानिय्यह ávárиz-nafsániyyah-अ० अअ्राज़ या इन्फ़िआलात नफ़्सानी-अ०। मानसिक दशाएँ, मनोविकार कषाय। यह छः हैं—(१) दुःख (ग़म), (२) श्रम (हम्म), (३) भय (ख़ौफ़), (४) क्रोध (ग़ुस्सह), (५) आनन्द (ख़ुशी) और (६) लज्जा (शर्मिन्दगी)। पैशन्स् (Passions.)-इं०।

अवारी avári-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० वारण] बाग। लगाम।
हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अवार] (१) किनारा। मोड़।
(२) मुख-विवर। मुँह का छेद।

अवासिफ़ ávásif-अ० पृथ्वी की मारक वायु।
नोट—सामुद्रीय विघातक वायु को "तवासिफ़" कहते हैं।

अवासिल avásil-अ० (ब० व०), वासिलह (ए० व०) माँग, हुए चोटी के बाल लगाने वाली स्त्री।

अविः avih-सं० पुं०
अवि avi-हिं० संज्ञा पुं० } मेष, भेड़ (A ram.)। मा० पू०। (२) मूषिक। See-Múshikah.। (३) कम्बल। See-Kambalah.। मे०। (४) मत्स्य भेद (A sort of fish.)। (५) प्राचीर (An enclosure.)। (६) वायु (Air.)। (७) सूर्य। (८) आक। मंदार। (९) छाग। बकरा। (१०) पर्वत। (११) मयूर।
-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१२) कुलथिका, कुलथी (Dolichos biflorus.)। "अविः कुलत्थो बहुला कुलत्थको कुलत्थिका" । रत्ना०। (१३) मेषी। (See-meshí) वि० रा० नि०। (१४) ऋतुमती, रजस्वला। (A woman during menstruation.) अम०। (१५) लज्जा।

अविकम् avikam-सं० क्लीo (१) हीरक, हीरा। (Diamond.) रा० नि०। (२) मेष। (A ram.)

अविकमांसम् avika-mánsam-सं० क्ली० मेषमांस। (Flesh of a ram.) वै० निघ०।

अविकल avikala-हिं० वि० [सं०] (१) जो विकल न हो। बिना उलट फेर का। ज्यों का त्यों। (२) पूर्ण। पूरा। (३) निश्चल। अव्याकुल। शांत।

अविकल्प avikalpa-हिं० वि० [सं०] (१) जो विकल्प से न हो। निश्चित। (२) निःसंदेह। असंदिग्ध।

अविकाः avikáh-सं० स्त्री० छोटी छोटी भेड़ें। अथर्व०। सू० १२६। १६। का० २०।

अविकार avikára-हिं० वि० [सं०] जिसमें विकार न हो। विकार रहित। निर्दोष।
संज्ञा पुं० [सं०] विकार का अभाव।

अविकारी avikári-हिं० वि० [सं० अविकारिन्] [स्त्री० अविकारिणी] (१) जिसमें विकार न हो। विकार शून्य। निर्विकार।
(२) जो किसी का विकार न हो।

अविकाशी avikáshi-हिं० वि० [सं० अविकाशिन्] [स्त्री० अविकाशिनी] जो विकाशी न हो। निकम्मा। निष्क्रिय।

अविकृत avikrita-हिं० वि० पुं० [सं०] जो विकृत न हो। जो विकार को प्राप्त न हो। जो बिगड़ा न हो।

अविकृति avikriti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] विकार का अभाव।

अविक्रांत avikrānta-हिं० वि० [सं०] दुर्बल, कमज़ोर।

अविक्रिय avikriya-हिं० वि० पुं० [सं०] [स्त्री० अविक्रिया] जिसमें विकार न हो। जिसमें विगाड़ न हो। जो बिगड़ा न हो।

अविगड्डे avigaddo-कन० घुइँ, आलुकी। (Arum colocasia.) इं० मे० मे०।

अविगन्धनी avigandhani
अविगन्धिका avigandhikā } -सं० स्त्री०
अविगन्धी avigandhi

(१) अजगन्धा, वन यमानी, (२) तिलोड़ी बब्बरी। ममुई तुलसी। (Ocimum gratissimum) रा० नि० व० ४।

अविग्नः,-घ्नः avignah,-ghnah-सं० पुं० (१) पानीयामलक जल सेवरा। (Flacourtia cataphracta.) सा० सु०। (२) करमर्द वृक्ष, करौंदा। (Capparis corundas.) करम्चा गाछ-बं०। कड़वट-महा०। अम०।

अविग्रह avigrah-हिं० वि० [सं०] जिसके शरीर न हो। निरवयव, निराकार।

अविघात avighāta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] विघात का अभाव।

अविचल avichala-हिं० वि० [सं०] जो विचलित न हो। अचल, स्थिर। अटल।

अविच्छिन्न avichchhinna-हिं० वि० [सं०] अभिन्न, संलग्न, भेद-रहित, युक्त, अविरल। (२) अविच्छेद, अटूट, लगातार।

अविच्छेद avichhheda-हिं० वि० [सं०] जिसका विच्छेद न हो। अटूट, लगातार। विच्छेद रहित।

अविजन avijana-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अभिजन] कुल। वंश।

अवितक्रम् avitakram-सं० क्ली० मेषी-तक्र, भेड़ का तक्र। (Buttermilk, with a fourth part water prepared from sheep's milk)

गुण—भेड़ का तक्र, सारक, दीपन, कटुक (चरपरा), उष्ण, लघु तथा पित्तकारक है और रक्तदोषक तथा कफ वात विनाशक है। द्रव्य० गु०।

अवितत् avitat-हिं० वि० [सं०] विरु उलटा।

अवितत्करण avitatkaran-हिं० संज्ञा [सं०] विरुद्धाचरण।

अविता avitā-सं० स्त्री० मेषी, भेड़ी। (ewe.)

अवितैश avitaish-अ० २ तो० ३ मा० ६ किसी किसी के मत से १ मा० १ रत्ती का विशेष।

अवित्यजः avityajah-सं० पुं०
अवित्यज avityaja-हिं० संज्ञा पुं० पारद, पारा। Mercury (Hydrargyrum.) ग्रन्थ० कल्प०। रा० व० १३। राजनिघण्टु में भी "अविध" देखा पाठ आया है।

अविथोली avitholi-मल० काला नागकेसर (Kālā Nāgkesara.) फा० ३ भा०।

अविदग्धः avidagdhah-सं० वि०
अविदग्ध avidagdha-हिं० वि० (१) अनभिज्ञ, खट्टा नहीं। विजयर० म त्रि०। (२) जो जला या पका न कच्चा।

अविदग्धम् avidagdham
अविदुग्धम् avidugdham } -सं०
मेषी दुग्ध, भेड़ का दूध। (Sheep's milk.) हला०। देखो—आविक क्षीर

अविदु (दू) ष्यम् avidu,-dū-shyam क्ली० मेषी दुग्ध, भेड़ का दूध। (Sheep's milk.) हला०।

अविद्धकर्णा aviddha-karnā-सं० (१) पाठा। (Cissampelos hernandifolia.) आकनादि-बं०। भद्रा०।

कौ०। जातीफला वटी। (२) भृङ्गराज, भंगरा-हिं०। भीमराज-बं०। (Eclipta erecta.) अत्रि०।

अविद्धकर्णिका,-र्णी aviddha-karṇiká,-rṇí-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) पाठा, पाढ़ा नाम की लता। (Cissampelos.) शाक्यादि-वं०। अत्रि० जातीफला वटी।

अविद्धा aviddhá-सं० स्त्री० दुष्ट शिरा व्यधन अर्थात् शिराओं का अनुचित रूप से वेध हो जाना। जो हीन शस्त्र के कारण बहुत छेद की गई हो वह "अपविद्धा" है। सु० शा० ८ अ०।

अविद्वेष avidvesha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] विद्वेष का अभाव। अनुराग। प्रेम।

अविधवा avidhavá-हिं० वि० [सं०] सधवा, सौभाग्यवती, सुहागिन।

अविधेया avidheyá-सं० स्त्री० (Involuntary muscle) अनैच्छिक या स्वाधीन मांस पेशी।

अविध्यदृष्टि avidhydrishṭi-सं० स्त्री० जो रोगी शिरा वेध के योग्य नहीं है। जो दृष्टि-रोग, पीनस और खाँसीसे पीड़ित है, जो अजीर्ण, भीरु, वमित तथा शिर, कान और आँख के शूल से पीड़ित है, उसके लिंगनाश को न बेधना चाहिए। वा० अ० १४।

अविनाश avináṣha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] विनाश का अभाव। अक्षय।

अविनाशक avináṣhaka-हिं० वि० पुं० (Nonlethal) अघातक, अमारक, विनाशक मात्रा से कम।

अविन्दनः avindanah-सं० पुं० वड़वानल। See varayánalah.

अविपक्ति(त्ति)कर चूर्णम् avipakti,-tti-karachúrṇam
अविपत्यकर चूर्णम् avipatyakarachúrṇam
सं० फली० सोंठ, मिर्च पीपर, हड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, वायविडंग के बीज, इलायची, तेजपात, तुल्य भाग, एवं तुल्य लवंग ले चूर्ण करें। पुनः सबके द्विगुण निशोथ का चूर्ण फिर सर्व तुल्य मिश्री योजित कर इसे किसी स्निग्ध पात्र में स्थापित करें।

मात्रा—२ से ८ मा० तक।

गुण—इसे शीतल जल या नारिकेल के जल के साथ पान करने से अम्लपित्त, शूल, अर्श, २० प्रमेह, मूत्राघात और पथरीका नाश होता है।

पथ्य—दूध भात। यह अगस्तमुनि कथित अविपत्यकर चूर्ण है। यह सै० सं० अम्लपित्त चि०। र० सा०सं०। भैष०। प्रयोगा०। सा० कौ०। नोट—त्रिकटु आदि प्रत्येक १ तो०, लवंग चूर्ण ११ तो०, निशोथ की जड़ का चूर्ण ४४ तो० और शर्करा ६६ तो० लें।

अविपटः avipaṭah-सं० पुं० ऊर्णामय वस्त्र कम्बल आदि। (Blanket etc.)

अविपन्न avipanna-हिं० वि० [सं०] स्वस्थ, नीरोग।

अविपर्यय avipa1yaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] विपर्यय या विकार का न होना।

अविपाल avipála } -हिं० संज्ञा पुं० [सं०] गँडेरिया। (A shepherd.)
अविपालक avipálaka

अविपाकः avipákah-सं० पुं० अपरिपाक। अपकता।

अविपित्तक avipittaka-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] एक चूर्ण जो अम्लपित्त के रोग में दियाजाता है। देखो—अविपक्ति(त्ति)करचूर्णम्

अविप्रियः avipriyah-सं० पुं० श्यामाक तृण। शामा घास-बं०। साँवाँ-हिं०। A kind of grain generally eaten by the Hindus (Panicum frumentaceum; P. colonum.) रा० नि० व० १६।

अविप्रिया avipriyá-सं० स्त्री० श्यामालता, कृष्ण शारिवा। (Ichnocarpus frutescens.) रा० नि०। (२) श्वेतालता देख (See-shvetá.)। (३)कोमल-हिं०, सं०। आट्रियान कोही-अफ०। फितर सालियून-भा० बाजा०, यु०। (Prangos pabularia, *Lindl.*) फा० इं० २ भा०।

अविबत्तम avibattam-ता० सुगंधबाला, बालक। (Pavonia odorata.) इं० मे० मे०।

अविभक्त avibhakta-हिं० वि० [सं०] (१) जो अलग न किया गया हो। मिला हुआ। (२) विभाग रहित। (३) अभि०। एक।

अविभुक avibhuk-सं० पुं० व्याघ्र। (A tiger)। लांडगा-मह०। वै० निघ०।

अविमरीष(स)म् avimarísha,-sa,-m-सं० क्लो० आविक्षीर, भेड़ का दूध, मेषी का दुग्ध (Sheep's milk.)। हला० हें० च०।

अविमुक्त avimukta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कनपटी।

अविमुक्तकः avimuktakah-सं० पुं० माधवी लता। (See-Mádhaví-latá.) वै० निघ०।

अविमुक्तका avimuktaká-सं० स्त्री० (१) तिन्दुक वृक्ष। (Diospyros Cordifolia.) तेंद-बं०। तेन, केंदु-हिं०। टेंभुरणी-मह०। (२) काक तिन्दुक, तिन्दुक विशेष, तेंद। (Diospyros tomentosa.) वै० निघ०।

अविमोचम् avi-mocham-सं० क्लो० आविक क्षीर, मेषी दुग्ध, भेड़ का दुग्ध। (Sheep's milk.) र० मा०।

अवियोग aviyoga-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) वियोग का अभाव। (२) संयोग। मिलाप।-वि० [सं०] (१) वियोग शून्य। जिसका वियोग न हो। (२) संयुक्त। सम्मिलित। एकीभूत।

अविरल aviral-हिं० वि० [सं०] (१) जो विरल वा भिन्न न हो। मिला हुआ। (Thick.) (२) घना। सघन। अव्यवच्छिन्न।

अविरि aviri-ते० नीलवृक्ष। (Indigofera Indica.)

अविरुहा aviruhá-सं० स्त्री० मांसरोहिणी। (See-mánsarohiní.)

अविलपोरी avila-porí-मल० सरहटी-हिं०। पताल भेदी, सर्पाक्षी। (See sarpákshí.)

अविलम्बित avilambita-हिं० वि० प्रतिलम्बित, जो अस्त्र द्वारा काटने से अस्थि मात्र शेष रहे उसे "प्रतिलम्बित" कहते हैं।

अविला avilá-सं० स्त्री० मेषी। (See-meshí) हे० च०।

अविलेय-avileya हिं० वि० अनघुल। जो विलीन न हो। जो किसी प्रकार के तरलमें न घुले। (Insoluble.)

अविलेयता avileyatá-हिं० संज्ञा स्त्री० (Inssolubility.) विलीन न होनेका धर्म। अनघुलपन।

अविवृक्षः avi-vrikshah-सं० पुं० मेषशृंगी। मेढ़ा सिंगी। See-Meshashrigí.

अविशिरम् avishiram-सं० क्ली० सूर्यावर्त फल, हुलहुल का फल, हुरहुर। हुरहुर का बीज। (Cleome Viscosa) वै० निघ०।

अविश्वासा avishvásá-सं० स्त्री० चिर प्रसूता गाय, अधिक काल की ब्याई हुई गाय। शु० च०।

अविषः avishah-सं० पुं० (१) समुद्र। (The sea)। (२) आकाश। (Sky).

अविष avisha-सं० क्लो० निर्विष, विष रहित, बिनाज़हर का। (Nonvenomous, not poisonous)। अथर्व०। सू० ३। १४। का०।

अविषा avishá-सं० स्त्री० अतिविषा, अतीस। (Aconitum heterophyllum) ए०

नि० व० ६ अ० (२) निर्विषी तृण, निर्विषी, निर्विषी घास। वै० नि०। (२) एक जड़ी। जद्वार। यह सोंथे के समान होती है और प्रायः हिमालय के पहाड़ों पर मिलती है। इसका कंद भतीस के समान होता है और साँप बिच्छू आदि के विष को दूर करता है। (Curcuma zedoaria.)

अविसी avisí-ते० अगस्त। अगस्तिया (Agati grandiflora.)

अविसोढम् avisodham-सं० पली० अवि-क्षीर, भेड़ी का दूध।

अविस्रम् avisram-सं० त्रि० पूति-गंधरहित, दुर्गंधि रहित। (Avoid of ill-smelling.) च० चि० २ अ०।

अवी avi-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) वन कुलत्थ, वन कुलथी। Dolichos biflorus (The wild var. of-) र० मा०। (२) ऋतुमती स्त्री, रजस्वला स्त्री। (A woman during menstruation.) हे० च०।

अवीकम् avikam-तु० फेफड़ा, फुप्फुस। (The lungs.)

अवीफ़ूस aviqus-यू० फ़ारसीय, नख। (See—nakha.)

अवीघ्न avighna-सं० बुड़ा वृक्ष। See—Bunká,

अवीज धर्म्मी avija-dharmmi-सं० त्रि० जो बीज धर्मी न हो अर्थात् वह जिसमें बीज रूप होकर कोई पदार्थ न रहे। वह आत्मा है। क्योंकि बीजरूप होकर कोई पदार्थ जीवात्मा में नहीं रहते; किन्तु प्रकृति में रहते हैं इससे यह पुरुष (आत्मा) बीज धर्म्मी नहीं है। सु० शा० १ अ०।

अवीजा avijá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० गोस्तनी के समान गुणवाली द्राक्षा, किशमिश वे दाना। Raisin; currant (uvæ)। भा०। देखो—अंगूर।

अवीदुग्धम् avidugdham-सं० क्ली० मेषी दुग्ध, भेड़ी का दूध। च० द०।

अवीना aviná-एक बूटी का निचोड़ है (बूटी के सम्बन्ध में मतभेद है)।

अवी(वे)ना ओरिएण्टेलिस avena orientalis-ले० विलायती जौ, जई, खरताल।

अवी(वे)ना प्युबीसेन्स avena pubescens, L.-ले० यह एक प्रकार की घास है जो चारा के काम आती है। मेमो०।

अवी(वे)ना प्रेटेन्सिस avena pratensis, *Linn.*-ले० एक प्रकार की घास है जो चारा के काम आती है।

अवी(वे)ना फैचुआ avena fatua, *Linn.*-ले० कुल्दुर, गन्दल, जई-हिं०। गोजंग, कासम्म ऊत्वा-पं०। प्रयोगांश-पौधा। उपयोग—औषध व खाद्य (पशु)। मेमो०।

अवी(वे)ना सेटाइवा avena, sativa, *Linn.*-ले० जौ, विलायती जौ-हिं०। एक प्रकार की घास है जो आहार व पशुओं के चारा के काम में आती है। मेमो०।

अवी(वे)नीन avenin-इं० अवीना बीज सत्व। देखो—जई। इं० मे० मे०।

अवी मूत्रम् avimútram-सं० क्ली० मेषी का मूत्र, भेड़ी का मूत्र। च० द०।

अवीरई avirai-ता० } तरवड़-हिं०, द०। (Cassia auriculata, *Linn.*)
अवीरम् aviram-मल० }
अवीरी aviri-ता० }
इं० मे० मे०। फा० इं० १ भा०।

अवीरघ्नी aviraghni-सं० जो जीवन का नाश करे। अथर्व०।

अवीर्रहोआ एसिडा averrhoa acida-ले० हरफारेवड़ी।

अवार्रहोआ करम्बोला averrhoa carambola, *Linn.*-ले० करमल-हिं०। कामरांगा-बं०। कर्मुरङ्ग-सं०। खमरक, करमर-बम्ब०। खमूरक-द०। तामूरिया-ता०। करोमोंगा-ते०। प्रयोगांश—अपक्व फल, पत्र और मूल। उपयोग—रंग, औषध और खाद्य। मेमो०।

अवीर्रहोआ याइलिम्बाई averrhoa bilimbi, *Linn.*-ले० बिलिम्बी-बं०, हिं०। उपयोगांश—पुष्प व फल भक्ष्य है। मेमो०।

अवीवरन् avívaran--सं० वरण या वरुण नामक वृक्ष बरना। (Crataeva tapia) अथर्व०। सू० ८५। १। काण्ड।

अवीसम् avísam--फ़ा० सातर, पुदीना कोही। साथर, साथर्-हिं०।

अवीसीनिया ऑफ़िसिनेलिस avicennia officinlis, Linn.-ले० सीना-बं०। मड; मड़मड़-ने०। तीवर-सिंध। ओपपटा-मल०। थमे-बर०।

प्रयोगांश—त्वक्, गिरी व भस्म।
उपयोग—रङ्ग व भक्ष्य।

अवीसीनिया टोमेण्टोसा avicennia tomentosa, Jacq.-ले० व्यना-हिं०, बं०। तिम्मर-सिंध। मड़-मड-ते०। (Avicennia, Downy leaved.)

प्रयोगांश—मूल व बीज।
उपयोग—औषध।

अवीसीनिया, डाउनी लीव्ड avicennia, downy leaved-इं० यू अली सीना, यू अली, बीना। (Avicennia tomentosa.) इं० हैं० गा०।

अवुकः avukah-सं० पुं० छाग, बकरा। (A goat.) श० र०।

अवूरा avúrá-हिं० आमला, केंवरा। (Phyllanthus emblica.)

अवृद्धः aviddhah-सं० पुं० पुष्प वृक्ष भेद, पाषाण पुष्प। पत्थर फुल-मह०। वै० निघं०।

अवेगी avegí-सं० स्त्री० विधारा। वृद्धदारक। रा० नि०।

अवेद्यः avedyah-सं० पुं० } (१) गो
अवेद्य avedya-हिं० संज्ञा पुं० } वत्स, बछवा, बछड़ा। (A calf.) श० र०। (२) नादान बच्चा।

वि० पुं० [सं०] (१) अज्ञेय। (२) अलभ्य।

अवेद्या avedyá-हिं० वि०, स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिससे विवाह नहीं कर सकते। अविवाह्य स्त्री।

अवेना avena-ले० देखो—अवीना।

अवेन्स avens-इं० वाटर अवेन्स (Water-avens.)।

अवेर्‌होआ एसिडा averrhoa acida-ले०, हरफारेवड़ी। देखो—अवीर्‌होआ एसिडा।

अवेल avela-नारियल का तैल, नारिकेल तैल (Cocoanut oil.)।

अवेला avelá-सं० स्त्री० पूग, चर्वित, चिकनी सुपारी। चिक्कन-सुपारि- बं०।

अवेश avesha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आवेश] (१) किसी विचार में इस प्रकार तन्मय हो जाना कि अपनी स्थिति भूल जाय। आवेग। जोश। मनोवेग। (२) भूतावेश। भूत चढ़ना। किसी भूत का सिर आना। भूत लगना।

अवेक्षण avekshana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवेक्षित, अवेक्षणीय] (१) अवलोकन देखना। (२) निरीक्षण। जाँच पड़ताल।

अवैद्य avaidya-हिं० वि० [सं०] जो वैद्य न हो। जो वैद्यक शास्त्र को न जानता हो।

अवोइस avois-हिं० अरुई, घुइयाँ। (Colocasia antiquorum.) मेमो०।

अवोदम् avodam-सं० फ़ा० आर्द्रक, आदी अदरक। (Zingiber officinalis.) जटा०।

अवांतर avántara-हिं० वि० [सं०] अंतर्गत मध्यवर्ती। बीच का।

संज्ञा पुं० [सं०] मध्य। भीतर। बीच।
यौ०—अवांतर, दिशा-बीच की दिशा। विदिशा।

अवांतर भेद—अंतर्गत भेद। भाग का भाग।

अवाँसी avánsí-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अवसित] वह बोझ जो फ़सल में से पहिले पहल

काया जाय। यह नत्रत्र के लिए काम में लाया जाता है। अञ्जन। दृशी। कजल। काजली।

अब्दः avdah-सं० पुं० (१) सम्बर, वर्ष (A year.)। (२) मुस्तक, मोथा (Cyperus rotundus.)। (३) मेघ। See-Megha (अ हि० श०)।-क्री० (४) अभ्र, अभ्रक। Talc (Mica.)

अब्दसारः avdasáran-सं० पुं० कपूर भेद। (A sort of camphor.)

अव्यक्त avyakta-हिं० वि० [सं०] (१) अदृश्य, अप्रकट, छिपा हुआ, अप्रकाशित अप्रत्यक्ष (Indistinct, invisible)। (२) अज्ञात। (Imperceptible) संज्ञा पुं० [सं०] (१) कामदेव। (२) वेदान्त शास्त्रानुसार अज्ञान। सूक्ष्म शरीर और सुषुप्ति अवस्था। (३) जीव। (४) परमेश्वर, परमात्मा। (The Supreme Being or Universal Spirit.)। (५)प्रकृति। स्वभाव। टेम्परामेण्ट (Temperament.)

अव्यक्तमूलप्रभव avyakta-múla-prabhava-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] संसार। जगत।

अव्यक्तम् avyaktam-सं० क्ली० (१) प्रकृति। मैटर (Matter)-ई०।
" अखिलस्य जगतः सम्भव हेतुरव्यक्तं नाम।"
सु० शा० १ अ०। (२) आत्मा। सोल (Soul.)-ई०।

अव्यक्तराग avyaktarága-हिं० संज्ञा पुं०
अव्यक्तरागः avyakta-rágah-सं० पुं०
ईषत् लोहित वर्ण, हलका लाल, अरुण। पर्याय—अरुणः (अ), ताम्रः। (२)गौरः (ज)। गौर, श्वेत।

अव्यक्तलिंग avyakta-linga-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] वह रोग जो पहचाना न जाए।

अव्यक्ता avyaktá-सं० स्त्री० कृष्ण गोकर्णी, कृष्णापराजिता। काला अपराजिता-बं०। काली गोकर्णी-मह०। Clitorea ternatea (The black var. of-) ये० नि०।

अव्यक्तानुकरण avyaktánukarana-हिं० संज्ञा पुं० [सं] शब्द का अस्फुट अनुकरण। जैसे मनुष्य मुर्गे की बोली ज्यों की त्यों नहीं बोल सकता, पर उसकी नकल करके कुकडूँ कूँ बोलता है।

अव्यग्र avyagra-हिं०वि० } (१)जो व्यंग
अव्यङ्गः avyangah-सं०त्रि० } या टेढ़ा न हो।
अव्यंग avyanga-हिं० वि० } सीधा। अविकलांग। (२) घबराहट रहित, अनाकुल। -स्त्री० शूकशिम्बी, केवाँच। आलाकुशी-बं०। (Mucuna pruriens).

अव्यंगांग avyangánga-हिं० वि० [सं०] [स्त्री० अव्यंगांगी] जिसका कोई अंग टेढ़ा न हो। सुडौल।

अव्यंगा avyangá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] केवाँच। कौंच। कोंच। (Mucuna pruriens.)

अव्यंजन avyanjana-हिं० वि० [सं०] दे० अव्यञ्जनः।

अव्यञ्जनः avyanjanah-सं० त्रि० }
अव्यञ्जन avyanjana-हिं वि० }
(Hornless.) शृंगहीन, सींग रहित, बिना सींग का (पशु), ढूँडा। (२) चिह्न शून्य। हलका।

अव्यंडा avyandá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० अव्यण्डा।

अव्यण्डः,-ण्डा avyandah,-ndá -सं० पुं०, स्त्री० }
अव्यण्डा avyandá-हिं० संज्ञा स्त्री० }
(१) भूम्यामलकी, भुँई आमला (Phyllanthus neruri.)। (२) कपिकच्छु, केवाँच। आलाकुशी-बं०। (Corpopogon pruriens.)। च० चि ३ अ०।

अव्यथा avyathá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) स्थल कमलिनी, स्थलपद्म, पद्मचारिणी। (Ionidium suffruticosum).

भा० पू० १ भा० । रा० नि० व० ११ । (२) हरीतकी, हड़ (Terminalia chebula) । (३) महाश्रावणी, गोरखमुण्डी । (Sphœranthus hirtus.) भा० पू० १ भा० गु० व० । (४) आमलकी, आमला (Phyllanthus emblica.) । (५) लक्ष्मणा, लक्ष्मणा मूल (Lakshamaná) । (६) सोंठ ।

अव्यथिः,-थी avyathih,-thi-सं० पुं० अश्व, घोड़ा । (A horse.) वा० सू० ४ अ० प्रजास्थाo ।

अव्यथिषः avyathishah-सं० पुं० (१) समुद्र (A sea.) । (२) सूर्य । (The sun.) त्रि० को० ।

अव्यथिषी avyathishi-सं० स्त्री० (१) पृथिवी (Earth.) । (२) अर्द्ध रात्रि, मध्य निशा, आधी रात । (Midnight.)

अव्यथ्या avyathyá-सं० स्त्री० हरीतकी, हड़ । (Terminalia chebula.) भा० पू० १ भा० ।

अव्यभिचारी avyabhichári-हिं० वि० [सं० अव्यभिचारिन्] जो किसी प्रतिकूल कारण से हटे नहीं ।

अव्यया avyayá-सं० स्त्री० गोरखमुण्डी । महा श्रावणी । गोरखमुण्डी-महo । गोरखचिकुलि -बं० । (Sphaeranthus Hirtus.) वै० निघ० ।

अव्यर्थ avyartha-हिं० वि० [सं०] (१) जो व्यर्थ न हो । सफल । (२) सार्थक । (३) अमोघ ।

अव्याध्या avyádhyá-सं० स्त्री० दुष्ट शिरा वेधन । जो शिरा शस्त्रकर्म (छेदन, वेधन) से वर्जित है (उसका वेध होना) अव्याध्या कहाती है । यथा—"अशस्त्रकृत्या अव्याध्या" । सु० शा० ८ अ० ।

अव्यापन्न avyápanna-हिं० वि० [सं०] जो मरा न हो, जीवित, जिंदा ।

अव्रण शुक्रः avrana-shukrah-सं० पुं० अव्रणशुक्र avrana-shukra-हिं० संज्ञा पुं० नेत्र के काले भाग (काली पुतली) में होने वाला रोग विशेष, आँख का एक रोग, जिसमें आँख की पुतली पर सफ़ेद रंग की एक फूली सी पड़ जाती है और उसमें सुई चुभने के समान पीड़ा होती है ।

लक्षण—अभिष्यन्द के कारण यदि नेत्र के कृष्ण भाग में श्वेत वर्ण की, जलाश्रावयुक्त तथा अतिपीड़ा और आंसुओं से व्याप्त न हो, पूर्व जैसे आकाश में बादल होते हैं इस प्रकार की फूली हो तो उसे अव्रण (व्रण रहित) शुक्र (फूली) कहते हैं और वह सरलतापूर्वक साध्य होती है (अर्थात् आराम हो जाती है) । और यदि यही फूली गंभीर और गाढ़ी हो (बहुत दिन की) हो जाए तो उसे कष्टसाध्य कहते हैं । सु० उ० ५ अ० ।

जो फूला अभिष्यन्दात्मक (आँखों के दुखने से उत्पन्न हुआ) कृष्ण भाग में स्थित हो और सींग (सिंगी, तुम्बी) आदि से चूसने के समान पीड़ा करे और शंख, चन्द्रमा तथा कुन्द के फूल के समान सफेद, आकाश के समान पतला और व्रण रहित हो उस शुक्र को सुखसाध्य कहते हैं । जो शुक्र (फूला) गहरा तथा मोटा हो और बहुत दिनों का हो उसको कष्टसाध्य कहते हैं ।

असाध्यता—जिस फूले के बीच में गढ़ा सा पड़ जाए या उसके चारों ओर मांस बढ़कर उसको घेर ले, अचल न रहे अर्थात् एक जगह से दूसरी जगह में चला जाए, सूक्ष्म शिराओं से व्याप्त हो, दृष्टि का नाशक, दूसरे पटल में उत्पन्न और चारों ओर से लाल हो तथा बहुत दिनों का हो तो ऐसे शुक्र को वैद्य त्याग देवे । मा० नि० ।

अव्रतः avratáh-सं० पुं० वह ज्वर जो बिना नियम के आता है । अथर्व० सू० ११ । २ । का० ७ ।

अव्वगुड़ avvaguda

अव्वगुड़ पण्डु avvagúda-pandu ...-ते० आडुम्बु, महाकाल, लाल इन्द्रायन ।

(—Trichosanthes Palmata, Roxb.) स० फा० इं०।

अव्वल avvala-हिं० वि०, पु० [अ०] (१) पहला। आदि का। प्रथम। (२) उत्तम। श्रेष्ठ।–संज्ञा पु० आदि। आरम्भ।

अव्वलिय्यतुल् विलादत avvaliyyatul-vilādat–अ० विक्रियतुल् विलादत, प्रथम बार शिशु जननेवाली स्त्री, वह स्त्री जो प्रथम बार शिशु प्रसव करे, प्रथम प्रसवा। प्राइमा पारा (Primapara)–इं०।

अव्वलिय्यह् avvaliyyah-अ० पहला, प्रथम। (First)

अश्क़ aashaqah-अ० देखो-इश्क़। (āiṣhq.)

अशकुन ashakuna-हिं०, संज्ञा पु० [सं०] कोई वस्तु वा व्यापार जिससे अमंगल की सूचना समझी जाए। बुरा शकुन। बुरा लक्षण।

अशकुम्भी ashakumbhi-सं० स्त्री० पानी-पोयरिज वृक्ष। जल कुम्भी। (Pistia stratiotes.) र० मा०।

अशक्त ashakta-हिं० वि० [सं०] [संज्ञा अशक्ति] (१) निर्बल। कमज़ोर। (२) अक्षम असमर्थ।

अशक्ति ashakti-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अशक्त] निर्बलता। कमज़ोरी।

अशङ्कर ashankar-कना० समाक़, सुमाक़-अ०, फ़ा०। तिमतिम, तमतम-अ०। (Rhus coriaria.)

अशद्द ashadda-अ० बलवान, सशक्त, तीक्ष्ण स्वभाव, १८ वर्ष की अवस्था से लेकर ३० वर्षीय युवा।

अशनम् ashanam-सं० क्ली०
अशन ashana-हिं० संज्ञा पु० } [वि० अशित, अशनीय] (१) भोजन, अन्न, आहार, (Food)। (२) भोजनकी क्रिया। भक्षण। खाना। रा० नि० व० २०।

–सं० पु० (२) पीतशाल, असन वृक्ष। Asan tree (Terminalia alata tomentosa) च० सू० ४ अ० ४३ दशक। (४) चित्रक, चीता। (Plumbago zeylanica.)। (५) भल्लातक वृक्ष, भिलावाँ। (Semecarpus anacardium.) वै० निघ०।

अश(स)नकः ásha,–sa,-nakah-सं० पु० असन पुष्पाकार धान्य विशेष। सु०सू० ४६ अ०।

अशनपर्णी ashanaparni-सं० पु०, स्त्री० (१) विजयसार वृक्ष, पटसन (Pterocarpus marsupium.)। मराठी-पश्चिम दे०।

पर्याय—अतकः, शीतलः, शीतलवातकः, असनपर्णी, सनपर्णी, श्वेतः और शीतकः। (२) गोकर्णीलता–सं०। अपराजिता–य०। (Seegokarnilatá.) अमृ०।

अशनपुष्पः ashana-pushpah-सं० पु० अशन पुष्पाकार शालिधान्य, पष्टिक धान्य विशेष। सु० सू० ४६ अ०। (A kind of paddy)

अशन मल्लिका ashana-mallikā-सं० स्त्री० आस्फोता। हापरमाली-बं०। (Clitoria ternatea.) च० द०।

अशना,–या ashaná,-yá-सं० स्त्री० (१) क्षुधा, भूख। (Hungor.) हला०। (२) शुद्र निष्पाव, श्वेत शिम्बी, सफेद सेम। (Phaseolus radiatus.) रा० नि० व० ७।

अशनायुकः ashanáyukah-सं० पु० भूखा, क्षुधित। (Hungry.)

अशनिः ashanih-सं० पु०, स्त्री० हीरक, हीरा। हीरे-बं०। (Diamond.) वै० निघ०।

अशनि ashani-हिं० संज्ञा पु० (१) विद्युत। (२) वज्र, इन्द्र का अस्त्र। अथर्व०। सू० २७। ६। का० ३। (Lightening.)

अशनीय ashaniya-हिं० वि० [सं०] खाने योग्य।

अशमह् aashamah-अ० वार्द्धक्य, वृद्धापन, बुढ़ाई, वृद्धता, वृद्धाई, जरापन। सीनीलिटी (Senility.) –इं०।

अशम्म aṣhamma-अ० बड़ी और ऊँची नाक वाला। वह व्यक्ति जिसकी घ्राण शक्ति (कुव्वत शाम्मह्) अत्यन्त तीव्र हो।

अशरफ़ी aṣharafí-हिं० संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] (१) एक प्रकार का पीले रंग का फूल। गुल अशरफ़ी। (२) सोने का एक पुराना सिक्का जो सोलह रुपए से पचीस रुपए तक का होता है। मोहर।

अशरास aṣharása-अ० एक जड़ी है जिसकी पत्तियाँ मजयून, पुष्प रक्तभायुक्त, श्वेत वर्ण के तथा फल गोल होते हैं।

अशरीर aṣharír-हिं० पुं० शरीर रहित, कन्दर्प, काम, मदन। Lust, Kamdev. (The hindu cupid.)

अशर्फ़ी बूटा aṣharfí-búṭi-रस्ता० अशरफ़ी।

अशर्म्म aṣharmma-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] कष्ट, दुःख।-वि० (१) दुःखी। (२) गृह रहित।

अशल्ल aṣhalla-अ० टुण्डा, अपाहिज, वह व्यक्ति जिसका हाथ शुष्क हो गया हो।

अशा ááṣhá-अ० शबकोर, शमी लौकी, नक्तांध्य, रात्र्य धता, नक्तांधता, रतौंधी। यह एक प्रकारका नेत्र रोग है जिसमें रात्रि में दिखाई नहीं देता। हेमीरल-योपिया (Hemeralopia.) इं०।

अशाऽ ááṣhá-अ० निशा, रात्रि, निशाहार, रात का खाना। डिनर (Dinner.)-इं०।

अशाका,-खा aṣháká,-khá-सं० स्त्री० शूली तृण। शाखाशून्यलता। रा० नि० व० ८। See-shúlí.

अशान्तगन्धाढ्या aṣhánta-gandhádhyá-सं० स्त्री० आम्रहरिद्रा। आमहल्दी। आम आदा-बं०। आंबेहलद-महा०। (Curcuma amada.) वै० निघ०।

अशान्त चूर्ण aṣhánta-chúrna-हिं० वि० अनबुझा चूना। (Quick or unslaked lime.)

अशाम aṣhama-अ० वाम ओर, बाईं ओर। इसका बहुवचन अशाइम है। (Left side.)

अशितम् aṣhitam-सं० क्ली०

अशित aṣhita-हिं० त्रि०

भुक्त, खाया हुआ, खादित, भुक्त। हे० च०।

अशितम्भवः aṣhitambhavah-सं० पुं० अन्न। भात-बं०।

अशितलता aṣhita-latá-सं० स्त्री० नीलदूर्वा। नीलीदूब। (See-níla-dúrvvá) वै० निघ०।

अशिरम् aṣhiram-सं० क्ली०

अशिर aṣhira-हिं० संज्ञा पुं०

(१) हीरक, हीरा। (Diamond.) रा० नि० व० १३। देखो—वज्रम्। (२) अग्नि (Fire)। (३) राक्षस (A demon.)। (४) सूर्य। (Sun.)

अशिरस्क aṣhiráshk-... (A headless trunk.)

अशिशिम्बी aṣhi-ṣhimbí-सं० स्त्री० ... सामयात शिम्बी विशेष। सफेद सेम। ... पावै-महा० श्वेत शिम्-बं०। (The white flat bean.)

गुण—मधुर, कसैली, श्लेष्मपित्तनी, ... दोष नाशिनी, शीतल और रुचिकारी है। रा० ... व० ७।

अशिश्विश्व-का aṣhishvishva,-ká ... स्त्री० अनपत्या, पुत्र कन्याहीन स्त्री, ... रहित स्त्री। (A childless woman) ... र०।

अशीता aṣhitá } -सं० स्त्री० भूमिकु... पताल कुम्हड़ा। (Ipo...

अशुक्ला aṣhuklá } moea Digitata.) वै० निघ०।

अशीरान aṣhírán-यु० जावड़े मत-फा०...

अशीरून aṣhírún-इन्दलु०, हकु सतह ... सिद्ध बूटी है।

अशुक्लजा aṣhuklajá-सं० स्त्री० बोरो... बोरव धान। (See-Borodhána) ... निघ०।

अशुक्ला aṣhuklá-सं० स्त्री० भूमिकुष्मा... (Ipomoea Digitata.) वै० नि...

अशुद्वार ashuḍhár-कना॰ अशोक-हिं॰, वं॰। (Saraca indica.)

अशुचिः ashuchih-सं॰ त्रि॰ }
अशुचि ashuchi-हिं॰ वि॰ [संज्ञा अशौच] }
(१) अशुद्ध, अपवित्र, अशोचो। (२) गंदा। मैला। (Impure, foul, unclean)।
-हिं॰ संज्ञा स्त्री॰ अपवित्रता, अशुद्धता (Impurity.)।

अशुत्तायर áashuttáir-अ॰ घोंसला, खोंधा। नेस्ट (Nest)-इं॰।

अशुद्ध ashuddha-हिं॰ वि॰ [सं॰] [संज्ञा अशुद्धता, अशुद्धि] (१) बिना शोधा हुआ। बिना साफ किया हुआ। असंस्कृत। जैसे अशुद्ध पारा। (२) अपवित्र।

अशुक ashuka-नेपा॰ वहाका-भोट॰, लेप॰। सुर्च, सुरम, काला-चिम्, सर्देकर, धुधुंक, तर्वोमुक, सुमा-पं॰। हिप्पोफी सिलिसिफोलिया (Hippophæ silicifolia, *Don.*) -ले॰।

(*N. O. Elæagnaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—शीतोष्ण हिमालय, जम्मू से सिक्किम पर्यन्त। प्रयोगांश—फल।

उपयोग—इसका फल फुप्फुस रोगों में उपयोग किया जाता है (पञ्जाब में)। इं॰ मे॰ प्लां॰।

अशूकजः,-कः ashúkajah,-kah-सं॰ पुं॰ मुण्डशालि, निःशूक शालिधान्य। (See-mundashálı) रा॰ नि॰ व॰ १६।

अशुष्कतोयमलः ashushkatoyamalah -सं॰ पुं॰ समुद्रफेन। Cuttle-fish bone (के॰ नि॰)।

अशृत ashrita-सं॰ क्ली॰ अपक्व, कच्चा।

अशोकः ashokah-सं॰ पुं॰ }
अशोक ashoka-हिं॰ संज्ञा पुं॰ } अशोक, असोक, अशोक चीरों, अशोगी-हिं॰। सैरेका इण्डिका (Saraca Indica, *Linn.*), जोनेशिया अशोका (Jonesia asoka, *Roxb.*)-ले॰। दी अशोका ट्री (The Asoka tree)-इं॰। जोनिसिया असजोगम (Jonesia asjogam.)-फ्रां॰।

संस्कृत पर्याय—मधुनाप्रियः, वीतशोकः (शब्द॰ मा॰), शोकनाशः, विशोकः, वञ्जुलद्रुमः वञ्जुलः, मधुपुष्पः, अपशोकः, कङ्केलिः, वेलिक, रक्तपल्लवः, चित्रः, विचित्रः कर्णपूरः, दोहली, ताम्रपल्लवः, रोगितरुः, हेमपुष्पः, वामङ्घ्रिः, पातनः, पिण्डीपुष्पः, नटः, रामा, पल्लवद्रुः, (रा), कान्ताङ्घ्रि दोहदः (त्रि), चक्रगुच्छः (श), कङ्केलिः, पिण्डपुष्पः, गंधपुष्पः, रक्त पल्लवकः, वामांघ्रिघातनः, रागपल्लवः, केलिकः, सुभगः, शोक-नाश, पल्लवद्रुम, राम। अशो(सो)क गाछ, अशोक फुलेर गाछ-बं॰। असोक-हिं॰, बं॰, बम्ब॰, उड़ि॰, कना॰, तै॰। अशोक-मह॰। देशी पील फुलनो, आसुपालो, आसुपाल (ला) -गु॰। आसोपालव, आसापाल-हिं॰। होगाश -सिंह॰। असोगम-मल॰, ता॰। असोकदा, केंकुलिमर-कना॰। जासुन्दी-बम्ब॰। अव-गलो-पर॰। असेक-कटक, मह॰। अशु-हर-गो॰।

शिम्बी वर्ग

(*N. O. Leguminosæ,-ceæ.*)

उत्पत्ति स्थान—अशोक हिन्दुओं का एक पवित्र वृक्ष है। यह पूर्वी बंगाल की, जो सम्भवतः इसका आदि निवासस्थान है, सड़कों के इधर उधर बाहुल्यता से पाया जाता है। दक्षिण भारत, अराकान और टेनासरिम में यह अधिकता के साथ उत्पन्न होता है। संयुक्रप्रांत में कुमायूँ के समीप २००० फीट उच्च इसके वृक्ष होते हैं। सुन्दर पुष्पों के लिए इसको बहुत से स्थानों में लगाते हैं।

वानस्पतिक वर्णन—अशोक प्रायः दो प्रकार का देखा जाता है। नीचे इनमें से प्रत्येक का पृथक् पृथक् वर्णन किया जाता है—

(१) यह एक इतस्ततः विस्तृत बहुशाखास-मन्वित उत्तम छाया तरु है। साधारण वृन्त के दोनों पार्श्व में ४-६ जोड़े पत्र होते हैं। पत्र रामफल के समान प्रायः १८-२० अंगुल लम्बे, सामान्य चौड़े, तरुणावस्था में रंजित एवं लम्बित,

होते हैं। पत्रप्रांत अखंडित एवं किंचित् तरंगायित होता है। पुष्प गुच्छाकार, प्रथम कुछ नारंगी रंग के, फिर क्रमशः रक्त वर्ण के होते जाते हैं। वसन्तकाल अर्थात् फागुन (एप्रिल तथा मार्च) में पुष्पित होते हैं। पुष्पित अशोक वृक्ष अति ही नयनानन्ददायक होता है। इसमें चौड़ी फली लगती है जिसमें बड़े बड़े बीज होते हैं। वृक्ष त्वक् बाहर से धूम्र धूसर तथा (Scabrous) होता है। वृक्ष से सद्यः छेदित पदार्थ श्वेत, किंतु वायु में खुला रहने पर वह शीघ्र रक्त वर्ण में परिणत हो जाता है। स्वाद-मृदु कषाय और अम्ल।

(२) एक वृक्ष जिसके पत्र आम की तरह लम्बे, पत्रप्रांत लहरदार होते हैं। इसमें सफेद मंजरी (मौर) वसन्त ऋतु में लगती है, जिसके झड़ जाने पर छोटे छोटे गोल फल लगते हैं जो पकने पर लाल होते हैं, पर खाए नहीं जाते। इसके वृक्ष अत्यन्त सुन्दर और हरेभरे होते हैं, इससे इसे बगीचों में लगाते हैं। शुभ अवसरों पर इसके पत्र की वंदनवारें बाँधी जाती हैं।

रासायनिक संगठन—इसकी छालकी रासायनिक परीक्षा अभी तक यथेष्ट रूप से नहीं हो पाई। एबट Abbott (१८८०) के परीक्षानुसार इसमें हीमैटॉक्सीलीन (Hæmatoxylin) वर्तमान पाया गया। डूयर (Pharm. Indica) ने इसमें यथेष्ट परिमाण में टैनीन (कषायीन) की विद्यमानता का वर्णन किया। स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन के रासायनिक विभाग में विभिन्न विलायकों से इसके विचूर्णित शुष्क त्वक् के सत्व प्रस्तुत किए गए जिसका निष्कर्ष निम्न रहा—पेट्रोलियम ईथर एक्सट्रैक्ट ०.३०७ प्रतिशत, ईथर एक्सट्रैक्ट ०.२३९ प्रतिशत, और ऐब्सोल्यूट ऐल्कोहल एक्सट्रैक्ट १४.२ प्रतिशत।

ऐल्कोहलिक एक्सट्रैक्ट (मद्यसारीय सत्व) में, जो बहुतांश में उष्ण जल विलेय था, यथेष्ट परिमाण में कषायीन (टैनीन) और सम्भवतः एक सेन्द्रियक पदार्थ, जिसमें लौह विद्यमान था, पाए गए। ऐल्कलाइड (क्षारोद) और उड़नशील वा सुगंधित तैल (Essential) के स्वभावका कोई क्रियाशील सत्व नहीं पाया गया। इसकी पूर्ण परीक्षा की जा रही है। (आर० एन० चोपरा एम० ए०, एम० डी०, इ० इ० पृ० ३७७)

प्रयोगांश—त्वक्, बीज। मात्रा—२ तोला।

औषध-निर्माण तथा मात्रा—अशोक घृत, अशोकारिष्ट, मात्रा—१ से ४ तोला; तरल सत्व, मात्रा—१५-६० मिनिम (बूँद)।

अशोक के गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—मधुर, हृद्य, सुगन्धित और सुगंधित है। अशोक शीतल है तथा प्रयोग करनेसे, यह अर्श, क्रिमी, अपची एवं सम्पूर्ण प्रकार के व्रणों का नाश करता है। (धन्वन्तरीय निघण्टु)

अशोक शीतल, हृद्य है एवं पित्त, दाह तथा श्रम नाशक है और गुल्म, शूलोदर, आध्मान (अफरा) तथा क्रिमिनाशक एवं रक्तस्थापक है। (रा० नि० व० १०) अशोक शीतल, तिक्त ग्राही, वर्ण्य (वर्णकर्त्ता) और कषेला है, तथा वातादि दोष, अपची, तृषा, दाह, कृमिरोग, शोष, विष और रक्त के विकार को दूर करता है। (भा० पू० १ भा०)

अशोक के वैद्यकीय व्यवहार

(१) रक्तप्रदर—असृग्दर में अशोक छाल—अशोक त्वक्-कुट्टित अशोक की छाल २ तो०, गौ दुग्ध आध पाव, जल आध पाव। इसको दुग्धावशेष रहने तक क्वाथ प्रस्तुतकर और शीतल होनेपर इसका सेवन करें। यथा—"अशोक वल्कल क्वाथ शृतं क्षीरं सुशीतलं। यथा बलं पिबेत् प्रातस्तीव्रा सृग्दर नाशनम्।" (असृग्दर-चि०)

(२) मूत्राघात में अशोक बीज—अशोक बीज एक अदद लेकर शीतल जल में पीस कर पान कराएँ। यह मूत्राघात (मूत्रावरोध) और अश्मरीनाशक है। यथा—"जलेन खदिरी बीजं मूत्राघाताश्मरीहरम्।" (मूत्राघातचि०) "खदिरी बीजमशोक बीजमित्याहुः" (शिवदासः)

वक्तव्य

चरक के चिकित्सा स्थान के ३० वें अध्याय एवं सुश्रुत शारीर स्थान के २ य अध्याय में प्रदर की चिकित्सा लिखी है, किन्तु वहाँ अशोक का नामोल्लेख नहीं है। राजनिघण्टुकार को भी अशोक का प्रदरनाशक गुण स्वीकृत नहीं है। चरक ने वेदनास्थापन तथा संज्ञास्थापन वर्ग के अन्तर्गत अशोक का पाठ दिया है (सू०४ अ०)। वेदनास्थापन का अर्थ यन्त्रणानिवारक है (देखो—अङ्गमर्दप्रशमन)। टीकाकार चक्रपाणि लिखते हैं, "वेदनायां सम्भूतायां तां निर्हृत्य शरीरं प्रकृतौ स्थापयतीति वेदनास्थापनम्।" अर्थात् उपस्थित वेदना का निवारण कर शरीर को जो प्राकृतिक अवस्था में लाय उसको वेदनास्थापन कहते हैं।

कविराजगण रक्तप्रदर में अशोक को वेदनास्थापन रूप से नहीं, अपितु रक्तरोधक रूप का व्यवहार में लाते हैं। जिन सम्पूर्ण स्थलों में इसका रक्तरोधकी आवश्यकता थी, उन उन स्थानों में प्रमादवश अशोक का व्यवहार करने से, रक्त रोगों का रक्तस्राव बन्द होकर वेदना की वृद्धि होते हुए बहुधा रोगियों में प्रत्यक्ष देखा गया है। सकल वैद्यक ग्रंथों की आलोचना करने पर ज्ञात होता है कि प्रदर में सर्व प्रथम अशोक का प्रयोग वृन्दकृत सिद्धयोग नामक पुस्तक में हुआ है। अशोकघृत का व्यवहार किस समय से हो रहा है, इसे ठीक बतलाना कठिन है। चक्रदत्त, भावप्रकाश, एवं शार्ङ्गधर में अशोकघृत का उल्लेख दिखाई नहीं देता। "सारकौमुदी" नामक संग्रह-ग्रंथ एवं गङ्गसेन सङ्कलित चिकित्सासारसंग्रह तथा भैषज्यरत्नावली नामक ग्रंथ में अशोक घृत का उल्लेख है। सुश्रुतोक्त वातव्याधि में प्रयुक्त कल्याणकलवण के उपादानों के मध्य अशोक का उल्लेख देखने में आता है। (चि० ४ अ०)

नव्यमत

आयुर्वेदीय चिकित्सक गण संग्राही एवं गर्भाशयावसादक रूप से इसके वृक्ष त्वक् का प्रचुर प्रयोग करते हैं। कहा जाता है कि गर्भाशयान्तरिक मांसतन्तुओं (Endometrium) तथा डिम्बकोष-तन्तुओं पर इसका उत्तेजक प्रभाव होता है। गर्भाशय विकार विशेषतः (Uterine fibroid) तथा अन्य कारण से उत्पन्न रक्तप्रदर में इसका बहुत प्रयोग होता है। इसकी छाल का दुग्ध में प्रस्तुत क्वाथ आज तक कविराजी चिकित्साकी एक उत्तम औषध है। अर्श तथा प्रवाहिका में भी इसका उपयोग किया जा चुका है। इं० ड्र० इं०।

इसमें शुद्ध संग्राही गुण प्रतीत होता है। (डीमक)

इसके पुष्प को जल में पीसकर रक्तातिसार (Hæmorrhagic dysentery) में बरतते हैं। (वेट)

इसकी छाल का जल में प्रस्तुत क्वाथ भी जलमिश्रित गंधकाम्ल (Dilute Sulphuric acid) के साथ व्यवहृत होता है। इं० मे० मे०।

[illegible] [illegible] प्रमाणित हुआ। (Indigenous Drugs Report, madras.)

नोट—थोड़े हेरफेर के साथ अशोक के उपर्युक्त गुणों का ही उल्लेख प्रायः सभी प्राच्य व पाश्चात्य ग्रंथों में हुआ है।

वर्तमान अन्वेषक श्रीयुत आर० एन० चोपरा महोदय स्वरचित ग्रंथ में अपने अशोक सम्बन्धी विचार इस प्रकार प्रकट करते हैं।

पृथक् किए हुए जरायु पर अशोक-त्वक् द्वारा वियोजित विभिन्न अंशों की परीक्षा की गई; किन्तु उसका कोई व्यक्त प्रभाव नहीं हुआ। रक्तप्रदर एवं अन्य गर्भाशय-विकारों में यद्यपि बहुधा शय्यागत रोगी-परीक्षक गण इसके लाभदायक होने की प्रशंसा करते हैं; पर यह औषध प्रत्यक्ष प्रभाव प्रकट करती हुई नहीं प्रतीत होती। इं० ड्र० इं०।

अशोकम् ashokam-सं० क्लो०
अशोक ashoka-हिं० संज्ञा पुं० }

(१) पारद, पारा। Mercury (Hydrargyrum.)

–पुं० (२) आसपाल, अशोक। (Saraca Indica.)

अशोकघृतम् ashoka-ghritam–सं० क्लीं० प्रदर में प्रयुक्त होने वाला एक घृत विशेष।

योग तथा निर्माण-विधि—अशोककी छाल ६४ तो० (१ प्रस्थ) को २५६ तो० जल में पकाएँ। जब चौथाई जल शेष रहे तो उसमें ६४ तो० घृत मिलाकर पकाएँ। पुनः चावलोंका पानी, बकरी का दुग्ध, घृत तुल्यभाग, जीवकका स्वरस, भँगरेका स्वरस, जीवनीय गणकी औषधियाँ चिरौंजी, फालसा, रसवत, मुलहठी, अशोकमूल त्वचा, मुनक्का, शतावर, चौलाईमूल प्रत्येक २–२ तो० ले कल्क बनाएँ। पुनः मिश्री ३२ तो० मिलाकर कोमल अग्नि से शनैः शनैः पकाएँ।

गुण—इसके सेवन से हर प्रकार के प्रदर, शोथ, कुक्षिशूल, कटिशूल, योनिशूल, शरीरव्यथा, मन्दाग्नि, अरुचि, पाण्डु, कार्श्य, श्वास एवं कामला का नाश तथा आयु की पुष्टि होती है। वंग से० सं० प्रदर चि०। भैष०। सा० कौ०।

अशोक रोहिणी ashoka-rohini–सं० स्त्री० (१) कटुतिक्ता, रोहिणी, तिक्तरोहिणी, कटुकी। (Picrorrhiza kurroa.) रा० नि० व० ६। च० सू० ४ अ० संज्ञास्थापन। देखो—कटुकी। (२) लताशोक। यह अशोक दल सदृश दल है। रत्ना०।

अशोकवाटिका ashoka-vatika–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) वह बगीचा जिसमें अशोकके पेड़ लगे हों। (२) शोक को दूर करने वाला रम्य उद्यान।

अशोका ashoka–सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० कटुरोहिणी, कटुकी, कुटकी। (Picrorrhiza kurroa.) मे०। आ० पू० १ भा०।

अशोकारिः ashokarih–सं० पुं० कदम्ब वृक्ष। कदम्ब–मह०। कदम गाछ–बं०। (Anthocephalus kadamba.) प० मु०।

अशोकारिष्टः ashokarishtah–सं० पुं० प्रदर रोगमें व्यवहृत एक अरिष्ट विशेष।

योग व निर्माण-विधि—अशोक की छा[ल] १ तुला (५ सेर), को ४ द्रोण (६४ सेर) ज[ल] में पकाएँ। जब चौथाई शेष रहे तो उसमें गु[ड़] पुराना, धौ का फूल ६४–६४ तो०, सोंठ, औ[र] नागरमोथा, दारुहल्दी, आमला, हड़, बहे[ड़ा] अडूसा, आमकी गुठली, कमल का फूल, चन्द[न] जीरा, इन्हें ४–४ तो० चूर्ण कर उक्त क्वा[थ] रसमें मिश्रित कर उत्तम पात्रमें रख एक मास त[क] रख छोड़ें। जब सन्धानित होकर उत्तम रस त[ैयार] हो, तब छानकर बोतल में बन्द करें।

मात्रा—१–४ तो०।

गुण—इसके सेवन से रक्तपित्त, हर प्रकार [के] प्रदर, ज्वर, रक्तार्श, मन्दाग्नि, अरुचि, शो[थ] प्रमेह और सम्पूर्ण स्त्री रोगों का नाश होता है। भैष र० प्रदर चि०। आ० वे० सं०।

अशोगम् ashogam–ता० } अशोक
अशोगी ashogi–हिं० संज्ञा स्त्री० } (Saraca Indica, Linn.) फा० इं० १ भा०।

अशोथनेत्रपाकः ashotha-netra-pakah –सं० पुं० अशोफज अर्थात् शोथ (सूजन) रहित नेत्रपाक रोग।

लक्षण—नेत्रों में खुजली, चले, चिपके, औ[र] आँसू बहें तथा पके गूलर की समान, लाल सूजन युक्त और जो पके यह शोफज नेत्ररोग है इसके विपरीत जिसमें ये लक्षण न हों उसे "अशोथनेत्रपाक" रोग कहते हैं। मा० नि०।

अश्अर ashaara–अ० सघन बालोंवाला, बहु[त] लोमश, अधिक रोमों वाला, वह व्यक्ति जिसके बाल अधिक हों। हाइपर ट्रिकोसिक (Hypertrichosic.)–इं०।

अश्क ashka–फा० आँसू, अश्रु। (A tear.)

अ(इ)श्क पेचा a(i)shka-pecha–फा० काम-लता, तरुलता। (Ipomoea quamoclit.) इं० हैं० गा०। देखो–इश्कपेचा।

अश्क़र ashqara-अ० रक्तवर्ण जो पीत एवं श्याम आभा लिए हुए हो। रोग विज्ञान में उस मूत्र (क़ारोरा) को कहते हैं जिसका रंग ललाई लिए पीला हो। रेडिश येलो (Redish-yellow.)-इं०।

अश्क़ाक़ुल ashqáqula-अ० शक़ाक़ुल। एक प्रसिद्ध जड़ है, जिसको हिन्दी में "दूधाली" कहते हैं। (Asparagus ascendens, *Roxb.*)

अश्कानी ashkání-तिमि० चौलाई, तण्डुलीय। (Amarantus 'thus' spinosus.)

अश्कील ashkíla-उत्तर एक वृक्ष है। (A tree.)

अश्क़ून ashqúna-तु० रेवास। See-Raibása.

अश्के मरियम ashke-mariyam-फ़ा० करञ्ज, करञ्जुआ। (Pongamia glabra.)

अश्ख़ार ashkhára } -ख़ुरासा० भारतीय सज्जी,
शख़ार shákhára } सर्जि। बैरिला (Barilla.)-इं०। देखो-सोडियाई कार्बोनास या सोडा।

अ(इ)श्ख़ीस a-ishkhísa-अ० असरुलअक़्र, मवाथा-बरब०। ख़ामालावन-यु०। बस्करायन -इस्कंदर्। किसी किसी के मतानुसार बरबरी भाषा में इसे "वहीद" और फ़ारसी में "सुरतरू" कहते हैं। किसी किसी ने इसे माज़रियून स्याह का एक भेद लिखा है, तथा किसी ने इसे किर्मदाना का पेड़ लिखा है। किसी किसी के मतानुसार इसका हिन्दी नाम बक्कम है और बंगाल में बहुत पैदा होता है। फलतः यह अनिश्चित वनस्पति की जड़ है जो अफरीका और आर्मीनिया में अधिकता के साथ उत्पन्न होती है तथा आज कल अप्रयुक्त है। देखो—माज़रियून (Mazariyúna.)

अश्जअ ashjaa-अ० (ए० व०), अशाजिअ-(ब० व०) (१) व्यवच्छेद शास्त्र की परिभाषा में अंगुली-मूल-संधि। जौहरी का वचन है कि अंगुलियों की संधियाँ तीन हैं,—प्रथम जो संधि मूल में स्थित है, इसे अश्जअ कहते हैं; द्वितीय जो मध्य में स्थित है बुर्जुमह (Phalange) नाम से अभिहित होती है और तृतीय जो ऊपर स्थित है अन्मिलह (Tip of the finger.) कहलाती है। (२) उश्शक़, उश्शज। (Ammoniacum.)

अश्जार ashjár-अ० (ब० व०), शजर (ए० व०) वृक्ष, पेड़। (Trees.) स० फा० इं०। लु० कि०। देखो—वृक्षः।

अश्त ashta-मह० प्लक्ष वृक्ष, पाकर, पाखर, पकरी। (Ficus rumphii, *Bl.*) फा० इं० ३ भा०।

अश्तर ashtar-अ० फटे नेत्रवाला, दरीदा चश्म। यह सहज या प्रकृत रोग है।

अश्तबून ashtabúna } -मिश्र० बस-
अश्तरान ashtarána } फाइज, खंकाली -हिं०। (Polypodium.)

अश्तला बूस ashtalábúsa-रू० कायफल। (Myrica nagi, *Thunb.*)

अश्ता ashtá-हिं० काञ्चनार, कचनाल, मकुआ। (Bauhinia variegata.)

अश्दक़ ashdaqa-अ० चौड़े मुँह वाला, बड़े मुँह वाला।

अश्दाक़ ashdáqa-अ० (ब० व०), शिद्क़ (ए० व०) गोशहे दहन। मुख कोण, मुख का कोना।

अश्नह ashnah-फ़ा० दरख़्त पुरदह। Moss, common (Lycopodium clavatum,) इं० हैं० गा०।

अश्नान ashnána-अ० स्वर्जिचार। देखो—उश्नान। (Ushnána.)।-हिं० पुं० स्नान, नहाना। (Bathing.)

अश्फ़रान ashfarána-अ० स्त्री की योनि के दोनों किनारे।

अश्फ़ा ashfá-अ० जिसके दोनों ओष्ठ परस्पर न मिलते हों।

अश्फ़ार ashfára–अ० (ब० व०), शफ़र (ए० व०) पलकों के किनारे अर्थात् पलकों के बाल उगने के स्थान। म०ज०। –फ़ा० सजी।

अश्बब् ashbab–अ० इस्कपेचा के समान एक बूटी है। फूल चमेली के समान तथा सुगन्धयुक्त होता है।

अश्बाह् ashbáh–अ० (ब० व०), शबह् (ए० व०) प्रतिबिम्ब, मूर्ति, तसवीर। (Reflection, an image, a picture.)

अश्बील ashbila– मत्स्याण्ड, मछली के अण्डे। (Eggs of fish.)

अश्बुत्चेग़न ashbutcheghana–अ०माशा-राण्ड, जुन्दबेदस्तर। (Castoreum.) इं० मे० मे०।

अश्म ashma–सं० क्लो०,हिं० संज्ञा पुं०[अश्मन्] (१) स्वर्ण माक्षिक। Iron pyrites (Ferri sulphuretum) वै० निघ०। (२) पत्थर (A stone.)। (३) पर्वत, पहाड़ (A mountain.)। (४) मेघ। बादल। (A cloud)

अश्मकदली ashma-kadalí-सं० स्त्री० कदली विशेष, केला, पर्वतीय केला। पहाड़े कला-बं०। जोखंड केल-मह०। Plantain (Musa sapientum.) रा० नि० व० ११।

अश्मकन्दिका ashma-kandiká-सं० स्त्री० असगंध। (Withania somnifera.)

अश्मकरम् ashma-karam–सं० क्लो० स्वर्ण, सोना। Gold (Aurum.) रत्ना०।

अश्मकूट ashma-kúṭa-हिं० पुं० (Petrous process.)

अश्मकृच्छ्रहा ashma-krichchhrahá-सं० स्त्री० वेहन्तर वृक्ष, वीरतरु। बेलतर-मह०। वै० निघ०।

अश्मकेतुः ashma-ketuh-सं० स्त्री० पुं० पाषाणभेद क्षुप। पाथर चुर बं०। रा० नि० व० ५। Coleus aromaticus (The small var.of-)

अश्मगर्भः ashma-garbhah-सं० पुं०

अश्मगर्भ ashma-garbha-हिं० संज्ञा पुं० हरितमणि, पन्ना। पान्ना-बं०। ज़मुर्रद-अ०। Emorald (Smaragolus.) भा० पू० १ भा०।–क्लो० (२) मरकत-मणि। हे० च०। देखो—पन्ना।

अश्मगर्भकः ashma-garbhakah-सं० पुं० तिनिश वृक्ष। (Lagerstroemia flos reginæ.) मद० व० ५।

अश्मगर्भजम् ashma-garbhajam-सं० क्लो० मरकत मणि,पन्ना। (Emerald.) रा० नि० व० १३।

अश्मघ्नः ashmaghnah-सं० पुं० पाषाणभेद क्षुप। पाथरकुचा-बं०। (Coleus aromaticus.) रा० नि० व० ५। भा० पू० १ भा०।

अश्मघ्न स्वेद ashmaghna-svedah-सं० पुं० अश्मरी में प्रयुक्त स्वेद विशेष।

अश्मजम् ashmajam-सं० क्लो०

अश्मज ashmaja-हिं० संज्ञा पुं० (१) मुण्डलोह, लोहा भेद। Iron (Ferrum.) रा० नि० व०१३। च० द० पांडु-चि०। (२) शिलाजीत। शिलाजतु। (Bitumen.) मद० व० ४। हेमा०। च० मु०। र० मा०। रा० नि० व० ११। (३) गेरू, गैरिक, हिरमिजी। (See-Gairika.)। (४) मोमियाई।

अश्मजतु,-कम् ashmajatu,-kam—सं० क्लो० शिलाजी(जि)त, शिलाजतु। (Bitumen.) च० द० पांडु-चि० योगराज। रा० नि० व० १३। सि० यो० र०. चि० कि० खण्डखाद्य। "शुभाश्मजतुकं त्वचम्।"

अश्मदारण ashmadárana-हिं० पुं० पत्थर काटने वाला आरा।

अश्मन् ashman-सं० पुं० प्रस्तर, पत्थर, पाषाण। (A stone.)

अश्मन्तः,-कः ashmantah,-kah-सं० पुं० पाषाण भेद, पाथर चूर। (Coleus aromaticus.) च० सू० १ अ०। कोविदार वृक्ष सदृश अम्ल-पत्रीय वृक्ष, अम्भोट, चांगेरी (A species of ebony.)। भा० म० ४ भा० गर्भ-चि०। "अश्मन्तकस्तिलाः कुल्माः" । च० स० ४ अ०। (३) उद्दालक वृक्ष, बहुवार-सं०। बहुवार,-र सोरा-हिं० ।(Cordia latifolia) भा० पू० १ म०। (४) कोविदार वृक्ष, कचनार भेद। (Bauhinia variegata.) भ० पू० २ भा०। (५) चुक, चांगेरी (Rumex vesicarium.) र० मा०। (६) तृण विशेष। मञ्जकुमाई-बं०। (A sort of grass.) सु० चि० २५ अ०। (७) स्वनामख्यात वृक्ष। आपटा वृक्ष। आपुटा-हिं०। अश्मर-मह०। पर्य्याय-उम्मुकः, कुद्दाली, अम्लपत्रः, इमवश वल्क्, नीलपत्रः, यमलपत्रकः। गुण— मधुर, कसैला, शीतल, कफ व और भूख निवारक करनेद है। रा० नि० व० ८।

अश्मन्त(क)म् ashmanta,-ka-m-सं० क्लो० (१) पाकार्थ अग्नि स्थान, चुल्लि(ल्ली), चूल्ही। मे० नत्रिक०। (२) दीपाधारपात्रम्, आंधारिया। मे०।

अश्मपुष्पम् ashma-pushpam-सं० क्लो० शैलज, शिलास। (Styrax præparatus.) अम०।

अश्मभाण्डम् ashma-bhándam-सं० क्लो० (१) लौह भाण्ड विशेष, हावन। हामानदिस्ता -बं०। श० च०। (२) खल, खल। Mortar.)

अश्मभित् ashmabhit-सं० पुं० (१) पाषाण भेद, पाथरचुर। (Coleus aromaticus.) प० मु०। रत्ना०। (२) कपाट वक्र वृक्ष-सं०। कराविया,- कबाट वेट-ते०। वेदर्गुपा-हिं०। र० मा०। कवाटवक्र। रत्ना०। देखो—कपाटव(च)क्रम्। (Kaváṭacha, va,-kram.)

अश्मभेदः,-कः ashmabhedah,-kah-सं० पुं०
अश्मभेद ashmabheda-हिं० संज्ञा पुं०
क्षुप विशेष। Coleus amboinicus, Syn., (Coleus aromaticus.)। पाषाणभेद नाम का जड़ी जो मूत्रकृच्छ्र, आदि रोगों में दी जाती है। पाथरचुर-हिं०। पाथर कुचा, हिमसागर, हाता जो-बं०। सु० सू० ३८, ३६ अ०। पर्य्याय-अश्मभेदः अश्मन्तिक (र०), अश्मघ्नः, पाषाणभेदः, शिलाभेदः, अश्मभेदकः, इरेना, उपलभेदी, उपलभित् शिलागर्भज, नगभित्, संवत्सरः। रा० स्र० १४, ३६ अ०। "वसन्तसारशिक्क वृक्ष वृष्याश्मभेदः।"

गुण—शीतल, कसैला, बस्तिशोधक दस्तावर तथा तिक्त है और प्रमेह, दाह, मूत्रकृच्छ्र, तथा अश्मरी रोग नाशक है। म० व० १। मधुर तिक्त, प्रमेह, प्याय, दाह, मूत्रकृच्छ्र तथा अश्मरीहर और शीतल है। रा० नि० व० ५।

अश्मभेदनः ashma-bhedanah-सं० पुं० पाषाण भेद। मद०।

अश्मयोनिः,-नी ashma-yonih,-ni-सं० पुं०, स्त्री० (१) नील मणि। A gem of a blue colour (The sapphire.) अ० टी०। (२) अश्मन्तक वृक्ष। आपट्टा-बं०। मद० व० १०। See—ashmantaka.

अश्मर ashmar-हिं० वि० [सं०] पथरीला।

अश्मरी ash-mari-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० मूत्र रोग विशेष। पथरी। कैलक्युलस Calculus (ए० व०), कैलक्युलाई Calculi (ब० व०)-ले०। स्टोन Stone, ग्रेवल Gravel-इं०। हसात-अ०। संगरेज़ह-फ़ा०। भिंडे, पाथुरी-बं०। मुतखड़ा-मह०।

अश्मरी संस्कृत अश्मन् शब्द से व्युत्पन्न स्त्री वाचक पद है। यहाँ पर इसका प्रत्यार्थक प्रयोग हुआ है अर्थात पथरी वा कंकड़ी के अर्थमें। आयुर्वेद

(ख) मूत्रमार्गस्थ अश्मरी —
(Calculus of urethra).

(७) यकृदश्मरी—यकृत में बनने वाली पथरी। हेपैटोलिथ Hepatolith-इं०। हसातुल कबिद्-अ०।

(८) आन्त्राश्मरी—इन्टेस्टाइनल कैलक्युलाई (Intestinal calculi-इं०।

यह मनुष्य एवं मांसाहारी जीवोंमें तो क्वचित्, परन्तु शाकाहारी जीवों में सामान्य रूप से होता है।

(९) पित्ताश्मरी—पित्ताशय वा पित्त-प्रणाली में उत्पन्न होनेवाली अश्मरी। बिलियरी कैलक्युलाइ Biliary calculi., गॉल स्टोन्स् Gall-stones, कोलोलिथ Cholo-lith, (Calculus of gall-bladder or duct)-इं०। हसात सफ़्राविय्यह्, हसात-मरारिय्यह्-अ०। सफ्रावी पथरी, पित्त की पथरी-उ०।

नोट—इसे वस्तिस्थ अश्मरी का भेद पित्तज अश्मरी न समझना चाहिए।

(१०) क्लोमग्रन्थिस्थ अश्मरी, अग्न्याशयिक अश्मरी—यह क्वचित् ही पाई जाती हैं और जब उत्पन्न होती है तब अधिक संख्या में मुख्य प्रणाली वा गौण प्रणाली में वर्तमान होती है। पैन्क्रिएटिक कैलक्युलाई Pancreatic calculi-इं०।

(११) लालाग्रन्थिस्थ अश्मरी लाला ग्रंथि वा लाला अर्थात् लार में पाई जाने वाली अश्मरी।

यह बाहर से खुरदरी (कर्कश) एवं विषमाकार होती हैं और साधारणतः प्रणाली के मुख के समीप पाई जाती हैं। इससे प्रणाली का मुख अवरुद्ध हो जाता है। सैलिवरी कैलक्युलाई Salivary Calculi-इं०।

(१२) शिरास्थित अश्मरी—शिरा में बननेवाली पथरी।

फ्लेबोलिथ Phlebolith-इं०। हसातुल् अव्रिदह्-अ०। वरीदों की पथरी-उ०।

नोट—कभी कभी शिराओं के भीतर कठोर या अश्मवत् अवरोध पाया जाता है। यह वस्तुतः रक्त के रक्त तथा अश्मीभूत होने से उत्पन्न हो जाता है।

(१३) अश्रवदश्मरी—अश्रुप्रणालीस्थ अश्मरी, आँसू की नालियों की पथरी।

डैक्रियोलिथ Dacryolith-इं०। हसात दमइय्यह्-अ०।

अश्मरी कण्डनो रसः ashmari-kandano-rasah-सं० पुं० ढाक, केला, तिल, करेला, जौ, इमली, चिचिंडा और हल्दी इनके खारों को इकट्ठा करके सबका १६ वाँ भाग पारा, उतना ही गन्धक और इन दोनों के समान भाग उत्तम लोह भस्म मिलाकर सबका बारीक चूर्ण कर रक्खें।

मात्रा—१ तो०। इसे दही के साथ चाट कर ऊपर से वरुण वृक्ष की छाल का क्वाथ पीएँ। यह रस दुःसाध्य से भी दुःसाध्य पथरी को नष्ट करता है।

अश्मरी कृच्छ्रः ashmari-krichchhrah-सं० पुं० पथरी जन्य मूत्रकृच्छ्र, मूत्रकृच्छ्र भेद। वं० निघ०। (See-Mútra krichchhra)

नोट—आयुर्वेद के अनुसार अश्मरीकृच्छ्र मूत्रकृच्छ्र का एक भेद है। परन्तु यह पथरी के निर्माण की अवस्था में ही होता है। अस्तु यह अश्मरी रोग का केवल एक लक्षण मात्र है।

अश्मरीघ्नः ashmarighnah-सं० पुं०
अश्मरीघ्न ashmarighna-हिं० संज्ञा पुं०
वरुण वृक्ष, बरना का पेड़। वरुण शा०-वं०। वायवरणा-मह०। (Cratæva religiosa.) त्रिका०।-त्रि०, त्रि० अश्मरीहर, अश्मरी नाशक, पथरी को दूर करने वाला। (Lithontriptic)

अश्मरी छेदक ashmari-chhedaka-हिं० संज्ञा पुं० (१) अश्मरी छेदक यंत्र (Lithotrite.)। (२) अश्मरी को फोड़कर चूर

हुई वायु के वस्तिगत शुक्र के साथ मूत्रको अथवा पित्त के साथ कफ को सुखाने से क्रमशः गाय के पित्त में गोरोचन के समान रत्नज हो जाती है। आयुर्वेद में इसके वातज, पित्तज कफज और शुक्रज ये चार भेद माने गए हैं।

चरक, सुश्रुत, वाग्भट प्रभृति सभी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथों में जहाँ भी अश्मरी का वर्णन हुआ है वहाँ उक्त शब्द का प्रयोग केवल वस्तिगत अश्मरी के लिए किया गया है। परन्तु अब यह शब्द उतने संकुचित अर्थों में नहीं लिया जाता।

प्राचीन शास्त्रकारों को और स्थानों में बनने वाली अश्मरियों का ज्ञान था वा नहीं अथवा पूर्व पुरुषों में और स्थानों में अश्मरियोंका निर्माण होता था वा नहीं? इसके संबंध में यहाँ कुछ विशेष न कह कर हम केवल इतना ही कहना यथेष्ट समझते हैं कि इस शब्द का प्रयोग अब उतने संकुचित अर्थों में नहीं होता, वरन् किसी भी ग्रंथ्यवयव की प्रणाली वा मार्ग अथवा स्वयं उस ग्रंथि में बनने वाली किसी प्रकार की पथरी को अब हम अश्मरी कह सकते हैं। यद्यपि इन सबके निदान, सम्प्राप्ति, लक्षण तथा चिकित्सा प्रभृति का, चिकित्सा प्रणालीद्वय के अनुसार यथा अपने स्थल पर सविस्तार वर्णन किया जाएगा, तो भी उन सब भेदों का यहाँ संक्षिप्त परिचय करा देना अप्रासङ्गिक न होगा।

नोट—डॉक्टरी शब्द कैल्क्युलस का अर्थ खटिका है। परंतु डॉक्टरीकी परिभाषा में अश्मरी को कहते हैं। प्राचीन पाश्चात्य शास्त्रकारभी इसका प्रयोग केवल वृक्क एवं वस्तिगत अश्मरी के लिए ही करते थे। परन्तु अब इससे व्यापक अर्थ लिया जाता है। (०F ०D)

अश्मरी के मुख्य भेद निम्न हैं—

(१) वस्त्यश्मरी—आयुर्वेदिक शास्त्रों में इसका वर्णन अश्मरी शब्द के अन्तर्गत हुआ है। इसका एक भेद शुक्राश्मरी है, परन्तु यह आयुर्वेदोक्त "शुक्राश्मरी" वस्ति में नहीं हो सकती, वरन् इसका निर्माण बीजकोष में होता है।—पुर्याय—सिस्टोलिथ (Cystolith) स्टोन इन दी ब्लैडर (Stone in the bladder)-इं०। हसातुल् मसानह्-अ०। मसाना की पथरी-उ०।

(२) शुक्राश्मरी, (शुक्राशय स्थित अश्मरी) (Calculus of vesiculus seminales)—

(३) शिश्नाग्रत्वगश्मरी—शिश्नाग्र त्वचा अर्थात् शिश्न की घूँघट में बनने वाली अश्मरी। (Calculus of prepuce.)

(४) प्रोस्टेटग्रंथि स्थित अश्मरी, अष्ठीलागत अश्मरी—(Prostatic calculi) प्रोस्टेट ग्रंथि वा प्रणाली में बनने वाली पथरी। हसातुल् गुद्दे-कुदामियह्-अ०।

(५) वृक्काश्मरी, वृक्क की पथरी—रेनल कैल्क्युलाइ (Renal calculi), स्टोन इन दी किडनी (Stone in the kidney), नेफ्रोलिथ (Nephrolith)-इं०। हसातुल् कुल्यह्, हसात कुलियह्-अ०। गुर्दे की पथरी-उ०।

वृक्काश्मरी के होने पर रोगी की पीठ की ओर दाहिनी या बाईं तरफ वेदना रहती है। हिलने पर यह वेदना और तीव्र होती है। जब यह अश्मरी वृक्क में से निकलकर मूत्र-प्रणाली (गविनियु) में आ जाती है अथवा उसमें जब गति होती है तब वृक्कशूल (Renal colic) के उत्कट लक्षण पैदा हो जाते हैं। इनके मूत्रप्रणाली में आकर फँस जाने, ही को "मूत्राश्मरी" कहते हैं।

(६) मूत्राश्मरी—युरिनरी कैल्क्युलाई Urinary calculi, युरोलिथ Urolith, स्टोन इन दी युरिनरी पैसेज Stone in the urinary passage-इं०। हसात बौलियह्-अ०। पेशाब का संगरेज़ह-उ०।

इसके दो भेद हैं, यथा—

(क) मूत्रप्रणालीस्थ अश्मरी, गविनियु-स्थित अश्मरी—(Calculus of ureter)

(८) मूत्रमार्गस्थ अश्मरी—
(Calculus of urethra).

(७) यकृदश्मरी—यकृत में बनने वाली पथरी। हेपैटोलिथ Hepatolith-इं०। हुमातुल कबिद-अ०।

(८) आन्त्राश्मरी—इन्टेस्टाइनल कैलक्युलाई (Intestinal calculi)-इं०।

यह मनुष्य एवं मांसाहारी जीवों में तो क्वचित्, परन्तु शाकाहारी जीवों में सामान्य रूप से होता है।

(९) पित्ताश्मरी—पित्ताशय वा पित्त-प्रणाली में उत्पन्न होनेवाली अश्मरी। बिलियरी कैलक्युलाइ Biliary calculi, गॉल स्टोन्ज़ Gall-stones, कोलोलिथ Cholo-lith, (Calculus of gall-bladder or duct)-इं०। हुमात मरारियह, हुमात-मरारियह्-अ०। सफ़रावी पथरी, पित्ता की पथरी-उ०।

नोट—इसे वस्तिस्थ अश्मरी का भेद विशेष अश्मरी न समझना चाहिए।

(१०) क्लोमग्रन्थिस्थ अश्मरी, अग्न्याशयिक अश्मरी—यह क्वचित् ही पाई जाती है और जब उत्पन्न होती है तब अधिक संख्या में मुख्य प्रणाली वा गौण प्रणालियों में वर्तमान होती है। पैन्क्रियाटिक कैलक्युलाई Pancreatic calculi-इं०।

(११) लालाग्रन्थिस्थ अश्मरी लाला [illegible] अर्थात् लार में पाई जाने वाली पथरी।

[illegible] में [illegible] (कंकड़) एवं [illegible] [illegible] और [illegible] प्रणालियों के मुख के [illegible] हैं। इनसे प्रणालियों का मुख [illegible] है। सैलिवरी कैलक्युलाई [illegible] Calculi-इं०।

(१२) शिरास्थ अश्मरी—शिरा में [illegible]।

फ्लेबोलिथ Phleboluth-इं०। हुमातुल [illegible]। [illegible] की पथरी-उ०।

नोट—कभी कभी शिराओं के भीतर कठोर या अश्मवत् अवरोध पाया जाता है। यह वस्तुतः रक्त के दृढ़ तथा अश्मीभूत होने से उत्पन्न हो जाता है।

(१३) अश्रुवदश्मरी—अश्रु प्रणालीस्थ अश्मरी, आँसू की नालियों की पथरी।

डैक्रियोलिथ Dacryolith-इं०। हुमात दमइय्यह्-अ०।

अश्मरी कण्डनो रसः ashmari-kandano-rasah-सं० पुं० ढाक, केला, तिल, करेला, जौ, इमली, चिरचिटा और हल्दी इनके क्षारों को इकट्ठा करके सबका १६ वाँ भाग पारा, उतना ही गन्धक और इन दोनों के समान भाग उत्तम लोह भस्म मिलाकर सबका बारीक चूर्ण कर रक्खें।

मात्रा—१ तो०। इसे दही के साथ चाट कर ऊपर से वरुण वृक्ष की छाल का क्वाथ पीएँ। यह रस दुःसाध्य से भी दुःसाध्य पथरी को नष्ट करता है।

अश्मरी कृच्छ्रः ashmari-krichchhrah -सं० पुं० पथरी जन्य मूत्रकृच्छ्र, मूत्रकृच्छ्र भेद। दे० मिश्र०। (See-Mútra krichchhra)

नोट—आयुर्वेद के अनुसार अश्मरीकृच्छ्र मूत्रकृच्छ्र का एक भेद है। परन्तु यह पथरी के निर्माण की अवस्था में ही होता है। अस्तु यह अश्मरी रोग का केवल एक लक्षण मात्र है।

अश्मरीघ्नः ashmarighnah-सं० पुं०
अश्मरीघ्न ashmarighna-हिं० संज्ञा पुं०

वरुण वृक्ष, बरना का पेड़। वरुण गा०-वं०। वायवरण-मह०। (Crataeva religiosa.) त्रिकां०।-वि०, वि० अश्मरीहर, अश्मरी नाशक, पथरी को दूर करने वाला। (Lithontriptic)

अश्मरी छेदक ashmari-chhedaka-हिं० संज्ञा पुं० (१) अश्मरी छेदक यंत्र (Lithotrite.)। (२) [illegible]

चूर करने वाली औषध। अश्मरी भेदक। (Lithotriptic) देखो—अश्मरीहर।

वि०-अश्मरीको फोड़ने वाला, अश्मरी भेदक।

अश्मरी छेदक यंत्र ashmari-chhedaka-yantra-हिं० संज्ञा पुं० बस्ति में पथरी को फोड़ने का यंत्र। अश्मरी भेदक यंत्र। लिथाट्रिप्टर Lithotriptor, लिथाट्राइट Lithotrite-इं०। आलिक़तुल् हुसात, मिक़सितुल् हुसात-अ०।

अश्मरी द्रावक ashmari-drávak-हिं० संज्ञा पुं० पथरी को विलीन करने वाली या घुलाने अर्थात् द्रव करने वाली औषध। वह औषध जो अश्मरी को घुलाकर पानी कर दे। अश्मरी विनाशक। (Lithodialytic) मुहल्लिलुल् हुसात-अ०। देखो-अश्मरीहर। -वि० अश्मरी को घुलाने या द्रव करने वाला।

अश्मरी द्रावण ashmari-drávana-हिं० संज्ञा पुं० बस्तिस्थ पथरी का विलीन करना, पथरीको घुलाना। लिथाडायालिसिस Lithodialysis-इं०। तह्लीलुल् हुसात, तज़्वीबुल् हुसात-अ०।

नोट—लिथोडायालिसिस के दो अर्थ होते हैं—(१) विनाशक औषधों के द्वारा बस्ति में पथरी का विलीन करना जिसके लिए उपयुक्त हिंदी एवं अरबी शब्द प्रयुक्त हुए हैं और (२) किसी यंत्र के द्वारा बस्ति में ही अश्मरी का छेदन करना। इसके लिए अर्वाचीन आयुर्वेदीय चिकित्सक "अश्मरी भेदन" एवं मिश्र देशीय चिकित्सक "तफ़्तीतुल् हुसात" शब्द का प्रयोग करते हैं।

अश्मरी प्रियः ashmari-priyah-सं० पुं० महा शालिधान्य। ए० मु०। (See-mahá-shálih.)

अश्मरी निर्माण ashmari-nirmána-हिं० संज्ञा पुं० पथरी बनना। (Lithiasis) तवल्लुदुल् हुसात-अ०।

अश्मरी भेदः ashmari-bhedah-सं० पुं० पाषाणभेद वृक्ष, पाथरचुर। (Coleus aromaticus.) मद० व० १।

अश्मरी भेदकः ashmari-bhedakah-सं० पुं० (१) पाषाण भेद। कैय० दे० नि०। सं० (हिं० संज्ञा) पुं० (२) देखो- अश्मरी छेदक।

अश्मरी भेदन ashmari-bhedana-
अश्मरी भेदनः ashmari-bhedanah
सं०, हिं० संज्ञा पुं०

(१) अश्मरी भेदन क्रिया, पथरी तोड़ने का कर्म। (Lithotrity). तफ़्तीतुल् हुसात-अ०। (२) किसी औषध या यंत्र द्वारा बस्ति में ही अश्मरी को फोड़कर टुकड़े टुकड़े करना। (३) पाषाण भेद। (Coleus aromaticus.) सं० निघ०।

अश्मरी रिपुः ashmari-ripuh-सं० पुं० (१) मूत्रशर्करा, बड़ा चणा। रत्ना०। (२) देवधान्य —सं०। मकाई, जुआर, बड़ा ज्वार-हिं०। ज़ुरा-अ०। Maize (Zea mays).

अश्मरी विदारण ashmari vidárana-हिं० संज्ञा पुं० शस्त्रकर्म द्वारा पथरी का निकालना। (Lithotomy).

अश्मरी शर्करा ashmari-sharkará—सं० स्त्री० मूत्राश्मक रोग विशेष। (Renal sand, Urinary sand, urinary deposits.) रम्ल कुल्यह, रम्ल मसानह, रसूब बौली-अ०। रेगे गुर्दह् या बौल-फ़ा०।

शर्करा (रेता) और सिकता प्रमेह तथा भस्माख्य रोग (मूत्र, शुक्र रोग जात अश्मरी) ये सब पथरी ही के विकार हैं और पथरी ही मूत्र का शर्करा होती है; क्योंकि इनके लक्षण और वेदना समान हैं। (यूनानी हकीम भी पथरी और शर्करा को एक ही क़िस्म से बताते हैं। देखो तिब्बे अकबर)

यदि पथरी छोटी हो और वायु के अनुकूल हो जाए तब तो प्रायः निकल पड़ती है। और जो वायु द्वारा टुकड़े टुकड़े (मर्दित हो जाने से) हो जाएँ तो उन्हें शर्करा कहते हैं।

अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्र एवं शर्करा के लक्षण प्रायः एक से होते हैं, यथा—

लक्षण-जिस मनुष्यको शर्करारोग होता है उसके हृदय में पीड़ा, साथलोंका थकना, कूखमें शूल और शोथ, तृषा और वायु का ऊर्द्ध गमन, कृष्णता (कालापन) और दुबलापन तथा देह का पीला पड़ना, अरुचि, भोजन ठीक नहीं पचना आदि लक्षण होते हैं। और जब यह मूत्रके मार्गमें प्रवृत्त होकर और वहीं स्थित हो जाती है (इसे मूत्राश्मरी कहते हैं) तब ये उपद्रव होते हैं—दुबलापन, थकावट, कृशता, कोष्ठ में शूल, अरुचि, शरीर, नेत्रादि पीले पड़ना तथा उष्णवात, तृषा हृदय में पीड़ा और वमन (या जी मिचलाना) इत्यादि। सु० नि० ३ . ०। देखो—शर्करा।

अश्मरीहरः ashmari-harah-सं० त्रि०
अश्मरीहर ashmarihar-हिं० वि०

पथरीको नष्ट करने वाला। अश्मरीनाशक। अश्मरीघ्न। (Lithontriptic.)

सं० पुं० (१) अश्मरी नाशक योग विशेष। यथा-शिलाजीत, वत्सनाग, दारु, दन्ती, पाषाणभेद, हल्दी, हड़ प्रत्येक समान भाग लेकर बारीक चूर्ण बनाएँ।

मात्रा—१ मा०। बच्चों को आध मा०।
अनुपान-तिलक्षार २ तो० एवं दूधके साथ खाने से पथरी नष्ट होती है।

(२) देवधान्य। देधान-बं०। (३) वरुणवृक्ष, बरना। वायवरणा-मह०। (Cratæva Religiosa.) इ० मा०।

सं० (हिं० संज्ञा) पुं० (४) पथरी को नष्ट करने वाली औषध। प्रभाव भेद से यह तीन प्रकार की होती है, यथा—

(१) वह औषधे जो अश्मरी बनने को रोकती हैं अथवा मूत्रस्थ स्थूल भागको मूत्राशयमें तलस्थायी होने से बाज़ रखती हैं और यदि कोई पथरी या कंकड़ी बन गई हो तो उसको विलीन करती हैं।

ऐण्टिलिथिक्स (Antilithics)-इं०। मानिअ़ात तक्रस्सुबे हसात-अ०।

(२) पथरी को तोड़ने वाली या उसको टुकड़े टुकड़े करने वाली औषधें। वह औषध जो अपने प्रभाव एवं सूक्ष्म गुण के कारण वस्ति तथा वृक्कस्थ अश्मरी को टुकड़े टुकड़े करके वा उसको विलीन वा द्रावित करके मूत्र के साथ उत्सर्जित करें। अश्मरी भेदक, अश्मरी छेदक।

लिथॉन्ट्रिप्टिक्स (Lithontriptics), लिथोट्रिप्टिक्स (Lithotriptics)-इं०। मुफ़त्तित्, मुफ़त्तितुल् हसात-अ०।

(३) वह औषध जो पथरी को विलीन करती हैं।

अश्मरी द्रावक। अश्मरी विलायक।

नोट—जब पेशाब अधिक अम्लतायुक्त होती है तब उसमें से युरिक एसिड या कैल्सियम् आक्सीलेट पृथक् होकर शर्करा के रूप में तलस्थाई हो जाते हैं जिससे पथरी वा कंकड़ी बन जाती है। ऐसी दशा में ऐलकेलीज़ (क्षारीय औषधों) के देने से या पाइपरेज़ीन के देने से बहुत लाभ होता है; क्योंकि यूरिक एसिड का बनना बन्द हो जाता है, प्रभृति। किन्तु जब मूत्र डीकम्पोज़ अर्थात् वियोजित या विकृत हो जाता है तब उसमें से फ़ॉस्फेट के रवे तलस्थाई होजाते हैं। ऐसी दशा में मूत्र को अम्ल किया जाता है और उसकी विकृति वा सड़ाँधको दूर किया जाता है। अस्तु, बेञ्ज़ोइक एसिड या बेञ्ज़ोएट्स के प्रयोग से बहुत लाभ होता है।

(Gout) में पोटासियम् और लीथियम् के लवणोंके उपयोग से यूरिक एसिड (जो व्याधि का कारण होता है।) विलेय युरेट्स में अर्थात् पोटासियम् युरेट और लीथियम् युरेट में परिणत हो जाता है एवं उनसे मूत्रस्थ अम्लता क्षारीय हो जाती है।

उपर्युक्त औषधों के सेवन काल में जल का अधिक उपयोग उनके प्रभाव का सहायक होता है। इसके उपयोग विषयक पूर्ण विवेचन के लिए विभिन्न अश्मरियों की चिकित्सा के अन्तर्गत देखें।

अश्मरीहर औषधें

आयुर्वेदीय—शिलाजीत, कुरण्टक (कटसरैया,) पलाश (खार), आक, वरुण वृक्ष,

एक घास जिससे प्राचीन काल में ब्राह्मण लोग मेखला अर्थात् करधनी बनाते थे। (२) आच्छादन। छाजन। ढकना। (३) दीपाधार। दीवट।

अश्याफ़ ashyáf-अ० (ब० व०)
नोट—शियाफ़ का बहुवचन अश्याफ़ और शियाफ़ बहुवचन है शाफ़ह् का। पिचुक्रिया, वर्तिका-हिं०। फ़तीले, बत्तियाँ-फ़ा०, उ०। (Suppositories.)

अश्यामा ashyámá-सं० स्त्री० श्वेत त्रिवृता, सफ़ेद निशोथ। Ipomœa turpethum (The white var. of-)

अश्रम् ashram-सं० क्ली०
अश्र ashra-हिं० संज्ञा पुं० } (१) रुधिर, रक्त, शोणित। (Blood.) अ० टी०। (२) नेत्रोदक, नेत्राम्बु, आँसू। (A tear.)

अश्रज ashraj-अ० (१) एक खाया (अण्ड) पुरुष अर्थात् वह मनुष्य जिसके एक ख़ायह् (अण्ड) हो या (२) जिसका एक खाया (अण्ड) छोटा और दूसरा बड़ा हो। एक अँडिया आदमी, एकाण्ड पुरुष।

अश्रज ashraja-अ० वह मनुष्य जिसका एक अण्ड बड़ा हो तथा दूसरा छोटा या वह मनुष्य जिसके केवल एक ही अण्ड हो।

अश्रद्धा ashraddhá-सं० स्त्री० अरोचक, अरुचि, श्रद्धा का अभाव। (Disgust or Aversion.)

अश्रम ashram-अ० वह व्यक्ति जिसका नासाग्र कटा हुआ हो। वह जिसके दोनों ओष्ठों में चीरा हो।

अश्रस ashras-अ० अधिक पलक झपकाने वाला मनुष्य। वह मनुष्य जो पलक अधिक झपकाए।

अश्रि ashri-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] घर का कोना। अस्त्र शस्त्र की नोक।

अश्रिबह् ashribah-अ० (ब० व०), शराब, शर्बत (ए० व०) पेया, पीने की वस्तु (Drinks, Syrups.) देखो—पेया, मद्य।

अश्रिबह् इय् तियादिय्यह् ashribah-iatiyádiyyah-अ० दैनिक व्यवहार या स्वभावतः पीने की वस्तु—जैसे, पानी पीना। हैबिचुअल ड्रिङ्कस (Habitual drinks.)-इं०।

अश्रिबह् मुन्बिह्ह् ashribah-munbihhah-अ० शक्तिदायक तथा उत्तेजक शर्बत। स्टिम्युलेण्ट ड्रिंक्स(Stimulant drinks) -इं०।

अश्रिबह् मुलत्तिफ़ह् मुग़्ज़िय्यह् ashribah-mulattifah-mughziyyah-अ० पोषण और लताफ़त (प्रमोद या हर्ष)प्रदान करनेवाले शर्बत या द्रव, प्रफुल्लकारक, प्रमोद या आह्लादजनक पेया। रेफरीजरेण्ट ड्रिंक्स (Refrogerant drinks.)-इं०।

अश्रु ashru-सं० क्ली०
अश्रु ashru-हिं० संज्ञा पुं० } मन के किसी प्रकारके आवेग के कारण आँखों में आने वाला जल। नेत्र जल। नयन जल। नयनाम्बु। आँसू। (A tear.) चश्म जल-सं०। अरक-फ़ा०। अम०।

संस्कृत पर्याय—नेत्राम्बु, रोदनं, अस्र, अस्रं, अस्नु, वाष्पं (अ०), लोचं (ज०)।

यह अश्रुग्रंथिमें बननेवाला एक स्वच्छ जलीय रस है। इसका स्वाद लवण होता है। इसका काम: पलकों और चक्षुगोलक के सम्मुख पृष्ठों को तर रखना है। अश्रु अधिक बननेकी दशामें ये आँखों से टपकने लगते हैं। नासिकाका आँखसे सम्बन्ध है इसलिए रोते समय अश्रु कभी कभी नासिका में चले जाते हैं और नासारन्ध्र में सेटपकने लगते हैं।

अश्रु अङ्कुर ashru-ankura-हिं० पुं० अश्रुवांकुर(Papilla lacrimalis)। नासिका की ओर वाले अपांग में दोनों पलकों के सम्मुख किनारों पर दो छोटे उभार होते हैं। इनमें से प्रत्येक को अश्रु अंकुर कहते हैं।

अश्रुकोष ashru-kosha-हिं० पु० (Lacrimal sac.) आँसूकी थैली। कीस दम् ई-अ०।

अश्रुगोलम् ashru-golam-सं० क्ली०
अश्रुग्रंथि ashru-granthi-हिं० स्त्री०

ताम्रगंधेत् (तूतिया), आमला, हरीतकी, विभीतकी, स्नुही (सेहुण्ड), लौह गंधेत् (कसीस), हिंगु, जलब्राह्मी, निलोफर, कुश, कास, गजपिप्पली, मैंधव, अर्जुन, गंधनाकुली (रास्ना), कदलीक्षार, मूत्रशोधक द्रव्य मात्र (गोखरू, तृणपंचमूल, कूष्माण्ड, पाषाणभेद आदि), नागरमोथा, सुगंधबाला, अंगूरपंचांगक्षार, कण्टक तण्डुलीय क्षार, यवक्षार, कुलथी, तुलसी, ककड़ी के बीज, खरबूजाके बीज और तगर।

यूनानी—बिच्छू की राख, हज्रुल् यहूद, *संग सरमाही, अरक्जालिस, असारून, समराशल्,* हंसराज, बादाम कड़ुआ, राज़ियानज (सौंफ), चना (स्याह), सकबीनज, कुकंज और पेहटुल की जड़।

डॉक्टरी—एसिड फॉस्फोरिक डायल्यूट, एसिड नाइट्रिक डायल्यूट, पाइपरेज़ोन, पोटेसियाई एसीटास, पोटेसियाई बाई कार्बोनास, पोडाफीलीन, विल्युला हाइड्रार्जिराई (पारद वटी), हायोरेटिक्स (मूत्रल औषध), लिप्टेमीन, सोडियाई बाई कार्बोनास, सोडियाई बेन्ज़ोआस, सोडियाई साइट्रो-टार्ट्रासएफर्वेसेंस, सोडियम् पोटेसियम् टार्ट्रेट(सोडाटार्ट्रेटा), सेपो डयोरस, सेलाइन पर्गेटिव्ह्ज़, लाइकवार मैग्नीसियाई कार्बोनेट्स, लीथियम्साइट्स, मिनरल वाटर्स (खनिज जल) यथा सेल्टर्ज, फ्रेड्रिक शाल, वाल्स, विकी, विलडअन तथा हुन्याडीजुनु, मैग्नीसियाई कार्बोनास, मैग्नेशिया, योरोट्रोपीन, युरोल, युरिया, युरिसीन, जल, बॉरैक्स (टंकण), पोटाश, फॉस्फेट ऑफ सोडा और लाइम वाटर(चूर्णोदक)।

अश्मरूप-वंग aṣhmarúpa-vanga-हिं० पुं० (Tin-stone) वंग भेद।

अश्मर्य्याहरणयन्त्रम् aṣhmaiyyáharana-yantram-सं० क्लो० अश्मरी निकालने का यन्त्र। अश्मरी निकालने का ऐसा यन्त्र जिसका अग्र भाग सर्प फणाकार हो। कश्चिद्वि०।

अश्मलाक्षं,-क्षा aṣhmaláksham,-kshá -सं० क्लो०, स्त्री० शिलाजतु, शिलाजीत। (Bitumen.) रा० नि० व० १३।

अश्म शिरा कुल्या aṣhma-shirá-kulyá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० शिराकुल्या विशेष।

अश्म सम्भवम् aṣhma-sambhavam-सं० क्लो० शिलाजतु, शिलाजित। (Bitumen. र० सा० सं०।

अश्मसारः aṣhma-sárah-सं० पुं०, क्लो०

अश्मसार aṣhma-sára-हिं० संज्ञा पुं०
(१) लौह, लोहा। (Iron.)-अम०
(२) लौहादि धातु (Metals.)। (३) सार लौह। इस्पात-पं०।

अश्मसारा aṣhma-sárá-सं० स्त्री० कदली, पहाड़ीकेला। पाहाड़े कला-बं०। Wild plantain (Musa sapientum.) वै० निघ०।

अश्मसुता aṣhma-sutá-सं० स्त्री० पाषा[illegible] शाकादि-दे[illegible] mpelos

अश्म-स्वेदः aṣhma-svedah-सं० पुं० प्र[illegible] स्वेद विशेष। सु०।

अश्महा,-हन् aṣhmahá,-han-सं० पुं० पाषाणभेदक। पत्थरचूर-हिं०। पाथरकुची-बं० (Coleus aromaticus.)

अश्महृत् aṣhma-hrit-सं० पुं०, क्लो० (१) कवाट-वक्र क्षुप, कराविया। See-Kavāta-vakra.)स्त्री०। (२) शिलाजतु, शिलाजित। (Bitumen.)

अश्मीरः aṣhmírah-सं० पुं० मूत्रकृच्छ्र, उष्णा०। (See-mútra-krichchhra.) [illegible]

अश्मो[illegible] [illegible]

अश्म[illegible] [illegible] जतु, शिलाजित। (Bitumen) रा० नि० व० १३।

अश्मंत aṣhamanta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) चूल्हा। (२) खेत। (३) मृत्यु। (४) अमंगल। देखो—अश्मंतः।

अश्मंतक aṣhmantaka-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अश्मन्तकम्] (१) मूंज की तरह का [illegible]

एक घास जिससे प्राचीन काल में ब्राह्मण लोग मेखला अर्थात् करधनी बनाते थे। (२) आच्छादन। छाजन। ढकना। (३) दीपाधार। दीवट।

अश्याफ़ ashyáf-अ० (ब० व०)

नोट—शियाफ़ का बहुवचन अश्याफ़ और शियाफ़ बहुवचन है शाफ़ह् का। पिचुक्रिया, वर्तिका-हिं०। फ़तीले, बत्तियाँ-फ़ा०, उ०। (Suppositories.)

अश्यामा ashyámá-सं० स्त्री० श्वेत त्रिवृता, सफ़ेद निशोथ। Ipomœa turpethum (The white var. of-)

अश्रम् ashram-सं० क्ली०
अश्र ashra-हिं० संज्ञा पुं० } (१) रुधिर, रक्त, शोणित। (Blood.) अ० टी०। (२) नेत्रोदक, नेत्राम्बु, आँसू। (A tear.)

अश्रज़ ashraz-अ० (१) एक खाया (अण्ड) दुरुस्त अर्थात् वह मनुष्य जिसके एक ख़ायह् (अण्ड) हो या (२) जिसका एक खाया (अण्ड) छोटा और दूसरा बड़ा हो। एक अँडिया आदमी, एकाण्ड पुरुष।

अश्रज ashraja-अ० वह मनुष्य जिसका एक अण्ड बड़ा हो तथा दूसरा छोटा या वह मनुष्य जिसके केवल एक ही अण्ड हो।

अश्रद्धा ashraddhá-सं० स्त्री० अरोचक, अरुचि, श्रद्धा का अभाव। (Disgust or Aversion.)

अश्रम ashram-अ० वह व्यक्ति जिसका नासाग्र कटा हुआ हो। वह जिसके दोनों ओष्ठों में चीरा हो।

अश्रस ashras-अ० अधिक पलक झपकाने वाला मनुष्य। वह मनुष्य जो पलक अधिक झपकाए।

अश्रि ashri-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] घर का कोना। अस्त्र शस्त्र की नोक।

अश्रिबह् ashribah-अ० (ब० व०), शराब, शर्बत (ए० व०) पेया, पीने की वस्तु (-Drinks, Syrups.) देखो—पेया, मद्य।

अश्रिबह् इय्तियादिय्यह् ashribah-iatiyádiyyah-अ० दैनिक व्यवहार या स्वभावतः पीने की वस्तु—जैसे, पानी पीना। हैबिचुअल ड्रिङ्क्स (Habitual drinks.)-इं०।

अश्रिबह् मुन्बिहह् ashribah-munbihhah-अ० शक्तिदायक तथा उत्तेजक शर्बत। स्टिम्युलेण्ट ड्रिंक्स(Stimulant drinks) -इं०।

अश्रिबह् मुलत्तिफ़ह् मुग़्ज़िय्यह् ashribah-mulattifah-mughziyyah-अ० पोषण और लताफ़त (प्रमोद या हर्ष)प्रदान करने-वाले शर्बत या द्रव, प्रफुल्लकारक, प्रमोद या आह्लादजनक पेया। रेफरीजरेण्ट ड्रिंक्स (Refrigerant drinks.)-इं०।

अश्रु ashru-सं० क्ली०
अश्रु ashru-हिं० संज्ञा पुं० } मन के किसी प्रकारके आवेग के कारण आँखों में आने वाला जल। नेत्र जल। नयन जल। नयनाम्बु। आँसू। (A tear.) चश्म जल-बं०। अरक़-फ़ा०। अम०।

संस्कृत पर्याय-नेत्राम्बु, रोदनं, अस्रं, अस्तं, अश्रु, वाष्प (अ०), स्रोच (ज०)।

यह अश्रुग्रंथिमें बननेवाला एक स्वच्छ जलीय रस है। इसका स्वाद लवण होता है। इसका काम: पलकों और अक्षिगोलक के सम्मुख पृष्ठों को तर रखना है। अश्रु अधिक बननेकी दशामें ये आँखों से टपकने लगते हैं। नासिकाका स्रोतसे सम्बन्ध है इसलिए रोते समय अश्रु कभी कभी नासिका में चले जाते हैं और नासारन्ध्र में सेटपकने लगते हैं।

अश्रु अंकुर ashru-ankura-हिं० पुं० अश्रु-वांकुर(Papilla lacrimalis)। नासिका की ओर वाले अपांग में दोनों पलकों के सम्मुख किनारों पर दो छोटे उभार होते हैं। इनमें से प्रत्येक को अश्रु अंकुर कहते हैं।

अश्रुकोष ashru-kosha-हिं० पु० (Lacrimal sac.) आँसूकी थैली। कीस दम्ई-अ०।

अश्रुगोलम् ashru-golam-सं० क्ली०
अश्रुग्रंथि ashru-granthi-हिं० स्त्री०

(Lacrimal-gland) यह ग्रंथि बादाम के बराबर होती है और अश्रुग्रंथि-खात में रहती है। ग़ुद्दे दम्इय्यह्-अ०।

अश्रुग्रंथि खात ashru-granthi-kháta -हिं० पु० (Lacrimal gland cavity.) नेत्र गुहा की छत (नेत्रच्छदि फलक) में कनपटी की ओर एक गढ़ा होता है।

अश्रुच्छिद्र ashru-chhidra-हिं० पु० (Punctum lacrimale) अश्रु अंकुर की शिखर पर एक छिद्र होता है जिसका नाम अश्रुच्छिद्र है। इस छिद्र में से ही होकर अश्रु आँखों से नासिका में जाया करते हैं।

अश्रुनलिका ashrunaliká-हिं० स्त्री० (Lacrimal duct.) अश्रुप्रणाली।

अश्रुनाली ashru-náli-सं० स्त्री० भगन्दर रोग। वै० निघ०। See-Bhagandara.

अश्रुपातः ashru-pátah सं० पुं०
अश्रुपात ashru-páta-हिं० संज्ञा पुं०
(१) घोड़े का एक अशुभ लक्षण विशेष। यह चिह्न (भँवरी, आवर्त्त) घोड़े की आँख के नीचेके स्थान में होता है। यह अत्यन्त भयावह तथा स्वामी के कुल का घातक है। जयदं० ३ अ०। (२) आँसू गिराना। रुदन। रोना।

अश्रुप्रणाली ashru-pranálí-सं० पुं०, हिं० स्त्री० (Naso-lacrimal Duct.) आँसुओं की नली। क़नात् दम्इय्यह्-अ०।

अश्रुवाहिनी ashru-váhiní-सं० स्त्री० (Lacrimal cannal.) अश्रुनलिका।

अश्रुश्रोत ashru-shrota-हिं० पुं० (Lacrimal Duct.) अश्रुप्रणाली।

अश्रूष āashrúsha-अ० दरियाई ख़रगोश। (A sea rabbit.)

अश्र्वस्थि ashrvasthi-सं०हिं०स्त्री० यह नाली जैसी एक अस्थि है; आँख से अश्रु इसी अस्थि में रहने वाली एक थैली में होकर नासिका के भीतर पहुँचते हैं। अश्रुओं से सम्बन्ध रखने के कारण इस अस्थि का नाम अश्र्वस्थि पड़ा है। यह अस्थि काग़ज़ जैसी पतली और बहुत कोमल होती है। लैक्रिमल बोन (Lacrimal bone)-इं०। अज़्म दम्ई-अ०। उस्तख़्वाने अश्की-फ़ा०।

अश्लानह ashlánah-हिं० मोरशिखा, मोरपंखी। (Actinopteris Dichotoma, Bedd.)

अश्लाबूस ashlábús-रू० कायफल, दरफल। (Myrica sapida.)

अश्लियह् ख्यात्म ashliyah-kyátum
अश्लियह् पातम ashliyah pátam
फिर० चूका, चाङ्गेरी। (Rumex vesicarius.)

अश्लिष्ट ashlishta-हिं० वि० [सं०] श्लेष-शून्य। असंबद्ध। असं गत।

अश्लेष ashlesha-हिं० पुं० श्लेष रहित, अप्राप्य, असंबन्ध, अप्रीति, अश्लेषभिन्न, अपरिहास।

अश्वः ashvah-सं० पुं०
अश्व ashva-हिं० संज्ञा पुं० घोटक, घोड़ा, हय, तुरंग, वाजि-हिं०। घोड़ा-बं०, हिं०। अस्प-फ़ा०। A horse (Equus caballus, Linn.)

गुण—घोड़े का मांस उष्ण, वातनाशक, कफकारक हलका तथा अधिक सेवन करनेसे पित्त तथा दाह जनक होता है। रा० नि० व० १७। अश्व रस युक्त, अभिनवर्द्धक, कफ तथा पित्त कारक, वातनाशक, बृंहण, बलद, चक्षु के लिए हितकर, हलका और मधुर है। भा० पू०। घोड़े की सवारी वातको प्रकुपित करता, अंगों को स्थिरता प्रदान करता, बल तथा अग्निवर्द्धक है। राज०। देखो—वाजि।

अश्वकः ashvakah-सं० पु० (A sparrow) कुलिङ्ग पक्षी। चिड़ा। वै० निघ०। See-kulingah.

अश्वकञ्चुकी रसः ashva-kanchukírasah-सं० पु० घोड़ाचोली रस। योग तथा निर्माण-विधि—शुद्ध पारद, विष, गन्धक, हरताल, सोहागा, सोंठ, मिर्च, पीपल, हड़, जमालगोटा के बीज, हड़, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक तुल्य भागलें। इनको चूर्ण कर भाङ्गरे के रसमें खरल कर उड़द प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। यह प्रत्येक रोगोंको दूर करता है। जिस जिस रोग

में जो जो अनुपान कहा है, उसी के साथ इसको देना चाहिए। यो० त० ज्वर० चि०।

(२) हरिताल (रससमाचिकय), पारा, गन्धक, वच, त्रिकुटा, बहेड़े की छाल, सोहागा, संखिया, गोखरू, बच्छनाग, जमालगोटा, हींग, कड़वी, नकछिकनी, गजपीपल, इन की छाल प्रत्येक समान भागको पृथक् पृथक् चूर्ण कर कपड़-छन करके भांगरे के रस में ४ दिन खरल करके मूँग प्रमाण गोलियाँ बनाएँ। यह पृथक् पृथक् अनुपान से रोग मात्र को तथा अंजन से फूले को और लेप से श्वित्रको नष्ट करती है। रस० यो० सा०।

अश्वकन्दकः ashvakandakah-सं० पुं० अश्वगंधा, असगंध। (Withania somnifera.) रत्ना०।

अश्वकन्दिका ashva-kandiká-सं० स्त्री० (१) एक वनस्पति विशेष। (२) अश्वगंधा, असगंध। (Withania somnifera.) र० मा०।

अश्वकर्णः,-कः,-र्णिका ashvakarnah,-kah-rniká-सं० पुं०, स्त्री० (१) शाल वृत्त। (Shorea robusta.) शाल गाछ-बं०। सु० सू० ३८ अ०। च० सू० ४ अ०। (२) सर्ज रस भेद, एक प्रकारका शाल-वृक्ष। सर्जशाल विशेष। रा० नि० व० २३ शाह्व।

संस्कृत पर्याय—जरणद्रुमः, तार्क्ष्य, प्रसवः, शस्यसम्बरणः, धन्यः, दीर्घपर्णः, कुशिकः, कौशिकः। भा० म० ४ भा० रेवती-चि०। 'प्रश्वकर्ण ककुभः।'

गुण—कटु, तिक्त, स्निग्ध, रक्त पित्तघ्न, ब्रण रोग, विस्फोट और कण्डू (खाज) नाशक है। रा० नि० व० ६। कफेला, व्रण, पसीना, कफ तथा कृमिनाशक और विद्रधि, वधिरता, योनि व कर्ण रोग नाशक है। भा० पू० १ भा० वटादि व०। मात्रा—२ मासा।

(३) पलाश भेद। सु० सू० ३६ अ० शरीर (४) लताशाल। शियाछिलता-बं०। प० मु०।

अश्वकर्णम् ashva-karnam-सं० क्ली० काण्डभग्न (टाँग में अस्थिभंग) नामक अस्थि-भंग विशेष। जो टूटा अस्थि घोड़े के कान की भाँति ऊँची हो जाए उसे "अश्वकर्ण" कहते हैं। सु० नि० १५ अ०। देखो-भग्नम्।

अश्वकात(थ)रा,-रिका ashva-káta (thará,-riká.)

अश्वकाथरिवा ashva-kátharivá सं० स्त्री० हयकातरा। घोड़ा काथरा-हिं०, बं०। घोड़े काथर-मह०।

गुण—तिक्त, वातनाशनी तथा दीपनी है। (काथराहय पर्य्यायैः काथरा वै प्रकीर्तिता-) रा० नि०।

अश्वकात्रि ashva-kátri-मह० बाशिंग, नान्दुर बाशिंग। कडिक पान,कडिक-रन-पम्प०। पांकी पोडियम् क्विर्सिफोलियम् (Polypodium quercifolium, Spr.)-ले०। फा० इं० ३ भा०। देखो-बाशिंग।

अश्वखुरः ashva-khurah-सं० पुं०,(१)नखी नामक गन्ध द्रव्य। (See-nakhí.) रत्ना०। (२) घोटक खुर, घोड़ेका खुर, नुम। (A hoof.) रा० नि०।

अश्वखुरा,-री ashvakhurá,-rí-सं० स्त्री० श्वेतापराजिता, विष्णुकान्ता। रा० नि० व० ३। (Clitorea ternatea.) देखो -अपराजिता।

अश्वगन्द-बिची ashva-ganda-bichí-बं० पुनीर के बीज, हिन्दी काकनज के बीज-हिं०, द०। Withania (Puneeria.) Coagulans, Dunal. (Seeds of--) इ० फा० इं०। देखो—अश्वगंधा।

अश्वगंधा (न्धिका) ashvagandhá,-ndhiká-सं० (हिं०) स्त्री० एक सीधी झाड़ी जो गर्म प्रदेशों में होती है और जिसमें मको की तरह छोटे छोटे गोल फल लगते हैं। बाराही गेठी, असगंध,-पुनीर-हिं०।

संस्कृत पर्याय—जिस संस्कृत शब्द के अन्त में "गंधा" और आदि में वाजि वाचक शब्द

आए (अर्थात् समस्त अश्ववाचक शब्द), उन सब को असगंध का पर्याय समझना चाहिए, जैसे, तुरंगगन्धा वा हयाह्वया प्रभृति । अश्वकंदिका, काम्बुका, अश्वावरोहकः (र), अश्वारोहा (हे), हयगंधा, वाजिगंधा, अश्वगन्धिका, वरया, तुर(ग, ङ्ग) गन्धा, कम्बुका, अश्वारोहिका, तुरगी, बलजा, वाजिनी, अवरोहिका, वराहकर्णी, हया, पुष्टिदा, बलदा, पुष्टिः, पीवरा, पलाशपर्णी, वातघ्नी, श्यामला, कामरूपिणी, काला, प्रियकरी, गन्धपत्री, हरप्रिया, वाराहपत्री, वाराहकर्णी, तुरंगगन्धा, तुरगा, वाजिना, वनजा, हयप्रिया, कम्बुकाष्ठा, अवरोहा, कुष्ठघातिनी, रसायनी और तिक्ता । गुण प्रकाशिका संज्ञाएँ—"पुष्टिदा", "वरया", "वातघ्नी" "वाजीकरी" । हिन्दीकाकनज—हिं० । असगंधा—मं० । काकनजेहिन्दी—अ०, फ़ा० । बहमन बरीं—फ़ा० । विथेनिया सोम्निफ़ेरा (Withania somnifera, *Dunal.*), फाइसेलिस फ्लक्सुओसा (Physalis fluxuosa.), फाइसेलिस सोम्निफ़ेरा (Physalis somnifera, *Dunal.*) -ले० । विण्टर चेरी (Winter c orry.) —इं० । मूरेङ्कप्पेन (Moorenkappen) —डच० । अमुक्कुरा-कालंग, अश्वगण्डी—ता० । पेन्नेरु-गड्डु, अश्वगंधी, पिल्ली आंगा—ते० । पेवेट्टे, अमुकिरम्—मल० । अंगवेरु, सोगडे-बेरु, हिरे-बेरू, हिरे-मद्दिन(-बेरु)—कना० । आमकन्द, असन्ध, आसंध, आसांदु, अंगुर, आसन्धिका, अश्वगन्धा, तुला, कञ्चुकी, दोरगुञ्ज—मह० । आसन्ध, आसंघ (घ), आसन—गु० । फतरफोदा —गो० । दोरगुञ्ज—दे० । असगन्ध—बम्ब० । बयमन—सिंध । अमुक्का—सिंहली ।

वृहती व०

(*N. O. Solanaceæ.*)

उत्पत्ति-स्थान—भारत के शुष्क एवं ग्रीष्मप्रधान भाग यथा बम्बई, पश्चिम भारतवर्ष वा पश्चिमी घाट और कभी कभी बंग प्रदेशमें मिल जाता है। असगंध नागौर प्रदेश में बहुत होता है और वहाँ से सर्वत्र भेजा जाता है। इसी हेतु इसको नागौरी असगंध भी कहते हैं। नागौरी असगंध सर्वोत्तम होता है।

वानस्पतिक-वर्णन—असगन्ध के क्षुप २-२॥ हाथ उच्च एवं शाखाबहुल होते हैं। पत्र युग्म (जोड़े जोड़े), अण्डाकार, अखंड, २ से ४ इंच दीर्घ, ह्रस्ववृन्त, लोमश तथा चौड़े होते हैं। पुष्प-क्षुद्र, ह्रस्ववृन्त, कक्षीय (पत्रवृन्तमूल से होकर प्रस्फुटित होते), शाखाग्र स्थित, दलवद्ध दल (पुष्पाभ्यंतर कोष)घण्टाक्याकार, पीताभ हरिद्वर्ण, और अत्यंत लघु होते हैं। फल छोटे, लाल, मसृण, मटराकार, एक झिल्लीवत् कुण्ड (Calyx) से आवरित और शिखर पर खुले हुए होते हैं, बीज असंख्य अतिक्षुद्र, लगभग एक इंच का $\frac{१}{१६}$वाँ भागदीर्घ, पीताभश्वेत, वृक्काकार, पार्श्वद्वय संकुचित; बीजावरण (Testa) मधुमक्षिकागृहवत् होता है। समग्र क्षुप ह्रस्व, सशाख, सूक्ष्माग्र रोमों से आच्छादित होता है। मूल मूलकवत् शंखाकार, किंतु पीत—ऊपर से हलका धूसर परंतु तोड़ने पर भीतर श्वेत होता है। कच्ची जड़ से अश्व मूत्रवत् (तीक्ष्ण अप्रिय) गंध आती है, इसी कारण इसको अश्वगंध प्रभृति नामों से अभिहित करते हैं। शुष्कावस्था में गंध नहीं होती एवं यह अत्यंत मृदु होती है। इसका स्वाद तिक्त होता है।

व्यापार में आनेवाली शुष्क जड़ ४ से ८ इंच लम्बी और शिखर से किंचित् आध इंच स्थूलतम भाग चौथाई से आध इंच चौड़ा (व्यास)होता है। यह मसृण, चिक्कण, शंखाकार, बाहर से हलका पीताभधूसर वर्ण का और भीतर से श्वेत एवं भंगुर होता है। टुकड़े लघु और श्वेतसार पूर्ण होते हैं। मूल विरला ही सशाख होता है। शिखर से संश्लिष्ट कतिपय कोमल काण्ड के अवशेष वर्तमान होते हैं। अणुवीक्षण द्वारा परीक्षा करने पर जड़ में पाए जाने वाले पदार्थ प्रधानतः कोमल, अण्डाकार, कोषावृत श्वेतसार द्वारा निर्मित होते हैं। यह

लुभावी एवं किञ्चित् तिक्त स्वादयुक्त होता है। "मेटिरिया मेडिका ऑफ़ वेस्टर्न इंडिया" में यह मत प्रगट किया गया है कि व्यापारिक वस्तु उपर्युक्त पौधे की जड़ नहीं हो सकती।

रासायनिक संगठन—इसमें सोम्निफेरीन (Somniferin) या अश्वगंधीन नामक एक क्षारीय सत्व (क्षारोद) पाया जाता है जो निद्राजनक है तथा राल, वसा और रञ्जक पदार्थ पाए जाते हैं।

प्रयोज्यांश—मूल, बीज तथा पत्र।

मात्रा—२ तो०।

औषध निर्माण—मूल चूर्ण, मात्रा-४ आना से ८ आना पर्यंत। क्षार, मात्रा-२ आना से ४ आना तथा अश्वगंधाघृत और अश्वगंधाऽरिष्ट आदि।

अश्वगन्धा के गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—अश्वगंधा तिक्त, कषैली, उष्ण वीर्य तथा वातकफनाशक है और विष, व्रण व कफ को नष्ट करती एवं कांति, वीर्य व बल प्रदान करती है। धन्वन्तरीय निघण्टु।

शुक्रवृद्धिकारक होने के कारण इसको शुक्रला कहते हैं तथा यह तिक्त, कटु, उष्णवीर्य एवं बलकारी है तथा कास, श्वास, व्रण और वात को नष्ट करने वाली है। (रा० नि० व० ४)

असगंध बलकारक, रसायन, तिक्त, कषैला, गरम और अत्यंत शुक्रल है एवं इसके द्वारा वात श्लेष्म, श्वित्र (सफेद कोढ़), सूजन, क्षय, आमवात, व्रण, खाँसी और श्वास का नाश होता है। (भा० पू० १ भा०। मद० व० १)

यह रसायन है और वात कफ, सूजन तथा श्वित्र (सफेद कोढ़) को नष्ट करता है। (भा०म० ख० १ भा०)

अश्वगंधा जरा (वृद्धता) व व्याधि नाशक और कषैली एवं किंचित् कटुक (चरपरी) है तथा धातुवर्द्धक व वश्य है। (बृहन्निघण्टु रत्नाकर)।

अश्वगंधा के पत्रका प्रलेप करनेसे ग्रंथि, गलगंड तथा अपची का नाश होता है। (शोढ़ल निघण्टु)

तत्शोधनं यथा प्रयोगाः—पत्र पत्रव तोयेन गंधानःक्षालनं तथा। शोधयत्वापि संस्कारो विशेषश्चात्र वक्ष्यते ॥

असगंध के वैद्यकीय व्यवहार

चरक—श्वास में अश्वगंधा मूल क्षार—श्वास रोगी को घृत तथा मधु के साथ अश्वगन्धा के अन्तर्धूमदग्ध क्षार का सेवन कराएँ। यथा—

"क्षारञ्चाप्यश्वगन्धाया लेहयेत् क्षौद्र सर्पिषा।"

(चि० २१ अ०)

सुश्रुत—शोथ में अश्वगन्धा—कुट्टित अश्वगन्धा २ तो० को गव्य दुग्ध आध पाव तथा जल डेढ़ पाव के साथ दुग्ध मात्र अवशेष रहने तक क्वाथ प्रस्तुत करें और इसे वस्त्रपूत कर शोथ रोगी को पिलाएँ; किम्वा क्षीर परिभाषानुसार प्रस्तुत असगन्ध के क्वाथ से मन्थन द्वारा निकाले हुए नवनीत और उससे बने हुए घृत का पान कराएँ। यथा—

"क्षीरं पिबेद्वाप्यथ वाजिगन्धा—। विपक्वमेवं लभते च पुष्टिम्। तदुत्थितं क्षीर घृतं सितावद्यम्। प्रातः पिबेद्वाथ पयोऽनुपानम्।" (उ० ४१ अ०)

मात्रा—आधा तो० से १ तो० तक।

चक्रदत्त—वातव्याधि में अश्वगन्धा-(१) असगंधका क्वाथ तथा कल्क और इससे चतुर्गुण घृत इन सबको गोघृत के साथ यथा-विधि पाक कर सेवन करें। यह घृत वातघ्न, वृष्य एवं मांस वर्द्धक है। यथा—

'अश्वगन्धा कषाये च कल्के क्षीर चतुर्गुणम्।
घृतं पक्वन्तु वातघ्नं वृष्यं मांस विवर्द्धनम् ॥,

(वातव्याधि० चि०)

(२) उदरोपद्रवभूत शोथ में अश्वगन्धा—उदर रोग में शोथ होने पर असगन्ध को गोमूत्र में पीसकर पान कराएँ। यथा—

"गोमूत्रपिष्टामथवाश्वगन्धाम्।"

(उदर० चि०)

(३) वन्ध्यात्व में अश्वगन्धा—क्षीर परि-

भावानुसार प्रस्तुत असगन्ध के क्वाथ में किञ्चिद् गोमूत्र का प्रक्षेप देकर, ऋतुस्नान की हुई वन्ध्या बाला (नारि) इसका पान करे। यह गर्भप्रद है। यथा—

"क्वाथेन हयगन्धायाः साधितं सघृतं पयः।
ऋतुस्नाता बाला पीत्वा धत्ते गर्भं न संशयः॥"
(योनिव्यापच्चि०)

(४) बालकके कार्श्य रोगमें अश्वगन्धा—कृश शिशु के शरीरकी पुष्टि हेतु दुग्ध, घृत, तिल तैल, किम्वा ईषदुष्ण दुग्धके साथ असगन्धकेचूर्ण का सेवन कराएँ। यथा—

"पीताऽश्वगन्धा पयसार्द्धमासम्।
घृतेन तैलेन सुखाम्बुना वा॥
कृशस्य पुष्टिं वपुषो विधत्ते।
बालस्य शस्यस्य यथाम्बुवृष्टिः॥"
(रसायनाधिकार)

मात्रा—अवस्थानुसार।

भावप्रकाश-हृदयगत वायु रोग में अश्वगन्धा—वायु के हृदयगत होने पर असगन्ध को उष्ण जल के साथ पीस कर सेवन कराएँ। यथा—"पिबेदुष्णाम्भसा पिष्टामश्वगन्धाम्।"
(म० ख० २ भा०)

वंगसेन—निद्रानाश रोग में अश्वगन्धा—अश्वगन्धा चूर्ण को गावृत तथा चीनी के साथ चाटने से नष्टनिद्रा वाले को नींद आजाती है। यह परीक्षा सिद्ध है। यथा—

"चूर्णं हयगन्धायाः सितया सहितञ्च सर्पिषा लीढम्। विदधाति नष्टनिद्रे निद्रामश्वेव सिद्धमिदम्॥" (ऊरुस्तम्भादि योगाधिकार)

वक्तव्य

जिन द्रव्यों के आर्द्र रूप में प्रयुक्त करने की विधि है "सदैवार्द्रा प्रयोक्तव्या" उनमें से असगंधभी एक है। असगन्ध कच्चे अर्थात् गीले रूप में ही व्यवहृत होता है। चरक की वातव्याधि की चिकित्सा के अन्तर्गत अश्वगन्धा के क्वाथ में तैल पाककर व्यवहार करने का उपदेश है ("कल्पोऽयमश्वगन्धायाः"—चि० २८ अ०), पर वातव्याधि चिकित्सा के अन्तर्गत अश्वगन्धा का नामोल्लेख भी नहीं। सुश्रुतोक्त वातव्याधि चिकित्सा के अन्तर्गत अश्वगंधा का नामोल्लेख दृष्टिगोचर नहीं होता। चरक में अश्वगन्धा का बल्यवर्ग में पाठ आया है।

यूनानी मतानुसार—

प्रकृति—उष्ण व रूक्ष २ कक्षा में (किञ्चित् आर्द्रता के साथ)। हानिकर्ता—उष्ण प्रकृति को। दर्पघ्न—कतीरा आवश्यकतानुसार। प्रतिनिधि—समान भाग बहमन सफ़ेद (वा मधुर कुट तथा सुरिंजान)। मात्रा—४ से ६ मा०। प्रधान कर्म—कामशक्तिवर्द्धक तथा कटिशूल के लिए हितकारक है।

गुण, कर्म, प्रयोग—कास, श्वास तथा अवयवों के शोथ को लाभप्रद है। शरीर, काम, कटि और गर्भाशय को शक्ति प्रदान करता, श्लेष्म विकार को शमन करता और आमवात (गठिया) के लिए कटु सुरिंजान की प्रतिनिधि है। (निर्विवैल) म० मु०।

नोट—यूनानी ग्रंथों में असगंध के गुणधर्म प्रायः आयुर्वेदीय ग्रंथों की नकल मात्र हैं।

नव्यमत

असगंध बल्य, रसायन एवं अवसादक है। असगंध की जड़ का चूर्ण दुग्ध किम्वा घृत के साथ बालकको सेवन करानेसे वह पुष्ट होता है। अश्वगन्धा का रसायन रूपसे क्षयकासादि रोग में जराकृत दौर्बल्य तथा वातरोगों में व्यवहार करते हैं। वातज दौर्बल्य एवं प्रदर में एतद्देशीय रमणीगण अन्यान्य बहुपोषक द्रव्यों के साथ अश्वगन्धाका उपयोग करती हैं। अश्वगंधा के पत्र को एरण्ड तैलमें सिक्त कर स्फोटकादि के ऊपर स्थापित करने से वह अंग सुप्त हो जाता है अर्थात् तत्स्थानीय त्वक् स्पर्शज्ञान रहित हो जाता है। बधिरता में नारायण तैल (जिसका अश्वगन्धा एक उपादान है) का नस्य एवं पक्षाघात, धनुस्तम्भ, वात एवं कटिशूल में इसका अभ्यंग और आमरक्तातिसार (प्रवाहिका) विशेष एवं भगंदर में इसका अनुवासनवस्ति (Enema) रूप से प्रयोग करते हैं। शिशु कार्श्य,

शारीरिक दौर्बल्य, कुष्ठ, वात व्याधि एवं वातरोगों में यह १२ से ६० बूंदकी मात्रा में सेवनीय है। (मेटेरिया मेडिका ऑफ इण्डिया, आर० एन० खोरी २ खं० पृ० ४५२)

"मख्ज़े-उल-अद्विया" नामक पुस्तक के रचयिता लिखते हैं कि इसके बीज पुनीर बीजवत् दुग्ध के जमानेके काम आते हैं। मैंने भी प्रयोगकर इसकी परीक्षा की और वस्तुतः इसके बीज में किसी प्रकार उक्त शक्ति को विद्यमान पाया। (फा० इं० २ भा० पृ० ५६७)

रॉक्सबर्ग लिखते हैं कि तैलिंग चिकित्सक इसको विपघ्न मानते हैं।

ऐचिसन लिखते हैं कि बाजार में मिलने वाली जड़ पांडु वर्ण की होती और उसका बाह्य स्वरूप जेन्शनकी तरह होता है;परंतु इसमें किंचित् अग्राह्य स्वाद एवं गंध होती है। यद्यपि तैमूज चिकित्सक इसको अवरोधोद्घाटक और मूत्रल मानते हैं और इसका क्वाथ चाय की प्याली भर दिन में दो बार प्रयुक्त करते हैं। पत्र को किंचित् उष्ण एरंड तैल में सिक्त कर विस्फोटक पर स्थापित करते हैं।

बीज मूत्रल और निद्राजनक प्रभाव करते हैं। (इर्विन)

फल मूत्रल है। पत्र अत्यन्त तिक्त होते हैं और ज्वर में इसका फांट व्यवहार में आता है। पञ्जाब में यह कटिशूल निवारणार्थ प्रयुक्त होता है और कामोद्दीपक माना जाता है। सिंधमें गर्भपात हेतु इसका व्यवहार होता है। राजपूत लोग इसकी जड़ को आमवात तथा अजीर्ण में लाभदायक मानते हैं। (इं० मे० प्लां०)

देशी असगंध (आकसन बूटी)

अश्वगन्धा सं०, बं०, मह०,कों०। देशी असगंध, आकसन, अकरी,पुनीर–हिं०। काकनजे हिन्दी–अ०, फा०। विथेनिया (पुनीरिया) कोएग्यूलेन्स Withania (Puneeria) Coagulans, *Dunal*.–ले०। वेजिटेबल रेनेट Vegetable rennet–इं०। नाट की असगंध, हिंदी काकनज–द०। अमुक्कुरा-विरै-ता०। पेन्नेरु-गड्डु-वित्तुलु-ते०। अमुकीरे-गड्डे–कना०। अमुकिरम्-मल०। काकनज-बम्ब०। पनीर-बन्द, पनीर-जा-फोटा-सिं०। अमुकुर-मह० खाम जड़िया, स्पिनबज, शापियज़, खून-ए-जदे, माफजूर, पनीर, कुटिलना-पं०। स्पिनबज्ज–अफ़०।

देशी असगंध के बीज

पुनीर के बीज-हिं०। हिंदी काकनज के बीज, नाट को असगंध के बीज-द०। हब्बुल्-काकनजे-हिन्दी-अ०। तुख्मे काकनजे हिंदी-फा०। विथेनिया (पुनीरिया) कोएग्यूलेंस Withania (Puneeria) Coagulans, *dunal*-(Seeds of-)-ले०। अम्मुकुड़ा-विरै-ता०। पेन्नेरु-गड्डु-वित्तुलु-ते०। अश्वगंद-विची-बं०।

बृहती वर्ग

(*N. O. Solanaceae*)

उत्पत्ति-स्थान—भारतीय उद्यान, वन, पर्वत तथा खेतों की बाड़ों में यह बूटी सामान्य रूप से होती है। पंजाब, सिन्ध, सतलज की घाटी, अफ़गानिस्तान और बिलूचिस्तान।

वानस्पतिक-वर्णन—एक लघु, दृढ़, धूसर, लगभग १ गज उच्च क्षुप है। पत्र श्लेष्मातक पत्रवत्; किन्तु उससे किञ्चित् लम्बोतरी शकल के; शाखा बहुल, प्रत्येक शाखा पर अधिकता के साथ फल लगे होते हैं। समग्र फल लगभग $\frac{1}{3}$ इं० व्यास में, आधार पर चिपटा, एक चर्मवत् कुप्ट द्वारा आवृत्त, जिसके शिखर पर एक पञ्च विभाग युक्त सूक्ष्म छिद्र होता है जिससे फल का एक सूक्ष्म अंश दृष्टिगोचर होता है। परिपक्व होने पर यह रक्तवर्ण का किन्तु शुष्कावस्था में पीताभ एवं छिलकावत् हो जाता है। उसके भीतर चिपटे वृक्काकार बीजों का एक समूह होता है जो चिपचिपे धूसर मज्जा से संश्लिष्ट होता और जिसकी गंध ह्रासजनक फलीय होती है। बीज अधिकाधिक $\frac{1}{8}$ इंच लम्बे होते हैं। पत्र का स्वाद एवं गंध-तिक्त होते हैं।

रासायनिक संगठन—वियेनीन (Withanin.) नामक एक प्रभावात्मक सत्त्व। यह एक प्रकार का अभिषव (Ferment) है जो उक्त पौधे के बीज द्वारा प्राप्त होता है और प्राणिज रेनेट (Animal rennet) से बहुत कुछ समानता रखता है एवं उसकी एक उत्तम प्रतिनिधि है।

क्वथित करने से यह नष्ट हो जाता है और मद्यसार से अधःक्षेपित होता है एवं इसका उसके जमाने वाले गुण पर कोई प्रभाव नहीं होता। बीजसे ग्लीसरीन वा साधारण लवण (सैंधव) के तीव्र घोल द्वारा इसका सत्त्व प्राप्त किया जाता है। इन दोनों विधियों द्वारा प्रस्तुत सत्त्व अल्प मात्रा में भी तीव्र जमाने का प्रभाव रखता है।

प्रयोगांश—फल, मूल एवं पत्र।

औषध-निर्माण—घृत व तैल आदि।

प्रभाव—वामक, रसायन, मूत्रल और यह दुग्ध को जमा देना है।

प्रयोग—सिंध तथा उत्तर पश्चिम भारत एवं अफ़ग़ानिस्तान में यह रेनेट के स्थान में दुग्ध जमाने के काम आता है। देशी लोग इसके फल को थोड़े दुग्ध के साथ रगड़ कर इसको दुग्ध में उसे जमाने के लिए मिला देते हैं। डाक्टर स्टॉक्स (१८४९) के वर्णन से पूर्व ऐसा प्रतीत होता है कि इस ओर लोगों का कम ध्यान था।

(नवीन) फल वामक रूप से भी प्रयुक्त होता है और अल्प मात्रा (शुष्क) में यह पुरातन यकृद्रोगजन्य अजीर्ण (तथा आनाहशूल) की औषध है। यह मूत्रल एवं रसायन है। बम्बई में इसको प्रायः काकनज (Physalis alkekengi, *Willd.*) के साथ मिलाकर भ्रमकारक बना दिया जाता है। काकनज का आयात फ़ारस से होता है और अरबी में उसको काकनज वा हब्बुल् काकनज कहते हैं। इब्नसीना ने इसको काकमाची (मको) वत् रसायन लिखा है और त्वग्रोगों के लिए विशेष रूपसे लाभदायक लिखा है। उक्त दोनों पौधे रक्तशोधक रूप से प्रख्यात हैं। अधुना क्यु (Kew) में किए गए हूकर (Sir. J. D. Hooker) के परीक्षणानुसार यह निश्चय किया गया है कि १ आउंस पुनीर के फल (Withania coagulans) का १ क्वार्ट (४० आउंस) खौलते हुए जल में क्वाथ कर, इसमें से एक (Tablespoonful) उक्त क्वाथ १ गैलन उष्ण दुग्ध को लगभग आध घंटे में जमा देगा (फा० इं० २ भा०)। शुष्क फल में भी यह गुण है।

पक्व फल में अंगमर्दप्रशमन एवं भ्रमकारक गुण होने का अनुमान किया जाता है। (इं० मे० मे०)।

अश्वगन्धा घृतम् ashva-gandhá-ghritam-सं० क्लो० असगंध के कषाय वा कल्क में चौगुना दुग्ध मिला उसमें घृत मिला कर पिकाएँ। जब घृत सिद्ध होजाए तब उतार एवं छान कर रक्खें।

गुण—इसके सेवन से वातरोग का नाश होता है और पुष्ट करते हुए मांस की वृद्धि करता है। वंग से० सं० वातरोग-चि०।

अश्वगन्धा तैलम् ashvagandhá-tailam -सं० क्लो० वात व्याधि में प्रयुक्त तैल विशेष। च० द०। प्रयोगाः।

अश्वगन्धादि नस्यम् ashva-gandhádinasyam-सं०क्लो० असगन्ध, सैंधव, वच,मधुसार, मरिच, पीपल, सोंठऔर लहसुन को बकरे के मूत्र में पीस नस्य लेने से नेत्र स्वच्छ होते हैं।

अश्वगन्धाद्य घृतम् ashvagandhádyaghritam-सं० क्लो० (१) असगन्ध के कल्क ४ भा० को दुग्ध १० भा० में पकाकर बालकों को पिलाने से यह उनके बलकी वृद्धि करता है। वं० सं० बालरो०-चि०।

(२) असगंध मूल १ प्रस्थ, दुग्ध २ आढ़क (५१२ तो०), घृत १ प्रस्थ इनकोकोमल अग्निसे पकाएँ। पुनः सोंठ, मिर्च, पीपल, दारचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेशर, वायबिडंग,

जावित्री, खिरेटी, गंगेरन, गोखरू, विधारा, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, वंगभस्म प्रत्येक ४-४ तो०, मिश्री ३२ तो०, शुद्ध शहद ३२ तो०। काष्ठ औषधियों का चूर्ण कर उक्त मिश्र घृत में मिश्रित कर उत्तम पात्र में रक्खें।

गुण—इसको उचित मात्रा में सेवन करने से अर्दित वात, हनुस्तम्भ, मन्यास्तंभ कटिग्रह, शोष, सन्धिगत वात, अस्थिभङ्ग, गृध्रसी, अग्नि दोष, चर्म दोष, पादशोथ, गर्भस्राव, असमय गर्भपात, आमवात, पाण्डु, शुक्रदोष, नपुंसकता आदि रोग नष्ट होते हैं। वं। से० सं० वाजीकर० अ०।

(२) शुभ दिन, शुभ देशज अश्वगन्धमूल ४०० तो० ग्रहण कर १०२४ तो० जल में पकाएँ। जब चौथाई शेष रहे, उसमें छानकर पुनः छाग मांस ८०० तो०, गोघृत ६४ तो०, गोदुग्ध २५६ तो०, काकोली, ऋद्धि, मेदा, महामेदा, क्षीर काकोली, जीवक, कौंच बीज, ऋषभक, कचोरा, मुलहठी, मुनक्का, भमासा, पीपल, जीवन्ती, खिरेटी, पीपर, विदारीकंद, शतावरी इनका कल्क बना उक्त घृत में मन्दाग्नि से पकाएँ। पुनः शहद मिश्री १६-१६ तो० मिश्रित कर उत्तम पात्र में रक्खें।

गुण—इसके सेवन से क्षत, क्षय, दुर्बलता, बालोंका श्वेत होना, हृद्रोग, वस्तिगत रोग, विवर्णता, स्त्री, पुरुष एवं बालकों के रोग, नपुंसकता, खाँसी, श्वास, वातव्याधि, स्त्रियों का वन्ध्यापन आदि अनेक व्याधियाँ दूर होती हैं। वंग० से० स० क्षय-चि०।

अश्वगन्धाद्य चूर्णम् ashvagandhádya-chúrņam-सं० क्ली० यह स्वरभंगका नाश करता है। योग इस प्रकार है, यथा—अश्वगंध, अजमोदा, पाठा, त्रिकटु, सौंफ, पलाशपापड़ा, सैंधानमक समान भाग, इनका आधा भाग वच, इन सबको चूर्णकर मधु और घृत में भली प्रकार मिलाकर रखें।

मात्रा—१० माषा (दुग्ध के साथ) सेवन करें।

नोट—पलाशबीज (पलाश पापड़ा या पलाश के बीज) का सब चूर्ण का आधा लेना चाहिए। रस० र०।

अश्वगन्धाद्य तैलम् ashvagandhádya-tailam-सं० क्ली० अश्वगन्धमूल ४०० तो० को १०२४ तो० जल में पकाएँ, जब चौथाई शेष रहे तब कपड़ छान कर चौगुना गोदुग्ध मिला कर पकाएँ। पुनः कमल की डंडी, कमलकन्द, कमलतन्तु, कमलकेशर, (कमलपद्माख), चमेली पुष्प, नेत्रबाला, मुलेठी, अनन्तमूल, कमलकेशर, मेदा, पुनर्नवा, दाख, मजीठ, दोनों कटेरी, ऐलवालुक, त्रिफला, मोथा, चन्दन, इलायची, पद्मकाष्ठ प्रत्येक १-१ तो० लेकर कल्क प्रस्तुत करें। पुनः १२८ तो० तिल तैल मिलाकर विधिवत् पकाएँ।

गुण—इसके सेवन से रक्तपित्त, वातरक्त, प्रदर, कृशता, वीर्य विकार, योनि विकार, नाना शोष, नपुंसकता, व्रण तथा शोथ दूर होते हैं। इसको मालिश (अभ्यंग) पान और अनुवासन वस्ति में भी देते हैं। वंग० से० वातव्याधि चि०।

अश्वगन्धा पाकः ashvagandhápákah-सं० पुं० ६ सेर गाय के दूध में ३२ तो० असगंध के चूर्ण को पकाएँ। जब पकते पकते कड़छी से लिपटने लगे तो उसमें चातुर्जात, जायफल, केशर, वंशलोचन, मोचरस, जटामांसी, चन्दन, अगर, जावित्री, पीपल, पीपलामूल, लवंग, शीतलचीनी, चिलगोजा, अखरोट की गिरी, भिलावों की गिरी, सिंघाड़ा और गोखुरू प्रत्येक एक एक तो० को चूर्ण कर डालें। और रससिंदूर, अभ्रक भस्म, सीसा, वंग और लोहभस्म प्रत्येक ६ माशा डालें। फिर सबको सुखाकर (घी में सेककर) चासनी में डालें।

गुण-यह उचित मात्रा से सभी प्रमेहों, जीर्णज्वर, शोष, वातिक तथा पैत्तिक गुल्म को नष्ट करता है तथा वीर्य की वृद्धि और शरीर को पुष्ट करके जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। रस० यो० सा०।

अश्वगन्धाभ्रकः ashvagandhábhrakah -सं० पुं० ८ सेर असगंध का काथ बनाकर छानें। फिर उसमें १६ तो० घी, ३२ तो० अभ्रक और सबके बराबर हल्दीका चूर्ण मिलाएँ। और केवाँचके बीजोंका चूर्ण, त्रिफला, त्रिजात, नागरमोथा, पृथक् पृथक् चार चार तो० मिलाकर पकाएँ। पाक तैयार होने पर ठंडा कर उसमें ३२ तो० शहद मिलाएँ।

मात्रा—बलानुसार देने से राजयक्ष्मा, उरःक्षत, क्षय, वात रोग और कृशता को दूर करके स्त्रियों में अत्यन्त हर्ष को उत्पन्न करता है। रस० या० सा०।

अश्वगन्धारिष्टः ashvagandhárishṭah-सं० पुं० असगंध ½ तुला, मुसली ८० तो०, मजीठ, हड़, हल्दी, दारुहल्दी मुलहठी, रास्ना, विदारीकंद, अर्जुनकी छाल, नागरमोथा, निशोथ अनन्ता (दूब) श्यामलता प्रत्येक ८०-८० तो०, श्वेत चन्दन, रक्त चंदन, वच, चित्रक प्रत्येक ६४-६४ तो० इनको चूर्ण कर ८ द्रोण जल में पकाएँ। जब १ द्रोण क्वाथ शेष रहे तब शीतल हो जाने पर धवपुष्प १२८ तो०, उत्तम शहद १५ सेर, सोंठ, मिर्च, पीपल १६-१६ तो०, दालचीनी, इलायची, तेज पत्र ३२ तो०, फूल प्रियंगु ३२ तो०, नागकेशर १६ तो० चूर्ण कर उक्त क्वाथ में मिश्रित कर उत्तम पात्र में रख एक मास पर्यंत रखने से यह अरिष्ट सिद्ध होता है।

मात्रा—१ से २ तो०।

गुण—इसके विधिवत् सेवन करने से मूर्च्छा, अपस्मृति, शोष उन्माद, दुर्बलता, अर्श, मंदाग्नि और समस्त वात व्याधियों का नाश होता है। भैष० र० मूर्च्छा चि०।

अश्वगन्धावलेहः ashvagandhávalehah -सं० पुं० असगंध चूर्ण ४० तो०, सोंठ चूर्ण २० तो०, पीपल चूर्ण १० तो० और काली मिर्च ५ तो०, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात और नागकेशर चूर्ण प्रत्येक २ तो०, गाय का दूध २०० तो०, शहद २० तो०, गाय का घी ... तो०, सबको पृथक् पृथक् लेकर मिट्टी की कड़ाही में डालकर मंद अग्नि से पकाएँ। जब पकते पकते आधा दूध शेष रहे तब ऊपर बनाए हुए चूर्णों को उसमें मिला दें। जब दूध और घी घोटते घोटते पृथक् न मालूम पड़ें तब उतार लें। फिर जीरा, पीपलामूल, तालीसपत्र, लवंग, तगर, जायफल, खस, सुगंधबाला, लामज्जक (बारीक खस), बेलगिरी, कमल के फूल, धनियाँ, धौके फूल, वंशलोचन, आमला, खैरसार, घनसार (कपूर), पुनर्नवा, असगंधा, चित्रक और शतावरी प्रत्येक आधा तो० और शुद्ध पारा २ तो० तथा रससिंदूर २ तो० लेकर बारीक चूर्ण करके मिलाएँ। फिर ठंडा होने पर शहद मिलाकर चिकने बर्तन में रक्खें।

मात्रा—२ तो०।

गुण—खाँसी, दमा, हिचकी, अजीर्ण वातरक्त, प्लीहा, वातरोग, आमवात, सूजन, बवासीर, पांडु, कामला, संग्रहणी, गुल्मरोग, कफ के विकार तथा मंदाग्नि को दूर करता और बालकों, स्त्रियों तथा अल्पवीर्य वाले पुरुषों की काम वृद्धि करता है। रस० यो० सा०।

अश्वगन्धिका ashva-gandhiká-सं० स्त्री० अश्वगंधा, असगंध। (Withania Somnifera.) रा०।

अश्वगोष्ठम् ashvagoshtham—सं० क्ली० वाजिशाला, अस्तबल, तबेला, घुड़साल। (A stable.)

अश्वघ्नः ashvaghnah-सं० पुं० श्वेत करवीर वृक्ष, सफेद कनेर का पेड़। श्वेतकरवी मांक-बं०। Nerium odorum (The white var. of-) रा० नि० व० १०।

अश्वचक्र ashvachakra-हिं० संज्ञा पुं० [सं-] (१) घोड़े के चिह्नों से शुभाशुभ का विचार। (२) घोड़ों का समूह।

अश्वजीवनः ashvajívanah-सं० पुं० चणक। चना-हिं०। छोला-बं०। Gram or chick pea (Cicer arietinum.) वै० निघ०।

अश्वतरः ashvatarah–सं० पुं०
अश्वतर ashvatara– हिं० संज्ञा पुं० } [स्त्री अश्वतरी] (१)अश्वखरज, खच्चर, घोड़ी और गधे से उत्पन्न जीव। खच्चोर घोड़ा-बं०। (A mule or donkey) सु० अ० ४६।

गुण—इसका मांस बल्य, वृंहण और कफ पित्त कारक है। मद० व० १२।

(२) एक प्रकार का सर्प। नाग-राज।

अश्वतृणम् ashvatrinam–सं० क्ली० पापाण मूली। घोड़ाघास-हिं०। उस्तुलस्तील-अ०। (Collinsonia.) देखो—पृ० ७८३

अश्वत्थः ashvatthah–सं० पुं०
अश्वत्थ ashvattha–हिं० संज्ञा पुं० } (प० मु०। सु० सू० ३८ अ० न्यग्रोधादिव.) पीपल, पि(पी)पर-हिं०, मह०, गु०, पं०, बम्ब०। फाइकस रेलिजिओसा (Ficus religiosa, Linn.)-ले०। दी सेक्रेड ट्री (The sacred tree), दी पीपल ट्री (The peepul tree)-इं०। फिगीर -दों पार्गे देस पैगोडेस Figu-ier ou arbre des pagodes (Ou de Dieu ou Conseils)-फ्रां०। रेलिजि ऑजर फीगनबॉम(Religioser Fiegenbaum) -जर०।

संस्कृत पर्याय—केशवालयः, चैत्यद्रुः(त्रि०), बोधिद्रुमः, कृष्णावासः (हे), चैत्यवृक्षः (र), नागबन्धुः, देवात्मा, महाद्रुमः (श), कपीतनः (मे), बोधिद्रुमः, चलदलः, पिप्पलः, कुञ्जराशनः (अ), अच्युतावासः, चलपत्रः, पवित्रकः, शुभदः, बोधिवृक्षः, याज्ञिकः, गजभक्षकः, श्रीमान्, क्षीरद्रुमः, विप्रः, मंगल्यः, श्यामलः, गुह्यपुष्पः, सेव्यः, सत्यः, शुचिद्रुमः, धनुर्वृक्षः, गज भक्ष्यः, गजाशनः, क्षीरद्रुमः, बोधिद्रुः,धर्म्मवृक्षः,श्रीवृक्षः। चाजुद गाछ, अशोधगाछ, अश्वत्थ, असूवत-बं०। सुर्तब्रग-अ०। दरख्त लरज़ाँ, पीपल -फ़ा०। सुरी-उ०। यरस, यरश मरम्, अस्वधुम्-ता०। राइं (रि)चेट्टु, कुलुजुविचेट्टु, राइ, रैग, रावि, कुञ्जरावि, रागी-तै०। रंगी, वसी, अरली, अरले नेसपथ, रागी, अस्वत्त, अरशेमर, अश्वत्थमर-कना०। पिंपल, पीपलो मह०। पिम्पल-मह०, को०। अरली-का०। पिम्पल, पिप्ली, पिपुर, पिपुल-असाम०। पीपर, भोर-पं०। पिपुल-गु०। हिसार, पीपर-दोल०। हिमाक-कुमा०। ज़ाउ-उड़ि०। बोरबुर-पञ्जा०। पिप्ली-नैपाल। आ(अ)ली-गों०। पेप्री-कोंकु०। पीपल को पेड-मारवा०। अरशम्मरम् द्राविड०।

न.ट—इसका एक छोटा भेद है जिसको पीपली कहते हैं। इसके पत्र छोटे होते हैं।

अश्वत्थ या वटवर्ग

(*N. O. Urticaceae.*)

उत्पत्ति-स्थान—सम्पूर्ण भारतवर्ष और (बंग प्रदेश, मध्य प्रदेश) हिमालय पाद।

वानस्पतिक-वर्णन—अश्वत्थ एक श्रेष्ठतम छाया वृक्ष है। पीपल के पक्व फल को पक्षीगण खाकर जब बीट करते हैं तब उसमें सावित बीज निकलते हैं। इनमें जननोपयोगी बीज किसी वृक्ष वा दीवार पर गिर कर मिट्टी का सहारा पाकर अंकुरित हो जाते हैं।। अस्तु, प्राचीन गृहों की दीवारों तथा वृक्षों पर भी पीपल के वृक्ष दृष्टिगोचर होते हैं। चैत्र में अश्वत्थ वृक्ष पत्रशून्य होता है और प्रायः ग्रीष्म ऋतु में नवीन पत्रों से सुशोभित होता है। इसके वृक्ष अत्यन्त विशाल एवं बहुशाखी होते हैं। पत्र गोल अंडाकार सिरे की ओर लहरदार हृदाकार, पत्रवृन्त दीर्घ एवं पतला, पत्राग्रभाग क्रमशः सूक्ष्म होता हुआ वर्द्धित, पत्र का ⅓ लम्बा होता है। फलकोष (कुण्ड) कक्षीय, युग्म, वृन्त रहित, संकुचित, मटराकार (वा उससे वृहत्), ग्रीष्म ऋतु में फल लगते और प्रावृट में परिपक्व होते हैं। पक्वावस्था में बैंगनी रंग के होते हैं। पीपल के काटने और तोड़ने से उसमें से एक प्रकार का लुहेसदार श्वेत रस निर्गत होता है जिसे पीपल का दूध कहते कहते हैं। इसी कारण इसका एक नाम "क्षीरद्रुम" है और इसकी क्षीरी वृक्षों में गणना

होती है। उक्त वृक्ष में रबड़ या धूप होता है। इसके वृक्ष में लाख लगता है जो औषध कार्य में आता है। इसकी शाखों और पेड़ में से वट वृक्ष की तरह हवा में जड़ें फूटती हैं जिनको पीपल की दाढ़ी कहते हैं; परन्तु ये वट के बरोह इतने प्रशस्त नहीं होते और न इनसे वृक्ष ही तैयार होते हैं। उक्त दाढ़ी औषधकार्य में आती है। इसके कतिपय दरारों से एक प्रकार की श्यामवर्ण की गोंद भी निकलती है।

नोट—जनसाधारण का यह विश्वास है कि वट, पीपल, गूलर, पाकर तथा अंजीर प्रभृति वृक्षों में फूल आते ही नहीं; परन्तु उनका यह विचार सर्वथा मिथ्या है और इससे उनकी उद्भिद्‌विद्या विषयक अज्ञता सूचित होती है। पीपल के फल और फूल को शकल में कोई विशेष अन्तर न रहने के कारण ऐसा हो जाना सम्भव है। शास्त्रों में इसके अस्पष्ट रहने के कारण ही इसको गुह्यपुष्प कहा गया है। सर्वसाधारण जिसको पीपल का कच्चा फल कहते हैं वही इसका पुष्प है। इसका निश्चित ज्ञान वनस्पतिशास्त्र के अध्ययन द्वारा हो सकता है।

ज्ञात रहे कि प्रायः वृक्ष रात्रि के समय एक प्रकार का मनुष्य-स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वायव्य छोड़ा करते हैं; परन्तु अर्वाचीन विज्ञान के अन्वेषणानुसार उसके विपरीत अश्वत्थ में यह बात नहीं पाई जाती। यही कारण है कि हिंदू लोग इसको चिरकाल से देवता तुल्य मानते आए हैं एवं उनके यहाँ इसकी बड़ी प्रतिष्ठा है।

देखो—अञ्जीर।

रासायनिक संगठन—त्वक् में कषायीन (Tannin), कू(कौ)चुक (Caoutchouc) अर्थात् भारतीय रबर और मोम (Wax) आदि पाए जाते हैं।

प्रयोगांश—पत्र, पत्रमुकुल, त्वक्, फल, बीज, पीपल की दाढ़ी, दुग्ध, काष्ठ, मूल और निर्यास, तथा लाक्षा।

औषध-निर्माण—क्वाथ, मात्रा आध पाव। पञ्चवल्कल कषाय (च० द०), पञ्चवल्कलादि तैलम् प्रभृति।

प्रभाव—पत्रमुकुल-रेचक; त्वक्-संग्राही फल-कोष्ठमृदुकर या मृदुरेचक; बीज-शीतल मृदुरेचक, शैत्यकारक और रसायन।

अश्वत्थ के गुण-धर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मतानुसार—पीपल का पक्व फल मधुर, कषैला, शीतल, कफपित्तनाशक एवं रक्तदोष व दाह का शमन करने वाला और तरुणा योनिदोषहारक है। अन्यत्र अश्वत्थ वृक्ष के पक्व फल अत्यन्त हृद्य एवं शीतल हैं और पित्त, रक्त के रोग, विष व्याधि, दाह, वमन, शोषं तथा अरुचि दोष (अरोचक का) नाश करने वाला है। अश्वत्थिका (पीपली) मधुर, कषैली है तथा रक्तपित्तहर, विष एवं दाह प्रशमक और गर्भवतो के लिए हितकारी है। रा० नि० व० ११। दुर्जर और शीतल है। मद० व० ५।

दुर्जर, शीतल, भारी, कषैला, रूक्ष, वर्ण प्रकाशक, योनि शोधनकर्ता, पित्त, कफ, व्रण और रुधिर के विकार को दूर करता है। भा० पू० १ भा० वटादिव०।

अश्वत्थ के वैद्यकीय व्यवहार

चरक—(१) वातरक्त में अश्वत्थ त्वक्-पीपल की छाल के क्वाथ में मधु का प्रक्षेप देकर सेवन करने से भयंकर रक्तपित्त प्रशमित होता है। यथा—

"वोधिद्रुम कषायन्तु पिबेत्तं मधुना सह।
वातरक्तं जयत्याशु त्रिदोषमपि दारुणम्॥"
(चि० २९ अ०)

(२)व्रणाच्छादनार्थ अश्वत्थ पत्र—अश्वत्थके पत्र से व्रण प्रच्छादन करें। यथा—

"पिप्पलस्य च। व्रण प्रच्छादने विद्वान्।"
(चि० १३ अ०)

(३) व्रण में अश्वत्थ त्वक्—अश्वत्थ त्वक् चूर्ण के क्षत पर अवचूर्णन करनेसे वह शीघ्र पूरित होता है अर्थात् भर जाता है। यथा—

"ककुभोदुम्बराश्वत्थ—। त्वचमाश्वेव गृह्णन्ति त्वक् चूर्णचूर्णिता व्रणाः॥"
(चि० १३ अ०)

सुश्रुत—(१)नीलमेह में अश्वत्थ त्वक्—

नीलमेहीको अश्वत्थ की छाल द्वारा प्रस्तुत क्वाथ पान करायें। यथा—

"नीलमेहिनमश्वत्थ कषाय वा पाययेत्" (चि० ११ अ०)

(२) वाजीकरणार्थ अश्वत्थ फलादि—अश्वत्थ फल, मूल त्वक् एवं शुंग (पत्रमुकुल) इनका क्वाथ प्रस्तुत कर मधु एवं शर्करा का प्रक्षेप देकर पिलाने से चटकवत् मैथुन शक्ति की वृद्धि होती है। यथा—

"अश्वत्थ फल मूलत्वक् शुङ्गासिद्धं पयोनरः। पीत्वा स शर्करा क्षौद्रं कुलिङ्गइव हृष्यति ॥" (चि० २६ अ०)

चक्रदत्त—(१)वमनमें अश्वत्थ त्वक्—अश्वत्थ वृक्ष की सूखी हुई छाल को जलाकर उक्त अंगार को जल में डाल रखें। इस जल के पीने से वमन की निवृत्ति होती है। यथा—"अश्वत्थ वल्कलं शुष्कं दग्ध्वा निर्वापितं जले। तत्तोयपानमात्रेण छर्दिर्जयति दुस्तराम्।" (छर्दि चि०)

(२) अग्निदग्धव्रण में अश्वत्थ वल्कल-अश्वत्थ वृक्ष की सूखी छाल के बारीक चूर्ण के अग्नि से जल जाने के कारण उत्पन्न हुए व्रण पर छिड़कने से क्षत अच्छा हो जाता है। यथा—"अश्वत्थस्य विशुष्कवल्कल कृतं चूर्णं तथा गुण्ठनात्।" (व्रण शोथ-चि०)

(३)कर्णशूल में अश्वत्थपत्र—अश्वत्थपत्र द्वारा प्रस्तुत चोंगाको तैलाक्तकर उसे तप्त अंगारोंसे पूर्ण कर कर्ण के ऊपर (कुछ दूरी पर) रक्खें। अँगारों द्वारातप्त होकर जो तैल चोंगे से चुए, उससे कर्णपूरण करने से तत्काल कर्णशूल की शांति होती है। यथा—

"अश्वत्थ पत्र खल्लंवा विधाय बहुपत्रकम्।
तैलाक्तमंगार पूर्णं विदध्याच्छ्रवणोपरि।
यत्तैल च्यवते तस्मात् खल्लादंगारतापितात्।
तत्प्राप्तं श्रवणस्रोतः सद्यो गृह्णाति वेदनाम्।
(कर्ण रोग-चि०)

(४) शिशु के मुख पाक में अश्वत्थ त्वक् एवं पत्र-बालक के मुख पकने पर अश्वत्थ की छाल तथा पत्र को मधु के साथ भली प्रकार पीस कर उस पर प्रलेप करें। यथा—

"अश्वत्थत्वग्दल क्षौद्रैर्मुखपाके प्रलेपनम्।" (बालरोग-चि०)

वक्तव्य

अश्वत्थत्वक् "पञ्चवल्कल"के अवयवों में से एकहै। योनि रोगमें पञ्चवल्कल का क्वाथएवं विसर्प में उसके प्रलेप का बहुशः प्रयोग करने से ये लाभप्रद सिद्ध हुए। चरक में अश्वत्थ का "मूत्रसंग्रहण वर्ग" में पाठ आया है। इसके अतिरिक्त अश्वत्थ त्वक् का लोम रोग में प्रयोग किया जा सकता है। सन्निपातज्वर में अश्वत्थ-पत्र-स्वरस को विशेष औषधों के अनुपान रूप से व्यवहार किया जाता। सुश्रुत के न्यग्रोधादिगण में अश्वत्थ का पाठ आया है (सू० ३८ अ०)। चरक सिद्धिस्थान में अतिसार में प्रयुक्त यवागू पाकार्थ द्रव्यान्तर के साथ अश्वत्थ शुंग व्यवहृत हुआ है—"मसूराश्वत्थशुंगैश्च यवागूः स्याज्जले श्रृता।" अविकसित पत्रमुकुल को शुंग कहते हैं ("शुंग इत्यविकसित पत्र मुकुलम्"—चक्रसंग्रह टीकायां शिवदासः)।

यूनानी मतानुसार—प्रकृति-पत्र तथा त्वक् २ कक्षा में शीतल व रूक्ष किसी किसी के मत से उष्ण हैं।

हानिकर्त्ता—आमाशय तथा आन्त्र को।
दर्पघ्न—लवण तथा घी।
प्रतिनिधि—विलायक रूप से वट पत्र।
मात्रा—छाल, १ मिस्काल तक(४॥ मा०)।
प्रधान-कर्म—व्रण एवं शोथ लयकर्ता।
गुण, कर्म, प्रयोग—देखो—पञ्चाङ्गवर्णनांतर्गत।

अश्वत्थपत्र तथा पत्र-मुकुल

पीपल के पत्र और कोंपल विरेचन रूप से प्रयोग में आते हैं (एन्स्लो व वाइट)। स्त्रीरोगोंमें भी इनका उपयोग होता है (इं० मे० मे०)। पीपल के कोमल पल्लव को दुग्ध में क्वथित

पीपल के पत्ते २, नीबू के पत्ते २ और निर्गुण्डी पत्र ७ इन तीनों में १॥ सेर पानी डालकर खूब क्वथित करें। थोड़ा जल शेष रहने पर इसको उतार कर मोटे कपड़े से छानलें और इससे (क्वाथ से) दूना तिल तैल मिलाकर तैलावशेष रहने तक पकाएँ।

गुण व प्रयोग—यह तैल कर्णशूल, कर्णशूल एवं बधिरता के लिए हितकर है। कान से पूयस्राव होताहो तो प्रथम उसको निम्ब क्वाथ से प्रक्षालित कर फिर इस तैल के ४-५ बूँद रूई के फाया पर डाल कर इसको कान में रखें। इससे लाभ होगा।

अश्वत्थ त्वक्

अश्वत्थ त्वक् संग्राही है और पूयमेह में इसका उपयोग होता है। इसमें पोषक गुण भी है (पेन्सलो तथा वाइट)। आर्द्र कण्डू में इसकी छाल के फांट का अन्तः प्रयोग होता है।

प्रादाहिक शोथों में इसके विचूर्णित त्वक् का कल्क आचोषक (Absorbent) रूप से व्यवहार में आता है। (इमर्सन)

इसकी छाल को जलाकर उसे गरम गरम जल में डाल दें। कहा जाता है कि यह पानी हठीले कास में लाभदायक है। (डॉ० थॉर्नटन)

इसकी शुष्क छाल का चूर्ण भगन्दर में प्रयुक्त होता है। मैंने एक हकीम को इसका लाभपूर्ण उपयोग करते हुए पाया। प्रयोग-विधि निम्न है—एक धातु (वा किसी अन्य पदार्थ) की नली में किञ्चित् अश्वत्थ चूर्ण को रख कर भगन्दर के व्रत के भीतर फूँक द्वारा प्रविष्ट करदें। (वैद्य)

बालक के ओष्ठ, जिह्वा, तालु किम्बा मुख के भीतर दधि विन्दुवत् शुभ्र व्रत होने पर वा साधारण मुख व्रत में मधु के साथ अश्वत्थ चूर्ण का प्रलेप करें। श्वास रोग में अश्वत्थ चूर्ण मधु के साथ सेवनीय है। अश्वत्थ त्वक् साधित तैल श्वेतप्रदर तथा आमरक्तातीसार में अनुवासन वस्ति रूप से और इसका क्वाथ विकृत व्रत के धावनार्थ एवं लालास्राव में कवलार्थ व्यवहार में आता है।

(मेटिरिया मेडिका ऑफ इण्डिया—आर० एन० खोरी २ य खण्ड, ५५६ पृ०)

अश्वत्थ त्वक् का क्वाथ तथा फांट पिलाना पूयमेह, मूत्रकृच्छ्र एवं आर्द्र कण्डू में हितकारक है।

अश्वत्थ चूर्ण को अंकुरोत्पादन हेतु विकृत व्रतों पर छिड़कते हैं। छाल, चमड़ा सिझाने के काम में आती है। (इं० मे० मे०)

इसकी छाल संग्राही है और विकृत व्रतों एवं कतिपय चर्म रोगों में इसका उपयोग होता है। (इं० ड्र० इं०)

अश्वत्थ की शुष्क छाल के चूर्ण को अलसी तैल के साथ प्रयुक्त करने से यह व्रणपूरक है।

इसकी छाल को पानी में डालकर उस पानी के पीने से हल्लास एवं तृषा तत्काल प्रशमित होती है। इसकी छाल (वा मूल त्वक्) का प्रलेप नाडीव्रण (नासूर) के लिए हितकर और शोथ लयकर्ता है।

इसकी छाल को पानी में पीस कर लिंगेन्द्रिय पर प्रलेप करें। सूख जाने पर उष्ण जल से धोकर स्त्री-संग में प्रवृत्त होने से यह आश्चर्यजनक वीर्य स्तम्भन करता है और मनुष्य को बेबस बना देता है।

पीपल वृक्ष की छाल को जल में घिस कर यदि आरम्भ में ही फुंसियों पर प्रलेप करें तो यह उनको जला देता है और बढ़ने नहीं देता। किसी किसी समय वृद्धि की दशा में लगाने से फोड़े को अपनी जगह बिठा देता है।

नाड़ी-व्रण के व्रत के लिए इसकी छाल को घृतकुमारी के पोले रस में घिसकर बत्ती प्लुत कर नासूर में रखने और उसके चारों ओर प्रलेप करने से थोड़े ही दिवस में नासूर को भरदूर कर देता है।

पीपल वृक्ष की छाल को जौकुट करके एक घड़े में भरदें और मुख बन्द करके इसको एक गढ़े में रक्खें। इस गढ़े के भीतर एक और छोटा सा

गड्ढा खोदकर चीनी का प्याला रक्खें और इसके ऊपर भागुक घड़ा रहे, जिसके पेंदे में छिद्र कर दिया गया हो। इसमें आग लगादें। जब शीतल हो जाए नीचे की कटोरी में एकत्रित हुए तैल को नागरबेल पान के साथ प्रति दिन आधे माल भर खाने से थोड़े ही दिवस के भीतर मधुमेहता दूर होती है।

फोड़ों को पकाने के लिए इसकी छाल की पुल्टिस बाँधते हैं।

पित्त शोथ को मिटाने के लिए इसकी छाल का ठंडा लेप करना चाहिए।

इसकी छाल के कोयलों को पानी में बुझाएँ। इस पानी को पिलाने से हिक्का, वमन तथा तृषा आदि प्रशमित होते हैं।

पीपल की छाल का काढ़ा शहद मिलाकर पीने से वातरक्त की खराबी दूर होती है।

इसकी छाल के चूर्ण को व्रणचूर्णन करने से व्रणपूरण होता है।

मुख से अधिक लालास्राव होता हो जैसा शिशुओं को प्रायः होता है तो पीपलकी छाल के क्वाथ का गण्डूष लाभदायक होता है।

पीपल की ताजी छाल २ तो० को आध सेर पानी में क्वथित कर पाद शेष रहने पर छानकर शीतल होने पर प्रातः और इसी प्रकार शाम को पिलाएँ। गुण-कुष्ठघ्न है।

पीपल की ताजी छाल को छाया में सुखाकर बारीक पीसकर कपड़छान करें और ६ मा० से १ तो० तक दिन में २-३ बार सेवन कराएँ। गुण—कुष्ठघ्न है।

पीपल के छिलके को पत्थर पर गोमूत्र या पानी में घिसकर दिन में दो-तीन बार कुष्ठ के व्रणों पर लगाना चाहिए।

पीपल की ताजी छाल २० सेर, छिलकेके छोटे छोटे टुकड़े करके रात को २ मन पानी में भिगोएँ और प्रातः अग्निपर पकाएँ जब पानी लगभग २० सेर शेष रह जाए तब उतार कर छान लें और दुबारा आगपर चढ़ाएँ। जब शहद के समान गाढ़ा हो जाए तब अग्नि से उतार रखें। यह

अश्वत्थ सार (एक्सट्रैक्ट) है। मात्रा-४ रत्ती से माशा पर्यंत प्रातः सायंकाल ताजे पानी के साथ। गुण—कुष्ठहर।

छाया में सुखाए हुए अश्वत्थ के ताजे छिलके ५ सेर को ३० सेर पानी में रात को भिगोएँ। प्रातः काल इसमें से २० बोतल अर्क खींच कर इस अर्क में २ सेर पीपल की शुष्क छालको फिर भिगोएँ और द बार १० बोतल अर्क तय्यार करें।

मात्रा—आध आध पाव अर्क दिन में तीन चार बार। गुण-कुष्ठहर।

पीपल वृक्ष की कोमल छाल को छाया में सुखाकर बारीक पीस कपड़छान करें। मात्रा व सेवन-विधि—ज्वर आने से एक दिन पूर्व तथा बारी के दिन ६-६ मासे इस चूर्ण को प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल गर्म पानी से खिलाएँ। गुण-ज्वर प्रतिषेधक है।

अश्वत्थ त्वक् द्वारा भस्म-निर्माण-क्रम

इसकी छाल का चूर्ण रांगा और सीसा प्रभृति धातुओं की भस्म करने का उत्तम साधन है।

(१) पीपलके दरमियानी आर्द्र त्वक् २ सेरको लेकर उसका कल्क बनाएँ और बीच में ऽ- शुद्ध राँगा रख कर कपड़मिट्टी कर मन भर उपलों की आँच दें तो अत्युत्तम भस्म प्रस्तुत होगी।

मात्रा—१ से ४ रत्ती। अनुपान—मक्खन या बकरी के दूध की लस्सी। गुण तथा प्रयोग—यह प्रमेह, स्वप्नदोष और सूजाक में अत्यन्त लाभप्रद है।

(२) २० तोले पीपल की छाल को ३ सेर पानी में क्वथित करें। जब ऽ॥ सेर अर्थात् पाद-शेष जल रह जाए तब उतार कर छान लें। बाद को ५ तो० सीसा को आग पर मिट्टी के बरतन में डालकर पिघलाएँ और पीपल के क्वाथ में डाल दें। इसी प्रकार कम से कम ७ बार करें। तदनन्तर इस शुद्ध सीसे को किसी मिट्टी के मज़-बूत और कोरे ठीकरे पर रख कर तीव्र अग्नि पर

रखें और पीपल की शुष्क छाल को बारीक पीस कर सीसे पर डालकर पीपल की सूखी लकड़ी से भली प्रकार हिलाते रहें और जले हुए पीपल के छिलके को हवा देकर उड़ा दिया करें। ऐसे अवसर पर बाँसकी नली का उपयोग करना उत्तम है। दो-तीन घंटे की लगातार आँच से सीसे की रक्त वर्ण की भस्म प्रस्तुत होगी। यदि कुछ चमक शेष रहे तो घंटे आध घंटे और इसी प्रकार आँच दें। मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक २ तो० मलाई या मक्खन में प्रातः सायंकाल दोनों समय खिलाने से यह नपुंसक को पुंसत्व शक्ति प्रदान करती है एवं प्राचीन से प्राचीन कुष्ठ और प्रमेह का मूलोच्छेदन कर देती है।

रांगा की भस्म भी इसी प्रकार प्रस्तुत हो जाती है और पूर्वोक्त सभी रोगों में लाभदायक होती है।

नोट—सीसे को क्वाथ में डालते समय वह ज़ोर से उछलता है। अस्तु, यह कार्य अत्यंत सावधानी से करना चाहिए।

(३) पीपल की सूखी छाल के २० तो० जौकुट चूर्ण में से थोड़ा चूर्ण एक बड़े उपले में गढ़ा बनाकर बिछाएँ। फिर उस पर २ तो० वंग और २ तो० पारद को रेज़ा रेज़ा करके रख कर ऊपर उसके पुनः उक्त अश्वत्थ त्वक् चूर्ण को और वंग को तह ब तह रख कर दूसरे उपले को ऊपर देकर हर दो उपलों की संधियों को कपड़ मिट्टी द्वारा बन्द कर एक गढ़ेमें रख ४ सेर उपलों की अग्नि दें। स्वांगशीतल होने पर इसको निकाल लें। उत्तम श्वेत भस्म प्रस्तुत होगी। मात्रा—१ रत्ती। अनुपान—मक्खन में रखकर प्रातः सायंकाल इसका उपयोग करें। गुण—कामावसाय, शीघ्रपतन, शुक्रमेह तथा पूयमेह के लिए लाभप्रद है। अर्शके लिए इसे हरड़के मुरब्बामें ४ रत्ती की मात्रा में प्रतिदिन सेवन करें। यह प्रत्येक प्रकार के अर्श के लिए अमोघ है। आन्त्रस्थ कद्दूदाने एवं केचुए के लिए एक मासा इस भस्म को प्रतिदिन दधि में मिलाकर खिलाने से दो-तीन दिन में यह सबको मृतप्राय कर उदर से विसर्जित कर देता है।

अश्वत्थ फल

पीपल का फल कोष्ठमृदुकर है (अस्तु इससे कोष्ठबद्धता दूर होती है) और यह पाचनशक्ति को सहायता करता है। (ऐन्सली। इं० मे० मे०)

बार्थलोमियो (Bartholomeo) के मतानुसार (पूर्वी भारत की यात्रा में) शुष्क फल के चूर्ण का पल भर जलके साथ सेवन करनेसे श्वास रोग नष्ट होता है और इससे स्त्रियों का वन्ध्यत्व दूर होता है।

पशुओं के लिए यह अत्यंत पोषक चारा है। (इं० मे० मे०)

इसके फल के चूर्ण को मधु के साथ ... सुबह को खिलाने से शरीर बलिष्ठ होता है।

पीपल के फलों को सुखाकर बारीक पीस कपड़छन कर, ६-६ मा० प्रातः सायं ताज़े पानी के साथ कण्ठमाला के रोगी को खिलाने से लाभ होता है।

पीपल के फल को लेकर छाया में सुखा दें और चूर्ण बनाकर इसमें दूनी मिश्री मिलाकर रखें और प्रतिदिन १ तो० इस चूर्ण को दूध तथा पानी के साथ खाया करें।

प्रभाव तथा प्रयोग—स्वप्नदोष, वीर्यपात, शुक्रमेह, निर्बलता और शिरःशूल प्रभृति के लिए लाभदायक है।

पीपल के पके फल को सुखाकर सत्तू बना लें। ४ तो० इस सत्तू को गुड़ के शर्बत के साथ सुबह को खाने से पुरुषों का प्रमेह, स्त्रियों का सोम रोग और स्वप्नदोष १०-१२ दिन के सेवन से दूर हो जाते हैं।

पीपल के परिपक्व फल के गूदे को छाया में सुखाकर फिर कूट कर चक्की में पीस कर आटा प्रस्तुत करें। इस आटे का हलुआ बनाकर खाने से शरीर बलवान हो जाता है। स्त्रियों के गर्भाशय संबंधी रोग एवं कटिशूल में यह अत्यंत हितकर है। मुँह में छाले पड़ने बंद हो जाते हैं। यदि हलुआ न बनाना हो तो एक तोला आटे में १ तो० शकर मिलाकर फाँकने और ऊपर से दुग्ध पान करने से भी बहुत लाभ होता है। यह शहद के साथ चाटने से भी यह लाभप्रद है। यह

एक ऐसी निरापद वस्तु है जिसको छोटे बच्चों और गर्भवती स्त्री को भी अल्पमात्रा में मिला सकते हैं।

प्रभाव बीज

बीज को शीतल तथा रसायन बतलाते हैं। (ऐरूसां)

पीपल के बीजों को मधु के साथ चटाने से रुधिर शुद्ध होता है।

इसके बीजों को पीस कर पीने से चर्मरोग मिटती है।

पीपल की दाढ़ी (गोंद)

पीपल की दाढ़ी ४ मा०, गाजर बीज ६ मा०, और प्रवंग १ मा०, इनको ऽ॥ आध सेर पानी में क्वथित करें। तीन पूर्वांक पानी शेष रहने पर मल छान कर मिश्री २ तो० मिलाकर पियें। प्रातः प्रवर्तनार्थ ३-४ बार पान करें और निम्न पोटली योनि में रक्खें:—

बांस की लकड़ी १ तो०, बाकुची १ तो०, यवक्षार १ तो०, अमलतास १ तो०, जंगली तोरई १ तो०, कुटकी ६ मा०, कालादाना १ तो० इनको बारीक पीस वर्ति बना योनि में रखने से मासिक धर्म बिना कष्ट के जारी हो जाएगा। यह आर्त्तव प्रवर्त्तक है।

पीपल की दाढ़ी २० तोले को कूटकर कपड़छन करें और इसमें समान भाग मिश्री योजित कर लें। मासिक-धर्म आरम्भ होने के दिवस से प्रति दिन १-२ तो० स्त्री-पुरुष दोनों गोदुग्ध के साथ सेवन करें और मैथुन से बचे रहें। इसके ११ वें दिन स्त्री-संग करने से स्त्री गर्भिणी होगी।

पीपल की दाढ़ी को जौकुट करके चिलम पर रख कर तम्बाकू की तरह पिलाने से शूलशूल नष्ट होता है।

जिस स्त्री को गर्भधारण न होता हो उसको ऋतु-स्नान के पश्चात् २॥ तो० पीपल की दाढ़ी का क्वाथ कर उसमें आवश्यकतानुसार खाँड मिलाकर पिलाने से गर्भधारण होता है।

पीपल की दाढ़ी ५ तो०, पुराना हाथी दाँत २ तो० इनका बारीक चूर्ण कर लेवें। ऋतुस्नान के बाद इसमें से ६ मा० चूर्ण हर रात को दूध के साथ खाने से पक्ष के भीतर हो स्त्री अवश्य ही गर्भवती होती है।

पीपल की दाढ़ी २॥ तो०, गुलमी के फूल ६ मा० इनको बारीक करके ६-६ मा० की पुड़ियाँ बनाएँ। प्रातः सौंफ गरम पानी [illegible] तथा छोटे इलायची बादाम मिलाकर पहिले पुड़िया खिलाएँ फिर ऊपर से पानी पिलावें। इससे नारुण शूल-शूल नष्ट होगा।

पीपल की दाढ़ी को बारीक पीसकर ऋतु स्नानान्तर इसे प्रति दिन १ तो० की मात्रा में गरम दूध के साथ स्त्री को खिलाएँ। प्रति मास केवल सप्ताह पर्यन्त इसके उपयोग से ३ से ६ मास के भीतर वन्ध्यत्व दूर हो जाता है।

नोट—पीपल के सेवन के दिनों में स्त्री को काफी घी दूध खिलाना चाहिए। अन्यथा परिणाम स्वरूप वह तपेदिक से आक्रान्त होकर काल कवलित हो जाएगी।

पीपल का दूध तथा निर्यास

इसके गोंद से विशेष विधि द्वारा चूड़ियाँ बनाई जाती हैं जिसे शुभ्र स्त्रियाँ पहिनती हैं। इसलामी शरीयत में इसकी रचना इसको अपवित्र कर देती है जिससे मुसलमान स्त्रियों को पहिनना नाजायज है। परन्तु हिन्दू शास्त्रों में लाक्षा की बड़ी महिमा है और यह वैज्ञानिक नियमों पर आधारित है, जिसका स्थल स्थल पर निर्देश किया गया है।

वस्त्र के सफ़ेद टुकड़े को सर्व प्रथम मधु में भली प्रकार भिगोएँ। तदनन्तर इसको दुग्ध में क्लेदित कर शुष्क करलें और जलाकर राख सुरक्षित रखें। श्वित्र का प्रथम उष्ण जल से धोकर राख को सिरका में मिला कर गरम कर उस स्थल पर लगाएँ। यह वर्ण को शरीर के वर्ण की तरह कर देता है।

यदि दुग्ध को दद्रु पर लगाएँ तो त्वचा को संकुचित कर खुड्डी उत्पन्न कर देता है। उक्त खुड्डी के पृथक् हो जाने पर त्वचा स्वच्छ हो जाती है और दद्रु के कोई चिह्न शेष नहीं रह जाते।

पीपल वृक्ष के ५ तो० दूध में कूटी एवं छानी हुई इमली की छिली हुई गिरी १० तो० मिलाकर सुखाएँ। चने का आटा २० तो०, गोघृत १ पाव, खाँड आध सेर इनका यथा विधि हलुआ बनाकर उतारने के पश्चात् दुग्ध द्वारा विशोधित इमली का चूर्ण, छोटी इलायची के दाने, केशर १० माशा बारीक करके मिला दें।

गुणधर्म—कामोद्दीपक, वर्ण एवं मुखमंडल को कांति प्रदान करता एवं सुन्दर बनाता है।

मात्रा—२ तो० से ३ तो० तक।

यह पुरुषों के प्रमेह और स्त्रियों के सोमरोग की अपूर्व औषध है। प्रतिदिन प्रातः काल ६ से ११ बूँद तक पीपल का दूध एक छोटे बताशे में डालकर मुँह में रक्खें और ऊपर से गाय का या भैंस का आधसेर धारोष्ण दुग्ध पी लिया करें। स्वप्नदोष के लिए यह अत्यन्त लाभदायक है। ग्यारह दिन के सेवन से रोग निर्मूल हो जाता है।

पीपल का दूध लगाने से विपादिका (बिवाई) भर जाती है।

जिस स्त्री के बच्चा पैदा न होता हो और जो ऋतुधर्म से बेताब हो रही हो उसको ताजा गाय भैंस के गोबर को आध सेर पानी में पकाएँ; जब चन्द जोश आ जाए तब छानकर ४ तो० मधु और ११ बूँद पीपल का दूध मिलाकर पिलाएँ। गर्भ होगा।

सफेद संखिया को ७ सप्ताह पीपल के दूध में खरलकर मूँग के दाने के बराबर वटिकाएँ प्रस्तुत करें। प्रतिदिन एक गोली प्रातः और एक रात को सोते समय दूध के साथ खिलाएँ। दूध गाय या भैंस का हो और इसमें देशी खाँड मिला लिया करें। २१ दिन के सेवन से हर प्रकार का रोग दूर होता है।

अपथ्य—मादक द्रव्य तथा खटाई।

शुष्क पोदीने का चूर्ण या धतूरे की शुष्ककली का चूर्ण १० मा० तक लें और इसमें पीपल का दूध १६–१८ बूँद सम्मिलित कर तमाखू की तरह चिलम में पिलाएँ तो श्वासयुक्त को तत्काल लाभ होगा।

जिस स्त्री के बच्चे बालापस्मार से मर जाते हों वह यदि बच्चा पैदा होने के दिन से लेकर दो मास पर्यन्त प्रतिदिन पीपल का दूध १ बूँद गाय या बकरी के दूध में मिलाकर पी लिया करे तो उसके बालक स्वस्थ रहेंगे। दूध में आवश्यकतानुसार मिश्री मिला लेनी चाहिए।

उन्माद या अपस्मार के कारण अथवा हौलदिल या किसी विष वा मादक द्रव्य या किसी भी प्रकार से हुई मूर्च्छा में पीपल के दूध के कुछ बूँद रोगी के कान में टपकाने तथा दूध को समान भाग शहद में मिलाकर मस्तक पर प्रलेप करने से रोगी होश में आ जाता है।

अश्वत्थ मूल

पीपल की जड़ का मंजन दंतशूल में उपयोगी है। इसकी जड़ की छाल के क्वाथ से विसर्प रोग मिटता है।

...के एक मृदु बारीक अगले भाग को पीसकर ... पर प्रलेप करने से वे शीघ्र विदीर्ण हो जाते हैं।

अश्वत्थ मूल त्वक् को छाया में शुष्क कर बारीक पीसकर कपड़छान करें और पीपल की जड़ के रस में चालीस दिन खरल करके शुष्क होने पर ३–६ माशा प्रातः सायं गौ के ... दुग्ध के साथ सेवन कराएँ।

गुण—पुरुष के वीर्य-दोष एवं निर्बलता में लाभप्रद है।

इसकी जड़ की छाल शुक्रमार्दवकर्ता, तथा कामोद्दीपक एवं कटिशूलहर है। बु० मु०। यह वीर्य स्तम्भक है। भ० मु०।

पीपल की लकड़ी

पीपल की लकड़ी का कटोरा बनाकर उसमें दूध डालकर स्त्री को प्रति दिन प्रातःकाल पिलाने से बन्ध्यत्व दूर होकर गर्भस्थापन होता है।

जिस घर में साँप हो, वहाँ पीपल की लकड़ी जलाकर धुआँ करने से साँप निकलकर भागता है।

जिस दिन ज्वर आने को हो उस दिन

ज्वर आने से पहिले पीपल की दातौन करना ज्वर को और दाँतों से खून आने को रोकता है।

पीपल की लकड़ी का प्याला बनाकर उस प्याले में रात्रिको पानी भर रक्खें और सवेरे उस पानी को पियें। इससे मस्तिष्क शीतल रहता है, वीर्य गाढ़ा होता है और त्वचा के रोग दूर हो जाते हैं। उक्त प्याले में पानी रखने से उसके स्वाद में अन्तर आजाता है। पानी में पीपल की लकड़ी का असर एवं स्वाद स्पष्ट मालूम पड़ता है। इसमें कुछ समय पर्यन्त दूध रख कर पीने से बहुत लाभ होता है।

बहुतसे सर्प-चिकित्सक इसकी कनिष्ठा अंगुली के इतनी मोटी लकड़ीके एक सिरेको गोल बनाकर एवं घिसकर चिकनाकर ऐसी दो लकड़ियोंको सर्प दष्ट रोगी के दोनों कानों में १-१ लकड़ी प्रविष्ट कर उनसे तरह तरह की बातें पूछ कर विष दूर करने का ढोंग करते हैं। परमात्मा जाने इसका क्या प्रभाव होता है। (लेखक)

पीपल की सूखी लकड़ी और पत्र को जलाकर क्षार-निर्माण-विधि द्वारा इसका क्षार प्रस्तुत करें।

प्रयोग—आध पाव पानी में १ मा० इस क्षार को मिलाकर इससे दिन में दोबार कोढ़ के जख्मों को धोने से वे बहुत शीघ्र अच्छे हो जाते हैं। इसके निरन्तर प्रयोग से प्राचीन से प्राचीन कोढ़ एवं फुलबरी (श्वित्र) आदि रोग दूर हो जाते हैं। इससे उपदंश में भी लाभ होता है।

अश्वत्थकम् ashvatthakam–सं० क्लीο. मल्लिका पुष्पदल। मल्लिका फुलेर पापड़ी–बं०। (See–Mallíká-pushpa.) वै० निघ०।

अश्वत्थ पत्र योग ashvattha-patra-yoga–सं० पुं० पीपल के पत्तों के अग्रभाग, रास १ भाग, बोल ६ भाग, शहद १२ भाग मिला कर पीने से रक्तस्राव और हृदयस्थ संचित रक्तविकार दूर होता है। वृ० नि० र० भा० ५ र० पित्त०।

अश्वत्थफलका,–ला ashvattha-phalaká,-lá–सं० स्त्री० हपुषा। हाउबेर–हिं०। हवुष वृक्ष–बं०। लघु शेरणी–मह०। (Juniperi fructus.) भा० पू० १ भा०।

अश्वत्थभित्,–भेदः ashvattha-bhit,-bhedah–सं० पुं० नन्दी वृक्ष। वाबिया पीपर, तुन–हिं०। भा० पू० १ भा० वटादिव०। (Cedrela toona.)

अश्वत्थमर ashvatthamar–कना० अश्वत्थ। पीपल का पेड़। (Ficus religiosa.)

अश्वत्थ वल्कलादि योगः ashvattha-valkaládi-yogah–सं० पुं० पीपल की सूखी छाल जला कर उससे पानी बुझा कर पीने से प्रबल वमन का नाश होता है। वृ० नि० र० छर्दि०।

अश्वत्थ वल्कलादि लौह ashvattha-valkaládi-louh–सं० पुं० पीपल वृक्ष की छाल, सोंठ, मिर्च, पीपल और मण्डूर इनके चूर्ण को गुड़ के साथ सेवन करने से क्षय रोग का नाश होता है। वृ० नि० र० क्षय चि०।

अश्वत्थ सन्निभा ashvattha-sannibhá–सं० स्त्री० देखो—अश्वत्थी।

अश्वत्था,–त्थी ashvatthá,-tthí–सं० स्त्री० (१) क्षुद्र अश्वत्थ वृक्ष। गय अश्वत्थ–बं०। रा० नि० व० ११। (२) श्रीवल्ली वृक्ष। (See–shrívallí) रा० नि० व० ८। (३) सीकाकाई। शीतला।

अश्वत्थादि प्रक्षालनम् ashvatthádi-prakshálanam–सं० क्ली० पीपल, पिलखन, गूलर, बड़ और बेंत के क्वाथ से धोने से घाव, सूजन और उपदंश का नाश होता है।

अश्वत्थिका,–त्था ashvatthiká,-tthí–सं० स्त्री० क्षुद्रपत्र अश्वत्थ वृक्ष। गया अश्वत्थ–बं०। पिप्ली–हिं०। अश्वत्थी–मह०। हेनरलि–का०।

संस्कृत पर्य्याय—लघुपत्री, पवित्रा, ह्रस्व पत्रिका, पिप्पलीका और वनस्था।

गुण—मधुर, कसेली, रक्तपित्तनाशक, विषघ्न दाहनाशक तथा गर्भिणी स्त्रियों के लिए हितकारी है। रा० नि० व० ११।

अश्वतृणम् ashvatrinam–सं० क्ली० पाषाण मूली, घोड़ा घास–हिं०। कॉलिनसोनिया (Collinsonia.), कॉ० कैनेडेन्सिस (C. Canadensis)–ले०। स्टोन रूट (Stone root)

हॉर्सवीड (Horse-weed), नॉबरूट (Knobroot)-इं०।
डरबल् ग्रीब, हार्सवुड् प्रीब, हज्जुम् अज्ज्र-अ०। संगबाद्र, ग्याह पत्थ-फ़ा०। पत्थरवही-उ०।

तुलसी वर्ग

(*N. O. Labiatæ*)

नॉट ऑफ़िशल (*Not official*)

उत्पत्ति-स्थान—उत्तरी अमरीका।

वानस्पतिक-विवरण—इस वनस्पति का काण्ड सीधा लगभग ४ इंच के लम्बा होता है जिसपर छोटी छोटी अंथिमय विषम शाखाएँ होती हैं। कांड पर बहुत से उभड़े चिह्न होते हैं। यह अत्यन्त कठिन होता है। इसका बहिः वर्ण धूसर श्वेत तथा अन्तः श्वेत या सफ़ेदी मायल होता है। त्वचा बहुत पतली, जो असंलग्न होती जो सरलतापूर्वक टूट जाती है।

गंध—लगभग कुछ नहीं, स्वाद—कटु तथा मूर्च्छाजनक।

रासायनिक संगठन—इसमें राल (Resin), कषायिन् (Tannin), श्वेतसार, लुआब और मोम होते हैं।

कार्य—अवसादक, आक्षेपशामक, संकोचक और मदय।

मात्रा—१२ से ६० ग्रेन (७॥ से ३० रत्ती अर्थात् १ से ४ ग्राम)।

औषध-निर्माण—टिंक्चूरा कोलिनसोनी Tinctura collinsonoe) ले०। अश्वसूधासव-हिं०। तअफ्रीन ग्रसुलं ग्रैल-अ०।

निर्माण-विधि—कोलिनसोनिया की जड़ कुचली हुई एक भाग, मद्यसार (६०%) १० भाग मेसीरेशन की विधि से टिंक्चर बना लें।

मात्रा—३० से १२० बूँद (मिनिम)। इसका एक फ्लुइड ऐक्सट्रैक्ट (तरल सत्व) भी होता है जिसकी मात्रा १२ से ६० मिनिम (बूँद) है।

प्रभाव तथा उपयोग—इसको उग्र वस्तिप्रदाह (Acute cystitis), वृक्काश्मरी (Renal-calculi), जलोदर (Dropsy), श्वेत प्रदर, आमवात, प्रलेप, इत्यादि और किसी किसी हृद्रोग में वर्तते हैं।

यद्यपि सिवा इसके कि सूक्ष्म मात्रा में स्थानिक संकोचक तथा अधिक मात्रा में पित्तनिस्सारक विरेचन है, इसके इन्द्रिय व्यापारिक क्रिया के विषय में क्रियात्मक रूप से भी ज्ञात नहीं; तथापि अमरीका में इसका रोगों में उपयोग करते हैं।

इसीलिये पूयमेह, अश्मरी तथा वस्तिप्रदाह मूत्र विषयक श्लैष्मिक कलाओं के लिए अवसादक है और अर्श या गुदाक्षेप में मूल्यवान सिद्ध हो चुका है। आक्षेपहर रूप कुक्कुर कास, (Chorea) तथा हृदय धड़कन में इसका उपयोग किया जाता है।

अश्वदंष्ट्रकः ashvadanshtrakah-सं० पुं० (१) गोखुर। गोखरू-हिं०। (Tribulus terrestris, *Linn.*) वै० निघ० (२) हिंस्र जन्तु विशेष। सु०।

अश्वदंष्ट्रा ashva-danshtrá-सं० स्त्री० गोखुर, गोखरू। (Tribulus terrestris, *Linn.*) भा० पू० १ भा०।

अश्वनाला ashvanálá-सं० स्त्री० ब्रह्म नामक सर्प विशेष। त्रि०। (A serpent named Brahma.)

अश्वनाशः,-कः,-नः ashvanáshah,-kah,-nah-सं० पुं० श्वेत करवीर। सफ़ेद कनेर-हिं०। (Nerium odorum (The white var. of-) रा० नि० व० १०।

अश्वपर्णिका,-र्णी ashvaparnika,-rni-सं० पुं० भूतकेशीलता। भूतकेश-हिं०। श्वेत दूर्वा-बं०। (Corydalis govoniana.)

अश्वपालः ashvapálah-सं० पुं०

अश्वपाल ashvapála-हिं० संज्ञा पुं० अश्व रक्षक, अश्वसेवक, साईस। (A groom.)

अश्वपुच्छ ashva puchchha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (Canada equina.)

अश्वपुच्छकः ashva-púchchhakah-सं० पुं० खंगलता । तरवोलेर खाप-बं० । शु०च० ।

अश्वपुच्छा ashva-puchchhá-सं० स्त्री० (१) पृश्निपर्णी, पिठवन-हिं० । चाकुलिया -बं० । (Uraria lagopoides, *D. C.*) । (२) माषपर्णी । माषवर्णी-हिं० । (Teramnus labialis.) रा० नि० व० ४ ।

अश्वपुच्छिका,-च्छी ashva-puchchhiká,-chchhí-सं० स्त्री० माषपर्णी लता । माषानी -बं० । (Teramnus labialis) रा० नि० व० ४ ।

अश्वपुट भावना ashvaputa-bhávaná -सं० स्त्री० ६२ पल परिमाण द्रव्यकी भावना । वै० निघ० ।

अश्वपुत्री ashvaputrí-सं० स्त्री० सल्लकी वृक्ष, सलई-हिं० । (Boswellia serrata, *Roxb.*) रत्ना० । (२) द्रवन्ती । (Anthericum tuberosum.) वै० निघ० ।

अश्वपुष्पः ashvapushpah-सं० पुं० पत्थर का फूल, छरीला । Stone flower (Parmelia Perlata, *Euch.*)

अश्वबला ashvabalá-सं० स्त्री० मेथिका । मेथी -हिं०, म० । Fenugreek. । (२) नारी शाक- सं०, हिं०,बं० । करेमू-हिं० । गुण-अश्वबला शाक रूक्ष है तथा मल, मूत्र और वायु का वर्द्धक है । सु० । See-nári.

अश्वबालः ashvabálah-सं० पुं०
अश्वबाल ashvabála-हिं० संज्ञा पुं०
काशतृण । कासा । कास का पौधा । (Saccharum spontaneum) त्रिका० ।

अश्वभा ashvabhá-सं० स्त्री० सौदामन्या । विद्युत ।

अश्वमार ashvamára-हिं० संज्ञा पुं०
अश्वमारः ashvamárah-सं० पुं०
अश्वमारकः ashvamárakah-सं० पुं०
श्वेत करवीर । सफ़ेद कनेर-हिं० । श्वेत करवी -बं० । Nerium odorum, *Soland.* (White var. of-) । (२) उपोदिका -सं० । पोई-हिं० । (Basella Rubra or lucida) । (३) पालक्य शाक-सं० । पालक पालकी-हिं० । (Beta bengalensis) सु० चि० १ अ० । (४) करवीर -सं० । कनेर-हिं० । (Nerium odorum) सु० सू० ३८ अ० । लाक्षादि-बं० । भा० पू० १ भा० । (५) श्वेत करवीर मूल, सफ़ेद कनेर की जड़ । यह स्थावर विषान्तर्गत मूल विष है । (६) सुगन्ध रोहिष । सु० कल्प० २ अ० । देखो-मूलविषम् ।

अश्वमाराख्यः ashvamárákhyah-सं० पुं० श्वेत करवीर वृक्ष । सफ़ेद कनेर का पेड़ । -हिं० । श्वेत करवी गाछ-बं० । (Nerium odorum, *Aiton.*) रा० नि० व० १० ।

अश्वमालः ashvamálah-सं० पुं० सर्प विशेष । (A snake.) वै० निघ० ।

अश्वमुत्रा ashvamutrá-सं० स्त्री० इन्दगू वृक्ष ।

अश्वमूत्रम् ashva-mútram-सं० क्लीं० घोटक मूत्र, घोड़े की पेशाब । घोड़ार मूत-बं० । हॉर्स युरिन (Horse urine.)-इं० ।

गुण—तिक्त, उष्ण, तीक्ष्ण, विषघ्न, वातकोपशामक, पित्तकारक और दीपन है । रा० नि० व० १५ । मेद, कफ, दद्रु (दाद) और कृमि *नाशक है । म० व० ८ ।*

अश्वमूत्रिका,-त्री ashva-mútriká,-trí-सं० स्त्री० शल्लकी वृक्ष । सलाई-हिं० । (Boswellia serrata,*Roxb.*) जटा० ।

अश्वमोहकः ashva-mohakah-सं० पुं० श्वेत करवीर । सफ़ेद कनेर-हिं० । (Nerium odorum, *Aiton.*) वै० निघ० ।

अश्वयानम् ashva-yánam-सं० क्लीं० असवारी, घुड़सवारी, अश्वारोहण, घोड़े की सवारी,

अश्व भ्रमण। घोड़ार चड़ा–बं०। (Riding on horse-back.)

गुण—घोटकारोहण (घोड़े की सवारी) वात, पित्त, अग्नि तथा श्रमकारक है और मेद, वर्ण तथा कफ का नाश करने वाला और बलवान मनुष्यों के लिए अत्यन्त हितकारक है। दिनच०।

अश्वयुजः ashva-yujah–सं० पुं० आश्विन मास, क्वार। The 6 th hindu month (September-october.)

अश्वरक्षकः ashva-rakshakah–सं० पुं० अश्वपाल, अश्वसेवक, साईस। घोड़ार सहिष–बं०। (A groom.)

अश्वरिपुः ashva-ripuh–सं० पुं० (१) करवीर वृक्ष, कनेर (Nerium odorum.)। (२) महिष, भैंस। (A buffalo.) मा०।

अश्वरोधकः ashva-rodhakah–सं० पुं०
अश्वरोधक ashva-rodhaka–हिं० संज्ञा पुं०
श्वेत करवीर वृक्ष। सफ़ेद कनेर–हिं०। (Nerium odorum, *Ailon.*) रा० नि० व० १०।

अश्वरोहका ashva-rohaká } –सं० स्त्री०
अश्वरोहा ashva-rohá } अश्वगंधा। असगन्ध–हिं०। (Withania somnifera.)

अश्वलम् ashválam–सं० क्लीं० तृण तृण विशेष। घोड़े मर घं०। "अश्वलञ्च तृणं बल्यं रुच्यं पशुहितावहम्।" वै० निघ०।

अश्वलोमा ashva-lomá–सं० पुं० सर्प विशेष। (A snake.) त्रिका०।

अश्ववराहः ashva-varáhah–सं० पुं० वाराहीकन्द। An esculent root or a yam (Dioscorea.) वै० निघ०।

अश्वका (ashtaka–सं० स्त्री० वृक्ष भेद। (A sort of tree.) हे० च०।

अश्ववर्चः,–स् ashva-varchchah,–s–सं० क्लीं० अश्वविष्ठा, घोड़े की लीद। घोड़ार नाद–बं०। (The dung of horses.)

अश्ववहः,–वाहः ashva-vahah,–váhah –सं० पुं०
अश्ववार ashva-vára–हिं० संज्ञा पुं०
अश्ववाहक, घुड़सवार। जटा०।

अश्ववारः ashva-várah–सं० पुं० (१) कनेर (Nerium odorum)। (२) घोड़े का बाल। (Hair of the horse) अथर्व०। सू० ४। ३। का० १०।

अश्ववारणः ashva-váranah–सं० पुं० गवय। हे० च०। See-Gavaya.

अश्ववैद्यः ashva-vaidyah–सं० पुं० अश्व शास्त्र (शालिहोत्र आदि) के प्रणेता, अश्व चिकित्सक।

अश्ववैद्यकम् ashva-vaidyakam–सं० क्लीं० अश्व चिकित्साशास्त्र। इसके प्रणेता, शालिहोत्र, नकुल, भोज और जयदत्त प्रभृति विद्वान हुए हैं।

अश्वशाला ashva shálá–सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) मन्दुरा। हला०। (२) वह स्थान जहाँ घोड़े रहें। तबेला, घुड़साल, अस्तबल। स्टेबल (A stable.) –इं०।

अश्वसेन ashva-sena–हिं० संज्ञा पुं० तक्षक का पुत्र नाग विशेष, सनतकुमार।

अश्वसेवक ashva-sevaka–हिं० संज्ञा पुं० अश्वपाल, साईस। (A groom.)

अश्वहनः ashva-hanah–सं० पुं० करवीर वृक्ष, कनेर। (Nerium odorum.) रत्ना०। भैष० भस्म–चि० हिंसाद्य तैल।

अश्वहा ashvahá–सं० पुं० श्वेत करवीर वृक्ष, सफेद कनेर का पेड़। (Nerium odorum, *Ailon.*) मद० व०।

अश्वखुरकः ashva-khurakah–सं० पुं० कनेर, करवीर। (Nerium odorum) अथर्व०।

अश्वखुरा ashva-kshurá } –सं० स्त्री०
अश्वखुरिका ashva-kshuriká } श्वेत
अश्वखुरी ashva-kshurí } अपराजिता, विष्णुकान्ता। (Clitoria ternatea.)। (२) कृष्ण, अप–

वै० निघ० वा० व्या० शतावरी तैल, नारायण तैल।

अश्वाह्वादिखुरा,-री ashváhvádi-khurá,-ri-सं० स्त्री० श्वेत अपराजिता, विष्णुकान्ता। (Clitorea ternatea.) वै० निघ० भ० ३।

अश्वाक्षः ashvákshah-सं० पुं० (१) देव सर्षप वृक्ष। (See-Deva-sarshapa.) अम०। (२) वृक्ष भेद। (A sort of tree.) रा० नि०।

अश्विजौ ashvijou-सं० पुं० अश्विनीकुमार, स्वर्ग के वैद्य, देव वैद्य। (See-Ashvini-kumára.)

अश्विनी ashviní-सं० स्त्री० (१) जटामांसी। (Valeriana jatamansi.) व० निघ०। (२) घोड़ी।

अश्विनीकुमार ashviní-kumára-हिं० संज्ञा पुं० देव वैद्य, स्वर्ग के वैद्य। पर्या०—स्ववैद्य। दस्र। नासत्य। आश्विनेय। नासिक्य। गदागद। पुष्करस्रज।

अश्विनीकुमारो रसः ashviní-kumáro-rasah-सं० पुं० त्रिकुटा, त्रिफला, अफ़ीम, मीठा तेलिया, पीपलामूल लवंग, जमालगोटा, हरताल, सुहागा, पारा, गंधक प्रत्येक १-१ कर्ष लेकर यथा क्रम आधा आधा प्रस्थ गाय के दूध, गोमूत्र और भाँगरे के रस में घोटकर गोलियाँ बनाएँ।

माश्रा—मुद्ग प्रमाण। इसे उचित अनुपान के साथ सेवन करने से अनेक रोग दूर होते हैं। र० नु० त०।

अश्विनौ ashvinou-सं० पुं० दोनों अश्विनी-कुमार। रत्ना०।

अश्वि भेपजम् ashvi-bheshajam-सं० क्लीं० (१) लघुमेष शृङ्गी। मेढ़ा सिंगी-हिं०। मेढ़ा सिङे-बं०। (See-Ajashringi) वै० निघ०।

अश्वीघृतम् ashvi-ghritam-सं० क्लीं० घोड़ी के दुग्ध द्वारा निकाले हुए नवनीत से तैयार किया हुआ घृत, घोड़ी का घी।

गुण—कटु, मधुर, कसैला, ईषत् दीपन, भारी, मूर्च्छानाशक और वात को कम करनेवाला है। रा० नि० व० १५।

अश्वीदधि ashvi-dadhi-सं० क्लीं० घोड़ी के दुग्ध से उत्पन्न हुआ दधि, घोड़ी का दही। घोड़ीर दई-बं०। घोड़ि चे दहि-मह०। कुदिरेय सोमरु-कं०।

गुण—मधुर, कसेला, रूक्ष, कफ रोग तथा मूर्च्छानाशक और ईषद्वातल (थोड़ा वातकारक), दीपन तथा नेत्रदोषनाशक है। रा० नि० व० १५।

अश्वीनवनीतम् ashvi-navanítam—सं० क्लीं० घोटकी दुग्ध जात नवनीत, घोड़ी के दुग्ध से निःसरित नवनीत, घोड़ी का मक्खन (नैनू)। घोड़ार दुधेर ननी-बं०।

गुण—कसेला, वातनाशक, नेत्रको हि तकारक, कटु, उष्ण और ईषद् वातकारक, है। रा० नि० व० १५।

अश्वीयम् ashviyam-सं० क्लीं० (१) अश्व समूह, सम्पूर्ण अश्वजाति, अश्वमात्र। त्रि० (१) अश्वहेतु, अश्व के लिए। मे० यत्रिक। (२) अश्व सम्बंधी। घोड़े का।

अश्वीक्षीरम् ashvi-kshíram-सं० क्लीं० घोटकी दुग्ध, घोड़ी का दूध।

गुण—उष्ण, रूक्ष, बलकारक, वात कफ नाशक है। एक शफ(खुर)वाले और मांस अवयव (नमकीन तथा खट्टा), लघु और स्वादिष्ट होते हैं। मद० व० ८।

अश्वेता ashvetá-सं० स्त्री० (१) कृष्ण अपराजिता। Clitorea ternatea (The black var. of-)। (२) कृष्ण अतिविषा, काली अतीस। Aconitum heterophyllum (The black var. of-) वै० निघ०। (३) गम्भारी वृक्ष। (Gmilina arborea.) (See-Gambhárí.) रा० नि०।

अश्वेल ashvela-मत्स्यांड, मछली का अंडा। (The egg of a fish.)

अशा áshsha-अ० दुबला, पतला होना, बारीक होना, निर्बल या पीला होना।

अशमूउल् अबेज़ ashshamául-abaiza -अ० सफ़ेद मोम, श्वेत मधूच्छिष्ट। White-bees-wax (Cera alba.)

अशमूउल् अस्फ़र ashshamául-asfar -अ० मोम ज़र्द-फ़ा०। पीला मोम, पीत मधूच्छिष्ट-हिं०। Yellow bees-wax (Cera flava.)

अश्शुग़ा ashshúgá-(Lasmonia pentaphylla, Roxb.) ई० हैं० गा०।

अशैलमुल् मुक़त्न ashshailamul-muqtan-अ० शैलम। मस्दुम दीवाना-फ़ा०। देखो—अर्गोटा (Ergota.)

अशहब ashhab-अ० स्यामाभायुक्त, श्वेत रंग की वस्तु, कालापन लिए हुए सफ़ेद रंग की चीज़, धूसर, भूरा।

अशहल ashhala-अ० वह मनुष्य जिसका नेत्र भेड़ का सा बड़ा और कुरूप हो, मेष चक्षु। मेश चश्म-फ़ा०।

अशहायून ashháyúna-रू० कायफल,कट्फल। (Myrica sapida.)

अशहार as-hára-रू० तोदरी। See-Todarí.

अषाढ़ asháḍha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आषाढ़] चौथा महीना। वह महीना जिसमें पूर्णिमा पूर्वाषाढ़ में पड़े। असाढ़। आषाढ़। The Hindú third solar month (June-July, during which the sun is in Gemini, and the full moon is near asháḍhá अषाढ़ा more properly called Poorv-asháḍhá पूर्वाषाढ़ा or Uttaráshádhá उत्तराषाढ़ा a constellation Sagittarius.) । (२) व्रत (Austerity)। (३) पलाश दण्ड।

अष्टांगी ashṭangi-हिं० वि० दे० अष्टांगी।

अष्ट ashṭa-हिं० वि० [सं०] संख्या विशेष, आठ। एट (Eight.) -इं०।

अष्टक ashṭaka-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आठ संख्या, आठ की पूर्ति, आठकी सख्या। आठ वस्तुओं का संग्रह। जैसे हिंग्वष्टक।

अष्टकट्वर तैलम् ashṭa-katvara-tailam -सं० क्ली० यह तैल वातरक्त तथा उरुस्तम्भ में हित है। योग निम्न है:—

तैल १२ पल (= २८८ तो०), दधि १२ पल (=२८८ तो०), तक्र २८८ पल (=२०४८ तो०), पिप्पली और सोंठ प्रत्येक २-२ पल अर्थात् १६-१६ तो० (किसी किसी के मत से दोनों मिलकर २ पल या प्रत्येक १ पल) इसको तैल-पाक विधि अनुसार पकाएँ। च० द० ऊ० स्त० चि०। अस्नेह दधि अर्थात् स्नेह रहित दधि या दही का सार और घृत रहित अर्थात् घी निकाला हुआ तक्र ग्रहण करना चाहिए। रस० र०।

अष्टकमल ashṭa-kamala-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग के अनुसार मूलाधार से ललाट तक के आठ कमल जो भिन्न भिन्न स्थानों में माने गए हैं अर्थात् मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान, अनाहत (अनहद), आज्ञाचक्र, सहस्रारचक्र और सुरतिकमल।

अष्टकर्म ashta-karmma-सं० क्ली० पारद के आठ संस्कार। पारद के १८ कर्मों में से स्वेदनादि से दीपन पर्यंत आठ प्रकार के संस्कार। वे निम्न हैं:—

(१) स्वेदन, (२) मर्दन, (३) मूर्च्छन, (४) उत्थापन, (५) पातन, (६) बोधन, (७) नियामन और (८) दीपन। र० सा० सं०। इनकी विधि अपने अपने पर्यायों के सम्मुख देखें।

अष्टका ashtaká-सं० स्त्री० वृक्ष भेद। (A sort of tree.) हे० च०।

अष्टकुल ashṭa kula-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सर्पों के आठ कुल; यथा—शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटिक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक। किसी किसी के मत से-तक्षक,

महापद्म, शंख, कुलिक, कंबल, अश्वतर, धृतराष्ट्र और बलाहक हैं।

अष्टकुली ashṭakuli–हिं० वि० [सं०] साँपों के आठ कुलों में से किसी में उत्पन्न।

अष्टकोण ashṭakoṇa–हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) वह क्षेत्र जिसमें आठ कोण हों। वि० [सं०] आठ कोने वाला। जिसमें आठ कोने हों।

अष्टगंध ashṭa-gandha हिं० संज्ञा पु० [सं०] आठ सुगंधित द्रव्यों का समाहार। दे० गंधाष्टक।

अष्टगाधः ashṭa-gádhah सं० पु० (१) ऊर्णनाभि। See–úrna-nábhih. (२) शरभ। See–sharabha.

अष्टगुण मण्डः ashṭa-guṇa-mandah–सं० पु० जिस माँड़ में धनिया, सोंठ, मिर्च, पीपल, सेंधानमक और छाछ डालकर भूना जाए तथा भूनी हींग और तैल पड़ा हो, उसे अष्टगुणमण्ड कहते हैं।

गुण—दीपन, प्राणदाता, वस्तिशोधक, रुधिर वर्द्धक, ज्वरनाशक और प्रत्येक रोगों को नष्ट करता है। भा० त०।

अष्टदल ashṭa-dala–हिं० संज्ञा पु० [सं०] आठ पत्ते का कमल। वि० [सं०] (१) आठ दल का। (२) आठ कोन का, आठ पहल का।

अष्टधातुः ashṭa-dhátuh–सं० पु०
अष्टधातु ashṭa-dhátu–हिं० संज्ञा स्त्री०
आठ धातुएँ यथा—१–सुवर्ण, २–रूपा, ३–सीप (सीसक), ४–ताम्र ५–पित्तल, ६–रंग (राँगा), ७–कान्त लौह, और ८–मुण्डलौह। किसीने पित्तल के स्थान में तीक्ष्ण लौह लिखा है। र० सा० सं० टी०।

नोट—किसी किसी ने इसकी गणना इस प्रकार की है—१–सुवर्ण (Gold.), २–रूपा-चाँदी (Silver.), ३ ताँबा (Copper.) ४–पीतल (Brass.), ५–राँगा (Tin.), ६–जस्ता (Bell-metal.), ७–सीसा (Lead) और लोह (Iron.)। किसी किसी ने पीतल के स्थान में पारद लिखा है। देखो—अष्टलोहक।

अष्टधात्री ashṭa-dhatri
अष्टधाती ashṭa-dháti
–हिं० वि० [सं० अष्टधातु] अष्ट धातुओं से बना हुआ। (A compound of eight metals.)

अष्टपद ashṭa-pada–हिं० संज्ञा पु० = देखो–अष्टपाद।

अष्टपदी ashṭa-padi–सं० स्त्री० बेल नाम से प्रसिद्ध एक पुष्प क्षुप विशेष। बेल फुलेर–गाछ–बं०। (A shrub named Vela.) गुण—शीतल, लघु, कफ पित्त तथा विष नाशक। मद० व० ३।

अष्टपलम् ashṭa-palam–सं० क्ली० शराव मान (=६४ तो० अर्थात् १ सेर ३१) Shráva (A measurement=one seer.)

अष्टपलक घृतम् ashṭa-palaka-ghritam–सं० क्ली०
अष्टपल घृतम् ashṭa-pala-ghritam–सं० क्ली०
–सं० क्ली० ग्रहणी नाशक योग विशेष। यथा सोंठ, मिर्च, पीपल, हड़, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक ४–४ तो० इनका कल्क बनाएँ और बेलगिरी ४ तो०, गुड़ १ पल तथा घृत ३२ तो० को कल्कयुक्त पकाएँ। इसे उचित मात्रा में भक्षण करने से मन्दाग्नि रोग नष्ट होता है। वृ० सं० स० ग्रहणी चि०। च० द०।

अष्टपात्‌–दः ashṭapát-dah–सं० पु०
अष्टपाद ashṭa-páda–हिं० संज्ञा पु०
(१) कश्मीर देशीय शरभ, शरघ, शार्दूल। मद० व० १२। (२) ऊर्णनाभि, लूता, मकड़ी। हिं० च० ४ का०।

अष्टपादपः ashṭa-pádapah–सं० पु० वृक्ष भेद। (A sort of tree.) वै० निघ०।

अष्टपादिका ashta-pádiká-सं० स्त्री० (१) शरद मल्लिका। कटमल्लिका-बं०। रत्ना०। (२) भारफोता, अपराजिता। (Clitorea ternatea.) हापर माली-बं०। प० मु० य० ११।

अष्टप्रहर ashta-prahar-सं० पु० आठ पहर, आठ याम। (Incessant, the whole day and night.)

अष्टबन्ध्या ashta-bandhyá-सं० स्त्री० आठ प्रकार की बन्ध्याएँ, बाँझ या अपुत्रवती स्त्रियाँ। Eight sorts of bandhyas (childless women)। वे निम्न हैं—(१) काकबन्ध्या, (२) कन्याप्रसू, (३) कसन्नो, (४) गलद्गर्भा, (५) जन्म बन्ध्या, (६) त्रिपक्षी, (७) त्रिमुखी, (८) मृतगर्भा। इनके अतिरिक्त आठ प्रकार की और बन्ध्याओं का वर्णन सं० कल्प द्रु० के प्रणेता ने किया है जो निम्न हैं—

(१) मृतवत्सा, (२) रजोहीना, (३) वक्री, (४) स्यन्दिनी, (५) स्थापिणी, (६) शुक्ती, (७) सजा और (८) स्रवद्गर्भी।

अष्टवसु ashta-basu-हिं० पुं० आठ देव विशेष (The eight deities.)। यथा—आप, ध्रुव, सोम, धव, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास।

अष्टभावः ashta-bhávah-सं० पु० स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभंग, वैस्वर्य, कम्प, वैवर्ण्य और अश्रुपात ये आठ भाव हैं। वै० निघ०।

अष्टम ashtam-हिं० वि० [सं०] आठवाँ। (The eighth.)

अष्ट मंगलः ashta-mangalah-सं० पुं० (१) श्वेत मुख, पुच्छ, वक्ष तथा खुर वाला अश्व। हे० च०। जिसका समग्र पाद, पुच्छ, वक्ष तथा मुख सफ़ेद हो उसे "अष्टमंगल" जानना चाहिए। ज० द० ३ अ०।—क्ली० आठ मंगल द्रव्य या पदार्थ जैसे—१-ब्राह्मण, २-गो, ३-अग्नि, ४-स्वर्ण, ५-घृत, ६-सूर्य्य, ७-अम्बु, (कहीं कहीं जल लिखा है) तथा ८-नृप ये आठों अष्टमंगल कहलाते हैं। वै० निघ०। किसी किसी के मत से १-सिंह, २-वृष, ३-नाग, ४-कलश, ५-पंखा, ६-वैजयन्ती, ७-भेरी और ८-दीपक ये आठ अष्टमंगल हैं।

अष्टमंगल घृतम् ashta-mangal-ghritam-सं० क्ली० बाल रोग नाशक घृत विशेष। एक घृत जो आठ औषधियों से बनाया जाता है। औषधियाँ ये हैं—१-वच, २-कूट, ३-ब्राह्मी, ४-सर्षप, ५-सारिवाँ, ६-सैंधा नमक, ७-पीपल १-१ तो०, और ८-घृत ८ तो०, इन औषधियों का कल्क बना घृत सिद्ध कर पीने से बालकों की स्मृति, स्रुति और बुद्धि की वृद्धि होती है और पिशाच, राक्षस, दैत्य बाधा दूर होती है। च० तथा वंग से० सं० बालरोग-चि० भा०। रस० र०।

अष्टमधु जातिः ashta-madhu-játih-सं० स्त्री० माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, पौत्ति(त्रि)क, छात्र, आर्घ्य, औद्दाल और दाल इत्यादि आठ प्रकार के मधु। विस्तार के लिए उन उन शब्दों के अन्तर्गत देखो।

अष्टम नकली पसली ashtama-nakali pasali-सं० स्त्री० (Eighth false rib) मांस और उपास्थि को पशुका।

अष्टमानम् ashta-mánam-सं० क्ली०

अष्टमान ashta-mána-हिं० संज्ञा पु० दो प्रसृति=४ पल (=३२ तो०) अर्थात् अर्ध सेर (Half a seer.)। आठ मुट्ठी का एक परिमाण। प० प्र० १ ख०।

अष्टमिका ashtamiká-सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० तोला चतुष्टय परिमाण, ४ तो० का एक परिमाण। प०। आधे पल वा दो कर्ष। परिमाण।

अष्टमी ashtami-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) क्षीर काकोली। (See-kshira-kakoli.) वै० निघ०। (२) तिथि विशेष शुक्ल और कृष्णपक्ष के भेदसे आठवीं तिथि। श०। (The eighth day of the moon.) (३) श्रावणी नाड़ियाँ (Acoustic nerves) -त्रि०, वि० आठवीं।

अष्टमूत्रम् ashṭa-mútram–सं० स्त्री० आठ जानवरों का मूत्र (The urine of the eight animals.) । उनके नाम निम्न प्रकार हैं :-

(१) गो, (२) बकरी, (३) भेड़, (४) भैंस, (५) घोड़ी, (६) हस्तिनी, (७) उष्ट्री और (८) गधी । वै० निघ० ।

अष्ट मूर्ति रसः ashṭa-múrti-rasah–सं० पु० सोना, चाँदी, ताम्बा, सीसा, सोनामाखी, रूपामाखी, मैनसिल प्रत्येक समान भाग ले ज्वीरी के रस से भावित कर मूषायन्त्र में १ पहर तक पुट दे फिर चूर्ण कर रखले ।

मात्रा—१ रत्ती उचित अनुपान से पथ, पांडु विषमज्वर तथा रोग मात्र को समूल नष्ट करता है । रस० यो० सा० ।

अष्ट मूलम् ashṭa-múlam–सं० त्रि० त्वचा, मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि, सन्धि, कोष्ठ तथा मर्म्म ये आठ मूल कहे जाते हैं . सु० चि० अ० ।

अष्टमौक्तिक स्थानम् ashṭa-mouktika-sthánam–सं० क्ली० मोती की उत्पत्ति के आठ स्थान, जैसे, शंख, हाथी, सर्प, मछली, मेंढक, वंश (बाँस), सूअर तथा सीप इन आठ प्राणियों में मोती होता है । मै० निघ० । देखो–मोती ।

अष्टयामिक वटी ashṭa-yámika-vaṭí–सं० स्त्री० सांगेरी चूर्ण ६ मा०, पारा, हल्दी, सेंधानमक प्रत्येक दो भाग इनको गाय के दही में मर्दन कर झाड़ी बेर प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ । इसे ज्वर आने से ३ रोज़ पहले गरम पानी से लेने से ८ पहरके अन्दर नवीन ज्वर नष्ट होता है । रस० यो० सा० ।

अष्टलोह(क) ashṭa-loh,-ka–हिं०संज्ञा पु०
अष्टलोहकम् ashṭa-louhakam–सं० क्ली०
अष्ट प्रकार के धातु विशेष । स्वर्ण, रौप्य, ताम्र, रङ्ग, शीश (सीसक), कान्त लौह, मुण्ड लोह, और तीक्ष्णलौह । पञ्च लौह समेत कान्त, मुण्ड तथा तीक्ष्ण लौह । रा० नि० व० २२ । देखो–अष्टधातुः ।

अष्टवर्गः ashṭa-vargah–सं० पु०
अष्टवर्ग ashṭa-varga–हिं० संज्ञा पु० (A class of eight principal medicaments, Rishabhaka etc.) आठ ओषधियों का समाहार । मेदा प्रभृति आठ ओषधियाँ । यथा—१ मेदा, २ महामेदा, ३ जीवक, ४ ऋषभक, ५ ऋद्धि, ६ वृद्धि, ७ काकोली और ८ क्षीर काकोली । प० मु० । "जीवकर्षभकौमेदे काकोल्या वृद्धि वृद्धिकौ एतश्च मिलितैरेतैरष्टवर्गः प्रकीर्तितः" । रा० नि० व० २२ ।

गुण—शीतल, अतिशुक्रल, बृंहण, दाह, रक्तपित्त तथा शोषनाशक और स्तन्यजनक एवं गर्भदायक है । मद० व० १ । रक्तपित्त, व्रण, वायु और पित्तनाशक है । राज० । हिम, स्वादु, बृंहण, गुरु, टूटे हुए स्थान को जोड़ने वाला, कामवर्द्धक, बलास (कफ) प्रगट करता एवं बलवर्द्धक है तथा दाह, तृष्णा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षय का नाश करनेवाला है । भा० पू० १ भा० ।

अष्टवर्ग प्रतिनिधिः ashṭavarga-pratinidhih–सं० पु० मेदा आदि ओषधियों के अभाव में उनके समान गुणधर्म की ओषधियों का ग्रहण करना, यथा—मेदा महामेदा के अभाव में शतावरी, जीवक ऋषभक के स्थान में भूमि कुष्माण्ड मूल (पताल कुम्हड़ा, विदारीकंद), काकोली, क्षीर काकोली के अभाव में अश्वगंधा मूल (असगंध) और ऋद्धि वृद्धि के स्थान में वाराहीकन्द । भा० पू० १ भा० । कोई कोई इसकी प्रतिनिधि इस प्रकार लिखते हैं, जैसे—जीवक, ऋषभकके अभावमें गुडूची या वंशलोचन, मेदा के अभाव में अश्वगंधा और महा मेदा के अभाव में शारिवा और ऋद्धि के अभाव में बला और वृद्धि के स्थान में महाबला लेते हैं । कोई कोई ऐसा लिखते हैं—

प्रतिनिधि—काकोली (मूसली स्याह), क्षीर काकोली (मूसली श्वेत), मेदा (सालब मिश्री छोटे दाने की), महामेदा (सक़ाकुल मिश्री), जीवक (बड़े दाने के सालब), ऋष-

मह (बहमन रहेत), ऋद्धि (चिड़िया कंद) और वृद्धि (पंजा मालवमिश्री)।

अष्टविधान्नम् ashṭa-vidhánnam—सं० क्लो० आठ प्रकार के आहार द्रव्य, जैसे (१) चर्व्य, (२) चोष्य, (३) लेह्य, (४) पेय, (५) खाद्य, (६) भोज्य, (७) भक्ष्य तथा (८) निष्पेय रूप भोजन द्रव्य।

अष्टक्षीरः ashṭa-kshírah—सं० पु० आठ दूध। आठ प्राणियों के दूध। वे निम्न हैं— (१) गोदुग्ध, (२) बकरी का दूध, (३) ऊँटनी का दूध, (४) भेड़ का दूध, (५) भैंस का दूध, (६) घोड़ी का दूध, (७) स्त्री का दूध और (८) हाथी का दूध।

"गव्यमाजं तथा चौष्ट्रमाविकं माहिषं च यत्।
अश्वायाश्चैव नार्याश्च करेणुनां च यत्पयः॥"
सु० सू० अ० ४५।

अष्टाङ्ग ashṭánga—हिं० संज्ञा पु०
अष्टाङ्गम् ashṭángam—सं० क्लो०

[वि० अष्टांगी](१) आयुर्वेद के आठ विभाग।

(क) शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूत विद्या, कौमारभृत्य, अगदतन्त्र, रसायनतंत्र और वाजीकरण।

(ख) काय चिकित्सा, बालचिकित्सा, ग्रह चिकित्सा, ऊर्ध्वांग चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, दंष्ट्र चिकित्सा, जरा चिकित्सा और वाजीकरण ये आयुर्वेद के आठ अंग हैं। वा० सू० १ अ०।

(ग) द्रव्याभिधान, गदनिश्चय, शल्य, काय, भूत निग्रह, विष निग्रह, रसायन और बाल-चिकित्सा। वैद्यकम्।

(२) शरीर के आठ अंग, जानु पद, हाथ, उर, शिर, वचन दृष्टि, बुद्धि जिनसे प्रणाम करने का विधान है।

वि०[सं०](१) आठ अवयववाला। (२) अठपहल।

अष्टाङ्ग घृतम् ashṭángaghritam—सं० क्लो० यह एक वाजीकरण घृत है।

अष्टाङ्ग - धूपः ashṭánga-dhúpah—सं० पु० यह धूप ज्वरनाशक है।

योग—गुग्गुल, निम्बपत्र, वचा, कुष्ठ, हरड़ यव, श्वेत सर्षप इनमें घृत मिलाकर धूप देने से ज्वर नष्ट होता है। च० द०।

अष्टाङ्ग मङ्गल घृतम् ashṭánga-mangal-ghritam—सं० क्लो० वच, मण्डूकपर्णी, शंखपुष्पी, ब्राह्मी, कुरकुर, श्वेतगुञ्जा शतावरी, गिलोय प्रत्येक ४-४ तो०, घृत १४ तो०, दुग्ध २१६ तो० उक्त औषधियों का कल्क बना घृत पकाकर सिद्ध करें।

गुण—इसके सेवन से धृति, स्मृति की वृद्धि होती है। वंग० सें० सं० रसा० अ०।

अष्टाङ्गयोगः ashṭánga-yogah—सं० पु० योग विशेष। यथा—कट्फल (कायफल), पोहकर, सोंठ, पीपल (त्रिकटु), यास (जवासा) और कारवी। संग्रहः।

अष्टाङ्गरसः ashṭánga-rasah—सं० पु० अर्शोऽधिकारोक्त रस विशेष। लोहकिट्ट(मण्डूर) और फलत्रय (त्रिफला)। र० सा० सं०। देखो—अष्टाङ्गारसः।

अष्टाङ्ग लवणम् ashṭánga-lavaṇam—सं० क्लो० काला नमक १ भा०, जीरा १ भा०, वृक्षाम्ल (अमसूल) १ भा०, अम्लवेत १ भाग, तज आधा भा०, इलायची आधा भा०, मिर्च आधा भा०, मिश्री १ भा० ले चूर्ण प्रस्तुत करें।

गुण—यह अग्नि को दीपन करता और कफज मदात्यय रोग को दूर करता है। वंग० से० सं० मदा० चि०। च० द० मदात्यय-चि०। जीरा, काला जीरा, वृक्षाम्ल (अमसूल) और महार्द्रक (स्थूल का वन आर्द्रक)। र० सा० सं०।

सौवर्चलं कृष्णजीरकाम्लवेतसाम्ललोणिकानां।
प्र०चूर्ण समं त्वगेलामरिचानां प्रत्येकमर्द्धभागः।
शर्करायाः भागैकं एकत्र मिश्रयेत्॥ च० द० मदा० चि०।

अष्टाङ्ग वैद्यकम् ashṭánga-vaidyakam—सं० क्लो० शालाक्य, काय, भूत, अगद,बाल, विष, वाजीकरण और रसायन इन्हें अष्टांग वैद्यक कहते हैं।

अष्टाङ्ग हृदयम् ashṭánga-hridayam–सं० क्लीं० वाग्भट विरचित वैद्यक ग्रंथ। अष्टांग आयुर्वेद के प्रत्येक अंग का सार सार ग्रहण करके रचा गया। अस्तु, यह सब अंगों का सारभूत अष्टांग हृदय है। वा० सू० १ अ०।

अष्टाङ्गावलेहः,–हिका ashṭángávalehah,-hiká–सं० पुं०, स्त्री० सन्निपात ज्वर तथा हिक्का व श्वासादि में हितकर योग विशेष।

योग तथा निर्माण-क्रम—कायफल, पोहकर मूल, काकड़ासिंगी, अजवाइन, सौंफ, सोंठ, मिर्च, और पीपल ये सब औषध समान भाग लेकर चूर्ण करलें। इस चूर्ण को अदरख के रस तथा शहद में मिलाकर चाटें।

गुण—कफ, ज्वर, खाँसी, श्वास, अरुचि, वमन, हिचकी, कफ और वातनाशक है। भा० म० १ भा०। सा० कौ०। च० द०। भैष०।

अष्टाङ्गी ashṭángi–हिं० वि० [सं०] आठ अंगवाला।

अष्टाङ्गोरसः ashṭángorasah–सं० पुं० गन्धक, पारा, लोहभस्म, मण्डूरभस्म, त्रिफला, त्रिकुटा, चित्रक, भांगरा प्रत्येक समान भाग लेकर सेमल और गिलोय के क्वाथ से ३ पहर घोटकर छाया में सुखाएँ।

मात्रा—४ मा०। उचित अनुपान के साथ सेवन करने से हर प्रकार के अर्श का नाश होता है। रस० यो० सा०।

अष्टादश ashṭádasha–अठारह। (Eighteen.)

अष्टादश धान्यम् ashṭádasha-dhányam–सं० क्लीं० १८ प्रकार के धान्य विशेष जैसे—कलाय (मटर आदि), गोधूम, आढकी, यव, यावनाल (मक्का), चणक, मसूर, अतसी, मूँग, तिल, कुलथी, श्यामाक (साँवाँ), माप, राजमाष, वर्त्तुल, हरिक, कंगु और तेरणा। वै० निघ०।

अष्टादश मूलम् ashṭádasha-múlam–सं० क्लीं० १८ प्रकारकी जड़ें यथा-बिल्व, अरणी, सोनापाठा, गाम्भारी, पाठा (निर्विषी), पुनर्नवा, वाट्यालक, मापपर्णी, जीवक, एरण्ड, ऋषभक, जीवंती, शतावर, शर, इक्षु, दर्भ, कास और शालिधान्य मूल। वै० निघ०।

अष्टादश शतिक महाप्रसारणी तैलम् ashṭádasha shatika-mahá-prasárani tailam–सं० क्लीं० गन्धाली पञ्चांग १२ तो०, शतावरी ४०० तो०, केतकीमूल ४०० तो० असगंध ४०० तो०, दशमूल ४०० तो०, खिरेंटी मूल ४०० तो०, कुरण्टा ४०० तो०, इनको १०२४ तो० जलमें पकाएँ, जब १००वाँ भाग शेषरहे तब इस क्वाथमें दुगुना और क्वाथ लें। काँजी और दही का पानी २५६ तो०, दुग्ध, शुक्त, ईख का रस बकरे के मांस का रस प्रत्येक ४-४ सेर, तिल तैल १०२४ तो०। कल्कार्थ–भिलावाँ, तगर, सोंठ, चित्रक, पीपल, कचूर, वच, स्पृक्का, प्रसारिणी, पीपलामूल, देवदारु, शतावर, छोटी इलायची, दालचीनी, नेत्रबाला, कूट, मेदा, मालकंगनी, पुष्करमूल, चन्दन, मजीठ, कस्तूरी, अगर, मजीठ, नख, शिलाजीत, केशर, कपूर, बिरोजा, हल्दी, लवंग, रोहिषतृण, मेधात्मक, कंकोल, पालक, नागरमोथा, कमल, दारुहल्दी, तेजपत्र, कपूर, रेणुकाबीज, लोबान, श्रीवास (धूप), केतकी, त्रिफला, रक्त धमासा, शतावरी, सरल, कमलकेशर, मेहदी, खस, बालछड़, जीवनीयगण, पुनर्नवा, दशमूल, असगंध, नागकेशर, रसवत, कुटकी, जावित्री, सुपारी, शलई का गोंद प्रत्येक १२-१२ तो० लें मन्दाग्नि से तैल पकाएँ। सिद्ध होने पर मालिश करें तो सम्पूर्ण वात व्याधियाँ दूर हों। इसे नस्य, पान और वस्ति कर्म में भी प्रयुक्त किया जाता है। विशेष गुण देखो–वंग से० सं० वात व्याधि चि०। च० द० वा० व्या० चि०।

अष्टादशाङ्गः ashṭádashángah–सं० पुं० सन्निपातज्वरोक्त कषाय विशेष। यह चार प्रकार का है—(१) दशमूल्यादि, (२) भूनिम्बादि, (३) द्राक्षादि (४) और मुस्तकादि इनमें से प्रथम—दशमूली, कचूर, शृंगी, पोहकरमूल, दुरालभा, भार्गी, इन्द्रयव, पटोल और कुटकी इन्हें अष्टादशांग कहते हैं।

गुण—मधिपात ज्वरनाशक ।

द्वितीय—भूनिम्ब, दारुहरिद्रा, दशमूल, सोंठ, नागरमोथा, निम्ब इन्द्रयव, धनियाँ, नागकेशर और पीपल का कषाय । गुण—तन्द्रा, प्रलाप, कास, अरुचि, दाह, मोह, श्वासादि, सम्पूर्ण रक्तविकार और ज्वर को तत्काल शमन करता है ।

तृतीय—द्राक्षा, गुडूची, कचूर, शृंगी, नागरमोथा, लालचन्दन, सोंठ, कुटकी, पाठा, भूनिम्ब, दुरालभा, खस, पद्मकाष्ठ, धनियाँ, सुगन्धवाला, कटेरी, पुष्कर मूल और नीम । गुण—पुरातन जीर्णज्वर को दूर करता है ।

चतुर्थ—नागरमोथा, पित्तपापड़ा, उशीर, देवदारु, महौषध, त्रिफला, दुरालभा और यवास, नीली, कम्पिल्लक, निशोथ, चिरायता, पाठा, बला, कुटकी, रोहिणी, मुलेठी, पीपलामूल आदि नागरमोथा गण कहलाते हैं । च० द० । भैष० ।

अष्टादशाङ्ग गुटिका ashṭá-dashángaguṭiká–सं० स्त्री० चिरायता, कुटकी, देवदारु, दारुहल्दी, नागरमोथा, गिलोय, कडुआ परवर, धमासा, पित्तपापड़ा, निम्बछाल, सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला, वायविडंग प्रत्येक १–१ भा०, लौह चूर्ण सर्व तुल्य, चूर्ण कर शहद और घृत में गोलियाँ बनाएँ ।

गुण—इसे तक्र के साथ भक्षण करने से पांडु, शोथ, प्रमेह, हलीमक, हृद्रोग, संग्रहणी, श्वास, खाँसी, रक्तपित्त, अर्श, आमवात, व्रण, गुल्म, कफज विद्रधि, श्वेत कुष्ठ, उरुस्तम्भ आदि रोग दूर होते हैं । वंग सेo सं० पांडुरो० चि० ।

अष्टादशाङ्ग लौहम् ashṭádashánga-louham–सं० क्लो० पांडु अधिकारोक्त लौह विशेष ।

योग तथा निर्माण-क्रम—चिरायता, देवदारु, दारुहरिद्रा, नागरमोथा, गुडूची, कुटकी, पटोल, दुरालभा, पित्तपापड़ा, निम्ब, त्रिकटु, चीता, त्रिफला, मयनफल, वायविडंग इन सबको समान भाग लेकर इन सब के बराबर लौह भस्म मिला कर घृत और मधु के साथ वटिका निर्मित करें । अनुपान—इसको तक्र के साथ उपयोग में लाएँ । गुण—पाण्डुघ्न । भा० म० २ भा० ।

अष्टापदः ashṭápadah–सं० पु०
अष्टापद ashṭápadа–हिं० संज्ञा पु०
(१) शरभ । Sea-sharabha । (२) मर्कट । वानर-हिं० । (३ monkey) देखो—मर्कटः । (३) महासिंह । Sea-Mahásinha । (४) धुस्तूर । धतूरा-हिं० । (Datura fastuosa) । रा० नि० व० ११ । (५) शतरंज की चाल । वा० उ० अ० २२ । "पक्वेऽष्टापदवच्छिन्ने" । —क्लो० (६) सुवर्ण, सोना । (Gold) रा० नि० व० १३ । –(दी) स्त्री० (७) मल्लिका भेद । चन्द्र मल्लिका ।

अष्टापद ashṭápada–हिं० संज्ञा पु० [सं०] (१) लूता, मकड़ी । (२) कृमि । देखो—अष्टापदः ।

अष्टाम्लवर्ग ashṭámla-varga–सं० पु० आठ खट्टे फल, यथा–(१) जम्बीर, (२) बीजपुर, (३) मातुलुंग, (४) चुक्रक, (५) चांगेरी, (६) तिन्तिड़ी, (७) बदरी और (८) करमर्द ।

अष्टावक्र ashṭá-vakra–हिं० संज्ञा पु० [सं०] एक ऋषि ।

अष्टावक्र रसः ashṭá-vakra-rasah–सं० पु० रसायनाधिकारोक्त रस विशेष । यथा–पारद १ भा०, गन्धक २ भा०, स्वर्ण भस्म १ भा०, चाँदी भस्म ॥० भा०, शीशा भस्म ।० भा०, राँगा भस्म ।० भा, ताम्रभस्म ।० भा० और खपरिया शुद्ध ।० भा० इसको वटाङ्कुर तथा घीकुआर के रस में १ प्रहर तक मर्दन कर रससिंदूर की तरह पकाएँ । मात्रा–२ रत्ती । अनुपान–पान का रस । भैष० ।

अष्टाश्रि ashṭáshri
अष्टास्र ashṭásra } -हिं० वि० [सं०]

आठ कोने वाला, अठकोना, अठकोण।

अष्टिः, ष्ठिः ashṭih,-shṭhih-सं० स्त्री०
अष्टि ashṭi-हिं० संज्ञा स्त्री०

(१) अन्ठी। आँठी-बं०। (२) मींगी (Nucleus)। नुवात-अ०। देखो—सेल।

अष्टौषधिः ashṭoushadhih-सं० स्त्री० महासुवर्चला, आदित्यपर्णी, नारीकाष्ठ, गोधा, सर्पा, पद्मा, अज और नीली ये आठ अष्टौषधि कहलाती हैं। वा० चि० १ अ०।

अष्ठिला ashṭhilá
अष्ठीला ashṭhílá
अष्ठीलिका ashṭhiliká } -सं० स्त्री०, हिं० संज्ञा स्त्री० (१) वातु रोग विशेष।

एक रोग जिसमें मूत्राशय में अफरा होने से पेशाब नहीं होता और एक गांठ पड़ जाती है जिसमें मलावरोध होता है और वस्ति में पीड़ा होती है। इसके निम्न भेद हैं—

लक्षण—वह ग्रंथि जो ऊपर को उठी हुई तथा अष्ठीला के सदृश कठोर और आनाह के लक्षणों से युक्त होती है उसे अष्ठीला कहते हैं। मा० नि० ११ अ०। नाभि के नीचे उत्पन्न हुई इधर उधर चली हुई अथवा अचल जो एक ही स्थान में रहे ऐसी पत्थर की बटिया के समान कड़ी और ऊपर को कुछ लम्बी और चौड़ी, कुछ ऊँची हो और अधोवायु, मल, मूत्र इनको रोकने वाली गाँठों को वाताष्ठीला कहते हैं। जो अत्यन्त पीड़ा युक्त, वायु, मूत्र, मल को रोकने वाली और जो तिरछी प्रगट हुई हो उसको प्रत्यष्ठीला कहते हैं। मा० नि० वा० व्या०। वाग्भट के अनुसार तिरछी और ऊपर को उठी हुई ग्रंथि को प्रत्यष्ठीला कहते हैं। वा० नि० ११ अ०।

(२) शूकरोग भेद। लक्षण—जो कड़ी और भीतर से विषम ऐसी वायु के कोप से पिड़िका हो वह अष्ठीलिका है। यह विषयुक्त शूकों से होती हैं। सु० नि० १४ अ०।

(३) उत्तरापथ प्रसिद्ध वर्तुलाकार पाषाण खण्ड (जे ज्वरी) वा पत्थर की गोली। लोहार की लोहे की दाँती, अस्त्र विशेष। गयदास।

(४) प्रोस्टेट ग्रंथि विशेष। (Prostate gland.)

अष्ठि(ष्ठी)वान् ashṭhi,-shṭhí,-ván-सं० पुं०

(१) शूक रोग विशेष। लक्षण—जो क[illegible] भीतर से विषम ऐसी वायु के कोप से पि[illegible] वह 'अष्ठीलिका' है। यह विष युक्त शूकों [illegible] है। सु० नि० १४ अ०। देखो—अष्ठी[illegible]

(२) जानु। (knee) रा० नि० व[illegible]

अष्ठीवान्,-त् ashṭhiván,-t-सं० पुं० जानु। (Knee) सु० शा०। अथर्व० ६। ३१। क० १०।

अष्ठीला दाह ashṭhilá-dáha-हिं० [illegible] प्रोस्टेट ग्रंथि प्रदाह। (Prostatitis)

अष्ठीला विकार ashṭhilá-vikára-हिं० [illegible] प्रोस्टेट ग्रंथि के रोग। (Diseases [illegible] the prostate).

अष्ठीला वृद्धि ashṭhilá-vriddhi-हिं० [illegible] प्रोस्टेट ग्रंथि का बढ़ जाना, वातष्ठी[illegible] (Prostatic enlargement.)

अष्ठीलास्थित अश्मरी ashṭhilásthita-ashmari-हिं० स्त्री० प्रोस्टेट ग्रंथि स्थित अश्म[illegible] (Prostatic calculi) देखो—अश[illegible] वा प्रोस्टेट।

असंक्लिन्नः asanklinnah-सं० त्रि० सम्[illegible] रूप से आर्द्र नहीं अर्थात् जो पूर्णतः क्लेदि[illegible] (तर) न हो। यथा—"नितिहनमनक्लिन्न[illegible]" भा० पू० १ भा०।

असंयोग asanyoga-हिं० पुं० मिश्र, अमेल[illegible]

असंलग्न asanlagna-हिं० वि० जो मिला न हो, असंयुक्त, अमिश्रित।

असकत asakata-हिं० स्त्री० आलस्य, उदासी। (Drowsiness, slothfulness.)

असकती asakati-हिं० पुं० आलसी, दीर्घ[illegible] (Drowsy, lazy.)

असकुट asakuṭa-सं० [illegible] (बंगाल नहीं) मेमा० [illegible]

असखी asakhi-म० स्त्री० अयुग्म। (Azygos) अर्द्ध-अ०।

असगन्द asaganda } -हिं० संज्ञा पु० असगन्ध asagandha } अश्वगंधा। (Physalis flexuosa.)

असगंध चाछरी asagandha-chāchhari- (१) वट, बरौद, बड़। (Ficus Bengalensis.) -अमान्नु-म०। (२) असगंध। (Withania somnifera.)

असजद āasajada-अ० (१) सुवर्ण। सोना -हिं०। Gold (Aurum.)। (२) जवाहिरात (जैसे-याकूत, जबरजद आदि)। (Gems.)। (३) स्थूल वा मोटा ऊँट (A fat camel.)

असजग āasajaga-अ० टिड्डी। (A locust).

असढ़िया asadhiyá-हिं० संज्ञा पु० [सं० असाद] एक प्रकार का लंबा साँप जिसकी पीठ पर कई प्रकार की चित्तियाँ होती हैं। इसमें विष बहुत कम होता है।

असथन asathana-हिं० संज्ञा पु० [?] आवकस-हिं०।

असनः asanah-सं० पु० } (१)
असन asana-हिं० संज्ञा पु० }
विजयसार, बीजक। Pterocarpus marsupium, *Roxb.*। देखो—विजयसार भा० पू० १ भा० वटादि व०। (२) शाल कर्षावत पत्रशाक, वृक्ष विशेष, पीतशाल, पीतशालः। प०मु०। असन, असना, आसन, असन। रा० नि० व० ९। पियाशाल -हिं०। Terminalia tomentosa, *Bedd.*। -बं०। असण, असणा, वहि, सुरिया -मह०। संस्कृत पर्याय—परमायुधः (श), महासर्जः, सौरिः, बधूकपुष्पः, प्रियकः, बीजवृक्षः, जीवकः, प्रियसालकः, अशनकर्णः, वनेसर्जः। "असनो बीजकः कटाख्यः स्तनामाख्यानः।" सु०सू० ३८ अ०। गुण—कटु, उष्ण, तिक्त, वातनाशक, सारक तथा गलदोष नाशक है। रा० नि० व० ९। १३। कुष्ठ, विसर्प, श्वित्र (कुष्ठ भेद), प्रमेह, गुदा कृमि, कफ तथा रक्तविनाशक है और त्वच्य, केश्य तथा रसायन है। भा० पू० १ भा० वटादि व०। नि० चि० रा०। नि० पलादि०। पृ०२०। "निरवासन शाक सारान्।" चा०सू० २५ अ०। असनादि व०। "असन तिनिश भूर्ज।" भा० म० ४ भा० योनिरोग चि०। "स्वदिरासनं स्वदम्।" देखो—आसन। (३) जीवकद्रुम। मे०। मदिरा। (४) वक वृक्ष, अगस्तिया (Agati grandiflora.)। (५) बीजक आदि। -हिं० (१) फेंकना। मे० मदिरा।

नोट—आयुर्वेदीय निघंटुकार प्रायः आसन और विजयसार दोनों का वर्णन संस्कृत शब्द असन के ही अन्तर्गत किए हैं; परन्तु परस्पर बहुत कुछ समानता रखते हुए भी ये पृथक् पृथक् द्रव्य हैं। अस्तु, इनका वर्णन यथा स्थान किया जाएगा। आयुर्वेद में असन उपर्युक्त दोनों संज्ञाओं के पर्याय स्वरूप प्रयुक्त हुआ है, जिनमें से (१) आसन, असना-हिं०। आशान पियाशाल-बं०। (Terminalia tomentosa, *W. & A.*)-लें०। और (२) वि(बि)जय(जे)सार, बीजक, बीजा-हिं०, पीतशा(सा)ल -बं०। Pterocarpus marsupium, *D. C.* (Indian kino tree.)-लें० है।

इसके निर्यास को हिन्दी में विजयसार निर्यास वा हीराबोल तथा अरबी में दम्मुलअखवैन हिंदी और लैटिन में Pterocarpus marsupium, *D. C.* (Gum of—Indian kino.) कहते हैं।

कानों के पर्याय—दम्मुल अखवैन-फा०, हिं०। खूने सियावशान-फा०। kino (The dragon-Draggons' blood.)

असन āasana-अ० जल का स्वाद तथा गंध बदल जाना।

असन āasana-अ० पुरातन वसा। (Old fat.)

असनपर्णिका,-र्णी asana-parnikā,-rnī -सं० स्त्री० (१) अपराजिता-हिं०, बं०।

(Clitorea ternatea.) मराठी । श्र० टी० भे०। (२) पटसन, रसुनिया घास ।

असनपुष्पः,-कः asana-pushpah,-kah -सं० पु० पैत्तिक धान्य जाति भेद । साठी भेद । सु० सू० ४६ अ० ।

असनमल्लिका asana-mallika-सं० स्त्री० रामसर-हिं० । हापर मालो बं० । (Echites dichotoma.) इं० मे० मे० । देखो—भद्र-वल्ली ।

असना asana-पु० } असगंध, अश्वगंधा । असन asana " } (Withania somnifera.) इं० मे मे० ।

-हिं० संज्ञा पु० [सं० असन] एक वृक्ष जो शाल की तरह का होता है । इसके हीर की लकड़ी दृढ़ और मकान बनाने के काम आती है तथा भूरापन लिए हुए काले रंग की होती है । इस पेड़ की पत्तियाँ माघ फागुन में झड़ जाती हैं । पीतशाल वृक्ष । Terminalia tomentosa, *Bedd.*)

असनादिगणः asanadi ganah-सं० पु० पीतशाल, तिनश, भोजपत्र, पूतिकरञ्ज, खदिर-सार, कदर (खैरसार की आकृतिवाला श्वेतसार), शिरिष, शीशम, मेषशृंगी, त्रिहिम (चन्दनत्रय अर्थात् श्वेत, रक्त व पीत चन्दन), ताड़, ढाक, अगर, देवदारु, शाल, सुपारी, धवपुष्प, इन्द्रयव, अजकर्णी और अश्वकर्णी ।

गुण—ये श्वित्र कुष्ठ,कफ, कृमिरोग पाण्डुरोग, प्रमेह तथा मेद सम्बन्धी दोषों को दूर करते हैं । वा० सू० १५ अ० ।

असंताप asantápa-सं० त्रि० संताप या क्लेश-रहित । अथर्व० ।

असन्धानकर asandhána-kara-हिं० वि० पु० संधान निवारक ।

असन्न asanna-अ० कक्ष दुर्गन्धि । वह मनुष्य जिसके कक्ष से दुर्गन्धि आती हो ।

असब ansab-अ० (ए० व०) अअ साब (ब० व०) पे, पुट्ठा-उ० । नाड़ी, बोध तन्तु, ज्ञानतन्तु-हिं० । नर्व (Nerve.)-इं० । देखो - नाड़ी ।

असब इश्तियाक़ी aasaba-ishtiyáqí-अ० असब अश्तयाक़ी । यह मस्तिष्क की चतुर्थ नाड़ी है जो मस्तिष्क में आरम्भ होकर नेत्र में चक्षु के वक्रोर्ध्व पेशी में समाप्त होती है । पैथेटिक नर्व (Pathetic nerve.) इं० ।

असब ज़ाजिह aasaba-zájiá-अ० अस-बुरिंयह् वलिमअ् दह्, असब मुतहय्यरह्, लौटने वाला पुट्ठा । आमाशय फुफ्फुसीया नाड़ी, अस्त व्यस्त बोधतन्तु । (Pneumogastric nerve, Vagus nerve.)

असब ज़ौक़ी aasaba-zouqí-अ० असब लिसानी व बलऊमी, जिह्वाकण्ठनाड़ी । (Glossopharyngeal nerve.)

असब नुखाई इज़ाफ़ी aasaba-nukháíizáfí-अ० सौषुम्न सहायक नाड़ी । (Spinal accessory nerve.)-इं० ।

असब बसरी aasaba-basrí-अ० असबनूरी, असब मुजव्वफ़, असबह् मुजव्वफ़ह् । चाक्षुषीया नाड़ी, आलोक सम्बन्धी नाड़ी, देखने की नाड़ी दृष्टिनाड़ी । (Optic nerve.)

असब मुजव्वफ़ aasaba-mujavvafa-अ० असबह् मुजव्वफ़ह् । (Optic nerve.) देखो—असब बसरी ।

असबवजिही aasaba-vajihi-अ० मौखिकी नाड़ी । (Facial nerve.)

असब वर्की कबीर aasaba-varki-kabira -अ० अ स्रबह् वरीक़ह्, महा कटिनाड़ी ।(Great sciatic nerve.)

असब वर्की सग़ीर aasaba-varki-sagh-íra-अ० लघु कटि नाड़ी । (Small sciatic nerve.)

असब शम्मी aasaba-shammi-अ० उ स्रबह् शम्म । घ्राण नाड़ी । (Olfactory nerve.)

असब शिर्की aasaba-shirkí-अ० असब हमदर्दी । पिंगल नाड़ी । (Sympathetic nerve.)

असब सम्ई âasaba-samái--अ० असबतु-स्समअ्। श्रावणी नाड़ियाँ। (Auditory nerve.)

असब सुलासी यजही âasaba-sulási-vajhi--अ० त्रिशाखिका नाड़ी। (Trifacial nerve.)

असबह् âasabah--अ० नाड़ी, बांधतन्तु। (Nerve.)

असबहे ज़ाइक़ह् âasabahe-záiqah--अ० स्वाद नाड़ी, जिह्वाकंठ नाड़ी। (Glossopharyngeal nerve.)

असबहे नूरियह् âasabahe-núriyah--अ० चाक्षुषीया नाड़ी, दृष्टि नाड़ी। (Optic nerve.)

असबहे बासिरह् âasabahe-básirah--अ० चाक्षुषीया नाड़ी, दृष्टि नाड़ी। (Optic nerve.)

असबहे मुजव्वफ़ह् âasabahe-mujavvafah--अ० दृष्टिनाड़ी। (Olfactory nerve.)

असबहे शाम्मह् âasabahe-shámmah--अ० घ्राण नाड़ियाँ। (Olfactory nerve.)

असबहे सामिअ़ह् âasabahe-sámiâah--अ० श्रावणी नाड़ियाँ। (Auditory nerve.)

असबर âasabara--अ० नर चीता। (A tiger.)

असब(व)रग asba(v)raga
असबर्ग asabirga
--हिं० संज्ञा पु० [फ़ा०] स्पृक्का। (See--Sprikká) खुरासानकी एक लंबी घास जिसमें पीले या सुनहले फूल लगते हैं। सुखाए हुए फूलों को अफ़ग़ान व्यापारी मुलतान में लाते हैं, जहाँ वे अकलबेर के साथ रेशम रँगने के काम में आते हैं।

असबा âasaba--अ० ख़बलाव भेद।

असबान âasabana--अ० खजूर भेद। (A kind of date)

असबाब asabába--अ० (ब० व०), सबब (ए० व०) कारण। हेतु। निदान।

असमदृष्टि asama-drishti--हिं० (Astigmatism.) दृष्टि दोष। ख़लल बसर, ख़ललुन्नज़र--अ०। ख़राबिये नज़र-फ़ा० नज़र की ख़राबी- उ०।

यह एक प्रकार का दृष्टि विकार है जिसमें एक ओर की दृष्टि तो ठीक होती है; परन्तु दूसरी ओर की दृष्टि में निकट दृष्टि या दूर दृष्टि के विकार होते हैं। प्राचीन हकीमों ने इसका पृथक् वर्णन नहीं किया, प्रत्युत इसे एक प्रकारका दृष्टिनैर्बल्य माना है।

असमंत asamanta--हिं० संज्ञा पु० [सं० अश्मंत] चूल्हा।

असम asama--हिं० वि० [सं०] जो सम या तुल्य न हो। जो बराबर न हो। असदृश।

असमनेत्र asama netra--हिं० वि० [सं०] जिसके नेत्र सम न हों, विषम हों।

(२) दृष्टि दोष। देखो—असमदृष्टि।

असमबाण asama-vána--हिं० संज्ञा पु० [सं०] पंचबाण। कामदेव।

असमवायीकारण asamaváyi-kárana--हिं० संज्ञा पु० [सं०] समवायी कारण का सामन्य कारण।

असमर्थता asamarthatá--हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] सामर्थ्यहीनता, दुर्बलता, निर्बलता।

असमशर asamashara--हिं० संज्ञा पु० [सं०] कामदेव।

असमानध्रुव asamána-dhruva--हिं० पु० (Unlike Poles)

अ़सम् âasam--अ० हाथ पाँव घना जाना।

असम्म asamma--अ० वह नासिका जिसका छिद्र संकुचित हो।

असम्म asamma--अ० (ए० व०), सुम्म (ब० व०) बधिर, बहरा। (A deaf)

असर asara--हिं० संज्ञा पु० [अ० असर] (१) प्रभाव। (२) दिन का चौथा पहर।

असरवका asarabacca-असारून, तगर। म० अ०। फा० इ० २ भा०।

असरा asará-हिं० संज्ञा पुं० [हिं० असाढ़] आसाम देश के कछारों में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का चावल।

असरी äasarí-अ० शाक भेद। (A sort of vegetable)

असरी asari-नैपा० भूतकेश, सान्दुबात-गरध०। वेविना।

असरुः asaruh-सं० पुं० भूकदम्ब, भूई, कदम्ब, कुकुरशोंका-बं०। (See-bhúkadámba) शा० च०। (२) कुकरौंधा। A plant (Celsia.)

असरौली asarolí-सिन्ध० झराउ-पं०। छोटी झाई, लाल झाऊ-हिं०। (Tamarix auriculata, *Valil.*) इं० मे० प्लां०।

असल asala-हिं० वि० [अ०] शुद्ध, बिना मिलावट का। -संज्ञा पुं० देखो असत्र।

असल asal-भरतमूसली, दल, दीम, जल, मरा। सूम, हमार, बज्रा। Bullrush (इं० हैं० गा०)

असल (स) ल asa,-s-la-अ० सरह। वेकोनदी नै०। (Cadaba Farinosa. *Forsk.*) फा० इ० १ भा०। इं० मे० मे०। देखो-कैडेवा फैरिनोसा।

असलम् asalam-सं० क्ली० (१) लौह। Iron (Ferrum) । (२) अस्त्र। (A weapon in general.) वै० निघ०।

असला asala-हिं० संज्ञा स्त्री० सर्प भेद।

असलियह् asaliyyah-अ० सल्अह् लयिनह्। नर्म रसौली का एक भेद है जो दबाने से दब जाती है, किन्तु पुनः उभर आती है। (Soft-fibroma.)। देखो-सल्अह् लयिनह्।

असलिया asaliya-बम्ब०, गुं० चन्द्रसुर, अहलीव। (Lepidium sativum.) इं० मे० मे०।

[असवः asavah-सं० पुं० प्राण। जीव। अथर्व०।

असह asah-हिं० संज्ञा पुं० हृदय।-हिं०।

असा äása-अ० बलड़। कमूस।

असाअस äasáása-अ० साही, सेही-हिं०। खारपुश्त-फा०। (A porcupine)

असाइफिल asyphil-इं०। देखो-पटाँक्‌स्लेट।

अस्माउर्राई äasáurráái-अ० बीजकन्द, केमरी, -हिं०। चतवात (Polygonum auriculare, *Linn.*)। फा० इ० ३ भा०। म० अ०।

असाक़ल äasáqala } -अ० कुमात (खुम्बी)।
असक़ल äasaqala } Agaricus.

असाफ़ asáqú-रू० अर्दाक्। देखो-खुरासानी।

असाग़ह् asághah-अ० आहार अर्थात् खाद्य एवं पेय का कंठ से नीचे उतरना।

असाग़र्यह् aságharbah-अ० औषधि का अनुभव तथा निर्णय-क्रम।

असाढ़ asárha-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आषाढ़] का महीना। वर्ष का चौथा महीना।

असाढ़ी asárhi-हिं० वि० [सं० आषाढ़] अषाढ़ का। -संज्ञा स्त्री० (१) वह फसल जो अषाढ़ में बोई जाए। खरीफ़।

असातुन्नहल asátunnahal-अ० शहद, मधु। Honey (Mel.)

असातून asátún-अ० मद्य भेद। यह सुरा जौ अंगूर के पानी, शहद तथा कतिपय उष्ण औषधियों के योग द्वारा निर्मित होता है।

असात्म्यः asátmyah-सं० त्रि० }
असात्म्य asátmya-हिं० संज्ञा पुं० } वह प्रकृत्यसुखावह, प्रकृति विरुद्ध पदार्थ। वह आहार विहार जो दुःखकारक और रोग उत्पन्न करने वाला हो।

-वि० सात्म्य विपरीत।

असाध्य asádhya-हिं० त्रि० [सं०] (१) आरोग्य होने के अयोग्य। जिसके अच्छे या नीरोग होने की सम्भावना न हो। जैसे—यह रोग असाध्य है। (२) जिसका साधन न हो सके। न करने योग्य। दुष्कर। कठिन।

असान asána-मह०, यस्त्र० विजयसार(-ज)। (Pterocarpus marsupium, Roxb.) फा० इं० १ भा०।

असान asána-म इ०, फना० खाका, लम्कना, खाज-हिं०। (Briedelia Retusa, *Spreng.*) फा० इं० ३ भा०।

असानो asáno-बंम्व० खाजा-हिं०। कर्मनेलिया। (Briedelia montana.)

असान्दु asándu-मह० } असगंधा, असगंध। (Withania Somnifera.)
असान्धु asándhu-मह०

असाफ़ीर āaṣáfir-अ० रोदे, आँतें, अंतड़ियाँ -उ०। आन्त्र-हिं०। (Intestines.)

नोट—असाफ़ीर का शाब्दिक अर्थ पक्षी व चिड़ियाँ है। चूँकि उदर की अँतड़ियों में जब क़राक़र (आटोप)होता है तब ऐसा शब्द उत्पन्न होता है, जैसा कि पक्षियों का। इस कारण आंत्र को उक्त नाम से अभिहित किया गया।

असाब āaṣáb-अ० हरिण। (Deer)

असाबअ aṣábaā } -अ० (ब० व०), असाबीअ् aṣábiá } अ.स्वअ (ए० व०), अंगुश्तान, अंगुलियाँ। (Fingers)

असाबअ क़न्यान aṣábaā-qanyán-अ० फ़रञ्जमिश्क। रामतुलसी, जम्बल-हिं०। (Ocimum gratissimum)

असाबअ ग़ु.दादी aṣábaā-ghudádi-अ० एक लम्बे प्रकार का अंगूर।

असाबअ् फ़ऊ़न aṣábaā faraúna-अ० एक प्रकार का पाषाण है जो यमन अमान देश में पैदा होता है।

असाबअ हुर्मुस aṣábaā-hurmasa-अ० सुरिंजान पुष्प। Hermodactylus, (Flower of-)

असाबइरंसानी aṣábaāirraṣáni-अ० एक बूटी की जड़ है जिसका रंग हरित तथा श्वेत मिश्रित होता है।

असाबइ.ल् उस.ल aṣábaāil-uṣúla-अ० तृण तथा वृक्ष के बीच की एक प्रकार की बूटी है यह एक गज ऊँची तथा पुष्प व कलिकायुक्त होती है।

असाबइ.ल् फ़ुतियात aṣábaāil-fatiyáta -अ० सुप्रम बालंग, क़रनूफ़लेबुस्तानी (यवनीक़)। Calamintha clinopodium *Benth.*, (the wild Basil.) फा० इं० ३ भा०।

असाबइ.ल् मलिक aṣábaāil-malika-अ० इक्लीलुल् मलिक। Melilotus officinalis.)

असाबइ.स्सफ़र aṣábaāiṣṣafara-अ० हंसपदी, गोधापदी। (Vitis pedate.)

असाबीअ aṣábiā-अ० (ब० व०), अ.स्बअ (ए० व०), अंगुलियाँ। (Fingers.)

असाबीअ aṣábiā-अ० (ब० व०), उस्बूअ (ए० व०) एक सप्ताह, सात दिवस, सात बार।

असामयिक asámayika-हिं० वि० [सं०] जो समय पर न हो। जो नियत समय से पहिले वा पीछे हो। बिना समय का। बेवक़्त का।

असामर्थ्य asámarthya-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) शक्ति का अभाव। अक्षमता। (२) निर्बलता। ना ताक़ती।

असामूसा āasámúsá-अ० लाल मास।

असारम् asáram-सं० पुं०, फलो० }
असार asára-हिं० संज्ञा पुं०

(१) काष्ठ अगुरु चन्दन। (A kind of Agar.) रा० नि० व० १२। (२)अगुरु, अगर (Aloe wood.)। (३)जैपाल, जमालगोटा (Croton tiglium, *Linn.*)। (४)एरण्ड वृक्ष, (अरण्डी, अण्डी)रेंडी का पेड़। (Ricinus communis, *Linn.*) श० च०।

असार asára-हिं० वि० [सं०] (१) सार रहित। निःसार। (२) शून्य। ख़ाली। संज्ञा पुं० दे० असारम्।

असार äasára } -अ० भेड़िया। (A wolf.)
असारह äasárah

असार राई asára-rái-अञ्जबार। (Polygonum bistorta.)

असार दधि asára-dadhi-सं० क्ली० नवनीत अर्थात मक्खन निकाले हुए दूध से जमाया हुआ दही।

गुण—असार दधि ग्राही, शीतल, वातकारक हलका, विष्टम्भी, दीपन, रुचिकारक तथा ग्रहणी रोगनाशक है। भा० पू० दधि व०।

असारबका, कामन asarabacca-common-इं० असारून, तगर।

असारा asárá-सं० स्त्री० कदली वृक्ष, केला। Plantain (Musa sapientum.) वै० निघ०।

असारून asárún-अ०, लि० तगर भेद, पारसीक तगर, तुकिर-हिं०। (Asarum Europæum.)

हाँवेर या जटामांसी

(N. O. Valerianeæ.)

उत्पत्ति-स्थान—फ़ारस, अफ़ग़ानिस्तान तथा भारतवर्ष। भारतवर्ष में इसका आयात अफ़ग़ानिस्तान से होता है।

नोट—तगर, हाँवेर तथा जटामांसी प्रभृति एक ही वर्ग की ओषधियाँ हैं और परस्पर इनमें बहुत कुछ समानता है। अतएव कतिपय ग्रंथों में इसके निश्चीकरण में बहुत भ्रम किया गया है। इसके पूर्ण विवेचन के लिए देखो—तगर या हाँवेर।

वानस्पतिक-वर्णन यह एक बूटी है जिसके पत्र लबलाब अर्थात् इश्कपेचा के पत्र के समान होते हैं। भेद केवल यह है कि इसके पत्र सूक्ष्मतर एवं अतिशय गोल होते हैं। इसके पुष्प नील वर्ण के, पत्तों के बीच में जड़ के समीप होते हैं। इसके बीज बहुसंख्यक और कुसुम्भ बीजवत् होते हैं। इसकी जड़ें पोथा, ग्रंथियुक्त और सुगंधियुक्त होती हैं। (औषधों में यह जड़ ही काम में आती है)।

प्रकृति—द्वितीय कक्षा के अंत में उष्ण व रूक्ष है। किसी किसी ने तीसरी कक्षा में उष्ण एवं द्वितीय कक्षा में रूक्ष और किसी ने तीसरी कक्षा में रूक्ष लिखा है। स्वरूप—पीताभ। स्वाद—तीक्ष्णतायुक्त वा बेस्वाद। हानिकर्त्ता—फुप्फुस को। दर्पघ्न—मवेज़ मुनक़्क़ा। प्रतिनिधि—कुलिंजन एवं शुंठि। मात्रा—२ माशे। प्रधान-कर्म—मस्तिष्क-बलप्रद और शीत प्रकृति को ऊष्मा प्रदान करता है।

गुण, कर्म, प्रयोग—इसमें काफ़ी ऊष्मा होती है। अतएव यह यकृदावरोधोद्घाटक है। यह प्लीहा काठिन्य को दूर करता है; क्योंकि यह अपनी उष्णता के कारण यह उसकी सांद्रता को मारे को घुलाता है। इसी हेतु पुरातन कूल्हे के दर्द (वजउल वरिक) एवं वात-तन्तुओं के शीत जन्य रोगों को लाभप्रद है। मूत्र एवं आर्त्तव का प्रवर्त्तन करता है; क्योंकि इसमें द्रावक (तल्तीफ़) एवं विलायन (तहलील) की शक्ति पाई जाती है। (मंफ़ो०)

यह तारल्यसाजनक है। एवं ऊष्माको बढ़ाता है तथा शोथ एवं वायुको लयकर्त्ता; मस्तिष्क, आमाशय, यकृत, वाततन्तुओं, प्लीहा एवं वृक्क को बल प्रदान करता है। पित्तज एवं श्लेष्मज मादा को मल द्वारा उत्सर्जित करता तथा जीर्णज्वर को दूर करता और मूत्र व आर्त्तव की प्रवृत्ति करता है। म० मु०।

उपर्युक्त औषधों के साथ या अकेले इसका पीना अपस्मार, अर्दित, पक्षाघात, इस्तरख़ा (वातग्रस्तता), श्लेष्मज आक्षेप, कम्पवात, मस्तिष्क एवं बोधक तन्तुओं की उष्णता एवं शक्ति के लिए हितकर है। गर्भाशय सम्बन्धी शिराशूल एवं विस्मृति को लाभप्रद है। आन्त्रिक शूल प्रशामक, जलोदर, अवरोध जन्य पांडु, यकृत एवं प्लीहा शोथ के लिए उत्तम, गर्भाशय-शोधक एवं मूत्रावयव, वृक्काश्मरी तथा वस्त्यश्मरी को लाभप्रद है। आर्त्तव एवं मूत्ररोध, संधिवात पार्श्वशूल, गृध्रसी और निक़रस को लाभप्रद है। बकरी या ऊँट के दूध के साथ शीत-

काम शक्ति का उद्दीपन कर्त्ता है। मधुवारि-(-मा-उल_ऊस्ल)के साथ एक मिसक़ाल (४॥ मा०) की मात्रा में रेचक है। इसके नेत्रके मूँघनेसे विस्मृति रोग नष्ट होता है। इसका अञ्जन करनेसे नेत्र की बीमारियों को, इसका भवचूर्ण न वृश्चिक दंश को और चंचल एवं पेडू पर, इसका प्रलेप कामशक्ति के बढ़ाने में परीक्षित है। बु० मु०।

असारून अस्फ़र asárúna-asfara-सिरि० आम बर्री, जंगली हब्बुल आसका वृक्ष।

असारून कैणडेंन्सी asarun candensi-ले० रीशाद-बाला-फ़ा०। असारून-सिरि०।

असारून युरोपिअम् asarun europæum -ले० असारान, तगर भेद।

असारूने हिन्दी asárune hindi-फ़ा० तगर (पादिका)म्। सुम्बुल हिन्दी-अ०। (Valeriane wallichii, D. C.)

असारुम युरोपिअम asarum europæum, Linn-ले० तुक्कर-हिं०। असारून-अ०। मेमो०।

असालस asálasa-यू० क़ामरा-अ०। शिवलिङ्गी-हिं०। (Bryonia laciniosa.)

असाला asála-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अशालिका] हालों, चंसुर।

असालिया asáliya-गु०, बम्ब०
असालियो asáliyo-गु० } चन्द्रसूर। (Lepedium sativam.)

असालीज aasálija-अ० बारीक शाखाएँ या बेलें जो वृक्षों पर लिपटती हैं।

असालूँ asálún-जयपु० चन्द्रसूर। (Lepidium sativum.)

असाल्यूँ asályún-जय० चन्द्रसूर। (Lepedium sativum.)

असावरी asávari-हिं० संज्ञा स्त्री० कबूतर, कपोत, (A kind of pigeon.)। (२) वस्त्र (रूई) वस्त्र भेद। (A kind of cotton cloth.)

असास asása-अ० बुनियाद, जड़, नींव-उ० फाउण्डेशन (Foundation)-इं०।

असास aasása-अ० भेड़िया। (A wolf.)

असासनू asásanú-कड़ज। (Straw-berry)-इं०। (Fagaria-Indica.) ले०। इं० हैं० गा०।

असि asi-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] खंग, तलवार, खाँड़ा, कटार। (A sword, a scimitar.)

असि asi-बर० (ए० व०), अभिमियाआ-या संयुक्तावों में (जि, "ब० व०" जिमियाआ) गुठली, अस्थि। (Nut, stone.) स० फ़ा० इं०।

असिकम् asikam-सं० क्लो०
असिक asika-हिं० संज्ञा पु० } चिबुक और ओष्ठ का मध्यभाग। होंठ और ठुड्डी के बीच का भाग। हे० च०।

असिक्निः asiknih-सं० (१) गहरे कृष्ण रंग की गाय। (२) पृथ्वी। अथर्व०। सू० १३०। २। का० २०।

असिक्निका,-क्नी asikniká,-kní—सं० स्त्री० अवृद्धान्तः पुर पेषी, अन्तःपुर में रहनेवाली वह दासी जो वृद्धा न हो। मे० नत्रिक। दासी। जटा०।

असिगण्डः asigandah-सं० पु० युद्धोपाधान। जटा०।

असितः asitah-सं० पु०
असित asita-हिं० संज्ञा पु० } (१) धववृक्ष, धातकी। धायोला गाछ-बं०। (Woodfordia floribunda.) र० मा०। रत्ना०। -क्लो० (२) काष्ठ अगुरु। (A kind of Agar.) वै० निघ०। (३) पिंगला नाम की नाड़ी। (४) कालसर्प। अथर्व०। सू० ४। १३। का० १०। (५) एक प्रकार का सर्प। अथर्व०। सू० १३। ५। का० ५। -त्रि, (हिं० वि०) जो सफ़ेद न हो। कृष्ण वर्ण। काला। (Black.)

असितकम् asitakam-सं० क्लो० काष्ठागुरु।

(See-káshtháguru.) मा० म० ३ भा० आ० धा०।

वि० (हिं० वि०) जो सफेद न हो। कृष्ण वर्ण, काला। (Black.)

असितका asitaká-सं० स्त्री० कृष्ण अपराजिता। नील अपराजिता-बं०। काली गोकर्णी-मह०। वै० निघ०।

असितकादि चूर्णम् asitakádichúrnam -सं० क्ली० आमवातघ्न चूर्ण विशेष।

असिताङ्ग भैरवोरसः asitánga-bhairav-o-rasah-सं० पुं० पारा, गंधक, हरताल प्रत्येक समान भाग लेकर धतूरे के रस से भावित करें। फिर पारे के बराबर वत्सनाग लेकर उसके क्वाथ से ६ भावना दें; इसी तरह त्रिकुटा के क्वाथ और बिजौरे के रस की एक एक भावना दें।

मात्रा-१ रत्ती।

गुण-सन्निपात, जवज्वर, दुष्टविष, और विशेष कर धनुर्वात में अदरख के रस के साथ दें। रस० यो० सा०।

असितज फलः asitaja-phalah-सं० पुं० नारिकेल वृक्ष, नारियल। (Cocos nucifera.) वै० निघ०।

असित तिलः asita-tilah-सं० पुं० कृष्ण तिल, काला तिल। (Sesamum nigrum) च० द० अर्श-चि०।

असितद्रुमः asita-drumah-सं० पुं० कृष्ण ताल, काला ताड़। (Borassus flabelliformis.) प० निघ०।

असित पल्लवा asita-pallava-सं० स्त्री० भूमि जम्बु, भुई जामुन, भद्री जम्बू वृक्ष।

असितफलः asita-phalah-सं० पुं० मधु नारिकेल। (A kind of cocoanut tree.)

असितम् asitam-सं० क्ली० चा० सं० ११। ८६। सफ़ेदकोढ़। अथर्व०। सू० ३३। ४। का० १।

असितवल्ली asita-valli-सं० स्त्री० नीलदूर्वा, नीली दूब। (Cynodon dactylon.) वै० निघ०।

असित वेत्रम् asita-vetram-सं० क्ली० श्यामालता, कृष्ण सारिवा (Ichnocarpus frutescens.) वा० २० मधूकादि कषाय।

असित सारः,-कः asita-sárah,-kah-सं० पुं० तिन्दुक वृक्ष, तेंदू। (Diospyros cordifolia.) वै० निघ०।

असिता asitá-सं० स्त्री० (१) हस्वनीली वृक्ष। (A small var. of Indigo plant.) रा० नि० व० ४। देखो—असितका। (२) कालातिविषा, काली निशोथ। (Turpethum nigrum)-शि० कृष्ण वर्ण वाला, काले रंग का। अथर्व०।

असितांग asitánga-हिं० वि० [सं०] काले रंग का।

असिताञ्जनी asitánjani सं० स्त्री० कृष्ण कार्पास, काली कपास। (Gossypium nigrum.) रा० नि० व० ४। देखो-कालाञ्जनी

असिताननः asitánanah-सं० पुं० कपि, वानर। (A monkey.) हे० च०।

असिताबल मोटा asitábala-mota-सं० स्त्री० कृष्ण जयन्ती, काली जयन्ती। काल जयन्ती-बं०। Sesbania aculeata (The black var. of-).

गुण—कृष्ण जयन्ती रसायन को करने वाली है। इसके अन्य गुण जयन्ती के गुण के समान हैं। वै० निघ०।

असिताभ्रशेखरः asitábhra-shekharah-सं० पुं० नीली वृक्ष, नील। (Indigofera Indica) त्रिका०।

असितालया asitálaya-सं० स्त्री० (१) नीलदूर्वा, नीलीदूब (Cynodon dactylon.) (२) श्यामालता। (Ichnocarpus frutescens.) वै० निघ०।

असितालुः asitáluh-सं० पुं० नील आलू, नीले रंग का आलू। रा० नि० व० ७।

असितोत्पलम् asitotpalam-सं० क्ली० नीलो-त्पल। (Nymphæa stelata.) रा० नि० व० १०।

असितः asitah-सं० पु० शारवेय, बेहमर, बरमा।

असिदंष्ट्रः,-कः asidanshtrah,-kah-सं० पुं० म० र। (See-makarah) निघ०।

असिदन्तः asidantah-सं० पुं० (१) मकर। (See-makar.) (२) कुम्भीर, घड़ियाल। (The crocodile of the Ganges.) वै० निघ०।

असिद्धः asiddhah-सं० त्रि० } कच्चा, खाम,
असिद्ध asiddha-हिं० त्रि० } अपक्व,
कच्चा। दाला०।

असिधेनुः,-कः asidhenuh,-kah-सं०स्त्री० (A knife) छुरिका। (See-chhuriká) हला०। हिं० श०।

असिपत्रः asipatrah-सं० पुं० } (१)
असिपत्र asipatra-हिं० संज्ञा पुं० }
मेहुण्ड वृक्ष, थूहर। (Euphorbia nerifolia.) म० द० व० १। (२) इक्षु, ईख। Sugarcane (Saccharum officinarum.) प० मु०। निघ०। (३) गुण्ड तृण विशेष, कसेरु। (Scirpus kysoor) । See-Gundah। रा० नि० व० ८। (४) "क" श्वेत दर्भ। (See-shveta-darbhah.) रा० नि० व० १४।

असिपत्र तृणम् asipatra-trinam-सं० क्ली० गुण्डा तृण, तृण विशेष। गुण्डागवत -मह०। रा० नि० व० ८।

गुण—शीतल, मधुर, कफ वातनाशक, रक्त-दोष, अतिसार तथा परम दाहनाशक है। यह दीर्घ व लघु भेद से दो प्रकार का होता है। इसमें दीर्घ गुण में अधिक है। वै० निघ०।

असिपत्रिका asipatriká-सं० स्त्री० केवड़ा, केतकी। (Pandanus odoratissimus.)

असिपुच्छः,-कः asipuchchhah-सं० पुं० }
असिपुच्छ asipuchchha-हिं० संज्ञा पुं० }
(१) जलचर विशेष। मगर, शुशुक-बं०। (A kind of aquatic animal)। (२) सकुची मछली जो पूँछ से मारती है। हारा०।

असिप्ररोहः asiprarohah-सं० पुं० (Xiphoid process) असिप्ररोह। गुलुफ़् खञ्जरी-अ०।

असिम âasima -अ०।

असिमिना ट्रिलोबा asemina triloba-सं० पोपो के बीज। पापा सीड-इं०।

असिमेदः asimedah-सं० पु० खदिर वृक्ष, विट् खदिर, दुर्गन्ध खैर। गुयेबाबूला -बं०। बीज से स्राव-मह०। (Acacia Farnesiana, *Willd.*) मु० र०।

असिय्यु asiyyu-अ० विक्षिप्त, विक्षिप्त किया हुआ, वह मनुष्य जिसकी विक्षिप्ता की गई हो।

असिर âasira-अ० कठोर, कठिन होना, दुःसाध्य। डिफ़िकल्ट (Difficult.)-इं०।

असिरेकी asireki-सं० आमला। (Phyllanthus emblica.)

असिशिम्बी asishimbi-सं० स्त्रीलोबिया सेम, खड्गशिम्बी। रा नि०।

असी asi-फ़ा० सैगरी गोंद।

असीउर्राई âasiurráái-अ० लाल साग, राजगिरी, रामदाना।

असीतिका asitiká-सं० स्त्री० विष्णुक्रान्ता। कैय दे० नि०।

असीतिका asitiká-सं० स्त्री० कुकरौंधा। (Blumea lacera.)

असीद asida-अ० वक्र ग्रीव, टेढ़ी गर्दनवाला।

असीदह âasidah-अ० एक प्रकार का हलुआ।

असीनूब asinúba-फ़ा० एक अप्रसिद्ध वृक्ष है। (An unimportant tree.)

असीफ़ asifa-अ० जो तनिक सी बात में दुखी हो जाए, वात प्रकृति का। नर्वस (Nervous.) -इं०।

असीफ़रह âasifarah } -अ० एक पीत
असीफ़ीरह âasifirah } वस्तु है।

असीब âasiba-अ० खजूर भेद। (A kind of date)

असीम āasima–अ० (१) स्वेद, मैल कुचैल। (२) निशान, प्रमाद।

असीम और अर्क का भेद—स्वेद को अर्क और जब वह शुष्क होजाए तो उसे असीम कहते हैं।

असीर āasīra–अ० स्वरस, निचोड़, रस-हिं०। Juice (Succus.)

असीर कुप्पी āasira-kuppí–अ० कुप्पी स्वरस। (Succus acalyphæ.)

असीर तरञ्जील āasira-taranjila—अ०

असीर बञ्ज āasira-banja–अ० पारसीक यवानी स्वरस। (Succus hyocyami.)

असीर मिश्रदी āasira-miādi–अ० स्तवक मिश्रदी, आमाशयिक-रस, स्तुयत मेहा। Gastric juice.)

असीर यबरूज āasira- yabrújá–अ० बिलाडोना स्वरस। (Succus Belladonnæ.)

असीरलेमूँ āasira-lemún–अ० नींबू का रस, निम्बुक स्वरस। (Succus limonis.)

असीर शौकरान āasira-shúkarána–अ० शौकरान या कोनाइम स्वरस। (Succus conii.)

असीर सिन्नुल असद āasira-sinnul-asada–अ० जंगली कासनी का रस। (Succus taraxaci.)

असील āasila–अ० हस्ति शिश्न, हाथीका लिंग। (Elephant penis.)

असीली सक़ान āasili-saqána–फ़ा० पाषाणभेद। (Coleus aromaticus.)

असीस āsisa–अ० लगन, तसला, वह बर्तन जिसमें मद्य घोकर डालते हैं या जिसमें मद्य को बाँते हैं। (Tray.)

असुः asuh–सं० पुं०
असु asu–हिं० संज्ञा पुं० } (१) प्राण, प्राणवायु। (Life, breath, the five vital breaths or airs of the body.) अम०। –क्लीo (२) चित्त। (Mind.) जटा०।

असुखम् asukham–सं० क्लीo दुःख। (Pain, grief.) हे० च०।

असुद asuda–य० पीपल, अश्वत्थ। (Ficus religiosa.) फ़ा० इं० ३ भा०।

असुधारणम् asudháranam–सं० क्लीo जीवन, जीवन धारण।

असुन्धा asundhá–गु० असगंध, अश्वगंधा। (Withania somnifera.) इं० मे० मे०।

असुपाला asupálá–वम्ब०, गु० अशोक। (Saraca Indica, Linn.) फ़ा० इं० १ भा०।

असुरम् asuram–सं० क्लीo (१) सामुद्र लवण। (Sea-salt.) मद० व० १। –पुं० (२) ... वै०।

असुर asura हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१) रात्रि। (२) पृथिवी। (३) सूर्य। (४) बादल। (५) वैद्यक शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का उन्माद जिसमें पसीना नहीं होता और रोगी ब्राह्मण, गुरु, देवता आदि पर दोषारोपण किया करता है, उन्हें बुरा भला कहने से नहीं डरता, किसी वस्तु से उसकी तृप्ति नहीं होती और वह कुमार्ग में प्रवृत्त होता है।

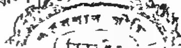
असुर asura–काश० राई, सर्षप। (Sinapis racemosa, Roxb.) इं० मे० प्लां०।

असुरः asurah–सं० पुं० "असुश्चैव स्वरति पालयति इति भूत असुरो वैद्यः" अर्थात् जो प्राणों की रक्षा करे। प्राणरक्षता। प्राणाचार्य। वैद्य। अथर्व०।

असुरग्रहः asura-grahah–सं० पुं० ग्रह विशेष। मा० नि०।

असुरसा asurasá–सं० स्त्री० वर्बरी, वन तुलसी बाबुई तुलसी–बं०। (Ocimum basilicum.) र० मा०।

असुरा asurá–सं० स्त्री० (१) रजनी, रात्रि, रात (Night.) (२) हरिद्रा। (Curcuma longa.) से० रत्नि०।



असुरादि अञ्जन asurádi-anjana–सं० पुं० । कांसा के मैल का चूर्ण और कस्तूरी मधुयुत कर अञ्जन करने से मस्तिष्क की बेहोशी और तन्द्रा दूर होती है ।

असुराह्वम्,-ह्वा asuráhvam,-hva–सं० क्ली०, स्त्री० कांस्य, कांसा । (Bronze.) हे० च० ।

असुराह्वपतङ्गः asuráhva-patangah–सं० पुं० तैलपायी, तैलपायिका । तेलापोका, चासोरा–बं० । "असुराह्व पतंगस्य विट्चूर्णं मधु संयुतम्" च० चक्रम् ।

असुराह्वविट् asuráhva-vit–सं० पुं० कांस्य मल, कांसे का मैल । च० द० विष० २ भा० ज्वर असुराद्यञ्जन ।

असुरी asuri–सं० स्त्री० राजिका, राई । राइ सरिषा-बं० । (Brassica juncea.) अ० टी० भ० ।

असुरु asuru-नैपा० तगर । (Tabernaemontana coronaria.)

असुव asuva-अ० मद्य प्रभृति पर मल्हम का फोहा रखना, मद्य की चिकित्सा करना ।

असुस्थः asusthah-सं० त्रि० } असुस्थ asustha हिं० त्रि० पुं० } रोग ग्रस्त, रोगी । (Sick.)

असुई asúi-हिं० स्त्री० अरुई । (Arum nymphaeifolium.) इं० हैं० गा० ।

असूतिका asútiká-वह गंडमाला जिसमें पीप न पैदा हुई हो । अथ० ।

असूपा कारक asúpá-kárak-सं० फीकी ।

असोई asoi-हिं० स्त्री० अरुई । (Arum nymphaeifolium) इं० हैं० गा० ।

असंकोचनीय asankochaniya-सं० पुं० जो दबने के योग्य न हो । जो न दबे । (Incompressible.) अथर्व० ।

असृक् asrik-सं० क्ली०, हिं० संज्ञा पुं० (१) स्पृक्का नामक गन्ध द्रव्य । See-sprikká. (२) कुंकुम, केशर । Saffron (Crocus sativus.) रा० नि० व० ११ । (३) रक्त । रुधिर । शोणित । (Blood.) रा० नि० व० १८ ।

असृक्करः asrikkarah-सं० पुं० शरीरस्थ रस धातु, रस । (Chyle.) हे० च० ।

असृक्पः,-पा asrikpah,-pá-सं० पुं०, स्त्री० जलायुका, जोंक । Leech (Hirudo.) अ० टी० भ० ।

असृगुत्थः asrigutthah–सं० पुं०, क्ली० केशर । saffron (Crocus sativus.)

असृग्गदः asriggadah-सं० पुं० कोष्ठ । (See-koshtham) वै० निघ० ।

असृग्दरः asrigdarah-सं० पुं० (Menorrhagia) रक्त प्रदर । मा० नि० । सु० शा० २ अ० । देखो-प्रदर ।

असृग्दर शैलेन्द्र रसः "सर्वाङ्ग सुन्दरः" asrigdara-shailendra-rasah- सं० पुं० रक्तप्रदरोक्त रस विशेष ।

असृग्ध (ग्धा) रा asrigdha"gdhá",-rá -सं० स्त्री० चर्म, त्वचा । (Skin) अ० टी० भ० ।

असृणम् asrinam–सं० क्ली० स्वर्णगैरिक, सोनागेरु-हिं० । सुवर्ण गिरि माटी बं० । Red ochre (Ferrum Haematite) मे० निघ० ।

असृतम् asritam --सं० त्रि० असिद्ध, अपक्व । रत्ना० ।

असृपाटी asripáti –सं० स्त्री० रक्त धारा । अ० टी० रा० ।

असोक asoka–कुटक, अशोक । (Saraca indica.)

असोन्दा asondá–हिं० तिक्रम, सान्दन ।

अ(ए)सेप्टोल aseptol -इं० कार्बोलिकाम्ल वा गंधकाम्ल (Sulpho-carbolic Acid) । देखो–कार्बोलिकाम्ल (Acidum Carbolicum).

असेप्रोल aseprol } –इं० यह धूम्र वर्ण का एक चूर्ण होता है
अबेस्टोल abiastol }

जो कि जल और मद्यसार में सरलतापूर्वक लय हो जाता है। देखो—नेपथाल।

असेरेकी aserekí-ते० आमला। (Phyllanthus Emblica.)

असेलू aselú-नेपा० गोम्री। मेमो०।

असैङ् asain-बर० सँसि, सेंसि। हरित, हरा। (Green.) से० फा० इं०।

असोक asoka-हिं०, बम्ब०, ते० (१) देवदारी। मेमो०। -हिं० संज्ञा पुं०, कना० (२) अशोक, आसापाल (Jonesia asoca, Linn.)। (३) शांति,शोकरहितता। (Ease tranquility.)

असोका asoká-हिं० अशोक। (Saraca indica, Linn.)

असोकदा asokadá-कना० अशोक। (Saraca Indica, Linn.) इं० मे० मे०।

असोग asoga-हिं० पुं० (१) A tree (Uvaria longifolia) । (२) शांति, शोकरहितता। (Ease, Tranquility.)

असोज asoja-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अश्वयुज्] आश्विन। क्वार। (The sixth solar month.)

असोत्थापिकापेशी asotthápikápeshí-हिं० संज्ञा स्त्री० (Levater Scapulæ.) कंधे को उठाने वाली पेशी।

असोथी asothí-ता० अशोक। (Saraca indica, Linn.) मेमो०।

असौंध asoundha-हिं० संज्ञा पुं० [अ=नहीं हिं० सौंध=सुगंध] दुर्गन्धि। बदबू।

असोरा asorá-बालछड़। (Nardostachys Jatamansi.)

असआस āasaās }
असआस āasaās } -अ० भेड़िया। (A wolf)
असास āasás }

असईरा asaírá-बिन्दाल, बंदाल, देवदाली। (Ecbellium, elatarium.)

अस् क़ुङ्कुर asqanqúr-अ० देखो—सक़ङ्कुर।

अस्कतान áskatán-अस्कतुल्फ़र्ज-अ० (१) अस्कतान। गर्भाशय की दोनों ओर। (२) इस्कतान अर्थात भग के दोनों किनारे या भग की दोनों ओर।

अस्कनह् askanah-अ० मि० स,रुव, बरमा, सलानी, छिद्र करने का यंत्र। गिमलेट Gimlet-इं०।

अस्क़न्न asqanna-मद्य, सुरा। (Wine.)

अस्कन्द्रूस askandrús-रू० (१) प्याज़ (Onion) (२)। लहसुन। (Garlic.)

अस्क़लिया तीक़ूस asqaliyátíqus-यू० गुलनार (Punica granatum, Linn.)

अस्क़लानुर्रास āasqalánurrás-अ० मधु-साप सर, चँदिया।

अस्क़लीनूस āasqalínús-अ० एक प्रसिद्ध बूटी है जो रेतीली और पर्वतीय भूमि पर उगती है।

अस्क़लीब्यूस asqalí-byús-यू० (Asclepios) यह चिकित्सा कलाका आविष्कर्ता एवं सर्व प्रथम प्रसिद्ध निपुण यूनानी चिकित्सक है।

अस्कामतगम् áskámtagam-ता० अजमोद (Carum Roxburghianum, Benth.) मेमो०।

अस्कुट askuta-लेद्रक फलक, संगची-चनाब०। राइबीज़ ओरियण्टेली (Ribes orientale, Pir.), रा० वाइलोसम (R. Villosum, Wall, Roxb.)-ले०। स्वारवाव, कधक, कधन-उ० प० सू०। यंगे (तिब्बत०)। (N. O. saxifrageæ.)

उत्पत्ति-स्थान—काश्मीर, बलिस्तान।

प्रभाव तथा उपयोग—इसका फल (Berry) एक या दो की संख्या में एक समय खाने से ग्रामीण लोगों के विचारानुसार यह उत्तम विरेचक है। इं० मे० प्लां०।

अस्क़ुल āasqul }
असाक़ुल āasáqul } -अ० कुमात, खुम्बी। (Agaric)

अस्क़ुलह् āasqulah-अ० सफ़ेद संगरेज़ा।

अस्खार askhár–रू० तोदरी। (Lepidium iberis, *Linn.*)

अस्जद aasjad–अ० सुवर्ण, सोना। Gold (Aurum.)

अस्टिलेगा मैडिस ustilago-maidis, *Lev-eille.*)–लै०। कॉर्न स्मट (Corn smut), कॉर्न अर्गट (Corn Ergot)–इं०। बन्ध्या मकाई, भुट्टा का कण्डो (त्नोद) –हिं०।

उत्पत्ति-स्थान—भुट्टा (Zea mays) का पराश्रयी कीटाणु।

प्रयोगांश—तुषरहित फड्गस।

रासायनिक-संगठन तथा लक्षण-ये विषम गोलाकार समूह रूप में जो कभी कभी छः इंच मोटे होते हैं, पाए जाते हैं। इन पर एक स्याही मायल भिल्ली होती है, जिसके भीतर असंख्य, श्याम धूसर वर्ण के गोलाकार लघु प्रचिवन दाने (बीज) होते हैं।

गंध तथा स्वाद–अप्रिय। इसमें एक उड़नशील चार, एक स्थायी तैल और एक स्क्रीरोटिकाम्लवत् ऐन्द्रियकाम्ल इत्यादि होते हैं।

औषध-निर्माण—विचूर्णित कॉर्न अर्गट-१० से २० ग्रेन (=५–१० रत्ती); तरल सत्व—१० से २० मिनिम (बूँद)।

प्रयोग - अर्गट ऑफ राई के समान औषधीय गुण-धर्म में, जिसके यह बहुत समान है तथा जिसे बहुत से चिकित्सक तत्तुल्य लाभदायक और अर्गट ऑफ़ राई की अपेक्षा अपने प्रभाव में अधिकतर अनुरूप मानते हैं, यह उत्तम गर्भपातक एवं रक्तस्थापक गुणपूर्ण है। इसके द्वारा उत्पन्न गर्भाशयिक आकुंचन सदा विरामसहित होता है तथा अर्गट के समान लगातार वा वल्य नहीं होता। पैसिव रक्तस्राव में अर्गट को अपेक्षा यह श्रेष्ठतर प्रयाल किया जाता है और शुक्रमेह, विचर्चिका (Psoriasis), आर्द्रकंडु (Eczema), तन्तुमय अर्बुद और तत्तुल्य व्याधियों में भी यह लाभदायक विचार किया जाता है। पो० वी० एम०।

अस्तम् astam–सं० क्ली०
अस्त asta–हिं० संज्ञा पु०
मृत्यु। (Death.) इं० च०।–वि० वि० नष्ट। ध्वस्त।

अस्तन astan–हिं० संज्ञा पु० दे० स्तन।

अस्तबल astabal–हिं० संज्ञा पु० [अ०] घुड़साल। तबेला। (A stable.)

अस्तबूब astabúb–फ़ा० एक वृक्ष है।

अस्तमती astamati–सं० स्त्री० शालपर्णी। (Hedysarum gangeticum.) श० र०।

अस्तमन वेला astaman-belá–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] सायंकाल। सन्ध्या का समय।

अस्तमित astamit–हिं० वि० [सं०] (१) नष्ट। मृत। (२) तिरोहित। छिपा हुआ।

अस्तर astar–हिं० संज्ञा पु० [फा०। सं० स्तृ=आच्छादन, तह] (१) नीचे की तह वा पल्ला। भितल्ला। उपल्ले के नीचे का पल्ला।

अस्तर astar–फ़ा० खच्चर। (A mule.)

अस्तुरक astarak–फ़ा० सिलारस। (Common storax)–इं०। इं० हैं० गा०।

अस्तरखा astarkhá–साल हड़ताल (मैनसिल वा मनःशिला)। (Realgar.)

अस्तरङ्ग astaranga–फ़ा०
अस्तरज astaraj–मुश्र०
यब्रूज, बिलाडोना। Belladona (Mandragora officinalis.) इं० हैं० गा०।

अस्तरा astará–हिं० पु० आप्टा। See-áptá।

अस्तराई astaráí–तु० गोलमिर्च। (Black pepper.)

अस्तरून astarun–अ० गुलाब भेद, गुलेनस्रीन। (Rosa rubiginosa) इं० हैं० गा०।

अस्तलस astalas–यू० क़फ़रुल् यहूद। (A kind of stone.)

अस्तलोबान astalobán–हिं० संज्ञा पु०

सिलारस। (Western frankincense) म० श० । फा० इं० १ भा०।

अस्ताकीस astákis-फ़ा० एक बालिश्त के बराबर (ऊँची) एक अप्रसिद्ध बूटी है।

अस्ताले सुर्ब astále surba-फ़ा० सीसक शर्करा, सीसक लवण-हिं० । ख़लातुर्रसास्-अ०। (Plumbi acetas.)

अस्ताफ़ायस astáfáyas अस्तून astúna	-यु० गाजर,गज़्र। The carrot

(Daucus carrota.)

अस्ताफ़ालियूस astáfálıyús-यू० जंगली गाजर। (Wild carrot.)

अस्ताफ़ियूस astáfıyús-यू० (१) मवेज़, द्राक्षा, मुनक्का। Uvæ, Syn. Uvæ passæ (Raisins.)

अस्ताफ़ियूस अग़्रिया astáfıyús-aghıiyá -यू० पहाड़ी मवेज़, पर्वतीय द्राक्षा। (Wild raisins).

अस्ताम astám-फ़ौलाद। (Steel)

अस्ति asti-सं०, पं०, मल० अस्थि, हड्डी। Bones (Ossa) स० फा० इं०।

अस्तीकरि asti-kari-मल० अस्थि अंगार, हड्डी का कोयला। (Animal charcoal.) स० फा० इं०।

अस्तूम astúma-फ़ा० नरसल, सूम। (Bullrush.) इ० हैं० गा०।

अस्तूस áastúsa-अ० वृक्षभेद। (A sort of tree.)

अस्त्रम् astram-सं० क्ली० अस्त्र astıa हिं० संज्ञा पु०	(१) आयुध,

शस्त्र, हथियार। चाप, धनुष (A weapon in general; A missile weapon.) (२) करवाल। ढाल। मे० रद्विक। (३) व्याघ्र नख (The tiger's nail.) । (४) वह हथियार जिससे चिकित्सक चीर, फाड़ करते हैं।

अस्त्र चिकित्सकः astra-chikitsakah-सं० पु० अस्त्रवैद्य, शस्त्र वैद्य, अस्त्र द्वारा रोग दूर करनेवाला, जर्राह, मलहम पट्टी करनेवाला। सर्जन (Surgeon.)-इं०। सु०।

अस्त्र चिकित्सा astra-chikitsá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (१) वैद्यक शास्त्र का वह अंग जिसमें चीर फाड़ का विधान है। सर्जरी (Surgery.)-इं०। इल्मुल् जराहत, फ़न्ने जर्राही -अ०।

(२) चीर फाड़ करना। अस्त्र प्रयोग। अस्त्र द्वारा व्रण क्षत आदि की चिकित्सा करना। जर्राही। इसके आठ भेद हैं:—(क) छेदन=नश्तर लगाना। (ख) भेदन=फाड़ना। (ग) लेखन=खरोंचना, छीलना। (घ) वेधन=सूई की नोक से छेद करना। (च) मैषण=धोना, साफ़ करना। (छ) आहरण=काट कर अलग करना। (ज) विस्रावण=नश्तर खोलना। (झ) सीना=सीना या टाँका लगाना। सु०।

अस्त्राजित् astrajıt-सं० पु० कवाटवक्र वृक्ष। कवाट वेढु, कराड़िया-हिं०। रत्ना०। See-kaváṭa-vakram.

अस्त्रवेद astraveda-हिं० संज्ञा पु० [सं०] वह वेद जिसमें अस्त्र बनाने और प्रयोग करने का विधान हो। धनुर्वेद।

अस्त्र वैद्यः astra.vaidyah-सं० पु० अस्त्र चिकित्सक। (A surgeon.) वै० निघ०।

अस्त्रशाला astra-shálá अस्त्रागार astrágára	-हिं० संज्ञा पु०

[सं०] वह स्थान जहाँ अस्त्र शस्त्र इकट्ठे रक्खे जाएँ।

अस्त्रसम् astıasam-सं० क्ली० एक धातु तत्व विशेष। (Strontium.)

अस्त्राघातः astrághátah-सं० पु० अस्त्र प्रयोग, अस्त्र चलाना, हथियारसे चोट पहुँचाना। वै० निघ०।

अस्थायी astháyi-हिं० वि० [सं] अस्थिर, नाशवान। (Temporary.)

अस्थायी दाँत astháyi-dánta-हिं० पु० (Decidus or milk-teeth.) पतनशील या दुग्ध दन्त। अस्नानुल्लबन-अ०।

अस्थावर asthávara–हिं० वि० चर, चल। (Moveable, moving.)
संज्ञा पुं० जंगम। जो स्थावर न हो अर्थात् चर वा चलने फिरने वाले प्राणी यथा मनुष्य, पशु, पक्षी आदि।

अस्थि,-कम् asthi,-kam–सं० क्लीं०
अस्थि asthi–हिं० संज्ञा स्त्री०
हड्डी, धातु (तन्तु) विशेष। Bone (Os) अज़्म–अ०। पूर्ण विवेचन हेतु देखो–हड्डी।

अस्थिकर्कटिका asthi-karkkatiká–सं० स्त्री० एक वृक्ष विशेष।

अस्थिका asthiká–सं० स्त्री० लघु अस्थि।

अस्थिकृत् asthi-krit–सं० पुं० वह जिससे अस्थि बने, अस्थिका बनाने वाला, मेद धातु, रस रक्तादि सात धातुओं में से चतुर्थ धातु विशेष। (Adeps.) इं० च० । त्रि० अस्थि का (बना)

अस्थिकृत् आन्तःस्थ कर्ण asthi-krit-antahstha karna–हिं० संज्ञा पुं० (Osseous lebyrinth.) अस्थिमय गहनम्।

अस्थिगत ज्वरः asthi-gata-jvarah–सं० पुं० तदाश्रित ज्वर, हड्डी में रहने वाला ज्वर, अस्थि के आश्रय से रहने वाला ज्वर।

लक्षण–अस्थिभेद, कूजन अर्थात् घुरघुर शब्द का होना, श्वास, अतिसार, वमन तथा शरीर का इधर उधर पटकना ये लक्षण अस्थिगत ज्वर में देख पड़ते हैं। वै० निघ०।

चिकित्सा–वमननाशक औषध, वस्तिकर्म, अभ्यंग और उद्वर्तन आदि द्वारा इसका प्रतीकार करें।

अस्थिग्रंथिः asthi-granthih–सं० पुं०, स्त्री० ग्रन्थिरोग।

अस्थिच्छलितम् asthi-chchhalitam–सं० क्लीं० उस नाम का कांडभग्न (बीच से अस्थि-भग्न) अस्थि विशेष। यदि अस्थि एक तरफ नीची हो जाए और दूसरा टूटा हुआ भाग ऊँचा हो तो उसे "अस्थिच्छलित" कहते हैं। सु० नि० १५ अ०। देखो-भग्नम्।

अस्थिजः asthijah–सं० पुं० मज्जा। (Bone marrow.) रा० नि० व० १८।

अस्थिजननी asthi-janani–सं० स्त्री० वसा, मेद धातु। (Adeps.) वै० निघ०।

अस्थितिस्थापक asthitisthápaka–हिं० वि० (Inelastic.) जो स्थितिस्थापक न हो। जो लचीला न हो।

अस्थितुण्डः asthi-tundah–सं० पुं० एक पक्षी विशेष। (A bird.) श० मा०।

अस्थितोदः asthi-todah–सं० पुं० (Ostalgia.) अस्थि पीड़ा, अस्थि में सूची भेदनवत् पीड़ा होना। हड्फूटन, हड्डी का दर्द। वै० निघ०। अलमुल् अज़्म–अ०।

अस्थिधरकला asthidhara-kalá
अस्थिधरा asthi-dhará
–सं० स्त्री० अस्थ्यावरक। (Periosteum.) सिमहाक़, ज़रीह, ग़िलाफ़ अज़्मी–अ०।

अस्थिधातुः asthi-dhátuh–सं० अस्थि तन्तु (Osseous tissue.) नस्ज अज़्मी–अ०। देखो–हड्डी।

अस्थिपञ्जरः asthi-panjirah–सं० पुं० कङ्काल, ठठरी, ढाँचा। स्केलेटन (Skeleton)–इं०। रा० नि० व० १८।

अस्थिफलः asthi-phalah–सं० पुं०, पनस वृक्ष, कटहल। (Artocarpus integrifolia.)–इं०।

अस्थिभङ्गः asthi bhangah–सं० पुं०, क्लीं० (१) अस्थि विश्लेष, हड्डीका टूट जाना। इन्किसारुल्अज़्म, कस्र–अ०। (Fracture.)। कांडभग्न तथा सन्धिमुक्ति (संधिच्युति, संधि भ्रंश) भेद से यह दो प्रकार का होता है। पुनः संधिमुक्त के ६ तथा कांडभग्न के १२ भेद होते हैं। सु० नि० ३ अ०। विस्तार के लिए उन उन पर्यायों के आगे देखें। देखो–भग्नम्।
(२) अस्थिसंहार, हड़जोड़ी। (Vitis quadrangularis.)

अस्थिभञ्जक asthi-bhanjaka–हिं० संज्ञा पुं० (Osteoclast.) अस्थिभंजक।

अस्थिभक्षः asthi-bhakshah—सं० पुं० (१) कुक्कुर, कुत्ता (A dog.) । (२) शृगाल । (A jackal) हारा० ।

अस्थि भक्षा asthi-bhakshá-सं० स्त्री० पर्ण-बीज, श्रोषधि विशेष, हेमसागर । घायमारी, घायपात-महा० ज़ख़्मे हयात-फ़ा० ।(Kalanchœ laciniata, *D. C.*) वै० निघ० । देखो-ज़ख़्मे हयात ।

अस्थिभेद asthi-bheda-हिं० संज्ञा पुं० अस्थि भंग हड्डी का टूटना (Fracturing, breaking or wounding a bone.)

अस्थिमज्जा asthi-majjá-हिं० स्त्री० (Bone-marrow.) अस्थिसार । देखो-मज्जा ।

अस्थिमय गहनम् asthimaya-gahanam -सं० क्लीं० अस्थिकृत अन्तःस्थ कर्ण । (Osseous labyrinth.)

अस्थि मर्म asthi-marmma-सं० क्लीं० मर्म विशेष । ये संख्या में आठ हैं । यथा—कटि में तरुण नामक २, नितम्ब में २, अंसफलक में २ तथा दो शंखों शंखे (कनपुटियों) में हैं । सु० शा० ६ अ० ।

अस्थिर asthira-हिं० वि० इसका शाब्दिक अर्थ चंचल, अस्थायी (Unsteady, Unstable.) है, किन्तु वैद्यक की परिभाषा में इससे अभिप्राय उस संधि से है जिसमें गति हो सकती है अर्थात् चल या चेष्टावंत संधि । (Moveable-joints.) देखो—संधि ।

अस्थिर कठोरता asthira-kaṭhoratá-हिं० संज्ञा पुं०(Temporary hardness.) क्षणिक कठिनता । अस्थायी-कठोरता ।

अस्थिर वृक्क asthira-vrikka-हिं० संज्ञा पुं० (Moveable kidney) गतिमान वृक्क विशेष ।

अस्थिवत् asthivat-हिं० वि० अस्थि के समान, हड्डी जैसा । (Bony, osseous.)

अस्थिवल्क asthi-valka-हिं०संज्ञा पुं०(Cortex of bone.) अस्थि का सबसे बाहर का (पृष्ठ के नीचे का) भाग । यह बहुत ठोस, कड़ा और मज़बूत होता है । इसको ही अस्थित्वक् कहते हैं ।

अस्थिविकाश asthi-vikásha-हिं० संज्ञा पुं० (Ossification.) अस्थि बनना । तअज़्ज़ुम -अ० ।

अस्थि विकाश केन्द्र asthi-vikásha-kendra-हिं० संज्ञा पुं० सेण्टर ऑफ़ ऑसिफ़िकेशन (Centre of ossification.) इं० । मर्कज़ तअज़्ज़ुमियत -अ० । वह स्थान जहाँ कार्टिलेज (कुरी) के भीतर सबसे पहले अस्थि बनती है, अस्थिविकाश केन्द्र कहलाता है ।

अस्थिवेष्ट asthi-veshṭa-हिं० संज्ञा पुं० अवस्थ्यावरक, अस्थियों के ऊपर सौत्रिक तन्तु से निर्मित चढ़ी हुई एक झिल्ली विशेष । (Periosteum) *ग़िशाउल्अज़्म-अ०* ।

अस्थिशोथ asthishotha-हिं० संज्ञा पुं० अस्थिप्रदाह । (Osteitis)

अस्थिशोष asthi-shosha-हिं० संज्ञा पुं० शोष रोग, सूखा रोग, अस्थि वैवर्ण्य । (Dryness & decay of the bones; rickets.)

अस्थिशृङ्खला,-लिका asthi shrinkhalá,-liká-सं० स्त्री० अस्थिसंहार । हड़जोड़, अस्थिशृङ्खल-हिं० । हाड़जोड़ा-बं० । गुण-रूक्ष, श्लेष्मानाशक, मधुर, रक्तपित्त और वायुनाशक है । मद० व० ७१ ।

अस्थिसङ्घातः asthi-sanghátah-सं० पुं० अस्थिमेलन स्थल, हड्डी के *जमावड़े* । ये १४ इस प्रकार हैं, यथा तीन-तीन एक-एक पाँव में (एक गुल्फ, एक घुटना तथा एक जंघामूल में) हैं और ३-३ एक एक हाथ में (१ पहुँचे, १ कुहनी और १ खोवे में) अर्थात् कुल १२ हुए । एक त्रिक स्थान में और एक सिर में ऐसे सब १४ हुए (किसी किसीके मत से ये अस्थिसंघात १८ होते हैं अर्थात् १४ पाककथित और १ वह जिसे कौड़ी कहते हैं तथा १ दोनों नितम्बों के बीचमें जिसे दुमची कहते हैं और दो दोनों अंसकूटों [illegible]

पर इस प्रकार कुल १८ हुए)। सु० शा० ५ अ०। देखो—सन्धिः।

अस्थि सन्धानकरः asthi-sandhána-karah-सं०पुं० रसोन लशुन, लसून। Garlic (Allium sativum.) ग्रै० निघ०।

अस्थिसन्धान जननी asthi-sandhána-janani-सं० स्त्री० अस्थिसंहार। हड़ जोड़-हिं०। (Vitis quadrangularis.) वै० निघ०।

अस्थि सन्धिः asthi-sandhih-सं० पुं० (१) अस्थि सम्मेलन स्थान, हड्डियों का जोड़ (Articulation, joint.)। (२) मर्म स्थान। देखो—संधिः।

अस्थि समुद्भवः asthi-samudbhavah-सं० पुं० मज्जा। (Bone-marrow.) वै० निघ०।

अस्थिसंधि शोथ asthi-sandhi-shotha-हिं० संज्ञा पुं० (Osteo-arthritis.) सन्धिस्थ अस्थिप्रदाह।

अस्थि सन्धिकः asthi-sandhikah-सं० पुं० अस्थिसंहार, हड़ जोड़। (Vitis quadrangularis.) भैष०।

अस्थिसम्बन्धनः asthi-sambandhanah-सं० पुं० राल, धूप। धुनो-बं०। (Resin) वै० निघ०।

अस्थि सम्भवः asthi-sambhavah-सं० पुं०, क्ली० (१) मज्जा (Bone-marrow.)। (२) शुक्र धातु। (Semen virile.) वै० निघ०।

अस्थि सम्भव स्नेहः asthi-sambhava-snehah }

अस्थिसारः asthi-sárah } सं० पुं० मज्जा। (Bone-marrow.) वै० निघ०।

अस्थि सस्थान asthi-sansthán-हिं० पुं० हड्डियाँ, अस्थि समुच्चय, अस्थिविभाग। (Osteology, skeletal system.) मब्हू सुल्ब, इज़ाम-अ०। चिकित्साशास्त्र का वह भाग जिसमें अस्थियों का वर्णन किया जाए।

अस्थि संहतिः asthi-sanhatih-सं० पुं० अस्थिसंहार। (Vitis quadrangularis.) मद० व० ७।

अस्थि संहारः,-कः asthi-sanhárah,-kah-सं० पुं० (१) हस्तिशुण्डि, हाथासुण्डी, हाती शुँडे-बं०। (Heliotropium indicum, Linn.)

(२) हाड़ जोड़ (ड़ा), हड़जोड़ा, हर (ड़)मुरी, हड़ संहारी, हड़जोड़ी, हरमहारि, हड़जुड़ी, नल्लेर-हिं०। नल्लेर-द०। वज्रवल्ली, ग्रन्थिमान्, कुलिशं, अमरः (र०), शिराकः (रा.) अस्थि संहारी, वज्राङ्गी, अस्थि श्रृङ्खला-सं० हड़ जोड़ा, हाड़िफ, होड़जोड़ा, हाड़भांगा-बं० वाइटिस क्वाड्रैङ्गुलेरिस, (Vitis quadrangularis, Wall.), सिस्सस क्वाड्रैङ्गुलेरिस Cissus quadrangularis-ले० विग्नी एट रेजिन्स डी गैलम Vigne et Raisins de Galam-फ्रां०। कांडिप्पेरुण्डेइ-कांडिए, पिरण्डै-ता०। नल्लेरु-तीगे तुल्लेरुतिगइ, नाल्लेई-ते०। वेरण्डा, पिरण्ट इम्मगइगात्तम परेण्ड --मल०। मङ्गारुबल्लि-कना०। चौधारि सरधारी, हाडमांकल, हाडमांकिला, हड़सङ्कर-गु०। शाहाब्न-लेम्‌-बर० हिरेस्म-सिं०, सिहली। चोधारी, त्रिधारी, कांडवेल, हाड़सधी-मह०। हाड़ सांखल-दे०। त्रिधारी कांडवेल, हाड़जोड़ा-कों०। हड़ संकर, हाड़जोड़ा नल्लर, कांडवेल, चोधारी-बम्ब०।

द्राक्षावर्ग

(N. O. Ampelideæ.)

उत्पत्तिस्थान—भारतवर्षके उष्ण प्रधान प्रदेश पश्चिम हिमवती मूल से (जैसे कुमायूँ) लंका और मलक्का द्वीप पर्यन्त तथा अरब। दक्षिण भारत के जंगलों में यह अधिकता के साथ होता है।

वानस्पतिक-वर्णन—अस्थिसंहार वृक्षारूढ़ या भूलुण्ठित होता है जिसमें सूत्रवत् मूल होते हैं। काण्ड (नवीन) गम्भीर वा पांडु हरिद्वर्ण, मसृण, श्रृङ्खल वा मालाकार, चतुष्कोण, क्वचित्

त्रिकोण, पत्राकार और सन्धियुक्त, होते हैं। प्रत्येक जोड़ विभिन्न लम्बाईका (२ से ४ इंच) होता है। यदि कांड से एक ग्रंथि काटकर मृत्तिका से ढाँक दी जाए तो उससे एक सुदीर्घ लता उत्पन्न हो जाती है। इसीलिए इसका एक नाम काण्ड-वल्ली है।

(Stipule) चन्द्राकार, अखंड; पत्र अत्यंत स्थूल एवं मांसल, विषमवर्ती, साधारणतः त्रिखंडयुक्त, हृदयाकार, (Serrulated); वृन्त ह्रस्व; फूल छत्राकार, लघु वृन्तक, श्वेत व ह्रस्व; पराग केशर ४; दल ४, प्रशस्त; फल मटरवत् वर्तुलाकार, अत्यन्त* चरपरा वा कटुक (यह उसमें पाए जानेवाले एक प्रकार के अम्ल के कारण होता है), एक कोष युक्त, एक बीज-युक्त; बीज एकान्तिक, अर्धांडाकार एक कृष्णधूसर स्पञ्जवत कोष से आवृत्त होता है; पुष्प ह्रस्व, श्वेत और वर्षा के अंत में प्रगट होते हैं।

नोट—* इसके कांड में भी यही स्वाद होता है। इसकी एक द्राक्षा की अन्य जाति के पौधे की उक्त चरपराहट खटिक काज्वेत (Calcium oxalate.) के सूच्याकार स्फटिकों की विद्यमानता के कारण होती है। पौधे के शुष्क होने पर ये स्फटिक टूट जाते हैं एवं जल में क्वथित करने से वे दूर हो जाते हैं।

प्रयोगांश—सर्वांग (काण्ड, पत्र आदि)।
मात्रा—शुष्क चूर्ण, १८ रत्ती वा २ मा०।
प्रतिनिधि—पिपरमिण्ट और कृष्णजीरक।

अस्थिसंहार के गुणधर्म तथा उपयोग

आयुर्वेदीय मत से—

वात कफ नाशक, टूटी हड्डी का जोड़नेवाला, गरम, दस्तावर, कृमिनाशक, बवासीरनाशक, नेत्रों को हितकारी, रूक्ष, स्वादु, हलका, बल-कारी, पाचक और पित्तकर्त्ता है। भा० पू० १ भा०।

शीतल, वृष्य, वातनाशक और हड्डी को जोड़ने वाला है। मद० व० १।

वज्रवल्ली (हड़जोड़) दस्तावर, रूक्ष, स्वादु (मधुर), उष्णवीर्य, पाक में खट्टा, दीपन, वृष्य एवं बलप्रद है तथा क्रिमि और बवासीर को नष्ट करता है। अर्श में विशेष रूप से हितकारक और अग्निदीपक है। चतुर्धारा कांडवल्ली (चौधारा हड़जोड़) अत्यंत उष्ण और भूत बाधा तथा शूल नाशक है एवं आध्मान, वात, तिमिर, वातरक्त, अपस्मार और वायु के रोगों को नष्ट करती है। (वृहन्निघण्टुरत्नाकर)

अस्थिसंहार के वैद्यक व्यवहार

चक्रदत्त-भग्नरोग में अस्थिसंहार—सन्धियुक्त अस्थिभग्न में अस्थिसंहार के कांड को पीसकर गोघृत तथा दुग्ध के साथ पान करें। यथा—"मधूकेनास्थिसंहारं। संधियुक्तेऽस्थिभग्ने च पिबेत् क्षीरेण मानवः" । (भग्न-चि०)

भग्न प्रकाश—वायु प्रशमनार्थ अस्थिसंहार मज्जा—अस्थिसंहार के डांटा की छालको छीलकर उस लकड़ी का चूर्ण १ मा० तथा छिलकारहित किसी कलाय की दाल (वातहर होने के कारण माष कलाय अर्थात् उड़द उत्तम है) आध मासे ले दोनों को मिला पर बारीक पीसकर तिलके तैल में इसकी मगौरी बनाकर खाएँ। ये मगौरी अत्यंत वात नाशक हैं। यथा—

"कांडं त्वग्विरहितमस्थिश्रृङ्खलायामाषाढ्यं द्विदलमकुष्ठकं तदर्द्धम्। सम्पिष्टं तदनु ततस्तिलस्य तैले सम्पक्वं वटकमतीव वातहारि॥" भा०। च० द० अ० पि०, अग्न शुद्धी।

वक्तव्य

चरक, राजनिघण्टु तथा धन्वन्तरीयनिघण्टु में अस्थिसंहार का नामोल्लेख दृष्टिगोचर नहीं होता है। सुश्रुतोक्त भग्नरोग चिकित्सा में अस्थिसंहार का पाठ नहीं है। चक्रदत्तके समान वृन्द ने भग्नाधिकार में इसका व्यवहार किया है। राजवल्लभ लिखते हैं—

"अस्थिभग्नेऽस्थिसंहारो हितो बल्योऽनिलापहः।"

अर्थात् हड्डियों के टूट जाने में अस्थिसंहार हितकर है एवं यह बल्य और वातनाशक है।

यूनानी मतानुसार—

प्रकृति—उष्ण व रूक्ष। स्वरूप—नवीन हरा और शुष्क भूरा। स्वाद—विकठा व किंचित तिक्त एवं कषाय।

हानिकर्ता—उष्ण प्रकृति को। दर्पघ्न—घृत।
प्रतिनिधि—जोंक की पित्ती।
प्रधान धर्म—सबल भग्नास्थिसन्धानकर।
मात्रा—२ मा०।

गुण, कर्म, प्रयोग—प्राचीन यूनानी ग्रंथों में इसजोड़का उल्लेख नहीं पाया जाता। अर्वाचीन लेखकों ने अपने ग्रंथों में जो इसके संक्षेप वर्णन दिए हैं वे केवल आयुर्वेदीय वर्णन की प्रति लिपि मात्र हैं। वनस्पति विषयक कतिपय उर्दू ग्रंथों में लिखा है कि "प्रायः गुणों में यह गुडूची के समान है।" परन्तु यह परीक्षणीय है। इससे पारद की भस्म बनती है। बु० मु०। म० मु०।

नव्यमत

मोहीदीन शरीफ—इन्द्रिय व्यापारिक कार्य—आमाशय बलप्रद (पाचक) तथा परिवर्तक (रसायन)। उपयोग—अजीर्ण में इसका लाभदायक प्रयोग होता है।

औषध-निर्माण—मुरब्बा—नवीन तथा कोमल कांड के छोटे छोटे टुकड़े करें और प्रत्येक टुकड़े को कोंचनी से कोंच डालें (जिस प्रकार आमला का मुरब्बा बनाते समय आमलोंको एक विशेषयंत्र द्वारा कोंचते अर्थात् उसकी चारों ओर गम्भीर छिद्र कर डालते हैं)। पुनः उन टुकड़ों को जलमें कोमल होने तक क्वथित करें। इसके बाद पानी को फेंक दें और टुकड़ों को हलके हाथों से निचोड़ लें। फिर उनको चूर्णोदक वा १ ड्राम (३॥ मा०) से ४ आउन्स पर्यन्त कार्बोनेट ऑफ सोडा विलीन किए हुए जल में क्वथित करें और पूर्ववत् तरल को फेंक दें। इस क्रम को दो तीन बार और काम में लाएँ अथवा इस क्रम को तब तक दोहराते रहें जब तक कि वे किसी प्रकारकी चरपराहटसे शून्य एवं कोमल न होजाएँ। तदनन्तर उनको स्वच्छ उष्ण जल से धोकर और कपड़े से पोंछ कर शर्करा के साधारण शर्बत में डालकर सुरक्षित रक्खें। सप्ताह पश्चात् यह प्रयोग में लाने योग्य हो जाएगा।

मात्रा—२ से ४ ड्राम तक २४ घंटे में २ या ३ बार। डॉक्टर महोदय लिखते हैं कि इस ग्रंथ में उक्त पौधे के वर्णन देने का कारण यह है कि त्रिप्लिकेनमें एक आदमी जोकि चिरकारी एवं हठीले (Obstinate) अजीर्ण से चिरकाल से पीड़ित था ४० दिवस तक उक्त मुरब्बाके सेवन के पश्चात् वह बिलकुल रोग मुक्त होगया। (मे० मे० मै०)

डीमक—इसके ताजे पत्र एवं कांड का कभी कभी शाक रूप में व्यवहार होता है। पुरातन होने पर ये चरपरे हो जाते हैं तब इनमें औषधीय-गुण धर्म होने का निश्चय किया जाता है। फा० इं० १ भा०।

पेन्सला लिखते हैं कि तामूल चिकित्सक अग्निमांद्य अन्य कतिपय आन्त्र रोगों में इसके शुष्क कांड के चूर्ण का व्यवहार करते हैं। ये सराक्त परिवर्तक माने जाते हैं और लगभग २रक्तल(२॥ मा०)की मात्रामें इसका चूर्ण किञ्चित् तण्डुलोदक के साथ दो बार दैनिक व्यवहार में आ सकता है।

फॉर्स्कह्ल (Forskahl) वर्णन करते हैं कि मेरुदंड विकार से पीड़ित अरब लोग इसके कांड की शय्या बनाते हैं।

कर्णस्राव (पूति कर्ण) में इसके कांड स्वरस द्वारा कर्णपूरण करते हैं तथा नासार्श वा नासाक्रस्रावमें इसे नासिकामें टपकाते हैं। अनियमित ऋतुदोष तथा स्कर्वी के लिए भी यह प्रख्यात है। प्रथम रोग में २ तो० स्वरस (पौधे को उष्ण करके निकाला हुआ), २ तो० घृत और १-१ तो० गोपीचन्दन (श्वेत मृत्तिका विशेष) तथा शर्करा में मिलाकर दैनिक उपयोग में आता है। फा० इं० १ भा०। मे० मे० ऑफ इं० आर० एन० खोरी।

बैल्फर (Balfour) राजयक्ष्मा में इसके कांड का कल्क व्यवहृत होता है।

आर० एन खोरी—अस्थिसंहार रसायन तथा उत्तेजक है। यह अजीर्ण, अग्निमांद्य एवं स्कर्वी रोग में व्यवहृत होता है। आर्द्र अस्थिसंहार को पीसकर अस्थि विश्लेष, अस्थिभग्न किम्वा क्षत पर प्रलेप करते हैं। (Materia

Medica of India- R. N. khori. Part 11., p. 136.)

मार० एन० चोपरा एम० ए०, एम० डी०—इसके पत्र एवं कांड दक्षिण भारतवर्ष में कढ़ी के साथ व्यवहार में आते हैं। मदरास में पौधे के नवांकुरों को अन्तर्धूमाग्नि द्वारा भस्म कर इसको अजीर्ण एवं अग्निमांद्य में बरतते हैं। (इं० ड्र० इं० पृ० ६०२)

अस्थिसंहारिका,-री asthi-sanhárika,-rí सं० स्त्री० अस्थिसंहार। (Vitis quadrangularis.) भा० पू० १ भा०।

अस्थि संहृत् asthi-sanhrit—सं० पुं० अस्थिसंहार। (Vitis quadrangularis) च० द०। भैष० भग्न-चिं०।

अस्थिसारः asthi-sárah-सं० पुं० मज्जा। (Bone-marrow)। रा० नि० व० १८।

अस्थिसार स्थिता asthisár-sthitá—सं० स्त्री० मज्जा। (Bone-marrow.)

अस्थिस्नेहः asthi-snehah-सं० पुं० मज्जा। मज्जन। (Bone-marrow) रा० नि० व० १८।

अस्थिस्नेह संज्ञः asthisneha sanjnyah -सं० पुं० मज्जा। मग़ज़-हिं०। (Marrow, Pith.) रा० नि० व० ७।

अस्थिस्नेह सञ्चारः asthi-sneha-sanchárah–सं० पुं० मज्जा, मज्जन। (Marrow)

अस्थिस्रंसं asthisransam—सं० क्ली० हड्डियों को तोड़नेवाला। अथर्व०।

अस्थिक्षय asthi-kshaya-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अस्थिशोष, अस्थिनैर्बल्य। (Rickets.)

अस्थीकरणम् asthikaranam-सं० क्ली० अस्थि विकाश, अस्थि बनना, कुर्री का अस्थि बनना। (Ossification)। तअज़्ज़ुम-अ०।

अस्थीयम् asthiyam-सं० क्ली० (Ossein.) अस्थि का।

अस्थूरि asthúri–दोष रहित। अथर्व०। सू० १३०।

अस्थ्यङ्गारः asthyangárah—सं० पुं० हड्डीका कोयला। (Animal charcoal, Bone charcoal.)

अस्थ्यन्तरीय asthyantariya-सं० त्रि० (Interosseous) हड्डी के भीतर का

अस्थ्यान्तरिका पेशियाँ asthyántari peshiyán-सं० स्त्री० (Interossei) अस्थि के भीतरी तरफ़ की पेशी।

अस्थ्यावरक asthyávaraka
अस्थ्यावरण asthyávarana
-हिं० पुं० अस्थिवेष्ट। (Periosteum) सिम्हाक़, अज़ीम-अ०। अस्थियों के ऊपर सौत्रिक तन्तु से निर्मित एक झिल्ली चढ़ी रहती है इसे अस्थ्यावरक कहते हैं।

असद asda-अ० शेर, सिंह। (A lion)

अस्दरान aṣdarán } -अ० वह रगें जो दोनों कनपुटियों
अस्दग़ान aṣdaghán } के नीचे स्थित हैं। पुटपुटियों की रगें।

अस्दी asdi-अ० (ब० व०), नुदी (ए० व०) स्तन, कुच स्त्री का हो अथवा पुरुष का (Breasts.)

अस्दुल् अरस asdul-äadsa-अ० (१) गिरगिट (Chemelion)। (२) माज़रियून (Mázariyún.)। (३)एक अप्रसिद्ध बूटी है जिस बूटी के समीप यह होती है उस बूटी को नष्ट कर देती है।

अस्दुलअर्ज़ asdul-arza-अ० (१) गिरगिट (Chemelion.)। (२) एक अप्रसिद्ध ओषधि है जिसके लक्षण के सम्बन्ध में मतभेद है। कोई कोई इस्त्रीग़, को कहते हैं।

अस्नः asnah-सं० पुं० जालरम। अथर्व०।

अस्थ्यांतरिक बंधन asthyántarika-bandhana-सं० स्त्री० (Interosseous ligament.) अस्थि का भीतरी बंधन।

अस्नहान asnahán -सं० देखो (कमलके समान एक पुष्प है)।

अस्नाख़ asnákh-अ० (ब० व०), मफ़र (ए० व०), दन्तमूल। (Root of teeth.)

अस्नान asnána-अ० (ब० व०), सिन (ए० व०) (१) दन्त, दाँत (Teeth) । (२) आयु, अवस्था। (Age.) देखो—सिन्न।

अस्नानुल्फ़ार asnánulfára-अ० शाब्दिक अर्थ मूसा दंत, (चूहे का दाँत), पारिभाषिक अर्थ नख के वे बारीक तीक्ष्ण तन्तु जो नखके सिरे के समीप फटजाने से उसमें उत्पन्न हो जाते हैं या नख के मूल में होते हैं।

अस्नानुल् लुब्न asnánul-lubna-अ० अस्नान लुब्नियह। दुग्ध दंत, दूध के दाँत। दन्दाने शीर-फ़ा०। (Milk teeth)

अस्नानुल् हु(हि)ल्म asnánul-hu(hi)lma-अ० अस्नानुल् अक़्ल। बुद्धि दन्त-हिं०। दन्दाने अक़्ल, अक़्ल दाढ़-फ़ा०। (Wisdom teeth.)

अस्नाने क़वातिअ asnáne-qaváti-अ० अग्रदन्त, छेदक दंत। दन्दाने पेश-फ़ा०। (Incisors.)

अस्नाने कवासिर asnáne-kavásira-अ० भेदकदन्त, रदनक। दन्दाने नीश-फ़ा०। (Canines, Canine tooth.)

अस्नाने तवाहुन asnáne-taváhuna-अ० चर्वणक दन्त। दन्दाने आसिया, पीसने वाले दाँत-उ०। (Molars.)

अस्नाने दाइमिह asnáne-dáimih-अ० स्थायी दंत। दन्दानें मुस्तक़िल, मुदामी दाँत-उ०। (Permanent teeth.)

अस्नाफ़ asnáfa-अ० (ब० व०), सिन्फ़ (ए० व०) भेद, प्रकार। (Kinds.)

अस्निग्ध asnigdha-सं० त्रि०, हिं० वि० पुं० जो स्निग्ध नहो, रूक्ष। स्निग्धता का अभाव।

अस्निग्धदारु-कम् Asnigdhadáru,-kam-सं० क्ली०
अस्निग्ध दारुक asnigdha.dáruka-हिं० संज्ञा पुं०
देवदारु, देवदार की जाति का एक पेड़। (Cedrus Deodara.) रा० नि० व० १२।

अस्निग्ध लक्षणम् asnigdha-lakshanam -सं० क्ली० अस्निग्ध अर्थात् रूक्ष के लक्षण। यथा—

गाँठदार पाखाना का होना, रूक्षता, वायुविकार मृदुता, पका हुआ सा होना, स्वरत्व और शरीर की रूक्षता ये अस्निग्ध के लक्षण हैं।

"पुरीषं ग्रथितं रूक्षं वायुरप्रगुणो मृदुः।
पक्ता खरत्वं रौक्ष्यंच गात्रस्यास्निग्ध लक्षणम्॥"

(च० सू० १३ अ०)

अस्प aspa फ़ा० अश्व, घोटक। (A horse.)

अस्पगोल aspaghola
अस्पग़ोल aspaghala
-फ़ा० इसबगोल,इसपग़ोल। (Ispaghula.)

अस्पञ्ज aspanja-अ० अस्फञ्ज। अब्रमुर्दा, मुर्दा-बादल, स्पञ्ज। (Sponge.)

अस्पताल aspatála-हिं० संज्ञा पुं० [इं० हॉस्पिटल] औषधालय। चिकित्सालय। दवा-ख़ाना।

अस्पदन्दाँ aspa-dandán-फ़ा० (तिब्बि०, पारिभा०) तुरुकअबीन (एक प्रकार का मधु जो अत्यन्त शुष्क होता है)।

अस्पदरियाई aspa-dariyái-फ़ा० फ़र्स्ल माअ्-अ०। दरियाई घोड़ा।

नोट—कहा जाता है कि यह जानवर मिश्र देश में नील नदी के भीतर होता है। इसके पाँव गोपाद सदृश होते हैं। पुच्छ वाराह पुच्छ सदृश और स्वरूप घोड़े का सा होता है। यह घड़ियाल आदि समुद्री जीवों का आहार करता है।

अस्पनाज aspa-nája-फ़ा० पालक। (Spinacea oleracea.)

अ (इ) स्पन्द a-i-spanda-फ़ा० राई। देखो—इस्पन्द। (Ispanda.)

अस्परक asparaqa-फ़ा० पीली जड़,त्रायमाणा। (Delphinium zalil, *Aitch.*)

अस्प(र)कं asparka-हिं० तिरोर (इं० में"

सां०),जिरीर (मेमां०)-फ़ा० । बनपिरिंग-वं० । ट्रिफोलियम् ऑफिसिनेली (Trifolium officinale, *Willd.*), मीलीलोटस ऑफिसिनेलिस (Melilotus officinalis.) --लें० । इक्लीलुल्मलिक--अ० ।

वर्ग्बुर या शिम्बी वर्ग

(*N. O. Leguminosæ*)

उत्पत्तिस्थान—लुम्रा तथा सेदक ।

प्रयोगांश—क्षुप ।

उपयोग—यह क्षुप रक्तस्थापक है । वर्तों पर भी इसका उपयोग होता है । थैट ।

अस्पर्ग़म् asparghám-फ़ा० रैहाँ । (Ocimum basilicum, *Linn.*)

अ(इ)स्पर्ज़ह a-i-sparzah-फ़ा० इस्पगोल । ईसबगोल,इंपद्गोल-हिं० । (Ispaghula.)

अस्पर्तम aspartam-क़फ़रुल् यहूद । यह एक प्रकार का पाषाण है । See-qafrul-yahúda.

अस्पर्शा asparshá-सं० स्त्री० अकासबेल, आकाशवल्ली । आलोकलता-बं० । (Cuscuta reflexa.) रा० नि० व० ८ ।

अस्पस्त aspasta } -फ़ा० नफ्लरन, क़त,
अस्फ़त asfata } कमोज़ह, तर्फील,दमचह । (Trifolium pratensis.) इं० हिं० गा० ।

अ(ऐ)स्पाइरीन aspirine-इं० देखो—ऐस्पाइरीन ।

अ(ए)स्पालेन्थस इरिडकस aspalanthus indicus, *Ainsle*.-लें० शिवनिम्ब-मह० । (Indigofera aspalanthoides, *Vahl.*) फा० इं० १ भा० ।

अस्पालोटा aspálotá-जलपीपर, तुनवृटी, बुकन । नफ़ा० २ भा० । देखो—जलपिप्पली ।

अस्पियूस aspiyúsa-अ० इस्पगोल, ईसबगोल, इंपद्गोल । (Ispaghula)

अस्पीडियम् फिलिक्स मैस aspedium filix maco-लें० मेलफर्न ।

अस्पीडो स्पर्मा aspedosperma-लें० एक पौधा है ।

अस्पीडो स्पर्मा क्युब्रेको ब्लैङ्को aspedosperma cubreko blanco-लें० एक पौधा है ।

अस्पेरग asperg-फ़ा० अस्फ़क-फ़ा० । ज़रीर-अ० । त्रायमाण, गुले ज़लील-बम्ब० । गाफ़िज़-पं० । (Delphinium zalil, *Aitch, et Hemsley.*) फा० इं० १ भा० ।

अस्पेरग़ी aspergi-फ़ा० नागदौन-हिं० । (Artemisia vulgaris.)

अस्फ़ aasfa-अ० अन्तिम श्वास, मरणावस्था, मरणासन्न, मुमूर्षु ।

पॉइण्ट ऑफ़ डेथ (Point of death.)-इं० ।

अस्फ़अ asfaá-अ० श्याम, काला । (Black.)

अस्फङ्ग़ारून asfanqárúna-रू० }
अस्फ़ञ्ज asfanja-फ़ा० }

अब्र मुर्दा, मुर्दा बादल, स्पञ्ज । Sponge (Spongia officinalis.)

अस्फ़ञ्ज का जलाना अर्थात् सोख़्तह करना—

मुर्दा बादल के जलाने की विधि—अस्फ़ञ्ज अर्थात् मुर्दा बादल को साबुन से धोकर भली भाँति निचोड़ कर शुष्क कर लें । पुनः इसे बारीक कतर कर मिट्टी के बर्तन में रखकर अग्नि पर इतना जलाएँ जिसमें वह पीसने योग्य हो जाए । परन्तु इतना न जलाएँ कि जलकर राख हो जाए । तत्पश्चात् योगों में प्रयुक्त करें ।

द्या० क० भा० ३ ।

अस्फञ्ज मुह्‌रिक asfanja-muhriq }
अस्फ़ञ्ज सोख़्ता asfanja sokhtá }

अ०, फ़ा० जलाया हुआ मुर्दा बादल ।

अस्फटिकीय asphatikíya-हिं० वि० वह जिसके स्फटिक अर्थात् रवे न हों । बे रवा । अमूर्त । स्फटिक रहित । (Amorphous.)

अस्फ़न्द asfanda-फ़ा० (१) सफ़ेद राई (White-mustard)। (२) हींग, हिंग। (३) सदाब। (Ruta albiflora.) ई० हिं० मा०।

अस्फ़न्दान asfandána }
अस्फ़न्दा सफ़ेद asfandá safeda } फ़ा० सफ़ेद राई। (White mustard seed.)

अस्फ़न्दान asfandána-फ़ा० मद्य भेद। (A kind of wine.)

अस्फ़र asfara-अ० ज़र्द-फ़ा०। पीत, पीला, पीली-हिं०। (Yellow. हकीमों ने इसकी पाँच कक्षाएँ स्थिर की हैं—(१) अबी, (२) उत्रुजी, (३) फ़ाक़िअ, (४) नारंजी और (५) अहमर नारिजी। परन्तु उन उन पर्यायों के सामने देखो—

अस्फ़रक asfaraka-फ़ा० एक श्याम वर्ण का पक्षी है जो घरोंमें पाला जाता है। इसकी चोंच पीली होती है। इसे पढ़ाया जाता है तथा यह मनुष्य से प्रेम करता है।

अस्फ़र फ़ाक़िअ़ asfar-fáqiá-अ० घन पीत, अत्यन्त पीला, गहरा पीला। (Deep yellow.)

अस्फ़राग़ोयूस asfarághoyúsa-यू०चिचराल, देवदाली। (Ecbellium elatarium.)

अस्फ़राज asfarája-इन्दुलि० नागदौन। देखो-अस्फ़ाग़ीन। (Artemisia vulgaris.)

अस्फ़रान asfarána-अ० जिह्वा तथा हृदय। (Heart and tongue.)

अस्फ़रे बर्री asfare-barri-फ़ा० बादावर्द-हिं०, बम्ब०। (Volutarella divaricata, Benth.) फ़ा० इं० २ भा०।

अस्फ़ह asfah-अ० विशाल ललाट, विशाल मास्तिष्केय, चौड़े माथे वाला।

अस्फ़ाक asfáka-फ़ा० त्रायमाण, वज्रभद्रा। अमि० नि०।

अस्फ़ाद asfáda }
अस्फ़ाद सुफ़ेद asfáda-sufeda } -फ़ा० राई। (Sinapis ramosa.)

अस्फ़ानाख asfanakha-अ० पालक। (Spinacea oleracea.)

अस्फ़ानाख रूमी व हिन्दी asfánákha rúmiva-hindi-फ़ा० पालक, बथुवा।

अस्फ़ाग़ीन asfághina-यू० एक बूटी है जिसकी शाखाएँ सौंफ के समान आदि में मृदु किन्तु पश्चात् को कठोर एवं हरी हो जाती है। नागदौन। देखो-ईस्पेरेग़ीन (Asparagin)

अस्फ़ाक्सिया asphaksiya-अ० इख्तिनाक़, दम घुटना, दम बन्द होना-उ०। श्वासावरोध, श्वास का बन्द होना। (asphyxia.)

अस्फुट asfuṭa-हिं० वि० [सं०] (१) अस्पष्ट, जो स्पष्ट न हो। जो साफ़ न हो। (२) गूढ़। जटिल।

अस्फुट दर्शक asfuṭa-darṣhaka-हिं० वि० अर्द्ध स्वच्छ, अस्पष्ट दर्शक। (Translucent.)

अस्फ़ोडेलस फ़िस्ट्युलोसस asphodolus fistulosus, *Linn*.-ले० पियाज़ी, बोकाट-पं०। प्रयोगांश—पौधा व बीज। उपयोग—औषध तथा खाद्य। मेमॉ०।

अस्फ़ोतः asphotah-सं० पुं० काञ्चनार वृक्ष, कचनार। (Bauhinia variegata.) वै० निघ०।

अस्ब(बु)अ़ asba,-bu,-ā-अ० (ए० व०) असाबिअ़, असाबीअ़ (ब० व०), अंगुश्त, उंगली-उ०। अंगुली-हिं०। (Finger.)

अस्बन्द asbanda-हिं० संज्ञा पुं० [अ०] इस्बन्द। (Peganum harmala.)

अस्बर āasbara-अ० नर चीता। (A male-tiger.)

अस्बर्ग asbarga-हिं० पुं० गाफ़िस। (Delphinium saniculaefolium.)

अस्बल asbal-अ० लम्बी मूछोंवाला, वह मनुष्य जिसकी मूछें बड़ी बड़ी हों।

अस्बाग़ aṣbágha-अ० (ब० व०) देखो—आसव। (Tinctures.)

अस्बान aasbána-अ० खजूर भेद। (A kind of date.)

अस्बाब asbába-अ० (ब० व०), सबब (ए० व०)। वैद्यक की परिभाषा में वह वस्तु जो मनुष्य शरीर में रोगारोग या हालते सु.ह्हत् (स्वास्थ्य) को उत्पन्न करे अथवा उसको सुरक्षित रखे, चाहे वह वस्तु शारीरिक या अशारीरिक तत्व हों या अर्ज़।

कारण, निदान, हेतु। (Causes.) देखो—सबब।

अस्बाब इब्तिदाइय्यह् asbába-ibtidáiyyah }
अस्बाब अव्वलियह् asbába-avvaliyah }
अस्बाब अस्लियह् asbába-asliyah }
-अ० किसी रोगके आदि कारण। इनका समावेश वस्तुतः अस्बाब साबिक़ा (प्रारम्भिक कारण) ही में होता है। (Primary causes; Ultimate causes.)

अस्बाब कुल्लिय्यह् asbába-kulliyyah —अ० वे हेतु जिनके होने से नवीन चीज़ों का होना अनिवार्य हो।

अस्बाब ख़ुसूसिय्यह् asbába-khususiyyah —अ० वे मुख्य हेतु जो किसी प्रधान रोग को उत्पन्न करें। जैसे—प्लेग तथा विशूचिका विष जो उक्त रोगोंको ही उत्पन्न करते हैं। (Specific causes.)

अस्बाब तमामिय्यह् asbába-tamámiyyah—अ० वे कारण जिनसे शरीर अथवा शरीर की किसी अवस्था विशेष की पूर्ति होती है। (Complimental causes.)

नोट—उक्त अरबी परिभाषा सामान्यतः इल्मे हिक्मतमें सबसे ग़ाई अर्थात् किसी काम की ग़ायत व ग़र्ज़ के लिए बोली जाती है।

अस्बाब फ़[illegible]

-अ० वे [illegible]

[illegible] (अवस्थात्रय) में से किसी एक को शरीर में प्रगट करें या शारीरावस्था को सुरक्षित रक्खें, पुनः चाहे वे प्राकृतिक हों या अप्राकृतिक।

अस्बाब बादिय्यह् asbába bádiyyah-अ० अस्बाब ख़ारिजियह्, अस्बाब मेद्ख़लिय्यह्। बाह्य कारण। वे हेतु जो मनुष्य शरीर के बाहर आक्रमण करके अपना प्रभाव स्थापित करें जैसे शस्त्रोत्पन्न आदि। (External or Local causes.)

अस्बाब मादिय्यह् asbába-mádiyyah —अ० वे हेतु जिनपर रोगारोग का आधार हो।

अस्बाब मुज़ादह् asbába-muzáddah —अ० अनिष्ट व घातक कारण जो शरीरको हानि पहुँचाते एवं उसे नष्ट कर डालते हैं, जैसे—तलवार या गोली का घाव, विषपान तथा असंयमता आदि।

अस्बाब मुतस्सिमह् asbába-mutammimah-अ० वे कारण जिनके शरीर पर प्रभाव करने के पश्चात् तत्काल रोग उत्पन्न हो जाएँ। सन्निकृष्ट कारण।

अस्बाब मुमर्रिज़ह् asbába-mumarrizah -अ० रोगोत्पादक कारण, रोग संजनक हेतु।

अस्बाब वासिलह् asbába-vásilah }
अस्बाब क़रीबह् asbába-qaríbah }
अस्बाब सानोयह् asbába-sánoyah
-अ० वे कारण जो शरीर में विद्यमान हों और बिना किसी अन्य कारण की अपेक्षा करते हुए शरीर में कोई अवस्था उत्पन्न करें। जैसे-अफ़्नत (सड़ांध) बिना किसी अन्य कारण के अफ़्नती (पचनीय, दूषित) ज्वर उत्पन्न करती है। (Immediate causes, Proximate causes.)

अस्बाब साबिक़ह् asbába-sábiqah }
अस्बाब मुइद्दह् asbába-muáiddah }
अस्बाब बईदह् asbába-baídah
—अ० वह कारण जो मनुष्य शरीर पर अस्बाब द्वारा प्रभाव करें अर्थात् शरीर को किसी, [illegible]

लिए तैयार करें, किन्तु स्वतः उसको उत्पन्न न करें। जैसे-दुर्बलता (शरीर का क्षीण होना) शरीर को दूषित उवरों के लिए उद्यत बनाता है, किन्तु बिना सहयोग के स्वयं उसको नहीं उत्पन्न कर सकते। प्रीडिस्पोज़िंग कॉज़ेज़ (Predisposing causes.); रीमोट कॉज़ेज़ (Remote causes.)-इं०।

असबाब सित्तह asbába-sittah
असबाब सित्तह ज़रूरियह asbába-sittah-zarúriyah
असबाब ज़रूरियह asbába-zarúriyah
असबाब आम्मियह asbába-áámiyyah
-अ० वे ६ प्रसिद्ध कारण जो जीवन के लिए आवश्यक हैं, जैसे-(१) वायु, (२) खाना पीना, (३) सोना जागना, (४) शारीरिक गति एवं विश्राम, (५) मानसिक चेष्टाएँ एवं शांति और (६) संशोधन एवं संग (मुवरोध)।

असबाब तबीइय्यह asbába-tabíiyyah-अ० रचनात्मक या प्राकृतिक बातें और जो उनसे सम्बन्धित हों।

अस्पितालिय्यह asbitáliyyah-अ० यह हॉस्पिटल (अंगरेज़ी शब्द) से अरबीकृत शब्द है अर्थात् हस्पताल, शिफ़ाख़ानह्। अस्पताल, चिकित्सालय-हिं०। (Hospital, infermary.)

अस्पितालिय्यह नक़्क़ालह asbitáliyyah-naqqállah-अ० रणभूमि से आहत प्राणियों को ले जाने की डोलियाँ प्रभृति। (Ambulance.)

अस्बूर asbúr-अ० स्पोर से अरबीकृत शब्द है जिसका अर्थ बीज या कीटाणु है। (Spore)

अस्म ăasma-अ० धूम्रवायु भक्षण, आहार आदि जिसमें धूम्रगंध आगई हो।

अस्मगन्ध वृक्षः asmagdha-vrikshah-सं० पुं० आम्रातक, अंबाड़ा, अमड़ा। (Spondias mangifera) लु० क०।

अस्मगन्ध कन्तू asmagdha-kantú-सं० मोम। (Wax)

अस्मगन्धफलम् asmagdha-phalam-सं० क्लीं० कटहल, पनस। (Artocarpus integrifolia.)

अस्मस्वेदन asma-svedan-सं० प्रस्तर स्वेद। सु०।

अस्मङ्गलगण्डा asmangal-ganda-हिं० पुं० असमगण्ड (एक भारतीय बूटी है जो भूमि पर आच्छादित होती है। पत्ते कस्तूरी सदृश और मूल कसौंदे के समान तथा विभाजित होते हैं)। मु० क०।

अस्मन्तम् asmantam-सं० क्लीं० चुल्ली, चूल्हा (चूल्हा)। उनन, आक़ा-फ़ा०। चुल-मह०। (A fire-place.) अ० टी० भ०।

अस्मन्तिका asmantiká-सं० स्त्री० चापड़ा।

अस्मर asmar-अ० गन्दुमगूँ, गन्दुमी रंग। गेहूँ का रंग, गोधूम वर्ण, धूसर वर्ण, भूरा-हिं०। (Brownish)

अस्मर्सा asmarsá
अस्मर्शा ashmarshá } -कसौंधा भेद।

अस्मानिया asmániyá-पं० चुमयर, चमयर, असमा, चेवा। (Ephedra gerardiana, Wall.) मेमो०।

अस्मानी-गलगोटा asmáni-galagotá-यु०, -द० जंगली जेवेदर।

अस्मालावन asmálávan-यु० सौसन वर्री (एक सुगंधित पुष्प है जो सौसन के नाम से प्रसिद्ध है)। यह नामी भी होता है।

अस्मितः asmitah-सं० त्रि० विकसित, खिला हुआ। फुटस्त-यू०। (Blown, opened.) वैं० निघ०।

अस्मीलूस asmilús-यु० लोबान का सत, लोबान निकाश्त। (Acidum benzoicum.)

अस्मूनियून asmúniyún-यु० सफ़ेदा, सुफ़ेदा। (Plumbi carbonas.) देखो—सीसक।

अस्मूसा asmúsá-यू० जंगली गाजर, वन्य गर्जर। (Wildcarrot.)

अस्यूस asyús यू० आस्यूस, पत्थर भेद। (A kind of stone.)

अस्रम् asram-सं० क्लीं०) (१) शोणित,
अस्र asra-हिं० संज्ञा पुं०) रक्त, रुधिर। ब्लड (Blood)-इं०। रा० नि० व० १८। (२) केशर, कुंकुम। Saffron.(Crocus sativus.) वा० उ०। (३) नयनजल, अश्रु, आँसू। टियर (Tear)-इं०। रत्ना०। -पुं० (४) आम्बाव। विज० र०। (५) कोण, कोना कॉर्नर (A corner.) इ०। (६) केश, बाल। हेयर (Hair)-इं०। मे०। (७) एक देश (A country)। (८) जल।

अस्र asra-अ० शुद्ध तैल। (Pure oil-)

अस्र äasra-अ० ठोकर खाना, मुँहके बल गिरना। (To trip, to stumble.)

अस्र äasra-अ० निचोड़ना, दबाकर निचोड़ना। (Expression.)

अस्रकण्टकः asrakantakah-सं० पुं० बाण। हे०। (See-vána.)

अस्रखदिरः asra-khadirah-सं० पुं० रक्त खदिर वृक्ष, लाल खैर। रक्त खेर-महा०। (The red Catechu tree.) रा० नि० व० ८।

अस्रघ्नः asraghnah-सं० पुं० तेज-बल। (Excœcaria agallocha, *Linn.*) वै० निघ०।

अस्रघ्नी asraghni-सं० स्त्री० विशल्यकर्णी। निर्विषी। मै० र०।

अस्रजम् asrajam-सं० क्लीं० मांस। (Muscle, flesh.) रा० नि० व० १७।

अस्रजित् asrajit-सं० पुं० वनस्पति विशेष। कपाट वेटु-हिं०। (A plant.) र० मा०।

अस्रत् äasrat-अ० नम्रजिरा। ठोकर, ऐसी ठोकर जिससे मुँह के बल गिरे (Tripping, a beat of the foot, a stumble.)

अस्रपः asrapah-सं० पुं०) (१)
अस्रप asrapa-हिं० संज्ञा पुं०) जलौका, जोंक, जलायुका (Leech Hirudo.) (२) मत्कुण, कीट भेद। रा० नि० व० २३। (See-matkunah.) -हिं० वि० रक्तपीनेवाला।

अस्रपत्रः,-कः asrapattrah,-kah-सं० पुं० भेण्डा वृक्ष, भेंड़ा वृक्ष। रा० नि० व० ४। See-bherá.

अस्रपा asrapá-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० जलायुका, जलौका, जोंक। (Leech, Hirudo.) मे०।

अस्रफला,-ली asraphalá,-lí-सं० स्त्री० शल्लकी वृक्ष, सलई, सलाईका पेड़। शालई गाछ -बं०। (Boswellia serrata) रा० नि० व० ११।

अस्रबिन्दुच्छदा ásra-binduchchhadá -सं० स्त्री० लक्ष्मणा। See-lakshmaná

अस्रमातृका asra-mátriká-सं० स्त्री० रस धातु। (Chyle) रा० नि० व० १८।

अस्रयष्टिका asra-yashtiká सं० स्त्री० मजीठ, मंजिष्ठा। (Rubia cordifolia.)

अस्ररेणुः asra-renuh-सं० पुं० सिन्दूर। Red lead (Plumbi oxidum rubrum.) मे०।

अस्ररोधिका,-नी asra-rodhiká,-ní-सं० स्त्री० लज्जालुका क्षुप, लजालू, लज्जावती। (Mimosa pudica.) रा० नि० व० ५।

अस्रविन्दुच्छदा asra-vinduchchhadá -सं० स्त्री० (१) लक्षणा कन्द (लक्ष्मण)। (See-lakshmaná) रा० नि० व० ५। (२) रक्तविन्दुच्छदा। कैय० दे० नि०।

अस्रशिम्बी asra-shimbi-सं० स्त्री० रक्तशिम्बी, लाल सेम। राङ्गा शिम्-बं०। (The red flat bean) वै० निघ०।

अस्रसायकः asra-sáyakah-सं० पुं० नाराच अस्त्र, लोहा का बाण। लोहार बाण -बं०।

अस्रस्रुती asra-sruti-सं० स्त्री० (स्रुति), शोणित स्राव, रक्तक्षरण। वै० निघ०।

अस्रहरारिष्टः asra-hararishtah-सं० पुं० अस्रघ्नी (विशल्यकर्णी, निर्विषी) और मृत-सञ्जीवनीसुरा हर एक एक पल ले। पुनः एक मिट्टी के पात्र में रख उसका मुख मिट्टी से अच्छी तरह बन्द कर ७ दिन तक रक्खें। पश्चात् गाढ़े वस्त्र से छान कर बोतल में यत्न से रक्खें।

मात्रा—१-२० बूंद।

अनुपान—शीतल जल।

गुण—इसके सेवनसे उरःक्षत, रक्तपित्त, कास, रक्तातिसार, रक्तप्रदर और राजयक्ष्मा नष्ट होता है भै० र० यक्ष्मा चि०।

नोट—अस्रघ्नी के अभाव में अम्बष्ठा (निर्विषी) लेना उचित है।

अस्रार asiára } -अ० ललाट की रेखाएँ।
अस्रिरह् asirah } शिकन (Crease), फोल्ड (Fold.)-इं०।

अस्रार asrára-ज़रिश्क। (Berries of Berberis aristata, D. C.)

अस्रार asrára-मग० एक वृक्ष है जो हजाज़ और जिद्दा के समुद्री किनारों पर उगता है।

अस्रार्जकः asrárjakah-सं० पुं०
अस्राज्र्जक asrárjaka-हिं० संज्ञा स्त्री०
(१) रक्त तुलसी वृक्ष, लाल तुलसी। राता तुलसी -बं०। (Ocimum rubrum.)। (२) श्वेत तुलसी। शादा तुलसी-बं०। पांढरी तुलसी -मह०। (Ocimum album, *Linn.*) वै० निघ०।

अस्राविता भक्तम् asrávita-bhaktam-सं० क्लो० मण्ड (मॉड) संयुक्त भात।

गुण—यह भात भारी, शीतल, रुचिकारक, वृष्य, वीर्यवर्द्धक, मधुर, वातनाशक, कफनाशक, ग्राही, तृप्तिकारक और क्षयरोग का भी नाश करने वाला है। वृ० नि० र०।

अस्राश asrásha-अ० एक प्रकारका बारीक चूर्ण है जो कभी आन्द्र से और कभी ख़ुन्सा के बीज से बनाया जाता है।

अस्राह्वः asráhvah-सं० पुं०, क्ली० कुंकुम, केशर। Saffron (Crocus sativus.) मद० व० ३।

अस्रि asri-हिं० स्त्री० (Ten millions.) १० लाख।

अस्रिब asirb } -अ० (ए० व०),
अस्रारिब asárib } मु० रब (ब० व०),
आन्त्रीय वसामयझिल्ली, आन्त्रावरणच्छदाकला, आन्त्रावरण, जठरावरण। (Omentum.)

अस्रीली asrílí-हिं० स्त्री० असरीली, गिरगिट सदृश एक जानवर है। यह हरे रंग की होती तथा सर्प सदृश दुम मारती है।

अस्रु asru-सं० क्लो० नेत्रवारि, नयनजल, अश्रु, आँसू। टियर (A tear.)-इं०। आँसू के रोकने से पीनस रोग उत्पन्न होता है। वा० सू० ४ अ०।

अस्रुकः asrukah-सं० पुं० अक्षीर वृक्ष। आउच गाछ-बं०। रत्ना०।

अस्रुल जुद्री asrul-judrí-अ० शीतला के चिन्ह, दाग। (Pit, Pock mark.)

अस्रुल बुस्रह् asrul-busrah-अ० फुन्सी के चिन्ह या दाग। सिकट्रिक्स (Cicatrix.) -इं०।

अस्रु वाहिनी asru-váhiní-सं० स्त्री० अश्रु-वाहक धमनीद्वय। (Lachrymal canal.) सु० शा० ६ अ०।

अस्रेली asrelí-सिंध० छोटी माईं। Tamarix orientalis, *Vahl.* (Galls of Tamarix galls.)

अस्रैणः asrainah-सं० त्रि० स्त्रियों से रहित। अथर्व०।

अस्रोज़ asroza-अ० (१) एक कीट है जिसका सिर लाल और शेष शरीर श्वेत होता है। यह रेत और घास में उत्पन्न होता है या (२) ख़रातीन (केंचुआ)। (Earthworm.)

अस्रोरह asrorah-बालछड़। (Nardostachys Jatamansi)

अस्रोहो asroho-फ़ा० बनफ़्शा। (Viola odorata.)

अस्ल asl-अ०
असल asala-हिं० } (पुं० घ०), अ,मूल (व० घ०) मूल, जड़, बुनियाद। (Root or rhizome.) स० फा० ई०।

अस्ल asla-अ० तर्फ़ा। झाऊ-हिं०। (Tamarix gallica, *Linn.*) स० फा० इं०।

अस्ल âasla-अ० मधु, शहद। Honey (Mel.) स० फा० इं०।

अस्ल asla-अ०समान-मिश्र०। रूद कर्तह-फ़ा०। कसरानी-हिं०। एक बूटी है जो जलीय भूमि पर उत्पन्न होती है। इससे बोरिया या चटाई बिने जाते हैं।

अस्ल âasla-हड़ताल, हरिताल। (Yellow orpiment.)

अस्लअ़ aslaâ-अ० वह मनुष्य जिसके चाँदिया पर के बाल गिर गए हों। बैल्ड (Bald.) इं०।

अस्ल अफ़्सन्तीन âasla-afsantína-अ० वह शहद जिसकी मक्खी अफ़संतीन पर बैठी हो।

अस्लक़ aslaq-अ० फ़र्जंजुश्त, निर्गुण्डी, सँभालू-हिं०। (Vitex negundo, *Linn.*) स० फा० इं०।

अस्लक़े अस्वद aslaqe-asvad-अ० नील निर्गुण्डी, काला सँभालू-हिं०। (Justicia, gendarussa, *Linn.*) स० फा० इं०।

अस्लक़े आबी aslaqe-ábi-अ० जल निर्गुण्डी, पानी का सँभालू-हिं०। (Vitex trifolia, *Linn.*) स० फा० इं०।

अस्लख aslakh-अ० पूर्ण बधिर मनुष्य, पूरा बहिरा। (A Dumb.)

अस्लज âaslaj-अ० अ़र्तनीसा की जड़। Cyclamen persicum, *Miller.* (Root of--)। देखो—बखूरे मरियम्।

अस्लञ्ज âaslanja-अ० बखूरमरियम् का एक भेद, हथाजोड़ी। (A kind of sow-bread.)

अस्लत aslat-अ० वह मनुष्य जिसकी नासिका आधे से अधिक कट गई हो।

अस्लतुज़्ज़िराअ़ aslatuzziráâ-अ० कलाई की हड्डी या पहुँचे की ठीक सिरा जो हथेली से लगा हुआ है।

अस्लम aslam-अ० गोश बुरीदा-फ़ा०। सहज कर्ण हीनता। वह पुरुष जो जन्मसे कर्णहीन हो जिसके कान जड़से काट डाले गए हों। (Clipl eared.)

अस्ल मुअ़्दी asla-muádi-अ० माद्दे छूत, छूत पैदा करने वाली वस्तु, संक्रामक दोष। (Contagium.)

अस्लराई asla-rái-हिं० ओ० सौंराई, राई। (Brasica nigra.) मेमो०।

अस्लह aslah-अ० नेज़ा, सिरतर, ज़बान या छुरी की नोक।

अस्लह aslah-अ० एक प्रकार का भयंकर सर्प जिसके पैर होते हैं। यह फ़ारस देश में पैदा होता है।

अस्लान âaslána-अ० उन्सुल, जंगली पियाज़ कांदा, वनपलाण्डु। (Scilla Indica.)

अस्लियूस asliyúsa-यू० सज। (Laurus cassia.)

अस्लुन्नहल âaslunnahal-अ० मधु, शहद। Honey (Mel.) स० फा० इं०।

अस्लुन्नुखाअ़ aslun-nukhâa
रासुन्नुखाअ़ rásun-nukháa }
मब्दउन्नुखाअ़ mabdaun-nukháa
-अ० सरे हराम मग़ज़-फ़ा०। सुषुम्ना शीर्षक -हिं०। (Medulla-oblongata.)

अस्लुर्रमिस âaslurramis-अ० (१) वह ओस जो रमिस पर पड़ती है। (२) ■कर तेग़ाल।

अस्लुल् अह्मर aslul-ahmar-अ० लाल झाऊ। (Tamarix orientalis, *Vahl.*) स० फा० इं०।

अस्लुल् क़सब âaslul-qasab-अ० ईख रस, ईख या गन्ने का पानी।

अस्लुल् क़स्.ब ãaslul-qaṣab–अ० एक प्रकार का मधु जो शुष्क खजू॑र से बनाया जाता है ।

अ.स्लुल् क़ुल्त aṣlul-qulta–अ० कुलथी की जड़ । Dolichos biflorus (Root of-)

अस्लुल् ख़िलाफ़ ãaslul-khiláfa–अ० बेद-सादह् का दूध।

अस्लुल् फ़ार ãaslul-fára–अ० मज्ञात ।

अ.स्लुल् बज़्.र aṣlul-bazara–अ० मसांकुर वृक्ष । (Orus clitoris)

अ.स्लुल् माकोल aṣlul-mákol–अ० हलदी, हरिद्रा । (Curcuma longa)

अ.स्लुल् मुदव्वर aṣlul-mudavvar–अ० (ए० अ०), उ.सूलुल् मुदव्वर (ब० व०) कन्द–हिं०, सं० । (Bulb or tuber.) स० फा० इं० ।

अ.स्लुल्लिसान aṣlul-lisána–अ० कर्णमूल ग्रंथि । (Submaxillary gland)

अ.स्लुल्लुफ़ाहबर्री aṣlullufáha-barri–अ० यब रूजुस्सनम, बिलाडोना । (Mandrake.)

अस्लुल्लुब्नी ãaslul-lubni–अ० (१) मेअहे सायेलह्, सिलारस–हिं० । Liquid amber altingia, *Blume.*) (Resin of-Liquid storax) स० फा० इं० । म० अ० डॉ० । (२) इ.सी लुबान, लोबान ।

अस्लुल्हवा ãaslul-havá –अ० शीर ख़िश्त –फ़ा० । अकाश मधु–सं०, हिं० । (Manna.) म० अ० डॉ० ।

अस्लुल्हाज ãaslul-hájा–अ० तुरञ्जबीन । Alhagi maurorum (Manna of-)

अ.स्लुल् हिन्द्बाउब्बरी aṣlul-hinda-báubbari –अ० जंगली कासनी की जड़ । (Taraxaci radix) म० अ० डॉ० ।

अस्लुस्समावी ãaslussamávi– अ० शीर ख़िश्त–फ़ा० । आकाशमधु–सं० । (manna) म० अ० डॉ० ।

अ.स्लुस्सितब्र aṣlus-sitabra–अ० (ए० व०) उ.सूलुस्सितब्र (ब० व०), कन्द–सं०, हिं० । (Bulb or tuber) स० फा० इं० ।

अ.स्लुस्सीनी aṣlus-ṣíní–अ० चोपचीनी–हिं०, द०, फ़ा० । Radix chinensis (China root) स० फा० इं० ।

अ.स्लुस्सूस aṣlussúsa–अ० : यष्टिमधु–सं० । मुलेठी, जेठीमध–हिं० । Glycyrrhizae-radix (Liquorice root or liquorice.) स० फा० इं० ।

अस्लेख़ियारचम्बर ãasle-khiyára-chambara–फ़ा० अस्ले ख़ियार शबर–अ० । आरग्वध गूदिका–सं० । अमलतासका गूदा–हिं० Cassia pulp (Cassiæ pulp.) देखो–अमलतास ।

अस्लेतबर्ज़द ãasle-tabarzada–अ० कन्द या मिश्री का शीरा ।

अस्लेतम्र ãasle-tamra–अ० दोशाब ख़ुर्मा ।

अस्लेदाऊद ãasle-dáúda–अ० एक प्रकार के मधु का तैल ।

अस्लेनहल ãasle-nahala–अ० मधु, शहद । Honey (Mel.)

अ.स्ले फ़र्ऊ.न aṣle-faraúna–अ० एक प्रकार का पत्थर जो यमन उम्मान् देश में होता है ।

अस्लेबिलादुर ãasle-biládur–अ० एक प्रकार का श्याम लसदार द्रव है जो भिलावेंसे निकलता है ।

अस्ले मा.ज़ी ãasle-mázi–अ० श्वेत खजू॑र मधु ।

अस्लेमु.स.फ्फ़ा ãasle-muṣaffá–अ० साफ़ किया हुआ या शुद्ध मधु । (Mel depuratum.)

अ.स्लेमेसा ãasle-mesá अ० मुलेठी, यष्टिमधु । (Liquorice.)

अस्लेयाबिस ãasle-yábisa–अ० तुरञ्जबीन या पतला सुगंधित आहार ।

अस्लेलुब्नी ãasle-lubni–अ० सिलारस । (Styrax.)

अस्ले.हाशा aasle-háshá-अ० वह शहद जिसकी मक्खी हाशा (जंगली पुदीना)पर बैठी हो।

अस्व asva-हिं० संज्ञा पुं० [सं० अश्व] (१) घोड़ा (A horse.)। (२) असगंध, अश्वगंधा। (Withania somnifera)। (३) निर्धनी, कंगाल, दरिद्री।

अ.स्वह aasvah अ० बालों की लट, ज़ुल्फ़ दराज़।

अस्वकर्ण asva-karna-हिं० पुं०[सं०]साल, साखू। Sal tree (Shorea robusta, Gartn.) फा० इं० १ भा०।

अस्वच्छ asvachchha-हिं०संज्ञा पुं०[सं०] अदर्शक, अपारदर्शक, ऐसी वस्तुएँ जिनमें से कुछ भी नहीं दीखता। अबे.ज़ इक़ीक़ी, अम्ल़ी सफ़ेद-अ०। ओपेक (Opaque.)-इं०।

अस्वद asvad-अ० स्याह रंग, श्यामवर्ण, काला, कृष्ण। (Black.)

अस्वद सालख़ asvad-sálakh-अ० श्याम सर्प। (A black serpent.)

अस्वन्तः asvantah सं० पुं० चुल्ली। (A fire-place.)

अस्वभाविक मृत्यु asvábhávik-mrityu -हिं० संज्ञा स्त्री० वह मृत्यु जो स्वाभाविक न हो। अप्राकृतिक मृत्यु।

अस्वमारक asva-máraka-हिं० संज्ञा पुं० [सं०]कनेर,करवीर। (Nerium odorum.) फा० इं० २ भा०।

अस्वल asvala-अ० वह मनुष्य जिसका पेट आगे को निकला हुआ हो।

अस्वस्थ asvastha-हिं० वि० [सं०] (१) रोगी, बीमार। (२) अनमना।

अस्वात asváta-अ० (ब० व०), सौत (ए० व०), शब्द, ध्वनि। (Sound.)

अस्वादुकंटक asvádu-kantaka-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] गोखरू। गोक्षुर।

अस्वास्थ्यम् asvásthyam-सं० क्लो०। अस्वास्थ्य asvásthya-हिं० संज्ञा पुं० पीड़ा, रोग, अस्वस्थता, बीमारी।

अस्वेद्यरोगी asvedya-rogí-सं० पुं० रोगी जिसे स्वेद (पसीना) न दिया जा सके। वह रोगी जो स्वेद कर्म कराने के अयोग्य है। वह जिसका स्वेद न किया जा सके। स्वेद अयोग्य। स्वेद निषिद्ध। स्वेदाविहित। च० सू० १४ अ०। वा० सू० १७ अ०। देखो-स्वेदः।

अस्स ássa-अ० बुनियाद, जड़, हृदय। (Foundation.)

अ.स्स. aassa-अ० क़ुर्मतुल् बतर। शाखिद. ... जड़ किन्तु अर्वाचीन परिभाषामें कटित अवयव (Stump.)

अस्सनतुल् अ.स़ाफ़ीर assanatul-aasáfira-अ० इन्द्रयव। (Wrightia tinctoria, R. Br.) देखो—कुटज।

अस्सफ़ाफ़न assafáfan-अ० लिसानुलअ़स्.. ... इसके लक्षण में मत भेद है।

अस्समोगम् assamogam
अस्समोदगम assamodagam
अस्समोदगुड assamoda-guda
} -हिं०

अजवाइन। Carum (Ptychotis.) Ajowan.

अस्सरख़्सुल् मुज़क्कर assarakhsul-muzakkar-अ० सरख़्स मुज़क्कर, बस्फ़ाइज़-फ़ा०। Male fern (Filix mass.) म० अ० डॉ०।

अस्सराजत assarájata-अजात।

अस्साबूनुल्लिय्यिन assábúnulliyyin-अ० हरा साबुन, नरम साबुन-हिं०। (Sapo mollis.) म० अ० डॉ०।

अस्साबूनुस्.स़लिब assábúnussalib-अ० कठोर साबुन, जैतून तैल का साबुन-हिं०। (Sapo durus.) म० अ० डॉ०।

अस्सालिया assáliyá-यु० चन्द्रसूर। (Lepidium sativum) फा० इं० १ भा०।

अस्सुउसनं assu-us'n-फा० सुफेद राई-हिं०। सिद्धार्थक-सं०। (Eruca sativa.) मेमा०।

अस्सुलेमानियुल् अक्काल assulomániyul-akkál-अ० सुलेमानी, दारशिकना, दारचिकना -हिं०। (Hydrargyri perchloridum.)

अस्हब ashab-अ० श्वेताभायुक्त रक्तवर्ण, ष्याजी रंग, रोग-विज्ञान में श्वेताभायुक्त रक्तवर्णीय क़ारोरह् (मूत्र) को कहते हैं।

अहं aham-सर्व० [सं०] मै। (I). संज्ञा पुं० [सं०] अहंकार, अभिमान।

अहः ahah-सं० क्लो० } [सं० अहन्]
अह aha-हिं० संज्ञा पुं० } (१) दिवस, दिन। (Day.)। अम०। (२) सूर्य्य।

अहङ्कारः ahankárah } -सं० (हिं० संज्ञा)
अहंकार ahankára } पुं० [वि० अहंकारी]
(१) अभिमान, गर्व, घमंड। (२) चेतन पुरुष की चेतना। इन्द्रियादि सम्पूर्ण शरीरव्यापी अहं अर्थात् मैं और मेरा के भाव की विशेष प्रवृत्ति। ममत्व। वैकारिक, तैजस, एवं भूत अर्थात् सात्विक राजस, तामस भेद से यह तीन प्रकार का होता है। सांख्य के समान आयुर्वेद शास्त्रियों ने इसकी उत्पत्ति महत्तत्व से मानी है। इसके अनुसार यह महत्तत्व से उत्पन्न एक द्रव्य अर्थात् उसका एक विकार है। इसकी सात्विक अवस्था और तैजस की सहायता से पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच कर्मेन्द्रियाँ तथा मन की उत्पत्ति होती है और तामस अवस्था तथा तैजस अर्थात् राजस की सहायता से पंच तन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है, जिनसे क्रमशः आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी की उत्पत्ति होती है। यथा—

"तल्लिङ्गाच्च महतस्तल्लक्षण एवाहङ्कार उत्पद्यते, सतु त्रिविधो वैकारिकस्तैजसो भूतादिरिति; तत्र वैकारिकादहङ्कारात् तैजस सहायात्तल्लक्षणान्येवैकादशेन्द्रियाण्युत्पद्यते; भूतादेरपि तैजस सहायात्तल्लक्षणान्येव पञ्चतन्मात्राण्युत्पद्यन्ते। सु० शा० १ अ०।

अहतम् ahatam सं० क्लो० नूतन वस्त्र। (New cloth.) हला०।

अहत्ती ahatti-सिं० कुम्बी, कुम्भी। (Careya arborea, Roxb.) मेमा०।

अहन् ahan-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दिन।

अहन् पुष्प ahan-pushpa—हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दुपहरिया का फूल। गुल दुपहरिया।

अहर ahara-हिं० संज्ञा पुं० डोवा, पोखरा, सरोवर। (A reservoir for collecting rain-water.)

अहरङ्ग aharanga-मला० काष्ठ अंगार, लकड़ी का कोयला। Wood charcoal (Carbo-ligni) इं० मे० मे०।

अहरदृक् aharadrik-सं० पुं० गृध्र, गिद्ध पक्षी। गड्सी-बं०। बब्धर (A vulture.) इं०। वै० निघ०।

अहरण aharana } -अ० अह-
अहरणी aharani } रन, अरउन।

अहरन aharan-हिं० संज्ञा स्त्री० }
अहरनि aharani-हिं० संज्ञा स्त्री० }
[सं० आ+धारण=रखना] निहाई।

अहरह aharah-हिं० क्रि०, वि० प्रति दिन। (Everyday.)

अहरा ahará-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आहरण =इकट्ठा करना] १-जाड़े में तापनेका स्थान। कंडे का ढेर जो जलाने के लिए इकट्ठा किया जाए। (२) वह आग जो इस प्रकार इकट्ठे किए हुए कंडों से तैयार की जाए।

अहराक़ ahráq-अ० जलाना। लु० क०।

अहरितः aharitah-सं० पुं० पाण्डुरोग। हारिद्र रोग। अथर्व०। सू० २२। ३। का० १।

अहर्गण ahargana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] दिनों का समूह।

अहर्जवः aharjjavah-सं० पुं० सम्वत्सर, वर्ष। (A year.) के०।

अहर्पणः aharpanah-सं० पुं० मांस। (Muscle; Flesh.) द्रारा०।

अहर्बान्धवः aharbándhavah
अहर्मणिः aharmanih
—सं० पुं० अर्क वृक्ष, आक, मदार। (Calotropis gigantea.) हे० च०।

अहर्मुखम् aharmukham-सं० क्लीं०
अहर्मुख aharmukha-हिं० संज्ञा पुं०
प्रातः काल, सवेरा, भोर (Early morning, day-break.)।

अहर्र aharra-अ० अधिक उष्ण, ज्यादा गरम।

अहलद् ahalad-कना० वट, बर्गद। Banian (Ficus Bengalensis.)

अहलना ahalaná-हिं० क्रि० अ० [सं० आह-लनम्] हिलना। काँपना। दहलना।

अहलात ahaláta-यु० अगर। (Aloe wood.)

अहलु ahalu-पं० मखल, वहल।

अहल्यः ahalyah-सं० त्रि०
अहल्या ahalyá-हिं० त्रि० [सं०]
मनाकृष्ट-भूमि। जो (धरती) जोती न जा सके।

अ(-ा)हल्ल ahalla-सिं० अमलतास। (Cassia fistula, Linn.) फा० इं० १ भा०।

अहस्करः ahaskarah-सं० पुं० अर्क वृक्ष, आक, मदार। (Calotropis gigantea.) हे० च०।

अहस्पतिः ahaspatih-सं० पुं० (१) अर्क वृक्ष, मदार, आक। (Calotropis gigantea.)। (२) सूर्य। (The sun.) अम०।

अहस्सु ahassu अ० वह व्यक्ति जिसके सिर में कम बाल हों।

अहः ahah-सं० नाश करना। अथर्व०।

अहार ahára-हिं० संज्ञा पुं० [सं० आहार]। (१) भोजन, खाना (Aliment, food, victuals.)। (२) लेई, माँड़ी। (Starch, glue, paste.)।

अहालिम ahálim-यू० अगर। (Aquilaria agallocha.)

अहालिया ahálivá-मरा०, बम्ब० चन्द्रसु हालिम। (Lepidium Sativum Linn.)। इं० मे० मां०। फा० इं० १ भा०।

अहिः ahih-सं० पुं०
अहि ahi-हिं०
(१) सीसक, सीसा। Lead (Plumbum.) मधांग, वसन्तकुसुमाकर रस। रसा०सं०। (२) सर्प, नाग, फणि, साँप। सर्पेश (A serpent.)-इं० मद० व० २२। (३) उदावर्त, नाभि। (Navel.) हारा०। (४) वज्रीवृक्ष। मनसा-सिजु-बं०। (See-vajri.) हे० च०। (५) अफीम (Opium.)। (६) सूर्य। (The sun.)

अहिंस्र ahinsra-हिं० वि० [सं०] अहिंसक।

अहिंस्रा ahinsrá-सं० स्त्री० कपटकाली वृक्ष, काकादनी, हैंसा। काँटा गुड़ कांटली-बं०। (Capparis sepiaria.) रत्ना० आमवात प्रवे०। गुण—विष शोथ ह्र। राज०।

अहिकः,-का ahikah,-ká-सं० पुं०, स्त्री०
अहिका ahiká-हिं० संज्ञा स्त्री०
(१) शाल्मली वृक्ष, सेमल। शिमुल गाछ-बं०। सांवरी-महा०। (Bombax heptaphyllum.) श० च०। (२) अन्धा सर्प। (A blind snake.)

अहिकान्तः ahikántah-सं० पुं० वायु, पवन। (Air, Atmosphere.) हे० च०।

अहिकुटी ahi-kuti-सं० पुं० भारद्वाज पक्षी। च० नि०।

अहिखर ahi-khara-हिं० संज्ञा पुं० तालमखाना। (Hygrophylla spinosa.)

अहिगति ahi-gati-हिं० संज्ञा स्त्री० साँप की चाल, टेढ़ी चाल।

अहिगन्ध फला ahi-gandha-phalá-सं० स्त्री० सलई वृक्ष। (Boswellia serrata.) रा० नि० व० ११।

अहिगन्धा ahi-gandhá-सं० स्त्री० (१) सर्प-

गंधा। रास्ना विशेष-बं०। सापगंध-मद०। (See-Sarpa-gandhá.) ध० निघ०। (२) ईशरमूल, ईश्वरमूल। (Iris root.)

अहिच्छत्रः ahi-chchhatrah-सं० पुं० मेषशृंगी, मेढ़ासिंगी। See-Ajishringi.

अहिच्छत्रा ahi-chchhatrá-सं० स्त्री० (१) शताह्वा क्षुप, सौंफ। सौरी, मुरफा-बं०। (Pimpinella anisum.) रा० नि० व० ४। (२) शर्करा, चीनी-हिं०। चिनि-बं०। Sugar (Saccharine.) रा० नि० व० ४।

अहिछार ahi-chhára-हिं० संज्ञा पुं० साँप का विष, सर्प विष। (Snake poison, venom.)

अहिजाहकः ahi-jáhakah—सं० पुं० ककलास।(See-krikalása.) कांकलास-बं०। ध० निघ०।

अहिजिह्वा ahi-jihvá—हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] नागफनी।

अहिजिह्विका ahi-jihviká—सं० स्त्री० महा शतावरी। बड़ शतमूली—बं०। (Asparagus racemosa.) ध० निघ०।

अहित ahita—हिं० संज्ञा पुं० बुराई, अकल्याण। वि०[सं०] (१) शत्रु, वैरी, विरोधी। (२)अपथ्य अनुपकारी, हानिकारक। (adverse, inimical, acting unkindly.)

अहितकारी ahitakári—हिं० पुं० अहित करने वाला, शत्रु। (Inimical.)

अहित द्रव्यम् ahita-dravyam—सं० क्ली० अपथ्य पदार्थ, अहितकारक द्रव्य।

अहितपदार्थः ahita-padárthah-सं० पुं० अहितकर अर्थात् हानिकारक पदार्थ।

ये निम्न हैं, जैसे—वृद्ध रमणी, पूति (दुर्गंधित) मांस, प्रभात निद्रा, मैथुन और दधि प्रभृति।

अहिताहारः ahitáhárah-सं० पुं० अहितकर द्रव्य भक्षण, अहित भोजन, अहितकारी पदार्थ खाना।

गुण—पीड़ाजनकत्व। भा० पू० ७ अ०।

अहित्थः ahitthah-सं० पुं० वनमेथिका, वन मेथी। Trigonella fœnum græcum (Wild var.of-) मद० व० २।

अहिद्विट् ahidvit-सं० पुं० (१) नकुल, नेवला Mungoose (Viverra ichneumon.)। (२) मयूर, मोर। (A peacock)

अहिनिर्मोकः ahinirmokah-सं० पुं० सर्प निर्मोक, सर्प कञ्चुक, साँप की केंचुली। भा०।

अहिनी ahini-सं० स्त्री० सर्पिणी, साँप की मादा, साँपिन। (A female snake.)

अहिपति ahipati-सं०(हिं०संज्ञा)पुं० साँपों का राजा, वासुकी।

अहिपत्रकः ahi-patrakah-सं० पुं० निर्विष सर्प विशेष। (A kind of nonpoisonous snake.)

अहिपुत्रकः ahiputrakah-सं० पुं० सराल, नौका विशेष। हारा०।

अहिपुष्पम् ahipushpam-सं०क्ली०,१)नागकेशर पुष्प। Mesua ferrea (Flower of-) च० द०। (२) कुसुमोका तैल। सु० चि० ३७ अ०।

अहिपूतनः,-ना ahipútanah,-ná-सं० पुं०,स्त्री० बाल रोग भेद, शिशु गुदव्रण,पूतना। यथा—मल मूत्र से सनी हुई बालक की गुदा को न धोने से या पसीना आने से अथवा स्नान न करने से रुधिर और कफ दूषित होकर खुजली को उत्पन्न करते हैं फिर खुजाने से तत्काल फुन्सियाँ हो जाती हैं और उनमें से स्राव निकलता है। फिर यह सब फुन्सियाँ एकत्रित होकर व्रण सी होजाती हैं, तब इस भयंकर रोग को अहिपूतना कहते हैं। मा० नि० क्षुद्ररो०।

अहिप्पन ahippan-अफ़ीम। (Opium.) इ० मे० मे०।

अहिफलः,-ला ahiphalah,-lá-सं० पुं०, स्त्री० दीर्घ कर्कटिका, चिचिण्डा। कक्वा काँकुड़

–द० । दर काकड़ी–मह० । (Trichosanthes anguina.)

अहिफेनम्,-कम् a'hi-phenam,-kam –सं० पुं०, क्लो०

अहिफेन ahiphena–हिं० संज्ञा पुं० (१) नागफेन, अफीम–हिं० । स्वनामाख्यात सारजवर्गीयोपविष । आफिम–बं० । अफून, अफू कसरी–मह० । अफेन–माल० । नलमुपद्–तै० । Opium poppy (Papaver somniferum.) देखो—अफीम । (२) सर्प के मुँह की लार या फेन । (The saliva or venom of a snake.)

अहिफेन वटिका ahi-phena-vaṭiká–सं० अर्श०अतिसारोक्त रस विशेष । खज्जूर,पिंड खजूर । र० सा० सं० ।

अहिफेनपाकः ahiphenapákah–सं० पुं० १ तो० शुद्ध अफीमको १सेर दूध और आधसेर घीमें पकाएँ । ठंढा होनेपर १सेर शक्कर मिलाएँ, फिर जायफल, लवङ्ग,जावित्री, कालकेशर, शकरकरा, समुद्रशोष, कपूर, चन्दन, त्रिकुटा, धतूरे के बीज,मुसली, तगार, शुद्ध सफ़ेद घुंघा, बेल, बीज, चंद, करंज, चित्रक, पीपलामूल, जीरा, अजमोदा, मजा, गोखरू, बबूलकी गोंद और शिलाजीत प्रत्येक एक एक तो० चूर्णकर मिलाएँ। इसमें भंग चूर्ण १६ तो०, बंग,ताम्बा,लोहा, अभ्रक, और पारा और कस्तूरी भस्म प्रत्येक १-१तो० मिलाकर घोटें और इसे पावन तथा अगर से सुवासित करके रखलें। इसे पाचन शक्तिके अनुसार खाए और ऊपर से भैंस का दूध पिए तो मनुष्य १०० स्त्रियों के साथ गमन कर सकता है ।इससे स्त्रियों का वन्ध्यापन; पुरुषों की नपुंसकता, खाँसी, दमा, शीत, अपस्मार, उरःक्षत, उन्माद, पाण्डु,रोग, ८० प्रकार के वातरोग, कफ रोग, हिचकी, प्रमेह, आमवात, जुकाम और अतिसार नष्ट होते हैं ।

अहिफेन बीजम् ahiphena-víjam–सं० क्ली० खसखस, पोस्ते का बीज । पुस्त, खस्म –बं० । Poppy seeds (Seeds of P. somniferum.)

अहिफेनासवः ahiphenásavah–सं० पुं० यह आमव अतिसार तथा विसूचिका के लिए हितकारक है। र० र० ।

योग तथा निर्माण-विधि—महुए का मद्य (महुआ की सुरा) १०० पल, अफीम ४ पल,नागरमोथा, जायफल, इन्द्रयव तथा एला प्रत्येक १-१ पल इन सबको बर्तन में बन्द कर एक मास तक रखें । मात्रा–१० से २० बूँद । भैष० ।

अहिवेल ahibela–हिं० संज्ञा स्त्री० [सं० अहिवल्ली, मा० अहिवेली] नागबेलि । पान ।

अहिभयदा ahibhayadá–सं० स्त्री० भूम्यामलकी, भुँई आमला । (Phyllanthus niruri.) रा० नि० व० ५।

अहिभुक् ahibhuk–सं० पुं० (१) मयूर, (A peacock.) रा० नि० व० १९ । (२) ताक्ष्य । (See–tárkshyam) मे० । (३) छुद्र सापसंद नामक प्रसिद्ध क्षुप (४) नाकुली नामक महाकन्द शाक (Vanda Roxburghii.) । (५) गन्धनाकुली । (Ophioxylon serpentinum.) (See–Nakuli) रा० नि० व० ७ ।

अहिमणि ahi-mani–हिं० स्त्री० सर्पमणि ।

अहिमर्द्दनी ahi-marddani–सं० स्त्री० गन्धनाकुली । रास्ना विशेष-बं० । (Ophioxylon serpentinum.) अहिकता विशेष । रा० नि० व० ९ । देखो— सापसंद-परिचय ।

नाकुली ।

अहिमारः,–कः ahi-márah,-kah–सं० पुं० विट्खदिर, दुर्गन्धि खैर, अरिमेद । गुये बाबला –बं० । गन्धोहिबर–मह० । (Acacia farnesiana, Willd.) रा० नि० व० ८ ।

अहिमेदः,–कः ahi-medah,-kah–सं० पुं० विट्खदिर, अरिमेद । (Acacia farnesiana, Willd.) रा० नि० व० ८ ।

अहिय्यह् ahiyyah–अ० (१ व०, ए०), हय्यु–(द० व०) सजीव, चैतन्य, जीवधारी, जीवित, जिन्दा । पुनाइव (Alive)–इं० ।

अहिरावन ahi-rávana } -बम्ब० पत्थर-
महिरावन mahi-rávana } चटी, ज़ख्मे-
हयात-फ़ा०। (Bryophyllum calycinum, *Salisb.*) मेमो०।

अहिरिपुः ahi-ripuh-सं० पुं० मयूर, मोरपंखी। (A peacock) रत्ना०।

अहिलता ahi-latá-सं० (हि० संज्ञा) स्त्री० (१) सर्पगंधा। (Ophioxylon serpentinum.) गन्धनाकुली। रा० नि० व० ७। देखो—नाकुली। (२) नागवल्ली, नागवल्ली, पानबेल। पान नाग-बे०। (Piper betle., syn., chavica betle.) रा० नि० व० ११।

अहिलेखन ahi-lekhana-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अहिल्यकम्-सं०। अगमकी-हिं०। (Mukia scabrella, *Arn.*) फा० इं० २ भा०।

अहिलोचिका a hilo-chiká-सं० स्त्री० भूम्यामलकी, भूँई आमला। (Phyllanthus niruri.) वै० निघ०।

अहिल्यकम् ahilyakam-सं० क्लीं० अहिलेखन, पंडाल, अगमकी-हिं०। (Mukia scabrella, *Arn.*) फा० इं० २ भा०।

अहिवधो रसः ahivadho-rasah-सं० पुं० मिट्टी का नया एक ऐसा घड़ा लें जिसमें ४ सेर पक्का पानी आसके। फिर शुद्ध गन्धक १६ तो०, तांबे के पत्र ३२ तो० और सीसे के पत्र ३२ तो० लेकर घड़े के नीचे गन्धक का चूर्ण और उस पर ताम्र पत्र तथा ऊपर से सीसे के पत्र, फिर उसके ऊपर गन्धक का चूर्ण, इस प्रकार घड़े में भरों की तह जमाकर ऊपर से १२ तो० पारे और गन्धक की कजली डालकर घड़ेके मुख को कपड़ा, गुड़ और चूना मिलाकर बन्द करके सुखाकर घड़े को चूल्हे पर रक्खें और नीचे से १२ पहर की तेज आँच दें। जब स्वांग शीतल होजाए तो निकाल कर बारीक पीसकर मोटे कपड़े से छान कर पृथक् रखले।

फिर एक ऐसा घड़ा लें जिसमें पक्का ४८ सेर पानी आसके; फिर उसके भीतर गुड़ और चूने को पानी में पीस कर अच्छी तरह लेप करके सुखालें और एक जवान पुष्ट काला गेहुँअन साँप को पकड़ कर इस प्रकार मारें कि उसके बदन में चोट लगकर छिद्र न हो जाएँ (ग्रीवा में मुँह दबाने से साँप मर जाता है)। फिर उसके पेट में मुख द्वारा ३२ तो० पिसी हुई हरिताल डाल कर ४ तो० पिसा हुआ वत्सनाग डालकर फिर ऊपर से खूब बारीक पिसी हुई ३२ तो० हरताल डालकर उपर्युक्त घड़ेमें ४ तो० पिसा हुआ वत्सनाग और एक सेर बकुची, भिलावाँ और इन्द्रजौ का चूर्ण डालकर ऊपर से उस साँप को गोल चकरी जैसी करके रक्खें। ऊपर से आक की टहनियाँ ६४ तो०, थूहर की टहनियाँ १ सेर, वट जटा की अंकुरें १ सेर और चिरचिटा १ सेर डालकर घड़े के मुख को गुड़ चूने से अच्छी तरह बंद करके ऊपर से कपड़मिट्टी करके सुखालें। फिर उसे चूल्हे पर रख कर नीचे चावल पकने योग्य हलकी आग दें। पुनः ३६ (११२) तो० घी लोहे की कड़ाही में गरम करके घड़ेकी सभी चीज़ उसमें डाल कर नीचे तेज आँच दें और बीच में ८ तो० भुनी फिटकिरी ८ तो० सुहागा से चूर्ण करके थोड़ा थोड़ा चुटकी से डालते रहें। जब कड़ाही के ऊपर आग लगकर सब घी जल जाए तब उसमें उपर्युक्त ताम्बा और सीसा का छाना हुआ चूर्ण मिलाकर बारीक पीस कर रखलें।

इसको १ रत्ती भर से प्रारम्भ करें। चार दिन बाद दूना, फिर चारदिन बाद तिगुना और ४ दिन बाद चौगुना, इस प्रकार जब ४ रत्तीपर मात्रा आ जाए तब उतने ही लेते रहें। ७ दिन तक जौ का दलिया खाएँ। नमक बिलकुल त्याग दें। यदि नमक न छोड़ा जासके तो किंचित् सेंधानमक लिया करें। इस तरह करने से सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त कुष्ट नष्ट हो जाता है। यह त्रिदोष अन्य रोगों और राजयक्ष्मा को नष्ट करता है। रस० यो० सा०।

अहिल्या ahilyá-२ं० स्त्री० वन मेथिका। वन मेथी। (Crotalaria albida.) वै० निघ०।

अहिवल्ली ahi-valli-सं० स्त्री० नागवल्ली। पान। (Piper betle, syn. chavica betle.) मेग० स्व० मं० नि०।

अहिवासन ahivásan-हिं० सज्ञा पु० धनेश पची। (Bucero-.)

अहिविषापहा ahivisháphá-सं० स्त्री० अहिलता, सापमंद। (Ophioxylon serpentinum.) वै० निघ०।

अहिश्तना ahishtaná-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] बच्चों का एक रोग जिसमें उनको पानी सा दस्त आता है, गुदा से सदा मल बहा करता है, गुदा लाल रहती है, घोने पोंछनेसे खुजली उठती है और फोड़े निकलते हैं।

अहिसाव ahi-sáva-हिं० संज्ञा पु० [सं० अहिशावक] साँप का बच्चा। पोआ। सँपोला।

अहि स्कंधः ahiskandhah-सं० पु० गुग्गुल, गड्डा। पायेर गुड़े-बं०।

अही ahí-सं० स्त्री० गवि, गाय। (A cow.)

अहीक़ ahiqa-अ० लम्ब ग्रीव, लम्बी गर्दन वाला। (Long necked.)

अहीन्द्रः ahindrah-सं० पु० शारिवा, अनन्त-मूल। (Hemidesmus Indicus.) च० द० यक्ष्म० चि० लवङ्गादि चूर्ण।

अहीफ़ ahifa-अ० पतले कमरवाला। (Thinloined.)

अहीरणिः ahiranih-सं० पु० द्विमुख सर्प, दुइ मुँहा या दो मुँहवाला साँप। राजिमी। (Double mouthed snake, an erix.) हारा०।

अहीरुहः ahiruhah-सं० पु० शाक वृक्ष। सगुवा-हिं०। (Tectona grandis, Teak tree.)

अहुल ahul-हिं० संज्ञा पु० सोदुल, दुवाल, दुवेल, गह।

अहे ahe-हिं० संज्ञा पु० [देश०] एक पेड़ जिसकी भूरी लकड़ी मकानों में लगती है तथा हल और गाड़ी आदि बनानेके काममें आती है।

अहेर aheia-सिंध० चन्द्रसूर, अहलीव। (Lepidium sativum, Linn.) इं० मे० मे०।

अहेरुः aheruh-सं० स्त्री० शतमूली, शतावर। (Asparagus racemosus, Willd.) अम०।

अहेरो ahero-सिंध० चन्द्रसूर। (Lepidium sativum, Linn.) इं० मे० प्लां०।

अहोर्न ब्लेट्ट्राइजेर फ्लुजेल्सेमान ahornblattriger-flugelsamen-जर० कर्णिकार-सं०। कांटा सोन्द्राल-हिं०। (Peterospermium aserifolium.) इं० मे० मे०।

अहोरात्र ahorátra-हिं० दिन रात, दिवानिशि, अहर्निशि। (Day&night.)

अहौज ahouja-अ० लम्बा मूर्ख आदमी।

अहौम ahoum-अ० विशाल शिरवाला। (Large-headed.)

अहौर ahour-अ० हूरियह, (जिसके नेत्र का श्वेत भाग अत्यन्त श्वेत एवं काला भाग अत्यन्त श्याम हो।

अहौल ahoul-अ० काज़, भैंगा जो एक चीज़ को दो देखे। (Squint.)

अहौलिय्यत ahouliyyata-अ० भैंगापन। स्ट्राबिज़मस (Strabismus.)-इं०।

अहौस ahousa-अ० तंग चश्म-फ़ा०। जिसके एक या दोनों नेत्र संकुचित (छोटे) हों।

अह्जाऽ ahjáa-अ० पालन पोषण करना, खिलाना। (Bringing up.)

अह्जाज़ ahjáza-अ० सोना, सुलाना। (Sleep, cause to sleep.)

अह्तम ahtam-अ० जिसके अग्रिम दंत कवित हों।

अह्ताऽ ahtáa-अ० कुब्ज, कुबड़ा-हिं०। कुज़ पुरत-फ़ा०। (Hunch backed.)

अह्दब ahdab-अ० कुज़ पुश्त-फ़ा०। कुब्ज,

कुबड़ा-हिं०। हंच बैक्ड (Hunch back-ed.)-इं०।

नोट—इसको फ़ा० को अरबी में हुदबा कहते हैं।

अह्दब और अक़्अस का भेद—जिसका पृष्ठ बाहर को निकला हो और वक्ष भीतर को दबा हुआ हो उसे अह्दब और विरुद्ध इसके जिसका वक्ष बाहर को निकला हो तथा पृष्ठ भीतर को दबा हुआ हो उसे अक़्अस कहते हैं।

अह्दब ahdab-अ० वह मनुष्य जिसकी पलकें विशाल हों।

अह्दर ahdar-अ० शोफ बदीय, वह मनुष्य जिसका उदर शोथयुक्त हो।

अह्दल ahdal-अ० गुल्फान, एक अण्डवाला, वह मनुष्य जिसके एक अंड हो।

अह्दाअ ahdáa-अ० कुबड़ा, शोथयुक्त एवं ढीले स्कंधवाला।

अह्दाक़ुल् बक़र ahdáqul-baqara-अ० काला अंगूर। (Black var. of Vitis vinifera.)

अह्दाक़ुल् मर्ज़ी ahdáqul-marzi—अ० उक़्हुवान, बाबूना गाव। (Parthenium matricaria.)

अह्दाब ahdába-अ०(ब० व०), हुद्ब (ए० व०) पलकें। (Eye-lids.)

अह्दिया व अहादिया ahdiyá vaahádiyá -अ० मज़्दहा-फ़ा०। अजगर-हिं०। (Boa constrictor.)

अह्नफ़ ahnafa-अ० क्लृप्त, टेढ़े या टूंटे पाँव वाला। क्लब-फूटेड (Club-footed.)-इं०।

अह्मक़ ahmaqa-अ० मूर्ख, निर्बुद्धि, बुद्धिहीन, बे समझ, सामान्य। इडियट (Idiot.) -इं०।

अह्मदाबादी मेवा ahmadábádi-mevá-यम्य० खिरनी, खीर खजूर, चीरी, राजादनी -हिं०। काकादिया-गु०। राजन, केर्नी-मह०। रायन-गु०। पड्ड-ना०। (Mimusops hexandra, *Roxb.*, *Cor.*) फा० इं० २भा०।

अह्मर ahmar-अ० सुर्ख़, सुर्ख़ रंग-फ़ा० रक्तवर्ण, लाल-हिं०। Red (Rubrum.) हकीमों ने इसकी चार कक्षाएँ निर्धारित की हैं। जैसे—(१) अस्हब अर्थात् सुर्ख़ सफ़ेदी मायल (श्वेताभरक्त), (२) अश्क़र अर्थात् चमकदार गुलाबी, (३) क़ानी अर्थात् गम्भीर रक्त और (४) अक़्तम अर्थात् सुर्ख़ स्याही मायल (श्यामाभ रक्तवर्ण)।

नोट—अह्मर का प्रयोग संकेत रूप में कठिन मृत्यु, मांस, मद्य, केशर तथा एक प्रकार के छुहारे के लिए भी होता है।

अह्मर अक़्तम ahmar-aqtam—अ० श्यामाभ रक्तवर्ण, अधिक कालापन लिए हुए लाल रंग।

अह्मर क़ानी ahmar-qáni-अ० गम्भीर रक्तवर्ण, लाल भभूका, अत्यन्त रक्तवर्ण।

अह्मर नासिअ ahmar-násiá-अ० हलका रक्तवर्ण, पिलाई लिए लाल रंग (पीताभ रक्तवर्ण)। रोग-विज्ञान में हलके लाल या पिलाई लिए हुए लाल रंग के क़ारोरह् (मूत्र) को कहते हैं। यह नारी की अपेक्षा तीव्र होता है।

अह्मश ahmash-अ० जिसकी पिण्डलियाँ पतली और बारीक हों।

अह्याटः ahyátah-सं० पुं० ओकड़ा। प० मु०।

अह्यून ahyúna-यू० एक बूटी है जिसका सिर अजगर के सिर के समान होता है।

अह्रारुल् बुक़ूल ahrárul-buqúla-अ० वह तरकारियाँ जो कच्ची खाई जाती हैं, जैसे काहू आदि।

अह्लब दिया ahlab-diyá-सिरि० शबरम, बाँस के समान एक बूटी है जो खेत और बगीचों में उगती है।

अह्लाम ahlám-अ०(ब० व०), हुल्म (ए० व०)(१) स्वप्न, निद्रा। (Sleep, dream.)

(२) कुस्वप्न। (Bad dream.) देखो-हुल्म।

अह्लता ahvalá-सं० स्त्री० भल्लातक भिलावाँ। (Semecarpus anacardium.) श० च०।

अह्वाल ahvála-अ० (ब० व०) दशा, अवस्था, लक्षण। तिब (वैद्यक) की परिभाषा में मनुष्य शरीर की तीन अवस्थाएँ अर्थात् स्वास्थ्य, रोग, तीसरी अवस्था (हालते सालसा) जो रोगारोग के मध्य मानी जाती है, यथा—सहजोयता आदि।

अह्वियह ahviyah-अ० (ब० व०), हवा (ए० व०) वायु, हवा-हिं०। (Atmosphere.)

अह्शा ahshá-अ० (ब० व०), हशा (ए० व०), वक्षोदरान्तरिकावयव, उदर एवं वक्ष के भीतर स्थित अवयव। विसरा Viscera (ब० व०); विस्कस Viscus (ए० व०)-इं०।

नोट-(१) वक्षान्तरिक अवयव को अह्शा सद्री एवं उदरान्तरिक अवयव को अह्शा बत्नी और पेड़ू अर्थात् बस्तिगह्वरस्थ अवयव को अह्शाउल् आनह् कहते हैं।

(२) डॉक्टरी में मस्तिष्क का भी अह्शा में ही समावेश होता है।

अह्शाउल् आनह् ahshául-áanah-अ० पेड़ू के जोफ़ में स्थित अवयव विशेष। जैसे जरायु, बस्ति (मूत्राशय) आदि बस्तिगह्वरान्तर अवयव विशेष। पेल्विक विसरा (Pelvic viscera.)-इं०।

अह्शाउल् बत्न ahshául-batna-अ० औदरीय अवयव, उदरके भीतर स्थित अवयव, उदराशयस्थ अवयव। जैसे-आमाशय, यकृत, प्लीहा तथा आन्त्र प्रभृति। Abdominal viscera.

अह्शाउस्सद्र ahsháussadra-अ० वक्षीयावयव, वक्ष के भीतर स्थित अवयव। जैसे-हृदय, फुप्फुस आदि। थोरेसिक विसरा (Thoracic viscera)-इं०।

अह्सा ahsá-अ० (ब० व०), हुसा, हस्व (ए० व०) हरीरा, दूधी, एक प्रकार का पतला आहार है जो साधारणतः सपूम (भूसी), शर्करा और बादाम तैल आदि के योग से निर्मित किया जाता है। देखो-हरीरा (harírá)।

अक्षः akshah-सं० पुं०
अक्ष aksha-हिं० संज्ञा पुं० [स्त्री० अक्षा]

(१) विभीतकी। बहेड़ा। (Terminalia belerica) रा० नि० व० ६। भा० प्र० ४ भा० अञ्जन। "अक्षत्वक्कारकैर्मलमापसन्नु।" यक्ष्मा० एलादि मन्थ वृन्द०। सि० यो० सिद्ध मतयोग कु० कास० वृन्द०। वृन्द०। (२) कर्ष परिमाण। कर्ष नामक तौल जो १६ माशे की होती है। प० प्र०। देखो—कर्षः। (३) रुद्राक्ष वृक्ष। भा० अने० व०। (४) इन्द्राक्ष। ऋषभक। (५) सर्प। साँप। (A serpent) मे०। (६) स्वर्ण। सोना। (७) ऋषभक। (८) देव विशेष। विशेष विशेष। रा० नि० व० ६।

क्ली० (९) विषयेन्द्रिय। इंद्रिय। रा० नि० व० १८। शा० शा० ३ अ०। (१०) सौवर्चल लवण, कालानोन। (Sochal salt.)। (११) तुत्थक। तूतिया। मे० पद्विक। (१२) विभीतक फल। (१३) पद्म बीज। रा० नि० व० ११।

हिं० संज्ञा पुं० (१४) धुरी। किसी गोल वस्तु के बीचों बीच पिरोया हुआ वह छड़ या डंडा जिस पर वह वस्तु घूमती है। (१५) Pivot पहिए की धुरी। (१६) Axis वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतरी केन्द्र से होती हुई उसके आर पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई मानी गई है। (१७) तराजू की डाँडी। (१८) सोहागा। टंकण (Borax)। (१९) आँख, नेत्र। (An eye)। (२०) गरुड़। (२१) जन्मांध। (Born blind)

अक्षकः akshakah-सं० पुं० (१) विभीतकी, बहेड़ा। (Terminalia belerica) भा० पू० १ भा०। (२) तिनिश वृक्ष,

सिरिष । (Lagerstræmia flos reginæ) र० मा० । "सिरसमसमं सिरेत्।" च० द० उरास्तिया-चि० । (३). रुद्राक्ष वृक्ष । श० र० । (४) इन्द्राक्षवृक्ष । (५) सर्प । (६) २ तो० मान । मे० षद्विकं ।

अक्षकम् akshakam-सं० क्लो०
अक्षक akshaka-हिं० संज्ञा पु'० } अक्षकास्थि, हँसली । Collar bone (Clavicle) । अज़्म तुक़ वह्, अज़्मुत्तुर्क़ वह्-अ० ।

अक्षक सन्धिस्थालक akshak-sandhi-sthálaka-हिं० संज्ञा पु'० (Facet for clavicle)

अक्षकङ्काल aksha-kankála-हिं० संज्ञा पु'० (Axial skeleton.)

अक्षकाधर akshakádhar-हिं० वि० । (Subclavicular) हँसलीके नीचे का ।

अक्षकाधर शिक्यम् akshakádhara-shikyam-सं० क्लो० (Ansa subclavia.)

अक्षकाधरा akshakádhará-हिं० संज्ञा स्त्री० अक्षकास्थि तथा पहिली पंसली के बीच में रहने वाली एक पेशी विशेष । (Subclavius infraclavicular.) अज़्लह् तह् तुक़ वह्-अ० ।

अक्षकाधरा धमनी akshaká dhará-dhamani-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० अक्षकाधोवर्तिनी धमनी । (Subclavian artery.)

अक्षकाधोधमनी akshakádho-dhamani-हिं० संज्ञा स्त्री० हँसली के नीचे की धमनी । यह हँसली के नीचे के अंगों में शुद्ध रुधिर देती है । (Subclavian artery).

अक्षकाधो पेशी akshakádho-peshí-हिं० संज्ञा स्त्री० हँसली के नीचे की पेशी । (Subclavious muscle.)

अक्षकाधोवर्तिनी धमनी akshakádho-vartini-dhamani-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० हँसली के नीचे की धमनी । (Subclavian artery.) शिर्यान तह् तुक़ वह्-अ० ।

अक्षकाधोवर्त्ती शिरा akshakádho vartti-shirá-हिं० संज्ञा स्त्री० हँसली के नीचे की शिरा । (Subclavian vein.)

अक्षकान्तरच्छिद्रम् akshakántara-chchhidram-सं० क्लो० (Jugular notch.)

अक्षकान्तरीय स्नायुः akshakántariya-snayuh-सं० पुं० (Inter clavicular.)

अक्षकारका akshakáraká-हिं० संज्ञा स्त्री० घृतकुमारी । (Aloe Indica) वै० निघ० ।

अक्षकाष्ठम् akshakáshtham-सं० क्लो० बिभीतक काष्ठ । Terminalia belerica (The root of-) च० द० पाण्डु-चि० ।

अक्षकास्थि akshakásthi-हिं० संज्ञा स्त्री० अक्षक । हँसली की हड्डी । (Clavicle,)

अक्षकूट akshakúta-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] आँख की पुतली ।

अक्षकोत्तरा akshakottará-सं० (हिं० संज्ञा) स्त्री० (Supra clavicular.)

अक्षगणः aksha-ganah-सं० पुं० श्रोत्रादि इन्द्रिय समूह । ज्ञानेन्द्रियाँ । विषयेन्द्रियाँ । (The organs of sense.)

अक्षगन्धिनी aksha-gandhini-सं० स्त्री० अतिबला । कंघी । ककही । (Sida rhombifolia.) वै० निघ० ।

अक्षणी akshaní-सं० स्त्री० चक्षु । नेत्र ॥ अथ० । १० । २ । ६ ।

अक्षतः akshatah-सं० पुं०
अक्षत akshata-हिं० संज्ञा पुं० } (१) (Barley.) यव, जौ । (२) (बहु०) आतप तण्डुल (चावल) । रा० नि० व० १६ । (३) शस्य मात्र । धान्य आदि, व्रीहि यवादि । अ० टी० भानुः । सं० क्लो० (४)

लाजा। धान का लावा। मे० । यव। जौ। (Barley) प० मु०।

"लाजेषु स्त्रियहिमिते। यवेऽपिकथित्" ।

मे० तथिक। कोई बिना टूटे हुए चावल को कहते हैं जो देवताओं की पूजा में चढ़ाया जाता है।

सं० त्रि०, हिं० वि० (१) अक्षय। जिसमें क्षत या घाव न किया गया हो। (२) नहिं सत। मे०।

(३) अखंडित। बिना टूटा हुआ। सर्वांग पूर्ण। समूचा। श०।

अक्षतण्डुला akshatandulá-सं० स्त्री० महा सर्नगा क्षुप। रा० नि० व० ५।

अक्षतयोनि akshata-yoni-हिं० वि० [सं०] (कन्या) जिसका पुरुष से सम्बंध न हुआ हो। कुमारी। बर्जिन (Virgin.), वर्जो इन्टैक्टा (Virgo-intacta.)-इं०। बाकिरह्, बक्र्, राउ, दोशीज़ह्, नाबालिग़ह्-अ०। दोशीज़ह्-फ़ा०। कुँवारी, कुँवारी औरत-हिं०, उ०।

हिं० संज्ञा स्त्री० (१) वह कन्या जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो। (२) वह कन्या जिसका विवाह हो गया हो पर पति से समागम न हुआ हो।

अक्षतरोगः akshata-rogah-सं० पुं० उपनख रोग विशेष।

लक्षण—वात पित्त कुपित होकर नख के मांस को पका देते हैं जिससे वेदना और ज्वर पैदा हो जाते हैं। इसरोग को चिप्प, अक्षत या उपनख रोग कहते हैं। यथा-"कुर्यात्पित्तानिलौ पाकं नख मांसे सरुग्ज्वरम्, चिप्पमक्षत-रोगं च विद्यादुपनखं च तम्।" वा० उ० ३१ अ०। नाखून झाड़ा-बं०।

अक्षतवीर्य akshata-viryya-हिं० वि० [सं०] जिसका वीर्य पात न हुआ हो। जिसने स्त्री संसर्ग न किया हो।

अक्षता akshatá-हिं० वि० [सं०] जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो।

संज्ञा स्त्री० (१) वह स्त्री जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो।

(२) धर्मशास्त्र के अनुसार वह पुनर्भू स्त्री जिसने पुनर्विवाह तक पुरुष संयोग न किया हो।

(३) कर्कटशृंगी, काकड़ासींगी। (Rhus acuminata.)

अक्षते-चे-खोरा akshate-che-khora-अक्षत। फा० इं०।

अक्षतैलम् aksha-tailam-सं० क्ली० बहेड़ा का तेल, विभीतक तैल। बयड़ा बीजेर तैल-बं०। (Terminalia belerica (Oil of-) वा० उ० १३ अ०।

अक्षदण्ड aksha-danda-

अक्षधरः aksha-dharah-सं० पुं० शाखोट वृक्ष। शेओड़ा गाछ-बं०। भूरि प्र०। (Trophis aspera.)

अक्षधुर aksha-dhura-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] पहिए की धुरी।

अक्षधूर्त्तः,-र्त्तिलः aksha-dhúrttah,-rttilah-सं० पुं० वृषभ। बैल। षाँड़-बं०। (A bull, an ox.) हारा०।

अक्षन akshana-हिं० संज्ञा पुं० (Axom.) पेड़ की जो शाखा भारी बन जाती है उसे अक्षन कहते हैं।

अक्षपाकः aksha-pákah-सं० पुं० अक्ष लवण। (Sochal salt.) वै० निघ०।

अक्षपिंडः aksha-pindah-सं० पुं० शंखपुष्पी। (Andropogon acicularium.) वै० निघ।

अक्षपीडः aksha-pidah-सं० पुं० (१) श्वेत पुष्प। श्वेतपुष्पक्षुप। र० स० चि० ४ अ०। (२) दुरालभा। (Alhagi maurorum.) सु० चि० ६ अ०।

अक्षपी(ड़का)ड़ा akshapi(daká),-dá-सं० स्त्री० (१) काकमेष। शंखिनी। यवतिक्ता। (Andropogon paniculata, Nees.) रा० नि० व० ३। (२) श्वेत पुष्प। सु०। प० मु०।

अक्षमः akshamah-सं० पुं० (१) स्थूल

मूषक। (२) वन चटक, जंगली गौरैया। (Wild-sparrow) वै० निघ०। (-मा) स्त्री० (१) असान्ति। ईर्ष्या। (Envy.) श० र०। (२) असमर्थ। अशक्त।

अक्षम akshama-हिं० वि० [सं०] [संज्ञा अक्षमता] (१) क्षमारहित। असहिष्णु। (२) असमर्थ। अशक्त। लाचार।

अक्षमता akshamatá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] (१) क्षमा का अभाव। असहिष्णुता। (२) असामर्थ्य।

अक्षमाला akshamálá-हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] रुद्राक्ष की माला।

अक्षय akshaya } -हिं० वि० [सं०] जिसका क्षय न हो। अविनाशी। अनश्वर। सदा रहने वाला।
अक्षय्य akshayya }

अक्षरः aksharah-सं० पुं० }
अक्षर akshara-हिं० संज्ञा पुं० }
(१) अपामार्ग, चिचड़ा। (Achyranthes aspera.) इं० च०।-सं० क्लो० (२) जल (Water)। (३) अपामार्ग जल। (४) आकाश। (५) अकारादि वर्ण। हरफ़।-हिं० वि० अच्युत। स्थिर। अविनाशी। नित्य।

अक्षरुचकम् aksha-ruchakam-सं० क्लो० मृत्तिका लवण। खारी मिट्टी। मोरा-बं०। सोर मिट-मह०। वै० निघ०।

अक्षरेखा aksha-rekhá—हिं० संज्ञा स्त्री० [सं०] धुरी की रेखा। वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के भीतर केन्द्र से होती हुई दोनों पृष्ठों पर लंब रूप से गिरे।

अक्षल गुड़ः akshala-gudah-सं० पुं० (Axis cylinder.)।

अक्षवाट् aksha-váṭ-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] अखाड़ा। कुश्ती लड़ने की जगह।

अक्षवीर्यवान् aksha-víryyaván-सं० पुं० श्वेत करवीर, श्वेत कनेर। Nerium odorum (White var. of-) वै० निघ०।

अक्षशिरोधिजा aksha-shirodhijá—सं० स्त्री० मन्याम्य शिरा। वै० निघ०।

अक्षसमा aksha-samá-सं० स्त्री० (Axis vertebra, second cervical vertebra.)

अक्षसमा पृष्ठकीया संधिः akshasamá-prishṭhakiyá-sandhih-सं०स्त्री०(Occipito-axial joint.)

अक्षसस्यम् aksha-sasyam-सं० क्लो० कपित्थ फल, कैथ। कवित-म० (Feronia elephantum.) वै० निघ०।

अक्षसूत्र akshasútra-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] रुद्राक्ष की माला।

अक्षहीन akshahína-हिं० वि० [सं०] नेत्र-हीन। अंधा।

अक्षांश akshánsha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] (१)भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवसे होतीहुई एक रेखा मानकर उसके ३६० भाग किए गए हैं। इन ३६० अंशों पर से होती हुई ३६० रेखाएँ पूर्व पश्चिम भूमध्य रेखा के समान्तर मानी गई हैं। अक्षांश की गिनती विषुवत् या भूमध्य रेखा से की जाती है। (२) वह कोण जहाँ पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है।

अक्षार लवण akshára-lavaṇa-हिं० संज्ञा पुं० (१) वह लवण जिसमें क्षार न हो। वह नमक जो मिट्टी से निकला हो। नोट—कोई कोई सेंधे और समुद्र लवण को अक्षार लवण मानते हैं। (२) वह हविष्य भोजन जिसमें नमक न हो और जो अशौच और यज्ञ में काम आवे। अकृत्रिम सैंधव आदि। जैसे दूध, घी, चावल, तिल्ल मूँग और जौ आदि। हारलता।

अक्षि akshi-सं० क्लो०, हिं० संज्ञा स्त्री० नेत्र, आँख, नयन। (Eye.) रा० नि० व० १८।

अक्षिकः akshikah-सं० पुं० }
अक्षिक akshika-हिं० संज्ञा पुं० }
(१) रजन वृक्ष। आउच गाछ-बं०। (Dalbergia oujeinensis.) रत्ना०। (२)

आल का पेड़। आल्कुक। (Morinda citrifola.)

अक्षिकुण्डः akshi-kundah-सं० पु० (Orbit) अक्षिखात।

अक्षिकुण्डीय akshi-kundiya-सं० हि० (Orbital) अक्षिखात सम्बन्धी।

अक्षिकूटः,-कम् akshi-kútah,-kah-सं० पु० (१) Eye ball. इंगिका, नेत्रतारा, अक्षिगोलक। वा० सू० २ अ०। (२) नतास्थिपुटक, नतास्थि गोलक। हे० च०।

अक्षिकूणितम् akshi-kúnitam-सं० क्लो० अपांग दृष्टि।

अक्षिकृष्णम् akshi-krishnam-सं० क्लो० नेत्र का काला भाग। शतपथ०।

अक्षिखात akshi-kháta-हि० संज्ञा पु० अक्षिगुहा, नेत्रगुहा, आँख के रहने के गड्ढे की गुफा। (Orbits of eyes, orbital cavity.)

अक्षिगु(गू)हा akshigu,-gú,-há-सं० हि० संज्ञा) स्त्री० आँख के गड्ढे। आँख के रहने के गड्ढे की गुफा। (Orbit of eyes.) प० प्रा०।

अक्षिगोलः akshi-golah-सं० पु० नेत्रतारा। (The ball or globe of the eye) वै० श० सि०।

अक्षिगोलक akshi golaka
अक्षिगोलम् akshi-golam
-सं० क्लो० आँख का डेला। (Ball of the eye.)

अक्षिचालनी akshi-chálani-सं० स्त्री० (Oculo-motor.)

अक्षिच्छादनम् akshichchhádanam-सं० क्लो० अक्षिपक्ष्म, अक्षिवर्त्म। (Eye-lash, cilia) रत्ना०।

अक्षिणी akshini-सं० क्लो० चक्षु, नेत्र। अथर्व० सू० २।२३। का० १।

अक्षितारा akshi-tárá-हि० संज्ञा स्त्री० [सं०] (आँख की पुतली।

अक्षिदण्ड, akshidanda-हि० संज्ञा पु० (Axis.) अक्ष।

अक्षिपञ्चकम् akshi-panchakam-सं० क्लो० श्रोत्र, त्वचा, रसना, नेत्र और नासिका। रा० नि० व० १८।

अक्षिपटल akshi-patala-हि० संज्ञा पु०

अक्षिपटलम् akshi-patalam-सं० क्लो० आँख का परदा। आँख के कोए पर की झिल्ली, नेत्रपटल। पलक। (Eye-lid, A coat of the eye.)

अक्षिपक्ष्म akshi-pakshma-सं० क्लो० नेत्र लोम, अक्षिवर्त्म, बरौनी। (Eyelash Cilia). सु० शा० ३।१४।

अक्षिपाकात्ययः akshipákátyah-सं० पु० अक्षि कृष्ण गत रोग विशेष।

लक्षण—जिसकी आँखों से गरम पानी गिरे से फुन्सी हो जाए। दोनों पटलों में शुक्र प्राप्त हो जाने से ये लक्षण होते हैं। जिसमें मूँग के समान शुक्ल हो वह असाध्य है और जो तीतर के पंख के समान (काले रंग का) हो उसको भी कोई कोई असाध्य कहते हैं। तीनों दोषों से जिसके नेत्र के काले भाग में चारों ओर से सफेदी छा जाती है उस नेत्रपाक के त्रिदोषज अक्षिपाकात्यय नामक नेत्र रोग वैद्यों के त्याग करने योग्य है। मा० नि०।

अक्षिपीलुः akshi-piluh-सं० पु० महानिम्ब। (Melia azedarach.) वै० निघ०।

अक्षिबुद्बुदः akshi-budabudah-सं० पु० (Optic vesicle, Bulb of the eye.)

अक्षिभेषजम् akshi-bheshajam-सं० क्लो० (१) रक्तलोध। सफेद लोध। मद० व० १। पट्टिका लोध, पठानी लोध। रा० नि० व० ६। (२) नेत्रौषध, नेत्राञ्जन।

अक्षिमण्डलम् akshi-mandalam-सं० क्लो० नेत्रमण्डल। शतप०।

अक्षिरोगः akshi-rogah-सं० पु० नेत्ररोग, चक्षुरोग। (An eye disease.)

अक्षिलोम akshi-loma–सं० स्त्री० नेत्ररोम, अक्षिपक्ष्म, बरौनी । (Eyelash, Cilia.)

अक्षिवः akshivah–सं० पुं० (१) शोभाञ्जन वृक्ष, सहिंजन । शजना-बं० । (Guilandina or Hyperanthera moringa.) । (२) मरिच । (Pepper.) रा० नि० व० ७ ।–स्त्री० (३) समुद्र लवण । (Sea salt.) अ० टी० भ० ।

अक्षिवर्त्म akshi-vartma–सं० स्त्री० अक्षिपक्ष्म । (Eye lash.)

अक्षिविचूर्णितम् akshi-vichúrṇitam–सं० क्लीं० अपांग दृष्टि । हे० च० ।

अक्षिवैराग्यम् akshi-vairágyam–सं० क्लीं० आँख का लाल होना, नेत्र विरक्तता । "चकोरस्याक्षि वैराग्यम् ।" वा० सू० ७ अ० ।

अक्षिशूल akshishúla–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] नेत्र वेदना । आँख का दर्द ।

अक्षिशुक्लम akshi-shuklam–सं० क्लीं० नेत्रका सफ़ेद भाग । शतप० ।

अक्षिशोष akshi-shosha–हिं० संज्ञा पुं० [सं०] नेत्र शुष्कता ।

अक्षिसेचनम् akshisechanam–सं० क्लीं० नेत्रनिस्तोद या आश्चोतन अर्थात् परिषेक । इसकी विधि निम्न हैः—

विधि—रोगी को वातरहित स्थान में बैठा कर बाएँ हाथसे आँख खोलकर सीपी, अथवा रुई के फाहे से दो अंगुल ऊँचे से आँख के नारे पर दस-बारह बूँद डाल दें । तत्पश्चात् कोमल वस्त्र से पोंछ कर गुनगुने पानीमें चेलवर्ति को भिगोकर धीरे धीरे आँखों में स्वेदन करें । यह आश्चोतन वात कफ में किया जाता है रक्तपित्त में नहीं । वा० सू० २३ अ० ।

अक्षिहुण्डनम् akshihundanam–सं० क्लीं० नेत्रव्युदास । मा० नि० विज० र० ।

अक्षीकः akshíkah–सं० पुं० वृक्ष विशेष । आउच-बं० । रत्ना० । (A tree.)

अक्षीण akshiṇa–हिं० वि० [सं०] (१) जो न घटे । (२) अविनाशी ।

अक्षीणनामारसः akshiṇanámá-rasah–सं० पुं० स्वेदन तथा पातन किए हुए और संस्कार से बीजोत्पादित पारे में षोडशांश सुवर्ण का जारण करें । इसके पश्चात् १६ गुना गंधक जारण करें । फिर पारे का चतुर्थांश सुवर्ण और १६ वां भाग गंधक डालकर, जम्भीरी के रस अथवा किसी भी खटाई से मर्दित करके टिकड़ी बनाएँ । फिर कच्छपयंत्र में या सोमनाल यंत्र में नीचे ऊपर पिट्टी में चूना या तिगुना गंधक देकर पिट्टी को बीच में दबाएँ । फिर चूल्हे पर चढ़ा कर ३ दिन तक मंद मंद अग्नि दें । इस तरह करने से सुवर्ण के साथ पारे की भस्म होती ।

उपर्युक्त विधि से मारा हुआ पारा १ भा०, कांतपाषाण या इससे निकाला हुआ लोह भस्म १ भाग, मारा हुआ अभ्रक सत्व, ताम्रभस्म एवं शुद्ध गंधक दो दो भाग, इन सबको खरल में डाल कर तीन दिन तक लगातार मर्दन करें । फिर इसकी टिकियाँ बना छाया में शुष्क कर भूधर यंत्र में करीष की अग्नि दें । फिर इसको निकालकर शीशी में रखें ।

मात्रा–१ मा० रस गुडूची सत्व तथा योग्यतानुसार मुलेठी और वंशलोचन व शहद मिलाकर चाटें तो ४ महीने में पथ्य सेवी के क्षय को निर्मूल कर देता है ।

पथ्य–चावल, गोघृत, तक्र, गेहूँ और जौ । रस० यो० सा० ।

अक्षीवः akshivah–सं० पुं०
अक्षीव akshiva हिं० संज्ञा पुं०
(१)शोभाञ्जन, सहिंजन का पेड़ । (Moringa pterygosperma) मे० वत्रिक० । च० सू० ४ अ० कृमिघ्न व०, नि० ३ अ० । (२) महानिम्ब । (Melia azedarach) भा० पू० १ भा० । (३) बधिर, वक ।–स्त्री० (४) सामुद्र लवण, समुद्री नमक । (Sea salt) पाङा-बं० । भा० पू० १भा० । (५) मरिच । Black pepper (Piper nigrum) ।–त्रि०, हिं०वि० अमत्त । जो मतवाला न हो । चैतन्य । धीर । शांत ।

अक्षुण akshuna-हिं० वि० [सं०] (१) अभग्न। बिना टूटा हुआ। अच्छिन्न। समूचा। (२) अकुशल, अनाड़ी।

अक्षेयः aksheyah-सं० पुं० रक्तार्क, लाल मदार। पै० नि० । Calotropis gig n-tea (The red var. of-) देखो-आक।

अक्षोटः,-कः,-की akshotah,-kah,-ki -सं० पुं०, स्त्री० अखरोट, अकरोट। The walnut (Juglans regia.) देखो अखरोट।

अक्षोट तैलम् akshota tailam-सं० स्त्री० अखरोट का तेल। (Walnut oil.) गुण-मूलक (मूली) तैलवत्।

अक्षोड़,-कः akshoda,-kah-सं० पुं० अखरोट। Juglans regia (The walnut.) र० मा०।

अक्षोभ akshobha-हिं० संज्ञा पुं० [सं०] क्षोभ का अभाव। अनुद्वेग। दृढ़ता। धीरता। स्थिरता।

वि० क्षोभरहित। चंचलता रहित। उद्वेग शून्य। स्थिर। गंभीर। शांत।

अक्षोहारः akshoharah-सं० पुं० मधु खर्जूरी, मीठा खजूर का पेड़। पै० निघ०।

अक्ष्णा akshná-सं० स्त्री० चक्षु, नेत्र, आँख। (Eye)

अक्ष्यम् akshyam-सं० क्ली० सौवर्चल लवण, सोंचर (र) नमक। (Sochal salt.)

अक्ष्यस्थिः akshyasthih-सं० पुं० अश्रु-अस्थि। (Lacrimal bone.)

अज्ञातयक्ष्मा ajnyáta-yakshmá-सं० पुं० अज्ञात स्वरूप संत दोष से लगनेवाले रोग। अथ०। सू०। ११। ३। का० १।

शुद्धिपत्र (ERRATA)

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
ग		३	जुम्मेशोरी	जुम्मेशोरी
ग		६	शातलं	शीतलं
घ		२१	संघन	सघनं
ङ		९	पूयच्छेर	शयच्छेर
च		१६	हिंदो	हिंदी
छ		८	रावुयदीय	रायुर्वेदीय
१	१	१	श्रोर	श्रोर
१	२	१९	श्रा	श्रौं
२	२	१३	aázán	aāẓán
२	२	१५	"	"
३	२	१७	मुश्रायिह तुल मश्ज़्ज़ाम्	मुशायिह तुल्मज्ज़ा
५	१	२९	Tomotosa	Tomontosa
"	"	२८	Ægptiaca	Ægyptiaca
"	'c	३४	Integrifoila	Integrifolia
"	२	१४	Embroyo	Embryo
"	"	३५	Laeppálai	lappálai
६	१	१६	पु	पुं
"	"	३७	अनाक़ा	अनौक़ी
"	२	४३	āqadúniyá	aqadúniyá
७	२	१९	पु	पुं
"	"	२९	āqarqarhá	āaqarqarhá
८	१	४२	तिव्यो	तिव्यां
१२	१	१८	akarkántá	akara kánṭá
"	१	३०	कज़्द्रुम	कज़्द्रुम
"	२	१६	पु	पुं
"	"	२५	पु	पुं
१३	२	२१	पु	पुं
१४	१	५	पु	पुं
१४	१	७	पु	पुं
१५	१	१५	हैं	हैं
"	१	५	पु	पुं
"	२	८	पु	पुं
"	"	१०	पु	पुं
"	"	१५	पु	पुं
"	•	२०	अकारकरभः	अकाकरभः
"	"	"	पु	पुं
"	"	२६	शव्द	शब्द
१७	२	१३	पु	पुं
"	"	२३	akár-kántá	akár-káṇṭá
१८	१	८	पु	पुं
"	"	२१	पु	पुं
"	"	२४	पु	पुं
१८	२	२४	पु	पुं
"	"	३०	पु	पुं
१९	१	१६	पु	पुं
"	"	२४	कक्स्युटा	कस्क्युटा
"	"	२५	Cusuta	Cuscuta
२०	१	१०	श्रोर	श्रोर
"	"	१७	वालों	वाला
"	२	२०	स्र	श्र
२१	१	५	पु	पुं
"	"	८	पु	पुं
"	"	१०	aqiqa	aqíqa
"	"	"	पु	पुं
"	"	११	āaqiq	āaqíq
२१	"	२१	ज्योति	ज्योति
"	२	४	रो I	रोठा
"	"	५	ने	में
२२	१	१५	।घः	अधः
"	"	३६	श्र(प) कौरेन्थीस	अ(प) कौरैन्थीस
२२	२	१४	ई	ई
२३	२	२७	स	श्र

पृष्ठ	कालम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
"	"	"	रोगन	रोग़न
२३	२	३०	Necca	Mecca
"	"	"	Balm	Balsam
२४	१	२	पु	पुं
"	"	६	पु	पुं
"	"	६	Hotero-phyllum	Hetero-phyllum
"	"	१३	खानिकुब-नमिर	खानिकुब-मिर
"	"	१६	अक़्नस्यून	अक़्नोस्यून
"	"	२५	aqumar shún	aqúmár-shúna
"	"	२७	वंच	वच
"	"	३४	पु	पुं
२५	१	२१	उसपर्ग	उपसर्ग
"	२	१७	श्र	अ
२६	१	३	अफ़ा	अ०, फ़ा०
"	"	२८	तेल गुनाम	तेलगु नाम
"	२	१०	वर्मा	वर्मी भाषा,
२७	१	८	वाला	वाली
"	"	११	इसका आता	इसकी आती
"	२	३५	अगोला	अगेला
२८	२	७	ओपधियां	ओषधियाँ
"	"	२७	aakki	akki
२९	२	२७	अक़्दीदूस	अक़्क़ीदूस
"	"	२८	āqna	āaqna
"	"	३२	वाला	वाला
३०	२	२२	aqr.fa	aqraf
३०	२	२५	अक़यी	अक़वी
"	"	२८	हिं० व०	हिं० वि०
"	"	३१	अकाश्र्	अकाश्
३१	१	१३	पर्व	पर्व
३१	१	१४	Phormac opoeea	Pharm acopoeia
"	"	१५	Despens atory	Dispensa tory
"	२	१५	anb	and
		१६	aklah	aklah

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
"	"	२५, २६	केवाँच	केवाँच
"	"	३२	Indigoplmt	Indigopl ant
३२	१	२	वायुगोला	वायुगोला
"	१	२३	पु०	पुं०
"	"	३१	श्र	अ
"	"	३५	सं०	सं० क्री०
"	२	४	यत्त	यत्त
"	"	३३	अग	अगर
३३	२	२६	व यासलांक	व यासलीक
"	"	३५	अक़्दाल	अक़्दाल
"	"	"	अ०	अ०
३४	१	५	निककती	निकलती
३६	१	१५	सुग्र	सुद्र
३७	१	२३	पीताभयुक्त	पीताभायुक्त
"	"	२६	हरिताभयुक्त	हरिताभायुक्त
"	२	१३	अफ़ाक	अफ़्फ़ाक
३६	१	३०	agadnk-arah	agadank-arah
"	"	३१	agadnka-rah	agadanki-rah
"	२	११	विप	विपघ्न
"	"	३०	गअन	अगन
"	"	३२	अगन् चश्मानो-का	अगन चश्मानो काँव
"	"	३३	हिं० पु०	पुं०
४०	१	१५	agnaeú	aganeú
		१६	agnat	aganeta
४२	१	१४	दिपेरा	दिपेरा
४३	१	१२	गाड़	गाड़
४५	२	१	लाड	लार
"	"	१७	भरीं	भुरीं
४८	१	३५	Knid	Kind
"	२	६	कृष्णागुरु	कृष्णागुरु
५०	२	२	कटिकुट	फटिकुट
			थौर	और
५१	१	२	अगस्ति	अगस्तिय
"	"	३५	इसकां	इसको
"	२	१३	पाक	पोक
५४	२	१६		

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५५	१	१५	मo	मोo,
५५	१	२०	aghárah	agharah
"	"	२२	agārdhú-mah	agára-dhúmah
"	"	२४	tay	tai
"	"	२५	धुवाँसा	धुवाँसा
	२	४	झाक	शोक
५८ / "	१ / १	२४ / २५	रोगोद्घाटक	रोघोद्घाटक
"	२	३०	seciations	secretions
५९	२	२७	व्यौहार	व्यवहार
"	"	३०	(घातकी)	(घातकीन)
६०	२	१५	रोगो	रोगी
"	२	२६	अघोरी	अगोरी
६१	२	२४	Zlanicum	Zeylan-icum
६२	१	११	Succnum	Succinum
"	"	१२	agdi	aghi
६४	१	३४,३५	obious	obvious
"	२	७	fadu	fabu
६५	१	२३	phthisis	pthisis
६७	१	२३	कर्पास	कार्पास
६८	१	३१	आचार्यों	आचार्य
६८	१	३१	वच का भी	वच भी
"	२	३८	Cardissper-mum	Cardios-permum
७०	१	८	jaani	janani
७२	२	३५	वातष्ठीला	वाताष्ठीला
७३	२	५	मन्त्र	यन्त्र
७३	२	२८	mákham	mukham
७५	२	६	पुं०	क्लीo
७५	२	१७	पुं०	क्लीo
७५	२	३२	Verden-ace œ	Verben-ace œ
७६	१	३२	राहिणी	रोहिणी
७७	२	३	virryyam	viryyam
७८	१	१०	vasha	Vesha
७९	१	१०	अरंड-कुसुम	अरण्य कुसुम

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८०	२	६	(१)	(२)
"	"	१०	nartridge	partri-dge
"	"	१७	लघ्लवद्य	लघ्लवद्
"	"	३२	काय	कार्य
८१	१	८	सं०	संज्ञा
"	"	१५	adj	adj.
८१	२	३५	य०	प०
८३	२	२५	bont	bent
८४	२	६	गिशश्र्	गिशाश्र्
८५	१	७	कोरिश्रा	कोरिश्रान्
८७	१	१६	dentala	dentata
"	"	२६	अङ्कारा	अङ्कार
"	२	४	चेट्ट	चेट्टु
"	२	३६	उगन	उगना
"	"	३६	खोंना	खोंथा
८८	१	६	अङ्कर	अङ्कुर
"	"	२६	अङ्कुशकास्थि	अङ्कुशास्थि
"	"	२६	ankush-asthi	ankuṣ-hásthi
"	२	१	अङ्कशिन	अङ्कुशिन
"	"	६	अङ्कला	अङ्कुला
८९	१	१	उपयोग	उपयोग
"	१	२६	गर्भः, वपच्नः	गर्भविपच्नः
९०	१	३७	Lanlarck	Lamarck
९१	२	२८	का	के
९२	१	८	करता	×
"	"	६	हरण	हरण करता
"	२	३३	थोड़ी	थोड़े
९४	१	१०	प्रमति	प्रभृति
९५	१	२०	peptalum	petalum
"	१	२१	अङ्कालमु	अङ्कोलमु
९६	२	३८	angada-dam	angadam
९८	१	२८	व्यथ	व्यध
"	२	१	वाहन	वहन
"	"	१७	ला	का
९९	१	१३	घेदन	घेरना

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९९	२	२९	Zinzibar	Zingiber
१००	१	३१	अह्लसदनन्	अह्लसदनम्
१०१	१	१४	संयाग	संयोग
१०२	२	३०	टका	टीका
१०३	२	३१	Can	Cano
१०५	१	६	अयवय	अवयव
१०६	२	१	अङ्ग्पष्टम्	अङ्गुष्पष्टम्
१०७	२	२०	Jodid	Iodide
१०८	२	२६	Ointmot	Ointment
१०८	२	३८	Varetrni	Varetrini
१०९	२	५	धन्वकम्	ध्न्यकम्
"	"	२०	स्टेपीसेमा	स्टैफीसग्री
११०	२	२६	हेमेनेलिस	हेमेमेलिस
१११	१	१६	अंगुरतफ़ा	अंगुश्त-फ़ा०
"	"	२३	tao	too
"	२	३३	Pascolus	Phascolus
११८	२	५	पूणरूप	पूर्ण रूप
१२७	२	५	उसका	उसको
१२९	२	२७	āajamaya	āajamāya
१३०	२	१०	प०	पं०
१३१	२	३१	घाप्प	घाष्प
१३४	१	२६	घारहे अश्मनी	घोरहेंअश्मनी
"	२	१, २	अज़्रफ़ल, अज़्रफ़ल्	अज़्रफ़ूत, अज़्रफ़ूत
"	"	२१	कर्यांच	केयौंच
१३६	१	२८	mubavv	mubavvi
"	२	३८	Helicteris isora, *Linn.*	Asclepias geminata, *Roxb.*
१३७	१	३९	Umblli-feræ	Umbelli-feræ
१३८	१	१४	अजमोदा	अजमोदा के
१३९	१	४	Agua	Aqua
"	"	२३	शोथों के	शोथों की
"	"	२६	अजवायनको	अजवायन का
"	२	२६	होती	होता
१४०	१	२२	ओर	और
"	"	२६	तल	तेल

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४०	२	१७	लिए में	लिए
१४१	२	४	क	कर्ये
१४२	१	१२	वनस्पत्योषान	वनस्पत्युद्यान
"	"	१६	दर्यास	दुर्यास
"	"	१८	यूक	यूकर
"	"	२४	नाट	नोट
	२	११	यग	योग
१४३	१	३६	दवा	दवा
१४६	१	८	पुनः	पुनः
"	"	३२	अजवायन	अजवायन
"	२	१८	sobative	sedative
१४७	२	२४	धतूरीन	धतूरीन
"	"	३४	soporiflc	soporific
१४८	"	६	वाली	वाले
१५२	१	१३	ग्रंय	ग्रंथ
१५३	२	२५	फा	का
"	"	३१	ओर	और
१५४	१	२५	अनामून	अनीमून
"	२	१८	घि०	क्षी०
"	"	३६	संला	संज्ञा
१५५	१	१८	ओ०	क्षी०
"	"	२३	प्रहण्याधिकारे	प्रहण्यधिकारे
"	"	३०	पांडुरोग	पांडुरोग
"	२	७	हें	हैं
१६०	२	१७	प्रकृत्याओं	प्रकृत्यओं
"	१	२७	(as above)	
"	"	"	नाट	नोट
१६१	१	३	knṭaka	kanṭaka
१६२	१	४	१० १०	१०-१०
"	"	१८	लौग	लौंग
१६३	१	१४	ओर	और
"	"	२५	लामड़ी	लोमड़ी
"	"	२६	ओर	और
"	"	३३	जा	जो
"	"	३४	अज़त	अज़ूत
१६३	२	१२	मिपा	मिश्री
१६४	१	३४	सहृद	साहृद

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६४	२	१०	अज़ांफ़	अज़ीफ़
१६५	१	१४	azghása	azghasa
१६५	२	३	अज्ज़ाआ	अज्ज़ाओं
१६६	१	१२	संधातिन	संधानिन
"	"	१३	निर्पलेता	निर्पलना
"	"	३०	अज्निद्द्	अज्निद्द्
"	"	३५	अज़्फ़र	अज़्फ़र
१६७	१	६	जससे	जिससे
१६७	१	३३	फ़०	फ़ा०
१६८	१	१५	फ़ाण्टक स्थि	फ़ाण्टिकास्थि
"	"	२१	पित्मइयूनी	पिल्मइयूनी
"	२	२५	युग़मुर्क्युह	अग़्मुर्‍-क्युह
"	"	२६	पार्श्वयंस्थि	पार्श्वयस्थि
१७१	१	६	पश्चात्	के पश्चात्
१७३	१	४०	: अजन	अजनः
"	२	२६	फिज़ोरे	बिज़ोरे
"	"	"	शुष्क	शुष्क
१७४	१	६	मुलेटी	मुलेठी
"	"	११	शुष्क	शुष्क
"	"	३३	शांत	शांन
१८२	१	३६	क्लेद	क्लेद
१८४	१	३७	मस्तिष्क	मस्तिष्क
१८४	२	१३	अरयतंन	संयतंन
१८६	१	११	अमिप्राय	अभिप्राय
"	२	३२	जाला	लाता
१९०	१	२७	ओंदसी	ओंदसी
१९२	१	१६	शाता	जाता
"	"	३२	युक़	युक्त
"	२	२६	का	की
"	"	३२	है	है
१९३	"	३	घृंहण	बृंहण
१९४	"	२५	ना पुष्प	नारिपुष्प
१९५	१	३	वप	वर्ष
१९६	१	१०	ओर	और
"	२	६	क्योंकि	क्योंकि
१९७	१	८	पुष्टिकारक	पुष्टिकारक
"	"	२०	डांफ्टरा	डॉक्टरी
१९७	२	२८	फ़०	फ़ा०
१९८	१	२०	plulifora	pilulifora
"	"	२३	बीजे	बीज
२००	२	२	लम्बू	लिम्बू
२०१	१	४	जांक	जोंक
"	"	२०	atraphy	atrophy
२०२	२	३७	ef	of
२०५	१	२७	Catchu	Catechu
२१२	२	४	क दां	कटारों
२१२	२	१०	त्रा	त्रों
२१३	१	११	ओर	और
२१५	१	५	मु.स्यह	मु.स्यह्
"	"	६	फ़ातह्	फ़ातिह्
"	"	७	मुस्यों	मु.स्यां
"	"	२६	पपायपेपा	पपाय(पेपा)
"	२	३१	लम्धे	लम्बे
"	"	३७	विपमर्ती	विपमयर्ती
२१६	१	५	पुष्पभ्यन्तर-कोप	पुष्पाभ्यन्तर-कोप
"	२	२६	कं	की
२१८	२	२८	होतां है	होते हैं
२२१	१	३५	जाई	लाई
"	२	२७	बाइकार्बोनेट	बाइकार्बोनेट
"	"	३३	भोनन	भोजन
२२२	२	२२	कद् दान	कद् दाने
२२३	१	२८	सुहाग	सुहागा
"	२	४	गा	गो
२२४	२	३	जौहर,	जौहर
२२५	१	३५	विपयक	विपयक
२२६	२	१२	अरयर्तन	संयर्तन
२२८	२	२८	स०	सं०
२२९	१	२३	पुष्पसार	पुष्पसार
"	२	१२	अतलस्पश	अतलस्पर्श
२३०	२	३५	बँधता	बँधता
२३१	२	१	नैलि	नैलिद
२३४	१	१२	अवाध्य	अवाध्य
२३५	१	१६	जव	जव

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३६	२	२१	जुनाल् हुश्फ़ड्	ताजुल् हुश्फ़ड्
२३७	२	६	करटक	कण्टक
२३६	१	१८	atijágar-nah	atijágarah
"	"	२३	atijágar-aah	atijágara-nah
२५२	१	३	*Liun*	*Linn.*
२५२	१	३०	चाहिए	चाहिए
२५३	२	५	अवस्था	अवस्था
"	२	१५	पा।	पाठा
"	२	२८	कानन,	कानन
२५३	२	३८	य लातीसार	बालातीसार
२५४	१	८	ओर	और
२५४	१	१२	अक्सगल	ऑक्सगॉल
"	"	२४	क्लोरोफार्म	क्लोरोफ़ॉर्म
"	"	३१	विज।	विजय
"	"	३५	क्तोरिक	क्लोरिक
"	२	५	सैंधव	सैंधव
"	"	१४	रयुवार्य	रघुवार्य
२५५	"	२६	प्रमाण	प्रमाण
२५६	१	१८	शहद	शहद
२५८	२	४	वंद	फंद
"	"	६	प्रतिपेपक	प्रतिषेधक
"	"	११	व य	वलय
२५६	१	१३	अ निस	अनीस
२५६	१	२३	हांमी	होती
२६३	२	१७	रक्ता धिक्य	रक्ताधिक्य
२६४	२	३०	atyudirnā	atyudírná
२६७	१	२३	कना०	कना०
२६७	२	६	रख	रस
२७०	१	२१	खैरसार	खैरसार
२७१	१	२६	officiulis	officinalis
२७२	२	२	हुमा	हुआ
२७४	२	१६	मै नफल	मैनफल
२७७	१	२०	गंगलव	गंगलवण
२७७	१	२१	ओर	और
२८०	२	७	netrachch-dada	netrach-chhada
२८१	२	६	Inferor turt-binate	Inferior turbinate
२८२	१	१५	हाेंना	होना
२८२	१	२०	(२)	(३)
२८३	१	२४	थे	थै
२८३	१	३१	पेठ	पेट
२८४	१	३	(उ)	(उ)
२८५	२	२७	Gossypinm	Gossy-pium
२८५	२	३५	*solubble*	*soluble*
२८६	१	१	arngam	anangam
२८६	१	४	वैकांत	वैकांत
२८६	२	७	मुद्द	शुद्ध
२८७	२	७	ओर	और
२८८	१	१४	लांहतो	(४) लाइनी
२८८	१	३०	अग्निकन्थ	अग्निमन्थ
२८८	२	२	crountry	country,
२६०	१	३१	सुस्वाद	सुस्वादु
२६३	२	२१	यल	मूल
२६४	१	४	मल्लातककी	भल्लातकी
२६४	१	७	मल्लातक्यास्लं	भल्लातक्यास्ल
२६६	१	३३	prikhá	parikhá
२६८	२	२६	पमाव	प्रभाव
३०१	१	१२	ओर	और
३०१	१	२२	हाता	होना
३०२	२	२२	मद्यपाम	मद्यपान
३०३	२	१५	Tukiua	Tukína
३०४	१	१४	सौर	और
३०६	१	१०	रक्ल	रक्त
३०७	२	२०	पौस	पांस
३०६	१	२३	पत्तों के	पत्तों को
३१२	१	११	संता	संज्ञा
३१४	१	२६	खनाई	खुनाई
३१४	२	१	सुगन्धित	सुगंधि
३१५	२	२१	तुस	तूल,
३२०	२	१५	ब,	तू

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३३	२	१०	पर्य	पर्व
३३४	२	२०	संज्ञा	संज्ञा
३३५	१	१४	पं०	पुं०
३३५	१	३३	Followrig	Following
"	२	८	ओ॰	क्लो०
"	"	१८	Thalicl-rum	Thalictrum
			Fliosam	Eoliolosum D.E
३३५	२	३०	उज्वल	उज्ज्वल
३३६	१	२७	ग्र०	अ०।
३३६	२	३	Vapourisn-tiou	Vapouris ation
३३७	१	१८	औषध	औषध
३३८	१	२७	सोनामुखा	सोनामुखी
३३२	१	२६	दाँकर.	हाँकर
३३३	२	६	भैंस	भैंस
३३४	१	२६	श्रोर	और
३३४	२	३७	रवाधीन	स्वाधीन
३३५	१	१४	हे	है
३३५	२	२७	अनाना	अनोना
३३६	१	२५	अनोन	अनोना
३३६	२	१५	अन्य	×
३३६	२	१६	औषधी	अन्यऔषधी
३३७	१	१	अनङ्कित्	अनङ्कित्
३३६	१	१३	श्रोर	और
३३६	१	२८	खंड	खंड
३४३	१	३५	अन्तरात	अन्तरातप
३४४	२	२०	अनंतम	अन्तिम
३५४	२	२७	गह्वर	गह्वर

४५ } नोट—'अन्तरीय उदरच्छदा' से 'अन्तर्म-
४६ } हानाद' तक के शब्द पृष्ठ ३४३ द्वितीय कॉलमके अन्तर्मुख शब्दसे पहिले होने चाहिए और 'अन्तर्मुखी' 'अन्तर्लसिका' से पहिले तथा 'अन्तर्लोहिता' 'अन्तर्वर्तनीसे' पहिले होने चाहिए।

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३४८	१	१६	संज्ञा	संज्ञा
३४८	१	३४	shronigá	shronigá
३४६	२	१५	इल्ति–	इल्ति–
३४६	२	२	इ	ई
३५०	१	२२	होता	×
३५०	२	२०	अच्छा	अच्छा
३५०	२	३७	को	के
३५१	१	३३	prishishta	parishishta
३५२	२	३४	अधिफ	अधिक
३५३	२	८	प्रमृति	प्रभृति
३५८	१	३६	ध	का
३५६	२	४	चली	चला
३५६	२	१०	रखें	रखें
३५६	२	२३	"	"
३६०	१	१८	जन्ममकाल	जन्मकाल
३६०	१	२५	परिस्तृत	परिविस्तृत
३६०	२	११	आंत्रस्त	आंत्रस्थ
३६०	२	२०,	Gariec Lacti	Gastric-Lactic
३६०	२	२३	व्योहार	व्यवहार.
"	"	२८	भातर	भीतर
३६३	१	१८	सन्तमम	सन्तमस
३६३	१	२१	अधतमस	अन्धतमस
३६८	१	३	सस्कार	संस्कार
३६८	२	८	हाता	होता
३७०	१	४	अंगुल्याग्र	अंगुल्यग्र
३७३	२	१६	कक	कफ
३८०	२	२२	श्वतापराजिता	श्वेतापराजिता
३८२	१	११	Hetic	Hectic
३८६	२	३१	क्लोलोफार्म	क्लोरोफार्म
४०१	१	११	खं ड	खंड
४०१	१	३२	केशप्रद	क्लेशप्रद
४०४	१	२८	के	के
४०४	२	२६	परिणाम	परिणाम
४०५	२	१६	अपमार्ग	अपामार्ग
४०६	१	२	कमज़ोर	कमज़ोर
४०६	२	८	डांकर	डालकर
४०६	२	१६	क	के
४१६	१	१७	चतुप्रय	चतुष्टय
४१६	"	"	कियाएँ	क्रियाएँ
४१६	२	३५	धानस्पतिक	वानस्पतिक

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४२४	२	३८	Sipnace aoleracca	Spinacea oleracea
४२६	१	३४	वणन	वर्णन
,,	२	३५	त	तथा
४२७	१	७	मुण	गुण
४२८	१	२१	*Loudon*	*London*
,,	१	२३	मयागांश	प्रयोगांश
४२९	२	१०	पत्र	पत्त
,,	,,	२६	Hippœrate	Hippocrate
,,	,,	३७	अयुनस्त्र	अयुनस्त
४३२	१	३१	ṭamarúna	tamarúna
४३३	१	१६	akḥrhsa	akharas
४३४	१	१३	adda	abda
४३८	१	३७	साय	साथ
,,	२	३०	aalah	ablah
४३९	१	१८	desrie	desire.
,,	,,	२५	ख ड	खंड
,,	२	८	मागजी	कागजी
,,	,,	३३	अम्लयेतस	अम्लवेतस
४४०	१	१८	gutá	guṭí
,,	,,	२१	abhayādi	abhayádi
,,	,,	२२	vatí	vaṭí
४४१	२	३३ ३४ ३५	एक उपसर्ग करता है।	नोट—यह पृष्ठ ४४२ के १ स्तम्भ के प्रथम पंक्ति के बाद होना चाहिए।
४४२	१	१५	घाला	वाला
,,	,,	२४	र्वा	र्वा
,,	,,	२८	औ	और
,,	२	३	botter	butter
,,	,,	५	मी	घी
,,	,,	१७	मारा	चारा
,,	,,	२०	घशीकरण	वशीकरण
,,	,,	२१	अभिचारक	अभिचारक
,,	,,	,,	abhchá-raka	abhichár-aka
		२२	अंत्र	यंत्र

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४४२	,,	,,	उघाचन	उघाटन
,,	,,	२६	producedy	produced by.
४४१	,,	३३	प्रमोग	प्रयोग
,,	२	३४	अभिश्राप	अभिशाप
४४३	१	१	श्र	अ
,,	,,	४	पलोरिका	क्लोरिक
,,	,,	५	Hyorochl-oric	Hydro-chloric
,,	,,	११	नर्वान	नवीन
,,	,,	१४	abhinva	abhinava
,,	,,	१६	इथक्	पृथक्
,,	,,	२३	kamehva	kámeshva
४४३	२	३०	puat	puṭa
४४४	१	३४	abhimukha	abhi-ruchi
४४५	१	३	भध	भय
,,	१	७	मा०	मा०
,,	,,	६	आभिपङ्क	अभिपङ्क
,,	,,	३०	adhi	abhi
,,	२	८	पीड़ा	पीड़ा
,,	,,	१८	(३)	(२)
४४६	१	८	abhi thitá	abhi hitá
,,	,,	३५	abhisaugah	abhishangah
,,	,,	३६	अभिपङ्क	आभिपङ्क
,,	,,	३८	प्र	पु
,,	२	१५	किपा	किया
,,	,,	१८	हब्युलास्त	हब्युलास
,,	,,	२२	adheda	abbeda
४४८	१	२६	देखो—	देखो-वात-व्याधि।
४४९	१	१५	नागरमोधा	नागरमोथा
,,	,,	३७	पद	पर
,,	२	३	पत्र	पत्र
,,	,,	१०	उहधातु	उपधातु
,,	,,	,,	बह	यह
,,	२	३७	कश्णाम्रक	कृष्णाभ्रक